PAIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY
with Sanskrit equivalents, quotations

AND

complete references.

Vol. I.

——— (0): ———

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH, Nyaya-Vyakaran-tirtha,

Lecturer in Prakrit, Calcutta University.

CALCUTTA.

——: 0 ——

FIRST EDITION.

—— 0 ——

1923

(d) $2x - 3y = 0$

पाइअ-सद्द-महण्णवो ।

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

णासिअ-दोस-समूहं, भासिअणेगंतवाय-ललिअत्थं ।
पासिअ-लोआलोअं, वंदामि जिणं महावीरं ॥ १ ॥

निक्कित्तिम-साउ-पयं, अइसइअं सयल-वाणि-परिणमिरं ।
वायं अवाय-रहिअं, पणमामि जिणिंद-देवाणं ॥ २ ॥

पाइअ-भासामइअं, अवलोइअ सत्थ-सत्थमइविउलं ।
सद्द-महण्णव-णामं, रएमि कोसं स-वण्ण-कमं ॥ ३ ॥
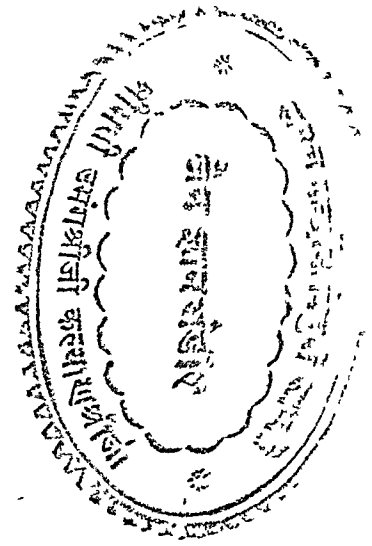
अ

अ पु [अ] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम अक्षर (हे १, १; प्रामा)। २ विष्णु, कृष्ण; (से १, १)।

अ देखो **च** अ; (श्रा १४, जी २; पउम ११३, १४; कुमा)।

अ° अ [अ°] निम्न-लिखित अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक को बतलानेवाला अव्यय;—१ निषेध, प्रतिषेध; जैसे—'अदंसण' (सुर ७,२४८) "सव्वनिसेहे मओऽकारो" (विसे १२३२)। २ विरोध, उल्टापन; जैसे—'अधम्म' (णाया १,१८)। ३ अयोग्यता, अनुचितपन, जैसे—'अयाल' (पउम २२, ८५)। ४ अल्पता, थोड़ापन, जैसे—'अधण' (गउड) ; 'अचेल' (सम ४०)। ५ अभाव, अविद्यमानता; जैसे—'अगुण' (गउड)। ६ भेद, भिन्नता ; यथा—'अमणुस्स' (णंदि)। ७ सादृश्य, तुल्यता; जैसे—'अचक्खुदंसण' (सम १५)। ८ अप्रशस्तता, बुरापन; जैसे—'अभाइ' (चारु २६)। ९ लघुपन, छोटाई; जैसे—'अतड' (बृह १)।

°अ पु [क] १ सूर्य, सूरज, (से ७,४३)। २ अग्नि, आग; ३ मयूर, मोर; (से ९,४३)। ४ न. पानी, जल; (से १, १)। ५ शिखर, टोच; (से ९,४३)। ६ मस्तक, सिर; (से ९,१८)।

°अ वि [°ज] उत्पन्न, जात; (गा ९७१)।

अअंख वि [दे] स्नेह-रहित, सूखा (दे १,१३)।

अअर देखा **अवर**; (पि १६५)।

अअर देखो **आयर**; (पि १६५)।

अइ अ [अयि] १-२ संभावना और आमंत्रण अर्थ का सूचक अव्यय; (हे २, २०५; स्वप्न ५८)।

अइ अ [अति] यह अव्यय नाम और धातु के पूर्व में लगता है और नीचे के अर्थों में से किसी एक को सूचित करता है;—१ अतिशय, अतिरेक; जैसे—'अइउण्ह' 'अइउत्ति' 'अइचिंतंत' (श्रा १४, रंभा, गा २१४)। २ उत्कर्ष, महत्त्व, जैसे—'अइवेग' (कप्प)। ३ पूजा, प्रशंसा; जैसे—'अइजाय' (ठा ४)। ४ अतिक्रमण, उल्लंघन, जैसे—'अइक्कसो' (दस ५, ४, ४२)। ५ ऊपर, ऊंचा, जैसे—'अइमंच' 'अइपडागा' (औप, णाया १,१)। ६ निन्दा, जैसे—'अइपंडिय' (बृह १)।

अइ सक [आ+इ] आगमन करना, आ गिरना। "अइति नाराया" (स ३८३)।

अइइ स्त्री [**अदिति**] पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देव, (सुज्ज १०)।

अइइ सक [**अति+इ**] १ उल्लंघन करना। २ गमन करना। ३ प्रवेश करना। वकृ—**अइंत**; (से ६, २६, कप्प)। संकृ—**अइच्च**; (सूअ १,७,२८)।

अइंच सक [**अति+अञ्च्**] १ अभिषेक करना, स्थानापन्न करना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. दूर जाना (से १३, ८; ८६)।

अइंचिअ वि [**अत्यञ्चित**] १ अभिषिक्त, स्थानापन्न किया हुआ; (से १३,८)। २ उल्लंघित, अतिक्रान्त (से १३, ८)। ३ दूर गया हुआ; (से १३,८६)।

अइंछ देखो **अइंच**; (से १३,८)।

अइंछिअ देखो **अइंचिअ** (से १३,८)।

अइंछण न [**अत्यञ्चन**] १ उल्लंघन; (से १३, ३८)। २ आकर्षण, खींचाव, (से ८, ६४)।

अइंत देखो अइइ=अति+इ।

अइंत वि [**अनायत्**] १ नहीं आता हुआ; २ जो जाना न जाता हो, "गाहाहि पणइणीहि य खिज्जइ चित्तं अइंतीहि" (वज्जा ४)।

अइंदिय वि [**अतीन्द्रिय**] इंद्रियों से जिसका ज्ञान न हो सके वह; (विसे; २८१८)।

अइकाय पु [**अतिकाय**] १ महोरग--जातीय देवों का एक इन्द्र; (ठा २)। २ रावण का एक पुत्र; (से १६, ५६)। ३ वि. बडा शरीर वाला; (गाया १,६)।

अइक्कंत वि [**अतिक्रान्त**] १ अतीत, गुजरा हुआ "अइक्कंतजोव्वणा" (ठा ५)। २ तीर्ण, पार पहुंचा हुआ; (आव)। ३ जिसने त्याग किया हो वह "सव्व-सिणेहाइक्कंता" (औप)।

अइक्कम सक [**अति+क्रम्**] १ उल्लंघन करना। २ व्रत-नियम का आंशिक रूप से खण्डन करना। अइक्कमइ; (भग)। वकृ—**अइक्कमंत, अइक्कममाण**; (सुपा २३८; भग)। कृ—**अइक्कमणिज्ज**; (सूअ २,७)।

अइक्कम पु [**अतिक्रम**] १ उल्लंघन; (गा ३४८)। २ व्रत या नियम का आंशिक खण्डन, (ठा ३,४)।

अइक्कमण न [**अतिक्रमण**] ऊपर देखो; (सुपा २३८)।

अइगच्छ } **अइगम** } अक [**अति+गम्**] १ गुजरना, बीतना। २ सक. पहुंचना। ३ प्रवेश करना। ४ उल्लंघन करना। ५ जाना, गमन करना। वकृ—**अइगच्छमाण**; (णाया १, १)। संकृ-**अइयच्च**; (आचा); "**अइगंतूण** अलोग" (विसे ६०४)।

अइगम पु [**अतिगम**] प्रवेश; (विसे ३८६)।

अइगमण न [**अतिगमन**] १ प्रवेश-मार्ग; (णाया १, २)। २ उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में जाना; (भग)।

अइगय वि (**दे**) १ आया हुआ; २ जिसने प्रवेश किया हो वह; (दे १,५७) "ससुरकुलम्मि अइगया, दिट्ठा य सगउरवं तत्थ" (उप ५६७ टी)। ३ न. मार्गका पीछला भाग, (दे १,५७)।

अइगय वि [**अतिगत**] अतिक्रान्त, गुजरा हुआ "हिंड-तस्स अइगयं वरिसमेगं" (महा; से १०, १८; विसे ७ टी)।

अइचिरं अ [**अतिचिरम्**] बहुत काल तक; (गा ३४६)।

अइच्च देखो अइइ=अति+इ।

अइच्छ सक [**गम्**] जाना, गमन करना। अइच्छइ; (हे ४,१६२)।

अइच्छ सक [**अति+क्रम्**] उल्लंघन करना। अइच्छइ; (आघ ५१८)। वकृ—**अइच्छंत**; (उत्त १८)।

अइच्छा स्त्री [**अदित्सा**] १ देने की अनिच्छा; २ प्रत्याख्यान विशेष; (विसे ३५०४)।

अइच्छिय वि [**गत**] गया हुआ, गुजरा हुआ, (पउम ३, १२२; उप पृ १३३)।

अइच्छिय वि [**अतिक्रान्त**] अतिक्रान्त, उल्लंघित; (पाअ; विसे ३५८२)।

अइजाय पुं [**अतिजात**] पिता से अधिक संपत्ति को प्राप्त करनेवाला पुत्र; (ठा ४)।

अइट्ठ वि [**अदृष्ट**] १ जो देखा गया न हो वह। २ न. कर्म, दैव, भाग्य, (भवि)। °**उव्व**, °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] जो पहले कभी न देखा गया हो वह; (गा ४१४;७४८)।

अइट्ठ वि [**अनिष्ट**] १ अप्रिय; २ खराब, दुष्ट "जो पुणु खलु खुद्दु अइट्ठसंगु, तो किमब्भत्थउ देइ अंगु" (भवि)।

अइट्ठा सक [**अति+स्था**] उल्लंघन करना। संकृ-**अइट्ठिय**; (उत्त ७)।

अइट्ठिय वि [**अतिष्ठित**] अतिक्रान्त, उल्लंघित; (उत्त ७)।

अइण न [**दे**] गिरि-तट, तराई, पहाड का निम्न भाग, (दे १, १०)।

अइण न [**अजिन**] चर्म, चमडा, (पाअ)।

वि [दे. अतिनीत] आनीत, लाया हुआ; (दे १,२४)।

} वि [अतिनीत] १ फेंका हुआ, (से ६, ५६)। २ जो दूर ले जाया गया हो; (प्राप)।

वि [दे. अतिनीत] आनीत, लाया हुआ; (महा)।

वि [अतिनु] जिसने नौका का उल्लंघन किया हो वह, जहाज से ऊतरा हुआ; (षड्)।

इतह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा; (उप १०३१ टी)।

न [ऐदंपर्य] तात्पर्य, रहस्य, भावार्थ; (उप ६४; ८७६)।

) स्त्री [अतिदुष्षमा] देखो **दुस्समदुस्समा**, (पउम २०, ८३; ६०; उप पृ १४७)।

देखो **अइदंपज्ज** ; (पंचा १४)।

वि [अतिभ्रामित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ, (पण्ह १,३)।

वि [अतिविष्टम्भन] स्तब्ध करने वाला, रोकने वाला, (कुमा)।

न [अजीर्ण] १ बदहजमी, अपच। २ वि. जो हजम हुआ न हो वह। ३ जो पुराणा न हुआ हो, नूतन; (उव)।

वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ। °याण न [°दान] चोरी; (आचा)।

स्त्री [अतिपाण्डुकम्बलशिला] मेरु पर्वत पर स्थित दक्षिण दिशा की एक शिला, (ठा ४)।

अइपडाग पुं [अतिपताक] १ मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८)। २ स्त्री. पताका के ऊपर की पताका; (णाया १, १)।

अइपरिणाम वि [अतिपरिणाम] आवश्यकता न रहने पर भी अपवाद-मार्ग का ही आश्रय लेनेवाला, शास्त्रोक्त अपवादों की मर्यादा का उल्लंघन करनेवाला;
"जो दव्वखेत्तकालभावकयं जं जहिं जया काले।
तल्लेसुस्सुत्तमई, अइपरिणामं वियाणाहि" (बृह १)।

अइपास पुं [अतिपार्श्व] भगवान् अरनाथ के समकालिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर-देव; (तित्थ)।

अइप्पगे अ [अतिप्रगे] पूर्व-प्रभात, बड़ी सवेर; (सुर ७, ७८)।

अइप्पसंग पु [अतिप्रसङ्ग] १ अति-परिचय; (पञ्चा १०)। २ तर्क-शास्त्र में प्रसिद्ध अतिव्याप्ति-नामक दोष; (स १६६; उवर ४८)

अइप्पहाय न [अतिप्रभात] बड़ी सवेर; (गा ६८)।

अइबल वि [अतिबल] १ बलिष्ठ, शक्ति-शाली; (औप)। २ न. अतिशय बल, विशेष सामर्थ्य; ३ बड़ा सैन्य; (हे ४, ३५४)। ४ पु. एक राजा, जो भगवान् ऋषभ-देव के पूर्वीय चतुर्थ भव में पिता या पितामह था; (आचू)। ५ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र, (ठा ८)। ६ भरत क्षेत्र में आगामी चौवीसी में होनेवाला पांचवाँ वासुदेव; (सम ५)। ७ रावण का एक योद्धा; (पउम ५६, २७)।

अइभद्दा स्त्री [अतिभद्रा] भगवान् महावीर के प्रभास-नामक ग्यारहवें गणधर की माता; (आचू)।

अइभूइ पु [अतिभूति] एक जैन मुनि, जो पंचम वासुदेव के पूर्व-जन्म में गुरू थे; (पउम २०, १७६)।

अइभूमि स्त्री [अतिभूमि] १ परम प्रकर्ष; २ बहुत जमीन; (स ३, ४२)। ३ गृहस्थों के घर का वह भाग, जहां साधुओं को प्रवेश करने की अनुज्ञा न हो "अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी" (दस ५, १, २४)।

अइमट्टिया स्त्री [अतिमृत्तिका] कीचवाली मट्टी; (जीव ३)।

अइमत्त } वि [अतिमात्र] बहुत, परिमाणमें अधिक; **अइमाय** } (उव ठा ६)।

अइमुंक, **अइमुंत**, **अइमुंतय**, **अइमुत्त**, **अइमुत्तय** } पु [अतिमुक्त, °क] १ स्वनाम-ख्यात एक अन्तकृद् (उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला) जैन मुनि, जो पोलासपुर के राजा विजय का पुत्र था और जिसने बहुत छोटी ही उम्र में भगवान महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अन्त)। २ कंस का एक छोटा भाई; (आव)। ३ वृक्ष-विशेष; (पउम ४२, ८)। ४ माधवी लता; (पाअ; स ३५)। ५ न. अन्तगडदसा-नामक अंग-ग्रन्थ का एक अध्य-यन; (अन्त)। (हे १, २६; १७८, पि २४६)।

अइय वि [अतिग] अतिक्रान्त "अव्वो अइअम्मि तुमे, णवरं जइ सा न जूरिहिइ" (हे २,२०४)। २ करने वाला; "ठाणाइय" (औप)।

°**अइय** वि [दयित] १ प्रिय, प्रीतिपात्र; २ दया-पात्र, दया करने योग्य; (से ६, ३१)।

अइयच्च देखो **अइगच्छ** ।
अइयण न [**अत्यदन**] बहुत खाना, अधिक भोजन करना; (वव २) ।
अइयय वि [**अतिगत**] गया हुआ; (स ३०३) ।
अइयर सक [**अति+चर्**] १ उल्लंघन करना; २ व्रत को दूषित करना । वक्ृ— **अइयरंत**; (सुपा ३५४) ।
अइया सक [**अति+या**] जाना, गुजरना; (उत्त २०) ।
अइया स्त्री [**अजिका**] बकरी, छागी; (उप २३७) ।
°**अइया** स्त्री [**दयिता**] स्त्री, पत्नी; (से ६, ३१) ।
अइयाण न [**अतियान**] १ गमन, गुजरना; २ राजा वगैरः का नगर आदि में धूमधाम से प्रवेश करना; (ठा ४) ।
अइयाय वि [**अतियात**] गया हुआ, गुजरा हुआ (उत्त २०) ।
अइयार पुं [**अतिचार**] उल्लंघन, अतिक्रमण; (भवि) । २ गृहीत व्रत या नियम में दूषण लगाना; (श्रा ६) ।
अइर अ [**अचिर**] जल्दी, शीघ्र; (स्वप्न ३७) ।
अइर न [**अजिर**] आंगन, चौक; (पाअ) ।
अइर पुं [**दे**] आयुक्त, गांवका राज-नियुक्त मुखिया; (दे १, १६) ।
अइर न [**दे** अतर] देखो **अयर**=अतर; (सुपा ३०) ।
अइरजुवइ स्त्री (दे) नई बहू, दुलहिन; (दे १, ४८) ।
अइरत्त पुं [**अतिरात्र**] अधिक तिथि, ज्योतिष की गिनती से जो दिन अधिक होता है वह; (ठा ६) ।
अइरत्त वि [**अतिरक्त**] १ गाढा लाल; २ विशेष रागी । °**कंबलसिला, °कंबला** स्त्री [°**कम्बलशिला, कम्बला**] मेरु पर्वत के पांडुक वन में स्थित एक शिला, जिस पर जिनदेवों का जन्माभिषेक किया जाता है; (ठा २, ३) ।
अइरा अ [**अचिरात्**] शीघ्र, जल्दी (से ३, १५) ।
अइरा } स्त्री [**अचिरा**] पांचवें चक्रवर्ती और सोलहवें
अइराणी } तीर्थंकर-देव की माता; (सम १५२; पउम २०, ४२) ।
अइराणी स्त्री [**दे**] १ इन्द्राणी; २ सौभाग्य के लिए इन्द्राणी-व्रत करनेवाली स्त्री; (दे १, ५८) ।
अइरावण पुं [**ऐरावण**] इन्द्र का हाथी; (पाअ) ।
अइरावय पुं [**ऐरावत**] इन्द्र का हाथी; (भवि) ।
अइराहा स्त्री [**अचिराभा**] बिजली, चपला; (दे१,३४टी) ।
अइरि न [**अतिरि**] धन या सुवर्ण का अतिक्रमण करने वाला, धनाढ्य; (षड्) ।
अइरिंप पुं [**दे**] कथाबन्ध, बातचीत, कहानी; (दे १, २६) ।
अइरित्त वि [**अतिरिक्त**] १ बचा हुआ, अवशिष्ट; (पउम ११८, ११६) । २ अधिक, ज्यादः; (ठा २, १) "पवड्ढमाणाइरित्तगुणनिलओ" (सार्ध ६३) । °**सिज्जासणिय** वि [**शय्यासनिक**] लम्बी चौडी शय्या और आसन रखनेवाला (साधु); (आचू) ।
अइरूव वि [**अतिरूप**] १ सुरूप, सुडौल; (पउम २०, ११३) । २ पुं. भूत-जातीय देव-विशेष; (पण्ण १) ।
अइरेग पुं [**अतिरेक**] १ आधिक्य, अधिकता; "साइरेगअट्ठवासजाययं" (णाया १, ५) । २ अतिशय; (जीव ३) ।
अइरेण } अ [**अचिरेण**] जल्दी, शीघ्र; (गा १३५;
अइरेणं } पउम ६२, ४; उवर ४३) ।
अइरेय देखो **अइरेग**; (णाया १, १) ।
अइव अ [**अतीव**] अतिशय, अत्यन्त;
"रित अइव महंतं, चिट्ठइ मज्झम्मि तस्स भवणस्स ।
ता तं सव्वं सुपुरिस ! अप्पायत्तं करेज्जासु ॥" (महा) ।
अइवट्टण न [**अतिवर्त्तन**] उल्लंघन, अतिक्रमण; (आचा)
अइवत्त सक [**अति+वृत्**] अतिक्रमण करना । **अइवत्तइ** (आचा) ।
अइवत्तिय वि [**अतिव्रतिक**] १ जिसका उल्लंघन किया गया हो वह; २ प्रधान, मुख्य; ३ उल्लंघन करने वा। (आचा) ।
अइवय सक [**अति+व्रज्**] १ उल्लंघन करना । २ जाना । ३ प्रवेश करना । **अइवयंति**; (पण्ह १, ५) वक्ृ—"नियगवयणं **अइवयंतं** गयं सुमिणे ... पडिबुद्धा" (णाया १, १; कप्प) ।
अइवय सक [**अति+पत्**] १ उल्लंघन करना । २ ... करना । ३ प्रवेश करना । ४ अक. मरना । ५ गिरजाना "अवरे रण-सीस-लद्ध-लक्खा संगामम्मि (पण्ह १,३) "लोभघत्था संसारं अइवयंति (पण्ह १,५) वक्ृ—"जरं वा सरीररूव-विणासिणिं सरीरं वा निवारेसि" (णाया १, ५); **अइवयंत**; (कप्प) प्रयो—**अइवाएमाण**; (आचा; ठा ७) ।
अइवाइ वि [**अतिपातिन्**] १ हिंसक; (सूअ १, ५) विनश्वर; (विसे १५७८) ।
अइवाइत्तु वि [**अतिपातयितृ**] मारनेवाला (ठा ३, २
अइवाइय वि [**अतिपातिक**] ऊपर देखो; (सूअ २,१

अइवाएत्तु देखो **अइवाइत्तु** ; (ठा ७) ।

अइवाएमाण देखो अइवय=अति+पत् ।

अइवाय पुं [**अतिपात**] १ हिंसा आदि दोष ; (ओघ ४६) । २ विनाश; "पाणाइवाएणं" (गाया १,५) ।

अइवाय पुं [**अतिवात**] १ उल्लंघन; २ भयंकर पवन, तूफान; (उप ७६८ टी) ।

अइविरिय वि [**अतिवीर्य**] १ वलिष्ठ, महा-पराक्रमी; २ पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ५) । ३ नन्दावर्त नगर का एक राजा ; (पउम ३७, ३) ।

अइविसाल वि [**अतिविशाल**] १ वहुत वड़ा, विस्तीर्ण । २ स्त्री. यमप्रभ-नामक पर्वत के दक्षिण तरफ की एक नगरी ; (दीव) ।

अइस [**अप**] वि [**ईदृश**] ऐसा, इस तरह का ; (हे ४, ४०३) ।

अइसइ वि [**अतिशयिन्**] अतिशयवाला, विशिष्ट, आश्चर्य-कारक ; (सुपा २५७) ।

अइसइअ वि [**अतिशयित**) ऊपर देखो ; (पाअ) ।

अइसंधाण (**अतिसंधान**] ठगाई, वंचना; "भियगाणइ-संधाणं सासयवुड्ढी य जयणा य" (पंचा ७) ।

अइसक्कणा स्त्री [**अतिष्वष्कणा**] उत्तेजना, प्ररणा, बढ़ावा, (निसी)

अइसय सक [**अति+शी**] मात करना । वकृ—"परवलम् **अइसयंतो**" (पउम ६०, १५) ।

अइसय पुं [**अतिशय**] १ श्रेष्ठता, उत्तमता; (कुमा १,५) । २ महिमा, प्रभाव ; "वयणाइसओ" (महा) । ३ वहुत, अत्यन्त ; (सुर, १२, ८१) । ४ चमत्कार; (उर १,३) ।

°**भरिय** वि [°**भृत**] पूर्ण, पूरा भरा हुआ; (पाअ) ।

अइसरिय न [**ऐश्वर्य**] वैभव, संपत्ति, गौरव; (हे१,१५१) ।

अइसाइ वि [**अतिशायिन्**] १ श्रेष्ठ; (धम्म ६ टी) २ दूसरे को मात करनेवाला। स्त्री—°**णी**; (सुपा ११४) ।

अइसार पुं [**अतिसार**] संग्रहणी-रोग, जठर की व्याधि-विशेष; (लहुअ १५) ।

अइसेस पुं [**अतिशेष**] १ महिमा, प्रभाव, आध्यात्मिक सामर्थ्य; (सम ५६) । २ बचा हुआ, अवशिष्ट; (ठा ४,२) । ३ अतिशय वाला; (विसे ५५२) ।

अइसेसि वि [**अतिशेषिन्**] १ प्रभावशाली, महिमा-न्वित; २ समृद्ध ; (राज) ।

अइसेसिय वि [**अतिशेषित**] ऊपर देखो; (ओघ ३०) ।

अइहर पुं [**अतिभर**] हद, अवधि, मर्यादा; "सत्तीय को अइहरो ?" (अच्चु २३) ।

अइहारा स्त्री [**दे**] विजली, चपला; (दे १, ३४) ।

अइहि पुं (**अतिथि**) जिसकी आने की तिथि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक, साधु; (आचा) । °**संवि-भाग** पुं [°**संविभाग**] साधु को भोजन आदिका निर्दोष दान ; (धर्म ३) ।

अई सक [**गम्**] जाना, गमन करना । अईइ; (हे ४,१६२; कुमा;) अईति; (गउड) ।

अईअ [**अतीत**] १ भूतकाल (पच्च ६०) । २ जो बीत चुका हो, गुजरा हुआ; "जे अ अईआ सिद्धा" (पडि) । ३ अतिक्रान्त; (सूअ १, १०; सार्ध ४; विसे ८०८) । ४ जो दूर गया हो ; (उत्त १५) ।

अईअ } अ [**अतीव**] वहुत, विशेष, अत्यन्त ; (भग २,
अईव } १ ; पण्ह १, २) ।

अईसंत वि [**अ+दृश्यमान**] जो दिखता न हो; (से १, ३५) ।

अईसय देखो **अइसय** ; (पउम ३, १०५; ७५, २६) ।

अईसार पुं [**अतीसार**] १ संग्रहणी-रोग। २ इस नामका एक राजा; (ठा ५, ३) ।

अउअ न [**अयुत**] १ दस हजार की संख्या । २ 'अउअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४) ।

अउअंग न [**अयुताङ्ग**] 'अच्छणिउर' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४) ।

अउंठ वि [**अकुण्ठ**] निपुण, कार्य-दक्ष; (गउड) ।

अउज्झ वि [**अयोध्य**] १ युद्ध में जिसका सामना न किया जा सके वह; (सम १३७) । २ जिस पर रिपु-सैन्य आक्रमण न कर सके ऐसा किल्ला, नगर आदि ; (ठा ४) ।

अउज्झा स्त्री [**अयोध्या**] नगरी-विशेष, इक्ष्वाकुवंश के राजाओं की राजधानी, विनीता, कोसला, साकेतपुर आदि नामोंसे विख्यात नगरी, जो आजकल भी अयोध्या नाम से ही प्रसिद्ध है ; (ठा २) ।

अउण वि [**एकोन**] जिसमें एक कम हो वह । यह शब्द वीस से लेकर तीस, चालीस आदि दहाई संख्या के पूर्व में लगता है और जिसका अर्थ उस संख्या से एक कम होता है । °**ट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] उनसाठ, ५९; (कप्प) । °**त्तरि** स्त्री [**सप्तति**] उनसत्तर, ६९; (कप्प) °**तीस** तीन

[°त्रिंशत्] उनतीस, २६ ; (गाया १, १३) । °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५६; (कप्प) । °पन्न, °वन्न स्त्रीन [पञ्चाशत्] उनपचास, ४६; (जी ३५; पउम १०२, ७०) । देखो **एगूण**।

अउणोणिउत्ति स्त्री [**अपुनर्निवृत्ति**] अन्तिम निवृत्ति, मोक्ष; (अच्चु १०) ।

अउण्ण, **अउन्न** न [**अपुण्य**] १ पाप, (सुर ६, २५) । २ वि. अपवित्र। ३ पुण्य-रहित, पापी; (पउम २८, ११२, सुर २, ५१) ।

अउम देखो **ओम**; (सुभा १४) ।

अउल वि [**अतुल**] असाधारण, अद्वितीय; (उप ७२८ टी; पण्ह १, ४) ।

अउलीन वि [**अकुलीन**] कुल-हीन, कुजाति, संकर, (गा २५३) ।

अउव्व वि [**अपूर्व**] अनोखा, अद्वितीय; (गा ११६) ।

अउस पुं [**दे**] उपासक, पूजारी; (प्रयौ ८२) ।

अए अ [**अये**] आमन्त्रण-सूचक अव्यय; (कप्पू) ।

अओ अ [**अतस्**] १ यहां से लेकर; (सुपा ४७८) । २ इसलिए, इस कारण से ; (उप ७३०) ।

अओ° [**अयस्°**] लोह । °**घण** पुं [**घन-**] लोहे का हथौड़ा "सीसंपि भिदंति अओघणेहिं" (सूअ १, ५, २, १४) । °**मय** वि [°**मय**] लोहे की बनी हुई चीज; (सूअ २, २) । °**मुह** पुं [**मुख**] १-२ इस नाम का अन्तर्द्वीप और उसके निवासी; (ठा ५) । ३ वि. लोहे की माफिक मजबूत मुंह वाला "पक्खीहिं खज्जंति अओमुहेहिं" (सूअ १, ५, २, ४) । °**मुही** स्त्री [°**मुखी**] एक नगरी; (उप ७६४) ।

अओज्झा देखो **अउज्झा**; (प्रति ११५) ।

अंक पुं [**अङ्क**] १ उत्संग, कोला ; (स्वप्न २१६) । २ रत्न की एक जाति; (कप्प) । ३ नौ की एक संख्या "कासी विक्कमवच्छरम्मि य गए बाणंकसुन्नोड्डवे" (सुर १६, २४६) । ४ संख्या-दर्शक चिन्ह, जैसे १, २, ३ः (पण्ण २) । ५ नाटक का एक अंश "सुण्णा मणुस्सभवणाडएसु निज्झाइआ अंका" (धण ४५) । ६ सफेद मणि की एक जाति ; (उत्त ३४) । ७ चिन्ह, निशान; (चंद २०) । ८ मनुष्य के बत्तीस प्रशस्त लक्षणों में से एक; (पण्ह १, ४) । ६ आसन-विशेष; (चंद ४) । °**कण्ड** पुंन. [**काण्ड**] रत्नप्रभा पृथ्वी के खर-काण्ड का एक हिस्सा, जो अंक रत्नों का है ; (ठा १०) । °**अरेल्लुग**, °**करेल्लुअ** पु [°**करेल्लुक**] पानी में होनेवाली एक जातकी वनस्पति ; (आचा) । °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] अंक रेखाओं की विचित्र स्थापना, ६४ कलाओं में एक कला , (कप्प) । °**धर** पुं [**धर**] चन्द्रमा ; (जीव ३) । °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] पांच प्रकार की धाई-माताओं में से एक, जिसका काम बालक को उत्संग में ले उसका जी बहलाना है; (गाया १, १) । °**लिवि** स्त्री [°**लिपि**] अठारह लिपिओं में की एक लिपि, वर्णमाला-विशेष; (सम ३५) । °**वणिय** पुं [°**वणिक्**] अंक-रत्नों का व्यापारी; (राय) । °**वाली** °**ली** स्त्री [°**पालि**, °**ली**,] आलिंगन; (काप्र १६४) । °**हर** देखो °**धर**; (जीव ३)

अंक [**दे अङ्क**] निकट, समीप, पास; (दे १, ५) ।

अंकण न [**अङ्कन**] १ चिहित करना; (आव) । २ बैल आदि पशुओं को लोहे की गरम सलाई आदि से दागना; (पण्ह १, १) । ३ वि. अंकित करनेवाला, गिनती में लानेवाला "अंकणं जोइसस्स... सूरं" (कप्प) ।

अंकणा स्त्री [**अङ्कना**] ऊपर देखो; (गाया १, १७) ।

अंकार पुं [**दे**] सहायता, मदद; (दे १, ६) ।

अंकावई स्त्री [**अङ्कावती**] १ महाविदेह क्षेत्र के रम्य-नामक विजय की राजधानी, (ठा २) । २ मेरु की पश्चिम दिशा में बहती हुई शीतोदा महानदी की दक्षिण दिशा में वर्तमान एक वक्षस्कार पर्वत; (ठा ५, ३) ।

अंकिअ न [**दे**] आलिंगन, (दे १, ११) ।

अंकिअ वि [**अङ्कित**] चिह्नित, निशानवाला; (औप) ।

अंकिल्ल पुं [**दे**] नट, नर्तक, नचवैया; (गाया १, १) ।

अंकुडग पुं [**अङ्कुटक**] नागदन्तक, खूँटी, ताख; (जं १) ।

अंकुर पुं [**अङ्कुर**] प्ररोह, फुनगी; (जी ६) ।

अंकुरिय वि [**अङ्कुरित**] अंकुर-युक्त; जिसमें अकुर उत्पन्न हुए हों वह; (उवा) ।

अंकुस पुं [**अङ्कुश**] १ आंकड़ी, लोहे का एक हथियार जिससे हाथी चलाये जाते हैं "अंकुसेण जहा णागो. धम्मे संपडिवाइओ" (उत्त २२) । २ ग्रह-विशेष (ठा २, ३) । ३ सीता का एक पुत्र, कुस, (पउम ६७, १६) । ४ नियन्त्रण करनेवाला, काबु में रखने वाला, (गउड) । ५ एक देव-विमान; (राज) । ६ पुंन. गुरु-वन्दन का एक दोष; (पव २) ।

अंकुसइय न [**दे. अंकुशित**] अंकुश के आकार वाली चीज,

(दे १, ३८; से ६,६३) ।
अंकुसय पुं [**अङ्कुशक**] देखो **अंकुस** । २ संन्यासी का एक उपकरण, जिससे वह देव-पूजा के वास्ते वृक्ष के पत्रों को काटता है; (औप) ।
अंकुसा स्त्री [**अङ्कुशा**] चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ भगवान् की शासन-देवी; (पव २८) ।
अंकुसिअ वि [**अङ्कुशित**] अंकुश की तरह मुडा हुआ; (से १४, २६) ।
अंकुसी स्त्री [**अङ्कुशी**] देखो **अंकुसा**; (संति १०) ।
अंकेल्लण न [**दे**] घोड़ा आदि को मारने का चाबुक, कौडा, औंगी; (जं ४) ।
अंकेल्लि पुं [**दे**] अशोक-वृक्ष, (दे १,७) ।
अंकोल्ल पुं [**अङ्कोठ**] वृक्ष-विशेष; (हे १, २००) ।
अंग पुं [**अङ्ग**] १ व. इस नामका एक देश, जिसको आजकल विहार कहते हैं; (सुर २, ६७) । २ रामका एक सुभट; (पउम ५९, ३७) । ३ न. आचारांग सूत्र आदि वारह जैन आगम-ग्रन्थ; (विपा २, १) । ४ वेदांग, वेदके शिक्षादि छः अंग; (आचू) । ५ कारण, हेतु; (पव १) । ६ आत्मा, जीव; (भवि) । ७ पुंन, शरीर; (प्रासू ८४) । ८ शरीर के मस्तक आदि अवयव; (कम्म १, ३४) । ९ अ. मित्रता का आमंत्रण, संबोधन; (राय) । १० वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (ठा ४) । °**इ** पुं [°**जित्**] इस नामका एक गृहस्थ, जिसने भगवान् पार्श्वनाथ के पास दीक्षा ली थी; (निर) । °**इसि** पुं [°**र्षि**] चंपा नगरी का एक ऋषि; (आचू) । °**चूलिया** स्त्री [°**चूलिका**] अंग-ग्रन्थों का परिशिष्ट; (पक्खि) । °**च्छहिय** वि [**छिन्नाङ्ग**] जिसका अंग काटा गया हो वह; (सूअ २, २, ६३) । °**जाय** वि [°**जात**] बच्चा, लड़का; (उप ६४८) । °**द** देखो °**य**=°**द**; (ठा ८) । °**पविट्ठ** न [°**प्रविष्ट**] १ वारह जैन अंग-ग्रन्थों में से कोई भी एक; (कम्म १, ६;) २ अंग-ग्रन्थों का ज्ञान (ठा २, १) । °**वाहिर** न [°**वाह्य**] १ अंग-ग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आगम; (आचू) । २ अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन आगमोंका ज्ञान; (ठा २) । °**मंग** न [°**ङ्ग**] १ अंग-प्रत्यंग; (राय) । २ हर एक अवयव; (षड्) । °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] चम्पा नगरी का एक देव-गृह; (भग १, १) । °**मद्द** °**मद्दय** पुं [°**मर्द**, °**मर्दक**] १ शरीर की चंपी करनेवाला नौकर; २ वि. शरीर को मलनेवाला, चंपी करनेवाला; (सुपा १०८; महा; भग ११, १) । °**य** पुं [°**द**] १ वाली-नामक विद्याधर-राज का पुत्र; (पउम १०, १०; ५९, ३७) । २ न. वाजूबंद, कंडुटा; (पण्ह १, ४) । °**य** वि [°**ज**] १ शरीर में उत्पन्न । २ पुं. पुत्र, लड़का; (उप १३४ टी) । °**या** स्त्री [°**जा**] कन्या, पुत्री; (पाअ) । °**रक्ख**, °**रक्खग** वि [°**रक्ष**, °**रक्षक**] शरीर की रक्षा करनेवाला; (सुपा ५२७; इक) । °**राग** °**राय** पुं [°**राग**] शरीर में चन्दनादि का विलेपन; (औप; गा १८९) । °**राय** पुं [°**राज**] १ अंग-देश का राजा; (उप ७६५) । २ अंग देश का राजा कर्ण; (णाया १, १६; वेणी १०४) । °**रिसि** देखो °**इसि** । °**रुह** वि [°**रुह**] देखो °**य**=°**ज**; (सुपा ५१२; पउम ५६, ३२) । °**रुहा** स्त्री [°**रुहा**] पुत्री, लडकी; (सुपा १५०) । °**विज्जा** स्त्री (°**विद्या**) १ शरीर के स्फुरण का शुभाशुभ फल वतलाने वाली विद्या ; (उत्त ८) । २ उस नाम का एक जैन ग्रन्थ; (उत्त ८) । °**वियार** पुं [°**विचार**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (उत १५) । °**संभूय** वि [**संभूत**] संतान, बच्चा; (उप ६४८) । °**हारय** पुं [°**हारक**] शरीर के अवयवों के विक्षेप, हाव-भाव ; (अजि ३१) । °**दाण** न [°**दान**] पुरुषेन्द्रिय, पुरुष-चिन्ह; (निसी) ।
अंग वि [**आङ्ग**] १ शरीर का विकार; (ठा ८) । २ शरीर-संवंधी, शारीरिक; (सुअ २, २) । ३ न. शरीर के स्फुरण आदि विकारों के शुभाशुभ फल को बतलानेवाला शास्त्र, निमित्त-शास्त्र; (सम ४९) ।
°**अंग** वि [**चङ्ग**] सुन्दर, मनोहर; (भवि) ।
अंगइया स्त्री [**अङ्गदिका**] एक नगरी, तीर्थ-विशेष; (उप ५५२) ।
अंगंगीभाव पुं [**अङ्गाङ्गीभाव**] अभेद-भाव, अभिन्नता; "अगंगीभावेण परिणएणन्नतरिसजिणधम्मे" (सुपा २१८) ।
अंगण न [**अङ्गण**] आंगन, चौक; (सुर ३, ७१) ।
अंगणा स्त्री [**अङ्गना**] स्त्री, औरत; (सुर ३,१८) ।
अंगदिआ देखो **अङ्गइया**; (ती) ।
अंगवड्ढण न [**दे**] रोग, विमारी; (दे १, ४७) ।
अंगवलिज्ज न [**दे**] शरीर को मोडना; (दे १, ४२) ।
अंगार पुं [**अङ्गार**] १ जलता हुआ कोयला; (हे १, ४७) । २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष; (आचा) । °**मद्दग** पुं [°**मर्दक**] एक अभव्य जैन-आचार्य;

(उप २५४)। °**वई** स्त्री [°**वती**] सुंसुमार नगर के राजा धुन्धुमार की एक कन्या का नाम (धम्म ८ टी)।

अंगारग } पुं [**अङ्गारक**] १-२ ऊपर देखो; (गा२६१)। ४ पहला महाग्रह;
अंगारय } ३ मंगल-ग्रह; (पराह १,५)। (ठा २)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा ; (पउम ५, २६२)।

अंगारिय वि [**अङ्गारित**] कोयलेकी तरह जला हुआ, विवर्ण; (नाट; आचा)।

अंगाल देखो **अंगार**; "निद्दड्ढंगालनिभ" (पिंड ६७५)।

अंगालग देखो **अंगारग**; (राज)।

अंगालिय न [**दे**] ईख का टुकड़ा; (दे १, २८)।

अंगालिय देखो **अंगारिय**; (आचा)।

अंगि पुं [**अङ्गिन्**] १ प्राणी, जीव; (गण ८)। २ अंग-ग्रन्थो का ज्ञाता; (कप्प)। ३ वि. शरीर-वाला।

अंगिरस न [**अङ्गिरस**] एक गोत्र, जो गोतम-गोत्र की शाखा है; (ठा ७)।

अंगिरस वि [**आङ्गिरस**] १ अंगिरस-गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७)। २ पुं. एक तापस; (पउम ४, ८६)।

अंगीकड } वि [**अङ्गीकृत**] स्वीकृत ; (ठा ५ ; सुपा
अंगीकय } ५२६)।

अंगीकर } सक [**अङ्गी+कृ**] स्वीकार करना। अंगी-
अंगीकुण } करेइ; (महा; नाट)। अगीकरेहि; (स ३०६) संकृ-**अंगीकरेऊण**; (विसे २६४२)।

अंगुअ पुं [**इङ्गुद**] १ वृक्ष-विशेष; २ न. इगुद वृक्ष का फल; (हे १, ८९)।

अंगुट्ठ पुं [**अङ्गुष्ठ**] अंगूठा; (ठा १०) °**पसिण** पुं [°**प्रश्न**] १ एक विद्या; २ 'प्रश्न-व्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन; (ठा १०)।

अंगुट्ठी स्त्री [**दे**] सिरका अवगुण्ठन, घूंघट; (दे १, ६; स २८४)।

अंगुत्थल न [**दे**] अंगुठी, अंगुलीय; (दे १, ३१)।

अंगुब्भव वि [**अङ्गोद्भव**] संतान, बच्चा; (उप २६४)।

अंगुम सक [**पूरय्**] पूर्ति करना, पूरा करना। अगुमइ; (हे ४, ६८)।

अंगुमिय वि [**पूरित**] पूर्ण किया हुआ; (कुमा)।

अंगुरि, °**री** स्त्री [**अंङ्गुलि** °**ली**] उंगली; (गा २७७)।

अंगुल न [**अङ्गुल**] यव के आठ मध्य-भाग के बराबर का एक नाप, मान-विशेष; (भग ३; ७)। °**पोहत्तिय** वि [°**पृथक्त्विक**] दो से लेकर नव अंगुल तक का परिणाम वाला; (जीव १)।

अंगुलि स्त्री [**अङ्गुलि**] उंगली; (कुमा।) °**कोस** पुं [°**कोश**] अंगुलि-त्राण, दास्ताना; (राय)। °**प्फोडण** न [°**स्फोटन**] उगली फोड़ना, कड़ाका करना; (तंदु)।

अंगुलिअ } न [**अङ्गुलीयक**] अंगुठी ; (दे ५, ९;
अंगुलिज्जक } कप्प ; पि २५२)।
अंगुलिज्जग }

अंगुलिणी स्त्री [**दे**] प्रियंगु, वृक्ष-विशेष; (दे १, ३२)।

अंगुली स्त्री [**अङ्गुली**] देखो **अंगुलि**; (कप्प)।

अंगुलीय } पुंन [**अङ्गुलीयक**] अंगुठी; (सुर १०,
अंगुलीयग } ९४) "पायवडिएण सामिय ! समप्पिओ
अंगुलीयय } अंगुलीयओ तीए" (पउम ५४, ६; सुर १
अंगुलेज्जक } १२२; पि २५२ ; पउम ४९, ३५)।
अंगुलेयय }

अंगुवंग } न [**अङ्गोपाङ्ग**] १ शरीर के अवयव;
अंगोवंग } (पगण २३)। २ नख वगैरः शरीर के छोटे छोटे अवयव; "नहकेसमंसुअगुलीओट्ठा खलु अंगोवंगाणि" (उत्त ३)। °**णाम** न [°**नामन्**] शरीर के अवयवों के निर्माण में कारण-भूत कर्म-विशेष; (कम्म १, ३४; ४८)।

अंगोहलि स्त्री [**दे**] शिर को छोड़ कर बाकी शरीर का स्नान; (उप पृ २३)।

अंघो अ [**अङ्ग**] भय-सूचक अव्यय ; (प्रति ३९; प्रयौ २०५)।

अंच सक [**कृष्**] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। ४ ऊठाना। अंचइ ; (हे ४, १८७)। संकृ-**अंचेइत्ता**; (आव)।

अंच सक [**अञ्च्**] पूजना, पूजा करना। अंचए; (भवि)।

अंचल पुं [**अञ्चल**] कपडे का शेष भाग ; (कुमा)।

अंचि पुं [**अञ्चि**] गमन, गति; (भग १५)।

अंचि पुं [**आञ्चि**] आगमन, आना; (भग १५)।

अंचिय वि [**अञ्चित**] १ युक्त, सहित; (सुर ४, ६७)। २ पूजित; (सुपा २१८)। ३ प्रशस्त, श्लाघित; (प्रासू १८)। ४ न. एक प्रकार का नृत्य; (ठा ४, ४; जीव ३)। ५ एक वार का गमन; (भग १५)। °**यचि** पुं [°**ञ्चि**] १ गमनागमन, आना जाना; (भग १५)। २ ऊंचा-नीचा होना; (ठा १०)।

अंचिया स्त्री [**अञ्चिका**] आकर्षण; (स १०२)।

अंछ सक [**कृष्**] १ खींचना "अंछंति वासुदेवं अगड-

तडम्मि ठियं संतं (विसे ७६४) । २ अक. लम्बा होना । वकृ-**अंछमाण**; (विसे ७६५) । प्रयो—अंछावेइ; (गाया १,१) ।

अंछण न [**कर्षण**] खींचाव; (पगह २, ५) ।

अंछिय वि [**दे**] आकृष्ट, खींचा हुआ ; (दे १, १४) ।

अंज सक [**अञ्ज्**] आंजना । कृ-**अंजियव्व**; (स ५४३) ।

अंजण पु [**अञ्जन**] १ पर्वत-विशेष; (ठा ५) । २ एक लोकपाल देव; (ठा ४) । ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर, जो दिग्हस्ती कहा जाता है; (ठा २,३; ८) । ४ वृक्ष-विशेष; (आव) । ५ न. एक जात का रत्न; (गाया १, १) ६ देवविमान-विशेष; (सम ३५) । ७ काजल, कज्जल; (प्रासू ३०) । ८ जिसका सुरमा बनता है ऐसा एक पार्थिव द्रव्य; (जी ४) । ९ आंखको आंजना; (सूअ १, ९) । १० तैल आदि से शरीर की मालिस करना; (राज)। ११ लेप; (स ५८२) । १२ रत्नप्रभा पृथिवी के खर-काण्ड का दशवाँ अंश-विशेष; (ठा १०) । °**केसिया** स्त्री [°**केशिका**] वनस्पति-विशेष; (पगण १७; रायं) । °**जोग** पुं [°**योग**] कला-विशेष; (कप्प) । °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष; (इक) । °**पुलय** पुं [°**पुलक**] १ एक जातिका रत्न; (ठा १०) । २ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (ठा ८) । °**प्पहा** स्त्री [°**प्रभा**] चौथी नरक-पृथ्वी; (इक) । °**रिट्ठ** पुं [°**रिष्ट**] इन्द्र-विशेष; (भग ३,८) । °**सलागा** स्त्री [°**शलाका**] १ जैन-मूर्तिकी प्रतिष्ठा । २ अंजन लगाने की सलाई ; (सूअ १, ५) । °**सिद्ध** वि (°**सिद्ध**) आंख में अंजन-विशेष लगाकर अदृश्य होने की शक्ति वाला; (निसी) । °**सुन्दरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] एक सती स्त्री, हनूमान् की माता; (पउम १५, १२) ।

अंजणइसिआ स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष, श्याम तमाल का पेड़ ; (दे १, ३७) ।

अंजणई स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष ; (पगण १) ।

अंजणईस न [**दे**] देखो **अंजणइसिआ**; (दे २, ३७) ।

अंजणग देखो **अंजण** ।

अंजणा स्त्री [**अंजना**] १ हनूमान् की माता ; (पउम १, ६०) । २ स्वनाम-ख्यात चौथी नरक-पृथिवी; (ठा २; ४) । ३ एक पुष्करिणी; (जं ४) । °**तणय** पुं [°**तनय**] हनूमान्; (पउम ४७, २८) । °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] हनूमान् की माता ; (पउम १८, ५८) ।

अंजणाभा स्त्री [**अञ्जनाभा**] चौथी नरक-पृथिवी; (इक) ।

अंजणिआ स्त्री (**दे**) देखो **अंजणइसिआ**; (दे १, ३७) ।

अंजणिआ स्त्री [**अञ्जनिका**] कज्जल का आधार-पात्र; (सूअ १, ४) ।

अंजलि, °**ली** पुंस्त्री [**अञ्जलि**] १ हाथ का संपुट; (हे १, ३५) । २ एक या दोनों संकुचित हाथों को ललाट पर रखना “ एगेण वा दोहि वा मउलिएहिं हत्थेहि णिडालसंसितेहि अंजली भण्णति” (निसी) । ३ कर-संपुट, नमस्कार रूप विनय, प्रणाम ; (प्रासू ११० ; स्वप्न ६३) । °**उड** पुं [°**पुट**] हाथ का संपुट; (महा) । °**करण** न [°**करण**] विनय-विशेष, नमन ; (दे) । °**पग्गह** पुं [°**प्रग्रह**] १ नमन, हाथ जोड़ना ; (भग १४, ३) । २ संभोग-विशेष ; (राज) ।

अंजस वि (**दे**) ऋजु, सरल ; (दे १, १४) ।

अंजिय वि [**अञ्जित**] आंजा हुआ, अंजन-युक्त किया हुआ ; (से ६, ४८) ।

अंजु वि [**ऋजु**] १ सरल, अकुटिल “अंजुधम्मं जहा तच्चं, जिणाणं तह सुणेह मे ” (सूअ १, ९; १, १, ४, ८) । २ संयम में तत्पर, संयमी “पुढोवि नाइवत्तइ अंजू ” (आचा) । ३ स्पष्ट, व्यक्त; (सूअ २, १) ।

अंजुआ स्त्री [**अञ्जुका**] भगवान् अनन्तनाथ की प्रथम शिष्या; (सम १५२) ।

अंजू स्त्री [**अञ्जू**) १ एक सार्थवाह की कन्या; (विपा १, १०) । २ ‘विपाकश्रुत’ का एक अध्ययन; (विपा १, १) । ३ एक इन्द्राणी; (ठा ८) । ४ ‘ज्ञाता-धर्मकथा’ सूत्र का एक अध्ययन; (णाया १, २) ।

अंठि पुंन [**अस्थि**] हड्डी, हाड; (षड्) । “अहिंअमहुरस्स अंबस्स अजोग्गदाए अगठी ण भक्खीअदि ” (चारु ६) ।

अंड / **अंडअ** / **अंडग** } न [**अण्ड**, °**क**] १ अंडा; (कप्प; औप) । २ अंड-कोश ; (महानि ४) । ३ ‘ज्ञाता धर्मकथा’ सूत्र का तृतीय अध्ययन ; (णाया १, १) । °**कड** वि [°**कृत**] जो अण्डे से बनाया गया हो “बंभणा माहणा एगे, आह अगडकडे जगे” (सूअ १, ३) । °**बंध** पुं [**वन्ध**] मन्दिर के शिखर पर रखा जाता अण्डाकार गोला (गउड) । °**वाणियय** पुं [°**वाणिजक**] अण्डों का व्यापारी; (विपा १, ३) ।

अंडग } वि [**अण्डज**] १ अण्डे से पैदा होनेवाले जंतु;
अंडय } जैसे पक्षी, सांप, मछली वगैरः; (ठा ३, १; ८) । २ रेशम का धागा ; ३ रेशमी वस्त्र; (उत्त २६) । ४ शण का वस्त्र; (सुत्र २, ३) ।

अंडय पुं [**दे, अण्डज**] मछली, मत्स्य; (दे १, १६) ।

अंडाउय वि [**अण्डज**] अण्डे से पैदा होनेवाला ; (पउम १०२, ६७) ।

अंत पुं [**अन्त**] १ स्वरूप, स्वभाव; (से ६; १८) । २ प्रान्त भाग; (से ६, १८) । ३ सीमा, हद; (जी ३३) । ४ निकट, नजदीक; (विपा १, १) । ५ भग, विनाश; (विसे ३४५४, जी ४८) । ६ निर्णय, निश्चय, (ठा ३) । ७ प्रदेश, स्थान "एगंतमंतमवक्कमइ" (भग ३, २) । ८ राग और द्वेष; "दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणो" (आचा) । ९ रोग, विमारी; (विसे ३४५४) । १० वि. इन्द्रियों को प्रतिकूल लगनेवाली चीज, असुन्दर, नीरस- वस्तु; (पण्ह २, ४) । ११ मनोहर, सुन्दर; (से ६, १८) । १२ नीच, क्षुद्र, तुच्छ; (कप्प) । **°कर** वि [**°कर**] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला; (सुत्र १, १५) । **°करण** वि [**°करण**] नाशक; (पण्ह १, ६) । **°काल** पुं (**°काल**) १ मृत्यु-काल; २ प्रलय-काल (से ५, ३२) । **°किरिया** स्त्री [**°क्रिया**] मुक्ति, संसार का अन्त करना; (ठा ४, १) । **°कुल** न [**°कुल**] क्षुद्र कुल; (कप्प) **°गड** वि [**°कृत्**] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला; (उप ४६१) । **°गडदसा** स्त्री [**°कृद्दशा**] जैन अंग-ग्रन्थों में आठवाँ अंग-ग्रन्थ, (अणु १) । **°चर** वि (**°चर**) भिक्षा में नीरस पदार्थों की ही खोज करनेवाला; (पण्ह २, १) ।

अंत वि [**अन्त्य**] अन्तिम, अन्त का; (पण्ण १५) । **°क्खरिया** स्त्री [**°क्षरिका**] १ ब्राह्मी लिपि का एक भेद; (पण्ण १) । २ कला-विशेष; (कप्प) ।

अंत न [**अन्त्र**] आंत; (सुपा १८२, गा ५८५) ।

अंत अ [**अन्तर्**] मध्य में, बीच में; (हे १, १४) । **°उर** न [**°पुर**] देखो **अंतेउर**; (नाट) । **°करण**, **°क्करण** [**°करण**] मन, हृदय "करुणारसपरवसंतकरणेण" (उप ६ टी; नाट) । **°ग्गय** वि [**°गत**] मध्यवर्ती, बीच-वाला; (हे १, ६०) । **°द्धा** स्त्री [**°धा**] १ तिरोधान; २ नाश; (आचू) । **°द्धाण** न [**°धान**] अदृश्य होना, तिरोहित होना; (उप १३६ टी) । **°द्धाणिया** स्त्री [**धानिका**] जिससे अदृश्य हो सके ऐसी विद्या; (सुत्र २, २) । **°द्धाभूअ** वि (**धाभूत**) नष्ट, विगत "नट्ठेति वा विगतेति वा अंतद्धाभूतेति वा एगट्ठा" (आचू) । **°प्पाअ** पुं [**°पात**] अन्तर्भाव, समावेश; (हे २, ७७) । **°भाव** पुं [**°भाव**] समावेश; (विसे) । **°मुहुत्त** न [**°मुहूर्त**] कुछ कम मुहूर्त, न्यून मुहूर्त; (जी १४) । **°रद्धा** स्त्री [**°धा**] १ तिरोधान ; २ नाश "वुड्ढी सइ-अन्तरद्धा" (श्रा १६) । **°रद्धा** स्त्री (**°अद्धा**) मध्य-काल, बीच का समय; (आचा) । **°रप्प** पुं [**°आत्मन्**] आत्मा, जीव ; (हे १.१४) । **°रहिय**, **°रिहिद** (शौ) वि [**°हित**] १ व्यवहित, अंतराल युक्त; (आचा) । २ गुप्त, अदृश्य ; (सम ३६; उप १६६ टी; अभि १३०) । **°वेइ** पुं [**°वेदि**] गंगा और यमुना के बीचका देश ; (कुमा) ।

°अंत वि [**कान्त**] सुन्दर, मनोहर; (से १, ५६) ।

अंतअ वि [**आयत्**] आता हुआ ; (से ६, ४६) ।

अंतअ वि [**अन्तग**] पार-गामी, पार-प्राप्त ; (से ६,१८) ।

अंतअ वि [**अन्तद्**] १ अविनाशी, शाश्वत ; २ जिसकी सीमा न हो वह ; (से ६, १८) ।

अंतअ } वि [**अन्तक**] १ मनोहर, सुन्दर ; (से
अंतग } ६ १८) । २ अन्तर्गत, समाविष्ट ; (सुत्र १ १५) । ३ पर्यन्त, प्रान्त भाग "जे एवं परिभासंति अन्तए ते समाहिए" (सूत्र १,३) । ४ यम, मृत्यु ; (से ६,१८; उप ६६६ टी) । "समागमं कंखति अन्तगस्स" (सूत्र १,७) ।

अंतग वि [**अन्तग**] १ पार-गामी । २ दुस्त्यज, जो कठिनाई से छोड़ा जा सके "चिचाण अन्तगं सोयं निरवेक्खो परिव्वए" (सूत्र १,६) ।

°अंतण न [**यन्त्रण**] बन्धन, नियन्त्रण; (प्रयौ २४) ।

अंतर न [**अन्तर**] १ मध्य, भीतर "गामंतरं पविट्ठो सो" (उप ६ टी) । २ भेद, विशेष, फर्क ; (प्रासू १६८) । ३ अवसर, समय ; (गाभा १,२) । ४ व्यवधान ; (जं १) । ५ अवकाश, अन्तराल ; (भग ७,८) । ६ विवर, छिद्र ; (पाअ) । ७ रजोहरण ; ८ पात्र ; ९ पुं. आचार, कल्प ; १० सूते के कपड़े पहननेका आचार, सौत कल्प ; (कप्प) । **°कप्प** पुं (**°कल्प**) जैन साधु का एक आत्मिक प्रशस्त आचरण ; (पंचू) **°कंद**

पुं [°कन्द] कन्द की एक जाति, वनस्पति-विशेष; (पराण १)। °करण न [°करण] आत्मा का शुभ अध्यवसाय-विशेष ; (पंच)। °गिह न [°गृह] १ घर का भीतरी भाग; २ दो घरों के बीच का अंतर ; (बृह ३)। °णई स्त्री [नदी] छोटी नदी ; (ठा ६)। °दीव पुं [°द्वीप] १ द्वीप-विशेष; (जी २३)। २ लवण समुद्र के बीच का द्वीप (पराण १)। °सत्तु पुं [°शत्रु] भीतरी शत्रु, काम-क्रोधादि ; (सुपा ८५)।

अंतर सक [अन्तरय्] व्यवधान करना, बीच में डालना। अंतरेहि अंतरेमि ; (विक्र १३९)।

अंतर वि [आन्तर] १ अभ्यन्तर, भीतरी " सयलसुराणंपि अंतरो अप्पाणो " (अच्चु २०)। २ मानसिक; (उवर ७१)।

अंतरंग वि [अन्तरङ्ग] भीतरी ; (विसे २०२७)।

अंतरंजी स्त्री [आन्तरञ्जी] नगरी-विशेष ; (विसे २३०३)।

अंतरा अ [अन्तरा] १ मध्य में, बीचमें; (उप ६५४)। २ पहले, पूर्व में ; (कप्प)।

अंतराइय न [आन्तरायिक] १ कर्म-विशेष, जो दान आदि करने में विघ्न करता है ; (ठा २)। २ विघ्न, रुकावट, (पराह २,१)।

अंतराईय न [अन्तरायीय] ऊपर देखो ; (सुपा ६०१)।

अंतराय पुंन. [अंतराय] देखो अन्तराइय ; (ठा २,४; स २०)

अंतराल पुं [अन्तराल] अंतर, बीच का भाग ; (अभि ८२)।

अंतरावण पुंन [अन्तरापण] दुकान, हाट; (चारु ३)।

अंतरावास पुं [अन्तरवर्ष, अन्तरावास] वर्षा-काल, (कप्प)।

अंतरिक्ख पुंन [अन्तरिक्ष] अन्तराल, आकाश ; (भग १७, १०, स्वप्न ७०)। °जाय वि [°जात] जमीन के ऊपर रही हुई प्रासाद, मंच आदि वस्तु ; (आचा २, ५)। °पासणाह पुं [°पार्श्वनाथ] खानदेश में अकोला के पासका एक जैन-तीर्थ और वहां की भगवान् श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति ; (ती)

अंतरिक्ख वि [आन्तरिक्ष] १ आकाश-संबंधी. आकाश का; (जी ५)। २ ग्रहों के परस्पर युद्ध और भेद का फल बतलानेवाला शास्त्र ; (सम ४६)।

अंतरिज्ज न [अंतरीय] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ शय्या का नीचला वस्त्र " अंतरिज्जं णाम णियंसणं, अहवा अंतरिज्जं नाम सेज्जाए हेट्ठिल्लं पोत्तं " (निसी १५)।

अंतरिज्ज न [दे] करधनी, कटीसूत्र ; (दे १, ३५)।

अंतरिज्जिया स्त्री [अन्तरीया] जैनीय वेशवाटिक गच्छ की एक शाखा ; (कप्प)।

अंतरित } वि [अन्तरित] व्यवहित, अंतरवाला ;
अंतरिय } (सुर ३, १४३ ; से १, २७)।

अंतरिया स्त्री [दे] समाप्ति, अंत ; (जं २)।

अंतरिया स्त्री [अन्तरिका] छोटा अन्तर, थोड़ा व्यवधान; (राय)।

अंतरेण अ [अन्तरेण] विना, सिवाय ; (उत्त १)।

अंतलिक्ख देखो अंतरिक्ख; (णाया १, १; चारु ७)।

°**अंति** देखो पंति ; (से ६, ६६)।

अंतिम वि [अन्तिम] चरम, शेष, अन्त्य ; (ठा १)।

अंतिय न [अन्तिक] १ समीप, निकट ; (उत्त १)। २ अवसान, अंत "अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्सेव अंतिया" (आचा १, ८)। ३ अन्तिम, चरम ; (सूत्र २, २)।

अंतीहरी स्त्री [दे] दूती; (दे १, ३५)।

अंतेआरि वि [अन्तश्चारिन्] बीच में जानेवाला, बीचक; (हे १, ६०)।

अंतेउर न [अन्तःपुर] १ राज-स्त्रीओं का निवास-गृह। २ राणी ; " सणंकुमारो वि तेसिं वंदणत्थं संतेउरो गओ तमुज्जाणं " (महा)।

अंतेउरिगा } स्त्री [आन्तःपुरिकी, °री] अन्तःपुर में
अंतेउरिया } रहनेवाली स्त्री राज्ञी; (उप ६ टी; सुपा
अंतेउरी } २२८; २८६)। २ रोगी का नाम-मात्र लेने से उसको नीरोग बनानेवाली एक विद्या; (वव ५)।

अंतेल्ली स्त्री [दे] १ मध्य, बीच ; २ उदर, पेट ; ३ कल्लोल , तरंग, (दे १, ५५)।

अंतेवासि वि [अन्तेवासिन्] शिष्य ; (कप्प)।

अंतेवुर देखो अंतेउर; (प्रति ५७)।

अंतो अ [अन्तर्] बीच, भीतर ; " गामंतो संपत्ता " (उप ६ टी; सुर ३, ७४)। °खरिया स्त्री [°खरिका] नगर में रहनेवाली वेश्या; (भग १५)। °गइया स्त्री [°गतिका] स्वागत के लिए सामने जाना " सव्वाए विभूईए अंतोगइयाए तणयस्स " (सुर १५, १६१)।

°**गय** वि [°**गत**] मध्यवर्ती, समाविष्ट; (उप ९८६ टी)। °**णिअंसणी** स्त्री [°**निवसनी**] जैन साध्वीओं को पहनने का एक वस्त्र; (वृह ३)। °**दहण** न [°**दहन**] हृदय-दाह; (तंदु)। °**मज्झोवसाणिय** पुं [°**मध्यावसानिक**] अभिनय का एक भेद; (राय)। °**मुहुत्त** न [°**मुहूर्त**] कम मुहूर्त, ४८ मिनिट से कम समय; (कप्प)। °**वाहिणी** स्त्री [°**वाहिनी**] क्षुद्र नदी, (ठा २, ३)। °**वीसंभ** पुं [°**विश्रम्भ**] हार्दिक विश्वास; (हे १, ६०)। °**सल्ल** न [°**शल्य**] १ भीतरी शल्य, घाव; (ठा ४)। २ कपट, माया; (औप)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] घरका भीतरी भाग 'कोलालभंडं अंतोसालाहिंतो वहिया नीणेइ" (उवा, पि ३४३)। °**हुत्त** वि [°**मुख**] भीतर, "अंताहुत्तं डज्झइ जायासुण्णे घरे हलिअउत्तो" (गा ३७३)।

अंतोहुत्त वि [**दे**] अधोमुख, औंधा मुंह वाला; (दे १, २१)।

अंत्रडी (अप) स्त्री [**अन्त्र**] आंत, आंतो; (हे ४, ४४५)।

°**अंद** पुं [**चन्द्र**] १ चन्द्रमा, चांद "पसुवइणो रोसारुणपडिमासंकंतगोरिमुहअंदं" (गा १)। २ कपूर; (से ६, ४७)। °**राअ** पुं (°**राग**) चन्द्रकान्त मणि; (से ६, ४७)।

°**अंदरा** स्त्री [**कन्दरा**] गुफा; (से ६, ४७)।

°**अंदल** पुं [**कन्दल**] वृक्ष-विशेष; (से ७, ४७)।

°**अंदावेदि** (शौ) देखा **अंतावेइ**; (हे ४, २८६)।

अंदु, **अंदुया** स्त्री [**अन्दु**] श्रृङ्खला, जंजीर; (औप, स ५३०)।

अंदेउर (शौ) देखो **अंतेउर**; (हे ४, २६१)।

अंदोल अक [**अन्दोल्**] १ हिंचकना, झूलना। २ कंपना, हिलना। ३ संदिग्ध होना "अंदोलइ दोलासुव्व माणो गरुओवि विलयाणं" (स ५२१)। वकृ—**अंदोलंत**, **अंदोलिंत**, **अंदोलमाण**; (से ८, ५१, ११, २५; सुर ३, ११९)।

अंदोल सक [**अन्दोलय्**] कंपाना, हिलाना। वकृ—**अंदोलंत**; (सुर ३, ६७)।

अंदोलग पुं [**आन्दोलक**] हिंडोला; (राय)।

अंदोलण न [**आन्दोलन**] १ हिंचकना, झूलना; (सुर ४, २२५)। २ हिंडोला; ३ मार्ग-विशेष, (सूअ १, ११)।

अंदोलय देखो **अंदोलग**; (सुर ३, १७५)।

अंदोलि वि [**आन्दोलिन्**] हिलानेवाला, कंपानेवाला; (गा २३७)।

अंदोलिर वि [**आन्दोलितृ**] झुलनेवाला; (सुपा ७८)।

अंदोल्लण देखो **अंदोलण**।

अंध वि [**अन्ध**] १ अंधा, नेत्र-हीन; (विपा १, १)। २ अज्ञान, ज्ञान-रहित; "एए णं अंधा मूढा तमप्पइट्ठा" (भग ७, ७)। °**कंटइज्ज** न [°**कण्टकीय**) अंध पुरुष के कंटक पर चलने के माफिक अविचारित गमन करना; (आचा)। °**तम** न [°**तमस**] निविड अन्धकार; (सूअ १, ५)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (वृह ४)।

अंध पुं.व. [**अन्ध्र**] इस नाम का एक देश; (पउम ९८,६७)।

अंध वि [**आन्ध्र**] अन्ध्र देश का रहनेवाला; (पण्ह १,१)।

अंधंधु पुं [**दे**] कूप, कुँआ; (दे १,१८)।

अंधकार देखा **अंधयार**; (चंद ४)।

अंधग पुं [**दे**] वृक्ष, पेड; (भग १८, ४)। °**वण्हि** पु [**वह्नि**] स्थूल अग्नि; (भग १८,४)।

अंधग देखो **अंध**; (भग १८, ४)। °**वण्हि** पु [°**वह्नि**] सूक्ष्म अग्नि; (भग १८, ४)। °**वण्हि** पुं (°**वृष्णि**) यदुवंश का एक राजा, जो समुद्रविजयादि के पिता था; (अंत २)।

अंधय, **अंधयग** पुं [**अन्धक**] १ अंधा, नेत्र-हीन; (पण्ह १, २)। २ वानर-वंश का एक राज-कुमार; (पउम ६,१८६)।

अंधयार पुंन [**अन्धकार**] अंधेरा, अंधकार; (कप्प, स ४२९)। °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] कृष्ण-पक्ष; (सुज्ज १३)।

अंधयारण न [**अन्धकार**] अन्धेरा; (भवि)।

अंधयारिय वि [**अन्धकारित**] अंधकार-वाला; (से १,१५; ५३)।

अंधरअ, **अंधल** वि [**अन्ध**] अंधा, नेत्र-हीन; (गा ७०४, हे २, १७३)।

अंधलरिल्ली स्त्री [**अन्धयित्री**] अंध बनानेवाली एक विद्या; (सुपा ४२८)।

अंधार पुं [**अन्धकार**] अंधेरा; (ओघ १११;२७०)।

अंधारिय वि [**अन्धकारित**] अंधकार वाला; (सुपा ५४, सुर ३,२३०)।

अंधाव सक [अन्धय्] अंधा करना। अंधावेइ ; (विक ८४)।

अंधिआ स्त्री [अन्धिका] द्यूत-विशेष; (दे २.१)।

अंधिलग वि [अन्ध] अन्धा, जन्मांध, (पण्ह ३, ५)।

अंधीकिद (शौ) वि [अन्धीकृत] अंध किया हुआ ; (स्वप्न ४९)।

अंधु पुं [अन्धु] कूप कुँआ ; (प्रामा, दे १ १८)।

अंधेलग देखो **अंधिलग** ; (पिंड)।

°**अंप** पुं [कम्प] कंपन ; (से ५,३२)।

अंब पुं [अम्ब] एक जात के परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवों को दुख देते हैं , (सम २८)।

अंब पुं [आम्र] १ आम का पेड ; २ न. आम, आम्र-फल ; (हे १, ८४)। °**गट्ठिय** स्त्री [दे] आम की आंटी गुठली ; (निचू १५)। °**चोयग** न [दे] १ आम का रुंछा ; (निचू १५)। २ आम की छाल, (आचा २,७,२)। °**डगल** न [दे] आम का टुकड़ा ; (निचू १५)। °**डालग** न [दे] आम का छोटा टुकड़ा ; (आचा २, ७, २)। °**पेसिया** स्त्री [पेशिका] आम का लम्बा टुकड़ा ; (निचू १५)। °**भित्त** न [दे] आम का टुकड़ा ; (निचू १५)। °**सालग** न [दे] आम की छाल ; (निचू १५)। °**सालवण** न [°शालवन] चैत्य-विशेष ; (राय)।

अंब न [अम्ल] १ तक्र, मट्ठा; (जं ३)। २ खट्टा रस ; ३ खट्टी चीज ; (विसे)। ४ वि. निष्ठुर वचन बोलने वाला ; (बृह १)।

अंब वि [आम्ल] १ खट्टी वस्तु ; २ मट्ठे से संस्कृत चीज ; (जं ३)।

°**अंब** वि [ताम्र] लाल, रक्त-वर्ण वाला ; (से ३,३४)।

अंबग देखो **अंब**=आम्र, (अणु) °**ट्ठिया** स्त्री [°ास्थि] आम की गुठली ; (अणु)।

अंबट्ठ पुं [अम्बष्ठ] १ देश-विशेष ; (पउम ९८,६५)। २ जिसका पिता ब्राह्मण और माता वैश्य हो वह ; (सूत्र १,९)।

अंबड पुं [अम्बड] १ एक परिव्राजक, जो महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर मोक्ष जायगा , (औप)। २ भगवान् महावीर का एक श्रावक, जो आगामी चौविसी में २२ वाँ तीर्थंकर होगा ; (ठा ९)।

अंबड वि [दे] कठिन ; (दे १,१६)।

अंबधाई स्त्री [अम्बाधात्री] धाई माता; (सुपा २६८)।

अंबमसी स्त्री [दे] कठिन और वासी कनिक ; (दे १,३७)।

अंबय देखो **अंब** ; (सुपा ३३४)।

अंबर न [अम्बर] १ आकाश ; (पाअ ; भग २,२)। २ वस्त्र, कपडा ; (पाअ ; निचू १)। °**तिलय** पुं (°तिलक) पर्वत-विशेष ; (आव)। °**वत्थ** न [°वस्त्र] स्वच्छ वस्त्र ; (कप्प)।

अंबरिस पुन [अम्बरिष] १ भट्टी, भाठा; (भग ३,६)। २ कोष्ठक ; (जीव ३)। ३ पुं. नारक-जीवों को दुःख देनेवाले एक प्रकार के परमाधार्मिक देव ; (पव १८०)।

अंबरिसि पुं [अम्बऋषि] १ ऊपर का तीसरा अर्थ देखो ; (सम २८)। २ उज्जयिनी नगरी का निवासी एक ब्राह्मण ; (आव)।

अंबरीस देखो **अंबरिस**।

अंबरीसि देखो **अंबरीसि**।

अंबसमिआ } देखो **अवमसी**।
अंबसमी }

अंबहुंडी स्त्री [अम्बहुण्डी] एक देवी ; (महानि २)।

अंबा स्त्री [अम्बा] १ माता, मा; (स्वप्न २२४)। २ भगवान् नेमिनाथ की शासन-देवी. (संति १०)। ३ वल्ली-विशेष , (पण्ण १)।

अंबाड सक [खरण्ट्] खरडना, लेप करना; "चमडेति खरण्टेति अंबाडेति ति वुत्तं भवति" (निचू ४)।

अंबाड सक [तिरस् + कृ] उपालभ देना, तिरस्कार करना "तओ हक्कारिअ अंबाडिआ भणिआ य" (महा)।

अंबाडग } पुं [आम्रातक] १ आमडा का ; (पण्ण १ ; पउम ४२, ६)। २ न. आमला का फल ; (अनु ६)।
अंबाडय }

अंबाडिय वि [तिरस्कृत] १ तिरस्कृत ; (महा)। २ उपालब्ध ; (स ५१२)।

अंबिआ स्त्री [अम्बिका] १ भगवान् नेमिनाथ की शासन-देवी; (ती १०)। २ पांचवें वासुदेव की माता ; (पउम २०,१८४)। °**समय** पुं [°समय] गिरनार पर्वत पर का एक तीर्थ स्थान ; (ती ४)।

अंबिर न [आम्र] आम का फल ; (दे १,१५)।

अंबिल पुं [आम्ल] १ खट्टा रस ; (सम ४१)। २ वि. खटाई वाली चीज, खट्टी वस्तु ; (ओघ ३४०)। ३

(d) $2x - 3y = 0$

नामकर्म-विशेष ; (कम्म १, ४१) ।

अंबिलिया स्त्री [**अम्लिका**] १ इम्ली का पेड़ ; (उप १०३१ टी) । २ इम्ली का फल ; (श्रा २०) ।

अंबु न [**अम्बु**) पानी, जल; (पाश्र) । °**अ, °ज** न [°**ज**] कमल, पद्म ; (अच्चु ५५ ; कुमा) । °**णाह** पुं [**नाथ**] समुद्र ; (वव ६) । °**रुह** न [°**रुह**] कमल ; (पाश्र) । °**वह** पुं [°**वह**] मेघ, वारिस ; (गउड) । °**वाह** पुं [°**वाह**] मेघ, वारिस ; (गउड) ।

अंबुपिसाअ पुं [**दे**] राहु ; (गा ८०४) ।

अंबुसु पुं [**दे**] श्वापद जन्तु विशेष, हिंसक पशु-विशेष, शरभ ; (दे १,११) ।

अंबेट्टिआ } स्त्री [**दे**] एक प्रकार का जूआ, मुष्टि-द्यूत ;
अंबेट्टी } (दे १, ७)

अंबेसि पुं [**दे**] द्वार-फलह, दरवाजा एक अंश ; (दे १,८) ।

अंबोच्ची स्त्री [**दे**] फूलों को विननेवाली स्त्री ; (दे १,६ ; नाट) ।

अंभ पुं [**अम्भस्**] पानी, जल ; (श्रा १२) ।

अंभु (अप) पुं [**अश्मन्**] पत्थर, पाषाण ; (षड्) ।

अंभो पुं [**अम्भस्**] पानी, जल । °**अ** न [°**ज**] कमल; दे ७, ३८) । °**इणी** स्त्री [°**जिनी**] कमलिनी, पद्मिनी; (मै ६१) । °**निहि** पुं [°**निधि**] समुद्र ; (श्रा १२) । °**रुह** न [°**रुह**] कमल, पद्म, " कुभंभोरुह-सरजलनिहिणो, दिव्वविमाणरयणगणसिहिणो" (उप ६ टी) ।

अंस पुं [**अंश**] १ भाग, अवयव, खंड, टुकडा; (पाश्र) । २ भेद, विकल्प ; (विसे) । ३ पर्याय, धर्म, गुण ; (विसे) ।

अंस } पुं [**अंस**] कान्ध, कंधा ; (णाया १, १८;
अंसलय } तंदु) ।

अंसि देखो **अस=अस्** ।

अंसि स्त्री [**अश्रि**] १ कोण, कोना ; (उप पृ ६८) । २ धार, नौक ; (ठा ८) ।

अंसिया स्त्री [**अंशिका**] भाग, हिस्सा ; (बृह ३) ।

अंसिया स्त्री [**अर्शिका**] १ ववासीर का रोग; (भग १६, ३) । २ नासिका का एक रोग ; (निचू ३) । ३ फुनसी, फोडा ; (निचू ३) ।

अंसु पुं [**अंशु**] किरण ; (लहुअ ८) । °**मालि** पुं (°**मालिन्**) सूर्य, सूरज ; (रयण १) ।

अंसु } न [**अश्रु**] आंसु, नेत्र-जल ; (हे १, २६ ;
अंसुय } कुमा) ।

अंसुय न [**अंशुक**] १ वस्त्र. कपड़ा; (से ६, ८२) । २ बारीक वस्त्र ; (बृह २) । ३ पोषाक, वेश; (कप्प) ।

अंसोत्थ देखो **अस्सोत्थ**; (पि ७४, १५२, ३०६) ।

अंहि पुं [**अंहि**] पाद, पाँव ; (कप्पू) ।

अकइ वि [**अकति**] असंख्यात, अनन्त ; (ठा ३) ।

अकंड देखो **अयंड** ; (गा ६६५) ।

अकंडतलिम वि [**दे**] १स्नेह-रहित ; २ जिसने शादी न की हो वह ; (दे १,६०) ।

अकंपण वि [**अकम्पन**] १ कंप-रहित । २ पुं. रावण का एक पुत्र ; (से १४,७०) ।

अकंपिय वि [**अकम्पित**] १ कम्प-रहित । २ पुं. भगवान् महावीर का आठवाँ गणधर ; (सम १६) ।

अकज्ज देखो **अकय=अकृत्य**; (उव) ।

अकण्ण } वि [**अकर्ण**] १ कर्ण-रहित । २-३ पुं.
अकन्न } स्वनाम-ख्यात एक अंतर्द्वीप और उसमें रहने-वाला ; (ठा ४,२) ।

अकप्प पुं [**अकल्प**] अयोग्य आचार, शास्त्रोक्त विधि-मर्यादा से बहार का आचरण ; (कप्प) ।

अकप्प वि [**अकल्प्य**] अनाचरणीय, शास्त्र-निषिद्ध आहार-वस्त्र आदी अग्राह्य वस्तु; (वव १) ।

अकप्पिय पुं [**अकल्पिक**] जिसको शास्त्र का पूरा २ ज्ञान न हो ऐसा जैन साधु ; (वव १) ।

अकप्पिय देखो **अकप्प=अकल्प्य** ; (दस ५) ।

अकम वि [**अक्रम**] १ क्रम-रहित; २ क्रिवि. एक साथ; (कुमा) ।

अकम्म } न [**अकर्मन्**, °**क**] १ कर्म का अभाव ;
अकम्मग } (बृह १) । २ पुं. मुक्त, सिद्ध जीव; (आचा) । ३ वि. कृषि-आदि कर्म-रहित (देश, भूमि वगैरः); (जी २४) । °**भूमग, °भूमय** वि [°**भूमक**] अकर्म-भूमि में उत्पन्न होने वाला ; (जीव १) । °**भूमि, °भूमी** स्त्री [°**भूमि, भूमी**] जिस भूमि में कल्पवृक्षों से ही आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होनेसे कृषि वगैरः कर्म करने की आवश्यकता नही है वह, भोग-भूमि ; (ठा ३,४) । °**भूमिय** वि [°**भूमिज**] अकर्म-भूमि में उत्पन्न ; (ठा ३,१) ।

अकम्हा अ [**अकस्मात्**] अचानक, निष्कारण; (सुपा ५६६) ।
अकय वि [**अकृत**] नहीं किया हुआ ; (कुमा) । °**मुह** वि [°**मुख**] अपठित, अशिक्षित ; (बृह ३) । °**त्थ** वि [°**ार्थ**] असफल; (नाट) ।
अकय वि [**अकृत्य**] १—२ करने को अयोग्य या अशक्य । ३ न. अनुचित काम । °**कारि** वि [°**कारिन्**] अकृत्य को करनेवाला ; (पउम ८०,७१) ।
अकय्य (मा) ऊपर देखो ; (नाट) ।
अकरण न [**अकरण**] १ नहीं करना , (कस) । २ मैथुन "जइ सेवति अकरणं पंचण्हवि बाहिरा हुंति" (वव ३) ।
अकाइय वि [**अकायिक**] १ शारीरिक चेष्टा से रहित । २ पुं. मुक्तात्मा ; (भग ८,२) ।
अकाम पुं [**अकाम**] १ अनिच्छा ; (सूअ २, ६) । २ वि. इच्छा-रहित, निष्काम; (सुपा २०६) । °**णिज्जरा** स्त्री [°**निर्जरा**] कर्म-नाश की अनिच्छा से, बुभुक्षा आदि कष्टों को सहन करना ; (ठा ४, ४) ।
अकामग } [**अकामक**] ऊपर देखो । ३ अवांछ-
अकामय } नीय, इच्छा करने को अयोग्य ; (पण्ह १, १; णाया १, १) ।
अकामिय वि [**अकामिक**] निराश ; (विपा १, १) ।
अकाय वि [**अकाय**] १ शरीर-रहित । २ पुं. मुक्तात्मा; (ठा २, ३) ।
अकार पुं [**अकार**] 'अ' अक्षर, प्रथम स्वर वर्ण; (विसे ४६५) ।
अकारग पुं [**अकारक**] १ अरुचि, भोजन की अनिच्छा रूप रोग; (णाया १, १३) । २ वि. अकर्ता; (सूअ १, १) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**) आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला ; (सूअ १, १) ।
अकासि अ [**दे**] निषेध-सूचक अव्यय, अलम्, "अकासि लज्जाए" (दे १, ८) ।
अकिंचण वि (**अकिञ्चन**) १ साधु, मुनि, भिक्षुक; (पण्ह २, ५) । २ गरीब, निर्धन, दरिद्र; (पाअ) ।
अकिट्ठ वि (**अकृष्ट**) नहीं जोती हुई जमीन "अकिट्ठजाय-" (पउम ३३, १४) ।
अकिट्ठ वि [**अक्लिष्ट**] १ क्लेश-रहित, बाधा-रहित ; "पेच्छामि तुज्झ कंतं, संगामे कइवएसु दियहेसु । मह नाहेण विणिहयं रामेण अकिट्ठधम्मेणं" (पउम ५३,५२) ।
अकिरिय वि [**अक्रिय**] १ आलसु, निरुद्यम । २ अशुभ व्यापार से रहित; (ठा ७) । ३ परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक, (णंदि) । °**ाय** वि [°**ात्मन्**] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला, सांख्य; (सूअ १, १०) ।
अकिरिया स्त्री [**अक्रिया**] १ क्रिया का अभाव ; (भग २६, २) । २ दुष्ट क्रिया, खराब व्यापार ; (ठा ३, ३) । ३ नास्तिकता; (ठा ८) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक; (ठा ४, ४) ।
अकीरिय देखो **अकिरिय** ; "जे कइ लोगम्मि अकीरियाया; अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसंति" (सूअ १, १०) ।
अकुइया स्त्री [**अकुचिका**] देखो **अकुय** ।
अकुओभय वि [**अकुतोभय**] जिसको किसी तर्फ से भय न हो वह, निर्भय ; (आचा) ।
अकुंठ वि [**अकुण्ठ**] अपने काय में निपुण (गउड) ।
अकुय वि [**अकुच**] निश्चल, स्थिर; (निचू १) । स्त्री— **अकुइया** ; (कप्प) ।
अकोप्प वि [**अकोप्य**] रम्य, सुन्दर . (पण्ह १, ४) ।
अकोप्प पुं [**दे**] अपराध, गुनाह ; (षड्) ।
अकोस देखो **अक्कोस**=अक्रोश ।
अकोसायंत वि [**अकोशायमान**] विकसता हुआ 'रविकिरणतरुणबोहियअकोसायंतपउमगंभीरवियडणाभे" (औप)।
अक्क पुं [**अर्क**] १ सूर्य सूरज ; (सुर १०, २२३) । २ आक का पेड ; (प्रासू १६८) । ३ सुवर्ण, सोना "जेण अन्नुन्नसरिसो विहिओ रयणक्क-संजोगो" (रयण ५४) । ४ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, २) । °**तूल** न [°**तूल**] आक की रुई ; (पण्ण १) । °**तेअ** पुं [°**तेजस्**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४६) । °**बोंदीया** स्त्री [°**बोन्दिका**] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १) ।
अक्क पुं [**दे**] दूत, संदेश-हारक ; (दे १, ६) ।
°**अक्क** देखो **चक्क**; (गा ५३०. से १, ५) ।
अक्कअ वि [**अकृत**] नहीं किया गया ; °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] जो पहले कभी न किया गया हो; (में १२, ५०) ।
अक्कंड देखो **अकंड**; (आउ ५३) ।
अक्कंत वि [**आक्रान्त**] १ बलवान् के द्वारा दबाया हुआ. (णाया १, ८) । २ घेरा हुआ, ग्रस्त; (आचा) । ३ परास्त अभिभूत; (सूअ १, १, ४) । ४ एक

जाति का निर्जीव वायु; (ठा ५, ३) । ५ न. आक्रमण, उल्लंघन; (भग १, ३) । °दुक्ख वि [°दुःख] दुःख से दवा हुआ; (सूअ १, १, ४) ।

अक्कंत वि [दे] वड़ा हुआ, प्रवृद्ध; (दे १, ६) ।

अक्कंद अक [आ+क्रन्द्] रोना, चिल्लाना; (प्रामा) । वकृ-**अक्कंदंत**; (सुपा ५७४) ।

अक्कंद (अप) देखो **अक्कम=आ+क्रम्** । **अक्कंदइ**; संकृ—**अक्कंदिऊण**; (सण) ।

अक्कंद पुं [**आक्रन्द**] रोदन, विलाप, चिल्लाकर रोना; (सुर २, ११४) ।

अक्कंद वि [दे] त्राण करनेवाला, रक्षक; (दे १, १५) ।

अक्कंदावणय वि [**आक्रन्दक**] रुलानेवाला; (कुमा) ।

अक्कंदिय न [**आक्रन्दित**] विलाप, रोदन; (से ४, ६४; पउम ११०, ५) ।

अक्कम सक [**आ+क्रम्**] १ आक्रमण करना, दवाना; २ परास्त करना । वकृ—**अक्कमंत**; (पि ४८१) । संकृ—**अक्कमित्ता**; (पण्ह १, १) ।

अक्कम पुं (**आक्रम**) १ दवाना, चढ़ाई करना; २ पराभव (आव) ।

अक्कमण न [**आक्रमण**] १—२ ऊपर देखो (से १४,६६) । ३ पराक्रम; (विसे १०४६) । ४ वि. आक्रमण करनेवाला ; (से ६,१) ।

अक्कसिअ देखो **अक्कंत**=आक्रान्त, (काप्र १७२ ; सुपा १२७) ।

अक्कसाला स्त्री [दे] १ वलात्कार, जबरदस्ती : २ उन्मत्त सी स्त्री : (दे १,५८) ।

अक्का स्त्री [दे] वहिन ; (दे १,६) ।

अक्कासी स्त्री [**अक्कासी**] अन्तर-जातीय एक देवी ; (ती ६) ।

अक्किज्ज वि [**अक्रेय**] खरीदने के अयोग्य ; (ठा ६) ।

अक्किट्ठ वि [**अक्लिष्ट**] १ क्लेश-वर्जित ; (जीव ३) । २ वाधा-रहित ; (भग ३,२) ।

अक्किट्ठ वि [**अकृष्ट**] अ-विलिखित; (भग ३,२) ।

अक्किय वि [**अक्रिय**] क्रिया-रहित ; (विसे २२०६) ।

अक्कुट्ठ वि [दे] अध्यासित, अधिष्ठित ; (दे १,११) ।

अक्कुस सक [**गम्**] जाना । अक्कुसइ; (हे ४,१६२) ।

अक्कुहय वि [**अकुहक**] निष्कपट, माया-रहित ; (दस ६,२) ।

अक्कूर वि [**अक्रूर**] क्रूरता-रहित; दयालु ; (पव २३६) ।

अक्केज्ज देखो **अक्किज्ज** ।

अक्केल्लय वि [**एकाकिन्**] एकिला, एकाकी ; (नाट) ।

अक्कोड पुं [दे] छाग, वकरा ; (दे १,१२) ।

अक्कोडण न [**आक्रोडन**] इकट्ठा करना, संग्रह करना ; (विंम) ।

अक्कोस न [**अक्रोश**] जिस ग्राम की अति नजदीक में अटवी, श्वापद या पर्वतीय नदी आदि का उपद्रव हो वह; " खेत्तं चलमचलं वा, इंदमणिंदं सकोसमक्कोसं । वाघातम्मि अकोसं, अडवीजले सावए तेणे " (वृह ३) ।

अक्कोस सक [**आ+क्रुश्**] आक्रोश करना । वकृ—**अक्कोसिंत** ; (सुर १२,४०) ।

अक्कोस पुं [**आक्रोश**] कटु वचन, शाप, भर्त्सना ; (सम ४०) ।

अक्कोसग वि [**आक्रोशक**] आक्रोश करनेवाला ; (उत्त २) ।

अक्कोसणा स्त्री [**आक्रोशना**] अभिशाप, निर्भर्त्सना, (णाया १,१६) ।

अक्कोसिअ वि [**आक्रोशित**] कटु वचनों से जिसकी भर्त्सना की गई हो वह ; (सुर ६, २३४) ।

अक्कोह वि [**अक्रोध**] १ अल्प-क्रोधी ; (जं २) । २ क्रोध-रहित ; (उत्त २) ।

अक्ख पुं [**अक्ष**] १ जीव, आत्मा; (ठा १) । २ रावण का एक पुत्र ; (से १४,६५) । ३ चन्दनक, समुद्र में होनेवाला एक द्वीन्द्रिय जन्तु, जिसके निर्जीव शरीर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं; (श्रा १) । ४ पहिया की धुरी, कील ; (ओघ ५४६) । ५ चौसर का पाँसा ; (धण ३२) । ६ विभीतक, वहडा का वृक्ष ; (से ६,४४) । ७ चार हाथ या ९६ अंगुलों का एक मान ; (अणु; सम) । ८ रुद्राक्ष ; (अणु ३) । ९ न. इन्द्रिय; (विसे ९१ ; धण ३२) । १० द्यूत, जूआ; (से ६,४४) । °**चम्म** न [°**चर्मन्**] पखाल, मसक " अक्खचम्मं उट्टंगंडदेसं " (णाया १,६) । °**पाडय** न [°**पादक**] कील का टुकड़ा " राइणा हाहारवं करेमाणेण पहओ सो सुणओ अक्खपाडएणं ति " (स २५५) । °**माला** स्त्री (°**माला**) जपमाला ; (पउम ६६,३१) । °**लया** स्त्री [**लता**] रुद्राक्ष की माला ; (दे) ।

°वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र; "तो लोओ। गहियक्खवत्तहत्थो एइ गिहे············ वद्धावणत्थं" (सुपा ५८५)। °वलय न [°वलय] रुद्राक्ष की माला; (दे २, ८१)। °वाअ पुं [°पाद] नैयायिक मत के प्रवर्तक गौतम ऋषि; (विसे १५०८)। °वाडग पु [°वाटक] अखाडा; (जीव ३)। °सुत्तमाला स्त्री [°सूत्रमाला] जपमाला; (अणु ३)।

अक्ख देखो अक्खा=आ+ख्या। अक्खइ; (सण)।

अक्खइय वि [आख्यात] उक्त, कथित; (सण)।

अक्खंड वि [अखण्ड] १ संपूर्ण; २ अखण्डित; ३ निरन्तर, अविच्छिन्न "अक्खण्डपयाणेहिं रहवीरपुरे गओ कुमरो" (सुपा २६६)।

अक्खंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र; (पाअ)।

अक्खंडिअ वि [अखण्डित] १ संपूर्ण, खण्ड-रहित; (से ३, १२)। २ अविच्छिन्न, निरन्तर; (उर ८, १०)।

अक्खंत देखो अक्खा=आ+ख्या।

अक्खड सक [आ+स्कन्द्] आक्रमण करना। "अक्खडइ पिया हिअए, अण्णं महिलाअणं रमंतस्स" (गा ४४)।

अक्खणवेल न [दे] १ मैथुन, संभोग; २ शाम, संध्या काल; (दे १, ५६)।

अक्खणिआ स्त्री (दे) विपरीत मैथुन; (पाअ)।

अक्खम वि [अक्षम] १ असमर्थ; (सुपा ३७०)। २ अयुक्त, अनुचित; (ठा ३, ३)।

अक्खय वि [अक्षत] १ घाव-रहित, व्रण-शून्य; (सुर २, ३३)। २ अखण्डित, संपूर्ण; (सुर ६, १११)। ३ पुं.व. अखण्ड चावल; (सुपा ३२६)। °यार वि [°चार] निर्दोष आचरण वाला; (वव ३)।

अक्खय वि [अक्षय] १ क्षय का अभाव; (उवर ८३)। २ जिसका कभी क्षय—नाश न हो वह; (सम १)। °णिहितव पुंन [°निधितपस्] एक प्रकार की तपश्चर्या; (पंचा १९)। °तइया स्त्री [°तृतीया] वैशाख शुक्ल तृतीया; (आनि)।

अक्खर पुंन [अक्षर] १ अक्षर, वर्ण; (सुपा ६५६)। २ ज्ञान, चेतना "नक्खरइ अणुवओगेवि, अक्खरं, सो य चेयणाभावो" (विसे ४५५)। ३ वि. अविनश्वर, नित्य; (विसे ४५७)। °त्थ पुं [°र्थ] शब्दार्थ; (अभि १५१)। °पुट्ठिया स्त्री [°पृष्ठिका] लिपि-विशेष; (सम ३५)। °समास पुं [°समास] १ अक्षरों का समूह; २ श्रुत-ज्ञान का एक भेद; (कम्म १, ७)।

अक्खल पुं [दे] १ अखरोट वृक्ष; २ न. अखरोट वृक्ष का फल; (पण्ण १६)।

अक्खलिय वि [दे] १ जिसका प्रतिशब्द हुआ हो वह, प्रतिध्वनित; (दे १, २७)। २ आकुल, व्याकुल; (सुर ४, ८८)।

अक्खलिय वि [अस्खलित] १ अबाधित, निरुपद्रव; (कुमा)। २ जो गिरा न हो वह, अपतित; (नाट)।

अक्खवाया स्त्री [दे] दिशा; (दे १, ३५)।

अक्खा सक [आ+ख्या] कहना, बोलना। वकृ—अक्खंत; (सण; धर्म ३)। कवकृ—अक्खिज्जंत; (सुर ११, १६२)। कृ—अक्खेअ, अक्खाइयव्व; (विसे २६४७; गा २४२)। हेकृ—अक्खाउं; (दस ८; सत्त ३ टी)।

अक्खा स्त्री (आख्या) नाम; (विसे १६११)।

अक्खाइ वि [आख्यायिन्] कहनेवाला, उपदेशक "अधम्म-क्खाई" (णाया १, १८; विपा १, १)।

अक्खाइय न [आख्यातिक] क्रिया-पद, क्रिया-वाचक शब्द; (विसे)।

अक्खाइय वि [अक्षितिक] स्थायी, अनश्वर, शाश्वत "एवं ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणपसत्ता वेढेंति अक्खाइयवीएण अप्पाणं कम्मबंधणेण" (पण्ह १,२)।

अक्खाइया स्त्री [आख्यायिका] उपन्यास, वार्ता, कहानी; (कप्पू; भास ५०)।

अक्खाग पुं [आख्याक] म्लेच्छों की एक जाति; (सूअ १,५)।

अक्खाडग } पुं [अक्षवाटक] १ जूआ खेलने का अड्डा। २ अखाड़ा, व्यायाम-स्थान; (उप पृ १३०)। ३ प्रेक्षकों को बैठने का आसन; (ठा ४, २)।
अक्खाडय }

अक्खाण न [आख्यान] १ कथन, निवेदन; (कुमा)। २ वार्ता, उपकथा; (पउम ४८,७७)।

अक्खाणय न [आख्यानक] कहानी, वार्ता; (उप ५६७ टी)।

अक्खाय वि [आख्यात] १ प्रतिपादित, कथित; (सुपा ३६५)। २ न. क्रियापद; (पण्ह २, २)।

अक्खाय न [अखात] हाथी को पकड़ने के लिए किया जाता गढ़ा, खड्डा; (पाअ)।

अक्खाया स्त्री [**आख्याता**] एक प्रकार की जैन दीक्षा; "अक्खायाए सुदंसणो सेट्ठी सामिणा पडिवोहिओ" (पंचू)।

अक्खि त्रि [**अक्षि**] आंख, नेत्र ; (हे १, ३३; ३५; स २; १०४ ; प्राप्र ; स्वप्न ६१)।

अक्खिअ वि [**आक्षिक**] पाँसा से जूआ खेलने वाला, जुआड़ी; (दे ७, ८)।

अक्खिअ वि [**आख्यात**] प्रतिपादित, कथित ; (श्रा १४)।

अक्खिंतर न [**अक्ष्यन्तर**] आंख का कोटर ; (विपा १, १)।

अक्खिज्जंत देखो **अक्खा**=आ+ख्या।

अक्खित्त वि [**आक्षिप्त**] १ व्याकुल। २ जिस पर टीका की गई हो वह। ३ आकृष्ट, खींचा हुआ; (सुर ३,११५)। ४ सामर्थ्य से लिया हुआ; (से ४,३१)।

अक्खित्त न [**अक्षेत्र**] मर्यादित क्षेत्र के वहार का प्रदेश ; (निचू १)।

अक्खिव सक [**आ+क्षिप्**] १ आक्षेप करना, टीका करना, दोषारोप करना। २ रोकना। ३ गँवाना। ४ व्याकुल करना। ५ फेंकना। ६ स्वीकार करना। "अक्खिवइ पुरिसगारं" (उवर ४६)। हेक्ट—**अक्खिविउं**; (निर १,१)। "तओ न जुत्तमिह कालम् **अक्खिविउं**" (स २०५ ; पि ५७७)। कर्म—"अक्खिप्पइ य मे वाणी" (स २३ ; प्रामा)।

अक्खिवण न [**आक्षेपण**] व्याकुलता, घवराहट ; (पण्ह १,३)।

अक्खीण वि [**अक्षीण**] १ ह्रास-शून्य, क्षय-रहित, अखूट; (कप्प)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण; (कुमा)। °**महाणसिय** वि [°**महानसिक**] जिसको निम्नोक्त अक्षीण-महानसी शक्ति प्राप्त हुई हो वह; (पण्ह २,१) °**महाणसी** स्त्री [°**महानसी**] वह अद्भुत आत्मिक शक्ति, जिससे थोड़ा भी भिक्षान्न दूसरे सैकड़ों लोगों को यावत्तृप्ति खिलाने पर भी तवतक कम न हो, जवतक भिक्षान्न लानेवाला स्वयं उसे न खाय; (पव २७०)। °**महालय** वि [°**महालय**] जिससे थोड़ी जगह में भी वहुत लोगों का समावेश हो सके ऐसी अद्भुत आत्मिक शक्ति से युक्त ; (गच्छ २)।

अक्खुअ वि [**अक्षत**] अक्षीण, त्रुटि-शून्य "अक्खुआयारचरित्ता" (पडि)।

अक्खुडिअ वि [**अखण्डित**] संपूर्ण, अखण्ड, त्रुटि-रहित "अक्खुडिओ पक्खुडिओ छिक्कंतोवि सवालवुड्ढजणो" (सुपा ११६)।

अक्खुण्ण वि [**अक्षुण्ण**] जो टुटा हुआ न हो, अविच्छिन्न; (वृह १)।

अक्खुद्द वि [**अक्षुद्र**] १ गंभीर, अतुच्छ; (दव्व ५)। २ दयालु, करुण ; (पंचा २)। ३ उदार; (पंचा ७)। ४ सूक्ष्म बुद्धि वाला; (धर्म २)।

अक्खुद्द न [**अक्षौद्रय**] क्षुद्रता का अभाव; (उप ६१५)।

अक्खुपुरी स्त्री [**अक्षपुरी**] नगरी-विशेष; (णाया २)।

अक्खुब्भमाण वि [**अक्षुभ्यमान**] जो क्षोभ को प्राप्त न होता हो, (उप पृ ६२)।

अक्खुहिय वि [**अक्षुभित**] क्षोभ-रहित, अक्षुब्ध ; (सण)।

अक्खूण वि [**अक्षूण**] अन्यून, परिपूर्ण "भोयणवत्थाहरणं संपायंतेण सव्वमक्खूणं" (उप ७२८ टी)।

अक्खेअ देखो **अक्खा**=आ+ख्या।

अक्खेव पुं [**अ+क्षेप**] शीघ्रता, जल्दी; (सुपा १२६)।

अक्खेव पुं [**आक्षेप**] १ आकर्षण, खींच कर लाना; (पण्ह १, ३)। २ सामर्थ्य, अर्थ की संगति के लिए अनुक्त अर्थ को वतलाना; (उप १००२)। ३ आशंका, पूर्वपक्ष; (भग २, १ ; विसे १४३६)। ४ उत्पत्ति; "दइवेण फलक्खेवे अइप्पसंगो भवे पयडो" (उवर ४८)।

अक्खेवग पुं [**आक्षेपक**] १ खींच कर लानेवाला, आकर्षक; २ समर्थक पद, अर्थ-संगति के लिए अनुक्त अर्थ को वतलानेवाला शब्द; (उप ६६६)। ३ सान्निध्य-कारक; (उवर १८८)।

अक्खेवणी स्त्री [**आक्षेपणी**] श्रोताओं के मन को आकर्षण करनेवाली कथा; (औप)।

अक्खेवि वि [**आक्षेपिन्**] आकर्षण करनेवाला, खींच कर लानेवाला; (पण्ह १, ३)।

अक्खोड सक [**कृष्**] म्यान से तलवार को खींचना—बाहर करना। अक्खोडइ; (हे ४, १८७)।

अक्खोड सक [**आ+स्फोटय्**] थोड़ा या एक वार झाटकना। अक्खोडिज्जा। वकृ—**अक्खोडंत**; (दस ४)।

अक्खोड पुं [**अक्षोट**] १ अखरोट का पेड़; २ न. अखरोट वृक्ष का फल; (पण्ण १७, सण)। ३ राज-कुल को दी जाती सुवर्ण आदि की भेंट; (वव १)।

अक्खोडिय वि [**कृष्ट**] खींचा हुआ, वहार निकाला हुआ (खड्ग); (कुमा)।

अक्खोभ / **अक्खोह** पुं [**अक्षोभ**] १ क्षोभ का अभाव, घवराहट; (गाया १, ६)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ले कर शत्रुंजय पर मोक्ष गया था; (अंत १, ७)। ३ न. "अन्तकृद्दशा" सूत्र का एक अध्ययन; (अंत १, ७)। ४ वि. क्षोभ-रहित, अचल, स्थिर; (पराह २,५; कुमा)।

अक्खोहणिज्ज वि [**अक्षोभणीय**] जो क्षुब्ध न किया जा सके; (सुपा ११४)।

अक्खोहिणी स्त्री [**अक्षौहिणी**] एक वड़ी सेना, जिसमें २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोडे और १०९३५० पैदल होते हैं; (पउम ५५, ७; ११)।

अखंड वि [**अखंड**] परिपूर्ण, खराड-रहित; (औप)।

अखंडल पुं [**आखराडल**] इन्द्र; (पउम ४६, ४४)।

अखंडिय वि [**अखरिडत**] नहीं तुटा हुआ, परिपूर्ण; (पंचा १८)।

अखंपण वि [**दे**] स्वच्छ, निर्मल "आयवत्ताइं। धारिंति, ठविंति पुरो अखम्पणं दप्पणं केवि" (सुपा ७४)।

अखज्ज वि [**अखाद्य**] जो खाने लायक न हो; (गाया १, १६)।

अखत्त न [**अक्षात्र**] क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध, जुलम, "संपइ विज्जावलिओ, अहह अखत्तं करेइ कोइ इमो" (धम्म ८ टी)।

अखम देखो **अक्खम**; (कुमा)।

अखलिअ देखो **अक्खलिय**=अस्खलित; (कुमा)।

अखादिम वि [**अखाद्य**] खाने को अयोग्य, अभक्ष्य "कुपहे धावति, अखादिमं खादंति" (कुमा)।

अखाय वि [**अखात**] नहीं खुदा हुआ। °**तल** न [°**तल**] छोटा तलाव; (पात्र)।

अखिल वि [**अखिल**] १ सर्व, सकल, परिपूर्ण; (कुमा)। २ ज्ञान-आदि गुणों से पूर्ण "अखिले अगिद्धे अणिए अचारी" (सूत्र १, ७)।

अखुट्ट वि [**दे**] अखूट; (भवि)।

अखुट्टिअ वि (**अतुडित**) अखूट, परिपूर्ण; (कुमा)।

अखुडिअ देखो **अक्खुडिअ**; (कुमा)।

अखेयण्ण वि [**अखेदज्ञ**] अकुशल, अनिपुण; (सूत्र १, १०)।

अखोहा स्त्री [**अक्षोभा**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३७)।

अग पुं [**अग**] १ वृक्ष, पेड; २ पर्वत, पहाड; (से ९, ४२) "उच्चागयठाणलट्ठसंठियं" (कप्प)।

अगइ स्त्री [**अगति**] १ नीच गति, नरक या पशु-योनि में जन्म; (ठा २, २)। २ निरुपाय; (अच्चु ९९)।

अगंठिम न [**अग्रन्थिम**] १ कदली-फल, केला; (वृह १)। २ फल की फाँक, टुकड़ा; (निचू १६)।

अगंडिगेह वि [**दे**] यौवनोन्मत्त, जुवानी से उन्मत्त बना हुआ; (दे १, ४०)।

अगंडूयग वि [**अकण्डूयक**] नहीं खुजलानेवाला; (सूत्र २, २)।

अगंथ वि [**अग्रन्थ**] १ धन-रहित। २ पुंस्त्री. निर्ग्रन्थ, जैन साधु "पावं कम्मं अकुव्वमाणे एस महं अगंथे विश्राहिए" (आचा)।

अगंधण पुं [**अगन्धन**] इस नाम की सर्पों की एक जाति "नेच्छंति वंतयं भोत्तु कुले जाया अगंधणे" (दस २)।

अगड पुं [**दे. अवट**] कूप, इनारा; (सुर ११, ८९; उव)। °**तड** त्रि [°**तट**] इनारा का किनारा; (विसे)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] इस नाम का एक राज-कुमार; (उत्त)। °**दद्दुर** पुं [°**दर्दुर**] कुँए का मेढक; अल्पज्ञ, वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहिर न गया हो; (गाया १, ८)।

अगड पुं [**अवट**] कूप के पास पशुओं के जल पीने के लिए जो गर्त बनाया जाता है वह; (उप २०५)।

अगड वि [**अकृत**] नहीं किया हुआ; (वव ६)।

अगणि पुं [**अग्नि**] आग; (जी ६)। °**काय** पुं [°**काय**] अग्नि के जीव; (भग ७,१०)। °**मुह** पुं [°**मुख**] देव, देवता; (आचू)।

अगणिअ वि [**अगणित**] अवगणित, अपमानित; (गा ४८४; पउम ११७,१४)।

अगणिज्जंत वि [**अगण्यमान**] जो गुणने में न आता हो, जिसकी आवृत्ति न की जाती हो "अगणिज्जंती नासे विज्जा" (प्रासु ६६)।

अगत्थि / **अगत्थिय** पुं [**अगस्ति, °क**] १ इस नाम का एक ऋषि। २ वृक्ष विशेष; (दे ६,१२३ ;

(d) $2x - 3y = 0$

अनु.)। ३ एक तारा, अठासी महाग्रहो में ५४ वाँ महाग्रह; (ठा २,३)।

अगन्न वि [**अगण्य**] १ जिसकी गिनती न हो सके वह; (उप ७२८ टी)।

अगन्न वि [**अकर्ण्य**] नहीं सुनने लायक, अश्राव्य; (भवि)।

अगम न [**अगम**] आकाश; गगन; (भग २०,२)।

अगमिय वि [**अगमिक**] वह शास्त्र, जिसमें एक-सदृश पाठ न हो, या जिसमें गाथा वगैरः पद्य हो; "गाहाइ अगमियं खलु कालियसुयं" (विसे ५४६)।

अगम्म वि [**अगम्य**] १ जाने को अयोग्य। २ स्त्री. भोगने को अयोग्य—भगिनी, परस्त्री आदि—स्त्री; (भवि; सुर १२,५२)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] परस्त्री को भोगनेवाला, पारदारिक; (पण्ह १, २)।

अगय न [**अगद**] औषध, दवाई; (सुपा ४४७)।

अगय पुं [**दे**] दैत्य, दानव; (दे १,६)।

अगरु पुंन [**अगरु**] सुगन्धि काष्ठ-विशेष; (पण्ह २,५)।

अगरल वि [**अगरल**] सुविभक्त, स्पष्ट, "अगरलाए अमम्मणाए······भासाए भासेइ" (औप)।

अगरु देखो **अगर**; (कुमा)।

अगरुअ वि [**अगरुक**] वड़ा नहीं, छोटा, लघु; (गउड)।

अगरुलहु वि [**अगुरुलघु**] जो भारी भी न हो और हलका भी न हो वह, जैसे आकाश, परमाणु वगैरः; (विसे)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिससे जीवों का शरीर न भारी न हलका होता है; (कम्म १,४७)।

अगलदत्त पुं [**अगडदत्त**] एक रथिक-पुत्र; (महा)।

अगलुय देखो **अगर**; (औप)।

अगहण पुं [**दे**] कापालिक, एक ऐसे संप्रदाय के लोग, जो माथे की खोपड़ी में ही खाने पीने का काम करते है; (दे १,३१)।

अगहिल वि [**अग्रहिल**] जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल; (उप ५६७ टी)। °**राय** पुं [°**राज**] एक राजा, जो वास्तव में पागल न होने पर भी पागल-प्रजा के आक्रमण से बनावटी पागल बना था; (ती २१)।

अगाढ वि [**अगाध**] अथाह, बहुत गहरा "अगाढपण्णेसु वि भाविअप्पा" (सूअ १,१३)।

अगामिय वि [**अग्रामिक**] ग्राम-रहित "अगामियाए अडवीए" (औप)।

अगार पुं [**अकार**] 'अ' अक्षर; (विसे ४८४)।

अगार न [**अगार**] १ गृह, घर; (सम ३७)। २ पु. गृहस्थ, गृही, संसारी; (दस १)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] गृही, ससारी; (आचा)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] गृहि-धर्म, श्रावक-धर्म; (औप)।

अगारि वि [**अगारिन्**] गृहस्थ, गृही; (सुअ २,६)।

अगारी स्त्री [**अगारिणी**] गृहस्थ स्त्री; (वव ४)।

अगाल देखो **अयाल**; (स ८२)।

अगाह वि [**अगाध**] गहरा, गंभीर; (पाअ)।

अगिला स्त्री [**अग्लानि**] अखिन्नता, उत्साह; (ठा ५, १)।

अगिला स्त्री [**दे**] अवज्ञा, तिरस्कार; (दे १,१७)।

अगीय वि [**अगीत**] शास्त्रों का पूरा ज्ञान जिसको न हो वैसा (जैन साधु); (उप ८३३ टी)।

अगीयत्थ वि [**अगीतार्थ**] ऊपर देखो; (वव १)।

अगुज्झहर वि [**दे**] गुप्त बात को प्रकाशित करनेवाला; (दे १,४३)।

अगुण देखो **अउण**; (पि २६५)।

अगुण वि [**अगुण**] १ गुण-रहित, निर्गुण; (गउड)। २ पु. दोष, दूषण; (दस ५)।

अगुणि वि [**अगुणिन्**] गुण-वर्जित, निर्गुण; (गउड)।

अगुरु, **अगुरुअ** वि [**अगुरु**] १ वड़ा नही सो, छोटा, लघु। २ पुन. सुगन्धि काष्ठ विशेष, अगुरु-चंदन "धूवेण किं अगुरुणो किमु कंकणेण" (कप्पू; पउम २,११)।

अगुरुलहु, **अगुरुलहुअ** देखो **अगरुलहु**; (सम ५१, ठा १०)।

अगुलु देखो **अगुरु** "संखतिणिसागुलुचंदणाइं" (निचू २)।

अग्ग न [**अग्र**] १ आगे का भाग, ऊपर का भाग; (कुमा)। २ पूर्व-भाग, पहले का भाग; (निचू १)। ३ परिमाण "अग्गं ति वा परिमाणं ति वा एगट्ठा" (आचू १)। ४ वि. प्रधान, श्रेष्ठ; (सुपा २४८)। ५ प्रथम, पहला; (आव १)। °**क्खंध** पुं [°**स्कन्ध**] सैन्य का अग्र भाग; (से ३,४०)। °**गामिग** वि [°**गामिक**] अग्र-गामी, आगे जानेवाला; (स १४७)। °**ज** देखो °**य** (दे ६,४६)। °**जम्म** [°**जन्मन्**] देखो °**य**; (उप ७२८ टी)। °**जाय** [°**जात**] देखो °**य**; (आचा)। °**जीहा** स्त्री

[जिह्वा] जीभ का अग्र-भाग । °णिय, °णी वि [°णी] अगुआ, मुखिया, नायक ; (कप्प ; नाट) । °तावसग पु [°तापसक] ऋषि-विशेष का नाम ; (सुज्ज १०.) । °द्ध न [°र्ध] पूर्वार्ध ; (निचू १) । °पिंड पुं [°पिण्ड] एक प्रकारका भिक्षान्न ; (आचा) । °प्पहारि वि [°प्रहारिन्] पहले प्रहार करनेवाला ; (आव १) । °वीय वि [°वीज] जिसमें बीज पहले ही उत्पन्न हो जाता है या जिसकी उत्पत्ति में उसका अग्र-भाग ही कारण होता है ऐसी आम, कोरंटक आदि वनस्पति ; (पगण १ ; ठा ४,१) °मणि पुं (°मणि) मुख्य, श्रेष्ठ शिरोमणि ; (उप ७२८ टी) । °महिसी स्त्री [°महिषी] पट्टरानी ; (सुपा ४६) । °य वि [°ज] १ आगे उत्पन्न होने वाला । २ पुं. ब्राह्मण । ३ बड़ा भाई । ४ स्त्री. बड़ी बहन ; (नाट) । °लोग पुं [°लोक] मुक्ति-स्थान सिद्धि-क्षेत्र ; (श्रा १२) । °हत्थ पुं [°हस्त] १ हाथ का अग्र भाग; (उवा) । २ हाथ का अवलम्बन, सहारा ; (से ४, ३) । ३ अंगुली ; (प्राप) ।

अग्ग वि [अग्र्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम ; (से ८, ४४) । २ प्रधान, मुख्य ; (उत १४) ।

अग्गओ अ [अग्रतस्] सामने, आगे ; (कुमा) ।

अग्गंथ वि [अग्रन्थ] १ धन-रहित । २ पुं. जैन साधु; (औप) ।

अग्गक्खंध पुं [दे] रण-भूमि का अग्र-भाग ; (दे १, २७) ।

अग्गल न [अर्गल] १ किवाड़ बंद करने की लकड़ी, आगल ; (दस ५, २) । २ पु. एक महाग्रह ; (सुज्ज २०) । °पासय पुं [°पाशक] जिसमें आगल दिया जाता है वह स्थान ; (आचा २, १, ५) । °पासाय पुं [°प्रासाद] जहां आगल दिया जाता है वह घर (राय) ।

अग्गल वि [दे] अधिक; " वीसा एक्कग्गला " (पिंग) ।

अग्गला स्त्री [अर्गला] आगल, हुडका ; (पाअ) ।

अग्गलिअ वि [अर्गलित] जो आगल से बंद किया गया हो वह ; (सुर ६, १०) ।

अग्गवेअ पुं [दे] नदी का पूर ; (दे १, २९) ।

अग्गह पुं (आग्रह] आग्रह, हठ, अभिनिवेश ; (सूअ १, १, ३; स ५१३) ।

अग्गहण न [अग्रहण] १ अज्ञान ; (सुर १२, ४६) । २ नहीं लेना ; (से ११, ६८) ।

अग्गहण न [दे. अग्रहण] अनादर, अवज्ञा ; (दे १, १७ ; से ११, ६८) ।

अग्गहणिया स्त्री [दे] सीमंतोन्नयन, गर्भाधान के बाद किया जाता एक संस्कार और उसके उपलक्ष्य में मनाया जाता उत्सव. जिसको गुजराती भाषा में " अघयणी " कहते है ; (सुपा २३) ।

अग्गहि वि [आग्रहिन्] आग्रही, हठी ; (सूअ १, १३) ।

अग्गहिअ वि [दे] १ निर्मित, विरचित ; २ स्वीकृत, कबूल किया हुआ , (षड्) ।

अग्गाणी वि [अग्रणी] मुख्य, प्रधान, नायक " दक्खिन्न-दयाकलिओ अग्गाणी सयलवणियसत्थस्स " (सुर ६, १३८) ।

अग्गारण न [उद्गारण] वमन, वान्ति , (चारु ७) ।

अग्गाह वि [अगाध] अगाध, गंभीर ; " खीरादहिगुव्व अग्गाहा " (गुरु ४) ।

अग्गाहार पुं [अग्राधार] ग्राम-विशेष का नाम , (सुपा ५४५) ।

अग्गि पुंस्त्री [अग्नि] १ आग, वह्नि , (प्रासू २२), " एस पुण कावि अग्गी " (सट्टि ६१) । २ कृत्तिका नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३) । ३ लोकान्तिक देव-विशेष; (आवम) । °आरिआ स्त्री [°कारिका] अग्नि-कर्म, होम; (कप्पू) । °उत्त पुं [°पुत्र] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर का नाम ; (सम १५३) । °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति ; (पगण १) । °कोण पुं [°कोण] पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा ; (सुपा ६८) । °जस पुं [°यशस्] देव-विशेष ; (दीव) । °ज्जोय पु [°द्योत] भगवान् महावीर का पूर्वीय बीसवें ब्राह्मण-जन्म का नाम ; (आचू) । °ट्ठ वि [°स्थ] आग में रहा हुआ ; (हे ४, ४२९) । °ट्ठोम पुं [°ष्टोम] यज्ञ-विशेष; (पि १०; १५६) । °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] आग की शक्ति को रोकने वाली एक विद्या ; (पउम ७, १३९) । °दत्त पुं [°दत्त] १ भगवान् पार्श्वनाथ के समकालीन ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव; (तित्थ) २ भद्रबाहुस्वामी का एक शिष्य , (कप्प) । °दाण पुं

[°दान] सातवें वासुदेव के पिता का नाम ; (पउम २०, १८२) । °देव पुं. [°देव] देव-विशेष, (दीव) । °भूइ पु [°भूति] १ भगवान् महावीर का द्वितीय गणधर; (कप्प) । २ भगवान महावीर का पूर्वीय अठारहवें ब्राह्मण-जन्म का नाम ; (आचू) । °माणव पुं [°माणव] अग्निकुमार देवों का उत्तर-दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३) । °माली स्त्री [°माली] एक इन्द्राणी; (दीव) । °वेस पुं [°वेश] १ इस नाम का एक प्रसिद्ध ऋषि ; (णंदि) । २ न. एक गोत्र ; (कप्प) । °वेस पुं [°वेश्मन्] १ चतुर्दशी तिथि ; (जं) । २ दिवस का बाइसवाँ मुहूर्त, (चद १०) । °वेसायण पुं [°वैश्यायन) १ अग्निवेश ऋषि का पौत्र ; (णंदि; स २२५) । २ अग्निवेश-गोत्र में उत्पन्न ; (कप्प) । ३ गोशालक का एक दिक्चर ; (भग १५) । ४ दिन का बाइसवाँ मुहूर्त ; (सम ५१) । °सक्कार पु [°संस्कार] विधि-पूर्वक जलाना, दाह देना ; (आवम) । °सप्पभा स्त्री [°सप्रभा] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा समय की पालखी का नाम ; (सम) । °सम्म पुं [°शर्मन्] एक प्रसिद्ध तपस्वी ब्राह्मण ; (आचा) । °सिह पुं [°शिख] १ सातवें वासुदेव का पिता ; (सम १५२) । २ अग्निकुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३) । °सिह पुं [°सिंह] एक जैन मुनि ; (उप ४८६) । °सिहाचारण पु [°शिखाचारण] अग्नि-शिखा में निर्बाधतया गमन करने की शक्ति वाला साधु ; (पव ६८) । °सीह पुं [°सिंह] सातवें वासुदेव के पिता का नाम, (ठा ६) । °सेण पुं [°षेण] ऐरवत क्षेत्र के तीसरे और बाईसवें तीर्थंकर ; (तित्थ, सम १५३) । °होत्त न [°होत्र] १ अग्न्याधान, होम ; (विसे १६४०) । २ पुं. ब्राह्मण ; (पउम ३५, ६) । °होत्तवाइ वि [°होत्रवादिन्] होम से ही स्वर्ग की प्राप्ति माननेवाला (सूत्र १, ७) । °होत्तिय वि [°होत्रिक] होम करनेवाला ; (सुपा ७०) ।

अग्गिअ पुं [**अग्निक**] १ यमदग्नि-नामक एक तापस ; (आचू) । २ भस्मक रोग, जिससे जो कुछ खाय वह तुरंत ही हजम हो जाता है ; (विपा १, १; विसे ३०४८) ।

अग्गिअ पुं [**दे**] इन्द्रगोप, एक जातका क्षुद्र कीट ; (दे १, ५३) । २ वि. मन्द ; (दे १, ५३) ।

अग्गिआय पु [**दे**] इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष; (षड्) ।

अग्गिच्च वि [**आग्नेय**] १ अग्नि-संबन्धी । २ पुं. लोकान्तिक देवों की एक जाति ; [णाया १, ८) । ३ न. गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र की शाखा है ; (ठा ७) ।

अग्गिच्चाभ न [**आग्नेयाभ**] देव-विमान विशेष; (सम १४) ।

अग्गिज्झ वि [**अग्राह्य**] लेने के अयोग्य ; (पउम ३१, ५४) ।

अग्गिम वि [**अग्रिम**] १ प्रथम, पहला ; (कप्पू) । २ श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य ; (सुपा १) ।

अग्गियय पुं [**आग्नेयक**] इस नाम का एक राजपुत्र; (उप ६३७) ।

अग्गिलिय देखो **अग्गिम** ; (पचव २) ।

अग्गिल्ल पुं [**अग्निल**] एक महाग्रह ; (ठा २, ३) ।

अग्गीय देखो **अगीय** ; (उप ८४०) ।

अग्गीवय न [**दे**] घर का एक भाग ; (पउम १६, ६४) ।

अग्गुच्छ वि (**दे**) प्रमित, निश्चित ; (षड्) ।

अग्गे अ [**अग्रे**] आगे, पहले ; (पिंग) । °यण वि [°तन] आगे का, पहले का ; (आवम) । °सर वि [°सर] अगुआ, मुखिया, नायक; (श्रा २८) ।

अग्गेई स्त्री [**आग्नेयी**) अग्निकोण, दक्षिण-पूर्व दिशा ; (भग १८) ।

अग्गेणिय न [**अग्रायणीय**] दूसरा पूर्व, बारहवें जैनागम का दूसरा महान् भाग ; (सम २६) ।

अग्गेणी देखो **अग्गेई** ; (आवम) ।

अग्गेणीय देखो **अग्गेणिय** ; (णदि) ।

अग्गेय वि (**आग्नेय**) १ अग्नि-संबंधी, अग्नि का ; (पउम १२,१२६ ; विसे १६६०) । २ न. शस्त्र-विशेष ; (सुर ८, ४१) । ३ एक गोत्र, जो वत्स गोत्र की शाखा है ; (ठा ७) । ४ अग्नि-कोण, दक्षिण-पूर्व दिशा ; (भवि) ।

अग्गोदय न (**अग्रोदक**) समुद्रीय वेला की वृद्धि और हानि ; (सम ७६) ।

अग्घ अक [**राज्**] विराजना, शोभना, चमकना । **अग्घइ** ; (हे ४, १००) ।

अग्घ सक . [**अर्ह्**] योग्य होना, लायक होना " कत्तं ण अग्घइ " (णाया १, ८) ।

अग्घ सक [**अर्घ्**] १ अच्छी किम्मत से बेचना, २ आदर करना, सम्मान करना।
"पहिएण पुणो भणियं, तुब्भेहिं सिद्धि ! कम्मि नयरम्मि।
गंतव्वं सो साहइ, पणियं अग्घिस्सए जत्थ" (सुपा ५०१)। वकृ—**अग्घायमाण** (गाया १, १)।

अग्घ पुं (**अर्घ**) १ मछली की एक जाति; (जीव ३)। २ पूजा-सामग्री; (गाया १, १६)। ३ पूजा में जलादि देना; (कुमा)। ४ मूल्य, मोल, किम्मत; (निचू २)। °**वत्त** न [°**पात्र**] पूजा का पात्र; (गउड)।

अग्घ वि [**अर्घ्य**) १ पूजा में दिया जाता जलादि द्रव्य; (कप्पू)। २ कीमती, बहु-मूल्य; (प्राप)।

अग्घव सक [**पूर्**] पूर्ति करना, पूरा करना। अग्घवइ; (हे ४, १६९)।

अग्घविय वि [**पूर्ण**] १ भरा हुआ, संपूर्ण; २ पूरा किया गया; (सुपा १०६, कुमा)।

अग्घविय वि [**अर्घित**] -पूजित, सत्कृत, सम्मानित; (से ११, १६; गउड)।

अग्घा सक [**आ+घ्रा**] सूँघना। वकृ—**अग्घाअंत**, **अग्घायमाण**; (गा ५६५; गाया १, ८)। कवकृ—**अग्घाइज्जमाण**; (पण्ण २८)।

अग्घाइ वि [**आघ्रायिन्**] सूँघनेवाला "सभमरपउमग्घाइणि ! वारियवामे ! सहसु इण्हिं" (काप्र २६४)।

अग्घाइअ वि [**आघ्रात**] सूँघा हुआ; (गा ६७)।

अग्घाइज्जमाण देखो **अग्घा**।

अग्घाइर वि [**आघ्रातृ**] सूँघनेवाला। स्त्री—°**री**; (गा ८८६)।

अग्घाड सक [**पूर्**] पूर्ति करना, पूरा करना। अग्घाडइ; (हे ४,१६९)।

अग्घाड, **अग्घाडग** } पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, चिचडा, लटजीरा; (दे १,८; पण्ण १)।

अग्घाण वि [**दे**] तृप्त, संतुष्ट; (दे १,१८)।

अग्घाय वि [**आघ्रात**] सूँघा हुआ; (पात्र)। २ आहूत बुलाया हुआ; "बलभद्देणग्घाया भणंति" (विसे २३८४)।

अग्घायमाण देखो **अग्घ=अर्घ्**।

अग्घायमाण देखो **अग्घा**।

अग्घिय वि [**राजित**] विराजित, शोभित, (कुमा)।

अग्घिय वि [**अर्घित**] १ बहु-मूल्य, कीमती "अग्घियं नामं बहुमोल्लं" (निसी २)। २ पूजित; (दे १,१०७; से २०२)।

अग्घोदय न [**अर्घोदक**] पूजा का जल; (अभि ११८)।

अघ न [**अघ**] १ पाप कुकर्म; (कुमा)। २ वि शोचनीय, शोक का हेतु, "अघं बम्हणभावं" (प्रयौ ८०)।

अघो देखो **अहो**; (नाट)।

अचक्खु पुंन [**अचक्षुस्**] १ आँख सिवाय बाकी इन्द्रियाँ और मन; (कम्म १, १०)। २ आँख को छोड़ बाकी इन्द्रिय और मन से होनेवाला सामान्य ज्ञान, (दं १६)। ३ वि अंधा, नेत्र-हीन, (कम्म ४)। °**दंसण** न [°**दर्शन**] आँख को छोड़ बाकी इन्द्रियां और मनसे होनेवाला सामान्य ज्ञान; (सम १५)। °**दंसणावरण** न [°**दर्शनावरण**] अचक्षुर्दर्शन को रोकनेवाला कर्म; (ठा ९)। °**फास** पुं [°**स्पर्श**) अंधकार, अंधेरा; (गाया १ १४)।

अचक्खुस वि [**अचाक्षुष**] जो आँख से देखा न जा सके; (पराह १,१)।

अचक्खुस्स वि [**अचक्षुष्य**] जिसको देखनेको मन न चाहता हो; (वृह ३)।

अचर वि (**अचर**) पृथिव्यादि स्थिर पदार्थ, स्थावर; (दंस)।

अचल वि [**अचल**] १ निश्चल, स्थिर; (आचा)। २ पुं. यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम; (अंत ३)। एक बलदेव का नाम; (पव २०९)। ४ पर्वत पहाड़; (गउड १२०)। ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के छोटे भाई के साथ जैन दीक्षा ली थी; (पउम ८५,४)। °**पुर** न [°**पुर**] ब्रह्म-द्वीप के पास का एक नगर; (कप्प)। °**प्प** न [°**त्मन्**] हस्त-प्रहेलिका को ८४ लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, अन्तिम संख्या; (इक)। °**भाय** पुं [°**भ्रातृ**] भगवान् महावीर का नववाँ गणधर, (कप्प)।

अचल न (**दे**) १ घर; २ घर का पिछला भाग; ३ वि. कहा हुआ; ४ निष्ठुर, निर्दय; ५ नीरस, सूखा; (दे १, ५३)।

अचला स्त्री [**अचला**] पृथिवी। २ एक इन्द्राणी; (गाया २)।

अचिंत वि [**अचिन्त**] निश्चिन्त, चिन्ता-रहित।

अचिंत वि [**अचिन्त्य**] अनिर्वचनीय, जिसकी चिन्ता भी न हो सके वह, अद्भुत; (लहुअ ३)।

अचिंतणिज्ज } वि [**अचिन्तनीय**] ऊपर देखो ; (अभि
अचिंतणीअ } २०३; महा)।

अचिंतिय वि [**अचिन्तित**] आकस्मिक, असंभवित ; (महा)।

अचित्त वि [**अचित्त**] जीव-रहित, अचेतन " चित्तमचित्तं वा ग्रेव सयं अजिन्नं गिग्रहेज्जा " (दस ४)।

अचियंत } वि [**दे**] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर ; (सूअ २,२ ;
अचियत्त } पण्ह २, ३)। २ न. अप्रीति, द्वेष; (ओघ २६१)।

अचिरा देखो **अइरा** ; (पउम ३७, ३७)।

अचिराभा स्त्री [**अचिराभा**] विजली, विद्युत् ; (पउम ४२, ३२)।

अचिरेण देखो **अइरेण** , (प्राकृ)।

अचेयण वि [**अचेतन**] चैतन्य-रहित निर्जीव ; (पण्ह १, २)।

अचेल न [**अचेल**] १ वस्त्रों का अभाव। २ अल्प-मूल्यक वस्त्र ; ३ थोडा वस्त्र ; (सम ४०)। ४ वि. वस्त्र-रहित, नग्न , ५ जीर्ण वस्त्र वाला ; ६ अल्प वस्त्र वाला ; ७ कुत्सित वस्त्र वाला, मैला " तह थोव-जुन्न-कुत्थियचेलेहिवि भण्णए अचेलोत्ति " (विसे २६०१)। °**परिसह**, °**परीसह** पुं [°**परिषह**, °**परीषह**] वस्त्र के अभाव से अथवा जीर्ण, अल्प या कुत्सित वस्त्र होने से उसे अदीन भाव से सहन करना , (सम ४०; भग ८, ८)।

अचेलग } वि [**अचेलक**] १ वस्त्र-रहित, नग्न ; २ फटा-
अचेलय } टुटा वस्त्र वाला ; ३ मलिन वस्त्र वाला ; ४ अल्प वस्त्र वाला ; ५ निर्दोष वस्त्र वाला ; ६ अनियत रूप से वस्त्र का उपभोग करने वाला ; (ठा ५, ३)।
" परिसुद्धजिण्ण-कुच्छियथोवानिययत्तभोगभोगेहिं "।
मुणओ मुच्छारहिया, संतेहिं अचेलया हुंति" (विसे २५९९)।

अच्च सक [**अर्च्**] पूजना, सत्कार करना। अच्चेइ ; (औप)। अच्च ; (दे २, ३५ टी)। कवकृ—**अच्चिज्जंत**, (सुपा ७८)। कृ—**अच्चणिज्ज** ; (णाया १, १)।

अच्च पुं [**अर्च्य**] १ लव (काल-मान) का एक भेद ; (कप्प)। २ वि. पूज्य, पूजनीय ; (हे १,१७७)।

अच्चंग न [**अत्यङ्ग**] विलासिता के प्रधान अंग, भोग के मुख्य साधन " अच्चंगाणं च भोगओ माणं " (पंचा १)।

अच्चंत वि [**अत्यन्त**] हद से ज्यादः, अत्यधिक, वहुत , (सुर ३, २२)। °**थावर** वि [°**स्थावर**] अनादि-काल से स्थावर-जाति में रहा हुआ ; (आचम)। °**दूसमा** स्त्री [°**दुष्षमा**] देखो **दुस्समदुस्समा** ; (पउम २०, ७२)।

अच्चंतिअ वि [**आत्यन्तिक**] १ अत्यन्त, अधिक, अतिशयित। २ जिसका नाश कभी न हो वह, शाश्वत ; (सूअ २,६)।

अच्चग वि [**अर्चक**] पूजक ; (चैत्य १२)।

अच्चण न [**अर्चन**] पूजा, सम्मान ; (सुर ३, १३ ; सत्त १२ टी)।

अच्चणा स्त्री [**अर्चना**] पूजा; (अच्चु ५७)।

अच्चत्त वि [**अत्यक्त**] नहीं छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त ; (उप पृ १०७)।

अच्चत्थ वि [**अत्यर्थ**] १ अतिशयित, वहुत ; (पण्ह १,१)। २ गंभीर अर्थ वाला ; (राय)। ३ क्रिवि. ज्यादः, अत्यंत; (सुर १,७)।

अच्चब्भुय वि [**अत्यद्भुत**] वड़ा आश्चर्य-जनक ; (प्रासू ४२)।

अच्चय पुं [**अत्यय**] १ विपरीत आचरण ; (वृह ३)। २ विनाश, मरण ; (उव)।

अच्चय वि [**अर्चक**] पूजक, " अणच्चयाणं च चिरंतणाणं, जहारिहं रक्खणवद्धणंति " (विवे ७० टी)।

अच्चर
अच्चरिअ } न [**आश्चर्य**] विस्मय, चमत्कार; (विक ९४;
अच्चरीअ } प्रवो १७ ; रंभा ; भवि ; नाट)।

अच्चहम वि [**अत्यधम**] अति नीच ; (कप्पू)।

अच्चा स्त्री [**अर्चा**] पूजा, सत्कार; (गउड)।

अच्चासणया स्त्री [**अत्यासनता**] खूब वैठना, देर तक या वारंवार वैठना ; (ठा ९)।

अच्चासणया स्त्री [**अत्यशनता**] खूब खाना ; (ठा ९)।

अच्चासण्ण } न [**अत्यासन्न**] अति समीप, खूब
अच्चासन्न } नजदीक ; (भग १,१ ; उवा)।

अच्चासाइय } वि [**अत्याशातित**] अपमानित, हैरान
अच्चासादिय } किया गया ; (ठा १० ; भग ३,२)।

अच्चासाय सक [**अत्या+शातय्**] अपमान करना, हैरान करना। वकृ—**अच्चासाएमाण** ; (ठा १०)। हेकृ—**अच्चासाइत्तए** ; (भग ३, २)।

अच्चाहिअ } **अच्चाहिद** } वि [**अत्याहित**] १ महा-भीति, बड़ा भय; २ झूठा, असत्य ; (स्वप्न ४७) । ३ ऐसा जोखमी कार्य, जिसमें प्राण-हानि की संभावना हो ; (अभि ३७) ।

अच्चि स्त्री [**अर्चिस्**] १ कान्ति, तेज ; (भग २,५) । २ अग्नि की ज्वाला , (पराण १) । ३ किरण ; (राय) । ४ दीप की शिखा ; (उत्त ३) । ५ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान ; (सम १४) । °**मालि** पुं [°**मालिन्**] १ सूर्य, रवि ; (सूत्र १,६) । २ वि. किरणों से शोभित ; (राय) । ३ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान, (सम १४) । °**माली** स्त्री [°**माली**] १ चन्द्र और सूर्य की तृतीय अग्र-महिषी का नाम ; (ठा ४,१) । २ 'ज्ञातासूत्र' के द्वितीय श्रुतस्कन्ध के एक अध्ययन का नाम ; (णाया २) । ३ शक्रेन्द्र की तृतीय अग्रमहिषी की राजधानी का नाम ; (ठा ४,२) । °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] चन्द्र और सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम ; (भग १०,५ ; इक) ।

अच्चिअ वि [**अर्चित**] १ पूजित, सत्कृत ; (गा १५०) । २ न. विमान-विशेष; (जीव ३—पत्र १३७) ।

अच्चित्त देखो **अचित्त**; (ओघ २२, सुर १२,२७) ।

अच्चीकर सक [**अर्ची+कृ**] १ प्रशंसा करना । २ खुशामद करना । अच्चीकरेइ । वकृ— **अच्चीकरंत** ; (निचू ५) ।

अच्चीकरण न [**अर्चीकरण**] १ प्रशंसा ; २ खुशामद ; "अच्चीकरणं रणणो, गुणवयणं तं समासओ दुविहं । संतमसंतं च तहा, पच्चक्खपरोक्खमेक्केक्कं ॥" (निचू ५) ।

अच्चुअ पुं [**अच्युत**] १ विष्णु ; (अच्चु ५) । २ बारहवाँ देवलोक ; (सम ३६) । ३ ग्यारहवें और बारहवें देवलोक का इन्द्र ; (ठा २,३) । ४ अच्युत-देवलोकवासी देव ; "तं चेव आरणच्चुय ओहिरणाणेण पासंति" (विसे ६६६) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] बारहवें देवलोक का इन्द्र ; (भवि) । °**वइ** पुं [°**पति**] इन्द्र-विशेष; (सुपा ६१) । °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] विमान-विशेष का नाम ; (सम ४१) । °**सग्ग** पुं [**स्वर्ग**] बारहवाँ देवलोक ; (भवि) ।

अच्चुआ स्त्री [**अच्युता**] छठवें और सतरहवें तीर्थंकर की शासन-देवी ; (संति ६; १०) ।

अच्चुइंद पुं [**अच्युतेन्द्र**] ग्यारहवें और बारहवें देवलोक का स्वामी, इन्द्र-विशेष ; (पउम ११७,७) ।

अच्चुक्कड वि [**अत्युत्कट**] अत्यंत उग्र ; (आवम) ।

अच्चुग्ग वि [**अत्युग्र**] ऊपर देखो ; (पव २३४) ।

अच्चुच्च वि [**अत्युच्च**] खूब ऊंचा, विशेष उन्नत ; (उप ६८६ टी) ।

अच्चुट्ठिय वि [**अत्युत्थित**] अकार्य करनेको तय्यार ; (सूत्र १,१४) ।

अच्चुण्ह वि [**अत्युष्ण**] खूब गरम ; (ठा ५,३) ।

अच्चुत्तम वि [**अत्युत्तम**] अति श्रेष्ठ ; (कप्पू) ।

अच्चुदय न [**अत्युदक**] १ वड़ी वर्षा ; (ओघ ३०) । २ प्रभूत पानी ; (जीव ३) ।

अच्चुदार वि [**अत्युदार**] अत्यन्त उदार ; (स ६००) ।

अच्चुन्नय वि [**अत्युन्नत**] बहुत ऊंचा ; (कप्प) ।

अच्चुब्भड वि [**अत्युद्भट**] अति-प्रबल ; (भवि) ।

अच्चुवयार पुं [**अत्युपकार**] महान् उपकार ; (गा ६१४) ।

अच्चुवयार पुं [**अत्युपचार**] विशेष सेवा-सुश्रूषा ; (गा ६१४) ।

अच्चुव्वाय वि [**अत्युद्वात**] अत्यंत थका हुआ ; (वृह ३) ।

अच्चुसिण वि [**अत्युष्ण**] अधिक गरम ; (आचा २, १, ७) ।

अच्चेअर न [**आश्चर्य**] आश्चर्य, विस्मय ; (विक्र १५) ।

अच्छ अक [**आस्**] बैठना । अच्छइ ; (हे १,२१४) । वकृ—**अच्छंत**, **अच्छमाण** ; (सुर ७,१३ ; णाया १,१) कृ—**अच्छियव्व** ; **अच्छेयव्व** ; (पि ५७० ; सुर १२,२२८) ।

अच्छ वि [**अच्छ**] १ स्वच्छ, निर्मल ; (कुमा) । २ पुं. स्फटिक रत्न ; (पव २७५) । ३ पुं.व. आर्य देश-विशेष ; (प्रव २७५) ।

अच्छ पुं [**ऋक्ष**] रींछ, भालुक ; (पराह १,१) ।

अच्छ वि [**आच्छ**] अच्छ-देश में उत्पन्न, (पराण ११) ।

अच्छ न [**दे**] १ अत्यन्त, विशेष ; २ शीघ्र, जल्दी ; (दे १,४६) ।

°**अच्छ** वि [°**अक्षि**] आंख, नेत्र ; (कुमा) ।

°**अच्छ** पुं [**कच्छ**] १ अधिक पानीवाला प्रदेश ; २ लताओं का समूह ; ३ तृण, घास ; (से ६,४७) ।

°**अच्छ** पुं [**वृक्ष**] वृक्ष, पेड़ ; (से ६,४७) ।

अच्छअ पुं [**अक्षक**] १ बहेड़ा का वृत्त ; २ न. स्वच्छ जल ; (से ६, ४७) ।

अच्छअर न [**आश्चर्य**] विस्मय, चमत्कार ; (कुमा) ।

अच्छंद वि [**अच्छन्द**] जो स्वाधीन न हो, पराधीन " अच्छंदा जे ण भुंजंति ण से चाइति वुच्चइ " (दस २) ।

अच्छक्क देखो **अत्थक्क** , (गउड) ।

अच्छण न [**आसन**] १ बैठना ; (णाया १, १) । २ पालखी वगैरः सुखासन ; (ओघ ७८) । °**घर** न [°**गृह**] विश्राम-स्थान ; (जीव ३) ।

अच्छण न [**दे**] १ सेवा, शुश्रूषा ; (बृह ३) । २ देखना, अवलोकन ; (वव १) । ३ अहिंसा, दया ; (दस ८) ।

अच्छणिउर न [**अच्छनिकुर**] अच्छनिकुरांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, १) ।

अच्छणिउरंग न [**अच्छनिकुराङ्ग**] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, १) ।

अच्छण्ण वि [**अच्छन्न**] अगुप्त, प्रकट , (बृह ३) ।

अच्छभल्ल पुं [**ऋक्षभल्ल**] रींछ, भालुक ; (दे १, ३७ ; पण्ह १, १) ।

अच्छभल्ल पुं [**दे**] यक्ष, देव-विशेष ; (दे १, ३७) ।

अच्छरआ देखो **अच्छरा** ; (षड्) ।

अच्छरय पुं [**आस्तरक**] शय्या पर बिछानेका वस्त्र-विशेष ; (णाया १, १) ।

अच्छरसा } स्त्री [**अप्सरस्**] १ इन्द्र की एक पट्टरानी ;
अच्छरा } (ठा ६) । २ 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन ; (णाया २) । ३ देवी ; (पउम २, ४१) । ४ रूपवती स्त्री ; (पण्ह १, ४) ।

अच्छराणिवाय पुं [**दे**] १ चुटकी ; २ चुटकी बजाने में जितना समय लगता है वह, अत्यल्प समय ; (पण्ण ३६) ।

अच्छरिअ
अच्छरिज्ज } न [**आश्चर्य**] विस्मय, चमत्कार ; (हे १, ५८ ; प्रयौ ४२) ।
अच्छरीअ

अच्छल न [**अच्छल**] निर्दोषता, अनपराध ; (दे १, २०) ।

अच्छवि वि [**अच्छवि**] जैन-दर्शन में जिसको स्नातक कहते हैं वह, जीवन्मुक्त योगी ; (भग २५, ६) ।

अच्छविकर पुं [**अक्षपिकर**] एक प्रकार का मानसिक विनय ; (ठा ८) ।

अच्छहल्ल पुं [**ऋक्षभल्ल**] रींछ, भालुक ; (पाअ) ।

अच्छा स्त्री (**अच्छा**) वरुण देश की राजधानी , (पव २७५) ।

°**अच्छा** स्त्री [**कक्षा**] गर्व, अभिमान , (से ६, ४७) ।

अच्छाइ वि [**आच्छादिन्**] ढकने वाला, आच्छादक , (स ३५१) ।

अच्छायण न [**आच्छादन**] १ ढकना ; (दे ७, ४५) । २ वस्त्र, कपड़ा ; (आचा) ।

अच्छायणा स्त्री [**आच्छादना**] ढकना, आच्छादित करना ; (वव ३) ।

अच्छायंत वि [**अच्छातान्त**] तीक्ष्ण, धारदार ; (पाअ) ।

अच्छि वि [**अक्षि**] आँख, नेत्र, (हे १, ३३, ३५) । °**चमढण** न [°**मलन**] आँख का मलना , (बृह २) । **णिमीलिय** न [**निमीलित**] १ आँख को मूँदना मींचना, २ आँख मिंचने में जो समय लगे वह " अच्छिणिमीलियमेत्तं, णत्थि सुहं दुक्खमेव अणुबद्धं । णरए णेरइआणं, अहोणिसं पच्चमाणाणं " (जीव ३) । °**पत्त** न [°**पत्र**] आँख का पक्ष्म, पपनी ; (भग १४, ८) । °**वेहग** पुं [°**वेधक**] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र जीव-विशेष ; (उत्त ३६) । °**रोडय** पुं [°**रोडक**] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र कीट-विशेष ; (उत्त ३६) । °**ल्ल** वि [°**मत्**] १ आँख वाला प्राणी ; २ चौइन्द्रिय जन्तु ; (उत्त ३६) । °**मल** पुं [°**मल**] आँख का मैल, कीट्ट , (निचू ३) ।

अच्छिंद सक [**आ+छिद्**] १ थोडा छेद करना । २ एक वार छेद करना । ३ बलात्कार से छीन लेना । वकृ— **अच्छिंदमाण** ; (भग ८, ३) ।

अच्छिंद पुं [**अक्षीन्द्र**] गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम ; (भग १५) ।

अच्छिंदण न [**आच्छेदन**] १ एक वार छेदना ; (निचू ३) । २ छीनना । ३ थोडा छेद करना, थोडा काटना ; (भग १५) ।

अच्छिक्क वि [**दे**] अस्पृष्ट, नहीं छुआ हुआ ; (वव १) ।

अच्छिघरुल्ल वि [**दे**] अप्रीतिकर ; २ पुः वेष, पोषाक ; (दे १, ४१) ।

अच्छिज्ज वि [**आच्छेद्य**] १ जबरदस्ती जो दूसरे से छीन लिया जाय ; (पिंड) । २ पु. जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष ; (आचा) ।

अच्छिज्ज वि [**अच्छेद्य**] जो तोड़ा न जा सके ; (ठा ३, २) ।

अच्छित्ति स्त्री [**अच्छित्ति**] १ नाश का अभाव, नित्यता। २ वि. नाश-रहित ; (विसे) । °**णय** पु [°**नय**] नित्यता-वाद, वस्तु को नित्य माननेवाला पक्ष ; (पव) ।

अच्छिद्द वि [**अच्छिद्र**] १ छिद्र-रहित, निविड, गाढ़; (जं २) । २ निर्दोष ; (भग २, ५) ।

अच्छिण्ण, अच्छिन्न वि [**आच्छिन्न**] १ बलात्कार से छीना हुआ। २ छेदा हुआ, तोड़ा हुआ, (पाअ) ।

अच्छिण्ण, अच्छिन्न वि [**अच्छिन्न**] १ नहीं तोड़ा हुआ, अलग नहीं किया हुआ; (ठा १०) । २ अव्यवहित, अन्तर-रहित ; (गउड) ।

अच्छिप्प वि [**अस्पृश्य**] छूने को अयोग्य; (सुपा २८१) ।

अच्छिप्पंत वि [**अस्पृशत्**] स्पर्श नहीं करता हुआ ; (श्रा १२) ।

अच्छिय वि [**आसित**] बैठा हुआ ; (पि ४८०; ५६५) ।

अच्छिवडण न [**दे**] आँख का मूँदना ; (दे १, ३६) ।

अच्छिविअच्छि स्त्री [**दे**] परस्पर-आकर्षण, आपस की खींचतान ; (दे १, ४१) ।

अच्छिहरिल्ल, अच्छिहरुल्ल देखो **अच्छिवरुल्ल** ; (दे १, ४१) ।

अच्छी देखो **अच्छि** ; (रंभा) ।

अच्छुक्क न [**दे**] अक्षि-कूप-तुला, आँख का कोटर; (सुपा २०) ।

अच्छुत्ता स्त्री [**अच्छुप्ता**] १ एक विद्याधिष्ठात्री देवी ; (ति ८) । २ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी की शासन-देवी, (संति १०) ।

अच्छुद्धसिरी स्त्री [**दे**] इच्छा से अधिक फल की प्राप्ति, असंभावित लाभ ; (षड्) ।

अच्छुल्लूढ वि [**दे**] निष्कासित, बहार निकाला हुआ, स्थान-भ्रष्ट किया हुआ , (बृह १) ।

अच्छेज्ज देखो **अच्छिज्ज** ; (ठा ३, २; ४) ।

अच्छेर, अच्छेरग, अच्छेरय न [**आश्चर्य**] १ विस्मय, चमत्कार ; (हे १, ५८) । २ पुंन. विस्मय-जनक घटना, अपूर्व घटना; (ठा १०, १३८) । °**कर** वि [°**कर**] विस्मय-जनक, चमत्कार उपजानेवाला; (श्रा १४) ।

अच्छोड सक [**आ+छोटय्**] १ पटकना, पछाड़ना। २ सिंचना, छिटकना। "अच्छोडेमि सिलाए, तिलं तिलं किं नु छिंदामि" (सुर १५, २३ ; सुर २, २४५) ।

अच्छोड पुं [**आच्छोट**] १ सिंचन। २ आस्फालन करना, पटकना ; (ओघ ३९७) ।

अच्छोडण न [**आच्छोटन**] १ सिंचन। २ आस्फालन; (सुर १३, ४१; सुपा ५६३ ; वेणी १०६) । ३ मृगया, शिकार ; (दे १, ३७) ।

अच्छोडाविय वि [**दे. अच्छोटित**] वन्धित, बँधाया हुआ; (स ५२५; ५२६) ।

अच्छोडिअ वि [**दे**] आकृष्ट, खींचा हुआ "अच्छोडिअवत्थद्धं" ; (गा १६०) ।

अच्छोडिअ वि [**आच्छोटित**] सिक्त, सिंचा हुआ ; (सुर २, २४५) ।

अछिप्प वि [**अस्पृश्य**] स्पर्श करने को अयोग्य "सो सुणओव्व अछिप्पो कुलुग्गयाणं, न उण पुरिसो" (सुपा ४८७) ।

अज देखो **अय**=अज ; (पउम ११, २५; २६) ।

अजगर देखो **अयगर** ; (भवि) ।

अजड पुं [**दे**] जार, उपपति ; (षड्) ।

अजड वि [**अजड**] १ पक्व, विकसित ; (गउड) । २ निपुण, चतुर ; (कुमा) ।

अजम वि [**दे**] १ सरल, ऋजु ; (षड्) । २ जमाईन; (पभा १५) ।

अजय वि [**अयत**] १ पाप-कर्म से अविरत, नियम-रहित ; (कम्म ४) । २ अनुद्योगी, यत्न-रहित ; (ओघ ५४) । ३ उपयोग-शून्य, बे-ख्याल; (सुपा ५२२) । ४ क्रिवि. बे-ख्याल से, अनुपयोग से "अजयं चरमाणो य पाणभूयाइ हिंसइ ; (दस ४, उवर ४ टी) ।

अजय पुं [**अजय**] षट्पद छंद का एक भेद ; (पिंग) ।

अजयणा स्त्री [**अयतना**] अनुपयोग, ख्याल नहीं रखना, गफलती ; (गच्छ ३) ।

अजर वि [**अजर**] १ वृद्धावस्था-रहित, बुढ़ापा-वर्जित। २ पुं. देव, देवता; (आवम) । ३ मुक्त-आत्मा; (ओघ) ।

अजराउर वि [**दे**] उष्ण, गरम ; (दे १, ४५) ।

अजरामर वि [**अजरामर**] १ बुढ़ापा और मृत्यु से रहित "णत्थि कोइ जगम्मि अजरामरो" (महा) । २ न. मुक्ति, मोक्ष। ३ स्त्री—°**रा** विद्या-विशेष; (पउम ७, १३६) ।

अजस पुं [**अयशस्**) १ अपयश, अपकीर्त्ति ; (उप ७६८) । °**कित्तिणाम** न [°**कीर्तिनामन्**] अप-कीर्त्ति का कारण-भूत एक कर्म ; (सम ६७) ।

अजस्स क्रिवि [**अजस्र**] निरन्तर, हमेशां "आमरणंतमजस्सं संजमपरिपालणं विहिणा" (पंचा ८) ।

अजा देखो **अया** ; (कुमा) ।

अजाण वि [अज्ञान] अनजान, मूर्ख ; (रयण ८५) ।
अजाणअ वि [अज्ञायक] अनजान, जानकारी-रहित; (काल)
अजाणणा स्त्री [अज्ञान] अ-जानकारी बे-समझी 'अजाणणाए तज्जती न कया तम्मि केणवि " (श्रा २८) ।
अजाणुय वि [अज्ञायक] अज्ञ, नहीं जानने वाला; (ठा ३, ४) ।
अजाय वि [अजात] अनुत्पन्न, अ-निष्पन्न । °**कप्प** पुं [°कल्प] शास्त्रोंको पूरा २ नहीं जाननेवाला जैन साधु, अगीतार्थ "गीयत्थ जायकप्पो अगीओ खलु भवे अजाओ अ" (धर्म ३) । °**कप्पिय** पुं [°कल्पिक] अगीतार्थ जैन साधु ; (गच्छ १) ।
अजिअ वि [अजित] १ अपराजित, अपराभूत ; २ पुं. दुसरे तीर्थंकर का नाम ; (अजि १) । ३ नववें तीर्थंकर का अधिष्ठाता देव ; (संति ७) । ४ एक भावी बलदेव; (ती २१) । °**बला** स्त्री [°बला] भगवान् अजितनाथ की शासन-देवी ; (पव २७) । °**सेण** पुं [°सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा ; (आव) । २ चौथा कुलकर ; (ठा १०) । ३ एक विख्यात जैन मुनि ; (अंत ४) ।
अजिअ वि [अजीव] जीव-रहित, अचेतन; (कम्म १,१५) ।
अजिअ वि [अजय्य] जो जिता न जा सके; (सुपा ७५) ।
अजिआ स्त्री [अजिता] १ भगवान् अजितनाथ की शासन-देवी ; (संति ६) । २ चतुर्थ तीर्थंकर की एक मुख्य शिष्या ; (तित्थ) ।
अजिण न [अजिन] १ हरिण-आदि पशुओं का चमड़ा ; (उत्त ५; दे ७, २७) । २ वि. जिसने राग-द्वेष का सर्वथा नाश नहीं किया है वह; (भग १५) । ३ जिन-भगवान् के तुल्य सत्योपदेशक जैन साधु "अजिणा जिणसंकासा, जिणा इवावितहं वागरेमाणा " (औप) ।
अजिण्ण देखो **अइन्न**=अजीर्ण ; (आव) ।
अजिर न [अजिर] आँगन, चौक ; (सुण) ।
अजीर } देखो **अइन्न**=अजीर्ण ; (वव १; णाया १,
अजीरय } १३) ।
अजीव पुं [अजीव] अचेतन, निर्जीव, जड पदार्थ ; (नव २) । °**काय** पुं [°काय] धर्मास्तिकाय आदि अजीव पदार्थ ; (भग ७, १०) ।
अजुअ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, सप्तच्छद, सतौना; (दे १,१७)
अजुअ न [अयुत] दश हजार "दोण्णि सहस्सा रहाणं, पंच अजुयाणि हयाणं " (महा) ।
अजुअलवण्ण पुं [अयुगलपर्ण] सतौना ; (दे१,४८)।
अजुअलवण्णा स्त्री [दे] इम्ली का पेड़ ; (दे १, ४८) ।
अजुत्त वि [अयुक्त] अयोग्य, अनुचित ; (विसे) । °**कारि** वि [°कारिन्] अयोग्य काय करनेवाला ; (सुपा ६०४) ।
अजुत्तीय वि [अयुक्तिक] युक्ति-शून्य, अन्याय्य ; (सुर १२, ५४) ।
अजेअ वि [अजय्य] जा जिता न जा सके "सो मउडरयणपहावेण अजेआ दोमुहराया " (महा) ।
अजोग पु [अयोग] मन, वचन और काया के सब व्यापारो का जिसमें अभाव होता है वह सर्वोत्कृष्ट योग, शैलेशी-करण; (औप) ।
अजोग वि [अयोग्य] अयोग्य, लायक नही वह ; (निचू ११) ।
अजोगि पुं [अयोगिन्] १ सर्वोत्कृष्ट योग को प्राप्त योगी ; २ मुक्त आत्मा, (ठा २, १; कम्म ४, ४७; ५०) ।
अज्ज सक [अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना, कमाना । अज्जइ; (हे ४, १०८) । संकृ—**अज्जिय** : (पिग) ।
अज्ज वि [अर्य] १ वैश्य; २ स्वामी, मालक; (दे१, ५) ।
अज्ज वि [आर्य] १ उत्तम, श्रेष्ठ ; (ठा ४, २) । २ मुनि, साधु ; (कप्प) । ३ सत्कार्य करनेवाला ; (वव १) । ४ पूज्य, मान्य ; (विपा १, १) । ५ पुं. मातामह, (निसी) । ६ पितामह; (णाया १,८) । ७ एक ऋषि का नाम; (णंदि) । ८ न. गोत्र-विशेष; (णंदि) । ६ जैन साधु, साध्वी और उनकी शाखाओ के पूर्व में यह शब्द प्रायः लगता है, जैसे **अज्जवइर, अज्जचंदणा, अज्जपोमिला** ; (कप्प) । °**उत्त** पु [°पुत्र] १ पति, भर्ता ; (नाट) । २ मालक का पुत्र; (नाट) । °**घोस** पुं [°घोष] भगवान् पार्श्व-नाथ का एक गणधर ; (ठा ८) । °**मंगु** पुं [°मङ्गु] एक प्राचीन जैनाचार्य ; (सार्ध २२) । °**मिस्स** वि [°मिश्र] पूज्य, मान्य ; (अभि १३) । °**समुद्द** पुं [°समुद्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (सार्ध २२) ।
अज्ज अ [अद्य] आज ; (सुर २, १६७) । °**त्त** वि [°तन] अधुनातन, आजकलका ; (रंभा) । °**त्ता** स्त्री [°ता] आज कल ; (कप्प) । °**प्पभिइ** अ [°प्रभृति] आज से ले कर ; (उवा) ।
अज्ज पुं [दे] १ जिनेन्द्र देव; २ बुद्ध देव, (दे १,५) ।

अज्ज न [**आज्य**] घी, घृत ; (पाअ) ।
अज्ज देखो **रिज्जु** ।
अज्जं अ [**अद्य**] आज ; (गा ५८) ।
अज्जंत वि [**आयत्**] आगामी । °**काल** पु [°**काल**] भविष्य काल ; (पाअ) ।
अज्जंहिज्जो अ [**अद्यह्यः**] आजकल, (उप पृ ३३४) ।
अज्जग देखो **अज्जय**=अर्जक ; " अज्जगतरुमंजरिव्व " (सुपा ५३) ।
अज्जग देखो **अज्जय**=आर्यक ; (निर १, १) ।
अज्जण } [**अर्जन**] उपार्जन पैदा करना ; (श्रा
अज्जणण } १२; सत १८) " रज्जं केरिसमेत्तं करेसुवायं तदज्जणणे " (उप ७ टी) ।
अज्जम पुं [**अर्यमन्**] १ सूर्य ; (पि २६१) । २ देव-विशेष ; (जं ७) । ३ उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३) । ४ न. उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र ; (ठा २, ३) ।
अज्जय पुं [**आर्यक**] १ मातामह, मां का बाप ; (पउम ५०,२) । २ पितामह, पिता का पिता; (भग ६,३३); "जं पुण अज्जय-पज्जय-जणयज्जियअत्थमज्झओ दाणं । परमत्थओ कलंकं तयं तु पुरिसाभिमाणीणं " (सुर १, २२०) ।
अज्जय वि [**अर्जक**] १ उपार्जन करने वाला, पैदा करने वाला, (सुपा १२४) । २ पुं वृक्ष-विशेष, (पण्ण १) ।
अज्जय पुं [**दे**] १ सुरस-नामक तृण ; २ गुरेटक-नामक तृण ; (दे १, ५४) । ३ तृण, घास , (निचू ११) ।
अज्जल पुं [**आर्यल**] म्लेच्छों की एक जाति; (पण्ण १) ।
अज्जव न [**आर्जव**] सरलता, निष्कपटता, (नव २६) ।
अज्जव (अप) देखो **अज्ज**=आर्य । °**खंड** पुं [**खण्ड**] आर्य-देश ; (भवि) ।
अज्जवया स्त्री [**आर्जव**] ऋजुता, सरलता; (पण्हि) ।
अज्जवि वि [**आर्जविन्**] सरल, निष्कपट; (आचा) ।
अज्जा स्त्री [**आर्या**] १ साध्वी ; (गच्छ २) । २ गौरी, पार्वती ; (दे १, ५) । ३ आर्या-छन्द ; (जं २)। ४ भगवान् मल्लिनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२) । ५ मान्या, पूज्या स्त्री (पि १०६, १४३, १४५) । ६ एक कला ; (औप) ।
अज्जा स्त्री [**आज्ञा**] आदेश, हुकुम ; (हे २, ८३) ।
अज्जाव सक [**आ+ज्ञापय्**] आज्ञा करना, हुकुम फरमाना । कृ—**अज्जावेयव्व** ; (सूअ २, २) ।
अज्जिअ वि [**अर्जित**] उपार्जित, पैदा किया हुआ ; (श्रा १४) ।
अज्जिआ स्त्री [**आर्यिका**] १ मान्या, पूज्या स्त्री ; २ साध्वी ; संन्यासिनी ; (सम ६५ ; पि ४४८) । ३ माता की माता ; (दस ७) । ४ पिता की माता ; (स २५५) ।
अज्जिणण देखो **अज्जणण** ; (उप ६६४) ।
अज्जीव देखो [**अजीव**] " धम्माधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अज्जीवा " (नव १०) ।
अज्जु (अप) अ [**अद्य**] आज; (हे ४,३४३; भवि, पिंग) ।
अज्जुअ (शौ) देखो **अज्ज**=आर्य ; (नाट) ।
अज्जुआ (शौ) देखो **अज्जा**=आर्या ; (पि १०५) ।
अज्जुण पुं [**अर्जुन**] १ तीसरा पांडव ; (णाया १, १६) । २ वृक्ष-विशेष ; (णाया १, ६ ; औप) । ३ गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम ; (भग १५) । ४ न. श्वेत सुवर्ण, सफेद सोना ; "सव्वज्जुणसुवण्णगमई" (औप) । ५ तृण-विशेष ; (पण्ण १) । ६ अर्जुन वृक्ष का पुष्प ; (णाया १, ६) ।
अज्जुणग } [**अर्जुनक**] १-६ ऊपर देखो । ७ एक
अज्जुणय } माली का नाम ; (अंत १८) ।
अज्जू स्त्री [**आर्या**] सासु, श्वश्रू ; (हे १, ७७) ।
अज्जोग देखो **अजोग**=अयोग ; (पंच १) ।
अज्जोगि देखो **अजोगि** ; (पंच १) ।
अज्जोरुह न [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १) ।
अज्झक्ख वि [**अध्यक्ष**] अधिष्ठाता ; (कप्पू) ।
अज्झ पुं [**दे**] यह (पुरुष, मनुष्य) ; (दे १, ५०) ।
अज्झत्त देखो **अज्झप्प** ; (सूअ १, २, २, १२) ।
अज्झत्थ वि [**दे**] आगत, आया हुआ ; (दे १, १०) ।
अज्झत्थ } न [**अध्यात्म**] १ आत्मा में, आत्म-
अज्झप्प } संबंधी, आत्म-विषयक ; (उत्त १; आचा) । २ मन में, मन-संबंधी, मनो-विषयक ; (उत्त ६; सूअ १, १६, ४) । ३ मन, चित्त "अज्झप्पसाणयणं" (दसनि १, २६) । ४ शुभ-ध्यान "अज्झप्प-रए सुसमाहिअप्पा, सुत्तत्थं च विआणइ जे स भिक्खू" (दस १०, १५) । ५ पुं. आत्मा ; (ओघ ७४५) । °**जोग** पुं [°**योग**] योग-विशेष, चित्त की एकाग्रता ; (सूअ १, १६, ४) । °**दोस** पुं [°**दोष**] आध्यात्मिक दोष—क्रोध, मान, माया और लोभ ; (सूअ १; ६) ।

°त्तिय वि [°प्रत्ययिक] चित्त-हेतुक, मन से ही उत्पन्न होने वाला, शोक, चिन्ता आदि ; (सूत्र २, २, १६) । °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] आत्म-शुद्धि ; (ओघ ७४५) । °संवुड वि [°संवृत] मनो-निग्रही, मन को काबू में रखनेवाला ; (आचा) । °सुइ स्त्री [°श्रुति] अध्यात्म-शास्त्र, आत्म-विद्या, योग-शास्त्र ; (पण्ह २, १)। °सुद्धि स्त्री [°शुद्धि] मन की शुद्धि ; (आचू १) । °सोहि स्त्री [°शुद्धि] मनः-शुद्धि ; (आचू १) ।

अज्झत्थिय वि [**आध्यात्मिक**] आत्म-विषयक, आत्मा या मन से संबंध रखनेवाला ; (विपा १,१; भग २,१) ।

अज्झय वि [**दे**] प्रातिवेश्मिक, पडौसी ; (दे १, १७) ।

अज्झयण पुंन [**अध्ययन**] १ शब्द, नाम ; (चंद १) । २ पढ़ना, अभ्यास ; (विसे) । ३ ग्रन्थ का एक अंश ; (विपा १, १) ।

अज्झयणि वि [**अध्ययनिन्**] पढने वाला, अभ्यासी ; (विसे १४६५) ।

अज्झयाव सक [**अधि+आपू**] पढाना, सीखाना । अज्झयाविंति ; (विसे ३१६६) ।

अज्झवस सक [**अध्यव+सो**] विचार करना, चिंतन करना । वकृ—**अज्झवसंत** ; (सुपा ५६५) ।

अज्झवसण } न [**अध्यवसान**] चिन्तन, विचार,
अज्झवसाण } आत्म-परिणाम, " तो कुमरेण भणियं, मुणिपुंगव ! एइसुहज्झवसाणंपि । किं इयफलयं जायइ ?" (सुपा ५६५ ; प्रासू १०४ , विपा १, २) ।

अज्झवसाय पुं [**अध्यवसाय**] विचार, आत्म-परिणाम, मानसिक संकल्प ; (आचा ; कम्म ४, ८२) ।

अज्झवसिय वि [**अध्यवसित**] १ जिसका चिन्तन किया गया हो वह ; (औप) । २ न. चिन्तन, विचार; (अणु) ।

अज्झवसिय न [**दे**] मुँडा हुआ मुह ; (दे १, ४०) ।

अज्झत्तिय वि [**दे**] देखा हुआ, दृष्ट ; (दे १, ३०) ।

अज्झस सक [**आ+क्रुश**] आक्रोश करना, अभिशाप देना । अज्झसइ ; (दे १, १३) ।

अज्झस्स } वि [**आक्रुष्ट**] जिस पर आक्रोश किया
अज्झस्सिय } गया हो वह ; (दे १, १३) ।

अज्झहिय वि [**अभ्यधिक**] अत्यंत, अतिशयित; (महा) ।

अज्झा स्त्री [**दे**] १ असती, कुलटा ; २ प्रशस्त स्त्री ; ३ नवोढा, दुलहिन ; ४ तरुणी स्त्री ; ५ वहू (स्त्री) ; (दे १, ५० ; गा ८३८, ८५८ ; वज्जा ६४) ।

अज्झाइअव्व वि [**अध्येतव्य**] पढने योग्य ; " सुअं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइअव्वं भवइ " (दस ९, ४; ३) ।

अज्झाय पुं [**अध्याय**] १ पठन, अभ्यास ; (नाट) । २ ग्रन्थ का एक अंश ; (विसे १११५; प्राप) ।

अज्झारुह पुं [**अध्यारुह**] १ वृक्ष-विशेष ; २ वृक्षों के ऊपर वढ़नेवाली वल्ली या शाखा वगैरः ; (पराण १) ।

अज्झारोवण न [**अध्यारोपण**] १ आरोपण, ऊपर चढ़ाना । २ पूछना, प्रश्न करना ; (विसे २६२८) ।

अज्झारोह पुं (**अध्यारोह**] देखो **अज्झारुह** ; (सूत्र २, ३, ७; १८, १९) ।

अज्झावणा स्त्री [**अध्यापना**] पढ़ाना; (कम्म १,६०) ।

अज्झावय वि [**अध्यापक**] पढ़ानेवाला, शिक्षक, गुरु ; (वसु, सुर ३,२६) ।

अज्झावस अक [**अध्या+वस्**] रहना, वास करना । वकृ—**अज्झावसंत** ; (उवा) ।

अज्झास पुं [**अध्यास**] १ ऊपर बैठना ; २ निवास-स्थान ; (सुपा २०) ।

अज्झासणा स्त्री [**अध्यासना**] सहन करना ; (राज) ।

अज्झासिअ वि [**अध्यासित**] १ आश्रित, अधिष्ठित ; २ स्थापित, निवेशित ; (नाट) ।

अज्झाहय वि [**अध्याहत**] १ उत्तेजित " सीयलेणं सुरहिगंधमट्टियागंधेणं हत्थी अज्झाहओ वणं संभरेइ" (महा) ।

अज्झीण वि [**अक्षीण**] १ अक्षय, अखूट ; २ न. अध्ययन ; (विसे ९५८) ।

अज्झुववज्ज देखो **अज्झोववज्ज** ; (पि ७७; औप) ।

अज्झुववण्ण देखो **अज्झोववण्ण** ; (विपा १, १) ।

अज्झुववाय देखो **अज्झोववाय** ; (उप पृ २८१) ।

अज्झुसिर वि [**अशुषिर**] छिद्र-रहित ; (ओघ ३१३) ।

अज्झेउ वि [**अध्येतृ**] पढ़नेवाला ; (विसे १४६५) ।

अज्झेल्ली स्त्री [**दे**] दोहनेपर भी जिसका दोहन हो सके ऐसी गैया ; (दे १, ७) ।

अज्झेसणा स्त्री [**अध्येषणा**] अधिक प्रार्थना, विशेष याचना ; (राज) ।

अज्झोयरग } पुं [**अध्यवपूरक**] १ साधु के लिए अधिक
अज्झोयरय } रसोई करना ; २ साधु के लिए वढ़ाकर की हुई रसोई ; (औप; पव ६७) ।

अज्झोल्लिआ स्त्री [**दे**] वक्षः-स्थल के आभूषण में की जाती मोतीओं की रचना ; (दे १, ३३) ।

अज्झोवगमिय वि [**आभ्युपगमिक**] स्वेच्छा से स्वीकृत ; (पराण ३४) ।

अज्झोववज्ज अक [**अध्युप+पद्**] अत्यासक्त होना, आसक्ति करना । अज्झोववज्जइ ; (पि ७७) । भवि-अज्झोववज्जिहिइ ; (औप) ।

अज्झोववण्ण } वि [**अध्युपपन्न**] अत्यत आसक्त ;
अज्झोववन्न } (विपा १, २, णाया १, २ ; महा ; पि ७७) ।

अज्झोववाय पुं [**अध्युपपाद**] अत्यन्त आसक्ति, तल्लीनता ; (पगह २, ५) ।

अट } सक [**अट्**] भ्रमण करना, घूमना । अटइ ;
अट्ट } (षड् ; हे १, १९५) । परिअट्टइ ; (हे ४, २३०) ।

अट्ट सक [**क्वथ्**] क्वाथ करना । अट्टइ ; (हे ४, ११९; षड् ; गउड) ।

अट्ट अक [**शुष्**] सूकना, शुष्क होना । अट्टंति (से ५, ६१) । वकृ—**अट्टंत** ; (से ५, ७३) ।

अट्ट वि [**आर्त**] १ पीडित, दुःखित; (विपा १, १) । २ ध्यान-विशेष—इष्ट-संयोग, अनिष्ट-वियोग, रोग-निवृत्ति और भविष्य के लिए चिन्ता करना ; (ठा ४, १) । °**ण्ण** वि [°**ज्ञ**] पीड़ित की पीडा को जाननेवाला ; (षड्) ।

अट्ट वि [**ऋत**] गत, प्राप्त ; (णाया १,१ ; भग १२,२) ।

अट्ट पुंन [**अट्ट**] १ दुकान, हाट ; (श्रा १४) । २ महल के ऊपर का घर, अटारी ; (कुमा) । ३ आकाश; (भग २०, २) ।

अट्ट वि [**दे**] १ कृश, दुर्बल ; २ वडा, महान् ; ३ निर्लज्ज, वेशरम ; ४ आलसु, सुस्त ; ५ पु. शुक, ताता ; ६ शब्द, अवाज ; ७ न. सुख ; ८ भूठ, असत्योक्ति ; (द १,५०) ।

अट्टट्ट वि [**दे**] गया हुआ, गत ; (दे १, १०) ।

अट्टट्टहास पुं [**अट्टट्टहास**] देखो **अट्टहास**, (उव) ।

अट्टण न [**अट्टन**] १ व्यायाम, कसरत ; (औप) । २ पुं. इस नाम का एक प्रसिद्ध मल्ल ; (उत्त ४) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] व्यायाम-शाला, कसरत-शाला ; (औप; कप्प) ।

अट्टण न [**अटन**] परिभ्रमण ; (धर्म ३) ।

अट्टमट्ट पुं [**दे**] १ आलवाल, कियारी ; (हे २, १९४) । २ अशुभ संकल्प-विकल्प, पाप-संबद्ध अव्यवस्थित विचार ; "अणवट्ठियं मणो जस्स भाइ वहुयाइं अट्टमट्टाइं । तं चिंतियं च न लहइ, संचिणइ य पावकम्माइं" (उव) ।

अट्टय पुं [**अट्टक**] १ हाट, दुकान ; (श्रा १२) । २ पाल के छिद्र को बन्ध करने में उपयुक्त द्रव्य-विशेष ; (बृह १) ।

अट्टयक्कली स्त्री [**दे**] कमर पर हाथ रख कर खड़ा रहना ; (पाअ) ।

अट्टहास पु [**अट्टहास**] वहुत हँसना, खिलखिला कर हँसना; (पि २७१) ।

अट्टालग } पुंन [**अट्टालक**] महल का उपरि-भाग, अटारी;
अट्टालय } (सम १३७ ; पउम २, ९) ।

अट्टि स्त्री [**आर्ति**] पीडा, दुःख ; (आचा) ।

अट्टिय वि [**आर्तित**] शोकादि से पीडित "अट्टा अट्टिय-चित्ता, जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति" (औप) ।

अट्टिय वि [**अर्दित**] व्याकुल, व्यग्र "अट्टदुहट्टियचित्ता" (औप) ।

अट्ठ पुंन [**अर्थ**] १ वस्तु, पदार्थ ; (उवा २ ; अच्चु) ; "अट्ठदंसी" (सूअ १, १४) "अट्ठाइं, हेऊइं, पसिणाइं" (भग २, १) । २ विषय "इंदियट्ठ" (ठा ६) । ३ शब्द का अभिधेय, वाच्य ; (सूअ १, ६) । ४ मतलव, तात्पर्य ; (विपा २,१ ; भास १८) । ५ तत्त्व, परमार्थ "तुब्भेत्थ भो भारहरा गिराणं, अट्ठं न याणाह अहिज्ज वेए" (उत्त १२, ११) । "इओ चुएसु दुहमट्ठदुग्ग" (सूअ १, १०, ९) । ६ प्रयोजन, हेतु ; (हे २. ३३) । ७ अभिलाप, इच्छा "अट्ठो भंते ! भोगेहिं, हंता अट्ठो" (णाया १, १९ ; उत्त ३) । ८ उद्देश्य, लक्ष्य ; (सूअ १, २, १) । ९ धन, पैसा ; (श्रा १४, आचा) । १० फल, लाभ "अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा णिरट्ठाणि उ वज्जए" (उत्त १) । ११ मोक्ष, मुक्ति ; (उत्त १) । °**कर** पुं [°**कर**] । १ मंत्री ; २ निमित्त शास्त्र का विद्वान् ; (ठा ४, ३) । °**जाय** वि (**जातार्थ**) जिसकी आवश्यकता हो, जिसका प्रयोजन हो वह "अट्ठेण जस्स कज्जं संजात एस अट्ठजाओ य" (वव २) । °**जाय** वि [°**याच**] धनार्थी, धन की चाह वाला ; (वव २) । °**सइय** वि [°**शतिक**] सौ अर्थवाला, जिसका सौ अर्थ हो सके ऐसा (वचन आदि); जं २) । °**सेण** पु [°**सेन**] देखो **अट्ठिसेण** । देखो **अत्थ**=अर्थ ।

अट्ठ त्रि.व. [**अष्टन्**] संख्या-विशेष, आठ, ८ ; (जी ४१)। °**चत्ताल** वि [°**चत्वारिंश**] अठतालीसवाँ ; (पउम ४८, १२६)। °**चत्तालीस** त्रि [°**चत्व रिंशत्**] अठतालीस ; (पि ४४५)। °**ट्ठमिया** स्त्री [°**ाष्टमिका**] जैन साधुओं का ६४ दिन का एक व्रत, प्रतिमा-विशेष; (सम ७७)। °**तालोस** वि [°**चत्वारिंशत्**] अठतालोस ; (नाट)। °**तीस** त्रि [°**ात्रिंशत्**] सख्या-विशेष, अठतीस ; (सम ६५; पि ४४२;४४५)। °**तीसइम** वि [°**ात्रिंश**] अठतीसवॉं ; (पउम ३८, ५८)। °**त्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] अठत्तर, ७८ की संख्या , (पि ४४६)। °**त्तीस** त्रि [°**ात्रिंशत्**] अठतीस ; (सुपा ६५६ ; पि ४४५)। °**द्स** त्रि [°**ादशन्**] अठारह, १८ ; (संति ३)। °**दसुत्तरसय** वि [°**ादशोत्तरशत**] एक सौ अठारहवॉं ; (पउम ११८, १२०)। °**द्ह** त्रि [°**ादशन्**] अठारह, १८ की संख्या ; (पिग)। °**पएसिय** वि [°**प्रदेशिक**] आठ अवयव वाला ; (ठा १०)। °**पया** स्त्री [°**पदा**] एक वृत्त, छन्द-विशेष ; (पिंग) °**पाहरिअ** वि [°**प्राहरिक**] आठ प्रहर संबंधी ; (सुर १५, २१८)। °**भाइया** स्त्री [°**भागिका**] तरल वस्तु नापने का बत्तीस पलो का एक परिमाण ; (अणु)। °**म** न [°**म**] तेला, लगा तार तीन दिनों का उपवास ; (सुर ४, ५५)। °**मंगल** पुंन [°**मङ्गल**] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक वस्तु ; (राय)। °**मभत्त** पुंन [°**मभक्त**] तेला, लगा तार तीन दिनो का उपवास ; (णाया १, १)। °**मभत्तिय** वि [°**मभक्तिक**] तेला करनेवाला ; (विपा २, १)। °**मी** स्त्री [°**मी**] तिथि-विशेष अष्टमी ; (विपा २, १)। °**मुत्ति** पुं [°**मूर्ति**] महादेव, शिव ; (ठा ६)। °**याल** त्रि [°**चत्वारिंशत्**] अठतालीस ; (भवि)। °**वन्न** त्रि [°**पञ्चाशत्**] संख्या-विशेष, अट्ठावन, ५८ ; (कम्म १, ३२)। °**वरिस**, °**वारिस** वि [°**वार्षिक**] आठ वर्ष की उम्र का ; (सुर २, १४६ ; ८, १०१)। °**विह** वि [°**विध**] आठ प्रकार का ; (जी २४)। °**वीस** त्रि [°**ाविंशति**] अट्ठाईस ; (कम्म १, ५)। °**सट्ठि** स्त्री [**षष्टि**] संख्या-विशेष, अठसठ ; (पि ४४२-६)। °**समइय** वि (°**समयिक**) जिसकी अवधि आठ 'समय' की हो वह ; (औप)। °**सय** न [°**शत**] एक सौ आठ, १०८ ; (ठा १०)। °**सहस्स** न [°**सहस्र**] एक हजार और आठ; (औप)। °**सामइय** देखो °**समइय** ; (ठा ८)। °**सिर** वि [°**शिरस्**, °**सिर**] अष्ट-कोण, आठ कोण वाला ; (औप)। °**सेण** पुं [°**सेन**] देखो **अट्ठिसेण**। °**हत्तर** वि [°**सप्ततितम**] अठत्तरवाँ ; (पउम ७८, ५७)। °**हत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] अठत्तर को संख्या, ७८ ; (सम ८६)। °**हा** अ [°**धा**] आठ प्रकार का ; (पि ४५१)।

°**अट्ठ** न [**काष्ठ**] काष्ट, लकड़ी ; (प्रयौ ७४)।

अट्ठंग वि [**अष्टाङ्ग**] जिसका आठ अंग हो वह। °**णिमित्त** न [°**निमित्त**] वह शास्त्र जिसमें भूमि, स्वप्न, शरीर, स्वर आदि आठ विषयों के फलाफल का प्रतिपादन हो ; (सूअ १, १२)। °**महाणिमित्त** न [°**महानिमित्त**) अनन्तर-उक्त अर्थ ; (कप्प)।

अट्ठा स्त्री [**अष्टा**] १ मुष्टि "चउहिं अट्ठाहि लोयं करेइ" (जं २ ; स १८२)। २ मुट्ठीभर चीज ; (पंचव २)।

अट्ठा स्त्री [**आस्था**] श्रद्धा, विश्वास : (सूअ २, १)।

अट्ठा स्त्री [**अर्थ**] लिए, वास्ते "तइया य मणी दिव्वो, समप्पिओ जीवरक्खट्ठा" (सुर ६, ६ ; ठा ५, २)। °**दंड** पुं [°**दण्ड**] कार्य के लिए की गई हिंसा ; (ठा ५, २)।

अट्ठाइस वि [**अष्टाविंश**] अठाईसवाँ ; (पिंग)।

अट्ठाइस } स्त्री [**अष्टाविंशति**] संख्या-विशेष, अठाईस ;
अट्ठाईस } (पिंग; पि ४४२)।

अट्ठाण न [**अस्थान**] १ अयोग्य स्थान ; (ठा ६ ; विसे ८४५)। २ कुत्सित स्थान, वेश्या का मुहल्ला वगैरः ; (वव २)। ३ अयोग्य, गैरव्याजबी "अट्ठाणमेयं कुसला वयंति, दगेण जे सिद्धिमुयाहरंति" (सूअ १, ७)।

अट्ठाण न [**आस्थान**] सभा, सभा-गृह ; (ठा ५, १)।

अट्ठाणउइ स्त्री [**अष्टानवति**] अठाणवे, ९८ ; (सम ९९)।

अट्ठाणउय वि [**अष्टानवत**] अठाणवाँ, ९८ वाँ ; (पउम ९८, ७८)।

अट्ठाणिय न [**अस्थान**] अपात्र, अनाश्रय। "अट्ठाणिए होइ बहू गुणाणं, जेणाणसंकाइ मुसं वएज्जा" (सूअ १, १३)।

अट्ठायमाण वकृ [**अतिष्ठत्**] नहीं बैठता हुआ ; (पंचा १६)।

अट्ठार } त्रि. ब. [अष्टादशन्] संख्या-विशेष, अठारह;
अट्ठारस } (पउम ३५, ७६ ; संति ५)। °विह वि [°विध] अठारह प्रकार का ; (सम ३५)।

अट्ठारसम वि [अष्टादश] १ अठारहवाँ ; (पउम १८, ५८)। २ न. लगा तार आठ दिनों का उपवास; (णाया १, १)।

अट्ठारसिय वि [अष्टादशिक] अठारह वर्ष की उम्र का ; (वव ४)।

अट्ठारह } देखो **अट्ठार** ; (षड् ; पिंग)।
अट्ठाराह }

अट्ठावण्ण } स्त्रीन [अष्टापञ्चाशत्] संख्या-विशेष, पचास
अट्ठावन्न } और आठ, ५८ ; (पि २६५ ; सम ७४)।

अट्ठावन्न वि [अष्टापञ्चाश] अठावनवाँ ; (पउम ५८, १६)।

अट्ठावय पुं [अष्टापद] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, कैलास ; (पगह १, ४)। २ न. एक जात का जुआ ; (पगह १, ४)। द्यूत-फलक, जिस पर जुआ खेला जाता है वह ; (पगह १, ४)। ४ सुवर्ण, सोना ; (धण ८)। °सेल पुं [°शैल] १ मेरु-पर्वत ; २ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, जहां भगवान् ऋषभदेव निर्वाण पाये थे, "जम्मि तुमं अहिसित्तो, जत्थ य सिवसुक्खसंपयं पतो। ते अट्ठावयसेला, सीसामेला गिरिकुलस्स" (धण ८)।

अट्ठावय न [अर्थपद] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र, (सूत्र १, ७; पगह १, ४)।

अट्ठावीस स्त्रीन [अष्टाविंशति] अठाईस, २८; (पि ४४२, ४४५)।

अट्ठावीसइ स्त्री [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस, २८। °विह वि [°विध] अठाईस प्रकार का, (पि ४५१)।

अट्ठावीसइम वि [अष्टाविंश] १ अठाईसवां ; (पउम २८, १४१)। २ न. तेरह दिनों के लगातार उपवास ; (णाया १, १)।

अट्ठासट्ठि स्त्री [अष्टाषष्टि] संख्या-विशेष, अठसठ, ६८ ; (पिंग)।

अट्ठासि } स्त्री [अष्टाशीति] संख्या-विशेष ; अठासी,
अट्ठासीइ } ८८ ; (पिंग ; सम ७३)।

अट्ठासीय वि [अष्टाशीत] अठासीवाँ; (पउम ८८, ४४)।

अट्ठाह न [अष्टाह] आठ दिन ; (णाया १, ८)।

अट्ठाहिया स्त्री [अष्टाहिका] १ आठ दिनों का एक उत्सव; (पंचा ८)। २ उत्सव ; (णाया १, ८)।

अट्ठि वि [अर्थिन्] प्रार्थी, गरज वाला, अभिलाषी; (आचा)।

अट्ठि } स्त्रीन [अस्थि, °क] १ हड्डी, हाड; (कुमा;
अट्ठिग } पगह १, ३)। २ जिसमें बीज उत्पन्न न
अट्ठिय } हुए हो ऐसा अपरिपक्व फल ; (बृह १)। ३ पुं. कापालिक ' अट्ठी विज्जा कुच्छियभिक्खू ' (बृह १; वव २)। °मिंजा स्त्री [°मिञ्जा] हड्डी के भीतर का रस ; (ठा ३, ४)। °सरक्ख पुं [°सरजस्क] कापालिक ; (वव ७)। °सेण न [°षेण] १ वत्स-गोत्र की शाखारूप एक गोत्र, २ पुं. इस गोत्र का प्रवर्तक पुरुष और उसकी संतान ; (ठा ७)।

अट्ठिय वि [अर्थिक] १ गरजू, याचक, प्रार्थी ; (सूत्र १, २, ३)। २ अर्थ का कारण, अर्थ-संबन्धी , ३ मोक्ष का हेतु, मोक्ष का कारण-भूत "पसन्ना लाभइस्संति विउलं अट्ठियं सुयं" (उत्त १)।

अट्ठिय वि [आर्थिक] १ अर्थ का कारण, अर्थ-संबन्धी, २ मोक्ष का कारण ; (उत्त १)।

अट्ठिय वि [अर्थित] अभिलषित, प्रार्थित ; (उत्त १)।

अट्ठिय वि [अस्थित] १ अव्यवस्थित, अनियमित ; (पगह १, ३)। २ चंचल, चपल ; (से २, २४)।

अट्ठिय वि [आस्थिक] हड्डी-संबन्धी, हाड का, "अट्ठियं रसं सुणग्रा" (भत्त १४२)।

अट्ठिय वि [अस्थित] स्थित, रहा हुआ , (से १, ३५)।

अट्ठुत्तर वि [अष्टोत्तर] आठ से अधिक ; (औप)। °सय न [°शत] एक सौ और आठ; (काल)। °सय वि [°शततम] एक सौ आठवां ; (पउम १०८, ५०)।

अठ } देखो **अट्ठ**=अष्टन् ; (पिंग; पि ४४२; १४६ ; भग;
अड } सम १३४)।

अड सक [अट्] भ्रमण करना, फिरना "अडति संसारे" (पगह १, १)। वकृ—**अडमाण** ; (णाया १,१४)।

अड पुं [अवट] १ कूप, इनारा ; (पाअ)। २ कूप के पास पशुओं के पानी पीने के लिये जो गर्त किया जाता है वह ; (हे १, २७१)।

°**अड** देखो **तड**=तट; (गा ११७ ; से १, ५५)।

अडइ } स्त्री [अटवि, °वी] भयानक जंगल, वन ; (सुपा
अडई } १८१, नाट)।

अडडज्झिय न [दे] विपरीत मैथुन ; (दे १, ४२)।

अडखम्म सक [दे] सँभालना, रक्षण करना । कर्म—"अडखम्मिज्जंति सवरिआहि वणे" (दे १, ४१)।

अडखम्मिअ वि [दे] सँभाला हुआ, रक्षित; (दे १, ४१)।

अडड न [अटट] 'अटटांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा ३, ४)।

अडडंग न [अटटाङ्ग] संख्या-विशेष, 'तुडिय' या 'महातुडिय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा ३, ४)।

अडण न [अटन] भ्रमण, घूमना ; (ठा ६)।

अडणी स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता ; (दे १, १६)।

अडपल्लण न [दे] वाहन-विशेष ; (जीव ३)।

अडयणा, अडया स्त्री [दे] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री , (दे १, १८, पाअ; गा २७४ ; ६६२ ; वज्जा ८६)।

अडयाल न [दे] प्रशंसा, तारीफ ; (पण्ण २)।

अडयाल, अडयालीस स्त्रीन [अष्टचत्वारिंशत्] अठतालीस, ४८ की संख्या ; (जीव ३; सम ७०)। °**सय** न [°शत] एक सौ और अठतालीस, १४८ ; (कम्म २, २५)।

अडवडण न [दे] स्खलना, रुक २ चलना, "तुरयावि परिस्संता अडवडणं काउमारद्धा" (सुपा ६४५)।

अडवि, अडवी स्त्री [अटवि, °वी] भयकर जंगल, गहरा वन; (पण्ह १, १; महा)।

अडसट्ठि स्त्री [अष्टषष्टि] अठसठ , (पि ४४२)। °**म** वि [तम] अठसठवाँ ; (पउम ६८, ५१)।

अडाड पुं [दे] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, १६)।

अडिल्ल पुं [अटिल] एक जात का पक्षी ; (पण्ण १)।

अडिल्ला स्त्री [अडिल्ला] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

अडोलिया स्त्री [अटोलिका] १ एक राज-पुत्री, जो यवराज की पुत्री और गर्दभराज की बहिन थी ; २ मूषिका, चूही , (बृह १)।

अडोविय वि [अटोपित] भरा हुआ ; (पण्ह १, ३)।

अड्ड वि [दे] जो आड़े आता हो, बीच में बाधक होता हो वह, "सो कोहाडओ अड्डो आवडिओ" (उप १४६ टी)।

अड्डुक्ख सक [क्षिप्] फेंकना, गिराना । अड्डुक्खइ ; (हे ४, १४३; षड्)।

अड्डुक्खिय वि [क्षिप्त] फेंका हुआ ; (कुमा)।

अड्डण न [अड्डन] १ चर्म, चमड़ा ; २ ढाल, फलक "नवमुग्गवण्णअड्डणढक्किआजाणुभीसणसरीरा" (सुर २,५)।

अड्डिया स्त्री [अड्डिका] मल्लों की क्रिया-विशेष ; (विसे ३३५७)।

अड्ढ देखो अद्ध=अर्ध ; (हे २, ४१; चंद १०; सुर ६, १२६; महा)।

अड्ढ वि [आढ्य] १ संपन्न, वैभव-शाली, धनी ; (पाअ; उवा)। २ युक्त, सहित ; (पंचा १२)। ३ पूर्ण, परिपूर्ण "विगुणमवि गुणड्ढं" (प्रासू ७१)।

अड्ढअक्कली स्त्री [दे] देखो अट्टयक्कली; (दे १,४५)।

अड्ढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध ; (से १३, ६)।

अड्ढाइज्ज, अड्ढाइय वि [अर्धतृतीय] ढाई ; (सम १०१; सुर १, ४४; भवि; विसे १४०१)।

°**अड्ढिय** वि [कृष्ट] खींचा हुआ ; (से ५, ७२)।

अड्ढुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढे तीन; "अड्ढुट्ठाइं सयाइं" (पि ४५०)।

अड्ढेज्ज न [आढ्यत्व] धनिपन, श्रीमंताई ; (ठा १०)।

अड्ढेज्जा स्त्री [आढ्येज्या] श्रीमंत ने किया हुआ सत्कार ; (ठा १०)।

अड्ढोरुग पु (अर्धोरुक] जैन साध्वीओ के पहननेका एक वस्त्र ; (ओघ ३१५)।

अढ (अप) देखो अट्ठ=अष्टन् ; (पि ६७; ३०४; ४४२; ४४५)।

अढाइस (अप) स्त्रीन [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस, २८ ; (पि ४४५)।

अढारसम देखो अट्ठारसम; (भग १८; णाया १ १८)।

अण अ [अ°, अन्°] देखो अ°; (हे २, १९०; से ११ ६४)।

अण सक [अण्] १ अवाज करना। २ जाना। ३ जानना। ४ समझाना। अणइ ; (विसे ३४४१)।

अण पुं [अण] १ शब्द, अवाज; २ गमन गति ; (विसे ३४४०)। ३ कषाय, क्रोध आदि आन्तर शत्रु ; (विसे १२८७)। ४ गाली, आक्रोश अभिशाप ; (तंदु)। ५ न. पाप ; (पण्ह १, १)। ६ कर्म ; (आचा)। ७ वि. कुत्सित, खराब ; (विसे २७९७ टी)।

अण पुं [अन] देखो अणंताणुवंधि ; (कम्म २, ५; १४;२६)।

and distinct points, then

अण पु [**अनस्**] शकट, गाड़ी, (धर्म २) ।

अण देखो **अण्ण**=अन्य “ अणहिअमावि पिआणं ” (से ११, १६, २०) ।

अण न [**ऋण**] १ करजा, ऋण ; (हे १, १४१) । २ कर्म, (उत्त १) । °**धारग** वि [°**धारक**] करजदार, ऋणी ; (गाया १, १७) । °**वल** वि [°**वलं**] उत्तमर्ण, लेनदार; (पण्ह १, २) । ° **भंजग** वि [°**भञ्जक**] देउलिया ; (पण्ह १, ३) ।

°**अण** देखो **गण** ; (से ६, ६६) ।

°**अण** देखो **जण** , “ अणं महिलाअणं रमंतस्स ” (गा ४४) ; “ गुरुअणपरवस पिअ कि (काप्र ६१) ; “ दास-अणाणं ” (अच्चु ३२) ।

अण देखो **तण**; (से ६, ६६) ।

°**अणअरद** देखो **अणवरय** ; (नाट) ।

अणइवर वि [**अनतिवर**] जिससे बढकर दूसरा न हो, सर्वोत्तम ; “ अच्छराओ ....अणइवरसोमचारुरुवाओ ” (ओप) ।

अणईइ वि [**अनीति**] ईति-रहित, शलभादि-कृत उपद्रव से रहित “ अणईइपत्ता ” (ओप) ।

अणंग पुं [**अनङ्ग**] १ काम, विषयाभिलाष, रमणेच्छा; (श्रा १६; आव ६) । २ कामदेव, मन्मथ ; (गा २३३; गउड; कप्पू) । ३ एक राजकुमार, जो आनन्दपुर के राजा जितारि का पुत्र था ; (गच्छ २) । ४ न. विषय-सेवन के मुख्य अगों के अतिरिक्त स्तन, कुक्षि, मुख आदि अंग, (ठा ५, २) । ५ बनावटी लिंग आदि; (ठा ५ २) । ६ बारह अंग-ग्रन्थो से भिन्न जैन शास्त्र; (विसे ८४४) । ७ वि. शरीर-रहित, अंग-हीन, मृत ; “ पहरइ कह णु अणंगो, कह णु हु विंधंति कोसुमा बाणा” (गउड); “पईव-मज्झे पडई पयंगो, रुवाणुरत्तो हवई अणंगो ” (सत्त ४८) । °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] रति, कामदेव की पत्नी ; (सुपा ६६७) । °**पडिसेविणी** स्त्री [°**प्रतिषेविणी**] अमर्यादित रीति से विषय-सेवन करनेवाली स्त्री; (ठा ५, २) । °**पविट्ठ** न [°**प्रविष्ट**] बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन ग्रन्थ; (विसं ५२७) । °**वाण** पु [°**वाण**] काम के वाण ; (गा ७४८) । °**लवण** पुं [°**लवन**] रामचन्द्रजी का एक पुत्र, लव; (पउम ६७,६) । °**सर** पुं [°**शर**] काम के वाण; (गा १०००) । °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] द्वारका की एक विख्यात गणिका ; (णाया १, ५; १६) ।

अणंत पु [**अनन्त**] चालु अवसर्पिणी काल के चौदहवें तीर्थकर-देव “ विमलमणंतं च जिणं ” (पडि) । २ विष्णु, कृष्ण ; (पउम ५, १२२) । ३ शेष नाग ; (से ६, ८६) । ४ जिसमें अनन्त जीव हों ऐसी वनस्पति, कन्द-मूल वगैरः , (ओघ ४१) । ५ न. केवल-ज्ञान ; (गाया १, ८) । ६ आकाश , (भग २०, २) । ७ वि. नाश-वर्जित, शाश्वत , (सूअ १,१,४ ; पण्ह १, ३) । ८ निःसीम, अपरिमित. असंख्य से भी कहीं अधिक ; (विसे)। ९ प्रभूत, वहुत, विशेष ; (प्रासू २६ ; ठा ४, १) । °**काइय** वि [°**कायिक**] अनन्त जीव वाली वनस्पति, कन्द-मूल आदि ; (धर्म २) । °**काय** पुं [°**काय**] कन्द-मूल आदि अनन्त जीव वाली वनस्पति ; (पण्ण १)। °**खुत्तो** अ [°**कृत्वस्**] अनन्त वार ; (जी ४४) । °**जीव** पु [°**जीव**] देखो °**काइय** ; (पण्ण १) । °**जीविय** वि [°**जीविक**] देखो °**काइय** ; (भग ८,३) । °**णाण** न [°**ज्ञान**] केवल-ज्ञान ; (दस २) । °**णाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ ; (सूअ १, ६) । °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] सर्वज्ञ ; (पउम ४८, १०५) । °**पासि** वि [°**दर्शिन्**] ऐरवत क्षेत्र के बीसवें जिन-देव ; (तित्थ) । °**मिस्सिया** स्त्री [°**मिश्रिका**] सत्य-मिश्र भाषा का एक भेद ; जैसे अनन्तकाय से भिन्न प्रत्येक-वनस्पति से मिली हुई अनन्तकाय को भी अनन्तकाय कहना ; (पण्ण ११) । °**मीसय** न[°**मिश्रक**] देखो °**मिस्सिया**; (ठा १०) । °**रह** पु [°**रथ**] विख्यात राजा दशरथ के बड़े भाईका नाम, (पउम २२,१०१)। °**विजय** पुं [°**विजय**] भरतक्षेत्र के २४ वें और ऐरवत क्षेत्र के बीसवें भावि तीर्थकर का नाम ; (सम १५४)। °**वीरिय** वि [°**वीर्य**] १ अनन्त बल वाला । २ पुं. एक केवलज्ञानी मुनि का नाम ; (पउम १४, १५८) । ३ एक ऋषि, जो कार्तवीर्य के पिता थे ; (आचू १)। ४ भरतक्षेत्र के एक भावि तीर्थंकर का नाम; (ती २१) । °**संसारिय** वि [°**संसारिक**] अनन्त काल तक संसार में जन्म-मरण पानेवाला; (उप ३८४) । °**सेण** पु [°**सेन**] १ चौथा कुलकर ; (सम १५०) । २ एक अन्तकृद् मुनि ; (अत ३) ।

अणंतइ पुं [**अनन्तजित्**] चालु काल के चौदहवें जिन-देव; (पउम ५, १४८)।

अणंतग, **अणंतय** } १ देखो **अणंत**; (ठा ५, ३)। २ न. वस्त्र-विशेष; (ओघ ३६)। ३ पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव;

(सम १५३)।

अणंतर वि [**अनन्तर**] १ व्यवधान-रहित, अव्यवहित " अणंतरं चयं चइत्ता " (णाया १, ८)। २ पुं. वर्तमान समय; (ठा १०)। ३ क्रिवि. बाद में, पीछे, (विपा १, १)।

अणंतरहिय वि [**अनन्तर्हित**] १ अव्यवहित, व्यवधान-रहित ; (आचा)। २ सजीव, सचित्त, चेतन ; (निचू ७)।

अणंतसो अ [**अनन्तशस्**] अनन्त वार ; (दं ४५)।

अणंताणुबंधि पु [**अनन्तानुबन्धिन्**] अनन्त काल तक आत्मा को संसार में भ्रमण कराने वाले कषायो की चार चौकडियो में प्रथम चौकड़ी, अतिप्रचंड क्रोध, मान, माया और लोभ ; (सम १६)।

अणक्क पुं [**दे**] १ एक म्लेच्छ देश, २ एक म्लेच्छ जाति; (पण्ह १, १)।

अणक्ख पुं [**दे**] १ रोष, गुस्सा, क्रोध ; (सुपा १३; १३०; ६१४ ; भवि)। २ लज्जा ; (स ३७६)।

अणक्खर न [**अनक्षर**] श्रुत-ज्ञान का एक भेद—वर्ण के विना संपर्क के, छींकना, चुटकी बजाना, सिर-हिलाना आदि संकेतों से दूसरे का अभिप्राय जानना ; (णंदि)।

अणगार वि [**अनगार**] १ जिसने घर-वार त्याग किया हो वह, साधु, यति, मुनि ; (विपा १, १ ; भग १७, ३)। २ घर-रहित, भिक्षुक, भीखमँगा; (ठा ६)। ३ पुं. भरतक्षेत्र के भावी पांचवें तीर्थंकर का एक पूर्वभवीय नाम, (सम १५४)। °**सुय** न [°**श्रुत**] 'सूत्रकृतांग' सूत्र का एक अध्ययन; (सूत्र २, ५)।

अणगार वि [**ऋणकार**] १ करजा करनेवाला ; २ दुष्ट शिष्य, अपात्र ; (उत्त १)।

अणगार वि [**अनाकार**] आकृति-शून्य, आकार-रहित " उवलंभव्ववहाराभावओ नाणगारं च " (विसे ६५)।

अणगारि पु [**अनगारिन्**] साधु, यति, मुनि; (सम ३७)।

अणगारिय वि [**अनगारिक**] साधु-संबन्धी, मुनि का ; (विसे २६७३)।

अणगाल पुं [**अकाल**] दुर्भिक्ष, अकाल ; (बृह ३)।

अणगिण पुं [**अनग्न**] १ जो नंगा न हो, वस्त्रो से आच्छादित। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देता है ; (तंदु)।

अणग्घ वि [**ऋणघ्न**] ऋण-नाशक, कर्म-नाशक ; (दंस)।

अणग्घ, **अणग्घेय** वि [**अनर्घ्य**] १ अमूल्य, बहुमूल्य, किंमती ; (आव ४) " रयणाइं अणग्घेयाइं हुति पंचप्पयारवण्णाइं " (उप ५९७ टी ; स ८०)। २ महान्, गुरु ; ३ उत्तम, श्रेष्ठ; "तं भगवंत अणह नियत्तीए अणग्घभतीए, सक्कारेमि ' (विवे ६५; ७१)।

अणघ वि [**अनघ**] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ ; (पंचव ४)।

अणच्छ देखो **करिस**=कृष्। अणच्छइ; (हे ४, १८७)।

अणच्छिआर वि [**दे**] अच्छिन्न, नहीं छेदा हुआ; (दे १,४४)।

अणज्ज वि [**अन्याय्य**] अयोग्य, जो न्याय-युक्त नहीं ; (पण्ह १, १)।

अणज्ज वि [**अनार्य**] आर्य-भिन्न, दुष्ट, खराब, पापी ; (पण्ह १, १ , अभि १२३)।

अणज्जव (अप) ऊपर देखो। °**खंड** पुं [°**खण्ड**] अनार्य देश, (भवि ३१२, २)।

अणज्झवसाय पु [**अनध्यवसाय**] अव्यक्त ज्ञान, अति सामान्य ज्ञान ; (विसे ६२)।

अणज्झाय पुं [**अनध्याय**] १ अध्ययन का अभाव ; २ जिसमें अध्ययन निषिद्ध है वह काल ; (नाट)।

अणट्ट वि [**अनार्त**] आर्त-ध्यान से रहित; " अणट्टा कित्ति पव्वए " (उत्त १८, ५०)।

अणट्ठ पुं [**अनर्थ**] १ नुकसान , हानि ; (णाया १, ६ ; उप ६ टो)। २ प्रयोजन का अभाव ; (आव ६)। ३ वि. निष्कारण, वृथा, निष्फल ; (निचू १ ; पण्ह २, १)। °**दंड** पुं [**दण्ड**] निष्कारण हिंसा, विना ही प्रयोजन दूसरे की हानि; (सूत्र २, २)।

अणड्ड पुं [**दे**] जार, उपपति ; (दे १, १८ ; षड्)।

अणड्ढ वि [**अनर्ध**] विभाग-रहित, अखण्ड ; (ठा ३, ३)

अणण्ण वि [**अनन्य**] १ अभिन्न, अपृथग्भूत ; (निचू १)। २ मोक्ष-मार्ग " अणण्णं चरमाणे से ण छणे ण छणावए " (आचा)। ३ असाधारण, अद्वितीय ; (सुपा १८९; सुर १, ७)। °**तुल्ल** वि [°**तुल्य**] असाधारण, अनुपम; (उप ६४८ टी)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] पदार्थ को सत्य २ देखने वाला; (आचा)। °**परम** वि [°**परम**] संयम, इन्द्रिय-निग्रह " अणण्णपरमे णाणी, णो पमाए कयाइवि " (आचा)। °**मण**, °**मणस** वि [°**मनस्क**] एकाग्र चित्त वाला, तल्लीन ; (औप ; पउम ६, ६३)। °**समाण** वि [°**समान**] असाधारण, अद्वितीय; (उप ५९७ टी)।

अणत्त वि [**अनात्त**] अगृहीत, अस्वीकृत (ठा २, ३)।

अणत्त वि [**अनार्त्त**] अपीडित " दव्वावइमाईसु, अतमणत्तो गवेसणं कुणइ " (वव १)।

अणत्त वि [**ऋणार्त्त**] ऋण से पीडित, (ठा ३, ४)।

अणत्त वि [**अनात्र**] दुःखकर, सुख-नाशक "णेरइआणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता वा" (भग १४, ६)।

अणत्त न [**दे**] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य, (दे १, १०)।

अणत्थ देखो **अणट्ठ** ; (पउम ६२, ४ ; श्रा २७ ; सण)।

अणथंत वक [**अतिष्ठत्**] १ नहीं रहता हुआ ; २ अस्त होता हुआ "अणथंते दिवसयरे जो चयइ चउव्विहंपि आहार" (पउम १४, १३४)।

अणन्न देखो **अणण्ण** ; (सुपा १८६ ; सुर १, ७ ; पउम ६, ६३)।

अणपन्निय देखो **अणवण्णिय** ; (भग १०, २)।

अणप्प वि [**अनर्प्य**] अर्पण करने को अयोग्य या अशक्य ; (ठा ६)।

अणप्प वि [**अनल्प**] अधिक, बहुत ; (औप)।

अणप्प पु [**अनात्मन्**] निजसे भिन्न, आत्मा से पर ; (पउम ३७, २२)। °**ज्ज** वि (°**ज्ञ**) १ निर्बोध, मूर्ख, २ पागल, भूताविष्ट, पराधीन ; (निचू १)। °**वसग** वि [°**वश**] परवश, पराधीन ; (पउम ३७, २२)।

अणप्प पु [**दे**] खड्ग, तलवार ; (दे १, १२)।

अणप्पिय वि [**अनर्पित**] १ नहीं दिया हुआ ; २ साधारण, सामान्य, अविशेषित, (ठा १०)। °**णय** पुं [°**नय**] सामान्य-ग्राही पक्ष ; (विसे)।

अणब्भंतर वि [**अनभ्यन्तर**] भीतरी तत्व को नहीं जानने वाला, रहस्य-अनभिज्ञ "अणब्भंतरा खु अम्हे मदणगदस्स वुत्तंतस्स" (अभि ६१)।

अणभिग्गह न [**अनभिग्रह**] "सर्वे देवा वन्द्याः" इत्यादिरूप मिथ्यात्व का एक भेद ; (श्रा ६)।

अणभिग्गहिय न [**अनभिग्रहिक**] ऊपर देखो ; (ठा २, १)।

अणभिग्गहिय वि [**अनभिगृहीत**] १ कदाग्रह-शून्य ; (श्रा ६) २ अस्वीकृत ; (उत २८)।

अणभिण्ण, **अणभिन्न** वि [**अनभिज्ञ**] अजान, निर्बोध ; (अभि १७४ ; सुपा १६८)।

अणभिलप्प वि [**अनभिलाप्य**] अनिर्वचनीय, जो वचन से न कहा जा सके ; (लहुअ ७)।

अणमिस वि [**अनिमिष**] १ विकसित, खुला हुआ ; (सुर ३, १४३)। २ निमेष-रहित, पलक-वर्जित ; (सुपा ३५४)।

अणय पु [**अनय**] अनीति, अन्याय ; (श्रा २७ ; स ५०१)।

अणयार देखो **अणगार** ; (पउम ९१, ७)।

अणरण्ण पुं [**अनरण्य**] साकेतपुर का एक राजा, जो पीछे से ऋषि हुआ था ; (पउम १०, ८७)।

अणरह, **अणरिह**, **अणरुह** वि [**अनर्ह**] अयोग्य, नालायक ; (कुमा), "णवि दिज्जति अणरिहे, अणरिहत्तं तु इमो होइ" (पंचभा)।

अणरहु स्त्री [**दे**] नवोढा, दुलहिन ; (षड्)।

अणरामय पुं [**दे**] अरति, बेचैनी, (दे १, ४५, भवि)।

अणराय वि [**अराजक**) राज-शून्य, जिसमें राजा न हो वह ; (बृह १)।

अणराह पु (**दे**) सिर में पहनी जाती रंग-बेरंगी पट्टी ; (दे १, २४)।

अणरिक्क वि [**दे**] अवकाश-रहित, फुरसद-वर्जित ; (दे १, २०)। २ दधि, क्षीर आदि गोरस भोज्य ; (निचू १६)।

अणरिह, **अणरुह** वि [**अनर्ह**] अयोग्य, अ-लायक ; (णाया १, १)।

अणल पुं [**अनल**] १ अग्नि, आग ; (कुमा)। २ वि. असमर्थ, ३ अयोग्य "अणलो अपच्चलोत्ति य होति अजोगो व एगट्ठा" (निचू ११)।

अणव वि [**ऋणवत्**] १ करजदार ; २ पुं दिवस का छब्बीसवाँ मुहूर्त ; (चंद)।

अणवकय वि [**अनपकृत**] जिसका अपकार न किया गया हो वह, (उत्त)।

अणवगल्ल वि [**अनवग्लान**] ग्लानि-रहित, नीरोग, "सड्ढस्स अणवगल्लस्स निरुवकिट्ठस्स, जंतुणो।
एगे ऊणासनोकाम, एस पाणुत्ति वुच्चइ" (ठा २, ४)।

अणवच्च वि [**अनपत्य**] सन्तान-रहित, निर्वंश, (सुपा २५६)।

अणवज्ज न [**अनवद्य**] १ पाप का अभाव, कर्म का अभाव, (सूअ १, १, २)। २ वि. निर्दोष, निष्पाप ; (षड्)।

अणवज्ज वि [**अनवर्ज्य**] ऊपर देखो ; (विसे)।

अणवट्ठप्प वि [**अनवस्थाप्य**] १ जिसको फिरसे दीक्षा न दी जा सके ऐसा गुरु अपराध करनेवाला, (बृह ४)। २ न. गुरु प्रायश्चित्त का एक भेद ; (ठा ३, ४)।

अणवट्ठिय वि [**अनवस्थित**] १ अव्यवस्थित, अनियमित,

(प्रासू १३७; सुर ४,७६)। २ चंचल, अस्थिर "अणवट्ठियं च चित्तं" (सुर १२, १३८)। ३ पल्य-विशेष, नाप-विशेष ; (कम्म ४, ७३)।
अणवण्णिय पुं [अणपन्निक, अणपर्णिक] वानव्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४, भग १०, २)।
अणवत्थ वि [अनवस्थ] अव्यवस्थित, अनियमित असमंजस ; (दे १, १३६)।
अणवत्था स्त्री [अनवस्था] १ अवस्था का अभाव; (उव)। २ एक तर्क-दोष ; (विसे)। ३ अव्यवस्था; "जणणी जायइ जाया, जाया माया पिया य पुत्तो य। अणवत्था संसारे, कम्मवसा सव्वजीवाणं" (विवे १०७)।
अणवदग्ग वि [दे] १ अनन्त, अपरिमित, निस्सीम ; (भग १, १)। २ अविनाशी (सूअ २, ५)।
अणवन्निय देखो **अणवण्णिय**; (औप)।
अणवयग्ग देखो **अणवदग्ग** ; (सम १२५ ; पण्ह १, ३ ; प्राप)।
अणवयमाण वकृ [अनपवदत्] १ अपवाद नहीं करता हुआ। २ सत्यवादी ; (वव ३)।
अणवरय वि [अनवरत] १ सतत, निरन्तर, अविच्छिन्न ; २ न. सदा, हमेशाँ ; (गा २८० ; सुपा ६)।
अणवराइस (अप) वि [अनन्यादृश] असाधारण, अद्वितीय ; (कुमा)।
अणवसर वि [अनवसर] आकस्मिक, अचिन्तित ; (पाअ)।
अणवाह वि [अबाध] बाधा-रहित, निर्बाध, (सुपा २८८)।
अणवेक्खिय वि [अनपेक्षित] उपेक्षित, जिसकी परवा न हो।
अणवेक्खिय वि [अनवेक्षित] १ नहीं देखा हुआ ; २ अविचारित, नहीं सोचा हुआ। °**कारि** वि (°**कारिन्**) साहसिक। °**कारिया** स्त्री (°**कारिता**) साहस कर्म ; (उप ७६८ टी)।
अणसण न [अनशन] आहार का त्याग, उपवास ; (सम ११६)।
अणसिय वि [अनशित] उपोषित, उपवासी ; (आवम)।
अणह वि [अनघ] निर्दोष, पवित्र ; (औप ; गा २७२; से ६, ३)।
अणह वि [दे] अक्षत, क्षति-रहित, व्रण-शून्य ; (दे १, १३ ; सुपा ६, ३३; सण)।
अणह न [अनभस्] भूमि, पृथिवी ; (से ६, ३)।
अणहप्पणय वि [दे] अनष्ट, विद्यमान, (दे १,४८)।
अणहवणय वि [दे] तिरस्कृत, भर्त्सित ; (षड्)।
अणहारय पुं [दे] खल, खला, जिसका मध्य-भाग नीचा हो वह जमीन ; (दे १, ३८)।
अणहिअअ वि [अहृदय] हृदय-रहित, निष्ठुर, निर्दय ; (प्राप, गा ४१)।
अणहिगय वि [अनधिगत] १ नहीं जाना हुआ। २ पुं. वह साधु, जिसको शास्त्रों का पूरा ज्ञान न हो, अगीतार्थ ; (वव १)।
अणहिण्ण देखो **अणभिण्ण**; (प्राप)।
अणहियास वि [अनध्यासक] असहिष्णु, सहन नहीं करने वाला ; (उव)।
अणहिल, **अणहिल्ल** न [अणहिल्ल] गुजरात देश की प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है ; (ती २६ ; कुमा)। °**वाडय** न [**पाटक**] देखो **अणहिल**, (गु १० ; मुणि १०८८८)।
अणहीण वि [अनधीन] स्वतन्त्र, अनायत्त; (सग १६१)।
अणाइ वि [अनादि] आदि-रहित, नित्य, (सम १२५)। °**णिहण, निहण** वि [°**निधन**] आद्यन्त-वर्जित, शाश्वत ; (उव ; सम्म ६५, आव ४)। °**मंत, °वंत** वि [**मत्**] अनादि काल से [illegible], (पउम ११८, ३२; भवि)।
अणाइज्ज वि [अनादेय] १ अनुपादेय, ग्रहण करने को अयोग्य। २ नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का वचन, युक्त होने पर भी, ग्राह्य नहीं समझा जाता है ; (कम्म १, २७)।
अणाइय वि [अनादिक] आदि-रहित, नित्य ; (सम १२५)।
अणाइय वि [अज्ञातिक] स्वजन-रहित, अकेला ; (भग १, १)।
अणाइय वि [अणातीत) पापी, पापिष्ठ ; (भग १, १)।
अणाइय पुं [ऋणातीत] संसार, दुनयां ; (भग १, १)।
अणाइय वि [अनादृत] जिसका आदर न किया गया हो वह ; (उप ८३३ टी)।
अणाइल वि [अनाविल] १ अकलुषित, निर्मल ; (पण्ह २, १)।
अणाईअ देखो **अणाइय** ; (उप १०३१ टी ; पि ७०)।
अणाउ, **अणाउय** पु [अनायुष्क] १ जिन-देव ; (सूअ १, ६)। २ मुक्तात्मा, सिद्ध ; (ठा १)।

अणाउल वि [**अनाकुल**] अव्याकुल, धीर ; (सूअ १, २, २ ; णाया १, ८) ।

अणाउत्त वि [**अनायुक्त**] उपयोग-शून्य, बे-ख्याल, असावधान ; (औप) ।

अणाएज्ज देखो **अणाइज्ज** ; (सम १५६) ।

अणागय पुं [**अनागत**] १ भविष्य काल,
" अणागयमपस्संता, पच्चुप्पन्नगवेसगा ।
ते पच्छा परितप्पंति, खीणे आउम्मि जोव्वणे" (सूअ १,३,४)।
२ वि. भविष्य में होनेवाला ; (सुअ १, २) । °द्धा स्त्री [°द्धा) भविष्य काल ; (नव ४२) ।

अणागलिय वि [**अनर्गलित**] नहीं रोका हुआ ; (उवा)।

अणागलिय वि [**अनाकलित**] १ नहीं जाना हुआ, अलक्षित ; (णाया १, ६) । २ अपरिमित " अणागलियतिव्वचंडरोसं सप्परूवं विउव्वइ " (उवा) ।

अणागार वि [**अनाकार**] १ आकार-रहित, आकृति-शून्य; (ठा १०) । २ विशेषता-रहित ; (कम्म ४, १२) । ३ न. दर्शन, सामान्य ज्ञान ; (सम ६५) ।

अणाजीव वि [**अनाजीव**] १ आजीविका-रहित ; २ आजीविका की इच्छा नहीं रखने वाला ; ३ निःस्पृह, निरीह ; (दस ३) ।

अणाजीवि वि [**अनाजीविन्**] ऊपर देखो " अगिलाई अणाजीवी" (पडि ; निचू १) ।

अणाड पुं [**दे**] जार, उपपति ; (दे १, १८) ।

अणाढिय वि [**अनादृत**] १ जिसका आदर न किया गया हो वह, तिरस्कृत ; (आव ३) । २ पुं. जम्बूद्वीप का अधिष्ठायक एक देव, (ठा २, ३) । ३ स्त्री. जम्बूद्वीप के अधिष्ठायक देव की राजधानी ; (जीव ३) ।

अणाणुगामिय वि [**अनानुगामिक**] १ पीछे नहीं जाने वाला ; (ठा ५, १) । २ न. अवधिज्ञान का एक भेद ; (णंदि) ।

अणादिय } देखो **अणाइय**, (इक; पण्ह १, १ ; ठा
अणादीय } ३, १) ।

अणादेज्ज देखो **अणाइज्ज** ; (पण्ह १, ३) ।

अणाभोग पुं [**अनाभोग**] १ अनुपयोग, बे-ख्याली, असावधानी ; (आव ४) । २ न. मिथ्यात्व-विशेष ; (कम्म ४, ५१) ।

अणामिय वि [**अनामिक**] १ नाम-रहित ; २ पु. असाध्य रोग , (तंदु) । ३ स्त्री. कनिष्ठांगुली के ऊपर की अंगुली।

अणाय वि [**अज्ञात**] नहीं जाना हुआ, अपरिचित ; (पउम २४, १७) ।

अणाय पुं [**अनाक**] मर्त्यलोक, मनुष्य-लोक ; (मे १,१)।

अणाय पुं [**अनात्मन्**] आत्म-भिन्न; आत्मा से पर ; (सम १) ।

अणायग वि [**अनायक**] नायक-रहित ; (पउम ५६, ७०) ।

अणायग वि [**अज्ञातक**] स्वजन-रहित, अकेला; (निचू ६)।

अणायग वि [**अज्ञायक**] अजान, निर्बोध; (निचू ११)।

अणायतण } न [**अनायतन**] १ वेश्या आदि नीच
अणाययण } लोगों का घर ; (दस ५, १) । २ जहां सज्जन पुरुषों का संसर्ग न होता हो वह स्थान ; (पण्ह २, ४) । ३ पतित साधुओं का स्थान ; (आव ३) । ४ पशु, नपुंसक वगैरः के संसर्ग वाला स्थान ; (ओघ ७६३) ।

अणायत्त वि [**अनायत्त**] पराधीन ; (पउम २६,२६)।

अणायर पुं [**अनादर**] अ-बहुमान, अपमान; (पाअ) ।

अणायरण न [**अनाचरण**] अनाचार, खराब आचरण ।

अणायरणया स्त्री [**अनाचरण**] ऊपर देखो ; (सम ७१) ।

अणायरिय देखो **अणज्ज**=अनार्य ; (पण्ह १, १; पउम १४, ३०) ।

अणायार देखो **अणागार**=अनाकार , (विसे) ।

अणायार पुं [**अनाचार**] १ शास्त्र-निषिद्ध आचरण ; (स १८८) । २ गृहीत नियमों का जान-बुझ कर उल्लंघन करना, व्रत-भङ्ग ; (वव १) ।

अणारिय देखो **अणज्ज**=अनार्य ; (उवा) ।

अणारिस वि [**अनार्ष**] जो ऋषि-प्रणीत न हो वह ; (पउम ११, ८०) ।

अणारिस वि [**अन्यादृश**] दूसरे के जैसा; (नाट) ।

अणालत्त वि [**अनालपित**] अनुक्त, अकथित, नहीं बुलाया हुआ, (उवा) ।

अणालवय पु [**अनालपक**] मौन, नहीं बोलना; (पाअ)।

अणावरण वि [**अनावरण**] १ आवरण-रहित; २ न. केवल ज्ञान, (सम्म ७१) ।

अणाविट्ठि } स्त्री [**अवृष्टि**] वर्षा का अभाव ; (पउम
अणावुट्ठि } २०, ८७; सम ६०) ।

अणाविल वि [**अनाविल**] १ निर्मल, स्वच्छ ; (गउड) ।

अणासंसि वि [**अनाशंसिन्**] अनिच्छु, निस्पृह ; (बृह १)।
अणासय पुं [**अनाश, °क**] अनशन, भोजनाभाव "खारस्स लोणस्स अणासएणं" (सूअ १, ७, १३)।
अणासव वि [**अनाश्रव**] १ आश्रव-रहित, २ पुं आश्रव का अभाव, संवर ; ३ अहिंसा, दया; (पगह २, १)।
अणासिय वि [**अनशित**] भूखा ; (सूअ १, ५, २)।
अणाह वि [**अनाथ**] १ शरण-रहित ; (निचू ३)। २ स्वामि-रहित, मालिक-रहित। ३ रंक, गरीब, बिचारा ; (णाया १, ८)। ४ पुं. एक जैन मुनि ; (उत्त २०)।
अणाहि, अणाहिय वि [**अनाधि, °क**] मानसिक पीड़ा से रहित, (से ३, ४४ ; पि ३६५)।
अणाहिट्ठि पुं [**अनाधृष्टि**] एक अन्तकृद् मुनि ; (अन्त३)।
अणिइय वि [**अनियत**] १ अनियमित, अव्यवस्थित, २ पुं. संसार ; (भग ६, ३३)।
अणिउंचिय वि [**अनिकुञ्चित**] टेढ़ा नहीं किया हुआ, सरल ; (गउड)।
अणिउँत, अणिउँतय, अणिउँत्तय देखो **अइमुत्त**, (दे ४,३८ ; हे १, १७८ ; कुमा)।
अणिएय वि [**अनियत**] अनियमित, अप्रतिबद्ध ; "अखिले अगिद्धे अणिएयचारी, अभयंकरे भिक्खू अणाविलप्पा" (सूअ १, ७, २८)।
अणिंदिय वि [**अनिन्दित**] १ जिसकी निन्दा न की गई हो वह, उत्तम ; (धर्म १)। २ पुं. किंनर देव की एक जाति ; (पगण १)।
अणिंदिय वि [**अनिन्द्रिय**] १ इंद्रिय-रहित; २ पुं. मुक्त जीव; ३ केवलज्ञानी; (ठा १०)। ४ वि. अतीन्द्रिय, जो इंद्रियों से जाना न जा सके "नय विज्जइ तग्गहणे लिंगंपि अणिंदियत्तणओ" (सुर १२, ४८; स १६८; विसे १८६२)।
अणिंदिया स्त्री [**अनिन्दिता**] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)।
अणिक्क वि [**अनेक**] एक से ज्यादः ; (नव ४३)। **°वाइ** वि [**°वादिन्**] अक्रियावादी ; (ठा ८)।
अणिक्किणी स्त्री [**अनीकिनी**] ऐसी सेना जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०६३५ प्यादें हों; (पउम ५६, ६)।
अणिक्खित्त वि [**अनिक्षिप्त**] नहीं छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त, अविच्छिन्न, "अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ" (उवा; औप)।
अणिगण, अणिगिण देखो **अणगिण** ; (जीव ३; सम १७)।
अणिग्गह वि (**अनिग्रह**) स्वच्छन्द, असंयत; (पगह १, २)।
अणिच्च वि [**अनित्य**] नश्वर, अस्थायी ; (नव २४; प्रासू ६५)। **°भावणा** स्त्री [**°भावना**] सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन ; (पव ६७)। **°णुप्पेहा** स्त्री [**°नुप्रेक्षा**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा ४, १)।
अणिट्ठ वि [**अनिष्ट**] अप्रीतिकर, द्वेष्य ; (उव)।
अणिट्ठिय वि [**अनिष्ठित**] असंपूर्ण ; (गउड)।
अणिण देखो **अणिरिण** ; (नाट)।
अणिदा स्त्री [**दे. अनिदा**] १ बिना ख्याल किये की गई हिंसा ; (भग १६, ५)। २ चित्त की विकलता ; ३ ज्ञान का अभाव ; (भग १, २)।
अणिमा पुंस्त्री [**अणिमन्**] आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति ; (पउम ७, १३६)।
अणिमिस, अणिमेस वि [**अनिमिष, °मेष**] १ निमेष-शून्य ; (सुर ३, १७३)। २ पुं. मत्स्य, मछली ; (दस १)। ३ देव, देवता ; (वव १; श्रा १६)। **°नयण** पुं [**नयन**] देव, देवता ; (विसे ३४८६)।
अणिय न [**अनीक**] सैन्य, लश्कर ; (कप्प)।
अणिय न [**अनृत**] असत्य, झूठ ; (ठा १०)।
अणिय न [**दे**] धार, अग्र भाग ; (पगह २, २)।
अणिय वि [**अनित्य**] अस्थिर, अनित्य ; (उव)।
अणियट्ट पुं (**अनिवर्त**] १ मोक्ष, मुक्ति ; (आचा १, ५, १)। २ एक महाग्रह ; (ठा २, ३)।
अणियट्टि वि [**अनिवर्तिन्**] १ निवृत्त नहीं होनेवाला ; पीछे नहीं लौटने वाला ; (औप)। २ न. शुक्ल-ध्यान का एक भेद ; (ठा ४, १)। ३ पुं. एक महाग्रह ; (चंद २०)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर देव का नाम ; (सम १५४)।
अणियट्टि वि [**अनिवृत्ति**] १ निवृत्ति-रहित, व्यावृत्ति-वर्जित; (कर्म २, २)। २ नववाँ गुण-स्थानक ; (कर्म २)। **°करण** न [**°करण**] आत्मा का विशुद्ध परिणाम-विशेष ; (आचा)। **°बादर** न [**°बादर**] १ नववाँ गुण-स्थानक ; २ नववें गुण-स्थानक में प्रवृत्त जीव; (आव ४)।
अणियण देखो **अणगिण** ; (जीव ३)।

अणियय वि [**अनियत**] १ अव्यवस्थित, अनियमित ; (उव) । २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देती है ; (ठा १०) ।

अणिया देखो **अणिदा** , (पिड) ।

अणिरिक्क वि [**दे**] परतन्त्र, पराधीन ; (काप्र ५४ ; गा ६६१) ।

अणिरिण वि [**अनृण**] ऋण-वर्जित, उऋण, अनृणी ; (अभि ४६; चारु ६६) ।

अणिरुद्ध वि [**अनिरुद्ध**] १ अप्रतिहत, नहीं रोका हुआ ; (सूत्र १, १२) । २ एक अन्तकृद् मुनि, (अन्त ४) ।

अणिल पु [**अनिल**] १ वायु, पवन ; (कुमा) । २ एक अतीत तीर्थंकर का नाम ; (तित्थ) । ३ राक्षस-वंशीय एक राजा ; (पउम ५, २६४) ।

अणिला स्त्री [**अनिला**] वाईसवें तीर्थंकर की एक शिष्या; (पव ६) ।

अणिल्ल न [**दे**] प्रभात, सवेरा ; (दे १, १६) ।

अणिस न [**अनिश**] निरन्तर, सदा, हमेशा ; (गा २६२, प्रासू २६) ।

अणिसट्ठ } वि [**अनिसृष्ट**] १ अनिक्षिप्त ; २ असंमत,
अणिसिट्ठ } अननुज्ञात; ३ ऐसी भिक्षा, जिसके मालिक अनेक हों और जो सब की अनुमति से ली न गई हो,—साधु की भिक्षा का एक दोष ; (पिंड, औप) ।

अणिसीह वि [**अनिशीथ**] शास्त्र-विशेष, जो प्रकाश में पढा या पढ़ाया जाय ; (आवम) ।

अणिस्सकड वि [**अनिश्रोकृत**] जिस पर किसी खास व्यक्ति का अधिकार न हो, सर्व-साधारण ; (धर्म २) ।

अणिस्सा स्त्री [**अनिश्रा**] अनासक्ति, आसक्ति का अभाव; (उव) ।

अणिस्सिय वि [**अनिश्रित**] १ अनासक्त, आसक्ति-रहित ; (सूत्र १, १६) । २ प्रतिबन्ध-रहित, रुकावट-वर्जित , (दस १) । ३ अनाश्रित, किसी के साहाय्य की इच्छा न रखने वाला ; (उत्त १६) । ४. न. ज्ञान-विशेष, अवग्रह-ज्ञान का एक भेद, जो लिंग या पुस्तक के बिना ही होता है ; (ठा ६) ।

अणिह वि [**अनीह**] १ धीर, सहिष्णु ; (सूत्र १, २, २) २ निष्कपट, सरल ; (सूत्र १, ८) । ३ निर्मम, निःस्पृह ; (आचा) ।

अणिह वि [**दे**] १ सदृश, तुल्य ; २ न. मुख, मुँह ; (दे १, ५१) ।

अणिहय वि [**अनिहत**] अहत, नहीं मारा हुआ । °**रिउ** पुं [°**रिपु**] एक अन्तकृद् मुनि ; (अन्त ३) ।

अणिहस वि [**अनीदृश**] इस माफिक नहीं, विलक्षण ; (स ३०७) ।

अणिय न [**अनीक**] सेना, लश्कर ; (औप) ।

अणीयस पुं [**अनीयस**] एक अन्तकृद् मुनि का नाम , (अन्त ३) ।

अणीस वि [**अनीश**] असमर्थ ; (अभि ६०) ।

अणीसकड देखो **अणिस्सकड** ; (धर्म २) ।

अणोहारिम वि [**अनिर्हारिम**] गुफा आदि में होने वाला मरण-विशेष ; (भग १३, ८) ।

अणु अ [**अनु**] यह अव्यय नाम और धातु के साथ लगता है और नीचेके अर्थों में से किसी एक को बतलाता है ;—१ समीप, नजदीक ; जैसे—'अणुकुंडल' ; (गउड) । २ लघु, छोटा ; जैसे—'अणुगाम' (उत्त ३) । ३ क्रम. परिपाटी ; जैसे—'अणुगुरु' ; (बृह १) । ४ में, भीतर; जैसे—'अणुजत्त' (महा) । ५ लक्ष्य करना ; जैसे— " अणु जिणं अकारि संगीयं इत्थीहिं " (कुमा) ; " अणु धारं संदढभमोतिए तुह असिम्मि सचविया " (गउड) । ६ योग्य, उचित ; जैसे—'अणुजुत्ति' (सूत्र १, ४, १) । ७ वीप्सा, जैसे—' अणुदिण ' (कुमा) । ८ बीच का भाग, जैसे—'अणुदिसी' (पि. ४१३) । ६ अनुकूल, हितकर ; जैसे— 'अणुधम्म' (सूत्र १, २, १) । १० प्रतिनिधि, जैसे—'अणुप्पभु' (निचू २) । ११ पीछे, बाद ; जैसे—'अणुमज्जण' (गउड) । १२ बहुत, अत्यन्त, जैसे—'अणुवंक' (मा ६२) । १३ मदद करना, सहायता करना, जैसे—'अणुपरिहारि' (ठा ३, ४) । १४ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, जैसे—देखो 'अणुक्कम', 'अणुसरिस' ।

अणु वि [**अणु**] १ थोड़ा, अल्प ; (पण्ह २, ३) । २ छोटा ; (आचा) । ३ पुं. परमाणु ; (सम्म १३६) । °**मय** वि (°**मत**) उत्तम कुल, श्रेष्ठ वंश ; (कप्प) । °**विरइ** स्त्री [°**विरति**] देखो **देसविरइ**; (कम्म १,१८) ।

अणु पु [**दे**] धान-विशेष, चावलकी एक जाति; (दे १, ५२)

°**अणु** स्त्री [**तनु**] शरीर " सुअणु " (गा २६६) ।

अणुअ देखो **अणु**=अणु ; (पाअ) ।

अणुअ वि [**अज्ञ**] अजान, मूर्ख ; (गा १८४; ३४५) ।

अणुअ पुं [दे] १ आकृति, आकार। २ पुंस्त्री. धान्य-विशेष ; (दे १, ५२ ; श्रा १८)।
अणुअ वि [अनुग] अनुसरण करने वाला "अधम्माणुए" (विपा १, १)।
अणुअ वि [अनुज] १ पीछे से उत्पन्न ; २ पु. छोटा भाई ; ३ स्त्री. छोटी बहिन ; (अभि ८२; पउम २८,१००)।
अणुअंच सक [अनु+कृष्] पीछे खींचना। संकृ—**अणुअंचिवि** ; (भवि)।
अणुअंपा स्त्री [अनुकम्पा] दया, करुणा ; (से ५, २४ ; गा १६३)।
अणुअंपि वि [अनुकम्पिन्] दयालु, करुणा करने वाला ; (अभि १७३)।
अणुअत्तय वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल आचरण करने वाला, अनुसरण करने वाला ; (विसे ३४०२)।
अणुअत्ति देखो **अणुवत्ति** ; (पुप्फ ३२६)।
अणुअर वि [अनुचर] १ सहायताकारी, सहचर ; (पात्र)। २ सेवक, नौकर ; (प्रामा)।
अणुअल्ल न [दे] प्रभात, सुबह ; (दे १, १६)।
अणुआ स्त्री [दे] लाठी ; (दे १, ५२)।
अणुआर पुं [अनुकार] अनुकरण ; (नाट)।
अणुआरि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करने वाला; (नाट)।
अणुआस पुं [अनुकास] प्रसार, विकास; (गाया १ १)।
अणुइअ पुं [दे] धान्य-विशेष, चना ; (दे १, २१)।
अणुइअ देखो **अणुदिय**।
अणुइण्ण वि [अनुकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ। २ नहीं गिरा हुआ, अपतित "अवाइण्णपत्ता अणुइण्णपत्ता निद्धु-यजरढपंडुपत्ता" (औप)।
अणुइण्ण वि [अनुद्गीर्ण] बहार नहीं निकला हुआ ; (औप)।
अणुइण्ण देखो **अणुचिण्ण**।
अणुइण्ण देखो **अणुदिण्ण**।
अणुऊल वि [अनुकूल] अप्रतिकूल, अनुकूल ; (गा ५२३)।
अणुऊल सक [अनुकूलय्] अनुकूल करना। भवि—**अणुऊलइस्सं** ; (पि ५२८)।
अणुओअ पुं [अनुयोग] १ व्याख्या, टीका, सूत्र का विस्तार से अर्थ-प्रतिपादन ; (ओघ २)। २ पृच्छा, प्रश्न, (अभि ४८)।
अणुओइय वि [अनुयोजित] प्रवर्तित, प्रवृत्त कराया हुआ ; (गांदि)।
अणुओग देखो **अणुओअ** ; (वसे ६)।
अणुओगि पुं [अनुयोगिन्] सूत्रों का व्याख्याता आचार्य "अणुओगी लोगाणं कल संसयणासओ दढं होइ" (पंचव ४)।
अणुओगिअ वि [अनुयोगिक] दीक्षित, मुनि-शिष्य; (गांदि)।
अणुओयण न [अनुयोजन] बन्धन, जोड़ना ; (विसे १३८५)।
अणुकंप सक [अनु+कम्प्] १ दया करना। २ भक्ति करना। ३ हत करना। वकृ—**अणुकंपंत** (नाट)। कृ—**अणुकंपणिज्ज, अणुकंपणीअ**, (अभि ६४; रयण १५)।
अणुकंप वि [अनुकम्प्य] अनुकम्पा के योग्य; (दे १,२२)।
अणुकंप } वि [अनुकम्प, °क] १ दयालु, करुण ; २ **अणुकंपय** } भक्त, भक्तिमान ; (उत १२); "हिआणुकंपएण देवेणं हरिणगमेसिणा" (कप्प)। ३ हितकर "आया-णुकंपए णाममेगे, नो पराणुकंपए" (ठा ४, ४)।
अणुकंपण न [अनुकम्पन] १ दया, कृपा ; (वव ३)। २ भक्ति, सेवा "माउअणुकंपणट्ठाए" (कप्प)।
अणुकंपा स्त्री [अनुकम्पा] ऊपर देखो ; (गाया १, १); "आयरियणुकंपाए गच्छो अणुकंपिओ महाभागो" (कप्प-टी)। °**दाण** न [°दान] करुणा से गरीबों को अन्न आदि देना "अणुकंपादाणं सड्ढयाण न कहिंपि पडिसिद्धं" (धर्म २)।
अणुकंपि वि [अनुकम्पिन्] १ दयालु, कृपालु ; (माल ७५)। २ भक्ति करने वाला ; (सूअ १, ३, २)।
अणुकंपिअ वि [अनुकम्पित] जिस पर अनुकम्पा की गई हो वह ; (नाट)।
अणुकड्ढ सक [अनु+कृष्] १ खींचना ; २ अनुसरण करना। वकृ—**अणुकड्ढमाण, अणुकड्ढेमाण** ; (विपा १, १; गांदि)।
अणुकड्ढि स्त्री [अनुकृष्टि] अनुवर्तन, अनुसरण ; (पंच ५)।
अणुकड्ढिय वि [अनुकृष्ट] अनुकृत, अनुसृत ; (स १८३)।
अणुकप्प पुं [अनुकल्प] १ बड़े पुरुषों के मार्ग का अनु-करण ; २ वि. महापुरुषों का अनुकरण करनेवाला "णाण-चरणट्टगाणं पुव्वायरियाण अणुकिति कुणइ, अणुगच्छइ गुणधारी, अणुकप्पं तं वियाणाहि" (पंचभा)।

अणुकम पुं [**अनुक्रम**] परिपाटी, क्रम ; (महा) । °**सो** अ [°**शस्**] क्रम से, परिपाटी से ; (जी २८) ।

अणुकर सक [**अनु+कृ**] अनुकरण करना, नकल करना । अणुकरेइ ; (स ४३६) ।

अणुकरण न [**अनुकरण**] नकल ; (वव ३) ।

अणुकह सक [**अनु+कथय्**] अनुवाद करना, पीछे बोलना ।

अणुकहण न [**अनुकथन**] अनुवाद ; (सूअ १, १३) ।

अणुकार पुं [**अनुकार**] अनुकरण, नकल ; (कप्पू) ।

अणुकारि वि [**अनुकारिन्**] अनुकरण करने वाला " किन्नराणुकारिणा महुरगेएण " (महा) ।

अणुकिइ स्त्री [**अनुकृति**] अनुकरण, नकल ; " पुव्वायरियाणं नाणग्गहणेण य तवोविहाणेसु य अणुकिइं करेइ " पंचू) ।

अणुकिण्ण वि [**अनुकीर्ण**] व्याप्त, भरा हुआ ; (पउम ६१, ७) ।

अणुकित्तण न [**अनुकीर्तन**] वर्णन, प्रशंसा, श्लाघा ; (पउम ६३, ७३) ।

अणुकित्ति देखो **अणुकिइ** ; (पंचभा) ।

अणुकुइय वि [**अनुकुचित**] १ पीछे फेंका हुआ ; २ ऊंचा किया हुआ ; (निचू ८) ।

अणुकुण सक [**अनु+कृ**] अनुकरण करना । अणुकुणइ ; (विक १२६) ।

अणुकूल देखो **अणुऊल** ; (हे २, २१७) ।

अणुकूलण न [**अनुकूलन**] अनुकूल करना, प्रसन्न करना " तं कहइ । तम्मज्झे जिट्ठमुणी तच्चित्तणुकूलणत्थं जं " (सुपा २३४) ।

अणुक्कंत वि [**अन्वाक्रान्त**] आचरित, अनुष्ठित ; (आचा) ।

अणुक्कंत वि [**अनुक्रान्त**] आचरित, विहित, अनुष्ठित " एस विही अणुक्कंते माहणेणं मइमया " (आचा) ।

अणुक्कम सक [**अनु+क्रम्**] अतिक्रमण करना । वकृ—**अणुक्कमंत** ; (सूअ १, ५, १, ७) ।

अणुक्कम देखो **अणुकम** ; (महा ; नव १६) ।

अणुक्कोस पुं [**अनुक्रोश**] दया, करुणा ; (ठा ४, ४) ।

अणुक्कोस पुं [**अनुत्कर्ष**] १ उत्कर्ष का अभाव ; २ वि. उत्कर्ष-रहित ; (भग ८, १०) ।

अणुक्खित्त वि [**अनुत्क्षिप्त**] ऊंचा न किया हुआ " दिट्ठ घणुक्खित्तमुहं एसो मग्गो कुलवहूणं " (गा ५२६) ।

अणुग वि [**अनुग**] अनुचर, नौकर ; (दे ७, ६६) ।

अणुगंतव्व देखो **अणुगम**=अनु+गम् ।

अणुगंपा स्त्री [**अनुकम्पा**] करुणा, दया; (स १५८) ।

अणुगंपिअ वि [**अनुकम्पित**] जिस पर करुणा की गई हो वह ; (स ४७५) ।

अणुगच्छ देखो **अणुगम**=अनु+गम् । अणुगच्छइ ; वकृ—**अणुगच्छंत, अणुगच्छमाण** ; (नाट ; सूअ १, १४) । कवकृ—**अणुगच्छिज्जंत** ; (णाया १, २) । संकृ—**अणुगच्छित्ता** ; (कप्प) ।

अणुगच्छण देखो **अणुगमण** ; (पुप्फ ४०८) ।

अणुगच्छिर वि [**अनुगामिन्**] अनुसरण करने वाला ; (सण) ।

अणुगज्ज अक [**अनु+गर्ज्**] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना । वकृ—**अणुगज्जेमाण** ; (णाया १, १८) ।

अणुगम सक [**अनु+गम्**] १ अनुसरण करना, पीछे २ जाना । २ जानना, समझना । ३ व्याख्या करना, सूत्र के अर्थों का स्पष्टीकरण करना । कर्म—अणुगम्मइ; (विसे ६१३) । कवकृ—**अणुगम्मंत, अणुगम्ममाण** ; (उप ६ टी; सुपा ७८, २०८) । संकृ—**अणुगम्म** ; (सूअ १, १४) । कृ—**अणुगंतव्व** ; (सुर ७, १७६ ; पण्ण १) ।

अणुगम पुं [**अनुगम**] १ अनुसरण, अनुवर्तन; (दे २,६१)। २ जानना, ठीक २ समझना, निश्चय करना ; (ठा १) । ३ सूत्र की व्याख्या, सूत्र के अर्थ का स्पष्टीकरण ; (वव १) । ४ अन्वय, एक की सत्ता में दूसरे की विद्यमानता; (विसे २६०)। ५ व्याख्या, टीका ; (विसे १२५७) । " अणुगम्मइ तेण तहि, तओ व अणुगमणमेव वाणुगमो । अणुणोणुरूवओ वा, जं सुत्तत्थाणमणुसरणं " (विसे ६१३)।

अणुगमण न [**अनुगमन**] ऊपर देखो ।

अणुगमिर वि [**अनुगन्तृ**] अनुसरण करने वाला ; (दे ६, १२७) ।

अणुगय वि [**अनुगत**] १ अनुसृत, जिसका अनुसरण किया गया हो वह ; (पण्ह १, ४) । २ ज्ञात, जाना हुआ ; (विसे) । ३ अनुवृत्त, जो पूर्व से बराबर चला आया हो ; (पण्ह १, ३) । ४ अतिक्रान्त ; (विसे ६५६) ।

अणुगर देखो **अणुकर** । अणुगरेइ ; (स ३३४) । वकृ—**अणुगरिंत** ; (स ६८) ।

अणुगवेस सक [**अनु+गवेष्**] खोजना, शोधना, तलाश

रना। अणुगवेसइ ; (कस)। वकृ—**अणुगवेसेमाण** ; (भग ८, ५)। कृ—**अणुगवेसियव्व** ; (कस)।

अणुगह देखो **अणुग्गह**=अनु+ग्रह् ; (नाट)।

अणुगहिअ देखो **अणुगिहिअ** ; (दे ८, २६)।

अणुगाम पुं [**अणुग्राम**] १ छोटा गॉव ; (उत्त ३)। २ उपपुर, शहर के पास का गॉव ; (ठा ५, २)। ३ विवच्चित गॉव सें दुसरा गॉव " गामाणुगामं दुइज्जमाणे " (विपा १, १ ; औप ; आचा)।

अणुगामि } वि [**अनुगामिन्, °मिक**] १ अनुसरण करनेवाला, पीछे २ जानेवाला ; (औप)। २ निर्दोष हेतु, शुद्ध कारण ; (ठा ३, ३)। ३ अवधिज्ञान का एक भेद ; (कम्म १, ८)। ४ अनुचर, सेवक ; (सूअ १, २, ३)।
अणुगामिय }

अणुगारि वि [**अनुकारिन्**] अनुकरण करनेवाला ; नक्काखची ; (महा; धर्म: ५; स ६३०)।

अणुगिइ स्त्री [**अनुकृति**] अनुकरण, नकल ; (श्रा १)।

अणुगिण्ह देखो **अणुग्गह**=अनु+ग्रह्। वकृ—**अणुगिण्हमाण, अणुगिण्हेमाण**; (निर १, १; णाया १, १६)।

अणुगिद्ध वि [**अनुगृद्ध**] अत्यंत आसक्त ; लोलुप ; (सूअ १, ३, ३)।

अणुगिद्धि स्त्री [**अनुगृद्धि**] अत्यासक्ति ; (उत्त ३)।

अणुगिल सक [**अनु+गृ**] भक्षण करना। संकृ—**अणुगिलइत्ता** ; (णाया १, ७)।

अणुगिहीअ वि [**अनुगृहीत**] जिस पर महरवानी की गई हो वह ; (स १४; १६३)।

अणुगीअ वि [**अनुगीत**] १ पीछे कहा हुआ, अनूदित ; २ पूर्व ग्रन्थकार के भाव के अनुकूल किया हुआ ग्रन्थ, व्याख्यान आदि ; (उत्त १३)। ३ जिसका गान किया गया हो वह, कीर्तित, वर्णित। ४ न. गाना, गीत "उज्जाणे ......मतभिंगाणुगीए " (पउम ३३, १४८)।

अणुगुण वि [**अनुगुण**] १ अनुकूल, उचित, योग्य ; (नाट)। २ तुल्य, सदृश गुण वाला,
" जाण अलंकारसमो, विहवो मइलेइ तेंवि वड्ढंतो।
विच्छाएइ मियंकं, तुसार-वरिसो अणुगुणेवि " (गउड)।

अणुगुरु वि [**अनुगुरु**] गुरु-परम्परा के अनुसार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह ; (बृह १)।

अणुगूल वि [**अनुकूल**] अनुकूल ; (स ३७८)।

अणुगेज्झ वि [**अनुग्राह्य**] अनुग्रह के योग्य, कृपा-पात्र ; (प्राप)।

अणुगेण्ह देखो **अणुग्गह**=अनु+ग्रह्। अणुगेण्हंतु ; (पि ५१२)।

अणुग्गह सक [**अनु+ग्रह्**] कृपा करना, महरवानी करना। कृ—**अणुग्गहइदव्व, अणुग्गाहिदव्व** (शौ) (नाट)।

अणुग्गह पुं [**अनुग्रह**] १ कृपा, महरवानी ; (कप्पू)। २ उपकार ; (औप)। ३ वि. जिस पर अनुग्रह किया जाय वह ; (वव १)।

अणुग्गह पुं [**अनवग्रह**] जैन साधुओं को रहने के लिए शास्त्र-निषिद्ध स्थान,
"णो गोयर णो वणगोणियाणं, णो वद्ध दुज्झेंति य जत्थ गावो।
अण्णत्थ गोणेहिसु जत्थ खुगणं, स उग्गहो सेसमणुग्गहो तु"
(बृह ३)।

अणुग्गहिअ } वि [**अनुगृहीत**] जिस पर कृपा की गई हो वह, आभारी ; (महा ; सुपा १६२ ; स ६७)।
अणुग्गहीअ }
अणुग्गिहीअ }

अणुग्घाइम न [**अनुद्घातिम**] १ महा-प्रायश्चित का एक भेद ; (ठा ३, ४)। २ वि. महा प्रायश्चित्त का पात्र. (ठा ३, ४)।

अणुग्घाइय वि [**अनुद्घातिक**] १ अनुद्घातिम-नामक महा [illegible] का पात्र, (ठा ५, ३)। २ न. ग्रन्थांश-विशेष, जिसमें अनुद्घातिम प्रायश्चित्त का वर्णन है ; (पण्ह २, ५)।

अणुग्घाय वि [**अनुद्घात**] १ उद्घात-रहित ; २ न. निशीथ सूत्र का वह भाग, जिसमें अनुद्घातिक प्रायश्चित्त का विचार है " उग्घायमणुग्घायं आरोवण तिविहमा निसीहं तु" (आव ३)।

अणुग्घायण न [**अणोद्घातन**] कर्मो का नाश ; (आचा)।

अणुग्घास सक [**अनु+ग्रासय्**] खीलाना, भोजन कराना, " असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अणुग्घासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा " (निसी ७)। वकृ—**अणुग्घासंत** ; (निचू ७)।

अणुचय पुं [**अनुचय**] फैला कर इकट्ठा करना ; (उप पृ १५)।

अणुचर सक [**अनु+चर्**] १ सेवा करना। २ पीछे २ जाना, अनुसरण करना। ३ अनुष्ठान करना। अणुचरइ ; (आरा ६)। अणुचरंति ; (स १३०)। कर्म-अणुचरिज्जइ ; (विसे २५५४)। वकृ—**अणुचरंत** ;

(पुष्फ ३१३)। संकृ—**अणुचरित्ता**; (चउ १४)।

अणुचर देखो **अणुअर**; (उत्त २८)।

अणुअरिय वि [**अनुचरित**] अनुष्ठित, विहित, किया हुआ; (कप्प)

अणुचि सक [**अनु+च्यु**] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। संकृ—**अणुचिऊण**, (महा)।

अणुचिंत सक [**अनु+चिन्त्**] विचारना, याद करना, सोचना। अणुचिंते; (सथा ९६)। वकृ—**अणुचिंतेमाण**, (णाया १,१)। संकृ—**अणुचीइ, अणुचीति, अणुचीइ**, (आचा, सूत्र १, १, ३, १३, दस ७)।

अणुचिंतण न [**अनुचिन्तन**] सोच-विचार, पर्यालोचन, (आव ४)।

अणुचिंता स्त्री [**अनुचिन्ता**] ऊपर देखो; (आव ४)।

अणुचिट्ठ सक [**अनु+स्था**] १ अनुष्ठान करना। २ करना। अणुचिट्ठइ; (महा)।

अणुचिण्ण वि [**अनुचीर्ण**] १ अनुष्ठित, आचरित, वहित; "मोहतिगिच्छा य कया, विरियायारो य अणुचिण्णो" (ओघ २४९)। २ प्राप्त, मिला हुआ "कायसफासमणुचिण्णा एगइया पाणा उद्दाइया" (आचा)। ३ परिणमित; (जीव १)।

अणुचिण्णव वि [**अनुचीर्णवत्**] जिसने अनुष्ठान किया हो वह; (आचा)।

अणुचिन्न देखो **अणुचिण्ण**; (सुपा १६२; रयण ७५, पुष्फ ७५)।

अणुचिय वि [**अनुचित**] अयोग्य; (बृह १)।

अणुचीइ } देखो **अणुचिंत**।
अणचीति }

अणुच्च वि [**अनुच्च**] ऊंचा नहीं, नीचा। °**कुइय** वि [°**कुचिक**] नीची और अस्थिर शय्या वाला, (कप्प)।

अणुच्छहंत वि [**अनुत्सहमान**] उत्साह नहीं रखता हुआ, (पउम १८, १८)।

अणुच्छित्त वि [**अनुत्क्षिप्त**] नहीं छोड़ा हुआ, अत्यक्त; (गउड २३८)।

अणुच्छित्त वि [**अनुत्थित**] १ गर्व-रहित, विनीत; २ स्फीत, समृद्ध, ३ सर्वस उन्नत, सर्वोच्च;
"पडिवद्धं नवर तुमे, नरिंदचक्कं पयाववियडंपि।
गहवलयमणुच्छित्तं; धुवेव्व परियत्तइ णरिंद" (गउड)।

अणुच्छूढ वि [**अनुत्क्षिप्त**] अत्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ, (गा ५२६)।

अणुज पुं [**अनुज**] छोटा भाई, (स ३८८)।

अणुजत्त न [**अनुयात्र**] यात्रा में। "अरुणया अणुजत्तं निग्गओ पेच्छइ कुसुमियं चूयं" (महा)।

अणुजा सक [**अनु+या**] अनुसरण करना, पीछे चलना। अणुजाइ, (विसे ७१९)।

अणुजाइ वि [**अनुयायिन्**] अनुसरण करने वाला; (सुपा ४०५)।

अणुजाण न [**अनुयान**] १ पीछे २ चलना; २ महोत्सव-विशेष रथयात्रा; (बृह १)।

अणुजाण सक [**अनु+ज्ञा**] अनुमति देना, सम्मति देना। अणुजाणइ, (उव)। भूका—अणुजाणित्था, (पि ५१७)। हेकृ—**अणुजाणित्तए**; (ठा २, १)।

अणुजाणण न [**अनुज्ञान**] अनुमति, सम्मति; (सूत्र १, ६)।

अणुजाणावण न [**अनुज्ञापन**] अनुमति लेना, "अणुजाणावणविहिणा" (पचा ६, १३)।

अणुजाणिय वि [**अनुज्ञात**] सम्मत, अनुमत; (सुपा ५८४)।

अणुजाय वि [**अनुयात**] १ अनुगत, अनुसृत; (उप १३७ टी)।

अणुजाय वि [**अनुजात**] १ पीछे से उत्पन्न; २ सदृश, तुल्य "वसभाणुजाए" (सुज्ज १२)।

अणुजीवि वि [**अनुजीविन्**] १ आश्रित, नौकर, सेवक "पयईए चिय अणुजीविवच्छलं" (सुपा ३३७; पात्र, स २४३) °**त्तण** न [°**त्व**] आश्रय, नौकरी; (पि ५९७)।

अणजुत्ति स्त्री [**अनुयुक्ति**] योग्य युक्ति, उचित न्याय, (सूत्र १, ४, १)

अणुजेट्ठ वि [**अनुज्येष्ठ**] १ बडे के नजदीक का; (आवम)। २ छोटा, उतरता; (पउम २२, ७९)।

अणुजोग देखो **अणुओअ**, (स्त्र १०)।

अणुज्ज वि [**अनूर्ज**] उत्साह-रहित, अनुत्साही, हताश, (कप्प)।

अणुज्ज वि [**अनोजस्क**] तेज-रहित, फीका "अणुज्जं दीणवयणं विहरइ" (कप्प)।

अणुज्ज वि [**अनूद्य**] उद्देश्य, लक्ष्य; (धर्म १)।

अणुज्जा स्त्री (**अनुज्ञा**) अनुमति, सम्मति; (पउम ३८, २४)।

अणुज्जिय वि [**अनुर्जित**] बल-रहित, निर्बल; (बृह ३)।
अणुज्जुय वि [**अनृजुक**] असरल, वक्र, कपटी, (गा ७८६)।
अणुज्झा सक [**अनु+ध्यै**] चिन्तन करना, ध्यान करना। संकृ—**अणुज्झाइत्ता** ; (आवम)।
अणुज्झाण न [**अनुध्यान**] चिन्तन, विचार; (आवम)।
अणुझा देखो **अणुज्झा**। वकृ—**अणुझायंत**; (कुमा)।
अणुझिअअ वि [**दे**] १ प्रयत, प्रयत्न-शील ; २ जागता, सावधान ; (षड्)।
अणुट्ठ वि [**अनुत्थ**] नहीं ऊठा हुआ, स्थित ; (ओघ ७०)।
अणुट्ठा सक [**अनु+स्था**] १ अनुष्ठान करना, शास्त्रोक्त विधान करना। २ करना। कृ—**अणुट्ठियव्व, अणुट्ठेअ** (सुपा ५३७ ; सुर १४, ८५)।
अणुट्ठाइ वि [**अनुष्ठायिन्**] अनुष्ठान करने वाला; (आचा)।
अणुट्ठाण न [**अनुष्ठान**] १ कृति ; २ शास्त्रोक्त विधान ; (आचा)।
अणुट्ठाण न [**अनुत्थान**] क्रिया का अभाव, (उवा)।
अणुट्ठावण न [**अनुष्ठापन**] अनुष्ठान कराना ; (कस)।
अणुट्ठिय वि [**अनुष्ठित**] विधि से संपादित, विहित, क्रिया हुआ ; (षड् ; सुर ४, १६६)।
अणुट्ठिय वि [**अनुत्थित**] १ बैठा हुआ। २ आलसु, प्रमादी (आचा)।
अणुट्ठियव्व देखो **अणुट्ठा**।
अणुट्ठुभ न [**अनुष्टुभ्**] एक प्रसिद्ध छंद "पचक्खरगणणाए अणुट्ठुभाणं हवंति दस सहस्सा" (सुपा ६५६)।
अणुट्ठेअ देखो **अणुट्ठा**
अणुण देखो **अणुणी**। अणुणह ; (भवि)।
अणुणंत देखो **अणुणी**।
अणुणय पुं [**अनुनय**] विनय, प्रार्थना ; (महा ; अभि ११६)।
अणुणाइ वि [**अनुनादिन्**] प्रतिध्वनि करने वाला "गज्जि-यसद्दस्स अणुणाइणा" (कप्प)।
अणुणाय पुं [**अनुनाद**] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द ; (विसे ३४०४)।
अणुणाय वि [**अनुज्ञात**] अनुमत, अनुमोदित, (पंचू)।
अणुणास पुंन [**अनुनास**] १ अनुनासिक, जो नाक से बोला जाता है वह अक्षर, २ वि सानुस्वार, अनुस्वार-युक्त, (ठा ७)। "कागस्सरमणुणासं च" (जीव ३ टी)।
अणुणासिअ पुं [**अनुनासिक**] देखो ऊपर का १ ला अर्थ; (वज्जा ६)।
अणुणी सक [**अनु+नी**] १ अनुनय करना, विनय करना, प्रार्थना करना। २ समझाना, दिलासा देना, सान्तवन करना। वकृ—**अणुणंत** "पुरोहियं तं कमसोणुणंतं" (उत्त १४ ; भवि); **अणुणेंत** ; (गा ६०२)। कवकृ—**अणुणिज्जंत, अणुणिज्जमाण, अणुणीअमाण** ; (सुपा ३६७; मे २, १६, पि ५३६)।
अणुणीअ वि [**अनुनीत**] जिसका अनुनय किया गया हो वह ; (दे ८, ४८)।
अणुणेंत देखो **अणुणी**।
अणुण्णय वि [**अनुन्नत**] १ नीचा, नम्र ; (दस ५, १)। २ गर्व-रहित, निरभिमानी "एत्थवि भिक्खू अणुण्णए विणीए" (सूअ १, १६)।
अणुण्णव सक [**अनु+ज्ञापय्**] १ अनुमति देना ; २ आज्ञा देना, हुकुम देना। कर्म—अणुण्णविज्जइ; (उवा)। वकृ—**अणुण्णवेमाण**; (ठा ६)। कृ—**अणुण्णवेयव्व**; (ओघ ३८५ टी)। संकृ—**अणुण्णवित्ता, अणुण्णविय**; (आवम, आचा २, २, ६)।
अणुण्णवणया } **अणुण्णवणा** } स्त्री [**अनुज्ञापना**] १ अनुमति, सम्मति ; २ आज्ञा, फरमायश ; (सम ४४; ओघ ३८४ टी)।
अणुण्णवणी स्त्री [**अनुज्ञापनी**] अनुमति-प्रकाशक भाषा, अनुमति लेनेका वाक्य ; (ठा ४, ३)।
अणुण्णा स्त्री [**अनुज्ञा**] १ अनुमति, अनुमोदन ; (सूअ २, २)। २ आज्ञा। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] जैन साधुओं के लिए वस्त्र-पात्रादि लेने के विषय में शास्त्रीय विधान ; (पंचभा)।
अणुण्णाय वि [**अनुज्ञात**] १ जिसको आज्ञा दी गई हो वह। २ अनुमत, अनुमोदित ; (ठा ३, ४)।
अणुण्ह वि [**अनुष्ण**] ठंडा, गरम नहीं वह ; (पि ३१२)।
अणुतड पुं [**अनुतट**] भेद, पदार्थों का एक जात का पृथक्करण, जैसे संतप्त लोहे को हथोड़े से पीटने से स्फुलिंग पृथक् होते हैं (ठा ५)।
अणुतडिया स्त्री [**अनुतटिका**] १ ऊपर देखो ; (पण्ण ११)। २ तलाव, द्रह आदि का भेद ; (भास ७)।
अणुतप्प अक [**अनु+तप्**] अनुताप करना, पछताना। अणुतप्पइ ; (स १८४)।

अणुतप्पि वि [**अनुतापिन्**] पश्चात्ताप करने वाला ; (वव १) ।
अणुताव पुं [**अनुताप**] पश्चात्ताप , (पाअ; स १८४) ।
अणुतावि देखो **अणुतप्पि** ; (उप ७२८ टी) ।
अणुत्त वि [**अनुक्त**] अकथित ; (पंच ५) ।
अणुत्तंत देखो **अणुवत्त** ।
अणुत्तप्प वि [**अनुत्त्रप्य**] १ परिपूर्ण शरीर । २ 'पूर्ण शरीरवाला ' हंाइ अणुत्तप्पो सो अविगलइंदियपडिप्पुण्णो।'' (वव २) ।
अणुत्तर वि [**अनुत्तर**] १ सर्व-श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ; (ठा १०) । २ एक सर्वोत्तम देवलोक का नाम ; (अनु) । ३ छोटा " अणुत्तरो भाया " (पउम ६, ४) । °**ग्गा** स्त्री [°**ग्र्या**] एक पृथिवी जहां मुक्त जीवों का निवास है, (सूअ १, ६) । °**णाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] केवल-ज्ञानी ; (सूअ १, २, ३) । °**विमाण** न [°**विमान**] एक सर्वोत्कृष्ट देवलोक ; (भग ६, ६) । °**ोववाइय** वि [°**ौपपातिक**] अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न, (अनु) । °**ोववाइयदसा** स्त्री. ब. [°**ौपपातिकदशा**] नववाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (अनु) ।
अणुत्थाण देखो **अणुट्ठाण** , (स ६४६) ।
अणुत्थाम वि [**अनुत्साह**] हतोत्साह, निराश ; (कुमा)।
अणुदत्त पुं [**अनुदात्त**] नीचे से बोला जानेवाला स्वर , (बृह १) ।
अणुदय पु [**अनुदय**] १ उदय का अभाव ; २ कर्म-फल के अनुभव का अभाव ; (कम्म २, १३; १४,१५) ।
अणुदवि न [**दे**] प्रभात, सुबह , (दे १, १६) ।
अणुदिअ वि [**अनुदित**] जिसका उदय न हुआ हो ; (भग) ।
अणुदिअस न [**अनुदिवस**] प्रतिदिन, हमेशा; (नाट) ।
अणुदिज्जंत वि [**अनुदीयमान**] उदय में न आता हुआ ; (भग) ।
अणुदिण न [**अनुदिन**] प्रतिदिन, हमेशां ; (कुमा) ।
अणुदिण्ण } वि [**अनुदित**] १ उदय को अप्राप्त ; २
अणुदिन्न } फल-दान में अतत्पर (कर्म), (भग १,२;३; " उदिण्ण=उदित " (भग १, ४; ७ टी) ।
अणुदिण्ण } व [**अनुदीरित**] १ जिसकी उदीरणा दूर
अणुदिन्न } भविष्य में हो , २ जिसकी उदीरणा भविष्य में न हो ; (भग १, ३) ।
अणुदिय वि [**अनुदित**] उदय को अप्राप्त " मिच्छत्तं जमुदिन्नं तं खीणं अणुदियं च उवसंतं " (भग १, ३ टी) ।
अणुदियह न [**अनुदिवस**] प्रतिदिन, हमेशां ; (सुर १, ११५) ।
अणुदिव न [**दे**] प्रभात, प्रातःकाल ; (षड्) ।
अणुदिसा } स्त्री [**अनुदिक्**] विदिक्, ईशान कोण आदि
अणुदिसी } विदिशा ; (विसे २७०० टी; पि ६८; ४१३; कप्प) ।
अणुद्दिट्ठ वि [**अनुद्दिष्ट**] जिसका उद्देश न किया गया हो वह ; (पण्ह २, १)
अणुद्ध वि [**अनूर्ध्व**] ऊंचा नहीं, नीचा ; (कुमा) ।
अणुद्धय वि [**अनुद्धत**] सरल, भद्र, विनयी, (उप ७६८ टी)।
अणुद्धरि पुं [**अनुद्धरिन्**] एक क्षुद्र जन्तु, कुंथु , (कप्प) ।
अणुद्धिय वि [**अनुद्धृत**] १ जिसका उद्धार न किया गया हो वह , २ बहार नहीं निकाला हुआ " जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं इत्थ सव्वदुहमूलं " (श्रा ४०) ।
अणुद्धुय वि [**अनुद्धूत**] अपरित्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ (कप्प) ।
अणुधम्म पु [**अणुधर्म**] गृहस्थ-धर्म; (विसे) ।
अणुधम्म पुं [**अनुधर्म**] अनुकूल—हितकर धर्म " एसो-णुधम्मो मुणिणा पवेइओ " (सूअ १ २,१) । °**चारि** वि [°**चारिन्**] हितकर धर्म का अनुयायी, जैन-धर्मी ; (सूअ १, २, २)
अणुधम्मिय वि [**अनुधार्मिक**] धर्म के अनुकूल, धर्मोचित, " एय खु अणुधम्मियं तस्स " (आचा) ।
अणुधाव सक [**अनु+धाव्**] पीछे दौड़ना । वकृ— **अणुधावंत** ; (स ४, २१) ।
अणुधावण सक [**अनुधावन**] पीछे दौड़ना; (सुपा ५०३) ।
अणुधाविर वि [**अनुधावितृ**] पीछे दौड़ने वाला ; (उप ७२८ टी) ।
अणुनाइ वि [**अनुनादिन्**] प्रतिध्वनि करने वाला; (कप्प)।
अणुनाय वि [**अनुज्ञात**] अनुमत, जिसको अनुमति दी गई हो वह " आहवणे मक्कलय अणुनायाए तए नाह " (सुपा ४७७) ।
अणुनास देखो **अणुणास** ; (जीव ३ टी)
अणुन्नव देखा **अणुण्णव** । वकृ—**अणुन्नवेमाण** ; (ठा ५, ३) । कृ—**अणुन्नवेयव्व** , (कस) । संकृ— **अणुन्नवेत्ता** , (कस) ।

अणुन्नवणा देखो **अणुण्णवणा** , (ओघ ६३० ; कस) ।
अणुन्नवणी देखो **अणुण्णवणी**; (ठा ४, १) ।
अणुन्ना देखो **अणुण्णा** ; (सुर ४, १३३ ; प्रासू १८१) ।
अणुन्नाय देखो **अणुण्णाय** , (ओघ १, महा) ।
अणुपंथ पुं [**अनुपथ**] १ समीप का मार्ग ; (कस) । २ मार्ग के समीप, रास्ता के पास ; (बृह २) ।
अणुपत्त वि [**अनुप्राप्त**] प्राप्त, मिला हुआ ; (सुर ४, २११) ।
अणुपयट्ट वि [**अनुप्रवृत्त**] अनुसृत, अनुगत ; (महा) ।
अणुपरियट्ट सक [**अनुपरि+अट्**] घूमना, परिभ्रमण करना । संकृ—**अणुपरियट्टित्ताणं** "देवे ण भंते महिड्ढिए ... .पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टिताणं हव्वमागच्छित्तए ?" (भग १८, ७) कृ—**अणुपरियट्टियव्व** ; (गाया १, ६) । हेकृ—**अणुपरियट्टिउं** ; गाया १, ६) ।
अणुपरियट्ट अक [**अनुपरि+वृत्**] फिरना, फिरते रहना । "दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ" (आचा) । वकृ—**अणुपरियट्टमाण**, (आचा) । संकृ— **अणुपरियट्टित्ता** ; (औप) ।
अणुपरियट्टण न [**अनुपर्यटन**] परिभ्रमण ; (सूअ १, १, २) ।
अणुपरियट्टण न [**अनुपरिवर्तन**] परिवर्तन, फिरना; (भग १, ६) ।
अणुपरिवट्ट देखो **अणुपरियट्ट**=अनुपरि + वृत् । वकृ— **अणुपरिवट्टमाण** , (पि २८६) ।
अणुपरिवाडि, °**डी** स्त्री [**अनुपरिपाटि**, °**टी**] अनुक्रम ; (सं १५, ६६ , पउम २०, ११ ; ३२, १६) ।
अणुपरिहारि वि [**अणुपरिहारिन्**] 'परिहारी' को मदद करनेवाला, त्यागी मुनि को सेवा-शुश्रूषा करनेवाला; (ठा ३, ४) ।
अणुपरिहारि वि [**अनुपरिहारिन्**] ऊपर देखो ; (ठा ३, ४) ।
अणुपवाएत्तु वि [**अनुप्रवाचयितृ**] पढानेवाला, पाठक, उपाध्याय ; (ठा ५, २) ।
अणुपवाय देखो **अणुप्पवाय**=अनुप्र+वाचय् ।
अणुपविट्ठ वि [**अनुप्रविष्ट**] पीछे से प्रविष्ट ; (गाया १, १ , कप्प) ।
अणुपविस सक [**अनुप्र+विश्**] १ पीछे से प्रवेश करना । २ प्रवेश करना, भीतर जाना । अणुपविसइ ; (कप्प) । वकृ—**अणुपविसंत** ; (निचू २) । संकृ—**अणुपविसित्ता** ; (कप्प) ।
अणुपवेस पुं [**अनुप्रवेश**] प्रवेश, भीतर जाना ; (निचू ७) ।
अणुपस्स सक [**अनु+दृश्**] पर्यालोचन करना, विवेचना करना । संकृ—**अणुपस्सिय** ; (सूअ १, २, २) ।
अणुपस्सि वि [**अनुदर्शिन्**] पर्यालोचक, विवेचक ; (आचा) ।
अणुपाल सक [**अनु+पालय्**] १ अनुभव करना । २ रक्षण करना । ३ प्रतीक्षा करना, राह देखना । अणुपालेइ ; (महा) ; वकृ—"सायासोक्खम् अणुपालंतेण" (पक्खि) ; **अणुपालिंत**, **अणुपालेमाण** ; (महा) । संकृ—**अणुपालेऊण**, **अणुपालित्ता**, **अणुपालिय** , (महा; कप्प; पि ५७०) ।
अणुपालण न [**अनुपालन**] रक्षण, प्रतिपालन; (पंचभा) ।
अणुपालणा देखो **अणुवालणा** ; (विसे २५२० टी) ।
अणुपालिय वि [**अनुपालित**] रक्षित, प्रतिपालित; (ठा ८) ।
अणुपास देखो **अणुपस्स** । वकृ—**अणुपासमाण** ; (दसचू २) ।
अणुपिट्ठ न [**अनुपृष्ठ**] अनुक्रम, "अणुपिट्ठसिद्धाइं" (सम्म) ।
अणुपुव्व वि [**अनुपूर्व**] क्रमवार, आनुक्रमिक ; (ठा ४, ४) । क्रिवि. क्रमशः ; (पाअ) । °**सो** [**शस्**] अनुक्रम से , (आचा) ।
अणुपुव्व न [**आनुपूर्व्य**] क्रम, परिपाटी, अनुक्रम; (राय) ।
अणुपुव्वी स्त्री [**आनुपूर्वी**] ऊपर देखो ; (पाअ) ।
अणुपेक्खा स्त्री [**अनुप्रेक्षा**] भावना, चिन्तन, विचार , (पउम १४, ७७) ।
अणुपेहण न [**अनुप्रेक्षण**] ऊपर देखो; (उप १४२ टी) ।
अणुपेहा स्त्री [**अनुप्रेक्षा**] ऊपर देखो ; (पि ३२३) ।
अणुप्पइन्न वि [**अनुप्रकीर्ण**] एक दूसरे से मिला हुआ, मिश्रित ; (कप्प) ।
अणुप्पणो सक [**अनुप्र+णी**] १ प्रणय करना । २ प्रसन्न करना । वकृ—**अणुप्पणंत** ; (उप पृ २८) ।
अणुप्पगंथ वि [**अणुप्रग्रन्थ**] संतोषी, अल्प परिग्रह वाला; (ठा ६) ।
अणुप्पगंथ वि [**अनुप्रग्रन्थ**] ऊपर देखो ; (ठा ६) ।
अणुप्पण्ण वि [**अनुत्पन्न**] अविद्यमान ; (निचू ५) ।
अणुप्पत्त देखो **अणुपत्त** ; (कप्प) ।

अणुप्पदा सक [**अनुप्र+दा**] दान देना, फिर २ देना। अणुप्पदेइ; (कस)। कृ—**अणुप्पदायव्व**; (कस)। हेकृ—**अणुप्पदाउं**; (उवा)।
अणुप्पदाण न [**अनुप्रदान**] दान, फिर २ दान देना; (आव ६)।
अणुप्पभु पुं [**अनुप्रभु**] स्वामी के स्थानापन्न, प्रतिनिधि; (निचू २)।
अणुप्पया देखो **अणुप्पदा**। अणुप्पएइ; (कस)। हेकृ—**अणुप्पयाउं**; (उवा)।
अणुप्पयाण देखो **अणुप्पदाण**; (आचा)।
अणुप्पवत्त सक [**अनुप्र+वृत्**] अनुसरण करना। हेकृ—**अणुप्पवत्तए**; (विसे २२०७)।
अणुप्पवाइत्तु } वि [**अनुप्रवाचयितृ**] अध्यापक, पाठक,
अणुप्पवाएत्तु } पढ़ानेवाला, (ठा ५, १; गच्छ १)।
अणुप्पवाय सक [**अनुप्र+वाचय्**] पढाना। वकृ—**अणुप्पवाएमाण**; (जं ३)।
अणुप्पवाय न [**अनुप्रवाद**] नववाँ पूर्व, बारहवेँ जैन अंग-ग्रन्थ का एक अंश-विशेष; (ठा ९)।
अणुप्पविट्ठ देखो **अणुपविट्ठ**; (कस)।
अणुप्पवित्ति स्त्री [**अनुप्रवृत्ति**] अनुप्रवेश, अनुगम; (विसे २१९०)।
अणुप्पविस देखो **अणुपविस**। अणुप्पविसइ; (उवा)। संकृ—**अणुप्पवेसेत्ता**; (निचू १)।
अणुप्पवेस देखो **अणुपवेस**; (नाट)।
अणुप्पवेसण न [**अनुप्रवेशन**] देखो **अणुपवेस**; (नाट)।
अणुप्पसाद (शौ) सक [**अनुप्र+सादय्**] प्रसन्न करना। अणुप्पसादेदि; (नाट)।
अणुप्पसूय वि [**अनुप्रसूत**] उत्पन्न, पैदा किया हुआ; (आचा)।
अणुप्पाइ वि [**अनुपातिन्**] युक्त, संबद्ध, संबन्धी; (निचू १)।
अणुप्पिय वि [**अनुप्रिय**] अनुकूल, इष्ट; (सूअ १, ७)।
अणुप्पेंत वि [**अनुत्प्रयत्**] दूर करता, हटाता हुआ;
"जम्मि अविसएणाहिययत्तणेण ते गारवं वलग्गंति।
तं विसममणुप्पेंतो गरुयाण विही खलो होइ" (गउड)।
अणुप्पेच्छ देखो **अणुप्पेह**;
"तह पुव्विं किं न कयं, न बाहए जेण मे समत्थोवि।
एरिहिं किं कस्स व कुप्पिमोत्ति धीरा! अणुप्पेच्छ" (उव)।
अणुप्पेसिय वि [**अनुप्रेषित**] पीछे से भेजा हुआ; (नाट)।
अणुप्पेह सक [**अनुप्र+ईक्ष्**] चिन्तन करना, विचारना। अणुप्पेहंति; (पि ३२३)। कृ—**अणुप्पेहियव्व**; (पसू १)।
अणुप्पेहा स्त्री [**अनुप्रेक्षा**] चिन्तन, भावना, विचार; स्वाध्याय-विशेष; (उत्त २९)।
अणुप्फास पुं [**अनुस्पर्श**] अनुभाव, प्रभाव; "लोहस्सेव अणुप्फासो मन्ने अन्नयरामवि" (दस ६)।
अणुफुसिय वि [**अनुप्रोञ्छित**] पोंछा हुआ, साफ किया हुआ; (स ३४४)।
अणुबंध सक [**अनु+बन्ध्**] १ अनुसरण करना। २ संबन्ध बनाये रखना। अणुबंधंति; (उत्तर ७१)। वकृ—**अणुबंधंत**, (वेणी १८३)। कवकृ—**अणुबंधीअमाण**, **अणुबंधिज्जमाण**, (नाट)। हेकृ—**अणुबंधिदुं** (शौ); (मा ६)।
अणुबंध पुं [**अनुबन्ध**] १ सततपन, निरन्तरता, विच्छेद का अभाव; (ठा ६; उवर १२८)। २ संबन्ध; (स १३८; गउड)। ३ कर्मों का संबन्ध; (पंचा १५)। ४ कर्मों का विपाक, परिणाम; (उवर ४; पंचा १८)। ५ स्नेह, प्रेम; (स २७९);
"नयणाण पडउ वज्जं, अहवा वज्जस्स वड्डिलं किंपि।
अमुणियजणेवि दिट्ठे, अणुबंधं जाणि कुव्वंति" (सुर ४,२०)।
६ शास्त्र के आरम्भ में कहने लायक अधिकारी, विषय, प्रयोजन और संबन्ध; (आव १)। ७ निर्बन्ध, आग्रह; (स ४५८)।
अणुबंधअ वि [**अनुबन्धक**] अनुबन्ध करने वाला; (नाट)।
अणुबंधि वि [**अनुबन्धिन्**] अनुबन्ध वाला, अनुबन्ध करने वाला; (धर्म २; स १२७)।
अणुबंधिअ न [**दे**] हिक्का-रोग, हिचकी; (दे १, ४४)।
अणुबंधेल्ल वि [**अनुबन्धिन्**] विच्छेद-रहित, अनुगम वाला, अविनश्वर; (उप २३३)।
अणुबज्झ } वि [**अनुबद्ध**] १ बँधा हुआ, संबद्ध; (से
अणुबद्ध } ११, ९०)। २ सतत, अविच्छिन्न "अणुबद्ध-तिव्ववेरा परोप्परं वेयणं उदीरेंति" (पण्ह १, १)। ३ व्याप्त; (णाया १, २)। ४ प्रतिबद्ध; (णाया १,२)। ५ अत्यंत, बहुत "अणुबद्धनिरंतरवेयणासु" (पण्ह १, १)। ६ उत्पन्न; (उत्तर ९२)।

अणुवूह देखो **अणुवूह** ।

अणुब्भड वि [**अनुद्भट**] अनुद्धत, अनुल्वण ; (उत्त २) ।

अणुब्भूय वि [**अनुद्भूत**] अप्रकट, अनुत्पन्न ; (नाट) ।

अणुभअ देखो **अणुभव**=अनुभव ; (नाट) ।

अणुभव सक [**अनु+भू**] १ अनुभव करना, जानना, समझना । २ कर्मफल को भोगना । अणुभवंति ; (पि ४७५) । वकृ—**अणुभवंत** ; (पि ४७५) । संकृ—**अणुभविअ**, **अणुभवित्ता** ; (नाट , पण्ह १,१) । हेकृ—**अणुभविउं** ; (उत्त १८) ।

अणुभव पुं [**अनुभव**] १ ज्ञान, बोध, निश्चय ; (पंचा ५) । २ कर्म-फल का भोग ; (विसे) ।

अणुभवण न [**अनुभवन**] ऊपर देखो ; (आव ४; विसे २०६०) ।

अणुभवि वि [**अनुभविन्**] अनुभव करने वाला ; (विसे १६५८) ।

अणुभाग पुं [**अनुभाग**] १ प्रभाव, माहात्म्य ; (सूअ १, ५, १) । २ शक्ति, सामर्थ्य ; (पण्ण २) । ३ कर्मों का विपाक—फल; (सूअ १, ५, १) । ४ कर्मों का रस, कर्मों में फल उत्पन्न करने की शक्ति "ताण रसो अणुभागो" (कम्म १, २ टी ; नव ३१) । °**वंध** पुं [°**वन्ध**] कर्म-पुद्गलों में फल उत्पन्न करने की शक्ति का बनना ; (ठा ४, २) ।

अणुभाय } पुं [**अनुभाव**] १-४ ऊपर देखो ; (प्रासू
अणुभाव } ३५ ; ठा ३, ३ ; गउड ; आचा ; सम ६) । ५ मनोगत भाव की सूचक चेष्टा, जैसे भौंका चढाना वगैरः, (नाट) । ६ कृपा, महरबानी ; (स ३५५) ।

अणुभावग वि [**अनुभावक**] बोधक, सूचक; (आवम) ।

अणुभास सक [**अनु+भाष्**] १ अनुवाद करना, कही हुई बात को उसी शब्द में, शब्दान्तर में या दूसरी भाषा में कहना । २ चिन्तन करना । "अणुभासइ गुरुवयणं" (आचू ६; वव ३) । वकृ—**अणुभासयंत**; **अणुभासमाण**; (स १८४ , विसे २५१२) ।

अणुभासण न [**अनुभाषण**] अनुवाद, उक्त बात का कहना ; (नाट) ।

अणुभासणा स्त्री [**अनुभाषणा**] ऊपर देखो ; (ठा ५, ३ ; विसे २५२० टी) ।

अणुभासय वि [**अनुभाषक**] अनुवादक, अनुवाद करने वाला ; (विसे ३२१७) ।

अणुभासयंत देखो **अणुभास** ।

अणुभुंज सक [**अनु+भुज्**] भोग करना । वकृ—**अणुभुंजमाण** ; (सं १६) ।

अणुभूइ स्त्री [**अनुभूति**] अनुभव ; (विसे १६११) ।

अणुभूय वि [**अनुभूत**] ज्ञात, निश्चित ; (महा) । °**पुव्व** वि [°**पूर्व**] पहले ही जिसका अनुभव हो गया हो वह ; (गाया १, १) ।

अणुभूस सक [**अनु+भूष्**] भूषित करना, शोभित करना । अणुभूसदि (शौ); (नाट) ।

अणुमइ स्त्री [**अनुमति**] अनुमोदन, सम्मति ; (श्रा ६) ।

अणुमंतव्व देखो **अणुमण्ण** ; (विसे १६६०) ।

अणुमग्ग न [**दे**] पीछे पीछे "एवं चिन्तियंतो अणुमग्गेणेव चलिया हं" (सुर ४, १४२ ; महा) । °**गामि** वि [°**गामिन्**] पीछे २ जाने वाला ; (पि ४०५) ।

अणुमण्ण } सक [**अनु+मन्**] अनुमति देना, अनुमोदन
अणुमन्न } करना । अणुमण्णे, अणुमन्नइ ; (पि ४५७ ; महा) । वकृ—**अणुमण्णमाण** ; (उवर ३१) । संकृ—**अणुमन्निऊण** ; (महा) ।

अणुमन्निय } वि [**अनुमत**] अनुमोदित, सम्मत ; (उप
अणुमय } पृ २६१) ।

अणुमर अक [**अनु+मृ**] १ मरना । २ सती होना, पति के मरने से मर जाना । "जं केवलिणो अणुमरंति" (आउ ३५) । भवि—अणुमरिहिइ ; (पि ५२२) ।

अणुमरण न [**अनुमरण**] ऊपर देखो ; (गउड) ।

अणुमहत्तर वि [**अनुमहत्तर**] मुखिया का प्रतिनिधि ; (निचू ३) ।

अणुमाण न [**अनुमान**] १ अटकल-ज्ञान, हेतु के द्वारा अज्ञात वस्तु का निर्णय ; (गा ३४५ ; ठा ४, ४) ।

अणुमाण सक [**अनु+मानय्**] अनुमान करना । संकृ—**अणुमाणइत्ता** ; (वव १) ।

अणुमाय वि [**अणुमात्र**] बहुत थोडा, थोड़ा परिमाण वाला ; (दस ५, २) ।

अणुमाल अक [**अनु+मालय्**] शोभित होना, चमकना । संकृ—**अणुमालिवि** ; (भवि) ।

अणुमेअ वि [**अनुमेय**] अनुमान के योग्य ; (मै ७३) ।

अणुमेरा स्त्री [**अनुमर्यादा**] मर्यादा , हद ; (कस) ।

अणुमोइय वि [**अनुमोदित**] अनुमत, संमत, प्रशंसित ; (आउर ; भवि) ।

अणुमोय सक (अनु+मुद्] अनुमति देना, प्रशंसा करना। अणुमोयइ ; (उव) । अणुमोएमो ; (चउ ५८) ।
अणुमोयग वि [अनुमोदक] अनुमोदन करने वाला ; (विसे) ।
अणुमोयण न [अनुमोदन] अनुमति, सम्मति, प्रशंसा ; (उव; पंचा ६) ।
अणुम्मुक्क वि [अनुन्मुक्त] नहीं छोड़ा हुआ ; (पण्ह १,४)।
अणुम्मुह वि [अनुन्मुख] अ-संमुख, विमुख ; "किह नाहुस्स अणुम्मुहो चिट्ठामि त्ति" (महा) ।
अणुयंपा देखो **अणुकंपा** ; (गउड ; स २१४) ।
अणुयत्त देखो **अणुवत्त**=अनु+वृत् । **अणुयत्तइ** ; (भवि)। वकृ—**अणुयत्तंत, अणुयत्तमाण** ; (पंचभा ; विसे १४५१) । संकृ—**अणुयत्तिऊण** ; (गउड) ।
अणुयत्त देखो **अणुवत्त**=अनुवृत्त ; (भवि) ।
अणुयत्तणा स्त्री [अनुवर्तना] १ बिमार की सेवा-शुश्रूषा करना; (बृह १)। २ अनुसरण; ३ अनुकूल वर्तन; (जीव १) ।
अणुयत्तिय वि [अनुवृत्त] अनुकूल किया हुआ, प्रसादित ; (सुपा १३०) ।
अणुयरिय वि [अनुचरित] आचरित, अनुष्ठित ; (णाया १. १) ।
अणुया देखो **अणुण्णा** ; (सूअ २, १) ।
अणुयाव देखो **अणुताव** ; (स १८३) ।
अणुयास पुं [अनुकाश] विशेष विकास; (णाया १, १)।
अणुरंगा स्त्री [दे] गाड़ी ; (बृह १) ।
अणुरंगिय वि [अनुरङ्गित] रँगा हुआ ; (भवि) ।
अणुरंज सक [अनु+रञ्जय्] अनुरागी करना, प्रीणित करना। वकृ—**अणुरंजअंत** ; (नाट) । संकृ—**अणुरंजिअ** ; (नाट) ।
अणुरंजण न [अनुरञ्जन] राग, आसक्ति ; (विसे २६७७) ।
अणुरंजिएल्लय } वि [अनुरञ्जित] अनुरक्त किया हुआ,
अणुरंजिय } अनुरागी बनाया हुआ; (जं ३; महा) ।
अणुरक्क वि [अनुरक्त] अनुराग-प्राप्त, प्रेम-प्राप्त ; (नाट) ।
अणुरज्ज अक [अनु+रञ्ज्] अनुरक्त होना, प्रेमी होना। "अणुरज्जंति खणेणं जुवईउ खणेण पुण विरज्जंति" (महा) ।
अणुरत्त देखो **अणुरक्क** ; (णाया १, १६) ।
अणुरसिय वि [अनुरसित] बोलाया हुआ, आहूत ; (णाया १, ६) ।
अणुराइ } वि [अनुरागिन्] अनुराग वाला, प्रेमी ;
अणुराइल्ल } (स ३३० ; महा ; सुर १३, १२०) ।
अणुराग पुं [अनुराग] प्रेम, प्रीति ; (सुर ४, २२८) ।
अणुरागय वि [अन्वागत] १ पीछे आया हुआ ; २ ठीक २ आया हुआ ; ३ न. स्वागत ; (भग २, १) ।
अणुरागि देखो **अणुराइ** ; (महा) ।
अणुराय देखो **अणुराग** ; (प्रासू १११) ।
अणुराहा स्त्री [अनुराधा] नक्षत्र-विशेष , (सम ६) ।
अणुरुंध सक [अनु+रुध्] १ अनुरोध करना। २ स्वीकार करना। ३ आज्ञा का पालन करना। ४ प्रार्थना करना। ५ अक अधीन होना। कर्म—अणुरुंधिज्जइ, (हे ४, २४८ ; प्रामा) ।
अणुरूअ } वि [अनुरूप] १ योग्य, उचित ; (से ६.
अणुरूव } ३६) । २ अनुकूल ; (सुपा ११२) । ३ सदृश, तुल्य ; (णाया १, १६) । ४ न. समानता, योग्यता ; (सम्म) ।
अणुरोह पुं [अनुरोध] १ प्रार्थना "ता ममाणुरोहेण एत्थ घरे निच्चमेव आगंतव्वं" (महा) । २ दाक्षिण्य, दक्षिणता ; (पाअ) ।
अणुरोहि वि [अनुरोधिन्] अनुरोध करने वाला ; (स १२१) ।
अणुलग्ग वि [अनुलग्न] पीछे लगा हुआ ; (गा ३४५ ; सुर ३, २२६ , सूक्त ७) ।
अणुलद्ध वि [अनुलब्ध] १ पीछे से मिला हुआ ; २ फिर से मिला हुआ ; (नाट) ।
अणुलाव पु [अनुलाप] फिर २ बोलना ; (ठा ७)।
अणुलिंप सक [अनु+लिप्] १ पोतना, लेप करना। २ फिर से पोतना । संकृ—**अणुलिंपित्ता** ; (पि ५८२) । हेकृ—**अणुलिंपित्तए** ; (पि ५७८) ।
अणुलिंपण न [अनुलेपन] लेप, पोतना ; (पण्ह २, ३)।
अणुलित्त वि [अनुलिप्त] लिप्त, पोता हुआ, (कप्प) ।
अणुलिह सक [अनु+लिह्] १ चाटना। २ छूना। वकृ—**अणुलिहंत**; (सम १३१) । "गयणयलमणुलिहंतं" (पउम ३६, १२) ।
अणुलेवण न [अनुलेपन] १ लेप, पोतना, (स्वप्न ६४) । २ फिर से पोतना ; (पण्ण २) ।
अणुलेविय वि [अनुलेपित] लिप्त, पोता हुआ "कम्माणुलेविओ सो" (पउम ८२, ७८) ।

अणुलोम सक [अनुलोमय्] १ क्रम से रखना। २ अनुकूल करना। संकृ—**अणुलोमइत्ता**; (ठा ६)।
अणुलोम न [अनुलोम] १ अनुक्रम, यथाक्रम "वत्थं दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थं" (सुर १६, ४८)।
अणुलोम वि [अनुलोम] सीधा, अनुकूल; (जं २)।
अणुल्लण वि [अनुल्वण] अनुद्धत, अनुद्भट; (बृह ३)।
अणुल्लय पुं [अनुल्लक] एक द्वीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु; (उत्त ३६)।
अणुल्लाव पुं [अनुल्लाप] खराब कथन, दुष्ट उक्ति; (ठा ३)।
अणुव पुं [दे] बलात्कार, जबरदस्ती; (दे १, १९)।
अणुवइट्ठ वि [अनुपदिष्ट] १ अ-कथित, अ-व्याख्यात; २ जो पूर्व-परम्परा से न आया हो "अणुवइट्ठं नाम जं णो आयरियपरंपरागयं" (निचू ११)।
अणुवउत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान; (विसे)।
अणुवएस पुं [अनुपदेश] १ अयोग्य उपदेश; (पंचा १२)। २ उपदेश का अभाव; ३ स्वभाव; (ठा २, १)।
अणुवओग वि [अनुपयोग] १ उपयोग-रहित; २ उपयोग का अभाव, असावधानता; (अणु)।
अणुवंक वि [अनुवक्र] अत्यंत वक्र, बहुत टेढ़ा "जाव अंगारओ रासिं विअ अणुवंकं परिगमणं ण करेदि" (माल ६२)।
अणुवंदण न [अनुवन्दन] प्रति-नमन, प्रति-प्रणाम; (सार्ध ३६)।
अणुवक्क देखो **अणुवंक**; (पि ७४)
अणुवक्ख वि [अनुपाख्य] नाम-रहित, अनिर्वचनीय; (बृह १)।
अणुवक्खड वि [अनुपस्कृत] संस्कार-रहित (पाक); (निचू १)।
अणुवच्च सक [अनु+व्रज्] अनुसरण करना, पीछे २ जाना। अणुवच्चइ; (हे ४, १०७)।
अणुवच्चिअ वि [अनुव्रजित] अनुसृत; (कुमा)।
अणुवजीवि वि [अनुपजीविन्] १ अनाश्रित; २ आजीविका-रहित; (पंचा १५)।
अणुवजुत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान, ख्याल-शून्य; (अभि १३१)।
अणुवज्ज सक [गम्] जाना। अणुवज्जइ; (हे ४,१६२)।
अणुवज्ज सक [दे] सेवा-शुश्रूषा करना; (दे १, ४१)।
अणुवज्जण न [दे] सेवा-शुश्रूषा; (दे १, ४१)।
अणुवज्जिअ वि [दे] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह; (दे १, ४१)।
अणुवज्जिअ वि [दे] गत, गया हुआ; (दे १, ४१)।
अणुवट्ट देखो **अणुवत्त**=अनु+वृत्। कृ—**अणुवट्टणीअ**; (नाट)।
अणुवट्टि देखो **अणुवत्ति**=अनुवर्तिन्; (विसे २४१७)।
अणुवड सक [अनु+पत्] अभिन्न होना। अणुवडइ; (उवर ७१)।
अणुवत्त सक [अनु+वृत्] १ अनुसरण करना। २ सेवा-शुश्रूषा करना। ३ अनुकूल बरतना। ४ व्याकरण आदि के पूर्व सूत्र के पद का, अन्वय के लिए, नीचे के सूत्र में जाना। अणुवत्तइ; (स ४२)। वकृ—**अणुवत्तंत, अणुवत्तंत, अणुवत्तमाण**; (प्राप्र; विसे ३५६८; नाट)। कृ—**अणुवट्टणीअ, अणुवत्तणीअ, अणुवत्तियव्व**; (नाट; उप १०३१ टी)।
अणुवत्त वि [अनुवृत्त] १ अनुसृत, अनुगत; २ अनुकूल किया हुआ; ३ प्रवृत्त; (वव २)।
अणुवत्तग वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल प्रवृत्ति करने वाला, सेवा करने वाला; (उव)।
अणुवत्तण न [अनुवर्त्तन] १ अनुसरण; (स २३९)। २ अनुकूल प्रवृत्ति; (गा २६५)। ३ पूर्व सूत्र के पद का, अन्वय के लिए, नीचे के सूत्र में जाना; (विसे ३५६८)।
अणुवत्तणा स्त्री [अनुवर्त्तना] ऊपर देखो; (उवर १४८)।
अणुवत्तय देखो **अणुवत्तग** "अन्नमन्नच्छंदाणुवत्तया" (णाया १, ३)।
अणुवत्ति स्त्री [अनुवृत्ति] १ अनुसरण; (स ४५६)। २ अनुकूल प्रवृत्ति; ३ अनुगम; (विसे ७०५)।
अणुवत्ति वि [अनुवर्त्तिन्] अनुकूल प्रवृत्ति करने वाला, भक्त, सेवक;
"तुह चंडि! चलणकमलाणुवत्तिणो कह ण संजमिज्जंति। सेरिहवहसंकियमहिसहीरमाणेण व जमेण" (गउड)।
अणुवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, बेजोड़, अद्वितीय; (श्रा २७)।
अणुवमा स्त्री [अनुपमा] एक प्रकारका खाद्य द्रव्य; (जीव ३)।

अणुवमिय वि [**अनुपमित**] देखो **अणुवम** ; (सुपा ६८) ।

अणुवय देखो **अणुव्वय** ; (पउम २, ६२) ।

अणुवय सक [**अनु+वद्**] अनुवाद करना, कहे हुए अर्थ को फिरसे कहना । वकृ—**अणुवयमाण** ; (आचा) ।

अणुवरय वि [**अनुपरत**] १ असंयत, अनिग्रही; (ठा २, १)। २ क्रिवि. निरन्तर, हमेशां ; (रयण २५) ।

अणुवलद्धि स्त्री [**अनुपलब्धि**] १ अभाव, अप्राप्ति ; २ अभाव-ज्ञान ; " दुविहा अणुवलद्धीउ " (विसे १६८२) ।

अणुवलब्भमाण वि [**अनुपलभ्यमान**] जो उपलब्ध न होता हो, जो जानने में न आता हो ; (दसनि १) ।

अणुवलेवय वि [**अनुपलेपक**] उपलेप-रहित, अलिप्त ; (पण्ह १, २)

अणुवसंत वि [**अनुपशान्त**] अशान्त, कुपित ; (उत १६)

अणुवसम पुं [**अनुपशम**] उपशम का अभाव ; (उव) ।

अणुवसु वि [**अनुवसु**] रागवाला, प्रीतिवाला ; (आचा) ।

अणुवह न [**अनुपथ**] पीछे " कुमराणुवहेण सो लग्गो " (उप ६ टी) ।

अणुवहय वि [**अनुपहत**] अविनाशित ; (पिंड) ।

अणुवहुआ स्त्री [**दे**] नवोढ़ा स्त्री, दुलहिन , (दे १,४८) ।

अणुवाइ वि [**अनुपालिन्**] १ अनुसरण करने वाला , (ठा ६) । २ सबन्ध रखने वाला ; (सम १५) ।

अणुवाइ वि [**अनुवादिन्**] अनुवाद करने वाला, उक्त अर्थ को कहने वाला ; (सूअ १, १२ ; सत्त १४ टी) ।

अणुवाइ वि [**अनुवाचिन्**] पढ़ने वाला, अभ्यासी ; " संपुन्न सिवरिसि अणुवाई सव्वसुत्तस्स " (सत्त १४ टी) ।

अणुवाएज्ज वि [**अनुपादेय**] ग्रहण करने के अयोग्य ; (आवम) ।

अणुवाद देखो **अणुवाय**=अनुवाद , (विसे ३५७७) ।

अणुवाय पुं [**अनुपात**] १ अनुसरण ; (पगण १७) । २ संबन्ध, संयोग ; (भग १२, ४) । ३ आगमन ; (पंचा ७) ।

अणुवाय पु [**अनुवात**] १ अनुकूल पवन ; (राय) । २ वि. अनुकूल पवन वाला प्रदेश—स्थान ; (भग १६, ६) ।

अणुवाय वि [**अनुपाय**] उपाय-रहित, निरुपाय ; (उप पृ १४) ।

अणुवाय पुं [**अनुवाद**] अनुभाषण, उक्त बात को फिर से कहना ; (उवा , दे १, १३१) ।

अणुवायण न [**अनुपातन**] अवतारण, उतारना; (धर्म २)।

अणुवायय वि [**अनुवाचक**] कहने वाला, अभिधायक, "पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ" (सुपा ६१६)।

अणुवाल देखो **अणुपाल** । वकृ—**अणुवालेंत**, (स २३)। संकृ—**अणुवालिऊण** ; (स १०२) ।

अणुवालण न [**अनुपालन**] रक्षण, परिपालन ; (आचा)।

अणुवालणा स्त्री [**अनुपालना**] १ ऊपर देखो; (पचू) । २ °**कप्प** पुं [°**कल्प**] साधु-गण के नायक की अकस्मात् मृत्यु हो जाने पर गण की रक्षा के लिए शास्त्रीय विधान ; (पंचभा) ।

अणुवालय वि [**अनुपालक**] १ रक्षक, परिपालक । २ पुं. गोशालक के एक भक्त का नाम ; (भग २४, २०) ।

अणुवास सक [**अनु+वासय्**] व्यवस्था करना । अणुवासेज्जासि ; (आचा) ।

अणुवास पु [**अनुवास**] एक स्थान में अमुक काल तक रह कर फिर वहां ही वास करना ; (पंचभा) ।

अणुवासण न [**अनुवासन**] १ ऊपर देखो । २ यन्त्र-द्वारा तेल आदि को अपान से पेट में चढाना ; (णाया १, १३) ।

अणुवासणा स्त्री [**अनुवासना**] ऊपर देखो ; (पंचभा ; णाया १, १३) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] अनुवास के लिए शास्त्रीय व्यवस्था ; (पंचभा) ।

अणुवासग वि [**अनुपासक**] १ सेवा नहीं करने वाला । २ पुं. जैनेतर गृहस्थ ; (निचू ८) ।

अणुवासर न [**अनुवासर**] प्रतिदिन, हमेशाँ ; (सुर १, २४१) ।

अणुवित्ति स्त्री [**अनुवृत्ति**] १ अनुकूल वर्तन ; (कुमा) । २ अनुसरण ; (उप ८३३ टी) ।

अणुविद्ध वि [**अनुविद्ध**] संबद्ध, जुड़ा हुआ ; (से ११, १५) ।

अणुविहाण न [**अनुविधान**] १ अनुकरण ; २ अनुसरण; (विसे २०७) ।

अणुवीइ स्त्री [**अनुवीचि**] अनुकूलता " वेयाणुवीइं मा कासि चोइज्जंतो गिलाइ से भुज्जो " (सूअ १, ४, १, १६) ।

अणुवीइ, **अणुवीई**, **अणुवीति**, **अणुवीतिय** } अ [**अनुविचिन्त्य**] विचार कर, पर्यालोचना कर ; (पि ५९३ ; आचा ; दस ७) । देखो **अणुचित** ।

अणुवूह सक [अनु+वृंह्] अनुमोदन करना, प्रशंसा करना। अणुवूहेइ ; (कप्प)।

अणुवूहेत्तु वि [अनुवृंहितृ] अनुमोदन करने वाला, (ठा ७)।

अणुवेय सक [अनु+वेदय्] अनुभव करना। वक्र—**अणुवेयंत** ; (सूअ १, ५, १)।

अणुवेयण न [अनुवेदन] फल-भोग, अनुभव ; (स ४०३)।

अणुवेल अ [अनुवेल] निरन्तर, सदा ; (पाअ)।

अणुवेलंधर पुं [अनुवेलन्धर] नाग-कुमार देवों का एक इन्द्र ; (सम ३३)।

अणुवेह देखो अणुप्पेह। वक्र—**अणुवेहमाण** ; (सुअ १, १०)।

अणुव्वज सक [अनु+व्रज्] १ अनुसरण करना। २ सामने जाना। अणुव्वजे ; (सूअ १, ४, १,३)।

अणुव्वय न [अणुव्रत] छोटा व्रत, साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा लघु व्रत, जैन गृहस्थ के पालने के नियम ; (ठा ५, १)।

अणुव्वय न [अनुव्रत] ऊपर देखो ; (ठा ५, १)।

अणुव्वयय वि [अनुव्रजक] अनुसरण करने वाला "अन्नमन्नमणुव्वयया" (णाया १, ३)।

अणुव्वया स्त्री [अनुव्रता] पतिव्रता स्त्री, (उत्त २०)।

अणुव्वस वि [अनुवश] अधीन, आयत्त "एवं तुब्भे सरागत्था अन्नमन्नमणुव्वसा" (सूअ १, ३, ३)।

अणुव्वाण वि [अनुद्वान] १ अ-बन्ध, खुला हुआ ; (उप २११ टी)। २ स्निग्ध, चिकना "पव्वाण किंचि-उव्वाणमेव किंचिच होअणुव्वाणं" (ओघ ४८८)।

अणुव्विग्ग वि [अनुद्विग्न] अ-खिन्न, खेद-रहित; (णाया १, ८ ; गा २८५)।

अणुव्विवाग न [अनुविपाक] विपाक के अनुसार "एवं तिरिक्खे मणुयासुरेसु चउरंतणंतं तयणुव्विवागं" (सूअ १, ५, २)।

अणुव्वीइय देखो अणुवीइ ; (जीव १)।

अणुसंग पु [अनुषङ्ग] १ प्रसंग, प्रस्ताव ; (प्रासू ३६ ; भवि)। २ संसर्ग, सौबत, "मज्झट्ठिई पुण एसा; अणुसङ्गेणं हवन्ति गुण-दोसा" (सट्ठि २८, २७)।

अणुसंचर सक [अनुसं+चर्] १ परिभ्रमण करना। २ पीछे चलना। अणुसंचरइ ; (आचा; सूअ १, १०)।

अणुसंध सक [अनुसं+धा] १ खोजना, ढुंढना, तलाश करना। २ विचार करना। ३ पूर्वापर का मिलान करना। **अणुसंधेमि** ; (पि ५००)। संकृ—**अणुसंधिवि** ; (भवि)।

अणुसंधण } न [अनुसंधान] १ खोज, शोध। **अणुसंधाण** } २ विचार, चिन्तन "अताणुसधणपरा सुसावगा एरिसा हुति" (श्रा २०)। ३ पूर्वापर का मिलान ; (पंचा १२)।

अणुसंधिअ न [दे] अविच्छिन्न हिक्का, निरन्तर हिचकी ; (दे १, ५६)।

अणुसंवेयण न [अनुसंवेदन] १ पीछेसे जानना; २ अनुभव करना, (आचा)।

अणुसंसर सक [अनुसं+सृ] गमन करना, भ्रमण करना। "जो इमाओ दिसाओ वा विदिसाओ वा अणुसंसरइ" (आचा)।

अणुसंसर सक [अनुसं+स्मृ] स्मरण करना, याद करना। अणुसंसरइ; (आचा)।

अणुसज्ज अक [अनु+संज्] १ अनुसरण करना, पूर्व काल से कालान्तर में अनुवर्तन करना। २ प्रीति करना। ३ परिचय करना। अणुसज्जन्ति, (स ३)। भूका — अणुसज्जित्था; (भग ६,७)।

अणुसज्जणा स्त्री [अनुसज्जना] अनुसरण, अनुवर्तन, (वव १)।

अणुसट्ठ वि [अनुशिष्ट] जिसको शिक्षा दी गई हो वह, शिक्षित, (सुर ११,२६)।

अणुसट्ठि वि [अनुशिष्टि] १ शिक्षण, सीख, उपदेश. (ठा ३, ३)। २ स्तुति, श्लाघा "अणुसट्ठी य थुइ त्ति एगट्ठा" (वव १)। ३ आज्ञा, अनुज्ञा, सम्मति "इच्छामो अणुसट्ठिं पत्त ज्ज देह में भयवं !" (सुर ६,२०६)।

अणुसमय न [अनुसमय] प्रतिक्षण, (भग ४१,१)।

अणुसय पुं [अनुशय] १ पश्चात्ताप, खेद; (से २, १६) २ गर्व, अभिमान; (अणु)।

अणुसर सक [अनु+सृ] पीछा करना, अनुवर्तन करना। अणुसरइ, (सण)। वक्र—**अणुसरंत** ; (महा)। कृ—**अणुसरियव्व**; (ठा ५, १)।

अणुसर सक [अनु+स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। वक्र—**अणुसरंत**; (पउम ६६, ७)। कृ—**अणुसरियव्व**, (आवम)।

अणुसरण न [**अनुसरण**] १ पीछा करना; २ अनुवर्तन; (विसे ६१३)।
अणुसरण न [**अनुस्मरण**] अनुचिन्तन, याद करना; (पञ्चा १: स २३१)।
अणुसरिउ वि [**अनुस्मर्तृ**] याद करने वाला; (विसे ६२)।
अणुसरिच्छ } वि [**अनुसदृश**] १ समान, तुल्य: (पउम ६४, ७०)। २ योग्य, लायक (स ११, ११५; पउम ८५, २६)।
अणुसरिस }
अणुसार पु [**अनुस्वार**] १ वर्ण-विशेष, बिन्दी; २ वि. अनुनासिक वर्ण, (विसे ५०१)।
अणुसार पु [**अनुसार**] अनुसरण, अनुवर्तन; (गउड; भवि)। २ माफिक, मुताबिक "कहियाणुसारओ सव्वमुवगयं सुमइणा सम्मं" (सार्ध १४४)।
अणुसारि वि [**अनुसारिन्**] अनुसरण करने वाला; (गउड; न १०१; सार्ध २६)।
अणुसास सक [**अनु+शास्**] १ सीख देना, उपदेश देना। २ आज्ञा करना। ३ शिक्षा करना, सजा देना। अणुसासंति, (पि १७२)। वकृ—**अणुसासंत** (पि ३६७)। कवकृ—**अणुसासिज्जंत**; (सुपा २७३)। कृ—**अणुसासणिज्ज**; (कुमा)। हेकृ—**अणुसासिउं**; (पि ५७६)।
अणुसासण न [**अनुशासन**] १ सीख, उपदेश; (सूअ १, १५)। २ आज्ञा, हुकुम, (सूअ १, २, ३)। ३ शिक्षा, सजा, (पंचा ६)। ४. अनुकम्पा, दया "अणुकंप त्ति वा अणुसासणंति वा एगट्ठा" (पंचचू)।
अणुसासणा स्त्री [**अनुशासना**] ऊपर देखो; (णाया १, १३)।
अणुसासिय वि [**अनुशासित**] शिक्षित, (उत्त १; पि १७३)।
अणुसिक्खिर वि [**अनुशिक्षितृ**] सिखने वाला;
"जं जं करेसि जं जं, जंपसि जह जह तुम नियच्छेसि।
तं तं अणुसिक्खिरीए, दीहो दिअहो ण संपडइ"। (गा ३७८)।
अणुसिट्ठ देखो **अणुसट्ठ**: (सूअ १, ३, ३)।
अणुसिट्ठि देखो **अणुसट्ठि**, (ओघ १७३; बृह १: उत्त १०)।
अणुसिण वि [**अनुष्ण**] गरम नहीं वह: ठंडा; (कम्म १, ४६)।
अणुसील सक [**अनु+शीलय्**] पालन करना, रक्षण करना। **अणुसीलइ**; (सण)।
अणुसुत्ति वि [दे] अनुकूल; (दे १, २५)।
अणुसूआ स्त्री [दे] शीघ्र ही प्रसव करने वाली स्त्री: (दे १, २२)।
अणुसूय वि [**अनुस्यूत**] अनुविद्ध, मिला हुआ. (सूअ २, ३)।
अणुसूयग वि [**अनुसूचक**] जासुस की एक श्रेणी,
"सूयग तहाणुसूयग-पडिसूयग-सव्वसूयगा एव।
पुरिसा कयवित्तीया, वसंति सामंतनगरेसु।
महिला कयवित्तीया, वसंति सामंतनगरेसु॥" (वव १)।
अणुसेढि स्त्री [**अनुश्रेणि**] १ सीधी लाइन। २ न. लाइन-सर; (पि ६६; ३०४)।
अणुसोय पुं [**अनुस्रोतस्**] १ अनुकूल प्रवाह; (ठा ४, ४)। २ वि. अनुकूल "अणुसोयसुहो लोगो पडिसोओ आसमो सुविहियाण" (दसचू २)। ३ न. प्रवाह के अनुसार,
"अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेणं।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेण।" (दसचू २)।
अणुसोय सक [**अनु+शुच्**] सोचना, चिन्ता करना, अफसोस करना। वकृ—**अणुसोयमाण**; (सुपा १३३)।
अणुस्सर देखो **अणुसर**=अनु+स्मृ। संकृ-**अणुस्सरित्ता**, (सूअ १, ७, १६)।
अणुस्सर देखो **अणुसर**=अनु+सृ। वकृ—**अणुस्सरंत**, (स १४०)।
अणुस्सरण न [**अनुस्मरण**] चिन्तन करना, याद करना, (उव; स ५३५)।
अणुस्सार पु [**अनुस्वार**] १ अनुस्वार, बिन्दी। २ वि. अनुस्वार वाला अक्षर, अनुस्वार के साथ जिसका उच्चारण हो वह; (णंदि; विसे ५०३)।
अणुस्सुय वि [**अनुत्सुक**] उत्कण्ठा-रहित; (सूअ १, ६)।
अणुस्सुय वि [**अनुश्रुत**] १ अवधारित; (उत ५)। २ सुना हुआ; (सूअ १,२,१)। ३ न भारत-आदि पुराण-शास्त्र, (सूअ १,३,४)।
अणुहर सक [**अनु+हृ**] अनुकरण करना, नकल करना। अणुहरइ, (पि ४७७)।
अणुहरिय वि [**अनुहृत**] जिसका अनुकरण किया गया हो वह, अनुकृत;

" अणुहरियं धीर तुमे, चरियं निययस्स पुव्वपुरिसस्स।
भरहं-महानरवइणो, तिहुयणविक्खाय-कित्तिस्स" (महा)।

अणुहव सक [**अनु+भू**] अनुभव करना। अणुहवइ ; (पि ४७५)। वकृ—**अणुहवमाण**; (सुर १, १७१)। कृ—**अणुहवियव्व, अणुहवणीय** ; (पउम १७, १४; सुपा ५८१)। संकृ—**अणुहवेऊण, अणुहविउं**; (प्रारू; पंचा २)।

अणुहवण न [**अनुभवन**] अनुभव ; (स २८७)।

अणुहविय वि [**अनुभूत**] जिसका अनुभव किया गया हो वह, ; (सुपा ६)।

अणुहारि वि [**अनुहारिन्**] अनुकरण करने वाला, नकालची ; (कुमा)।

अणुहाव देखो **अणुभाव** ; (स ४०३; ६५६)।

अणुहियासण न [**अन्वध्यासन**] धैर्य से सहन करना ; (जं २)।

अणुहु सक [**अनु+भू**] अनुभव करना। वकृ—**अणुहुंत**; (पउम १०३, १५२)।

अणुहुंज सक [**अनु+भुञ्ज्**] भोग करना, भोगना। अणुहुजइ , (भवि)।

अणुहुत्त देखो **अणुहूअ** ; (गा ६५६)।

अणुहूअ वि [**अनुभूत**] १ जिसका अनुभव किया गया हो वह ; (कुमा)। २ न. अनुभव ; (से ४, २७)।

अणुहो सक [**अनु+भू**] अनुभव करना। अणुहोंति ; (पि ४७५)। वकृ—**अणुहोंत**; (पउम १०६, १७)। कवकृ—**अणुहोईअंत, अणुहोइज्जंत, अणुहोइज्जमाण** ; **अणुहोईअमाण**, (षड्)। कृ—**अणुहोदव्व** (शौ), (अभि १३१)।

अणूकप्प देखो **अणुकप्प** ; ' एत्तो वोच्छं अणूकप्पं " (पंचभा)।

अणूण वि [**अनून**] कम नहीं, अधिक; (कुमा)।

अणूय } **अणूव** } पुं [**अनूप**] अधिक जल वाला देश, जल-बहुल स्थान ; (विसे १७०३; वव ४)।

अणेअ वि [**अनेक**] देखो **अणेक्क** ; (कुमा; अभि २४६)।

अणेकज्झ वि [**दे**] चञ्चल, चपल ; (दे १,३०)।

अणेक्क } **अणेग** } वि [**अनेक**] एक से अधिक, बहुत; (औप; प्रासू ५३)। °**करण** न [°**करण**] पर्याय, धर्म, अवस्था; (सम्म १०६)। °**राइय** वि [°**रात्रिक**] अनेक रातों में होने वाला, अनेक रात संबन्धी (उत्सवादि); (कस)। °**सो** अ [°**शस्**] अनेक वार ; (श्रा १४)।

अणेगंत पुं [**अनेकान्त**] अनिश्चय, नियम का अभाव ; (विसे)। °**वाय** पुं [°**वाद**] स्याद्वाद, जैनों का मुख्य सिद्धान्त, सत्व-असत्व आदि अनेक विरुद्ध धर्मों का भी एक वस्तु में सापेक्ष स्वीकार,
"जेण विणा लोगस्सवि, ववहारो सव्वहा न निव्वडइ।
तस्स भुवणेक्कगुरुणो नमो अणेगंतवायस्स" (सम्म १६६)।

अणेगंतिय वि [**अनैकान्तिक**] ऐकान्तिक नहीं, अनिश्चित, अनियमित ; (भग १, १)।

अणेगावाइ वि [**अनेकवादिन्**] पदार्थों को सुर्वथा अलग २ मानने वाला, अक्रियवाद-मत का अनुयायी ; (ठा ८)।

अणेच्छंत वि [**अनिच्छत्**] नहीं चाहता हुआ ; (उप ७६८ टी)।

अणेज वि [**अनेज**] निश्चल, निष्कम्प; (आक)।

अणेज्ज वि [**अज्ञेय**] जानने को अयोग्य, जानने को अशक्य; (महा)।

अणेलिस वि [**अनीदृश**] अनुपम, असाधारण, "जे धम्मं सुद्धमक्खंति पडिपुण्णमणेलिसं " (सूअ १, ११)।

अणेवंभूय वि [**अनेवम्भूत**] विलक्षण, विचित्र 'अणेवं-भूयपि वेयणं वेदंति" (भग ५,५)।

अणेस देखो **अण्णेस**। वकृ—**अणेसंत**; (नाट)।

अणेसण न [**अन्वेषण**] खोज, तलास; (महा)।

अणेसणा स्त्री [**अनेषणा**] एषणा, का अभाव; (उवा)।

अणेसणिज्ज वि [**अनेषणीय**] अकल्पनीय, जैन साधुओं के लिए अग्राह्य (भिक्षा-आदि); (ठा ३,१; णाया १ ५)।

अणोउया स्त्री [**अनृतुका**] जिसको ऋतु-धर्म न आता हो वह स्त्री; (ठा ५,२)।

अणोक्कंत वि [**अनवक्रान्त**] जिसका पराभव न किया गया हो वह, अजित, ' परवाईहिं अणोक्कंता" (औप)।

अणोग्गह देखो **अणुग्गह**=अनवग्रह; "नागरगो संवट्टो अणोग्गहो" (बृह ३)।

अणोग्घसिय वि [**अनवघर्षित**] नहीं घिसा हुआ, अमार्जित ; (राय)।

अणोज्ज वि [**अनवद्य**] निर्दोष, शुद्ध; (णाया १,८)।

अणोज्जंगी स्त्री [**अनवद्याङ्गी**] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम; (आचू)।

अणोज्जा स्त्री [**अनवद्या**] ऊपर देखो; (कप्प) ।

अणोणअ वि [**अनवनत**] नहीं नमा हुआ; (से १,१) ।

अणोत्तप्प देखो **अणुत्तप्प**; (पव ६४) ।

अणोम वि [**अनवम**] अ-हीन, परिपूर्ण; (आचा) ।

अणोमाण न [**अनपमान**] अनादर का अभाव, सत्कार,
"एवं उग्गमदोसा विजढा पइरिक्कया अणोमाणं ।
मोहतिगिच्छा य कया, विरियायारो य अणुचिण्णो "
(ओघ २४६) ।

अणोरपार वि [**दे**] १ प्रचुर, प्रभूत; (आवम) । २ अनादि-अनन्त; (पंचा १५; जी ४४) । ३ अति विस्तीर्ण; (पण्ह १,३) ।

अणोरुम्मिअ वि [**अनुद्रान**] अ-शुष्क, गिला; (कुमा) ।

अणोलय न [**दे**] प्रभात, प्रातःकाल; (दे १,१६) ।

अणोवणिहिया स्त्री [**अनौपनिधिकी**] आनुपूर्वी का एक भेद; क्रम-विशेष; (अणु) ।

अणोवणिहिया स्त्री [**अनुपनिहिता**] ऊपर देखो; (पि ७७) ।

अणोल्ल वि [**अनार्द्र**] १ शुष्क, सूखा हुआ, (गा ५४१) । °**मण** वि [°**मनस्क**] अकरुण, निष्ठुर, निर्दय; (काप्र ८६) ।

अणोवम वि [**अनुपम**] उपमा-रहित, अद्वितीय; (पउम ७६, २६; सुर ३,१३०) ।

अणोवमिय वि [**अनुपमित**] ऊपर देखो; (पउम २,६३) ।

अणोवसंखा स्त्री [**अनुपसंख्या**] अज्ञान, सत्य ज्ञान का अभाव; (सूअ २,१२) ।

अणोवहिय वि [**अनुपधिक**] १ परिग्रह-रहित, संतोषी । २ सरल, अकपटी, (आचा) ।

अणोवाहणग } वि [**अनुपानत्क**] जूता-रहित, जो
अणोवाहणय } जूता-पहिना न हो; (औप; पि ७७) ।

अणोसिय वि [**अनुषित**] १ जिसने वास न किया हो । २ अव्यवस्थित "अणोसिएणं न करेइ णच्चा" (धर्म ३; सूअ १,१४) ।

अणोहंतर वि [**अनोघन्तर**] पार जाने के लिए असमर्थ,
"मुणिणा हु एयं पवेइयं अणोहंतरा एए, नो य ओहं तरित्तए"
(आचा) ।

अणोहट्टय वि [**अनपघट्टक**] निरंकुश, स्वच्छन्दी; (णाया १,१६) ।

अणोहीण वि [**अनवहीन**] हीनता-रहित; (पि १२०) ।

अण्ण सक [**भुज्**] भोजन करना, खाना । अण्णइ; (षड्) ।

अण्ण स [**अन्य**] दूसरा, पर; (प्रासू १३१) । °**उत्थिय** वि [°**तीर्थिक यूथिक**] अन्य दर्शन का अनुयायी; (सम ६०) । °**गाहण** न [°**ग्रहण**] १ गान के समय होने वाला एक प्रकार का मुख-विकार । २ पुं. गाने वाला, गान्धर्विक, गवैया; (निचू १७) । °**धम्मिय** वि [°**धर्मिक**] भिन्न धर्म वाला; (ओघ १५) ।

अण्ण न [**अन्न**] १ नाज, चावल आदि धान्य; (सूअ १,४,२) । २ भक्ष्य पदार्थ; (उत्त २०) । ३ भक्षण, भोजन; (सूअ १,२) । °**इलाय, °गिलाय** वि [°**ग्लायक**] वासी अन्न को खाने वाला; (औप; भग १६,३) । °**विहि** पुस्त्री [°**विधि**] पाक-कला; (औप) ।

अण्ण न [**अर्णस्**] पानी, जल; (उत्त ५) ।

अण्ण वि [**दे**] १ आरोपित; २ खण्डित; (षड्) ।

°**अण्ण** देखो **कण्ण=कर्ण**; (गा ५६४; कप्पू) ।

अण्णअ पुं [**दे**] १ युवान, तरुण; २ धूर्त, ठग; ३ देवर; (दे १, ५५) ।

अण्णइअ वि [**दे**] १ तृप्त; (दे १, १६) । २ सब विषयों में तृप्त, सर्वार्थ-तृप्त; (षड्)

अण्णओ अ [**अन्यतस्**] दूसरे से, दूसरी तर्फ; (उत्त १) । देखो **अन्नओ** ।

अण्णण्ण वि [**अन्योन्य**] परस्पर, आपस में; (षड्) ।

अण्णण्ण वि [**अन्यान्य**] और और, अलग अलग,
"अण्णण्णाइं उवेंता, संसारवहम्मि णिरवसाणम्मि ।
मरणंति धीरहियआ, वसइट्ठाणाइंव कुलाइं " (गउड) ।

अण्णत्त अ [**अन्यत्र**] दूसरे में, भिन्न स्थान में; (गा ६५५) ।

अण्णत्ति स्त्री [**दे**] अवज्ञा, अपमान, निरादर; (दे १, १७) ।

अण्णत्तो देखो **अण्णओ** ; (गा ६३६) ।

अण्णत्थ देखो **अण्णत्त** ; (विपा १, २) ।

अण्णत्थ वि [**अन्यस्थ**] दूसरे (स्थान) में रहा हुआ; (गा ५५०) ।

अण्णत्थ वि [**अन्वर्थ**] यथार्थ, यथा नाम तथा गुण वाला ; " ठियमण्णत्थे तयत्थनिरवेक्खं " (विसे) ।

अण्णमण्ण देखो **अण्णण्ण=**अन्योन्य "अण्णमण्णमणुरत्तया" (णाया १, २) ।

अण्णमय वि [**दे**] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ ; (दे १, २८) ।

अण्णयर वि [अन्यतर] दो में से कोई एक ; (कप्प)।
अण्णया अ [अन्यदा] कोई समय में ; (उप ६ टी)।
अण्णव पुं [अर्णव] १ समुद्र ; २ संसार " अण्णवंसि महोघंसि एगे तिण्णे दुरुत्तरे " (उत्त ५)।
अण्णव न [ऋणवत्] एक लोकोत्तर मुहूर्त का नाम; (जं ७)।
अण्णह न [अन्वह] प्रतिदिन, हमेशां, (धर्म १)।
अण्णह देखो **अण्णत्त** ; (षड्)।
अण्णह, **अण्णहा** अ [अन्यथा] अन्य प्रकार से, विपरीत रीति से, उलटा ; (षड्, महा)। °**भाव** पुं [°भाव] वैपरीत्य, उलटापन ; (वृह ४)।
अण्णहि देखो **अण्णत्त** ; (षड्)।
अण्णा स्त्री [आज्ञा] आज्ञा, आदेश ; (गा २३; अभि ६३, मुद्रा ५७)।
अण्णाइट्ठ वि [अन्वादिष्ट] आदिष्ट, जिसको आदेश दिया गया हो वह " अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे " (अंत २०)।
अण्णाइट्ठ वि [अन्वाविष्ट] १ व्याप्त ; (भग १४, १)। २ पराधीन, परवश ; (भग १८, ६)।
अण्णाइस (अप) वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा ; (पि २४५)।
अण्णाण न [अज्ञान] १ अज्ञान, अजानकारी, मूर्खता ; (दे १, ७)। २ मिथ्या ज्ञान, भूठा ज्ञान ; (भग ८, २)। ३ वि. ज्ञान-रहित, मूर्ख ; (भग १, ६)।
अण्णाण न [दे] दाय, विवाह-काल में वधू को अथवा वर को जो दान दिया जाता है वह ; (दे १, ७)।
अण्णाणि वि [अज्ञानिन्] १ ज्ञान-रहित, मूर्ख ; (सुअ १, ७)। २ मिथ्या-ज्ञानी (पंच १)। ३ अज्ञान को ही श्रेयस्कर मानने वाला, अज्ञान-वादी ; (सुअ १, १२)।
अण्णाणिय वि [आज्ञानिक] १ अज्ञान-वादी, अज्ञानवाद का अनुयायी ; (आव ६; सम १०६)। २ मूर्ख, अज्ञानी; (सुअ १, १, २)।
अण्णाय वि [अज्ञात] अ-विदित, नहीं जाना हुआ; (पण्ह २ १)।
अण्णाय पुं [अन्याय] न्याय का अभाव ; (श्रा १२)।
अण्णाय वि [दे] आर्द्र, गिला ; (से ४, ६)।
अण्णाय वि [अन्याय्य] न्याय से च्युत, न्याय-विरुद्ध, " जे विग्गहीए अण्णायभासी, न से समे होइ अभंभपत्ते " (सुअ १, १३)।
अण्णाढ्य (शौ) ऊपर देखो ; (मा २०)।
अण्णारिच्छ वि [अन्यादृक्ष] दूसरे के जैसा ; (प्रामा)।
अण्णारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा ; (पि २४५)।
अण्णास्य वि [दे] आस्तृत, विछाया हुआ ; (षड्)।
अण्णिज्जमाण देखो **अण्णे**।
अण्णिय वि [अन्वित] युक्त, सहित; (सुअ १, १० ; नाट)।
अण्णिया स्त्री [दे] देखो **अण्णी** ; (दे १, ५१)।
अण्णिया स्त्री [अन्निका] एक विख्यात जैन मुनि की माता का नाम ; (ती ३६)। °**उत्त** पुं [°पुत्र] एक विख्यात जैन मुनि ; (ती ३६)।
अण्णी स्त्री [दे] १ देवर की स्त्री ; २ पति की बहिन, ननंद; ३ फूफा, पिता की बहिन ; (दे १, ५१)।
अण्णु, **अण्णुअ** वि [अज्ञ] अजान, निर्बोध, मूर्ख ; (षड् ; गा १८४)।
अण्णुण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में ; (गउड)।
अण्णूण वि [अन्यून] परिपूर्ण ; (उप पृ २२४)।
अण्णे सक [अनु+इ] अनुसरण करना। अण्णेइ ; (विसे २५२६)। अण्णेंति ; (पि ४६३)। कवकृ—**अण्णिज्जमाण** ; (अन्वीयमान); (विपा १, १)।
अण्णेस सक [अनु+इष्] १ खोजना, ढूँढना, तहकीकात करना। २ चाहना, वांछना। ३ प्रार्थना करना। अण्णेसइ ; (पि १६३)। वकृ—**अण्णेसंत**, **अण्णेसअंत**, **अण्णेसमाण** ; (महा; काल)।
अण्णेसण न [अन्वेषण] खोज, तलाश, तहकीकात ; (उप ६ टी)।
अण्णेसणा स्त्री [अन्वेषणा] १ खोज, तहकीकात; (प्राप)। २ प्रार्थना ; (आचा)। ३ गृहस्थ से दी जाती भिक्षा का ग्रहण ; (ठा ३, ४)।
अण्णेसि वि [अन्वेषिन्] खोज करने वाला ; (आचा)।
अण्णेसिय वि [अन्वेषित] जिसकी तहकीकात की गई हो वह, " अण्णेसिया सव्वओ तुब्भे न कहिंचि दिट्ठा " (महा)।
अण्णोण्ण देखो **अण्णुण्ण**, " अण्णोण्णाणसमणुबद्धं णिच्छयओ भणियविसयं तु " (पंचा ६ ; स्वप्न ५२)।
अण्णोसरिअ वि [दे] अतिक्रान्त, उल्लङ्घित ; (दे १, ३६)।
अण्ह सक [भुज्] १ खाना, भोजन करना। २ पालन करना। ३ ग्रहण करना। अण्हइ ; (हे ४, ११०; षड्)। अण्हाइ ; (औप)। अण्हए ; (कुमा)।

°अण्ह न [अहन्] दिवस, दिन " पुव्वावरण्हकालसमयंसि " (उवा) ।

अण्हग } पुं [आश्रव] कर्म-बन्ध के कारण हिंसादि ;
अण्हय } (पण्ह १, १; ५ ; औप) ।

°अण्हा स्त्री [तृष्णा] तृषा, प्यास , (गा ६३) ।

अण्हेअअ वि [दे] भ्रान्त, भूला हुआ ; (दे १, २१) ।

अतक्किय वि [अतर्कित] १ अचिन्तित, आकस्मिक, " अतक्कियमेव एरिसं वसणमहं पत्ता " (महा) । २ ठीक २ नहीं देखा हुआ, अपरिलक्षित ; (वव ८) । ३ क्रिवि. " अतक्कियं चेय...... विहरिओ रायहत्थी " (महा) ।

अतड त्रि [अतट] छोटा किनारा " अतडववातो सो चेव मग्गो " (बृह १) ।

अतण्हाअ वि [अतृष्णाक] तृष्णा-रहित, निःस्पृह, (अच्चु ६४) ।

अतत्त न [अतत्व] असत्य, भूठ, गैरव्याजबी ; (उप ५०८) ।

अतत्थ वि [अत्रस्त] नहीं डरा हुआ ; निर्भीक ; (कुमा)।

अतत्थ वि [अतथ्य] असत्य, भूठा ; (आचा) ।

अतर देखो अयर ; (पव १ ; कम्म ५ ; भवि) ।

अतव पुंन [अतपस्] १ तपश्चर्या का अभाव , (उत्त २३)। २ वि. तप-रहित ; (बृह ४) ।

अतव पुं [अस्तव] अ-प्रशंसा, निन्दा ; (कुमा) ।

अतसी देखो अयसी ; (पण्ण १) ।

अतह वि [अतथ] असत्य, अ-वास्तविक, भूठा ; (सूअ १, १, २ ; आचा) ।

अतह वि [अतथा] उस माफिक नहीं,
" जाओ चिय कायव्वे उच्छाहेंति गरुयाण कित्तीओ ।
ताओ चिय अतह-णिवेयणेण अलसेंति हिययाइं " (गउड)।

अतार वि [अतार] तरने को अशक्य; (णाया १, ६, १४)।

अतारिम वि [अतारिम] ऊपर देखो ; (सूअ १, ३, २)।

अतिउट्ट अक [अति+त्रुट्] १ खूब टूटना ; टूट जाना ; २ सर्व बन्धन से मुक्त होना । अतिउट्टइ ; (सूअ १, १५, ५) ।

अतिउट्ट सक [अति+वृत्] १ उल्लंघन करना । २ व्याप्त होना । °तिउट्टइ ; (सूअ १, १५, ६ टी) ।

अतिउट्ट वि [अतिवृत्त] १ अतिक्रान्त ; २ अनुगत, व्याप्त ; " जंसी गुहाए जलणेतिउट्टे अविजाणओ डज्झइ लुत्तपण्णो " (सूअ १; ५, १, १२) ।

अतित्थ न [अतीर्थ] १ तीर्थ (चतुर्विध संघ) का अभाव, तीर्थ की अनुत्पत्ति ; २ वह काल, जिसमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो ; (पण्ण १) । °सिद्ध वि [°सिद्ध] अतीर्थ काल में जो मुक्त हुआ हो वह " अतित्थसिद्धा य मरुदेवी " (नव ५६) ।

अतिहि देखो अइहि ।

अतीगाढ वि [अतिगाढ] १ अति-निबिड ; २ क्रिवि. अत्यंत, बहुत " अतीगाढं भीओ जक्खाहिवो " (पउम ८, ११३) ।

अतुल वि [अतुल] अनुपम, असाधारण ; (पण्ह १, १) ।

अतुलिय वि [अतुलित] असाधारण, अद्वितीय ; (भवि) ।

अत्त देखो अप्प=आत्मन् ; (सुर ३, १७४ ; सम ५७; णंदि) । °लाभ पुं [°लाभ] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति; (कम्म २, २५) ।

अत्त वि [आर्त्त] पीडित, दुःखित, हैरान; (सुर ३;१४३; कुमा)।

अत्त वि [आत्त] १ गृहीत, लिया हुआ ; (णाया १, १) । २ स्वीकृत, मंजुर किया हुआ ; (ठा २, ३) । ३ पुं. ज्ञानी मुनि ; (बृह १) ।

अत्त वि [आप्त] १ ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी ; २ राग-द्वेष वर्जित, वीतराग ; ३ प्रायश्चित्त-दाता गुरु,
" नाणमादीणि अत्ताणि, जेण अत्तो उ सो भवे ।
रागद्दोसपहीणो वा, जे व इट्ठा विसोहिए " (वव १०)।
४ मोक्ष, मुक्ति; (सूअ १, १०) । ५ एकान्त हितकर; (भग १४, ६) । ६ प्राप्त, मिला हुआ ; (वव १०) " अत्तप्पसण्णलेस्से " (उत्त १२) ।

अत्त वि [आत्र] दुःख का नाश करने वाला, सुख का उत्पादक ; (भग १४, ६) ।

अत्त अ [अत्र] यहां, इस स्थान में ; (नाट) । °भव वि [°भवत्] पूज्य, माननीय ; (अभि ६१ ; पि २६३)।

अत्तट्ठ वि [आत्मार्थ] १ आत्मीय, स्वकीय ; (धर्म २) । २ पुं. स्वार्थ " इह कामनियत्तस्स अत्तट्ठे नावरज्झइ " (उत्त ८) ।

अत्तट्ठिय वि [आत्मार्थिक] १ आत्मीय ; २ जो अपने लिए किया गया हो, " उवक्खडं भोयण माहणाणं अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं " (उत्त १२) ।

अत्तण } देखो अप्प=आत्मन् ; (मृच्छ २३६) ।
अत्तणअ } °केरक वि [आत्मीय] निजीय, स्वकीय ; (नाट, पि ४०१) ।

अत्तणअ } (शौ) वि [**आत्मीय**] स्वकीय, अपना,
अत्तणक } निजका ; (पि २७७ ; नाट) ।
अत्तणिज्जिय वि [**आत्मीय**] स्वकीय ; (ठा ३, १) ।
अत्तणीअ (शौ) ऊपर देखो; (स्वप्न २७) ।
अत्तमाण देखो **आवत्त**=आ+वृत् ।
अत्तय पुं [**आत्मज**] पुत्र, लड़का । °**या** स्त्री [°**जा**] पुत्री; लड़की ; (विपा १, १) ।
अत्तव्व वि [**अत्तव्य**] खाने लायक, भक्ष्य ; (नाट) ।
अत्ता स्त्री [**दे**] १ माता, माँ ; (दे १, ५१ ; चारु ७०)। २ सासू ; (दे १, ५१; गा ६६७; हेका ३०) । ३ फूफा; ४ सखी ; (दे १, ५१) ।
°**अत्ता** देखो **जत्ता**; (प्रति ८२) ।
अत्ताण देखो **अत्त**=आत्मन्; (पि ४०१)
अत्ताण वि [**अत्राण**] १ शरण-रहित, रक्षक-वर्जित; (पण्ह १,१) । २ पुं कन्धे पर लट्ठी रख कर चलने वाला मुसाफिर; ३ फटे-टुटे कपड़े पहन कर मुसाफिरी करने वाला यात्री; (बृह १) ।
अत्ति पुं [**अत्रि**] इस नाम का एक ऋषि; (गउड) ।
अत्ति स्त्री [**अर्ति**] पीड़ा, दुःख; (कुमा ; सुपा १८५) । °**हर** वि [°**हर**] पीड़ा-नाशक, दुःख का नाश करने वाला; (अभि १८३) ।
अत्तिहरी स्त्री [**दे**] दूती, समाचार पहुँचाने वाली स्त्री; (षड्) ।
अत्तीकर सक [**आत्मी + कृ**] अपने आधीन करना, वश करना । अत्तीकरेइ; वकृ—**अत्तीकरंत**; (निचू ४) ।
अत्तीकरण न [**आत्मीकरण**] अपने वश करना; (निचू ४) ।
अत्तुक्करिस } पुं [**आत्मोत्कर्ष**] अभिमान, गर्व,
अत्तुक्कोस } "तम्हा अत्तुक्करिसो वज्जेयव्वो जइजणेणं" (सूअ १,१३; सम ७१) ।
अत्तुक्कोसिय वि [**आत्मोत्कर्षिक**] गर्विष्ठ, अभिमानी; (औप) ।
अत्तेय पुं [**आत्रेय**] १ अत्रि ऋषि का पुत्र; (पि १०; ८३)। २ एक जैन मुनि; (विसे २७९९) ।
अत्तो अ [**अतस्**] १ इससे, इस हेतु से; (गउड) । २ यहां से; (प्रामा) ।
अत्थ देखो **अट्ठ**=अर्थ; (कुमा; उप ७२८ ; ८८४ टी; जी १, प्रासू ६५, गउड) "अरोइअत्थे कहिए विलावो" (गोय ७) "अत्थसद्दो फलत्थोयं" (विसे १०३६ ; १२४३)। °**जोणि** स्त्री [°**योनि**] धनोपार्जन का उपाय, साम-दाम दण्ड-रूप अर्थ-नीति; (ठा ३,३) । °**णय** पुं [°**नय**] शब्द को छोड़ अर्थ को ही मुख्य वस्तु मानने वाला पक्ष ; (अणु) । °**सत्थ** न [**शास्त्र**] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र, (गाया १, १) । °**वइ** पुं [°**पति**] १ धनी; २ कुबेर ; (वव ७) । °**वाय** पुं [°**वाद**] १ गुण-वर्णन ; २ दोष-निरूपण; ३ गुण-वाचक शब्द ; ४ दोष-वाचक शब्द; (विसे) । °**वि** वि [**वित्**] अर्थ का जानकार; (पिंड १ भा) । °**सिद्ध** वि [°**सिद्ध**] १ प्रभूत धन वाला; (जं ७) । २ पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव; (तित्थ) । °**लिय** न [°**लीक**] धन के लिए असत्य बोलना; (पण्ह १, २) । °**लोयण** न [°**लोचन**] पदार्थ का सामान्य ज्ञान (आचू १)। °**लोयण** न [°**लोकन**] पदार्थ का निरीक्षण,
"अत्थालोयण-तरला, इयरकईणं भमंति बुद्धीओ ।
अत्थच्चेय निरारम्भमेंति हियय कइन्दाणं ॥" (गउड) ।
अत्थ पुं [**अस्त**] १ जहां सूर्य अस्त होता है वह पर्वत, (से १०,१०) । २ मेरु पर्वत; (सम ६५) । ३ वि. अविद्यमान; (गाया १,१३) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] अस्ताचल; (सुर ३, २७७; पउम १६,४५) । °**सेल** पुं [°**शैल**] अस्ताचल ; (सुर ३, २२९) । °**चल** पुं [°**चल**] अस्त-गिरि ; (कप्पू) ।
अत्थ न [**अस्त्र**] हथियार, आयुध; (पउम ८,५० ; से १४ ६१) ।
अत्थ सक [**अर्थय्**] मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना, विज्ञप्ति करना । अत्थयए; (निचू ४) ।
अत्थ अक [**स्था**] बैठना । अत्थइ; (आरा ७१) ।
अत्थ }
अत्थं } देखो **अत्त**=अत; (कप्प; पि २६३; ३६१) ।
अत्थंडिल वि [**अस्थण्डिल**] साधुओ के रहने के लिए अयोग्य स्थान, क्षुद्र जन्तुओं से व्याप्त स्थान; (ओघ १३) ।
अत्थंत वकृ [**अस्तं यत्**] अस्त होता हुआ; (वज्जा २२) ।
अत्थक्क न [**दे**] १ अकाण्ड, अकस्मात् , बे-समय; (उप ३३०; से ११,२४; श्रा ३०, भवि) । अत्थक्कगज्जिउब्भंत-हित्थहिअआ पहिअजाआ" (गा ३८६) । २ वि. अखिन्न, (वज्जा ६) । ३ क्रिवि. अनवरत, हमेशां; (गउड) ।

अत्थग्घ वि [दे] १ मध्य-वर्ती, बीच का "सभए अत्थग्घे वा ओइएसु घणं पट्टं" (ओघ ३४)। २ अगाध, गंभीर; ३ न. लम्बाई, आयाम; ४ स्थान, जगह, (दे १,५४) ।

अत्थण न [अर्थन] प्रार्थना, याचना; (उप ७२८ टी) ।

अत्थत्थि वि [अर्थार्थिन्] धन की इच्छा वाला, (उप १३६ टी) ।

अत्थम अक [अस्तम् + इ] अस्त होना, अदृश्य होना । अत्थमइ; (पि ५५८) । वकृ—**अत्थमंत**; (पउम ८२, ५६) ।

अत्थमण न [अस्तमयन] अस्त होना, अदृश्य होना; (ओघ ५०७; से ८, ८५; गा २८४) ।

अत्थमिय वि [अस्तमित] १ अस्त हुआ, डुब गया, अदृश्य हुआ; (ओघ ५०७; महा; सुपा १५५) । २ हीन, हानि-प्राप्त; (ठा ४,३) ।

अत्थयारिआ स्त्री [दे] सखी, वयस्या; (दे १, १६) ।

अत्थर सक [आ + स्तृ] बिछाना, शय्या करना, पसारना । अत्थरइ; (उव) । संकृ—**अत्थरिऊण**; (महा) ।

अत्थरण न [आस्तरण] १ बिछौना, शय्या; (से १४, ५०) । २ बिछाना, शय्या करना; (विसे २३२२) ।

अत्थरय वि [आस्तरक] १ आच्छादन करने वाला; (राय) । २ पुं. बिछौने के ऊपर का वस्त्र; (भग ११, ११; कप्प) ।

अत्थरय वि [अस्तरजस्क] निर्मल, शुद्ध; (भग ११, ११) ।

अत्थवण देखो **अत्थमण** ; (भवि) ।

अत्था देखो **अट्ठा**=आस्था ।

अत्था } सक [अस्ताय्] अस्त होना, डूब जाना, अदृ-
अत्थाअ } श्य होना । अत्थाइ, अत्थाए; (पउम ७३, ३५) । अत्थाअंति; (से ७,२३) । वकृ—**अत्था-अंत**; (से ७, ६६) ।

अत्थाअ वि [अस्तमित] अस्त हुआ, डूबा हुआ "ताव-चिय दिवसयरो अत्थाओ विगयकिरणसंघाओ" (पउम १०, ६६; से ६,५२) ।

अत्थाइया स्त्री [दे] गोष्ठी-मण्डप; (स ३६) ।

अत्थाण न [आस्थान] सभा, सभा-स्थान; (सुर १, ८०) ।

अत्थाणिय वि [आस्थानिन्] बैठ-स्थान में लगा हुआ, "अत्थाणियनयणहिं" (भवि) ।

अत्थाणी स्त्री [आस्थानी] सभा-स्थान; (कुमा) ।

अत्थाम वि [अस्थामन्] बल-रहित, निर्बल; (गाया १,१) ।

अत्थार पुं [दे] सहायता, साहाय्य; (दे १,६; पात्र) ।

अत्थारिय पुं [दे] नौकर, कर्मचारी; (वव ६) ।

अत्थावग्गह देखो **अत्थुग्गह**; (पण्ण ५) ।

अत्थावत्ति स्त्री [अर्थापत्ति] अनुक्त अर्थ को अटकल से समझना, एक प्रकार का अनुमान-ज्ञान, जैसे 'देवदत्त पुष्ट है और दिन में नहीं खाता है' इस वाक्य से 'देवदत्त रात में खाता है' ऐसा अनुक्त अर्थ का ज्ञान; (उप ६६८) ।

अत्थाह वि [अस्ताघ] १ अथाह, थाह-रहित, गंभीर ; (गाया १, १४) । २ नासिका के ऊपर का भाग भी जिसमें डूब सके इतना गहरा जलाशय ; (बृह ४) । ३ पुं. अतीत चौवीसी में भारत में समुत्पन्न इस नाम क एक तीर्थंकर-देव ; (पव ६) ।

अत्थाह वि [दे] देखो **अत्थग्घ** ; (दे १,५४ ; भवि) ।

अत्थि वि [अर्थिन्] १ याचक, माँगने वाला ; (सुर १०, १००) । २ धनी, धन वाला ; (पंचा) । ३ मालिक, स्वामी ; (विसे) । ४ गरजू, चाहने वाला,

" धणओ धणत्थियाणं, कामत्थीणं च सव्वकामकरो ।
सग्गापवग्गसंगमहेऊ जिणदेसिओ धम्मो ॥ " (महा) ।

अत्थि न [अस्थि] हाड, हड्डी ; (महा) ।

अत्थि अ [अस्ति] १ सत्व-सूचक अव्यय, है, "अत्थे-गइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया" (औप), "अत्थि णं भंते ! विमाणाइं" (जीव ३) । २ प्रदेश, अवयव "चत्तारि अत्थिकाया" (ठा ४, ४) । °**अवत्तव्व** वि [°अवक्तव्य] सप्तभङ्गी का पांचवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्य आदि की अपेक्षा से विद्यमान और एक ही साथ कहने को अशक्य पदार्थ,

"सब्भावे आइट्ठो देसो देसो अ उभयहा जस्स ।
तं अत्थिअवत्तव्वं च होइ दविअं विअप्पवसा" (सम्म ३८)।

°**काय** पुं [°काय] प्रदेशों का—अवयवों का समूह ; (सम १०) । °**णत्थवत्तव्व** वि [°नास्त्यवक्तव्य] सप्तभङ्गी का सातवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान, परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान और एक ही समय में दोनों धर्मों से कहने को अशक्य पदार्थ,

" सब्भावासब्भावे, देसो देसो अ उभयहा जस्स ।
तं अत्थिणत्थवत्तव्वयं च दविअं विअप्पवसा" (सम्म ४०)।

°त्त न [°त्व] सत्व, विद्यमानता, हयाती ; (सुर २, १४२)। °त्ता स्त्री [°ता] सत्व, हयाती ; (उप पृ ३७४)। °त्तिनय पुं [°इतिनय] द्रव्यार्थिक नय ; (विसे ५३७)। °नत्थि वि (°नास्ति) सप्तभङ्गी का तीसरा भङ्ग—प्रकार, स्वद्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान और परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान वस्तु,
" अह देसो सब्भावे देसोसब्भावपज्जवे नित्रओ।
तं दविअमत्थिनत्थि अ, आएसविसेसिअं जम्हा "
(सम्म ३७)।
°नत्थिप्पवाय न [°नास्तिप्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग, चौथा पूर्व ; (सम २६)।
अत्थिक्क न [**आस्तिक्य**] आस्तिकता, आत्मा-परलोक आदि पर विश्वास , (श्रा ६ ; पुप्फ ११०)।
अत्थिय देखो **अत्थि**=अर्थिन् ; (महा; औप)।
अत्थिय वि [**अर्थिक**] धनी, धनवान् , (हे २, १५९)
अत्थिय न [**अस्थिक**] १ हड्डी, हाड। २ पुं. वृक्ष-विशेष; ३ न. बहु बीज वाला फल-विशेष; (पण्ण १)।
अत्थिय वि [**आस्तिक**] आत्मा, परलोक आदि की हयाती पर श्रद्धा रखने वाला; (धर्म २)।
अत्थिर देखो **अथिर**; (पंचा १२)।
अत्थीकर सक [**अर्थी + कृ**] प्रार्थना करना, याचना करना। अत्थीकरेइ; (निचू ४)। वकृ—**अत्थीकरंत**; (निचू ४)।
अत्थीकरण न [**अर्थीकरण**] प्रार्थना, याचना; (निचू ४)।
अत्थु सक [**आ + स्तृ**] बिछाना, शय्या करना। कर्म—अत्थुव्वइ, कवकृ— **अत्थुव्वंत**; (विसे २३२१)।
अत्थुअ वि [**आस्तृत**] बिछाया हुआ, (पाअ; विसे २३२१)।
अत्थुग्गह पुं [**अर्थावग्रह**] इन्द्रियाँ और मन द्वारा होने वाला ज्ञान-विशेष, निर्विकल्पक ज्ञान; (सम ११; ठा २, १)।
अत्थुग्गहण न [**अर्थावग्रहण**] फल का निश्चय; (भग ११, ११)।
अत्थुड वि [**दे**] लघु, छोटा; (दे १, ६)।
अत्थुरण न [**दे. आस्तरण**] बिछौना; (स ६७)।
अत्थुरिय वि [**दे. आस्तृत**] बिछाया हुआ; (स २३६; दे १, ११३)।
अत्थुवड न [**दे**] भल्लातक, भिलावाँ वृक्ष का फल; (दे १, २३)।
अत्थेक्क वि [**दे**] आकस्मिक, अचिन्तित; (से १२, ४७)।
अत्थोग्गह देखो **अत्थुग्गह** ; (सम ११)।
अत्थोग्गहण देखो **अत्थुग्गहण**; (भग ११, ११)।
अत्थोडिय वि [**दे**] आकृष्ट, खींचा हुआ; (महा)।
अत्थोभय वि [**अस्तोभक**] 'उत' 'वै' आदि निरर्थक शब्दों के प्रयोग से अदूषित (सूत्र) ; (बृह १)।
अत्थोवग्गह देखो **अत्थुग्गह**, (पण्ण १५)।
अथक्क न [**दे**] १ अकाण्ड, अनवसर, अकस्मात् ; (षड्)। २ वि. पसरने वाला, फैलने वाला; (कुमा)।
अथव्वण पुं [**अथर्वण**] चौथा वेद-शास्त्र; (कप्प; णाया १, ५)।
अथिर वि [**अस्थिर**] १ चंचल, चपल; (कुमा)। २ अनित्य, विनश्वर; (कुमा)। ३ अदृढ, शिथिल; (ओघ) ४ निर्बल; (वव २)। ५ मजबूती से नहीं बैठा हुआ, नहीं जमा हुआ (अभ्यास), "अथिरस्स पुव्वगहियस्स, वत्तणा जं इह थिरीकरण " (पंचा १२)। °णाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद; (सम ६७)।
अद सक [**अद्**] खाना, भोजन करना। अदइ, अदए; (षड्)।
अदंसण देखो **अद्दंसण**; (पंचभा)।
अदंसण पु [**दे**] चोर, डाकू; (दे १, २६; षड्)।
अदंसिया स्त्री [**अदंशिका**] एक प्रकार की मिष्ट चीज; (पण्ण १७)।
अदक्खु वि [**अद्रष्ट**] १ नहीं देखा हुआ; २ असर्वज्ञ; (सूअ १, २, ३)।
अदक्खु वि [**अदक्ष**] अनिपुण, अकुशल; (सूअ १, २, ३)।
अदक्खु वि [**अपश्य**] १ नहीं देखने वाला, अन्धा ; २ असर्वज्ञ ; "अदक्खुव ! दक्खुवाहिय सद्दहसु अदक्खुदंसणा" (सूअ १, २, ३)।
अदण न [**अदन**] भोजन ; (बृह १)।
अदत्त वि [**अदत्त**] नहीं दिया हुआ ; (पण्ह १, ३)। °हार वि [°हार] चोर ; (आचा)। °हारि वि [°हारिन्] चोर ; (सूअ १, ५, १)। °दाण न [°दान] चोरी ; (सम १०)। °दाणवेरमण न [°दानविरमण] चोरी से निवृत्ति, तृतीय व्रत ; (पण्ह २, ३)।
अदब्भ वि [**अदभ्र**] अनल्प, बहुत ; (जं ३)।
अदय वि [**अदय**] निर्दय, निष्ठुर ; (निचू २)।

अदिइ देखो **अइइ** ; (ठा २, ३) ।
अदिण्ण देखो **अदत्त** ; (ठा १) ।
अदित्त वि [**अदृप्त**] १ दर्प-रहित, नम्र ; (वृह १) । २ अहिंसक ; (ओघ ३०२) ।
अदिन्न देखो **अदत्त** , (सम १०) ।
अदिस्स देखो **अद्दिस्स** ; (सम ६० ; सुपा १५३) ।
अदिहि स्त्री [**अधृति**] अधीराई, धीरज का अभाव ; (पाअ) ।
अदीण वि [**अदीन**] दीनता-रहित । °**सत्तु** पु [°**शत्रु**] हस्तिनापुर का एक राजा ; (णाया १, ८) ।
अदु अ [**दे**] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब ; (आचा)। २ इस से ; (सूअ १, २, २) ।
अदुत्तरं अ [**दे**] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब, वाद, (णाया १, १) ।
अदुय न [**अद्रुत**] अ-शीघ्र, धीरे २ ; (भग ७, ६) । °**वंधण** न [°**वन्धन**] दीर्घ काल के लिए वन्धन ; (सूअ २, २) ।
अदुव / **अदुवा** अ [**दे**] या, अथवा, और ; "हिंसज्ज पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे" (दस ५, ५ ; आचा)।
अदोलि / **अदोलिर** वि [**अदोलिन्**] स्थिर, निश्चल ; (कुमा) ।
अद्द वि [**आर्द्र**] १ गिला, भींजा हुआ, अकठिन ; (कुमा)। २ पुं. इस नाम का एक राजा; ३ एक प्रसिद्ध राज-कुमार और पीछे से जैन मुनि ; ४ वि. आर्द्र राजा के वंशज, ५ नगर-विशेष ; (सूअ २, ६) । °**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक राज-कुमार और वाद में जैन मुनि 'अद्दकुमारो दढप्पहारो अ" (पडि) । °**मुत्था** स्त्री [°**मुस्ता**] कन्द-विशेष, नागर मोथा ; (श्रा २०) । °**मलग** न [°**मलक**] १ हरा आमला ; २ पीलु-वृक्ष की कली , (धर्म २) । ३ शणवृक्ष की कली ; (पव ४) । °**रिट्ठ** पु [°**रिष्ट**] कमल कौआ (आवम) ।
अद्द पुं [**अब्द**] १ मेघ, वर्षा, वारिस ; (हे २, ७६) । २ वर्ष, सवत्सर, संवत् ; (सुर १३, ७०) ।
अद्द पुं [**अर्द**] आकाश ; (भग २०, २) ।
अद्द सक [**अर्द्**] मारना, पीटना ; (वव १०) ।
अद्दइअ न [**अद्वैत**] १ भेद का अभाव ; २ वि. भेद-रहित ब्रह्म वगैरः (नाट) ।
अद्दइज्ज वि [**आर्द्रीय**] १ आर्द्रकुमार-संवन्धी ; २ इस नाम का 'सूतकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन; (सूअ २, ६)।
अद्दंसण न [**अदर्शन**] १ दर्शन का निषेध, नहीं देखना , (सुर ७, २४८) । २ वि. परोक्ष, जिसका दर्शन न हो "एक्कपएच्चिय हाहिति मज्झ अद्दंसणा इण्हिं" (सुपा ६१७) । ३ नहीं देखने वाला, अन्धा ; ४ 'थीणद्धी' निद्रा वाला ; (गच्छ १ ; पव १०७)। °**भूअ**, °**हूय** वि [°**भूत**] जो अदृश्य हुआ हो ; (सुर १०, ५६ ; महा) ।
अद्दण / **अद्दण्ण** वि [**दे**] आकुल, व्याकुल; (दे १, १५ ; वृह १; निचू १०) ।
अद्दव वि [**आद्रव**] गाला हुआ ; (आव ६) ।
अद्दव्व न [**अद्रव्य**] अवस्तु, वस्तु का अभाव ; (पंचा ३)।
अद्दह सक [**आ+द्रह्**] उवालना, पानी-तैल वगैरः को खूव गरम करना । अद्दहेइ, अद्दहेमि ; संकृ—**अद्दहेत्ता** ; (उवा) ।
अद्दहिय वि [**आहित**] रखा हुआ, स्थापित , (विपा १, ६) ।
अद्दा स्त्री [**आर्द्रा**] १ नक्षत्र-विशेष ; (सम २) । २ छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
अद्दाअ पु [**दे**] १ आदर्श, दर्पण ; (दे १, १४ ; पण्ण १५ ; निचू १३) । °**पसिण** पु [°**प्रश्न**] विद्या-विशेष, जिससे दर्पण में देवता का आगमन होता है ; (ठा १०) । °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] चिकित्सा का एक प्रकार, जिससे विमार को दर्पण में प्रतिविम्वित करानेसे वह नीरोग होता है ; (वव ५) ।
अद्दाइअ वि [**दे**] आदर्श वाला, आदर्श से पवित्र; (वृह १)
अद्दाग [**दे**] देखा **अद्दाअ** , (सम १२३) ।
अद्दि पु [**अद्रि**] पहाड़, पर्वत , (गउड) ।
अद्दि पुंन [**दे**] गाडी का चाकड़ा ; "सगडद्दिसंठियाओ महा-दिसाओ हवंति चत्तारि" (विसे २७००) ।
अद्दिट्ठ वि [**अदृष्ट**] १ नहीं देखा हुआ ; (सुर १, १७२)। २ दर्शन का अविषय ; (सम्म ६६) ।
अद्दिय वि [**आर्दित**] आर्द्र किया हुआ, भींजाया हुआ , (विक २३) ।
अद्दिय वि [**अर्दित**] पीटा हुआ, पीडित ; (वव १०) ।
अद्दिस्स वि [**अदृश्य**] देखने को अयोग्य या अशक्य ; (सुर ६, १२० ; सुपा ८५ , श्रा २७) ।
अद्दिस्संत / **अद्दिस्समाण** वकृ [**अदृश्यमान**] नहीं दिखाता हुआ ; (सुपा १५४; ४५७) ।

अद्दीण वि [**अद्रीण**] क्षोभ को अप्राप्त, अक्षुब्ध, निर्भीक; (पण्ह २, १)।
अद्दीण देखो **अदीण** ; (ओघ ५३७)।
अद्दुमाअ वि [**दे**] पूर्ण, भरा हुआ; (षड्)।
अद्दंस वि [**अद्दृश्य**] देखने का अशक्य; (स १७०)।
अद्दंसीकारिणी स्त्री [**अदृश्यीकारिणी**] अदृश्य बनाने वाली विद्या; (सुपा ४५४)।
अद्दंस्सीकरण वि [**अदृश्योकरण**] १ अदृश्य करना, २ अदृश्य करने वाली विद्या " किंपुण विज्जासिक्खा अद्दंस्सीकरणसगओ वावि " (सुपा ४५५)।
अद्दोहि वि [**अद्रोहिन्**] द्रोह-रहित, द्वेष-वर्जित, (धर्म ३)।
अद्ध पुन [**अर्ध**] १ आधा; (कुमा)। २ खण्ड, अंश, (पि ४०२)। °**करिस** पुं [°**कर्ष**] परिमाण-विशेष, पल का आठवाँ भाग; (अणु)। °**कुडव**, °**कुलव** पु [°**कुडव**, °**कुलव**] एक प्रकार का धान्य का परिमाण; (राय)। °**क्खेत्त** न [°**क्षेत्र**] एक अहोरात्र में चन्द्र के साथ योग प्राप्त करने वाला नक्षत्र; (चंद १०)। °**खल्ला** स्त्री [°**खल्वा**] एक प्रकार का जूता; (बृह ३)। °**घडय** पुं [°**घटक**] आधा परिमाण वाला घडा, छोटा घडा; (उवा)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ आधा चन्द्र, (गा ५७१)। २ गल-हस्त, गला पकड़ कर बाहर करना; (उप ७२८ टी)। ३ न. एक हथियार; (उप पृ ३६५)। ४ अर्ध चन्द्र के आकार वाला सोपान; (णाया १, १)। ५ एक जात का बाण " एसा तुह तिक्खेणं सीसं छिंदामि अद्धचंदेण " (सुर ८, ३७)। °**चक्कवाल** न [°**चक्रवाल**] गति-विशेष; (ठा ७)। °**चक्कि** पुं [°**चक्रिन्**] चक्रवती राजा से अर्ध विभूति वाला राजा, वासुदेव, (कम्म १, १२)। °**च्छट्ठ**, °**छट्ठ** वि [°**षष्ठ**] साढ़े पांच; (पि ४५०; सम १००)। °**ट्ठम** वि [°**ष्टम**] साढे सात; (ठा ६)। °**णाराय** न [°**नाराच**] चौथा संहनन, शरीर के हाड़ों की रचना-विशेष; (जीव १)। °**णारीसर** पुं [°**नारीश्वर**] शिव, महादेव; (कप्पू)। °**तइय** वि [°**तृतीय**] ढ़ाई; (पउम ४८, ३५)। °**तेरस** वि [°**त्रयोदश**] साढ़े बारह; (भग)। °**तेवन्न** वि [°**त्रिपञ्चाश**] साढ़े बावन्न ; (सम १३४)। °**द्ध** वि [°**र्ध**] चौथा भाग, पौआ; (बृह ३)। °**नवम** वि [°**नवम**] साढ़े आठ; (पि ४५०)। °**नाराय** देखो °**णाराय**; (कम्म १, ३८)। °**पंचम** वि [°**पञ्चम**] साढ़े चार; (सम १०२)। °**पलिअंक** वि [°**पर्यङ्क**] आसन-विशेष; (ठा ५, १)। °**पहर** पुं [°**प्रहर**] ज्यौतिष शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग; (गण १८)। °**बब्बर** पुं [°**बर्बर**] देश-विशेष; (पउम २७, ५)। °**मागहा**, °**ही** स्त्री [°**मागधी**] जैन प्राचीन साहित्य की प्राकृत भाषा, जिस में मागधी भाषा के भी कोई २ नियम का अनुसरण किया गया है " पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं" (हे ४, २८७; पि १६; सम ६०; पउम २, ३४] °**मास** पुं [°**मास**] पक्ष; पन्नरह दिन; (दं १०)। °**मासिय** वि [°**मासिक**] पाक्षिक,पक्ष-संबन्धी; (महा)। °**यंद** देखो °**चंद**; (उप ७२८ टी)। °**रज्जिय** वि [°**राज्यिक**] राज्य का आधा हिस्सेदार, अर्ध राज्य का मालिक; (विपा १,६)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] मध्य रात्रि का समय; निशीथ ; (गा २३१)। °**वेयाली** स्त्री [°**वेताली**] विद्या-विशेष ; (सूअ २, २)। °**संकासिया** स्त्री [°**सांकाश्यिका**] एक राज-कन्या का नाम ; (आव ४)। °**सम** न [°**सम**] एक वृत्त, छन्द-विशेष ; (ठा ७)। °**हार** पुं [°**हार**] १ नवसरा हार ; (राय; औप)। २ इस नाम का एक द्वीप ; ३ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। °**हारभद्द** पुं [°**हारभद्र**] अर्धहार-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**हारमहाभद्द** पुं [**हारमहाभद्र**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (जीव ३)। °**हारमहावर** पुं [°**हारमहावर**] अर्धहार समुद्र का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °**हारवर** पुं [°**हारवर**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; ३ उनका अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °**हारवरभद्द** पुं [°**हारवरभद्र**] अर्धहारवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**हारवरमहावर** पुं [°**हारवरमहावर**] अर्धहारवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**हारोभास** पुं [°**हारावभास**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। °**हारोभासभद्द** पुं [°**हारावभासभद्र**] अर्धहारावभास-नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। **हारोभासमहाभद्द** पुं [°**हारावभासमहाभद्र**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (जीव ३)। °**हारोभासमहावर** पुं [°**हारावभासमहावर**] अर्धहारावभास-नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**हारोभासवर** पुं [°**हाराव-**

भासवर] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३)। °ढ़य पुं [°ढ़क] एक प्रकार का परिमाण, आढ़क का आधा भाग ; (ठा ३, १)।

अद्ध पुं [अध्वन्] मार्ग, रास्ता ; (महा; आचा)।

अद्धंत पुं [दे] १ पर्यन्त, अन्त भाग ; (दे १, १८ ; से ६, ३२ ; पाअ) "भरिज्जंतसिद्धपहद्धंतो (विक्र १०१)। २ पुं.व. कतिपय, कइएक ; (से १३, ३२)।

अद्धक्खण न [दे] १ प्रतीक्षा करना ; राह देखना ; (दे १, ३४)। २ परीक्षा करना ; (दे १, ३४)।

अद्धक्खिअ न [दे] १ संज्ञा करना ; इसारा करना, संकेत करना ; (दे १, ३४)।

अद्धक्खिअ वि [अर्धाक्षिक] विकृत आंख वाला ; (महानि ३)।

अद्धजंघा } स्त्री [दे. अर्धजङ्घा] एक प्रकारका जूता, मोचक-
अद्धजंघी } नामक जूता, जिसे गुजराती में 'मोजड़ी' कहते हैं ; (दे १, ३३ ; २, ५ ; ६, १३६)।

अद्धद्धा स्त्री [दे. अद्धाद्धा] दिन अथवा रात्रि का एक भाग ; (सत्त ६ टी)।

अद्धर पुं [अध्वर] यज्ञ, याग ; (पाअ)।

अद्धविआर न [दे] १ मण्डन, भूषा, "मा कुण अद्धविआरं" (दे १, ४३)। २ मंडल, छोटा मंडल ; (दे १, ४३)।

अद्धा स्त्री [दे. अद्धा] १ काल, समय, वख्त; (ठा २,१ ; नव ४२)। २ संकेत; (भग ११, ११)। ३ लब्धि, शक्ति-विशेष; (विसे)। ४ अ. तत्वतः, वस्तुतः, ५ साक्षात् प्रत्यक्ष; (पिंग)। ६ दिवस ; ७ रात्रि ; (सत्त ६ टी)। °काल पुं (°काल) सूर्य आदि की क्रिया (परिभ्रमण) से व्यक्त होने वाला समय "सूरकिरियाविसिट्ठो गोदोहाइकिरियासु निरवेक्खो। अद्धाकालो भण्णाई" (विसे)। °छेय पुं [°छेद] समय का एक छोटा परिमाण, दो आवलिका परिमित काल ; (पंच)। °पच्चक्खाण न [प्रत्याख्यान] अमुक समय के लिए कोई व्रत या नियम करना ; (आचू ६)। °मीसय न [°मिश्रक] एक प्रकार की सत्य-मृषा भाषा ; (ठा १०)। °मीसिया स्त्री [°मिश्रिता] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पण्ण ११)। °समय पुं [°समय] सर्व-सूक्ष्म काल ; (पण्ण ४)।

अद्धाण पुं [अध्वन्] मार्ग, रास्ता; (णाया १, १४; सुर ३, २२७) °सीसय न [°शीर्षक] मार्ग का अन्त, अटवी आदि का अन्त भाग; (वव ४; बृह ३)।

अद्धाणिय वि [आध्विक] पथिक, मुसाफिर; (बृह ४)

अद्धासिय वि [अध्यासित] अधिष्ठित, आश्रित ; (सुर ७, २१४; उप २६४ टी)। २ आरूढ; (स ६३०)।

अद्धि देखो इड्ढि ;

"धण्णा वहिरंधरआ, ते चिअ जीअंति माणुसे लोए।
ण सुणंति खलवअणं, खलाण अद्धिं न पेक्खंति"
(गा ७०४)।

अद्धिइ स्त्री [अधृति] धीरज का अभाव, अधीरज; (पउम ११८, ३६)।

अद्धुइअ वि [अर्धोदित] थोड़ा कहा हुआ; (पि १५८)।

अद्धुग्घाड वि [अर्धोद्घाट] आधा खुला "अद्धोग्घाडा थणया" (पउम ३८, १०७)।

अद्धुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढ़े तीन; (सम १०१; विसे ६६३)।

अद्धुत्त वि [अर्धोक्त] थोड़ा कहा हुआ; (वव १०)।

अद्धुव वि [अध्रुव] १ चंचल, अस्थिर, विनश्वर ; (स ३३६ ; पंचा १६ ; पउम २६, ३०)। २ अनियत; (आचा)।

अद्धेअद्ध वि [अर्धार्ध] १ द्विधा-भूत, दो टुकड़े वाला, खण्डित। २ क्रिवि. आधा आधा जैसे हो,

"अद्धेअद्धप्फुडिआ, अद्धेअद्धफडउक्खअसिलावेढा।
पवअभुआहअविसढा, अद्धेअद्धसिहरा पडंति महिहरा ॥"
(से ६, ६६)।

अद्धोरु } देखो अड्ढोरुग, (दे ३, ४५; ओघ ६७६)।
अद्धोरुग }

अद्धोवमिय वि [अद्धौपम्य, अद्धौपमिक] काल का वह परिमाण जो उपमा से समझाया जा सके, पल्योपम आदि उपमा-काल; (ठा २,४; ८)।

अध अ [अधस्] नीचे; (आचा; पि १६०)।

अध (शौ) अ [अथ] अब, बाद; (कप्पू)।

अधइं (शौ) [अथकिम्] १ हाँ; २ और क्या; ३ जरूर, अवश्य; (कप्पू)।

अधं अ [अधस्] नीचे ; (पि ३४५)।

अधट्ठ वि [अधृष्ट] अ-धीठ; (कुमा)।

अधण वि [अधन] निर्धन, गरीब,

"रमइ विहवी विसेसे, थिइमेत्तं थोयवित्थरो महइ।
मग्गइ सरीरमधणो, रोई जीए चिय कयत्थो ॥"
(गउड; सण)

अधणि वि [अधनिन्] धन-रहित, निर्धन; (श्रा १४)।
अधण्ण वि [अधन्य] अकृतार्थ, निन्द्य; (पराह १,१)।
अधम देखो अहम; (उत्त ६)।
अधम्म पुं [अधर्म] १ पाप-कार्य, निषिद्ध कर्म, अनीति, " अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ " (णाया १, १८)। २ एक स्वतन्त्र और लोक-व्यापी अजीव वस्तु, जो जीव वगैरः को स्थिति करने में सहायता पहुँचाती है; (सम २; नव ५)। ३ वि. धर्म-रहित, पापी; (विपा १,१)। °केउ पुं [°केतु] पापिष्ठ; (णाया १,१८)। °क्खाइ वि [°ख्याति] प्रसिद्ध पापी; (विपा १,१)। °क्खाइ वि [°ख्यायिन्] पाप का उपदेश देने वाला; (भग ३,७)। °त्थिकाय पुं [°स्तिकाय] अधम्म का दूसरा अर्थ देखो; (अणु)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] पापी, पापिष्ठ; (उप ७२८ टी)।
अधम्मिट्ठ वि [अधर्मिष्ठ] १ धर्म को नहीं करने वाला; (भग १२,२)। २ महा-पापी, पापिष्ठ; (णाया १,१८
अधम्मिट्ठ वि [अधर्मेष्ट] अधर्म-प्रिय, पाप-प्रिय; (भग १२,२)।
अधम्मिट्ठ वि [अधर्मीष्ट] पापिओं का प्यारा; (भग १२, २)।
अधम्मिय देखो अहम्मिय; (ठा ४,१)।
अधर देखो अहर; (उवा; सुपा १३८)।
अधवा (शौ) देखो अहवा; (कप्पू)।
अधा स्त्री [अधस्] अधो-दिशा, नीचली दिशा; (ठा ६)।
अधि देखो अहि=अधि।
अधिइ देखो अद्धिइ; (सुपा ३५६)।
अधिकरण देखो अहिगरण; (पराह १,२)।
अधिग वि [अधिक] विशेष, ज्यादः; (बृह १)।
अधिगम देखो अहिगम; (धर्म २; विसे २२)।
अधिगरण देखो अहिगरण; (निचू १)।
अधिगरणिया देखो अहिगरणिया; (पण्ण २१)।
अधिण्ण } (अप) वि [आधीन] आयत्त, पर-वश;
अधिन्न } (पि ६१; हे ४,४२७)।
अधिमासग पुं [अधिमासक] अधिक मास; (निचू २०)।
अधीस वि [अधीश] नायक, अधिपति; (कुम्मा २३)।

अधुव देखो अद्धुव; (णाया १,१, पउम ६५,४६)।
अधो देखो अहो=अधस्; (पि ३४५)।
अनंदि स्त्री [अनन्दि] अमङ्गल, अकुशल " तं मोएउ अनंदिं " (अजि ३७)।
अनन्न देखो अणण्ण; (कुमा)।
अनय देखो अणय; (सुपा ३७१)।
अनल देखो अणल; (हे १, २२८; कुमा)।
अनागय देखो अणागय; (भग)।
अनागार देखो अणागार; (भग)।
अनाय देखो अणाय; (सुपा ४७०; पि ३८०)।
अनालंफ (चूपै) वि [अनारम्भ] पाप-रहित; (कुमा)।
अनालंफ (चूपै) वि [अनालम्भ] अहिंसक, दयालु; (कुमा)।
अनिगिण देखो अणगिण; (सम १७)।
अनिदाया } देखो अणिद्दा; (पण्ण ३४)।
अनिद्दाया }
अनिमित्ती स्त्री [अनिमित्ती] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।
अनियमिय वि [अनियमित] १ अव्यवस्थित; २ असंयत, इन्द्रियों का निग्रह नहीं करने वाला; " गओ य नरयं अनियमियप्पा " (पउम ११४, २६)।
अनियट्टि देखो अणियट्टि; (सम २६; कम्म २; संत ७१ टी)।
अनियय देखो अणियय; (ओघ ७२)।
अनिरुद्ध देखो अणिरुद्ध; (अंत १४)।
अनिल देखो अणिल; (हे १, २२८; कुमा)।
अनिसट्ठ देखो अणिसट्ठ; (ठा ३, ४)।
अनिहारिम } देखो अणीहारिम; (भग; ठा २,४)।
अनीहारिम }
अनु (अप) देखो अण्णहा; (कुमा)।
अनुकूल देखो अणुकूल; (सुपा ४७४)।
अनुग्गह देखो अणुग्गह; (अभि ४१)।
अनुचिट्ठिय देखो अणुट्ठिय; (स १५)।
अनुज्जुय देखो अणुज्जुय; (पि ५७)।
अनुहव देखो अणुहव=अनु+भू। वकृ—अनुहवंत; (रंभा)।
अन्न देखो अण्ण; (सुपा ३६०; प्रासू ४३; पराह २, १; ठा ३, २; ५,१; श्रा ६)।

अन्नइय देखो **अण्णइय** ; (भवि)।
अन्नओ देखो **अण्णओ**। °**हुत्त** क्रिवि [°**मुख**] दूसरी तर्फ ; (सुर ३, १३६)।
अन्नत्तो देखो **अण्णत्तो** ; (कुमा)।
अन्नत्थ } देखो **अण्णत्थ** ; (आचा ; स १५० ;
अन्नत्थं } कुमा)।
अन्नद्दो देखो **अण्णत्तो** ; (कुमा)।
अन्नमन्न देखो **अण्णमण्ण** ; (गाया १, १)।
अन्नन्न देखो **अण्णण्ण** ; (महा; कुमा)।
अन्नय पुं [**अन्वय**] एक की सत्ता में ही दूसरे की विद्यमानता, जैसे अग्नि की हयाती में ही धूमकी सत्ता, नियमित संबन्ध ; (उप ४१३ ; स ६५१)।
अन्नयर देखो **अण्णयर** ; (सुपा ३७०)।
अन्नया देखो **अण्णया** ; (महा)।
अन्नव देखो **अण्णव** ; (सुपा ८५; ५२६)।
अन्नह देखो **अण्णह** ; (सुर १, १५६ ; कुमा)।
अन्नहा देखो **अण्णहा** ; (पउम १००, २४ ; महा ; सुर १, १४३ ; प्रासू ७)।
अन्नहि देखो **अण्णहि** ; (कुमा)।
अन्नाइट्ठ वि [**अन्वाविष्ट**] आक्रान्त ; "तुमं णं आउसो कासवा ! ममं तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि" (भग १५)।
अन्नाण देखो **अण्णाण**=अज्ञान ; (कुमा; सुर १, १५ ; महा ; उवर ६५ ; कम्म ४, ६ ; ११)।
अन्नाणि देखो **अण्णाणि** ; (उव; सुपा ५८८)।
अन्नाणिय देखो **अण्णाणिय** ; (पउम ४, २७)।
अन्नाय देखो १ ला॰ और २ रा **अण्णाय** ; (सुर ६, २ ; सुपा २५६ ; सुर २, ६ ; २०२ ; सम्म ६६ ; सुपा २३३ ; सुर २, १६५ ; सुपा ३०८)। "नाएण जं न सिद्धं को खलु सहलो नयत्थमन्नाओ ?" (उप ७२८ टी)।
अन्नारिस देखो **अण्णारिस** ; (हे १, १४२ ; महा)।
अन्निज्जमाण देखो **अण्णिज्जमाण** ; (गाया १, १६)।
अन्निय देखो **अण्णिय**।
अन्नियसुय पुं [**अन्निकासुत**] एक विख्यात जैन मुनि ; (उव)।
अन्निया देखो **अण्णिया** ; (संथा ५६)।

अन्नुन्न } देखो **अण्णुण्ण** ; (हे १, १५६ ; कप्प)।
अन्नुमन्न }
अन्नेस देखो **अण्णेस**। वकृ—**अन्नेसमाण** ; (उप ६ टी)।
अन्नेसण देखो **अण्णेसण** ; (सुर १०, २१८ ; सण)।
अन्नेसणा देखो **अण्णेसणा**; (ठा ३, ४)।
अन्नेसय वि [**अन्वेषक**] गवेषक, खोज करने वाला ; (स ५३५)।
अन्नेसि } देखो **अण्णेसि**; (पि ५१६ ; आचा)।
अन्नेसिय }
अन्नोन्न देखो **अण्णोण्ण**; (कुमा; महा)।
अप स्त्री. ब. [**अप्**] पानी, जल; (सुज्ज १०)। °**काय** पुं:[°**काय**] पानी के जीव; (दं १३)।
अपइट्ठाण देखो **अप्पइट्ठाण**; (आचा; ठा ४,३)।
अपइट्ठिय देखो **अप्पइट्ठिय**; (ठा ४,१)।
अपएस वि [**अप्रदेश**] १ निरंश, अवयव-रहित; (भग २०,५)। २ पु. खराब स्थान; (पंचा ७)।
अपंग पु [**अपाङ्ग**] १ नेत्र का प्रान्त भाग; २ तिलक; ३ वि. हीन अंग वाला ; (नाट)।
अपंडिअ वि [**दे**] अ-नष्ट, विद्यमान; (षड्)।
अपंडिअ वि [**अपण्डित**] १ सद्बुद्धि-रहित; (बृह १)। २ मूर्ख; (अच्चु ५)।
अपगंड वि [**अपगण्ड**] १ निर्दोष। २ न. फेन, पानी का भाग; (सुअ १, ६)।
अपचय पुं [**अपचय**] अपकर्ष, हीनता; (उत्त १)।
अपच्च देखो **अवच्च**; अपचणिव्विसेसाणि सत्ताणि" (पि ३६७)।
अपच्चय पु [**अप्रत्यय**] अविश्वास; (पण्ह १,२)।
अपच्चल वि [**अप्रत्यल**] १ असमर्थ; २ अयोग्य; (निचू ११)।
अपच्छ वि [**अपथ्य**) १ अ-हितकर; (पउम ८२,७२)। २ न. नहीं पचने वाला भोजन; "थेवेण अपच्छासेवणेण रोगुव्व वड्ढेइ" (सुपा ४३८)।
अपच्छिम वि [**अपश्चिम**] अन्तिम; (णंदि; पाअ; उप २६४ टी)।
अपज्जत्त } वि [**अपर्याप्त**] १ अपर्याप्त, असमर्थ;
अपज्जत्तग } (गउड)। २ पर्याप्ति (आहारादि-ग्रहण करने की शक्ति) से रहित, (ठा २,१; नव ४)। °**नाम** न [°**नामन्**] नाम-कर्म का एक भेद; (सम ६७)।

अपज्जवसिय वि [**अपर्यवसित**] १ नाश-रहित; (सम्म ६१)। २ अन्त-रहित; (ठा १)।

अपडिच्छिर वि [**दे**] जड-बुद्धि, मूर्ख; (दे १,४३)।

अपडिण्ण, अपडिन्न वि [**अप्रतिज्ञ**] १ प्रतिज्ञा-रहित, निश्चय-रहित; (आचा)। २ राग-द्वेष आदि बन्धनों से वर्जित; (सूअ १, ३, ३)। ३ फल की इच्छा न रखकर अनुष्ठान करने वाला, निष्काम; " गन्धेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु " (सूअ १,६)।

अपडिपोग्गल वि [**अप्रतिपुद्गल**] दरिद्र, निर्धन; (निचू ५)।

अपडिबद्ध वि [**अप्रतिबद्ध**] १ प्रतिबन्ध-रहित, बेरोक, " अपडिबद्धो अनलो व्व " (पण्ह २,५)। २ आसक्ति-रहित; (पव १०४)।

अपडिवाइ देखो **अप्पडिवाइ**; (ठा ६; ओघ ५३२; णंदि)।

अपडिसंलीण वि [**अप्रतिसंलीन**] असंयत, इन्द्रिय आदि जिसके काबू में न हों; (ठा ४,२)।

अपडिहट्टु अ [**अप्रतिहृत्य**] नहीं दे कर; (कस; वृह ३)।

अपडिहय देखो **अप्पडिहय**; (गाया १,१६)।

अपडीकार वि [**अप्रतीकार**] इलाज-रहित, उपाय-रहित; (पण्ह १,१)।

अपडुप्पण्ण, अपडुप्पन्न वि [**अप्रत्युत्पन्न**] १ अ-वर्तमान, अ-विद्यमान; (पि १६३)। २ प्रतिपत्ति में अ-कुशल; (वव ६)।

अपणट्ठ वि [**अप्रनष्ट**] नाश को अप्राप्त; (सुर ४, २४०)।

अपत्त देखो **अप्पत्त**; (वृह १; ठा ५,२; सूअ १, १४)।

अपत्तिअंत वकृ [**अप्रतियत्**] विश्वास नहीं करता हुआ; (गा ६७८; पि ४८७)।

अपत्तिय देखो **अप्पत्तिय**; (भग १६,३; पंचा ७)।

अपत्थ देखो **अपच्छ**; (उत्त ७; पंचा ७)।

अपमत्त देखो **अप्पमत्त**; (आचा)।

अपमाण न [**अप्रमाण**] १ झूठा, असत्य; (श्रा १२)। २ वि. ज्यादः, अधिक; (उत्त २४)।

अपमाय वि [**अप्रमाद**] १ प्रमाद-रहित। २ पुं. प्रमाद का अभाव, सावधानी; (पण्ह २,१)।

अपय वि [**अपद**] १ पाँव रहित, वृक्ष, द्रव्य, भूमि वगैरः पैर रहित वस्तु; (गाया १,८)। २ पुं. मुक्तात्मा " अपयस्स पयं नत्थि " (आचा)। ३ सूत्र का एक दोष; (वृह १; विसे)।

अपय स्त्री [**अप्रज**] सन्तानरहित; (वृह १)।

अपर देखो **अवर**; (निचू २०)। २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध अवान्तर सामान्य; (विसे २४९१)।

अपरच्छ वि [**अपराक्ष**] असमक्ष, परोक्ष; (पण्ह १,३)।

अपरज्झ देखो **अवरज्झ**; (कप्प)।

अपरंतिया स्त्री [**अपरान्तिका**] छन्द-विशेष; (अजि ३४)।

अपराइय वि [**अपराजित**] १ अ-परिभूत; (पण्ह १,४)। २ पुं. सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम, (सम १५३)। ३ भरतक्षेत्र का छठ्ठाँ प्रतिवासुदेव; (सम १५४)। ४ उत्तम-पंक्ति के देवों की एक जाति; (सम ५६)। ५ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र; (कप्प)। ६ एक महाग्रह ; (ठा २, ३)। ७ न. अनुत्तर देव-लोक का एक विमान—देवावास ; (सम ५६)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८)। ९ जम्बूद्वीप की जगती का उत्तर द्वार ; (ठा ४, २)।

अपराइया स्त्री [**अपराजिता**] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३)। २ आठवें बलदेव की माता ; (सम १५२)। ३ अङ्गारक ग्रह की एक पटरानी का नाम ; (ठा ४, १)। ४ एक दिशा-कुमारी देवी ; (ठा ८)। ५ ओषधि-विशेष ; (ती ७)। ६ अञ्जनादि पर्वत पर स्थित एक पुष्करिणी ; (ती २)।

अपराजिय देखो **अपराइय** ; (कप्प ; सम ५६ ; १०२ ; ठा २, ३)।

अपराजिया देखो **अवराइया** ; (ठा २, ३)।

अपरिग्गह वि [**अपरिग्रह**] १ धन-धान्य आदि परिग्रह से रहित ; (पण्ह २, ३)। २ ममता-रहित, निर्मम ; " अपरिग्गहा अणारंभा भिक्खू ताणं परिव्वए " (सूअ १, १, ४)।

अपरिग्गहा स्त्री [**अपरिग्रहा**] वेश्या ; (वव २)।

अपरिग्गहिया स्त्री [**अपरिगृहीता**] १ वेश्या, कन्या वगैरः अविवाहिता स्त्री ; (पडि)। २ पति-हीना स्त्री, विधवा ; (धर्म २)। ३ घर-दासी ; ४ पनीहारी ; ५ देव-पुत्रिका, देवता को भेंट की हुई कन्या ; (आचू ५)।

अपरिच्छण्ण, अपरिच्छन्न वि [**अपरिच्छन्न**] १ नहीं ढका हुआ, अनावृत ; (वव ३)। २ परिवार-रहित ; (वव १)।

अपरिणय वि [**अपरिणत**] १ रूपान्तर को अप्राप्त ; (ठा २, १) । २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष ; (आचा) ।

अपरित्त वि [**अपरीत**] अपरिमित, अनन्त ; (पण्ण १८) ।

अपरिसेस वि [**अपरिशेष**] सब, सकल, नि:शेष ; (पण्ह १, २ ; पउम ३, १४०) ।

अपरिहारिय वि [**अपरिहारिक**] १ दोषों का परिहार नहीं करने वाला ; (आचा) । २ पुं जैनेतर दर्शन का अनुयायी गृहस्थ ; (निचू २) ।

अपवग्ग पुं [**अपवर्ग**] मोक्ष, मुक्ति ; (सुर ८, १०६ ; सत्त ११) ।

अपविद्ध वि [**अपविद्ध**] १ प्रेरित ; (से ७, ११) । २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर के तुरन्त ही भाग जाना ; (गुभा २३) ।

अपह वि [**अप्रभ**] निस्तेज ; (दे १, १६४) ।

अपहत्थ देखो **अवहत्थ** ; (भवि) ।

अपहारि वि [**अपहारिन्**] अपहरण करने वाला ; (स २१७) ।

अपहिय वि [**अपहृत**] छीना हुआ ; (पउम ७६, ५) ।

अपहु वि [**अप्रभु**] १ असमर्थ ; २ नाथ-रहित, अनाथ, (पउम १०१, ३५) ।

अपाइय वि [**अपात्रित**] पात्र-रहित, भाजन-वर्जित " नो कप्पइ निग्गंथीए अपाइयाए होत्तए " (कस) ।

अपाउड वि [**अप्रावृत**] नहीं ढका हुआ, वस्त्र-रहित, नग्न ; (ठा ५, १) ।

अपादाण न [**अपादान**] कारक-विशेष, जिसमें पञ्चमी विभक्ति लगती है ; (विसे २११७) ।

अपाण न [**अपान**] १ पान का अभाव ; (उप ८४५) । २ पानी जैसी ठंडी पेय वस्तु-विशेष , (भग १५) । ३ पुंन. अपान वायु ; ४ गुदा ; (सुपा ६२०) । ५ वि. जल-वर्जित, निर्जल (उपवास), "छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं" (जं २) ।

अपार वि [**अपार**] पार-रहित, अनन्त ; (सुपा ४५०) ।

अपारमग्ग पुं [**दे**] विश्राम, विश्रान्ति ; (दे १, ४३) ।

अपाव वि [**अपाप**] १ पाप-रहित ; (सूअ १, १, ३) । २ न. पुण्य ; (उव) ।

अपावा स्त्री [**अपापा**] नगरी-विशेष, जहां भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ था, यह आजकल 'पावापुरी' नाम से प्रसिद्ध है और विहार से आठ माईल पर है ; (राज) ।

अपिट्ठ वि [**दे**] पुनरुक्त, फिरसे कहा हुआ ; (षड्) ।

अपिय वि [**अप्रिय**] अनिष्ट ; (जीव १) ।

अपिह अ [**अपृथक्**] अ-भिन्न ; (कुमा) ।

अपुणबंधग, **अपुणबंधय** वि [**अपुनर्बन्धक**] फिर से उत्कृष्ट कर्म-बन्ध नहीं करने वाला, तीव्र भाव से पाप को नहीं करने वाला ; (पंचा ३ ; उप २५३ ; ६५१) ।

अपुणब्भव पुं [**अपुनर्भव**] १ फिर से नहीं होना । २ वि. जिससे फिर जन्म न हो वह, मुक्ति-प्रद ; (पण्ह २, ४) ।

अपुणब्भाव वि [**अपुनर्भाव**] फिर से नहीं होने वाला ; (पंच १) ।

अपुणभव देखो **अपुणब्भव** ; (कुमा) ।

अपुणरागम पुं [**अपुनरागम**] १ मुक्त आत्मा ; २ मुक्ति, मोक्ष ; (दसचू १) ।

अपुणरावत्तग, **अपुणरावत्तय** पुं [**अपुनरावर्त्तक**] १ फिर नहीं घूमने वाला, मुक्त आत्मा ; २ मोक्ष, मुक्ति ; (पि ३४३ ; औप ; भग १ १) ।

अपुणरावत्ति पुं [**अपुनरावर्तिन्**] मुक्त आत्मा ; (पि ३४३) ।

अपुणराविति पु [**अपुनरावृत्ति**] मोक्ष, मुक्ति ; (पडि) ।

अपुणरुत्त वि [**अपुनरुक्त**] फिर से अकथित, पुनरुक्ति-दोष से रहित " अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहि संथुणइ " (राय) ।

अपुणागम देखो **अपुणरागम** ; (पि ३४३) ।

अपुणागमण न [**अपुनरागमन**] १ फिर से नहीं आना , २ फिर से अनुत्पत्ति ; " अपुणागमणाय व तं तिमिरं उम्मूलिअं रविणा " (गउड) ।

अपुण्ण न [**अपुण्य**] १ पाप ; २ वि. पुण्य-रहित, कम-नसीब, हत-भाग्य ; (विपा १, ७) ।

अपुण्ण [**अपूर्ण**] अधुरा, अपरिपूर्ण ; (विपा १, ७) ।

अपुण्ण [**दे**] आक्रान्त ; (षड्) ।

अपुत्त, **अपुत्तिय** वि [**अपुत्र**, °**क**] १ पुत्र-रहित ; (सुपा ४१२, ३१४) । २ स्वजन-रहित, निर्मम ; निःस्पृह ; (आचा) ।

अपुन्न देखो **अपुण्ण** ; (णाया १, १३) ।

अपुम न [**अपुंस्**] नपुंसक ; (ओघ २२३) ।

अपुल्ल देखो **अप्पुल्ल** ; (चंड) ।

अपुव्व वि [**अपूर्व**] १ नूतन, नवीन ; २ अद्भुत, आश्चर्य-कारक ; ३ असाधारण, अद्वितीय ; (हे ४, २७० ; उप

६ टी) । °करण न [°करण] १ आत्मा का एक अभूतपूर्व शुभ परिणाम ; (आचा) । २ आठवाँ गुण-स्थानक ; (पव २२४ ; कम्म २, ६) ।

अपूय } पुं [**अपूप**] एक भक्ष्य पदार्थ, पूआ, पूड़ा ; (औप;
अपूव } पराण ३६ ; दे १, १३४ ; ६, ८१) ।

अपेक्ख सक [**अप+ईक्ष्**] अपेक्षा करना, राह देखना । हेकृ—**अपेक्खिदुं** (शौ) ; (नाट) ।

अपेच्छ वि [**अप्रेक्ष्य**] १ देखने को अशक्य ; २ देखने को अयोग्य ; (उव) ।

अपेय वि [**अपेय**] पीने को अयोग्य, मद्य आदि ; (कुमा)।

अपेय वि [**अपेत**] गया हुआ, नष्ट ; " अपेयचक्खु " (वृह १) ।

अपेहय वि [**अपेक्षक**] अपेक्षा करने वाला; (आव ४)।

अपोरिसिय } वि [**अपौरुषिक**] पुरुष से ज्यादः परिमाण
अपोरिसीय } वाला ; अगाध ; (णाया १, ५ ; १४) ।

अपोरिसीय वि [**अपौरुषेय**] पुरुष ने नहीं बनाया हुआ, नित्य ; (ठा १०) ।

अपोह सक [**अप+ऊह्**] निश्चय करना, निश्चय रूप से जानना । अपोहए ; (विसे ५६१) ।

अपोह पुं [**अपोह**] १ निश्चय-ज्ञान ; (विसे ३९६) । २ पृथग्भाव, भिन्नता ; (ओघ ३) ।

अप्प देखो **अत्त**=आप्त ; " अप्पोलंभनिमित्तं पढमस्स णाय-ज्झयणस्स अयमट्ठे पराणत्तेत्ति वेमि " (णाया १, १) ।

अप्प वि [**अल्प**] १ थोड़ा ; स्तोक ; (सुपा २८० ; स्वप्न ६७) । २ अभाव ; (जीव ३ ; भग १४, १) ।

अप्प पुं [**आत्मन्**] १ आत्मा, जीव, चेतन , (णाया १, १) । २ निज, स्व, " अप्पणा अप्पणो कम्मक्खयं करित्तए " (णाया १, ५) । ३ देह, शरीर ; (उत्त ३) । ४ स्वभाव,, स्वरूप ; (आचा) । °**घाइ** वि [°**घातिन्**] आत्म-हत्या करने वाला ; (उप ३५७ टी) °**छंद** वि [°**च्छन्द**] स्वैरी, स्वच्छन्दी ; (उप ८३३ टी) । °**ज्ञ** वि [°**ज्ञ**] १ आत्मज्ञ ; (हे २, ८३) । २ स्वाधीन ; (निचू १) । °**ज्जोइ** पुं [°**ज्योतिस्**] ज्ञान-स्वरूप, " किंजोइरयं पुरिसो अप्पज्जोइ त्ति णिद्दिट्ठो " (विसे)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] आत्म-ज्ञानी ; (षड्) । °**वस** वि [°**वश**] स्वतन्त्र, स्वाधीन ; (पाअ ; पउम ३७, २२)। °**वह** पुं [°**वध**] आत्म-हत्या, आपघात ; (सुर २, १९६ ; ५, २३७) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] आत्मा के अति-रिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं मानने वाला ; (णंदि) ।

अप्प पुं [**दे**] पिता, बाप ; (दे १, ६) ।

अप्प सक [**अर्पय्**] अर्पण करना, भेंट करना । अप्पेइ ; (हे १, ६३) । अप्पअइ ; (नाट) । संकृ—**अप्पिअ** ; (सुपा २८०) । कृ—**अप्पेयव्व** ; (सुपा २६५ ; ५१९) ।

अप्पइट्ठाण पुंन [**अप्रतिष्ठान**] १ मोक्ष, मुक्ति ; (आचा)। २ सातवीं नरक-भूमि का बीचला आवास ; (सम २ ; ठा ५, ३)।

अप्पआस देखो **अप्पगास** ; (नाट) ।

अप्पआस सक [**श्लिष्**] आलिङ्गन करना । अप्पआसइ, (षड्) ।

अप्पउलिय वि [**अपक्वौषधि**] नहीं पकी हुई फल फुलेरी ; (स ५०) ।

अप्पंभरि वि [**आत्मम्भरि**] एकलपेटा, स्वार्थी ; (उप ५७०) ।

अप्पकंप वि [**अप्रकम्प**] निश्चल, स्थिर ; (ठा १०) ।

अप्पकेर वि [**आत्मीय**] स्वकीय, निजीय ; (प्रामा) ।

अप्पक्क वि [**अपक्व**] नहीं पका हुआ, कच्चा ; (सुपा ४१३) ।

अप्पग देखो **अप्प** ; (आव ४ ; आचा) ।

अप्पगास पु [**अप्रकाश**] प्रकाश का अभाव, अन्धकार ; (निचू १) ।

अप्पगुत्ता स्त्री [**दे**] कपिकच्छू, कौंच वृक्ष; (दे १,२९)।

अप्पज्झ वि [**दे**] आत्म-वश, स्वाधीन ; (दे १, १४) ।

अप्पडिआर वि [**अप्रतिकार**] इलाज-रहित, उपाय-रहित; (मा ४३) ।

अप्पडिकंटय वि [**अप्रतिकण्टक**] प्रतिपक्ष-शून्य, प्रति-स्पर्धि-रहित ; (राय) ।

अप्पडिकम्म वि [**अप्रतिकर्मन्**] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, " सुराणागारे व अप्पडिकम्मे " (पराह २, ५) ।

अप्पडिक्कंत वि [**अप्रतिक्रान्त**] दोष से अनिवृत्त, व्रत-नियम में लगे हुए दूषणों की जिसने शुद्धि न की हो वह ; (औप) ।

अप्पडिकुट्ठ वि [**अप्रतिक्रुष्ट**] अनिवारित, नहीं रोका हुआ; (ठा २,४) ।

अप्पडिचक्क वि [**अप्रतिचक्र**] अ-तुल्य, अ-समान, (णंदि) ।

अप्पडिण्ण } **अप्पडिन्न** } देखो **अपडिण्ण** ; (आचा) ।
अप्पडिबंध पुं [**अप्रतिबन्ध**] १ प्रतिबन्ध का अभाव ; २ वि. प्रतिबन्ध-रहित ; (सुपा ६०८) ।
अप्पडिबद्ध देखो **अपडिबद्ध** ; (उत्त २६ ; पि २१८) ।
अप्पडिबुद्ध वि [**अप्रतिबुद्ध**] १ अ-जागृत । २ कोमल, सुकुमार ; (अभि १९१) ।
अप्पडिम वि [**अप्रतिम**] असाधारण, अनुपम, (उप ७६८ टी ; सुपा ३५) ।
अप्पडिरूव वि [**अप्रतिरूप**] ऊपर देखो ; (उप७२८ टी) ।
अप्पडिलद्ध वि [**अप्रतिलब्ध**] अप्राप्त ; (गाया १, १) ।
अप्पडिलेस्स वि [**अप्रतिलेश्य**] असाधारण मनो-बल वाला; (औप) ।
अप्पडिलेहण न [**अप्रतिलेखन**] अ-पर्यवेक्षण ; अन-वलोकन, नहीं देखना ; (आव ६) ।
अप्पडिलेहणा स्त्री [**अप्रतिलेखना**] ऊपर देखो ; (कप्प) ।
अप्पडिलेहिय वि [**अप्रतिलेखित**] अ-पर्यवेक्षित, अनव-लोकित, नहीं देखा हुआ; (उवा) ।
अप्पडिलोम वि [**अप्रतिलोम**] अनुकूल , (भग २५, ७ ; अभि २४) ।
अप्पडिवरिय पुं [**अप्रतिवृत**] प्रदोष काल ; (बृह १) ।
अप्पडिवाइ वि [**अप्रतिपातिन्**] १ जिसका नाश न हो ऐसा, नित्य; (सुर १४, २६) । २ अवधिज्ञान का एक भेद, जो केवल ज्ञान को विना उत्पन्न किये नहीं जाता ; (विसे) ।
अप्पडिहत्थ वि [**अप्रतिहस्त**] असमान, अद्वितीय ; (से १३, १२) ।
अप्पडिहय वि [**अप्रतिहत**] १ किसी से नहीं रुका हुआ; (पण्ह २, ५) । २ अखण्डित, अबाधित ; " अप्पडिहय-सासणे " (णाया १, १६) । ३ विसंवाद-रहित " अप्प-डिहयवरनाणदंसणधरे " (भग १, १) ।
अप्पडीबद्ध देखो **अपडिबद्ध** ; " निम्ममनिरहकारा निरुग्य-सरीरेवि अप्पडीबद्धा " (संथा ६०) ।
अप्पड्ढिय वि [**अल्पर्द्धिक**] थोड़ी ऋद्धि वाला, अल्प वैभव वाला ; (सुपा ४३०) ।
अप्पण न [**अर्पण**] १ भेंट, उपहार, दान; (श्रा २७) । २ प्रधान रूप से प्रतिपादन ; (विसे १८४३) ।
अप्पण देखो **अप्प**=आत्मन् ; (आचा ; उत्त १; महा ; हे ४, ४२२) ।
अप्पण वि [**आत्मीय**] स्वकीय; निजका ; " नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि होंति सुद्धाण " (सट्ठि १०५) ।
अप्पणय वि [**आत्मीय**] स्वकीय, निजीय ; (पउम ५०, १६ , सुपा २७९ ; हे २, १५३) ।
अप्पणा अ [**स्वयम्**] स्वयं, आप, निज, खुद ; (षड्) ।
अप्पणिज्ज } **अप्पणिज्जिय** } वि [**आत्मीय**] स्वकीय, स्वीय ; (ठा १, आवम) ।
अप्पणो अ [**स्वयम्**] आप, खुद; निज ; " विअसंति अप्पणो चेव कमलसरा ; (हे २, २०९) ।
अप्पतक्किय वि [**अप्रतर्कित**] अवितर्कित, असंभावित , (स ५३०) ।
अप्पत्त पुंन [**अपात्र**] १ अयोग्य, नालायक, कुपात्र, " अण्णेवि हु अप्पत्ता परिद्धिं नेय विसहति " (सुर ३, ४५; गा १५७) । २ वि. आधार-रहित, भाजन-शून्य ; (सुर १३, ४५) ।
अप्पत्त वि [**अपत्र**] १ पत्ती से रहित (वृक्ष) ; (सुर ३, ४५) । २ पाख से रहित (पक्षी); (सूअ १, १४) ।
अप्पत्त वि [**अप्राप्त**] अ-लब्ध, अनवाप्त ; (सुर १३, ४५ ; आघ ८६) । °**कारि** वि [**कारिन्**] वस्तु का विना ही स्पर्श किये (दूर से) ज्ञान उत्पन्न करने वाला, " अप्पत्तकारि णयण " (विसे) ।
अप्पत्ति स्त्री [**अप्राप्ति**] नहीं पाना ; (सुर ४, २१३) ।
अप्पतिय पुंन [**अप्रत्यय**] अविश्वास ; (स ६६७ ; सुपा ५१२) ।
अप्पत्तिय न [**अप्रीति**] १ अप्रीति, प्रेम का अभाव , (ठा ४, ३) । २ क्रोध, गुस्सा ; (सूअ १,१, २) । ३ मानसिक पीडा ; (आचा) । ४ अपकार, (निचू १) ।
अप्पत्तिय वि [**अपात्रिक**] पात्र-रहित, आधार-वर्जित ; (भग १६, ३) ।
अप्पत्तियण न [**अप्रत्ययन**] अ-विश्वास, अ-श्रद्धा ; (उप ३१२) ।
अप्पत्थ वि [**अप्रार्थ्य**] १ प्रार्थना करने को अयोग्य ; २ नहीं चाहने लायक ; (सुपा ३३६) ।
अप्पत्थण न [**अप्रार्थन**] १ अयाच्ञा । २ अनिच्छा, अचाह ; (उत्त ३२) ।

अप्पत्थिय वि [**अप्रार्थित**] १ अयाचित; २ अनभिलषित, अवांछित; (जं ३)। °**पत्थय**, °**पत्थिय** वि [°**प्रार्थक**, °**र्थिक**] मरणार्थी, मौत को चाहने वाला, " कीस णं एस अप्पत्थियपत्थए दुरंतपंतलक्खणे " (भग ३, २; णाया १, ६; पि ७१)।

अप्पत्थुय वि [**अप्रस्तुत**] प्रसंग के अनुपयुक्त, विषयान्तर; (सुपा १०६)।

अप्पदुट्ठ वि [**अप्रद्विष्ट**] जिस पर द्वेष न हो वह, प्रीतिकर; ओघ ७४४)।

अप्पदुस्समाण वकृ [**अप्रद्विष्यत्**] द्वेष नहीं करता हुआ; (अंत १२)।

अप्पप्प वि [**अप्राप्य**] प्राप्त करने को अशक्य; (विसे २६८७)।

अप्पभाय न [**अप्रभात**] १ बडी सवेर; २ वि. प्रकाश-रहित, कान्ति-वर्जित; " अज्ज पुण अप्पभाए गयणे " (सुर ११, ११०)।

अप्पभु वि [**अप्रभु**] १ असमर्थ; (भग)। २ पुं. मालिक से भिन्न, नौकर वगैरः; (धर्म ३)।

अप्पमज्जिय वि [**अप्रमार्जित**] साफ नहीं किया हुआ; (उवा)।

अप्पमत्त वि [**अप्रमत्त**] प्रमाद-रहित, सावधान, उपयोग वाला; (पण्ह २, ५; हे १, २३१; अभि १८५)। °**संजय** पुंस्त्री [°**संयत**] १ प्रमाद-रहित मुनि; २ न. सातवाँ गुण-स्थानक; (भग ३, ३)।

अप्पमाण देखो **अपमाण**; (बृह ३; पण्ह २, ३); " अइक्कमित्ता जिणरायआणं, तवंति तिव्वं तवमप्पमाणं। पढंति नाणं तह दिंति दाणं, सव्वंपि तेसिं कयमप्पमाणं " (सत्त २०)।

अप्पमाय पुं [**अप्रमाद**] प्रमाद का अभाव; (निचू १)।

अप्पमेय वि [**अप्रमेय**] १ जिसका मान न हो सके ऐसा, अनन्त; (पउम ७५, २३)। २ जिसका ज्ञान न हो सके ऐसा; (धर्म १)। ३ प्रमाण से जिसका निश्चय न किया जा सके वह; (पण्ह १, ४)।

अप्पय देखो **अप्प**; (उव; पि ४०१)।

अप्परिचत्त वि [**अपरित्यक्त**] नहीं छोड़ा हुआ; अपरिमुक्त; (सुपा ११०)।

अप्परिवडिय वि [**अपरिपतित**] अ-नष्ट, विद्यमान; (श्रा ६)।

अप्पलहुअ वि [**अप्रलघुक**] महान्, बड़ा; (मे १, १)।

अप्पलीण वि [**अप्रलीन**] अ-संबद्ध, सङ्ग-वर्जित; (सूअ १, १, ४)।

अप्पलीयमाण वकृ [**अप्रलीयमान**] आसक्ति नहीं करता हुआ; (आचा)।

अप्पवित्त वि [**अप्रवृत्त**] प्रवृत्ति-रहित; (पंचा १४)।

अप्पवित्ति स्त्री [**अप्रवृत्ति**] प्रवृत्ति का अभाव; (धर्म १)।

अप्पसंत वि [**अप्रशान्त**] अशान्त, कुपित; (पंचा २)।

अप्पसंसणिज्ज वि [**अप्रशंसनीय**] प्रशंसा के अयोग्य; (तंदु)।

अप्पसज्झ वि [**अप्रसह्य**] १ सहने को अशक्य; २ सहन करने को अयोग्य; (वव ७)।

अप्पसण्ण वि [**अप्रसन्न**] उदासीन; (नाट)।

अप्पसत्थ वि [**अप्रशस्त**] अ-चारु, अ-सुन्दर, खराब; (ठा ३, ३; भग; श्रा ४)।

अप्पसत्तिय वि [**अल्पसत्त्विक**] अल्प सत्व वाला, " सुसमत्थाविसमत्था कीरंति अप्पसत्तिया पुरिसा " (सूअ १, ४, १)।

अप्पसारिय वि [**अप्रसारिक**] निर्जन, विजन (स्थान); (उप १७०)।

अप्पहवंत वकृ [**अप्रभवत्**] समर्थ नहीं होता हुआ, नहीं पहुँच सकता हुआ; (स ३०५)।

अप्पहिय वि [**अप्रथित**] १ अ-विस्तृत; २ अ-प्रसिद्ध; (सुपा १२५)।

अप्पाअप्पि स्त्री [**दे**] उत्कण्ठा, औत्सुक्य; (पिंग)।

अप्पाउड वि [**अप्रावृत**] अनाच्छादित, नग्न; (सूअ २, २)।

अप्पाउय वि [**अल्पायुष्क**] थोड़ा आयुष्य वाला; (ठा ३, ३; पउम १४, ३०)।

अप्पाउरण वि [**अप्रावरण**] १ नग्न। २ न. वस्त्र का अभाव; ३ वस्त्र नहीं पहनने का नियम; (पंचा ५; पव ४)।

अप्पाण देखो **अप्प=आत्मन्**; (पण्ह १, २; ठा २, २; प्राप्र; हे ३, ५६)। °**रक्खि** वि [°**रक्षिन्**] आत्मा की रक्षा करने वाला; (उत्त ४)।

अप्पाबहु, **अप्पाबहुय** न [**अल्पबहुत्व**] न्यूनाधिक्ता, कम-बेशीपन; (नव ३२; ठा ४,२)।

अप्पावय वि [**अप्रावृत**] १ वस्त्र-रहित, नग्न; (पण्ह २, १)। २ खुला हुआ; बँद नही किया हुआ; (सूअ १, ५, १)।

अप्पाविय वि [**अर्पित**] दिलाया हुआ ; (सुपा ३३१)।

अप्पाह सक [**सं+दिश्**] संदेश देना, खबर पहुँचाना। अप्पाहइ ; (षड् ; हे ४, १८०)। अप्पाहेइ (गा ६३२)। संकृ—**अप्पाहट्टु, अप्पाहिवि**; (पि ५७७ ; भवि)।

अप्पाह सक [**अधि+आपय्**] पढाना, सीखाना। कर्म—अप्पाहिज्जइ ; (से १०, ७४)। वकृ—**अप्पाहेंत** ; (से १०, ७५)। हेकृ—**अप्पाहेउं** ; (पि २८६)।

अप्पाहण्ण न [**अप्राधान्य**] मुख्यता का अभाव, गौणता; (पंचा १ ; भास ११)।

अप्पाहिय वि [**संदिष्ट**] संदेश दिया हुआ; (भवि)।

अप्पाहिय वि [**अध्यापित**] १ पाठित, शिक्षित ; (से ११, ३८ ; १४, ६१)। २ न. सीख, उपदेश ; " अप्पाहियजरणं " (उप ५६२ टी)।

अप्पिड्ढिय वि [**अल्पर्द्धिक**] अल्प संपत्ति वाला , (भग; पउम २, ७४)।

अप्पिण सक [**अर्पय्**] अर्पण करना, भेंट करना, देना। " अहीरोवि वारगेण अप्पिणइ " (आक)। अप्पिणामि ; (पि ५५७)। अप्पिणंति ; (विसे ७ टी)।

अप्पिणण न [**अर्पण**] दान, भेंट ; (उप १७४)।

अप्पिणिच्चिय वि [**आत्मीय**] स्वकीय, निजीय ; (भग)।

अप्पिय वि [**अर्पित**] १ दिया हुआ, भेंट किया हुआ ; (विपा १, २ ; हे १, ६३)। २ विवक्षित, प्रतिपादन करने को इष्ट, " जह दवियमप्पियं तं तहेव अत्थित्ति पज्जवनयस्स " (सम्म ४२)। ३ पुं. पर्यायार्थिक नय, " अप्पियमयं विसेसो सामन्नमणप्पियनयस्स " (विसे)।

अप्पिय वि [**अप्रिय**] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर; (भग १, ५ ; विपा १,१)। २ न. मन का दुःख; ३ चित्त की शङ्का, " अदु णाईण व सुहीणं वा अप्पियं दट्ठु एगता होंति " (सूअ १, ४, १, १४)।

अप्पीइ स्त्री [**अप्रीति**] अप्रेम, अरुचि ; (सुपा २६४)।

अप्पीकय वि [**आत्मीकृत**] आत्मा से संबद्ध ; (विसे)।

अप्पुट्ठ वि [**अस्पृष्ट**] नहीं छूआ हुआ; असंयुक्त, "जं अप्पुट्ठा भावा ओहिनाणस्स हुति पच्चक्खा " (सम्म ८१)।

अप्पुट्ठ वि [**अपृष्ट**] नहीं पूछा हुआ ; (सुपा १११)।

अप्पुण्ण वि [**दे. आपूर्ण**] पूर्ण ; (षड्)।

अप्पुल्ल वि [**आत्मीय**] आत्मा में उत्पन्न ; (हे २, १६३ ; षड् ; कुमा)।

अप्पुव्व देखो **अपुव्व** ; "अप्पुव्वो पडिबंधो जीवियमवि चयइ मह कज्जे " (सुपा ३११)।

अप्पेयव्व देखो **अप्प=**अर्पय्।

अप्पोलि स्त्री [**अप्रज्वलिता**] कच्ची फल-फुलेरी ; (श्रा २१)।

अप्पोल्ल वि [**दे**] पोल-रहित, नक्कर ; (वृह ३)।

अप्फडिअ वि [**आस्फालित**] आस्फालित, आहत ; (विसे २६८२ टी)।

अप्फाल सक [**आ+स्फालय्**] १ आस्फोटन करना, हाथ से आघात करना। २ ताडना, पीटना। ३ ताल ठोकना। अप्फालेइ ; (महा)। कवकृ—**अप्फालिज्जंत**; (राय)। संकृ—**अप्फालिऊण** ; (काप्र १८६ ; महा)।

अप्फालण न [**आस्फालन**] १ ताल ठोंकना ; २ ताड़न, आघात ; (गा ५४८ ; से ५, २२ ; सुपा ८७)।

अप्फालिय वि [**आस्फालित**] १ हाथ से ताडित, आहत, (पि ३११)। २ वृद्धि-प्राप्त, उन्नत ; (राज)।

अप्फुंद सक [**आ+क्रम्**] १ आक्रमण करना। २ जाना। " संझाराओ व्व णहं अप्फुंदइ मलिअरविअरं कुसुमरओ " (से ६, ५७)।

अप्फुडिय देखो **अफुडिय** ; (जं २ ; दस ६)।

अप्फुण्ण वि [**दे. आक्रान्त**] आक्रान्त, दबाया हुआ ; (हे ४, २५८)।

अप्फुण्ण वि [**अपूर्ण**] अपूर्ण, अधूरा ; (गउड)।

अप्फुण्ण, **अप्फुन्न** } वि [**दे. आपूर्ण**] पूर्ण, भरा हुआ ; (दे १, २० ; सुर १०, १७० ; पाअ) " महया पुत्तसोएणं अप्फुन्ना समाणी " (निर १, १)।

अप्फुल्लय देखो **अप्पुल्ल** ; (गउड)।

अप्फोआ स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।

अप्फोड सक [**आ+स्फोटय्**] १ आस्फालन करना, हाथ से ताल ठोकना। २ ताड़न करना। वकृ—**अप्फोडंत** ; (णाया १, ८; सुर १३, १८२)।

अप्फोडण न [**आस्फोटन**] आस्फालन ; (गउड)।

अप्फोडिय, **अप्फोलिय** } वि [**आस्फोटित**] १ आस्फालित, आहत। २ न. आस्फालन, आघात ; (पण्ह १, ३ ; कप्प)।

अप्फोव वि [**दे**] वृक्षादि से व्याप्त, गहन, निविड ; (उत्त १, १८)।

अफल वि [**अफल**] निष्फल, निरर्थक ; (द्र १)।

अफाय पुं [दे] भूमि-स्फोट, वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १) ।
अफास वि [अस्पर्श] १ स्पर्श-रहित ; (भग) । २ खराब स्पर्श वाला ; (सूत्र १, ५, १) ।
अफासुय वि [अप्रासुक] १ सचित्त, सजीव ; (भग ५, ६) । २ अग्राह्य (भिक्षा), (ठा ३, १) ।
अफुड वि [अस्फुट] अस्पष्ट, अव्यक्त ; (सुर ३, १०६; २१३, गा २६६ ; उप ७२८ टी) ।
अफुडिअ वि [अस्फुटित] अखण्डित, नहीं टूटा हुआ ; (कुमा) ।
अफुस वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने को अयोग्य, (भग) ।
अफुसिय वि [अभ्रान्त] भ्रम-रहित ; (कुमा) ।
अफुस्स देखो **अफुस** ; (ठा ३, २) ।
अब° स्त्री. व. [अप्°] पानी, जल ; (श्रा २३) ।
अबंभ न [अब्रह्म] मैथुन, स्त्री-सङ्ग, (पण्ह १, ४) । °**चारि** वि [°चारिन्] ब्रह्मचर्य नहीं पालने वाला ; (पि ४०५; ४१५) ।
अबद्धिय पु [अबद्धिक] 'कर्मों का आत्मा से स्पर्श ही होता है, न कि क्षीर-नीर की तरह ऐक्य' ऐसा मानने वाला एक निह्नव—जैनाभास; २ न. उसका मत, (ठा ७; विसे) ।
अबल वि [अबल] बल-रहित, निर्बल, (पउम ४८, ११७) ।
अबला स्त्री [अबला] स्त्री, महिला, जनाना, (पाअ) ।
अबश पुं [अवश] वडवानल, (से १, १) ।
अबहिट्ठ न [दे. अवहित्थ] मैथुन, स्त्री-सङ्ग, (सूत्र १, ६) ।
अबहिम्मण वि [अबहिर्मनस्क] धर्मिष्ठ; धर्म-तत्पर ; (आचा) ।
अबहिल्लेस } वि [अबहिर्लेश्य] जिसकी चित्त-वृत्ति
अबहिल्लेस्स } बाहर न घूमती हो, संयत, (भग ; पण्ह २, ५) ।
अबाधा देखो **अबाहा** ; (जीव ३) ।
अबाह पुं [अबाह] देश-विशेष ; (इक) ।
अबाहा स्त्री [अबाधा] १ बाध का अभाव ; (ओघ ५२ भा; भग १४, ८) । २ व्यवधान, अन्तर ; (सम १६) । ३ बाध-रहित समय ; (भग) ।
अबाहिर अ [अबहिस्] बाहर नहीं, भीतर ; (कुमा) ।
अबाहिरय वि [अबाह्य] भीतरी, आभ्यन्तर; (वव १)
अबाहिरिय वि [अबाहिरिक] जिसके किले के बाहर वसति न हो ऐसा गाँव या शहर; (बृह १) ।

अबीय देखो **अबीय** ; (कप्प) ।
अबुज्झ अ [अबुद्ध्वा] नहीं जान कर; "केसिंचि तक्काइ अबुज्झ भावं" (सूत्र १, १३, २०) ।
अबुद्ध वि [अबुध] १ अजान, मूर्ख ; (दस २) । २ अविवेकी ; (सूत्र १, ११) ।
अबुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति ; (दे १, ४२) ।
अबुद्धिय } वि [अबुद्धिक] बुद्धि-रहित, मूर्ख, (गाया
अबुद्धीय } १, १७; सूत्र १, २, १; पउम ८, ७४) ।
अबुह वि [अबुध] १ अजान ; (सूत्र १, २, १, जी १) । २ मूर्ख, बेवकुफ ; (पण्ह १, १) ।
अबोह वि [अबोध] १ बोध-रहित, अजान । २ पुं. ज्ञान का अभाव ; (धर्म १) ।
अबोहि पुंस्त्री [अबोधि] १ ज्ञान का अभाव ; (सूत्र २, ६) । २ जैन धर्म की अप्राप्ति; ३ बुद्धि-विशेष का अभाव; (भग १, ६) । ४ मिथ्या-ज्ञान, "अबोहि परियाणामि बोहिं उवसंपज्जामि" (आव ४) । ५ वि. बोधि-रहित ; (भग) ।
अबोहिय न [अबोधिक] ऊपर देखो ; (दस ६, सूत्र १, १, २) ।
अब्बंभ देखो **अबंभ**; (सुपा ३१०) ।
अब्बंभण्ण } न [अब्रह्मण्य] ब्रह्मण्य का अभाव,
अब्बम्हण्ण } (नाट ; प्रयौ ७६) ।
अब्बुय पुं [अर्बुद] पर्वत-विशेष, जो आजकल 'आबू' नाम से प्रसिद्ध है ; (राज) ।
अब्भ न [अभ्र] १ आकाश ; (राय; पाअ) । २ मेघ, बद्दल ; (ठा ४, ४ , पाअ) ।
अब्भंग सक [अभि+अञ्ज्] तैल आदि से मर्दन करना, मालिश करना । अब्भंगइ, अब्भंगेइ ; (महा) । संकृ—**अब्भंगिउं, अब्भंगेत्ता, अब्भंगित्ता,** (ठा ३, १; पि २३४) । हेकृ—**अब्भंगेत्तए** ; (कस) ।
अब्भंग पुं [अभ्यङ्ग] तैल-मर्दन, मालिश ; (निचू ३) ।
अब्भंगण न [अभ्यञ्जन] ऊपर देखो , (गाया १, १, महा) ।
अब्भंगिएल्लय } वि [अभ्यक्त] तैलादि से मर्दित,
अब्भंगिय } मालिश किया हुआ; (ओघ ८२; कप्प) ।
अब्भंतर न [अभ्यन्तर] १ भीतर, में ; (गा ६२३) । २ वि. भीतर का, भीतरी, (राय, महा) । ३ समीप का,

नजदीक का (सम्बन्धी); (ठा ८)। °ठाणिज्ज वि [स्थानीय] नजदीक के सम्बन्धी, कौटुम्बिक लोक; (विपा १, ३) °तव पुं [°तपस्] विनय, वैयावृत्य, प्रायश्चित, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग रूप अन्तरंग तप; (ठा ६)। °परिसा स्त्री [°परिषद्] मित्र आदि समान जनों की सभा; (राय)। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] अवधिज्ञान का एक भेद; (विसे)। °संबुक्का स्त्री [°शम्बूका] भिक्षा की एक चर्या, गति-विशेष; (ठा ६)। °सगडुद्धिया स्त्री [°शकटोद्धिका] कायोत्सर्ग का एक दोष; (पव ५)।

अब्भंतर वि [अभ्यन्तर] भीतरी, भीतर का; (जं ७; ठा २, १; पण्ण ३६)।

अब्भंसि वि [अभ्रंशिन्] १ भ्रष्ट नहीं होने वाला; (नाट)। २ अनष्ट; (कुमा)।

अब्भक्खइज्ज देखो अब्भक्खा।

अब्भक्खण न [दे] अकीर्ति, अपयश; (दे १, ३१)।

अब्भक्खा सक [अभ्या+ख्या] झूठा दोष लगाना, दोषारोप करना। अब्भक्खाइ; (भग ५; ७)। कृ—अब्भक्खइज्ज; (आचा)।

अब्भक्खाण न [अभ्याख्यान] झूठा अभियोग, असत्य दोषारोप; (पण्ह १, २)।

अब्भड अ [दे] पीछे जा कर; (हे ४, ३६५)।

अब्भणुजाण सक [अभ्यनु+ज्ञा] अनुमति देना, सम्मति देना। अब्भणुजाणिस्सदि (शौ); (पि ५३४)।

अब्भणुण्णा स्त्री [अभ्यनुज्ञा] अनुमति, सम्मति; (राज)।

अब्भणुण्णाय वि [अभ्यनुज्ञात] अनुमत, संमत, (ठा ५, १)।

अब्भणुन्ना देखो अब्भणुण्णा।

अब्भणुन्नाय देखो अब्भणुण्णाय; (णाया १, १; कप्प; सुर ३, ८८)।

अब्भण्ण न [अभ्यर्ण] १ निकट, नजदीक। २ वि. समीपस्थ; (पउम ६८, ५८)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष; (पउम ६८, ५८)।

अब्भत्त वि (अभ्यक्त) १ तैलादि से मर्दित, मालिश किया हुआ। २ सिक्त, सिञ्चा हुआ, "दिसि दिसि चब्भत्त-भरिकेयारो, पत्तो वासारत्तो" (सुर २, ७८)।

अब्भत्थ वि [अभ्यस्त] पठित, शिक्षित; (सुपा ६७)।

अब्भत्थ सक [अभि+अर्थय्] १ सत्कार करना। २ प्रार्थना करना। अब्भत्थम्ह; (पि ४७०)। संकृ—अब्भत्थइअ, अब्भत्थिअ; (नाट)। कृ—अब्भत्थणीय; (अभि ७०)।

अब्भत्थण न [अभ्यर्थन] १ सत्कार; २ प्रार्थना; (कप्पू; हे ४, ३८४)।

अब्भत्थणा, **अब्भत्थणिया** } स्त्री [अभ्यर्थना] १ आदर, सत्कार; (से ४, ४८); २ प्रार्थना, विज्ञप्ति; (पंचा ११; सुर १, १६)।

"न सहइ अब्भत्थणियं, असइ गयाणंपि पिट्ठिमंसाइं।
दट्ठूण भासुरमुहं, खलसीहं को न वीहेइ" (वज्जा१२)।

अब्भत्थिय वि [अभ्यर्थित] १ आदृत, सत्कृत। २ प्रार्थित; (सुर १, २१)।

अब्भन्न देखो अब्भण्ण; (पाअ)।

अब्भपिसाअ पुं [दे] राहु; (दे १, ४२)।

अब्भय पुं [अर्भक] बालक, बच्चा; (पाअ)।

अब्भय पु [अभ्रक] अभरख; (जी ४)।

अब्भरहिय वि [अभ्यर्हित] सत्कार-प्राप्त, गौरव-शाली; (बृह १)।

अब्भवहार पुं [अभ्यवहार] भोजन, खाना; (विसे २२१)।

अब्भव्व देखो अभव्व। "अब्भव्वाणं सिद्धा णंतगुणा णंतया भव्वा" (पसं ८४)।

अब्भस सक [अभि+अस्] सीखना, अभ्यास करना। वकृ—अब्भसंत; (स ६०६)। कृ—अब्भसियव्व; (सुर १४, ८५)।

अब्भसण न [अभ्यसन] अभ्यास; (दसनि १)।

अब्भसिय वि [अभ्यस्त] सीखा हुआ; (सुर १, १८०; ६, १६)।

अब्भहिय वि [अभ्यधिक] विशेष, ज्यादः; (सम २; सुर १, १७०)।

अब्भाअच्छ वि [अभ्या+गम्] संमुख आना, सामने आना। अब्भाअच्छइ; (षड्)।

अब्भाइक्ख देखो अब्भक्खा। अब्भाइक्खइ, अब्भाइक्खेज्जा; (आचा)।

अब्भागम पुं [अभ्यागम] १ संमुखागमन; २ समीप स्थिति; (निचू २)।

अब्भागमिय, **अब्भागय** } वि [अभ्यागत] १ संमुखागत; २ पुं. आगन्तुक, पाहुन, अतिथि, (सुअ १, २, ३; सुपा ५)।

अब्भायत्त } वि [दे] प्रत्यागत, वापिस आया हुआ ;
अब्भायत्थ } (दे १, ३१)।

अब्भास न [अभ्यास] १ निकट, नजदीक ; (से ६, ६० ; पाअ)। २ वि. समीप-वर्ती, पार्श्व-स्थित ; (पाअ)। ३ पुं. शिक्षा, पढ़ाई, सीख ; ४ आवृत्ति; (पाअ ; बृह १)। ५ आदत ; (ठा ४, ४)। ६ आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार ; (धर्म २)। ७ गणित का संकेत-विशेष ; (कम्म ४, ७८ ; ८३)।

अब्भास सक [अभि+अस्] अभ्यास करना, आदत डालना।
"जं अब्भासइ जीवो, गुणं च दोसं च एत्थ जम्मम्मि।
तं पावइ पर-लोए, तेण य अब्भास-जोएण" (धर्म २, भवि)।

अब्भाहय वि [अभ्याहत] आघात-प्राप्त ; (महा)।

अब्भिंग देखो **अब्भंग**=अभि + अंज्। प्रयो—अब्भिंगावेइ; (पि २३४)।

अब्भिंग देखो **अब्भंग**=अभ्यंग ; (णाया १, १८)।

अब्भिंगण देखो **अब्भंगण** ; (कप्प)।

अब्भिंगिय देखो **अब्भंगिय** ; (कप्प)।

अब्भिंतर देखो **अब्भंतर** ; (कप्प ; सं ७; पण्ह ३, ५ ; णाया १, १३)।

अब्भिंतरओ अ [अभ्यन्तरतस्] १ भीतर से ; २ भीतर-में ; (आवम)।

अब्भिंतरिय वि [आभ्यन्तरिक] भीतर का, अन्तरङ्ग ; (सम ६७ ; कप्प ; णाया १, १)।

अब्भिट्ट वि [दे] संगत, सामने आकर भीडा हुआ, "हत्थी हत्थीण समं अब्भिट्टो रहवरो सह रहेणं" (पउम ६,१८२ ; ६८, २७)।

अब्भिड सक [सं+गम्] संगति करना, मिलना। अब्भिडइ ; (कुमा , हे ४, १६४)। अब्भिडसु ; (सुपा १५२)।

अब्भिडिअ वि [संगत] संगत, युक्त ; (पाअ ; दे १, ७८)।

अब्भिडिअ वि [दे] सार, मजबूत ; (दे १, ७८)।

अब्भिण्ण वि [अभिन्न] भेद को अप्राप्त ; (धर्म २)।

अब्भुअअ देखो **अब्भुदय** ; (से १५, ६५ ; स ३०)।

अब्भुक्ख सक [अभि+उक्ष्] सिञ्चन करना। वकृ—**अब्भुक्खंत** ; (वज्जा ८६)।

अब्भुक्खण न [अभ्युक्षण] सिञ्चन करना, छिटकाव ; (स ५७६)।

अब्भुक्खणीया स्त्री [अभ्युक्षणीया] सीकर, आसार, पवन से गिरता जल ; (बृह १)।

अब्भुक्खिय वि [अभ्युक्षित] सिक्त ; (स ३४०)।

अब्भुगम पुं [अभ्युद्गम] उदय, उन्नति ; (सूअ १,१४)।

अब्भुग्गय वि [अभ्युद्गत] १ उन्नत ; २ उत्पन्न ; (णाया १, १)। ३ ऊंचा किया हुआ, उठाया हुआ ; (औप)। ४ चारों तरफ फैला हुआ ; (चंद १८)।

अब्भुग्गय वि [अभ्रोद्गत] ऊंचा, उन्नत ; (भग १२,५)।

अब्भुच्चय पुं [अभ्युच्चय] समुच्चय ; (भास ६५)।

अब्भुज्जय वि [अभ्युद्यत] १ उद्यत, उद्यम-युक्त ; (णाया १, ५)। २ तय्यार ; (णाया १, १ ; सुपा २२२)। ३ पु. एकाकी विहार ; (धम्म १२ टी)। ४ जिनकल्पिक मुनि ; (पंचव ४)।

अब्भुट्ठ उभ [अभ्युत्+स्था] १ आदर करने के लिए खड़ा होना। २ प्रयत्न करना। ३ तय्यारी करना। अब्भुट्ठेइ; (महा)। वकृ—**अब्भुट्ठमाण** ; (स ४१६)। संकृ—**अब्भुट्ठित्ता** ; (भग)। हेकृ—**अब्भुट्ठित्तए**, (ठा २, १)। कृ—**अब्भुट्ठेयव्व** ; (ठा ८)।

अब्भुट्ठण न [अभ्युत्थान] आदर के लिए खड़ा होना, (से १०, ११)।

अब्भुट्ठा देखो **अब्भुट्ठ**।

अब्भुट्ठाण देखो **अब्भुट्ठण** ; (सम ५१ ; सुपा ३७६)।

अब्भुट्ठिय वि [अभ्युत्थित] १ सम्मान करने के लिए जो खड़ा हुआ हो ; (णाया १, ८)। २ उद्यत, तय्यार, "अब्भुट्ठिएसु मेहेसु" (णाया १, १ ; पडि)।

अब्भुट्ठेत्तु [अभ्युत्थातृ] अभ्युत्थान करने वाला ; (ठा ५, १)।

अब्भुण्णय वि [अभ्युन्नत] उन्नत, ऊंचा ; (पण्ह १,४)।

अब्भुण्णयंत वकृ [अभ्युन्नयत्] १ ऊंचा करता हुआ; २ उत्तेजित करता हुआ ; "तीएवि जलंति दीववत्तिमब्भुण्णअंतीए" (गा २६४)।

अब्भुत्त अक [स्ना] स्नान करना। अब्भुत्तइ ; (हे ४, १४)। वकृ—**अब्भुत्तंत** ; (कुमा)।

अब्भुत्त अक [प्र+दीप्] १ प्रकाशित होना। २ उत्तेजित होना। अब्भुत्तइ ; (हे ४, १५२)। अब्भुत्तए; (कुमा)। प्रयो—अब्भुत्तेंति ; (से ५, ५६)।

अब्भुत्तिअ वि [प्रदीप्त] १ प्रकाशित ; २ उत्तेजित ; (से १५, ३८)।

अब्भुत्थ वि [**अभ्युत्थ**] उत्पन्न, " पुव्वभवब्भुत्थसिणेहाओ " (महा) ।

अब्भुत्थ) देखो **अब्भुट्ठा** । वकृ—**अब्भुत्थंत** ; (से
अब्भुत्था) १२, १८) । संकृ—**अब्भुत्थित्ता**; (काल) ।

अब्भुदय पुं [**अभ्युदय**] १ उन्नति, उदय ; (प्रयौ २६) ; " अब्भुयभूयब्भुदयं लद्धूणं नरभवं सुदीहद्धं " (उप ७६८ टी) ।

अब्भुद्धर सक [**अभ्युद्+धृ**] उद्धार करना । अब्भुद्धरामि; (भवि) ।

अब्भुद्धरण न [**अभ्युद्धरण**] १ उद्धार ; (स ५४३) । २ वि. उद्धार-कारक ; (हे ४, ३६४) ।

अब्भुन्नय देखो **अब्भुण्णय** ; (गाया १, १) ।

अब्भुब्भड वि [**अभ्युद्भट**] अत्युद्भट, विशेष उद्धत, (भवि)।

अब्भुय न [**अद्भुत**] १ आश्चर्य, विस्मय ; (उप ७६८ टी) । २ वि. आश्चर्य-कारक ; (राय ; सुपा; ३५) । ३ पुं. साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध रसों में से एक ;
" विम्हयकरो अपुव्वो, अभूयपुव्वो य जो रसो होइ ।
हरिसविसाउप्पत्ती, लक्खणओ अब्भुओ नाम " (अणु) ।

अब्भुवगच्छ सक [**अभ्युप+गम्**] १ स्वीकार करना । २ पास जाना । प्रयो,—संकृ—**अब्भुवगच्छाविय** ; (पि १६३) ।

अब्भुवगच्छाविअ वि [**अभ्युपगमित**] स्वीकार कराया हुआ ; " ताहे तेहिं कुमारेहिं संबो मज्जं पाएत्ता अब्भुवगच्छाविओ विगयमओ चिंतेइ " (आक पृ ३०) ।

अब्भुवगम पुं [**अभ्युपगम**] १ स्वीकार, अङ्गीकार ; (सम १४५ ; स १७०) । २ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध सिद्धान्त-विशेष ; (बृह १ ; सूअ १, १२) ।

अब्भुवगमणा स्त्री [**अभ्युपगमना**] स्वीकार, अङ्गीकार ; (उप ८०५) ।

अब्भुवगय वि [**अभ्युपगत**] १ स्वीकृत , (सुर ६, ५८)। २ समीप में गया हुआ ; (आचा) ।

अब्भुववण्ण वि [**अभ्युपपन्न**] अनुग्रह-प्राप्त, अनुगृहीत ; (नाट ; पि १६३; २७६) ।

अब्भुववत्ति स्त्री [**अभ्युपपत्ति**] अनुग्रह, मेहरबानी ; (अभि १०४) ।

अब्भो देखो **अव्वो** ; (षड्) ।

अब्भोक्खिय वि [**अभ्युक्षित**] सिक्त, सींचा हुआ ; (सुर ६, १६१) ।

अब्भोय (अप) देखो **आभोग** ; (भवि) ।

अब्भोवगमिय वि [**आभ्युपगमिक**] स्वेच्छा से स्वीकृत । °**ा** स्त्री [°**ा**] स्वेच्छा से स्वीकृत तपश्चर्यादि की वेदना ; (ठा ४, ३) ।

अब्हिड देखो **अब्भिड** । अब्हिडइ ; (षड्) ।

अब्हुत्त देखो **अब्भुत्त** । अब्हुत्तइ ; (षड्) ।

अभग्ग वि [**अभग्न**] १ अखण्डित, अत्रुटित ; (पडि) । २ इस नाम का एक चोर ; (विपा १,१) ।

अभत्त वि [**अभक्त**] १ भक्ति नहीं करने वाला , (कुमा) । २ न. भोजन का अभाव, (वव ७) । °**ट्ठ** पुं [°**ार्थ**] उपवास ; (आचू ; पडि ; सुपा ३१७) । °**ट्ठिय** वि [°**ार्थिक**] उपोषित, जिसने उपवास किया हो वह ; (पंचव २) ।

अभय न [**अभय**] १ भय का अभाव, धैर्य ; (राय) । २ जीवित, मरण का अभाव ; (सूअ १, ६) । ३ वि. भय-रहित, निर्भीक ; (आचा) ४ पु. राजा श्रेणिक का एक विख्यात पुत्र और मन्त्री, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (अनु १; णाया १, १) । °**कुमार** पुं [°**कुमार**] देखो अनन्तरोक्त अर्थ; (पडि) । °**दय** वि [°**दय**] भय-विनाशक, जीवित-दाता ; (पडि) । °**दाण** न [°**दान**] जीवित-दान ; (पण्ह २, ४) । °**देव** पुं [°**देव**] कईएक विख्यात जैनाचार्य और ग्रन्थकारों का नाम; (मुणि १०८७४ ; गु १४; ती ४०; सार्ध ७३) । °**प्पदाण** न [**प्रदान**] जीवित का दान ; (सूअ १, ६) । °**वत्त** न [°**वत्त्व**] निर्भयता, अभय ; (सुपा १८) । °**सेण** पुं [°**सेन**] एक राजा का नाम; (पिंड) ।

अभयंकर वि [**अभयंकर**] अभय देने वाला, अहिंसक ; (सूअ १, ७, २८) ।

अभया स्त्री [**अभया**] १ हरीतकी, हरडई; (निचू १५) । २ राजा दधिवाहन की स्त्री का नाम ; (ती ३५) ।

अभयारिट्ठ न [**अभयारिष्ट**] मद्य-विशेष ; (सूअ १, ८) ।

अभवसिद्धिय) पु [**अभवसिद्धिक**] अभव्य, मुक्ति के
अभवसिद्धिय) लिये अयोग्य जीव ; (ठा २, २ ; णंदि ; ठा १) ।

अभविय) वि [**अभव्य**] १ असुन्दर, अचारु; (विसे)
अभव्व) २ पुं. मुक्ति के लिये अयोग्य जीव ; (विसे ; कम्म ३, २३) ।

(d) $2x - 3y = 0$

अभाअ वि [**अभाग**] अ-स्थान, अयोग्य स्थान ; (से ८, ४२)।
अभाइ वि [**अभागिन्**] अभागा,, हत-भाग्य, कमनसीव ; (चारु २६)।
अभागधेज्ज वि [**अभागधेय**]ऊपर देखो; (पउम २८,८६)
अभाव पुं [**अभाव**] १ ध्वंस, नाश ; (वृह १)। २ अ-विद्यमानता, असत्त्व ; (पंचा ३)। ३ असम्भव ; (दस १)। ४ अशुभ परिणाम ; (उत्त १)।
अभाविय वि [**अभावित**] अयोग्य, अनुचित , (ठा १० ; वृह ३)।
अभावुग वि [**अभावुक**] जिस पर दूसरे के संग की असर न पड़ सके वह, "विसहरमणी अभावुगदव्वं जीवो उ भावुगं तम्हा" (सुपा १७५; ओघ ७७३)।
अभासग } **अभासय** } वि [**अभाषक**] १ बोलने की शक्ति जिसको उत्पन्न न हुई हो वह ; २ नहीं बोलने वाला ; ३ पुं. केवल त्वग्-इन्द्रिय वाला, एकेन्द्रिय जीव; ४ मुक्त आत्मा ; (ठा २, ४, भग, अणु)।
अभासा स्त्री [**अभाषा**] १ असत्य वचन ; २ सत्य-मिश्रित असत्य वचन ; (भग २५, ३)।
अभि अ [**अभि**] निम्न-लिखित अर्थों में से किसी एक को बतलाने वाला अव्यय;— १ संमुख, सामने ; जैसे— 'अभिगच्छणया' (औप)। २ चारो ओर, समन्तात् ; जैसे—'अभिदो' (स्वप्न ४२)। ३ बलात्कार ; जैसे— 'अभिओग' (धर्म २)। ४ उल्लंघन, अतिक्रमण ; जैसे— 'अभिक्कंत' (आचा)। ५ अत्यन्त, ज्यादः ; जैसे— 'अभिदुग्ग' (सूअ १, ५, २)। ६ लक्ष्य ; जैसे—'अभि मुहं'। ७ प्रतिकूल , जैसे—'अभिवाय' (आचा)। ८ विकल्प ; ९ संभावना ; (निचू १)। १० निरर्थक भी इस अव्यय का प्रयोग होता है; जैसे—'अभिमंतिय' (सुर १६, ६२)।
अभिअण पुं [**अभिजन**] १ कुल , २ जन्म-भूमि ; (नाट)।
अभिआवण्ण वि [**अभ्यापन्न**] संमुख-आगत ; (सूअ १, ४,२)।
अभिइ स्त्री [**अभिजित्**] नक्षत्र-विशेष ; (ठा २, ३)।
अभिइ सक [**अभि+इ**] सामने जाना, संमुख जाना। वकृ— **अभिइंत** ; (उप १४२ टी)।
अभिउंज देखो **अभिजुंज** । संकृ—**अभिउंजिय** ; (ठा ३, ४ ; दस १०)।

अभिओअ } **अभिओग** } पुं [**अभियोग**] १ आज्ञा, हुकुम; (औप, ठा १०)। २ बलात्कार, "अभिओगे अ निओगे" (श्रा ५)। ३ बलात्कार से कोई भी कार्य में लगाना ; (धर्म २)। ४ अभिभव, परा-भव ; (आव ५)। ५ कार्मण-प्रयोग, वशीकरण, वश करने का चूर्ण या मन्त्र-तन्त्रादि ;
"दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य होइ नायव्वो।
दव्वम्मि होइ जोगो, विज्जा मंता य भावम्मि"
(ओघ ५९७)।
६ गर्व, अभिमान; (आव ५)। ७ आग्रह, हठ; (नाट)। °**पण्णत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**] विद्या-विशेष ; (गाया १, १६)। देखो **अहिओय** ।
अभिओगी स्त्री [**आभियोगी**] भावना-विशेष, ध्यान-विशेष, जो अभियोगिक देव-गति (नौकर-स्थानीय देव-जाति) में उत्पन्न होने का हेतु है ; (वृह १)।
अभिओयण न [**अभियोजन**] देखो **अभिओग**, (आव; पगण २०)।
अभिंगण } **अभिंजण** } देखो **अब्भंगण** ; (नाट ; रंभा)।
अभिकंख सक [**अभि+काङ्क्ष्**] इच्छा करना, चाहना। अभिकंखेज्जा ; (आचा)। वकृ—**अभिकंखमाण** ; (दस ६, ३)।
अभिकंखा स्त्री [**अभिकाङ्क्षा**] अभिलाषा, इच्छा , (आचा)।
अभिकंखि } **अभिकंखिर** } वि [**अभिकाङ्क्षिन्**] अभिलाषी, इच्छुक ; (पि ४०५ ; सुपा १२६)।
अभिक्कंत वि [**अभिक्रान्त**] १ गत, अतिक्रान्त, "अण-भिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए" (आचा)। २ संमुख गत ; ३ आरब्ध ; ४ उल्लंघित ; (आचा ; सूअ २, २)।
अभिक्कम सक [**अभि+क्रम्**] १ जाना गुजरना। २ सामने जाना। ३ उल्लंघन करना। ४ शुरू करना। वकृ—**अभिक्कममाण** ; (आचा)। संकृ—**अभि-क्कम्म** ; (सूअ १, १, २)।
अभिक्कम पुं [**अभिक्रम**] १ उल्लंघन। २ प्रारम्भ। ३ संमुख-गमन। ४ गमन, गति ; (आचा)।
अभिक्ख } **अभिक्खण** } अ [**अभीक्ष्ण**] वारंवार ; (उप १४७ टी ; ठा २, ४ ; वव ३)।
अभिक्खा स्त्री [**अभिख्या**] नाम ; (विसे १०४८)।

अभिगच्छ सक [**अभि+गम्**] सामने जाना। अभिगच्छंति ; (भग २, ५)।

अभिगच्छणया स्त्री [**अभिगमन**] संमुख-गमन; (औप)।

अभिगज्ज अक [**अभि+गर्ज्**] गर्जना, खूब जोर से अवाज करना। वकृ—**अभिगज्जंत**; (णाया १, १८ ; सुर १३, १८२)।

अभिगम पुं [**अभिगम**] १ प्राप्ति, स्वीकार ; (पक्खि)। २ आदर, सत्कार ; (भग २, ५)। ३ (गुरु का) उपदेश, सीख ; (णाया १, १)। ४ ज्ञान, निश्चय; (पव १४९)। ५ सम्यक्त्व का एक भेद , (ठा २, १)। ६ प्रवेश ; (से ८, ३३)।

अभिगमण न [**अभिगमन**] ऊपर देखो ; (स्वप्न १९ , णाया १, १२)।

अभिगमि वि [**अभिगमिन्**] १ आदर करने वाला। २ उपदेशक। ३ निश्चय-कारक। ४ प्रवेश करने वाला। ५ स्वीकार करने वाला, प्राप्त करने वाला ; (पगण ३४)।

अभिगय वि [**अभिगत**] १ प्राप्त। २ सत्कृत। ३ उपदिष्ट। ४ प्रविष्ट ; (वृह १)। ५ ज्ञात, निश्चित ; (णाया १, १)।

अभिगहिय न [**अभिग्रहिक**] मिथ्यात्व-विशेष ; (कम्म ४, ५१)।

अभिगिज्झ अक [**अभि+गृध्**] अति लोभ करना, आसक्त होना। वकृ—**अभिगिज्झंत** ; (सूअ २, २)।

अभिगिण्ह / **अभिगिन्ह** } सक [**अभि+ग्रह्**] ग्रहण करना, स्वीकारना। अभिगिगहइ, (कप्प)। संकृ—**अभिगिन्हित्ता, अभिगिज्झ**, (पि ५८२; ठा २, १)।

अभिग्गह पुं [**अभिग्रह**] १ प्रतिज्ञा, नियम ; (ओघ ३)। २ जैन साधुओं का आचार-विशेष ; (वृह १)। ३ प्रत्याख्यान, (नियम-विशेष) का एक भेद ; (आव ६)। ४ कदाग्रह, हठ ; (ठा २, १)। ५ एक प्रकार का शारीरिक विनय ; (वव १)।

अभिग्गहिय वि [**अभिग्रहिक**] अभिग्रह वाला ; (ठा २, १ ; पव ६)।

अभिग्गहिय वि [**अभिगृहीत**] १ जिसके विषय में अभिग्रह किया गया हो वह ; (कप्प, पव ६)। २ न. अवधारण, निश्चय ; (पगण ११)।

अभिघट्ट सक [**अभि+घट्ट्**] वेग से जाना। कवकृ—**अभिघट्टिज्जमाण** , (राय)।

अभिघाय पुं [**अभिघात**] प्रहार, मार-पीट, हिंसा ; (पगह १, १; वृह ४)।

अभिचंद पुं [**अभिचन्द्र**] १ यदु-वंश के राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी ; (अंत ३)। २ इस नाम का एक कुलकर पुरुष ; (पउम ३, ५५)। ३ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)।

अभिजण देखो **अभिअण** ; (स्वप्न २६)।

अभिजस न [**अभियशस्**] इस नाम का एक जैन साधुओं का कुल (एक आचार्य की संतति) ; (कप्प)।

अभिजाइ स्त्री [**अभिजाति**] कुलीनता, खानदानी ; (उत्त ११)।

अभिजाण सक [**अभि+ज्ञा**] जानना। वकृ— **अभिजाणमाण** ; (आचा)।

अभिजाय वि [**अभिजात**] १ उत्पन्न, " अभिजायसड्ढो " (उत्त १४)। २ कुलीन ; (राज)।

अभिजुंज सक [**अभि+युज्**] १ मन्त्र-तन्त्रादि से वश करना। २ कोई कार्य में लगाना। ३ आलिंगन करना। ४ स्मरण कराना, याद दिलाना। संकृ—**अभिजुं**[illegible] **अभिजुंजियाणं , अभिजुंजित्ता** ; (भग २, [illegible] १, ५, २; आचा ; भग ३, ५)।

अभिजुत्त वि [**अभियुक्त**] १ व्रत-नियम में [illegible] न लगाया हो वह ; (णाया १, १४)। [illegible] पण्डित ; (णंदि)। ३ दुश्मन से [illegible] १२०)।

अभिज्झा स्त्री [**अभिध्या**] लो[illegible] (सम ७१ ; पगह १, ५)।

अभिज्झिय वि [**अभिध्यित** [illegible] (पगण २८)।

अभिट्ठुय वि [**अभिष्टुत** [illegible] (आव २)।

अभिड्डुय देखो **अभि**[illegible]

मनाना। ५ चाहना, इच्छना। ६ वहुमान करना, आदर करना। अभिणंदइ ; (स १६३) । वकृ— **अभिणंदंत;** (औप ; णाया १, १ ; पउम ५, १३०) । कवकृ— **अभिणंदिज्जमाण** ; (ठा ६ ; णाया १, १) ।

अभिणंदिय वि [**अभिनन्दित**] जिसका अभिनन्दन किया गया हो वह ; (सुपा ३१०) ।

अभिणंदण न [**अभिनन्दन**] १ अभिनन्दन, २ पुं. वर्तमान अवसर्पिणी-काल के चतुर्थ जिन-देव , (सम ४३) । ३ लोकोत्तर श्रावण मास ; (सुज्ज १०) ।

अभिणय पुं [**अभिनय**] शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना , नाट्य-क्रिया; (ठा ४, ४) ।

अभिणव वि [**अभिनव**] नूतन, नया ; (जीव ३) ।

अभिणिक्खंत वि [**अभिनिष्क्रान्त**] दीक्षित, प्रव्रजित ; (स २७८) ।

अभिणिगिण्ह सक [**अभिनि+ग्रह्**] रोकना, अटकाना। संकृ—**अभिणिगिज्झ** ; (पि ३३१; ५९१) ।

अभिणिचारिया स्त्री [**अभिनिचारिका**] भिक्षा के लिए गति-विशेष ; (वव ४) ।

अभिणिपया स्त्री [**अभिनिप्रजा**] अलग २ रही हुई प्रजा; (वव ६) ।

अभिणिबुज्झ सक [**अभिनि+बुध्**] जानना, इन्द्रिय आदि द्वारा निश्चित रूप से ज्ञान करना । अभिणिबुज्झए; (विसे ८१)।

अभिणिबोह पु [**अभिनिबोध**] ज्ञान विशेष, मति-ज्ञान ; (सम्म ८६) ।

अभिणियट्टण न [**अभिनिवर्त्तन**] पीछे लौटना, वापिस जाना ; (आचा) ।

अभिणिविट्ठ वि [**अभिनिविष्ट**] १ तीव्र रूप से निविष्ट ; २ आग्रही ; (उत्त १४) ।

अभिणिवेस पु [**अभिनिवेश**] आग्रह, हठ ; (णाया १, १२) ।

अभिणिवेह पुं [**अभिनिवेध**] उलटा मापना ; (आवम्)।

अभिणिव्वगड वि [**दे, अभिनिर्व्याकृत**] भिन्न परिधि वाला, पृथग्भूत (घर वगैरः); (वव १, ६) ।

अभिणिव्वट्ट सक [**अभिनि+वृत्**] रोकना, प्रतिषेध करना । "से मेहावी अभिणिव्वट्टेज्जा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पेज्जं च दोसं च मोहं च गब्भं च जम्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च " (आचा) ।

अभिणिव्वट्ट सक [**अभिनिर्+वृत्**] १ संपादित करना, निष्पन्न करना। २ उत्पन्न करना । संकृ—**अभिणिव्वट्टित्ता,** (भग ५, ४) ।

अभिणिव्वट्ट वि [**अभिनिर्वृत्त**] १ निष्पन्न । २ उत्पन्न, "इह खलु अत्तताए तेहिं तेहिं कुलेहि अभिसेएण अभिसंभूआ अभिसंजाया अभिणिव्वट्टा अभिसंवुड्ढा अभिसंवुद्धा अभिनिक्खंता अणुपुव्वेण महामुणी " (आचा) ।

अभिणिव्वुड वि [**अभिनिर्वृत**] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त ; (सूअ १, २, १) । २ शान्त, अकुपित; (आचा) । ३ पाप से निवृत्त ; (सुअ १, २, १) ।

अभिणिसज्जा स्त्री [**अभिनिषद्या**] जैन साधुओं को रहने का स्थान-विशेष ; (वव १) ।

अभिणिसिट्ठ वि [**अभिनिसृष्ट**] वाहर निकला हुआ ; (जीव ३) ।

अभिणिसेहिया स्त्री [**अभिनैषेधिकी**] जैन साधुओं का स्वाध्याय करने का स्थान-विशेष ; (वव १) ।

अभिणिस्सड वि [**अभिनिस्सृत**] वाहर निकला हुआ ; (भग १४, ६) ।

अभिणी सक [**अभि+नी**] अभिनय करना, नाट्य करना। वकृ—**अभिणअंत** ; (मै ७५) । कवकृ—**अभिणइज्जंत** ; (सुपा ३५६) ।

अभिणूम न [**अभिनूम**] माया, कपट; (सुअ १, २, १) ।

अभिण्ण वि [**अभिज्ञ**] जानकार, निपुण ; (उप ५८०) ।

अभिण्ण वि [**अभिन्न**] १ अ-त्रुटित, अ-विदारित, अ-खण्डित ; (उवा ; पंचा ११) । २ भेद-रहित, अपृथग्भूत ; (वृह ३) ।

अभिण्णपुड पुं [**दे**] खाली पुड़िया, लोगों को ठगने के लिए लड़के लोग जिसको रास्ता पर रख देते हैं; (दे १,४४)।

अभिण्णाण न [**अभिज्ञान**] निशानी, चिह्न; (श्रा १४) ।

अभिण्णाय वि [**अभिज्ञात**] जाना हुआ, विदित; (आचा)।

अभितज्ज सक [**अभि+तर्ज्**] तिरस्कार करना, ताड़न करना। वकृ—**अभितज्जेमाण** ; (णाया १, १८) ।

अभितत्त वि [**अभितप्त**] १ तपाया हुआ, गरम किया हुआ ; (सूअ १, ४, १, २७) ।

अभितव सक [**अभि+तप्**] १ तपाना ; २ पीडा करना । " चत्तारि अगणिओ समारंभित्ता जेहिं कूरकम्मा भितविंति, वालं " (सूअ १, ५, १, १३) । कवकृ—**अभितप्पमाण**; " ते तत्थ चिट्ठंतिभितप्पमाणा मच्छा व जीवंतुवजोतिपत्ता " (सूअ १, ५, १, १३) ।

अभिताव सक [**अभि+तापय्**] १ तपाना, गरम करना । २ पीडित करना । अभितावयंति; (सूत्र १, ५, १, २१; २२) ।

अभिताव पु [**अभिताप**] १ दाह ; २ पीडा ; (सूत्र १, ५, १ ; २, ६) ।

अभितास सक [**अभि+त्रासय्**] त्रास उपजाना, भयभीत करना । वकृ—**अभितासेमाण** ; (णाया १,१८)।

अभित्थु सक [**अभि+स्तु**] स्तुति करना, श्लाघा करना, वर्णन करना । अभित्थुणंति, अभित्थुणामि ; (पि ४६४, विसे १०५४) । वकृ—**अभित्थुणमाण**; (कप्प) । कवकृ—**अभित्थुव्वमाण** ; (रयण ६८) ।

अभित्थुय वि [**अभिष्टुत**] स्तुत, श्लाघित ; (संथा) ।

अभिथु देखो **अभित्थु** । वकृ—**अभिथुणंत** ; (णाया १, १) । कवकृ—**अभिथुव्वमाण**; (कप्प ; ठा ६)।

अभिदुग्ग वि [**अभिदुर्ग**] १ दुःखोत्पादक स्थान ; २ अतिविषम स्थान ; (सूत्र १, ५, १, १७) ।

अभिदो (शौ) अ [**अभितः**] चारों ओर से; (स्वप्न ४२) ।

अभिद्दव सक [**अभि+द्रु**] पीड़ा करना, दुःख उपजाना, हैरान करना । " नुदंति वायाहिं अभिद्दवं णरा " (आचा २, १६, २) ।

अभिद्दविय वि [**अभिद्रुत**] उपद्रुत, हैरान किया हुआ ; (सुर १२, ६७) ।

अभिद्दुय देखो **अभिद्दविय** ; (णाया १, ६ ; स ५६) ।

अभिधाइ वि [**अभिधायिन्**] वाचक, कहने वाला ; (विसे ३४७२) ।

अभिधारण न [**अभिधारण**] धारणा, चिन्तन ; (वृह ३) ।

अभिधेज्ज } पुं [**अभिधेय**] अर्थ, वाच्य, पदार्थ,
अभिधेय } (विसे १ टी) ।

अभिनंद देखो **अभिणंद** । वकृ—**अभिनंदमाण**, (कप्प) । कवकृ— **अभिनंदिज्जमाण**; (महा) ।

अभिनंदण देखो **अभिणंदण** ; (कप्प) ।

अभिनंदि स्त्री [**अभिनंदि**] आनन्द, खुशी, "पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदि " (अजि ३७) ।

अभिनिक्खंत देखो **अभिणिक्खंत** ; (आचा) ।

अभिनिक्खम अक [**अभिनिर्+क्रम्**] दीक्षा (संन्यास) लेना, दीक्षा लेने की इच्छा करना, गृहवास से वाहर निकलना । वकृ—**अभिनिक्खमंत** ; (पि ३६७) ।

अभिनिगिण्ह देखो **अभिणिगिण्ह** ; (आचा) ।

अभिनिवुज्झ देखो **अभिणिवुज्झ** । अभिनिवुज्झइ ; (विसे ६८) ।

अभिनिवट्ट देखो **अभिणिवट्ट** । संकृ—**अभिनिवट्टित्ताणं**; (पि ५८३) ।

अभिनिविट्ठ देखो **अभिणिविट्ठ** ; (भग) ।

अभिनिवेसिय न (**अभिनिवेशिक**) मिथ्यात्व का एक प्रकार, सत्य वस्तु का ज्ञान होने पर भी उसे नही मानने का दुराग्रह ; (श्रा ६; कम्म ४, ५१) ।

अभिनिव्वट्ट देखो **अभिणिव्वट्ट** ; (कप्प; आचा) ।

अभिनिव्विट्ठ वि [**अभिनिर्विष्ट**] संजात, उत्पन्न ; (कप्प) ।

अभिनिव्वुड देखो **अभिणिव्वुड**; (पि २१९) ।

अभिनिस्सव अक [**अभिनि+स्रु**] टपकना, झरना । अभिनिस्सवइ; (भग) ।

अभिन्न देखो **अभिण्ण** ; (प्राप्र) ।

अभिन्नाण देखो **अभिण्णाण** ; (ओघ ४३९ ; सुर ७, १०१) ।

अभिन्नाय देखो **अभिण्णाय**, (कप्प) ।

अभिपल्लाणिय वि [**अभिपर्याणित**] अध्यारोपित, ऊपर रखा हुआ ; (कुमा) ।

अभिपाइय वि [**आभिप्रायिक**] अभिप्राय-संवन्धी, मनः-कल्पित ; (अणु) ।

अभिप्पाय पुं [**अभिप्राय**] आशय, मन-परिणाम; (आचा; स ३४ ; सुपा २६२) ।

अभिप्पेय वि [**अभिप्रेत**] इष्ट ; अभिमत ; (स २३) ।

अभिभव सक [**अभि+भू**] पराभव करना, परास्त करना । अभिभवइ ; (महा) । संकृ—**अभिभविय, अभिभूय** ; (भग ६, ३३, पण्ह १, २) ।

अभिभव पुं [**अभिभव**] पराभव, पराजय, तिरस्कार ; (आचा ; दे १, ५७) ।

अभिभवण न [**अभिभवन**] ऊपर देखो ; (सुपा ४७६) ।

अभिभास सक [**अभि+भाष्**] संभाषण करना । अभिभासे; (पि १६६) ।

अभिभूइ स्त्री [**अभिभूति**] पराभव, अभिभव ; (द्र ३०)।

अभिभूय वि [**अभिभूत**] पराभूत, पराजित ; (आचा ; सुर ४, ७५)

अभिमंजु देखो **अभिमण्णु** ; (हे ४, ३०५) ।

अभिमंत सक [अभि+मन्त्रय्] मंत्रित करना, मन्त्र से संस्कारना । संकृ—**अभिमंतिऊण, अभिमंतिय** ; (निचू १; आवम) ।
अभिमंतिय वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कारित; (सुर १६, ६२) ।
अभिमन्न सक [अभि+मन्] १ अभिमान करना । २ सम्मत करना । अभिमन्नइ ; (विसे २१९०, २६०३)।
अभिमय वि [अभिमत] इष्ट, अभिप्रेत ; (सूत्र २, ४) ।
अभिमाण पुं [अभिमान] अभिमान, गर्व ; (निचू १) ।
अभिमार पुं [अभिमार] वृक्ष-विशेष ; (राज) ।
अभिमुह वि [अभिमुख] १ समुख, सामने स्थित ; २ क्रिवि. सामने ; (भग) ।
अभिरइ स्त्री [अभिरति] १ रति, संभोग , २ प्रीति, अनुराग ; (विसे ३२२३) ।
अभिरम अक [अभि+रम्] १ क्रीड़ा करना, सभोग करना । २ प्रीति करना । ३ तल्लीन होना, आसक्ति करना । अभिरमइ ; (महा) । वकृ—**अभिरमंत, अभिरममाण** ; (सुपा १२० ; गाया १, २; ४) ।
अभिरमिय वि [अभिरमित] अनुरक्त किया हुआ, " अभिरमियकुमुयवणसंडं ससिमंडलं पलोयइ " (सुपा ३४) ।
अभिरमिय } वि [अभिरत] १ अनुरक्त; (सुपा ३४)।
अभिरय } २ तल्लीन, तत्पर "साहू तवनियमसंजमाभिरया" (पउम ३७, ६३; स १२२) ।
अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर, (गाया १, १३ ; स्वप्न ४५) ।
अभिरुइय वि [अभिरुचित] पसंद, मन का अभिमत; (गाया १, १ ; उवा ; सुपा ३४४ ; महा) ।
अभिरुय सक [अभि+रुच्] पसंद पडना, रुचना । अभिरुयइ ; (महा) ।
अभिरुह सक [अभि+रुह्] १ रोकना । २ ऊपर चढना, आरोहना । संकृ—
" चत्तारि साहिए मासे बहवे पाणजाइया आगम्म ।
अभिरुज्झ कायं विहरिंसु, आरुहिया णं तत्थ हिंसिंसु "
(आचा) ।
अभिरोहिय वि [अभिरोधित] चारों ओर से निरुद्ध, रोका हुआ ; (गाया १, ६) ।
अभिरोहिय वि [अभिरोहित] ऊपर देखो " परचक्करायाभिरोहिया " (" परचक्रराजेनापरसैन्यनृपतिनाभिरोहिताः सर्वतः कृतनिरोधा या सा तथा " टी), (गाया १,६)।
अभिलंघ सक [अभि+लङ्घ्] उल्लंघन करना। वकृ—**अभिलंघमाण** ; (गाया १, १) ।
अभिलप्प वि [अभिलाप्य] कथन-योग्य, निर्वचनीय, (आचू १) ।
अभिलस सक [अभि+लष्] चाहना, वाञ्छना । अहिलसइ ; (उव) ।
अभिलाअ } पुं [अभिलाप] १ शब्द, ध्वनि ; (ठा ३,
अभिलाव } १ ; भास २७) । २ सभाषण ; (गाया १, ८ ; विसे) ।
अभिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, चाह ; (गाया १, ६ ; प्रयौ ६१) ।
अभिलासि } वि [अभिलाषिन्] चाहने वाला, इच्छुक;
अभिलासिण } (वसु ; स ६५४ ; पउम ३१, १२८) ।
अभिलासुग वि [अभिलाषुक] अभिलाषी ; (उप ३५७ टी) ।
अभिलोयण न [अभिलोकन] जहां खड़े रह कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान ; (पण्ह २, ४) ।
अभिलोयण न [अभिलोचन] ऊपर देखो ; (पण्ह २, ४) ।
अभिवंद सक [अभि+वन्द्] नमस्कार करना, प्रणाम करना । वकृ—**अभिवंदंत** ; (पउम २३, ६) । कृ— " जे साहुणो ते **अभिवंदियव्वा** " (गोय १४); **अभिवंदणिज्ज** ; (विसे २६४३) ।
अभिवंदय वि [अभिवन्दक] प्रणाम करने वाला ; (औप) ।
अभिवड्ढ अक [अभि+वृध्] बढ़ना, बड़ा होना, उन्नत होना । अभिवड्ढामो ; भूका—अभिवड्ढित्था ; (कप्प) । वकृ—**अभिवड्ढेमाण** ; (जं ७) ।
अभिवड्ढि देखो **अभिवुड्ढि** ; (इक) ।
अभिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] १ बढ़ाया हुआ । २ अधिक मास ; ३ अधिक मास वाला वर्ष ; (सम ५६ ; चन्द १२) ।
अभिवत्ति स्त्री [अभिव्यक्ति] प्रादुर्भाव ; (उप २८५) ।
अभिवय सक [अभि+व्रज्] सामने जाना । वकृ—**अभिवयंत** ; (गाया १, ८) ।

अभिवाइय वि [**अभिवादित**] प्रणत, नमस्कृत ; (सुपा ३१०) ।
अभिवात पुं [**अभिवात**] १ सामने का पवन; २ प्रतिकूल (गरम या रूक्ष) पवन ; (आचा) ।
अभिवाद } सक [**अभि + वादय्**] प्रणाम करना,
अभिवाय } नमस्कार करना । अभिवाएइ; (महा) । अभिवादये (विसे १०५४) । वकृ—**अभिवायमाण** ; (आचा) । कृ—**अभिवायणिज्ज** ; (सुपा ५६८) ।
अभिवाय देखो **अभिवात** , (आचा) ।
अभिवायण न [**अभिवादन**] प्रणाम, नमस्कार ; (आचा ; दसचू) ।
अभिवाहरणा स्त्री [**अभिव्याहरणा**] बुलाहट, पुकार ; (पंचा २) ।
अभिवाहार पुं [**अभिव्याहार**] प्रश्नोत्तर, सवाल-जवाब ; (विसे ३३९६) ।
अभिविहि पुंस्त्री [**अभिविधि**] मर्यादा, व्याप्ति ; (पंचा १५ ; विसे ८७४) ।
अभिवुड्ढ देखो **अभिवड्ढ** । संकृ—**अभिवुड्ढित्ता**; (सुज्ज १) ।
अभिवुड्ढि स्त्री [**अभिवृद्धि**] १ वृद्धि, बढाव । २ उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र ; (जं ७) ।
अभिव्वंजण न [**अभिव्यञ्जन**] देखो **अभिवत्ति**; (सूअ १, १, १) ।
अभिव्वाहार देखो **अभिवाहार** ; (विसे ३४१२) ।
अभिसंका स्त्री [**अभिशङ्का**] संशय, संदेह; (सूअ १, ६, १, १४) ।
अभिसंकि वि [**अभिशङ्किन्**] १ संदेह करने वाला । २ भीरु, डरने वाला ; " उज्जु माराभिसंकी मरणा पमुच्चति " (आचा; गाया १, १८) ।
अभिसंग पुं [**अभिष्वङ्ग**] आसक्ति ; (ठा ३, ४) ।
अभिसंजाय वि [**अभिसंजात**] उत्पन्न ; (आचा) ।
अभिसंथुण सक [**अभिसं+स्तु**] स्तुति करना, वर्णन करना । वकृ—**अभिसंथुणमाण** ; (गाया १, ८) ।
अभिसंधारण न [**अभिसंधारण**] पर्यालोचन; विचारणा; (आचा) ।
अभिसंधि पुंस्त्री [**अभिसंधि**] आशय, अभिप्राय; (उप २११ टी) ।
अभिसंधिय वि [**अभिसंहित**] गृहीत, उपात्त ; (आचा) ।
अभिसंभूय वि [**अभिसंभूत**] उत्पन्न, प्रादुर्भूत; (आचा) ।
अभिसंवुद्ध वि [**अभिसंबुद्ध**] ज्ञान-प्राप्त, बोध-प्राप्त ; (आचा) ।
अभिसंवुड्ढ वि [**अभिसंवृद्ध**] बढ़ा हुआ, उन्नत अवस्था को प्राप्त ; (आचा) ।
अभिसमण्णागय } वि [**अभिसमन्वागत**] १ अच्छी
अभिसमन्नागय } तरह जाना हुआ, सुनिर्णीत ; (भग ५, ४) । २ व्यवस्थित ; (सूअ २, १) । ३ प्राप्त, लब्ध ; (भग १५ ; कप्प ; गाया १, ८) ।
अभिसमागम सक [**अभिसमा+गम्**] १ सामने जाना । २ प्राप्त करना । ३ निर्णय करना, ठीक २ जानना । संकृ—**अभिसमागम्म** ; (आचा ; दस ५) ।
अभिसमागम पुं [**अभिसमागम**] १ संमुख गमन । २ प्राप्ति । ३ निर्णय ; (ठा ३, ४) ।
अभिसमे सक [**अभिसमा + इ**] देखो **अभिसमागम**= अभिसमा+गम् । अभिसमेइ ; (ठा ३, ४) । संकृ— **अभिसमेच्च** ; (आचा) ।
अभिसरण न [**अभिसरण**] १ सामने जाना, संमुख गमन; (पण्ह १,१) । २ प्रिय के पास जाना; (कुमा) ।
अभिसव पुं [**अभिषव**] १ मद्य आदि का अर्क ; २ मद्य-मांस आदि से मिश्रित चीज ; (पव ६) ।
अभिसारिआ देखो **अहिसारिआ** ; (गा ८७१) ।
अभिसिंच सक [**अभि+सिच्**] अभिषेक करना । अभिसिंचति; (कप्प) । कवकृ—**अभिसिच्चमाण**; (कप्प) । प्रयो, हेकृ—**अभिसिंचावित्तए**; (पि ५७८) ।
अभिसित्त वि [**अभिषिक्त**] जिसका अभिषेक किया गया हो वह ; (आवम) ।
अभिसेअ } पुं [**अभिषेक**] १ राजा, आचार्य आदि पद पर
अभिसेग } आरूढ करना ; (संथा ; महा) ; २ स्नान-महोत्सव ; " जिणाभिसेगे " (सुपा ५०) । ३ स्नान ; (औप; स ३२) । ४ जहां पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान ; (भग) । ५ शुक्र-शोणित का संयोग " इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूया " (आचा १, ६,१) । ६ वि. आचार्य आदि पद के योग्य; (बृह ३) । ७ अभिषिक्त; (निचू १५) ।
[illegible] **[illegible]षेका**] १ साध्वी, संन्यासिनी ; (निचू १५ [illegible] ओं को मुखिया, प्रवर्तिनी ; ([illegible] ३;

अभिसेज्जा स्त्री [**अभिशय्या**] देखो **अभिणिसज्जा**, (वव १)। २ भिन्न स्थान ; (विसे ३४६१)।

अभिसेवण न [**अभिषेवण**] पूजा, सेवा, भक्ति ; (पउम १४, ४६)।

अभिस्संग पुं [**अभिष्वङ्ग**] आसक्ति; (विसे २६६४)।

अभिहट्टु अ [**अभिहृत्य**] वलात्कार करके, जवरदस्ती करके ; (आचा ; पि ५७७)।

अभिहड वि [**अभिहृत**] १ सामने लाया हुआ ; (पंचा १३)। २ जैन साधुओ की भिक्षा का एक दोष ; (ठा ३, ४)।

अभिहण सक [**अभि+हन्**] मारना, हिंसा करना। (पि ४६६)। वकृ—**अभिहणमाण** ; (जं ३)।

अभिहणण न [**अभिहनन**] अभिघात ; हिंसा ; (भग ८, ७)।

अभिहय वि [**अभिहत**] मारा हुआ, आहत ; (पडि)।

अभिहा स्त्री [**अभिधा**] नाम, आख्या ; (सण)।

अभिहाण न [**अभिधान**] १ नाम, आख्या ; (कुमा)। २ वाचक, शब्द ; (वव ६)। ३ कथन, उक्ति ; (विसे)।

अभिहिय वि [**अभिहित**] कथित, उक्त ; (आचा)।

अभिहेअ पुं [**अभिधेय**] वाच्य, पदार्थ ; (विसे ८४१)।

अभीइ } **अभीजि** } स्त्री [**अभिजित्**] १ नक्षत्र-विशेष ; (सम ८; १५)। २ पुं. एक राज-कुमार; (भग १३,६)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी ; (अनु)।

अभीरु वि [**अभीरु**] १ निडर, निर्भीक ; (आचा)। २ स्त्री. मध्यम-ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७)।

अभेज्झा देखो **अभिज्झा** ; (पण्ह १, ३)

अभोज्ज वि [**अभोज्य**] भोजन के अयोग्य ; (णाया १, १६)। °**घर** न [°**गृह**] भिक्षा के लिए अयोग्य घर, धोबी आदि नीच जाति का घर ; (वृह १)।

अम सक [**अम्**] १ जाना। २ अवाज करना। ३ खाना। ४ पीडना। ५ अक. रोगी होना। "अम गत्याइसु" (विसे ३४५३); "अम रोगे वा" (विसे ३४५४)। अमइ ; (विसे ३४५३)।

अमग्ग पु [**अमार्ग**] १ कुमार्ग, खराव रास्ता ; (उव)। २ मिथ्यात्व, कषाय आदि हेय पदार्थ; "अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामि" (आव ४)। ३ कुमत, कुदर्शन ; (दंस)।

अमग्घाय पुं [**अमाघात**] १ द्रव्य का अ-हरण; २ अमारि-निवारण, अभय-घोषणा ; (पंचा ६)।

अमच्च पुं [**अमात्य**] मन्त्री, प्रधान ; (औप ; सुर ४, १०४)।

अमच्च पुं [**अमर्त्य**] देव, देवता ; (कुमा)।

अमज्झ वि [**अमध्य**] १ मध्य-रहित, अखण्ड; (ठा ३,२)। २ परमाणु ; (भग २०, ६)।

अमण न [**अमन**] १ ज्ञान, निर्णय ; (ठा ३, ४)। २ अन्त, अवसान ; (विसे ३४५३)।

अमण } **अमणक्ख** } वि [**अमनस्क**] १ अप्रीतिकर, अभीष्ट; (ठा ३, ३)। २ मन-रहित; (आव ४; सूअ २, ४, २)।

अमणाम वि [**अमनआप**] अनिष्ट, अ-मनोहर ; (सम १४६ ; विपा १, १)।

अमणाम वि [**अमनोम**] ऊपर देखो ; (भग; विपा १, १)।

अमणाम वि [**अवनाम**] पीड़ा-कारक, दुःखोत्पादक ; (सूअ २, १)।

अमणुस्स पुं [**अमनुष्य**] १ मनुष्य-भिन्न देव आदि ; (णंदि)। २ नपुसक ; (निचू १)।

अमत्त न [**अमत्र**] भाजन, पात्र ; (सूअ १, ६)।

अमम वि [**अमम**] १ ममता-रहित, निःस्पृह ; (पण्ह २, ५; सुपा ५००)। २ पुं. आगामी काल में होने वाले एक जिन-देव का नाम ; (सम १५३)। ३ युग्म रूप से होने वाले मनुष्यो की एक जाति ; (जं ४)। ४ न. दिन के २५ वाँ मुहुर्त का नाम ; (चंद १०)। °**त्त** वि [°**त्व**] निःस्पृह, ममता-रहित : (पंचव ४)।

अमय वि [**अमय**] विकार-रहित,

"अमओ य होइ जीवो, कारणविरहा जहेव आगासं।
समयं च होअनिच्चं, मिम्मयघडतंतुमाईयं" (विसे)।

अमय न [**अमृत**] १ अमृत, सुधा ; (प्रासू ६६)। २ क्षीर समुद्र का पानी, (राय)। ३ पुं. मोक्ष, मुक्ति ; (सम्म १६७, प्रामा)। ४ वि. नही मरा हुआ, जीवित, "अमओ हं नयं विमुञ्चामि" (पउम ३३, ८२)। °**कर** पुं [°**कर**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (उप ७६८ टी)। °**किरण** पुं [°**किरण**] चन्द्र ; (सुपा ३७७)। °**कुंड** पु पुं [°**कुण्ड**] चन्द्र, चाँद ; (श्रा २७)। °**घोस** पु [°**घोष**] एक राजा का नाम ; (संथा)। °**फल** न [°**फल**] अमृतोपम फल ; (णाया १, ६)। °**मइय**,

°मय वि [°मय] अमृत-पूर्ण ; (कुमा , सुर ३, १२१ ; २३३) । °मऊह पु [°मयूख] चन्द्र ; (मै ६८) । °वल्लरि, °वल्लरी स्त्री [°वल्लरि, °री] अमृतलता, वल्ली-विशेष, गुडूची । °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, गुडूची ; (श्रा २० ; मत्र ४) । °वास पुं [°वर्ष] सुधा-वृष्टि; (आचा) । देखो **अमिय**=अमृत ।

अमय पुं [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा ; (दे १, १५) । २ असुर, दैत्य ; (षड्) ।

अमयणिग्गम पु [दे. अमृतनिर्गम] १ चन्द्र, चन्द्रमा ; (दे १, १५) ।

अमर वि [आमर] दिव्य, देव-संबन्धी, "अमरा आउहभेया" (पउम ६१, ४६) ।

अमर पुं [अमर] १ देव, देवता ; (पाअ) । २ मुक्त आत्मा ; (औप) । ३ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; (राज) । ४ अनन्तवीर्य-नामक भावी जिन-देव के पूर्व-जन्म का नाम; (ती २१) । ५ वि मरण-रहित "पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं" (पडि) । °कंका स्त्री [°कङ्का] एक नगरी का नाम , (उप ६४८ टी) । °केउ पुं [°केतु] एक राज-कुमार ; (दंस) । °गिरि पुं [°गिरि] मेरु पर्वत ; (पउम ६५, ३७) । °गेह न [°गेह] स्वर्ग, (उप ७२८ टी) । °चन्दण न [चन्दन] १ हरिचन्दन वृक्ष ; २ एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ ; (पाअ) । °तरु पुं [°तरु] कल्प-वृक्ष, (सुपा ४४) । °दत्त पुं [°दत्त] एक श्रेष्ठि-पुत्र का नाम; (धम्म) । °नाह पु [नाथ] इन्द्र ; (पउम १०१, ७५) । °पुर न [°पुर] स्वर्ग ; (पउम २, १४) । °पुरी स्त्री [°पुरी] स्वर्ग-पुरी, अमरावती; (उप पृ १०५) । °पभ पु [°प्रभ] वानर-द्वीप का एक राजा ; (पउम ६, ६६) °वइ पु [°पति] इन्द्र , (पउम १०१, ७० ; सुर १, १) । °वहू स्त्री [°वधू] देवी; (महा) । °सामि पु [स्वामिन्] इन्द्र; (विसे १४३६ टी) । °सेण पुं [°सेन] १ एक राजा का नाम ; (दंस) । २ एक राज-कुमार का नाम ; (णाया १, ८) । °ालय लि [°ालय] स्वर्ग ; "चविउममरालयाए" (उप ७२८ टी ; सुपा ३५) । °ावई स्त्री [°ावती] १ देव-नगरी, स्वर्ग-पुरी , (पाअ) । २ मर्त्य-लोक की एक नगरी, राजा श्रीसेण की राजधानी , (उप ९८६ टी) ।

अमरंगणा स्त्री [अमराङ्गना] देवी , (श्रा २७) ।

अमरिंद पुं [अमरेन्द्र] देवों का राजा, इन्द्र ; (भवि) ।

अमरिस पुं [अमर्ष] १ असहिष्णुता ; (हे २, १०५) । २ कदाग्रह ; (उत्त ३४) । ३ क्रोध, गुस्सा ; (पण्ह १. ३; पाअ) ।

अमरिसण न [अमर्षण] १—३ ऊपर देखो । ४ वि. असहिष्णु, क्रोधी ; (पण्ह १, ४) । ५ सहिष्णु, क्षमा-शील ; (सम १५३) ।

अमरिसण वि [अमसृण] उद्यमी, उद्योगी ; (सम १५३) ।

अमरिसिय वि [अमर्षित] १ मत्सरी, असहिष्णु , (आवम ; स ५६५) ।

अमरी स्त्री (अमरी) देवी ; (कुमा) ।

अमल वि [अमल] १ निर्मल, स्वच्छ; (उव ; सुपा ३४) । २ पु. भगवान् ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम ; (राज) ।

अमला स्त्री [अमला] शक्र की एक अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष ; (ठा ८) ।

अमाइ, **अमाइल्ल** वि [अमायिन्] निष्कपट, सरल ; (आचा , ठा १० ; द ४७) ।

अमाघाय देखो **अमग्घाय** ; (उवा) ।

अमाण वि [अमान] १ गर्व-रहित, नम्र ; (कप्प) । २ असंख्य, "ठाणट्ठाणविलोइज्जमाणमाणोसहिसमूहो" (उव ६ टी) ।

अमाय वि [अमात] नहीं मांया हुआ ; "सुसाहुवग्गस्स मणे अमाया" (सत्त ३५) ।

अमाय वि [अमाय] निष्कपट, सरल ; (कप्प) ।

अमायि देखो **अमाइ** ; (भग) ।

अमारि स्त्री [अमारि] हिंसा-निवारण, जीवित-दान , (सुपा ११२) । °घोस पुं [°घोष] अहिंसा की घोषणा ; (सुपा ३०६) । °पडह पुं [°पटह] हिंसा-निषेध का डिण्डिम, "अमारिपडह च घोसावेइ" (रयण ६०) ।

अमावसा, **अमावस्सा**, **अमावासा** स्त्री [अमावास्या] तिथि-विशेष, अमावस; (कप्प ; सुपा २२६ ; णाया १, १० ; चउ १०) ।

अमिज्ज वि [अमेय] माप करने के लिये अशक्य, असंख्य, (कप्प) ।

अमिज्झ न [अमेध्य] १ अशुचि वस्तु, "भरियममिज्झस्स दुरहिगंधस्स" (उप ७२८ टी) । २ विष्ठा ; (सुपा ३१३) ।

अमित्त पुन [अमित्र] रिपु, दुश्मन , (ठा ४, ४; से ५, १७) ।

अमिय देखो **अमय**=अमृत; (प्रास् १; गा २; विसे; आवम; पिंग)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] नगर-विशेष का नाम; (सुपा ५७८)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] एक छन्द का नाम; (पिंग)। °**णाणि** पुं [°**ज्ञानिन्**] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव का नाम; (सम १५३)। °**भूय** वि [**भूत**] अमृत-तुल्य; (आउ)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] अमृत-वर्षा; (जं ३)। °**रुइ** पुं [°**रुचि**] चन्द्र, चन्द्रमा; (श्रा १६)।

अमिय वि [**अमित**] परिमाण-रहित, असंख्य, अनन्त; (भग ५, ४; सुपा ३१; श्रा २७)। °**गइ** पुं [°**गति**] दक्षिण दिशा के एक इन्द्र का नाम, दिक्कुमारों का इन्द्र; (ठा २, ३)। °**जस** पुं [°**यशस्**] एक चक्रवर्ती राजा का नाम; (महा)। °**णाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] १ सर्वज्ञ, (विसे)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिन-देव का नाम; (सम १५३)। °**तेय** पुं [°**तेजस्**] एक जैन मुनि का नाम; (उप ७६८ टी)। °**बल** पुं [°**बल**] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] दिक्कुमार देवों के एक इन्द्र का नाम; (ठा २, ३)। °**वेग** पुं [°**वेग**] राक्षस वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, २६१)। °**ासणिय** वि [°**ासनिक**] एक स्थान पर नहीं बैठने वाला, चंचल; (कप्प)।

अमिल न [**दे**] ऊन का बना हुआ वस्त्र; (श्रा १८)। २ पुं. मेष, भेड़; (ओघ ३६८)।

अमिला स्त्री [**अमिला**] १ बीसवें जिन-देव की प्रथम शिष्या; (सम १५२)। २ पाड़ी, छोटी भैंस; (बृह १)।

अमिलाण, **अमिलाय** वि [**अम्लान**] १ म्लानि-रहित, ताजा, हृष्ट; (सुर ३, ६५; भग ११, ११)। २ पुं. कुरण्टक वृक्ष; ३ न. कुरण्टक वृक्ष का पुष्प, (दे १, ३७)।

अमु स [**अदस्**] वह, अमुक; (पि ४३२)।

अमुअ स [**अमुक**] वह, कोई, अमका-ढमका; (ओघ ३२ भा; सुपा ३१४)।

अमुअ देखो **अमय**=अमृत; (प्रासू ५१; गा ६७६)।

अमुअ देखो **अमय**=अमय; (काप्र ७७७)।

अमुअ वि [**अस्मृत**] स्मरण में नहीं आया हुआ; (भग ३, ६)।

अमुइ वि [**अमोचिन्**] नहीं छोड़ने वाला; (उव)।

अमुग देखो **अमुअ**=अमुक; (कुमा)।

अमुगत्थ वि [**अमुत्र**] अमुक स्थान में; (सुपा ६०२)।

अमुण वि [**अज्ञ**] अजान, मूर्ख; (बृह १)।

अमुणिय वि [**अज्ञात**] अविदित; (सुर ४, २०)।

अमुणिय वि [**अज्ञान**] मूर्ख, अजान; (पण्ह १, २)।

अमुत्त वि [**अमुक्त**] अपरित्यक्त; (ठा १०)।

अमुत्त वि [**अमूर्त्त**] रूप-रहित, निराकार; (सुर १४, ३६)।

अमुदग्ग, **अमुयग्ग** न [**अमुदग्र**] १ अतीन्द्रिय मिथ्याज्ञान विशेष, जैसे देवताओं के पुद्गल-रहित शरीर को देख कर जीव का शरीर पुद्गल से निर्मित नहीं है ऐसा निर्णय; (ठा ७)।

अमुसा स्त्री [**अमृषा**] सत्य वचन; (सूअ १, १०)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] सत्यवादी; (कुमा)।

अमुह वि [**अमुख**] निरुत्तर; (वव ६)।

अमुहरि वि [**अमुखरिन्**] अ-वाचाट, मित-भाषी; (उत्त १)।

अमूढ वि [**अमूढ**] अ-मुग्ध, विचक्षण; (णाया १, ६)। °**णाण** न [°**ज्ञान**] सत्य ज्ञान; (आवम)। °**दिट्ठि** स्त्री [°**दृष्टि**] १ सम्यग्दर्शन; (पव ६)। २ अविचलित बुद्धि; (उत्त २)। ३ वि. अविचलित दृष्टि वाला, सम्यग्दृष्टि; (गच्छ १)।

अमूस वि [**अमृष**] सत्यवादी; (कुमा)।

अमेज्ज देखो **अमिज्ज**; (भग ११, ११)।

अमेज्झ देखो **अमिज्झ**; (महा)।

अमोल्ल वि [**अमूल्य**] जिसकी कीमत न हो सके वह, बहुमूल्य; (गउड; सुपा ५१६)।

अमोसलि न [**दे. अमुशलि**] वस्त्रादि-निरीक्षण का एक प्रकार; (ओघ २५)।

अमोसा देखो **अमुसा**; (कुमा)।

अमोह वि [**अमोघ**] १ अवन्ध्य, सफल; (सुपा ८३; ५७५)। २ पुं. सूर्य के उदय और अस्त के समय किरणों के विकार से होने वाली रेखा-विशेष; (भग ३, ६)। ३ एक यक्ष का नाम; (विपा १, ४)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] १ ठीक २ देखने वाला; (दस ६)। २ न. उद्यान-विशेष; ३ पुं. यक्ष-विशेष; (विपा १, ३)। °**पहारि** वि [°**प्रहारिन्**] अचूक प्रहार करने वाला, निशान-बाज; (महा)। °**रह** पुं [°**रथ**] इस नाम का एक रथिक; (महा)।

अमोह पुं [**अमोह**] १ मोह का अभाव, सत्य-ग्रह ; (विसे) । २ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८) । ३ वि. मोह-रहित, निर्मोह ; (सुपा ८३) ।

अमोहण न [**अमोहन**] १ मोह का अभाव; (वव १०)। २ वि. मुग्ध नहीं करने वाला ; (कप्प) ।

अमोहा स्त्री [**अमोघा**] १ एक जम्बू-वृक्ष, जिसके नाम से यह जम्बूद्वीप कहलाता है, (जीव ३) । २ एक पुष्करिणी; (दीव) ।

अम्म देखो **अंब**=आम्ल ; (उर २, ६) ।

अम्मएव पु [**आम्रदेव**] एक जैन आचार्य ; (पव २७६-गा ६०६) ।

अम्मगा देखो **अम्मया** ; (उवा) ।

अम्मच्छ वि [**दे**] असंबद्ध; (षड्) ।

अम्मड देखो **अंवड** ; (औप) ।

अम्मडो (अप) स्त्री [**अम्बा**] माता, माँ ; (हे ४, ४२४)।

अम्मणुअंचिय न [**दे**] अनुगमन, अनुसरण, (दे १,४६)।

अम्मधाई देखो **अंवधाई**; (विपा १, ६) ।

अम्मया स्त्री [**अम्बा**] १ माता, जननी ; (उवा) । २ पांचवे वासुदेव की माता का नाम ; (सम १५२) ।

अम्महे (शौ) अ. हर्ष-सूचक अव्यय ; (हे ४, २८४) ।

अम्मा स्त्री (**दे अम्बा**) माता; मॉं ; (दे १, ५) । °**पिइ** , °**पिउ** , °**पियर**, °**पीइ** पुंव [°**पितृ**] मॉं-बाप, माता-पिता ; (वव ३ ; कप्प; सुर ३, ८३ ; ठा ३, १; सुर ३, ८८ ; ७, १७०) । °**पेइय** वि [°**पैतृक**] मॉं-बाप-संबन्धी ; (भग १, ७) ।

अम्माइआ स्त्री [**दे**) अनुसरण करने वाली स्त्री, पीछे २ जाने वाली स्त्री (दे १, २२) ।

अम्मो अ [ ] १ आश्चर्य-सूचक अव्यय ; (हे २, २०८ ; स्वप्न २६) । २ माता का संबोधन, हे मॉं ; (उवा ; कुमा) ।

अम्मोस वि [**अमर्ष्य**] अक्षम्य, क्षमा के अयोग्य ; (सुपा ४८७) ।

अम्ह स [**अस्मत्**] हम, निज, खुद ; (हे २, ६६ ; १४२) । °**केर**, °**क्केर**, °**च्चय** वि [°**ीय**] अस्मदीय, हमारा ; (हे २, ६६ ; सुपा ४६६) ।

अम्हत्त वि [**दे**] प्रमृष्ट, प्रमार्जित ; (षड्) ।

अम्हार, **अम्हारय** } (अप) वि [**अस्मदीय**] हमारा ; (षड् ; कुमा) ।

अम्हारिच्छ वि [**अस्मादृक्ष**] हमारे जैसा ; (प्रामा) ।

अम्हारिस वि [**अस्मादृश**] हमारे जैसा; (हे १, १४२; षड्) ।

अम्हेच्चय वि [**आस्माक**] अस्मदीय, हमारा ; (कुमा ; हे २, १४६) ।

अम्हो अ [**अहो**] आश्चर्य-सूचक अव्यय ; (षड्) ।

अय पुं [**अग**] १ पहाड़, पर्वत ; २ सॉंप, सर्प ; ३ सूर्य, सूरज ; (श्रा २३) ।

अय पु [**अज**] १ छाग, बकरा ; (विपा १, ४) । २ पूर्व भाद्रपदा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३) । ३ महादेव ; ४ विष्णु , ५ रामचन्द्र ; ६ ब्रह्मा ; ७ कामदेव ; (श्रा २३) । ८ महाग्रह-विशेष ; (ठा ६) । ६ बीजोत्पादक शक्ति से रहित धान्य ; (पउम ११, २५) । °**करक** पु [°**करक**] एक महाग्रह का नाम ; (ठा २, ३) । °**वाल** पुं [°**पाल**] आभीर ; (श्रा २३) ।

अय पुं [**अय**] १ गमन, गति ; (विसे २७६३; श्रा २३) । २ लाभ, प्राप्ति, ३ अनुभव ; (विसे) । ४ न. पुण्य ; (ठा १०) । ५ भाग्य, नसीब; (श्रा २३) ।

अय न [**अक**] १ दुःख ; २ पाप ; (श्रा २३) ।

अय न [**अयस्**] लोहा, लोह ; (ओघ ६२) । °**आगर** पुं [°**आकर**] १ लोहे की खान ; (निचू ५) । २ लोहे का कारखाना ; (ठा ८) । °**कंत** °**क्खंत** पुं [°**कान्त**] लोह-चुम्बक; (आवम) । °**कडिल्ल** न [**दे** °**कडिल्ल**] कटाह ; (आव) । °**कुंडी** स्त्री [°**कुण्डी**] लोहे का भाजन-विशेष ; (विपा १, ६) । °**कोट्ठय** पुं [°**कोष्ठक**] लोहे का कुशूल, लोहे का गोला , " पोट्टं अयकोट्ठआ व्व वट्टं" (उवा) । °**गोलय** पुं [°**गोलक**] लोहे का गोला ; (श्रा १६) । °**दव्वी** स्त्री [°**दर्वी**] लोहे की कड़छी , जिसमे दाल, कढी आदि हलाया जाता है , (दे २, ७) । °**पाय** न [°**पात्र**] लोहे का भाजन । °**सलागा** स्त्री [°**शलाका**] लोहे की सलाई , (उप २११ टी) ।

अय सक [**अय्**] १ गमन करना, जाना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । वकृ—**अयमाण** , (सम ६३) ।

अयंछ सक [**कृष्**] १ खींचना । २ जोतना, चास करना । ३ रेखा करना । अयंछइ ; (हे ४, १८७) ।

अयंछिर वि [**कर्षिन्**] कर्षण-शील, खींचने वाला , (कुमा) ।

(d) $2x - 3y = 0$

अयंड पु [**अकाण्ड**] १ अनुचित समय ; (महा) । २ अकस्मात्, हठात् ; (पउम ५, १६४, से ६,४४; गउड) । ३ क्रिवि. अनधारा, अतर्कित ; (पाअ) ।

अयंत वकृ [**आयत्**] आता हुआ, प्रवेश करता हुआ ; (आवम) ।

अयंपिर वि [**अजल्पितृ**] नहीं बोलने वाला, मौनी , (पि २९६; ५९६) ।

अयंपुल पुं [**अयंपुल**] गो-शालक का एक शिष्य ; (भग ८, ५)

अयंस पुं [**आदर्श**] दर्पण, काँच । °**मुह** पुं [°**मुख**] १ इस नाम का एक द्वीप ; २ द्वीप-विशेष का निवासी , (इक) ।

अयंसंधि वि [**इदंसंधि**] उपयुक्त कार्य को यथासमय करने वाला ; (आचा) ।

अयक्ख } **अयग** } पु [**दे**] दानव, असुर ; (दे १, ६) ।

अयगर पुं [**अजगर**] अजगर, मोटा साँप , (पण्ह १, १ ; पउम ६३, ५४) ।

अयड पु [**दे. अवट**] कूप, कुँआ , (दे १, १८) ।

अयण न [**अतन**] सतत होना, निरन्तर होना ; (विसे ३५७८) ।

अयण न [**अयन**] १ गमन ; २ प्राप्ति, लाभ ; (विसे ८३) । ३ ज्ञान, निर्णय ; (विसे ८३) । ४ गृह, मन्दिर " चंडियायणं " (स ४३५) । ५ वि प्रापक, प्राप्त करने वाला ; (विसे ९६०) । ६ पुंन. वर्ष का आधा भाग, जिसमें सूर्य दक्षिण से उत्तर में या उत्तर से दक्षिण में जाता है ; ((ठा २, ४) ;

" एक्के अअणे दिअहा, बीए रअणीओ होंति दोहाओ ।
विरहाअणो अउव्वो, इत्थ दुवे च्चेअ वड्ढति "
(गा ८४६) ।

अयण न [**अदन**] १ भक्षण ; २ खुराक, भोजन ; (स १३० ; उर ८, ७) ।

अयणु वि [**अज्ञ**] अजान, मूर्ख ; (सुर ३, १६६) ।

अयणु वि [**अतनु**] स्थूल, मोटा, महान् ; (सण) ।

अयतंचिअ वि [**दे**] पुष्ट, उपचित; (दे १, ४७) ।

अयर वि [**अजर**] वृद्धावस्था-रहित " अयरामर ठाणं " (पडि; उव) ।

अयर पुंन [**अतर**] १ सागर, समुद्र ; (दं २८) । २ समय का मान-विशेष, सागरोपम ; (संग ३१, २५ ; धण ४३) । ३ वि. तरने को अशक्य ; (वृह १) । ४ असमर्थ, अशक्त ; (निचू १) । ५ ग्लान, बिमार ; (वृह १) ।

अयरामर वि [**अजरामर**] १ जरा और मरण से रहित ; (नव २) । २ न मुक्ति, मोक्ष ; (पउम ८, १२७) ।

अयल देखो **अचल=अचल** ; (पाअ ; गउड; उप पृ १०५, अंत ३ ; पउम ८५, ४; सम ८८ ; कप्प ; सम १६) ।

अयला देखो **अचला**; (पउम १२०, १५६) ।

अयस देखो **अजस** ; (गउड ; प्रासू २३; १५३ , गा १७८) ।

अयसि वि [**अयशस्विन्**] अजसी, यशो-रहित, कीर्ति-शून्य; (गउड) ।

अयसि } **अयसी** } स्त्री [**अतसी**] धान्य-विशेष, अलसी ; (भग; ठा ७ ; णाया १, ५) ।

अया स्त्री [**अजा**] १ बकरी ; २ माया, अविद्या ; ३ प्रकृति, कुदरत; (हे ३, ३२;१३) । °**किवाणिज्ज** पुं [°**कृपाणीय**] न्याय-विशेष, जैसे बकरी के गले पर अनधारी छुरी पडती है उस माफिक अनधारा किसी कार्य का होना; (आचा)। °**पाल** पुं [°**पाल**] आभीर, बकरी चराने वाला ; (स २६०) । °**वय** पुं [°**व्रज**] बकरी का वाडा ; (भग १६, ३) ।

अयागर देखो **अय-आगर**; (ठा ८) ।

अयाण न [**अज्ञान**] ज्ञान का अभाव ; (सत्त ६३) ।

अयाण वि [**अज्ञ, अज्ञान**] अजान, अज्ञानी, मूर्ख , (ओघ ७४ ; पउम २२, ८३ ; गा २७५ ; दे ७, ७३) ।

अयाणअ वि [**अज्ञायक**] ऊपर देखो ; (पाअ, भवि) ।

अयाणंत देखो **अजाणंत** ; (ओघ ११) ।

अयाणमाण देखो **अजाणमाण** ; (नव ३६) ।

अयाणिय देखो **अजाणिय** ; (उप ७२८ टी) ।

अयाणुय देखो **अजाणुय** ; (सुर ३, १६८ , सुपा ५४३) ।

अयार पुं [**अकार**] 'अ' अक्षर; (विसे ४७८) ।

अयाल पुं [**अकाल**] अयोग्य समय, अनुचित काल, (पउम २२, ८५) ।

अयालि पुं [**दे**] दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस ; (दे १, १३) ।

अयालिय वि [**अकालिक**] आकस्मिक, अकाण्डोत्पन्न, " पडउ पडउ एयस्स हत्थतले अयालिया विज्जू " (रंभा) ।

अयि देखो **अइ=अयि** , (हे २, २१७) ।

अयुजरैवइ स्त्री [**दे**] अचिर-युवति, नवोढा, दुलहिन ; (पड्) ।
अयोमय देखो **अओ-मय** ; (अंत १६) ।
अय्यावत्त (शौ) पुं [**आर्यावर्त**] भारत, हिन्दुस्थान ; (कुमा) ।
अय्युण (म) देखो **अज्जुण** ; (हे ४, २६२) ।
अर पुं [**अर**] १ धूरी, पहिये का बीचका काष्ठ; २ अठारहवाँ जिनदेव और सातवाँ चक्रवर्ती राजा; " सुमिणे अरं महरिहं पासइ जणणी अरो तम्हा " (आव २ ; सम ५३ ; उत्त १८) । ३ समय का एक परिमाण, कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा ; (ती २१) ।
°**अर** पुं [°**कर**] १ किरण ; (गा ३४३ ; से १, १७) । हस्त; हाथ ; (से १, २८) । ३ शुल्क, चुंगी ; (से १, २८) ।
अरइ स्त्री [**अरति**] १ बेचैनी ; (भग ; आचा ; उत्त २)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] अरति का हेतु-भूत कर्म-विशेष ; (ठा ६) । °**परिसह, परीसह** पुं (°**परिषह, °परीषह**) अरति को सहन करना; (पंच ८) । °**मोहणिज्ज** न [°**मोह-नीय**] अरति का उत्पादक कर्म-विशेष ; (कम्म १) । °**रइ** स्त्री [°**रति**] सुख-दुःख ; (ठा १) ।
°**अरंग** देखो **तरंग** ; (से २, २६) ।
अरंजर पुंन [**अरञ्जर**] घड़ा, जल-घट ; (ठा ४, ४) ।
°**अरक्ख** देखो **वरक्ख** ; (से ६, ४४) ।
अरक्खरी स्त्री [**अराक्षरी**] नगरी-विशेष ; (आक) ।
अरग देखो **अर** ; (पण्ह २, ४ ; भग ३, ५) ।
अरज्झिय वि [**अरहित**] निरन्तर, सतत " अरज्झि-याभितावा " (सूअ १, ५, १) ।
अरडु पुं [**अरटु**] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी) ।
अरण न [**अरण**] हिंसा ; (उव) ।
अरणि पुं [**अरणि**] १ वृक्ष-विशेष ; २ इस वृक्ष की लकड़ी, जिसको घिसने पर अग्नि जल्दी पैदा होती है; (आवम; गाया १, १८) ।
अरणि पुंस्त्री [**दे**] १ रास्ता, मार्ग ; २ पङ्क्ति, कतार ; (षड्) ।
अरणिया स्त्री [**अरणिका**] वनस्पति-विशेष ; (आचा)।
अरणेट्टय पुं [**दे. अरणेटक**] पत्थरों के टुकडों से मिली हुई सफेद मिट्टी ; (जी ३) ।
अरण्ण न [**अरण्य**] वन, जंगल ; (हे १, ६६) ।
°**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] देव-विमान विशेष ; (सम ३९) । °**साण** पुं [°**श्वन्**] जंगली कुत्ता; (कुमा) ।
अरण्णय वि [**आरण्यक**] जंगली, जगल-वासी ; (अभि ५२) ।
अरत्त वि [**अरक्त**] राग-रहित, नीराग ; (आचा) ।
अरन्न देखो **अरण्ण** ; (कप्प ; उव) ।
अरमंतिया स्त्री [**अरमन्तिका**] अ-रमणता, कार्य में अत-त्परता ; (उवा) ।
अरय देखो **अर** ; (खेत्त १०८) ।
अरय वि [**अरजस्**) १ रजोगुण-रहित ; (पउम ६, १४६) । २ एक महाग्रह का नाम ; (ठा २, ३) । ३ वि. धूली-रहित, निर्मल ; (कप्प) । ४ न. पांचवें देव-लोक का एक प्रतर ; (ठा ६) । ५ रजोगुण का अभाव , " अरो य अरयं पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं " (उत्त १८) ।
अरय वि [**अरत**] अनासक्त, निःस्पृह ; (आचा) ।
अरया स्त्री [**अरजा**] कुमुद-नामक विजय की राजधानी ; (जं ४) ।
अरयणि पुं [**अरत्नि**] परिमाण-विशेष, खुली अंगुली वाला हाथ ; (ठा ४, ४) ।
अरर न [**अरर**] १ युद्ध ; २ ढकना । °**कुरी** स्त्री [°**कुरी**] नगरी-विशेष , (धम्म ६ टी) ।
अररि पुंन [**अररि**] किवाड, द्वार ; (प्रामा) ।
अरल न [**दे**] १ चीरी, कीट-विशेष ; २ मशक, मच्छड़ ; (दे १, ५३) ।
अरलाया स्त्री [**दे**] चीरी, कीट-विशेष ; (दे १, २६) ।
अरलु देखो **अरडु** ; (पउम ४२, ८) ।
अरविंद न [**अरविन्द**] कमल, पद्म ; (पण्ह २, ४) ।
अरविंदर वि [**दे**] दीर्घ, लम्बा ; (दे १, ४५) ।
अरस पुं [**अरस**] रस-रहित, नीरस ; (गाया १, ५) ।
अरस पुं [**अर्शस्**] व्याधि-विशेष, बवासीर ; (श्रा २२)।
अरह वकृ [**अर्हत्**] १ पूजा के योग्य, पूज्य ; (षड् ; हे २, १११) । २ पुं. जिन-देव, तीर्थंकर ; (सम्म ६७) । °**मित्त** पु [°**मित्र**] एक व्यापारी का नाम ; (गच्छ २)।
अरह वि [**अरहस्**] १ प्रकट । २ जिससे कुछ भी छिपा न हो । ३ पुं. जिन-देव, सर्वज्ञ ; (ठा ४, १ ; ६) ।
अरह वि [**अरथ**] परिग्रह-रहित ; (भग) ।

अरहंत वकृ [**अर्हत्**] १ पूजा के योग्य, पूज्य ; (षड् ; हे २, १११ ; भग ८, ५)। २ पुं. जिन भगवान्, तीर्थंकर-देव ; (आचा; ठा ३, ४)।

अरहंत वि [**अरहोन्तर्**] १ सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाला। २ पुं. जिन भगवान् ; (भग २, १)।

अरहंत वि [**अरथान्त**] १ निःस्पृह, निर्मम ; २ पुं. जिन-देव ; (भग)।

अरहंत वकृ [**अरहयत्**] १ अपने स्वभाव को नहीं छोडने वाला ; २ पुं. जिनेश्वर देव ; (भग)।

अरहट्ट पुं [**अरघट्ट**] अरहट, पानी का चरखा, पानी निकालने का यन्त्र-विशेष ; (गा ४९० ; प्रासू ५५ ; "भमिश्रो कालमणंतं अरहट्टघडिव्व जलमज्झे" (जीवा १)।

अरहण्णय पुं [**अरहन्नक**] एक व्यापारी का नाम ; (णाया १, ८)।

अराइ पुं [**अराति**] रिपु, दुश्मन ; (कुमा)।

अराइ स्त्री [**अरात्रि**] दिन, दिवस ; (कुमा)।

अरागि वि [**अरागिन्**] राग-रहित; वीतराग ; (पउम ११७, ४१)।

अरि पुं [**अरि**] दुश्मन, रिपु ; (पउम ७३, १९)। °**छव्वग्ग** पुं [°**षड्वर्ग**] छः आन्तरिक शत्रु—काम, क्रोध, लोभ, मान, मद, हर्ष ; (सूअ १, १, ४)। °**दमण** वि [°**दमन**] १ रिपु-विनाशक । २ पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ७)। ३ एक जैन मुनि जो भगवान् अजितनाथ के पूर्वजन्म के गुरु थे, (पउम २०, ७)। °**दमणी** स्त्री [°**दमनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४५)। °**विद्धंसी** स्त्री [°**विध्वंसिनी**] रिपु का नाश करने वाली एक विद्या ; (पउम ७, १४०)। °**संतास** पुं [°**संत्रास**] राक्षस वंश में उत्पन्न लड्का का एक राजा ; (पउम ५, २६५)। °**हंत** वि [°**हन्तृ**] १ रिपु-विनाशक ; २ पुं जिन-देव ; (आवम)।

अरिस देखो **अरस** ; (णाया १, १३)।

अरिसल्ल } वि [**अर्शस्वत्**] बवासीर रोग वाला ;
अरिसिल्ल } (पाअ ; विपा १, ७)।

अरिह वि [**अर्ह**] १ योग्य, लायक ; (सुपा २६९ ; प्राप्र)। २ जिन-देव ; (औप)।

अरिह सक [**अर्ह**] १ योग्य होना। २ पूजा के योग्य होना। ३ पूजा करना। अरिहइ ; (महा)। अरिहेति ; (भग)।

अरिह देखो **अरह**=अर्हत् ; (हे २, १११ ; षड्)। °**दत्त**, °**दिण्ण** पुं [°**दत्त**] जैन मुनि-विशेष का नाम, (कप्प)।

अरिहंत देखो **अरहंत** = अर्हत् ; (हे २, १११ ; षड् ; णाया १, १)। °**चेइय** न [°**चैत्य**] १ जिन-मन्दिर, (उवा ; आचू)। °**सासण** न [°**शासन**] १ जैन आगम-ग्रन्थ ; २ जिन-आज्ञा ; (पगह २, ५)।

°**अरु** देखो **तरु** ; (से २, १९; ५, ८५)।

अरुग न [**दे. अरुक**] व्रण, घाव, "अरुगं इहरा कुत्थइ" (वृह ३)।

अरुण पुं [**अरुण**] १ सूर्य, सूरज ; (से ३, ६)। २ सूर्य का सारथि ; ३ संध्याराग, सन्ध्या की लाली ; (से ८, ७)। ४ द्वीप-विशेष ; ५ समुद्र-विशेष, "गंतूण होइ अरुणो, अरुणो दीवो तओ उदही" (दीव)। ६ एक ग्रह-देवता का नाम ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ७ गन्धावती-पर्वत का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३—पत्र ६९))। ८ देव-विशेष ; (णंदि)। ९ रक्त रंग, लाली , (गउड)। १० न. विमान-विशेष ; (सम १४)। ११ वि. रक्त, लाल ; (गउड)। °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान-विशेष ; (उवा)। °**कील** न [°**कील**] देव-विमान-विशेष ; (उवा)। °**गंगा** स्त्री [°**गङ्गा**] महाराष्ट्र देश की एक नदी; (ती २८)। °**गव** न [°**गव**] देव-विमान-विशेष ; (उवा)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] एक देव-विमान का नाम ; (उवा)। °**प्पभ**, °**प्पह** न [°**प्रभ**] इस नाम का एक देव-विमान ; (उवा)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] एक देवता का नाम ; (सुज्ज १९)। °**भूय** न [°**भूत**] एक देव-विमान ; (उवा)। °**महाभद्द** पुं [°**महाभद्र**] देव-विशेष ; (सुज्ज १९)। °**महावर** पुं [°**महावर**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष , (इक)। °**वडिंसय** न [°**ावतंसक**] एक देव-विमान ; (उवा)। °**वर** पुं [°**वर**] १ द्वीप विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (सुज्ज १९)। °**वरोभास** पुं [°**वरावभास**] १ द्वीप-विशेष , २ समुद्र-विशेष; (सुज्ज १९)। °**सिट्ठ** न [°**शिष्ट**] एक देव-विमान ; (उवा)। °**ाभ** न [°**ाभ**] देव-विमान-विशेष ; (उवा)।

अरुण न [**दे**] कमल, पद्म ; (दे १, ८)।

अरुणिय वि [**अरुणित**] रक्त, लाल , (गउड)।

अरुणुत्तरवडिंसग न [**अरुणोत्तरावतंसक**] इस नाम का एक देव-विमान ; (सम १४)।
अरुणोदग पुं [**अरुणोदक**] समुद्र-विशेष ; (सुज्ज १६)।
अरुणोदय पुं [**अरुणोदय**] समुद्र-विशेष , (भग)।
अरुणोववाय पुं [**अरुणोपपात**] ग्रन्थ-विशेष का नाम ; (णंदि)।
अरुय वि [**अरुष्**] व्रण, घाव ; (सूत्र १, ३, ३)।
अरुय वि [**अरुज्**] नीरोगी, रोग-रहित ; (सम १ ; अजि २१)।
अरुह देखो **अरह**=अर्हत् ; (हे २, १११ ; षड् ; भवि)।
अरुह वि [**अरुह**] १ जन्म-रहित ; २ पुं. मुक्त आत्मा ; (पव २७५ ; भग १, १)। ३ जिन-देव ; (पउम ५, १२२)।
अरुह देखो **अरिह**=अर्ह्। अरुहसि ; (अभि १०४)। वक्ट—**अरुहमाण** ; (षड्)।
अरुह वि [**अर्ह**] योग्य ; (उत्तर ८४)।
अरुहंत देखो **अरहंत**=अर्हत् ; (हे २, १११ ; षड्)।
अरुहंत वि [**अरोहत्**] १ नहीं उगता हुआ, जन्म नहीं लेता हुआ ; (भग १, १)।
अरूव वि [**अरूप**] रूप-रहित, अमूर्त ; (पउम ७५, २६)।
अरूवि वि [**अरूपिन्**] ऊपर देखो ; (ठा ५, ३ ; आचा ; पण्ण १)।
अरे अ [**अरे**] १—२ संभाषण और रति-कलह का सूचक अव्यय ; (हे २, २०१ ; षड्)।
अरोअ अक [**उत्+लस्**] उल्लास पाना, विकसित होना। अरोअइ ; (हे ४, २०२ ; कुमा)।
अरोअअ पुं [**अरोचक**] रोग-विशेष, अन्न की अरुचि ; (श्रा २२)।
अरोइ वि [**अरोचिन्**] अरुचि वाला, रुचि-रहित, " अरोइ अत्थे कहिए विलावो " (गोय ७)।
अरोग वि [**अरोग**] रोग-रहित ; (भग १८, १)। °**या** स्त्री [°**ता**] आरोग्य, नीरोगता ; (उप ७२८ टी)।
अरोगि वि [**अरोगिन्**] नीरोग, रोग-रहित। °**या** स्त्री [°**ता**] आरोग्य, तंदुरस्ती ; (महा)।
अरोस वि [**अरोष**] १ गुस्सा-रहित। २—३ पुं. एक म्लेच्छ देश और उसमें रहने वाली म्लेच्छ-जाति ; (पण्ह १, १)।
अल न [**अल**] १ विच्छू के पुच्छ का अग्र भाग,
" अलमेव विच्छुआणं, मुहमेव अहीणं तह य मंदस्स।
दिट्ठि-विषं पिसुणाणं, सव्वं सव्वस्स भय-जणयं "
(प्रासू १६)।
२ अला-देवी का एक सिंहासन ;(णाया २)। ३ वि. समर्थ ; (आचा)। °**पट्ट** न [°**पट्ट**] विच्छू के पूंछ जैसे आकार वाला एक शस्त्र ; (विपा १, ६)।
°**अल** देखो **तल** ; (गा ७५ ; से १, ७८)।
अलं अ [**अलम्**] १ पर्याप्त, पूर्ण ; " अलमाणंदं जणं-तीए " (सुर १३, २१) । २ प्रतिषेध, निवारण, बस ; (उप २, ७)।
अलंकर सक [**अलं+कृ**] भूषित करना, विराजित करना। अलंकरेंति ; (पि ५०६)। वकृ—**अलंकरंत** ; (माल १४३)। संकृ—**अलंकरिअ** ; (पि ५८१)। प्रयो, कर्म—अलंकरावीयउ ; (स ६४)।
अलंकरण न [**अलङ्करण**] १ आभूषण, अलंकार; (रयण ७४, भवि)। २ वि. शोभा-कारक ; " मज्झमलोअस्स अलंकरणिं सुलोअणिं " (विक्र १४)।
अलंकरिय वि [**अलंकृत**] सुशोभित, विभूषित, " किं नयरमलंकरियं जम्ममहेणं तए महापुरिस। " (सुपा ५८४ ; सुर ४, ११८)।
अलंकार पुं [**अलंकार**] १ भूषण, गहना; (औप ; राय)। २ भूषा, शोभा ; (ठा ४, ४)। °**सहा** स्त्री [°**सभा**] भूषा-ग्रह, शृङ्गार-घर ; (इक)।
अलंकारिय पुं [**अलंकारिक**] नापित, नाई, हजाम ; (णाया १, १३)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] हजामत, चौर-कर्म ; (णाया १, १३)। °**सहा** स्त्री [°**सभा**] हजामत बनाने का स्थान ; (णाया १, १३)।
अलंकिय वि [**अलंकृत**] १ विभूषित, सुशोभित ; (कप्प; महा)। २ न. संगीत का एक गुण ; (जीव ३)।
अलंकुण देखो **अलंकर**। अलंकुणंति; (रयण ५२)।
अलंघ वि [**अलङ्घ्य**] १ उल्लंघन करने को अयोग्य ; (सुर १, ४१)। २ उल्लंघन करने को अशक्य ; (उप ५६७ टी)।
अलंघणिय } वि [**अलङ्घनीय**] ऊपर देखो ; (महा ;
अलंघणीय } सुपा ६०१ ; पि ६६ ; नाट)।
अलंप पुं [**दे**] कुक्कुट, मुर्गा ; (दे १, १३)।

(d) $2x - 3y = 0$

अवक्कम अक [अप + क्रम्] १ पीछे हटना । २ बाहर
निकलना । अवक्कमइ ; (महा, कप्प) । वकृ—**अवक्क-**
ममाण ; (विपा १, ६) । संकृ—**अवक्कमइत्ता,**
अवक्कम्म ; (कप्प, वव १) ।

अवक्कम सक [अव + क्रम्] जाना । अवक्कमइ ;
(भग) । संकृ—**अवक्कमित्ता**; (भग) ।

अवक्कमण न [अपक्रमण] १ बाहर निकलना ; (ठा
५, २) । २ पलायन, भागना ; " निग्गमणमवक्कमणं
निस्सरणं पलायणं च एगट्ठा " (वव १०) । ३ पीछे
हटना ; (गाया १, १) ।

अवक्कय पुं [अवक्रय] भाड़ा, भाटि ; (वृह १) ।

अवक्करस पुं [दे] दारु, मद्य ; (दे १, ४६ ; पाअ) ।

अवक्करिस } [अपकर्ष] हानि, अपचय; (विसे १७६६;
अवक्कास } भग १२, ५) ।

अवक्कास पु [अवकर्ष] ऊपर देखो , (भग १२, ५) ।

अवक्कास पुं [अप्रकाश] अन्धकार, अँधेरा; (भग
१२, ५) ।

अवक्कोस पुं [अवक्रोश] मान, अहंकार ; (सम ७१) ।

अवक्ख सक [दृश्] देखना । अवक्खइ ; (षड्) ।
अवक्खए ; (भवि) । वकृ—**अवक्खंत** ; (कुमा) ।

अवक्खंद पु [अवस्कन्द] १ शिविर, छावनी, सैन्य का
पड़ाव ; २ नगर का रिपु-सैन्य द्वारा वेष्टन, घेरा ; (हे
२, ४ ; स ४१२) ।

अवक्खारण न [अपक्षारण] १ निर्भर्त्सना, कठोर वचन;
२ महानुभूति का अभाव ; (पण्ह १, २) ।

अवक्खेव पु [अवक्षेप] विघ्न, बाधा ; (विपा
१, ६) ।

अवक्खेवण न [अवक्षेपण] १ बाधा ; अन्तराय ; २
क्रिया-विशेष, नीचे जाना ; (आवम; विसे २४६२) ।

अवक्खेर सक [दे] १ खिन्न करना । २ तिरस्कार करना ।
अवक्खेरइ ; (भवि) । वकृ—**अवक्खेरंत** ; (भवि) ।

अवगइ स्त्री [अपगति] १ खराब गति ; २ गोपनीय
स्थान ; (सुपा ३४५) ।

अवगंड न [अवगण्ड] १ सुवर्ण ; २ पानी का फेन ;
(सूअ १, ६) ।

अवगंतव्व देखो **अवगम**=अवगम् ।

अवगच्छ सक [अव + गम्] जानना । अवगच्छइ ;
(महा) । अवगच्छे ; (स १५२) ।

अवगच्छ अक [अप + गम्] दूर होना ; निकल जाना ।
अवगच्छइ ; (महा) ।

अवगण } सक [अव + गणय्] अनादर करना, तिरस्कारना ।
अवगण्ण } वकृ—**अवगणंत**; (श्रा २७) । संकृ—
अवगण्णिय ; (आरा १०५) ।

अवगणणा स्त्री [अवगणना] अवज्ञा, अनादर ; (दे
१, २७) ।

अवगणिय } वि [अवगणित] अवज्ञात, तिरस्कृत;
अवगण्णिय } (दे ; जीव १) ।

अवगद वि [दे] विस्तीर्ण, विशाल ; (दे १, ३०) ।

अवगन्न देखो **अवगण** । अवगन्नइ ; (भवि) । संकृ—
अवगन्निवि ; (भवि) ।

अवगन्निय देखो **अवगण्णिय** ; (सुपा ४२१ ; भवि) ।

अवगम पुं [अपगम] १ अपसरण ; (सुपा ३०२) ।
२ विनाश ; (स १५३, विसे ११८२) ।

अवगम सक [अव + गम्] १ जानना, २ निर्णय करना ।
संकृ—**अवगमित्तु** , (सार्ध ६३) । कृ—**अवगं-**
तव्व ; (स ५२६) ।

अवगम पुं [अवगम] १ ज्ञान ; २ निर्णय, निश्चय ;
(विसे १८०) ।

अवगमण न [अवगमन] ऊपर देखो ; (स ६७०, विसे
१८६ ; ४०१) ।

अवगमिअ } वि [अवगत] १ ज्ञात, विदित ; (सुपा
अवगय } २१८) । २ निश्चित, अवधारित ; (दे
दे ३, २३ ; स १४०) ।

अवगय वि [अपगत] गुजरा हुआ, विनष्ट ; (गाया
१, १ ; दस १०, १६) ।

अवगर सक [अप + कृ] अपकार करना, अहित करना ।
अवगरेइ ; (स ६३६) ।

अवगरिस देखो **अवक्करिस** ; (विसे १५८३) ।

अवगल वि [दे] आक्रान्त ; (षड्) ।

अवगल्ल वि [अवग्लान] बिमार ; (ठा २, ४) ।

अवगाढ देखो **ओगाढ** ; (ठा १ ; भग ; स १७२) ।

अवगाढु वि [अवगाहितृ] अवगाहन करने वाला ; (विसे
२८२२) ।

अवगार पुं [अपकार] अपकार, अहित-करण ; (सुर
२, ४३) ।

अवगास पुं [**अवकाश**] १ फुरसद ; (महा) । २ जगह, स्थान ; (आवम) । ३ अवस्थान, अवस्थिति ; (ठा ४, ३) ।

अवगाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहन करना । अवगाहइ ; (सण) ।

अवगाह पुं [**अवगाह**] १ अवगाहन ; २ अवकाश ; (उत्त २८) ।

अवगाहण न [**अवगाहन**] अवगाहन " तित्थावगाहणत्थं आगंतव्वं तए तत्थ " (सुपा ५६३) ।

अवगाहणा देखो **ओगाहणा** ; (ठा ४, ३ ; विसे २०८८) ।

अवगिंचण न [**दे. अवचेचन**] पृथक्करण ; (उप पृ ६६) ।

अवगिज्झ देखो **ओगिज्झ** । संकृ—**अवगिज्झिय** ; (कप्प) ।

अवगीय वि [**अवगीत**] निन्दित ; (उप पृ १८१) ।

अवगुंठण देखो **अवउंठण** ; (दे १, ६) ।

अवगुंठिय वि [**अवगुण्ठित**] आच्छादित ; (महा) ।

अवगुण पुं [**अवगुण**] दुर्गुण, दोष ; (हे ४, ३६५) ।

अवगुण सक [**अव+गुणय्**] खोलना, उद्घाटन करना । अवगुणेज्जा ; (आचा २, २, २, ४) । वकृ—**अवगुणंत** ; (भग १५) ।

अवगूढ वि [**अवगूढ**] १ आलिंगित ; (हे २, १६८) । २ व्याप्त ; (गाया १, ८) ।

अवगूढ न [**दे**] व्यलीक, अपराध ; (दे १, २०) ।

अवगूहण न [**अवगूहन**] आलिंगन ; (सुर १४, २२० ; पउम ७४, २४) ।

अवग्ग वि [**अव्यक्त**] १ अस्पष्ट । २ पुं. अगीतार्थ, शास्त्रानभिज्ञ साधु ; (उप ८७४) ।

अवग्गह देखो **उग्गह** ; (पव ३०) ।

अवग्गहण न [**अवग्रहण**] देखो **उग्गह** ; (विसे १८०) ।

अवच देखो **अवय**=अवच ; (भग) ।

अवचइय वि [**अपचयिक**] अपकर्ष-प्राप्त, ह्रास वाला ; (आचा) ।

अवचय पुं [**अपचय**] ह्रास, अपकर्ष ; (भग ११, ११ ; स २८२) ।

अवचय पुं [**अवचय**] इकट्ठा करना ; (कुमा) ।

अवचयण न [**अवचयन**] ऊपर देखो ; (दे ३, ५६) ।

अवचि अक [**अप+चि**] हीन होना, कम जाना । अवचिज्जइ ; (भग) । अवचिज्जंति ; (भग २५, २) ।

अवचि } सक [**अव+चि**] इकट्ठा करना (फूल आदि
अवचिण } को वृक्ष से तोड़ कर) । अवचिणइ ; (नाट) । भवि—अवचिणिस्स ; (पि ५३१) । हेकृ—**अवचिणेदुं** (शौ) ; (पि ५०२) ।

अवचिय वि [**अपचित**] हीन, ह्रास-प्राप्त ; (विसे ८६७) ।

अवचिय वि [**अवचित**] इकट्ठा किया हुआ ; (पाअ) ।

अवचुण्णिय वि [**अवचूर्णित**] तोड़ा हुआ, चूर २ किया हुआ ; (महा) ।

अवचुल्ली स्त्री [**अवचुल्ली**] चूल्हे का पीछला भाग ; (पिंड) ।

अवचूल देखो **ओऊल** ; (गाया १, १६—पत्र २१६) ।

अवच्च न [**अपत्य**] संतान, बचा ; (कप्प ; आव १ ; प्रासू ८३) । °**व** वि [°**वत्**] संतान वाला ; (सुपा १०६) ।

अवच्चीय वि [**अपत्यीय**] सतानीय, संतान-संबन्धी ; (ठा ६) ।

अवच्छुण्ण न [**दे**] क्रोध से कहा जाता मार्मिक वचन ; (दे १, ३६) ।

अवच्छेय पुं [**अवच्छेद**] विभाग, अंश ; (ठा ३, ३) ।

अवछंद वि [**अपच्छन्दस्क**] छन्द के लक्षण से रहित, छन्दो-दोष-दुष्ट ; (पिंग) ।

अवजस पुं [**अपयशस्**] अपकीर्ति ; (उप पृ १८७) ।

अवजाण सक [**अप+ज्ञा**] १ अपलाप करना । " वालस्स मंदयं वीयं जं च कडं अवजाणई भुज्जो " (सूअ १, ४, १, २६) ।

अवजाय पुं [**अपजात**] पिता की अपेक्षा से हीन वैभव वाला पुत्र ; (ठा ४, १) ।

अवजीव वि [**अपजीव**] जीव-रहित, मृत, अ-चेतन ; (गउड) ।

अवजुय वि [**अवयुत**] पृथग्भूत, भिन्न ; (वव ७) ।

अवज्ज न [**अवद्य**] १ पाप ; (पगह २, ४) । २ वि. निन्दनीय ; (सूअ १, १, २) ।

अवज्जस सक [**गम्**] जाना, गमन करना । अवज्जसइ ; (हे ४, १६२) । वकृ— **अवज्जसंत** ; (कुमा) ।

(d) $2x - 3y = 0$

अवज्जा स्त्री [अवज्ञा] अनादर ; (स ६०४) ।
अवज्झ वि [अवध्य] मारने के अयोग्य ; (गाया १, १६) ।
अवज्झस न [दे] १ कटी, कमर ; २ वि. कठिन ; (दे १, ५६) ।
अवज्झा स्त्री [अवध्या] १ अयोध्या नगरी ; (इक) । २ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) ।
अवज्झाण न [अपध्यान] बुरा चिन्तन, दुर्ध्यान ; (सुपा ५४६ ; उप ४६६ ; सम ५० ; विसे ३०१३) ।
अवज्झाय वि [अपध्यात] १ दुर्ध्यान का विषय ; २ अवज्ञात, तिरस्कृत ; (गाया १, १४) ।
अवज्झाय (अप) देखो **उवज्झाय** ; (दे १, ३७) ।
अवट्ट सक [अप+वृत्] घुमाना, फिराना । " अवट्ट अवट्ट त्ति वाहरंते कण्णहारे रज्जुपरिवत्तणुज्जुएसु निज्जामएसु अयंडम्मि चेव गिरिसिहरनिवडियं पिव विवन्नं जाणवत्तं " (स ३५५) ।
अवट्टा स्त्री [आवर्त्ता] राज-मार्ग से बाहर की जगह ; (उप ६६१) ।
अवट्ठंभ पुं [अवष्टम्भ] अवलम्बन, आश्रय ; (पउम २६, २७ ; स ३३१) ।
अवट्ठंभ सक [अव+स्तम्भ्] अवलम्बन करना, सहारा लेना । संकृ—**अवट्ठंभिअ** ; (विक ६४) ।
अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] १ अवलम्बित । २ आक्रान्त, " अवट्ठद्धा महाविसाएणं " (स ५८४) ।
अवट्ठाण न [अवस्थान] १ अवस्थिति, अवस्था । २ व्यवस्था ; (बृह ५) ।
अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ स्थिर रहा हुआ ; (भग) । २ नित्य, शाश्वत ; (ठा ३, ३) । ३ जो बढ़ना-घटना न हो ; (जीव ३) ।
अवट्ठिइ स्त्री [अवस्थिति] अवस्थान ; (ठा ३, ४ ; विसे ७५८) ।
अवठंभ सक [अव+स्तम्भ्] अवलम्बन करना । संकृ—
" पाणस मयो, सद्देण मई, योज्जेण वाहवहुयावि ।
अवठंभिऊण भणुहं वाहेणवि मुक्किया पाणा "
(वज्जा ४६) ।
अवठंभ पुं [दे] ताम्बूल, पान ; (दे १, ३६) ।
अवड पुं [अवट] कूप, कूँआ ; (गउड) ।
अवड } **अवडअ** } पुं [दे] १ कूप, कुँआ ; २ आराम, बगीचा ; (दे १, ५३) ।
अवडअ पुं [दे] १ चञ्चा, तृण-पुरुष ; (दे १, २०) ।
अवडंक पुं [अवटङ्क] प्रसिद्धि, ख्याति, " जणकयावडंकेण निग्घिणसम्मो णाम " (महा) ।
अवडविकअ वि [दे] कूप आदि में गिर कर मरा हुआ, जिसने आत्म-हत्या की हो वह, (दे १, ४७) ।
अवडाह सक [उत्+क्रुश्] ऊंचे स्वर से रुदन करना । अवडाहेमि ; (दे १, ४७) ।
अवडाहिअ न [दे] १ ऊंचे स्वर से रोदन, (दे १, ४७) । २ वि. उत्कृष्ट ; (षड्) ।
अवडिअ वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त ; (दे १, २१) ।
अवडु पु [अवटु] कृकाटिका, घंडी, कण्ठ-मणि ; (पाअ) ।
अवडुअ पुं [दे] उदूखल, उलूखल ; (दे १, २६) ।
अवडुल्लिअ वि [दे] कूप आदि में गिरा हुआ ; (षड्) ।
अवड्ढ वि [अपार्ध] १ आधा ; (सुज्ज १०) । २ आधा दिन, " अवड्ढं पच्चक्खाइ " (पडि ; भग १६, ३) । ३ आधे से कम ; (भग ७, १ ; नव ४१) ।
°**क्खेत्त** न [°क्षेत्र] १ नक्षत्र-विशेष ; (चंद १०) । २ मुहूर्त्त-विशेष ; (ठा ६) ।
अवण पुं [दे] १ पानी का प्रवाह ; २ घर का फलहक ; (दे १, ५५) ।
अवण न [अवन] १ गमन ; २ अनुभव ; (णंदि ; विसे ८३) ।
अवणद्ध वि [अवनद्ध] १ संबद्ध, जोड़ा हुआ ; (सुर २, ७) । २ आच्छादित ; (भग) ।
अवणम अक [अव+नम्] नीचे नमना । वकृ—**अवणमंत** ; (राय) ।
अवणमिय वि [अवनत] अवनत ; (सुपा ४२६) ।
अवणमिय वि [अवनमित] नीचे किया हुआ, नमाया हुआ, (सुर २, ४१) ।
अवणय वि [अवनत] नमा हुआ ; (दस ५) ।
अवणय पु [अपनय] १ अपनयन, हटाना, (ठा ८) । २ निन्दा ; (पव १४३ ; विसे १४०३ टी) ।
अवणयण न [अपनयन] हटाना, दूर करना ; (सुपा ११ ; स ४८३ ; उप ४६६) ।

अवणि स्त्री [**अवनि**] पृथिवी, भूमि; (उप ३३६ टी) ।
अवणिंत देखो **अवणी**=अप+नी ।
अवणिंद पुं [**अवनीन्द्र**] राजा, भूप ; (भवि) ।
अवणिय देखो **अवणोय** ; " तं कुणसु चित्तनिवसणमवणिय-नीसेसदोसमलं " (विवे १३८) ।
अवणी देखो **अवणि**; (सुपा ३१०) । °**सर** पु [°**श्वर**] राजा, भूमि-पति ; (भवि) ।
अवणी सक [**अप+नी**] दूर करना, हटाना । अवणेइ, अवणेमि , (महा) । वकृ—**अवणिंत, अवणेंत** ; (निचू १ ; सुर २, ८) । कवकृ—**अवणेज्जंत** ; (उप १४६ टी) । कृ—**अवणेअ** ; (द्र ३७) ।
अवणीय वि [**अपनीत**] दूर किया हुआ ; (सुपा ५४) ।
अवणेंत देखो **अवणी**=अप+नी ।
अवणोय पुं [**अपनोद**] अपनयन, हटाना ; (विसे ६८२) ।
अवणोयण न [**अपनोदन**] अपनयन ; दूरीकरण ; (स ६२१) ।
अवण्ण वि [**अवर्ण**] १ वर्ण-रहित, रूप-रहित; (भग) । २ पुं निन्दा ; (पंचव ४) । ३ अपकीर्ति ; (ओघ १८४ भा) । °**व** वि [°**वत्**] निन्दक " तेसिं अवण्णवं वाले महामोहं पकुव्वइ " (सम ५१) । °**वाय** पुं [°**वाद**] निन्दा , (द्र २६) ।
अवण्ण न [**दे**] अवज्ञा, निरादर ; (दे १, १७) ।
अवण्णा स्त्री [**अवज्ञा**] निरादर, तिरस्कार ; (औप) ।
अवण्हअ पु [**अपह्नव**] अपलाप ; (पड्) ।
अवण्हवण न [**अपह्नवन**] अपलाप ; (आचा) ।
अवण्हाण न [**अवस्नान**] साबु आदि से स्नान करना ; (णाया १, १३ ; विपा १, १)
अवतंस देखो **अवयंस**=अवतंस ; (कुमा) ।
अवतंसिय वि [**अवतंसित**] विभूषित ; (कुमा) ।
अवतट्ठ वि [**अवतष्ट**] तनूकृत, छिला हुआ, (सूअ १, ५,२)।
अवतट्ठि देखो **अवयट्ठि**=अवतष्टि , (सूअ १, ७) ।
अवतारण न [**अवतारण**] १ उतारना, २ योजना करना; (विसे ६४०) ।
अवतित्थ न [**अपतीर्थ**] कुत्सित घाट, खराब किनारा ; (सुपा १५) ।
अवत्त वि [**अव्यक्त**] १ अ-स्पष्ट ; (विसे) । २ कम उमर वाला ; (वृह १) । ३ अ-संस्कृत ; (गच्छ १) । ४पुं. देखो **अवग्ग** ; (निचू २) ।
अवत्त वि [**अवात**] पवन-रहित ; (गच्छ १) ।
अवत्त वि [**अवाप्त**] प्राप्त, लब्ध ।
अवत्त न [**अवत्र**] आसन-विशेष ; (निचू १) ।
अवत्तय वि [**दे**] विसंस्थुल, अव्यवस्थित , (दे १, ३४)।
अवत्तव्व वि [**अवक्तव्य**] १ वचन से कहने को अशक्य, अनिर्वचनीय ; २ सप्त-भंगी का चतुर्थ भंग ; "अत्थंतरभूएहि अ नियएहि दोहिं समयमाईहि । वयणविसेसाईअं दव्वमवत्तयं पडइ " (सम्म ३६) ।
अवत्तिय न [**अव्यक्तिक**] १ एक जैनाभास मत, निह्नव-प्रचालित एक मत, २ वि. इस मत का अनुयायी, (ठा ७) ।
अवत्थंतर न [**अवस्थान्तर**] जुदी दशा, भिन्न अवस्था ; (सुर ३, २०६) ।
अवत्थग वि [**अपार्थक**] १ निरर्थक, व्यर्थ ; २ अ-संबद्ध अर्थ वाला (सूत्र वगैरः); (विसे) ।
अवत्थद्ध वि [**अवष्टब्ध**] अवलम्बन-प्राप्त, जिसको सहारा मिला हो वह ; (णाया १, १८) ।
अवत्थय वि [**अपार्थक**] निरर्थक ; (विसे ६६६ टी) ।
अवत्थरा स्त्री [**दे**] पाद-प्रहार, लात मारना ; (दे १, २२) ।
अवत्था स्त्री [**अवस्था**] दशा, अवस्थिति ; (ठा ८, कुमा) ।
अवत्थाण न [**अवस्थान**] अवस्थिति ; (ठा ४, १ ; स ६२७ ; महा ; सुर १, २)।
अवत्थाव सक [**अव+स्थापय्**] १ स्थिर करना, ठहराना । २ व्यवस्थित करना । हेकृ—**अवत्थाविदुं** ; **अवत्था-वइदुं** (शौ), (पि ५७३ ; नाट) ।
अवत्थाविद (शौ) वि [**अवस्थापित**] अवस्थित किया हुआ ; (नाट) ।
अवत्थिय देखो **अवट्ठिय** ; (महा ; स २७४) ।
अवत्थिय वि [**अवस्तृत**] फैलाया हुआ, प्रसारित ; (णाया १, ८) ।
अवत्थु न [**अवस्तु**] १ अभाव, असत्व ; (भवि ; आवम) । २ वि. निरर्थक, निष्फल ; (पण्ह १, २) ।
अवदग्ग देखो **अवयग्ग** (सूअ २, २; ५)
अवदल वि [**अपदल**] १ निःसार, सार-रहित ; २ कच्चा, अपक्व ; (ठा ४, ४) ।
अवदहण न [**अवदहन**] दम्भन, गरम लोहे की कोश आदि से चर्म (फोड़े आदि) पर दागना ; (णाया १,४) ।

(d) $2x - 3y = 0$

अवदाय वि [अवदात] १ पवित्र, निर्मल "दिणयरकरावदायं भत्तं पेहितु चक्खुणा सम्मं" (सुपा ४६१)। २ श्वेत, सफेद ; (पण्ह १, ४ ; पाअ)।
अवदार न [अपद्वार] १ छोटी खिड़की ; २ गुप्त द्वार ; (उप ६६१)।
अवदाल सक [अव+दलय्] खोलना। अवदालेइ ; (औप)। संकृ—**अवदालेत्ता** ; (औप)।
अवदालिय वि [अवदलित] विकसित, विजृम्भित ; "अवदालियपुंडरीयनयणे" (औप, पण्ह १, ४ ; उवा)।
अवदिसा स्त्री [अपदिक्] भ्रान्त दिशा ; (स ५२६)।
अवदेस देखो **अवएस** ; (अभि ७६)।
अवद्दार, **अवद्दाल** देखो **अवदार** ; (गाया १, २ ; प्रारू)।
अवद्दाहणा स्त्री. देखो **अवदहण** ; (विपा १, १)।
अवद्दुस न [दे] उलूखल आदि घर का सामान्य उपकरण, गुजराती में जिसको 'रांचरचिलु' कहते है ; (दे १, ३०)।
अवद्धंस पुं [अवध्वंस] विनाश ; (ठा ४, ४)।
अवधार सक [अव+धारय्] निश्चय करना। कृ—**अवधारियव्व** ; (पंचा ३)।
अवधारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय ; (श्रा ३०)।
अवधारिय वि [अवधारित] निश्चित, निर्णीत ; (वसु)।
अवधारियव्व देखो **अवधार**।
अवधाव सक [अप+धाव्] पीछे दौड़ना। अवधावइ ; (सण)। वकृ—**अवधावंत** ; (स २३२)।
अवधिका स्त्री [दे] उपदेहिका, दिमक ; (पण्ह १, १)।
अवधीरिय वि [अवधीरित] तिरस्कृत, अपमानित ; (बृह १, ४)।
अवधुण, **अवधूण** सक [अव+धू] १ परित्याग करना। २ अवज्ञा करना। संकृ—**अवधुणिअ, अवधूणिअ** ; (माल २३२ ; वेणी ११०)।
अवधूय वि [अवधूत] १ अवज्ञात, तिरस्कृत ; (ओघ १८ भा. टी)। २ विक्षिप्त ; (आव ४)।
अवनिद्दय पुं [अपनिद्रक] उजागर, निद्रा का अभाव ; (सुर ६, ८३)।
अवन्न देखो **अवण्ण**=अवर्ण ; (भग; उव ; ओघ ३५१)।
अवन्ना देखो **अवण्णा** ; (ओघ ३८२ भा; सुर १६, १३१ ; सुपा ३७२)।
अवपक्का स्त्री [अवपाक्या] तापिका, तवी; छोटा तवा ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।
अवपुट्ठ वि [अवस्पृष्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो वह; "जीए ससिकंतमणिमंदिराइं निसि ससिकरावपुट्ठाइं। वियलियबाहजलाइं रोयंतिव तरणितवियाइं" (सुपा ३)।
अवपुसिय वि [दे] संघटित, संयुक्त ; (दे १, ३६)।
अवप्पओग पुं [अपप्रयोग] उल्टा प्रयोग, विरुद्ध औषधियों का मिश्रण ; (बृह १)।
अवप्फार पुं [अवस्फार] विस्तार, फैलाव, "ता किमिमिणा अहोपुरिसियावप्फारपाएणं" (स ३८८)।
अवबंध पुं [अवबन्ध] बन्ध, बन्धन ; (गउड)।
अवबद्ध वि [अवबद्ध] बंधा हुआ, नियन्त्रित ; (धर्म ३)।
अवबाण वि [अपबाण] बाण-रहित ; (गउड)।
अवबुज्झ सक [अव+बुध्] १ जानना। २ समझना। "जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेचत्थं नावबुज्झसे" (उत्त १८, १३)। वकृ—**अवबुज्झमाण** ; (स ८५)। संकृ—**अवबुज्झेऊण** ; (स १६७)।
अवबोह पुं [अवबोध] १ ज्ञान, बोध ; (सुपा १७)। २ विकास ; (गउड)। ३ जागरण ; (धर्म २)। ४ स्मरण, यादी ; (आचा)।
अवबोहय वि [अवबोधक] अवबोध-कारक ; "भवियकमलावबोहय, मोहमहातिमिरपसरभरसूर" (काल)।
अवबोहि पु [अवबोधि] १ ज्ञान ; २ निश्चय, निर्णय; (आचू १, विसे ११५४)।
अवभास अक [अव+भास्] चमकना, प्रकाशित होना।
अवभास पुं [अवभास] प्रकाश ; (सुज्ज ३)।
अवभासय वि [अवभासक] प्रकाशक ; (विसे ३१७; २०००)।
अवभासि वि [अवभासिन्] देदीप्यमान, प्रकाशने वाला ; (गउड)।
अवभासिय वि. [अवभासित] प्रकाशित ; (विसे)।
अवभासिय वि [अवभाषित] आक्रुष्ट, अभिशप्त , (वव १)।
अवम देखो **ओम** ; (आचा)।
अवमग्ग पुं [अपमार्ग] कुमार्ग, खराब रास्ता; (कुमा)।
अवमग्ग पुं [अपामार्ग] वृक्ष-विशेष, चिचडा, लटजीरा , (दे १, ८)।

अवमच्चु पुं [**अपमृत्यु**] अकाल मृत्यु, अनमौत मरण ; (दे ६, ३ ; कुमा)

अवमज्ज सक [**अव+मृज्**] पोंछना, झाड़ना, साफ करना। संकृ—**अवमज्जिऊण** ; (स ३४८)।

अवमण्ण सक [**अव+मन्**] तिरस्कार करना। अवमण्णंति ; (उवर १२२)।

अवमद्द पुं [**अवमर्द**] मर्दन, विनाश ; (पराह १, २)।

अवमद्दग वि [**अवमर्दक**] मर्दन करने वाला ; (गाथा १, १६)।

अवमन्न सक [**अव+मन्**] अवज्ञा करना, निरादर करना। अवमन्नइ ; (महा)। वकृ—**अवमन्नंत** ; (सूत्र १,३,४) संकृ—**अवमन्निऊण** ; (महा)।

अवमन्निय } वि [**अवमत**] अवज्ञात, अवगणित ; (सुर
अवमय } १६, १२७ ; महा ; उव)।

अवमाण पुं [**अपमान**] तिरस्कार ; (सुर १, २३५)।

अवमाण पुन [**अवमान**] १ अवज्ञा, तिरस्कार। २ परिमाण ; (ठा ४, १)।

अवमाण सक [**अव+मानय्**] अवगणना करना। अवमाणइ ; (भवि)।

अवमाणण न [**अवमानन**] अनादर, अवज्ञा ; (पराह १, ५ ; औप)।

अवमाणण न [**अपमानन**] तिरस्कार, अपमान; (स १०)।

अवमाणणा स्त्री [**अवमानना**] अवगणना ; (काल)।

अवमाणि वि [**अवमानिन्**] अवज्ञा करने वाला ; (अभि ६६)।

अवमाणिय वि [**अपमानित**] तिरस्कृत ; (से १०, ६६; सुपा १०५)।

अवमाणिय वि [**अवमानित**] १ अवज्ञात, अनादृत ; (सुर २, १७६)। २ अपूरित, "अवमाणियदोहला" (भग ११, ११)।

अवमार पुं [**अपस्मार**] भयकर रोग-विशेष ; पागलपन ; (आचा)।

अवमारिय वि [**अपस्मारित**, °**रिक**] अपस्मार रोग वाला ; (आचा)।

अवमारुय पु [**अवमारुत**] नीचे चलता पवन ; (गउड)।

अवमिच्चु देखो **अवमच्चु** ; (प्राप्र)।

अवमिय वि [**दे**] जिसको घाव हो गया हो वह, व्रणित ; (वृह ३)।

अवमुक्क वि [**अवमुक्त**] परित्यक्त ; (पि ५६६)।

अवमेह वि [**अपमेघ**] मेघ-रहित ; (गउड)।

अवय देखो **अपय**=अपद ; (सूत्र १, ८; ११)।

अवय न [**अब्ज**] कमल, पद्म ; (पराण १)।

अवय वि [**अवच**] १ नीचा ; अनुच ; (उत ३)। २ जघन्य, हीन ; अश्रेष्ठ ; (सूत्र १, १०)। ३ प्रतिकूल ; (भग १, ६)।

अवयंस पुं [**अवतंस**] १ शिरो-भूषण विशेष ; (कुमा ; गा १७३)। २ कान का आभूषण ; (पात्र)।

अवयंस सक [**अवतंसय्**] भूषित करना। अवअंसअति; (पि १४२; ४६०)।

अवयक्ख सक [**अप+ईक्ष्**] अपेक्षा करना, राह देखना। अवयक्खह ; (गाया १, ६)। वकृ—**अवयक्खंत, अवयक्खमाण** ; (गाया १, ६ ; भग १०, २)।

अवयक्ख सक [**अव+ईक्ष्**] १ देखना। २ पीछे से देखना। वकृ—**अवयक्खंत** ; (आव १८८ भा)।

अवयक्खा स्त्री [**अपेक्षा**] अपेक्षा ; (गाया १, ६)।

अवयग्ग न [**दे**] अन्त, अवसान ; (भग १, १)।

अवयच्छ सक [**अव+गम्**] जानना। अवयच्छइ ; (स ११३)। संकृ—**अवयच्छिय** ; (स २१०)।

अवयच्छ सक [**दृश्**] देखना। अवयच्छइ ; (हे ४, १८१)। वकृ—**अवयच्छंत** ; (कुमा)।

अवयच्छिय वि [**दृष्ट**] देखा हुआ ; (गाया १, ८)।

अवयच्छिय वि [**दे**] प्रसारित, "फुकारपवणपिसुणियमवयच्छियमयगरमहा य" (स ११३)।

अवयज्झ सक [**दृश्**] देखना। अवयज्झइ ; (हे ४, १८१)। संकृ—**अवयज्झिऊण** ; (कुमा)।

अवयट्ठि स्त्री [**अवतष्टि**] तनूकरण, पतला करना ; (आचा)।

अवयट्ठि वि [**अवस्थायिन्**] अवस्थिति करने वाला ; स्थिर रहने वाला ; (आचा)।

अवयट्ठि स्त्री [**अवकृष्टि**] आकर्षण ; (आचा)।

अवयड्ढिअ वि [**दे**] युद्ध में पकड़ा हुआ ; (दे १, ४६)।

अवयण न [**अवचन**] कुत्सित वचन, दूषित भाषा ; (ठा ६)।

अवयर सक [**अव+तृ**] १ नीचे उतरना। २ जन्म-ग्रहण करना। अवयरइ ; (हे १, १७२)। वकृ—

(d) $2x - 3y = 0$

अवयरंत, अवयरमाण, (पउम ८२. ६३ ; सुपा १८१)। संकृ—**अवयरिउं,** (प्रासू)।

अवयरिअ पु [दे] वियोग, विरह ; (दे १, ३६)।

अवयरिअ वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह । २ न अपकार, अहित-करण, "को हेऊ तुह गमणे तुह अवयरियं मए किं व" (सुपा ४२१)।

अवयरिअ वि [अवतीर्ण] १ जन्मा हुआ । २ नीचे उतरा हुआ ; (सुर ६, १८६)।

अवयव पुं [अवयव] १ अंश, विभाग । २ अनुमान-प्रयोग का वाक्यांश ; (दसनि १ ; हे १, २४५)।

अवयवि वि [अवयविन्] अवयव वाला (ठा १ ; विसे २३५०)।

अवयाढ देखो **ओगाढ** ; (नाट ; गउड)।

अवयाण न [दे] खींचने की डोरी, लगाम ; (दे १, २४)।

अवयाय पु [अववाय] अपराध, दोष; (उप १०३१ टी)।

अवयार पुं [अपकार] अहित-करण ; (स ४३७ ; कुमा , प्रासू ६)।

अवयार पु [अवतार] १ उतरना । २ देहान्तर-धारण, जन्म-ग्रहण । ३ मनुष्य रूपमें देवता का प्रकाशित होना "अज्ज ! एवं तुमं देवावयारो विय आगईए" (स ४१६; भवि)। ४ संगति, योजना ; (विसे १००८)। ५ प्रवेश ; (विसे १०४३)।

अवयार पुं [दे] माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव, जिसमें इख से दतवन आदि किया जाता है ; (दे १, ३२)।

अवयारि वि [अपकारिन्] अपकार करने वाला; (स १७६; विवे ७६)।

अवयालिय वि [अवचालित] चलायमान किया हुआ ; (स ४२)।

अवयास सक [श्लिष्] आलिंगन करना । अवयासइ ; (हे ४, १६०)। कवकृ—**अवयासिज्जमाण** ; (औप)। संकृ—**अवयासिय** ; (णाया १, २)।

अवयास सक [अव+काश्] प्रकट करना । संकृ—**अवयासेऊण** ; (तंदु)।

अवयास देखो **अवगास** ; (गउड, कुमा)।

अवयास पुं [श्लेष] आलिंगन ; (ओघ २४४ भा)।

अवयासण न [श्लेषण] आलिंगन ; (वृह १)।

अवयासाविय वि [श्लेषित] आलिंगन कराया हुआ ; (विपा १, ४)।

अवयासिय वि [श्लिष्ट] आलिंगित ; (कुमा; पात्र)।

अवयासिणी स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाक में डाली जाती डोर ; (दे १, ४६)।

अवर वि [अपर] अन्य, दूसरा, तद्भिन्न ; (श्रा २७ ; महा)। °**हा** अ [°था] अन्यथा ; (पंचा ८)।

अवर स [अपर] १ पिछला काल या देश ; (महा)। २ पिछले काल या देशमें रहा हुआ ; पाश्चात्य ; (सम १३ ; महा)। ३ पश्चिम दिशा में स्थित, "अवरद्दारेणं" (स ६४६)। °**कंका** स्त्री [°कङ्का] १ धातकी-खंड के भरतक्षेत्र की एक राजधानी; २ इस नामका "ज्ञात-धर्मकथा" सूत्र का एक अध्ययन ; (णाया १, १६)। °**ण्ह** पु [°ाह्ण] १ दिन का अन्तिम प्रहर; (ठा ४, २)। २ दिनका उत्तरी भाग ; (आचू १; गा २६६; प्रासू ५४)। °**दाहिण** पुं [°दक्षिण] १ नैऋत्य कोण ; २ वि. नैऋत्य-कोण में स्थित ; (पंचा २)। °**दाहिणा** स्त्री [°दक्षिणा] पश्चिम और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, नैऋत कोण ; (वव ७)। °**फाणु** स्त्री [°पार्ष्णि] एडी, अड्डी का पिछला भाग ; (वव ८)। °**राय** पुं [°रात्र] देखो **अवरत्त**=अपरराात्र ; (आचा)। °**विदेह** पु [°विदेह] महाविदेह-नामक वर्ष का पश्चिम भाग ; (ठा २, ३; पडि)। °**विदेहकूड** न [°विदेहकूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष ; (जं ४)। देखो **अपर** ।

अवर स [अवर] ऊपर देखो ; (महा; णाया १, १६; वव ७; पंचा २)।

अवरंमुह वि [अपराङ्मुख] १ समुख ; २ तत्पर ; (पि २६६)।

अवरच्छ देखो **अपरच्छ** ; (पण्ह १, ३)।

अवरज्ज पुं [दे] १ गत दिन ; २ आगामी दिन ; ३ प्रभात, सुबह ; (दे १, ५६)।

अवरज्झ अक [अप+राध्] १ अपराध करना, गुनाह करना । २ नष्ट होना । अवरज्झइ ; (महा, उव)। वकृ—**अवरज्झंत** ; (राज)।

अवरत्त पु [अपररात्र, अवररात्र] रात्रि का पिछला भाग ; (भग, णाया १, १)।

अवरत्त वि [अपरक्त] १ विरक्त, उदास ; (उप पृ ३०८)। २ नाराज, नाखुश ; (मुद्रा २६७)।

अवरत्तअ } पुं [दे] पश्चात्ताप, अनुताप; (दे १,४५;
अवरत्तेअ } पात्र)।

अवरद्ध न [**अपराद्ध**] १ अपराध, गुनाह; (सुर २, १२१)। २ वि. जिसने अपराध किया हो वह, अपराधी, "सगडे दारए ममं अंतेउरंसि अवरद्धे" (विपा १, ४; स २८)। ३ विनाशित, नष्ट किया हुआ; (णाया १,१)।

अवरद्धिग } पुंस्त्री [**अपराद्धिक**) १ सर्प-दंश, २ **अवरद्धिय** } फुनसी, छोटा फोड़ा; (ओघ ३४१; पिंड)।

अवरा स्त्री [**अपरा**] विदेह-वर्ष की एक नगरी; (ठा २,३)।

अवराइया देखो **अपराइया**; (पउम २५, १, जं ४; ठा २, ३)।

अवराइस देखो **अण्णाइस**; (षड्; हे ४, ४१३)।

अवराजिय देखो **अपराइय**, (इक)।

अवराजिया देखो **अपराइया**; (इक)।

अवराह पु [**अपराध**] १ अपराध, गुनाह; (आव १)। २ अनिष्ट, बुराई; "अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमेत्तं परो होइ" (प्रासू १२२)।

अवराह पुं [**दे**] कटी, कमर; (दे १, २८)।

अवराहिय न [**अपराधित**] १ अपराध, गुनाह, "जंपइ जणो महल्लं कस्सवि अवराहियं जायं" (पउम ६४, २५; स ३२०)। २ अपकार, अनिष्ट, अहित,
"सिरि चडिआ खंति प्फलइं, पुणु डालइं मोडंति।
तोवि महद्दुम सउणाहं, अवराहिउ न करंति" (हे ४,४४५)।

अवराहुत्त वि [**अपराभिमुख**] १ पराङ्मुख, २ पश्चिम दिशा तरफ मुँह किया हुआ; (आव ४)।

अवरि } **अवरिं** } अ [**उपरि**] ऊपर; (दे १, २६, प्राप्र)।

अवरिक्क वि [**दे**] अवसर-रहित, अनवसर; (दे १, २०)।

अवरिगलिअ वि [**अपरिगलित**] पूर्ण, भरपूर; (से ११. ८८)।

अवरिज्ज वि [**दे**] अद्वितीय, असाधारण, (दे १,३६; षड्)।

अवरिल्ल वि [**उपरि**] उत्तरीय वस्त्र, चद्दर; (हे २, १६६; कुमा; गउड; पाअ)।

अवरिल्ल वि [**अपरीय**] पाश्चात्य, पश्चिम दिशा-संबन्धी "तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह" (णाया १, ६)।

अवरिहड्डपुसण न [**दे**] १ अकीर्ति, अजस; २ असत्य, झूठ; ३ दान; (दे १, ६०)।

अवरुंड सक [**दे**] आलिङ्गन करना। अवरुंडइ, (दे १, ११; सुर ३, १८२; भवि) कर्म—अवरुंडिज्जइ; (दे १, ११)। संकृ—अवरुंडिऊण; (दे १, ११; स ४२१)।

अवरुंडण } न [**दे**] आलिङ्गन; (भवि; पाअ, दे **अवरुंडिअ** } १, ११,)।

अवरुत्तर पु [**अपरोत्तर**] १ वायव्य कोण, २ वि. वायव्य कोण में स्थित; (भग)।

अवरुत्तरा स्त्री [**अपरोत्तरा**] वायव्य दिशा; पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा; (वव ७)।

अवरुद्ध वि [**अवरुद्ध**] घिरा हुआ; (विसे २६७५)।

अवरुप्पर देखो **अवरोप्पर**; (कुमा, रभा)।

अवरुह अक [**अव+रुह**] नीचे उतरना। अवरुहेहि, (मै १४)।

अवरोप्पर } वि [**परस्पर**] आपस में; (हे ४, ४०६; **अवरोवर** } गउड; सुपा २२; सुर ३, ७६; षड्)।

अवरोह पु [**अवरोध**] १ अन्तःपुर, जनानखाना; (सुपा ६३)। २ अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री, (विपा १, ४)। ३ नगर को सैन्य से घेरना; (निचू ८)। ४ संक्षेप; (विसे ३५५५)। ५ प्रतिबन्ध, "कहं सव्वत्थितावरोहोत्ति" (विसे १७२३)। °**जुवइ** स्त्री [°**युवति**] अन्तःपुर की स्त्री; (पि ३८७)।

अवरोह पुं [**अवरोह**] उगने वाला, (तृण आदि), (गउड)।

अवरोह पुं [**दे**] कटी, कमर; (दे १. २८)।

अवलंब सक [**अव + लम्ब्**] १ सहारा लेना, आश्रय लेना। २ लटकना। अवलंबइ; (कस)। अवलंबेइ; (महा)। वकृ—**अवलंबमाण**; (सम्म ५८)। कवकृ—**अवलंबिज्जंत**, (पि ३६७)। संकृ—**अवलंबिऊण, अवलंबिय**; (आव ५, आचा २, १, ६)। हेकृ—**अवलंबित्तए**; (दसा ७)। कृ—**अवलंबणिय, अवलंबिअव्व**, (स १०, २६)।

अवलंब } पु [**अवलम्ब**, °**क**] १ सहारा, आश्रय, **अवलंबग** } (श्रा १६)। २ वि. लटकने वाला; (औप, वव ४)। ३ सहारा लेने वाला; (पव ८०)।

अवलंबण न [**अवलम्बन**] १ लटकना। २ आश्रय, सहारा; (ठा ५, २; गय)।

अवलंबि वि [**अवलम्बिन्**] अवलम्बन करने वाला; (गउड; विसे २३२६)।

अवलंबिय वि [**अवलम्बित**] १ लटका हुआ। २ आश्रित; (णाया १, १)।

अवलंबिर देखो अवलंबि ; (गा ३६७)।

अवलक्खण न [**अपलक्षण**] खराब लक्षण, बुरी आदत ; (भवि)।

अवलग्ग वि [**अवलग्न**] १ आरूढ ; २ लगा हुआ, संलग्न ; (महा)।

अवलत्त वि [**अपलपित**] अपह्नुत, छिपाया हुआ ; (स २१२)।

अवलद्ध वि [**अपलब्ध**] अनादर से प्राप्त ; (ठा ६)।

अवलद्धि स्त्री [**अवलब्धि**] अ-प्राप्ति ; (भग)।

अवलय न [**दे**] घर, मकान ; (दे १, २३)।

अवलव सक [**अप+लप्**] १ असत्य बोलना। २ सत्य को छिपाना। कवकृ—**अवलविज्जंत** ; (सुपा १३२)। कृ—**अवलवणिज्ज** ; (सुपा ३१५)।

अवलाव पुं [**अपलाप**] अपह्नव ; (निचू १)।

अवलिअ न [**दे**] असत्य, झूठ ; (दे १, २२)।

अवलिंब पुं [**अवलिम्ब**] जीव या पुद्गलों से व्याप्त स्थान-विशेष ; (ठा २, ४)।

अवलिच्छअ वि [**दे**] अ-प्राप्त, अनासादित ; (से ६, ७८)।

अवलित्त वि [**अवलिप्त**] १ लिप्त , २ गर्वित ; "अलसो सढोवलित्तो, आलंवण-तप्परो अइपमाई। एवं ठिओवि मन्नइ, अप्पाणं सुट्ठिओ मित्ति" (उव)।

अवलुआ स्त्री [**दे**] क्रोध, गुस्सा ; (दे १, ३६)।

अवलुत्त वि [**अवलुप्त**] लोप-प्राप्त ; (नाट)।

अवलेअ } [**अवलेप**] १ अहंकार, गर्व। २ लेप,
अवलेव } लेपन ; (पाअ ; महा ; नाट)। ३ अवज्ञा, अनादर ; (गउड)।

अवलेहणिया स्त्री [**अवलेखनिका**] १ वांस का छिलका ; (ठा ४, २)। २ धूली आदि झाड़ने का एक उपकरण ; (निचू १)।

अवलेहि } स्त्री [**अवलेखि, °का**] १ वांसका छिलका;
अवलेहिया } (कम्म १, २०)। २ लेह्य-विशेष ; (पव ४)। ३ चावल के आटा के साथ पकाया हुआ दूध ; (पभा ३२)।

अवलोअ सक [**अव+लोक्**] देखना, अवलोकन करना। वकृ—**अवलोअंत, अवलोएमाण**; (रयण ३६ ; णाया १, १) संकृ—**अवलोइऊण** ; (काल)। कृ—**अवलोयणीय** ; (सुपा ७०)।

अवलोग } पुं [**अवलोक**] अवलोकन, दर्शन ; (उप
अवलोय } ९८६ टी ; सुपा ९ ; स २७९ ; गउड)।

अवलोयण न [**अवलोकन**] १ दर्शन ; विलोकन ; (गउड)। २ स्थान-विशेष ; "तुंगं अवलोयणं चेव" (पउम ८०, ४)। ३ शिखर-विशेष ; (ती ४)

अवलोव पुं [**अपलोप**] छिपाना, लोप करना; (पण्ह १,२)।

अवलोवणी स्त्री [**अपलोपनी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३९)।

अवलोह वि [**अपलोह**] लोह-रहित ; (गउड)।

अवल्लय न [**दे. अवल्लक**] नौका खेवने का उपकरण-विशेष ; (आचा २, ३, १)।

अवल्लाव } पुं [**दे. अपलाप**] असत्य-कथन, अपलाप ;
अवल्लावय } (दे १, ३८)।

अवव न [**अवव**] संख्या-विशेष 'अववाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४)।

अववंग न [**अववाङ्ग**] संख्या-विशेष, 'अडड' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४)।

अववक्कल वि [**अपवल्कल**] त्वचा-रहित ; (गउड)।

अववक्का स्त्री [**अवपाक्या**] तापिका, छोटा तवा ; (भग ११, ११)।

अववग्ग पु [**अपवर्ग**] मोक्ष, मुक्ति ; (आवम)।

अववट्टण न [**अपवर्तन**] १ अपसरण। २ कर्म-परमाणुओं को दीर्घ स्थिति को छोटी करना ; (पंच ५)।

अववट्टणा स्त्री [**अपवर्तना**] ऊपर देखो ; (पंच ५)।

अववत्त वि [**अपवृत्त**] १ वापिस लौटा हुआ ; २ अपसृत ; (दे १, १५२)।

अववरक पुं [**अपवरक**] कोठरी, छोटा घर ; (मुद्रा ८१)।

अववाइय वि [**अपवादिक**] अपवाद वाला ; (नाट)।

अववाय पुं [**अपवाद**] १ विशेष नियम, अपवाद ; (उप ७८१)। २ निन्दा, अवर्ण-वाद; (पण्ह २, २)। ३ अनुज्ञा, संमति ; (निचू १)। ४ निश्चय, निर्णय वाली हकीकत ; (निचू ५)।

अववास सक [**अव+काश्**] अवकाश देना, जगह देना। अववासइ ; (प्राप्र)।

अववाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहन करना। अववाहइ; (प्राप्र)।

अवविह पुं [**अवविध**] गोशालक के एक भक्त का नाम, (भग ८, ५)।

अववीड पुं [**अवपीड**] निष्पीड़न, दबाना ; (गउड)।

अववीडण न [**अवपीडन**] ऊपर देखो ; (गउड)।

अवस वि [**अवश**] १ अ-स्वाधीन, पराधीन ; (सूअ १, ३, १)। २ स्वतन्त्र, स्वाधीन ; (से १, १)।

अवसं अ [**अवश्यम्**] अवश्य, जरूर, निश्चय ; (हे ४, ४२७)।

अवसउण न [**अपशकुन**] अनिष्ट-सूचक निमित्त, खराब शकुन ; (ओघ ८१ भा ; गा २६१ ; सुपा ३६३)।

अवसक्क सक [**अव+ष्वष्क्**] पीछे हट जाना। अव-सक्केज्जा ; (आचा)।

अवसक्कण न [**अवष्वष्कण**] अपसरण, पीछे हटना ; (पंचा १३)।

अवसक्कि वि [**अवष्वष्किन्**] पीछे हटने वाला ; (आचा)।

अवसण्ण वि [**दे**] झरा हुआ, टपका हुआ; (षड्)।

अवसद्द पुं [**अपशब्द**] १ अशुद्ध शब्द ; (सुर १६, २४८)। २ खराब वचन ; (हे १, १७२)। ३ अपकीर्ति, अपयश ; (कुमा)।

अवसप्प अक [**अव+सृप्**] १ पीछे हटना। २ निवृत्त होना। ३ उतरना। अवसप्पंति ; (पि १७३)।

अवसप्पण न [**अपसर्पण**] अपसरण, अपवर्तन ; (पउम ५६, ७८)।

अवसप्पि वि [**अपसर्पिन्**] १ पीछे हटने वाला ; २ निवृत्त होने वाला ; (सूअ १, २, २)।

अवसप्पिय वि [**अपसर्पित**] १ अपसृत। २ निवृत्त। ३ अवतीर्ण ; (भवि)।

अवसप्पिणी देखो **ओसप्पिणी** ; (भग ३, २; भवि)।

अवसमिआ (**दे**) देखो **अवसमी** ; (दे १, ३७)।

अवसय वि [**अपशद**] नीच, अधम ; (ठा ४, ४)।

अवसर अक [**अप+सृ**] १ पीछे हटना। २ निवृत्त होना। अवसरइ; (हे १, १७२)। कृ—**अवसरियव्व**; (उप १४६ टी)।

अवसर सक [**अव+सृ**] आश्रय करना। संकृ— " ओसरणम् **अवसरित्ता** " (चउ १८)।

अवसर पु [**अवसर**] १ काल, समय ; (पाअ)। २ प्रस्ताव, मौका ; (प्रासू ५७; महा)।

अवसरण देखो **ओसरण** ; (पव ६२)।

अवसरण न [**अपसरण**] १ पीछे हटना। २ निवृत्ति ; (गउड)।

अवसरिय वि [**आवसरिक**] सामयिक, समयोपयुक्त ; (सण)।

अवसरीर पु [**अपशरीर**] रोग, व्याधि, " सव्वावसरीर-हिओ " (उप ५६७ टी)।

अवसवस वि [**अपस्ववश**] पराधीन, परतन्त्र ; (णाया १, १६)।

अवसव्वय न [**अपसव्यक**] शरीर का दहिना भाग ; (उप पृ २०८)।

अवसह पुं [**आवसथ**] घर, मकान ; (उत्त ३२)।

अवसह न [**दे**] १ उत्सव ; २ नियम ; (दे १, ५८)।

अवसाइअ वि [**अप्रसादित**] प्रसन्न नहीं किया हुआ ; (से १०, ६३)।

अवसाण न [**अवसान**] १ नाश ; २ अन्त भाग ; (गउड; पि ३६६)।

अवसाय पुं [**अवश्याय**] हिम, बर्फ ; (गउड)।

अवसारिअ वि [**अप्रसारित**] नहीं फैलाया हुआ, अ-विस्तारित ; (से ,१)।

अवसारिअ वि [**अपसारित**] १ आकृष्ट, खींचा हुआ ; (से १, १)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ ; (सुपा २२२)।

अवसावण न [**अवस्रावण**] १ काञ्जी ; (बृह १)। २ भात वगैरः का पानी ; (सूक्त ८६)।

अवसिअ वि [**अपसृत**] पीछे हटा हुआ, (से १३, ६३)।

अवसिअ वि [**अवसित**] १ समाप्त, परिपूर्ण। २ ज्ञात, जाना हुआ ; (विसे २४८२)।

अवसिज्ज अक (**अव+सद्**] हारना, पराजित होना "एक्को-वि नावसिज्जइ " (विसे २४८४)।

अवसिद (शौ) वि [**अवसित**] समाप्त, पूर्ण ; (अभि १३३ प्रति १०६)।

अवसिद्धंत पुं [**अपसिद्धान्त**] दूषित सिद्धान्त ; (विसे २४५७; ६)।

अवसीय अक [**अव+सद्**] क्लेश पाना, खिन्न होना। वकृ—**अवसीयंत** ; (पउम ३३, १३१)।

अवसुअ अक [उद्+वा] सूखना, शुष्क होना। अवसुअइ ; (षड्)।
अवसेअ पुं [अवसेक] सिञ्चन, छिटकाव ; (अभि २१०)।
अवसेअ वि [अवसेय] जानने योग्य ; (विसे २६७१)।
अवसें (अप) देखो **अवस्सं** ; (हे ४, ४२७)।
अवसेण देखो **अवस्सं** " अवसेण भुंजियव्वा ; (पउम १०२, २०१)।
अवसेस पुं [अवशेष] १ अवशिष्ट, बाकी , (सुपा ७७)। २ वि. सब, सर्व ; (उप २११ टी)।
अवसेसिय वि [अवशेषित] १ समाप्त किया हुआ, पार पहुँचाया हुआ ; (से ४, ४७)। २ बाकी का, अवशिष्ट ; (भग)।
अवसेह सक [गम्] जाना। अवसेहइ ; (हे ४, १६२)। अवसेहंति ; (कुमा)।
अवसेह अक [नश्] भागना, पलायन करना। अवसेहइ ; (हे ४, १७८ ; कुमा)।
अवसोइया स्त्री [अवस्वापिका] निद्रा ; (सुपा ६०६)।
अवसोग वि [अपशोक] १ शोक-रहित। २ देव-विशेष ; (दीव)।
अवसोण वि [अपशोण] थोड़ा लाल ; (गउड)।
अवसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] निद्रा ; (सुपा ४७)।
अवस्स वि [अवश्य] जरूरी, नियत ; (आवम, आव ४)। °**कम्म** न [°कर्मन्] आवश्यक क्रिया ; (आचू १)। °**करणिज्ज** वि [°करणीय] अवश्य करने लायक कर्म, सामायिक आदि। °**किरिया** स्त्री [°क्रिया] आवश्यक अनुष्ठान ; (आचू १)। °**किच्च** वि [°कृत्य] आवश्यक कार्य ; (दे)।
अवस्सं अ [अवश्यम्] जरूर, निश्चय ; (पि ३१५)।
अवस्सिय वि [अवाश्रित] आश्रित, अवलग्न ; (अनु ६)।
अवह सक [रच्] निर्माण करना, बनाना। अवहइ ; (हे ४, ९४)।
अवह स [उभय] दोनों, युगल , (हे २, १३८)।
अवहइ स्त्री [अपहति] विनाश ; (विसे २०१५)।
अवहट्ट वि [दे] अभिमानी, गर्वित ; (दे १, २३)।
अवहट्टु देखो **अवहर**=अप+हृ।
अवहड वि [अपहृत] ले लिया गया, छीना हुआ ; (सुपा २९६ ; पण्ह १, ३)।
अवहड वि [अवहृत] ऊपर देखो ; (प्रारू)।
अवहड न [दे] मुसल ; (दे १, ३२)।
अवहण्ण पुं [दे] ऊखल, उदूखल ; (दे १, २६)।
अवहत्थ पुं [अपहस्त] मारने के लिए या निकाल बाहर करने के लिए ऊंचा किया हुआ हाथ, " अवहत्थेण हओ कुमरो " (महा)।
अवहत्थ सक [अपहस्तय्] १ हाथ को ऊंचा करना। २ त्याग करना, छोड़ देना। अवहत्थेइ ; (महा)। संकृ—**अवहत्थिऊण, अवहत्थेऊण** ; (पि ५८६ ; महा)।
अवहत्थरा स्त्री [दे] लात मारना, पाद-प्रहार ; (दे १, २२)।
अवहत्थिय वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ ; (महा ; काप्र ५२४ ; गा ३५३ ; सुपा १९३ ; णंदि)।
अवहय वि [अपहत] नष्ट, नाश-प्राप्त ; (से १४, २८)।
अवहय वि [अघातक] अहिंसक ; (ओघ ७५०)।
अवहर सक [गम्] जाना। अवहरइ ; (हे ४, १६२)।
अवहर अक [नश्] भाग जाना, पलायन करना। अवहरइ ; (हे ४, १७८ ; कुमा)।
अवहर सक [अप+हृ] १ छीन लेना, अपहरण करना। २ भागाकार करना, भाग देना। अवहरइ ; (महा)। अवहरेज्जा ; (उवा)। कवकृ—**अवहरिज्जंत, अवहीरमाण** ; (सुर ३, १४२; भग २५, ४ , गाया १, १८)। संकृ—**अवहरिऊण, अवहट्टु** ; (महा ; आचा ; भग)।
अवहर वि [अपहर] अपहारक, छीन लेने वाला ; (गा १५६)।
अवहरण न [अपहरण] छीन लेना ; (कुमा ; सुपा २५०)।
अवहरिअ वि [गत] गया हुआ ; (कुमा)।
अवहरिअ वि [अपहृत] छीन लिया हुआ ; (सुर ३, १४१ , कुम्मा ६)।
अवहस सक [अव, अप+हस्] तुच्छकारना, तिरस्कारना, उपहास करना। अवहसइ ; (गाया १, १८)।

अवहसिय वि [अप°, अवहसित] तिरस्कृत, उपहसित ; (गाया १, ८; सुर १२, ६७) ।
अवहाय पुं [दे] विरह, वियोग ; (दे १, ३६) ।
अवहाय अ [अपहाय] छोड़ कर, त्याग कर ; (भग १५) ।
अवहाण न [अवधान] १ ख्याल, उपयोग ; (सुर १०, ७१ ; कुमा) । २ ज्ञान, जानना ; (वसे ८२) ।
अवहार सक [अव+धारय्] निर्णय करना, निश्चय करना । कर्म—अवहारिज्जइ ; (स १६६) । हेकृ—**अवहारेउं** ; (भास १६) ।
अवहार (अप) देखो **अवहर**=अप+हृ । अवहारइ ; (भवि) । संकृ—**अवहारिवि** ; (भवि) ।
अवहार पुं [अपहार] १ अपहरण ; (पगह १, ३ ; सुपा २७५) । २ दूर करना, परित्याग ; (गाया १, ६) । ३ चोरी ; (सुपा ४४६) । ४ बाहर करना; निकालना ; (निचू ७) । ५ भागाकार ; (भग २५, ४) । ६ नाश, विनाश ; (सुर ७, १२५) ।
अवहार पुं [अवधार] निश्चय, निर्णय । °व वि [वत्] निश्चय वाला ; (ठा १०) ।
अवहारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय ; (से ११, १५ ; स १६६) ।
अवहारय वि [अपहारक] छीनने वाला, अपहरण करने वाला ; (सुर ११, १२) ।
अवहारि वि [अपहारिन्] अपहारक, छीनने वाला ; (सुपा ५०३) ।
अवहारिय वि [अवधारित] निश्चित ; (स ५७६ ; पउम २३, ६ ; सुपा ३३१) ।
अवहाव सक [कृप्] दया करना, कृपा करना । अवहावेइ ; (षड् ; हे ४, १५१) । अवहावसु (कुमा) ।
अवहास पुं [अवभास] प्रकाश, तेज ; (गउड ; प्राप्र) ।
अवहासिणी स्त्री [अवहासिनी] नासा-रज्जु ; "मोत्तव्वे जोतअपग्गहम्मि अवहासिणी मुक्का" (गा ६६४) ।
अवहासिय वि [अवभासित] प्रकाशित ; (सुपा १४२)
अवहि देखो **ओहि**; (सुपा ८६; ५७८; विसे ८२; ७३७) ।
अवहिट्ठ वि [दे] दर्पित, अभिमानी, गर्वित ; (षड्) ।
अवहिय वि [अपहृत] छीन लिया हुआ ; (पउम २०, ६६ ; सुर ११,३२ ; सुपा ४१३) ।
अवहिय वि [अवधृत] नियमित ; (विसे २६३३) ।
अवहिय वि [अवहित] सावधान, ख्याल-युक्त ; (पाअ ; महा ; गाया १, २ ; पउम १०, ६५ ; सुपा ४२३) । °मण वि [°मनस्] तल्लीन, एकाग्र-चित्त ; (सुपा ६) ।
अवहिय वि [रचित] निर्मित, बनाया हुआ ; (कुमा) ।
अवहीण वि [अवहीन] हीन, उतरता, कम दरजा वाला ; (नाट ; पि १२०) ।
अवहीय वि [अपधीक] निन्द्य बुद्धि वाला, दुर्बुद्धि ; (पगह १, २) ।
अवहीर सक [अव+धीरय्] अवज्ञा करना, तिरस्कार करना । अवहीरेइ ; (महा) । वकृ—**अवहीरंत** ; (सुपा ३१२) । कवकृ—**अवहीरिज्जंत**; (सुपा ३७६)। संकृ—**अवहीरिऊण** ; (महा) ।
अवहीरण न [अवधीरण] अवहेलना, तिरस्कार ; (गा १४६; अभि ६८ ; गउड) ।
अवहीरणा स्त्री [अवधीरणा] ऊपर देखो ; (से १३, १६ ; वेणी १८) ।
अवहीरमाण देखो **अवहर**=अप+हृ ।
अवहीरिअ वि [अवधीरित] अवज्ञात, तिरस्कृत; (से ११, ७ ; गउड) ।
अवहील देखो **अवहीर** । अवहीलह ; (सण) ।
अवहेअ वि [दे] दया-योग्य, कृपा-पात्र ; (दे १, २२) ।
अवहेड सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना । अवहेडइ ; (हे ४, ६१) । संकृ—**अवहेडिउं** ; (कुमा) ।
अवहेडिय वि [दे] नीचे की तरफ मोडा हुआ, अवमोटित ; (उत्त १२) ।
अवहेरि } स्त्री [अवहेला] अवगणना, तिरस्कार ; (उप
अवहेरी } २६०, ५६७ टी ; भवि; सुपा २६१ ; महा)।
अवहेलअ वि [अवहेलक] तिरस्कारक ; (सुपा १०६) ।
अवहोअ पुं [दे] विरह, वियोग ; (पड्) ।
अवहोल अक [अव+होलय्] १ भूलना । २ संदेह करना । वकृ—**अवहोलंत** ; (गाया १, ८) ।
अवाइ वि [अपायिन्] १ दुःखी, २ दोषी, अपराधी ; "निब्भिचसच्चवाई होइ अवाई य नेहलोएवि" (सुपा २७५) ।
अवाईण वि [अवाचीन] अधो-मुख ; (गाया १, १) ।
अवाईण वि [अवातीन] वायु से अनुपहत; (गाया १, १)।

अवाउड वि [**अ-व्यापृत**] किसी कार्य में नहीं लगा हुआ; (उप पृ ३०२)।
अवाउड वि [**अप्रावृत**] अनाच्छादित, नग्न, दिगम्बर ; (गाया १, १ ; ठा ५, १)।
अवाडिअ वि [**दे**] वञ्चित; प्रतारित ; (षड्)।
अवाण देखो **अपाण** ; (पाअ ; विपा १, ६)।
अवाय पुं [**अपाय**] १ अनर्थ, अनिष्ट ; (ठा १)। २ दोष, दूषण ; (सुर ४, १२०)। ३ उदाहरण-विशेष ; (ठा ४, ३)। ४ विनाश ; (धर्म १)। ५ वियोग, पार्थक्य ; (णंदि)। ६ संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष ; (ठा ४, ४ ; णंदि)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] भावी अनर्थों को जानने वाला ; (ठा ८ ; द्र ४६)। °**विजय** न [°**विचय,** °**दिउय**] ध्यान-विशेष ; (ठा ४, २)।
अवाय पुं [**अवाय**] संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, मति ज्ञान का एक भेद ; (ठा ४, ४ ; णंदि)।
अवाय वि [**अम्लान**] अ-म्लान, म्लानि-रहित ; ताजा ; "अवायमल्लमंडिया" (स ३७२)।
अवायाण न [**अपादान**] कारक-विशेष, स्थानान्तरीकरण ; (ठा ८ ; विसे २०६६)।
अवार वि [**अपार**] पार-रहित, अनन्त ; (मै ६८)।
अवार पुं [**दे**] दुकान, हाट ; (दे १, १२)।
अवारी स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (दे १, १२)।
अवालुआ स्त्री [**दे**] होठ का प्रान्त भाग ; (दे १, २८)।
अवालुआ स्त्री [**अवालुका**] एक स्निग्ध द्रव्य ; (तंदु)।
अवाव पुं [**अवाप**] रसोई, पाक । °**कहा** स्त्री [°**कथा**] रसोई-संबन्धी कथा ; (ठा ४, २)।
अवास } **अवासें** } (अप) देखो **अवसें** ; (षड्)।
अवाह पुं [**अवाह**] देश-विशेष ; (इक)।
अवाहा देखो **अवाहा** ; (औप)।
अवि अ [**अपि**] निम्न-लिखित अर्थों का सूचक अव्यय ; १ प्रश्न ; (से ५, ४)। २ अवधारण ; निश्चय ; (आचा ; गा ५०२)। ३ समुच्चय ; (विसे ३५५१; भग १, ७)। ४ संभावना , (विसे ३५४८ ; उत्त ३)। ५ विलाप ; (पाअ)। ६-७ वाक्य के उपन्यास और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (आचा ; पउम ८, १४६ ; षड्)।
अवि पुं [**अवि**] १ अज ; २ मेष ; (विसे १७७४)।
अविअ वि [**दे**] उक्त, कथित ; (दे १, १०)।
अविअ वि [**अवित**] रक्षित ; (दे ५, ३५)।
अविअ अ [**अपिच**] समुच्चय-द्योतक अव्यय ; (सुर २, २४६ ; भग ३, २)।
अविअ पुं [**अविक**] मेष, भेड़ ; (आचा)।
अविउ वि [**अवित्**] अज्ञ, मूर्ख ; (सद्दि ४६)।
अविउक्कंतिय वि [**अव्युत्क्रान्तिक**] उत्पत्ति-रहित ; (भग)।
अविउसरण न [**अव्युत्सर्जन**] अ-परित्याग, पास में रखना; (भग)।
अविकरण न [**अविकरण**] गृहीत वस्तुओं को यथास्थान नहीं रखना ; (वृह ३)।
अविक्ख देखो **अवेक्ख** । अविक्खइ ; (महा)। हेकृ—**अविक्खिउं**; (स ३०७)। कृ—**अविक्खणिज्ज**; (विसे १७१६)।
अविक्खग वि [**अपेक्षक**] अपेक्षा करने वाला ; (विसे १७१६)।
अविक्खण न [**अवेक्षण**] अवलोकन, निरीक्षण ; (भवि)।
अविक्खण न [**अपेक्षण**] अपेक्षा ; परवा ; (विसे १७१६)।
अविक्खा देखो **अवेक्खा** ; (कुमा)।
अविक्खिय वि [**अपेक्षित**] १ अपेक्षित ; २ न. अपेक्षा, परवा, "नाविक्खियं सभाए" (श्रा १४)।
अविक्खिय वि [**अवेक्षित**] अवलोकित ; (सुपा ७२)।
अविगइय वि [**अविकृतिक**] घृत आदि विकार-जनक वस्तुओं का त्यागी ; (सूअ २, २)।
अविगडिय वि [**अविकटित**] अनालोचित ; (वव १)।
अविगप्प देखो **अवियप्प** ; (सुर ४, १८६)।
अविगल वि [**अविकल**] अखण्ड, पूर्ण ; (उप २८३)।
अविगिच्छ वि [**अविचिकित्स्य**] जिसका इलाज न हो सके ऐसा, असाध्य व्याधि,
"तालपुडं गरलाणं, जह बहुवाहीण खित्तिओ वाही ।
दोसाणमसेसाणं, तह अविगिच्छो मुसादोसो ।" (श्रा १२)।
अविगीय पुं [**अविगीत**] अगीतार्थ, शास्त्रों के रहस्य का अनभिज्ञ साधु ; (वव ३)।
अविग्गह वि [**अविग्रह**] १ शरीर-रहित ; २ युद्ध-रहित, कलह-वर्जित ; (सुपा २३४)। ३ सरल, सीधा , (भग)।

°गइ स्त्री [°गति] अकुटिल गति ; (भग १४, ५) ।

अविच्छ वि [**अवीप्स्य**] वीप्सा-रहित, व्याप्ति-रहित ; (पड्) ।

अविजाणय वि [**अविज्ञायक**] अनजान, मूर्ख ; (सूअ १, ५, १) ।

अविज्ज वि [**अवीज**] वीज-शक्ति से रहित ; (पउम ११, २५) ।

अविणय पुं [**अविनय**] विनय का अभाव ; (ठा ३, ३) ।

अविणयवइ } पुं [**दे**] जार, उपपति ; (दे १, १८) ।
अविणयवर }

अविणिद्द वि [**अविनिद्र**] निद्रा-विच्छेद-रहित ; (गा ६६) ।

अविण्णा स्त्री [**अविज्ञा**] अनुपयोग, ख्याल का अभाव ; (सूअ १, १, १) ।

अवितह वि [**अवितथ**] सत्य, सच्चा ; (महा ; उव) ।

अविद } अ [**अविद, °दा**] विषाद-सूचक अव्यय ;
अविदा } (पि २२ ; स्वप्न ५८) ।

अविधि पुंस्त्री [**अविधि**] १ विरुद्ध विधि ; २ विधि का अभाव ; (बृह ३ ; आचू १) ।

अविन्नाण वि [**अविज्ञान**] १ अजान । २ अज्ञात, अपरिचित ; (पउम ५, २१६) ।

अवियड्ढ वि [**अविदग्ध**] अ-निपुण ; (सुपा ५८२) ।

अवियत्त न [**अप्रीतिक**] १ प्रीति का अभाव ; (ठा १०) । २ वि. अप्रीति-कारक ; (पण्ह १, १) ।

अवियत्त वि [**अव्यक्त**] अस्फुट, अस्पष्ट, "अवियत्तं दंसणं अणागारं" (सम्म ६५) ।

अवियप्प वि [**अविकल्प**] १ भेद-रहित "वंजणपज्जायस्स उ पुरिसो पुरिसो त्ति निच्चमवियप्पो" (सम्म ३५) । २ क्रिवि निःसंशय, संशय-रहित, "सवियप्पनिव्वियप्पं इय पुरिसं जो भणिज्ज अवियप्पं" (सम्म ३५) ।

अवियाउरी स्त्री [**दे. अविजनयित्री**] वन्ध्या स्त्री ; (णाया १, २) ।

अवियाणय देखो **अविजाणय** ; (आचा) ।

अविरइ स्त्री [**अविरति**] १ विराम का अभाव, अ-निवृत्ति, २ पाप-कर्म से अनिवृत्ति ; (सम १०, पण्ह २, ५) । ३ हिंसा ; (कम्म ४) । ४ अब्रह्म, मैथुन, (ठा ६) । ५ विरति-परिणाम का अभाव ; (सूअ २, २) । ६ वि विरति-रहित ; (नाट) । °वाय पुं [°वाद] १ अविरति की चर्चा ; २ मैथुन-चर्चा ; (ठा ६) ।

अविरइय वि [**अविरतिक**] विरति से रहित, पाप-निवृत्ति से वर्जित, पाप-कर्म में प्रवृत्त ; (भग; कप्प) ।

अविरत्त वि [**अविरक्त**] वैराग्य-रहित ; (णाया १, १४) ।

अविरय वि [**अविरत**] १ विराम-रहित, अविच्छिन्न ; (गा १५५) । २ पाप-निवृत्ति से रहित ; (ठा २, १) । ३ चतुर्थ गुण-स्थानक वाला जीव ; (कम्म ४, ६३) । ४ क्रिवि. सदा, हमेशा ; (पाअ) । °**सम्मदिट्ठि** स्त्री [°**सम्यग्दृष्टि**] चतुर्थ गुण-स्थानक ; (कम्म २, २) ।

अविरल वि [**अविरल**] निविड, घन ; (णाया १, १) ।

अविरहि वि [**अविरहिन्**] विरह-रहित ; (कुमा) ।

अविराम वि [**अविराम**] १ विराम-रहित । २ क्रिवि. निरन्तर, हमेशा ; (पाअ) ।

अविराय वि [**अविलीन**] अभ्रष्ट ; (कुमा) ।

अविराहिय वि [**अविराधित**] अ-खण्डित, आराधित, (भग १५) ।

अविरिय वि [**अवीर्य**] वीर्य-रहित ; (भग) ।

अविल पुं [**दे**] १ पशु ; २ वि. कठिन ; (दे १, ५२) ।

अविलंबिय वि [**अविलम्बित**] विलम्ब-रहित, शीघ्र ; (कप्प) ।

अविला स्त्री [**अविला**] मेषी, भेड़ी ; (पाअ) ।

अविवेग पुं [**अविवेक**] १ विवेक का अभाव । २ वि. विवेक-रहित । °**वंत** वि [°**वत्**] अविवेकी ; (पउम ११३, ३६) ।

अविसंधि वि [**अविसंधि**] पूर्वापर-विरोध से रहित, संगत, संबद्ध ; (औप) ।

अविसंवाइ वि [**अविसंवादिन्**] विसंवाद-रहित, प्रमाण भूत, सत्य ; (कुमा ; सुर ६, १७८) ।

अविसम वि [**अविषम**] सदृश, तुल्य ; (कुमा) ।

अविसाइ वि [**अविषादिन्**] विषाद-रहित ; (पण्ह २, १) ।

अविसेस वि [**अविशेष**] तुल्य, समान, (ठा २, ३ ; उप ८७७) ।

अविसेसिय वि [**अविशेषित** (ठा १०) ।

अविस्स न [**अविश्र**] मांस और रुधिर ; (पव ४०) ।

अविस्साम वि [**अविश्राम**] १ विश्राम-रहित ; (पण्ह १, १) । २ क्रिवि. निरन्तर, सदा ; (उप ७२८ टी) ।

अविहड पुं [**दे**] बालक, बच्चा ; (बृह १) ।

अविवह वि [**अविभव**] दरिद्र ; (गउड) ।

अविहवा स्त्री [**अविधवा**] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री, सधवा ; (गाया १, १) ।
अविहा देखो **अविदा** ; (अभि २२४) ।
अविहाड वि [**अविघाट**] अ-विकट ; (वव ७) ।
अविहाविअ वि [**दे**] १ दीन, गरीब ; १ न. मौन ; (दे १, ५६) ।
अविहाविअ वि [**अविभावित**] अनालोचित ; (गउड) ।
अविहि देखो **अविधि** ; (दस १) ।
अविहिअ वि [**दे**] मत, उन्मत ; (षड्) ।
अविहिंत वकृ [**अविघ्नत्**] नहीं मारता हुआ, हिंसा नहीं करता हुआ,
" वज्जेमित्ति परिणओ, संपत्तीए विमुच्चई वेरा ।
अविहिंतोवि न मुच्चइ, किलिट्ठभावोत्ति वा तस्स "
(ओघ ६०) ।
अविहिंस वि [**अविहिंस**] अहिंसक ; (आचा) ।
अविहिंसा स्त्री [**अविहिंसा**] अहिंसा ; (सूअ १, २, १) ।
अविहीर वि [**अप्रतीक्ष**] प्रतीक्षा नहीं करने वाला ; (कुमा) ।
अविहेडय वि [**अविहेटक**] आदर करने वाला ; (दस १०, १०) ।
अवीइय अ [**अविविच्य**] अलग न हो कर ; (भग १०, २) ।
अवीइय अ [**अविचिन्त्य**] विचार न कर; (भग १०,२)।
अवीय वि [**अद्वितीय**] १ असाधारण, अनुपम ; (कुमा)। २ एकाकी, असहाय ; (विपा १, २) ।
अवुक्क सक [**वि+ज्ञपय्**] विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना । अवुक्कइ ; (हे ४, ३८) । वकृ—**अवुक्कंत** ; (कुमा)।
अवुड्ढ वि [**अवृद्ध**] तरुण, जवान ; (कुमा) ।
अवुग्गह देखो **अविग्गह** ; (ठा ५, १) ।
अवुह देखो **अवुह** ; (सण) ।
अवूह देखो **अवोह** ; (गाया १, १) ।
अवे सक [**अव+इ**] जानना । अवेसि ; (विसे १७७३)।
अवे अक [**अप+इ**] दूर होना, हटना । अवेइ ; (स २०) । अवेह ; (मुद्रा १६१) ।
अवेक्ख सक [**अप+ईक्ष**] अपेक्षा करना । अवेक्खइ ; (महा) ।
अवेक्ख सक [**अव+ईक्ष्**] अवलोकन करना । अवेक्खाहि; (स ३१७) । संकृ—**अवेक्खिऊण**; (स ५२७) ।
अवेक्खा स्त्री [**अपेक्षा**] अपेक्षा, परवा ; (सुर ३, ८४, स ५६२) ।
अवेक्खि वि [**अपेक्षिन्**] अपेक्षा करने वाला , (गउड) ।
अवेक्खिय वि [**अपेक्षित**] जिसकी अपेक्षा हुई हो वह ; (अभि २१६) ।
अवेक्खिय वि [**अवेक्षित**] अवलोकित ; (अभि १६६) ।
अवेय वि [**अपेत**] रहित, वर्जित ; (विसे २२१३) ।
°**रुइ** वि [°**रुचि**] रुचि-रहित, निरीह ; (उप ७२८टी)।
अवेय, **अवेयग** वि [**अवेद**, °**क**] १ पुरुष-वेदादि वेद से रहित ; (पराण १) । २ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त ; (ठा २, १) ।
अवेसि देखो **अंबेसि** ; (दे १, ८ ; पाअ) ।
अवोअड वि [**अव्याकृत**] अव्यक्त, अस्पष्ट ; (भास ७६) ।
अवोच्छिण्ण देखो **अव्वोच्छिण्ण** ; (आचा) ।
अवोच्छित्ति देखो **अव्वोच्छित्ति**; (ठा ५, ३) ।
अवोह सक [**अप+ऊह्**] १ विचार करना । २ निर्णय करना । अवोहए ; (आवम) ।
अवोह पुं [**अपोह**] १ विकल्प-ज्ञान, तर्क-विशेष । २ त्याग, वर्जन ; (उप ६६७) । ३ निर्णय, निश्चय ; (गादि) ।
अव्वईभाव पु [**अव्ययीभाव**] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास ; (अणु) ।
अव्वंग वि [**अव्यङ्ग**] अक्षत, अखण्ड ; (वव ७) ।
अव्वक्खित्त वि [**अव्याक्षिप्त**] १ विक्षेप-रहित ; २ तल्लीन, एकाग्र ; (उत २०) ।
अव्वग्ग वि [**अव्यग्र**] व्यग्रता-शून्य, अनाकुल ; (उत्त १५) ।
अव्वत्त, **अव्वत्तय** वि [**अव्यक्त**] १ अस्पष्ट, अस्फुट ; (उप ७६८ टी ; सुर ४, २१४ ; श्रा २७) । २ छोटी उमर का वालक, बच्चा ; (निचू १८) । ३ अगीतार्थ, शास्त्र-रहस्यानभिज्ञ (साधु) ; (धर्म २ ; आचा) । ४ पु. अव्यक्त मत का प्रवर्तक एक जैनाभास मुनि ; (ठा ७) । ५ न. सांख्य मत में प्रसिद्ध प्रकृति ; (आवम) । °**मय** न [°**मत**] एक जैनाभास मत ; (विसे) ।
अव्वत्तिय देखो **अवत्तिय** ; (औप ; विसे ; आवम) ।
अव्वय न [**अव्रत**] १ व्रत का अभाव ; (श्रा १६ ; सम १३२) । २ वि. व्रत-रहित ; (विसे २५४२) ।

अव्वय वि [**अव्यय**] १ अक्षय, अखूट ; (सुपा ३२१)। २ नित्य, शाश्वत ; (भग २, १)।
अव्ववसिय वि [**अव्यवसित**] १ अनिश्चित, संदिग्ध। २ अपराक्रमी ; (ठा ३, ४)।
अव्वसण न [**अव्यसन**] १ व्यसन-रहित ; २ लोकोत्तर रीति से १२ वाँ दिन ; (जं ७)।
अव्वह वि [**अव्यथ**] १ व्यथा-रहित। २ न. निश्चल ध्यान ; (ठा ४, १ ; औप)।
अव्वहिय वि [**अव्यथित**] १ अपीडित ; (पंचा ५)। २ निश्चल ; (बृह १)।
अव्वा स्त्री [**दे. अम्बा**] माता, जननी ; (दे १, ५ ; षड्)।
अव्वाइद्ध वि [**अव्याविद्ध**] १ अ-विपर्यस्त, अ-विपरीत। २ न. सूत्र का एक गुण, अक्षरों की उलट-पुलट का अभाव, (बृह १ ; गच्छ २)।
अव्वागड वि [**अव्याकृत**] अ-व्यक्त, अस्फुट ; (आचा ; सत्त ६ टी)।
अव्वाण वि [**आव्यान**] थोड़ा स्निग्ध ; (ओघ ४८८)।
अव्वावाह वि [**अव्याबाध**] १ हरज-रहित, बाधा-वर्जित ; (आव ३)। २ न. रोग का अभाव ; (भग १८, १०)। ३ सुख ; (आवम)। ४ मोक्ष-स्थान, मुक्ति ; (भग १, १)। ५ पुं लोकान्तिक देव-विशेष ; (णाया १, ८)।
अव्वावड वि [**अव्यापृत**] १ जो व्यवहार में न लाया गया हो, व्यापार-रहित। २ एक प्रकार का वास्तु, (बृह ३)।
अव्वावन्न वि [**अव्यापन्न**] अ-विनष्ट, नाश को अप्राप्त ; (भग १, ७)।
अव्वावार वि [**अव्यापार**] व्यापार-वर्जित ; (स ५०)।
अव्वाहय वि [**अव्याहत**] १ रुकावट-वर्जित ; (ठा ४, ४ ; सुपा ८६)। २ अनुपहत, आघात-रहित ; (णदि)। °**पुव्वावरत्त** न [°**पूर्वापरत्व**] जिसमें पूर्वापर का विरोध या असंगति न हो ऐसा (वचन) ; (राय)।
अव्वाहार पुं [**अव्याहार**] नहीं बोलना, मौन, (पाअ)।
अव्वाहिय वि [**अव्याहृत**] नहीं बुलाया हुआ ; (जीव ३ ; आचा)।
अव्विरय वि [**अविरत**] विरति-रहित ; (सट्टि ८)।
अव्वो अ नीचे के अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक अर्थ का सूचक अव्यय ;—१ सूचना ; २ दुःख ; ३ संभाषण ; ४ अपराध ; ५ विस्मय, ६ आनन्द ; ७ आदर, ८ भय ; ६ खेद ; १० विषाद ; ११ पश्चाताप ; "अव्वो हरंति हिययं, तहवि न वेसा हवंति जुवईण।
अव्वो किंपि रहस्सं, मुणंति धुत्ता जणब्भहिआ ॥
अव्वो सुप्पहायमिणं,अव्वो अज्जम्ह सप्फलं जीअं।
अव्वो अइअम्मि तुमे. नवरं जइ सा न जूरिहिइ ॥"
(हे २, २०४)।
अव्वोगड वि [**अव्याकृत**] १ अविशेषित, (बृह २)। २ फैलाव-रहित ; (दसा ३)। ३ नहीं बांटा हुआ ; ४ अस्फुट, अस्पष्ट ; ५ न एक प्रकार का वास्तु ; (बृह ३)।
अव्वोच्छिण्ण वि [**अव्युच्छिन्न अव्यवच्छिन्न**] १ अान्तर-रहित, सतत, विच्छेद-वर्जित ; (वव ७)। २ नित्य ; ३ अव्याहत; (गउड)।
अव्वोच्छित्ति स्त्री [**अव्युच्छित्ति, अव्यवच्छित्ति**] १ सातत्य, प्रवाह, बीचमें विच्छेद का अभाव, परंपरा से बराबर चला आना, (आवम)। °**नय** पुं [°**नय**] वस्तु को किसी न किसी रूप से स्थायी मानने वाला पक्ष, द्रव्यार्थिक नय ; (भग ७, ३)
अव्वोच्छिन्न देखो **अव्वोच्छिण्ण** ; (ओघ ३२२ ; स २५६)।
अव्वोयड देखो **अव्वोगड** ; (भग १०, ४ ; भास ७१)।
अस सक [**अश्**] व्याप्त करना। असइ, असए, (षड्)।
अस अक [**अस्**] होना। अस्सि, "हाहा हओहमस्सि त्ति कट्टु" (भग १५)। असि ; (प्राप)। अत्थि ; (हे ३, १४६ ; १४७ ; १४८)। भूका—आसि, आसी; (भग ; उवा)।
अस सक [**अश्**] भोजन करना, खाना। असइ ; "भव्व-मणोसालूरं नासइ दोसोवि जत्थाहो ; (सार्ध १०६ ; भवि)। वकृ—**असंत** ; (भवि)। कृ—**असियव्व** ; (सुपा ४३८)।
अस वकृ [**असत्**] अविद्यमान, असत् ; "दुहओ ण विण-स्सति, नो य उप्पज्जए असं" (सूअ १, १, १, १६)।
असइ स्त्री [**असृति**] १ उलटा रखा हुआ हस्त तल ; २ धान्य मापने का एक परिमाण, ३ उससे मापा हुआ धान्य, (अणु ; णाया १, ७)।
असइ स्त्री [**दे. असत्त्व**] अभाव, अ-विद्यमानता,
" पढमं जईण दाऊण, अप्पणा पणमिऊण पारेइ।
असईय सुविहियाणं, भुंजेइ य कयदिसालोओ " (उवा)।

(d) $2x - 3y = 0$

असइ } **असइं** } **असई** } अ [**असकृत्**] अनेक वार, वारंवार ; (भवि ; आचा ; उप ८३३ टी)।

असई स्त्री [**असती**] १ कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (सुपा ६)। २ दासी ; (भग ८, ६)। °**पोस** पु [°**पोष**] धन के लिए दासी, नपुंसक या पशुओं का पालन, " असई-पासं च वज्जिज्जा " (श्रा २२)। °**पोसणया** स्त्री [°**पोषणा**] देखो अनन्तरोक्त अर्थ ; (पडि)।

असउण पुंन [**अशकुन**] अपशकुन ; (पंचा ७)।

असंक वि [**अशङ्क**] १ शङ्का-रहित, अ-संदिग्ध। २ निडर, निर्भय , (आचा ; सुर २, २६)।

असंकल वि [**अश्रृङ्खल**] श्रृङ्खला-रहित, अनियन्त्रित ; (कुमा)।

असंकि वि [**अशङ्किन्**] संदेह नहीं करने वाला ; (सूअ १, १, २)।

असंकिलिट्ठ वि [**असंक्लिष्ट**] १ संक्लेश-रहित ; २ विशुद्ध, निर्दोष; (औप ; पण्ह २, १)।

असंख वि [**असंख्य**] संख्या-रहित, परिमाण-रहित ; (सुपा ५६६ ; जी २७ ; ४०)।

असंख न [**असंख्य**] सांख्य-मत से भिन्न दर्शन ; (सुपा ५६६)।

असंखड न [**दे**] कलह, झगडा; (निचू १)।

असंखडिय वि [**दे**] कलह करने वाला, झगडाखोर , (वृह १)।

असंखय देखो **असंख**=असंख्य ; (सं ८५)।

असंखय वि [**असंस्कृत**] १ संस्कार-हीन। २ संधान करने को अशक्य ; (राज)।

असंखिज्ज वि [**असंख्येय**] गिनती या परिमाण करने को अशक्य ; (नव ३५)।

असंखिज्जय देखो **असंखेज्जय** ; (अणु)।

असंखेज्ज देखो **असंखिज्ज** ; (भग)।

असंखेज्जइ° वि [**असंख्येय**] असंख्यातवाँ। °**भाग** पुं [°**भाग**] असंख्यातवाँ हिस्सा ; (औप ; भग)।

असंखेज्जय पुंन [**असंख्येयक**] गणना-विशेष ; (अणु)।

असंग वि [**असङ्ग**] १ निस्सङ्ग, अनासक्त; (पण्ण २)। २ पुं. आत्मा; (आचा)। ३ मुक्त जीव। ४ न. मोक्ष, मुक्ति ; (पंचव ३ ; औप)।

असंगय न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा , (दे १, ३४)।

असंगहिय वि [**असंगृहीत**] १ जिसका संग्रह न किया गया हो वह ; २ अनाश्रित ; (ठा ८)।

असंगहिय वि [**असंग्रहिक**] १ संग्रह नहीं करने वाला ; २ पुं. नैगम नय का एक भेद ; (विसे)।

असंगिअ पुं [**दे**] १ अश्व, घोड़ा ; २ वि. अनवस्थित, चञ्चल ; (दे १, ५५)।

असंघयण वि [**असंहनन**] १ संहनन से रहित। २ वज्रऋषभनाराच आदि प्राथमिक तीन संघयणों से रहित ; (निचू २०)।

असंजण न [**असञ्जन**] निःसङ्गता, अनासक्ति; (निचू १)

असंजम वि [**असंयम**] १ हिंसा, झूठ आदि सावद्य अनुष्ठान ; (सूअ १, १३)। २ हिंसा आदि पाप-कार्यों से अनिवृत्ति ; (धर्म ३)। ३ अज्ञान ; (आचा)। ४ असमाधि ; (वव १)।

असंजय वि [**असंयत**] १ हिंसा आदि पाप कार्यों से अनिवृत्त; (सूअ १, १०)। २ हिंसा आदि करने वाला ; (भग ६, ३)। ३ पुं. साधु-भिन्न, गृहस्थ ; (आचा)।

असंजल पुं [**असंज्वल**] ऐरवत वर्ष के एक जिन-देव का नाम ; (सम १५३)।

असंजोगि वि [**असंयोगिन्**] १ संयोग-रहित। २ पुं. मुक्त जीव, मुक्तात्मा ; (ठा २, १)।

असंत वक्र [**असत्**] १ अविद्यमान ; (नव ३३)। २ झूठ, असत्य ; (पण्ह १, २)। ३ असुंदर, अचारु ; (पण्ह २, २)।

असंत देखो **अस**=अश् ।

असंत वि [**अशान्त**] शान्त नहीं, क्रुद्ध ; (पण्ह २, २)।

असंत वि [**असत्त्व**] सत्त्व-रहित, बल-शून्य; (पण्ह १, २)।

असंथड वि [**दे. असंस्तृत**] अशक्त, असमर्थ; (आचा ; वृह ५)।

असंथरंत वक्र [**दे. असंस्तरत्**] १ समर्थ नहीं होता हुआ; २ खोज नहीं करता हुआ ; (वव ४)। ३ तृप्त नहीं होता हुआ ; (ओघ १८२)।

असंथरण न [**दे. असंस्तरण**] १ निर्वाह का अभाव; (वृह १)। २ पर्याप्त लाभ का अभाव ; (पंचव ३)। ३ असमर्थता, अशक्त अवस्था ; (धर्म ३; निचू १)।

असंथरमाण वक्र [**दे. असंस्तरमाण**] देखो **असंथरंत**; (वव ४ ; ओघ १८१)।

असंधिम वि [**असंधिम**] संधान-रहित, अखण्ड ; (बृह ५) ।
असंभव्व वि [**असंभाव्य**] जिसकी संभावना न हो सके ऐसा ; (श्रा १२) ।
असंभावणीय वि [**असंभावनीय**] ऊपर देखो ; (महा) ।
असंलप्प वि [**असंलप्य**] अनिर्वचनीय ; (अणु) ।
असंलोय पुं [**असंलोक**] १ अ-प्रकाश । २ वह स्थान जिसमें लोगों का गमनागमन न हो, भीड़-रहित स्थान ; (आचा) ।
असंवर पुं [**असंवर**] आश्रव, संवर का अभाव ; (ठा ५, २) ।
असंवरीय वि [**असंवृत**] १ अनाच्छादित । २ नहीं रुका हुआ ; (कुमा) ।
असंवुड वि [**असंवृत**] असंयत, पाप-कर्म से अनिवृत्त ; (सूअ १, १, ३) ।
असंसइय वि [**असंशयित**] अ-संदिग्ध; (सूअ २, २) ।
असंसट्ठ वि [**असंसृष्ट**] १ दूसरे से नहीं मिला हुआ ; (बृह २)। २ लेप-रहित ; (औप) । ३ स्त्री. पिण्डैषणा का एक भेद ; (पव ६६) ।
असंसत्त वि [**असंसक्त**] १ अ-मिलित ; (उत्त २) । २ अनासक्त ; (दस ८ ; उत्त ३) ।
असंसय वि [**असंशय**] १ संशय-रहित ; (बृह १) । २ क्रिवि. निःसंदेह, नक्की ; (अभि ११०) ।
असंसार पुं [**असंसार**] संसार का अभाव, मोक्ष ; (जीव १) ।
असंसि वि [**अस्रंसिन्**] अ-विनश्वर ; (कुमा) ।
असक्क वि [**अशक्य**] जिसको न कर सके वह ; (सुपा ६५१) ।
असक्क वि [**अशक्त**] असमर्थ ; (कुमा) ।
असक्कय वि [**असंस्कृत**] संस्कार-रहित ; (पण्ह १, २) ।
असक्कय वि [**असत्कृत**] सत्कार-रहित ; (पण्ह १, २) ।
असक्कणिज्ज वि [**अशकनीय**] अशक्य ; (कुमा) ।
असगाह, **असग्गह**, **असग्गाह** पुं [**असद्ग्रह**] १ कदाग्रह ; (उप ६७२ ; सुपा १३४) । २ अति-निर्बन्ध, विशेष आग्रह ; (भवि) ।

असच्च न [**असत्य**] १ झूठ वचन ; (प्रासू १५१) । २ वि. झूठा ; (पण्ह १, २) । °**मोस** न [°**मृष**] झूठ से मिला हुआ सत्य ; (द्र २२) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] झूठ बोलने वाला ; (सम ५० ; पउम ११, ३४) । °**मोस** न [°**मृष**] नहीं सत्य और नहीं झूठ ऐसा वचन ; (आचा) । °**मोसा** स्त्री [°**मृषा**] देखो अनन्तरोक्त अर्थ ; (पंच १) । °**संध** वि [°**संध**] १ असत्य- प्रतिज्ञ ; २ असत्य अभिप्राय वाला ; (महा ; पण्ह १, २) ।
असज्ज, **असज्जमाण** वकृ [**असजत्**] संग नहीं करता हुआ ; (आचा ; उत्त १४) ।
असज्झाइय वि [**अस्वाध्यायिक**] पठन-पाठन का प्रतिबन्धक कारण ; (पव २६८) ।
असड्ढ वि [**अश्रद्ध**] श्रद्धा-रहित ; (कुमा) ।
असढ वि [**अशठ**] सरल, निष्कपट ; (सुपा ५५०) । °**करण** वि [°**करण**] निष्कपट भाव से अनुष्ठान करने वाला ; (बृह ६) ।
असण न [**अशन**] १ भोजन, खाना ; (निचू ११) । २ जो खाया जाय वह, खाद्य पदार्थ ; (पव ४) ।
असण पुं [**असन**] १ बीजक-नामक वृक्ष ; (पण्ण १ ; णाया १, १ ; औप ; पाअ ; कुमा) । २ न. क्षेपण, फेंकना ; (विसे २७६५) ।
असणि पुस्त्री [**अशनि**] १ वज्र ; (पाअ) । २ आकाश से गिरता अग्नि-कण ; (पण्ण १) । ३ वज्र का अग्नि ; (जी ६) । ४ अग्नि ; (स ३३२) । ५ अस्त्र-विशेष ; (स ३८५) । °**प्पह** पुं [°**प्रभ**] रावण के मामा का नाम ; (से १२,६१) । °**मेह** पुं [°**मेघ**] १ वह वर्षा जिसमें ओले गिरते हैं ; २ अति भयंकर वर्षा, प्रलय-मेघ ; (भग ७, ६) । °**वेग** पुं [°**वेग**] विद्याधरों का एक राजा ; (पउम ६, १५७) ।
असणी स्त्री [**अशनी**] एक इन्द्राणी ; (ठा ४, १) ।
असण्ण वि [**असंज्ञ**] संज्ञा-रहित, अचेतन ; (लहुअ ६) ।
असण्णि वि [**असंज्ञिन्**] १ संज्ञि-भिन्न, मनो-ज्ञान से रहित (जीव) ; (ठा २, २) । २ सम्यग्दृष्टि-भिन्न, जैनेतर ; (भग १, २) । °**सुय** न [°**श्रुत**] जैनेतर शास्त्र ; (णंदि) ।
असत्त वि [**अशक्त**] असमर्थ ; (सुर ३, २४४ ; १०, १७४) ।

(d) $2x - 3y = 0$

तलवार की धार ; (उत्त १६) । °धेणु, °धेणुआ स्त्री [°धेनु, °धेनुका] छुरी ; (गउड ; पाअ) । °पत्त न [°पत्र] १ तलवार ; (विपा १, ६) । २ तलवार के जैसा तीक्ष्ण पत्र ; (भग ३, ६) । ३ तलवार की पतरी ; (जीव ३) । ४ पु. नरकपाल देवों की एक जाति ; (सम २६) । °पुत्तगा स्त्री [°पुत्रिका] छुरी ; (उप पृ ३३४) । °मुट्ठि स्त्री [°मुष्टि] तलवार की मूठ ; (पाअ) । °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती राजा की एक उत्तम तलवार ; (ठा ७) । °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] खड्ग-लता, तलवार ; (विपा १, ३) । °वण न [°वन] खड्गाकार पत्ती वाले वृक्षों का जंगल ; (पण्ह १, १) । °वत्त देखो °पत्त ; (से ३, ४२) । °हर वि [°धर] तलवार-धारक, योद्धा ; (से ६, १८) । °हारा देखो °धारा ; (उव) ।

असिइ (अप) देखो **असीइ** ; (सण) ।

असिण न [**अशन**] भोजन, खाना ; "अग्गपिंडं परिट्ठविज्जमाणं पेहाए, पुरा असिणा इवा अवहारा इवा " (आचा २, १, ५, १) ।

असिद्ध वि [**असिद्ध**] १ अ-निष्पन्न । २ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध दुष्ट हेतु ; (विसे २८२४) ।

असिय वि [**अशित**] भुक्त, खादित ; (पाअ ; सुपा २१२) ।

असिय वि [**असित**] १ कृष्ण, अ-श्वेत , (पाअ) । २ अशुभ ; (विसे) । ३ अवद्ध, अ-यन्त्रित ; (सूअ १, २, १) । "सिया एगे अणुगच्छंति, असिया एगे अणुगच्छंति ; (आचा) । °क्ख पुं [°ाक्ष] यक्ष-विशेष ; (सण) ।

असिय न [**दे**] दात्र, दाँती ; (दे १, १४) ।

असियव्व देखो **अस**=अश् ।

असिलेसा स्त्री [**अश्लेषा**] नक्षत्र-विशेष ;(सम ११) ।

असिलोग पुं [**अश्लोक**] अकीर्ति, अजस ; (सम १२) ।

असिव न [**अशिव**] १ विनाश ; २ असुख ; ३ देवतादि कृत उपद्रव ; (ओघ ७) । ४ मारी रोग ; (वव ४) ।

असिविण पुं [**अस्वप्न**] देव, देवता ; (प्रामा) ।

असिव्व देखो **असिव** ; (वव ७ ; प्राप्र) ।

असिह वि [**अशिख**] शिखा-रहित ; (वव ४) ।

असीइ स्त्री [**अशीति**] संख्या-विशेष, अस्सी, ८० ; (सम ८८) । °म वि [°तम] अस्सीवाँ, ८० वाँ ; (पउम ८०, ७४) ।

असीम वि [**असीमन्**] निःसीम ; "असीमतभत्तिराएण " (उप ७२८टी) ।

असील वि [**अशील**] १ दुःशील, असदाचारी ; (पण्ह १, २) । २ न. असदाचार, अ-ब्रह्मचर्य । °मंत वि [°वत्] १ अब्रह्मचारी; (ओघ ७७७) । २ अ-संयत , (सूअ १,७)।

असु पुं. व [**असु**] १ प्राण ; (स ३८३) । २ न. चित्त ; ३ ताप ; (प्राप्र ; वृष ५१) ।

असु देखो **अंसु** ; (प्राप्र) ।

असुइ वि [**अशुचि**] १ अपवित्र, अ-स्वच्छ, मलिन : (औप , वव ३) । २ न. अमेध्य, विष्ठा ; (ठा ६ ; प्रासू १६६) ।

असुइ वि [**अश्रुति**] शास्त्र-श्रवण-रहित ; (भग ७, ६)।

असुईकय वि [**अशुचीकृत**] अपवित्र किया हुआ ; (उप ७२८ टी) ।

असुग पुं [**असुक**] देखो **असु**=असु ; (हे १,१७७) ।

असुज्झंत वि [**अ-दृश्यमान**] नहीं दिखाता हुआ, "अन्नंपि जं असुज्झंतं । भुंजंतएण रत्तिं" (पउम १०३, २५) ।

असुणि वि [**अश्रोतृ**] नहीं सुनने वाला, "अलियपयंपिरि अणिमित्तकोवणे असुणि सुणसु मह वयणं" (वज्जा ७२) ।

असुद्ध वि [**अशुद्ध**] १ अस्वच्छ, मलिन । २ न. मैला, अशुचि । °विसोहय पुं [°विशोधक] भंगी, मेहतर ; (सुर १६, १६५) ।

असुभ देखो **असुह**=अशुभ ; (सम ६७ ; भग) ।

असुय वि [**अश्रुत**] नहीं सुना हुआ ; (ठा ४, ४) । °णिस्सिय न [°निश्रित] शास्त्र-श्रवण के विना ही होने वाली बुद्धि—ज्ञान ; (णदि) । °पुव्व वि [°पूर्व] पहले कभी नहीं सुना हुआ ; (महा ; णाया १, १ ; पउम ६५, १४) ।

असुय वि [**असुत**] पुत्र-रहित ; (उत्त २) ।

असुर पुं [**असुर**] १ दैत्य, दानव ; (पाअ) । २ देवजाति-विशेष, भवनपति और व्यन्तर देवों की जाति ; (पण्ह १, ४) । ३ दास-स्थानीय देव ; (आउ ३६) । °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवो की एक अवान्तर जाति ; (ठा १, १ ; महा) । °राय पुं [°राज] असुरों का इन्द्र ; (पि ४००) । °वंदि पुं [°वन्दिन्] राक्षस ; (से ६, ५०) ।

असुरिंद पु [**असुरेन्द्र**] असुरों का राजा, इन्द्र-विशेष ; (णाया १, ८ ; सुपा ७७)।

असुह न [**अशुभ**] १ अ-मंगल, अनिष्ट ; (सुर ४, १६३)। २ पाप-कर्म : (ठा ४, ४)। ३ वि. खराब, अ-सुन्दर ; (जीव १ ; कुमा)। °**णाम** न [°**नामन्**] अशुभ फल देने वाला कर्म-विशेष ; (सम ६७)।

असुह न [**असुख**] दुःख ; (ठा ३, ३)।

असूअ सक [**असूय्**] असूया करना। असूएहि ; (मै ७)।

असूया स्त्री [**असूचा**] १ सूचना का अभाव। २ दूसरे के दोषों को न कह कर अपना ही दोष कहना; (निचू १०)।

असूया स्त्री [**असूया**] असूया, असहिष्णुता ; (दंस)।

असूरिय वि [**असूर्य**] १ सूर्य-रहित, अन्धकार-मय स्थान। २ पुं. नरक-स्थान ; (सूत्र १, ५, १)।

असेव्व देखो **असिव** ; (प्राप्र)।

असेव्व वि [**असेव्य**] सेवा के अयोग्य ; (गउड)।

असेस वि [**अशेष**] निःशेष, सर्व ; (प्राप)।

असोग पुं [**अशोक**] १ सुप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष ; (औप)। २ महाग्रह-विशेष ; (ठा २,३)। ३ हरा रंग ; (राय)। ४ भगवान् मल्लिनाथ का चैत्य-वृक्ष ; (सम १५२)। ५ देव-विशेष ; (जीव ३)। ६ न. तीर्थ-विशेष ; (ती १०)। ७ यक्ष-विशेष ; (विपा १, ३)। ८ वि. शोक-रहित। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ राजा श्रेणिक का पुत्र, राजा कोणिक; (आवम)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (सार्ध ७७)। °**ललिय** पुं [°**ललित**] चतुर्थ बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम ; (सम १५३)। °**वण** न [°**वन**] अशोक वृक्षों वाला वन, (भग)। °**वणिया** स्त्री [°**वनिका**] अशोक वृक्ष वाला बगीचा; (णाया १, १६)। °**सिरि** पुं [°**श्री**] इस नाम का एक प्रख्यात राजा, सम्राट् अशोक ; (विसे ८६२)।

असोगा स्त्री [**अशोका**] १ इस नाम की एक इन्द्राणी ; (ठा ४, १)। २ भगवान् श्रीशीतलनाथ की शासन-देवी; (पव २७)। ३ एक नगरी का नाम ; (पउम २०, १८६)।

असोभण वि [**अशोभन**] अ-सुन्दर, खराब , (पउम ६६, १६)।

असोय देखो **असोग** ; (भग ; महा ; रंभा)।

असोय पुं [**अश्वयुक्**] आश्विन मास ; (सम २६)।

असोय वि [**अशौच**] १ शौच-रहित ; (महा)। २ न. शौच का अभाव ; अशुचिता। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] अशौच को ही मानने वाला ; (ओघ ३१८)।

असोयणया स्त्री [**अशोचनता**] शोक का अभाव ; (पक्खि)।

असोया देखो **असोगा** ; (ठा २, ३ ; संति ६)।

असोल्लिय वि [**अपक्व**] कच्चा ; (उवा)।

असोहि स्त्री [**अशोधि**] १ अशुद्धि ; २ विराधना ; (ओघ ७८८)। °**ठाण** न [°**स्थान**] १ पाप-कर्म ; २ अशुद्धि का स्थान ; ३ दुर्जन का संसर्ग ; ४ अनायतन ; (ओघ ७६३)।

अस्स न [**आस्य**] मुख, मुँह ; (गा ६८६)।

अस्स वि [**अस्व**] १ द्रव्य-रहित, निर्धन। २ पुं. निर्ग्रन्थ, साधु, मुनि ; (आचा)।

अस्स पुं [**अश्व**] १ घोड़ा ; (उप ७६८ टी)। २ अश्विनी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ३ ऋषि-विशेष ; (जं ७)। °**कण्ण** पुं [°**कर्ण**] १ एक अन्तर्द्वीप ; २ इस अन्तर्द्वीप का निवासी ; (णंदि) °**कण्णी** स्त्री [°**कर्णी**] वनस्पति-विशेष ; (पगण १)। °**करण** न [°**करण**] जहां घोडा रखने में आता हो वह स्थान, अस्तबल; (आचा २, १०, १४)। °**ग्गीव** पुं [°**ग्रीव**] पहले प्रतिवासुदेव का नाम, (सम १५३)। °**तर** पुंस्त्री [°**तर**] खच्चड़ ; (पगण १)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १-२ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप और उसके निवासी ; (णंदि ; पगण १)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] यज्ञ-विशेष, जिसमें अश्व मारा जाता है ; (अणु)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ एक प्रसिद्ध राजा, भगवान् पार्श्वनाथ का पिता ; (पव ११)। २ एक महाग्रह का नाम ; (चंद २०)। °**यर** पुं [°**दर**] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४२)।

अस्संख वि [**असंख्य**] संख्या-रहित ; (उप १७)।

अस्संगिअ वि [**दे**] आसक्त ; (षड्)।

अस्संघयणि वि [**असंहननिन्**] संहनन-रहित ; किसी प्रकार के शारीरिक बन्ध से रहित ; (भग)।

अस्संजम देखो **असंजम** ; (उव)।

अस्संजय वि [**अस्वयत**] १ गुरु की आज्ञानुसार चलने वाला, अ-स्वच्छंदी ; (श्रा ३१)।

अस्संजय देखो **असंजय** ; (उव) ।
अस्संदम पुं [**अश्वन्दम**] अश्व-पालक ; (सुपा ६४५) ।
अस्सच्च देखो **असच्च** ; " सुरिणो हवउ वयणमस्सच्चं " (उप १४६ टी) ।
अस्सण्णि देखो **असण्णि** ; (विसे ५१६) ।
अस्सत्थ पुं [**अश्वत्थ**] वृक्ष-विशेष, पीपल ; (नाट) ।
अस्सत्थ वि [**अस्वस्थ**] अ-तंदुरस्त, बिमार ; (सुर ३, १५१ ; माल ६५) ।
अस्सन्नि देखो **असण्णि** ; (सुर १४, ६६ ; कम्म ४, २ ; ३) ।
अस्सम पु [**आश्रम**] १ स्थान, जगह ; २ ऋषियों का स्थान ; (अभि ६६ ; स्वप्न २५) ।
अस्समिअ वि [**अश्रमित**] श्रम-रहित, अनभ्यासी ; (भग) ।
अस्सस अक [**आ+श्वस्**] आश्वासन लेना । हेकृ—**अस्ससिदुं** (शौ) ; (अभि १२०) ।
अस्साइय वि [**आस्वादित**] जिसका आस्वादन किया गया हो वह ; (दे) ।
अस्साएमाण देखो **अस्साय**=आस्वादय् ।
अस्साद सक [**आ+सादय्**] प्राप्त करना । अस्सादेंति; अस्सादेस्सामो ; (भग १५) ।
अस्साद सक [**आ+स्वादय्**] आस्वादन करना ।
अस्सादिय वि [**आसादित**] प्राप्त किया हुआ ; (भग १५) ।
अस्साय देखो **अस्साद**=आ+सादय् ।
अस्साय देखो **अस्साद**=आ+स्वादय् । वकृ—**अस्साए-माण** ; (भग १२, १) । कृ—**अस्सायणिज्ज** , (णाया १, १२) ।
अस्साय देखो **असाय** ; (कम्म २, ७ ; भग) ।
अस्सायण पुं [**आश्वायन**] १ अश्व ऋषि का संतान ; (जं ७) । २ अश्विनी नक्षत्र का गोत्र ; (इक) ।
अस्साविं वि [**आस्राविन्**] झरता हुआ, टपकता हुआ, सच्छिद्र, " जहा अस्साविणिं नावं जाइअंधो दुरूहए " (सूअ १, १, २) ।
अस्सास सक [**आ+श्वासय्**] आश्वासन देना ; दिलासा देना । अस्सासअदि (शौ), (पि ४६०) । अस्सासि, (उत्त २, ४० ; पि ४६१) ।
अस्सि स्त्री [**अश्रि**] १ कोण, घर आदि का कोना ; (ठा ६) । २ तलवार आदि का अग्र-भाग—धार ; (उप पृ ६६) ।
अस्सि पुं [**अश्विन्**] अश्विनी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, २) ।
अस्सिणी स्त्री [**अश्विनी**] इस नाम का एक नक्षत्र , (सम ८) ।
अस्सिय वि [**आश्रित**] आश्रय-प्राप्त ; " विरागमेगम-स्सिओ " (वसु ; ठा ७ ; संथा १८) ।
अस्सु (शौ) न [**अश्रु**] आंसू ; (अभि ५६ ; स्वप्न ८५) ।
अस्सुंक वि [**अशुल्क**] जिसकी चुंगी माफ की गई हो वह ; (उप ५६७ टी) ।
अस्सुद (शौ) देखो **असुय**=अश्रुत ; (अभि १६३) ।
अस्सुय वि [**अस्मृत**] याद नहीं किया हुआ ; (भग) ।
अस्सेसा देखो **असिलेसा** ; (सम १७; विसे ३४०८) ।
अस्सोई स्त्री [**आश्वयुजी**] आश्विन मास की पूर्णिमा ; (चंद १०) ।
अस्सोक्कंता स्त्री [**अश्वोत्क्रान्ता**] संगीत-शास्त्र प्रसिद्ध मध्यम ग्राम की पांचवीं मूर्च्छना ; (ठा ७) ।
अस्सोत्थ देखो **अस्सत्थ** , (पि ७४, १५२, ३०६) ।
अस्सोयव्व वि [**अश्रोतव्य**] सुनने के अयोग्य ; (सुर १४, २) ।
अह अ [**अथ**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अब, बाद, (स्वप्न ४३ ; दं ३१ ; कुमा) । २ अथवा, और ;
" छिज्जउ सीसं अह होउ बंधणं चयउ सव्वहा लच्छी ।
पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ ।। " (प्रासू ३)।
३ मङ्गल : (कुमा) । ४ प्रश्न ; ५ समुच्चय ; ६ प्रतिवचन, उत्तर ; (बृह १) । ७ विशेष ; (ठा ७) । ८ यथार्थता, वास्तविकता; (विसे १२७६) । ९ पूर्वपक्ष; (विसे १७८३) । १०-११ वाक्य की शोभा बढाने के लिए और पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (सूअ १, ७, पचा १६) ।
अह न [**अहन्**] दिवस, दिन , (श्रा १४ ; पाअ) ।
अह अ [**अधस्**] नीचे ; (सुर २, ३८) । °**लोग** पु [°**लोक**] पाताल-लोक; (सुपा ४०)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] नीचे रहा हुआ ; निम्न-स्थित ; (पउम १०२, ६५) ।
अह स [**अदस्**] यह, वह , (पाअ) ।

$2x - 3y = 0$ (d) $2x - 3y = 0$

अह न [दे] दुःख ; (दे १, ६) ।
अह न [अघ] पाप ; (पाअ) ।
अह° देखो अहा ; (हे १, २४५ ; कुमा) । °क्कम, °क्कमसो अ [°क्रम] क्रम के अनुसार , अनुक्रम से ; (ओघ ५ भा ; स ६) । °क्खाय, °खाय न [°ख्यात] निर्दोष चारित्र, परिपूर्ण संयम ; (ठा ५, २ ; नव २६ ; कुमा) । °क्खायसंजय वि [°ख्यातसंयत] परिपूर्ण संयम वाला ; (भग २५, ७) । °च्छंद देखो अहा-छंद ; (स ६) । °त्थ वि [°स्थ] ठीक २ रहा हुआ, यथास्थित ; (ठा ५, ३) । °त्थ वि [°र्थ] वास्तविक ; (ठा ५, ३) । °प्पहाण अ [°प्रधान] प्रधान के हिसाब से ; (भग १५) ।
अहइं अ [अथकिम्] स्वीकार-सूचक अव्यय ; हाँ, अच्छा, (नाट ; प्रयौ ५) ।
अहंकार पु [अहंकार] अभिमान, गर्व ; (सूअ १, ६ , स्वप्न ८२) ।
अहंकारि वि [अहंकारिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ; (गउड)।
अहंणिस न [अहर्निश] रात-दिन, सर्वदा ; (पिंग) ।
अहण वि [अधन] निर्धन, धन-रहित ; (विसे २८१२)।
अहण्णिस न [अहर्निश] रात-दिन, निरन्तर ; (नाट) ।
अहत्ता अ [अधस्तात्] नीचे ; (भग) ।
अहन्न वि [अधन्य] अप्रशस्य हतभाग्य ; (सुर २,३७)।
अहन्निस देखो अहण्णिस ; (सुपा ४६२) ।
अहम वि [अधम] अधम, नीच ; (कुमा) ।
अहमंति वि [अहमन्तिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ ; (ठा १०)।
अहमहमिआ, अहमहमिगया, अहमहमिगा } स्त्री [अहमहमिका] मैं इससे पहले हो जाऊं ऐसी चेष्टा, अत्युत्कण्ठा ; (गा ५८० ; सुपा ५४; १३२; १४८) ।
अहमिंद पुं [अहमिन्द्र] १ उत्तम-श्रेणीय पूर्ण स्वाधीन देव-जाति विशेष ; ग्रैवेयक और अनुतर विमान के निवासी देव; (इक) । २ अपने को इन्द्र समझने वाला, गर्विष्ठ, ' नंपइ पुण रायाणो नरिंद ! सव्वेवि अहमिंदा " (सुर १, १२६) ।
अहम्म देखो अधम्म ; (सूअ १, १, २ ; भग ; नव ६ ; सुर २, ४४ ; सुपा २५८ ; प्रासू १३६) ।
अहम्म वि [अधर्म्य] धर्म-च्युत , धर्म-रहित, गैरव्याजवी ; (लग) ।
अहम्माणि वि [अहम्मानिन्] अभिमानी; (आवम) ।
अहम्मि वि [अधर्मिन्] धर्म-रहित, पापी ; (सुपा १७२)।
अहम्मिट्ठ देखो अधम्मिट्ठ ; (भग १२, २ ; राय) ।
अहम्मिय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी ; (विपा १, १)।
अहय वि [अहत] १ अनुबद्ध, अव्यवच्छिन्न ; (ठा ८— पत्र ४१८) । २ अक्षत, अखण्डित ; (सूअ २, २) । ३ जो दूसरी तरफ लिया गया हो ; (चंद १६) । ४ नया, नूतन ; (भग ८, ६) ।
अहर वि [दे] अशक्त, असमर्थ ; (दे १, १७) ।
अहर पुं [अधर] १ होठ, ओष्ठ ; (णांदि) । २ वि. नीचे का, नीचला; (पण्ह १, ३) । ३ नीच, अधम; (पण्ह १, २) ४ दूसरा, अन्य ; (प्रामा) । °गइ स्त्री [°गति] अधोगति, दुर्गति, नीच गति ; " अहरगइं निति कम्माइं " (पिंड) ।
अहरिय वि [अधरित] तिरस्कृत ; (सुपा ४७) ।
अहरी स्त्री [अधरी] पेषण-शिला, जिस पर मसाला वगैरः पीसा जाता है वह पत्थर; (उवा) । °लोट्ठ पु [°लोष्ट] जिससे पीसा जाता है वह पत्थर ; लोढा , (उवा) ।
अहरीकय वि [अधरीकृत] तिरस्कृत, अवगणित ; (सुपा ४) ।
अहरीभूय वि [अधरीभूत] तिरस्कृत ;
" उयरेण धरंतीए, नररयणमिमं महप्पहं देवि ! ।
अहरीभूयमसेसं, जयंपि तुह रयणगब्भाए " (सुपा ३५)।
अहरुट्ठ पुन [अधरोष्ठ] नीचे का होठ ; (पण्ह १, ३ ; हे १, ८४ ; पड्) ।
अहरेम देखो अहिरेम । अहरेमइ (हे ४, १६६) ।
अहरेमिअ वि [पूरित] पूरा किया हुआ ; (कुमा) ।
अहल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक ; (प्रासू १३५ ; रंभा) ।
अहव देखो अहवा , (हे १, ६७) ।
अहवइ (अप) देखो अहवा ; (कुमा) ।
अहवण, अहवा } अ [अथवा] १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (अणु ; सूअ २, २) । २ या, अथवा ; (वृह १; निचू १ ; पंचा ३ ; हे १, ६७) ।
अहव्व देखो अभव्व ; (गा ३६०) ।
अहव्वण पुं [अथर्वन्] चौथा वेद-शास्त्र ; (औप) ।
अहव्वा स्त्री [दे] असती, कुलटा स्त्री ; (दे १, १८) ।
अहह अ [अहह] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१

आमन्त्रण ; २ खेद ; ३ आश्चर्य ; ४ दुःख ; ५ आधिक्य, प्रकर्ष ; (हे २, २१७ ; श्रा १४ ; कप्पू ; गा ६५६)।
अहा° अ [**यथा**] जैसे, माफिक, अनुसार ; (हे १, २४५)। **°छंद** वि [**°च्छन्द**] १ स्वच्छन्दी, स्वैरी ; (उप ८३३ टी)। २ न. मरजी के अनुसार ; (वव २)। **°जाय** वि [**°जात**] १ नग्न, प्रावरण-रहित ; (हे १, १४५)। २ न जन्म के अनुसार ; ३ जैन साधुओं में दीक्षा काल के परिमाण के अनुसार किया जाता वन्दन—नमस्कार ; (धर्म २)। **°णुपुव्वी** स्त्री [**°नुपूर्वी**] यथाक्रम, अनुक्रम, (णाया १, १ ; पउम १, ८)। **°तच्च** न [**°तत्त्व**] तत्व के अनुसार ; (भग २, १)। **°तच्च** न [**°तथ्य**] सत्य सत्य ; (सम १६)। **°पडिरूव** वि [**°प्रतिरूप**] १ उचित, योग्य, (औप)। २ क्रिवि. यथायोग्य ; (विपा १, १)। **°पवत्त** वि [**प्रवृत्त**] १ पूर्व की तरह ही प्रवृत्त, अपरिवर्तित ; (णाया १, ५)। २ न. आत्मा का परिणाम-विशेष , (स ४७)। **°पवित्तिकरण** न [**°प्रवृत्तिकरण**] आत्मा का परिणाम-विशेष, (कम्म ५)। **°वायर** वि [**°वादर**] निस्सार, सार-रहित ; (णाया १, १)। **°भूय** वि [**°भूत.**] तात्त्विक, वास्तविक; (ठा १, १)। **°राइणिय, °रायणिय** न [**°रात्निक**] यथाज्येष्ठ, वडे के क्रम से ; (णाया १, १ ; आचा)। **°रिय** न [**ऋजु**] सरलता के अनुसार ; (आचा)। **°रिह** न [**°र्ह**] यथोचित ; (ठा २, १)। २ वि. उचित, योग्य , (धर्म १)। **°रीय** न [**°रीत**] १ रीति के अनुसार ; २ स्वभाव के माफिक ; (भग ५, २)। **°लंद** पुं [**°लन्द**] काल का एक परिमाण, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतना समय ;(कप्प)। **°वगास** न [**°वकाश**] अवकाश के अनुसार ; (सूअ २, ३)। **°वच्च** वि [**°पत्य**] पुत्र-स्थानीय ; (भग ३, ७)। **°संथड** वि [**°संस्तृत**] शयन के योग्य ; (आचा)। **°संविभाग** पुं [**°संविभाग**] साधु को दान देना ; (उवा)। **°सच्च** न [**°सत्य**] वास्तविकता, सचाई ; (आचा)। **°सत्ति** न [**°शक्ति**] शक्ति के अनुसार , (पसू ४)। **°सुत्त** न [**°सूत्र**] आगम के अनुसार ; (सम ७७)। **°सुह** न [**°सुख**] इच्छानुसार ; (णाया १, १ ; भग)। **°सुहुम** वि [**°सूक्ष्म**] सारभूत , (भग ३, १)। देखो **अह°** ।

अहासंखड वि [**दे**] निष्कम्प, निश्चल ; (निचू २)।
अहासल वि [**अहास्य**] हास्य-रहित ; (सुपा ६१०)।
अहाह अ [**अहाह**] देखो **अहह** ; (हे २, २१७)।
अहि देखो **अभि** ; (गउड ; पाअ ; पंचव ४)।
अहि अ [**अधि**] इन अर्थों का सूचक अव्यय,—१ आधिक्य, विशेषता ; जैसे—'अहिगंध, 'अहिमास'। २ अधिकार, सत्ता ; जैसे—'अहिगय '। ३ ऐश्वर्य ; जैसे—'अहिट्ठाण'। ४ ऊंचा, ऊपर ; जैसे—'अहिट्ठा'।
अहि पुं [**अहि**] १ सर्प, साँप ; (पणण १ ; प्रासू १६ ; ३६, १०५)। २ शेष नाग ; (पिंग)। **°च्छत्ता** स्त्री [**°च्छत्रा**] नगरी-विशेष ; (णाया १, १६ ; ती ७)। **°मड** पुन [**°मृतक**] साँप का मुर्दा , (णाया १, ६)। **°वइ** पु [**°पति**] शेष नाग , (अच्चु ६०)। **°विंछिअ** पुं [**°वृश्चिक**] सर्प के मूत्र से उत्पन्न होने वाली वृश्चिक जाति ; (कुमा)।
अहिअल न [**दे**] क्रोध, गुस्सा ; (दे १, ३६ ; पड्)।
अहिआअ न [**अभिजात**] कुलीनता , खानदानी , (गा ३८)।
अहिआइ स्त्री [**अभिजाति**] कुलीनता ; (पड्)।
अहिआर पु [**दे**] लोक-यात्रा, जीवन-निर्वाह, (दे १, २६)।
अहिउत्त वि [**दे**] व्याप्त, खचित ; (गउड)।
अहिउत्त वि [**अभियुक्त**] १ विद्वान्, पण्डित। २ उद्यत, उद्योगी ; (पाअ)। ३ शत्रु से घिरा हुआ ; (वेणी १२३ टि)।
अहिऊर सक [**अभि+पूरय्**] पूर्ण करना, व्याप्त करना। कर्म—अहिऊरिज्जति , गउड)।
अहिऊल सक [**दह्**] जलाना, दहन करना। अहिऊलइ ; (हे ४, २०८ ; पड् ; कुमा)।
अहिओय पु [**अभियोग**] १ संबन्ध ; (गउड)। २ दोषारोपण , (स २२६)। देखो **अभिओअ** , (भवि)।
अहिंद पु [**अहीन्द्र**] १ सर्पों का राजा, शेष नाग , (अच्चु १)। २ श्रेष्ठ सर्प , (कुमा)। **°पुर** न [**°पुर**] वासुकि-नगर। **°पुरणाह** पुं [**°पुरनाथ**] विष्णु, अच्युत ; (अच्चु २६)।
अहिंसग वि [**अहिंसक**] हिंसा नहीं करने वाला , (ओघ ७४७)।
अहिंसण न [**अहिंसन**] अहिंसा ; (धर्म १)।
अहिंसय देखो **अहिंसग** ; (पण्ह २, १)।

$x + y = 0$
(d) $2x - 3y = 0$

अहिंसा स्त्री [**अहिंसा**] दूसरे को किसी प्रकार से दुःख नहीं देना ; (निचू २ ; धर्म ३ ; सूअ १, ११)।

अहिंसिय वि [**अहिंसित**] अ-मारित, अ-पीड़ित , (सूअ १, १, ४)।

अहिकंख देखो **अभिकंख**। वकृ—**अहिकंखंत** ; (पंचव ४)।

अहिकंखिर वि [**अभिकांक्षिन्**] अभिलाषी, इच्छुक ; (सण)।

अहिकय वि [**अधिकृत**] जिसका अधिकार चलता हो वह, प्रस्तुत ; (विसे १५८)।

अहिकरण देखो **अहिगरण** ; (निचू ४)।

अहिकरणी देखो **अहिगरणी** ; (ठा ८)।

अहिकारि देखो **अहिगारि** ; (रंभा)।

अहिकिच्च अ [**अधिकृत्य**] अधिकार कर ; उद्देश कर ; (आचू १)।

अहिक्खण न [**दे**] उपालंभ, उलहना ; (दे १, ३५)।

अहिक्खित्त वि [**अधिक्षिप्त**] १ तिरस्कृत ; २ निन्दित ; ३ स्थापित ; ४ परित्यक्त ; ५ क्षिप्त ; (नाट)।

अहिक्खिव सक [**अधि+क्षिप्**] १ तिरस्कार करना। २ फेंकना। ३ निन्दना। ४ स्थापित करना। ५ छोड़ देना। अहिक्खिवइ ; (उव)। अहिक्खिवाहि ; (स ३२६)। वकृ—**अहिक्खिवंत** ; (पउम ६५, ४४)।

अहिक्खेव पु [**अधिक्षेप**] १ तिरस्कार ; २ स्थापन; ३ प्रेरणा ; (नाट)।

अहिखिव देखो **अहिक्खिव**। वकृ—**अहिखिवंत** ; (स ५७)।

अहिग देखो **अहिय**=अधिक ; (विसे १६४३ टी)।

अहिखीर सक [**दे**] १ पकड़ना। २ आघात करना। अहिखीरइ ; (भवि)।

अहिगंध वि [**अधिगन्ध**] अधिक गन्ध वाला ; (गउड)।

अहिगम सक [**अधि+गम्**] १ जानना। २ निर्णय करना। ३ प्राप्त करना। कृ—**अहिगम्म** ; (सम्म १६७)।

अहिगम सक [**अभि+गम्**] १ सामने जाना। २ आदर करना। कृ—**अहिगम्म** ; (सण)।

अहिगम पुं [**अधिगम**] १ ज्ञान ; (विसे ६०८)। "जीवाईणमहिगमो मिच्छत्तस्स खओवसमभावे" (धर्म २)। २ उपलम्भ , प्राप्ति ; (दे ७, १४)। ३ गुरु आदि का उपदेश; (विसे २६७५)। ४ सेवा, भक्ति; (सम ५१)। ५ न. गुर्वादि के उपदेश से होने वाली सद्धर्म-प्राप्ति—सम्यक्त्व, (सुपा ६४८)। °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] १ सम्यक्त्व का एक भेद। २ सम्यक्त्व वाला ; (पव १४५)।

अहिगम देखो **अभिगम** ; (औप ; से ८,३३; गउड)।

अहिगमण न [**अधिगमन**] १ ज्ञान ; २ निर्णय ; ३ प्राप्ति, उपलम्भ ; (विसे)।

अहिगमय वि [**अधिगमक**] जनाने वाला, बतलाने वाला ; (विसे ५०३)।

अहिगमिय वि [**अधिगत**] १ ज्ञात ; २ निश्चित; (सुर १, १८१)।

अहिगम्म देखो **अहिगम**=अधि+गम्।

अहिगम्म देखो **अहिगम**=अभि+गम्।

अहिगय वि [**अधिकृत**] १ प्रस्तुत, (रयण ३६)। २ न. प्रस्ताव, प्रसंग ; (राज)।

अहिगय वि [**अधिगत**] १ उपलब्ध, प्राप्त ; (उत्त १०)। २ ज्ञात ; (दे ६, १४८)। ३ पुं. गीतार्थ मुनि, शास्त्राभिज्ञ साधु ; (वव १)।

अहिगर पुं [**दे**] अजगर ; (जीव १)।

अहिगरण पुंन [**अधिकरण**] १ युद्ध, लड़ाई ; (उप पृ २६८)। २ असंयम, पाप-कर्म से अनिवृत्ति ; (उप ८७२)। ३ आत्म-भिन्न बाह्य वस्तु ; (ठा २, १)। ४ पाप-जनक क्रिया ; (णाया १, ५)। ५ आधार ; (विसे ८४)। ६ भेंट, उपहार ; (बृह १)। ७ कलह, विवाद ; (बृह १)। ८ हिंसा का उपकरण ; "मोहंधेण . य रइयं हलउक्खलमुसलपमुहमहिगरणं" (विवे ६१)। °**कड़**, °**कर** वि [°**कर**] कलह-कारक ; (सूअ १, २, २ ; आचा)। °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] पाप-जनक कृति, दुर्गति में ले जाने वाली क्रिया ; (पण्ह १, २)। °**सिद्धंत** पुं [°**सिद्धान्त**] आनुषंगिक सिद्धि करने वाला सिद्धान्त ; (सूअ १, १२)।

अहिगरणी स्त्री [**अधिकरणी**] लोहार का एक उपकरण ; (भग १६, १)। °**खोडि** स्त्री [°**खोटि**] जिस पर अधिकरणी रखी जाती है वह काष्ठ ; (भग १६, १)।

अहिगरणिया, **अहिगरणीया** स्त्री [**आधिकरणिकी**] देखो **अहिगरण-किरिया** ; (सम १० ; ठा २, १ ; नव १७)।

अहिगरी स्त्री [**दे**] अजगरिन, स्त्री अजगर ; (जीव २)।

अहिगार पुं [**अधिकार**] १ वैभव, संपत्ति; " नियअहिगारगुरुत्तं जम्मणमहिमं विहिस्सामो " (सुपा ४१)। २ हक्क, सत्ता; (सुपा ३५०)। ३ प्रस्ताव, प्रसंग; (विसे ४८७)। ४ ग्रन्थ-विभाग; (वसु)। ५ योग्यता, पात्रता; (प्रासू १३५)।

अहिगारि } वि [**अधिकारिन्**] १ अमलदार, राज-
अहिगारिय } नियुक्त सत्ताधीश; " ता तप्पुराहिगारी समागओ तत्थ तम्मि खणे " (सुपा ३५० ; श्रा २७)। २ पात्र, योग्य, (प्रासू १३५ ; सण)।

अहिगिच्च अ [**अधिकृत्य**] अधिकार करके; (उवर ३६, ६६)।

अहिघाय पु [**अभिघात**] आस्फालन, आघात, (गउड)।

अहिजाय वि [**अभिजात**] कुलीन; (भग ६, ३३)।

अहिजाइ स्त्री [**अभिजाति**] कुलीनता; (प्राप्र)।

अहिजाण सक [**अभि+ज्ञा**] पीछानना। भवि—अहिजाणिस्सदि (शौ); (पि ५३४)।

अहिजुंज देखो **अभिजुंज**। संकृ—**अहिजुंजिय**; (भग)।

अहिजुत्त देखो **अभिजुत्त**, (प्रवो ८४)।

अहिज्ज सक [**अधि+इ**] पढ़ना, अभ्यास करना। अहिज्जइ; (अंत २)। वकृ—**अहिज्जंत, अहिज्जमाण**; (उप १६६ टी; उवा)। संकृ—**अहिज्जित्ता, अहित्ता**; (उत्त १; सूत्र १, १२) हेकृ—**अहिज्जिउं**, (दस ४)।

अहिज्ज वि [**अधिज्य**] धनुष की डोरी पर चढाया हुआ (वाण); (दे ७, ६२)।

अहिज्ज } वि [**अभिज्ञ**] जानकार, निपुण; (पि २६६;
अहिज्जग } प्रारू; दस ५)।

अहिज्जण न [**अध्ययन**] पठन, अभ्यास, (विसे ७ टी)।

अहिज्जाविय वि [**अध्यापित**] पाठित, पढ़ाया हुआ; (उप पृ ३३)।

अहिज्जिय वि [**अधीत**] पठित, अभ्यस्त; (सुर ८, १२१; उप ५३० टी)।

अहिज्झिय वि [**अभिध्यित**] लोभ-रहित, अ-लुब्ध, (भग ६, ३)।

अहिट्ठग वि [**अधिष्ठक**] अधिष्ठाता, विधायक, कारक, " नासंदीपलिअंकेसु, न निसिज्जा न पीढए।
निग्गंथापडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा " (दस ६, ५५)।

अहिट्ठा सक [**अधि+स्था**] १ ऊपर चलना। २ आश्रय लेना। ३ रहना, निवास करना। ४ शासन करना। ५ करना। ६ हराना। ७ आक्रमण करना। ८ ऊपर चढ बैठना। ९ वश करना। अहिट्ठेइ; (निचू ५)। " ता अहिट्ठेहि इमं रज्जं " (स २०४)। अहिट्ठेज्जा, (पि २५२; ४६६)। वकृ—**अहिट्ठंत**; (निचू ५)। कवकृ—**अहिट्ठिज्जमाण**; (ठा ४, १)। संकृ—**अहिट्ठेइत्ता**; (निचू १२)। हेकृ—**अहिट्ठित्तए**; (बृह ३)।

अहिट्ठाण न [**अधिष्ठान**] १ बैठना; (निचू ५)। २ आश्रयण; (सूत्र १, २, ३)। ३ मालिक बनना; (आचा)। ४ स्थान, आश्रय; (स ४६६)।

अहिट्ठावण न [**अधिष्ठापन**] ऊपर रखना; (निचू ५)।

अहिट्ठिय वि [**अधिष्ठित**] १ अध्यासित; (णाया १, १४)। २ आधीन किया हुआ; (णाया १, १४)। ३ आक्रान्त, आविष्ट; (ठा ५, २)।

अहिड्डुय वि [**दे. अभिद्रुत**] पीडित, " अहिड्डुयं पीडिअं परद्धं च " (पाअ)।

अहिणंद देखो **अभिणंद**। वकृ—**अहिणंदमाण**; (पउम ११, १२०) कवकृ—**अहिणंदिज्जमाण, अहिणंदीअमाण**; (नाट; पि ५६३)।

अहिणंदण देखो **अभिणंदण**; (पउम २०, ३०; भवि)।

अहिणंदिय देखो **अभिणंदिय**; (पउम ८, १२३; स १४)।

अहिणय देखो **अभिणय**; (कप्पू; सण)।

अहिणव पु [**अभिनव**] १ सेतुबन्ध काव्य का कर्ता राजा प्रवरसेन; (से १, ६)। २ नूतन, नया; (णाया १, १; सुपा ३३०)।

अहिणवेमाण देखो **अहिणी**।

अहिणवेमाण देखो **अहिणु**।

अहिणाण देखो **अहिण्णाण**; (भवि)।

अहिणिवोह पु [**अभिनिवोध**] ज्ञान-विशेष, मतिज्ञान; (पण्ण २६)।

अहिणिवस सक [**अभिनि+वस्**] वसना, रहना। वकृ—**अहिणिवसमाण**; (मुद्रा २३१)।

अहिणिविट्ठ वि [**अभिनिविष्ट**] आग्रह-ग्रस्त; (स २७३)।

अहिणिवेस पु [**अभिनिवेश**] आग्रह, हठ; (स ६२३; अभि ६५)।

अहिणिवेसि वि [**अभिनिवेशिन्**] आग्रही; (पि ४०५)।
अहिणी देखो **अभिणी**। वकृ—**अहिणवेमाण**; (सुर ३, १५०)।
अहिणील वि [**अभिनील**] हरा, हरा रंग वाला; (गउड)।
अहिणु सक [**अभि+नु**] स्तुति करना, प्रशंसना। वकृ—**अहिणवेमाण**; (सुर ३, ७७)।
अहिण्ण वि [**अभिन्न**] भेद-रहित, अ-पृथग्भूत; (गा २६५; ३८०)।
अहिण्णाण न [**अभिज्ञान**] चिन्ह, निशानी; (अभि १३)।
अहिण्णु वि [**अभिज्ञ**] निपुण, ज्ञाता; (हे १, ५६)।
अहितत्त वि [**अभितप्त**] तापित, संतापित; (उत्त २)।
अहित्ता देखो **अहिज्ज**=अधि+इ।
अहिदायग वि [**अभिदायक**] देने वाला, दाता; (सुपा ५४)।
अहिदेवया स्त्री [**अधिदेवता**] अधिष्ठाता देव; (सुपा ६०; कप्पू)।
अहिद्दव सक [**अभि+द्रु**] हैरान करना। अहिद्दवंति; (स ३६३)। भवि—अहिद्दविस्सइ; (स ३६६)।
अहिद्दुय वि [**अभिद्रुत**] हैरान किया हुआ; (स ५१४)।
अहिधाव सक [**अभि+धाव्**] दौडना, सामने दौड कर जाना। वकृ—**अहिधावंत**; (से १३, २६)।
अहिनाण, **अहिन्नाण** देखो **अहिण्णाण**; (श्रा १६; सुपा २५०)।
अहिनिवेस देखो **अहिणिवेस**; (स १२५)।
अहिपच्चुअ सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। अहिपच्चुअइ; (हे ४, २०६; षड्)। **अहिपच्चुअंति**; (कुमा)।
अहिपच्चुअ सक [**आ+गम्**] आना। अहिपच्चुअइ; (हे ४, १६३)।
अहिपच्चुइअ वि [**आगत**] आयात; (कुमा)।
अहिपच्चुइअ न [**दे**] अनुगमन, अनुसरण; (दे १, ४६)।
अहिप्पाय देखो **अभिप्पाय**; (महा; कप्पू)।
अहिप्पेय देखो **अभिप्पेय**; (उप १०३१ टी; स ३४)।
अहिभव देखो **अभिभव**; (गउड)।
अहिमंजु पुं [**अभिमन्यु**] अर्जुन के एक पुत्र का नाम; (कुमा)।
अहिमंतण वि [**अभिमन्त्रण**] मन्त्रित करना, मन्त्र से संस्कारना; (भवि)।
अहिमंतिअ वि [**अभिमन्त्रित**] मन्त्र से संस्कृत; (महा)।
अहिमज्जु, **अहिमण्णु**, **अहिमन्नु** देखो **अहिमंजु** (कुमा; षड्)।
अहिमय वि [**अभिमत**] संमत, इष्ट; (स २००)।
अहिमयर पुं [**अहिमकर**] सूर्य, रवि; (पाअ)।
अहिमर पुं [**अभिमर**] धनादि के लोभ से दूसरे को मारने का साहस करने वाला; (सुर १, ६८)। २ गजादि-घातक; (विसे १७६४)।
अहिमाण पुं [**अभिमान**] गर्व, अहंकार; (प्रासू १७; सण)।
अहिमाणि वि [**अभिमानिन्**] अभिमानी, गर्विष्ठ; (स ४३१)।
अहिमास, **अहिमासग** पुं [**अधिमास, °क**] अधिक मास; (आव १; निचू २०)।
अहिमुह वि [**अभिमुख**] संमुख, सामने रहा हुआ; (से १, ४४; पउम ८, १६७; गउड)।
अहिमुहिहूअ, **अहिमुहीहूअ** वि [**अभिमुखीभूत**] सामने आया हुआ; (पउम १२, १०५; ४५, ६)।
अहिय वि [**अधिक**] १ ज्यादः, विशेष; (औप; जी २७; स्वप्न ४०)। २ क्रिवि. बहुत, अत्यन्त, (महा)।
अहिय वि [**अहित**] अहितकर, शत्रु, दुश्मन; (महा; सुपा ६६)।
अहिय वि [**अधीत**] पठित, अभ्यस्त; "अहियसुओ पडिवज्जिय एगल्लविहारपडिमं सो" (सुर ४, १५४)।
अहिया स्त्री [**अधिका**] भगवान् श्रीनमिनाथ की प्रथम शिष्या; (सम १५२)।
अहियाय देखो **अहिजाय**; (पाअ)।
अहियाइ देखो **अहिजाइ**; (षड्)।
अहियार पुं [**अभिचार**] शत्रु के वध के लिए किया जाता मन्त्रादि-प्रयोग; (गउड)।
अहियार देखो **अहिगार**; (स ५४३; पाअ; मुद्रा २६६; सद्दि ७ टी, भवि; दे ७, ३२)।
अहियारि देखो **अहिगारि**; (दे ६, १०८)।

अहियास सक [अधि+आस्, अधि+सह्] सहन करना, कष्टों को शान्ति से झेलना। अहियासइ, अहियासए, अहियासेइ ; (उवः महा)। कर्म—अहियासिज्जंति; (भग)। वकृ— **अहियासेमाण** ; (आचा)। संकृ—**अहियासित्ता, अहियासेत्तु** ; (सूअ १, ३, ४ ; आचा) हेकृ—**अहियासित्तए** ; (आचा)। कृ—**अहियासियव्व** ; (उप ५४३)।

अहियास वि [अध्यास, अधिसह] सहिष्णु, (वृह १)।

अहियासण न [अध्यासन, अधिसहन] सहन करना ; (उप ५३६ ; स १६२)।

अहियासण न [अधिकाशन] अधिक भोजन, अजीर्ण ; (ठा ६)।

अहियासिय वि [अध्यासित, अधिषोढ] सहन किया हुआ ; (आचा)।

अहिर पुं [अभीर] अहीर, गोवाला ; (गा ८११)।

अहिरम अक [अभि + रम्] क्रीड़ा करना, संभोग करना। अहिरमदि (शौ); (नाट)। हेकृ—**अभिरमिदुं** (शौ); (नाट)।

अहिरम्म वि [अभिरम्य] सुन्दर, मनोहर ; (भवि)।

अहिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोरम ; (पाअ)।

अहिरामिण वि [अभिरामिन्] आनन्द देने वाला ; (सण)।

अहिराय पुं [अधिराज] १ राजा ; (वृह ३)। २ स्वामी, पति ; (सण)।

अहिराय न [अधिराज्य] राज्य, प्रभुत्व ; (सट्टि ७)।

अहिरीअ वि [अह्रीक] निर्लज्ज, वेशरम ; (हे २, १०४)।

अहिरीअ वि [दे] निस्तेज, फीका ; (दे १, २७)।

अहिरीमाण वि [दे, अहारिन् , अह्रीमनस्] १ अमनोहर, मनको प्रतिकूल ; २ अलज्जाकारक ; " एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तितिक्खमाणे परिव्वए, जे य हिरी, जे य अहिरीमाणा " (आचा १, ६, २)।

अहिरूव वि [अभिरूप] १ सुन्दर, मनोहर; (अभि २११)। २ अनुरूप, योग्य ; (विक्र ३८)।

अहिरेम सक [पृ] पूरा करना, पूर्ति करना। अहिरेमइ ; (हे ४, १६९)।

अहिरोइअ वि [दे] पूर्ण ; (षड्)।

अहिरोहण न [अधिरोहण] ऊपर चढना, आरोहण ; (मा ४०)।

अहिरोहि वि [अधिरोहिन्] ऊपर चढ़ने वाला ; (अभि १७०)।

अहिरोहिणी स्त्री [अधिरोहिणी] निःश्रेणी, सीढ़ी ; (दे ८, २६)।

अहिल वि [अखिल] सकल, सब ; (गउड ; रंभा)।

अहिलंख, अहिलंघ, अहिलक्ख सक [काङ्क्ष] चाहना, अभिलाष करना। अहिलंखइ, अहिलंघइ ; (हे ४, १९२)। " अहिलक्खंति मुअंति अ रइवावारं विलासिणीहिअआइं " (से १०, ५७)।

अहिलक्ख वि [अभिलक्ष्य] अनुमान से जानने योग्य ; (गउड)।

अहिलव सक [अभि+लप्] संभाषण करना, कहना। कवकृ—**अहिलप्पमाण** ; (स ८४)।

अहिलस सक [अभि + लष्] अभिलाष करना, चाहना। अहिलसइ ; (महा)। वकृ—**अहिलसंत** , (नाट)।

अहिलसिय वि [अभिलषित] वाञ्छित ; (सुर ४, २४८)।

अहिलसिर वि [अभिलाषिन्] अभिलाषी ; इच्छुक ; (दे ६, ५८)।

अहिलाण न [अभिलान] मुख का बन्धन विशेष ; (णाया १, १७)।

अहिलाव पुं [अभिलाप] शब्द, अवाज ; (ठा २, ३)।

अहिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, वाञ्छा, चाह ; (गउड)।

अहिलासि वि [अभिलाषिन्] चाहने वाला ; (नाट)।

अहिलिअ न [दे] १ पराभव ; २ क्रोध, गुस्सा ; (दे १, ५७)।

अहिलिह सक [अभि+लिख्] १ चिन्ता करना। २ लिखना। अहिलिहंति ; (मुद्रा १०८)। संकृ—**अहिलिहिअ** ; (वेणी २५)।

अहिलोयण न [अभिलोकन] ऊंचा स्थान ; (पगह २, ४)।

अहिलोल वि [अभिलोल] चपल, चञ्चल ; (गउड)।

अहिलोहिआ स्त्री [अभिलोभिका] लोलुपता, तृष्णा ; (से ३, ४७)।

अहिल्ल वि [दे] धनवान्, धनी ; (दे १, १०)।

अहिल्लिया स्त्री [अहिल्या] एक सती स्त्री ; (पगह १, ४)।

(d) $2x - 3y = 0$

अहिव वि [अधिप] १ ऊपरी, मुखिया ; (उप ७२८ टी) । २ मालिक, स्वामी ; (गउड) । ३ राजा, भूप ; " दुट्टाहिवा दडपरा हवंति " (गोय ८) ।

अहिवइ वि [अधिपति] ऊपर देखो ; (णाया १, ८ ; गउड ; सुर ६, ६२) ।

अहिवंजु देखो **अहिमंजु** , (षड्) ।

अहिवंदिय वि [अभिवन्दित] नमस्कृत ; (स ६४१) ।

अहिवज्जु देखो **अहिमंजु** ; (षड्) ।

अहिवड सक [अधि + पत्] आना । वकृ—**अहिवडंत** ; (राज) ।

अहिवड्ढ देखो **अभिवड्ढ** । अहिवड्ढामो , (कप्प) ।

अहिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] बढ़ाया हुआ , (स २४७) ।

अहिवण्ण वि [दे] पीला और लाल रंग वाला ; (दे १, ३३) ।

अहिवण्णु } **अहिवन्नु** } देखो **अहिमंजु** ; (षड् ; कुमा) ।

अहिवस सक [अधि+वस्] निवास करना, रहना । वकृ—**अहिवसंत**; (स २०८) ।

अहिवाइय वि [अभिवादित] अभिनन्दित ; (स ३१४) ।

अहिवायण देखो **अभिवायण** ; (भवि) ।

अहिवाल वि [अधिपाल] पालक, रक्षक ; (भवि) ।

अहिवास पु [अधिवास] वासना, संस्कार ; (दे ७, ८७) ।

अहिवासण न [अधिवासन] संस्काराधान ; (पंचा ८) ।

अहिविण्णा स्त्री [दे] कृत-सापत्न्या स्त्री, उपपत्नी ; (दे १, २५) ।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भ्रम, सदेह ; (पउम ४२, २१) ।

अहिसंजमण न [अभिसंयमन] नियन्त्रण ; (गउड) ।

अहिसंधि पुस्त्री [अभिसंधि] अभिप्राय, आशय ; (पण्ह १, २ , स ४६३) ।

अहिसंधि पुं [दे] वारंवार ; (दे १, ३२)

अहिसर सक [अभि+सृ] १ प्रवेश करना । २ अपने दयित—प्रिय के पास जाना । प्रयो,—कर्म—अभिसारीअदि (शौ), (नाट) । हेकृ—**अभिसारिदुं** (शौ), (नाट) ।

अहिसरण न [अभिसरण] प्रिय के समीप गमन ; (स ५३३) ।

अहिसरिअ वि [अभिसृत] १ प्रिय के समीप गत ; २ प्रविष्ट ; (आवम) ।

अहिसहण न [अधिसहन] सहन करना ; (ठा ६) ।

अहिसाम वि [अभिशाम] काला, कृष्ण वर्ण वाला ; (गउड) ।

अहिसाय वि [दे] पूर्ण, पूरा ; (दे १, २०) ।

अहिसारण न [अभिसारण] १ आनयन ; (से १०, ६२) । २ पति के लिए संकेत स्थान पर जाना ; (गउड) ।

अहिसारिअ वि [अभिसारित] आनीत ; (से १, १३) ।

अहिसारिआ स्त्री [अभिसारिका] नायक को मिलने के लिए संकेत स्थान पर जाने वाली स्त्री ; (कुमा) ।

अहिसिअ न [दे] १ अनिष्ट ग्रह की आशंका से खेद करना—रोना ; (दे १, ३०) । २ वि. अनिष्ट ग्रह से भय-भीत ; (षड्) ।

अहिसिंच देखो **अभिसिंच** । अहिसिंचइ ; (महा) । संकृ—**अहिसिंचिऊण** ; (स ११६) ।

अहिसिंचण न [अभिषेचन] अभिषेक, (सम १२५) ।

अहिसित्त देखो **अभिसित्त** ; (महा ; सुर ८, ११६) ।

अहिसेअ देखो **अभिसेअ** ; (सुपा ३७ ; नाट) ।

अहिसोढ वि [अधिसोढ] सहन किया हुआ ; (उप १४७ टी) ।

अहिस्संग पु [अभिष्वङ्ग] आसक्ति ; (नाट) ।

अहिहय वि [अभिहत] १ आघात-प्राप्त ; (से ५, ७७) । २ मारित, व्यापादित ; (से १४, १२) ।

अहिहर सक [अभि+हृ] १ लेना । २ ऊठाना । ३ अक. शोभना, विराजना । ४ प्रतिभास होना, लगना ।

" वीयाभरणा अकयप्पणमंडणा अहिहरंति रमणीओ ।
सुण्णाओ व कुसुमफलंतरम्मि सहयारवल्लीओ ॥
इह हि हलिद्दाहयदविडसामलीगंडमंडलानील ।
फलमसअलपरिणामावलं वि अहिहरइ चूयाण" (गउड) ।

अहिहर न [दे] १ देव-कुल, पुराना देव-मन्दिर, २ वल्मीक, (दे १, ५७) ।

अहिहव सक [अभि+भू] पराभव करना, जितना । अहिहवंति ; (स १६८) । कर्म—अहिहवीयति ; (स ६६८) ।

अहिहाण न [दे. अभिधान] वर्णना, प्रशंसा ; (दे १, २१)।

अहिहाण देखो अभिहाण ; (स १६५ ; गउड ; सुर ३, २५ ; पात्र)।

अहिहू देखो अहिहव। कवकृ—अहिहूअमाण ; (अभि ३७)।

अहिहूअ वि [अभिभूत] पराभूत, पराम्त ; (दे १, १५८)।

अही सक [अधि+इ] पढना। कर्म—अहीयइ ; (विसे ३१९९)।

अही स्त्री [अही] नागिन, स्त्री-साँप ; (जीव २)।

अहीकरण न [अधिकरण] कलह, झगडा ; (निचू १०)।

अहीगार देखो अहिगार ; "सेसेसु अहीगारो, उवगरण-सरीरमुक्खेसु" (आचानि २५४)।

अहीण वि [अधीन] आयत, आधीन ; (पण्ह २, ४)।

अहीण वि [अ-हीन] अन्यून, पूर्ण ; (विपा १, १ ; उवा)।

अहीय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त "वेया अहीया ण भवंति ताणं" (उत्त १५, १२ ; णाया १, १४ ; सं ७८)।

अहीरग वि [अहीरक] तन्तु-रहित (फलादि) ; (जी १२)।

अहीरु वि [अभीरु] निडर, निर्भीक ; (भवि)।

अहीसर पुं [अधीश्वर] परमेश्वर ; (प्रामा)।

अहुआसेय वि [अहुताशेय] अग्नि के अयोग्य; (गउड)।

अहुणा अ [अधुना] अभी, इस समय, आजकल ; (ठा ३, ३ ; नाट)।

अहुलण वि [अमार्जक] अ-नाशक ; (कुमा)।

अहुल्ल वि [अफुल्ल] अ-विकसित ; (कुमा)।

अहुवंत वकृ [अभवत्] नहीं होता हुआ ; (कुमा)।

अहूण देखो अहीण = अहीन ; (कुमा)।

अहूव वि [अभूत] जो न हुआ हो। °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न हुआ हो ; (कुमा)।

अहे अ [अधस्] नीचे ; (आचा)। °कम्म न [°कर्मन्] आधाकर्म, भिक्षा का एक दोष ; (पिंड)। °काय पुं [°काय] शरीर का नीचला हिस्सा ; (सूत्र १, ४, १)। °चर वि [°चर] बिल आदि में रहने वाले सर्प वगैरः जन्तु ; (आचा)। °तारग पु [°तारक] पिशाच-विशेष ; (पण्ण १)। °दिसा स्त्री [°दिक्] नीचे की दिशा ; (आचा)। °लोग पु [°लोक] पाताल-लोक ; (ठा २, २)। °वाय पुं [°वात] नीचे बहने वाला वायु ; (पण्ण १)। २ अपान-वायु, पर्दन ; (आवम)। °वियड वि [°विकट] भित्यादि-रहित स्थान, खुल्ला स्थान , "तसि भगवं अपडिन्ने अहे-वियडे अहियासए दविए" (आचा)। °सत्तमा स्त्री [°सप्तमी] सातवीं या अन्तिम नरक-भूमि ; (सम ४१ ; णाया १, १६; १६)। देखो अहो = अधस्।

अहे देखो अह = अथ ; (भग १, ६)।

अहेउ पु [अहेतु] १ सत्य हेतु का विरोधी, हेत्वाभास ; (ठा ५, १)। २ वि. कारण-रहित, नित्य ; (सूत्र १, १, १)। °वाय पुं [°वाद] आगम-वाद, जिसमें तर्क—हेतु को छोड कर केवल शास्त्र ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा वाद ; (सम्म १४०)।

अहेउय वि [अहेतुक] हेतु-वर्जित, निष्कारण ; (पउम ६३, ४)।

अहेसणिज्ज वि [यथैपणीय] संस्कार-रहित, कोरा , "अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा" (आचा)।

अहेसर पुं [अहरीश्वर] सूर्य, सूरज ; (महा)।

अहो देखो अह = अधस् ; (सम ३६ ; ठा २, २ ; ३, १ ; भग ; णाया १, १ ; पउम १०२, ८१ ; आव ३)। °करण न [°करण] कलह, झगडा ; (निचू १०)। °गइ स्त्री [°गति] १ नरक या तिर्यञ्च योनि। २ अवनति ; (पउम ८०, ४६)। °गामि वि [°गामिन्] दुर्गति में जाने वाला ; (सम १५३ ; श्रा ३३)। °तरण न [°तरण] कलह, झगडा ; (निचू १०)। °मुह वि [°मुख] अधोमुख, अवनत-मुख, लज्जित ; (सुर २, १५८ ; ३, १३५ ; सुपा २४२)। °लोइय वि [°लौकिक] पाताल लोक से सबन्ध रखने वाला ; (सम १४२)। °हि वि [°अवधि] १ नीचला दरजा का अवधिज्ञान वाला ; (राय)। २ पुंस्त्री. नीचला दरजा का अवधिज्ञान, अवधिज्ञान का एक भेद ; (ठा २, २)।

अहो अ [अहनि] दिवस में, "अहो य राओ य सिवाभि-लासिणो" (पउम ३१, १२८ ; पण्ह २, १)।

अहो अ [अहो] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ विस्मय, आश्चर्य ; २ खेद, शोक ; ३ आमन्त्रण, संबोधन ; ४ वितर्क ; ५ प्रशंसा ; ६ असूया, द्वेष ; (हे २, २१७ ;

आचा ; गउड)। °दाण न [°दान] आश्चर्य-कारक दान ; (उत्त २ ; कप्प)। °पुरिसिगा, °पुरिसिया स्त्री [°पुरुषिका] गर्व, अभिमान ; (स १२३ ; २८८)। °विहार पुं [°विहार] संयम का आश्चर्य-जनक अनुष्ठान ; (आचा)।

अहो° पुंन [अहन्] दिन दिवस ; (पिंग) । °णिस निस, निसि न [°निश] रात और दिन, दिन-रात, " णिरए णेरइयाणं अहोणिसं पच्चमाणाणं " (सुअ १, ५, १ ; श्रा ५०) " अंतो अहोनिसिस्स उ " (विसे ८७३)। °रत्त पुं [°रात्र] १ दिन और रात्रि परिमित काल, आठ प्रहर ; (ठा २, ४) ; " तिण्णि अहोरत्ता पुण न खामिया कयंतेणं " (पउम ४३, ३१)। २ चार-प्रहर का समय, (जो २)। °राइया स्त्री [°रात्रिकी] ध्यान-प्रधान अनुष्ठान-विशेष ; (पंचा १८ ; आव ४ ; सम २१)। °राइंदिय न [°रात्रिन्दिव] दिन-रात ; (भग ; औप)।

अहोरण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चद्दर ; (दे १, २५ ; गा ७७१)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे अयाराइसद्दसंकलणो
णाम पढमो तरंगो समत्तो।

आ

आ पु [**आ**] १ प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय स्वर-वर्ण ; (प्रामा)। इन अर्थों का सूचक अव्यय; —२ अ. मर्यादा, सीमा ; जैसे—'आसमुद्दं' (गउड; विसे ८७४)। ३ अभिविधि, व्याप्ति ; जैसे—"आमूलसिरं फलिहथंभाओ" (कुमा; विसे ८७४)। ४ थोडाई, अल्पता ; जैसे—"आणीलकक्करुद्दंतुरं वरणं" (गउड); 'आअंब' (से ६, ३१ ; विसे १२३५)। ५ समन्तात्, चारों ओर; जैसे—"अणुकुंडलमा विवइण्णसरसक्वरीविलंघियंसम्मि" (गउड; विसे ८७५)। ६ अधिकता, विशेषता ; जैसे—'आदीण' (सूअ १, ५)। ७ स्मरण, याद ; (षड्)। ८ विस्मय, आश्चर्य ; (ठा ५)। ९-१० क्रिया-शब्द के योग में अर्थ-विस्तृति और विपर्यय ; जैसे—'आरुहइ' 'आगच्छंतं' (षड् ; कुमा)। ११ वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है ; (णाया १, २)। १२ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (षड् २, १, ७६)।

आ अ [**आस्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ; १ खेद , (गा ९२६)। २ दुःख ; ३ गुस्सा, क्रोध ; (कप्पू)।

आ सक [**या**] जाना। "अव्वो ण आमि छेत्तं" (गा ८२१)।

आअ वि [**दे**] १ अत्यंत, बहुत; २ दीर्घ, लम्बा; ३ विषम, कठिन; ४ न. लोह, लोहा; ५ मुसल, मूषल; (दे १, ७३)।

आअ वि [**आगत**] आया हुआ ; "पत्थंति आअरोसा" (से १२, ९८ ; कुमा)।

आअअ वि [**आगत**] आया हुआ; (से ३, ४ ; १२, १८; गा ३०१)।

आअअ वि [**आयत**] लम्बा, विस्तीर्ण ; (से ११, ११), "मरगयसूईविद्धं व मोत्तिअ पिअइ आअअग्गीवो। मोरो पाउसआले तणग्गलग्गं उअअबिंदुं" (गा ३६४)।

आअंछ सक [**कृष्**] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। आअंछइ ; (षड्)।

आअंतव्व देखो **आगम**=आ + गम्।

आअंतुअ देखो **आगंतुय** ; (स्वप्न २० ; अभि १२१)।

आअंपिअ देखो **आकंपिय** ; (से १०, ५१)।

आअंब वि [**आताम्र**] थोडा लाल , (से ६, ३१ ; सुर ३, ११०)।

°**आअंब** पुं [**कादम्ब**] हंस, पक्षि-विशेष; (से ६, ३१)।

आअक्ख सक [**आ+चक्ष्**] कहना, बोलना, उपदेश करना। आयक्खाहि ; (भग)। कर्म—आअक्खीअदि (शौ); (नाट)। भूक—आअक्खिद (शौ) ; (नाट)।

आअच्छ देखो **आगच्छ**। आअच्छइ, (षड्)। संकृ—**आअच्छिअ, आअच्छिऊण**; (नाट, पि ५८१; ५८४)।

आअड्ड अक [**दे**] परवश होकर चलना। आअड्डइ ; (दे १, ६६)।

आअड्ड अक [**व्या+पृ**] व्यापृत होना, काम में लगना। आअड्डइ ; (सण, षड्)। आअड्डेइ ; (हे ४, ८१)।

आअड्डिअ वि [**दे**] परवश-चलित, दूसरे की प्रेरणा से चला हुआ ; (दे १, ६८)।

आअड्डिअ वि [**व्यापृत**] कार्य में लगा हुआ , (कुमा)।

आअण्णण देखो **आयन्नण** ; (गा ६५६)।

आअत्ति देखो **आयइ** ; (पिंग)।

आअम देखो **आगम**; (अच्चु ७; अभि १८४ ; गा ४७६ ; स्वप्न ४८ ; मुद्रा ८३)।

आअमण देखो **आगमण** ; (से ३, २० ; मुद्रा १८७)।

आअर सक [**आ+दृ**] आदर करना, सत्कार करना। आअरइ ; (षड्)।

आअर न [**दे**] १ उदूखल, ऊखल ; २ कूर्च; (दे १, ७४)।

आअल्ल पुं [**दे**] १ रोग, बिमारी; (दे १, ७५ ; पाअ)। २ वि. चंचल, चपल ; (दे १, ७५)। देखो **आयल्लया**।

आअलि } स्त्री [**दे**] झाडी, लताओं से निविड प्रदेश ;
आअल्ली } (दे १, ६१)।

आअव्व अक [**वेप्**] काँपना। आअव्वइ ; (षड्)।

आआमि देखो **आगामि** ; (अभि ८१)।

आआस देखो **आयंस** ; (षड्)।

आआसतअ (**दे**) देखो **आयासतल** ; (षड्)।

आइ सक [**आ+दा**] ग्रहण करना, लेना। आइएज्जा ; सूअ १, ७, २९)। आइयंति; (भग)। कर्म—आइयइ, (कस)। संकृ—**आइत्तूण; आयइत्ता, आइत्तु** ; (आचा; सूअ १, १२ ; पि ५७७)। प्रयो—आइयावेंति ; (सूअ २, १)। कृ—**आइयव्व** ; (कस)।

आइ पुं [**आदि**] १ प्रथम, पहला ; (सुर २, १३२)। २ वगैर., प्रभृति ; (जी ३)। ३ समीप, पास। ४ प्रकार, भेद। ५ अवयव, अंश। ६ प्रधान, मुख्य ; "इअ आसंसति निसीह ! सिंहदत्ताइणो दिआ तुज्झ"

(कुमा ; सुअ १, ५) । ७ उत्पत्ति ; (सम्म ६५) । ८ संसार, दुनयाँ; (सुअ १, ७) । °गर वि [°कर] १ आदि-प्रवर्त्तक ; (सम१) । २ पुं. भगवान् ऋषभदेव; (पउम २८, ३६) । °गुण पुं [°गुण] सहभावी गुण; (आव ४) । °णाह पुं [°नाथ] भगवान् ऋषभदेव , (आवम)। °तित्थयर पुं [°तीर्थंकर] भगवान् ऋषभदेव; (णदि)। °देव पु [°देव] भगवान् ऋषभदेव ; (सुर २, १३२)। °म वि [°म] प्रथम, आद्य, पहला; (आव ५) । °मूल न [°मूल] मुख्य कारण ; (आचा) । °मोक्ख पु [°मोक्ष] संसार से छुटकारा, मोक्ष ; २ शीघ्र ही मुक्त होने वाली आत्मा ; " इत्थीओ जे ण सेवंति आइमोक्खा हि ते जणा " (सुअ १, ७) । °राय पु [°राज] भगवान् ऋषभदेव ; (ठा ६) । °वराह पु [°वराह] कृष्ण, नारायण ; (से ७, २) ।

आइ स्त्री [आजि] संग्राम, लडाई ; (संथा) ।

आइअंतिय देखो **अच्चंतिय** , (भग १२, ६) ।

आइं अ [दे] वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (भग ३, २) ।

आइंग न [दे] वाद्य-विशेष ; (पउम ३, ८७ ; ६६, ६)।

आइंच देखो **आयंच** । आइंचइ ; (उवा) ।

आइंछ देखो **आअंछ** । आइंछइ ; (हे ४, १८७) ।

आइक्ख सक [आ+चक्ष्] कहना, उपदेश देना, बोलना , आइक्खइ, (उवा) । वकृ—**आइक्खमाण** ; (णाया १, १२) । हेकृ—**आइक्खित्तए** ; (उवा) ।

आइक्खग वि [आख्यायक] कहने वाला, वक्ता , (पण्ह २, ४) ।

आइक्खण न [आख्यान] कथन, उपदेश ; (बृह ३) ।

आइक्खिय वि [आख्यात] उक्त, उपदिष्ट , (स ३२) ।

आइक्खिया स्त्री [आख्यायिका] १ वार्त्ता, कहानी ; (णाया १, १) । २ एक प्रकार की मैली विद्या, जिससे चाण्डालनी भूत-काल आदि की परोक्ष बातें कहती है , (ठा ६) ।

आइग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, खिन्न ; (पाअ) ।

आइग्घ सक [आ+घ्रा] सूँघना । आइग्घइ, आइग्घाइ ; (षड्) । हेकृ—**आइग्घिउं** ; (कुमा) ।

आइच्च अ [दे] कदाचित् , कोइवार , (पण्ण १७—पत्र ४८५) ।

आइच्च पुं [आदित्य] १ सूर्य, सूरज, रवि ; (सम ५६) । २ लोकान्तिक देव-विशेष ; (णाया १, ८) । ३ न. देवविमान-विशेष ; ४ पुं. तन्निवासी देव ; (पव) । ५ वि. आद्य, प्रथम ; (सुज्ज २०) । ६ सूर्य-संबन्धी ; " आइच्चे णं मासे " (सम ५६)। °गइ पुं [°गति] राक्षस वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, २६१) । °जस पुं [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पुत्र, जिससे इक्ष्वाकु वंश की शाखारूप सूर्यवंश की उत्पत्ति हुई थी ; (पउम ५, ३ ; सुर २, १३४) । °पभ न [°प्रभ] इस नाम का एक नगर ; (पउम ५, ८२) । °पीढ न [°पीठ] भगवान् ऋषभदेव का एक स्मृति-चिन्ह—पादपीठ; (आवम) । °रक्ख पु [°रक्ष] इस नाम का लङ्का का एक राज-पुत्र ; (पउम ५, १६६) । °रय पु [°रजस्] वानर वंश का एक विद्याधर राजा ; (पउम ८, २३४) ।

आइज्ज देखो **आएज्ज** ; (नव १५) ।

आइज्जमाण वकृ [आर्द्रीक्रियमाण] आर्द्र किया जाता, भींजाया जाता ; (आचा) ।

आइज्जमाण देखो **आढा**=आ+दृ ।

आइट्ठ वि [आदिष्ट] १ उक्त, उपदिष्ट ; (सुर ४, १०१) । २ विवक्षित ; (सम्म ३८) ।

आइट्ठ वि [आविष्ट] अधिष्ठित, आश्रित ; (कस) ।

आइट्ठि स्त्री [आदिष्टि] धारणा ; (ठा ७) ।

आइड्ढि स्त्री [आत्मर्द्धि) आत्मा की शक्ति, आत्मीय सामर्थ्य ; (भग १०, ३) ।

आइड्ढिय वि [आत्मर्द्धिक] आत्मीय-शक्ति-संपन्न ; (भग १०, ३) ।

आइण्ण देखो **आइन्न** ; (औप ; भग ७, ८ ; हे ३, १३४) ।

आइत्त वि [आदीप्त] थोड़ा प्रकाशित—ज्वलित ; (णाया १, १) ।

आइत्त वि [आयत्त] अधीन, वशीभूत ; " तुज्झ सिरी जा परस्स आइत्ता " (जीया १०) ।

आइत्तु वि [आदातृ] ग्रहण करने वाला ; (ठा ७) ।

आइत्तूण देखो **आइ**=आ+दा ।

आइदि स्त्री [आकृति] आकार ; (प्राप्र ; स्वप्न २०) ।

आइद्ध वि [आविद्ध] १ प्रेरित ; (से ७, १०) । २ स्पृष्ट, छूआ हुआ , (से ३, ३५) । ३ पहना हुआ, परिहित ; (आक ३८) ।

आइद्ध वि [**आदिग्ध**] व्याप्त ; (णाया १, १)।
आइन्न वि [**आकीर्ण**] १ व्याप्त, भरा हुआ ; (सुर १, ४६ ; ३, ७१)। २ पुं. वस्त्र-दायक कल्प-वृक्ष ; (ठा १०)।
आइन्न वि [**आचीर्ण**] आचरित, विहित ; (आचा ; चैत्य ४६)।
आइन्न वि [**आदीर्ण**] उद्विग्न, खिन्न ; " आइन्नाइं पियराइं तीए पुच्छंति दिव्व-देवन्नं " (सुपा ५६७)।
आइन्न पुं [**दे**] जात्याश्व, कुलीन घोड़ा ; (पगह १, ४)।
आइप्पण न [**दे**] १ आटा ; (गा १६६, दे १, ७८)। २ घर को शाभा के लिये जो चूना आदि की सफेदी दी जाती है वह ; ३ चावल के आटा का दूध ; ४ घर का मण्डन—भूषण ; (दे १, ७८)।
आइय (अप) वि [**आयात**] आया हुआ ; (भवि)।
आइय वि [**आचित**] १ संचित, एकत्रीकृत ; २ व्याप्त, आकीर्ण ; ३ ग्रथित, गुम्फित ; (कप्प; औप)।
आइय वि [**आदृत**] आदर-प्राप्त ; (कप्प)।
आइयण न [**आदान**] ग्रहण, उपादान ; (पगह १, ३)।
आइयणया स्त्री [**आदान**] ग्रहण, उपादान; (ठा २,१)।
आइरिय देखो **आयरिय**=आचार्य , (हे १, ७३)।
आइल वि [**आविल**] मलिन, कलुष, अ-स्वच्छ, (पगह १, ३)।
आइल्ल } वि [**आदिम**] प्रथम, पहला ; (सम १२६ ;
आइल्लिय } भग)। " आइल्लियासु तिसु लेसासु " (पगण १७ ; विसे २६२४)।
आइवाहिअ पुं [**आतिवाहिक**] देव-विशेष, जो मृत जीव को दूसरे जन्म में ले जाने के लिए नियुक्त है ;
" काहे अमाणवंता अग्गिमुहा आइवाहिआ तव पुरिसा।
अइलंघेहिति ममं अच्चुआ ! तमगहणनिउणयरकंतारं "
(अच्चु ८५)।
आइस सक [**आ + दिश्**] आदेश करना, हुकुम करना, फरमाना। आइसह ; (पि ४७१)। वक्र—**आइसंत** ; (सुर १६, १३)।
आइसण वि [**दे**] उज्झित, परित्यक्त ; (दे १, ७१)।
आईण वि [**आदीन**] १ अतिदीन, बहुत गरीब ; (सूत्र १, ५)। २ न. दूषित भिक्षा ; (सूत्र १, १०)।
आईण पुं [**दे**] जातिमान् अश्व, कुलीन घोड़ा ; (णाया १, १७)।
आईण } न [**आजिन °क**] १ चमडे का बना हुआ वस्त्र ;
आईणग } (णाया १, १; आचा)। २ पुं. द्वीप-विशेष ; ३ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। **°भद्द** पु [**°भद्र**] आजिन-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। **°महाभद्द** पुं [**°महाभद्र**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३)। **°महावर** पुं [**°महावर**] आजिन और आजिनवर-नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव , (जीव ३)। **°वर** पुं [**°वर**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; ३ आजिन और आजिनवर समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। **°वरभद्द** पुं [**°वरभद्र**] आजिनवर-द्वीप का अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। **°वरमहाभद्द** पुं [**°वरमहाभद्र**] देखो अनन्तर उक्त अर्थ; (जीव ३)। **°वरोभास** पुं [**°वरावभास**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; (जीव ३)। **°वरोभासभद्द** पुं [**°वरावभासभद्र**] उक्त द्वीप का अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। **°वरोभासमहाभद्द** पुं [**°वरावभास-महाभद्र**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (जीव ३)। **°वरोभास-महावर** पुं [**°वरावभासमहावर**] आजिनवरावभास-नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। **°वरोभास-वर** [**°वरावभासवर**] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ ; (जीव ३)।
आईनीइ स्त्री [**आदिनीति**] साम-रूप पहली राज-नीति ; (सुपा ४६२)।
आईय देखो **आइ**=आदि ; (जी ७ ; काल)।
आईय वि [**आतीत**] १ विशेष-ज्ञात ; २ संसार-प्राप्त, संसार में घुमने वाला ; (आचा)।
आईल पुंन [**आचील**] पान का थूंकना ; (पव)।
आईव अक [**आ+दीप्**] चमकना। वक्र—**आईवमाण** ; (महानि)।
आउ स्त्री [**दे**] १ पानी, जल, (दे १, ६१)। २ इस नाम का एक नक्षत्र-देव; (ठा २, ३)। **°काय**, **°क्काय** पुं [**°काय**] जल का जीव ; (उप ६८५ ; पगण १)। **°काइय**, **°क्काइय** पुं [**°कायिक**] जल का जीव; (पगण १; भग २४, १३)। **°जीव** पुं [**°जीव**] जल का जीव (सूत्र १, ११)। **°बहुल** वि [**°बहुल**] १ जल-प्रचुर ; २ रत्नप्रभा पृथिवी का तृतीय काण्ड ; (सम ८८)।
आउ अ [**दे**] अथवा, या; "आउ पलोहेइ मं अज्जउत्त-वेसेण कोइ अमाणुसो, आउ सच्चयं चेव अज्जउत्तोत्ति" (स ३४६)।

आउ } न [**आयुष्**] १ आयु, जीवन-काल ; (कुमा ; रयण १६)। २ उम्मर, वय ; (गा ३२१)।
आउअ ३ आयु के कारण-भूत कर्म-पुद्गल; (ठा ८)। °**क्काल** पुं [°**काल**] मरण, मृत्यु ; (आचा)। °**क्खय** पुं [°**क्षय**] मरण, मौत ; (विपा १, १०)। °**क्खेम** न [°**क्षेम**] आयु-पालन, जीवन , (आचा)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] वैद्यक-शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र, (आव)। °**व्वेय** पुं [°**वेद**] वैद्यक, चिकित्सा-शास्त्र ; (विपा १, ७)।

आउंच सक [**आ+कुञ्चय्**] संकुचित करना, समेटना। संकृ—**आउंचिवि** (अप); (भवि)।

आउंचण न [**आकुञ्चन**] संकोच, गात्र-संक्षेप ; (कस)।

आउंचणा स्त्री [**आकुञ्चना**] ऊपर देखो, (धर्म ३)।

आउंचिअ वि [**आकुञ्चित**] १ संकुचित ; २ ऊठा कर धारण किया हुआ ; (से ६, १७)।

आउंजि वि [**आकुञ्चिन्**] १ सकुचने वाला ; २ निश्चल , (गउड)।

आउंट देखो **आउट्ट** = आ-वर्तय्। आउंटावेमि , (णाया १, ५)।

आउंटण न [**आकुञ्चन**] संकोच, गात्र-संक्षेप , (हे १, १७७)।

आउंवालिय वि [**दे**] आप्लावित, डुबोया हुआ, पानी आदि द्रव पदार्थ से व्याप्त , (पाअ)।

आउक्क } देखो **आउ**=आयुष् , (सुपा ६५५ ; भग
आउग } ६, ३)।

आउच्छ सक [**आ+प्रच्छ्**] आज्ञा लेना, अनुज्ञा लेना। वकृ—**आउच्छंत, आउच्छमाण** ; (से १२, २१ , ४७)। संकृ—**आउच्छिऊण, आउच्छिय** ; (महा ; सुपा ६१)।

आउच्छण न [**आप्रच्छन**] आज्ञा, अनुज्ञा ; (गा ४७; ५००)।

आउच्छिय वि [**आपृष्ट**] जिसकी आज्ञा ली गई हो वह ; (से १२, ६४)।

आउज्ज देखो **आओज्ज** = आतोद्य ; (हे १, १५६)।

आउज्ज पुं [**आवर्ज**] १ संमुख करना ; २ शुभ क्रिया ; (पग्ण ३६)।

आउज्ज वि [**आवर्ज्य**] सम्मुख करने योग्य ; (आवम)।

आउज्ज वि [**आयोज्य**] जोडने योग्य, संबन्ध करने योग्य ; (विसे ७४; ३२६६)।

आउज्जण न [**आवर्जन**] ऊपर देखो।

आउज्जिय वि [**आतोद्यिक**] वाद्य बजाने वाला ; (सुपा १६६)।

आउज्जिय वि [**आयोगिक**] उपयोग वाला, सावधान; (भग २, ५)।

आउज्जिय वि [**आवर्जित**] संमुख किया हुआ ; (पग्ण ३६)।

आउज्जिया स्त्री [**आवर्जिका**] क्रिया, व्यापार ; (आवम)। °**करण** न [°**करण**] शुभ-व्यापार विशेष ; (पग्ण ३६)।

आउज्जीकरण न [**आवर्जीकरण**] शुभ व्यापार-विशेष, (पग्ण ३६)।

आउट्ट सक [**आ+वृत्**] १ करना। २ भुलाना। ३ व्यवस्था करना। ४ अक. संमुख होना, तत्पर होना। ५ निवृत्त होना। ६ घुमना, फिरना। आउट्टइ, आउट्टंति, (भग ७, १ ; निचू ३)। वकृ—**आउट्टंत**; (सम २२)। संकृ—**आउट्टिऊण** ; (राज)। हेकृ—**आउट्टित्तए**, (कप्प)। प्रयो—आउट्टावेमि , (णाया १, ५ टी)।

आउट्ट सक [**आ+कुट्ट्**] छेदन करना, हिंसा करना। आउट्टामो ; (आचा)।

आउट्ट वि [**आवृत्त**] १ निवृत्त, पीछे फिरा हुआ ; (उप ६६८); " दप्पकए वाउट्टे जइ खिंसति तत्थवि तहेव" (वृह ३)। २ भ्रामित, भुलाया हुआ , (उप ६००)। ३ ठीक २ व्यवस्थित, (आचा)। ४ कृत, विहित; (राज)।

आउट्ट पुं [**आकुट्ट**] छेदन, हिंसा ; (सूत्र १, १)।

आउट्टण न [**आकुट्टन**] हिंसा ; (सूत्र १, १)।

आउट्टण न [**आवर्त्तन**] १ आराधन, सेवा, भक्ति , (वव १, ६)। २ अभिमुख होना, तत्पर होना ; (सूत्र १, १०)। ३ अभिलाषा, इच्छा ; (आचा)। ४ घुमाना, भ्रमण। ५ निवृत्ति ; (सूत्र १, १०)। ६ करना, क्रिया, कृति ; (राज)।

आउट्टणया स्त्री [**आवर्त्तनता**] ऊपर देखो ; (णंदि)।

आउट्टणा स्त्री [**आवर्त्तना**] ऊपर देखो ; (निचू २)।

आउट्टावण न [**आवर्त्तन**] अभिमुख करना, तत्पर करना; (आचा २)।

आउट्टि स्त्री [**आकुट्टि**] १ हिंसा, मारना ; (आचा ; उव)। २ निर्दयता ; (आप १८)।

आउट्टि स्त्री [आवृत्ति] देखो **आउट्टण**=आवर्तन ; (वव १, १ ; २, १० ; सूत्र १, १ ; आचा) । ५ फिर २ करना, पुनः पुनः क्रिया ; (सुज्ज १२) ।

आउट्टि वि [आकुट्टिन्] १ मारने वाला, हिंसक ; " जाणं काएण णाउट्टी " (सूत्र) । २ अकार्य-कारक ; (दसा)।

आउट्टि वि [दे] साढे तीन ; " एगे पुण एवमाहंसु ता आउट्टिं चंदा आउट्टिं सूरा सव्वलोयं ओभासेंति , (सुज्ज १६) ।

आउट्टिय देखो **आउट्ट**=आवृत्त ; (दसा) ।

आउट्टिय पुं [आकुट्टिक] दण्ड-विशेष; (भत्त २७) ।

आउट्टिय वि [आकुट्टित] छिन्न, विदारित ; (सूत्र) ।

आउट्ठ वि [आतुष्ट] संतुष्ट ; (निचू १) ।

आउड सक [आ + जोडय्] संबन्ध करना, जोडना । कवकृ—**आउडिज्जमाण** ; (भग ५, ४) ।

आउड सक [आ + कुट्ट्] १ कुटना, पीटना । २ ताडन करना, आघात करना । आउडेइ ; (जं ३) । कवकृ—**आउडिज्जमाण** ; (भग ५, ४) ।

आउड सक [लिख्] लिखना, "इति कट्टु णामगं आउडेइ" संकृ—**आउडित्ता** ; (जं ३—पत्र २५०) ।

आउडिय वि [आकुट्टित] आहत, ताडित ; (जं ३—पत्र २२२) ।

आउड्ड अक [मस्ज्] मज्जन करना, डूबना । आउड्डइ ; (हे ४, १०१ ; षड्) ।

आउड्डिअ वि [मग्न] डूबा हुआ, तल्लीन , (कुमा) ।

आउण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर, व्याप्त ; " कुसुमफला-उण्णहत्थेहिं " (पउम ८, २०३) ।

आउत्त वि [आयुक्त] १ उपयोग वाला, सावधान; (कप्प)। २ क्रिवि. उपयोग-पूर्वक ; (भग) । ३ न. पुरीषोत्सर्ग, फरागत जाना (?); (उप ६८५) । ४ पुं. गाँव का नियुक्त किया हुआ मुखिया ; (दे १, १६) ।

आउत्त वि [आगुप्त] १ संक्षिप्त ; (ठा ३, १) । २ संयत ; (भग) ।

आउर वि [आतुर] १ रोगी, बीमार ; (णंदि) । २ उत्कण्ठित ; ३ दुःखित, पीडित , (प्रासू २८ ; ६५) ।

आउर न [दे] १ लडाई, युद्ध; २ वि. बहुत ; ३ गरम ; (दे १, ६५ ; ७६) ।

आउरिय वि [आतुरित] दुःखित, पीडित ; (आचा) ।

आउल वि [आकुल] १ व्याप्त ; (औप) । २ व्यग्र ; (आव) । ३ व्याकुल, दुःखित, ४ संकीर्ण ; (स्वप्न ७३), ५ पुं. समूह ; (विसे ७००) ।

आउल सक [आकुलय्] १ व्याप्त करना । २ व्यग्र करना । ३ दुःखी करना । ४ संकीर्ण करना । ५ प्रचुर करना । कवकृ—**आउलिज्जंत, आउलीअमाण**; (महा ; पि ५६३) ।

आउलि स्त्री [आतुलि] वृक्ष-विशेष ; (दे ५, ५) ।

आउलिअ वि [आकुलित] आकुल किया हुआ ; (गा २५ ; पउम ३३, १०६ ; उप पृ ३२) ।

आउलीकर सक [आकुली+कृ] देखो **आउल**=आकुलय् । आउलीकरेंति ; (भग) । कवकृ—**आउलीकिज्जमाण** ; (नाट) ।

आउलीभूअ वि [आकुलीभूत] घबडाया हुआ ; (सुर २, १०) ।

आउस अक [आ+वस्] रहना, वास करना । वकृ—**आउसंत** ; (सम १) ।

आउस सक [आ+क्रुश्] आक्रोश करना, शाप देना, निष्ठुर वचन बोलना । आउसइ ; (भग १५) । आउसेज्ज, आउसेसि ; (उवा) ।

आउस सक [आ+मृश्] स्पर्श करना, छूना । वकृ—**आउसंत** ; (सम १) ।

आउस सक [आ+जुष्] सेवा करना । वकृ—**आउसंत**; (सम १) ।

आउस न [दे] कूर्च ; (दे १, ६५) ।

आउस देखो **आउ**=आयुष् , (कुमा) ।

आउस, **आउसंत** } वि [आयुष्मत्] चिरायुष्क, दीर्घायु ; (सम २९ ; आचा) ।

आउसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भर्त्सन ; (णाया १, १८ ; भग १५) ।

आउस्स देखो **आउस**=आ+क्रुश् । आउस्सति; (णाया १, १८) ।

आउस्सिय वि [आवश्यक] १ जरूरी । २ क्रिवि. जरूर, अवश्य; (पण्ण ३६) । °**करण** न [°करण] १ मन, वचन और काया का शुभ व्यापार; २ मोक्ष के लिए प्रवृत्ति ; (पण्ण ३६) ।

आउह न [आयुध] १ शस्त्र, हथियार; (कुमा)। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४४) । °**घर** न [°गृह] शस्त्र-शाला ; (जं) । °**घरसाला** स्त्री

[°गृहशाला] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ ; (जं)। °घरिय वि [°गृहिक] आयुधशाला का अध्यक्ष—प्रधान कर्मचारी ; (जं)। °गार न [°गार] शस्त्र-गृह ; (औप)।

आउहि वि [आयुधिन्] योद्धा, शस्त्र-धारक ; (विसे)।

आऊड अक [दे] जुए में पण करना। आऊडइ ; (दे १, ६६)।

आऊडिय न [दे] द्यूत-पण, जुए में की जाती प्रतिज्ञा ; (दे १, ६८)।

आऊर सक [आ+पूरय्] भरना, पूर्ति करना, भरपूर करना। आऊरेइ ; (महा)। वकृ—**आऊरयंत, आऊरमाण**; (पउम १०२, ३३; से १२, २८)। कवकृ—**आऊरिज्जमाण** ; (पि ५३७)। संकृ—**आऊरिवि** (अप); (भवि)।

आऊरिय वि [आपूरित] भरा हुआ, व्याप्त ; (सुर २, १६६)।

आऊसिय वि [आयूषित] १ प्रविष्ट ; २ संकुचित ; (णाया १, ८)।

आएज्ज वि [आदेय] ग्रहण करने के योग्य, उपादेय। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से किसी का कोई भी वचन ग्राह्य माना जाता है, (सम ६७)।

आएस देखो **आवेस** ; (भग १४, २)।

आएस } पुं [आदेश] १ उपदेश, शिक्षा ; २ आज्ञा
आएसग } हुकुम ; (महा)। ३ विवक्षा, सम्मति ; (सम्म ३७)। ४ अतिथि, महमान ; (सूत्र २, १, ५६)। ५ प्रकार, भेद; "जीवे णं भंते ! कालाएसेणं किं सपदेसे अपदेसे" (भग ६, ४ ; जीव २; विसे ४०३)। ६ निर्देश ; (निचू)। ७ प्रमाण ; "जाव न वहुप्पसन्नं ता मीसं एस इत्थ आएसो" (पिंड २१)। ८ इच्छा, अभिलाषा ; देखो **आएसि**। ९ दृष्टान्त, उदाहरण ; "वाघाइयमाएसो अवरद्धो हुज्ज अन्नतरएणं" (आचानि २६७)। १० सूत्र, ग्रन्थ, शास्त्र; (विसे ४०५)। ११ उपचार, आरोप ; "आएसो उवयारो" (विसे ३४८८)। १२ शिष्ट-सम्मत ;
"वहुसुयमाइण्णं तु, न वाहियगणेहिं जुगप्पहाणेहिं।
आएसो सो उ भवे, अहवावि नयंतरविगप्पो" (वव २, ८)।

आएसण न [आदेशन] ऊपर देखो ; (महा)।

आएसण न [आदेशन, आवेशन] लोहा वगैरः का कारखाना, शिल्पशाला ; (आचा २, २, २, १० ; औप)।

आएसि वि [आदेशिन्] १ आदेश करने वाला। २ अभिलाषी, इच्छुक ; (आचा)।

आएसिय वि [आदिष्ट] जिसको आज्ञा दी गई हो वह ; (भवि)।

आओ अ [दे] अथवा, या "हत किमेयंति, किं ताव सुविणओ, आओ इंदजालं, आओ मइविब्भमो, आओ सच्चयं चेवत्ति" (स ४५४)।

आओग पु [आयोग] १ लाभ, नफा ; (औप)। २ अत्यधिक सूद के लिए करजा देना ; (भग)। ३ परिकर, सरञ्जाम ; (औप)।

आओग्ग पुं [आयोग्य] परिकर, सरञ्जाम ; (औप)।

आओज्ज पुंन [आयोग्य] वाद्य, वाजा; (महा ; पड्)।

आओज्ज वि [आयोज्य] संवन्ध-योग्य, जोडने योग्य ; (विसे २३)।

आओड सक [आ+खोटय्] प्रवेश कराना, घुसेड़ना। आओडावेंति ; (विपा १, ६)।

आओडण न [आकोलन] मजबूत करना ; (से ६, ६)।

आओडिअ वि [दे] ताडित, मारा हुआ ; (से ६, ६)।

आओध अक [आ+युध्] लडना। आओधेहि ; (वेणी १११)।

आओस सक [आ+क्रुश्, क्रोशय्] आक्रोश करना, शाप देना। आओसइ ; (निर १, १)। आओसेज्जसि, आओसमि ; (उवा)। कवकृ—**आओसेज्जमाण**, (अत २२)।

आओस पुं [दे] प्रदोष-समय, सन्ध्या-काल ; (ओघ ६१ भा)।

आओसणा स्त्री [आक्रोशना] निर्भर्त्सना, तिरस्कार ; (निर १, १)।

आओहण न [आयोधन] युद्ध, लडाई ; (उप ६४८ टी ; सुर ६, २२०)।

आकंख सक [आ+काङ्क्ष्] चाहना, इच्छना। आकंखिहि ; (भवि)।

आकंखा स्त्री [आकाङ्क्षा] चाह, इच्छा, अभिलाषा ; (विसे ८५६)।

आकंखि वि [आकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक; (आचा)।

आकंद अक [**आ+क्रन्द्**] रोना, चिल्लाना । आक्रंदामि; (पि ८८) ।

आकंदिय न [**आक्रन्दित**] १ आक्रन्द, रोदन; २ जिसने आक्रन्द किया हो वह ; (दे ७, २७) ।

आकंप अक [**आ+कम्प्**] १ थोडा काँपना । २ तत्पर होना । ३ आराधन करना । संकृ—**आकंपइत्ता, आकंपइत्तु** ; (राज) ।

आकंप पु [**आकम्प**] १ थोडा कॉपना ; २ आराधन ; (वव) । ३ तत्परता, आवर्जन; (राज) ।

आकंपण न [**आकम्पन**] ऊपर देखो, (वव, धर्म) ।

आकंपिय वि [**आकम्पित**] ईषत् चलित, कम्पित ; (उप ७२८ टी)

आकड्ढ पुं [**आकर्ष**] खींचाव ; °**विकड्ढि** स्त्री [°**वि-कृष्टि**] खींचतान ; (भग १५) ।

आकड्ढण न [**आकर्षण**] खींचाव ; (निचू) ।

आकण्णण न [**आकर्णन**] श्रवण ; (नाट) ।

आकण्णिय वि [**आकर्णित**] श्रुत, सुना हुआ, (आचा)।

आकम्हिय वि [**आकस्मिक**] अकस्मात् होने वाला, विना ही कारण होने वाला ; " वज्झनिमित्ताभावा जं भय-माकम्हियं तंति " (विसे ३४५१) ।

आकर पुं [**आकर**] १ खान ; २ समूह ; (कुमा) ।

आकस देखो **आगस** । आकसिस्सामो , (आचा २, ३, १, १५) । हेकृ—**आकसित्तए**; (आचा २, ३, १, १५)।

आकार देखो **आगार** ; (कुमा ; दं १३) ।

आकास देखो **आगास** ; (भग) ।

आकासिय वि [**दे**] पर्याप्त, काफी ; (षड्) ।

आकिइ स्त्री [**आकृति**] स्वरूप, आकार ; (हे १, २०९)।

आकिंचण न [**आकिञ्चन्य**] निस्पृहता, निष्परिग्रहता; " आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो " (नव २३) ।

आकिंचणया स्त्री [**आकिञ्चनता**] ऊपर देखो ; (सम १२०) ।

आकिंचणिय, **आकिंचन्न** देखो **आकिंचण** ; (आचू; सुपा ६०८) ।

आकिदि देखो **आकिइ** ; (कुमा) ।

आकुंच सक [**आ+आकुञ्चय्**] संकोच करना । आकुचइ; संकृ—**आकुंचिवि** (अप); (भवि) ।

आकुंचण न [**आकुञ्चन**] संकोच, संक्षेप ; (सम्म १३३ ; विसे २४९२) ।

आकुंचिय वि [**आकुञ्चित**] संकुचित, " रुद्धं गलयं आकु-चियाओ धमणीओ पसरिया वियणा " (सुर ४, २३८) ।

आकुट्ठ न [**आक्रुष्ट**] १ आक्रोश; २ वि. जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ; (दे ३, ३२) ।

आकुल देखो **आउल** ; (कप्प) ।

आकूय न [**आकूत**] १ इङ्गित, ईसारा; (उप ७२८ टी)। २ अभिप्राय ; (विसे ९२८) ।

आकेवलिय वि [**आकेवलिक**] असंपूर्ण, (आचा) ।

आकोडण न [**आकोटन**] कूट कर घुसेड़ना ; (पण्ह १, ३) ।

आकोसाय अक [**आकोशाय्**] विकसित होना । वकृ—**आकोसायंत** ; (पण्ह १, ४) ।

आक्कंद (मा) देखो **आकंद** । आक्कंदामि ; (पि ८८) ।

आखंच (अप) सक [**आ+कृष्**] पीछे खीचना । संकृ—**आखंचिवि** ; (भवि) ।

आखंडल पुं [**आखण्डल**] इन्द्र ; (सुपा ४७) । °**धणुह** न [°**धनुष्**] इन्द्र-धनुष् ; (उप ९८६ टी) । °**भूइ** पुं [°**भूति**] भगवान् महावीर के मुख्य शिष्य गौत-म-स्वामी ; (पउम ११८, १०२) ।

आगइ स्त्री [**आगति**] आगमन ; (आचा; विसे २१४६)।

आगइ देखो **आकिइ** ; (महा) ।

आगंतव्व देखो **आगम** = आ+गम् ।

आगंतगार, **आगंतार** न [**आगन्त्रगार**] धर्म-शाला, मुसाफिर-खाना , (औप, आचा) ।

आगंतु वि [**आगन्तृ**] आने वाला , (सूअ) ।

आगंतु देखो **आगम**=आ+गम् ।

आगंतुग, **आगंतुय** वि [**आगन्तुक**] १ आने वाला ; २ अतिथि; (स ४७१ ; चारु २४ , सुपा ३३६ ; ओघ २१६) । ३ कृत्रिम, अस्वाभाविक ; (सुर १२, १०) ।

आगंतूण देखो **आगम**=आ+गम् ।

आगंप सक [**आ+कम्पय्**] कँपाना, हिलाना । वकृ—**आगंपयंत** ; (स ३३१ ; ४४३) ।

आगंपिय देखो **आकंपिय** ; (पउम ३४, ४३) ।

आगच्छ सक [**आ+गम्**] आना, आगमन करना । आगच्छइ; (महा) । भवि—आगच्छिस्सइ ; (पि ५२३) । वकृ—**आगच्छंत, आगच्छमाण** ; (काल ; भग) ।

हेकृ—**आगच्छित्तए**; (पि ५७८)।
आगत देखो **आगय**; (सुर २, २४८)।
आगत्ती स्त्री [दे] कूप-तुला; (दे १, ६३)।
आगम सक [**आ+गम्**] १ आना, आगमन करना। २ जानना। भवि—आगमिस्सं; (पि ५२३; ५६०)। वकृ—**आगममाण**; (आचा)। संकृ—**आगंतूण**; **आगमेत्ता, आगम्म**; (पि ५८१; ५८२; औप)। कृ—**आगंतव्व**: (सुपा १२)। हेकृ—**आगंतुं**; (काल)।
आगम पुं [**आगम**] १ आगमन; (से १४, ७५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त; (जो ४८)। °**कुसल** वि [°**कुशल**] सिद्धान्तो का जानकार; (उत)। °**ज्ञ** वि [°**ज्ञ**] शास्त्रो का जानकार; (प्राप्त)। °**णोइ** स्त्री [°**नीति**] आगमोक्त विधि; (धर्म २)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] शास्त्रो का जानकार; (प्राप्त)। °**परतंत** वि [°**परतन्त्र**] सिद्धान्त के अधीन; (पंचव)। °**वलिय** वि [°**वलिक**] सिद्धान्तों का अच्छा जानकार; (भग ८, ८)। °**ववहार** पु [°**व्यवहार**] सिद्धान्तानुमोदित व्यवहार; (वव)।
आगमण न [**आगमन**] आगमन; (श्रा ४)।
आगमि वि [**आगमिन्**] आने वाला, आगामी; (विसे ३१५४)।
आगमिय वि [**आगमिक**] १ शास्त्र-संवन्धी, शास्त्र-प्रतिपादित; (उवर १५१)। २ शास्त्रोक्त वस्तु को ही मानने वाला; (सम्म १४२)।
आगमिर वि [**आगन्तृ**] आने वाला, आगमन करने वाला; (सण)।
आगमिस्स वि [**आगमिष्यत्**] १ आगामी, होने वाला; (पउम ११८, ६३)। २ आने वाला; (सम १५३)।
आगमिस्सा स्त्री [**आगमिष्यन्ती**] भविष्य काल; "अईअकालम्मि आगमिस्साए" (पच्च ६०)।
आगमेस, **आगमेस्सि** } देखो **आगमिस्स**; (अंत १६; औप)
आगम्म देखो **आगम**=आ+गम्।
आगय वि [**आगत**] १ आया हुआ; (प्रासू ५)। २ उत्पन्न; (गाया १, ७)।
आगर देखो **आकर**=आकर; (आचा; उप ८३३ टी)।
आगरि वि [**आकरिन्**] खान का मालिक, खान का काम करने वाला; (पण्ह १, २)।
आगरिस पुं [**आकर्ष**] १ ग्रहण, उपादान; (विसे २७८०; सम १४७)। २ खींचाव; (विसे २७८०; हे १, १७७)। ३ ग्रहण कर छोड़ देना; (आचू)। ४ प्राप्ति; (भग २५, ७)।
आगरिसग वि [**आकर्षक**] १ खींचने वाला; २ पुं अयस्कान्त, लोह-चुम्बक; (आवम)।
आगरिसणी स्त्री [**आकर्षणी**] विद्या-विशेष; (सुर १३, ८१)।
आगरिसिय वि [**आकृष्ट**] खींचा हुआ; (सुपा १६६; महा)।
आगल सक [**आ+कलय्**] १ जानना। २ लगाना। ३ पहुँचाना। ४ संभावना करना। आगलेइ; (उव)। आगलेंति; (भग ३, २)। संकृ—"हत्थिं खंभम्मि **आगलेऊण**" (महा)।
आगल्ल वि [**आग्लान**] ग्लान, विमार; (वृह १)।
आगस सक [**आ+कृष्**] खींचना। आगसाहि; (आचा २, ३, १, १४)। संकृ—**आगसिउं**; (विसे २२२)।
आगहिअ वि [**आगृहीत**] संगृहीत; (विसे २२०४)।
आगाढ वि [**आगाढ**] १ प्रवल, दुःसाध्य; " कट्ठगोसहंव आगाढरोगिणो रोगसमइच्छ" (उप ७२८ टी)। "नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अन्नमन्नस्स मोए आइत्तए, नन्नत्थ आगाडेहिं रोगायंकेहिं " (कस)। २ अपवाद, खास कारण; (पंचभा)। ३ अत्यंत गाढ; (निचू)। °**जोग** पुं [°**योग**] योग-विशेष; गणि-योग; (ओघ ५४८)। °**पण्ण** न [°**प्रज्ञ**] शास्त्र, आगम; "आगाढपण्णेसु य भावियप्पा" (वव)। °**सुय** न [°**श्रुत**] आगम-विशेष, (निचू)।
आगामि वि [**आगामिन्**] आने वाला; (सुपा ६)।
आगार सक [**आ+कारय्**] वोलाना, आह्वान करना। संकृ—**आगारेऊण**; (आव)।
आगार न [**आगार**] १ घर, गृह; (णाया १, १; महा)। २ वि. गृहस्थ, गृही; (ठा)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] गृही; (पि ३०६)।
आगार पुं [**आकार**] १ अपवाद; (उप ७२८ टी; पडि)। २ इंगित, चेष्टा-विशेष; (सुर ११, १६२)। ३ आकृति, रूप; (सुपा ११५)।
आगारिय वि [**आगारिक**] गृहस्थ-संवन्धी; (विसे)।

आगारिय वि [**आकारित**] १ आहूत। २ उत्सारित, परित्यक्त, (आव)।

आगाल पुं [**आगाल**] १ समान प्रदेश में रहना ;
भाव से रहना ; (आचा)। ३ उदीरणा-विशेष ; (राज)।

आगास पुन [**आकाश**] आकाश, अन्तराल; (उवा)। °**गमा** स्त्री [°**गमा**] विद्या-विशेष, जिसके बल से आकाश में गमन कर सकता है ; (पउम ७, १४४)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] आकाश में गमन करने वाला, पक्षि-प्रभृति ; (आचा)। °**जोइणी** स्त्री [°**योगिनी**] पक्षि-विशेष; "आगासजोइणीए निसुओ सद्दोवि वामपासम्मि" (सुपा १८५)। °**त्थिकाय** पुं [°**ास्तिकाय**] आकाश-प्रदेशों का समूह, अखण्ड आकाश-द्रव्य ; (पराण १)। °**थिग्गल** न [**दे**] मेघ-रहित आकाश का भाग, (आवम)। °**फलिह**, °**फालिय** पुं [°**स्फटिक**] निर्मल स्फटिक-रत्न ; (राय, औप)। °**फालिया** स्त्री [°**फालिका**] एक मिष्ट द्रव्य ; (पराण १७)। °**ाइवाइ** वि [°**ातिपायिन्**] विद्या आदि के बल से आकाश में गमन करने वाला ; (औप)।

आगासिय वि [**आकाशित**] आकाश को प्राप्त, (औप)।

आगासिय वि [**आकर्षित**] खींचा हुआ, (औप)।

आगिइ स्त्री [**आकृति**] आकार, रूप, मूर्ति ; (सुर २, २२, विपा १, १)।

आगिट्ठि स्त्री [**आकृष्टि**] आकर्षण ; (सुपा २३२)।

आगी देखो **आगिइ**, "छिरणावलिरुयगागीदिसासु सामाइय न ज तासु" (विसे २७०७)।

आगु पुं [**आकु**] अभिलाप, इच्छा ; (आक)।

आघं देखो **आघव**। 'सूत्रकृतांग' सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का दशवाँ अध्ययन ; (सुअ १, १०)।

आघंस सक [**आ+घृष्**] घर्षण करना, (निचू)।

आघंसण न [**आघर्षण**] एक वार का घर्षण, (निचू)।

आघयण न [**दे**] वध-स्थान, (णाया १, ६—पत्र १६७)।

आघव सक [**आ+ख्या**] १ कहना, उपदेश देना। २ ग्रहण करना। आघवेइ ; (ठा)। कवकृ—आघविज्जए ; (भग)। भूका—आघं ; (सूअ ; पि ८८) वकृ—**आघवेमाण** ; (पि ४४)। हेकृ—**आघवित्तए** ; (पि ८८)।

आघवणा स्त्री [**आख्यान**] कथन, उक्ति ; (णाया १,६)।

आघवइत्तु वि [**आख्यायक**] कथक, वक्ता, उपदेशक, (ठा ४, ४)।

आघविय वि [**आख्यात**] उक्त, कहा हुआ, (पि ४४)।

आघवेत्तग वि [**आख्यापयितृक**] उपदेष्टा, वक्ता ; (आचा)।

आघस सक [**आ+घस्**] थोडा घिसना। आघसावेज्ज ; (निचू)।

आघा सक [**आ+ख्या**] कहना। (आचा)।

आघा सक [**आ+घ्रा**] सूँघना। वकृ—**आघायंत** ; (उप ३५७ टी)।

आघाय वि [**आख्यात**] कथित, उक्त ; (आचा)।

आघाय पु [**आघात**] १ वध ; २ चोट, प्रहार ; (कुमा, णाया १, ६)।

आघायंत देखो **आघा**=आ+घ्रा।

आघाव देखो **आघव**। आघावेइ ; (पि ८८; २०२)।

आघुट्ठ वि [**आघुष्ट**] घोषित, जाहिर किया हुआ ; (भवि)।

आघुम्म अक [**आ+घूर्ण्**] डोलना, हिलना, काँपना, चलना।

आघुम्मिय वि [**आघूर्णित**] डोला हुआ, कम्पित, चलित ; "आघुम्मियनयणजुओ" (पउम १०, ३२, ८७, ५६)।

आघोस सक [**आ+घोषय्**] घोषणा करना, ढिंढेरा पिटवाना। आघोसेह, (स ६०)।

आघोसण न [**आघोषण**] ढिंढेरा, घोषणा ; (महा)।

आचक्ख सक [**आ+ चक्ष्**] कहना। वकृ—**आचक्खंत**; (पि २५; ८८ ; नाट)।

आचक्खिद (शौ) वि [**आख्यात**] उक्त, कथित ; (अभि २००)।

आचरिय वि [**आचरित**] १ अनुष्ठित, विहित। २ न. आचरण, (प्रासू १११)।

आचार देखो **आयार**=आचार, (कुमा)।

आचारिअ देखो **आयरिय**=आचार्य ; (प्राप)।

आचिक्ख सक [**आ+चक्ष्**] कहना। कृ— **आचिक्खणीय** ; (स ४०)।

आचिक्खिय वि [**आख्यात**] कथित, उक्त, (स ११६)।

आचुण्णिअ वि [**आचूर्णित**] चूर २ किया हुआ ; (पउम १७, १२०)।

(d) $2x - 3y = 0$

आचेलक्क न [**आचेलक्य**] १ वस्त्र का अभाव, (कप्प)। २ वि. आचार विशेष ; "आचेलक्को धम्मो" (पंचा)।

आच्छेदण न [**आच्छेदन**] १ नाश। २ वि. नाशक ; (कुमा)।

आजाइ देखो **आयाइ** ; (ठा ; स १७८)।

आजि देखो **आइ**=आजि ; (कुमा ; दे १, ४६)।

आजीरण पुं [**आजीरण**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; "आजीरणो य गीओ" (सथा ६७)।

आजीव, **आजीवग** } पुं [**आजीव**] १ आजीविका, जीवन-निर्वाह का उपाय; "आजीवमेयं तु अवुज्झमाणो पुणो पुणो विप्परियासुवे'ति" (सूअ)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष—गृहस्थ को अपने जाति-कुल आदि को समानता वतलाकर उससे भिक्षा ग्रहण करना ; (ठा ३, ४)। ३ गोशालक-मत का अनुयायी साधु ; (पव)। ४ धन का समूह ; (सूअ)।

आजीवग पु [**आजीवक**] १ धन का गर्व, (सूअ)। २ सकल जीव ; (जीव ३ टी)। देखो **आजीवय**।

आजीवण न [**आजीवन**] १ आजीविका, जीवन-निर्वाह का उपाय। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष; (वव)।

आजीवणा स्त्री [**अजीवना**] ऊपर देखो ; (दंस ; जीत)।

आजीवय देखो **आजीवग**; "आजीवयदिट्ठतेणं चउरासीति-जातिकुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया" (जीव ३)।

आजीविय वि [**आजीविक**] गोशालक के मत का अनुयायी; (पण्ण २० ; उवा)।

आजीविया स्त्री [**आजीविका**] १ निर्वाह ; (आव)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोप ; (उत्त)।

आजुत्त वि [**आयुक्त**] अ-प्रमादी ; (निचू)।

आजुज्झ अक [**आ+युध्**] लड़ना। हेकृ—**आजुज्झिदु** (शौ) ; (वेणी १२४)।

आजुह न [**आयुध**] हथियार ; (मै २४)।

आजोज्ज देखो **आओज्ज** ; (विसे १५०३)।

आडंवर पुं [**आडम्बर**] १ आटोप, ऊपरी दिखाव ; (पाअ)। २ वाद्य का अवाज; (ठा)। ३ यक्ष-विशेष; (आचू)। ४ न. यक्ष का मन्दिर ; (पव)।

आडंवरिल्ल वि [**आडम्बरवत्**] आडम्वरी; (पाअ)।

आडविय वि [**दे**] चूर्णित, चूर २ किया हुआ ; (षड्)।

आडविय वि [**आटविक**] जंगल में रहने वाला, जंगली; (स १२१)।

आडह सक [**आ+दह्**] चारों ओर से जलाना। आडहइ; (पि २२२, २२३)। आडहंति; (पि २२२ ; २२३)।

आडह सक [**आ+धा**] स्थापन करना, नियुक्त करना। आडहइ। संकृ—**आडहेत्ता** ; (औप)।

आडाडा स्त्री [**दे**] वलात्कार, जवरदस्ती; (दे १, ६४)।

आडासेतीय पु [**आडासेतीक**] पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)।

आडि स्त्री [**आटि**] १ पक्षि-विशेष ; २ मत्स्य-विशेष ; (दे ८, २४)।

आडियत्तिय पुं [**दे**] शिविका-वाहक पुरुष (?); (स ५३७; ५४१)।

आडुआल सक [**दे**] मिश्र करना, मिलाना। आडुआलइ; (दे १, ६६)।

आडुआलि पुं [**दे**] मिश्रता, मिलावट ; (दे १, ६६)।

आडोय देखो **आडोव**=आटोप ; (सुपा २६२)।

आडोलिय वि [**दे**] रुद्ध, रोका हुआ; (णाया १, १८)।

आडोव सक [**आ+टोपय्**] १ आडंवर करना। २ पवन द्वारा फूलाना। आडोवेइ ; (भग)। संकृ—**आडोवेत्ता** ; (भग)।

आडोव पुं [**आटोप**] आडम्वर ; (उवा, सण)।

आडोविअ वि [**दे**] आरोषित, गुस्से किया हुआ ; (दे १, ७०)।

आडोविअ वि [**आटोपिक**] आटोप वाला, स्फारित ; (पण्ह १, ३)।

आढई स्त्री [**आढकी**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।

आढग पुंन [**आढक**] १ चार प्रस्थ (सेर) का एक परिमाण ; २ चार सेर परिमित चीज ; (औप ; सुपा ६७)।

आढत्त वि [**दे**] आक्रान्त; "एत्थंतरम्मि विजयवम्मनरवइणा आढत्तो लच्छिनिलयसामी सूरतेओ नाम नरवई ; (स १४०)।

आढत्त वि [**आरब्ध**] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध ; (आघ ४८२ ; हे २, १३८)।

आढप्प° देखो **आढव**।

आढय देखो **आढग** ; (महा ; ठा ३, १)।

आढव सक [**आ+रभ्**] आरभ करना, शुरू करना। आढवइ; (हे ४, १५५; धम्म २२)। कर्म—आढप्पइ, आढवीअइ ; (हे ४, २५४)।

आढा सक [आ+दृ] आदर करना, मानना। आढाइ; (उवा)। वकृ—**आढामाण, आढायमाण**; (पि ५०० ; आचा)। कवकृ—**आइज्जमाण**; (आचा)।
आढिअ वि [आदृत] सत्कृत, सम्मानित; (हे १,१४३)।
आढिअ वि [दे] १ इष्ट, अभीष्ट ; २ गणनीय, माननीय ; ३ अप्रमत्त, उद्युक्त ; ४ गाढ, निविड ; (दे १, ७४)।
आण सक [ज्ञा] जानना। "किंव न आणह एअं" (से १३, ३)। आणसि; (से १५, २८)। "अमिअं पाइअकव्वं पढिउं सोउं च जे ण आणंति" (गा २)। आणे; (अभि १९७)।
आण सक [आ+णी] लाना, आनयन करना; ले आना। आणइ ; (पि १७ ; भवि)। वकृ—**आणमाणे** ; (णाया १,१६)। हेकृ—**आणिवि** (अप), (भवि)।
आण पु [आन] १ श्वासोच्छ्वास, सांस ; २ श्वास के पुद्गल ; (पगण)।
°**आण** देखो **जाण**=यान ; (चारु ८)।
आणंछ देखो **आअंछ**। आणंछइ ; (षड्)।
आणंत देखो **आणी**।
आणंतरिय न [आनन्तर्य] १ अविच्छेद, व्यवधान का अभाव ; (ठा ४, ३)। २ अनुक्रम, परिपाटि; "आणंतरियंति वा अणुपरिवाडित्ति वा अणुक्कमेति वा एगट्ठा" (आचू)।
आणंद अक [आ+नन्द्] आनन्द पाना, खुश होना।
आणंद सक [आ+नन्दय्] खुश करना। आणंदेदि (शौ); नाट। कृ—**आणंदिअव्व** ; (रयण १०)।
आणंद पुं [आनन्द] १ हर्ष, खुशी ; (कुमा)। २ भगवान् शीतलनाथ के एक मुख्य-शिष्य; (सम १५२)। ३ पोतनपुर नगर का एक राजा, जो भगवान् अजितनाथ का मातामह था ; (पउम ५, ५२)। ४ भावी छठवाँ बलदेव ; (सम १५४)। ५ नागकुमार-जातीय देवों के स्वामी धरणेन्द्र के एक रथ-सैन्य का अधिपति देव ; (ठा ५, १)। ६ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)। ७ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; (राज)। ८ भगवान् महावीर के एक साधु-शिष्य का नाम, (कप्प)। ९ भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासको (श्रावक-शिष्य) में पहला, (उवा)। १० देव-विशेष ; (जं; दीव)। ११ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम ; (निर २, १)। १२ 'उपासगदसा' सूत्र का एक अध्ययन; (उवा)। १३ 'अणुत्तरोपपातिक दसा' सूत्र का सातवाँ अध्ययन ; (भग)। १४ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन; (निर २,१)। १५ न. देश-विशेष; (पउम ९८, ६६)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष, (बृह)। °**रक्खिय** पुं [°रक्षित] स्वनामख्यात एक जैन साधु ; (भग)।
आणंदण न [आनन्दन] १ खुशी, हर्ष; (सुपा ४४०)। २ वि. खुश करने वाला, आनन्द-दायक, (स ३१३; रयण ३; सण)।
आणंदवड } पु [दे] पहली वार की रजस्वला का रक्त
आणंदवस } वस्त्र ; (गा ४५७ ; दे १, ७२ ; षड्)।
आणंदा स्त्री [आनन्दा] १ देवी-विशेष; मेरु की पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी ; (ठा ८)। २ इस नाम की एक पुष्करिणी ; (राज)।
आणंदिय वि [आनन्दित] १ हर्ष-प्राप्त, (औप)। २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेने वाला एक राजा ; (पउम ८५, ३)।
आणंदिर वि [आनन्दिन्] आनन्दी, खुश रहने वाला ; (भवि)।
आणक्ख सक [परि+ईक्ष्] परीक्षा करना। हेकृ—**आणक्खेउं** ; (ओघ ३६)।
आणच्छ देखो **आअंछ**। आणच्छइ, (षड्)।
आणण न [आनन] मुख, मुँह, (कुमा)।
आणण न [आनयन] लाना ; (महा)।
आणत्त वि [आज्ञप्त] आदिष्ट, जिसको हुकुम दिया गया हो वह ; (णाया १, ८ ; सुर ४, १००)।
आणत्ति स्त्री [आज्ञप्ति] आज्ञा, हुकुम ; (अभि ८१)। °**अर** वि [°कर] आज्ञा-कारक, नौकर ; (स ११, ६५)। °**किंकर** वि [°किङ्कर] नौकर, (पण्ह)। °**हर** वि [°हर] आज्ञा-वाहक, संदेश-वाहक ; (अभि ८१)।
आणत्तिया स्त्री [आज्ञप्तिका] ऊपर देखो ; (उवा ; पि ८८)।
आणव (अशो) देखो **आणव** = आ+ज्ञपय्। आणपयति ; (पि ४)।
आणपाण देखो **आणापाण** ; (नव ६)।
आणप्प वि [आज्ञाप्य] आज्ञा करने योग्य ; (सूअ १, ४, २, १५)।
आणम अक [आ+अन्] श्वास लेना। आणमंति ; (भग)।

आणमणी देखो **आणवणी** ; (भास १८ ; पि ८८ ; २४८) ।

आणय पुन [**आनत**] १ देवलोक-विशेष ; (सम ३५) । २ पुं. उस देवलोक-वासी देव ; (उत्त) ।

आणयण न [**आनयन**] लाना, आनना ; (श्रा १४ ; स ३७६) ।

आणव सक [**आ+ज्ञपय्**] आज्ञा देना, फरमाना । आणवइ, आणवेसि ; (पउम ३३, १००; ६८) । वकृ— **आणवेमाण** ; (पि ५५१) । कृ—**आणवेयव्व** ; (महा) ।

आणव देखो **आणाव** = आ + नायय् ।

आणवण न [**आज्ञपन**] आज्ञा, आदेश, फरमाइश ; (उवा; प्रामा) ।

आणवण न [**आनायन**] मंगवाना ; (सुपा ५७८) ।

आणवणिया स्त्री [**आज्ञापनिका, आनायनिका**] देखो दोनों **आणवणी** ; (ठा २, १) ।

आणवणी स्त्री [**आज्ञापनी**] १ क्रिया-विशेष, हुकुम करना । २ हुकुम करने से हाने वाला कर्म-बन्ध ; (नव १६) ।

आणवणी स्त्री [**आनायनी**] १ क्रिया-विशेष, मंगवाना । २ मगवाने से होने वाला कर्म-बन्ध ; (नव १६) ।

आणा स्त्री [**आज्ञा**] आदेश, हुकुम ; (ओघ ६०) । २ उपदेश ; "एसा आणा निग्गंथिया" (आचा) । ३ निर्देश ; "उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा" (वव) । ४ आगम, सिद्धान्त ; (विसे ८६४ ; गांदि) । ५ सूत्र की व्याख्या ; (औप) । °**ईसर** पुं [°**ईश्वर**] आज्ञा फरमाने वाला मालिक; (विपा १, १) । °**जोग** पुं [°**योग**] १ आज्ञा का संबन्ध ; (पचा) । २ शास्त्र के अनुसार कृति ; "पावं विसाइतुल्लं आणा-जोगो अ मंतसमो" (पंचव) । °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] सम्यक्त्व-विशेष ; (उत्त) । २ वि. आगमों पर श्रद्धा रखने वाला ; (पंच) । °**व** वि [°**वत्**] आज्ञा मानने वाला ; (पंचा) °**वत्त** न [°**पत्र**] आज्ञा-पत्र, हुकुमनामा ; (से १, १८) । °**ववहार** पुं [°**व्यवहार**] व्यवहार-विशेष; (पंचा) । °**विजय** न [°**विचय, °विजय**] धर्म-ध्यान-विशेष, जिसमें आज्ञा—आगम के गुणों का चिन्तन किया जाता है ; (औप) ।

आणाइ पुं [**दे**] शकुनि, पक्षी ; (दे १, ६४) ।

आणाइत्त वि [**आज्ञावत्**] आज्ञा मानने वाला; (पंचा) ।

आणाइय वि [**आनायित**] मंगाया हुआ ; (कुमा २, २१) ।

आणापाण पुं [**आनप्राण**] १ श्वासोच्छ्वास ; (प्रासू १०४) । २ श्वासोच्छ्वास-परिमित समय ; (अणु) । °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] श्वासोच्छ्वास लेने की शक्ति ; (नव ६ ; पव) ।

आणापाणु स्त्री [**आनप्राण**] ऊपर देखो; "आणापाणूओ" (भग २५, ५) ।

आणापाणुय पुं [**आनप्राणक**] श्वासोच्छ्वास-परिमित काल ; (कप्प) ।

आणाम पुं [**आनाम**] श्वास, अन्तः-श्वास ; (भग) ।

आणामिय वि [**आनामित**] १ थोड़ा नमाया हुआ ; (पण्ह १, ४)। २ आधीन किया हुआ ; (पउम ६८, ३७)।

आणाल पु [**आलान**] १ वन्धन ; २ हाथी बांधने की रज्जु—डोरी ; ३ जहां पर हाथी वांधा जाता है वह स्तम्भ, खीला ; (हे २, ११७ ; प्रामा) । °**क्खंभ, °खंभ** पुं [°**स्तम्भ**] जहां हाथी वांधा जाता है वह स्तम्भ; (हे २, ११७) ।

आणाव देखो **आणव**=आ+ज्ञपय् । आणावेइ ; (स १२६) । कवकृ—**आणाविज्जंत**; (सुपा ३२३) । कृ—**आणावेयव्व** ; (आचा) ।

आणाव सक [**आ+नायय्**] मंगवाना । आणावइ ; (भवि) । संकृ—**आणाविय** ; (नाट) ।

आणावण न [**आज्ञापन**] आज्ञा, हुकुम ; (षड्) ।

आणाविय वि [**आज्ञापित**] जिसको हुकुम किया गया हो वह, फरमाया हुआ ; (सुपा २५१) ।

आणाविय वि [**आनायित**] मंगवाया हुआ ; (सुपा ३८५) ।

आणि देखो **आणी** । कृ—**आणियव्व** ; (रयण ६) । संकृ—**आणिय** ; (नाट) ।

आणिअ वि [**आनीत**] लाया हुआ ; (हे १, १०१) ।

आणिअ [**दे**] देखो **आढिअ** ; (दे १, ७४) ।

आणिक्क वि [**दे**] टेढ़ा, वक्र ; (से ६, ८६) ।

आणी सक [**आ+नी**] लाना । कर्म—आणीअइ ; (पि ५४८) । वकृ—"**आणंतीए** गुणेसु, दोसेसु परंमुहं कुणंतीए" (मुद्रा २३६) । संकृ— **आणीय** ; (विसे ६१६) । कवकृ—**आणिज्जंत**; (सुपा १६३) ।

आणीय वि [**आनीत**] लाया हुआ ; (हे १, १०१ ; काल) ।

आणुअ न [**दे**] १ मुख, मुँह ; (दे १, ६२ ; षड्) । २ आकार, आकृति ; (दे १, ६२) ।

आणुकंपिय वि [**आनुकम्पिक**] दयालु, कृपालु ; (राज) ।

आणुगामि वि [**अनुगामिन्**] नीचे देखो ; (विसे ७३६) ।

आणुगामिय वि [**आनुगामिक**] १ अनुसरण करने वाला, पीछे २ जाने वाला; (भग) । २ न. अवधिज्ञान का एक भेद ; (आवम) ।

आणुधम्मिय वि [**आनुधर्मिक**] इतर धर्म वालों को भी अभीष्ट, सर्व-धर्म-सम्मत ; (आचा) ।

आणुपुव्व न [**आनुपूर्व्य**] अनुक्रम, परिपाटी ; (निर १, १) ।

आणुपुव्वी स्त्री [**आनुपूर्वी**] क्रम, परिपाटी ; (अणु) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] नामकर्म का एक भेद ; (सम ६७) ।

आणुवित्ति स्त्री [**अनुवृत्ति**] अनुसरण ; (सं ६१) ।

आणूव पुं [**दे**] श्व-पच, डोम ; (दे १, ६४) ।

आणे सक [**आ+नी**] लाना, ले आना । **आणेइ** ; (महा) । कृ—**आणेयव्व** ; (सुपा १६३) । संकृ—**आणेऊण** ; (महा) ।

आणे सक [**ज्ञा**] जानना **आणेइ** ; (नाट) ।

आणेसर देखो **आणा-ईसर** ; (श्रा १०) ।

आत देखो **आय**=आत्मन् ; (ठा १) ।

आतंव देखो **आयंव**=आताम्र ; (स २६१) ।

आत्त देखो **अत्त**=आत्मन् । " आत्तहियं खु दुहेण लब्भइ " (सूअ १, २, २, ३०) ।

आदंस } देखो **आयंस** ; (गा २०४; प्रति ८ ; सूअ १,
आदंसग } ४) ।

आदण्ण } वि [**दे**] आकुल, व्याकुल, घबडाया हुआ ;
आदन्न } (उप पृ २२१ ; हे ४, ४२२) ।

आदर देखो **आयर**=आ+दृ । आदरइ ; (हे ४, ८३) ।

आदरिस देखा **आयंस** ; (कुमा ; दे २, १०७) ।

आदाउ वि [**आदातृ**] ग्रहण करने वाला ; (विसे १५-६८) ।

आदाण देखो **आयाण** ; (ठा ४, १) ; " गब्भादाणेण संजुयासि तुम " (पउम ६५, ६० ; उवा) ।

आदाण न [**आग्रहण**] उबाला हुआ, गरम किया हुआ (जल तैल आदि) ; (उवा) ।

आदाणीय देखो **आयाणीय** ; (कप्प) ।

आदाय देखो **आया**=आ+दा ।

आदि देखो **आइ**=आदि ; (कप्प ; सूअ १, ५) ।

आदिच्च देखो **आइच्च** ; (ठा ५, ३ ; ८) ।

आदिच्छा स्त्री [**आदित्सा**] ग्रहण करने की इच्छा ; (आव) ।

आदिज्ज देखो **आएज्ज** ; (भग) ।

आदिट्ठ देखो **आइट्ठ** ; (अभि १०६) ।

आदित्तु वि [**आदातृ**] ग्रहण करने वाला ; (ठा ७) ।

आदिय सक [**आ+दा**] ग्रहण करना । आदियइ, (उवा) । प्रयो—आदियावेंति ; (सूअ २, १) ।

आदिल्ल } देखो **आइल्ल** ; (पि ५९५) ।
आदिल्लग }

आदी स्त्री [**आदी**] इस नाम की एक महानदी, (ठा ५, ३)।

आदीण वि [**आदीन**] १ अत्यंत दीन, बहुत गरीब, (सूअ १, ५)। २ न. दूषित भिक्षा । °**भोइ** वि [°**भोजिन्**] दूषित भिक्षा को लेने वाला ; " आदीणभोईवि करेति पावं " (सूअ १, १०) ।

आदीणिय वि [**आदीनिक**] अत्यन्त-दीन-संबन्धी, " आदीणियं उक्कडियं पुरत्था " (सूअ १, ४) ।

आदेज्ज देखो **आएज्ज** ; (पणह १, ४) ।

आदेस **आएस**=आदेश (कुमा ; वव २, ८) ।

आधरिस सक [**आ+धर्षय्**] परास्त करना, तिरस्कारना । आधरिसेहि ; (आवम) ।

आधा देखो **आहा** ; (पिंड) ।

आधार देखो **आहार**=आधार ; (पणह २, ५) ।

आनय देखो **आणय** ; (अनु) ।

आनामिय देखो **आणामिय** ; (पणह १, ४) ।

आपण देखो **आवण** ; (अभि १८८) ।

आपण्ण देखो **आवण्ण**; (अभि ६५) ।

आपाइय वि [**आपादित**] १ जिसकी आपत्ति की गई हो वह । २ उत्पादित, जनित, (विसे १७४६) ।

आपीड पुं [**आपीड**] शिरो-भूषण ; (श्रा २८) ।

आपीण देखो **आवीण** ; (गउड) ।

आपुच्छ सक [**आ+प्रच्छ्**] आज्ञा लेना ; सम्मति लेना । आपुच्छइ ; (महा) । वकृ—**आपुच्छंत** ; (पि ३६७) ।

कृ—**आपुच्छणीय** ; (णाया १, १)। संकृ—**आपुच्छित्ता, आपुच्छित्ताणं, आपुच्छिऊण, आपुच्छिउ, आपुच्छिय** ; (पि ५८२; ५८३, कप्प, ठा ५, १)।

आपुच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुमति; (णाया १, ६)।

आपुट्ठ वि [आप्रष्ट] जिसकी आज्ञा या सम्मति ली गई हो वह ; (सुर १०, ५१)।

आपुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर ; (दे १, २०)।

आपूर पुं [आपूर] पूरने वाला ; " मयणासरापूरं... ससिं " (कप्प)।

आपूर देखो **आऊर**। कर्म—आपूरिज्जइ; (महा)। वकृ—**आपूरमाण, आपूरेमाण** ; (भग ; राय)।

आपेड, आपेड्ड, आपेल्ल देखो **आपीड** ; (पि १२२, महा)।

आप्पण न [दे] पिष्ट, आटा ; (षड्)।

आफंस पुं [आस्पर्श] अल्प स्पर्श ; (हे १, ४४)।

आफर पुं [दे] द्यूत, जुआ ; (दे १, ६३)।

आफाल सक [आ+स्फालय्] आस्फालन करना, आघात करना। संकृ—**आफालित्ता** ; **आफालिऊण** ; (पि ५८२ ; ५८६)।

आफालण देखो **अप्फालण** ; (गा ५४६)।

आफोडिअ न [आस्फोटित] हाथ पछाडना ; (पण्ह १, ३)।

आबंध सक [आ+बन्ध्] मजबूत बाँधना। वकृ—**आबंधंत** ; (हे १, ७)। संकृ—**आबंधिऊण**; (पि ५८६)।

आबंध पु [आबन्ध] सबन्ध, संयोग ; (गउड)।

आबद्ध वि [आबद्ध] बँधा हुआ ; (स ३५८)।

आबाहा स्त्री [आबाधा] १ अल्प बाधा ; (णाया १, ४)। २ अन्तर ; (सम १५)। ३ मानसिक पीड़ा ; (बृह)।

आभंकर पुं [आभङ्कर] १ ग्रह- विशेष ; (ठा २, ३)। २ न. विमान-विशेष; (सम ८)। °**पभंकर** न [°प्रभङ्कर] विमान-विशेष ; (सम ८)।

आभक्खाण देखो **अब्भक्खाण** ; (उवा)।

आभट्ठ वि [आभाषित] १ कथित, उक्त ; (सुपा १५१) २ संभाषित ; (सुर २, २४८)।

आभरण न [आभरण] अलंकार, आभूषण ; (पि ६०३)।

आभव्व वि [आभाव्य] होने योग्य ; संभाव्य ; (वव ; सुपा ३०७)।

आभा स्त्री [आभा] प्रभा, कान्ति, तेज ; (कुमा; औप)।

आभागि वि [आभागिन्] भोक्ता, भोगी "अणेगाणं जम्ममरणाणं आभागी भवेज्ज" (वसु ; णाया १, १८)।

आभार पुं [आभार] बोझ, भार ; (सुपा २३६)।

आभास सक [आ+भाष्] कहना, संभाषण करना। आभासइ ; (हे ४, ४४७)।

आभास पुं [आभास] १ जो वास्तविक में वह न होकर उसके समान लगता हो ; २ विपरीत ; "करणाभासेहिं" (कुमा)।

आभासिय पुं [आभाषिक] १ इस नामका एक म्लेच्छ देश; २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ जाति ; (पण्ह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप ; ४ उसमें रहने वाला ; "कहि णं भंते ! आभासियमणुयाणं आभासियदीवे नामं दीवे" (जीव ३ ; ठा ४, २)।

आभासिय देखो **आभट्ठ** ; (निर)।

आभिओइय देखो **आभिओगिय** ; (महा)।

आभिओग पुं [आभियोग्य] १ किंकर-स्थानीय देव-विशेष ; (ठा ४, ४)। २ नौकर, किंकर ; (राय)। ३ किंकरता, नौकरी ; (दस ६, २)।

आभिओगि वि [आभियोगिन्] किंकर-स्थानीय देव ; (दस ६)।

आभिओगिय वि [आभियोगिक] १ मन्त्र आदि से आजीविका चलाने वाला ; (पण्ण २०)। २ नौकर-स्थानीय देव-विशेष ; (णाया १, ८)। ३ वशीकरण, दूसरे को वश में करने का मन्त्रादि-कर्म ; (पंचा ; महा)।

आभिओगिय वि [आभियोगित] वशीकरण आदि से संस्कृत ; (आव)।

आभिओग्ग देखो **आभिओग** ; (पण्ण २०)।

आभिग्गहिय वि [आभिग्रहिक] १ प्रतिज्ञा से संबन्ध रखने वाला ; २ प्रतिज्ञा का निर्वाह करने वाला ; (आव)। ३ न. मिथ्यात्व-विशेष ; (श्रा ६)।

आभिणंदिय पुं [आभिनन्दित] श्रावण मास ; (चंद)।

आभिट्ट, आभिडिय वि [दे] प्रवृत्त; "आभिट्ट परमरणं" (पउम ४, ४२ ; ६, १६२ ; वज्जा ४२)।

आभिणिवोहिय न [**आभिनिवोधिक**] इन्द्रिय और मन से होने वाला प्रत्यक्ष ज्ञान-विशेष ; (सम ३३)।
आभिसेक्क वि [**आभिषेक्य**] १ अभिषेक के योग्य ; (निर १, १)। २ मुख्य,प्रधान ; "आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह" (औप)।
आभीर } पु [**आभीर**] एक शूद्र-जाति, अहीर,
आभीरिय } गोवाला ; (सूअ १, ८ ; सुर ६, ६२)।
आभूअ वि [**आभूत**] उत्पन्न ; (निर १, १)।
आभेडिय [**दे**] देखो **आभिट्ट** ; (उप पृ ४२)।
आभोइअ वि [**आभोगित**] देखा हुआ ; (कप्प)।
आभोग पुं [**आभोग**] १ विलोकन, देखना ; (उप १४७)। २ प्रदेश, स्थान ; (सुर २, २२१)। ३ उपकरण, साधन ; (ओघ ३६)। ४ प्रतिलेखन ; (ओघ ३)। ५ उपयोग, ख्याल ; (भग)। ६ विस्तार ; (गाया १, १)। ७ ज्ञान, जानना ; (भग २५, ६ ; ठा ४)। देखो **आभोय**=आभोग।
आभोगण न [**आभोगन**] ऊपर देखो ; (गांदि)।
आभोगि वि [**आभोगिन्**] परिपूर्ण, "जह कमलो निरवाओ जाओ जसविहवाभोगी" (सुपा २७५)। °**णी** स्त्री [°**नी**] मानसिक निर्णय उत्पन्न कराने वाली विद्या-विशेष ; (वृह)।
आभोय सक [**आ+भोगय्**] १ देखना। २ जानना। ३ ख्याल करना। आभोएइ ; (उवा ; गाया)। वकृ—**आभोएमाण** ; (कप्प)। संकृ—**आभोइत्ता, आभोएऊण, आभोइअ** ; (दस ५; महा, पचव)।
आभोय पुं [**आभोग**] १ सर्प की फणा ; (स ६१०)। २ देखो **आभोग** ; (आव ; महा ; सुर ३, ३२)।
आम अ [**आम**] अनुमति-प्रकाशक अव्यय, हाँ ; (गा ४१७ ; सुर २, २४५ ; स ४५६)।
आम पुं [**आम**] १ रोग, पीडा ; (से ६, ४४)। २ वि. अपक्व, कचा ; (श्रा २०)। ३ अशुद्ध, अपवित्र ; (आचा)। °**जर** पुं [°**ज्वर**] अजीर्ण से उत्पन्न बुखार ; (गा ५१)।
आमइ वि [**आमयिन्**] रोगी ; (वव १, १)।
आमंड न [**दे**] वनावटी आमला का फल, कृत्रिम आमलक ; (उप पृ २१४ ; उप १४५ टी)।
आमंडण न [**दे**] भाण्ड, पात्र ; (दे १, ६८)।
आमंत सक [**आ+मन्त्रय्**] १ आह्वान करना, संवोधन करना। २ अभिनन्दन करना। वकृ—**आमंतेमाण** ; (आचा)। संकृ—**आमंतित्ता** ; (कप्प) ; **आमंतिय** ; (सूअ १, ४)।
आमंतण न [**आमन्त्रण**] आह्वान, संवोधन ; (वव) °**वयण** न [°**वचन**] संवोधन-विभक्ति; (विसे ३४५७)।
आमंतणी स्त्री [**आमन्त्रणी**] १ संवोधन की भाषा; आह्वान की भाषा ; (दस ६)। २ आठवीं संवोधन-विभक्ति ; (ठा ८)।
आमंतिय वि [**आमन्त्रित**] संवोधित; (विपा १, ६)।
आमग देखो **आम** ; (गाया १, ६)।
आमज्ज सक [**आ+मृज्**] एक वार साफ करना। आमज्जेज्ज, (आचा)। वकृ—**आमज्जंत**; (निचू) प्रयो—**आमज्जावंत**, (निचू)।
आमद्द पुं [**आमर्द**] संघर्ष, आघात, (कुमा)।
आमय पुं [**आमय**] रोग, दर्द ; (स ५६६ ; स्वप्न ६०)। °**करणी** स्त्री [°**करणी**] विद्या-विशेष ; (सूअ २, २)।
आमय वि [**आमत**] संमत, अनुमत ; (विवे १३६)।
आमरिस पुं [**आमर्ष**] स्पर्श, (विसे ११०६)।
आमलई स्त्री [**आमलकी**] आमला का पेड ; (दे)।
आमलकप्पा स्त्री [**आमलकल्पा**] नगरी-विशेष ; (गाया २, १)।
आमलग पुं [**आमरक**] १ चारों ओर से मारना। २ विपाक-श्रुत का एक अध्ययन ; (ठा १०)।
आमलग } पुंन [**आमलक**] १ आमला का पेड; (ठा ४)।
आमलय } २ आमला का फल ; " मुक्खोवाओ आमलगो व्विव करतले देसिओ भगवया " (वसु ; कुमा)।
आमलय न [**दे**] नूपुर-गृह, नूपुर रखने का स्थान; (दे १, ६७)।
आमसिण वि [**आमसृण**] १ थोडा चिकना ; २ उल्लसित ; (से १२, ४३)।
आमिल्ल सक [**आ+मुच्**] छोड़ना। **आमिल्लइ** ; (भवि)।
आमिस न [**आमिष**] १ मांस ; (गाया १, ४)। २ वि. मनोहर, सुन्दर ; (से ६, ३१)। ३ आसक्ति का कारण ; " आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो निरामिसा " (उत्त १४)। ४ आहार, फलादि भोज्य वस्तु ; (पंचा ६)।

$x - 2y = 0$
(d) $2x - 3y = 0$

आमुंच सक [**आ+मुच्**] १ छोड़ना। २ उतारना। ३ पहनना। वकृ—**आमुंचंत** ; (आक ३८)।

आमुक्क वि [**आमुक्त**] १ त्यक्त ; (गा ५३६; गउड)। २ उतारा हुआ ; (आक ३८)। ३ परिहित ; (वेणी १११ टी)।

आमुट्ठ वि [**आमृष्ट**] १ स्पृष्ट। २ उलटा किया हुआ ; (ओघ)।

आमुय सक [**आ+मुच्**] छोड़ना, त्यागना। आमुयइ ; (गउड)।

आमुस सक [**आ+मृश्**] थोड़ा या एक वार स्पर्श करना। वकृ—**आमुसंत, आमुसमाण** ; (ठा १; आचा ; भग ८, ३)।

आमेडणा स्त्री [**आम्रेडना**] विपर्यस्त करना, उलटा करना ; (पण्ह १, ३)।

आमेल पुं (**दे**) लट, जटा ; (दे १, ६२)।

आमेल, **आमेलग**, **आमेलय** पुं [**आपीड**] फूलों की माला, जो मुकुट पर धारण की जाती है, शिरो-भूषण; (हे १, १०५; पि १२२ ; भग ६, ३३)।

आमेलिअ वि [**आपीडित**] अवतंसित, शिरो-भूषण से विभूषित ; (से ६, २१)।

आमोअ अक [**आ+मुद्**] खुश होना। सकृ—**आमोएवि** (अप) ; (भवि)।

आमोअ पुं [**दे. आमोद**] हर्ष, खुशी ; (दे १, ६४)।

आमोअ पुं [**आमोद**] सुगन्ध, अच्छी गन्ध ; (से १, २३)।

आमोअअ वि [**आमोदक**] १ सुगन्ध उत्पन्न करने वाला। २ आनन्द-जनक ; (से ६, ४०)।

आमोअअ वि [**आमोदद**] सुगन्ध देने वाला ; (से ६, ४०)।

आमोइअ वि [**आमोदित**] हृष्ट, हर्षित ; (भवि)।

आमोक्खा स्त्री [**आमोक्ष**] १ छुटकारा। २ परित्याग ; (सूअ १, ३ ; पि ४६०)।

आमोड पु [**दे**] जूट, लट, समूह ; (दे १, ६२)।

आमोडग न [**आमोटक**] १ वाद्य-विशेष; (आचू)। २ फूलों से बालों का एक प्रकार का बन्धन ; (उत्त ३)।

आमोडण न [**आमोटन**] थोडा मोड़ना, (पण्ह १, १)।

आमोडिअ वि [**आमोटित**] मर्दित , (माल ६०)।

आमोद, **आमोय** देखो **आमोअ** ; (स्वप्न ५२; सुर ३, ४१ ; काल)।

आमोय पुं [**आमोक**] कतवर-पुञ्ज, कतवार का ढग, कूड़े का पुञ्ज ; (आचा २, ७, ३)।

आमोरअ वि [**दे**] विशेष-ज्ञ, अच्छा जानकार ; (दे १, ६६)।

आमोस पुं [**आमर्श , °र्ष**] स्पर्श, छूना ; " संफरिसण-मामोसो " (पण्ह २, १ टी ; विसे ७८१)।

आमोसग वि [**आमोषक**] १ चोर, चोरी करने वाला ; (ठा ५, २)। २ चोरों की एक जाति ; (उर २, ६)।

आमोसहि पुं [**आमर्शौषधि**] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से स्पर्श मात्र से ही सब रोग नष्ट होते हैं ; (पण्ह २, १ ; औप)।

आय पुं [**आय**] १ लाभ, प्राप्ति, फायदा; (अणु)। २ वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)। ३ कारण, हेतु ; (विसे १२२६; २६७६) ४ अध्ययन, पठन ; (विसे ६५८)। ५ गमन , (विसे २७६२)।

आय वि [**आज**] १ अज-संबन्धी, २ बकरे के बाल से उत्पन्न (वस्त्रादि) ; (आचा)।

आय वि [**आगत**] आया हुआ (काल)।

आय वि [**आत्त**] गृहीत ; " आयचरित्तो करेइ सामण्णं " (संथा ३६)।

आय पुं [**आगस्**] १ पाप ; २ अपराध, गुन्हा ; (श्रा २३)।

आय पुंस्त्री [**आत्मन्**] १ आत्मा, जीव ; (सम १)। २ निज, स्वयं ; " अहालहुस्सगाइं रयणाइं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कामंति " (भग ३, २)। ३ शरीर, देह; (णाया १, ८)। ४ ज्ञान आदि आत्मा के गुण ; (आचा)। °**गुत्त** वि [°**गुप्त**] संयत, जितेन्द्रिय ; " आयगुत्ता जिइंदिया " (सुअ)। °**जोगि** वि [°**योगिन्**] मुमुक्षु, ध्यानी; (सूअ)। °**ट्ठि** वि [°**र्थिन्**] मुमुक्षु; "एवं से भिक्खू आयट्ठी" (सूअ)। °**तंत** वि [°**तन्त्र**] स्वाधीन, स्वतन्त्र ; (राज)। °**तत्त** न [°**तत्त्व**] परम पदार्थ, ज्ञानादि रत्न-त्रय ; (आचा)। °**प्पमाण** वि [°**प्रमाण**] साढ़े तीन हाथ का परिमाण वाला; (पव)। °**प्पवाय** न [°**प्रवाद**] बारहवें जैन अङ्गग्रन्थ का एक भाग, सातवाँ पूर्व ; (सम २६)। °**भाव** पुं [°**भाव**] १ आत्म-स्वरूप; २ निज अभिप्राय ; (भग)। ३ विषया-

सक्ति ; " विणइज्जश्रो सव्वह आयभावं " (सूत्र) । °य पुं [°ज] पुत्र, लड़का; (भवि) । °रक्ख वि [°रक्ष] अङ्ग-रक्षक ; (णाया १, ८) । °व वि [°वत्] ज्ञानादि आत्म-गुणों से संपन्न ; (आचा) । °हम्म वि [°घ्न] आत्मा को अधोगति में ले जाने वाला; २ देखो **आहाकम्म**; (पिंड) ।

आय° देखो **आवइ** ; " किंचायरक्खिश्रो जो पुरिसो सो होइ वरिससयश्राऊ " (सुपा ४५३)

आयइ स्त्री [**आयति**] भविष्य काल ; (सुर ४, १३१) ।

आयइत्ता देखो **आइ**=श्रा+दा ।

आयंक पुं [**आतङ्क**] १ दुःख; २ पीडा ; (आचा) । ३ दुःसाध्य रोग, आशु-घाती रोग ; (औप) ।

आयंगुल न [**आत्माङ्गुल**] परिमाण का एक भेद ;
" जेणं जया मणूसा, तेसिं जं होइ माणरुवं तु ।
तं भणियमिहायंगुलमणियमाणं पुण इमं तु । "
(विसे ३४० टी) ।

आयंच सक [**आ+तञ्च्**] सींचना, छिटकना । आयंचइ, आयंचामि ; (उवा) ।

आयंचणिया स्त्री [**आतञ्चनिका**] कुम्भकार का पात्र-विशेष, जिसमें वह पात्र बनाने के समय मिट्टी वाला पानी रखता है ; (भग १५) ।

आयंचणी स्त्री [**आतञ्चनी**] ऊपर देखो ; (भग १५) ।

आयंत वि [**आचान्त**] जिसने आचमन किया हो वह ; (णाया १, १ ; स १८६) ।

आयंत देखो **आया**=श्रा+या ।

आयंतम वि [**आत्मतम**] आत्मा को खिन्न करने वाला ; (ठा ४, २) ।

आयंतम वि [**आत्मतमस्**] १ अज्ञानी, अजान ; २ क्रोधी ; (ठा ४, २) ।

आयंदम वि [**आत्मदम**] १ आत्मा को शान्त रखने वाला, मन और इन्द्रियों का निग्रह करने वाला; २ अश्व आदि को संयत रहने को सीखाने वाला ; (ठा ४, २) ।

आयंप पुं [**आकम्प**] १ कँपना, हिलना । २ कँपाने वाला; (पउम ६६, १८) ।

आयंपिय वि [**आकम्पित**] कँपाया हुआ ; (स ३५३) ।

आयंब अक [**वेप्**] काँपना, हिलना । आयंबइ ; (हे ४, १४७) ।

आयंब } **आयंबिर** } वि [**आताम्र**] थोड़ा लाल ; (औप; सुर ३, ११०, सुपा ६, १४४) ।

आयंबिल न [**आचाम्ल**] तप-विशेष, आंबिल ; (णाया १, ८) । °वड्ढमाण न [°वर्धमान] तपश्चर्या-विशेष ; (अंत ३२ ; महा) ।

आयंबिलिय वि [**आचाम्लिक**] आम्बिल-तप का कर्त्ता ; (ठा ७ ; पण्ह २, १) ।

आयंभर } **आयंभरि** } वि [**आत्मम्भरि**] स्वार्थी, एकलपेटा ; (ठा ४, ३) ।

आयंव अक [**आ+कम्प्**] काँपना, हिलना ; (प्रामा) ।

आयंस } **आयंसग** } पुं [**आदर्श**] १ दर्पण ; (पण्ह १, ४ ; सूत्र १, ४)। २ बैल आदि के गले का भूषण-विशेष; (अणु) । °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप ; २ उसके निवासी मनुष्य ; (ठा ४, २) ।

आयक्ख देखो **आइक्ख** । आयक्खाहि ; (भग) ।

आयग वि [**आजक**] देखो **आय**=आज ; (आचा) ।

आयज्झ अक [**वेप्**] काँपना, हिलना । आयज्झइ ; (हे ४, १४१ ; षड्) । वकृ—**आयज्झंत** ; (कुमा) ।

आयट्ट सक [**आ+वर्त्तय्**] १ फिराना, घूमाना । २ उवालना । वकृ—**आअट्टंत** ; (से ५, ७५ ; ८, १६) । कवकृ—**आयट्टिज्जमाण** ; (णाया १, ६) ।

आयट्टण न [**आवर्त्तन**] फिराना ; (सुपा ५३०) ।

आयड्ढ सक [**आ+कृष्**] खींचना । आयड्ढइ, (महा)। कवकृ—**आअड्ढिज्जंत** ; (से ५, २८) । संकृ—**आयड्ढिऊण** ; (महा) ।

आयड्ढण न [**आकर्षण**] आकर्षण, खींचाव ; (सुपा १२, ७६ ; गा ११८) ।

आयड्ढि स्त्री [**आकृष्टि**] ऊपर देखा ; (गउड ; दे ६, २१) ।

आयड्ढि पुं [**दे**] विस्तार ; (दे १, ६४) ।

आयड्ढिय वि [**आकृष्ट**] खींचा हुआ ; (काल; कप्पू) ।

आयण्ण सक [**आ+कर्णय्**] सुनना, श्रवण करना । आअराणेइ ; (गा ३६५) । वकृ—**आअण्णंत** ; (से १, ६५ ; गा ४६५ ; ६४३) । संकृ—**आयण्णिऊण**; (उवा) ।

आयण्णण न [**आकर्णन**] श्रवण ; (महा) ।

आयण्णिय वि [**आकर्णित**] सुना हुआ ; (उवा) ।

आयतंत वकृ [आददत्] ग्रहण करता हुआ ; (सूअ २, १)।
आयत्त वि [आयत्त] अधीन, स्व-वश ; (गा ३७६)।
आयन्न देखो **आयण्ण**। वकृ—**आयन्नंत** ; (सुर १, २४७)।
आयन्नण देखो **आयण्णण** ; (सुर ३, २१०)।
आयम सक [आ+चम्] आचमन करना, कुल्ला करना। हेकृ—**आयमित्तए** ; (कप्प)। वकृ—**आयममाण** ; (ठा ५)।
आयमण न [आचमन] शुद्धि, शौच ; (श्रा १२ ; गा ३३० ; निचू ४ ; स २०६ ; २५२)।
आयमिअ देखो **आगमिअ** ; (हे १, १७७)।
आयमिणी स्त्री [आयमिनी] विद्या-विशेष ; (सूअ २, २)।
आयय वि [आयत] १ लम्बा, विस्तृत : (उवा ; पउम ८, २१५)। २ पुं. मोक्ष ; (सूअ १, २)।
आययण न [आयतन] १ घर, गृह ; (गउड)। २ आश्रय, स्थान ; (आचा)। ३ देव-मन्दिर ; (आवम)। ४ धार्मिक जनों का एकत्र होने का स्थान ;
"जत्थ साहम्मिया बहवे सीलवंता बहुस्सुया।
चरित्तायारसंपण्णा आययणं तं वियाण हु" (धम्म)।
५ कर्म-बन्ध का कारण ; (आचा)। ६ निर्णय, निश्चय ; (सूअ १, ६)। ७ निर्दोष स्थान ; (सार्ध १०६)।
आयर सक [आ+चर्] आचरना, करना। आयरइ ; (महा, उव)। वकृ—**आयरंत, आयरमाण** ; (भग)। कृ—**आयरियव्व** ; (स १)
आयर पुं [आकर] १ खानि, खान ; २ समूह ; (काल ; कप्पू)।
आयर देखो **आयार**=आचार ; (पुप्फ ३५६)।
आयर पुं [आदर] १ सत्कार, सम्मान ; (गउड)। २ परिग्रह, असंतोष ; (पण्ह १, ५)। ३ ख्याल, संभाल ; (कप्पू)।
आयरंग पुं [आयरङ्ग] इस नाम का एक म्लेच्छ राजा ; (पउम २७, ६)।
आयरण न [आचरण] प्रवृत्ति, अनुष्ठान ; (पडि)।
आयरण न [आदरण] आदर ; (भग १२, ५)।
आयरणा स्त्री [आचरणा] आचरण, अनुष्ठान ; (सट्ठि १४५ ; उवर १४५)।
आयरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित, कृत ; (उवा)। २ न. शास्त्र-सम्मत चाल-चलन ;
" असढेण समाइन्नं जं कत्थइ केणइ असावज्जं।
न निवारियमन्नेहि य, बहुमणुमयमेयमायरियं" (उप ८१३)।
आयरिय पुं [आचार्य] १ गण का नायक, मुखिया ; (आवम)। २ उपदेशक, गुरु, शिक्षक ; (भग १, १)। ३ अर्थ पढाने वाला ; (भग ८, ८)।
आयरिस देखो **आयंस** ; (हे २, १०५)।
आयल्ल अक [लम्ब्] १ व्याप्त होना। २ लटकना।
"केसकलाउ खंधि ओगल्लइ, पम्मिोक्कलु निपंवि आयल्लइ"
(भवि)।
आयल्लया स्त्री [दे] बेचैनी ; "मयणसरविहुरियंगी सहसा आयल्लयं पत्ता" (पउम ८, १८६)। "विद्धो अणंग-बाणेहिं झत्ति आयल्लयं पत्तो" (सुर १६, ११०)। "किं उण पिअवअस्स मअणाअल्लअं मत्तणो उइदेहिं अक्खरेहिं णिवेदेमि" (कप्पू)। देखो **आअल्ल**।
आयल्लिय वि [दे] आक्रान्त ; व्याप्त ; (उप १०३१ टी ; भवि)।
आयव वि [आतप] १ उद्योत, प्रकाश ; (गा ४६)। २ ताप, घाम, (उत्त)। ३ न. मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)। °**णाम** °**नाम** न [°**नामन्**] नामकर्म का एक भेद ; (सम ६७)।
आयवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता ; (णाया १, १)।
आयवत्त पुं [आर्यावर्त्त] भारत, हिंदुस्तान ; (इक)।
आयवा स्त्री [आतपा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी—पटरानी ; २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन ; (णाया २, १)।
आयस वि [आयस] लोहे का, लोह-निर्मित ; (गउड ; निचू १)।
आयसी स्त्री [आयसी] लोहे की कोश, (पण्ह १, १)।
आया देखो **आय**=आत्मन्।
आया सक [आ+या] आना, आगमन करना। आयंति ; (सुपा ५७)। आयाइंति, आयाइंसु, (कप्प)। वकृ—**आयंत**।
आया सक [आ+दा] ग्रहण करना, स्वीकार करना। आयइज्ज ; (उत्त ६)। कृ—**आयाणिज्ज** ; (ठा ६)। संकृ—**आयाए, आदाय, आयाय**, (कस ; कप्प ; महा)।

आयाइ स्त्री [**आजाति**] १ उत्पत्ति, जन्म; (ठा १०)। २ जाति, प्रकार ; ३ आचार, आचरण; (आचा)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] १ संसार, जगत् ; २ 'आचाराङ्ग' सूत्र के एक अध्ययन का नाम ; (ठा १०)।

आयाइ स्त्री [**आयाति**] १ आगमन। २ उत्पत्ति, गर्भ से वाहर निकलना ; (ठा २, ३)। ३ आयति, भविष्य काल ; (दसा)।

आयाए देखो **आया**=आ+दा।

आयाण पुंन [**आदान**] १ ग्रहण, स्वीकार ; (आचा)। २ इन्द्रिय ; (भग ५, ४)। ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य वस्तु; (ठा ४; सूत्र २, ७)। ४ कारण, हेतु ; "संति मे तउ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं" (सूत्र १, १); "किंवा दुक्खायाणं अट्टज्झाणं समारुहसि" (पउम ६५, ४८)। ५ आदि, प्रथम ; (अणु)।

आयाण न [**आयान**] १ आगमन। २ अश्व का एक आभरण-विशेष ; (गउड)।

आयाम सक [**आ+यमय्**] लम्बा करना। कवकृ—**आआमिज्जंत** ; (से १०, ७)। संकृ—**आयामेत्ता, आयामेत्ताणं** ; (भग ; पि ५८३)।

आयाम सक [**दा**] देना, दान करना। आयामेइ ; (भग १५)। संकृ—**आयामेत्ता** ; (भग १५)।

आयाम पुं [**आयाम**] लम्वाई, दैर्घ्य, (सम २; गउड)।

आयाम पु [**दे**] वल, जोर ; (दे १, ६५)।

आयाम न [**आचाम्ल**] तप-विशेष, आयंविल; "नाइविगिट्ठो उ तवो छम्मासे परिमियं तु आयामं" (आचानि ३७२ ; २७३)।

आयाम } न [**आचाम**] अवस्रावण, चावल आदि का
आयामग } पानी ; (ओघ ३५६, उत्त १५)।

आयामणया स्त्री [**आयामनता**] लम्वाई ; (भग)।

आयामि वि [**आयामिन्**] लम्वा ; (गउड)।

आयामुही स्त्री [**आयामुखी**] इस नाम की एक नगरी ; (स ४३१)।

आयाय देखो **आया**=आ+दा।

आयाय वि [**आयात**] आया हुआ; (पउम १४, १३० ; दे १, ६६ ; कुम्मा १६)।

आयार सक [**आ+कारय्**] वोलाना, आह्वान करना। आआरेदि (शौ) ; (नाट)। संकृ—**आआरिअ; आयारेऊण** ; (नाट ; स ५७८)।

आयार पुं [**आकार**] १ आकृति, रूप ; (णाया १, १)। २ इङ्गित, इसारा ; (पाअ)।

आयार पुं [**आचार**] १ आचरण, अनुष्ठान ; (ठा २, ३ ; आचा)। २ चालचलन, रीतभात ; (पउम ६३, ८)। ३ वारह जैन अङ्ग-ग्रन्थो में पहला ग्रन्थ "आयारपढमसुत्ते" (उप ६८०)। ४ निपुण शिष्य; (भग १, १)। °**क्खेवणी** स्त्री [°**क्षेपणी**] कथा का एक भेद; (ठा ४)। °**भंडग** °**भंडय** न [°**भाण्डक**] ज्ञानादि का उपकरण—साधन ; (णाया १, १ ; १६)।

आयारिमय न [**आचारिमक**] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान ; (स ७७)।

आयारिय वि [**आकारित**] १ आहूत, वोलाया हुआ ; (पउम ६१, २५)। २ न. आह्वान-वचन, आक्षेप-वचन ; (से १३, ८० ; अभि २०५)।

आयाव सक [**आ+तापय्**] सूर्य के ताप में शरीर को थोडा तपाना। २ शीत, आतप आदि को सहन करना। वकृ—**आयावंत**; (पउम ६, ६१); **आयाविंत**; (काल); **आयावेंत**; (पउम २६, २१) ; **आयावेमाण**; (महा ; भग)। हेकृ—**आयावेत्तए**; (कस)। संकृ—**आयाविय**; (आचा)।

आयाव पुं [**आताप**] असुरकुमार-जातीय देव-विशेष ; (भग १३, ६)।

आयावग वि [**आतापक**] शीत आदि को सहन करने वाला; (सूत्र २, २)।

आयावण न [**आतापन**] एक वार या थोडा आतप आदि को सहन करना ; (णाया १, १६)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] शीतादि सहन करने का स्थान; (भग ६, ३३)।

आयावणया } स्त्री [**आतापना**] ऊपर देखो;
आयावणा } (ठा ३, ५)।

आयावय वि [**आतापक**] शीत आदि को सहन करने वाला ; (पण्ह २, १)।

आयावल } पुं [**दे**] सवेर का तड़का, वालातप ; (दे
आयावलय } १, ७० ; पाअ)।

आयावि वि [**आतापिन्**] देखो **आयावय**; (ठा ४)।

आयास सक [**आ+यासय्**] तकलीफ देना, खिन्न करना। आआसंति ; (पि ४६०)। संकृ—**आआसिअ**; (मा ४५)।

आयास पुं [**आयास**] १ तकलीफ, परिश्रम, खेद ; (गउड)। २ परिग्रह, असन्तोष ; (पण्ह १, ५)। °**लिवि** स्त्री [°**लिपि**] लिपि-विशेष ; (पण्ण १)।

आयास देखो **आयंस** ; (षड्)।
आयास देखो **आगास**; (पउम ६६, ४० ; हे १, ८४)। **°तिलय** न [**°तिलक**] नगर-विशेष ; (भवि)।
आयासइत्तिअ वि [**आयासयितृ**] तकलीफ देने वाला ; (अभि ६३)।
आयासतल न [**दे**] प्रासाद का पृष्ठ भाग; (दे १,७२)।
आयासलव न [**दे**] पक्षि-गृह, नीड़ ; (दे १, ७२)।
आयासिअ वि [**आयासित**] परिश्रान्त, खिन्न ; (गा १६०)।
आयाहिण न [**आदक्षिण**] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण करना ; (उवा)। **°पयाहिण** वि [**°प्रदक्षिण**] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण कर दक्षिण पार्श्व में स्थित होने वाला ; (विपा १, १)। **°पयाहिणा** स्त्री [**°प्रदक्षिणा**] दक्षिण पार्श्व से परिभ्रमण, प्रदक्षिणा ; (ठा १)।
आयु देखो **आउ**=आयुष्। **°वंत** वि [**°वत्**] चिरायुष्क, दीर्घ आयु वाला ; (पण्ह १, ४)।
आर पुं [**आर**] १ मंगल-ग्रह ; (पउम १७, १०८ ; सुर १०, २२४)। २ चौथी नरक का एक नरकावास ; (ठा ६)। ३ वि. अर्वाक्तन, पूर्व का ; (सूअ १, ६)।
°आरअ वि [**कारक**] कर्ता, करने वाला ; (गा १७६; ३४८)।
आरओ अ [**आरतस्**] १ पूर्व, पहले, अर्वाक् ; (सूअ १, ८ ; स ६४३)। २ समीप में, पास में; (उप ३३१)। ३ शुरू कर के, प्रारम्भ कर के ; (विसे २२८५)।
आरंदर वि [**दे**] १ अनेकान्त ; २ संकट, व्याप्त; (दे १, ७८)।
आरंभ सक [**आ+रभ्**] १ शुरू करना। २ हिंसा करना। आरंभइ ; (हे ४, १५५)। वकृ—**आरंभंत** (गा ४२ ; से ८, ८२)। संकृ—**आरंभइत्ता, आरंभिअ**; (नाट)।
आरंभ पुं [**आरम्भ**] १ शुरुआत, प्रारम्भ ; (हे १, ३०)। २ जीव-हिंसा, वध; (श्रा ७)। ३ जीव, प्राणी ; (पण्ह १, १)। ४ पाप-कर्म ; (आचा)। **°य** वि [**°ज**] पाप-कार्य से उत्पन्न ; (आचा)। **°विणय** पुं [**°विनय**] आरंभ का अभाव। **°विणइ** वि [**°विनयिन्**] आरंभ से विरत ; (आचा)।
आरंभग } पुं [**आरम्भक**] १ ऊपर देखो ; (सूअ २,
आरंभय } ६)। २ वि. शुरू करने वाला ; (विसे ६२८ ; उप पृ ३)। ३ हिंसक, पाप-कर्म करने वाला ; (आचा)।
आरंभि वि [**आरम्भिन्**] १ शुरू करने वाला ; (गउड)। २ पाप-कार्य करने वाला ; (उप ८६६)।
आरंभिअ पुं [**दे**] मालाकार, माली ; (दे १, ७१)।
आरंभिअ वि [**आरब्ध**] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ ; (भवि)।
आरंभिअ देखो **आरंभ**=आ+रभ्।
आरंभिया स्त्री [**आरम्भिकी**] १ हिंसा से सम्बन्ध रखने वाली क्रिया ; २ हिंसक क्रिया से होने वाला कर्म-बन्ध ; (ठा २, १ ; नव १७)।
आरक्ख वि [**आरक्ष**] १ रक्षण करने वाला ; (दे १, १५)। २ पुं. कोटवाल, नगर का रक्षक ; (पाअ)।
आरक्खग वि [**आरक्षक**] १ रक्षण करने वाला, त्राता ; (कप्प; सुपा ३५१)। २ पुं. क्षत्रियों का एक वंश; ३ वि. उस वंश में उत्पन्न ; (ठा ६)।
आरक्खि वि [**आरक्षिन्**] रक्षक, त्राता ; (ठा ३, १ ; ओघ २६०)।
आरक्खिग } वि [**आरक्षिक**] १ रक्षक, त्राता ; २ पुं.
आरक्खिय } कोटवाल ; (निचू १, १६ ; सुपा ३३६ ; महा ; स १२७; १५१)।
आरज्झ वि [**आराध्य**] पूज्य, माननीय; (अच्चु ७१)।
आरड सक [**आ+रट्**] १ चिल्लाना, बूम मारना। २ रोना। वकृ—**आरडंत** ; (उप १२८ टी)। संकृ—**आरडिऊण**; (महा)।
आरडिअ न [**दे**] १ विलाप, क्रन्दन, २ वि. चित्त-युक्त ; (दे १, ७५)।
आरण पुं [**आरण**] १ देवलोक-विशेष ; (अनु ; सम ३६ ; इक)। २ उस देवलोक का निवासी देव ; "तं चेव आरण-च्चुय ओहीनाणेण पासंति" (संग २२१; विसे ६६६)।
आरण न [**दे**] १ अधर, होठ ; २ फलक ; (दे १,७६)।
आरणाल न [**आरनाल**] कांजी, सावुदाना ; (दे १,६७)।
आरणाल न [**दे**] कमल, पद्म ; (दे १, ६७)।
आरण्ण वि [**आरण्य**] जंगली, जंगल-निवासी ; (से ८, ५६)।
आरण्णग } वि [**आरण्यक**] १ जंगली, जंगल-निवासी,
आरण्णय } जंगल में उत्पन्न; (उप २२६; दसा)। २ न, शास्त्र-विशेष, उपनिषद्-विशेष ; (पउम ११, १०)।
आरण्णिय वि [**आरण्यिक**] जंगल में वसने वाला (तापस आदि) ; (सूअ २, २)।

आरत वि [आरत] १ थोड़ा रक्त ; (आचा) । २ अत्यन्त अनुरक्त ; (पराह २, ४) ।
आरत्तिय न [आरात्रिक] आरती; (सुर १०, १६; कुमा)।
आरद्ध वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ ; (काल) ।
आरद्ध वि [दे] १ बढ़ा हुआ ; २ सतृष्ण, उत्सुक ; ३ घर में आया हुआ ; (दे १, ७५) ।
आरनाल देखो **आरणाल**=आरनाल ; (पाअ) ।
आरनाल न [दे] कमल, पद्म ; (षड्) ।
आरव देखो **आरव** ।
आरब्भ नीचे देखो ।
आरभ देखो **आरंभ**=आ+रभ् । आरभइ; (हे ४, १५५ ; उवर १०) । वकृ—**आरभंत, आरभमाण**; (ठा ७) । संकृ—**आरब्भ** ; (विसे ७६५) ।
आरभड न [आरभट] १ नृत्य का एक भेद; (ठा ४, ४) । २ इस नाम का एक मुहूर्त ; "छच्चेव य आरभडो सोमित्तो पंचअंगुलो होइ" (गणि) ।
आरभडा स्त्री [आरभटा] प्रतिलेखना-विशेष ; (ओघ १६२ भा) ।
आरभिय न [आरभित] नाट्यविधि-विशेष ; (राय) ।
आरय वि [आरत] १ उपरत ; २ अपगत ; (सूअ १, १५) ।
आरव पुं [आरव] शब्द, अवाज, ध्वनि ; (सण) ।
आरव पुं [आरव] इस नाम का एक प्रसिद्ध म्लेच्छ-देश ; (पराह १, १) ।
आरव } वि [आरव] अरब देश में उत्पन्न, अरब देश का
आरवग } निवासी । स्त्री—°**वी** ; (गाया १, १) ।
आरविंद वि [आरविन्द] कमल-सम्बन्धी ; (गउड) ।
आरस सक [आ+रस्] चिल्लाना, बूम मारना । वकृ—**आरसंत**; (उत्त १६) । हेकृ—**आरसिउं**; (काल) ।
आरसिय न [आरसित] १ चिल्लाहट; बूम; २ चिल्लाया हुआ ; (विपा १, २) ।
आरह देखो **आरभ** । आरहइ; (षड्) । संकृ—**आरहिअ** ; (अभि ६०) ।
आरा स्त्री [आरा] लोहे की सलाई, पैनेमें डाली जाती लोहे की खीली ; (पराह १, १ ; स ३८) ।
आरा अ [आरात्] १ अर्वाक्, पहले ; (दे १, ६३) । २ पूर्व-भाग ; (विसे १७४०) ।
आराइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत ; २ प्राप्त ; (दे १, ७०) ।
आराडी स्त्री [दे] देखो **आरडिअ**; (दे १, ७५) ।
आराम पुं [आराम] बगीचा, उपवन; (औप; गाया १,१)।
आरामिअ पुं [आरामिक] माली ; (कुमा) ।
आराव पुं [आराव] शब्द, अवाज ; (स ५७७; गउड)।
आराह सक [आ+राधय्] १ सेवा करना, भक्ति करना । २ ठीक ठीक पालन करना । आराहइ, आराहेइ ; (महा; भग) । वकृ—**आराहंत**; (रयण ७०) । संकृ—**आराहित्ता, आराहेत्ता, आराहिऊण**; (कप्प; भग; महा) । हेकृ—**आराहिउं** ; (महा) ।
आराह वि [आराध्य] आराधन-योग्य ; (आरा ११) ।
आराहग वि [आराधक] १ आराधन करने वाला ; २ मोक्ष का साधक ; (भग ३, १) ।
आराहण न [आराधन] १ सेवना ; (आरा ११) । २ अनशन ; (राज) ।
आराहणा स्त्री [आराधना] १ सेवा, भक्ति ; २ परिपालन ; (गाया १, १२ ; पंचा ७) ३ मोक्ष-मार्ग के अनुकूल वर्तन; (पक्खि) । ४ जिसका आराधन किया जाय वह ; (आरा १) ।
आराहणी स्त्री [आराधनी] भाषा का एक प्रकार ; (दस ७) ।
आराहिय वि [आराधित] १ सेवित, परिपालित ; (सम ७०) । २ अनुरूप, योग्य ; (स ६२३) ।
आरिट्ठ वि [दे] यात, गत, गुजरा हुआ ; (षड्) ।
आरिय देखो **अज्ज**=आर्य । (भग; षड् ; सुपा १२८ ; पउम १४, ३० ; सुर ८, ६३) ।
आरिय वि [आरित] सेवित "आरिओ आयरिओ सेवितो वा एगट्ठत्ति" (आचू) ।
आरिय वि [आकारित] आहूत, बोलाया हुआ ; 'आरिओ आगारिओ वा एगट्ठा" (आव) ।
आरिया देखो **अज्जा**=आर्या ; (प्रारू) ।
आरिल्ल वि [दे] अर्वाक् उत्पन्न, पहले जो उत्पन्न हुआ हो ; (दे १, ६३) ।
आरिस वि [आर्ष] ऋषि-सम्बन्धी ; (कुमा) ।
आरुग्ग देखो **आरोग्ग**=आरोग्य ; "आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु" (पडि) ।
आरुट्ठ वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, रुष्ट ; (पउम ५३, १४१) ।

आरुभ देखो **आरुह=आ+रुह्** । वकृ—**आरुभमाण** ; (कस) ।
आरुवणा देखो **आरोवणा** ; (विसे २६२८)।
आरुस सक [आ+रुष्] क्रोध करना, रोष करना । संकृ— **आरुस्स** ; (सूअ १, ५) ।
आरुसिय वि [आरुष्ट] क्रुद्ध; कुपित ; (णाया १, २) ।
आरुह सक [आ+रुह्] ऊपर चढ़ना, ऊपर बैठना । **आरुहइ**; (षड् ; महा) । आरुहेइ ; (भग) । वकृ— **आरुहंत, आरुहमाण** ; (से ५, १६ ; श्रा ३६) । संकृ—**आरुहिऊण, आरुहिय** ; (महा; नाट) । हेकृ— **आरुहिउं** , (महा) ।
आरुह वि [आरुह] उत्पन्न, उद्भूत, जात ;
"गामारुह म्हि गामे, वसामि नअरट्ठिइं ण आणामि ।
णाअरिआणं पइणो हरेमि जा होमि सा होमि "
(गा ७०५) ।
आरुहण न [आरोहण] ऊपर बैठना ; (णाया १, २; गा ६३०; सुपा २०३; विपा १, ७ ; गउड) ।
आरुहिय वि [आरोपित] १ स्थापित, २ ऊपर बैठाया हुआ ; (से ८, १३) ।
आरुहिय } वि [आरूढ] १ ऊपर चढा हुआ ; (महा) ।
आरूढ } २ कृत, विहित ; " तीए पुरओ पइण्णा आरुहिया दुक्करा मए सामि " (पउम ८, १६१) ।
आरेइअ वि [दे] १ मुकुलित, संकुचित ; २ भ्रान्त ; ३ मुक्त ; (दे १, ७७) । ४ रोमाञ्चित , पुलकित ; (दे १, ७७ ; पाअ) ।
आरेण अ [आरेण] १ समीप, पास ; (उप ३३६ टी) । २ अर्वाक्, पहले ; (विसे ३५१७) । ३ प्रारम्भ कर ; (विसे २३८४) ।
आरोअ अक [उत्+लस्] विकसित होना, उल्लास पाना । आरोअइ ; (हे ४, २०२) ।
आरोअणा देखो **आरोवणा** ; (ठा ४, १ ; विसे २६२७) ।
आरोइअ [दे] देखो **आरेइअ** ; (षड्) ।
आरोग्ग सक [दे] खाना, भोजन करना, आरोगना । आरोग्गइ ; (दे १, ६६) ।
आरोग्ग न [आरोग्य] १ नीरोगता, रोग का अभाव ; (ठा ४, ३ ; उव) । २ वि. रोग-रहित, नीरोग ; (कप्प) । ३ पुं. एक ब्राह्मणोपासक का नाम ; (उप ५४०) ।
आरोग्गरिअ वि [दे] रक्त, रँगा हुआ ; (षड्) ।
आरोग्गिअ वि [दे] भुक्त, खाया हुआ ; (दे १, ६६) ।
आरोद्ध वि [दे] १ प्रवृद्ध, वढा हुआ ; २ गृहागत, घर में आया हुआ ; (षड्) ।
आरोल सक [पुञ्ज्] एकत्र करना, इकट्ठा करना । आरोलइ, (हे ४, १०२ ; षड्) ।
आरोलिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ , (कुमा) ।
आरोव सक [आ+रोपय्] १ ऊपर चढ़ना, ऊपर बैठना । २ स्थापन करना । आरोवेइ ; (हे ४, ४७) । संकृ— **आरोवेत्ता, आरोविउं, आरोविऊण** ; (भग; कुमा; महा) ।
आरोवण न [आरोपण] ऊपर चढाना , (सुपा २४६) । २ संभावना ; (दे १, १७४) ।
आरोवणा स्त्री [आरोपणा] १ ऊपर चढ़ाना । २ प्रायश्चित-विशेष ; (वव १, १) । ३ प्ररूपणा, व्याख्या का एक प्रकार; ४ प्रश्न, पर्यनुयोग; (विसे २६२७; २६२८)।
आरोविय वि [आरोपित] १ चढाया हुआ ; २ संस्थापित ; (महा ; पाअ) ।
आरोस पुं [आरोष] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ वि. उस देश का निवासी ; (पण्ह १, १; कस) ।
आरोसिअ वि [आरोषित] कोपित, रुष्ट किया हुआ, (से ६, ६६ ; भवि ; दे १, ७०) ।
आरोह सक [आ+रुह्] ऊपर चढना, बैठना । आरोहइ (कस) ।
आरोह सक [आ+रोहय्] ऊपर चढाना । कृ—**आरोहइयव्व** ; (वव १) ।
आरोह पु [आरोह] १ सवार; हाथी, घोड़ा आदि पर चढ़ने वाला ; (से १३, ७५) । २ ऊंचाई, (वृह) । ३ लम्बाई; (वव १, ५) ।
आरोह पुं [दे] स्तन, थन, चूँची ; (दे १, ६३) ।
आरोहग वि [आरोहक] १ सवार होने वाला ; २ हस्तिपक, हाथी का रक्षक ; (औप) ।
आरोहि वि [आरोहिन्] ऊपर देखो ; (गउड) ।
आरोहिय वि [आरूढ] ऊपर बैठा हुआ, ऊपर चढा हुआ ; (भवि) ।
आल न [दे] १ छोटा प्रवाह ; २ वि. कोमल, मृदु ; (दे १, ७३) । ३ आगत; (रंभा) ।

आल न [**आल**] कलंकारोप, दोषारोपण ; (स ४३३); "न दिज्ज कस्सवि कूडआलं" (सत्त २)।
°**आल** देखो **काल** ; (गा ४५; से १, २६ ; ५, ८५ ; ६, ५६)।
°**आल** देखो **जाल** ; (से ५, ८५, ६, ५६)।
°**आल** देखो **ताल** "समविसमं णमंति हरिआलवंकिआइं ; (से ६, ५६)।
आलइअ वि [**आलगित**] यथास्थान स्थापित, योग्य स्थान में रखा हुआ ; (कप्प)।
आलइअ वि [**आलयिक**] गृही, आश्रय वाला ; (आचा)।
आलंकारिय वि [**आलङ्कारिक**] १ अलकार-शास्त्र-ज्ञाता, २ अलंकार-संबन्धी। ३ अलंकार के योग्य ; "आलंकारियं भंडं उवणेह" (जीव ३)।
आलंकिअ वि [**दे**] पंगु किया हुआ ; (दे १, ६८)।
आलंद न [**आलन्द**] समय का परिमाण-विशेष, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतनेसे लेकर पांच अहोरात्र तक का काल ; (विसे)।
आलंदिअ वि [**आलन्दिक**] उपर्युक्त समय का उल्लंघन न कर कार्य करने वाला ; (विसे)।
आलंब सक [**आ+लम्ब्**] आश्रय करना, सहारा लेना। संकृ—**आलंबिय** ; (भास ११)।
आलंब पुं [**आलम्ब**] आश्रय, आधार ; (सुपा ६३५)।
आलंब न [**दे**] भूमि-छत्र, वनस्पति-विशेष जो वर्षा में होता है; (दे १, ६४)।
आलंबण न [**आलम्बन**] १ आश्रय, आधार, जिसका अवलम्बन किया जाय वह ; (णाया १, १)। २ कारण, हेतु, प्रयोजन ; (आवम; आचा)।
आलंबणा स्त्री [**आलम्बना**] ऊपर देखो ; (पि ३६७)।
आलंबि वि [**आलम्बिन्**] अवलम्बन करने वाला, आश्रयी; (गउड)।
आलंभिय न [**आलम्भिक**] १ नगर-विशेष ; (ठा १)। २ भगवती सूत्र के ग्यारहवें शतक का वारहवाँ उद्देश, (भग ११, १२)।
आलंभिया स्त्री [**आलम्भिका**] नगरी-विशेष ; (भग ११, १२)।
आलक्क पुं [**दे**] पागल कुत्ता ; (भत्त १२५)।
आलक्ख सक [**आ+लक्षय्**] १ जानना। २ चिह्न से पिछानना। आलक्खिमो ; (गउड)।
आलक्खिय वि [**आलक्षित**] १ ज्ञात, परिचित। २ चिह्न से जाना हुआ ; (गउड)।
आलग्ग वि [**आलग्न**] लगा हुआ, संयुक्त; (से ५, ३३)।
आलत्त वि [**आलपित**] संभाषित, आभाषित, (पउम १६, ४२ ; सुपा २०८ ; श्रा ६)।
आलत्तय देखो **अलत्त** ; (गउड; गा ६४६)।
आलत्थ पुं [**दे**] मयूर, मोर ; (दे १, ६५)।
आलद्ध वि [**आलब्ध**] १ संसृष्ट ; २ संयुक्त ; ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ ; ४ मारा हुआ ; (नाट)।
आलप्प वि [**आलाप्य**] कहने के योग्य, निर्वचनीय ; 'सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं" (लहुअ ८)।
आलभ सक [**आ+लभ्**] प्राप्त करना। आलभिज्जा ; (उवर ११)।
आलभिया स्त्री [**आलभिका**] नगरी-विशेष ; (उवा ; भग ११, २)।
आलय पुंन [**आलय**] गृह, घर, स्थान, (महा ; गा १३५)।
आलयण न [**दे**] वास-गृह, शय्या-गृह; (दे १,६६; ८,५८)।
आलव सक [**आ+लप्**] १ कहना, वातचीत करना। २ थोडा या एक बार कहना। वकृ—**आलवंत** ; (गा ११८; अभि ३८) ; **आलवमाण** , (ठा ४)। **आलविऊण**; (महा) ; **आलविय** ; (नाट)।
आलवण न [**आलपन**] संभाषण, बातचीत, वार्तालाप ; (ओघ ११३; उप १२८ टी; श्रा १६; दे १,५६, स ६६)।
आलवाल न [**आलवाल**] कियारी, थाँवला ; (पाअ)।
आलस वि [**आलस**] आलसी, सुस्त ; (भग १२,२)।
°**त्त** न [°**त्व**] आलस, सुस्ती ; (श्रा २३)।
आलसिय वि [**आलसित**] आलसी, मन्द, (भग १२,२)।
आलस्स न [**आलस्य**] आलस, सुस्ती ; (कुमा, सुपा २५१)।
आलाअ देखो **आलाव** ; (गा ४२८; ६१६ ; से १६)।
आलाण देखो **आणाल** ; (पाअ; से ५, १७ ; महा)।
आलाणिय वि [**आलानित**] नियन्त्रित, मजबुती से बाँधा हुआ ; "दढभुयदंडालाणियकमलाकरिणी निवो समरसीहो" (सुपा ४)।
आलाव पुं [**आलाप**] १ संभाषण, बातचीत : (श्रा ६)। २ अल्प भाषण ; (ठा ५)। ३ प्रथम भाषण , (ठा ४)। ४ एक वार की उक्ति ; (भग ५, ४)।

आलावग पुं [**आलापक**] पैरा, पैरेग्राफ, ग्रन्थ का अंश-विशेष ; (ठा २, २) ।
आलावण न [**आलापन**] बाँधने का रज्जु आदि साधन, बन्धन-विशेष । °**बंध** पुं [°**वन्ध**] बन्ध-विशेष ; (भग ८, ६) ।
आलावणी स्त्री [**आलापनी**] वाद्य-विशेष; (वज्जा ८०) ।
आलास पुं [**दे**] वृश्चिक, बिच्छू ; (दे १, ६१) ।
आलाहि देखो **अलाहि** ; (षड्) ।
आलि पुं [**आलि**] भ्रमर, भमरा ; (पड़ि) ।
आलि देखो **आली** ; (राय; पाम) ।
आलिंग सक [**आ+लिङ्ग्**] आलिङ्गन करना, भेटना । **आलिंगइ**; (महा) । संकृ—**आलिंगिऊण**; (महा) । हेकृ—**आलिंगिउं**; (महा) ।
आलिंग पुं [**आलिङ्ग**] वाद्य-विशेष ; (राय) ।
आलिंग पु [**आलिङ्ग्य**] १ आलिङ्गन करने योग्य । २ वाद्य-विशेष ; (जीव ३) ।
आलिंगण न [**आलिङ्गन**] आलिंगन; भेट ; (कप्पू) । °**वट्टि** स्त्री [°**वृत्ति**] उपधान, शरीर-प्रमाण उपधान ; (भग ११, ११) ।
आलिंगणिया स्त्री [**आलिङ्गनिका**] देखो **आलिंगण-वट्टि** ; (जीव ३) ।
आलिंगिय वि [**आलिङ्गित**] आश्लिष्ट, जिसका आलिंगन किया गया हो वह ; (काल) ।
आलिंद पुं [**आलिन्द**] बाहर के दरवाजे के चौकठे का एक हिस्सा ; (अभि १५६ ; अवि २८) ।
आलिंप सक [**आ+लिप्**] पोतना, लेप करना । **आलिंपइ** ; (उव) । हेकृ—**आलिंपित्तए** ; (कस) । वकृ—**आलिंपंत** ; प्रयो—**आलिंपावंत** ; (निचू ३) ।
आलिंपण न [**आलेपण**] १ लेप करना, विलेपन ; (रयण ५५) । २ जिसका लेप होता है वह चीज ; (निचू १२)
आलित्त वि [**आलिप्त**] चारों ओर से जला हुआ ; " जह आलित्ते गेहे कोइ पसुत्तं नरं तु बोहेज्जा " (वव १,३ ; णाया १, १; १४) २ न. आग लगनी, आग से जलना ; " कोट्टिमघरे वसंते आलित्तम्मि वि न डज्झइ " (वव ४) ।
आलिद्ध वि [**आश्लिष्ट**] आलिंगित ; (भग १६, ३ ; सुर ३, २२२) ।
आलिद्ध वि [**आलीढ**] चखा हुआ, आस्वादित ; (से ६, ५६) ।
आलिसंदग पुं [**दे. आलिसन्दक**] धान्य-विशेष; (ठा ५, ३ ; भग ६, ७) ।
आलिसिंदय पुं [**दे. आलिसिन्दक**] ऊपर देखो; (ठा५, ३)।
आलिह सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना । आलिहइ (हे ४, १८२) । वकृ—**आलिहंत** ; (नाट) ।
आलिह सक [**आ+लिख्**] १ विन्यास करना, स्थापन करना । २ चित्र करना, चितरना । वकृ—**आलिहमाण** ; (सुर १२, ४०) ।
आलिहिअ वि [**आलिखित**] चित्रित; (सुर १, ८७) ।
आली सक [**आ+ली**] १ लीन होना, आसक्त होना । २ आलिंगन करना । ३ निवास करना । वकृ—**आलीयमाण**; (गउड) ।
आली स्त्री [**आली**] १ पंक्ति, श्रेणी ; २ सखी, वयस्या ; (हे १, ८३) । ३ वनस्पति-विशेष ; (णाया १, ३) ।
आलीढ वि [**आलीढ**] १ आसक्त ; "आमूलालोलधूली-बहुलपरिमलालीढलोलालिमाला" (पडि)। २ न. आसन-विशेष ; (वव १) ।
आलीण वि [**आलीन**] १ लीन, आसक्त, तत्पर ; (पउम ३२, ६) । २ आलिंगित, आश्लिष्ट ; (कप्प) ।
आलीयग वि [**आदीपक**] जलाने वाला, आग सुलगाने वाला ; (णाया १, २) ।
आलीयमाण देखो **आली**=आ+ली ।
आलील न [**दे**] समीप का भय, पास का डर; (दे १,६५) ।
आलीवग देखो **आलीयग** ; (पण्ह १, ३) ।
आलीवण न [**आदीपन**] आग लगाना ; (दे १, ७१ ; विपा १, १) ।
आलीविय वि [**आदीपित**] आग से जलाया हुआ ; (पि २४४) ।
आलु पुंन [**आलु**] कन्द-विशेष, आलु ; (श्रा २०) ।
आलुई स्त्री [**आलुकी**] वल्ली-विशेष ; (पव १०) ।
आलुंख सक [**दह्**] जलाना, दाह देना । आलुंखइ ; (हे ४, २०८ ; षड्) ।
आलुंख सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना । आलुंखइ ; (हे ४, १८२) ।
आलुंखण न [**स्पर्शन**] स्पर्श, छूना ; (गउड) ।
आलुंखिअ वि [**स्पृष्ट**] स्पृष्ट, छुआ हुआ; (से १, २१; पाम) ।
आलुंखिअ वि [**दग्ध**] जला हुआ; (सुर ६, २०३) ।
आलुंप सक [**आ+लुम्प्**] हरण करना । आलुंपह ; (आचा) ।

आलुंप वि [**आलुम्प**] अपहारक, हरण करने वाला, छीन लेने वाला ; (आचा)।

आलुग देखो **आलु** ; (पण्ण १)।

आलुगा स्त्री [**दे**] घटी, छोटा घड़ा ; (उप ६६०)।

आलुयार वि [**दे**] निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन ; "ता दंसिमो समग्गं अवह किं आलुयारभणिएहिं" (सुपा ३४३)।

आलेक्ख } वि [**आलेख्य**] चित्रित, "रत्तिं परिवट्टेउं
आलेक्खिय } लक्खं आलेक्खदिणयराणवि न खमं" (अच्चु २५ ; से २, ४५ ; गा ६४१ ; गउड)।

आलेट्ठुअं } देखो **आसिलिस** ।
आलेट्ठुं }

आलेव पुं [**आलेप**] विलेपन, लेप ; "आलेवनिमित्तं च देवीओ वलयालंकियवाहाओ घसंति चंदणं" (महा)।

आलेवण न [**आलेपन**] १ लेप, विलेपन ; २ जिसका लेप किया जाता है वह वस्तु; " जे भिक्खू रत्तिं आलेवणजायं पडिग्गाहेत्ता" (निचू १२)।

आलेह पुं [**आलेख**] चित्र ; (आवम)।

आलेहिअ वि [**आलेखित**] चित्रित ; (महा)।

आलोअ सक [**आ+लोक्**] देखना, विलोकन करना। वकृ— **आलोअंत, आलोइंत, आलोएमाण** ; (गा ५४६; उप पृ ४३ ; आचा)। कवकृ—**आलोक्कंत** ; (से १, २५) संकृ—**आलोएऊण; आलोइत्ता**; (काल; ठा ६)।

आलोअ सक [**आ+लोच्**] १ देखाना ; २ गुरू को अपना अपराध कह देना। ३ विचार करना। ४ आलोचना करना। अलोएइ ; (भग)। वकृ—**आलोअंत** ; (पडि)। संकृ—**आलोएत्ता, आलोचित्ता** ; (भग; पि ५८२)। हेकृ—**आलोइत्तए** ; (ठा २, १)। कृ— **आलोएयव्व, आलोएइयव्व**; (उप ६८२; ओघ ७६६)।

आलोअ पुं [**आलोक**] १ तेज, प्रकाश ; (से २, १२)। २ विलोकन, अच्छी तरह देखना ; (ओघ ३)। ३ पृथ्वी का समान-भाग, सम भू-भाग; (ओघ ५६५)। ४ गवाचादि प्रकाश-स्थान ; (आचा)। ५ जगत, संसार; (आव)। ६ ज्ञान ; (पण्ह १, ४)।

आलोअग } वि [**आलोचक**] आलोचना करने वाला ;
आलोअय } (श्रा ४० ; पुप्फ ३५५ ; ३६०)।

आलोअण न [**आलोकन**] विलोकन, दर्शन, निरीक्षण ; (ओघ ५६ भा) ;
"अत्थालोअणतरला, इअरकईणं भमंति बुद्धीओ। त एव निरारंभं, एंति हिययं कइंदाणं" (गउड)।

आलोअण न [**आलोचन**] नीचे देखो ; (पण्ह २, १ ; प्रासू २४)।

आलोअणा स्त्री [**आलोचना**] १ देखना, बतलाना ; २ प्रायश्चित के लिए अपने दोषों को गुरु को बता देना ; ३ विचार करना ; (भग १७, २ ; श्रा ४२ ; स ५०६)।

आलोइअ वि [**आलोकित**] दृष्ट, निरीक्षित ; (से ६, ६४)।

आलोइअ वि [**आलोचित**] प्रदर्शित, गुरु को बताया हुआ; (पडि)।

आलोइअ देखो **आलोअ**=आ+लोच्।

आलोइत्तु वि [**आलोकयितृ**] देखने वाला, द्रष्टा ; (सम १५)।

आलोक्कंत देखो **आलोअ**=आ+लोक्।

आलोग देखो **आलोअ**=आलोक ; (ओघ ५६५)। °**नयर** न [°**नगर**] नगर-विशेष ; (पउम ६८, ५७)।

आलोच देखो **आलोअ**=आ+लोच्। वकृ—**आलोच्चंत** ; (सुपा ३०७)। संकृ—**आलोचिऊण**; (स ११७)।

आलोचण देखो **आलोअण** ; (उप ३३२)।

आलोड सक [**आ+लोडय्**] हिलोरना, मथन करना। संकृ— **आलोडिवि** (अप); (सण)।

आलोडिय } वि [**आलोडित**] मथित, हिलोरा हुआ ;
आलोलिय } "आलोडिया य नयरी" (पउम ५३, १२६ ; उप १४२ टी)।

आलोव सक [**आ+लोपय्**] आच्छादित करना। कवकृ— **आलोविज्जमाण** ; (स ३८२)।

आलोव देखो **आलोअ**=आलोक। "मंते अत्थालोवे भेसज्जे भोयणे पियागमणे" (रंभा)।

आलोविय वि [**आलोपित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (णाया १, १)।

आव वि [**यावत्**] जितना। आवंति ; (पि ३६६)।

आव अ [**यावत्**] जब तक, जब लग। °**कह** वि [°**कथ**] देखो °**कहिय** ; (विसे १२६३; श्रा १)। °**कहं** अ [°**कथम्**] यावज्जीव, जीवन-पर्यन्त ; (आव)। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] जीवन-पर्यन्त "धएणा आवकहाए गुरुकुल-वासं न मुचंति" (उप ६८१)। °**कहिय** वि [°**कथिक**] यावज्जीविक, जीवन-पर्यन्त रहने वाला ; (ठा ६ ; उप ५२०)।

आव पुं [आप] १ प्राप्ति, लाभ; (पण्ह २, १)। २ जल का समूह। °**वहुल** न [°बहुल] देखो **आउ-बहुल**, (कस)।

आव सक [आ+या] आना, आगमन करना। "वणत्र-सिराणवि निच्चं आवइ निद्दासुहं ताण" (सुपा ६४७)। आवेइ; (नाट)। आवति; (संग १६२)।

आवइ स्त्री [आपद्] आपत्ति, विपत, संकट; (सम ५७; सुपा ३२१; सुर ४, २१५; प्रासू ५, १५६)।

आवंग पुं [दे] अपामार्ग, वृक्ष-विशेष, लटजीरा; (दे १, ६२)।

आवंडु वि [आपाण्डु] थोडा सफेद, फीका; (गा २६५)।

आवंडुर वि [आपाण्डुर] ऊपर देखो; (से ६, ७४)।

आवग्गण न [आवल्गन] अश्व पर चढने की कला; (भवि)।

आवच्चेज्ज वि [अपत्यीय] अपत्य-स्थानीय; (कप्प)।

आवज्ज देखो **आओज्ज**; (हे १, १५६)।

आवज्ज अक [आ+पद्] प्राप्त होना, लागु होना। आवज्जइ; (कस)। कृ—**आवज्जियव्व**; (पण्ह २, ५)।

आवज्ज सक [आ+वर्ज्] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना। "आवज्जंति गुणा खलु अबुहंपि जणं अमच्छरियं" (स ११)।

आवज्जण न [आवर्जन] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना; (आचू)। ३ उपयोग, ख्याल; ४ उपयोग-विशेष; ५ व्यापार-विशेष; (विसे ३०५१)।

आवज्जिय वि [आवर्जित] १ प्रसन्न किया हुआ; २ अभिमुख किया हुआ; (महा; सुर ६, ३१; सुपा २३२)। °**करण** न [°करण] व्यापार-विशेष; (आचू)।

आवज्जिय देखो **आउज्जिय**=आतोद्यिक; (कुमा)।

आवज्जीकरण न [आवर्जीकरण] उपयोग-विशेष या व्यापार-विशेष का करना, उदीरणावलिका में कर्म-प्रक्षेप रूप व्यापार; (औप; विसे ३०५०)।

आवट्ट अक [आ+वृत्] १ चक्र की तरह घूमना, फिरना। २ विलीन होना। ३ सक. शोषण करना; सूखाना। ४ पीड़ना, दुःखी करना। आवट्टइ; (हे ४, ४१६; सूअ १, १; ५)। वकृ—**आवट्टमाण**; (से ५, ८०)।

आवट्ट देखो **आवत्त**; (आचा; सुपा ६४; सूअ १, ३)।

आवट्टिआ स्त्री [दे] १ नवोढा, दुलहिन; २ परतन्त्र स्त्री; (दे १, ७७)।

आवड सक [आ+पत्] १ आना, आगमन करना। २ आ लगना। वकृ—**आवडंत**; (प्रासू १०६)।

आवडण न [आपतन] १ गिरना; (से ६, ४२)। २ आ लगना; (स ३८४)।

आवडिअ वि [आपतित] १ गिरा हुआ; (महा)। २ पास में आया हुआ; (से १४, ३)।

आवडिअ वि [दे] १ संगत, संबद्ध; (दे १, ७८; पाअ)। २ सार, मजबूत; (दे १, ७८)।

आवण पुं [आपण] १ हाट, दुकान; (गाया १, १; महा)। २ बाजार; (प्रामा)।

आवणिय पुं [आपणिक] सौदागर, व्यापारी; (पाम)।

आवण्ण वि [आपन्न] १ आपत्ति-युक्त। २ प्राप्त; (गा ४६७)। °**सत्ता** स्त्री [°सत्त्वा] गर्भिणी, गर्भवती स्त्री; (अभि १२४)।

आवत्त अक [आ+वृत्] १ परिभ्रमण करना। २ बदलना। ३ चक्राकार घूमना। ४ सक. पठित पाठ को याद करना। ५ घुमाना। आवत्तइ; (सूक्त ५१)। वकृ—**अत्तमाण, आवत्तमाण**; (हे १, २७१; कुमा)।

आवत्त पु [आवर्त्त] १ चक्राकार परिभ्रमण; (स्वप्न ५६)। २ मुहूर्त-विशेष; (सम ५१)। ३ महाविदेह क्षेत्रस्थ एक विजय (प्रदेश) का नाम; (ठा २, ३)। ४ एक खुर वाला पशु-विशेष; (पण्ह १, १)। ५ एक लोकपाल का नाम; (ठा ४, १)। ६ पर्वतविशेष; (ठा ६)। ७ मणि का एक लक्षण; (राय)। ८ ग्राम-विशेष; (आवम)। ६ शारीरिक चेष्टा-विशेष, कायिक व्यापार-विशेष; "दुवालसावत्ते कितिकम्मे" (सम २१)। °**कूड** न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष; (इक)। °**यंत** वकृ [°यमान] दक्षिण की तर्फ चक्राकार घुमने वाला; (भग ११, ११)।

आवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता; (पाअ)।

आवत्तण न [आवर्त्तन] चक्राकार भ्रमण; (हे २, ३०)। °**पेढ़िया** स्त्री [°पीठिका] पीठिका-विशेष; (राय)।

आवत्तय पुं [आवर्त्तक] देखो **आवत्त**। १० वि. चक्राकार भ्रमण करने वाला; (हे २, ३०)।

आवत्ता स्त्री [**आवर्त्ता**] महाविदेह-क्षेत्र के एक विजय (प्रदेश) का नाम ; (इक)।

आवत्ति स्त्री [**आपत्ति**] १ दोष-प्रसंग, " सव्वविमोक्खावत्ती " (विसे १६३४)। २ आपदा, कष्ट ; ३ उत्पत्ति ; (विसे ६६)।

आवन्न देखो **आवण्ण** ; (पउम ३४, ३० ; णाया १, २ ; स २५६ ; उवर १६०)।

आवय पु [**आवर्त्त**] देखो **आवत्त** ; "कितिकम्मं वारसावयं" (सम २१)।

आवय देखो **आवड** । वकृ—**आवयंत, आवयमाण** ; (पउम ३३, १३ ; णाया १, १ ; ८)।

आवया स्त्री [**आपगा**] नदी ; (पाअ ; स ६१२)।

आवया स्त्री [**आपद्**] आपदा, विपद्, दुःख; (पाअ, धण ४२);

" न गणंति पुव्वनेहं, न य नीइं नेय लोय-अववायं ।
नय भाविआवयाओ, पुरिसा महिलाण आयत्ता"
(सुर २, १८६)।

आवर सक [**आ+वृ**] आच्छादन करना, ढाँकना । **आवरिज्जइ** ; (भग ८, ३३)। कवकृ—**आवरिज्जमाण** ; (भग १५)। संकृ—**आवरित्ता** ; (ठा)।

आवरण न [**आवरण**] १ आच्छादन करने वाला, ढकने वाला, तिरोहित करने वाला ; (सम ७१ ; णाया १, ८)। २ वास्तु-विद्या ; (ठा ६)।

आवरणिज्ज वि [**आवरणीय**] १ आच्छादनीय। २ ढकने वाला, आच्छादन करने वाला ; (औप)।

आवरिय वि [**आवृत**] आच्छादित, तिरोहित ; "आवरिओ कम्मेहिं" (निचू १)।

आवरिसण न [**आवर्षण**] छिटकना, सिञ्चन ; (वृह १)।

आवरेइया स्त्री [**दे**] करिका, मद्य परोसने का पात्र-विशेष ; (दे १, ७१)।

आवलण न [**आवलन**] मोड़ना ; (पगह १, १)।

आवलि स्त्री [**आवलि**] १ पङ्क्ति; श्रेणी ; (महा)। २ पु. एक विद्यार्थी का नाम ; (पउम ५, ६५)।

आवलिआ स्त्री [**आवलिका**] १ पङ्क्ति, श्रेणी; (राय)। २ क्रम, परिपाटी; (सुज्ज १०)। ३ समय-विशेष, एक सूक्ष्म काल-परिमाण ; (भग ६, ७)। °**पविट्ठ** वि [°**प्रविष्ट**] श्रेणि से व्यवस्थित ; (भग)। °**वाहिर** वि [°**वाह्य**] विप्रकीर्ण, श्रेणि-वद्ध नहीं रहा हुआ ; (भग)।

आवली स्त्री [**आवली**] १ पङ्क्ति, श्रेणी ; (पाअ)। २ रावण की एक कन्या का नाम; (पउम ६, ११)।

आवस सक [**आ+वस्**] रहना, वास करना। आवसेज्जा ; (सूअ १, १२)। वकृ—"आगारं **आवसंता** वि " (सूअ १, ६)।

आवसह पुं [**आवसथ**] १ घर, आश्रय, स्थान ; (सूअ १, ४)। २ मठ, संन्यासिओं का स्थान; (पगह; हे २, १८७)।

आवसहिय पुं [**आवसथिक**] १ गृहस्थ, गृही ; (सूअ २, २)। २ संन्यासी ;(सूअ २, ७)।

आवसिय } वि [**आवश्यक**] १ अवश्य-कर्तव्य, जरूरी ; २
आवस्सग } न. सामायिकादि धर्मानुष्ठान, नित्य-कर्म ; (उव;
आवस्सय } दस १०; णंदि)। ३ जैन ग्रन्थ-विशेष, आवश्यक सूत्र ; (आवम)। °**णुओग** पुं [°**नुयोग**] आवश्यक-सूत्र की व्याख्या ; (विसे १)।

आवस्सय पुंन [**आपाश्रय**] १—३ ऊपर देखो; ४ आधार, आश्रय ; (विसे ८७४)।

आवस्सिया स्त्री [**आवश्यकी**] सामाचारी-विशेष, जैन साधु का अनुष्ठान-विशेष ; (उत्त २६)।

आवह सक [**आ+वह्**] धारण करना, वहन करना। "थेवोवि गिहिपसंगो जइणो सुद्धस्स पंकमावहइ" (उव)। "णो पूयणं तवसा आवहेज्जा" (सू १, ७)।

आवह वि [**आवह**] धारण करने वाला ; (आचा)।

आवा सक [**आ+पा**] १ पीना । २ भोग में लाना, उपभोग करना। हेकृ—"वंतं इच्छसि **आवेउं,** सेयं ते मरणं भवे" (दस २, ७)।

आवाग पुं [**आपाक**] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान ; (उप ६४८; विसे २४६ टी)।

आवाड पुं [**आपात**] भीलों की एक जाति, 'तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे वहवे आवाडा णामं चिलाया परिवसंति" (जं ३)।

आवाणय न [**आपाणक**] दुकान, "भिन्नाइं आवाणयाइं" (स ५३०)।

आवाय पुं [**आपात**] १ प्रारम्भ, शुरुआत ; (पाअ ; से ११, ७५)। २ प्रथम मेलन ; (ठा ४, १)। ३ तत्काल, तुरंत ; (श्रा २३)। ४ पतन, गिरना ; (श्रा २३)। ५ संवन्ध, संयोग ; (उव ; कस)।

आवाय पुं [**आवाप**] १ आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान; २ आलवाल; ३ प्रक्षेप, फेंकना; ४ शत्रु की चिन्ता ; ५ वोना, वपन ; (श्रा २३)।

आवाल } न [**दे**] जल के निकट का प्रदेश ; (दे
आवालय } २, ७०) ।

आवाव देखो **आवाय**=आवाप । °**कहा** स्त्री [°**कथा**] रसोई संबन्धी कथा, विकथा-विशेष ; (ठा ४, २) ।

आवास पुं [**आवास**] १ वास-स्थान ; (ठा ६; पाअ) । २ निवास, अवस्थान, रहना ; (पण्ह १, ४ ; औप) । ३ पक्षि-गृह, नीड; (वव १,१) । ४ पडाव, डेरा; (सुपा २५६, उप पृ १३०) । °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] रहने का पर्वत; (इक) ।

आवास } देखो **आवस्सय**=आवश्यक; (पि ३४८;
आवासग } ओघ ६३८, विसे ८५०) ।

आवासणिया स्त्री [**आवासनिका**] आवास-स्थान ; (स १२२) ।

आवासय न [**आवासक**] १ आवश्यक, जरूरी । २ नित्य-कर्तव्य धर्मानुष्ठान ; (हे १, ४३ ; विसे ८५८) । ३ पु. पक्षि-गृह, नीड़ ; (वव १, १) । ४ संस्काराधायक, वासक ; ५ आच्छादक ; (विसे ८७५) ।

आवासि वि [**आवासिन्**] रहने वाला, "एगंतनियावासी" (उव)

आवासिय वि [**आवासित**] संनिवेशित, पडाव डाला हुआ ; (सुपा ४५६ ; सुर २, १) ।

आवाह सक [**आ + वाहय्**] १ सांनिध्य के लिए देव या देवाधिष्ठित चीज को बुलाना । २ बुलाना । संकृ—**आवाहिवि** (अप); (भवि) ।

आवाह पुं [**आबाध**] पीडा, बाध ; (विपा १, ६) ।

आवाह पुं [**आवाह**] १ नव-परिणीत वधू को वर के घर लाना ; (पण्ह २, ४) । २ विवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव ; (जीव ३) ।

आवाहण न [**आवाहन**] आह्वान ; (विसे १८८३) ।

आवाहिय वि [**आवाहित**] १ बुलाया हुआ, आहूत; (भवि)। २ मदद के लिए बुलाया हुआ देव या देवाधिष्ठित वस्तु ; "एवं च भणतेणं तेणं आवाहियाइं सत्थाइं" (सुर ८, ४२) ।

आवि न [**दे**] १ प्रसव-पीडा ; २ वि. नित्य, शाश्वत, ३ दृष्ट, देखा हुआ ; (दे १, ७३) ।

आवि अ [**चापि**] समुच्चय-द्योतक अव्यय; (कप्प) ।

आवि अ [**आविस्**] प्रकटता-सूचक अव्यय ; (सुर १४, २११) ।

आविअ सक [**आ+पा**] पीना । "जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आविअइ रसं" (दस १, २) ।

आविअ वि [**आवृत**] आच्छादित ; (से ६, ६२) ।

आविअ पुं [**दे**] १ इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष; २ वि. मथित, आलोडित; (दे १, ७६) । ३ प्रोत; (दे १, ७६; पाअ; पड्) ।

आविअ वि [**आविच**] अविच-देशोत्पन्न ; (राय) ।

आविअज्झा स्त्री [**दे**] १ नवोढ़ा, दुलहिन ; २ परतन्त्रा, पराधीन स्त्री ; (दे १, ७७) ।

आविंध सक [**आ + व्यध्**] १ विंधना । २ पहनना । ३ मन्त्र से आधीन करना । आविंध; (आक ३८) । आविंधामो ; (पि ४८६) ; "पालंबं वा सुवगणसुत्तं वा आविंधेज्ज पिणिधेज्ज वा " (आचा २, १३, २०)। कर्म—आविज्झइ ; (उव) ।

आविंधण न [**आव्यधन**] १ पहनना ; २ मन्त्र से आविष्ट करना, मन्त्र से आधीन करना ; (पण्ह १, २ ; आक ३८) ।

आविग्ग वि [**आविग्न**] उद्विग्न, उदासीन ; (से ६, ८६ ; १३, ६३ ; दे ७, ६३) ।

आविट्ठ वि [**आविष्ट**] १ आवृत, व्याप्त; (सम ५१; सुपा १८७) । २ प्रविष्ट; (सूअ १, ३)। ३ अधिष्ठित, आश्रित ; (ठा ५; भास ३६) ।

आविद्ध वि [**आविद्ध**] परिहित, पहना हुआ ; (कप्प) ।

आविद्ध वि [**दे**] क्षिप्त, प्रेरित ; (दे १, ६३) ।

आविब्भाव पु [**आविर्भाव**] १ उत्पत्ति । २ प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति ; "आविब्भावतिरोभावमेत्तपरिणामिदव्वमेवायं" (विसे) ।

आविब्भूय वि [**आविर्भूत**] १ उत्पन्न ; २ प्रादुर्भूत ; (कप्प) । ३ अभिव्यक्त ; (सुर १४, २११) ।

आविल वि [**आविल**] १ मलिन, अ-स्वच्छ; (सम ५१) । २ आकुल, व्याप्त ; (सूअ १, १५) ।

आविलिअ वि [**दे**] कुपित, क्रुद्ध ; (पड्) ।

आविलुंपिअ वि [**आकाङ्क्षित**] अभिलषित , (दे १, ७२) ।

आविस अक [**आ + विश्**] १ संबद्ध होना, युक्त होना । २ सक. उपभोग करना, सेवना । "परदारमाविसामित्ति" (विसे ३२५६) ।

"जं जं समयं जीवो, आविसई जेण जेण भावेण।
सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं " (उव) ।

आविहव अक [**आविर्+भू**] १ प्रकट होना। २ उत्पन्न होना। आविहवइ ; (स ४८)।
आवीअ वि [**आपीत**] १ पीत ; २ शोषित ; (से १३, ३१)।
आवीइ वि [**आवीचि**] निरन्तर, अविच्छिन्न ;
" गब्भप्पभिइमावीइसलिलच्छेए सरं व सूसंतं।
अणुसमयं मरमाणे, जीयंति जणो कहं भणइ ? "
(सुपा ६५१)।
°**मरण** न [°**मरण**] मरण-विशेष ; (भग १३,७)।
आवीकम्म न [**आविष्कर्मन्**] १ उत्पत्ति ; २ अभिव्यक्ति ; (ठा ६; कप्प)।
आवीड सक [**आ+पीड्**] १ पीड़ना। २ दवाना। आवीडइ ; (सण)।
आवीण वि [**आपीन**] स्तन, थन ; (गउड)।
आवील देखो **आमेल**=आपीड ; (स ३१५)।
आवीलण न [**आपीडन**] समूह, निचय ; (गउड)।
आवुअ पुं [**आवुक**) नाटक की भाषा में पिता, बाप, (नाट)।
आवुण्ण वि [**आपूर्ण**] पूर्ण, भरपूर ; (दे २, १०२)।
आवुत्त पुं [**दे**] भगिनी-पति ; (अभि १८३)।
आवूर देखो **आपूर**=आ+पूरय्। वकृ—**आवूरंत**, (पउम ७६, ८)। कवकृ—**आवूरिज्जमाण** ; (स ३८२)।
आवूरण न [**आपूरण**] पूर्ति ; (स ४३६)।
आवूरिय देखो **आऊरिय** ; (पउम ६४, ५२ ; स ७७)।
आवेअ सक [**आ+वेदय्**] १ विनति करना, निवेदन करना। २ वतलाना। **आवेएइ** ; (महा)।
आवेअ पुं [**आवेग**] कष्ट, दुःख ; (से १०, ५७; ११, ७२)।
आवेउं देखो **आवा**।
आवेड्डिय वि [**आवेष्टित**] वेष्टित, घिरा हुआ ; (गा २८)।
आवेड } देखो **आमेल** ; (हे २, २३४, कुमा)।
आवेडय }
आवेढ पुं [**आवेष्ट**] १ वेष्टन। २ मण्डलाकार करना ; (से ७, २७)।
आवेढण न [**आवेष्टन**] ऊपर देखो; (गउड; पि ३०४)।
आवेढिय वि [**आवेष्टित**] १ चारों ओर से वेष्टित ; (भग १६, ६ ; उप पृ ३२७)। २ एक वार वेष्टित ; (ठा)।

आवेयण न [**आवेदन**] निवेदन, मनो-भाव का प्रकाशकरण ; (गउड ; दे ७, ८७)।
आवेवअ वि [**दे**] १ विशेष आसक्त ; २ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ; (षड्)।
आवेस सक [**आ+वेशय्**] भूताविष्ट करना। संकृ—**आवेसिऊण** ; (स ६४)।
आवेस पुं [**आवेश**] १ अभिनिवेश ; २ जुस्सा ; ३ भूत-ग्रह ; ४ प्रवेश ; (नाट)।
आवेसण न [**आवेशन**] शून्य गृह ; " आवेसणसभापवासु पणियसालासु एगया वासो " (आचा)।
आस अक [**आस्**] बैठना। वकृ—"अजयं **आसमाणो** य पाणभूयाइं हिंसइ" (दस ४)। हेकृ—**आसित्तए**, **आसइत्तए आसइत्तु** ; (पि ५७८; कस; दस ६,५४)।
आस पुं [**अश्व**] १ अश्व, घोड़ा ; (णाया १, १७)। २ देव-विशेष, अश्विनी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (जं)। ३ अश्विनी नक्षत्र ; (चंद २०)। ४ मन, चित्त ; (पण्ण २)। °**कण्ण**, °**कन्न** पुं [°**कर्ण**] १ एक अन्तर्द्वीप ; २ उसका निवासी ; (ठा ४, २)। °**ग्गीव** पुं [°**ग्रीव**] एक प्रसिद्ध राजा, पहला प्रतिवासुदेव ; (पउम ५, १५६)। °**तर** पुं [°**तर**] खच्चर ; (श्रा १८)। °**त्थाम** पुं [°**स्थामन्**] द्रोणाचार्य का प्रख्यात पुत्र; (कुमा)। °**द्धअ** पुं [°**ध्वज**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५,४२)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (पउम ५, ४२)। °**धर** वि [°**धर**] अश्वों को धारण करने वाला ; (औप)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (इक)। °**पुरा**, °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] नगरी-विशेष, (कस; ठा २, ३)। °**मक्खिया** स्त्री [°**मक्षिका**] चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष, (ओघ ३६७)। °**मद्दग**, °**मद्दय** पुं [°**मर्दक**] अश्व का मर्दन करने वाला ; (णाया १, १७)। °**मित्त** पु [°**मित्र**] एक जैनाभास दार्शनिक, जो महागिरि के शिष्य कौण्डिन्य का शिष्य था और जिसने सामुच्छेदिक पंथ चलाया था ; (ठा ७)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ उसका निवासी; (ठा ४, २)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] यज्ञ-विशेष ; (पउम ११, ४२)। °**रह** पुं [°**रथ**] घोड़ा-गाड़ी ; (णाया १, १)। °**वार** पुं [°**वार**] घुड़-सवार, घुड़-चढ़ैया; (सुपा २१४)। °**वाहणिया** स्त्री [°**वाहनिका**] घोड़े की सवारी, घोड़े पर सवार होकर फिरना ; (विपा १, ६)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ भगवान् पार्श्वनाथ के पिता ; (कप्प)। २

(d) 2x − 3y = 0

पांचवें चक्रवर्ती का पिता ; (सम १५२)। °रोह पुं [°रोह] घुड-सवार, घुड़-चढैया ; (से १२, ६६)।

आस पुंस्त्री [**आश**] भोजन ; "सामासाए पायरासाए" (सूअ २, १)।

आस पुं [**आस**] क्षेपण, फेंकना ; (विसे २७६५)।

आस न [**आस्य**] मुख, मुँह ; (गाया १, ८)।

आसंक सक [**आ+शङ्क्**] १ संदेह करना, संशय करना। २ अक. भय-भीत होना। आसंकइ ; (स ३०)। वकृ— **आसंकंत, आसंकमाण**, (नाट ; माल ८३)।

आसंका स्त्री [**आशङ्का**] शङ्का, भय, वहम, संशय ; (सुर ६, १२१ ; महा; नाट)।

आसंकि वि [**आशङ्किन्**] आशङ्का करने वाला ; (गा २०५)।

आसंकिय वि [**आशङ्कित**] १ संदिग्ध, संशयित; २ संभावित; (महा)।

आसंकिर वि [**आशङ्कितृ**] आशंका करने वाला, वहमी ; (सुर १४, १७ ; गा २०६)।

आसंग पुं [**दे**] वास-गृह, शय्या-गृह ; (दे १, ६६)।

आसंग पुं [**आसङ्ग**] १ आसक्ति, अभिष्वंग ; २ संबन्ध ; (गउड)। ३ रोग ; (आचा)।

आसंगि वि [**आसङ्गिन्**] १ आसक्त; २ संबन्धी, संयोगी ; (गउड)। स्त्री—°**णी** ; (गउड)।

आसंघ सक [**सं+भावय्**] १ संभावना करना। २ अध्यवसाय करना। ३ स्थिर करना, निश्चय करना। **आसंघइ** ; (से १५, ६०)। वकृ—**आसंघंत** ; (से १५, ६२)।

आसंघ पु [**दे**] १ श्रद्धा, विश्वास ; (सुपा ५२६; षड्)। २ अध्यवसाय, परिणाम ; (से १, १५)। ३ आशंसा, इच्छा, चाह ; (गउड)।

आसंघा स्त्री [**दे**] १ इच्छा, वाञ्छा ; (दे १, ६३)। २ आसक्ति ; (मै २)।

आसंघिअ वि [**दे**] १ अध्यवसित ; २ अवधारित ; (से १०, ६६)। ३ संभावित ; (कुमा ; स १३७)।

आसंजिअ वि [**आसक्त**] पीछे लगा हुआ ; (सुर ८, ३० ; उत्तर ६१)।

आसंदय न [**आसन्दक**] आसन-विशेष ; (आचा; महा)।

आसंदाण न [**आसन्दान**] अवष्टम्भन, अवरोध, रुकावट ; (गउड)।

आसंदिआ स्त्री [**आसन्दिका**] छोटा मञ्च ; (सूअ १, ४, २, १५ ; गा ६६७)।

आसंदी स्त्री [**आसन्दी**] आसन-विशेष, मञ्च ; (सूअ १, ६ ; दस ६, ५४)

आसंधी स्त्री [**अश्वगन्धी**] वनस्पति-विशेष ; (सुपा ३२४)।

आसंबर वि [**आशाम्बर**] १ दिगम्बर, नग्न ; (प्रामा)। २ जैन का एक मुख्य भेद ; ३ उसका अनुयायी ; (सं २)।

आसंसण न [**आशंसन**] इच्छा अभिलाषा; (भास ६५)।

आसंसा स्त्री [**आशंसा**] अभिलाषा, इच्छा; (आचा)।

आसंसि वि [**आशंसिन्**] अभिलाषी, इच्छा करने वाला; (आचा)।

आसंसिअ वि [**आशंसित**] अभिलषित ; (गा ७६)।

आसक्खय पुं [**दे**] प्रशस्त पक्षि-विशेष, श्रीवद ; (दे १, ६७)।

आसग देखो **आस**=अश्व ; (गाया १, १२)।

आसगलिअ वि [**दे**] आक्रान्त ; "आसगलिओ तिव्वकम्म-परिणईए" (स ४०४)।

आसज्ज अ [**आसाद्य**] प्राप्त कर के ; (विसे ३०)।

आसड पु [**आसड**] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार, (विवे १४३)।

आसण न [**आसन**] १ जिस पर बैठा जाता है वह चौकी आदि ; (आव ४)। २ स्थान, जगह ; (उत्त १, १)। ३ शय्या ; (आचा)। ४ बैठना, उपवेशन ; (ठा ६)।

आसणिय वि [**आसनित**] आसन पर बैठाया हुआ ; (स २६२)।

आसण्ण न [**आसन्न**] १ समीप, पास। २ वि समीपस्थ; (गउड)। देखो **आसन्न**।

आसत्त वि [**आसक्त**] लीन, तत्पर, (महा, प्रासू ६४)।

आसत्ति स्त्री [**आसक्ति**] अभिष्वङ्ग, तल्लीनता; (कुमा)।

आसत्थ पुं [**अश्वत्थ**] पीपल का पेड ; (पउम ५३, ७६)।

आसत्थ वि [**आश्वस्त**] १ आश्वासन-प्राप्त, स्वस्थ; २ विश्रान्त; (गाया १, १, सम १५२; पउम ७, ३८ ; दे ७, २८)।

आसन्न देखो **आसण्ण** ; (कुमा ; गउड)। °**वत्ति** वि [°**वर्त्तिन्**] नजदीक में रहने वाला ; (सुपा ३५१)।

आसम पु [**आश्रम**] तापस आदि का निवास स्थान, तीर्थ-स्थान ; (पण्ह १, ३ ; औप)। २ ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य,

वानप्रस्थ, और भैक्ष्य ये चार प्रकार की अवस्था ; (पंचा १०) ।

आसमि वि [**आश्रमिन्**] आश्रम में रहने वाला, ऋषि, मुनि वगैरः ; (पंचव १) ।

आसय अक [**आस्**] बैठना । आसयंति ; (जीव ३) ।

आसय सक [**आ+श्री**] १ आश्रय करना, अवलम्बन करना । २ ग्रहण करना । आसयइ ; (कप्प) । वकृ— **आसयंत** ; (विसे ३२२) ।

आसय पुं [**आशक**] खाने वाला ; (आचा) ।

आसय पुं [**आश्रय**] आधार, अवलम्बन ; (उप ७१४, सुर १३, ३६) ।

आसय पुं [**आशय**] १ मन, चित , हृदय ; (सुर १३, ३६ ; पाअ) । २ अभिप्राय ; (सूअ १, १५) ।

आसय न [**दे**] निकट, समीप ; (दे १, ६५) ।

आसरिअ वि [**दे**] संमुख-आगत, सामने आया हुआ ; (दे १, ६६) ।

आसव अक [**आ+स्रु**] धीरे २ झरना, टपकना । वकृ— **आसवमाण** ; (आचा) ।

आसव पुं [**आसव**] मद्य, दारू ; (उप ७२८ टी) ।

आसव पुं [**आश्रव**] १ कर्मों का प्रवेश-द्वार, जिससे कर्म-बन्ध होता है वह हिंसा आदि; (ठा २, १) । २ वि. श्रोता, गुरु-वचन को सुनने वाला ; (उत्त १) । °**सक्कि** वि [°**सक्तिन्**] हिंसादि में आसक्त ; (आचा) ।

आसवण न [**दे**] वास-गृह, शय्या-घर , (दे १, ६६) ।

आसस अक [**आ+श्वस्**] आश्वासन लेना, विश्राम लेना । आससइ, आससमु ; (पि ८८; ४६६) ।

आससण न [**आशसन**] विनाश, हिंसा; (पण्ह १, ३) ।

आससा स्त्री [**आशंसा**] अभिलाषा ; "जेसिं तु परिमाणं, तं दुट्ठं आससा होइ" (विसे २५१६) ।

आससिय वि [**आश्वस्त**] आश्वासन-प्राप्त , (स ३७८) ।

आसा स्त्री [**आशा**] १ आशा, उम्मीद ; (औप; से १, २६ ; सुर ३, १७७) । २ दिशा; (उप ६४८ टी) । ३ उत्तर रुचक पर बसने वाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष ; (ठा ८) ।

आसाअ सक [**आ+स्वाद्**] स्वाद लेना, चखना, खाना । आसायंति ; (भग) । वकृ—**आसाअअंत, आसाएंत, आसायमाण** ; (नाट; से ३, ४५ ; गाया १, १) ।

आसाअ सक [**आ+सादय्**] प्राप्त करना । वकृ— **आसाएंत** ; (से ३, ४५) ।

आसाअ सक [**आ+शातय्**] अवज्ञा करना, अपमान करना । आसाएज्जा ; (महानि ४) । वकृ—**आसायंत, आसाएमाण** ; (श्रा ६ ; ठा ४) ।

आसाअ पुं [**आस्वाद**] १ स्वाद, रस ; (गा ५६३ ; से ६, ६८ ; उप ७६८ टी) । २ तृप्ति ; (से १, २६) ।

आसाअ पुं [**आसाद**] प्राप्ति ; (सें ६, ६८) ।

आसाइअ वि [**आशातित**] १ अवज्ञात, तिरस्कृत ; (पुप्फ ४५४) । २ न. अवज्ञा, तिरस्कार; (विवे ६२) ।

आसाइअ वि [**आस्वादित**] चखा हुआ, थोडा खाया हुआ ; (से ५, ४६) ।

आसाइअ वि [**आसादित**] प्राप्त, लब्ध ; (हेका ३० ; भवि) ।

आसाढ पुं [**आषाढ**] १ आषाढ़ मास , (सम ३५) । २ एक निह्नव, जो अव्यक्तिक मत का उत्पादक था ; (ठा ७) । °**भूइ** पु [°**भूति**] एक प्रसिद्ध जैन मुनि ; (कुम्मा २६) ।

आसाढा स्त्री [**आषाढा**] नक्षत्र-विशेष ; (ठा २) ।

आसाढी स्त्री [**आषाढी**] आषाढ़ मास की पूर्णिमा ; (सुज्ज) ।

आसादेत्तु वि [**आस्वादयितृ**] आस्वादन करने वाला ; (ठा ७) ।

आसामर पुं [**आशामर**] सातवें वासुदेव और बलदेव के पूर्वभवीय धर्मगुरु का नाम ; (सम १५३) ।

आसायण न [**आस्वादन**] स्वाद लेना, चखना ; (पउम २२, २७ ; गाया १, ६ ; सुपा १०७) ।

आसायण न [**आशातन**] १ नीचे देखो; (विवे ६६) । २ अनन्तानुबन्धि कषाय का वेदन ; (विसे) ।

आसायणा स्त्री [**आशातना**] विपरीत वर्तन, अपमान, तिरस्कार ; (पडि) ।

आसार पुं [**आसार**] वेग से पानी का बरसना, (से १, २० ; सुपा ६०६) ।

आसालिय पुंस्त्री [**आशालिक**] १ सर्प की एक जाति , (पण्ह १, १) । २ स्त्री. विद्या-विशेष ; (पउम १२, ६४ ; ५२, ६) ।

आसावि वि [**आस्राविन्**] झरने वाला, सच्छिद्र ; (सूअ, १, ११) ।

आसास सक [आ+शास्] आशा करना, उम्मीद रखना। आसासदि ; (वेणी ३०)।

आसास अक [आ+श्वासय्] आश्वासन देना, सान्त्वन करना। आसासइ ; (वज्जा १६)। वकृ—**आसासंत, आसासिंत** ; (से ११, ८७ ; श्रा १२)।

आसास पुं [आश्वास] १ आश्वासन, सान्त्वन ; (ओघ ७३; सुपा ८३; उप ६६२)। २ विश्राम ; (ठा ४, ३)। ३ द्वीप-विशेष ; (आचा)।

आसासअ पुं [आश्वासक] विश्राम-स्थान, ग्रन्थ का अंश, सर्ग, परिच्छेद, अध्याय; (से २, ४६)। २ वि. आश्वासन देने वाला ; "नाणं आसासयं सुमित्तुव्व" (पुप्फ ३८)।

आसासग पुं [आशासक] वृक्ष-नामक वृक्ष ; (औप)।

आसासण न [आश्वासन] १ सान्त्वन, दिलासा ; (सुर ६, ११० ; १२, १५ ; उप पृ ५७)। २ ग्रहो के देव-विशेष ; (ठा २, ३)।

आसासिअ वि [आश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह ; (से ११, १३६ , सुर ४, २८)।

आसि सक [आ + श्रि] आश्रय करना । सकृ—**आसिज्ज** ; (आरा ६६)।

आसि देखो **अस**=अस् ।

आसि वि [आशिन्] खाने वाला, भोजक ; (सट्ठि १२)।

आसिअ वि [आश्विक] अश्व का शिक्षक; "दुट्ठेवि य जो आसे दमेइ तं आसियं विंति" (वव ४)।

आसिअ वि [आशित] खिलाया हुआ, भोजित ; (से ८, ६३)।

आसिअ वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त ; (कप्प ; सुर ३, १७ ; से ६, ६५ ; विसे ७५६)।

आसिअ वि [आसित] १ उपविष्ट, बैठा हुआ ; (से ८, ६३)। २ रहा हुआ, स्थित ; (पउम ३२, ६६)।

आसिअ देखो **आसित्त** ; (गाया १, १ ; कप्प ; औप)।

आसिअअ वि [दे] लोहे का, लोह-निर्मित ; (दे १, ६७)।

आसिआ स्त्री [आसिका] बैठना, उपवेशन ; (से ८, ६३)।

आसिआ देखो **आसी**=आशिष् ; (षड्)।

आसिण वि [आशिन्] खाने वाला, भोक्ता ; "मंसासिणस्स" (पउम २६, ३७)।

आसिण पुं [आश्विन] आश्विन मास ; (पाअ)।

आसित्त वि [आसिक्त] १ थोड़ा सिक्त ; (भग ६, ३३)। २ सिक्त, सींचा हुआ ; (आवम)। ३ पु. नपुंसक का एक भेद ; (पुप्फ १२८)।

आसिलिट्ठ वि [आश्लिष्ट] आलिंगित ; (नाट)।

आसिलिस सक [आ + श्लिष्] आलिंगन करना । हेकृ—**आलेट्ठुअं, आलेट्ठुं** ; (हे २, १६४)।

आसिसा देखो **आसी**=आशिष् ; (महा ; अभि १३३)।

आसी देखो **अस्**=अस् ।

आसी स्त्री [आशी] दाढा ; (विसे)। °**विस** पु [°विष] १ जहरिला साँप ; "आसी दाढा तग्गयविसासीविसा मुणेयव्वा" (जीव १ टी ; प्रासू १२०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (ठा २, ३)। ३ निग्रह और अनुग्रह करने में समर्थ, लब्धि-विशेष को प्राप्त ; (भग ८, १)।

आसी स्त्री [आशिष्] आशीर्वाद ; (सुर १, १३८)। °**वयण** न [°वचन] आशीर्वाद ; (सुपा ४६०)। °**वाय** पुं [°वाद] आशीर्वाद ; (सुर १२, ४३ ; सुपा १७४)।

आसीण वि [आसीन] बैठा हुआ ; "नमिऊण आसीणा तओ" (वसु)।

आसीवअ पुं [दे] दरजी, कपड़ा सीने वाला; (दे १, ६६)।

आसीसा देखो **आसी**= आशिष् ; (षड्)।

आसु } अ [आशु] शीघ्र, तुरंत, जल्दी ; (सार्ध १८; **आसुं** } महा; काल)। °**क्कार** पुं [°कार] १ हिंसा, मारना ; २ मरने का कारण, विसूचिका वगैरः ; (आव)। ३ शीघ्र उपस्थित ; "आसुक्कारे मरणे, अच्छिन्नाए य जीवियासाए" (आउ ६)। °**पण्ण** वि [°प्रज्ञ] १ शीघ्र-बुद्धि ; २ दिव्य-ज्ञानी, केवल-ज्ञानी ; (सुअ १, ६ ; १४)।

आसुर वि [आसुर] असुर-संबन्धी ; (ठा ४, ४ ; आउ ३६)।

आसुरिय पुं [आसुरिक] १ असुर, असुर रूप से उत्पन्न ; (राज)। २ वि. असुर-संबन्धी ; (सुअ २, २, २७)।

आसुरुत्त वि [आशुरुप्त] १ शीघ्र-क्रुद्ध ; २ अति कुपित (गाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आसुरोक्त] अति-कुपित; (गाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आशुरुष्ट] अति-कुपित ; (विपा १, ६)।

आसूणि न [आशूनि] १ बलिष्ठ बनाने वाली खुराक ; २ रसायण-क्रिया , (सुअ १, ६)।

आसूणिय वि [आशूनित] थोड़ा स्थूल किया हुआ ; (पण्ह १, ३)।

आसेअणय वि [**आसेचनक**] जिसको देखने से मन को तृप्ति न होती हो वह ; (दे १, ७२) ।
आसेव सक [**आ+सेव्**] १ सेवना । २ पालना । ३ आचरना । आसेवए ; (आप ६७) ।
आसेवण न [**आसेवन**] १ परिपालन, संरक्षण ; (सुपा ४३८) । २ आचरण ; (स २७१) । ३ मैथुन, रति-संभोग ; (दसचू १ ; पव १७०) ।
आसेवणया } स्त्री [**आसेवना**] १ परिपालन ; (सूअ १,
आसेवणा } १४) । २ विपरीत आचरण ; (पव) । ३ अभ्यास ; (आचू) । ४ शिक्षा का एक भेद ; (धर्म ३) ।
आसेवा स्त्री [**आसेवा**] ऊपर देखो ; (सुपा १०) ।
आसेविय वि [**आसेवित**] १ परिपालित । २ अभ्यस्त ; (आचा) । ३ आचरित, अनुष्ठित ; (स ११८) ।
आसोअ पुं [**अश्वयुक्**] आश्विन मास ; (रयण ३६) ।
आसोअ वि [**आशोक**] अशोक वृक्ष संबन्धी ; (गउड) ।
आसोइया स्त्री [**दे.आसोतिका**] ओषधि-विशेष, "आसोइयाइमीसं चोलं घुसिणं कुसुंभसंमीसं" (सुपा ३६७) ।
आसोई स्त्री [**आश्वयुजी**] आश्विन पूर्णिमा , (इक) ।
आसोकंता स्त्री [**आशोकान्ता**] मध्यम ग्राम की एक मूर्छना ; (ठा ७)
आसोत्थ पुं [**अश्वत्थ**] पीपल का पेड , (पण्ण १, उप २३६) ।
आह सक [**ब्रू**] कहना । भूका—आहंसु, आहु, (...) ।
आह सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, इच्छा करना । आहइ ; (हे ४, १६२ ; षड्) । वकृ—आहंत , (कुमा) ।
आहंतुं देखो **आहण** ।
आहच्च न [**दे**] १ अत्यर्थ, बहुत, अतिशय ; (दे १, ६२) । २ अ. शीघ्र, जल्दी ; (आचा) । ३ कदाचित्, कभी ; (भग ६, १०) । ४ उपस्थित होकर ; (आचा) । ५ व्यवस्था कर ; (सूअ २, १) । ६ विभक्त कर , (आचा) । ७ छीन कर ; (दसा) ।
आहच्चा स्त्री [**आहत्या**] प्रहार, आघात , (भग १५) ।
आहट्टु स्त्री [**दे**] प्रहेलिका, पहेलियाँ ; " तेसु न विम्हयइ सयं आहट्टुकुहेडएहिं व " (पव ७३) ।
आहट्टु देखो **आहर=आ+हृ** ।
आहड [**आहृत**] १ छीन लिया हुआ, २ चोरी किया हुआ, (सुपा ६४३)। ३ सामने लाया हुआ, उपस्थापित; (स १८८)।
आहड न [**दे**] सीत्कार, सुरत-शब्द ; (षड्) ।
आहण सक [**आ+हन्**] आघात करना, मारना । आहणामि ; (पि ४६६) । संकृ—**आहणिअ, आहणिऊण, आहणित्ता**; (पि ५६१; ५८५; ५८२) । हेकृ—**आहंतुं**; (पि ५७६) ।
आहणण न [**आहनन**] आघात ; (उप ३६६) ।
आहणाविय वि [**आघातित**] आहत कराया हुआ; (स ५२७) ।
आहत्तहीय न [**याथातथ्य**] १ यथावस्थितपन, वास्तविकता ; २ तथ्य-मार्ग—सम्यग्ज्ञान आदि; ३ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का तेरहवाँ अध्ययन ; (सूअ १, १३ ; पि ३३५) ।
आहम्म सक [**आ+हम्म्**] आना, आगमन करना । आहम्मइ ; (हे ४, १६२) ।
आहम्मिय वि [**अधार्मिक**] अधर्मी, पापी ; (सम ५१) ।
आहय वि [**आहत**] आघात-प्राप्त, प्रेरित ; (कप्प) ।
आहय वि [**आहृत**] १ आकृष्ट, खींचा हुआ, २ छीना हुआ, (उप २११ टी) ।
आहर सक [**आ+हृ**] १ छीनना, खींच लेना । २ चोरी करना । ३ खाना, भोजन करना । आहरइ; (पि १७३) । कवकृ—**आहरिज्जमाण** , (ठा ३) । संकृ—**आहट्टु** ; (पि २८६) । हेकृ—**आहरित्तए**, (तंदु) ।
आहरण पुन [**आहरण**] १ उदाहरण, दृष्टान्त ; (ओघ ५३६; उप २६३; ६५१) । २ आह्वान, बुलाना ; (सुपा ३१७) । ३ ग्रहण, स्वीकार ; ४ व्यवस्थापन ; (आचा) । ५ आनयन, लाना ; (सूअ २, २) ।
आहरण पुंन [**आभरण**] भूषण, अलंकार ; " देहे आहरणा बहू " (श्रा १२; कप्पू) ।
आहरणा स्त्री [**दे**] खर्राट, नाक का खरखर शब्द ; (आव २) ।
आहरिसिय वि [**आधर्षित**] तिरस्कृत, भर्त्सित ; "आहरिसिओ दूओ संभंतेण नियत्तिओ" (आवम) ।
आहल्ल (अप) अक [**आ+चल्**] हिलना, चलना । " नवमइ दंतपंती आहल्लइ, खलइ जीहा" (भवि) ।
आहल्ला स्त्री [**आहल्या**] विद्याधर-राज की एक कन्या ; (पउम १३, ३५) ।
आहव पुं [**आहव**] युद्ध, लड़ाई ; (पाअ ; सुपा २८८ ; आरा ४१) ।

आहवण } न [**आह्वान**] १ बुलाना ; २ ललकारना ;
आहव्वण } (आ१२; सुपा ६०; पउम ६१, ३०; स ६४)।

आहव्वणी स्त्री [**आह्वानी**] विद्या-विशेष ; (सूत्र २, २)।

आहा सक [**आ+ख्या**] कहना। कर्म—आहिज्जइ ; (पि ५४५) ; आहिज्जंति ; (कप्प)।

आहा सक [**आ+धा**] स्थापन करना। कर्म—आहिज्जइ ; (सूत्र २, २)। हेक्ट—**आहेउं** ; (सूत्र १, ६)। संकृ—**आहाय** ; (उत ५)।

आहा स्त्री [**आभा**] कान्ति, तेज ; (कप्पू)।

आहा स्त्री [**आधा**] १ आश्रय, आधार ; (पिंड)। २ साधु के निमित्त आहार के लिए मनः-प्रणिधान ; (पिंड)। °**कड** वि [**कृत**) आधा-कर्म-दोष से युक्त ; (स १८८)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ साधु के लिए आहार पकाना ; २ साधु के निमित्त पकाया हुआ भोजन, जो जैन साधुओं के लिए निषिद्ध है (पण्ह २, ३ ; ठा ३, ४)। °**कम्मिय** वि [°**कर्मिक**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (अनु)।

आहाण न [**आधान**] १ स्थापन ; २ स्थान, आश्रय ; "सव्वगुणाहाण" (आव ४ ; उवर २६)।

आहाण } न [**आख्यान** °**क**] १ उक्ति, वचन ; २
आहाणय } किंवदन्ती, कहावत, लोकोक्ति ; (सुर २, ६६ ; उप ७२८ टी)।

आहार सक [**आ+हारय्**] खाना, भोजन करना, भक्षण करना। आहारइ, आहारेंति ; (भग)। वकृ—**आहारेमाण** ; (कप्प)। भकृ—**आहारिज्जस्समाण**, (भग)। हेकृ—**आहारित्तए, आहारेत्तए** ; (कप्प)। कृ—**आहारेयव्व** ; (ठा ३)।

आहार पुं [**आहार**] १ खुराक, भोजन ; (स्वप्न ६० ; प्रासू १०४)। २ खाना, भक्षण ; (पव)। ३ न. देखो **आहारग** ; (पउम १०२, ६८)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] भुक्त आहार को खल और रस के रूप में बदलने की शक्ति ; (पण्ण १)। °**पोसह** पुं [°**पोषध**] व्रत-विशेष, जिसमें आहार का सर्वथा या आंशिक त्याग किया जाता है ; (आव ६)। °**सण्णा** स्त्री [°**संज्ञा**] आहार करने की इच्छा ; (ठा ४)।

आहार पु [**आधार**] १ आश्रय, अधिकरण ; (सुपा १२८; मंथा १०३)। २ आकाश ; (भग २, २)। ३ अवधारण, याद रखना ; (पुप्फ ३५६)।

आहारग न [**आहारक**] १ शरीर-विशेष, जिसको चौदह-पूर्वी, केवलज्ञानी के पास जाने के लिए बनाता है; (ठा २, २)। २ वि. भोजन करने वाला ; (ठा २, २)। ३ आहारक-शरीर वाला ; (विसे ३७५)। ४ आहारक शरीर उत्पन्न करने का जिसे सामर्थ्य हो वह ; (कप्प)। °**जुगल** न [°**युगल**] आहारक शरीर और उसके अंगोपाङ्ग ; (कम्म २, १७ ; २४)। °**णाम** न [°**नामन्**] आहारक शरीर का हेतु-भूत कर्म ; (कम्म १, ३३)। °**दुग** न [°**द्विक**] देखो °**जुगल** ; (कम्म २, ३ ; ८ ; १७)।

आहारण वि [**आधारण**] १ धारण करने वाला ; २ आधार-भूत ; (से ६, ५०)।

आहारण वि [**आहारण**] आकर्षक ; (से ६, ५०)।

आहारय देखो **आहारग** ; (ठा ६ ; भग ; पण्ण २८ ; ठा ५, १ ; कर्म १, ३७)।

आहाराइणिया स्त्री [**याथारात्निकता**] यथा-ज्येष्ठ ; ज्येष्ठानुक्रम ; (कस)।

आहारिम वि [**आहार्य**] आहार के योग्य, खाने लायक ; (निचू ११)।

आहारिय वि [**आहारित**] १ जिसने आहार किया हो वह ; "तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स" (णाया १, १६)। २ भक्षित, भुक्त ; (भग)।

आहावणा स्त्री [**आभावना**] अपरिगणना, गणना का अभाव ; (राज)।

आहाविर वि [**आधावितृ**] दौड़ने वाला ; (सण)।

आहास देखो **आभास=आ+भाष्**। संकृ—**आहासिवि** (अप) ; (भवि)।

आहाह अ [**आहाह**] आश्चर्य-द्योतक अव्यय, (हे २, २१७)।

आहि पुंस्त्री [**आधि**] मन की पीड़ा ; (धम्म १२ टी)।

आहिआइ स्त्री [**अभिजाति**] कुलीनता, खानदानी ; (से १, ११)।

आहिआई स्त्री [**आभिजाती**] कुलीनता ; (गा २८५)।

आहिंड सक [**आ+हिण्ड्**] १ गमन करना, जाना। २ परिश्रम करना। ३ घूमना, परिभ्रमण करना। वकृ—**आहिंडंत, आहिंडेमाण** ; (उप २६४ टी ; णाया १, १)। संकृ—**आहिंडिय** ; (महा ; स १६३)।

आहिंडग } वि [आहिण्डक] चलने वाला, परिभ्रमण करने
आहिंडय } वाला ; (ओघ ११५ ; ११८ ; औप) ।
आहिक्क न [आधिक्य] अधिकता ; (विसे २०८७) ।
आहिजाइ देखो अहिआइ ; (महा) ।
आहिजाई देखो आहिआई ; (गा २४) ।
आहितुंडिअ पुं [आहितुण्डिक] गारुडिक, सपहरिया ; (मुद्रा ११६) ।
आहित्थ वि [दे] १ चलित, गत ; २ कुपित, क्रुद्ध ; (दे १, ७६ ; जीव ३ टी) । ३ आकुल, घबड़ाया हुआ ; (दे १, ७६ ; से १३, ८३ ; पाअ) "आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च" (जीव ३ टी) ।
आहिद्ध वि [दे] १ रुद्ध, रुका हुआ ; २ गलित, गला हुआ ; (षड्) ।
आहिपच्च न [आधिपत्य] मुखियापन, नेतृत्व ; (उप १०३१ टी) ।
आहिय वि [आहित] १ स्थापित, निवेशित ; (ठा ४) । २ संपूर्ण हितकर ; (सूअ) । ३ विरचित, निर्मित , (पाअ) । °ग्गि पुं [°ाग्नि] अग्नि-होत्रीय ब्राह्मण ; (पउम ३५, ५) ।
आहिय वि [आख्यात] कहा हुआ, प्रतिपादित, उक्त ; (पण्ण ३३ ; सुज्ज १६) ।
आहियार पुं [अधिकार] अधिकार, सत्ता, हक ; (पउम ५५, ८) ।
आहिवच्च देखो आहिपच्च ; (काल) ।
आहिसारिअ वि [अभिसारित] नायक-बुद्धि से गृहीत ; पति-बुद्धि से स्वीकृत ; (से १३, १७) ।
आहीर पुं [आहीर] १ देश-विशेष ; (कप्प) । २ शूद्र जाति-विशेष, अहीर ; (सूअ १, १) । ३ इस नामका एक राजा ; (पउम ६८, ६४) । स्त्री °री—अहीरन ; (सुपा ३६०) ।
आहु सक (आ+ह्वे) बुलाना । कृ—आहुणिज्ज ; (औप) ।
आहु [आ+हु] दान करना, त्याग करना । कृ—आहुणिज्ज ; (णाया १, १) ।
आहु अ [आहु] अथवा, या ; (नाट) ।
आहु पुं [दे] घूक, उल्लू ; (दे १, ६१) ।
आहु देखो आह=ब्रू ।
आहुइ वि [आहोतृ] दाता, त्यागी ; (णाया १, १) ।
आहुइ स्त्री [आहुति] १ हवन, होम ; (गउड) । २ होमने का पदार्थ, बलि ; (स १७) ।
आहुंदुर } पुं [दे] बालक, बच्चा ; (दे १, ६६) ।
आहुंदुरु }
आहुड न [दे] १ सीत्कार, सुरत-समय का शब्द ; २ पणित, विक्रय, बेचना ; (दे १, ७४) ।
आहुड अक [दे] गिरना । आहुडइ ; (दे १, ६६) ।
आहुडिअ वि [दे] निपतित, गिरा हुआ ; (दे १, ६६) ।
आहुण सक [आ+धु] कँपाना, हिलाना । कवकृ—आहुणिज्जमाण ; (णाया १, ६) ।
आहुणिय वि [आधुनिक] १ आज-कल का, नवीन । २ पुं ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३) ।
आहुत्त न [दे. अभिमुख] सम्मुख, सामने "कुमरोवि पहाविओ तयाहुत्त" (महा ; भवि) ।
आहूअ वि [आहूत] बुलाया हुआ ; (पाअ) ।
आहूअ पुं [आहूक] पिशाच-विशेष ; (इक) ।
आहूअ वि [आभूत] उत्पन्न, जात ; "आहूओ से गब्भो" (वसु) ।
आहेउं देखो आहा=आ+धा ।
आहेड } पुंन [आखेट, °क] शिकार, मृगया ; (सुपा
आहेडग } १६७ ; स ६७ ; दे) ।
आहेडय }
आहेण न [दे] विवाह के बाद वर के घर वधू के प्रवेश होने पर जो जिमाने का उत्सव किया जाता है वह ; (आचा २, १, ४) ।
आहेय वि [आधेय] १ स्थाप्य ; २ आश्रित ; (विसे ६२४) ।
आहेर देखो आहीर ; (विसे १४५४) ।
आहेवच्च न [आधिपत्य] नेतृत्व, मुखियापन ; (सम ८६) ।
आहेवण न [आक्षेपण] १ आक्षेप ; २ क्षोभ उत्पन्न करना ; (पण्ह १, २) ।
आहोअ देखो आभोग ; (से १, ४६ ; ६, ३ ; गा ८८ ; गउड) ।
आहोअ देखो आभोय=आ+भोजय् । संकृ—आहोइऊण ; (स ५५) ।
आहोइअ वि [आभोगित] ज्ञात, दृष्ट ; (स ४८५) ।

आहोइअ वि [**आभोगिक**] उपयोग-ही जिसका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रधान ; (कप्प) ।

आहोड सक [**ताडय्**] ताडन करना, पिटना। आहोडइ ; (हे ४, २७) ।

आहोरण पुं [**दे**] हस्तिपक, हाथी का महावत ; (पाअ ; स ३६६) ।

आहोहि } वि [**आधोवधिक**] अवधिज्ञानी का एक
आहोहिय } भेद, नियत क्षेत्र को अवधिज्ञान से देखने वाला, (भग ; सम ६६) ।

इअ **पाइअसद्दमहण्णवे** आयाराइसद्दसंकलणो बिइओ तरंगो समत्तो ।

इ

इ पुं [इ] १ प्राकृत वर्णमाला का तृतीय स्वर-वर्ण ; (प्रामा)। २—३ वाक्यालङ्कार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (कप्प ; हे २, ११७; षड्)।

इ देखो **इइ** ; (उवा)।

इ सक [इ] १ जाना, गमन करना। २ जानना । एइ, एंति ; (कुमा)। वकृ—**एंत** ; (कुमा)। संकृ—**इच्चा** ; (आचा)। हेकृ—**इत्तए** ; **एत्तए** ; (कप्प ; कस)।

इइ अ [**इति**] इन अर्थों का सूचक अव्यय; —१ समाप्ति; (आचा)। २ अवधि, हद ; (विसे)। ३ मान, परिमाण ; (पव ८४)। ४ निश्चय ; (निचू २ ; १५)। ५ हेतु, कारण ; (ठा ३)। ६ एवम्, इस तरह, इस प्रकार ; (उत्त २२)। देखो **इति**।

इओ अ [**इतस्**] १ इससे, इस कारण ; (पि १७४)। २ इस तरफ ; (सुपा ३६४)। ३ इस (लोक) में ; (विसे २६८२)।

इओअ अ [**इतश्च**] प्रसंगान्तर-सूचक अव्यय ; (श्रा २८)।

इंखिणिया स्त्री [दे. **इङ्खिनिका**] निन्दा, गर्हा ; (सूत्र १, २)।

इंखिणी स्त्री [दे. **इङ्खिनी**] ऊपर देखो ; (सूत्र १, २)।

इंगार } देखो **अंगार** ; (पि १०२ ; जी ६ ; प्राप्र)।
इंगाल } °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कोयला आदि उत्पन्न करने का और वेचने का व्यापार ; (पडि)। °**सगडिया** स्त्री [°**शकटिका**] अंगीठी, आग रखने का वर्तन ; (भग)।

इंगाल वि [**आङ्गार**] अङ्गार-संबन्धी ; (दस ५)।

इंगालग देखो **अंगारग** ; (ठा २, ३)।

इंगाली स्त्री [**दे**] ईख का टुकड़ा, गंडेरी ; (दे १, ७६ ; पाम)।

इंगाली स्त्री [**आङ्गारी**] देखो **इंगाल-कम्म** ; (श्रा २२)।

इंगिअ न [**इङ्गित**] इसारा, संकेत, अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा ; (पाम)। °**ज्ज**, °**ण्ण**, **ण्णु** वि [°**ज्ञ**] इसारे से समझने वाला ; (प्राप्र ; हे २, ८३ ; पि २७६)। °**मरण** न [°**मरण**] मरण-विशेष ; (पंचा)।

इंगिणी स्त्री [**इङ्गिनी**] मरण-विशेष, अनशन-क्रिया-विशेष; (सम ३३)।

इंगुअ न [**इङ्गुद**] इंगुदी वृक्ष का फल ; (कुमा ; पउम ४१, ६)।

इंगुई } स्त्री [**इङ्गुदी**] वृक्ष-विशेष, इसके फल तैलमय
इंगुदी } होते हैं, इसका दूसरा नाम व्रण-विरोपण भी है, क्योंकि इसके तैल से व्रण वहुत शीघ्र अच्छे होते है ; (आचा ; अभि ७३)।

इंघिअ वि [**दे**] घ्रात, सूंघा हुआ ; (दे १, ८०)।

°**इंणर** देखो **किण्णर** ; (से ८, ६१)।

इंत देखो **ए**=आ+इ।

इंद पुं [**इन्द्र**] १ देवताओं का राजा, देव-राज ; (ठा २)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक, जैसे 'णरिंद' (गउड) 'देविंद' (कप्प)। ३ परमेश्वर, ईश्वर ; (ठा ४)। ४ जीव, आत्मा ; "इंदो जीवो सव्वोवलद्धिभोगपरमेसरत्तणओ" (विसे २६६३)। ५ ऐश्वर्य-शाली ; (आवम)। ६ विद्याधरों का प्रसिद्ध राजा ; (पउम ६, २ ; ७, ८)। ७ पृथ्वीकाय का एक अधिष्ठायक देव; (ठा ५, १)। ८ ज्येष्ठा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)। ६ उन्नीसवें तीर्थंकर के एक स्वनाम-ख्यात गणधर ; (सम १५२)। १० सप्तमी तिथि ; (कप्प)। ११ मेघ, वर्षा ; "किं जयइ सव्वत्था दुब्भिक्खं अह भवे इंदो" (दसनि १०५)। १२ न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३७)। °**इ** पुं [°**जित्**] १ इस नामका राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश ; (पउम ५, २६२)। २ रावण के एक पुत्र का नाम ; (से १२, ५८)। °**ओव** देखो °**गोव** ; (पि १६८)। °**काइय** पुं [°**कायिक**] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष ; (पण्ण १)। °**कील** पुं [°**कील**] दरवाजा का एक अवयव ; (औप)। °**कुंभ** पुं [°**कुम्भ**] १ वड़ा कलश ; (राय)। २ उद्यान-विशेष ; (णाया १, ६)। °**केउ** पुं [°**केतु**] इन्द्र-ध्वज, इन्द्र-यष्टि ; (पण्ह १, ४ ; २, ४)। °**खील** देखो °**कील** ; (औप ; पि २०६)। °**गाइय** देखो °**काइय** ; (उत्त २६)। °**गाह** पुं [°**ग्रह**] इन्द्रावेश, किसी के शरीर में इन्द्र का अधिष्ठान, जो पागलपन का कारण होता है, ; "इंद-गाहा इवा खंदगाहा इवा" (भग ३, ७)। °**गोव**, °**गोवग**, °**गोवय** पुं [°**गोप**] वर्षा ऋतु में होने वाला रक्त वर्ण का क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में 'गोकुल

गाय' कहते है ; (उव ३२ ; सुर २, ८७, जी १७ ; पि १६८)। °ग्गह पुं [°ग्रह] ग्रह-विशेष ; (जीव ३)। °ग्गि पुं [°ाग्नि] १ विशाखा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (अणु)। २ महाग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °ग्गीव पु [°ग्रीव] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। °जसा स्त्री [°यशस्] काम्पिल्य नगर के ब्रह्मराज की एक पत्नी ; (उत्त १३)। °जाल न [°जाल] माया-कर्म, छल, कपट ; (स ४५४)। °जालि, °जालिअ वि [°जालिन्, °क] मायावी, बाजीगर ; (ठा ४ ; सुपा २०३)। °जुइण्ण पुं [°द्युतिज्ञ] स्वनाम-ख्यात इक्ष्वाकु वंश का एक राजा ; (पउम ५, ६)। °ज्झय पुं [°ध्वज] वडी ध्वजा ; (पि २९९)। °ज्झया स्त्री [°ध्वजा] इन्द्र ने भरतराज को दिखाई हुई अपनी दिव्य अङ्गुलि के उपलक्ष में राजा भरत ने उस अङ्गुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना, और उसके उपलक्षमें किया गया उत्सव ; (आचू २०)। °णील पुंन [°नील] नीलम, नील-मणि, रत्न-विशेष ; (गउड; पि १६०)। °तरु पुं [°तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् संभवनाथ को केवल-ज्ञान हुआ था ; (पउम २०, २८)। °त्त न [°त्व १ स्वर्ग का आधिपत्य, इन्द्र का असाधारण धर्म ; २ राजत्व ; ३ प्राधान्य; (सुपा २५३)। °दत्त पुं [°दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा ; (उप ९३६)। २ एक जैन मुनि ; (विपा २, ७)। °दिण्ण पुं [°दिन्न] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य ; (कप्प)। °धणु न [°धनुष्] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष का आकार दीख पड़ता है वह। २ विद्याधरवंश के एक राजा का नाम ; (पउम ८, १८६)। °नील देखो °णील ; (पउम ३, १३२)। °पाडिवया स्त्री [°प्रतिपत्] कार्तिक (गुजराती आश्विन) मास के कृष्ण-पक्ष की पहली तिथि ; (ठा ४)। °पुर न [°पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती ; (उप पृ १२६) २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रदत्त की राजधानी; (उप ९३६)। °पुरग न [°पुरक] जैनीय वेशवाटिक गण के चौथे कुल का नाम ; (कप्प)। °प्पभ पुं [°प्रभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, जो लङ्का का राजा था ; (पउम ५, २६१)। °भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर का प्रथम—मुख्य शिष्य, गौतमस्वामी ; (सम १९ ; १५२)। °मह पुं [°मह] १ इन्द्र की आराधना के लिए किया जाता एक उत्सव ; २ आश्विन पूर्णिमा ; (ठा ४, २)। °माली स्त्री [°माली] राजा आदित्य की पत्नी ; (पउम ६, १)। °मुद्धाभिसित्त पुं [°मुर्द्धाभिषिक्त] पक्ष की सातवीं तिथि, सप्तमी, (चंद्र १०)। °मेह पुं [°मेघ] राक्षस वंश में उत्पन्न एक राजा; (पउम ५, २६१)। °य [°क] १ देखा इन्द्र ; (ठा ६)। २ नरक-विशेष ; ३ द्वीप-विशेष ; ४ न. विमान-विशेष; (इक)। °याल देखो °जाल ; (महा)। °रह पुं [°रथ] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४४)। °राय पुं [°राज] इन्द्र ; (तित्थ)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] इन्द्र-ध्वज; (णाया १, १)। °लेहा स्त्री [°लेखा] राजा त्रिकसंयत की पत्नी ; (पउम ५, ५१)। °वज्जा स्त्री [°वज्रा] छन्द-विशेष का नाम, जिसके एक पाद में ग्यारह अक्षर होते है ; (पिंग)। °वसु स्त्री [°वसु] ब्रह्मराज की एक पत्नी ; (राज)। °वाय पुं [°वात] एक माण्डलिक राजा ; (भवि)। °वारण पुं [°वारण] इन्द्र का हाथी, ऐरावत; (कुमा)। °सम्म पुं [°शर्मन्] स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण, (आवम)। °सामणिय पुं [°सामानिक] इन्द्र के समान ऋद्धि वाला देव ; (महा)। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा ब्रह्मदत्त की एक पत्नी ; (राज)। °सुअ पुं [°सुत] इन्द्र का लड़का, जयन्त ; (दे ६, १९)। °सेणा स्त्री [°सेना] १ इन्द्र का सैन्य। २ एक महानदी ; (ठा ५, ३)। °हणु देखो °धणु ; (हे १, १८७)। °ाउह न [°ायुध] इन्द्रधनु ; (णाया १, १)। °ाउहप्पभ पु [°ायुधप्रभ] वानरद्वीप का एक राजा ; (पउम ६, ६६)। °ामअ पु [°ामय] राजा इन्द्रायुधप्रभ का पुत्र, वानरद्वीप का एक राजा ; (पउम ६, ६७)।

इंद वि [ऐन्द्र] १ इन्द्र-संबन्धी ; (णाया १, १)। २ संस्कृत का एक प्राचीन व्याकरण ; (आवम)।

इंदगाइ पुं [दे] साथ में संलग्न रहने वाले कीट-विशेष, (दे १, ८१)।

इंदग्गि पुं [दे] बर्फ, हिम ; (दे १, ८०)।

इंदग्गिधूम न [दे] वर्फ, हिम ; (दे १, ८०)।

इंदड्ढलअ पु [दे] इन्द्र का उत्थापन ; (दे १, ८२)।

इंदमह वि [दे] १ कुमारी में उत्पन्न ; २ कुमारता, यौवन ; (दे १, ८१)।

इंदमहकामुअ पुं [दे. इन्द्रमहकामुक] कुत्ता, श्वान, (दे. १, ८२ ; पाअ)।

इंदा स्त्री [**इन्द्रा**] १ एक महानदी ; (ठा ५, ३) । २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (णाया २) ।

इंदा स्त्री [**ऐन्द्री**] पूर्व दिशा ; (ठा १०) ।

इंदाणी स्त्री [**इन्द्राणी**] १ इन्द्र की पत्नी ; (सुर १, १७०) । २ एक राज-पत्नी ; (पउम ६, २१६) ।

इंदिंदिर पुं [**इन्दिन्दिर**] भ्रमर, भमरा ; (पाअ; दे १, ७६) ।

इंदिय पुंन [**इन्द्रिय**] १ आत्मा का चिन्ह, इन्द्री, ज्ञान के साधन-भूत—श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन ; " तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया " (दसचू १, १६ ; ठा ६) । २ अंग, शरीर के अवयव ; " नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ " (उत्त १६) । °**अवाय** पु [°**पाय**] इन्द्रियों द्वारा होने वाला वस्तु का निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष ; (पण्ण १५) । °**ओगाहणा** स्त्री [°**वग्रहणा**] इन्द्रियों द्वारा उत्पन्न होने वाला ज्ञान-विशेष ; (पण्ण १५) । °**जय** पुं [°**जय**] १ इन्द्रियों का निग्रह, इन्द्रियों को वश में रखना ; " अजिइंदिएहि चरणं, कट्ठं व घुणेहि कीरइ असारं । तो धम्मत्थीहिं दड्ढं, जइअव्वं इंदियजयम्मि " (इदि ४) । २ तप-विशेष , (पव २७०) । °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] इन्द्रियों का उपादान कारण, जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का आकाश, चक्षु का तेज वगैरः ; (सूअ १, १) । °**णिव्वत्तणा** स्त्री [°**निर्वर्त्तना**] इन्द्रियों के आकार की निष्पत्ति ; (पण्ण १५) । °**णाण** न [°**ज्ञान**] इन्द्रिय-द्वारा उत्पन्न ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान ; (वव १०) । °**त्थ** पु [°**र्थ**] इन्द्रिय से जानने योग्य वस्तु, रूप-रस-गन्ध वगैर. ; (ठा ६) । °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] शक्ति-विशेष, जिसके द्वारा जीव धातुओं के रूप में बदले हुए आहार को इन्द्रियों के रूप में परिणत करता है ; (पण्ण १) । °**विजय** पुं [°**विजय**] देखो °**जय** ; (पंचा १८) । °**विसय** पुं [°**विषय**] देखो °**त्थ** , (उत्त ५) ।

इंदियाल देखो **इंद-जाल** : (सुपा ११७; महा) ।

इंदियाल } देखो **इंद-जालि** ; " तुह कोउयत्थमित्थं
इंदियालि } विहियं मे खयरइंदियालेण " (सुपा २४२) । "जइ एस इंदियालो, दंसइ खणनस्सराइं रुवाइं" (सुपा २४३) ।

इंदियालीअ देखो **इंद-जालिअ** ; " न भवामि अहं खयरो नरपुंगव ! इंदियालीओ " (सुपा २४३) ।

इंदिर पुं [**इन्दिर**] भ्रमर, भमरा ; " झंकारमुहरिदिराइं " (विक्र २६) ।

इंदीवर न [**इन्दीवर**] कमल, पद्म, (पउम १०, ३६) ।

इंदु पुं [**इन्दु**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (पाअ) ।

इंदुत्तरवडिंसग न [**इन्द्रोत्तरावतंसक**] देव-विमान-विशेष ; (सम ३७) ।

इंदुर पुंस्त्री [**उन्दुर**] चूहा, मूषक ; (नाट) ।

इंदोकंत न [**इन्दुकान्त**] विमान-विशेष , (सम ३७) ।

इंदोव देखो **इंद-गोव**, (पाअ; दे १, ७६) ।

इंदोवत्त पुं [**दे**] इन्द्रगोप, कीट-विशेष ; (दे १, ८१) ।

इंद्र देखो **इंद**=इन्द्र , (पि २६८) ।

इंध न [**चिह्न**] निशानी, चिन्ह ; (हे १, १७७ ; २, ५० ; कुमा) ।

इंधण न [**इन्धन**] १ ईंधन, जलावन, लकडी वगैर. दाह्य वस्तु ; (कुमा) । २ अस्त्र-विशेष ; (पउम ७१, ६४) । ३ उद्दीपन, उत्तेजन ; (उत्त १४) । ४ पलाल, तृण वगैर. , जिससे फल पकाये जाते हैं ; (निचू १५) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] वह घर, जिसमें जलावन रक्खे जाते हैं ; (निचू १६) ।

इंधिय वि [**इन्धित**] उद्दीपित, प्रज्वलित ; (बृह ४) ।

इक न [**दे**] प्रवेश, पैठ " इकमप्पए पवेसणं " (विसे ३४८३) ।

इक्क देखो **एक्क**, (कुमा, सुपा ३७७; दं ४०; पाअ ; प्रासू १०, कस, सुर १०, २१२ ; श्रा १०; दं २१; रयण २; श्रा ६; पउम ११, ३२) ।

इक्कड पु [**इक्कड**] तृण-विशेष ; (पण्ह २, ३; पण्ण १) ।

इक्कण वि [**दे**] चोर, चुराने वाला ; (दे १, ८०) ; " वाहुलयामूलेसु रइयाओ जणमणेक्कणाओ उ । वाहुसरियाउ तीसे " (स ७६) ।

इक्किक्क वि [**एकैक**] प्रत्येक ; (जी ३३; प्रासू ११८; सुर ८, ४२) ।

इक्कुस न [**दे**] नीलोत्पल, कमल ; (दे १, ७६) ।

इक्ख सक [**ईक्ष्**] देखना । इक्खइ ; (उव) । इक्ख ; (सूअ १, २, १, २१) ।

इक्खअ वि [**ईक्षक**] देखने वाला , (गा ५५७) ।

इक्खण न [**ईक्षण**] अवलोकन, प्रेक्षण, (पउम १०१, ७) ।

इक्खाउ देखो **इक्खागु** ; (विक्र ६४) ।

इक्खाग वि [**ऐक्ष्वाक**] इक्ष्वाकु-नामक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश में उत्पन्न ; (तित्थ)।

इक्खाग } पु [**इक्ष्वाकु**] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राज-
इक्खागु } वंश, भगवान् ऋषभदेव का वंश ; २ उस वंश में उत्पन्न ; (भग ६, ३३ ; कप्प ; औप; अजि १३)। ३ कोशल देश ; (णाया १, ८) °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] अयोध्या नगरी ; (आव २)।

इक्खु पुं [**इक्षु**] १ ईख, ऊख ; (हे २, १७ ; पि ११७)। २ धान्य-विशेष, 'वरट्टिका' नाम का धान्य ; (श्रा १८)। °**गंडिया** स्त्री [°**गण्डिका**] गंडेरी, ईख का टुकड़ा ; (आचा)। °**घर** न [°**गृह**] उद्यान-विशेष ; (विसे)। °**चोयग** न [**दे**] ईख का कुचा; (आचा)। °**डालग** न [°**दे**] ईख की शाखा का एक भाग ; (आचा)। २ ईख का च्छेद ; (निचू १)। °**पेसिया** स्त्री [°**पेशिका**] गण्डेरी ; (निचू १६)। °**भित्ति** स्त्री [**दे**] ईख का टुकड़ा ; (निचू १६) °**मेरग** न [°**मेरक**] गण्डेरी, कटे हुए ऊख के गुल्ले ; (आचा)। °**लट्ठि** स्त्री [°**यष्टि**] ईख की लाठी, इक्षु-दण्ड; (आचू)। °**वाड** पु [°**वाट**] ईख का खेत, "सुचिरपि अच्छमाणो नलथंभो इच्छुवाडमज्झम्मि" (आव ३)। °**सालग** न [**दे**] १ ईख की लम्बी शाखा ; (आचा)। २ ईख की बाहर की छाल ; (निचू १६)। देखो **उच्छु**।

इग देखो **एक्क** ; (कम्म १, ८ ; ३३ ; सुपा ४०६ ; श्रा १४ ; नव ८ ; पि ४४५; श्रा ४४ ; सम ७५)।

इगुचाल वि [**एकचत्वारिंशत्**] संख्या-विशेष, ४१, चालीस और एक ; (भग ; पि ४४५)।

इग्ग वि [**दे**] भीत, डरा हुआ ; (दे १, ७६)।

इग्ग देखो **एक्क**; (नाट)।

इग्घिअ वि [**दे**] भर्त्सित, तिरस्कृत ; (दे १, ८०)।

इच्चा देखो **इ** सक।

इच्चाइ पुंन [**इत्यादि**] वगैरः, प्रभृति ; (जी ३)।

इच्चेवं अ [**इत्येवम्**] इस प्रकार, इस माफिक ; (सूअ १, ३)।

इच्छ सक [**इष्**] इच्छा करना, चाहना। इच्छइ ; (उव ; महा)। वकृ—**इच्छंत, इच्छमाण**; (उत्त १; पंचा ५)।

इच्छ सक [**आप्+सन्=ईप्स्**] प्राप्त करने को चाहना। कृ—**इच्छियव्व**; (वव १)।

इच्छकार देखो **इच्छा-कार**; (पडि)।

इच्छा स्त्री [**इच्छा**] अभिलाषा, चाह, वाञ्छा ; (उवा ; प्रासू ४८)। °**कार** पुं [°**कार**] स्वकीय इच्छा, अभिलाष ; (पडि)। °**छंद** वि [°**च्छन्द**] इच्छा के अनुकूल; (आव ३)। °**णुलोम** वि [°**नुलोम**] इच्छा के अनुकूल ; (पण्ण ११)। °**णुलोमिय** वि [°**नुलोमिक**] इच्छा के अनुकूल ; (आचा)। °**पणिय** वि [°**प्रणीत**] इच्छानुसार किया हुआ ; (आचा)। °**परिमाण** न [°**परिमाण**] परिग्राह्य वस्तुओं के विषय की इच्छा का परिमाण करना, श्रावक का पांचवाँ व्रत; (ठा ५)। °**मुच्छा** स्त्री [°**मूर्च्छा**] अत्यासक्ति, प्रबल इच्छा ; (पण्ह १, ३)। °**लोभ** पुं [°**लोभ**] प्रबल लोभ ; (ठा ६)। °**लोभिय** वि [°**लोभिक**] महा-लोभी ; (ठा ६)। °**लोल** पुं [°**लोल**] १ महान् लोभ ; २ वि. महा-लोभी ; (बृह ६)।

°**इच्छा** स्त्री [**दित्सा**] देने की इच्छा ; (आव)।

इच्छिय [**इष्ट**] इष्ट, अभिलषित, वाञ्छित ; (सुर ४, १५३)।

इच्छिय वि [**ईप्सित**] प्राप्त करने को चाहा हुआ, अभिलषित ; (भग ; सुपा ६२५)।

इच्छिय वि [**इच्छित**] जिसको इच्छा की गई हो वह ; (भग)।

इच्छिर वि [**एषितृ**] इच्छा करने वाला ; (कुमा)।

इच्छु देखो **इक्खु** ; (कुमा ; प्रासू ३३)।

इच्छु वि [**इच्छु**] अभिलाषी ; (गा ७४०)।

इज्ज सक [**आ+इ**] आना, आगमन करना। वकृ—**इज्जंत**,
"विणयम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्वं सो सिरिमिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए॥" (दस९,२,४)।

इज्जा स्त्री [**इज्या**] १ याग, पूजा; २ ब्राह्मणों का सन्ध्यार्चन; (अणु; ठा १०)।

इज्जा स्त्री [**दे**] माता, जननी ; (अणु)।

इज्जिसिय वि [**इज्यैषिक**] पूजा का अभिलाषी ; (भग ६, ३३)।

इज्झ अक [**इन्ध्**] चमकना ; (हे २, २८)। वकृ—**इज्झमाण** ; (राय)।

इट्टगा स्त्री [**इष्टका**] नीचे देखो ; (पण्ह २, २ ; पिंड)

इट्टा स्त्री [**इष्टका**] ईंट ; (गउड; हे २, ३४)। °**पाय**, °**वाय** पुं [°**पाक**] ईंटो का पकना ; २ जहां पर ईंटें पकाई जाती हैं वह स्थान ; (ठा ८)।

इट्टाल न [**इट्टाल**] ईंट का टुकड़ा ; (दस ५, ४५) ।
इट्ठ वि [**इष्ट**] १ अभिलषित, अभिप्रेत, वाञ्छित ; (विपा १, १ ; सुपा ३७०) । २ पूजित, सत्कृत , (औप) । ३ आगमोक्त, सिद्धान्त से अ-विरुद्ध ; (उप ८८२) ।
इट्ठि स्त्री [**इष्टि**] १ इच्छा, अभिलाष, चाह ; (सुपा २४६) । २ याग-विशेष ; (अभि २२७) ।
°**इट्ठि** स्त्री [**कृष्टि**] खींचाव, खींचना ; (गा १८) ।
इडा स्त्री [**इडा**] शरीर के दक्षिण भाग स्थित नाड़ी ; (कुमा) ।
इड्डुर न [**दे**] गाड़ी ; (ओघ ४७६) ।
इड्डुरिया स्त्री [**दे**] मिष्टान्न-विशेष, एक प्रकार की मीठाई ; (सुपा ४८५) ।
इड्ढ वि [**ऋद्ध**] ऋद्धि-संपन्न ; (भग) ।
इड्ढि स्त्री [**ऋद्धि**] १ वैभव, ऐश्वर्य, संपत्ति ; (सुर ३, १७) । २ लब्धि, शक्ति, सामर्थ्य; (उत्त ३) । ३ पदवी; (ठा ३, ४) । °**गारव** न [°**गौरव**] संपत्ति या पदवी आदि प्राप्त होने पर अभिमान और प्राप्त न होने पर उसकी लालसा; (सम २; ठा ३, ४) । °**पत्त** वि [°**प्राप्त**] ऋद्धि-शाली ; (पण्ण ११; सुपा ३६०) । °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] ऋद्धि वाला , (निचू १; ठा ६) ।
इड्ढिसिय वि [**दे**] याचक-विशेष, माँगन की एक जाति ; (भग ६, ३३ टी) ।
इणं, **इणमो** } अ [**एतत्**] यह ; (दे १, ७६) ।
°**इण्ण** देखो **दिण्ण** ; (से ४, ३५) ।
°**इण्ण** देखो **किण्ण** ; (से ८, ७१) ।
इह न [**चिह्न**] चिन्ह, निशान ; (से १, १२ ; षड्) ।
°**इण्हा** स्त्री [**तृष्णा**] तृष्णा, प्यास, स्पृहा ; (गा ६३) ।
इण्हिं अ [**इदानीम्**] इस समय, इस वक्त ; (दे १, ७६ ; पाअ) ।
इति देखो **इइ** ; (पि १८) । °**हास** पुं (°**हास**) पूर्व वृत्तान्त, अतीत काल की घटनाओं का विवरण, पुरावृत्त ; (कप्प) । २ पुराण-शास्त्र ; (भग) ।
इत्तए देखो **इ** सक ।
इत्तर वि [**इत्वर**] १ अल्प, थोड़ा ; (अणु) । २ अल्प-कालिक, थोड़े समय के लिए जो किया जाता हो वह; (ठा ६) । ३ थोड़े समय तक रहने वाला ; (श्रा १६) । °**परिग्गहा** स्त्री [°**परिग्रहा**] थोड़े समय के लिए रक्खी हुई वेश्या, रखात आदि ; (आव ६) । °**परिग्गहिया** स्त्री [°**परि-गृहीता**] देखो °**परिग्गहा** , (आव ६) ।
इत्तरिय वि [**इत्वरिक**] ऊपर देखो; (निचू २ ; आचा ; उवा ; पंचा १०) ।
इत्तरिय देखो **इयर** ; (सूअ २, २) ।
इत्तरी स्त्री [**इत्वरी**] थोड़े काल के लिए रखी हुई वेश्या आदि ; (पंचा १) ।
इत्तहे (अप) अ [**अत्र**] यहां पर ; (कुमा) ।
इत्ताहे अ [**इदानीम्**] इस समय, इस वक्त, अधुना, (पाअ) ।
इत्ति देखो **इइ**; (कुमा) ।
इत्तिय वि [**इयत्**, **एतावत्**] इतना ; (हे २, १५६ ; कुमा; प्रासू १३८ ; षड्) ।
इत्तिरिय वि [**इत्वरिक**] अल्पकालिक, जो थोड़े समय के लिए किया जाता हो ; (स ४६; विसे १२६५) ।
इत्तिल देखो **इत्तिय**; (हे २, १५६) ।
इत्तो देखो **इओ** ; (श्रा १७) ।
इत्तोअ देखो **इओअ**; (श्रा १४) ।
इत्तोप्पं अ [**दे**] यहां से लेकर, **इतः** प्रभृति (पाअ) ।
इत्थ अ [**अत्र**] यहां, इसमें ; (कप्प; कुमा; प्रासू १४१) ।
इत्थं अ [**इत्थम्**] इस तरह, इस प्रकार ; (पण्ण २) । °**थ** वि [°**स्थ**] नियत आकार वाला नियमित; (जीव १) ।
इत्थत्थ पुं [**इत्यर्थ**] वह अर्थ ; (भग) ।
इत्थत्थ पुं [**स्त्र्यर्थ**] स्त्री-विषय; (पि १६२) ।
इत्थयं देखो **इत्थ** ; (श्रा १२) ।
इत्थि, **इत्थी** } स्त्री [**स्त्री**] जनाना, औरत, महिला ; (सूअ २, २ ; हे २, १३०) । °**कला** स्त्री [°**कला**] स्त्री के गुण, स्त्री को सीखने योग्य कला ; (जं २) । °**कहा** स्त्री [°**कथा**] स्त्री विषयक वार्तालाप ; (ठा ४) । °**णपुंसग** पुंन [°**नपुंसक**] एक प्रकार का नपुंसक ; (निचू १) । °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्रीत्व को प्राप्ति होती है ; (णाया १, ८) । °**परिसह** पुं [°**परिषह**] ब्रह्मचर्य ; (भग ८, ८) । °**विप्पजह** वि [°**विप्रजह**] १ स्त्री का परित्याग करने वाला, २ पुं. मुनि, साधु; (उत्त ८) । °**वेद**, °**वेय** पु [°**वेद**] १ स्त्री का पुरुष-संग को इच्छा ; २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री को पुरुष के साथ भोग करने को इच्छा होती है ; (भग ; पण्ण २३) ।

इत्थेण त्रि [**स्त्रैण**] स्त्रीयों का समूह, स्त्री-जन; " लज्जामि किं न महंता दीणाश्रो मागिसित्थेणा" (उप ७२८ टी)।

इदाणिं देखो **इयाणिं**; (आचा)।

इदुर न [**दे**] १ गाडो के ऊपर लगाया जाता आच्छादन-विशेष ; (अणु)। २ ढकने का पात्र-विशेष ; (राय)।

इद्दंड पुं [**दे**] भमरा, मधुकर ; (दे १, ७६)।

इद्धग्गिधूम न [**दे**] तुहिन, हिम ; (पड्)।

इद्धि देखो **इड्ढि** ; (षड्)।

इध (शौ) देखो इह ; (हे ४, २६८)।

इब्भ पुं [**इभ्य**] धनी, आढ्य ; (पाअ)।

इब्भ पुं [**दे**] वणिक्, व्यापारी ; (१, ७६)।

इभ पु [**इभ**] हाथी, हस्ती ; (जं २; कुमा)।

इम स [**इदम्**] यह ; (हे ३, ७२)।

इमेरिस वि [**एतादृश**] ऐसा, इसके जैसा ; (सण)।

इय देखो **इम** ; (महा)।

इय देखो **इइ** ; (षड् ; ह १, ९१ ; औप)।

इय न [**दे**] प्रवेश, पैठ ; (आवम)।

इय वि [**इत**] १ गत, गया हुआ ; (सूअ १, ६)। २ प्राप्त ; ' उदयमिश्रो जस्सीसो जयम्मि चंदुव्व जिणचंदो" (सार्ध ७१ ; विसे)। ३ ज्ञात, जाना हुआ ; (आचा)।

इयण्हिं अ [**इदानीम्**] हाल में, इस समय, अधुना ; (ठा ३, ३)।

इयर वि [**इतर**] १ अन्य, दूसरा ; (जी ४६; प्रासू १००)। २ हीन, जघन्य ; (आचा १, ६, २)।

इयरहा अ [**इतरथा**] अन्यथा, नहीं तो, अन्य प्रकार से ; (कम्म १, ६०)।

इयरेयर वि [**इतरेतर**] अन्योन्य, परस्पर ; (राज)।

इयाणि } अ [**इदानीम्**] हाल में, इस समय ; (भग ;
इयाणिं } पि १४४)।

इर देखो **किल** ; (हे २, १८६ ; नाट)।

इरमंदिर पुं [**दे**] करभ, ऊंट ; (दे १, ८१)।

इराव पुं [**दे**] हाथी ; (दे १, ८०)।

इरावदी (शौ) स्त्री [**इरावती**] नदी-विशेष ; (नाट)।

°**इरि** देखो **गिरि** " विंझइरिपवरसिहरे " (पउम १०, २७)।

इरिया स्त्री [**दे**] कुटी, कुटिया ; (दे १, ८०)।

इरिया स्त्री [**ईर्या**] गमन, गति, चलना ; (आचा)। °**वह** पुं [°**पथ**] १ मार्ग में जाना ; (ओघ ५४)। २ जाने का मार्ग, रास्ता ; (भग ११, १०)। ३ केवल शरीर से होने वाली क्रिया ; (सुअ २, २)। °**वहिय** न [°**पथिक**] केवल शरीर की चेष्टा से होने वाला कर्म-बन्ध, कर्म-विशेष ; (सूअ २, २; भग ८, ८)। °**वहिया** स्त्री [°**पथिकी**] कषाय-रहित केवल कायिक क्रिया ; क्रिया-विशेष ; (पडि; ठा २)। °**समिइ** स्त्री [°**समिति**] विवेक से चलना, दूसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपयोग-पूर्वक चलना ; (ठा ८)। °**समिय** वि [°**समित**] विवेक-पूर्वक चलने वाला ; (विपा २, १)।

इरिण न [**ऋण**] करजा, ऋण ; (चारु ६६)।

इरिण न [**दे**] कनक, सुवर्ण ; (दे १, ७६ ; गउड)।

इल पुं [**इल**] १ वाराणसी का वास्तव्य स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति—गृहस्थ ; (णाया २)। २ न. इलादेवी के सिंहासन का नाम ; (णाया २)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] इल-नामक गृहस्थ की स्त्री ; (णाया २)।

°**इलंतअ** देखो **किलंत** ; (से ३, ४७)।

इला स्त्री [**इला**] १ पृथिवी, भूमि ; (से २, ११)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी ;(णाया २)। ३ इल-नामक गृहस्थ की पुत्री ; (णाया २)। ४ रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी ; (ठा ८)। ५ राजा जनक की माता ; (पउम २१, ३३)। ६ इलावर्धन नगर में स्थित एक देवता ; (आवम)। °**कूड** न [°**कूट**] इलादेवी के निवास-भूत एक शिखर ; (ठा ४)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] इलादेवी के प्रसाद से उत्पन्न एक श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने नटिनी पर मोहित होकर नट का पेशा सीखा और अन्त में नाच करते करते ही शुद्ध भावना से केवल-ज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई ; (आचू)। °**वइ** पुं [°**पति**] एलापत्य गोत्र का आदि-पुरुष; (णंदि)। °**वडंसय** न [°**ावतंसक**] इला देवी का प्रासाद ; (णाया २)।

इलाइपुत्त देखो **इला-पुत्त**; " धन्नो इलाइपुत्तो चिलाइ-पुत्तो अ बाहुमुणी" (पडि)।

इलिया स्त्री [**इलिका**] क्षुद्र जीव-विशेष, चीनी और चावल में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (जी १७)।

इली स्त्री [**इली**] शस्त्र-विशेष, एक जात का तरवार की तरह का हथियार ; (पण्ह १, ३)।

इल्ल पुं [**दे**] १ प्रतीहार, चपरासी ; २ लविल, दाँती ; ३ वि. दरिद्र, गरीब ; ४ कोमल, मृदु ; ५ काला, कृष्ण वर्ण वाला ; (दे १, ८२)।

and distinct points, then

इलि पुं [दे] १ शार्दूल, व्याघ्र ; २ सिंह ; ३ छाता ; (दे १, ८३) ।
इलिय वि [दे] आसिक्त ; "उप्पेलणफुल्लाविअहल्लअफुल्लासवेल्लिअमल्लिआअक्खतल्लएण" (विक २३) ।
इलिया स्त्री [इलिका] क्षुद्र जीव-विशेष, अन्न में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (जी १६) ।
इलीर न [दे] १ आसन-विशेष ; २ छाता ; ३ दरवाजा, गृह-द्वार ; (दे १, ८३) ।
इव अ [इव] इन अर्थों का द्योतक अव्यय;—१ उपमा; २ २ सादृश्य, तुलना ; ३ उत्प्रेक्षा ; (हे २, १८२ ; सण) ।
इसअ वि [दे] विस्तीर्ण ; (षड्) ।
इसणा देखो **एसणा** ; (रंभा) ।
इसाणी स्त्री [ऐशानी] ईशान कोण, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा ; (नाट) ।
इसि पु [ऋषि] १ मुनि, साधु, ज्ञानी, महात्मा, (उत्त १२; अवि १४) । २ ऋषिवादि-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र, इन्द्र-विशेष ; (ठा २, ३) । °**गुत्त** पुं [°गुप्त] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (कप्प) । २ न, जैन मुनिओं का एक कुल; (कप्प) । °**गुत्तिय** न [°गुप्तीय] जैन मुनिओं का एक कुल ; (कप्प) । °**दास** पुं [°दास] १ इस नाम का एक शेठ, जिसने जैन दीक्षा ली थी ; २ 'अनुत्तरोववाइदसा' सूत्र का एक अध्ययन ; (अनु २) । °**दिण्ण** पुं [°दत्त] एक जैन मुनि ; (कप्प) । °**पालिय** °**दत्त**, पुं [°पालित] ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थंकर का नाम ; (सम १५३) । °**पालिया** स्त्री [°पालिता] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प) । °**भद्दपुत्त** पुं [भद्रपुत्र] एक जैन श्रावक ; (भग ११, १२) । °**भासिय** न [°भाषित] १ अंग ग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आचार्यों के बनाए हुए उत्तराध्ययन आदि शास्त्र; (आवम) । २ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का तृतीय अध्ययन ; (ठा १०) । °**वाइ**, °**वाइय**, °**वादिय** पु [°वादिन्] व्यन्तरों की एक जाति ; (औप , पण्ह १, ४) °**वाल** पुं [°पाल] १ ऋषिवादि-व्यन्तरों का उत्तर दिशा का इन्द्र , (ठा २, ३) । २ पांचवें वासुदेव का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५३) । °**वालिय** पुं [°पालित] ऋषिवादि-व्यन्तरों के एक इन्द्र का नाम ; (देव) ।
इसिण पुं [इसिन] अनार्य देश-विशेष; (णाया १, १) ।
इसिणय वि [इसिनक] इसिन-नामक अनार्य देश में उत्पन्न ; (णाया १, १ ; इक) ।
इसिया स्त्री [इषिका] सलाई, शलाका ; (सुअ २, २) ।
इसु पु [इषु] बाण ; (पाअ) ।
इस्स वि [एष्यत्] १ भविष्य काल ; "जुत्तं संपयमिस्सं" (विसे) । २ होने वाला, भावी ; "संभरइ भूयमिस्सं" (विसे ५०८) ।
इस्सर देखो **ईसर** ; (प्राप्र; पि ८७, ठा २, ३) ।
इस्सरिय देखो **ईसरिय** ; (पउम ५, २७० ; सम १३; प्रासू ७५) ।
इस्सास पुं [इष्वास] १ धनुष, कार्मुक, शरासन ; २ बाण-क्षेपक, तीरंदाज ; (प्राकृ) ।
इह पु [इभ] हाथी, हस्ती ; (प्राकृ) ।
इह अ [इह] यहां, इस जगह ; (आचा; स्वप्न २२) । °**पारलोइय** वि [ऐहपारलौकिक] इस और परलोक से सम्बन्ध रखने वाला ; (स १५६) । °**भविय** वि [ऐहभविक] इस जन्म-संबन्धी ; (भग) । °**लोअ**, °**लोग** पुं [°लोक] वर्तमान जन्म, मनुष्य-लोक ; (ठा ३; प्रासू ७५; १५३) °**लोय**; °**लोइय** वि [ऐहलौकिक] इस जन्म-संबन्धी, वर्त्तमान-जन्म-संबन्धी; (कप्प, सुपा ४०८; पण्ह १,३; स ४८१) ; "इहलोयपारलोइयसुहाइं सव्वाइं तेण दिन्नाइं" (स १५५) ।
इहअ, **इहइं** } ऊपर देखो; (षड् ; पउम २१, ७) ।
इहइं अ [इदानीम्] हाल, संप्रति, इस समय ; (पाअ) ।
इहं, **इहयं** } देखो इह=इह ; (औप ; श्रा १४) ।
इहरहा, **इहरा** } देखो **इयर-हा**; (उप ८६०; भत ३६; हे २,२१२) ।
इहरा देखो इहइं=इदानीम् ; (गउड) ।
इहामिय देखो **ईहामिय**; (पि ५४) ।
इहिं अ [इह] यहां ; (रंभा) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे इआराइसद्दसंकलणो णाम
तइओ तरंगो समत्तो ।

$(d)\ 2x - 3y = 0$

ई

ई पुं [**ई**] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ वर्ण, स्वर-विशेष ; (प्रामा) ।

ईअ स [**एतत्, इदम्**] यह ; (पि ४२६; ४२६) ।

ईअ अ [**इति**] इस तरह ; "ईय मणोविसईणं" (विसे ५१४) ।

ईइ पुस्त्री [**ईति**] धान्य वगैरः को नुकसान पहुंचाने वाला चूहा आदि प्राणि-गण , (औप) ।

ईइस वि [**ईदृश**] ऐसा, इस तरह का, इसके समान, (महा; स १५) ।

°**ईड** देखो **कीड**=कीट ; "दुद्द्ंसणणिंवईडसारिच्छं" (गा ३०)

°**ईण** देखो **दीण** ; (से ८, ६१) ।

ईति देखो **ईइ** ; (सम ६०) ।

ईदिस देखो **ईइस** ; (स १४० ; अभि १८२ ; कप्पू) ।

ईर सक [**ईर्**] १ प्रेरण करना। २ कहना। ३ गमन करना। ४ फेंकना। ईरेइ , (विसे १०६०) । कृ—"ठाण-गमणगुणजोगजुजणजुगंतरनिवातियाए दिट्ठीए **ईरियव्वं**" (पण्ह २, १) । भूकृ—**ईरिद** (शौ); (अभि ३०) ।

ईरिय वि [**ईरित**] प्रेरित ; (विसे ३१४४) ।

ईरिया देखो **इरिआ**; (सम १०; ओघ ७४८, सुर २,१०४) ।

ईरिस देखो **ईइस** ; (कुमा; स्वप्न ५५) ।

ईस न [**दे**] खूंटा, खीला, कीलक ; (दे १, ८४) ।

ईस सक [**ईर्ष्**] ईर्ष्या करना, द्वेष करना । ईसाअंति ; (गा २४०) ।

ईस पुं [**ईश**] देखो **ईसर**=ईश्वर ; (कुमा , पउम १०२, ५८) । २ न. ऐश्वर्य, प्रभुता , (पण्ण २) ।

ईस देखो **ईसि** ; (कप्पू) ।

ईसअ पुं [**दे**] रोफ, हरिण की एक जाति; (दे १, ८४) ।

ईसत्थ न [**इष्वस्त्र, इषुशास्त्र**] धनुर्वेद, वाण-विद्या ; (औप ; पण्ह १, ५) । "विन्नाणनाणकुसला ईसत्थक-यस्समा वीरा" (पउम ६८, ४० ; पि ११७) ।

ईसर पुं [**दे**] मन्मथ, काम-देव , (दे १, ८४) ।

ईसर पुं [**ईश्वर**] १ परमेश्वर, प्रभु ; (हे १, ८४) । २ महादेव, शिव ; (पउम १०६, १२) । ३ स्वामी, पति; (कुमा) । ४ नायक, मुखिया ; (विपा १, १) । ५ देवताओं का एक आवास, वेलंधर-देवों का आवास-विशेष , (सम ७३) । ६ एक पाताल-कलश ; (ठा ४, २) । ७ आढ्य, धनी ; (सुपा ४३६) । ८ ऐश्वर्य-शाली, वैभवी ; (जीव ३) । ९ युवराज ; १० माण्डलिक, सामन्त राजा , ११ मन्त्री; (अणु) । १२ इन्द्र-विशेष, भूतवादि-निकाय का इन्द्र ; (ठा २, ३) । १३ पाताल-विशेष ; (ठा ४) । १४ एक राजा का नाम ; १५ एक जैन मुनि ; (महानि ६) १६ यक्ष-विशेष ; (पव २७) ।

ईसरिय न [**ऐश्वर्य**] वैभव, प्रभुता, ईश्वरपन , (पउम ८६, ६३) ।

ईसा स्त्री [**ईषा**] १ लोकपालों के अग्र-महिषीओं की एक पर्षदा ; (ठा ३, २) । २ पिशाचेन्द्र की एक परिषद् ; (जीव ३) । ३ हल का एक काष्ठ ; (दे २, ६६) ।

ईसा स्त्री [**ईर्षा**] ईर्ष्या, द्रोह ; (गउड) । °**रोस** पुं [°**रोष**] क्रोध, गुस्सा ; (कप्पू) ।

ईसाइय वि [**ईर्ष्यायित**] जिसको ईर्ष्या हुई हो वह ; (सुपा ६१) ।

ईसाण पुं [**ईशान**] १ देवलोक-विशेष, दूसरा देव-लोक , (सम २) । २ दूसरे देवलोक का इन्द्र ; (ठा २, ३) । ३ उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा, ईशान-कोण; (सुपा ६८)। ४ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१) । ५ दूसरे देवलोक के निवासी देव ; (ठा १०) । ६ प्रभु, स्वामी ; (विसे) । °**वडिंसग** न [°**वतंसक**] विमान-विशेष का नाम ; (सम २५) ।

ईसाणा स्त्री [**ऐशानी**] ईशान-कोण ; (ठा १०) ।

ईसाणी स्त्री [**ऐशानी**] १ ईशान-कोण ; २ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१) ।

ईसालु वि [**ईर्ष्यालु**] ईर्ष्यालु, असहिष्णु, द्वेषी ; (महा ; गा ६३४ ; प्राप्र) । स्त्री °**णी** ; (पउम ३६, ४५) ।

ईसास देखो **इस्सास**; "ईसासट्ठाण" (निर ; पि १६२) ।

ईसि अ [**ईषत्**] १ थोडा, अल्प ; (पण्ण ३६) । २ पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र, मुक्त-भूमि ; (सम २२) । °**पब्भार** वि [°**प्राग्भार**] थोडा अवनत; (पचा १८) । °**पब्भारा** स्त्री [°**प्राग्भारा**] पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र ; (ठा ८, सम २२) ।

ईसिअ न [**ईर्ष्यित**] १ ईर्ष्या, द्वेष ; (गा ५१०) । २ वि. जिस पर ईर्ष्या की गई हो वह ; (दे २, १६) ।

ईसिअ न [**दे**] १ भील के सिर पर का पत्र-पुट, भीलों की

एक-तरह की पगड़ी ; २ वि. वशीकृत, वश किया हुआ ; (दे १, ८४)।

ईसिं } देखो ईसि ; (महा ; सुर २, ६६ ; कस ; पि
ईसीं } १०२)।

ईह सक [ईक्ष्, ईह्] १ देखना। २ विचारना। ३ चेष्टा करना। ईहए ; (विसे ५६१)। वकृ—ईहंत ; ईहमाण; (गउड ; सुपा ८८; विसे २५८)। संकृ—"अनिश्राणो ईहिऊण मइपुव्वं" (पंच ८६; विसे २५७)।

ईहण न [ईहन] नीचे देखो ; (आचू १)।

ईहा स्त्री [ईहा] १ विचार, ऊहापोह, विमर्श ; (णाया १, १; सुपा ५७२)। २ चेष्टा, प्रयत्न; (ओघ ३)। ३ मति-ज्ञान का एक भेद; (पण्ण १५; ठा ५)। ४ इच्छा ; (स ६१२)। °मिग, °सिय पुं [°मृग] १ वृक, भेडिया ; (णाया १, १ ; भग ११, ११)। २ नाटक का एक भेद; (राय)।

ईहा स्त्री [ईक्षा] अवलोकन, विलोकन ; (औप)।

ईहिय वि [ईहित] चेष्टित ; (सूअ १, १, ३)। २ विमर्शित, विचारित, ईहा-विषयीकृत ; (विसे २५७)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ईआराइसद्दसंकलणो णाम चउत्थो तरंगो समत्तो।

—:०:—
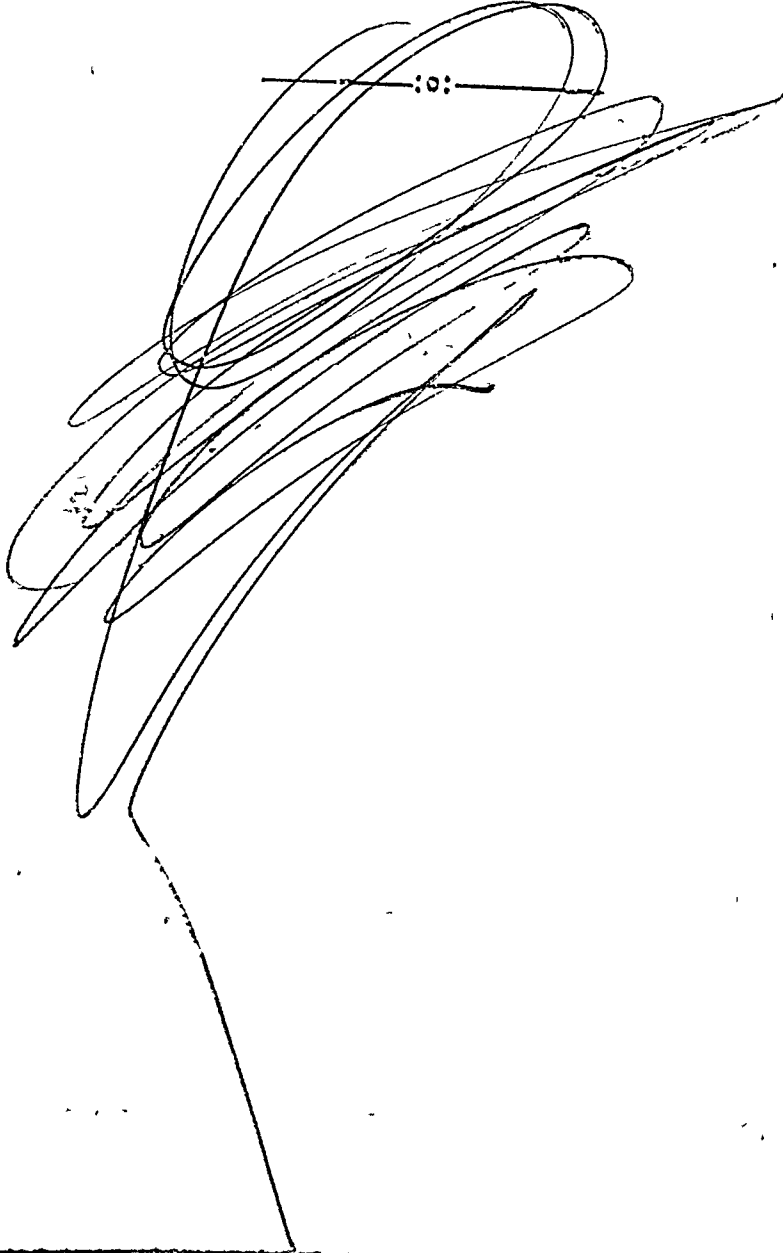
उ

उ पुं [**उ**] प्राकृत वर्णमाला का पञ्चम अक्षर, स्वर-विशेष; (प्रामा)। २ उपयोग रखना, ख्याल करना ; " उत्ति उव-ओगकरणे "। (विसे ३१६८)। ३ गति-क्रिया ; (आवम)।

उ अ [**उ**] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय ; — १ संबोधन, आमन्त्रण ; २ कोप-वचन, क्रोधोक्ति ; ३ अनुकम्पा, दया; ४ नियोग, हुकुम ; ५ विस्मय, आश्चर्य ; ६ अंगीकार, स्वीकार ; ७ प्रश्न, पृच्छा ; (हे २, २१७)।

उ अ [**तु**] इन अर्थों का द्योतक अव्यय , — १ समुच्चय, और ; (कप्प)। २ अवधारण, निश्चय ; (आवम)। ३ किन्तु, परन्तु ; (ठा ३, १)। ४ नियोग, आज्ञा ; ५ प्रशसा ; ६ विनिग्रह ; ७ शंका की निवृत्ति ; (उव)। ८ पादपूर्त्ति के लिए भी इसका प्रयोग होता है ; (उव)।

उ देखो **उव** ; " उओ उपे " (षड् २, १, ६८)।

उ° अ [**उत्**] निम्न अर्थों का सूचक अव्यय; — १ ऊंचा, ऊर्ध्व ; जैसे— 'उक्कमत' (आवम)। २ विपरीत, उलटा ; जैसे— 'उक्कम' (विसे)। ३ अभाव, रहितता , जैसे — 'उक्कर' (णाया १, १)। ४ ज्यादः , विशेष ; जैसे— 'उक्कोविय' (उप पृ ७८; विसे ३५७६)।

उअ अ [**दे**] विलोकन करो, देखो ; (दे १, ८६ टी ; हे २, २११)।

उअ अ [**उत**] इन अर्थों का सूचक अव्यय, — १ विकल्प, अथवा , २ वितर्क, विमर्श ; (कुमा)। ३ प्रश्न, पृच्छा ; ४ समुच्चय , ५ बहुत, अतिशय ; (हे १, १७२)।

उअ अ [**दे**] ऋजु, सरल ; (षड्)।

उअ देखो **उव** ; (गा ५० ; से ६, ६)।

उअ न [**उद**] पानी, जल। **°सिंधु** पुं [**°सिन्धु**] समुद्र, सागर ; (पि ३४०)।

उअ वि [**उदञ्च्**] उत्तर, उत्तर दिशा में स्थित। **°म-हिहर** पुं [**°महिध्र**] हिमाचल पर्वत , (गउड)।

उअअ न [**उदक**] पानी, जल ; (गा ५३ , से ६, ८८)।

उअअ देखो **उदय** ; (से १०, ३१)।

उअअ न [**उदर**] पेट, उदर ; (से ६, ८८)।

उअअ त्रि [**दे**] ऋजु, सरल, सीधा ; (दे १, ८८)।

उअअद (शौ) देखो **उवगय** ; (नाट)।

उअआरअ वि [**उपकारक**] उपकार करने वाला ; (गा ५०)।

उअआरि वि [**उपकारिन्**] ऊपर देखो ; (विक २५)।

उअइव्व वि [**उपजीव्य**] आश्रय करने योग्य, सेवा करने योग्य ; (से ६, ६)।

उअऊह सक [**उप+गूह्**] आलिंगन करना। संकृ—**उ-अऊहेऊण** ; (पि ५८६)।

उअएस देखो **उवएस** ; (गा १०१)।

उअंचण न [**उदञ्चन**] १ऊंचा फेंकना ; २ ढकने का पात्र, आच्छादक पात्र ; (दे ४, ११)

उअंचिद (शौ) वि [**उदञ्चित**] १ ऊंचा उठाया हुआ; ऊंचा फेंका हुआ ; (नाट)।

उअत पुं [**उदन्त**] हकीकत , वृत्तान्त, समाचार ; (पाअ ; प्रामा)।

उअकिद (शौ) वि [**उपकृत**] जिस पर उपकार किया गया हो वह ; (पि ६४)।

उअक्किअ वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ ; (दे १, १०७)।

उअगअ देखो **उवगय** ; (गा ६४४)।

उअचित्त वि [**दे**] अपगत, निवृत्त ; (दे १, १०८)।

उअजीवि वि [**उपजीविन्**] आश्रित ; (अभि १८६)।

उअज्झाअ देखो **उवज्झाय** ; (नाट)।

उअट्टी स्त्री [**दे**] नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नाडी; " उअट्टी उच्चओ नीवी " (पाअ)।

उअट्ठिअ देखो **उवट्ठिय** ; (प्राप)।

उअण्णास देखो **उवण्णास** , (नाट)।

उअत्तंत देखो **उव्वट्ट**=उद्+वृत्।

उअत्थाण देखो **उवट्ठाण** ; (नाट)।

उअत्थिअ देखो **उवट्ठिय** ; (से ११, ७८)।

उअदिट्ठ देखो **उवइट्ठ** ; (नाट)।

उअभुत्त देखो **उवभुत्त**; (रभा)।

उअभोग देखो **उवभोग** ; (नाट)।

उअमिज्जंत वकृ [**उपमीयमान**] जिसकी तुलना की जाती हो वह ; (काप्र ८६६)।

उअर न [**उदर**] पेट ; (कुमा)।

उअरि } देखो **उवरि** ; (गा ६४, से ८, ७५)।
उअरिं }
उअरी स्त्री [**दे**] शाकिनी, देवी-विशेष ; (दे १, ९८)।
उअरुज्झ देखो **उवरुज्झ**। उअरुज्झदि (शौ); (नाट)।
उअरोअ } देखो **उवरोह** ; (प्राप ; नाट)।
उअरोह }
उअलद्ध देखो **उवलद्ध** , (नाट)।
उअविय वि [**दे**] उच्छिष्ट " इहरा मे णिसिमितं उअविय चेव गुरुमादी " (वृह १)।
उअह अ [**दे**] देखो, देखिए ; (दे १, ९८ ; प्राप्र)।
उअहार देखो **उवहार**, (नाट)।
उअहारी स्त्री [**दे**] दोग्ध्री , दोहने वाली स्त्री ; (दे १, १०८)।
उअहि पुं [**उदधि**] १ समुद्र, सागर ; (गउड)। २ स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राज-कुमार; (पउम ५, १६६)। ३ काल परिमाण, सागरोपम ; (सुर २, १३६)। ४ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम २०, ११७)। देखो **उदहि**।
उअहि देखो **उवहि**=उपधि , (पच्च ६)।
उअहुज्जत देखो **उवभुंज**।
उअहोअ देखो **उवभोग** , (प्रवो ३०, नाट)।
उआअ देखो **उवाय**, (नाट)।
उआअण देखो **उवायण** ; (माल ४६)।
उआर देखो **उराल** ; (सुपा ६०७ ; कप्पू)।
उआर देखो **उवयार** ; (षड्, गउड)।
उआलंभ देखो **उवालंभ**=उपा+लभ्। कृ—**उआलंभणिज्ज**; (नाट)।
उआलंभ देखो **उवालंभ**=उपालम्भ ; (गा २०१)।
उआलि स्त्री [**दे**] अवतंस, शिरो-भूषण , (दे १, ९०)।
उआस पुं [**उदास**] नीचे देखो , (पिंग)।
उआसीण वि [**उदासीन**] १ उदासी, दिलगीर ; २ मध्यस्थ, तटस्थ ; (स ५४९ ; नाट)।
उइ सक [**उप+इ**] समीप जाना। उएइ,-उएउ; (वि ४९३)।
उइ अक [**उद्+इ**] उदित होना। उएइ ; (रंभा)। वकृ—**उइयंत** ; (रंभा)।
उइ देखो **उउ**। "अन्न वि हु तु उइओ सरिसा परं ते " (रंभा)। °**राय** पुं [°**राज**] वसन्त ऋतु , , (रंभा)।
उइअ वि [**उदित**] १ उदय-प्राप्त, उद्गत ; (सुपा १२७)। २ उक्त, कथित ; (विसे २३३; ८४६)। °**परक्कम** पुं [°**पराक्रम**] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ६)।
उइअ वि [**उचित**] योग्य, लायक ; (से ८, १०३)।
उइंतण न [**दे**] उत्तरीय वस्त्र, चादर; (दे १, १०३ ; कुमा)।
उइंद पुं [**उपेन्द्र**] इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार; जो अदिति के गर्भ से हुआ था ; (हे १, ६)।
उइट्ठ वि [**अपकृष्ट**] हीन, संकुचित, " आउसियअक्खचम्म-उइट्ठगंडदेसं " (णाया १, ८)।
उइण्ण देखो **उदिण्ण** ; (ठा ५; विसे ५०३)।
उइण्ण वि [**उदीच्य**] उत्तर-दिशा-संबन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न ; (आवम)।
उइयंत देखो **उइ**=उद्+इ।
उईण देखो **उदीण** ; (राय)
उईर देखो **उदीर**। " उईरेइ अइपीडं " (श्रा २७)। वकृ—**उईरंत** ; (पुप्फ १३)। संकृ— **उईरइत्ता** ; (सुअ १, ६)।
उईरण देखो **उदीरण**; (ठा ४; पुप्फ १९५)।
उईरणया } देखो **उदारणा** ; (विसे २५१५ टी ; कम्मप
उईरणा } १५८; विसे २९९२)।
उईरिय देखो **उदीरिय** ; (पुप्फ २१६)।
उउ त्रि [**ऋतु**] १ ऋतु, दो मास का काल-विशेष, वसन्त आदि छः प्रकार का काल ; (औप; अंत ७)। 'उऊए,' 'उऊइं ' (कप्प)। २ स्त्री-कुसुम, रजो-दर्शन, स्त्री-धर्म, (ठा ५, २)। °**बद्ध** पु [°**बद्ध**] शीत और उष्ण-काल, वर्षा-काल के अतिरिक्त आठ मास का समय ; (ओघ २६; २९५; ३४८)। ° **मास** पु [°**मास**] १ श्रावण मास ; (वव १, १)। २ तीस दिन वाला मास ; (सम)। °**य** वि [°**ज**] ऋतु में उत्पन्न, समय पर उत्पन्न होने वाला ; (पण्ह २, ५ ; णाया १, १),

" उयअगुरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु।
गधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा "
(णाया १,१७)।

°**संधि** पुंस्त्री [°**संधि**] ऋतु का सन्धि-काल, ऋतु का अन्त समय ; (आचा)। °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष ; (ठा ५)। देखो **उइ**=उउ।

उउंवर देखो **उंवर**=उदुम्बर ; (कुमा; हे १, २७० ; षड्)।

उऊखल } पुंन [**उदूखल**] उलुखल, गूगल ; (कुमा, **उऊहल** } पड् ; हे १, १, १)।

उओग्गिअ वि [**दे**] संवद्ध , सयुक्त ; (षड्)।

उंघ अक [**नि+द्रा**] नींद लेना। उघइ ; (हे ४, १२)।

उंचहिआ स्त्री [**दे**] चक्र-धारा ; (दे १, १०६)।

उंछ पुं [**उञ्छ**] भिक्षा, माधुकरी ; (ऊप ६७७; ओघ ४२४)।

उंछअ पुं [**दे**] वस्त्र छीपने का काम करने वाला शिल्पी , छीपी ; जो कपडा छापता है , छीट वनाता है वह ; (दे १, ६८ ; पाअ)।

उंज सक [**सिच्**] सींचना, छीटकना । उंजिज्जा, (राज)। भवि—उजिस्सइ ; (सुपा १३६)।

उंज सक [**युज्**] प्रयोग करना, जोडना । "अहमवि उजेमि तह किंपि" (धम्म ८ टी)।

उंजायण न [**उञ्जायन**] गोत्र-विशेष, जो वशिष्ट गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७)।

उंजिअ वि [**सिक्त**] सिक्त, छीटका हुआ ; (सुपा १३६)।

उंड } वि [**दे**] १ गभीर, गहरा ; (दे १, ८५ ; सुपा **उंडग** } १५ ; उप १४७ टी ; ठा १० ; श्रा १६)। २ **उंडय** } पुं. पिण्ड, "वालाई मंसउडग मज्जाराई विराहेज्जा" (ओघ २४६ भा)। ३ चलते समय पॉव मे पिण्ड रूप से लग जाय उतना गहरा कीच, कर्दम , (ओघ ३३ भा)। ४ शरीर का एक भाग, मांस-पिण्ड "हिययउंडए" (विपा १, ५)।

उंडल न [**दे**] १ मञ्च, मचान, उच्चासन ; २ निकर, समूह; (दे १, १२६)।

उंडिया स्त्री [**दे**] मुद्रा-विशेष ; (राज)।

उंडी स्त्री [**दे**] पिण्ड, गोलाकार वस्तु "तत्थ णं एगा वरमऊरी दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवति" (णाया १, ३)।

उंदर } पुंस्त्री [**उन्दुर**] मूषक, चूहा ; (गउड; पण्ह १, १ ; **उंदुर** } उवा; दे १, १०२)।

उंदुरअ पु [**दे**] लम्बा दिवस ; (दे २, १०५)।

उंव पु [**उम्ब**] वृक्ष-विशेष, "निवंवउवउंवर" (उप १०३१ टी)।

उंवर पु [**उदुम्बर**] १ वृक्ष-विशेष, गूलर का पेड ; (पण्ण १)। २ न. गूलर का फल; (प्राप्र)। ३ देहली, द्वार के नीचे की लकडी ; (दे १, ६०)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ यक्ष-विशेष ; (विपा १, ७)। २ एक सार्थवाह का पुत्र ; (विपा १, ७)। °**पंचग**, °**पणग** न [°**पञ्चक**] वड, पीपल, गूलर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी इन पांच वृक्षों के फल , (सुपा ४६; भग ६, ३३)। °**पुप्फ** न [°**पुष्प**] गूलर का फूल; (भग ६, ३३)।

उंवर वि [**दे**] वहुत, प्रचुर ; (दे १, ६०)।

उंवरउप्फ न [**दे**] नवीन अभ्युदय, अपूर्व उन्नति ; (दे १ ११६)।

उंवा स्त्री [**दे**] वन्धन ; (दे १, ८६)।

उंबी स्त्री [**दे**] पका हुआ गेहूँ ; (दे १, ८६; सुपा ४७३)।

उंवेभरिया स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १)।

उंभ सक [**दे**] पूर्ति करना, पूरा करना ; (राज)।

उकिट्ठ देखो **उक्किट्ठ** ; (पिंग)।

उकुरुडिया [**दे**] देखो **उक्कुरुडिया** ; (निर १, १)।

उक्क वि [**उत्क**] १ उत्सुक, उत्कण्ठित ; (सुर ३, ५३)। एक विद्याधर राजा का नाम ; (पउम १०, २०)।

उक्क वि [**उक्त**) कथित ; (पिंग)।

उक्क न [**दे**] पाद पतन, पॉव पर गिर कर नमस्कार करना; (दे १, ८५)।

उक्कअ वि [**दे**] प्रसृत, फैला हुआ ; (पड्)।

उक्कंचण } न [**दे**] १ झूठी प्रशंसा करना, खुशामद ; **उक्कंचणया** } (णाया १, २)। २ ऊंचा करना, ऊठाना ; (सूअ २, २)। ३ झाड़ निकालना ; (निचू ५)। ४ घूस, रिशवत; (दसा २)। ५ मूर्ख पुरुष को ठगने वाले धूर्त का, समीपस्थ विचक्षण पुरुप के भय से, थोडी देर के लिए निश्चेष्ट रहना ; (औप)। °**दीव** पु [°**दीप**] ऊंचा दंड वाला प्रदीप ; (अंत)।

उक्कंछण न [**दे**] देखो **उक्कंचण** ; (राज)।

उक्कंठ अक [**उत्+कण्ठ्**] उत्कण्ठा करना, उत्सुक होना। उक्कंटेहि; (मै ७२)। वकृ—**उक्कंठंत** ; (मै ६२)। हेकृ—**उक्कंठिदुं** (शौ) ; (अभि १४७)।

उक्कंठा स्त्री [**उत्कण्ठा**] उत्सुकता, औत्सुक्य; (हे १, २५ ; ३०)।

उक्कंठिय, उक्कंठिर, उक्कंठुलय वि [**उत्कण्ठित**] उत्सुक ; (गा ५४२ ; सुर ३, ८६; पउम ११, ११८, वज्जा ६०) ।
उक्कंडय सक [**उत्कण्टय्**] पुलकित करना "दियसेवि भूयसंभावणाए उक्कंटयंति अंगाइं" (गउड) ।
उक्कंडय वि [**उत्कण्टक**] पुलकित, रोमाञ्चित , (गउड) ।
उक्कंडा स्त्री [**दे**] घूस, रिशवत ; (दे १, ९२) ।
उक्कंडिअ वि [**दे**] १ आरोपित ; २ खण्डित ; (पड्) ।
उक्कंत वि [**उत्क्रान्त**] ऊंचा गया हुआ , (भवि) ।
उक्कंति, उक्कंती स्त्री [**दे**] देखो **उक्कंदा** ; (दे १, ८७) ।
उक्कंद वि [**दे**] विप्रलब्ध, ठगा हुआ, वञ्चित ; (पड्) ।
उक्कंदल वि [**उत्कन्दल**] अङ्कुरित ; (गउड) ।
उक्कंदि, उक्कंदी स्त्री [**दे**] कूपतुला; (दे १, ८७) ।
उक्कंप अक [**उत्+कम्प्**] काँपना, हिलना ।
उक्कंप पुं [**उत्कम्प**] कम्प, चलन ; (सण ; गा ७३५) ।
उक्कंपिय वि [**उत्कम्पित**] १ चञ्चल किया हुआ, (राज) । २ न. कम्प, हिलन ;
"णीसासुक्कंपिअपुलइएहिं जाणंति णच्चिउं धण्णा ।
अम्हारिसीहिं दिट्ठे, पिअम्मि अप्पावि वीसरिओ"
(गा ३६१) ।
उक्कंपिय वि [**दे**] धवलित, सफेद किया हुआ ; (कप्प) ।
उक्कंबण न [**दे**] काठ पर काठ के हाते से घर की छत बाधना, घर का संस्कार-विशेष , (बृह १) ।
उक्कंबिय वि [**दे**] काठ से बांधा हुआ ; (राज) ।
उक्कच्छ वि [**उत्कच्छ**] स्फुट, स्पष्ट ; (पिंग) ।
उक्कच्छा स्त्री [**उत्कच्छा**] छन्द-विशेष , (पिंग) ।
उक्कच्छिआ स्त्री [**औपकक्षिकी**] जैन साध्वीओ को पहनने का वस्त्र-विशेष ; (ओघ ६७७) ।
उक्कज्ज वि [**दे**] अनवस्थित, चञ्चल ; (पड्) ।
उक्कट्ठि स्त्री [**उत्कृष्टि**] उत्कर्ष, " महता उक्कट्ठिसीहणादकलकलरवेण" (सुज्ज १९—पत्र २७८) । देखो **उक्किट्ठि** ।
उक्कड वि [**उत्कट**] १ तीव्र, प्रचण्ड, प्रखर ; (णदि; महा) । २ विशाल, विस्तीर्ण ; (कप्प; सुर १, १०९) । ३ प्रबल , (उवा ; सुर ६, १७२) ।
°**उक्कड** देखो **दुक्कड** ; (उप ६४६) ।
उक्कडिय वि [**दे**] तोड़ा हुआ, छिन्न ; (पाअ) ।
उक्कडिय देखो **उक्कुड्य** ; (कस) ।
उक्कड्ढग पुं [**अपकर्षक**] चोर की एक जाति—१ जो घर से धन आदि ले जाते हैं, २ जो चोरों को बुलाकर चोरी कराते है, ३ चोर की पीठ ठोकने वाले, चोर के सहायक, (पण्ह १,३ टी)।
उक्कड्ढिय वि [**उत्कर्षित**] १ उत्पाटित, ऊठाया हुआ ; २ एक स्थान से उठा कर अन्यत्र स्थापित ; (पिंड ३६१) ।
उक्कण्ण वि [**उत्कर्ण**] सुनने के लिए उत्सुक ; (से ९, १६) ।
उक्कत्त सक [**उत्+कृत्**] काटना, कतरना । वकृ—**उक्कत्तंत** ; (सुपा २१६) ।
उक्कत्त वि [**उत्कृत्त**] कटा हुआ, छिन्न; (विपा १, २) ।
उक्कत्तण न [**उत्कर्त्तन**] काट डालना, छेदन ; (पुप्फ ३८४) ।
उक्कत्तिय देखो **उक्कत्त**=उत्कृत्त ; (पउम ५६, २४) ।
उक्कत्थण न [**उत्कत्थन**] उखाडना ; (पण्ह १, १) ।
उक्कप्प पुं [**उत्कल्प**] शास्त्र-निषिद्ध आचरण ;(पंचभा)
उक्कम सक [**उत्+क्रम्**] १ ऊँचा जाना । २ उलटे क्रम से रखना । वकृ—**उक्कमंत** ; (आवम) । संकृ—**उक्कमिऊणं** ; (विसे ३५३१) ।
उक्कम पुं [**उत्क्रम**] उलटा क्रम, विपरीत क्रम ; (विसे २७१) ।
उक्कमित वि [**उपक्रान्त**] १ प्रारब्ध ; २ क्षीण,
'अब्भागमितम्मि वा दुहे, अहवा उक्कमिते भवंतीए ।
एगस्स गती य आगती, विदुमं ता सरणं ण मन्नइ"
(सूअ १, २, ३, १७) ।
उक्कर सक [**उत्+कृ**] खोदना । कवकृ—**उक्करिज्जमाण** ; (आवम) ।
उक्कर पुं [**उत्कर**] १ समूह, संघात; "सक्करुक्करसड्ढे" (सुपा ५१८) ; २ कर-रहित, राज-देय शुल्क से रहित ; (णाया १, १)।
उक्करड पुं [**दे**] १ अशुचि राशि ; २ जहां मैला इकठ्ठा किया जाता है वह स्थान ; (श्रा २७; सुपा ३५५) ।
उक्करिअ वि [**दे**] १ विस्तीर्ण, आयत , २ आरोपित ; ३ खण्डित ; (पड्) ।
उक्करिअ वि [**उत्कीर्ण**] खोदित, खोदा हुआ ; "टकुक्करियव्व निच्चलनिहितलोयणा" (महा) ।

उक्करिद (शौ) वि [**उत्कृत**] ऊंचा किया हुआ ; (स्वप्न ३६)।
उक्करिया स्त्री [**उत्करिका**] जैसे एरण्ड के बीज से उसका छिलका अलग होता है उस तरह अलग होना, भेद विशेष ; (भग ५, ४)।
उक्करिस सक [**उत्+ कृष्**] १ खीचना। २ गर्व करना, वड़ाई करना। वकृ—**उक्करिसंत** ; (से १४, ६)।
उक्करिस देखो **उक्कस्स**=उत्कर्ष ; (उव, विसे १७६६)।
उक्करिसण न [**उत्कर्षण**] १ उत्कर्ष, वड़ाई, महत्व। २ स्थापन, आधान ;
"उम्मिल्लइ लायण्णं पययच्छायाए सक्कय वयाणं।
सक्कयसक्कारुक्करिसणेण पययस्सवि पहावो ॥" (गउड)।
उक्करिसिय वि [**उत्कृष्ट**] खीच निकाला हुआ, उन्मूलित ; (से १४, ३)।
उक्कल देखो **उक्कड** ; (ठा ५, ३)।
उक्कल वि [**उत्कल**] १ धर्म-रहित ; २ न. चोरी ; (पराह १, ३ टी)। ३ पुं. देश-विशेष, जिसको आजकल 'उडिया' या 'ओरिसा' कहते हैं ; (प्रवो ७८)।
उक्कलंव सक [**उत्+लम्बय्**] फांसी लटकाना। उ-**क्कलवेमि** ; (स ६३)।
उक्कलंवण न [**उल्लम्बन**] फांसी लटकना ; (स ३५८)।
उक्कलिया स्त्री [**उत्कलिका**] १ लूता, मकड़ी, एक प्रकार का कीड़ा जो जाल वनाता है " उक्कलियंडे " (कप्प)। २ नीचे की तरफ वहने वाला वायु ; (जी ७)। ३ छोटा समुदाय, समूह-विशेष ; (ठा ३, १)। ४ लहरी, तरंग ; (राज)। ५ ठहर ठहर कर तरंग की तरह चलने वाला वायु ; (आचा)।
उक्कस सक [**गम्**] जाना, गमन करना। उक्कसइ ; (हे ४, १६२ ; कुमा)। प्रयो—उक्कसावेइ ; वकृ—**उक्कसावंत** ; (निचू १०)।
उक्कस देखो **ओकस**। वकृ—**उक्कसमाण** ; (कस)। हेकृ—**उक्कसित्तए** ; (आचा २, ३ १, १५)।
उक्कस देखो **उक्कुस** ; (कुमा)।
उक्कस देखो **उक्कस्स**=उत्कर्ष ; (सूत्र १, १, ४, १२) " तवस्सी अइउक्कसो " (दस ५, २, ४२)।
उक्कसण न [**उत्कर्षण**] १ अभिमान करना; (सूत्र १, १३) २ ऊँचा जाना। ३ निवर्तन, निवृत्ति ; ४ प्रेरणा; (राज)।
उक्कसाइ वि [**उत्कशायिन्**] सत्कारादि के लिए उत्कण्ठित ; (उत्त ३)।
उक्कसाइ वि [**उत्कषायिन्**] प्रवल कषाय वाला ; (उत्त १५)।
उक्कस्स अक [**अप+कृष्**] १ ह्रास प्राप्त होना, हीन होना। २ फिछलना; गिरना, पैर रपटने से गिर जाना। वकृ—**उ-क्कस्समाण** ; (ठा ५)।
उक्कस्स पुं [**उत्कर्ष**] १ गर्व, अभिमान ; (सूत्र १, १, ४, २)। २ अतिशय, उत्कृष्टता ; (भवि)।
उक्कस्स वि [**उत्कर्षवत्**] १ उत्कृष्ट, ज्यादः से ज्यादः " उक्कस्सठिईयाणं " (ठा १, १) ; " उक्कस्सा उदीरणया " (कम्मप १६६)। २ अभिमानी, गर्विष्ठ; (सूत्र १, १)।
उक्का स्त्री [**उल्का**] १ लूका, आकाश से जो एक प्रकार का अंगार सा गिरता है ; (ओघ ३१० भा ; जी ६)। छिन्न मूल दिग्दाह ; (आचू)। ३ अग्नि-पिण्ड ; (ठा ८)। ४ आकाश-वह्नि, (दस ४)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ अन्तर्द्वीप-विशेष ; २ उसके निवासी लोक ; (ठा ४, २)। °**वाय** पुं [°**पात**] तारा का गिरना, लूका गिरना। (भग ३, ६)।
उक्का स्त्री [**दे**] कूप-तुला (दे १, ८७)।
उक्काम सक [**उत्+क्रमिय्**] दूर करना, पीछे हटाना। " उक्कामयति जीवं धम्माओ तेण ते कामा " (दसनि २—पत्र ८७)।
उक्कारिया देखो **उक्करिया** ; (पण्ण ११ ; भास ७)।
उक्कालिय वि [**उत्कालिक**] वह शास्त्र, जिसका अमुक समय में ही पढने का विधान न हो ; (ठा २,१)।
उक्कास देखो **उक्कस्स**=उत्कर्ष ; (भग १२, ५)।
उक्कास वि [**दे**] उत्कृष्ट ; ज्यादः से ज्यादः ; (पड्)।
उक्कासिअ वि [**दे**] उत्थित, उठा हुआ ; (दे १, ११४)।
उक्किट्ठ वि [**उत्कृष्ट**] १ उत्कृष्ट, उत्तम ; (हे १, १२८; दं २६)। २ फल का शस्त्र-द्वारा किया हुआ टुकड़ा ; (दस ५, १, ३४)।
उक्किट्ठि स्त्री [**उत्कृष्टि**] हर्ष-ध्वनि, आनन्द का आवाज ; (औप ; भग २, १)। देखो **उवकट्ठि**।

उक्किण्ण वि [**उत्कीर्ण**] १ खोदित, खोदा हुआ ; (अभि १८२)। २ नष्ट ; (आचू २)।

उक्कित्त वि [**उत्कृत्त**] कटा हुआ , (से ५, ५१)।

उक्कित्तण न [**उत्कीर्त्तन**] १ कथन ; (पउम ११८, ३)। २ प्रशंसा, श्लाघा ; (चउ १)।

उक्कित्तिय वि [**उत्कीर्त्तित**] कथित, कहा हुआ , (चंद २)।

उक्किर सक [**उत्+कॄ**] खोदना, पत्थर आदि पर अक्षर वगैरः का शस्त्र से लिखना। उक्किरइ ; (पि ४७७)।

उक्किरिय देखो **उक्करिअ**=उत्कीर्ण ; (श्रा १४ ; सुपा ५१८)।

उक्कीर देखो **उक्किर**। उक्कीरसि ; (अणु)। वकृ—**उक्कीरमाण** ; (अणु)।

उक्कीरिअ देखो **उक्करिअ**=उत्कीर्ण ; (उप पृ ३१५)।

उक्कीलिय न [**उत्क्रीडित**] उत्तम क्रीड़ा ; (पउम ११५, ६)।

उक्कीलिय वि [**उत्कीलित**] कीलक से नियन्त्रित ; " उक्कीलिउव्व परिथंभिउव्व सुन्नुव्व मुक्कजीउव्व " (सुपा ४७५)।

उक्कुंड वि [**दे**] मत्त, उन्मत्त ; (दे १, ९१)।

उक्कुक्कुर अक [**उत्+स्था**] उठना, खड़ा होना। उक्कुक्कुरइ ; (हे ४, १७ ; षड्)।

उक्कुज्ज अक [**उत्+कुब्ज्**] ऊँचा होकर नीचा होना। संकृ—**उक्कुज्जिय** ; (आचा)।

उक्कुज्जिय न [**उत्कूजित**] अव्यक्त शब्द ; (निचू)।

उक्कुट्ट न [**उत्कुष्ट**] वनस्पति का कूटा हुआ चूर्ण ; (आचा ; निचू १ ; ४)।

उक्कुट्ठ न [**उत्क्रुष्ट**] ऊँचे स्वर से रोदन ; (दे १, ४७)।

उक्कुडुग } **उक्कुडुय** } वि [**उत्कुटुक**] आसन-विशेष, निषद्या-विशेष ; (भग ७. ६ ; ओघ १५६ भा ; णाया १, १)। स्त्री—उक्कुडुई ; (ठा ५, १)। °**ासणिय** वि [°**ासनिक**] उत्कुटुक-आसन से स्थित ; (ठा ५, १)।

उक्कुद्द अक [**उत्+कूर्द्**] कूदना, उछलना। उक्कुद्दइ ; (उत्त २७, ५)।

उक्कुरुड पुं [**दे**] राशि, ढग ; (दे १, ११०)।

उक्कुरुडिगा } **उक्कुरुडिया** } **उक्कुरुडी** } स्त्री [**दे**] घूरा, कूड़ा डालने की जगह , (उप ५९३ टी ; विपा १, १, णाया १, २; दे १, ११०)।

उक्कुस सक [**गम्**] जाना, गमन करना। उक्कुसइ ; (हे ४, १६२)।

उक्कुस वि [**उत्कृष्ट**] उत्तम, श्रेष्ठ ; (कुमा)।

उक्कूइय वि [**उत्कूजित**] अव्यक्त महा-ध्वनि ; (पण्ह १, १)।

उक्कूल वि [**उत्कूल**] १ सन्मार्ग से भ्रष्ट करने वाला ; २ किनारे से बाहर का ; ३ चोरी ; (पण्ह १, ३)।

उक्कूव अक [**उत्+कूज्**] अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना। वकृ—**उक्कूवमाण** ; (विपा १, ८ ; निर ३, १)।

उक्केर पुं [**उत्कर**] १ समूह, राशि ; ढग ; (कुमा ; महा)। २ करण-विशेष, कर्मों की स्थित्यादि को बढाना ; (विसे २५१४)। ३ भिन्न, एरण्ड के बीज की तरह जो अलग किया गया हो वह ; (राज)।

उक्केर पुं [**दे**] उपहार, भेंट ; (दे १, ९६)।

उक्केल्लाविय वि [**दे**] उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ ; " राइणा उक्केलियाइं चोल्लयाइं, निरूवियाइं समन्तओ, जाव दिट्ठं कत्थइ सुवण्णं, कत्थइ रुप्पयं, कत्थइ मणिमोत्तियपवालाइं " (महा)।

उक्कोट्टिय वि [**दे**] अवरोध-रहित किया हुआ, घेरा उठाया हुआ ; (स ६३९)।

उक्कोड न [**दे**] राज-कुल में दातव्य द्रव्य, राजा आदि को दिया जाता उपहार ; (वव १, १)।

उक्कोडा स्त्री [**दे**] घूस, रिशवत ; (दे १, ९२ ; पण्ह १, ३ ; विपा १, १)।

उक्कोडिय वि [**दे**] घूस लेकर कार्य करने वाला, घुसखोर ; (णाया १, १ ; औप)।

उक्कोडी स्त्री [**दे**] प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ; (दे १, ९४)।

उक्कोय वि [**उत्कोप**] प्रखर, उत्कट ; (सण)।

उक्कोयण देखो **उक्कोवण** ; (भवि)।

उक्कोया स्त्री [**उत्कोचा**] १ घूस, रिशवत ; २ मूर्ख को ठगने में प्रवृत्त धूर्त पुरुष का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से, थोड़ी देर के लिए अपने कार्य को स्थगित करना ; (राज)।

उक्कोल पु [**दे**] घाम, धूप, गरमी ; (दे १, ८७)।

उक्कोवण न [**उत्कोपन**] उद्दीपन, उत्तेजन ; " मयणुक्कोवण " (भवि)।

उक्कोविअ वि [**उत्कोपित**] अत्यंत क्रुद्ध किया हुआ; (उप पृ ७८)।

उक्कोस सक [**उत्+क्रुश्**] १ रोना, चिल्लाना। २ तिरस्कार करना। वकृ—**उक्कोसंत** ; (राज)।

उक्कोस पुं [**उत्कर्ष**] १ प्रकर्ष, अतिशय; "उक्कोस-जहन्नेणं अंतमुहुत्तं चिय जियंति" (जी ३८; औप)। २ गर्व, अभिमान; (सूअ १, २, २, २६; सम ७१; ठा ४, ४—पत्र २७४)।

उक्कोस वि [**उत्कृष्ट**] उत्कृष्ट, अधिक से अधिक; "सुरनेरइयाण ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीसं" (जी ३६); कोसतिगं च मणुस्सा उक्कोससरीरमाणेणं" (जी ३२); तओ वियडदत्तीओ पडिगाहित्तए, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा" (ठा ३; उव)।

उक्कोस पुं [**उत्क्रोश**] १ कुरर, पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १)। २ जोर से चिल्लाने वाला; (राज)।

उक्कोसण न [**उत्क्रोशन**] १ क्रन्दन। २ निर्भर्त्सन, तिरस्कार;

"उक्कोसणतज्जणताडणाओ अवमाणहीलणाओ य।
मुणिणो मुणियपरभवा दढप्पहारिव्व विसहंति" (उव)।

उक्कोसिअ वि [**उत्क्रोशित**] भर्त्सित, तिरस्कृत, धूतकारा हुआ; (उप पृ ७८)।

उक्कोसिअ देखो **उक्कोस**=उत्कृष्ट; (कप्प; भत्त ३७)।

उक्कोसिअ पुं [**उत्कौशिक**] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक एक ऋषि; २ न. गोत्र-विशेष; "थेरस्स णं अज्जवइरसेणस्स उक्कोसियगोत्तस्स" (कप्प)।

उक्कोसिअ वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

उक्कोसिया स्त्री [**उत्कृष्टि**] उत्कर्ष, आधिक्य; (भग)।

उक्कोस्स देखो **उक्कोस**=उत्कृष्ट; (विसे ५८७)।

उक्ख सक [**उक्ष्**] सिंचना; (सूअ २, २, ५५)।

उक्ख पुं [**उक्ष**] १ संबन्ध; (राज)। २ जैन साध्वीओं के पहनने के वस्त्र-विशेष का एक अंश; (बृह १)।

उक्ख देखो **उच्छ**=उक्षन्; (पाअ)।

उक्खइअ वि [**उत्खचित**] व्याप्त, भरा हुआ; (से १, ३३)।

उक्खंड सक [**उत्+खण्डय्**] तोड़ना, टुकड़ा करना। वकृ—**उक्खंडंत** ; (नाट)।

उक्खंड पुं [**दे**] १ संघात, समूह; २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश; (दे १, १२६)।

उक्खंडण न [**उत्खण्डन**] उत्कर्तन, विच्छेदन; (विक्र २८)।

उक्खंडिअ वि [**उत्खण्डित**] खण्डित, छिन्न; (से ५, ४३)।

उक्खंडिअ वि [**दे**] आक्रान्त, दवाया हुआ; (दे १, ११२)।

उक्खंद पुं [**अवस्कन्द**] १ घेरा डालना; २ छल से शत्रु-सैन्य को मारना; (पण्ह १, ३)।

उक्खंभ पुं [**उत्तम्भ**] अवलम्ब, सहारा; (संथा)।

उक्खंभिय देखो **उत्थंभिय** ; (भवि)।

उक्खंभिय न [**औत्तम्भिक**] अवलम्ब, सहारा; (राज)।

उक्खडमड्डु अ [**दे**] पुनः पुनः, वारंवार; "उक्खडमड्डुत्ति वा भुज्जो भुज्जोत्ति वा पुणो पुणोत्ति वा एगट्ठा" (वव २, १)।

उक्खण सक [**उत्+खन्**] उखेडना, उच्छेदन करना, काटना। **उक्खणाहि** ; (पण्ह १, १)। संकृ—**उक्खणिऊण** ; (निचू १)। कर्म—**उक्खम्मंति** ; (पि ५४०)। कवकृ—**उक्खम्मंत** ; (से ७, २८)। कृ—**उक्खम्मिअव्व** ; (से १०, २६)।

उक्खण सक [**दे**] खांडना, कूटना, मुशल वगैरः से व्रीहि आदि का छिलका दूर करना; (दे १,११५)।

उक्खण वि [**दे**] अवकीर्ण, चूर्णित; (षड्)।

उक्खणण न [**उत्खनन**] उन्मूलन, उत्पाटन; (पण्ह १, १)।

उक्खणण न [**दे**] खांडना, निस्तुषीकरण; (दे १, ११५ टी)।

उक्खणिअ न [**दे**] खण्डित, निस्तुषीकृत; (दे १, ११५)।

उक्खत्त देखो **उक्खय** ; (पि ९०; १९३; ५६६)।

उक्खम्म° देखो **उक्खण**= उत्+खन्।

उक्खय वि [**उत्खात**] १ उखाडा हुआ, उन्मूलित; (णाया १, ७; हे १, ६७; षड्; महा)। २ खुला हुआ, उद्घाटित;

"एत्थन्तरम्मि पत्तो, सुदाढविज्जाहरो तहिं भवणे।
उक्खयखग्गा-दिट्ठा, जूयारा तेणवि दुवारे"
(सुपा ४००)।

उक्खल } **उक्खलग** } देखो **उऊखल** ; (हे २, ९०; सूअ १, ४, २, १२)।

उक्खलिय वि [दे. उत्खण्डित] उन्मूलित, उत्पाटित ; (से ६, ३६) ।

उक्खलिया, **उक्खली** स्त्री [दे] थाली, पात्र-विशेष ; (दे १, ८८) ; " उक्खलिया थाली जा साधुणिमित्तं सा आहाकम्मिया " (निचू १) ।

उक्खा स्त्री [उखा] स्थाली, भाजन-विशेष ; (आचा २, १, १) ।

उक्खाइद (शौ) वि [उत्खातित] उद्धृत ; (उत्तर ६७) ।

उक्खाय देखो **उक्खय** ; (हे १, ६७ ; गा २७३) ।

उक्खाल सक [उत्+खन्, खालय्] उखाड़ना, उन्मूलन करना । संकृ—**उक्खालइत्ता** ; (रंभा) ।

उक्खिण देखो **उक्खण**=उत्+खन् । उक्खिणमि ; (भवि) । संकृ—**उक्खिणिवि** (अप) ; (भवि) ।

उक्खिण्ण वि [दे] १ अवकीर्ण, ध्वस्त, चूर्णित ; २ छन्न, गुप्त ; ३ पार्श्व में शिथिल, एक तरफ से ढीला ; (दे १, १३०) ।

उक्खित्त, **उक्खित्तय** वि [उत्क्षिप्त] १ फेंका हुआ ; २ ऊँचा उडाया हुआ ; (पाअ) । ३ ऊँचा किया हुआ ; (गाया १, १) । ४ उन्मूलित, उत्पाटित ; (राज) । ५ बाहर निकाला हुआ ; (पण्ह २, १) । ६ उत्थित ; (पिंग) । ७ न. गेय-विशेष ; (राय ; ठा ४, ४) । °**चरय** वि [°चरक] पाक-पात्र से बाहर निकाले हुए भोजन को ही ग्रहण करने का नियम वाला (साधु) ; (पण्ह २, १) ।

उक्खिप्प देखो **उक्खिव**=उत्+क्षिप् ।

उक्खिय वि [उक्षित] सिक्त, सिंचा हुआ ; ' चंदणोक्खिय-गायसरीरे " (सूअ २, २, ५५ ; कप्पू) ।

उक्खिव सक [उप + क्षिप्] स्थापन करना ; " सुयस्स य भगवओ चेव नामं उक्खिविस्सामो " । (स १६२) ।

उक्खिव सक [उत्+क्षिप्] १ फेंकना । २ ऊँचा फेंकना । ३ उडाना । ४ बाहर करना । ५ काटना । ६ उठाना । उक्खिवेइ ; (सूक्त ५६) । वकृ—" पाएवि **उक्खिवंती** न लज्जति णट्टिया सुणेवत्था " (बृह ३) । संकृ—**उक्खिविउं** ; **उक्खिप्प** ; (पि ५७५ ; आचा २, २, ३) । कवकृ—**उक्खिप्पंत, उक्खिप्पमाण** ; (से ६, ३५ ; पण्ह १, ४) ; **उच्छिप्पंत** ; (से २, १३) ।

उक्खिवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना, दूर करना । २ वि. दूर करने वाला ; (कुमा) ।

उक्खिवणा स्त्री [उत्क्षेपणा] बाहर करना, दूर करना ; (बृह १) ।

उक्खिविय देखो **उक्खित्त** ; (सुर २, १८०) ।

उक्खुंड पुं [दे] १ उल्मुक, अलात, मसाल ; २ समूह ; ३ वस्त्र का एक अंश, अञ्चल ; (दे १, १२५) ।

उक्खुड सक [तुड्] तोड़ना, टुकडा करना । उक्खुडइ ; (हे ४, ११६) ।

उक्खुडिअ वि [तुडित] १ खण्डित, छिन्न, भिन्न ; (कुमा ; से ४, २१ ; सुपा २६२) । २ व्यय किया हुआ, खर्च किया हुआ,

" एत्तियकाला इण्हिं, उक्खुडियं सालिमाइयं नाउं ।
तुह जोग्गं तो सहसा, पुणो पुणो कुट्टियं हिययं "
(सुपा १५) ।

उक्खुत्त वि [दे. उत्कृत्त] काटा हुआ ; " रणुदुर-दतुक्खुत्तविसंवलियं तिलच्छेत्तं " (गा ७६६) ।

उक्खुरुहुंचिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (दे १, ४) ।

उक्खुहिअ वि [उत्क्षुब्ध] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त ; (से ७, १६) ।

उक्खेव पुं [उत्क्षेप] १ उत्पाटन, उन्मूलन ; (औप) । २ ऊँचा करना ; (गउड) । ३ जो उठाया जाय वह ; "उक्खेवे निक्खेवे महल्लभाणम्मि " (पिंड ५७०) ।

उक्खेव पुं [उपक्षेप] उपोद्घात, भूमिका ; (उवा ; विपा १, २ ; ३ ; ४) ।

उक्खेवग वि [उत्क्षेपक] १ ऊँचा फेंकने वाला । २ पुं. एक जात का पंखा , व्यजन-विशेष ; (पण्ह २, ५) ।

उक्खेवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना ; (पउम ३७, ५०) । २ उन्मूलन, उत्पाटन ; (सूअ २, १) ।

उक्खेविअ वि [उत्क्षेपित] जलाया हुआ (धूप) ; (भवि) ।

उक्खोडिअ वि [उत्खोटित] १ उत्क्षिप्त, उडाया हुआ ; (पाअ) । २ छिन्न, उखाडा हुआ ; (दे १, १०५ ; १११) ।

उग अक [उत्+गम्] उदित होना । उगइ ; (नाट) ।

उग (अप) वि [उद्गत] उदित ; (पिंग) ।

उगाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (षड्) ।

उग्ग अक [उद्+गम्] उदित होना। उग्गे, (पिंग)। वकृ—**उग्गंत**, "देव! पणयजणकल्लाणकंदुट्टविसट्टणुग्गंतमिह (? हि) राणुगारिणो" (धर्मा ५)।

उग्ग सक [उद्+घाटय्] खोलना। उग्गइ; (हे ४, ३३)।

उग्ग वि [उग्र] १ तेज, तीव्र, प्रबल, (पउम ८३, ४)। २ क्षत्रिय की एक जाति, जिसको भगवान् आदिदेव ने आरक्षक-पद पर नियुक्त की थी; (ठा ३, १)। °**वई** स्त्री [°वती] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध नन्दा-तिथि की रात; (जं ७)। °**सिरि** पुं [°श्रीक] राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लंकेश; (पउम ५, २६४)। °**सेण** पुं [°सेन] मथुरा नगरी का एक यदुवंशीय राजा; (णाया १, १६; अंत)।

उग्गंध वि [उद्गन्ध] अत्यन्त सुगन्धित; (गउड)।

उग्गच्छ } अक [उद्+गम्] उदय-प्राप्त होना, उदित **उग्गम** } होना। उग्गच्छदि (शौ); (नाट)। उग्गमइ; (वज्जा १६)। उग्गमेज्ज; (काल)। वकृ—**उग्गमंत, उग्गममाण**; (सुपा ३८; पण्ण १)।

उग्गम पुं [उद्गम] १ उत्पत्ति, उद्भव; "तत्थुग्गमो पसूई पभवो एमाई होंति एगट्ठा" (राज)। २ उदय, "सूरुग्गमो" (सुर ३, २५०)। ३ उत्पत्ति से संबन्ध रखने वाला एक भिक्षा-दोष; (ओघ ६५; ५३० भा; ठा १०)।

उग्गमिय वि [उद्गमित] उपार्जित; (निचू २)।

उग्गय वि [उद्गत] उत्पन्न, जात; (आव ३)। २ उदित, उदय-प्राप्त; (सुर ३, २४७)। ३ व्यवस्थित, (राज)।

उग्गह सक [रचय्] रचना, बनाना, निर्माण करना, करना। उग्गहइ; (हे ४, ६४)।

उग्गह सक [उद्+ग्रह] ग्रहण करना। उग्गहेइ; (भग)। संकृ—**उग्गहित्ता**; (भग)।

उग्गह पुं [अवग्रह] इन्द्रिय-द्वारा होने वाला सामान्य ज्ञान-विशेष; (विसे)। २ अवधारण, निश्चय; (उत्त)। ३ प्राप्ति, लाभ; (आचू)। ४ पात्र, भाजन; (पंचा ३)। ५ साध्वीओं का एक उपकरण; (ओघ ६६६; ६७६)। ६ योनि-द्वार; (बृह ३)। ७ ग्रहण करने योग्य वस्तु; (पण्ह १, ३)। ८ आश्रय, आवास-स्थान, वसति; (आचा); "आहापडिरूवं उग्गहं ओगिन्हित्ता" (णाया १, १)। ६ वह वस्तु, जिस पर अपना प्रभुत्व हो, अधीन चीज; (बृह ३)। १० देव या गुरु से जितनी दूरी पर रहने का शास्त्रीय विधान है उतनी जगह, मर्यादित भू-भाग, गुर्वादि की चारों तरफ की शरीर प्रमाण जमीन; "अणुजाणह मे मिउग्गहं" (पडि)। °**णंत**, °**णंतग** न [°नन्त, °क] जैन साध्वीओं का एक गुह्याच्छादक वस्त्र; जांघिया, लंगोट; "छादतोग्गहणंतं" (बृह ३)। °**पट्ट, °पट्टग** पुंन [°पट्ट, °क] देखो पूर्वोक्त अर्थ; "नो कप्पइ निग्गंथाणं उग्गहणंतगं वा उग्गहपट्टगं वा धारित्तए वा परिहरित्तए वा" (बृह ३)।

उग्गहण न [अवग्रहण] इन्द्रिय-द्वारा होने वाला सामान्य ज्ञान; "अत्थाणं उग्गहणं अवग्गहं" (विसे १७६)।

उग्गहिअ वि [रचित] १ निर्मित, विहित; (कुमा)।

उग्गहिअ वि [अवगृहीत] १ सामान्य रूप से ज्ञात; २ परोसने के लिए उठाया हुआ; (ठा १)। ३ गृहीत; ४ आनीत; ५ मुख में प्रक्षिप्त; "तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते;—जं च उग्गिण्हइ, जं च साहरइ, जं च आसगम्मि पक्खिवति" (वव २, ८)।

उग्गहिअ वि [दे] निपुण-गृहीत, अच्छी तरह लिया हुआ; (दे १, १०४)।

उग्गा सक [उद्+गै] १ ऊँचे स्वर से गाना, गान करना। २ वर्णन करना। ३ श्लाघा करना।

"उग्गाइ गाइ हसइ, असंवुडो सयं करेइ कंदप्पं।
गिहिकज्जचिंतगो वि य, ओसन्ने देइ गेण्हइ वा" (उव)।

वकृ—**उग्गायंत**; (सुर ८, १८६)। कवकृ—**उग्गीयमाण**; (पउम २, ४१)।

उग्गाढ वि [उद्गाढ] १ अति-गाढ, प्रबल, (उप ६८६ टी; सुपा ६४)। २ स्वस्थ, तदुरस्त; (बृह १)।

उग्गायंत देखो **उग्गा**।

उग्गार } पुं [उद्गार] १ वचन, उक्ति; "ते पिसुणा **उग्गाल** } जे ण सहंति णिग्गुणा परगुणुग्गारे" (गउड)। २ शब्द, आवाज, ध्वनि; "तियसरहपेल्लियघणो णहदुदुहिवहलगज्जिउग्गारो", "अहिताडियकंसुग्गारझंझणांपडिरवाहोओ" (गउड)। ३ डकार; ४ वमन, ओकाई; (नाट; कस) "जिणझाणालणाडज्झंतमयणधूमुग्गारेणं पिव .. ..केसकलावेणं" (स ३१३; निचू १०)। ५ जल का छोटा प्रवाह, "उग्गालो छिंछोली" (पाअ)। ६ रोमन्थ, पगुराना, "रोमंथो उग्गालो" (पाअ)।

उग्गाह सक [उद् + ग्रह्] ग्रहण करना ; " भायणवत्थाइं पमज्जइ , पमज्जइत्ता भायणाइं **उग्गाहेइ** " (उवा)। संकृ—" **उग्गाहेत्ता** जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ " (उवा)।

उग्गाह सक [अव+गाह्] अवगाहन करना । " उग्गाहेंति नाणाविहाओ चरिगच्छामहियाओ " (स १७)।

उग्गाह पुं देखो **उग्गाहा** , (पिंग)।

उग्गाहण न [उद्ग्राहण] तगादा, दी हुई चीज की माँग ; (सुपा ५७८)।

उग्गाहणिआ स्त्री [उद्ग्राहणिका] ऊपर देखो " उज्जाणपालयाणं पासम्मि गओ तया सोवि। उग्गाहणियाहेउं " (सुपा ६३२)।

उग्गाहणी स्त्री [उद्ग्राहणी] ऊपर देखो ; (द्र ६)।

उग्गाहा स्त्री [उद्गाथा] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

उग्गाहिअ वि [दे. उद्ग्राहित] १ गृहीत, लिया हुआ ; २ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; ३ प्रवर्तित ; (दे १, १३७)। ४ उचालित, ऊँचे से चलाया हुआ ; (पात्र; स २१३)।

उग्गाहिम वि [अवगाहिम] तली हुई वस्तु ; (पराह २, ५)।

उग्गिण्ण } वि [उद्गीर्ण] १ उक्त, कथित ; (भवि)।
उग्गिन्न } २ वान्त, उद्गीर्ण ; (गाया १, १)। ३ उठाया हुआ, ऊपर किया हुआ ;
" उग्गिन्नखग्गमवलं, अवलोइय नरवईवि विम्हइओ।
चिंतेइ अहो धट्ठा, मज्झ वहट्ठा इह पविट्ठा" (सुर १६, १४७),
" निदय ! नियविणीवहकलंकमलिणोव्व र तुमं जाओ।
उग्गिन्नखग्गपसरतकंतिसामलियसव्वंगो " (सुपा ५३८)।

उग्गिर देखो **उग्गिल** । उग्गिरइ ; (मुद्रा १२१)। वकृ—**उग्गिरंत** ; (काल)।

उग्गिरण न [उद्गरण] १ वान्ति, वमन , २ उक्ति, कथन; " मायालिणोवि अवमाणवंचणा ते परस्स न करेंति।
सुहदुक्खुग्गिरणत्थं, साहू उयहिव्व गंभीरा " (उव)।

उग्गिल सक [उद्+गॄ] १ कहना, बोलना। २ डकार करना। ३ उलटी करना, वमन करना। ४ उठाना। वकृ—" अग्गिजालुग्गिलंतवयणं " (गाया १, ८)। संकृ—**उग्गिलित्ता** ; (कप्प), **उग्गिलेत्ता** ; (निचू १०)।

उग्गिलिअ देखो **उग्गिण्ण** ; (पात्र)।

उग्गीय वि [उद्गीत] १ उच्च स्वर से गाया हुआ ; (दे १, १६३)। २ न. संगीत, गीत, गान ; (से १, ६५)।

उग्गीयमाण देखो **उग्गा** ।

उग्गीर देखो **उग्गिर** । वकृ—" खग्गं **उग्गीरंतो** इत्थिवहत्थं, हयासलायाणं " (सुपा १५८)।

उग्गीरिअ देखो **उग्गिण्ण** ; " उग्गीरिओ ममोवरि, जमजीहादीहतरलकरवाल। " (सुपा १५८)।

उग्गीव वि [उद्ग्रीव] उत्कण्ठित, उत्सुक ; (कुमा)। °**क्कय** वि [°कृत] उत्कण्ठित किया हुआ ; (उप १०३१ टी)।

उग्गुलुंछिआ स्त्री [दे] हृदय-रस का उछलना, भावोद्रेक , (दे १, ११८)।

उग्गोव सक [उद्+गोपय्] १ खोजना। २ प्रकट करना। ३ विमुग्ध करना। वकृ—" इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किरहसुत्तगं वा जाव सुकिल्लसुत्तगं वा पासमाणे पासति, **उग्गोवेमाणे** उग्गोवेइ " (भग १६, ६)।

उग्गोवणा स्त्री [उद्गोपना] १ खोज, गवेषणा ;
" एसण गवेसणा लग्गणा य उग्गोवणा य बोद्धव्वा।
एए उ एसणाए नामा एगट्ठिया होंति " (पिंड ७३)।
२ देखो **उग्गम** ; " उग्गम उग्गोवण मग्गणा य एगट्ठियाणि एयाणि " (पिंड ८५)।

उग्गोविय वि [उद्गोपित] विमोहित, भ्रान्त , " उग्गोवियमिति अप्पाणं मन्नति " (भग १६, ६)।

उग्घ देखो **उंघ** । उग्घइ ; (षड्)।

उग्घट्टि } स्त्री [दे] अवतंस, शिरो-भूषण ; (दे
उग्घट्टी } १, ६०)।

उग्घड सक [उद्+घाटय्] खोलना ; (प्रामा)।

उग्घडिअ वि [उद्घाटित] खुला हुआ। २ छिन्न, नष्ट किया हुआ ; (से ११, १३०)।

उग्घर वि [उद्गृह] गृह-त्यागी, जिसने घरबार छोड कर संन्यास लिया हो वह, साधु ;
" चंदोव्व कालपक्खे परिहाई पए पए पमायपरो।
तह उग्घरविग्घरनिरंगणो वि नय इच्छियं लहइ "
(गाया १, १० टी)।

उग्घव देखो **अग्घव** । उग्घवइ ; (हे ४, १६६ टि ; गज)।

उग्घाअ पुं [दे] १ समूह, सघात ; (दे १, १२६ ; स ७७; ४३६ ; गउड ; से ५, ३४)। २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश ; (दे १, १२६)।

उग्घाअ पुं [उद्घात] १ आरम्भ, प्रारभ ; " उग्घाओ आरंभो " (पाअ)। २ प्रतिघात, ठोकर लगना ; ३ लघूकरण, भाग पात ; (ठा ३)। ४ उपोद्घात, भूमिका ; (विसे १३४८)। ५ हास ; (ठा ५, २)। ६ न. प्रायश्चित-विशेष ; ७ निशीथ सूत्र का एक अंश, जिसमें उक्त प्रायश्चित का वर्णन है ; " उग्घायमणुग्घायं आरोवण तिविहमो निसीहं तु " (आव ३)।

उग्घाइम वि [उद्घातिम] १ लघु, छोटा ; २ न. लघु प्रायश्चित ; (ठा ३)।

उग्घाइय वि [उद्घातित] १ विनाशित ; (ठा १०)। २ न. लघु प्रायश्चित ; (ठा ५)।

उग्घाइय न [उद्घातिक] लघु प्रायश्चित ; (कस)।

उग्घाड सक [उद्+घाटय्] १ खोलना। २ प्रकट करना। ३ बाहर करना। उग्घाडइ ; (हे ४, ३३)। उग्घाडए ; (महा)। संकृ—**उग्घाडिऊण** ; (महा)। कृ—**उग्घाडिअव्व** ; (श्रा १६)। कवकृ— **उग्घाडिज्जंत** ; (से ५, १२)।

उग्घाड वि [उद्घाट] १ खुला हुआ, अनाच्छादित ; (पउम ३६, १०७)। २ थोड़ा बन्द किया हुआ ; " उग्घाडकवाडउग्घाडणाए " (आव ४)। ३ व्यक्त, प्रकट ; ४ परिपूर्ण, अन्यून ; " एत्थंतरम्मि उग्घाडपोरिसीसूयगो वली पत्तो " (सुपा ६७)।

उग्घाडण न [उद्घाटन] १ खोलना ; (आव ४)। २ वाहर करना, वाहर निकालना ; (उप पृ ३६७)।

उग्घाडणा स्त्री [उद्घाटना] ऊपर देखो ; (आव ४)।

उग्घाडिअ वि [उद्घाटित] १ खुला हुआ ; २ प्रकटित, प्रकाशित ; (से २, ३७)।

उग्घायण न [उद्घातन] १ नाश, विनाश ; (आचा)। २ पूज्य स्थान, उत्तम जगह ; ३ सरोवर में जाने का मार्ग ; (आचा २, ३)।

उग्घार पुं [उद्घार] सिञ्चन, छिटकाव ; " विणिंतरहिरुग्घारं निवडिओ धरणिवट्टे " (स ५६८)।

उग्घिट्ट } वि [उद्घृष्ट] संघृष्ट " नमिरसुरकिरीडुग्घिट्ट-
उग्घुट्ट } पायारविंदं " (लहुअ ४ ; से ६, ८०)।

उग्घुट्ठ [उद्घुष्ट] घोषित, उद्घोषित ; (सुर १०, १४ ; सण), " अमरवहुग्घुट्ठजयजयारवं " (महा)।

उग्घुट्ठ वि [दे] उत्प्रोञ्छित, लुप्त, दूरीकृत, विनाशित ; (दे १, ६६ ;) उग्घालिरवेणीमुहथणलग्गुग्घुट्ठमहिरआ .जणअसुआ " (से ११, १०२)।

उग्घुस सक [मृज्] साफ करना मार्जन करना। उग्घुसइ; (हे ४, १०५)।

उग्घुस सक [उद्+घुष्] देखो **उग्घोस**। संकृ—**उग्घुसिअ** ; (नाट)।

उग्घुसिअ वि [मृष्ट] मार्जित, साफ किया हुआ ; (कुमा)।

उग्घोस सक [उद्+घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना, जाहिर करना। उग्घोसह ; (विपा १, १)। वकृ—**उग्घोसेमाण** ; (विपा १, १ ; णाया १, ५)। कवकृ—**उग्घोसिज्जमाण** ; (विपा १, २)।

उग्घोस पुं [उद्घोष] नीचे देखो ; (स्वप्न २१)।

उग्घोसणा स्त्री [उद्घोषणा] डोंडी पिटवाना, ढिढोरा पिटवा कर जाहिर करना ; (विपा १, १)।

उग्घोसिय वि [मार्जित] साफ किया हुआ " उग्घोसियसुनिम्मलं व आयंसमंडलतलं " (पण्ह २, ५)।

उग्घोसिय वि [उद्घोषित] जाहिर किया हुआ, घोषित ; (भवि)।

उघूण वि [दे] पूर्ण, भरपूर ; (षड्)।

उचिय वि [उचित] योग्य, लायक, अनुरूप ; (कुमा ; महा)। °**ण्णु** वि [°ज्ञ] विवेकी ; (उप ७६८ टी)।

उच्च न [दे] नाभि-तल ; (दे १, ८६)।

उच्च } वि [**उच्च, °क, उच्चैस्**] १ ऊँचा ;
उच्चअ } (कुमा)। २ उत्तम, उत्कृष्ट ; (हे २, १५४ ; सुअ १, १०)। °**च्छंद** वि [°**च्छन्दस्**] स्वैर, स्वेच्छाचारी ; (पण्ह १, २)। °**णागरी** देखो °**नागरी** ; (कप्प)। °**त्त** न [**त्व**] १ ऊँचाई; (सम १२; जी २८)। २ उत्तमता ; (ठा ४, १)। °**त्तभयग, °त्तभयय** पुं [°**त्वभृतक**] जिसमें समय और वेतन का इकरार कर यथासमय नियत काम लिया जाय वह नौकर ; (राज ; ठा ४, १)। °**त्तरिया** स्त्री [°**त्तरिका**] लिपि-विशेष ; (सम ३५)। °**त्थवणय** न [°**स्थापनक**] लम्बगोलाकार वस्तु-विशेष, " धणगस्स णं अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तवरूवलावन्ने होत्था, से जहानामए करगगीवा इवा कुंडियागीवा इवा उच्चत्थवणए इवा " (अनु)। °**वचिआ**

स्त्री [°वचिका] ऊँचा-नीचा करना, जैसे तैसे रखना, "कह तंपि तुइ ण णाअं जह सा आसं दआस बहुआणं। काऊण उच्चवचिअं तुह दंसणलेहला पडिआ" (गा ६६७)। °वाय पुं [°वाद] प्रशंसा, श्लाघा; (उप ७२८ टी)। देखो उच्चा।

उच्चइअ वि [उच्चयित] एकत्रीकृत, इकट्ठा किया हुआ; (काल)।

उच्चंतय पुं [उच्चन्तग] दन्त-रोग, दान्त में होने वाला रोग-विशेष; (राज)

उच्चंपिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, आयत; (दे १, ११६)। २ आक्रान्त, दबाया हुआ, रोंदा हुआ; "सीसं उच्चंपिअं" (तंदु)।

उच्चड्डिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊँचा फेंका हुआ; (दे १, १०६)।

उच्चत्त वि [उत्यक्त] पतित, त्यक्त; (पाअ)।

उच्चत्तवरत्त न [दे] १ दोनों तरफ का स्थूल भाग; २ अनियमित भ्रमण, अव्यवस्थित विवर्तन; (दे १, १३६); ३ दोनों तरफ से ऊँचा नीचा करना; (पाअ)।

उच्चत्थ वि [दे] दृढ, मजबूत; (दे १, ६७)।

उच्चदिअ वि [दे] मुषित, चुराया हुआ; (षड्)।

उच्चप्प वि [दे] आरूढ, ऊपर बैठा हुआ; (दे १, १००)।

उच्चय सक [उत्+त्यज्] त्याग देना, छोड़ देना। कृ— **उच्चयणिज्ज**; (पउम ६६, २८)।

उच्चय पुं [उच्चय] १ समूह, राशि; "रयणोच्चयं विसालं" (सुपा ३४; कप्प)। २ ऊँचा ढग करना; (भग ८, ६)। ३ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाड़ी; (पाअ)। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष, ऊपर ऊपर रख कर चीजों को बांधना; (भग ८, ६)।

उच्चय पु [अवचय] इकट्ठा करना, एकत्रीकरण; (दे २,५६)।

उच्चर सक [उत्+चर्] १ पार जाना, उत्तीर्ण होना। २ कहना, बोलना। ३ अक. समर्थ होना, पहुँच सकना; ४ बाहर निकलना। उच्चरए; (सूक्त ४६)। "मूलदेवेण य निरुवियाइं पासाइं जाव दिट्ठं निसियासिहत्थेहिं वेढियमताणयं मणूमेहिं। चिंतियं च; णाहमेएसिं उच्चरामि, कायव्वं च मए वइरनिज्जायणं; निराउहो संपयं, ता न पोरिसस्सावसरोत्ति चितिय भणियं" (महा)। वकृ— "भरिउच्चरंतपसरिअपिअसंभरणपिसुणो वराईए। परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्ठिओ बाहो" (गा ३७७)।

उच्चरण न [उच्चरण] कथन, उच्चारण; "सिद्धसमक्खं सोहिं वय-उच्चरणाइ काऊण" (सुपा ३१७)।

उच्चरिय वि [उच्चरित] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त; "तीए हत्थिसंभमुच्चरियाए उज्झिऊण भयं, जीवियदायगोति मुणिऊण तुमं साहिलासं पलोइओ" (महा)। २ उच्चरित, कथित, उक्त; (विसे १०८३)।

उच्चलण न [उच्चलन] उन्मर्दन, उत्पीडन; (पाअ)।

उच्चलिय वि [उच्चलित] चलित, गत; (भवि)।

उच्चल्ल वि [दे] १ अध्यासित, आरूढ; २ विदारित, छिन्न; (षड्)।

उच्चल्ल सक [उत्+चल्] १ चलना, जाना; २ समीप में आना।

उच्चल्लिय वि [उच्चलित] १ गत, गया हुआ; २ समीप में आया हुआ;
'जिणभवणदुवारट्ठियउच्चल्लियफुल्लमालिओहस्स।
पुप्फाइं गेण्हंतो, अंतो विहिणा पविट्ठो हं" (सुर ३, ७४)।

उच्चा अ [उच्चैस्] १ ऊँचा, "तो तेण दुट्ठहरिणा, उच्चा हरिऊण लोय-पच्चक्खं। उवणीओ सो रण्णे" (महा)। २ उत्तम, श्रेष्ठ; (ठा २, १)। °गोत्त, °गोय न [°गोत्र] १ उत्तम गोत्र, श्रेष्ठ वंश; २ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव उत्तम माना जाता कुल में उत्पन्न होता है; (ठा २, ४; आचा)। °वय न [°व्रत] १ महाव्रत; (उत्त १)। २ वि. महाव्रतधारी; (उत्त १५)।

उच्चाअ वि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ; (ओघ ५१८)। २ पुं. आलिंगन, परिरम्भ; (सुपा ३३२)।

उच्चाइय वि [दे. उत्याजित] उत्थापित, उठाया हुआ; "उच्चाइया नंगरा" (स २०६)।

उच्चाग पुं [उच्चाग] हिमाचल पर्वत। °य वि [°ज] हिमाचल में उत्पन्न; "उच्चागयठाणलट्ठसंठियं" (कप्प)।

उच्चाड वि [दे] विपुल, विशाल; (दे १, ६७)।

उच्चाड सक [दे] १ रोकना, निवारना। २ अक. अफसोस करना, दिलगीर होना; (हे २, १६३ टि)।

उच्चाडण न [**उच्चाटन**] १ एक स्थान से दूसरे स्थान में उठा ले आना, स्व-स्थान से भ्रष्ट करना। २ मन्त्र-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जा सकती है; "उच्चाडणथंभणमोहणाइ सव्वंपि मह करगयं व" (सुपा ५६६)।

उच्चाडणी स्त्री [**उच्चाटनी**] विद्या-विशेष, जिसके द्वारा वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जा सकती है; (सुर १३, ८१)।

उच्चाडिर वि [**दे**] १ रोकने वाला, निवारण करने वाला; २ अफसोस करने वाला, दिलगीर;

"किं उआवेंतीए, उअ जूरंतीए किं नु भीआए।
उच्चाडिरीए वेव्वेत्ति, तीए भणिअं न विम्हरिमो"
(हे २, १९३)।

उच्चार सक [**उत्+चारय्**] १ बोलना, उच्चारण करना। २ मलोत्सर्ग करना, पाखाना जाना। उच्चारेइ; (उवा)। वकृ—**उच्चारयंत**; (स १०७); **उच्चारेमाण**; (कप्प; णाया १, १)। कृ—**उच्चारेयव्व**; (उवा)।

उच्चार पुं [**उच्चार**] १ उच्चारण। २ विष्ठा, मलोत्सर्ग; (सम १०; उवा; सुपा ६११)।

उच्चार वि [**दे**] विमल, स्वच्छ; (दे १, ९७)।

उच्चारण न [**उच्चारण**] कथन, "इसिं हस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए" (ओप)।

उच्चारिअ वि [**दे**] गृहीत, उपात्त; (दे १, ११४)।

उच्चारिअ वि [**उच्चारित**] १ कथित, उक्त; २ पाखाना गया हुआ; (गज)।

उच्चाल सक [**उत्+चालय्**] १ ऊँचा फेंकना। २ दूर करना। संकृ—"**उच्चालइय** निहाणिंसु अदुवा आसणाओ खलइंसु" (आचा)।

उच्चालइय वि [**उच्चालयितृ**] दूर करने वाला, त्यागने वाला; "जं जाणेज्जा उच्चालइयं तं जाणेज्जा दुरालइयं" (आचा)।

उच्चालिय वि [**उच्चालित**] उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उत्थापित; "उच्चालियम्मि पाए इरियासमियस्स संकमट्ठाए" (ओघ ७४८; संनि ४५)।

उच्चाव सक [**उच्चय**] ऊँचा करना, उठाना। संकृ—**उच्चावइत्ता**। "दोवि पाए उच्चावइत्ता सम्मओ समंता समभिलोएज्जा" (पउम १७)।

उच्चावय वि [**उच्चावच**] १ ऊँचा और नीचा; (णाया, १, १; पण्ण ३४)। २ उत्तम और अधम; (भग १५)। ३ अनुकूल और प्रतिकूल; (भग १, ९)। ४ असमञ्जस, अव्यवस्थित; (णाया १, १६)। ५ विविध, नानाविध "उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खू थामवं" (उत्त ८)। ६ उत्कृष्टतर, विशेष उत्तम "तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स" (उवा; ओप)।

उच्चिट्ठ अक [**उत्+स्था**] खडा होना। उच्चिट्ठइ, (काल)।

उच्चिडिम वि [**दे**] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज, "उच्चिडिमं मुक्कमज्जायं" (पाअ)।

उच्चिण सक [**उत्+चि**] फूल वगैरः को तोड़ कर एकत्रित करना, इकट्ठा करना। उच्चिणइ; (हे ४, २४१)। वकृ— **उच्चिणंत**; (भवि)।

उच्चिणण न [**उच्चयन**] अवचयन, एकत्रीकरण; (सुपा ४६६)।

उच्चिणिय वि [**उच्चित**] इकट्ठा किया हुआ; अवचित; (पाअ)।

उच्चिणिर वि [**उच्चेतृ**] फूल वगैरः को चुनने वाला; (कुमा)।

उच्चिय देखो **उचिय** "तस्स सुओच्चियपन्नत्तणेण संतोसमणुपत्ता" (उप १६६ टी)।

उच्चिवलय न [**दे**] कलुषित जल, मैला पानी; (पाअ)।

उच्चुंच वि [**दे**] दृप्त, गर्विष्ठ, अभिमानी; (दे १, ९९)।

उच्चुग वि [**दे**] अनवस्थित; (षड्)।

उच्चुड अक [**उत्+चुड्**] अपसरण करना, हटना। वकृ—**उच्चुडंत**; (गउड ७३३)।

उच्चुप्प सक [**चट्**] चढ़ना, आरूढ़ होना, ऊपर बैठना। उच्चुप्पइ; (हे ४, २५६)।

उच्चुप्पिअ वि [**दे. चटित**] आरूढ, ऊपर चढा हुआ; (दे १, १००)।

उच्चुरण [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा; (षड्)।

उच्चुलउलिअ न [**दे**] कुतूहल से शीघ्र २ जाना; (दे १, १२१)।

उच्चुल्ल वि [**दे**] १ उद्विग्न, खिन्न; २ अधिरूढ, आरूढ; ३ भीत, डरा हुआ; (दे १, १२७)।

उच्चूड पुं [**उच्चूड**] निशान का नीचे लटकता हुआ वस्त्रांचल वगैरः; (उव ४४६)।

उच्चूर वि [दे] नानाविध, वहुविध ; (राज)।

उच्चूल पुं [**अवचूल**] १ निशान का नीचे लटकता हुआ शृङ्गारित वस्त्रांश ; (उप ४४६ टि)। २ ऊंधा-सिर—पैर ऊपर और सिर नीचे कर —खड़ा किया हुआ; (विपा १, ६)।

उच्चे देखो **उच्चिण**। उच्चेइ ; (हे ४, २४१)। हेकृ—**उच्चेउं** ; (गा १५६)।

उच्चेय वि [**उच्चेतस्**] चिन्तातुर मन वाला ; (पात्र)।

उच्चेल्लर न [दे] १ ऊषर भूमि ; २ जघन-स्थानीय केश ; (दे १, १३६)।

उच्चेव वि [दे] प्रकट, व्यक्त ; (दे १, ६७)।

उच्चोड पुं [दे] शोषण ; "चंदणुच्चोडकारी चंडो देहस्स दाहो" (कप्पू ; प्राप)।

उच्चोल पुं [दे] १ खेद, उद्वेग ; २ नोवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाडी ; (दे १, १३१)।

उच्छ पुं [**उक्षन्**] वैल, वृषभ ; (हे २, १७)।

उच्छ पुं [दे] १ आँत का आवरण ; (दे १, ८५)। २ वि. न्यून, हीन, ; "उच्छत्तं वा न्यूनत्वम्" (पण्ह २, १)।

उच्छअ पुं [**उत्सव**] क्षण, उत्सव ; (हे २, २२)।

°**उच्छअ** वि [**प्रच्छक**] प्रश्न-कर्ता , (गा ५०)।

उच्छइअ वि [**उच्छदित**] आच्छादित, 'पालंवउच्छइय-वच्छयलो" (काल)।

उच्छंखल त्रि [**उच्छृङ्खल**] १ शृङ्खला-रहित, अवरोध-वर्जित, वन्धन-शून्य ; २ उद्धत, निरंकुश ; (गउड)।

उच्छंखलिय वि [**उच्छृङ्खलित**] अवरोध-रहित किया हुआ, खुला किया हुआ, "उच्छंखलियवणाणं सोहग्गं किंपि पवणाणं" (गउड)।

उच्छंग पुं [**उत्सङ्ग**] मध्य भाग ; "मउडुच्छंगपरिग्गहमियंकजोण्हावभासिणो पसुवइणो" (गउड ; से १०, २)। २ क्रोड, कोला ; (पात्र), "उच्छगे णिविसेत्ता' (आवम)। ३ पृष्ठ देश ; (औप)।

उच्छंगिअ वि [**उत्सङ्गित**] कोले में लिया हुआ ; (उप ६४८ टी)।

उच्छंगिअ वि [दे] आगे किया हुआ, आगे रखा हुआ ; (दे १, १०७)।

उच्छंघ देखो **उत्थंघ** ; (हे ४, ३६ टि)।

उच्छंट पुं [दे] झड़प से की हुई चोरी ; (दे १, १०१ ; पात्र)।

उच्छट्ट पुं [दे] चोर, डाकू ; (दे १, १०१)।

उच्छडिअ वि [दे] चुराई हुई चीज, चोरी का माल ; (दे १, ११२)।

°**उच्छण** न [**प्रच्छन**] प्रश्न, पूछना ; (गा ५००)।

उच्छण्ण देखो **उच्छन्न**; (हे १, ११४)।

उच्छत न [**अपच्छत्र**] १ अपने दोष को ढकने का व्यर्थ प्रयत्न, गुजराती में "ढांकपिछोडो ;" २ मृषावाद, झूठ वचन ; (पण्ह १, २)।

उच्छन्न वि [**उत्सन्न**] छिन्न, खण्डित, नष्ट ; (कुमा ; सुपा ३८४)।

उच्छप्प सक [**उत्+सर्पय्**] उन्नत करना, प्रभावित करना। उच्छप्पइ ; (सुपा ३५२)। वकृ—**उच्छप्पंत** ; (सुपा २९६)।

उच्छप्पण न [**उत्सर्पण**] उन्नति, अभ्युदय ; (सुपा २७१)।

उच्छप्पणा स्त्री [**उत्सर्पणा**] ऊपर देखो ; "जिणपवयणम्मि उच्छप्पणाउ कारेइ विविहाओ" (सुपा २०६ ; ६४९)।

उच्छल अक [**उत्+शल्**] १ उछलना, ऊँचा जाना। २ कूदना। ३ पसरना, फैलना। वकृ—**उच्छलंत** ; (कप्प ; गउड)।

उच्छलण न [**उच्छलन**] उछलना ; (दे १, ११८ ; ६, ११५)।

उच्छलिअ वि [**उच्छलित**] उछला हुआ, ऊँचा गया हुआ , (गा ११७ ; ६२४ ; गउड)। २ प्रसृत, फैला हुआ "ता ताण वरगंधो। उच्छलिओ छलिउं पिव गंधं गोसीसचंदणवणस्स" (सुपा ३८५)।

उच्छल्ल देखो **उच्छल**। उच्छल्लइ ; (पि ३२७)। "उच्छल्लंति समुद्दा" (हे ४, ३२६)।

उच्छल्ल वि [**उच्छल**] ऊछलने वाला ; (भवि)।

उच्छल्लणा स्त्री [दे] अपवर्त्तना, अपप्रेरणा "कप्पडप्पहार-निद्दयआरक्खियखरफरुसवयणतज्जणगलच्छल्लुच्छल्लणाहि विमणा चारगवसहिं पवेसिया" (पण्ह १, ३)।

उच्छल्लिअ देखो **उच्छलिअ** ; (भवि)।

उच्छल्लिअ वि [दे] जिसकी छाल काटी गई हो वह ; "तरुणो उच्छल्लिआ य दंतीहिं" (दे १, १११)।

उच्छव देखो **उच्छअ** ; (कुमा)। २ उत्सेक ; (भवि)।

उच्छविअ न [दे] शय्या, विछौना ; (दे १, १०३)।

उच्छह अक [**उत्+सह्**] उत्साहित होना। वकृ—**उच्छहंत** ; (भवि)।

उच्छहिय वि [**उत्सहित**] उत्साह-युक्त ; (सण)।

उच्छाइअ वि [**अवच्छादित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (पउम ६१, ४२ ; सुर ३, ७१)।

उच्छाडिअ (अप) वि [**अवच्छादित**] ढका हुआ ; भवि)।

उच्छाण देखो **उच्छ=उक्षन्** ; (प्रामा)।

उच्छाय पुं [**उच्छ्राय**] उत्सेध, ऊँचाई ; (ठा ७)।

उच्छायण वि [**अवच्छादन**] आच्छादक, ढकने वाला ; (स ३२३)।

उच्छायण वि [**उच्छादन**] नाशक ; (स ३२३ ; ४६३)।

उच्छायणया, **उच्छायणा** स्त्री [**उच्छादना**] १ उच्छेद, विनाश ; (भग १५)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति ; (राज)।

उच्छार देखो **उत्थार=आ+क्रम्** ; (हे ४, १६० टि)।

उच्छाल सक [**उत्+शालय्**] उछालना, ऊँचा फेंकना वकृ—**उच्छालिंत** ; (कुम्मा ४)।

उच्छालण न [**उच्छालन**] उछालना, उत्क्षेपण ; (कुम्मा ५)।

उच्छालिअ वि [**उच्छालित**] फेंका हुआ, उत्क्षिप्त ; (सुपा ६७)।

उच्छास देखो **ऊसास** ; (मै ६८)।

उच्छाह सक [**उत्+साहय्**] उत्साह दिलाना, उत्तेजित करना। उच्छाहइ ; (सुपा ३५२)।

उच्छाह पुं [**उत्साह**] १ उत्साह ; (ठा २, १)। २ दृढ़ उद्यम, स्थिर प्रयत्न ; (सुज्ज २०)। ३ उत्कंठा, उत्सुकता ; (चंद २०)। ४ पराक्रम, बल ; ५ सामर्थ्य, शक्ति ; (आचू १ ; हे १, ११४ ; २, ४८ ; पउम २०, ११८)।

उच्छाह पुं [**दे**] सूत का डोरा ; (दे १, ९२)।

उच्छाहण न [**उत्साहन**] उत्तेजन, प्रोत्साहन ; (उप ५९७ टी)।

उच्छाहिय वि [**उत्साहित**] प्रोत्साहित, उत्तेजित ; (पिंड)।

उच्छिंद सक [**उत्+छिद्**] उन्मूलन करना, ऊखेड़ना। संकृ—**उच्छिंदिअ** ; (सूक्त ४४)।

उच्छिंपग वि [**अवच्छिम्पक**] चोरों को खान-पान वगैर: की सहायता देने वाला ; (पगह १, ३)।

उच्छिंपण न [**उत्क्षेपण**] १ ऊपर फेंकना ; २ बाहर निकालना ; (पगह १, १)।

उच्छिट्ठ वि [**उच्छिष्ट**] जूठा, उच्छिष्ट ; (सुपा ११७ ; ३७५ ; प्रासू १५८)।

उच्छिण्ण वि [**उच्छिन्न**] उच्छिन्न, उन्मूलित ; (ठा ५)।

उच्छित्त वि [**दे**] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; २ विक्षिप्त, पागल ; (दे १, १२४)।

उच्छित्त वि [**उत्क्षिप्त**] फेंका हुआ ; (से ५, ६१ ; पाअ)।

उच्छित्त देखो **उट्ठिय** ; (से २, १३ ; गउड)।

उच्छित्त वि [**उत्सिक्त**] सींचा हुआ, सिक्त ; (दे १, १२३)।

उच्छिन्न देखो **उच्छिण्ण** ; (कप्प)।

उच्छिप्पंत देखो **उक्खिव**।

उच्छिय वि [**उच्छ्रित**] उन्नत, ऊँचा ; (राज)।

उच्छिरण वि [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा ; (षड्)।

उच्छिल्ल न [**दे**] १ छिद्र, विवर ; (दे १, ९५)। २ वि. अवजीर्ण ; (षड्)।

उच्छु देखो **इक्खु** ; (पाअ ; गा ५४१ ; पि १७७ ; ओघ ७७१ ; दे १, ११७)। °**जंत** न [°**यन्त्र**] ईख पीलने का सांचा ; (दे ६, ५१)।

उच्छु पुं [**दे**] पवन, वायु ; (दे १, ८५)।

उच्छुअ वि [**उत्सुक**] उत्कण्ठित ; (हे २, २२)।

उच्छुअ न [**दे**] डरते २ की हुई चोरी ; (दे १, ९५)।

उच्छुअरण न [**दे**] ईख का खेत ; (दे १, ११७)।

उच्छुआर वि [**दे**] संछन्न, ढका हुआ ; (दे १, ११५)।

उच्छुंडिअ वि [**दे**] १ बाण वगैरः से आहत ; २ अपहृत, छीना हुआ ; (दे १, १३५)।

उच्छुग देखो **उच्छुअ** ; (सुर ८, ६१)। °**भूय** वि [°**भूत**] जो उत्कण्ठित हुआ हो ; (सुर २, २१४)।

उच्छुच्छु वि [**दे**] दृप्त, अभिमानी ; (दे १, ९६)।

उच्छुण्ण वि [**उत्क्षुण्ण**] १ खण्डित, तोड़ा हुआ "उच्छुण्णं मड्डिअं च निद्दलिअं" (पाअ)। २ आक्रान्त,

"रइणावि अणुच्छुण्णा, वीसत्थं मारुएण वि अणालिद्धा।
तिअसेहिंवि परिहरिआ, पवंगमेहि मलिआ सुवेलुच्छंगा"
(से १०, २)।

उच्छुद्ध वि [दे] १ विक्षिप्त; २ पतित ; (ओघ २२० भा)।
उच्छुभ सक [अप+क्षिप्] आक्रोश करना, गाली देना । उच्छुभइ ; (भग १५)।
उच्छुर वि [दे] अविनश्वर, स्थायी ; (दे १, ९०)।
उच्छुरण न [दे] १ ईख का खेत ; २ ईख, ऊख ; (दे १, ११७)।
उच्छुल्ल पु [दे] १ अनुवाद ; २ खेद, उद्वेग ; (दे १, १३१)।
उच्छूढ वि [दे] आरूढ, ऊपर बैठा हुआ ; (षड्)।
उच्छूढ वि [उत्क्षिप्त] १ त्यक्त, उज्झित , (गाया १, १, उव)। २ मुषित, चुराया हुआ , (राज)। ३ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ ; (औप)।
उच्छूढ वि [उत्क्षुब्ध] ऊपर देखो "उच्छूढसरीरघरा अन्नो जीवो सरीरमन्नं ति" (उव , पि ६६)।
उच्छूर देखो **उल्लूर=तुड्** ; (हे ४, ११६ टि)।
उच्छूल देखो **उच्चूल** ; (उव)।
उच्छेअ पुं [उच्छेद] १ नाश, उन्मूलन , " एगंतुच्छेअम्मिवि सुहदुक्खविअप्पणमजुत्तं " (सम्म १८)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति , " उच्छेओ सुत्तत्थाणं ववच्छेउत्ति वुत्तं भवति " (निचू १)।
उच्छेयण न [उच्छेदन] विनाश, उन्मूलन ; " चिंतेइ एस समओ एयस्सुच्छेयणे मज्झ " (सुपा ३३५)।
उच्छेर अक [उत्+श्रि] १ ऊँचा होना ; उन्नत होना । २ अधिक होना, अतिरिक्त होना । वकृ—**उच्छेरंत** ; (काप्र १६४)।
उच्छेव पुं [उत्क्षेप] १ ऊँचा करना, उठाना । २ फेंकना , (वव २, ४)।
उच्छेवण न [उत्क्षेपण] ऊपर देखो , (से ६, २४)।
उच्छेवण न [दे] घृत, घी , (दे १, ११६)।
उच्छेह पुं [उत्सेध] ऊँचाई, ; (दे १, १३०)।
उच्छोडिय वि [उच्छोटित] छुडाया हुआ, मुक्त किया हुआ ; "उच्छोडिय-बंधो सो रन्ना भणिओ य भद्द ! उवविससु" (सुर १, १०५) ; " पासट्ठियपुरिसेहिं तक्खणमुच्छोडिया य से बंधा " (सुर २, ३६)।
उच्छोभ वि [उच्छोभ] १ शोभा-रहित , २ न. पिशुनता, चुगली ; (राज)।
उच्छोल सक [उत्+मूलय्] उन्मूलन करना, उखेडना । वकृ—**उच्छोलंत** ; (राज)।
उच्छोल सक [उत्+क्षालय्] प्रक्षालन करना, धोना । वकृ—**उच्छोलंत** ; (निचू १७)। प्रयो; वकृ—**उच्छोलावंत** ; (निचू १६)।
उच्छोलण न [उत्क्षालन] प्रभूत जल से प्रक्षालन , " उच्छोलणं च कक्कं च तं निज्जं परियाणिया " (सूअ १, ६ ; औप)।
उच्छोलणा स्त्री [उत्क्षालना] प्रक्षालन ; (दस ४)।
उच्छोला स्त्री [दे] प्रभूत जल " नहदंतकेसरो मे जमेइ उच्छोलधोयणो अजओ " (उव)।
उज्जु देखो **उज्जु** ; (आचा , कप्प)।
उज्जुअ देखो **उज्जुअ** ; (नाट)।
उज्ज देखो **ओय=ओजस्** ; (कप्प)।
उज्ज न [ऊर्ज] १ तेज, प्रताप ; २ बल ; (कप्प)।
उज्जअणी } स्त्री [उज्जयनी, °यिनी] नगरी-विशेष, **उज्जइणी** } मालव देश की प्राचीन राजधानी, आजकल भी यह " उज्जैन " नाम से प्रसिद्ध है ; (चारु ३६ ; पि ३८६)।
उज्जंगल न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती ; २ वि. दीर्घ, लम्बा, (दे १, १३५)।
उज्जगरय पुं [उज्जागरक] १ जागरण, निद्रा का अभाव ;
" जत्थ न उज्जगरओ, जत्थ न ईसा विसूरणं माणं ।
सब्भावचाडुय जत्थ, नत्थि नेहो तहिं नत्थि "
(वज्जा ६८)।
उज्जग्गिर न [ ] जागरण, निद्रा का अभाव ; (दे १, ११७ ; वज्जा ७४)।
उज्जग्गुज्ज वि [दे] स्वच्छ, निर्मल ; (दे १, ११३)।
उज्जड वि [दे] ऊजाड, वसति-रहित ; (दे १, ९६) ;
उक्किण्णरयभरोणयतलजज्जरभूविसट्टविलविसमा ।
थोउज्जडक्कविडवा इमाओ ता उन्दरथलीओ " (गउड)।
उज्जणिअ वि [दे] वक्र, टेढा ; (दे १, १११)।
उज्जम अक [उद्+यम्] उद्यम करना, प्रयत्न करना । उज्जमइ ; (धम्म १४)। उज्जमह ; (उव)। वकृ—**उज्जमंत, उज्जममाण** ; (पगह १, ३) ; " ण करेइ दुक्खमोक्खं उज्जममाणावि संजमतवेसु " (सूअ १, १३)। कृ—**उज्जमिअव्व, उज्जमेयव्व** ; (सुर १४, ८३ ; सुपा २८७ ; ३२४)। हेकृ—**उज्जमिउं** ; (उव)।
उज्जम पुं [उद्यम] उद्योग, प्रयत्न ; (उव ; जी ५० ; प्रासू ११५)।

उज्जमण (अप) न [**उद्यापन**] उद्यापन, व्रत-समाप्ति-कार्य ; (भवि)।

उज्जमिय (अप) वि [**उद्यापित**] समापित (व्रत); (भवि)।

उज्जय वि [**उद्यत**] उद्योगी, उद्युक्त, प्रयत्नशील ; (पाअ ; काप्र १६६ ; गा ४४८)। °**मरण** न [°**मरण**] मरण-विशेष ; (आचा)।

उज्जयंत पुं [**उज्जयन्त**] गिरनार पर्वत ; " इय उज्जयंतकप्पं, अवियप्पं जो करेइ जिणभत्तो " (ती ; विवे १८); " ता उज्जयंतसत्तुंजएसु तित्थेसु दोसुवि जिणिंदे " (मुणि १०६७५)।

उज्जल अक [**उद्+ज्वल्**] १ जलना। २ प्रकाशित होना, चमकना। उज्जलंति ; (विक्र ११४)। वकृ—**उज्जलंत** ; (गउड)।

उज्जल वि [**उज्ज्वल**] १ निर्मल, स्वच्छ ; (भग ७, ८ ; कुमा)। २ दीप्त, चमकीला ; (कप्प ; कुमा)।

उज्जल [**दे**] देखो **उज्जल्ल** ; (हे २, १७४ टि)।

उज्जलण वि [**उज्ज्वलन**] चमकीला, देदीप्यमान, " जालुज्जलणगअंबरंव कत्थइ पयंतं अइवेगचंचलं सिहिं " (कप्प)।

उज्जलिअ वि [**उज्ज्वलित**] १ उद्दीप्त, प्रकाशित ; (पउम ११८, ८८ ; औप)। २ ऊँची ज्वालाओं से युक्त ; (जीव ३)। ३ न. उद्दीपन ; (राज)।

उज्जल्ल वि [**दे**] स्वेद-सहित, पसीना वाला, मलिन ; " मुंडा कंडूविणट्ठंगा उज्जल्ला असमाहिया " (सूअ १, ३)। २ बलवान, बलिष्ठ, (हे २, १७४)।

उज्जल्ल न [**औज्ज्वल्य**] उज्ज्वलता ; (गा ६२६)।

उज्जल्ला स्त्री [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, ६७)।

उज्जव अक [**उद्+यत्**] प्रयत्न करना। वकृ—"सट्ठुवि **उज्जवमाणं** पंचेव करंति रित्तयं समणं" (उव)।

उज्जवण देखो **उज्जावण** ; (भवि)।

उज्जागर } पुं [**उज्जागर**] जागरण, निद्रा का अभाव ; **उज्जागर** } (गा ४८२ ; वज्जा ७६

उज्जाडिअ वि [**दे**] उजाड किया हुआ ; (भवि)।

उज्जाण न [**उद्यान**] उद्यान, बगीचा, उपवन ; (अणु ; कुमा)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] गोष्ठी, गोठ ; (णाया १, १)। °**पालअ**, °**वाल** वि [**पालक**, °**पाल**] बगीचा का रक्षक, माली ; (सुपा २०८; ३०५)।

उज्जाणिअ वि [**औद्यानिक**] उद्यान-संबन्धी, बगीचा का ; (भग १४, १)।

उज्जाणिअ वि [**दे**] निम्नीकृत, नीचा किया हुआ ; (दे १, ११३)।

उज्जाणिआ } स्त्री [**औद्यानिका**] गोष्ठी, गोठ ; "उज्जाणं **उज्जाणिगा** } जत्थ लोगो उज्जाणिआए वच्चइ" (निचू ८ ; स १५१)।

उज्जाणी स्त्री [**औद्यानी**] गोष्ठी, गोठ ; (सुपा ४८५)।

उज्जाल सक [**उद्+ज्वालय्**] १ ऊजाला करना २ जलाना। संकृ—**उज्जालिय, उज्जालित्ता** ; (दस ५ ; आचा)।

उज्जालण न [**उज्ज्वालन**] जलाना ; (दस ५)।

उज्जालिअ वि [**उज्ज्वालित**] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ ; (सुर ६, ११७)।

उज्जावण न [**उद्यापन**] व्रत का समाप्ति-कार्य ; (प्रारू)।

उज्जाविय वि [**दे**] विकासित ; (सण)।

उज्जिंत देखो **उज्जयंत** ; (णाया १, १६) ; "उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमि नमंसामि " (पडि)।

उज्जीरिअ वि [**दे**] निर्भर्त्सित, अपमानित, तिरस्कृत ; (दे १, ११२)।

उज्जीवण न [**उज्जीवन**] १ पुनर्जीवन, जिलाना ; "तस्स पभावो एसो कुमरस्सुज्जीवणे जाओ " (सुपा ५०४)। २ उद्दीपन ; (सण)।

उज्जीविय वि [**उज्जीवित**] पुनर्जीवित, जिलाया हुआ ; (सुपा २७०)।

उज्जु वि [**ऋजु**] सरल, निष्कपट, सीधा ; (औप; आचा)। °**कड** वि [°**कृत**] १ निष्कपट तपस्वी ; (आचा ; उत्त)। °**कड** वि [°**कृत्**] माया-रहित आचरण वाला ; (आचा)। °**जड**, °**जड्ड** वि [°**जड**] सरल किन्तु मूर्ख, तात्पर्य को नहीं समझने वाला ; (पंचा १६ ; उत्त २६)। °**मइ** स्त्री [°**मति**] १ मनःपर्यव ज्ञान का एक भेद, सामान्य मनोज्ञान ; सामान्य रीति से दूसरों के मनोभाव को जानना ; २ वि उक्त मनो-ज्ञान वाला ; (पण्ह २, १ ; औप)। °**वालिया** स्त्री [°**वालिका**] नदी-विशेष, जिसके किनारे भगवान् महावीर को केवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ था ; (कप्प ; स ४३२)। °**सुत्त** पुं [°**सूत्र**] वर्तमान वस्तु को ही मानने वाला नय-विशेष ; (ठा ७)। °**सुय** पु [°**श्रुत**] देखो पूर्वोक्त

अर्थ ; "पच्चुप्पन्नग्गाही उज्जुसुओ णयविही मुणेअव्वो" (अणु)। °हत्थ पुं [°हस्त] दाहिना हाथ ; (ओघ ५११)।

उज्जुअ वि [**ऋजुक**] ऊपर देखो ; (आचा ; कुमा ; गा १५६; ३५२)।

उज्जुआइअ वि [**ऋजुकायित**] सरल किया हुआ ; (सं १३ : २०)।

उज्जुग देखो **उज्जुअ** ; (पि ५७)।

उज्जुत्त वि [**उद्युक्त**] उद्यमी, प्रयत्न शील ; (सुर ४, १५ ; पाअ)।

उज्जुरिअ वि [**दे**] १ क्षीण, नष्ट ; २ शुष्क, सूखा ; (दे १, ११२)।

उज्जेणग पु [**उज्जयनक**] श्रावक-विशेष, एक उपासक का नाम ; (आचू ४)।

उज्जेणी देखो **उज्जइणी** ; (महा ; काप्र ३३३)।

उज्जोअ सक [**उद्+द्योतय्**] प्रकाश करना, उद्योत करना। उज्जोएइ ; (महा)। वकृ—**उज्जोयंत, उज्जोइंत, उज्जोयमाण, उज्जोएमाण** ; (णाया १, १; सुपा ४७, सुर ८, ८७ ; सुपा २४२ ; जीव ३)।

उज्जोअ पुं [**उद्योग**] प्रयत्न, उद्यम ; (पउम ३, १२६ ; सुक्त ३६ ; पुप्फ २८ ; २६)।

उज्जोअ पुं [**उद्द्योत**] १ प्रकाश, उजेला। °**गर** वि [°**कर**] प्रकाशक ; "लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे" (पडि ; पाअ ; हे १, १७७)। २ उद्द्योत का कारण-भूत कर्म-विशेष ; (सम ६७ ; कम्म १)। °**त्थ** न [°**ास्त्र**] शस्त्र-विशेष ; (पउम १२, १२८)।

उज्जोअग वि [**उद्द्योतक**] प्रकाशक "सव्वजगुज्जोयगस्स" (णंदि)।

उज्जोअण न [**उद्द्योतन**] १ प्रकाशन, अवभासन ; २ वि. प्रकाश करने वाला ; (उप ७२८ टी)। ३ पु. सूर्य, रवि। ४ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (गु ७ , सार्ध ६२)।

उज्जोअय वि [**उद्द्योतक**] १ प्रकाशक। २ प्रभावक, उन्नति करने वाला ; (उर ८, १२)।

उज्जोइंत देखो **उज्जोअ**=उद्+द्योतय्।

उज्जोइय वि [**उद्द्योतित**] प्रकाशित ; (सम १५३ ; सुपा २०५)।

उज्जोएमाण देखो उज्जोअ=उद्+द्योतय्।

उज्जोमिआ स्त्री [**दे**] रश्मि, किरण ; (दे १, ११५)।

उज्जोव देखो **उज्जोअ**=उद्+द्योतय्। वकृ—**उज्जोवंत, उज्जोवयंत, उज्जोवेंत, उज्जोवेमाण** ; (पउम २१, १५ ; स २०७ ; ६३१, ; ठा ८)।

उज्जोवण न [**उद्द्योतन**] प्रकाशन ; (स ६३१)।

उज्जोविय देखो **उज्जोइय** ; (कप्प ; णाया १, १ ; पण्ह १, ४ ; पउम ८, २६० ; स ३६)।

उज्झ सक [**उज्झ्**] त्याग करना, छोड देना। उज्झइ ; (महा)। कवकृ—**उज्झिज्जमाण** ; (उप २११ टी)। संकृ—**उज्झिअ, उज्झिउं, उज्झिऊण** ; (अभि ६० ; पि ५७६ ; राज)। हेकृ—**उज्झित्तए** ; (णाया १, ८)। कृ—**उज्झियव्व** ; (उप ५६७ टी)।

उज्झ पुं [**उज्झ, उद्ध्य**] उपाध्याय, पाठक ; (विसे ३१६८)।

उज्झअ, **उज्झग** } वि [**उज्झक**] त्याग करने वाला, छोड़ने वाला ; (सुअ १, ३ ; उप १७६ टी)।

उज्झण न [**उज्झन**] परित्याग ; (उप १७६; पृ ४०३ ; पउम १, ६० ; औप)।

उज्झणा } स्त्री [**उज्झना**] परित्याग ; (उप ५६३ ; आव ४)।

उज्झणिअ वि [**दे**] १ विक्रीत, वेचा हुआ; २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ ; (षड्)।

उज्झमण न [**दे**] पलायन, भागना ; (दे १, १०३)।

उज्झमाण वि [**दे**] पलायित, भागा हुआ ; (षड्)।

उज्झर पुं [**निर्झर**] पर्वत से गिरने वाला जल-प्रवाह, पहाड़ का झरना ; (णाया १, १ ; गउड ; गा ६३६)। °**वण्णी** स्त्री [°**पर्णी**] उदक-पात, जल-प्रपात ; (निचू ५)।

उज्झरिअ वि [**दे**] टेढी नजर से देखा हुआ ; २ विक्षिप्त ; ३ क्षिप्त, फेंका हुआ ; ४ परित्यक्त, उज्झित ; (दे १, १३३)।

उज्झल वि [**दे**] प्रबल, बलिष्ठ ; (षड्)।

उज्झलिअ वि [**दे**] १ प्रक्षिप्त, फेंका हुआ ; २ विक्षिप्त ; (षड्)।

उज्झस पुं [**दे**] उद्यम, उद्योग, प्रयत्न ; (दे १, ६५)।

उज्झसिअ वि [**दे**] उत्कृष्ट, उत्तम ; (षड्)।

°**उज्झा** देखो **अउज्झा** ; (उप पृ ३७४)।

उज्झाय पु [**उपाध्याय**] विद्या-दाता गुरु, शिक्षक, पाठक ; (महा ; सुर १, १८०)।

उज्भासि वि [उद्भासिन्] चमकने वाला, देदीप्यमान, "कक्कणुज्भासिहत्था" (रंभा)।

उज्भिंखिअ न [दे] १ वचनीय, लोकापवाद ; २ वि. निन्द-नीय, ३ कथनीय ; (दे ३, ५५)।

उज्भिय वि [उज्भित] १ परित्यक्त, विमुक्त ; (कुमा)। २ भिन्न ; (आव ४)। ३ न परित्याग ; (अणु)। °**य** पु [°क] एक सार्थवाह का पुत्र, (विपा १, २)।

उज्भिय वि [दे] १ शुष्क, सूखा हुआ ; २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ, (षड्)।

उज्भिया स्त्री [उज्भिता] एक सार्थवाह-पत्नी, (णाया १, ७)।

उट्ट पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट, करभ, (विपा १, ६ ; हे २, ३४ ; उवा)। स्त्री—**उट्टी** ; (राज)।

उट्टार पुं [अवतार] घाट, तीर्थ, जलाशय का तट ;
"अह ते तुरउट्टारे बहुभडमथरे मुक्त्थकमलवणे।
लीलायंति जहिच्छ समरतलाए कुमारगया"
(पउम ६८, ३०)।

उट्टिय } वि [औष्ट्रिक] १ ऊँट संबन्धी ; २ ऊँट के
उट्टियय } रोमों का बना हुआ ; (ठा ५, ३ ; ओघ ७०६)। ३ भृत्य, नौकर, (कुमा)। ४ घड़ा, घट ; (उवा)।

उट्टिया स्त्री [उष्ट्रिका] घड़ा, घट, कुम्भ ; (विपा १, ६ ; उवा)। °**समण** पुं [°श्रमण] आजीविक-मत का साधु जो बड़े घड़े में बैठ कर तपस्या करता है ; (औप)।

उट्ठ अक [उत्+स्था] उठना, खड़ा होना। उट्ठइ ; (हे ४, १७ ; महा)। उट्ठेइ ; (पि ३०६)। वकृ—**उट्ठंत** ; (गा ३८२ ; सुपा २६६) ; **उट्टिंत** ; (सुर ८, ४३, १३, ५३)। संकृ—**उट्ठाय उट्ठित्तु, उट्ठित्ता, उट्ठेत्ता** ; (राज ; आचा ; पि ५८२) हेकृ—**उट्ठिउं** ; (उपप्र २५८)।

उट्ठ वि [उत्थ] उत्थित, उठा हुआ ; (ओघ ७० ; उवा)। °**वइस** अप [°पवेश] उठ-बैठ ; (हे ४, ४२३)।

उट्ठ पुं [ओष्ठ] होठ, अधर ; (सम १२५ ; सुपा ५२३)।

उट्ठंभ सक [अव+स्तभ्] १ आलम्बन देना, सहारा देना। २ आक्रमण करना। कर्म—**उट्ठब्भइ** ; (हे ४, ३६५)। संकृ—"**उट्ठंभिया** एगया कायं" (आचा १, ६, ३, ११)।

उट्ठवण न [उत्थापन] उत्थापन, ऊँचा करना, उठाना ; (ओघ २१४ ; दे १, ८२)।

उट्ठविय वि [उत्थापित] उत्पादित, उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ ; "सा सणियं उट्ठविया भणइ किमागमणकारणं सुणेहे" (सुर ६, १६०)।

उट्ठा देखो **उट्ठ**=उत्+स्था ; (प्रामा)।

उट्ठा स्त्री [उत्था] उत्थान, उठान ; "उट्ठाए उट्ठेइ" (णाया १, १ ; औप)।

उट्ठाइ वि [उत्थाइन्] उठने वाला ; (आचा)।

उट्ठाइअ वि [उत्थित] १ जो तय्यार हुआ हो, प्रगुण ; (पउम १२, ६६)। २ उत्पन्न, उत्थित ; (स ३७६)।

उट्ठाइअ देखो **उट्ठाविअ** ; (उवा)।

उट्ठाण न [उत्थान] १ उठान, ऊँचा होना ; (उव) ; "मअसलिलेहिं घडासु अ वोच्छिज्जइ पसरिअं महिरउट्ठाणं" (से १३, ३७)। २ उद्भव, उत्पत्ति ; (णाया १, १४)। ३ आरम्भ, प्रारंभ ; (भग १५)। ४ उद्वसन, बाहर निकलना ; (णंदि)। °**सुय** न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष ; (णंदि)।

उट्ठाय देखो **उट्ठ**=उत्+स्था।

उट्ठाव सक [उत्+स्थापय्] उठाना। उट्ठावेइ ; (महा)।

उट्ठावण देखो **उट्ठवण** ; (कस)।

उट्ठावण देखो **उवट्ठावण** ; "पव्वावणविहिमुट्ठावणं च अज्जाविहिं निरवसेसं" (उव)।

उट्ठावणा देखो **उवट्ठावणा** ; (भत्त २५)।

उट्ठाविअ वि [उत्थापित] १ उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ ; (नाट) ; २ उत्पादित ; "तुमए उट्ठाविओ कली एस" (उप ६४८ टी)।

उट्ठिउं
उट्ठिंत
उट्ठित्ता
उट्ठित्तु } देखो **उट्ठ**=उत्+स्था।

उट्ठिय वि [उत्थित] उत्थित, खड़ा हुआ ; (सुर ३, ६६)। २ उत्पन्न, उद्भूत ; (पराह १, ३) ; "विहीसिया कावि उट्ठिया एसा" (सुपा ५४१)। ३ उदित, उदय-प्राप्त ; 'उट्ठियम्मि सूरे" (अणु)। ४ उद्यत; उद्युक्त ; (आचा)। ५ उद्वसित, बाहर निकला हुआ ; (ओघ ६५ भा)।

उट्ठिर वि [उत्थातृ) उठने वाला ; (सण)।

उट्ठिसिय वि [उद्घुषित] पुलकित, रोमाञ्चित, (ओघ; कुमा)।

उट्टीअ (अप) देखो **उट्ठिय** ; (पिंग)।

उट्ठुभ } अक [अव+ष्ठीव्] थूकना। उट्ठुभंति, उट्ठुभइ;
उट्ठुह } (पि १२०)। उट्ठुहह; (भग १५)। संकृ—
उट्ठुहइत्ता; (भग १५)।

उठिअ (अप) देखो **उट्ठिय**—, (पिंग—पत्र ५८१)।

°**उड** पुंन [**कुट**] घट, कुम्भ;
"पडिवक्खमणणुपुंजे लावण्णउडे अणंगगअकुंभे।
पुरिससअहिअअधरिए कीस थणती थणे वहसि"
(गा २६०)।

°**उड** पु [**कूट**] समूह, राशि; "सप्पो जहा अडउडं भत्तारं जो विहिंसइ" (सम ५१)।

°**उड** देखो **पुड**; (उवा; महा; गउड; गा ६६०; सुर २,१३; प्रासू ३६)।

उडंक पुं [**उटङ्क**] एक ऋषि, तापस-विशेष; (निचू १२)।

उडंब वि [**दे**] लिप्त, लिपा हुआ, (षड्)।

उडज } पुं [**उटज**] ऋषि-आश्रम, पर्ण शाला, पत्तों से
उडय } बना हुआ घर; (अभि १११; प्रति ८४; अभि
उडव } ३७; स १०); "उडवो तावसगेह" (पाअ)।
"जमहं दिया य राओ य, हुणामि महुसप्पिसं।
तेण मे उडओ दड्ढो, जायं सरणओ भय" (निचू १)।

उडाहिअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ, (षड्)।

उडिअ वि [**दे**] अन्विष्ट, खोजा हुआ, (षड्)।

उडिद पुं [**दे**] उडिद, माष, धान्य विशेष; (दे १, ९८)।

उडु न [**उडु**] १ नक्षत्र; (पाअ)। २ विमान-विशेष; (सम ६६)। °**प**, °**व** पु [°**प**] १ चन्द्र, चन्द्रमा; (औप, सुर १६, २४६)। २ जहाज, नौका; (दे १, १२२)। ३ एक की संख्या; (सुर १६, २४६)। °**वइ** पु [°**पति**] चन्द्र, (सम ३०; पण्ह १, ४)। °**वर** पुं [°**वर**] सूर्य, (राज)।

उडु देखो **उउ**; (ठा २, ४; ओघ १२३ भा)।

उडुंवरिज्जिया स्त्री [**उदुम्बरीया**] जैन मुनिओं की एक शाखा; (कप्प)।

उडुहिअ न [**दे**] १ विवाहित स्त्री का कोप; २ वि. उच्छिष्ट, जूठा; (दे १, १३७)।

उड्ड पुं [**उड्र**] १ देश-विशेष, उत्कल, ओड़, ओड्र नामों से प्रसिद्ध देश, जिसको आजकल उड़ीसा कहते हैं; (स २८६)। २ इस देश का निवासी, उड़िया; "सग-जवण-बव्बर-गाय-मुरुंडोड्ड-भडग—" (पण्ह १, १)।

उड्ड वि [**दे**] कुँआ आदि को खोदने वाला, खनक; (दे १, ८५)।

उड्डण पुं [**दे**] १ बैल, साँढ; २ वि. दीर्घ, लम्बा, (दे १, १२३)।

उड्डस पु [**दे**] खटमल, खटकीरा, उड़िस; (दे १, ९६)।

उड्डहण पु [**दे**] चोर, डाकू; (दे १, ९१)।

उड्डाअ पु [**दे**] उद्गम, उदय, उद्भव, (दे १, ९१)।

उड्डाण न [**उड्डयन**] उडान, उड़ना: "मारोवि अहव घिप्पइ, हंत तइज्जम्मि उड्डाणे" (सुर ८, ५२)।

उड्डाण पु [**दे**] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि; २ कुरर, पक्षि-विशेष; ३ विष्ठा, पुरीष; ४ मनोरथ, अभिलाष; ५ वि. गर्विष्ठ, अभिमानी, (दे १, १२८)।

उड्डामर वि [**उड्डामर**] १ भय, भीति; २ आडम्बर वाला, टाप-टीप वाला; (पाअ)।

उड्डामरिअ वि [**उड्डामरित**] भय-भीत किया हुआ; (कप्पू)।

उड्डाव सक [**उद्+डायय्**] उड़ाना। उड्डावइ; (भवि)। वकृ—**उड्डावंत**; (हे ४, ३५२)।

उड्डावण न [**उड्डायन**] १ उडाना "मत्तजलवायसुड्डावणेण जलकलुसण किमिमं" (कुमा)। २ आकर्षण; "हिय-उड्डावणे" (णाया १, १४)।

उड्डाविअ वि [**उड्डायित**] उडाया हुआ, (गा ११०; पिंग)।

उड्डाविर वि [**उड्डायितृ**] उडाने वाला; (वज्जा ९४)।

उड्डास पु [**दे**] संताप, परिताप, (दे १, ९९)।

उड्डाह पु [**उद्दाह**] १ भयङ्कर दाह, जला देना; (उप २०८)। २ मालिन्य, निन्दा, उपघात; (ओघ २२१)।

उड्डिअ वि [**औड्र**] उड़ीसा देश का निवासी, (नाट)।

उड्डिअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (षड्)।

उड्डिअंत देखो **उड्डी**=उत्+डी।

उड्डिआहरण न [**दे**] छुरी पर रक्खे हुए फूल को पाँव की दो उंगलीओं से लेते हुए चल जाना, "छुरिअग्गमुक्कपुप्फं घेतुअ पायंगुलीहि उप्पयणं। तं उड्डिआहरणं"
'कुसुमं यत्रोड्डीय, छुरिकाग्राल्लाघवेन संगृह्य।
पादाङ्गुलिभिर्गच्छति, तद्विज्ञातव्यमुड्डिआहरणं'
(दे १, १२१)।

उड्डिहिअ वि [**दे**] ऊपर फेंका हुआ; (पाअ)।

"पेच्छंति अणिमिसच्छा पहिआ हलिअस्स पिट्ठपंडुरिअं।
धूअं दुद्धसमुद्दुत्तरंतलच्छिं विअ सअण्हा"
(गा ३८८)।

"उत्तरंताण य मरुं, खंधवारो तिसाए मरिउमारद्धो" (महा)। संकृ—**उत्तरित्तु** ; (पि ५७७)। हेकृ—**उत्तरित्तए**, (पि ५७८)।

उत्तर अक [**अव+तॄ**] उतरना, नीचे आना। वकृ—**उत्तरमाण**, "उत्तरमाणस्स तो विमाणाओ" (सुपा ३४०)।

उत्तर वि [**उत्तर**] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त; (पउम ११८, ३०)। २ प्रधान, मुख्य, (सूअ १, ३)। ३ उत्तर-दिशा में रहा हुआ, (जं १)। ४ उपरि-वर्ती, उपरितन ; (उत्त २)। ५ अधिक अतिरिक्त ; "अट्ठुत्तर—" (औप ; सूअ १, २)। ६ अवान्तर, भेद, शाखा; "उत्तरपगइ" (कम्म १)। ७ ऊन का बना हुआ वस्त्र, कम्बल वगैरः ; (कप्प)। ८ न. जवाब, प्रत्युत्तर ; (वव १, १)। ९ वृद्धि ; (भग १३, ४)। १० पुं. ऐरवत क्षेत्र के बाईसवें भावि जिन-देव का नाम; (सम १५४)। ११ वर्षा-कल्प, (कप्प)। १२ एक जैन मुनि, आर्य-महागिरि के प्रथम शिष्य ; (कप्प)। °**कंचुय** पुं [°**कञ्चुक**] वस्तर-विशेष ; (विपा १, २)। °**करण** न [°**करण**] उपस्कार, संस्कार, विशेष गुणाधान ;

"खंडियविराहियाणं, मूलगुणाणं सउत्तरगुणाणं।
उत्तरकरणं कीरइ, जह सगड-रहंग-गेहाणं" (आव ५)।

°**कुरा** स्त्री [°**कुरु**] स्वनाम-ख्यात क्षेत्र-विशेष ; "उत्तरकुराए णं भंते ! कुराए केरिसए आगारभावपडोयारे पएणत्ते" (जीव ३)। °**कुरु** पुं [°**कुरु**] १ वर्ष-विशेष; "उत-रकुरुमाणुसच्छराओ" (पि ३२८ ; सम ७० ; पराह १, ४ ; पउम ३५, ५०)। २ देव-विशेष ; (जं २)। °**कुरुकूड** न [°**कुरुकूट**] १ माल्यवंत पर्वत का एक शिखर ; (ठा ६)। २ देव-विशेष ; (जं ४)। °**कोडि** स्त्री [°**कोटि**] संगीतशास्त्र-प्रसिद्ध गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७)। °**गंधारा** स्त्री [°**गान्धारा**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (ठा ७)। °**गुण** पुं [°**गुण**] शाखा-गुण, अवान्तर गुण ; (भग ७, ३)। °**चावाला** स्त्री [°**चावाला**] नगरी-विशेष ; (आवम)। °**चूल** न [°**चूड**] गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर वडे आवाज से "मत्थएण वंदामि" कहना : (धर्म २)। °**चूलिया** स्त्री [°**चूलिका**] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ ; (बृह ३ ; गुभा २५)। °**ड्ढ** न [°**र्ध**] पिछला आधा भाग उत्तरार्ध ; (जं ४)। °**दिसा** स्त्री [°**दिश्**] उत्तर दिशा ; (सुर २, २२८)। °**द्ध** न [°**र्ध**] पिछला आधा भाग ; (पिंग)। °**पगइ**, °**पयडि** स्त्री [°**प्रकृति**] कर्मों के अवान्तर भेद ; (उत्त ३३ ; सम ६६)। °**पच्चत्थिमिल्ल** पुं [°**पाश्चात्य**] वायव्य कोण ; (पि)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] बिछौना का ऊपर का वस्त्र ; (ओघ १५६ भा)। °**पारणग** न [°**पारणक**] उपवासादि व्रत की समाप्ति, पारण ; (काल)। °**पुरच्छिम**, °**पुरत्थिम** पुं [°**पौरस्त्य**] ईशान कोण, उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा ; (णाया १, १ ; भग, पि ६०२)। °**पोट्ठवया** स्त्री [°**प्रोष्ठपदा**] उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र ; (सुज्ज ४)। °**फग्गुणी** स्त्री [**फाल्गुनी**] उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र ; (कप्पू ; पि ६२)। °**बलिस्सह** पुं [°**बलिस्सह**] १ एक प्रसिद्ध जैन साधु ; (कप्प)। २ उत्तर बलिस्सह-नामक स्थविर से निकला हुआ एक गण, भगवान् महावीर का द्वितीय गण—साधु-संप्रदाय, (कप्प ; ठा ६)। °**भद्दवया** स्त्री [°**भद्रपदा**] नक्षत्र-विशेष ; (ठा ६)। °**मंदा** स्त्री [°**मन्दा**] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७)। °**महुरा** स्त्री [°**मथुरा**] नगरी-विशेष ; (दंस)। °**वाय** पुं [°**वाद**] उत्तरवाद ; (आचा)। °**विक्किय**, °**वेउव्विय** वि [°**वैक्रिय**] स्वाभाविक-भिन्न वैक्रिय, बनावटी वैक्रिय ; (कम्म १ ; कप्प)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] १ क्रीडा-गृह ; २ पीछे से बनाया हुआ घर, ३ वाहन-गृह, हाथी-घोड़ा आदि बाँधने का स्थान, तबेला, (निचू ८)। °**साहग**, °**साहय** वि [°**साधक**] विद्या, मन्त्र वगैर. का साधन करने वाले का सहायक ; (सुपा १५१ ; स ३६६)। देखो **उत्तरा**°।

उत्तरओ अ [**उत्तरतः**] उत्तर दिशा तरफ ; (ठा ८ ; भग)।

उत्तरंग न [**उत्तरङ्ग**] १ दरवाजे का ऊपर का काष्ठ; (कुमा)। २ चपल, चंचल ; (मुद्रा २६८)।

उत्तरण न [**उत्तरण**] १ उतरना, पार करना ; (ठा ५, स ३६२)। २ अवतरण, नीचे आना ; (ठा १०)।

उत्तरणवरंडिया स्त्री [**दे**] उडुप, जहाज, डोंगी, (दे १, १२२)।

उत्तरा स्त्री [**उत्तरा**] १ उत्तर दिशा ; (ठा १०)। २ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७)। ३ एक दिशा-

कुमारी देवी ; (ठा ८) । ४ दिगम्बर-मत-प्रवर्तक आचार्य शिवभूति की स्वनाम-ख्यात भगिनी; (विसे) । ५ अहिच्छत्रा नगरी की एक वापी का नाम ; (ती) । °णंदा स्त्री [°नन्दा] एक दिक्कुमारी देवी; (राज) । °पह पुं [°पथ] उत्तरदिशा-स्थित देश, उत्तरीय देश ; (आचू २)। °फग्गुणी देखो **उत्तर-फग्गुणी** ; (सम ७ ; इक)। °भद्दवया देखो **उत्तर-भद्दवया** ; (सम ७ ; इक) । °यण न [°यण] उत्तरायण, सूर्य का उत्तर-दिशा में गमन, माघ से लेकर छः महीना ; (सम ५३) । °यया स्त्री [°यता] गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना , (ठा ७) । °वह देखो °पह; (महा, उव १४२ टी) । °संग पुं [°संग] उत्तरीय वस्त्र का शरीर में न्यास-विशेष, उत्तरासण ; (कप्प; भग; औप) । °समा स्त्री [°समा] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) । °साढा स्त्री [°षाढा] नक्षत्र-विशेष ; (सम ६ ; कस) । °हुत्त न [°भिमुख] १ उत्तर की तरफ; २ वि. उत्तर दिशा तरफ मुँह किया हुआ ; (ओघ ६५० ; आव ४) ।

उत्तरिज्ज } न [**उत्तरीय**] चद्दर, दुपट्टा ; (उवा , प्राप्र ;
उत्तरिय } हे १, २४८), "जरजिन्न उत्तरियं" (सुपा ५४६) ।

उत्तरिय वि [**उत्तीर्ण**] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ ; (सुर ६, १५६) । २ पार पहुँचा हुआ , (महा) ।

उत्तरिय वि [**औत्तरिक, औत्तराह**] देखो **उत्तर** ; (ठा १० ; विसे १२४५) ।

उत्तरिल्ल वि [**औत्तराह**] उत्तर दिशा या काल में उत्पन्न या स्थित, उत्तर-सबन्धी, उत्तरीय ; "अह उत्तरिल्लरुयगे" (सुपा ४२ ; सम १०० ; भग) ।

उत्तरीअ देखो **उत्तरिय**=उत्तरीय ; (कुमा ; हे १, २४८ ; महा) ।

उत्तरीकरण न [**उत्तरीकरण**] उत्कृष्ट बनाना, विशेष शुद्ध करना "तस्स उत्तरीकरणेणं" (पडि) ।

उत्तरोट्ठ पु [**उत्तरौष्ठ**] १ ऊपर का होठ , (पि ३६७) । २ श्मश्रु, मूँछ ; (राज) ।

उत्तलहअ पुं [**दे**] विटप, अङ्कुर ; (दे १, ११६) ।

उत्तव वि [**उक्तवत्**] जिसने कहा हो वह ; (पि ५६६) ।

उत्तस अक [**उत्+त्रस्**] १ त्रास पाना, पीडित होना । २ डरना, भयभीत होना । वकृ—**उत्तसंत**; (सुर १, २४६ ; १०, २२०) ।

उत्तसिय वि [**उत्त्रस्त**] १ भय भीत; २ पीडित; (सुर १, २४६) ।

उत्ताड सक [**उत्+ताडय्**] १ ताडना, ताड़न करना; २ वाद्य बजाना । कवकृ—"**उत्ताडिज्जंताणं** दद्दरियाणं कुडवाणं " (राय) ।

उत्ताडण न [**उत्ताडन**] १ ताडन करना ; (कुमा) । २ वाद्य बजाना ; (राज) ।

उत्ताण वि [**उत्तान**] १ उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख ; (पंचा १८) । २ चित्त; (विपा १, ६ ; ठा ४, ४) । ३ विस्फारित, "उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा पासादीया दरिसणिज्जा" (औप) । ४ अनिपुण, अकुशल "उत्ताणमई न साहए धम्मं" (धम्म ८)। °साइय वि [°शायिन्] चित्त सोने वाला ; (कस) ।

उत्ताणअ } ऊपर देखो , (भग, गा ११० ; कस) ।
उत्ताणग }

उत्ताणपत्तय वि [**दे**] एरण्ड-सबन्धी (पत्ती वगैर); (दे १, १२०) ।

उत्ताणिअ वि [**उत्तानित**] १ चित्त किया हुआ ; (से ६, ८६ ; गा ४६०) । २ चित्त सोने वाला ; (दसा) ।

उत्तार सक [**अव+तारय्**] नीचे उतारना । वकृ—**उत्तारेमाण**; (ठा ५) ।

उत्तार सक [**उत्+तारय्**] १ पार पहुँचाना । २ बाहर निकालना । ३ दूर करना । " देहो . नईए खित्तो, तओ एए जइ नो **उत्तारिंता** तो हं मरिऊण " (सुपा ३५७ ; काल) ।

उत्तार पु [**उत्तार**] १ उतरना, पार करना ; " अणुसोओ ससारो पडिसोओ तस्स उत्तारो " (दस २) ; 'णइउत्ताराइ " (उवर ३२) । २ परित्याग ; (विसे १०४२) । ३ उतारने वाला, पार करने वाला ;

" भवसयसहस्सदुलहे, जाइजरामरणसागरोत्तारे ।
जिणवयणम्मि गुणायर ! खणमवि मा काहिसि पमायं "
(प्रासू १३४) ।

उत्तारण न [**उत्तारण**] १ उतारना । २ दूर करना । ३ बाहर निकालना । ४ पार करना ।

" ता अज्जवि मोहमहाअहिविसवेगा फुरंति तुह बाढ ।
ताणुत्तारणहेउं, तम्हा जत्तं कुणसु भद्द ! ॥ "
(सुपा ५५७ ; विसे १०४०) ।

उत्तारय वि [**उत्तारक**] पार उतारने वाला ; (स ६४७) ।

उत्तारिअ वि [उत्तारित] १ पार पहुँचाया हुआ। २ दूर किया हुआ। ३ बाहर निकाला हुआ ; " तेणवि उत्तारिओ भूमिविवराओ " (महा)।

उत्ताल वि [उत्ताल] १ महान्, बड़ा, " उत्तालतालयाणं वणिएहिं दिज्जमाणाणं " (सुपा ५०२)। २ उतावला, शीघ्रकारी, ' कहवि उत्तालो अप्पडिलेहियसेज्ज गिण्हंतो " (सुपा ६२०)। ३ उद्धत ; (दे १, १०१)। ४ बेताल, ताल-विरुद्ध, गान का एक दोष, " गायंतो मा पगाहि उत्तालं" (ठा ७) " भीयं दुयमुप्पिच्छत्थमुत्तालं च कमसो मुणेयव्वं " (जीव ३)।

उत्ताल न [दे] लगातार रुदन, अन्तर-रहित क्रन्दन की आवाज ; (दे १, १०१)।

उत्तालण देखो **उत्ताडण** ।

उत्तावल न [दे] उतावल, शीघ्रता ; २ वि. शीघ्रकारी, आकुल " हल्लुत्तावलिगिहदासिविहियतक्कालकरणिज्जे " (सुर १०, १)।

उत्तास सक [उत्+त्रासय्] १ भयभीत करना, डराना। २ पीड़ना, हैरान करना। उत्तासेदि (शौ) ; (नाट)। कृ— **उत्तासणिज्ज** ; (तंदु)।

उत्तास पुं [उत्त्रास] १ त्रास, भय ; २ हैरानी; (कप्पू)।

उत्तासइत्तु वि [उत्त्रासयितृ] १ भय-भीत करने वाला, २ हैरान करने वाला ; (आचा)।

उत्तासणअ, **उत्तासणग** वि [उत्त्रासनक] १ भयंकर, उद्वेग-जनक, २ हैरान करने वाला ; (पउम २२, ३५ ; णाया १, ८)।

उत्तासिय वि [उत्त्रासित] १ हैरान किया हुआ; २ भयभीत किया हुआ, (सुर १, २४७ ; आव ४)।

उत्ताहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (दे १, १०६)।

उत्ति स्त्री [उक्ति] वचन, वाणी ; (श्रा १४ ; सुपा २३ ; कप्पू)।

उत्तिंग पुं [उत्तिङ्ग] १ गर्दभाकार कीट-विशेष ; (धर्म २; निचू १३)। २ चींटीओं का बिल; " उत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे " (पडि)। ३ चींटीओं का संतान ; (दसा ३)। ४ तृण के अग्रभाग पर स्थित जल-बिन्दु ; (आचा)। ५ वनस्पति-विशेष, सर्पच्छत्रा, गुजराती में जिसको " बिलाडी नी टोप " कहते हैं,

" गहणेसु न चिट्ठिज्जा, बीएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्चं, उत्तिंगपणगेसु वा " (दस ८ ११)।

६ न. छिद्र, विवर, रन्ध्र ; (निचू १८, आचा २, ३, १, १६)। °**लेण** न [°लयन] कीट-विशेष का गृह—बिल, (कप्प)।

उत्तिण वि [उत्तृण] तृण-शून्य ;

" झंझावाउत्तिणवरविवरपलोट्टंतसलिलधाराहिं।
कुड्डलिहिओहिदिअहं रक्खइ अज्जा करअलेहिं "
(गा १७०)।

उत्तिणिअ वि [उत्तृणित] तृण-रहित किया हुआ "झंझावाउत्तिणिए घरम्मि " (गा ३१५)।

उत्तिण्ण वि [उत्तीर्ण] १ बाहर निकला हुआ " उत्तिण्णा तलागाओ " (महा) ; ' दिट्ठं च महासरवरं, मज्जिओ जहाविहिं तम्मि, उत्तिण्णो य उत्तरपच्छिमतीरे " (महा)। २ पार पहुँचा हुआ, पार-प्राप्त ; (स ३३२); "उत्तिण्णा समुद्दं, पत्ता वीयभयं " (महा)। ३ जो कम हुआ हो, ' संचरइ चिरपडिग्ग हलायण्णुत्तिसगणवेससोहग्गो" (गउड) ; ४ रहित "सोहइ अदोसभावो गुणोव्व जइ होइ मच्छरुत्तिण्णो , (गउड)। ५ निपटा हुआ, जिसने कार्य समाप्त किया हो वह "ण्हाणुत्तिण्णाए" (गा ५५५)। ६ उल्लंघित, अतिक्रान्त ; (राज)।

उत्तिण्ण वि [अवतीर्ण] १ नीचे उतरा हुआ ; " राया दक्खो, तेण साहा गहिया, उत्तिण्णो, निराणंदो किंकायव्वविमूढो गओ चंपं " (महा)।

उत्तित्थ पुन [उत्तीर्थ] कुपथ, अपमार्ग, (भवि)।

उत्तिम देखो **उत्तम**, (षड्, पि १०१, हे १, ४१, निचू १)।

उत्तिमंग देखो **उत्तमंग** ; (महा ; पि १०१)।

उत्तिन्न देखो **उत्तिण्ण** ; (काप्र १४६ ; कुमा)।

उत्तिरिविडि, **उत्तिवडा** स्त्री [दे] भाजन वगैरः का ऊंचा ढग, भाजनों की थप्पी ; गुजराती में जिसको ' उतरेवड ' कहते हैं; (दे १, १२२)। " फोडइ बिरालो लोलयाए सारेवि उत्तिवडं " (उप ७२८ टी)।

उत्तुंग वि [उत्तुङ्ग] ऊँचा, उन्नत; (महा; कप्पू ; गउड)।

उत्तुंड वि [उत्तुण्ड] उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख ; (गउड)।

उत्तुण वि [दे] गर्व-युक्त, दृप्त, अभिमानी ; (दे १, ६६; गउड)।

उत्तुप्पिय वि [दे] स्निग्ध, चिकना ; (विपा १, २)।

उत्तुय सक [उत्+तुद] पीडा करना, हैरान करना। वकृ—**उत्तुयंत** ; (विपा १, ७)।

उत्तुरिद्धि स्त्री [**दे**] १ गर्व, अभिमान ; २ वि. गर्वित, अभिमानी, (दे १, ९९)।
उत्तुर्व वि [**दे**] दृष्ट, देखा हुआ ; (षड्)।
उत्तुहिअ वि [**दे**] उत्खोटित, छिन्न, नष्ट; (दे १, १०५ ; १११)।
उत्तूह पुं [**दे**] किनारा-रहित इनारा, तट-शून्य कूप ; (दे १, ९४)।
उत्तेअ वि [**उत्तेजस्**] १ तेजस्वी, प्रखर; २ पु. मात्रा-वृत का एक भेद; (पिंग ; नाट)।
उत्तेअण न [**उत्तेजन**] उत्तेजन ; (मुद्रा १९८)।
उत्तेइअ, **उत्तेजिअ** वि [**उत्तेजित**] उद्दीपित, प्रोत्साहित, प्रेरित; (दस ३ ; पाअ)।
उत्तेड, **उत्तेडय** पुं [**दे**] विन्दु, (पिंड १९), "सित्तो अ एसो घडउत्तडएहिं" (स २६४)।
उत्थ न [**उक्थ**] १ स्तोत्र-विशेष, २ याग-विशेष; (विसे)
उत्थ वि [**उत्थ**] उत्पन्न, उत्थित, (सुक्र.१९६, गउड)।
उत्थइय वि [**अवस्तृत**] १ व्याप्त, (से ४, ३८)। २ प्रसारित, फैलाया हुआ, ३ आच्छादित, "अच्छरगमउयमसूगउच्छ-(? त्थ)-इयं भद्दासणं रयावेइ" (णाया १, १, पि ३०९)।
उत्थंगिअ देखो **उत्थंघिअ**=उत्तम्भित, (पि ५०५)।
उत्थंघ सक [**उद्+नमय्**] ऊँचा करना, उन्नत करना। उत्थंघइ ; (हे ४, ३६)।
उत्थंघ सक [**उत्+स्तम्भ्**] १ उठाना। २ अवलम्बन देना। ३ रोकना; (गउड, से ५, ६)। उत्थंघेइ, (गा ७२४)।
उत्थंघ सक [**उत्+क्षिप्**] ऊँचा फेंकना। उत्थघइ; (हे ४ १४४)। संकृ—**उत्थंघिअ** ; (कुमा)।
उत्थंघ सक [**रुध्**] रोकना। उत्थंघइ ; (हे ४, १३३)।
उत्थंघ पुं [**उत्तम्भ**] ऊर्ध्व-प्रसरण, ऊँचा फैलना ; (से ६, ३३)।
उत्थंघण न [**उत्तम्भन**] ऊपर देखो ; (गउड)।
उत्थंघि वि [**उत्क्षेपिन्**] ऊँचा फेंकना ; (गउड)।
उत्थंघिअ वि [**उन्नमित**] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ, (कुमा)।
उत्थंघिअ वि [**रुद्ध**] रोका हुआ ; (कुमा)।
उत्थंघिअ वि [**उत्तम्भित**] उत्थापित, उठाया हुआ (से ५, ६०)।
उत्थंभि वि [**उत्तम्भिन्**] १ आघात-प्राप्त ; २ अवलम्बन करने वाला ;

"धारिज्जइ जलनिहीवि कल्लोलोत्थंभिसत्तकुलसेलो।
न हु अन्नजम्मनिम्मिअसुहासुहो कम्म-परिणामो ॥"
(प्रासू १२७)।

उत्थंभिअ वि [**उत्तम्भित**] १ अवलम्बित, २ रुका हुआ ; स्तम्भित ; "अइपीणत्थणउत्थंभिआणणे सुअणु सुणसु मह वअणं" (गा ९२४)। ३ बन्धन-मुक्त किया हुआ ; (स ५९८)।
उत्थग्घ पुं [**दे**] समर्द, उपमर्द ; (दे १, ९३)।
उत्थय देखो **उत्थइय** ; (कप्प), "निवडंति तणोत्थयकूवियासु तुगावि मायगा" (उप ७२८ टी)।
उत्थर सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना। संकृ—**उत्थरिवि** (अप) ; (भवि)।
उत्थर सक [**अव+स्तृ**] १ आच्छादन करना, ढकना। २ पराभव करना। वकृ—**उत्थरंत, उत्थरमाण**; (पण्ह १, ३; राज)।
उत्थरिअ वि [**आक्रान्त**] आक्रान्त, दबाया हुआ ; "उत्थरिओवग्गिआइं अक्कतं" (पाअ ; भवि)।
उत्थरिय वि [**दे**] १ निःसृत, निर्गत ; (स ४७३); "अच्छुक्कुत्थरियमहल्लवाहभरनीसहा पडिया" (सुपा २०)। २ उत्थित, उठा हुआ; (दे ७, ९२)।
उत्थल न [**उत्स्थल**] १ ऊँचा धूलि-राशि, उन्नत रजःपुञ्ज, (भग ७, ६)। २ उन्मार्ग, कुपथ, (मे ८, ९)।
उत्थलिअ न [**दे**] १ घर, गृह ; २ उन्मुख-गत, ऊँचा गया हुआ ; (दे १, १०७ ; स १८०)।
उत्थल्ल अक [**उत्+शल्**] उछलना, कूदना। उत्थल्लइ ; (षड्)।
उत्थल्लपत्थल्ला स्त्री [**दे**] दोनो पार्श्वों से परिवर्त्तन, ऊथल-पाथल ; (दे १, १२२)।
उत्थल्ला स्त्री [**दे**] १ परिवर्त्तन, (दे १, ९३)। २ उद्वर्तन; (गउड)।
उत्थल्लिअ वि [**उच्छलित**] उछला हुआ "उत्थल्लिअं उच्छलिअं" (पाअ)।
उत्थाइ वि [**उत्थायिन्**] उठने वाला, (दे ८, १९)।
उत्थाइय वि [**उत्थापित**] उठाया हुआ "पुव्वुत्थाइयनरवरदेमे दंडाहिवं ठवइ महणं" (सुपा ३५२)।

उत्थाण न [**उत्थान**] १ वीर्य, बल, पराक्रम; (विसे २८-२६)। २ उत्थान, उत्पत्ति ;
" वंछावाहो असज्झो न नियत्तइ ओसहेहिं कएहिं।
तम्हा तीउत्थाणं निरुंभियव्वं हिएसीहिं"
(सुपा ४०४)।

उत्थामिय (अप) वि [**उत्थापित**] उठाया हुआ; (भवि)।

उत्थार सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना, दबाना। उत्थारइ ; (हे ४, १६० ; षड्)।

उत्थार देखो **उच्छाह**=उत्साह; (हे २, ४८ ; षड्)।

उत्थारिय वि [**आक्रान्त**] आक्रान्त, दबाया हुआ "उत्थारिअअंतरगरिडवग्गो" (कुमा ; सुपा ५४६)।

उत्थिय देखो **उट्ठिय** ; (हे ४, १६ ; पि ३०६)।

उत्थिय देखो **उत्थइअ** ; (पचा ८)।

°**उत्थिय** वि [°**तीर्थिक**] मतानुयायी, दर्शनानुयायी, (उवा; जीव ३)।

°**उत्थिय** वि [°**यूथिक**] यूथ-प्रविष्ट, "अण्णउत्थिय—" (उवा; जीव ३)।

उत्थुभण न [**अवस्तोभन**] अनिष्ट की शान्ति के लिए किया जाता एक प्रकार का कौतुक, थू थू आवाज करना ; (बृह १)।

उद न [**उद**] जल, पानी ; "अवि साहिए दुवे वासे सीओदं अभोच्चा निक्खंते" (आचा ; भग ३, ६)। °**उल्ल** °**ओल्ल** वि (°**आर्द्र**) पानी से गीला; (ओघ ४८६ ; पि १६१)। °**गत्ताभ** न (°**गर्त्ताभ**) गोत्र विशेष; (ठा ७)।

उदइय देखो **ओदइय** ; (अणु)।

उदइल्ल वि [**उदयिन्**] उदयवान्, उन्नति-शील ; "सिरिअभयदेवसूरी अउव्वसूरो सयावि उदइल्लो" (सुपा ६२२)।

उदंक पुं [**उदङ्क**] जल का पात्र-विशेष, जिससे जल ऊँचा छिटका जाता है; (जं २)।

उदंच सक [**उद्+अञ्च्**] ऊँचा जाना ; (कुमा)।

उदंचण न [**उदञ्चन**] १ ऊँचा फेंकना ; २ वि. ऊँचा फेंकने वाला ; (अणु)।

उदंचिर वि [**उदञ्चितृ**] ऊँचा जाने वाला ; (कुमा)।

उदंत पुं [**उदन्त**] हकीकत, समाचार, वृतान्त; " गिअमेत्तग्ग कइयणं चीमोत्तेणं व्वगहसवन्न उवणिओ " (से ४, ५५; स ३० ; सण)।

उदग पुं [**उदक**] जल, पानी , " चत्तारि उदगा पण्णत्ता" (ठा ४; नी ५)। २ वनस्पति-विशेष; (दस ८, ११)। ३ जलाशय; (भग १, ८)। ४ पुं. स्वनाम ख्यात एक जैन साधु ; ५ सातवें भावि जिनदेव; (सुअ २, ७)। °**गब्भ** पुं [°**गर्भ**] बद्दल, बादल, अभ्र ; (भग २, ५)। °**दोणि** स्त्री [°**द्रोणि**] १ जल रखने का पात्र-विशेष, ठंढा करने के लिए गरम लोहा जिसमें डाला जाता है वह ; (भग १६, १)। २ जो अरघट्ट में लगाया जाता है वह छोटा घड़ा, (दस ७)। °**पोग्गल** न [°**पौद्गल**] बद्दल, मेघ ; (ठा ३, ३)। °**मच्छ** पुं [°**मत्स्य**] इन्द्र-धनुष का खण्ड, उत्पात-विशेष ; (भग ३, ६)। °**माल** पुंस्त्री [°**माल**] जल का ऊपर चढ़ता तरङ्ग उदक-शिखा, वेला ; (ठा १० ; जीव ३)। °**वत्थि** स्त्री [°**वस्ति**] दृति, पानी भरने की मशक ; (गाया १, १८)। °**सिहा** स्त्री [°**शिखा**] वेला ; (ठा १०)। °**सीम** पु [°**सीमन्**] पर्वत-विशेष ; (इक)।

उदग्ग वि [**उदग्र**] १ सुन्दर, मनोहर; "ततो दट्ठु तीए रूवं तह जोव्वणमुदग्गं" (सुर १, १२२)। २ उग्र, उत्कट, प्रखर ; (ठा ४, २ ; गाया १, १ ; सत ३०)। ३ प्रधान, मुख्य ; " उदग्गचारित्ततवो महेसी " (उत्त १३)।

उदत्त वि [**उदात्त**] स्वर-विशेष, जो उच्च स्वर से बोला जाय वह स्वर ; (विसे ८५२)।

उदन्ना स्त्री [**उदन्या**] तृषा, तरस, पिपासा ; (उप १०३१ टी)।

उदय देखो **उदग** ; (गाया १, ८ ; सम १५३ ; उप ७२८ टी; प्रासू ७२ ; पण्ण १)।

उदय पु [**उदय**] १ अभ्युदय, उन्नति ; " जो एवंविहंपि कम्मं आयरइ, सो किं बंभदत्तकुमारस्स उदयं इच्छइ ? " (महा)। २ उत्पत्ति , (विसे)। ३ विपाक, कर्म-परिणाम;
" वहमारणअब्भक्खाणदाणपरधणविलोवणाईणं।
सव्वजहन्नो उदओ दसगुणिओ एक्कसि कयाणं "
(उव)।
४ प्रादुर्भाव, उद्गम " आइच्चोदए चंदगहा इव निप्पभा जाया सुरा" (महा) :
" उदयम्मिवि अत्थमणेवि धरइ रत्तत्तणं दिवसनाहो।
रिद्धीसु आवईसुवि तुल्लच्चिय हुंति सप्पुरिसा। "
(प्रासू १२)।
५ भरतक्षेत्र के भावी सातवें जिन-देव ; (सम १५३)। ६ भरत क्षेत्र में होने वाले तीसरे जिन-देव का पूर्व-भवीय नाम ; (सम १५४)। ७ स्वनाम-ख्यात एक राजकुमार ; (पउम

२१, ५६)। °यल पुं [°ाचल] पर्वत-विशेप, जहां सूर्य उदित होता है ; (सुपा ८८)।

उदयत देखो **उदि**।

उदायण पुं [**उदयन**] १ एक राज-कुमार, कोशाम्बी नगरी के राजा शतानीक का पुत्र ; (विपा १, ५)। २ एक विख्यात जैन राजा ; (कप्प)। ३ न उन्नति, उदय, ४ वि. उन्नत होने वाला, प्रवर्धमान ; (ठा ५, ३)।

उदर न [**उदर**] १ पेट, जठर , (सुत्र १, ८)। २ पेट की बिमारी ; " खयजरवणलूत्र्यासाससोसोदराणि " (लहुत्र १५)।

उदरंभरि वि [**उदरम्भरि**] स्वार्थी, एकलपेटा ; (पि ३७६)।

उदरि वि [**उदरिन्**] पेट की बीमारी वाला ; (पगह २, ५)।

उदरिय वि [**उदरिक**] ऊपर देखो ; (विपा १, ७)।

उदवाह वि [**उदवाह**] १ पानी वहन करने वाला, जल-वाहक ; २ पु छोटा प्रवाह ; (भग ३, ६)।

उदहि पु [**उदधि**] १ समुद्र, सागर, (कुमा)। २ भवनपति देवों की एक जाति, उदधिकुमार ; (पगह १, ४)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] देवों की एकजाति, (पगण १)। देखो **उअहि**।

उदाइ पुं [**उदायिन्**] १ एक जैन राजा, महाराजा कोणिक का पुत्र , जिसको एक दुष्ट ने जैन साधु बन कर धर्मच्छल से मारा था, और जो भविष्य में तीसरा जिन-देव होगा, (ठा ६, ती)। २ पुं. राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती, (भग १६, १)।

उदायण पुं [**उदायन**] सिन्धु-देश का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (ठा ८ , भग ३, ६)।

उदार देखो **उराल** ; (उप पृ १०८)।

उदासि वि [**उदासिन्**] उदास, उदासीन। °**व** न [°**त्व**] औदासीन्य ; (रंभा ; स ४५६)।

उदासीण वि [**उदासीन**] १ मध्यस्थ, तटस्थ ; (पगह १, २)। २ उपेक्षा करने वाला ; (ठा ६)।

उदाहड वि [**उदाहृत**] कथित, दृष्टान्तित ; (राज)।

उदाहर सक [**उदा+हृ**] १ कहना। २ दृष्टान्त देना। उदाहरंति, (पि १४१)। " भासं मुसं नेव उदाहरिज्जा" (सत्त ४३)। भूका-उदाहु; (आचा, उत्त १४, ६) ; उदाहू ; (सूत्र १, १२, ४)। वकृ—**उदाहरंत** ; (सुत्र १, १२, ३)।

उदाहरण न [**उदाहरण**] १ कथन, प्रतिपादन। २ दृष्टान्त; (सूत्र १, १२ ; विसे)।

उदाहिय वि [**उदाहृत**] १ कथित, प्रतिपादित ; २ दृष्टान्तित , (आचा ; गाया १, ८)।

उदाहिय वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका गया , (पड्)।

उदाहु देखो **उदाहर**।

उदाहु अ [**उताहो**] अथवा, या ; (उवा)।

उदाहू देखो **उदाहर**।

उदाहो देखो **उदाहु**=उताहो ; (स्वप्न ७०)।

उदि अक [**उद्+इ**] १ उन्नत होना। २ उत्पन्न होना। उदेइ ; (विसे १२६६, जीव ३)। वकृ—**उदयंत** ; (भग , पउम ८२, ५६ ; सुपा १६८)। कवकृ—**उदिज्जंत** ; (विसे ५३०)।

उदिक्खिअ वि [**उदीक्षित**] अवलोकित, (दे ६, १४४)।

उदिण्ण वि [**उदीच्य**] उत्तर-दिशा में उत्पन्न; (आवम)।

उदिण्ण } वि [**उदीर्ण**] १ उदित, उदय-प्राप्त, (ठा ५);
उदिन्न } "इक्को वि इक्को विसओ उदिन्नो"(सत ५२)। २ फलोन्मुख (कर्म); (पगण १६, भग)। ३ उत्पन्न, " जहा उदिगणो नणु कोवि वाही " (सत ५ ; श्रा २७)। ४ उत्कट, प्रबल " अणुत्तरोववाइयाण भंते ! देवा किं उदिगणमोहा, उवसंतमोहा, खीणमोहा ? " (भग ५, ४)।

उदिय वि [**उदित**] उदित, उद्गत ; (सम ३६)। २ उन्नत ; (ठा ४)। ३ उक्त, कथित ; (विसे ३५७६)।

उदीण वि [**उदीचीन**] १ उत्तर दिशा से संबन्ध रखने वाला, उत्तर दिशा में उत्पन्न ; (आचा ; पि १६५)। °**पाईणा** स्त्री [°**प्राचीना**] ईशान कोण ; (भग ५, १)।

उदीणा स्त्री [**उदीचीना**] उत्तर दिशा ; (ठा १, १)

उदीर सक [**उद्+ईरय्**] १ प्रेरणा करना। २ कहना, प्रतिपादन करना। ३ जो कर्म उदय-प्राप्त न हो उसको प्रयत्न-विशेष से फलोन्मुख करना। उदीरइ, उदीरेंति; (भग; पनि ७८)। भूका—उदीरिसु, उदीरेंसु ; (भग)। भवि—उदीरिस्संति , (भग)। वकृ—**उदीरेंत** ; (ठा ७)। " कुसलवइमुदीरंतो " (उप ६०४)। कवकृ—**उदीरिज्जमाण** ; (पगण २३)। हेकृ—**उदीरेत्तए** ; (कस)।

उदीरण न [**उदीरण**] १ कथन, प्रतिपादन। २ प्रेरणा। ३ काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से किया जाता कर्म-फल का अनुभव ; (कम्म २, १३)।

उदीरणया } स्त्री [**उदीरणा**] ऊपर देखो, (कम्म २,
उदीरणा } १३; १)। "जं करणेणोकड्ढिय उदए दिज्जइ उदीरणा एसा" (कम्मप १४३, १६६)।

उदीरय वि [**उदीरक**] १ कथक, प्रतिपादक। २ प्रेरक, प्रवर्तक "एकमेक्कं विसयविसउदीरएसु" (पण्ह १, ४)। ३ उदीरणा करने वाला, काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से कर्म-फल का अनुभव करने वाला; (कम्मप १५६)।

उदीरिय वि [**उदीरित**] १ प्रेरित "चालियाणं घट्टियाण खोभियाण उदीरियाण केरिसे सद्दे भवति" (राय; जीव ३)। २ कथित, प्रतिपादित "घोरं धम्मं उदीरिए" (आचा)। ३ जनित, कृत; "ससद्दफासा फरुसा उदीरिया" (आचा)। ४ समय-प्राप्त नहीने पर भी प्रयत्न-विशेष से खींच कर जिसके फलका अनुभव किया जाय वह (कर्म), (पण्ण २३, भग)।

उदु देखो **उउ**; (प्राप; अभि १८६, पि ५७)।

उदुंबर देखो **उंबर**, (कस)।

उदुरुह सक [**उद्+रुह्**] ऊपर चढना। उदुरुहइ, (पि ११८)।

उदूखल देखो **उऊखल**; (पि ६६)।

उदूलिय वि [**दे**] अवनत, नीचा नमा हुआ; (षड्)।

उदूहल देखो **उऊहल**; (आचा; पि ६६)।

उद्द न [**दे**] १ जल-मानुष, २ ककुद, बैल के कंधे का कुब्बड, (दे १, १२३)। ३ मत्स्य-विशेष; ४ उसके चर्म का बना हुआ वस्त्र; (आचा)।

उद्द वि [**आर्द्र**] गिला, आर्द्र; (षड्)।

उद्दंड } वि [**उद्दण्ड**] १ प्रचण्ड, उद्धत; (कुमा,
उद्दंडग } गउड)। २ पु. हाथ में दण्ड को ऊँचा रख कर चलने वाले तापसों की एक जाति, (औप, निचू १)।

उद्दंतुर वि [**उद्दन्तुर**] १ जिसका दान्त बाहर आया हो वह; २ ऊँचा; (गउड)।

उद्दंभ पु [**उद्दम्भ**] छन्द का एक भेद; (पिंग)।

उद्दंस पुं [**उद्दंश**] मधुमक्षिका, मत्कुण आदि छोटा कीट; (कप्प)।

उद्दड्ढ पु [**उद्दग्ध**] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास; (ठा ६)। °**मज्झिम** पुं [°**मध्यम**] रत्नप्रभा पृथिवी का एक नरकावास; (ठा ६)। °**ावत्त** पुं [°**ावर्त्त**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (ठा ६)। °**ावसिट्ठ** पु [°**ावशिष्ट**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (ठा ६)।

उद्दद्दर न [**दे. ऊर्ध्वदर**] सुभिक्ष, सुकाल; (बृह १)।

उद्दरिअ वि [**दे**] १ उत्खात, उखाडा हुआ; (दे १, १००)। २ स्फुटित, विकसित "फुडिअं फलिअं च दलिअ उद्दरिअं" (पाअ)।

उद्दरिअ वि [**उद्+दृप्त**] गर्वित, उद्धत, अभिमानी; (षंदि)।

उद्दलण न [**उद्दलन**] विदारण; (गउड)।

उद्दव सक [**उद्, उप+द्रु**] १ उपद्रव करना, पीडा करना। २ मारना, विनाश करना हिंसा करना। "तए णं सा रेवई गाहावईणी अन्नया कयाइ तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अतर जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं **उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता** छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं **उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता** तासिं दुवालसण्ह सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जेइ, २ त्ता महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ" (उवा)। भवि—उद्दवेहिइ; (भग १५)। कवकृ—**उद्दविज्जमाण**; (सूअ २, १)। कृ—**उद्दवेयव्व**; (सूअ २, ३)।

उद्दवअ पुं [**उद्द्रव, उपद्रव**] १ उपद्रव; २ विनाश, हिंसा; "आरंभो उद्दवओ" (श्रा ७)।

उद्दवइत्तु वि [**उद्द्रोतृ, उपद्रोतृ,**] १ उपद्रव करने वाला; २ हिंसक, विनाशक, "से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता उद्दवइत्ता विलुंपित्ता अकडं करिस्सामि ति मन्नमाणे" (आचा)।

उद्दवण न [**उद्द्रवण, उपद्रवण**] १ उपद्रव, हरकत; "उद्दवणं पुण जाणसु अइवायविवज्जियं" (पिंड; औप)। २ विनाश, हिंसा; (सं ८४; आचा २)।

उद्दवणया } स्त्री [**उद्द्रवणा, उपद्रवणा**] ऊपर देखो;
उद्दवणा } (भग; पण्ह १, १)।

उद्दवाइअ देखो **उड्डुवाइय**; "समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं०—गोदासे गणे उत्तरवलिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवातित-(इअ)-तगणे विस्सवाति-(इअ)-गणे कामड्ढितन(अ)-गणे माणवगणे कोडितगणे" (ठा ६)।

उद्दविअ वि [**उद्द्रुत, उपद्रुत**] १ पीडित; "संघाइआ संघट्टिआ परियाविआ किलामिआ उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिआ" (पडि)। २ विनाशित "नाऊण विभंगेणं नियजिट्ठसुयस्स विलसियं, तो सो सकुटुंबो उद्दविओ" (सुपा ४०६)।

उद्दवेत्तु देखो **उद्दवइत्तु**; (आचा)।

उद्दा सक [**उद्+दा**] बनाना, निर्माण करना। उद्दाइ; (भग)।

उद्दा अक [**अव+द्रा**] मरना । उद्दाइ, उद्दायाति, (भग) । सकृ—**उद्दाइत्ता** ; (जीव ३, ठा १०; भग) ।

उद्दाइआ स्त्री [**उद्द्रोत्री, उपद्रोत्री**] उपद्रव करने वाली स्त्री, " ताए वा उद्दाइआए कोइ संजओ गहितो होज्जा " (आघ १८भा, टी) ।

उद्दाइंत देखो **उद्दाय=शुभ्** ।

उद्दाइत्ता देखो **उद्दा**=अव+द्रा ।

उद्दाण स्त्री [**दे**] चुल्हा, चुल्ली, जिस पर रसोई पकाई जाती है; (दे १, ८७) ।

उद्दाम वि [**उद्दाम**] १ स्वैर, स्वच्छन्द ; (पाअ) । २ प्रचण्ड, प्रखर, " ता सजलजलहरुद्दामगहिरसद्देण ताण तं कहइ " (सुपा २३४) । ३ अव्यवस्थित, (हे १, १७७) ।

उद्दाम पुं [**दे**] १ संघात, समूह; २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश; (दे १, १२६) ।

उद्दामिय वि [**उद्दामित**] लटकता हुआ, प्रलम्बित, "तत्थ णं बहवे हत्थी पासति सण्णद्धबद्धवम्मियगुडिते उप्पीलियकच्छे उद्दामियघंटे" (विपा १, २) ।

उद्दाय अक [**शुभ्**] शोभना, शोभित होना, अच्छा मालूम देना । वकृ—"उववणेसु परहुयरुयपरिभितसंकुलेसु **उद्दायंत**-रतइंदगोवययोवयकारुन्नविलविएसु " (णाया १, १) । **उद्दाइंत** ; (णाया १, १ टी) ।

उद्दरिअ वि [**दे**] १ युद्ध से पलायित, रण-द्रुत । २ उत्खात, उन्मूलित ; (षड्) ।

उद्दाल सक [**आ+छिद्**] खींच लेना, हाथ से छीन लेना । उद्दालइ; (हे ४, १२५, षड्, महा) । हेकृ—**उद्दालेउं**, (पि ५७७) ।

उद्दाल पुं [**अवदाल**] १ दबाव, अवदलन "तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि गंगापुलिणवालुअउद्दालसालिसए " (कप्प, णाया १, १) । २ वृत्त-विशेष, (जीव ३) । ३ अवसर्पिणी काल का प्रथम आरा—समय-विशेष ; (जं २) ।

उद्दालिय वि [**आच्छिन्न**] छीना हुआ, खींच लिया गया ; (पाअ; कुमा; उप पृ ३२३) । "दो सारवलिद्दावि हु तेहिं उद्दालिया" (सुपा २३८) ।

उद्दावणया स्त्री [**उपद्रावणा**] उपद्रव, हैरानी ; (राज) ।

उद्दाह पुं [**उद्दाह**] १ प्रखर दाह ; २ आग, (ठा १०) ।

उद्दाहग वि [**उद्दाहक**] आग लगाने वाला, (पण्ह १,३) ।

उद्दिट्ठ वि [**उद्दिष्ट**] १ कथित, प्रतिपादित ; (विपा २, १) । २ निर्दिष्ट ; (दस) । ३ दान के लिए संकल्पित (अन्न, पानादि); "णायपुत्ता उद्दिट्ठभत्तं परिवज्जयंति" (सूअ २, ६) । ४ लक्षित, (सूअ २, ६) । ५ न. उद्देश; (पंचा १०) । °**कड** वि [°**कृत**] साधु के उद्देश से बनाया हुआ, साधु के निमित किया हुआ (भोजनादि), (दस १०) ।

उद्दिट्ठा स्त्री [**दे. उद्दृष्टा**] तिथि-विशेष, अमावस्या ; (औप) ।

उद्दित्त वि [**उद्दीप्त**] प्रज्वलित ; (बृह १) ।

उद्दिस सक [**उद्+दिश्**] १ नाम निर्देश-पूर्वक वस्तु का निरूपण करना । २ देखना । ३ संकल्प करना । ४ लक्ष्य करना । ५ अंगीकार करना । ६ सम्मति लेना । ७ समाप्त करना । ८ उपदेश देना । उद्दिसइ; (वव २, ७) । कर्म—"दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्संति " (उवा) । कवकृ—**उद्दिसिज्जंत**; (आवम) । संकृ—"गओ तासिं समीवं, पुच्छियं महुरवाणीए एक्क कन्नगं **उद्दिसिऊण**, कओ तुब्भे " (महा ; वव १, ७) ; "तदवसाणे य एक्का पवरमहिला वंधुमइं **उद्दिस्स** कुमारउत्तमंगे अक्खए पक्खिवइ; (महा); **उद्दिसिय**; (आचा २, १; अभि १०४) । हेकृ-**उद्दिसिउं**, **उद्दिसित्तए** ; (वव १,१० भा; ठा २,१), प्रयो—**उद्दिसावित्तए, उद्दिसावेत्तए**; (बृह १; कस) ।

उद्दिसिअ देखो **उद्दिट्ठ** ; (आचा २) ।

उद्दिसिअ वि [**दे**] उत्प्रेक्षित, वितर्कित; (दे १, १०६) ।

उद्दीवण न [**उद्दीपन**] १ उत्तेजन; २ वि. उत्तेजक, (मै ५८ ; रंभा) ।

उद्दीवणिज्ज वि [**उद्दीपनीय**] उद्दीपक, उत्तेजक, "मयणुद्दीवणिज्जेहि विविहेहिं भूसणेहि" (रंभा) ।

उद्दीविअ वि [**उद्दीपित**] प्रदीपित, प्रज्वालित, (पाअ) । "चीयाए पक्खिविउं तत्तो उद्दीविओ जलणो ' (सुर ६, ८८) ।

उद्दुय वि [**उद्द्रुत**] पलायित ; (पउम ६, ७०) ।

उद्दुय वि [**उपद्रुत**] हैरान किया हुआ ; (स १३१) ।

उद्देस देखो **उद्दिस** । उद्देसइ ; (भवि) ।

उद्देस पुं [**उद्देश**] १ नाम-निर्देश-पूर्वक वस्तु-निरूपण ; (विसे) । २ शिक्षा, उपदेश; "उद्देसो पासगस्स णत्थि " ३ व्यपदेश, व्यवहार ; (आचा) । ४ लक्ष्य ; ५ अभिप्राय, मतलब ; (विसे) । ६ ग्रन्थ का एक अंश ; (भग

१, १)। ७ प्रदेश, अवयव; "खुब्भंति खुहिअमअरा आवाआलगहिरा समुद्दुद्देसा" (से ५, १६; १, २०)। ८ गुरु-प्रतिज्ञा, गुरु-वचन; (विसे)। ६ जगह, स्थान; (कप्पू)।

उद्देसण न [**उद्देशन**] १ पाठन, वाचना, अध्यापन; "उद्दिसण वायणति पाठणया चेव एगट्ठा" (पंचभा; पराह २, ५)। २ अधिकारिता, योग्यता; (ठा ४, ३)।

उद्देसणा स्त्री [**उद्देशना**] ऊपर देखो; (पंचभा)।

उद्देसिय न [**औद्देशिक**] १ भिक्षा का एक दोष, साधु के लिए भोजन-निर्माण; २ वि. साधु-निमित बनाया हुआ (भोजन); (कस)। "उद्देसियं तु कम्मं एत्थं उद्दिस्स कीरए जंति" (पंचा १७; ठा ६; अंत)।

उद्देह पुं [**उद्देह**] भगवान् महावीर का एक गण—साधु-समुदाय; (ठा ६; कप्प)।

उद्देहलिया स्त्री [**उद्देहलिका**] वनस्पति-विशेष; (राज)।

उद्देहिया } स्त्री [**दे**] उपदेहिका, दिमक, त्रीन्द्रिय जन्तु-
उद्देही } विशेष; (जी १६; स ४३५; ओघ ३२३); "उवदेहीइ उद्देही" (दे १, ६३)।

उद्दोहग वि [**उद्द्रोहक**] घातक, हिंसक (पराह १, ३)।

उद्ध देखो **उड्ड**; (से ३, ३३; पि ८३; महा; हे २, ५६; ठा ३, २)।

उद्धअ वि [**उद्धत**] १ उन्मत्त; (से ४, १३; पाअ)। २ गर्वित, अभिमानी; (भग ११, १०)। ३ उत्पादित; (गाया १, १)। ४ अतिप्रबल "उद्धततमंधकार—" (पराह १, ३)।

उद्धअ देखो **उद्धरिअ**=उद्धृत। "पावल्लेण उवेच्च व उद्धयपयधारणा उ उद्धारो" (वव १, १०)।

उद्धअ वि [**दे**] शान्त, ठंढा; (षड्)।

उद्धंत देखो **उद्धा**।

उद्धंस सक [**उद्+धृष्**] १ मारना। २ आक्रोश करना, गाली देना। उद्धंसेइ; (भग १५)। उद्धंसेंति; (गाया १, १६)।

उद्धंस सक [**उद्+ध्वंस्**] विनाश करना। संकृ—**उद्धंसिऊण**; (स ३६२)।

उद्धंसण न [**उद्धर्षण**] १ आक्रोश, निर्भर्त्सन; २ वध, हिंसा; (राज)।

उद्धंसणा स्त्री [**उद्धर्षणा**] ऊपर देखो; (ओघ ३८ भा); "उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति" (गाया १, १६)।

उद्धंसिय वि [**उद्धर्षित**] आक्रुष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह; (निचू ४)।

उद्धच्छवि वि [**दे**] विसंवादित, अप्रमाणित; (दे १, ११४)।

उद्धच्छविअ वि [**दे**] सज्जित, तय्यार; (दे १, ११६)।

उद्धच्छिअ वि [**दे**] निषिद्ध, प्रतिषिद्ध; (दे १, १११)।

उद्धट्टु देखो **उद्धर**।

उद्धड वि [**उद्धृत**] उठा कर रखा हुआ; (धर्म ३)।

उद्धण वि [**दे**] उद्धत, अविनीत; (षड्)।

उद्धत्थ वि [**दे**] विप्रलब्ध, वञ्चित; (दे १, ६६)।

उद्धदेहिय न [**और्ध्वदेहिक**] अग्नि-संस्कार आदि अन्त्येष्टि-क्रिया; (स १०६)।

उद्धम सक [**उद्+हन्**] १ शङ्ख वगैरः फूँकना, वायु भरना। २ ऊँचा फेंकना, उड़ाना। कवकृ—**उद्धम्मंताणं** संखाणं सिंगाणं संखियाणं खरमुहीणं" (राय); "पायालसहस्सवायवसवेगसलिल**उद्धम्ममाण**दगरयरयंधकारं (रयणागरसागरं)" (पराह १, ३; औप)।

उद्धर सक [**उद्+हृ**] १ फँसे हुए को निकालना, ऊपर उठाना। २ उन्मूलन करना। ३ दूर करना। ४ खींचना। ५ जीर्ण मन्दिर वगैरः का परिष्कार-संस्कार करना। ६ किसी ग्रन्थ या लेख के अंश-विशेष को दूसरी पुस्तक या लेख में अविकल नकल करना। भवि—उद्धरिस्सइ; (स ५६६)। वकृ—पइनगरं पइगामं पायं जिणमंदिराइं पूयंतो, जिन्नाइं **उद्धरंतो**" (सुपा २२४);

"जयइ धरमुद्धरंतो भरणीसारियमुहग्गचलणेण।
णियदेहेण कोण व पंचंगुलिणा महाकुम्मो ॥" (गउड)।

संकृ—**उद्धरिउं, उद्धरिऊण, उद्धरित्ता, उद्धरित्तु, उद्धट्टु**; (पंचा १६; प्राह)। "तं लयं सव्वसो छित्ता, **उद्धरित्ता** समूलया" (उत्त २३; पंचा १६); "बाहू उद्धट्टु कक्खमणुव्वजे" (सूअ १, ४); "तसे पाणे उद्धट्टु पादं रीइज्जा" (आचा २, ३, १, ४)।

उद्धर (अप) देखो **उद्धुर**; (भवि)।

उद्धरण न [**उद्धरण**] १ ऊपर उठाना; २ फँसे हुए को निकालना; (गउड); "दीणुद्धरणम्मि घणं न पउत्तं" (विवे १३५)। ३ उन्मूलन; ४ अपनयन; (सूअ १, ४; ६)।

उद्धरण वि [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा; (दे १, १०६)।

उद्धरिअ वि [उद्धृत] १ उत्पाटित, उत्क्षिप्त; 'हक्खुत्तं उक्खुट्टं उक्खित्त-उप्पाडिग्राइं उद्धरिअं'' (पाअ)। २ किसी ग्रन्थ या लेख के अंश-विशेष को दूसरे पुस्तक या लेख में अविकल नकल कर देना ;
"एसो जीवविचारो, संखेवरुईण जाणणा-हेउं।
संखित्तो उद्धरिग्रो, रुंदाग्रो सुय-समुद्दाग्रो" (जी ५१); "जेण उद्धरिया विज्जा, ग्रागासगमा महापरिण्णाग्रो" (ग्रावम)। ३ आकृष्ट, खींचा हुआ ; ४ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ; "उद्धरियसव्वसल्ल—"(पंचा १६)। ५ जीर्ण वस्तु का परिष्कार करना, " जिणमंदिर न उद्धरिअं" (विवे १३३)।

उद्धरिअ वि [दे] अर्दित, विनाशित ; (षड्)।

उद्धल पुं [दे] दोनों तरफ की अप्रवृत्ति ; (षड्)।

उद्धवअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ ; (दे १, १०६)।

उद्धविअ वि [दे] अर्चित, पूजित ; (दे-१, १०७)।

उद्धा } सक [उद्+धाव्] १ दौड़ना, वेग से जाना। **उद्धाअ** } २ ऊँचे जाना। उद्धाइ ; (पि १६५)। वकृ—**उद्धंत, उद्धाअंत, उद्धायमाण** ; (कप्प ; से ६, ६६ ; १३, ६१; ग्रौप)।

उद्धाअ अक [ऊर्ध्वाय्] ऊँचा होना। वकृ—**उद्धाअमाण** ; (से १३, ६१)।

उद्धाअ वि [उद्धाव] उद्धावित, ऊँचा गया हुआ " छिण्णकडए वहंतं उद्धाअणिअत्तगरुडमग्गिअसिहरे " (से ६, ३६)।

उद्धाअ पुं [दे] १ विषमोन्नत प्रदेश , २ समूह ; ३ वि. थका हुआ, श्रान्त ; (दे १, १२४)।

उद्धाइअ वि [उद्धावित] १ फैला हुआ, विस्तीर्ण, प्रसृत, (से ३, ५२)। २ ऊँचा दौड़ा हुआ , (से २, २२)।

उद्धार पु [उद्धार] १ त्राण, रक्षण ; (कुमा)। २ ऋण देना, धार देना; (सुपा ५६७; श्रा १४)। ३ अपहरण ; (अणु)। ४ अपवाद ; (राज)। ५ धारणा, पढ़े हुए पाठ का नहीं भूलना " पावल्लेण उवेच्च व उद्धयपयधारणा उ उद्धारो " (वव १, १०)। °**पलिओवम** न [°पल्योपम] समय का एक परिमाण ; (अणु)। °**समय** पुं [°समय] समय-विशेष ; (अणु)। °**सागरोवम** न [°सागरोपम] समय का एक दीर्घ परिमाण ; (अणु)।

उद्धाव देखो **उद्धा**।

उद्धावण न [उद्धावन] नीचे देखो ; (श्रा १)।

उद्धावणा स्त्री [उद्धावना] १ प्रबल प्रवृत्ति ; २ दूर-गमन, दूर क्षेत्र में जाना ; (धर्म ३)। ३ कार्य की शीघ्र-सिद्धि ; (वव १, १)।

°**उद्धि** देखो **बुद्धि**; (षड्)।

उद्धिअ देखो **उद्धरिअ**=उद्धृत ; (श्रा ४०; ग्रौप; राय; वव १, १ , ग्रौप; पच्च २८)।

उद्धीमुह वि [ऊर्ध्वीमुख] मुँह ऊँचा किया हुआ ; (चंद ४)।

उद्धुंधलिय वि [दे] धुंधलाया हुआ ; (सण)।

उद्धुणिय देखो **उद्धुय** ; (सण)।

उद्धुम सक [पृ] पूर्ण करना, पूरा करना। उद्धुमइ ; (हे ४, १६६)।

उद्धुमा सक [उद्+ध्मा] १ आवाज करना ; २ जोर से धमनी को चलाना। उद्धुमाइ, उद्धुमाअइ ; (षड् ; प्रामा)।

उद्धुमाइअ वि [उद्ध्मापित] ठंढा किया हुआ, निर्वापित ; (से १, ८)।

उद्धुमाय वि [दे] १ परिपूर्ण ; " मायाइ उद्धुमाया " (कुमा); "पडिहत्थमुद्धुमायं ग्राहिरेइयं च जाण ग्राउण्णे " (णादि)। २ उन्मत्त ; " मअरंदरसुद्धुमाअमुहलमहुअरं " (से ६, ११);

उद्धुय वि [उद्धूत] १ पवन से उड़ा हुआ; (से ७, १४)। २ प्रसृत, फैला हुआ " गधुद्धुयाभिरामे " (ग्रौप)। ३ प्रकम्पित ; " वाउद्धुयविजयवेजयंती " (जीव ३)। ४ उत्कट, प्रबल , (सम १३७)। ५ व्यक्त, प्रकट; (कप्प)।

उद्धुर वि [उद्धुर] १ ऊँचा, उच्च ; " उद्धुरं उच्चं " (पाअ)। २ प्रचण्ड, प्रबल; (सुर ३, ३६; १२, १०६)।

उद्धुव्वंत } देखो **उद्धू**।
उद्धुव्वमाण }

उद्धुसिय वि [उद्धुषित] १ रोमाञ्च, " अन्नोन्नजंपिएहिं हसिउद्धुसिएहि खिप्पमाणो य " (उव)। २ वि. रोमाञ्चित, पुलकित; (दे १, ११५ ; २, १००) ; " उद्धुसियरोमकूवो सीयलअनिलेण संकुइयगत्तो " (सुर २, १०१); "उद्धुसियकेसरसडं " (महा)।

उद्धू सक [उद्+धू] १ कँपना, चलाना ; २ चामर वगैरः वीजना, पंखा करना। कवकृ—**उद्धुव्वंत, उद्धुव्वमाण**; (पउम २, ४० ; कप्प)।

उद्धूणिय देखो **उद्धुय** ; (सण)।

उद्धूद (शौ) देखो **उद्धुय** ; (चारु ३५)।

उद्धूल सक [**उद्+धूलय्**] १ व्याप्त करना। २ धूलि लगाना। **उद्धूलेइ**; (हे ४, २९)।

उद्धूलण न [**उद्धूलन**] धूलि को अङ्ग पर लगाना।

"जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फंससिज्जिरंगीए।
ण समप्पइ णवकावालिआइ उद्धूलणारंभो॥" (गा ४०८)।

उद्धूलिय वि [**उद्धूलित**] १ धूलि से लपेटा हुआ। २ व्याप्त "तिमिरोद्धूलिअभवणं" (कुमा)।

उद्धूवणिया स्त्री [**उद्धूपनिका**] धूप देना:

"केवि हु विरालतन्नयपुरीसमीसेहिं गुग्गुलाईहिं।
उव्वरियम्मि खिविता उद्धवणियं पयच्छंति॥" (सुर १४, १७४)।

उद्धूविअ वि [**उद्धूपित**] जिसको धूप किया गया हो वह; (विक्र ११३)।

उद्धोस पुं [**उद्धर्ष**] उल्लास, ऊँचा होना; (सट्टि ६५)। "जं जं इह सुहमवुद्धीए चिंतिज्जइ तं सव्वं रोमुद्धोसं जणेइ मह अम्मो" (सुपा ६४)।

उन्न न [**ऊर्ण**] ऊन, भेड या बकरी के रोम। °**मय** वि [°**मय**] ऊन का बना हुआ;

"गोवालियाण विंदं नच्चावइ फासुत्तियाहारं।
उन्नमयवासनिवसणपीणुन्नयथणहराभोगं॥" (सुपा ४३२)।

उन्न (अप) वि [**विषण्ण**] विषाद-प्राप्त, खिन्न; (षड्)।

उन्नइ देखो **उण्णइ**; (काल; सुपा २५७; प्रासू २८; सार्ध ३४)।

उन्नइज्जमाण देखो **उन्नी**।

उन्नइय वि [**उन्नीत**] ऊँचा लिया हुआ; (पउम १०५, ५७)।

उन्नंद सक [**उद्+नन्द्**] अभिनन्दन करना। कवकृ— "हियय्मालासहस्सेहिं **उन्नंदिज्जमाणे**" (कप्प)।

उन्नय देखो **उण्णय**; (सुपा ४७६; सम ७१; कप्प)।

उन्ना देखो **उण्णा**। °**मय** वि [°**मय**] ऊन का बना हुआ; (सुपा ६४१)।

उन्नाडिय न [**उन्नाटित**] हर्ष-द्योतक आवाज; (स ३७६)।

उन्नाम पुं [**उन्नाम**] १ ऊँचाई। २ अभिमान, गर्व; (सम ७१)।

उन्नामिअ वि [**उन्नमित**] ऊँचा किया हुआ; (पाअ; महा; स ३७७)।

उन्नालिअ वि [**दे**] देखो **उण्णालिअ**; "उन्नालिअं उन्नामिअं" (पाअ)।

उन्नाह पुं [**उन्नाह**] ऊँचाई; (पाअ)।

उन्निअ देखो **उण्णिअ**=और्णिक; (ओघ ७०५)।

उन्निक्खमण न [**उन्निष्क्रमण**] दीक्षा छोड़ कर फिर गृहस्थ होना, साधुपन छोड़कर फिर गृहस्थ बनना; (उप १३० टी; ३९६)।

उन्नी देखो **उण्णी**। कवकृ—**उन्नइज्जमाण**; (कप्प)।

उन्हाल (अप) पुं [**उष्णकाल**] ग्रीष्म ऋतु; (भवि)।

उपंत न [**उपान्त**] १ पीछला भाग; २ वि. समीपस्थ; (गा ९६३)।

उपरि } **उपरिं** } देखो **उवरि**; (विसे १०२१; षड्)।

उपरित्ल देखो **उवरिल्ल**; (षड्)।

उपवज्जमाण देखो **उववाय**=उप+वादय्।

उपसप्प देखो **उवसप्प**। उपसप्पइ; (षड्)। संकृ—**उपसप्पिय**; (नाट)।

उपाणहिय पुंस्त्री [**उपानत्**] जूता; "अन्नदिणे जंपाणेपाणहिए मुत्तमारुढा" (सुपा ३९२)। "तह तं निउपाणहियाउवि वाहिस्सं" (सुपा ३९२)।

उप्प देखो **ओप्प**=अर्पय्। उप्पेइ; (पि १०४; हे १, २६९)।

उप्पइअ वि [**उत्पतित**] १ उँचा गया हुआ, उडा हुआ "सेवि य आगासे उप्पइए" (उवा; सुर ३, ६६)। २ उन्नत, ऊँचा; (आचा)। ३ उद्भूत, उत्पन्न; (उत्त २)। ४ न. उत्पतन, उड़ना; (औप)।

उप्पइअ वि [**उत्पाटित**] उत्थापित, उठाया हुआ; "खुडिउप्पइअमुणालं दट्ठूण पिअं व सिढिलवलअं णलिणिं" (से १, ३०)।

उप्पइअव्व } **उप्पइउं** } देखो **उप्पय**=उत्+पत्।

उप्पंक वि [**दे**] १ बहु, अत्यन्त; २ पुं. पङ्क, कीचड, कादा; ३ उन्नति; (दे १, १३०)। ४ समूह, राशि; (दे १, १३०; पाअ; गउड; स ४३७)।

उप्पंग पुं [**दे**] समूह, राशि,

"णवपल्लवं विसण्णा, पहिआ पेच्छंति चूअरुक्खस्स।
कामस्स लेहिउप्पंगराइअं हत्थभल्लं व॥" (गा ५८५)।

उप्पज्ज अक [**उत्+पद्**] उत्पन्न होना। उप्पज्जंति ; (कप्प)। वकृ—**उप्पज्जंत, उप्पज्जमाण**; (से ८, ५५ ; सम्म १३४ ; भग ; विसे ३३२२)।

उप्पड सक [**उत्+पत्**] उडना, ऊँचा जाना, कूदना ; (प्रामा)।

उप्पड पु [**उत्पट**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष, (राज)।

उप्पडिअ देखो **उप्पइअ** ; (नाट)।

उप्पण सक [**उत्+पू**] धान्य वगैरः को सूर्प आदि से साफ-सुथरा करना। कर्म—"साली वीही जवा य लुव्वतु मलिज्जंतु उप्पणिज्जंतु य" (पराह १, २)।

उप्पणण न [**उत्पवन**] सूर्प आदि से धान्य वगैर. को साफ-सुथरा करना ; (दे १, १०३)।

उप्पण्ण वि [**उत्पन्न**] उत्पन्न, संजात, उद्भूत ; (भग ; नाट)।

उप्पत्त वि [**दे**] १ गलित; २ विरक्त ; (षड्)।

उप्पत्ति स्त्री [**उत्पत्ति**] उत्पति, प्रादुर्भाव ; (उव)।

उप्पत्तिया स्त्री [**औत्पत्तिकी**] बुद्धि विशेष, विना ही शास्त्राभ्यासादि के होने वाली बुद्धि, स्वाभाविक मति ; (ठा ४, ४ ; गाया १, १)।

उप्पन्न देखो **उप्पण्ण** ; (उवा, सुर २, १६०)।

उप्पय अक [**उत्+पत्**] उडना, कूदना। उप्पयइ; (महा)। वकृ—**उप्पयंत, उप्पयमाण** , (उप १४२ टी; गाया १, १६)। संकृ—**उप्पइत्ता**; (औप)। कृ—**उप्पइअव्व**; (से ६, ७८)। हेकृ—**उप्पइउं** ; (सुर ६, २२२)।

उप्पय देखो **उप्पव**। वकृ—**उप्पअंत** ; (से ५, ५६)।

उप्पय पुं [**उत्पात**] १ उत्पतन ऊँचे जाना, कूदना, उड्डयन। २ उत्पत्ति ; "अव्वट्ठिए चले मदपडिवाउप्पयाई य" (विसे ५७७)। °**निवय** पुं [°**निपात**] १ ऊँचा-नीचा होना ;

"खरपवणुद्धुयसायरतरंगवेगेहि हीरए नावा।
गुरुकल्लोलवसुट्ठियनंगरनियरेण धरियावि ॥
अणवरयतरंगेहिं उप्पयनिवयं कुणतिया वहइ"

(सुर १३, १६७)। २ नाट्य-विधि का एक प्रकार : (जीव ३)।

उप्पयण न [**उत्पतन**] ऊँचा जाना, उड्डयन ; (ठा १०; से ६, २४)।

उप्पयण न [**उत्प्लवन**] जल में गोता लगाना ; (से ५, ६०)।

उप्परिं (अप) देखो **उवरिं**; (हे ४, ३३४ ; पिंग)।

उप्परिवाडि,°डी स्त्री [**उत्परिपाटि,°टी**] उलटा क्रम, विपर्यास, विपर्यय ; "उप्परिवाडीवहणे चाउम्मासा भवे लहुगा" (गच्छ १)।

उप्परोप्पर अ [**उपर्युपरि**] ऊपर ऊपर ; (स १४०)।

उप्पल न [**उत्पल**] १ कमल, पद्म, (गाया १, १; भग)। २ विमान-विशेष , (सम ३८)। ३ संख्या-विशेष, 'उप्पलंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह , (ठा २, ४)। ४ सुगन्धि द्रव्य-विशेष "परमुप्पलगंधिए" (जं ३)। ५ पुं परिव्राजक-विशेष; (आचू १)। ६ द्वीप-विशेष ; ७ समुद्र-विशेष ; (पराण १५)। °**वेंटग** पु [°**वृन्तक**] आजीविक मत का एक साधु-समाज; (औप)।

उप्पलंग न [**उत्पलाङ्ग**] संख्या-विशेष, 'हुहुय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (ठा २, ४)।

उप्पला स्त्री [**उत्पला**] १ एक इन्द्राणी, काल-नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १)। २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन, (गाया २, १)। ३ स्वनाम ख्यात एक श्राविका, (भग १२, १)। ४ एक पुष्करिणी ; (जीव ३)।

उप्पलिणी स्त्री [**उत्पलिनी**] कमलिनी, कमल का गाछ ; (पराण १)।

उप्पल्ल वि [**दे**] अध्यासित, आरूढ ; (षड्)।

उप्पव सक [**उत्+प्लु**] १ गोता लगाना, तैरना। २ ऊँचा जाना, उड़ना। वकृ—**उप्पवंत, उप्पवमाण** ; (से ५, ६१ ; ८, ८६)।

उप्पवइय वि [**उत्प्रव्रजित**] जिसने दीक्षा छोड दी हो वह, साधु होकर फिर गृहस्थ बना हुआ ; (स ४८५)।

उप्पह पुं [**उत्पथ**] उन्मार्ग, कुमार्ग ; "पंथाउ उप्पहं नेंति" (निचू ३ ; से ४, २६ ; हेका २५६)। °**जाइ** वि [°**यायिन्**] उलटे रास्ते जाने वाला, विपथ-गामी ; (ठा ४, ३)।

उप्पा स्त्री. देखो **उप्पाय**=उत्पाद; (ठा १—पत्र १९, ठा ३—पत्र ३४६)।

उप्पाइ वि [**उत्पादिन्**] उत्पन्न होने वाला ; (विसे २८१६)।

उप्पाइत्ता देखो **उप्पाय**=उत्+पादय्।

उप्पइत्तु वि [उत्पादयितृ] उत्पादक, उत्पन्न करने वाला; (ठा ७)।

उप्पाइय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ ; " उप्पाइयाविच्छिण्णकोउहलत्ते " (राय)।

उप्पाइय वि [औत्पातिक] १ अस्वाभाविक, कृत्रिम; "उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं " २ आकस्मिक, अकस्मात् होने वाला "उप्पाइया वाही" (राज)। ३ न अनिष्ट-सूचक आकस्मिक उपद्रव, उत्पात ;
"भो भो नावियपुरिसा सकन्नधारा समुज्जया होह ।
दीसइ कयंतवयणं व भीमंमुप्पाइयं जेण "
(सुर १३, १८६)।

उप्पाएउं
उप्पाएंत
उप्पाएत्तए } देखो **उप्पाय**= उत्+पादय् ।

उप्पाड सक [उत् + पाटय्] १ ऊपर उठाना ; २ उखेड़ना, उन्मूलन करना। उप्पांडह; (पराह १, १ ; स ६५ ; काल)। कृ—**उप्पाडणिज्ज** ; (सुपा २४६)। संकृ—**उप्पाडिय** ; (नाट)।

उप्पाड सक [उत्+पादय्] उत्पन्न करना । संकृ—**उप्पाडिऊण** ; (विसे ३३२ टी)।

उप्पाड पुं [उत्पाट] उन्मूलन, उत्खनन; "नयणोप्पाडो" (उप १४६ टी; ६८६ टी)।

उप्पाडण न [उत्पाटन] १ उत्थापन, ऊपर उठाना ; २ उन्मूलन, उत्खनन ; (स २६६ ; राज)।

उप्पाडिय वि [उत्पाटित] १ ऊपर उठाया हुआ ; (पाअ ; प्रासू)। २ उन्मूलित ; (आक)।

उप्पाडिय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ; "उप्पाडियणाणं खंदगसीसाण तेसिं नमो" (भाव १३)।

उप्पादअ वि [उत्पादक] उत्पन्न कर्ता ; (प्रयौ १७)।

उप्पादीअमाण देखो **उप्पाय**=उत्+पादय् ।

उप्पाय सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना, बनाना। उप्पाएहि ; (काल)। वकृ—**उप्पाएंत, उप्पायंत** ; (सुर २, २२ ; ६, १३)। संकृ—**उप्पाएत्ता** ; (भग)। हेकृ—**उप्पाइत्ता, उप्पाएउं, उप्पाएत्तए**; (राज, पि ४६५; गाया १, ४)। कवकृ—**उप्पादीअमाण** (शौ); (नाट)।

उप्पाय पुंन [उत्पात] १ उत्पतन, ऊर्ध्व-गमन ; "नं नगं गंतुमणा निवडंति नहंगणुप्पायं" (सुपा १८०)। २ आकस्मिक उपद्रव ; "पवहणं च पावइ समुद्दमज्झे उप्पाएण छम्मासे भमतं ताहे अणेण तं उत्पायं उवसामियं" (महा)। ३ आकस्मिक उपद्रव का प्रतिपादक शास्त्र, निमित्त-शास्त्र-विशेष; (ठा ६; सम ४७; पराह १, ४) °**निवाय** पु [°**निपात**] चढना और उतरना ; (स ४११)।

उप्पाय पुं [उत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव; (सुपा ६; कुमा)। °**पव्वय** पुं [**पर्वत**] एक प्रकार के पर्वत, जहां आकर कई व्यन्तर-जातीय देव-देवियां क्रीडा के लिए विचित्र प्रकार के शरीर बनाते हैं ; (सम ३३; जीव ३)। °**पुव्व** न [°**पूर्व**] प्रथम पूर्व, ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग ; (सम २६)।

उप्पायग वि [**उत्पादक**] १ उत्पन्न करने वाला; २ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, कीट-विशेष ; (वव १, ८)।

उप्पायण न [**उत्पादन**] १ उत्पादन, उपार्जन; (ठा ३, ४)। २ वि. उत्पादक, उपार्जक, (पउम ३०, ४०)।

उप्पायणया
उप्पायणा } स्त्री [**उत्पादना**] १ उपार्जन, उत्पन्न करना, २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष, (ओघ ७४६ ; ठा ३, ४ ; पिण्ड १)।

उप्पाल सक [**कथ्**] कहना, बोलना । उप्पालइ ; (हे ४, २)। उप्पालसु ; (कुमा)।

उप्पाव सक [**उत्+प्लावय्**] १ गोता खिलाना; २ कूदाना, उड़ाना । उप्पावेइ; (हे २, १०६)। कवकृ—**उप्पियमाण**; (उवा)।

उप्पाहल न [**दे**] उत्कंठा, उत्सुकता ; (पाअ)।

उप्पि सक [**अर्पय्**] देना । उप्पिउ; (कप्प)।

उप्पिं अ [**उपरि**] ऊपर ; "कहि णं भंते ! जोइसिआ देवा परिवसंति ? गोयमा ! उप्पिं दीवसमुद्दाणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए" (जीव ३ ; णाया १, ६ ; ठा ३, ४ ; औप)।

उप्पिंगलिआ स्त्री [**दे**] हाथ का मध्य भाग, करोत्संग; (दे १, ११८)।

उप्पिंजल न [**दे**] १ सुरत, संभोग ; २ रज, धूली; ३ अपकीर्ति, अपयश ; (दे १, १३५)।

उप्पिंजल वि [**उत्पिञ्जल**] अति-आकुल, व्याकुल ; (कप्प)।

उप्पिंजल अक [**उत्पिञ्जलय्**] आकुल की तरह आचरण करना । वकृ—**उप्पिंजलमाण** ; (कप्प)।

उप्पिच्छ [**दे**] देखो **उप्पित्थ**। "आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च" "भीयं दुयमुप्पिच्छमुत्तालं च कमसो

मुणेयव्वं" (जीव ३)। "हत्थी अह तस्स सवडहुत्तो पहाविओ आयरुप्पिच्छो", 'रक्खसमेन्नंपि आयरुप्पिच्छं" (पउम ८, १७५ ; १२, ८७) 'उप्पिच्छसंथरगईहिं" (भत ११६)।

उप्पिण देखो **उप्पण**। वकृ—उप्पिणिंत; (सुपा ११)।

उप्पित्थ वि [**दे**] १ त्रस्त, भीत ; (दे १, १२६ , से १०, ६१ ; स ५७४ ; पुप्फ ४४३ ; गउड) "किं कायरविमढा सरणविहूणा भयुप्पित्था" (सुर १२, १६०)। २ कुपित, क्रुद्ध ; ३ विधुर, आकुल, (दे १, १२६ ; पाअ)।

उप्पिय सक [**उत्+पा**] १ आस्वादन करना । २ फिर २ श्वास लेना । वकृ—**उप्पियंत**; (पण्ह १,३—पत्र ५५; राज)।

उप्पिय वि [**अर्पित**] अर्पण किया हुआ; (हे १, २६६)।

उप्पियण न [**उत्पान**] फिर २ श्वास लेना ; (राज)।

उप्पियमाण देखो **उप्पाव**।

उप्पिलाव देखो **उप्पाव**। उप्पिलावेइ। वकृ—**उप्पिलावंत** "जे भिक्खू सणं नावं उप्पिलावेइ, उप्पिलावंतं वा साइज्जइ" (निचू १८)।

उप्पीड पुं [**दे, उत्पीड**] समूह, राशि, (से ४, ३७; ८,३)।

उप्पीडण न [**उत्पीडन**] १ कस कर बाँधना। २ दबाना, (से ८, ६७)।

उप्पील सक [**उत्+पीडय्**] १ कस कर बाँधना। २ उठवाना। "सणं वा णावं उप्पीलावेज्जा ; (आचा २, ३, १, ११)। उप्पीलवेज्जा ; (पि २४०)।

उप्पील पुं [**दे**] १ संघात; समूह ; (दे १, १२६ ; सुपा ६१; सुर ३, ११६; वज्जा ६०; पुप्फ ७३; धम्म १२ टी)। "हुयासणो देहे सव्व जालुप्पीलो विणासए" (महा)। २ स्थपुट-विषमोन्नत प्रदेश ; (दे १, १२६)।

उप्पीलण न [**उत्पीडन**] पीडा; उपद्रव, (स २७२)।

उप्पीलिय वि [**उत्पीडित**] कस कर बाँधा हुआ "उप्पीलियचिंधपट्टगहियाउहपहरणा" (पण्ह १, ३; विपा १, २)।

उप्पुअ वि [**उत्प्लुत**] उच्छलित, कूदा हुआ, (से ६, ४८; पण्ह १, ३)।

उप्पुंसिअ देखो **उप्पुसिअ**; (से ६, ८५)।

उप्पुणिअ वि [**उत्पूत**] सूर्प से साफ-सुथरा किया हुआ ; (पाअ)।

उप्पुण्ण वि [**उत्पूर्ण**] पूर्ण, व्याप्त ; (स २५)।

उप्पुलइअ वि [**उत्पुलकित**] रोमाञ्चित; (स २८१)।

उप्पुसिअ वि [**उत्प्रोञ्छित**] लुप्त, प्रोञ्छित; (से ६, ८५; गउड)।

उप्पूर पुं [**उत्पूर**] १ प्राचुर्य; (पण्ह १, ३)। २ प्रकृष्ट प्रवाह ; (औप)।

उप्पेक्ख (अप) देखो **उविक्ख**। उप्पेक्ख ; (पिंग)।

उप्पेक्ख सक [**उत्प्र+ईक्ष्**] संभावना करना, कल्पना करना। उप्पेक्खामि ; (स १४७)। उप्पेक्खेमि ; (स ३४६)।

उप्पेक्खा स्त्री [**उत्प्रेक्षा**] १ अलंकार-विशेष ; २ वितर्कणा, संभावना , (गा ३३६)।

उप्पेक्खिअ वि [**उत्प्रेक्षित**] संभावित, विकल्पित; (दे १, १०६)।

उप्पेय न [**दे**] अभ्यंग, तैलादि की मालिस; "पुव्वं च मंगलट्ठा उप्पेयं जइ करेइ गिहियाणं" (वव १, ६)।

उप्पेल सक [**उद्+नमय्**] ऊँचा करना, उन्नत करना। उप्पेलइ ; (हे ४, ३६)।

उप्पेलिअ वि [**उन्नमित**] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ ; (कुमा)।

उप्पेस पु [**उत्पेष**] त्रास, भय, डर ; (से १०, ६१)।

उप्पेहड वि [**दे**] उद्भट, आडम्बर वाला ; (दे १, ११६ ; पाअ ; स ४४६)।

°**उप्फ** देखो **पुप्फ** ; (गा ६३६)।

उप्फंदोल वि [**दे**] चल, अस्थिर ; (दे १, १०२)।

उप्फाल पु [**दे**] खल, दुर्जन ; (दे १, ६० ; पाअ)

उप्फाल सक [**उत्+पाटय्**] १ उठाना। २ उखेडना। उप्फालेइ ; (हे २, १७४)।

उप्फाल सक [**कथ्**] कहना, बोलना। उप्फालेइ ; (हे २, १७४)।

उप्फाल वि [**कथक**] कहने वाला, सूचक ; (स ६४४)।

उप्फालिअ वि [**कथित**] १ कथित ; २ सूचित ; (पाअ, उप ७२८ टी ; स ४७८)।

उप्फिड अक [**उत्+स्फिट्**] कुण्ठित होना, असमर्थ होना। उप्फिडइ, उप्फेडइ, "एमाइविगप्पणेहिं वाहिज्जमाणो उप्फिड-(प्फे)-डइ परसू" (महा)।

उप्फिडिय वि [**उत्स्फटित**] १ कुण्ठित। २ बाहर निकला हुआ ; "कत्थइ नक्कुक्कतियसिप्पिपुडुप्फिडियमोत्तियाइन्नो" (सुर १३, २१३)।

उप्फुंकिआ स्त्री [**दे**] धोबिन, कपड़ा धोने वाली ; (दे १, ११४)।

उप्फुंडिअ वि [**दे**] आस्तृत, बिछाया हुआ , (दे १,११३)

उप्फुण्ण वि [दे] आपूर्ण, भरा हुआ, व्याप्त ; (दे १, ६२; सुर १, २३३ ; ३, २१५)।

उप्फुल्ल वि [उत्फुल्ल] विकसित ; (पाअ ; से ६, ६६)।

उप्फुल्लिआ स्त्री [उत्फुल्लिका] क्रीड़ा विशेष,पाँव पर बैठ कर वारंवार ऊँचा नीचा होना ;

"उप्फुल्लिआइ खेल्लउ, मा णं वारेहि होउ परिऊडा।
मा जहणभारगरुई, पुरिसाअंतो किलिम्मिहिइ"
(गा १९६)।

उप्फुस सक [उत्+स्पृश्] सिंचना, छिटकना । संकृ— **उप्फुसिऊण** ; (राज)।

उप्फेणउप्फेणिय क्रिवि [दे] क्रोध-युक्त प्रबल वचन से; "उप्फेणउप्फेणिय सीहरायं एवं वयासी" (विपा १, ६— पत्र ६०)।

उप्फेस पुं [दे] १ त्रास, भय ; (दे १,६४)। २ मुकुट, पगडी, शिरोवेष्टन ; "पंच रायककुहा पण्णत्ता, तं जहा—खग्ग छत्तं उप्फेसं उवाहणाउ वालवियणी" (ठा ५, १—पत्र ३०३ ; औप ; आचा २, ३, २, २)।

उप्फोअ पुं [दे] उद्गम, उदय ; (दे १, ६१)।

उबुस सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्धि करना, साफ करना। **उबुसइ** ; (पड्)।

उब्बंध सक [उद्+बन्ध्] १ फाँसी लगाना, फाँसी लगा कर मरना। २ वेष्टन करना। वकृ—"जलनिहितडम्मि दिट्ठा **उब्बंधंती** इहप्पाणं" (सुपा १६०)। संकृ—**उब्बंधिअ**, **उब्बंधिऊण** ; (नाट ; पि २७० ; स ३४६)।

उब्बंधण न [उद्बन्धन] फाँसी लगाना, उल्लम्बन ; (पण्ह २, ५)।

उब्बण वि [उल्बण] उत्कट ; (पि २६६)।

उब्बद्ध वि [उद्बद्ध] १ जिसने फाँसी लगाई हो वह, फाँसी लगा कर मरा हुआ। २ वेष्टित, "भुअंगसंघायउब्बद्धो" (सुर ८, ५७)। ३ शिक्षक के साथ शर्तों से बँधा हुआ, शिक्षक के आयत ; (ठा ३),

"सिप्पाई सिक्खंतो, सिक्खावेंतस्स देइ जा सिक्खा।
गहियम्मिवि सिक्खम्मि, जं चिरकालं तु उब्बद्धो" (बृह)।

उब्बिंब वि [दे] १ खिन्न, उद्विग्न ; २ शून्य ; ३ क्रान्त, ४ प्रकट वेष वाला ; ५ भीत, डरा हुआ ; ६ उद्भट ; (दे १, १२७ ; वज्जा ६२)।

उब्बिंबल न [दे] कलुष जल, मैला पानी ; (दे १, १११)।

उब्बिबिर वि [दे] खिन्न, उद्विग्न ; (कप्पू)।

उब्बुक्क सक [उद्+बुक्क्] बोलना, कहना। उब्बुक्कइ, (हे ४, २)।

उब्बुक्क न [दे] १ प्रलपित, प्रलाप ; २ संकट ; ३ बलात्कार ; (दे १, १२८)।

उब्बुड अक [उद्+ब्रुड्] तैरना।

उब्बुड पुं [उद्ब्रुड] तैरना। °निबुड, °निब्बुड्डण
उब्बुड्ड न [निब्रुड,ण] उबडुब करना ; (पण्ह १, ३ ; उप १२८टी)।

उब्बुड्ड वि [उद्ब्रुडित] उन्मग्न, तीर्ण ; (गा ३७ ; स ३६०)।

उब्बुड्डण न [उद्ब्रुडन] उन्मज्जन ; (कप्पू)।

उब्बूर वि [दे] १ अधिक, ज्यादः ; २ पुं. संघात, समूह ; ३ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश ; (दे १, १२६)।

उब्भ सक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खडा करना। उब्भेउ ; (वज्जा ६४) ; उब्भेह ; (महा)।

उब्भ देखो **उड्ढ** ; (हे २, ५६ ; सुर २, ६ ; पड्)।

उब्भंड पुं [उद्भाण्ड] १ उत्कट भाँड, बहुरूपा, निर्लज्ज हंडा ;

"खरउ त्ति कहं जाणसि देहागारा कहिंति से हंदि।
छिक्कोवण उब्भंडो णीयासि दारुणसहावो ॥" (ठा ६ टी)।

२ न. गाली, कुत्सित वचन ; "उब्भंडवयण—" (भवि)।

उब्भंत वि [दे] ग्लान, बिमार ; (दे १, ९५ ; महा)।

उब्भंत वि [उद्भ्रान्त] १ आकुल, व्याकुल, खिन्न ; (दे १, १४३) ;

" अवलंबह मा संकह ण इमा गहलंघिआ परिब्भमइ।
अत्थक्कगज्जिउब्भंतहित्थहिअआ पहिअजाआ "
(गा ३८६)।

" भवभमणुब्भंतमाणसा अम्हे " (सुर १५, १२३)। २ मूर्च्छित ; (से १, ८)। ३ भ्रान्ति-युक्त, भौचक्का, चकित ; (हे २, १६४)।

उब्भग्ग वि [दे] गुण्ठित, व्याप्त ; " तिमिरोब्भग्गणिसाए " (दे १, ९५ ; नाट)।

उब्भज्जि स्त्री [दे] कोद्रव-समूह ; (राज)।

उब्भड वि [उद्भट] १ प्रबल, प्रचण्ड " उब्भडपत्तणपक्कं पिरजयप्पडागाइ अइपयडं " (सुपा ४६) " उब्भडकल्लोल-भीसणारावे " (णमि ४)। २ भयंकर विकराल ; (भग ७, ६)। ३ उद्धत, आडंबरी ; (पाअ)।

and distinct points, then

" अइरोसो अइतोसो अइहासो दुज्जणेहिं संवासो ।
अइउब्भडो य वेसो पंचवि गरुयंपि लहुअंति ॥" (धम्म)।

उब्भम पु [**उद्भ्रम**] १ उद्वेग ; २ परिभ्रमण ; (नाट) ।

उब्भव अक [**उद्+भू**] उत्पन्न होना । उब्भवइ ; (पि ४७५ ; नाट) । वकृ—**उब्भवंत** ; (सुपा ५७१; ६५६) ।

उब्भव अक [**ऊर्ध्वय्**] ऊँचा करना, खड़ा करना ।

उब्भव पुं [**उद्भव**] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव ; (विसे, गाथा १, २) ।

उब्भविय वि [**ऊर्ध्वित**] ऊँचा किया हुआ, (उप पृ १३०; वज्जा १४) ।

उब्भाअ वि [**दे**] शान्त, ठंढा ; (दे १, ६६) ।

उब्भाम पुं [**उद्भ्राम**] १ परिभ्रमण , (ठा ४) । २ वि. परिभ्रमण करने वाला ; (वव १, १) ।

उब्भामइल्ला स्त्री [**उद्भ्रामिणी**] स्वैरिणी, कुलटा स्त्री ; (वव १, ४ , वृह ६) ।

उब्भामग पुं [**उद्भ्रामक**] १ पारदारिक, परस्त्री-लम्पट ; (ओघ ६० भा) । २ वायु-विशेष, जो तृण वगैरः को ऊपर ले उड़ता है ; (जी ७) । ३ वि. परिभ्रमण करने वाला ; (वव १, १) ।

उब्भामिगा } स्त्री [**उद्भ्रामिका**] कुलटा स्त्री, स्वैरिणी ;
उब्भामिया } (वव १, ६ ; उप पृ २६४) ।

उब्भालण न [**दे**] १ सूर्प आदि से साफ-सुथरा करना, उत्पवन ; २ वि. अपूर्व, अद्वितीय ; (दे १, १०३) ।

उब्भालिअ वि [**दे**] सूर्प आदि से साफ किया हुआ, उत्पूत ; " उब्भालिअं उप्पुणिअं" (पाअ) ।

उब्भाव अक [**रम्**] क्रीडा करना, खेलना । उब्भावइ , (हे ४,१६८ ; षड्) । वकृ—**उब्भावंत** ; (कुमा) ।

उब्भावणया } स्त्री [**उद्भावना**] १ प्रभावना, गौरव,
उब्भावणा } उन्नति; "पवयणउब्भावणया" (ठा १०—पत्र ५१४) । २ उत्प्रेक्षा, वितर्कणा ; "असब्भावउब्भावणाहिं" (णाया १, १२—पत्र १७४) । ३ प्रकाशन, प्रकटीकरण; (णंदि) ।

उब्भाविअ न [**रमण**] सुरत, क्रीड़ा, संभोग ; (दे १, ११७) ।

उब्भास सक [**उद्+भासय्**] प्रकाशित करना । वकृ—**उब्भासंत, उब्भासेंत** ; (पउम २८, ३६ ; ३, १५५)

उब्भासिय वि [**उद्भासित**] प्रकाशित ; (हेका २८२);

"भवणाओ नीहरंते जिणम्मि चाउव्विहेहिं देवेहिं ।
इंतेहि य जंतेहि य कहमिव उब्भासियं गयणं ॥ "
(सुपा ७७) ।

उब्भासुअ वि [**दे**] शोभा-हीन ; (दे १, ११०) ।

उब्भासेंत देखो **उब्भास** ।

उब्भि देखो **उब्भिय**=उद्भिद् ; (आचा) ।

उब्भिउडि वि [**उद्भ्रुकुटि**] भौं चढ़ाया हुआ; (गउड) ।

उब्भिंद सक [**उद्+भिद्**] १ ऊँचा करना, खड़ा करना । २ विकसित करना । ३ अङ्कुरित करना । ४ खोलना । कर्म—उब्भिज्जति । वकृ—**उब्भिंदमाण**, (आचा २,७) । कवकृ—" भत्तिभरनिब्भर**उब्भिज्जमाण**घणपुलयपूरियसरीरा " (सुपा ६५६ ६७ ; भग १६, ६) । संकृ—**उब्भिंदिय, उब्भिंदिउं** ; (पंचा १३; पि ५७४) ।

उब्भिग देखो **उब्भिय**=उद्भिद् ; (पण्ह १, ४) ।

उब्भिडण न [**उद्भेदन**] लग कर अलग होना, आघात कर पीछे हटना;

"जेसुं चिय कुंठिज्जइ, रहसुब्भिडणमुहलो महिहरेसु ।
तेसुं चेय णिसिज्जइ, पहिरोहंदोलिरो कुलिसो" ॥
(गउड) ।

उब्भिण्ण } वि [**उद्भिन्न**] १ अङ्कुरित; (ओघ ११३) ;
उब्भिन्न } "उब्भिन्ने पाणियं पडियं" (सुर ७, ११४) । २ उद्घाटित, खोला हुआ ; ३ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष, मिट्टी वगैरः से लिप्त पात्र को खोल कर उसमें से दी जाती भिक्षा; "छगणाइणोवउत्तं उब्भिंदिय जं तमुब्भिण्णं" (पंचा १३, ठा ३, ४) । ४ ऊँचा हुआ, खडा हुआ "हरिसवसुब्भिन्नरोमंचा" (महा) ।

उब्भिय वि [**उद्भिद्**] पृथ्वी को फाड कर उगनेवाली वनस्पति; (पण्ह १, ४) ।

उब्भिय वि [**ऊर्ध्वित**] ऊँचा किया हुआ, खड़ा किया हुआ; (सुपा ८६ ; महा ; वज्जा ८८) ।

उब्भीकय वि [**ऊर्ध्वीकृत**] ऊँचा किया हुआ "उब्भीकयबाहुजुओ" (उप ५६७ टी) ।

उब्भुअ अक [**उद्+भू**] उत्पन्न होना । उब्भुअइ ; (हे ४, ६०) ।

उब्भुआण वि [**दे**] १ उबलता हुआ, अग्नि से तप्त जो दूध वगैरः उछलता है वह ; (दे १, १०५ ; ७, ८१) ।

उब्भुग्ग वि [**दे**] चल, अस्थिर ; (दे १, १०२) ।

उब्भुत्त सक [**उत्+क्षिप्**] ऊँचा फेंकना। उब्भुत्तइ ; (हे ४, १४४)।

उब्भुत्तिअ वि [**उत्क्षिप्त**] ऊँचा फेंका हुआ ; (कुमा)।

उब्भुत्तिअ वि [**दे**] उद्दीपित, प्रदीपित ; (पाअ)।

उब्भूअ वि [**उद्भूत**] १ उत्पन्न ; (सुर ३, २३६)। २ आगन्तुक कारण ; (विसे १४७६)।

उब्भूइआ स्त्री [**औद्भूतिकी**] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी जो किसी आगन्तुक प्रयोजन के उपस्थित होने पर बजायी जाती थी ; (विसे १४७६)।

उब्भेअ पुं [**उद्भेद**] उद्गम, उत्पत्ति ; "उम्हाअंतगिरियड-सीमाणिव्वडियकंदलुब्भेयं" (गउड) ; "अभिणवजोव्वणउब्भे-यसुन्दरा सयलमणहरारावा" (सुर ११, ११६)।

उब्भेइम वि [**उद्भेदिम**] स्वयं उत्पन्न होने वाला ; "उब्भेइमं पुण सयंरुहं जहा सामुद्दं लोणं" (निचू ११)।

उभओ अ [**उभतस्**] द्विधा ; दोनों तरह से, दोनों ओर से ; (उव ; औप)।

उभय वि [**उभय**] युगल, दो, दोनों ; (ठा ४, ४)। °**त्थ** अ (°**त्र**) दोनों जगह ; (सुपा ६४८)। °**लोग** पुं [°**लोक**] यह और पर जन्म ; (पंचा ११)। °**हा** अ [°**था**] दोनों तरफ से, द्विधा ; (सम्म ३८)।

उमच्छ सक [**वञ्च्**] ठगना, धूतना। उमच्छइ ; (हे ४, ९३)। वकृ—**उमच्छंत** ; (कुमा)।

उमच्छ सक [**अभ्या+गम्**] सामने आना। उमच्छइ ; (षड्)।

उमा स्त्री [**उमा**] १ गौरी, पार्वती ; (पाअ)। २ द्वितीय वासुदेव की माता ; (सम १५२)। ३ गणिका-विशेष ; (आचू)। ४ स्त्री-विशेष ; (कुमा)। °**साइ** [°**स्वाति**] स्वनाम-धन्य एक प्राचीन जैनाचार्य और विख्यात ग्रन्थकार ; (सार्ध ५०)।

°**उमार** देखो **कुमार** ; (अच्चु २९)।

उमीस वि [**उन्मिश्र**] मिश्रित; "पलिलसिरपलिअपीवल-करणघुसणुमीसण्हवणजलं" (कुमा)।

उम्मइअ वि [**दे**] १ मूढ, मूर्ख ; (दे १, १०२)। २ उन्मत्त ; (गा ४९८ ; वज्जा ४२)।

उम्मऊह वि [**उन्मयूख**] प्रभा-शाली ; (गउड)।

उम्मंड पुं [**दे**] १ हठ ; २ वि. उद्वृत्त ; (दे १, १२४)।

उम्मंथिय वि [**दे**] दग्ध, जला हुआ ; (वज्जा ६२)।

उम्मग्ग वि [**उन्मग्न**] १ पानी के ऊपर आया हुआ, तीर्ण ; (राज)। २ न. उन्मज्जन, तैरना, जल के ऊपर आना ; (आचा)। °**जला** स्त्री [°**जला**] नदी-विशेष, जिसमें पत्थर वगैरः भी तैर सकते हैं ; (जं ३)।

उम्मग्ग पुं [**उन्मार्ग**] १ कुपथ, उलटा रास्ता ; विपरीत मार्ग ; (सुर १, २४३ ; सुपा ९५)। २ छिद्र, रन्ध्र ; (आचा)। ३ अकार्य करना ; (आचा)।

उम्मग्गणा स्त्री [**उन्मार्गणा**] छिद्र, विवर ; (आचा)।

उम्मच्छ न [**दे**] १ क्रोध, गुस्सा ; (दे १, १२५ ; से ११, १९ ; २०)। २ वि. असंबद्ध ; ३ प्रकारान्तर से कथित ; (दे १, १२५)।

उम्मच्छर वि [**उन्मत्सर**] १ ईर्ष्यालु, द्वेषी ; (से ११, १४)। २ उद्भट ; (गा १२७ ; ६७५)।

उम्मच्छविअ वि [**दे**] उद्भट ; (दे १, ११६)।

उम्मच्छिअ वि [**दे**] १ रुषित, रुष्ट ; २ आकुल, व्याकुल ; (दे १, १३७)।

उम्मज्ज न [**उन्मज्जन**] तरण, तैरना। °**णिमज्जिया** स्त्री [°**निमज्जिका**] उवडुब करना ; पानी में ऊँचा नीचा होना ; (ठा ३, ४)।

उम्मज्जग पुं [**उन्मज्जक**] १ उन्मज्जन करने वाला, गोता लगाने वाला ; २ उन्मज्जन से ही स्नान करने वाले तापसों की एक जाति ; (औप ; भग ११, ९)।

उम्मड्डा स्त्री [**दे**] १ बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे १, ९७)। २ निषेध, अस्वीकार ; (उप ७२८ टी)।

उम्मण वि [**उन्मनस्**] उत्कण्ठित, उत्सुक ; (उप पृ ५८)।

उम्मत्त पुं [**दे**] १ धतूरा, वृक्ष-विशेष ; २ एरण्ड, वृक्ष-विशेष ; (दे १, ८९)।

उम्मत्त वि [**उन्मत्त**] १ उद्धत, उन्माद-युक्त; (बृह १)। २ पागल, भूताविष्ट ; (पिंड ३८०)। °**जला** स्त्री [°**जला**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३)।

उम्मत्थ सक [**अभ्या+गम्**] सामने आना। उम्मत्थइ ; (हे ४, १६५ ; कुमा)।

उम्मत्थ वि [**दे**] अधो-मुख, विपरीत ; (दे १, ९३)।

उम्मर पुं [**दे**] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी ; (दे १, ९५)।

उम्मरिअ वि [**दे**] उत्खात, उन्मूलित ; (दे १, १०० ; षड्)।

उम्मल वि [**दे**] स्त्यान, कठिन, घट्ट ; (दे १, ९१)।

उम्मलण न [**उन्मर्दन**] मसलना ; (पाअ) ।

उम्मल्ल पुं [**दे**] १ राजा, नृप ; २ मेघ; वारिस; ३ बलात्कार; ४ वि. पीवर, पुष्ट; (दे १, १३१) ।

उम्मल्ला स्त्री [**दे**] तृष्णा ; (दे १, ६४) ।

उम्महण वि [**उन्मथन**] नाशक, विनाश-कारी; (सुर ३,२३१) ।

उम्माइअ वि [**उन्मादित**] उन्मत्त किया हुआ; (पउम २४, १५) ।

उम्माण न [**उन्मान**] १ माप, माशा आदि तुला-मान ; (ठा २, ४) । २ जो तौला जाता है वह ; (ठा १०) ।

उम्माद देखो **उम्माय** ; (भग १४, २) ।

उन्मादइत्तअ (शौ) वि [**उन्मादयितृ**] उन्माद कराने वाला; (अभि ४२) ।

उम्माय अक [**उद्+मद्**] उन्माद करना, उन्मत्त होना । वकृ—**उम्मायंत** ; (उप ६८६ टी) ।

उम्माय पुं [**उन्माद**] १ चित्त-विभ्रम, पागलपन ; (ठा ६ ; महा) । २ कामाधीनता, विषय में अत्यन्तासक्ति ; (उत्त १६) । ३ आलिङ्गन ; (विसे) ।

उम्माल देखो **ओमाल** ; (पाअ) ।

उम्मालिय व [**उन्मालित**] सुशोभित ; (भवि) ।

उम्माह पुं [**उन्माथ**] विनाश; "निसेविज्जंतावि (कामभोगा) करेंति अहियगुम्माहयं" (महा) ।

उम्माहय वि [**उन्माथक**] विनाशक ; "अहो उम्माहयत्तं विसयाणं" (महा ; भवि) ।

उम्माहि वि [**उन्माथिन्**] विनाशक; (महा-टि) ।

उम्माहिय वि [**उन्माथित**] विनाशित ; (भवि) ।

उम्मि पुंस्त्री [**ऊर्मि**] १ कल्लोल, तरंग ; (कुमा; दे ३,६); २ भीड, जन-समुदाय ; (भग २, १) । °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३) ।

उम्मिंठ वि [**दे**] हस्तिपक-रहित, महावत-रहित, निरंकुश ; " उम्मिंठकरिवरो इव उम्मूलइ नयसमूहं सो" (सुपा ३४८ ; २०३) ।

उम्मिय वि [**उन्मित**] प्रमित, "कोडाकोडिजुगुम्मियावि विहिणो हाहा विचित्ता गई" (रंभा) ।

उम्मिलिर वि [**उन्मीलितृ**] विकासी "तत्थ य उम्मिलिर-पढमपल्लवारुणियसयलसाहस्स" (सुपा ८६) ।

उम्मिल्ल अक [**उद्+मील्**] १ विकसित होना । २ खुलना । ३ प्रकाशित होना । उम्मिल्लइ; (गउड) । वकृ—**उम्मिल्लंत**; (से १०, ३१) ।

उम्मिल्ल वि [**उन्मील**] १ विकसित ; (पाअ ; से १०, ५०, स ७६) । २ प्रकाशमान ; (से ११, ६४ ; गउड) ।

उम्मिल्लण न [**उन्मीलन**] विकास, उल्लास ; (गउड) ।

उम्मिल्लिय वि [**उन्मीलित**] १ विकसित; उल्लसित; २ उद्घाटित, खुला हुआ; "तओ उम्मिल्लियाणि तस्स नयणाणि" (आवम; स २८०) । ३प्रकाशित; ४ बहिष्कृत; "पंजरुम्मिल्लियमणिकणगथूभियागे" (जीव ४) । ५ न. विकास; (अणु) ।

उम्मिस अक [**उद्+मिष्**] खुलना, विकसना । वकृ—**उम्मिसंत** ; (विक्र ३४) ।

उम्मिसिय वि [**उन्मिषित**] १ विकसित, प्रफुल्ल ; (भग १४, १) । २ न. विकास, उन्मेष, (जीव ३) ।

उम्मिस्स देखो **उम्मीस** ; (पव ६७) ।

उम्मीलण देखो **उम्मिल्लण** ; (कुमा; गउड) ।

उम्मीलणा स्त्री [**उन्मीलना**] प्रभव, उत्पत्ति ; (राज) ।

उम्मीलिय देखो **उम्मिल्लिय** ; (राज) ।

उम्मीस वि [**उन्मिश्र**] मिश्रित, युक्त ; (सुपा ७८ ; प्रासू ३२) ।

उम्मुअ न [**उल्मुक**] अलात, लूका ; (पाअ) ।

उम्मुंच सक [**उद्+मुच्**] परित्याग करना । वकृ—**उम्मुंचंत** ; (विसे २७५०) ।

उम्मुक्क वि [**उन्मुक्त**] १ विमुक्त, रहित ; "ते वीरा बंधणुम्मुक्का नावकंखंति जीवियं " (सुअ १, ६) । २ उत्क्षिप्त ; (औप) । ३ परित्यक्त ; (आवम) ।

उम्मुग्ग वि [**उन्मग्न**] १ जल के ऊपर तैरा हुआ । २ न. तैरना । °**निमुग्गिया** स्त्री [°**निमग्नता**] उबडुब करना ; " से भिक्खू वा० उदगंसि पवमाणे नो उम्मुग्गनिमुग्गियं करेज्जा" (आचा २, ३, २, ३) ।

उम्मुग्गा } स्त्री. देखो **उम्मग्ग**=उन्मग्न ; (पराह १, ३ ;
उम्मुज्जा } पि १०४ ; २३४ ; आचा) ।

उम्मुट्ठ वि [**उन्मृष्ट**] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (पाअ) ।

उम्मुद्दिअ वि [**उन्मुद्रित**] १ विकसित, प्रफुल्ल ; (गउड ; कप्पू) । २ उद्घाटित, खोला हुआ ; " उम्मुद्दिओ समुग्गो, तम्मज्झे लहुसमुग्गयं नियइ" (सुपा १४४) ।

उम्मुयण न [**उन्मोचन**] परित्याग, छोड देना ; (सुर २, १६०) ।

उम्मुयणा स्त्री [**उन्मोचना**] त्याग, उज्झन ; (आव ५) ।

उम्मुह वि [**दे**] दृप्त, अभिमानी ; (दे १, ६६ ; षड्) ।

उम्मुह वि [**उन्मुख**] १ संमुख; (उप पृ १३४) । २ ऊर्ध्व-मुख ; (से ६, ८२) ।

उम्मूढ वि [**उन्मूढ**] विशेष मूढ, अत्यन्त मुग्ध । °**विसूइया** स्त्री [°**विसूचिका**] रोग-विशेष ; (सुपा १६) ।

उम्मूल वि [**उन्मूल**] उन्मूलन करने वाला, विनाशक ; (गा ३५५) ।

उम्मूल सक [**उद्+मूलय्**] उखेडना, मूल से उखाड़ फेंकना । उम्मूलेइ ; (महा) । वकृ—**उम्मूलंत, उम्मूलयंत** ; (से १, ४; स ५६६) । संकृ—**उम्मूलिऊण** ; (महा) ।

उम्मूलण न [**उन्मूलन**] उत्पाटन, उत्खनन ; (पि २७८) ।

उम्मूलणा स्त्री [**उन्मूलना**] ऊपर देखो ; (पगह १, १)।

उम्मूलिअ वि [**उन्मूलित**] उत्पाटित, मूल से उखाड़ा हुआ ; (गा ४७५ ; सुर ३, २४५) ।

उम्मेंठ [**दे**] देखो **उम्मिंठ** ; (पउम ७१, २६ ; स ३३२) ।

उम्मेस पुं [**उन्मेष**] उन्मीलन, विकास ; (भग १३, ४)।

उम्मोयणी स्त्री [**उन्मोचनी**] विद्या-विशेष ; (सुर १३, ८१) ।

उम्ह पुस्त्री [**ऊष्मन्**] १ संताप, गरमी, उष्णता ; "सरीरउम्हाए जीवइ सयावि" (उप ५६७ टी ; णाया १, १ ; कुमा) । २ भाफ, वाष्प ; (से २, ३२ ; हे २, ७४) ।

उम्हइअ } वि [**उष्मायित**] संतप्त, गरम किया हुआ ; (से
उम्हविय } ४, १ ; पउम २, ६६ ; गउड) ।

उम्हाअ अक [**ऊष्माय्**] १ गरम होना । २ भाफ निकालना । वकृ—**उम्हाअंत, उम्हाअमाण** ; (से ६, १० ; पि ५५८) ।

उम्हाल वि [**ऊष्मवत्**] १ गरम, परितप्त; २ बाष्प-युक्त ; (गउड) ।

उम्हाविअ न [**दे**] सुरत, संभोग ; (दे १, ११७) ।

उयट्ट देखो **उव्वट्ट**=उद्+वृत् । उयट्टेंति ; भूका—उयट्टिंसु ; (भग) ।

उयट्ट देखो **उव्वट्ट**=उद्वृत्त ।

उयचिय [**दे**] देखो **उविय**=परिकर्मित ; " उयचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे" (णाया १, १—पत्र १३) ।

उयर वि [**उदार**] श्रेष्ठ, उत्तम ; "देवा भवंति विमलोयरकंतिजुत्ता" (पउम १०, ८८) ।

उयाइय न [**उपयाचित**] मनौती ; (सुपा ८ ; ५७८) ।

उयाय वि [**उपयात**] उपगत ; (राज) ।

उयाहु देखो **उदाहु** ; (सुर १२, ५६ ; काल ; विसे १६१०) ।

उय्यकिअ वि [**दे**] इकट्ठा किया हुआ ; (षड्) ।

उय्यल वि [**दे**] अध्यासित, आरूढ ; (षड्) ।

उर पुंन [**उरस्**] वक्षःस्थल, छाती ; (हे १, ३२) । °**अ,** °**ग** पुंस्त्री [°**ग**] सर्प, साँप ; (कुप्र १७१) ; " उरगगिरिजलणसागरनहतलतरुगणसमो अ जो होइ । भमरमियधरणिजलरुहरविपवणसमो अ सो समणो ॥"(अणु) । °**तव** पुं [°**तपस्**] तप-विशेष ; (ठा ४) । °**त्थ** न [°**स्त्र**] अस्त्र-विशेष, जिसके फेंकने से शत्रु सर्पों से वेष्टित होता है ; (पउम ७१, ६६) । °**परिसप्प** पुंस्त्री [°**परिसर्प**] पेट से चलने वाला प्राणी (सर्पादि) ; (जो २०)। °**सुत्तिया** स्त्री [°**सूत्रिका**] मोतियों का हार ; (राज) ।

उर न [**दे**] आरम्भ, प्रारंभ ; (दे १, ८६) ।

उरंउरेण अ [**दे**] साक्षात् ; (विपा १, ३) ।

उरत्त वि [**दे**] खण्डित, विदारित , (दे १, ६०) ।

उरत्थय न [**दे**] वर्म, बख्तर ; (पात्र) ।

उरब्भ पुंस्त्री [**उरभ्र**] मेष, भेड़ , (णाया १, १ ; पगह १, १) ।

उरब्भिज्ज } वि [**उरभ्रीय**] १ मेष-संबन्धी ; २ उत्तरा-
उरब्भिय } ध्ययन सूत्र का एक अध्ययन ; " तत्तो समुट्ठियमेयं उरब्भिज्जंति अज्झयणं " (उत्तनि ; राज) ।

उरय पुं [**उरज**] वनस्पति-विशेष ; (राज) ।

उररि पुं [**दे**] पशु, बकरा ; (दे १, ८८) ।

उरल देखो **उराल** ; (कम्म १ ; भग ; दं २२) ।

उरविय वि [**दे**] १ आरोपित , २ खण्डित, छिन्न ; (षड्) ।

उरस्स वि [**उरस्य**] १ सन्तान, बच्चा ; (ठा १०) । २ हार्दिक, आभ्यन्तर ; "उरस्सबलसमण्णागय—"(राय) ।

उराल वि [**उदार**] १ प्रबल ; (राय) । २ प्रधान,मुख्य ; (सुज्ज १) । ३ सुन्दर, श्रे ; (सूत्र १, ६) । ४ अद्भुत ; (चंद २०) । ५ विशाल, विस्तीर्ण , (ठा ५) । ६ न. शरीर-विशेष, मनुष्य और तिर्यञ्च् (पशु-पक्षी) इन दोनों का शरीर , (अणु) ।

उराल वि [**दे**] भयंकर, भीष्म ; (सुज्ज १) ।

उरालिय न [**औदारिक**] शरीर-विशेष ; (सण) ।

उरिआ स्त्री [**उड्रिका**] लिपि-विशेष ; (सम ३५) ।

उरितिय न [**दे. उरसि-त्रिक**] तीन सर वाला हार ; (औप) ।

°उरिस देखो पुरिस ; (गा २८२)।
उरु वि [उरु] विशाल, विस्तीर्ण ; (पात्र)।
उरुपुल्ल पुं [दे] १ अपूप, पूआ ; २ खिचडी , (दे १, १३४)।
उरुमल्ल, उरुमिल्ल, उरुसोल्ल } वि [दे] प्रेरित ; (षड् ; दे १, १०८)।
उरोरुह न [उरोरुह] १ स्तन, थन ; २ जैन साध्वीओं का उपकरण-विशेष ; (ओघ ३१७ भा)।
°उल देखो कुल , (से १, २६ ; गा ११६; सुर ३, ४१ ; महा)।
उलय, उलव } पुन [उलप] तृण-विशेष ; (सुपा २८१ ; प्राप्र)।
उलवी स्त्री [उलपी] तृण-विशेष , "उलवी वीरणं" (पात्र)।
उलिअ वि [दे] अ-संकुचित नजर वाला, स्फार-दृष्टि ; (दे १, ८८)।
उलित्त न [दे] ऊँचा कुँआ ; (दे १, ८६)।
°उलीण देखो कुलीण ; (गा २५३)।
उलुउंडिअ वि [दे] प्रलुठित, विरेचित ; (दे १, ११६)।
उलुओसिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित ; (षड्)।
उलुकसिअ वि [दे] ऊपर देखो ; (दे १, ११५)।
उलुखंड पुं [दे] उल्मुक, अलात, लूका ; (दे १, १०७)।
उलुग पुं [उलुक] १ उल्लू, पेचक ; २ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६६)।
उलुगी स्त्री [औलुकी] विद्या-विशेष ; (विसे २४५४)।
उलुग्ग वि [अवरुग्ण] बिमार ; (महा)।
उलुग्ग वि [दे] देखो ओलुग्ग ; (महा)।
उलुफुंटिअ वि [दे] १ विनिपातित, विनाशित; २ प्रशान्त ; (दे १, १३८)।
उलुय देखो उलूअ ; "अह कह दिणमणितेयं, उलुयाणं हरइ अंधतं" (सद्धि १०८ ; सुर १, २६ , पउम ६७, २४)।
उलुहंत पुं [दे] काक, कौआ ; (दे १, १०६)।
उलुहलिअ वि [दे] अतृप्त, तृप्ति रहित ; (दे १, ११७)।
उलुहुलय वि [दे] अ-वितृप्त, तृप्ति-रहित ; (षड्)।
उलूअ पुं [उलूक] १ उल्लू, पेचक ; (पात्र)। २ वैशेषिक मत का प्रवर्तक कणाद मुनि ; (सम्म १४६, विसे २५०८)।

उलूखल देखो उऊखल ; (कुमा)।
उलूलु पुं [उलूलु] मङ्गल-ध्वनि , (रंभा)।
उलूहल देखो उऊखल; (हे १, १७१ ; महा)।
उल्ल वि [आर्द्र] गीला, आर्द्र ; (कुमा; हे १, ८२)।
°गच्छ पुं [°गच्छ] जैन मुनिओं का गण विशेष ; (कप्प)।
उल्ल सक [आर्द्रय्] १ गीला करना, आर्द्र करना । २ अक. आर्द्र होना । उल्लेइ; (हे १, ८२)। वकृ— उल्लंत, उल्लिंत , (गउड)। संकृ—उल्लेत्ता , (महा)।
उल्ल न [दे] ऋण, करजा; "तो मं उल्ले धरिऊण" (सुपा ४८६)।
उल्लअण न [उल्लयन] अर्पण, समर्पण; (से ११, ५१)।
उल्लंक पुं [उल्लङ्क] काष्ठ-मय वारक; (निचू १२)।
उल्लंघ सक [उत्+लङ्घ्] उल्लङ्घन करना, अतिक्रमण करना । उल्लघेज्ज; (पि ४५६)। हेकृ—उल्लंघित्तए ; (भग ८, ३३)।
उल्लंघण न [उल्लङ्घन] १ अतिक्रमण, उत्प्लवन ; (पगह ३६)। २ वि. अतिक्रमण करने वाला "उल्लंघणे य चडे य पावसमणे त्ति वुच्चइ" (उत ८)।
उल्लंठ वि [उल्लण्ठ] उद्धत ; "जपंति उल्लंठ-वयणाइं" (काल)।
उल्लंडग पुं [उल्लण्डक] छोटा मृदङ्ग, वाद्य-विशेष ; (राज)।
उल्लंडिअ वि [दे] बहिष्कृत, बाहर निकाला हुआ ; (पात्र)।
उल्लंबण न [उल्लम्बन] उद्बन्धन, फाँसी लगा कर लटकना ; (सम १२५)।
उल्लक्क वि [दे] १ भग्न, टूटा हुआ ; २ स्तब्ध ; "उल्लक्कं सिराजालं" (स २६४)।
उल्लट्ट वि [दे] उल्लुण्ठित, खाली किया हुआ ; (दे ७, ८१)।
उल्लण वि [उल्वण] उत्कट ; (पंचा २)।
उल्लण न [आर्द्रीकरण] गीला करना; (उवा; ओघ ३६; मं २, ८)।
उल्लणिया स्त्री [आर्द्रयणिका] जल पोंछने का गमछा , टोपिया ; (उवा)।
उल्लट्टिय वि [दे] भाराक्रान्त, जिस पर बोझा लादा गया हो वह "अह तम्मि सत्थलोए उल्लट्टियसयलवसहनियरम्मि" (सुर २, २)।

उल्लरय न [दे] कौडीओं का आभूषण; (दे १, ११०)।

उल्लल अक [उत्+लल्] १ चलित होना, चञ्चल होना। २ ऊँचा चलना। ३ उत्पन्न होना। उल्ललइ; (से ११, १३)। वकृ—**उल्ललंत**; (काल)।

उल्ललिअ वि [उल्ललित] १ चञ्चल; (गा ५६६)। २ उत्पन्न; (से ६, ६८)

उल्ललिअ वि [दे] शिथिल, ढ़ीला; (दे १, १०४)।

उल्लव सक [उत्+लप्] १ कहना। २ बकना, बकवाद करना, खराब शब्द बोलना। "जं वा तं वा उल्लवइ" (महा)। वकृ—**उल्लवंत, उल्लवेमाण**; (पउम ६४, ८; सुर १, १६६)।

उल्लवण न [उल्लपन] १ बकवाद; २ कथन; "जइवि न जुज्जइ जह तह मणवल्लहनामउल्लवणं" (सुपा ४६८)।

उल्लविय वि [उल्लपित] १ कथित, उक्त; २ न. उक्ति, वचन; "अंगपच्चंगसंठाण चारुल्लवियपेहणं" (उत्त)।

उल्लविर वि [उल्लपितृ] १ वक्ता, भाषक; २ बकवादी, वाचाट; (गा १७२; सुपा २२६)।

उल्लस अक [उत्+लस्] १ विकसित होना। २ खुश होना। उल्लसइ; (षड्)। वकृ—**उल्लसंत**; (गा ५६०; कप्प)।

उल्लस देखो **उल्लास**; (गउड)।

उल्लसिअ वि [उल्लसित] १ विकसित; २ हर्षित; (षड्; निचू १)।

उल्लसिअ वि [दे.उल्लसित] पुलकित, रोमाञ्चित, (दे १, ११५)।

उल्लाय वि [दे] लात मारना, पाद-प्रहार; (तदु)।

उल्लाय पुं [उल्लाप] १ वक्र वचन; २ कथन; (भग)।

उल्लाल सक [उत्+नमय्] १ ऊँचा करना। २ ऊपर फेंकना। उल्लालइ; (हे ४, ३६) वकृ—**उल्लालेमाण**; (अंत २१)

उल्लाल सक [उत्+लालय्] ताडन करना, पीडना। वकृ—**उल्लालेमाण**; (राज)।

उल्लाल पुंन [उल्लाल] छन्द-विशेष; (पिंग)।

उल्लालिअ वि [उन्नमित] १ ऊँचा किया हुआ; २ ऊपर फेंका हुआ; (कुमा; हे ४, ४२२)।

उल्लालिय वि [उल्लालित] ताडित; (राज)।

उल्लाव सक [उत्+लप्, लापय्] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। ३ बुलवाना। ४ बकवाद कराना। वकृ—**उल्लावंत, उल्लावेंत**; (से ११, १०; गा ५३६; ६५१; हे २, १६३)।

उल्लाव पुं [उल्लाप] १ शब्द, आवाज; (से १, ३०)। २ उत्तर, जवाब; (ओघ ५६ भा; गा ५१४)। ३ बकवाद, विकृत वचन; ४ उक्ति, कथन; (पउम ७०, ५८)। ५ संभाषण;

"नयणेहिं को न दीसइ; केण समाणं न होंति उल्लावा।
हिययाणंदं जं पुण, जणेइ तं माणुसं विरलं॥" (महा)।

उल्लाविअ वि [उल्लपित] १ उक्त, कथित; २ न. उक्ति, वचन; (गा ५८६)।

उल्लाविर वि [उल्लपितृ] १ बोलनेवाला, भाषक; (हे २, १६३; सुपा २२६)।

उल्लासग वि [उल्लासक] १ विकसित होने वाला; २ आनन्द-जनक; (श्रा २७)।

उल्लासि } **उल्लासिर** } वि [उल्लासिन्] ऊपर देखो; (कप्पू; लहुअ १; प्रासू ६६)।

उल्लाह सक [उत्+लाघय्] कम करना, हीन करना। वकृ—**उल्लाहअंत**; (उत्तर ६१)।

उल्लिअ वि [दे] उपसर्पित; उपागत; (षड्)।

उल्लिअ वि [आर्द्रित] गीला किया हुआ; (गउड; हे ३, १६)।

उल्लिंच सक [उद्+रिच्] खाली करना। हेकृ—"**उल्लिंचिऊण** य समत्थो हत्थउडेहि समुद्दं" (पुप्फ ४०)।

उल्लिंचिय वि [दे] उद्रिक्त, खाली किया हुआ;

"तह नाहिद्दहो जुव्वणघणेण लायन्नवारिणा भरिओ।
नहु निट्ठइ जह उल्लिंचिओवि पियनयणकलसेहिं" (सुपा ३३)।

उल्लिक्क न [दे] दुश्चेष्टित, खराब चेष्टा; (षड्)।

उल्लिया स्त्री [दे] राधा-वेध का निशाना "विंधेयव्वा विवरीयभमंतद्धचक्कोवरिथिउल्लिया" (स १६२)।

उल्लिह सक [उद्+लिह्] १ चाटना। २ खाना, भक्षण करना; "उक्खलिउणिहअमुररी उअ रोरघरम्मि उल्लिहइ" (दे १, ८८)।

उल्लिह सक [उद्+लिख्] १ रेखा करना। २ लिखना। ३ घिसना।

उल्लिहण न [उल्लेखन] १ घर्षण; (सुपा ४८)। २ विलेखन; "बहुआइ नहुल्लिहणे" (हे १, ७)।

उल्लिहिय वि [**उल्लिखित**] १ घृष्ट, घिसा हुआ ; (गाया १, २)। २ छिला हुआ, तक्षित; (पाअ)। ३ रेखा किया हुआ ; (सुपा १६३ ; प्रासू ७)।

उल्ली स्त्री [**दे**] १ चुल्हा ; (दे १, ८७)। २ दाँत का मैल; "उल्ली ददेसु दुग्गंधा" (महा)।

उल्लुअ वि [**दे**] १ पुरस्कृत, आगे किया हुआ; २ रक्त, रँगा हुआ ; (षड्)।

उल्लुंचिअ वि [**उल्लुञ्चित**] उखाड़ा हुआ, उन्मूलित; "मुट्ठीहिं कुतलकलावा उल्लुंचिया" (सुपा ८०, प्रवो ६८)।

उल्लुंटिअ वि [**दे**] संचूर्णित, टुकड़ा टुकड़ा किया हुआ; (दे १, १०६)।

उल्लुंठ वि [**उल्लुण्ठ**] उल्लंठ, उद्धत ; (सुपा ४६५ ; सुर ६, २१५)।

उल्लुंड सक [**वि+रेचय्**] झरना, टपकना, बाहर निकलना। उल्लुडइ; (हे ४, २६)। प्रयो, वकृ—**उल्लुंडावंत**; (कुमा)।

उल्लुक्क वि [**दे**] त्रुटित, टूटा हुआ ; (दे १, ९२)।

उल्लुक्क सक [**तुड्**] तोड़ना। उल्लुक्कइ ; (हे १, ११६; षड्)।

उल्लुक्किअ वि [**तुडित**] त्रोटित, तोड़ा हुआ; (कुमा)।

उल्लुगा° } स्त्री [**उल्लुका**] १ नदी-विशेष; (विसे २४२६)।
उल्लुगा } २ उल्लुका नदी के किनारे का प्रदेश; (विसे २४-२५)। °**तीर** न [°**तीर**] उल्लुका नदी के किनारे वसा हुआ एक नगर ; (विसे २४२४; भग २६, ३)।

उल्लुज्झण न [**दे**] पुनरुत्थान, कटे हुए हाथ पाँव की फिर से उत्पत्ति ; (उप ३८१)।

उल्लुट्ट अक [**उत्+लुट्**] नष्ट होना, ध्वंस पाना। वकृ— "तहवि य सा रायसिरी उल्लुट्टंती न ताइया ताहिं" (उव)।

उल्लुट्ट वि [**दे**] मिथ्या, असत्य, झूठा ; (दे १, ८६)।

उल्लुरुह पुं [**दे**] छोटा शङ्ख ; (दे १, १०५)।

उल्लुलिअ वि [**उल्लुलित**] चलित ; (गा ५६७)।

उल्लुह अक [**निस्+सृ**] निकला। उल्लुहइ ; (हे ४, २५६)।

उल्लुहुंडिअ वि [**दे**] उन्नत, उच्छ्रित ; (षड्)।

उल्लूढ वि [**दे**] १ आरूढ ; (दे १, १०० ; षड्)। २ अङ्कुरित ; (दे १, १०० ; पाअ)।

उल्लूर सक [**तुड्**] १ तोडना। २ नाश करना। उल्लूरइ; (हे ४, ११६ ; कुमा)।

उल्लूरण न [**तोडन**] छेदन, खंडन ; (गा १६६)।

उल्लूरिअ वि [**तुडित**] विनाशित, "उल्लूरिअपहिअसत्थेसु" (गामि १० ; पाअ)।

उल्लूह वि [**दे**] शुष्क, सूखा "उल्लूहं च नलवणं हरियं जायं" (ओघ ४४६ टी)।

उल्लेत्ता देखो **उल्ल**=आर्द्रय्।

उल्लेव पुं [**दे**] हास्य, हाँसी ; (दे १, १०२)।

उल्लेहड वि [**दे**] लम्पट, लुब्ध; (दे १, १०४; पाअ)।

उल्लोइय न [**दे**] १ पोतना, भीत को चूना वगैरः से सफेद करना; (औप)। २ वि. पोता हुआ; (णाया १, १; सम १३७)।

उल्लोक वि [**दे**] त्रुटित, छिन्न ; (षड्)।

उल्लोच पुं [**दे. उल्लोच**] चन्द्रातप, चाँदनी ; (दे १, ६८; सुर १२, १, उप १०७)।

उल्लोय पुं [**उल्लोक**] १ अगासी, छत ; (णाया १, १ ; कप्प ; भग)। २ थोड़ी देर, थोडा विलम्ब ; (राज)।

उल्लोय देखो **उल्लोच** ; (सुर ३, ७० ; कुमा)।

उल्लोल अक [**उत्+लुल्**] लुठना, लेटना। वकृ—**उल्लोलंत** ; (निचू १७)।

उल्लोल पुं [**दे**] १ शत्रु, दुश्मन ; (दे १, ६६)। २ कोलाहल ; (पउम १६, ३६)।

उल्लोल पुं [**उल्लोल**] १ प्रवन्ध, "उद्देसे आसि णाराहिवाण वियडा कल्लोला" (गउड)। २ उद्भट, उद्धत ; "तरुणजण-विब्भमुल्लोलसागरे" (स ६७)। ३ वि. उत्सुक, "बहुसो घडतविहडंतसइसुहासायसंगमुल्लोले।
हियए च्चेय समप्पंति चंचला वीइवावारा" (गउड)।

उल्लोव (अप) देखो **उल्लोच** ; (भवि)।

उल्हव सक [**वि+ध्मापय्**] ठंडा करना, आग को बुझाना। उल्हवइ ; (हे ४, ४१६)।

उल्हविय वि [**दे. विध्मापित**] बुझाया हुआ, शान्त किया हुआ ; (पउम २, ६६)।

उल्हसिअ वि [**दे**] उद्भट, उद्धत ; (दे १, ११६)।

उल्हा अक [**वि+ध्मा**] बुझ जाना। उल्हाइ , (स २८३)।

उव अ [**उप**] निम्न लिखित अर्थों का सूचक अव्यय,— १ समीपता ; जैसे—'उवदंसिय' (पण्ण १)। २ सदृशता, तुल्यता ; (उत्त ३)। ३ समस्तपन ; (राय)। ४ एक-वार ; ५ भीतर ; (आव ४)।

उवअंठ वि [**उपकण्ठ**] समीप का, आसन्न; (गउड)।

उवइट्ठ वि [**उपदिष्ट**] कथित, प्रतिपादित, शिक्षित; (ओघ १४ भा; पि १७३)।

उवइण्ण वि [उपचीर्ण] सेवित ; (स ३६) ।
उवइय वि [उपचित] १ मांसल, पुष्ट ; (पराह १, ४) । २ उन्नत , (औप) ।
उवइय पुंस्त्री [दे] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष ; देखो ओवइय ; (जीव १ टी; पराण) ।
उवइस सक [उप+दिश] १ उपदेश देना, सीखाना । २ प्रतिपादन करना । उवइसइ ; (पि १८४) । उवइसंति ; (भग) ।
उवउंज सक उप+युज्] उपयोग करना। कर्म—उवउज्जंति, (विसे ४८०) । संकृ—उवउंजिऊण, उवउज्ज ; (पि ५८५, निचू १) ।
उवउज्ज पु [दे] १ उपकार ; (दे १, १०८) । २ त्रि. उपकारक ; (षड्) ।
उवउत्त वि [उपयुक्त] १ न्याय्य, वाजवी । २ सावधान, अप्रमत ; (उव; उप ७७३) ।
उवऊढ वि [उपगूढ] आलिङ्गित ; (पाअ , से १, ३८; गा १३३) ।
उवऊहण न [उपगूहन] आलिङ्गन ; (से ५, ४८) ।
उवऊहिअ वि [उपगूहित] आलिङ्गित , (गा ६२१) ।
उवएइआ स्त्री [दे] शराव परोसने का पात्र ; (दे १, ११८) ।
उवएस पुं [उपदेश] १ शिक्षा, बोध ; (उव) । २ कथन, प्रतिपादन ; ३ शास्त्र, सिद्धान्त ; (आचा , विसे ८६४) । ४ उपदेश्य, जिसके विषय में उपदेश दिया जाय वह ; (धर्म १) ।
उवएसग वि [उपदेशक]उपदेश देने वाला , "हिच्चाण पुव्वसंजोगं, सिया किच्चोवएसगा" (सूत्र १, १) ।
उवएसण न [उपदेशन] देखो उवएस; (उत २८ ; ठा ७; विसे २५८३) ।
उवएसणया } स्त्री [उपदेशना] उपदेश ; (राज ; विसे
उवएसणा } २५८३) ।
उवएसिय वि [उपदेशित] उपदिष्ट ; "सामाइयणिज्जुतिं वोच्छं उवएसियं गुरुजणेणं" (विसे १०८०; सण) ।
उवओग पुं [उपयोग] १ ज्ञान, चैतन्य ; (पराण १२ ; ठा ४, ४ ; दं ४) । २ ख्याल, ध्यान, सावधानी ; "तं पुण संविग्गेणं उवओगजुएण तिव्वसद्धाए" (पचा ४) । ३ प्रयोजन, आवश्यकता ; (सुपा ६४३) ।
उवओगि वि [उपयोगिन्] उपयुक्त, योग्य, प्रयोजनीय ; "पत्ताईण विसुद्धिं साहेउं गिराहए जमुवओगि" (सुपा ६४३; स ५) ।
उवंग पुंन [उपाङ्ग] १ छोटा अवयव, क्षुद्र भाग ; "एवमादी सव्वे उवंगा भरणति" (निचू १) । २ ग्रन्थ-विशेष, मूल-ग्रन्थ के अंश-विशेष को लेकर उसका विस्तार से वर्णन करने वाला ग्रन्थ, टीका ; "संगोवंगाणं सरहस्साणं चउराहं वेयाण" (औप) । ३ 'औपपातिक' सूत्र वगेरः बारह जैन ग्रन्थ; (कप्प , जं १ ; सूक्त ७०) ।
उवंजण न [उपाञ्जन] मृक्षण; मालिस ; (पराह २, १) ।
उवकंठ देखो उवअंठ; (भवि) ।
उवकप्प सक [उप+क्लृ] १ उपस्थित करना; । २ करना । "उवकप्पइ करेइ उवणेइ वा होति एगट्ठा" (पंचभा) । प्रयो—उवकप्पयति ; (सूत्र १, १२) ।
उवकप्प पु [उपकल्प] साधु को दी जाती भिक्षा, अन्न-पान वगैरः ; (पचभा) ।
उवकय वि [उपकृत] जिस पर उपकार किया गया हो वह, अनुगृहीत ; "अणुवकयपराणुग्गहपरायणा" (आव ४) ।
उवकय वि [दे] सज्जित, प्रगुण, तय्यार ; (दे १, ११६) ।
उवकर देखो उवयर=उप+कृ । उवकरेउ ; (उवा) ।
उवकर सक [अव+कॄ] व्याप्त करना । भूका—"अहवा पसुणा उवकरिसु" (आचा १, ६, ३, ११)
उवकरण देखो उवगरण ; (औप)
उवकस सक [उप+कष्] प्राप्त होना । "नारीण वसमुवकसंति" (सूत्र १, ४) ।
उवकसिअ वि [दे] १ संनिहित ; २ परिसेवित ; ३ सर्जित, उत्पादित ; (दे १, १३८) ।
उवकिइ } स्त्री [उपकृति] उपकार ; (दे ४, ३४ ; ८;
उवकिदि } ४५) ।
उवकुल न [उपकुल] नक्षत्र-विशेष, श्रवण आदि बारह नक्षत्र ; (जं ७) ।
उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक प्रसिद्ध वेश्या ; (उव) ।
उवक्कंत वि [उपकान्त] १ समीप में आनीत ; २ प्रारब्ध, प्रस्तावित ; (विसे ६८७) ।
उवक्कम सक [उप+क्रम्] १ शुरू करना, प्रारम्भ करना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । ४ समीप में लाना । ५ संस्कार करना । ६ अनुसरण करना । "सीसो गुरुणो भावं जमुवक्कमए" (विसे ६२६) । "ता तुब्भे ताव अवक्कमह लहुं, मए" (विसे ६२६) । "ता तुब्भे ताव अवक्कमह लहुं, जाव एयासिं भावमुवक्कमामि त्ति" (महा) । "जेणोवक्कामि

उज्जइ समीवमाणिज्जए" (विसे २०३६)। "जएणं हलकुलि-आईहिं खेताइं उवक्कमिज्जंति से तं खेत्तोवक्कमे" (अणु)। वकृ—**उवक्कमंत**; (विसे ३४१८)।

उवक्कम पुं [**उपक्रम**] १ आरम्भ, प्रारंभ; २ प्राप्ति का प्रयत्न ; 'सोच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं" (सूत्र १,२,३,१४)। ३ कर्मों के फल का अनुभव; (सूत्र १,३; भग १,४)। ४ कर्मों को परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-विशेष; (ठा ४, २)। ५ मरण, मौत, विनाश; "हुज्ज इमम्मि समए उवक्कमो जीवियस्स जइ मज्झ" (आउ १५ ; बृह ४)। ६ दूर स्थित को समीप में लाना, "सत्थस्सोवक्कमणं उवक्कमो तेण तम्मि अ तओ वा सत्थसमीवीकरणं" (विसे; अणु)। ७ आयुष्य-विघातक वस्तु; (ठा ४, २ , स २८७)। ८ शस्त्र, हथियार; "भुम्माहारच्छेए उवक्कमेणं च परिणाए" (धर्म २)। ९ उपचार; (स २०५) । १० ज्ञान, निश्चय, ११ अनुवर्तन, अनुकूल प्रवृत्ति; (विसे ९२९; ९३०) । १२ संस्कार, परिकर्म ; "खेत्तोवक्कमे" (अणु) ।

उवक्कमण न [**उपक्रमण**] ऊपर देखो ; (अणु; उवर ४६; विसे ९११; ९१७; ९२१) ।

उवक्कमिय वि [**औपक्रमिक**] उपक्रम से संवन्ध रखने वाला, (ठा २, ४ ; सम १४५ , पगण ३५) ।

उवक्काम देखो **उवक्कम**=उप+क्रम् । कर्म—उवक्कामिज्जइ, (विसे २०३६) ।

उवक्कामण देखो **उवक्कमण** ; (विसे २०५०) ।

उवक्केस पुं [**उपक्लेश**] १ बाधा; २ शोक; (राज) ।

उवक्खड सक [**उप+स्कृ**] १ पकाना, रसोई करना । २ पाक को मसाले से संस्कारित करना । उवक्खडेइ, उवक्खडिंति; (पि ५५९)। संकृ—**उवक्खडेत्ता**; (आचा)। प्रयो—उवक्खडावेइ, उवक्खडाविंति; (पि ५५९; कप्प)। संकृ—**उवक्खडावेत्ता**; (पि ५५९) ।

उवक्खड } वि [**उपस्कृत**] १ पकाया हुआ; २ मसाला
उवक्खडिय } वगैरः के संस्कार-युक्त पकाया हुआ; (निचू ८; पि ३०६; ५५९; उत्त १२, ११)। ३ पुंन. "रसोई, पाक "भणिया महाणसगणा जह अज्ज उवक्खडो न कायव्वो" (उप ३५६ टी, ठा ४, २; णाया १, ८; ओघ ५४ भा)। °**म** वि [°**म**] पकाने पर भी जो कच्चा रह जाता है वह मुंग वगैरः अन्न-विशेष; "उवक्खडामं णाम जहा चणयादीणं उवक्खडियाणं जे ण सिज्झंति ते कंकडुयामं उवक्खडियामं भगणइ" (निचू १५) ।

उवक्खर पुं [**उपस्कर**] १ संस्कार ; २ जिससे संस्कार किया जाय वह ; (ठा ४, २)।

उवक्खरण न [**उपस्करण**] ऊपर देखो । °**साला** स्त्री [°**शाला**] रसोई-घर, पाक-गृह ; (निचू ९) ।

उवक्खाइया स्त्री [**उपख्यायिका**] उपकथा, अवान्तर कथा; (सम ११६) ।

उवक्खाण न [**उपाख्यान**] उपाख्यान, कथा ; (पउम ३३, १४९) ।

उवक्खित्त वि [**उपक्षिप्त**] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ; (सुर ९३) ।

उवक्खिव सक [**उप+क्षिप्**] १ स्थापन करना । २ प्रयत्न करना । ३ प्रारंभ करना । उवक्खिव ; (पि ३१९) ।

उवक्खेअ पुं [**उपक्षेप**] १ प्रयत्न, उद्योग ; २ उपाय ; "ण भणामि तस्सिं साहणिज्जे किदो उवक्खेओ" (मा ३९) ।

उवग वि [**उपग**] १ अनुसरण करने वाला ; (उप २४३; औप) । २ समीप में जाने वाला ; (विसे २५६५) ।

उवगच्छ सक [**उप + गम्**] १ समीप में आना । २ प्राप्त करना । ३ जानना । ४ स्वीकार करना । उवगच्छइ; (उव; स २३७)। उवगच्छंति; (पि ५८२)। संकृ—**उवगच्छिऊण**; (स ४४)।

उवगणिय वि [**उपगणित**] गिना हुआ, सख्यात, परिगणित; (स ४६१) ।

उवगम देखो **उवगच्छ** । संकृ—**उवगम्म** ; (विसे ३१९९)। हेकृ—**उवगंतुं** ; (निचू १९) ।

उवगय वि [**उपगत**] १ पास आया हुआ ; (से १, १६ ; गा ३२१)। २ ज्ञात, जाना हुआ ; (सम ८८; उप पृ ५९ ; सार्ध १४४) । ३ युक्त, सहित; (राय) । ४ प्राप्त ; (भग) । ५ प्रकर्ष-प्राप्त ; (सम्म १) । ६ स्वीकृत ; " अज्झप्पवद्धमूला, अगणेहि वि उवगया किरिया " (उवर ५५) । ७ अन्तर्भूत, अन्तर्गत ;

"जं च महाकप्पसुयं, जाणि अ सेसाणि छेअसुत्ताणि ।
चरणकरणाणुओगो त्ति कालियत्थे उवगयाणि"
(विसे २२९५) ।

उवगय वि [**उपकृत**] जिस पर उपकार किया गया हो वह ; (स २०१) ।

उवगर सक [**उप+कृ**] हित करना । उवगरेमि; (स २०९) ।

उवगरण न [**उपकरण**] १ साधन, सामग्री, साधक वस्तु; (ओघ ६६६) । २ वाह्य इन्द्रिय-विशेष; (विसे १९४) ।

उवगस सक [उप+कष्] समीप आना, पास आना। संकृ—**उवगसित्ता** ; (सूत्र १, ४)। वकृ—
"**उवगसंतं** झंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहि।
भोगभोगे वियारेई, महामोहं पकुव्वइ" (सम ५०)।

उवगा सक [उप+गै] वर्णन करना, श्लाघा करना, गुण-गान करना। कवकृ-**उवगाइज्जमाण**, **उवगिज्जमाण**, **उवगीयमाण** ; (राय ; भग ६, ३३, स ६३)।

उवगार देखो **उवयार**=उपकार ; (सुर २, ४३)।

उवगारग वि [उपकारक] उपकार करने वाला ; (स ३२१)।

उवगारि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो; (सुर ७, १६७)।

उवगिअ न [उपकृत] १ उपकार; २ वि. जिस पर उपकार किया गया हो वह; (स ६३६)।

उवगिज्जमाण देखो **उवगा**।

उवगिण्ह सक [उप+ग्रह्] १ उपकार करना। २ पुष्टि करना। ३ ग्रहण करना। उवगिण्हइ ; (पि ५१२)।

उवगीय वि [उपगीत] १ वर्णित, श्लाघित। २ न. संगीत, गीत, गान, "वाइयमुवगीयं नट्टमवि सुयं दिट्ठं चिट्ठमुत्तिकरं" (सार्ध १०८)।

उवगीयमाण देखो **उवगा**।

उवगूढ वि [उपगूढ] १ आलिङ्गित ; (गा ३५१; स ४४८)। २ न. आलिंगन ; (राज)।

उवगूह सक [उप+गुह्] १ आलिंगन करना। २ गुप्त रीति से रक्षण करना। ३ रचना करना, बनाना। कवकृ—**उवगूहिज्जमाण** ; (णाया १, १ ; औप)।

उवगूहण न [उपगूहन] १ आलिंगन ; २ प्रच्छन्न-रक्षण, ३ रचना, निर्माण, "आरुहणणट्टणेहिं बालयउवगूहणेहिं च" (तदु)।

उवगूहिय वि [उपगूढ] आलिंगित ; (आवम)।

उवग्ग न [उपाग्र] १ अग्र के समीप। २ आषाढ़ मास "एसो चिय कालो पुणरवि गयं उवग्गम्मि" (वव १)।

उवग्गह पुं [उपग्रह] १ पुष्टि, पोषण ; (विसे १८५०)। २ उपकार; (उप ५६७ टी; स १५४)। ३ ग्रहण, उपादान, (ओघ २१२ भा)। ४ उपधि, उपकरण, साधन, (ओघ ६६६)।

उवग्गहिअ वि [उपगृहीत] १ उपस्थापित ; (पराण २३)। २ आलिंगनादि चेष्टा ; " उवहसिएहिं उवग्गहिएहिं उवसद्देहिं " (तंदु)। ३ उपकृत ; (स १५६)। ४ उपष्टम्भित, (राज)।

उवग्गहिअ देखो **ओवग्गहिअ** ; (पंचव)।

उवग्गाहि वि [उपग्राहिन्] संबन्धी, संबन्ध रखने वाला ; (स ५२)।

उवग्घाय पुं [उपोद्घात] ग्रन्थ के आरम्भ का वक्तव्य, भूमिका ; (विसे ६६२)।

उवघाइ वि [उपघातिन्] उपघात करने वाला ; (भास ८७ ; विसे २००८)।

उवघाइय वि [उपघातिक] १ उपघात-कारक ; (विसे २००६)। २ हिंसा से संबन्ध रखने वाला "भूओवघाइए" (औप)।

उवघाय पुं [उपघात] १ विराधना, आघात; (ओघ ७८८)। २ अशुद्धता ; (ठा ५)। ३ विनाश ; (कम्म १, ५४)। ४ उपद्रव; (तंदु)। ५ दूसरे का अशुभ-चिन्तन, (भास ५१)। °**नाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपने ही शरीर के पडजीभ, चोरदन्त, रसौली आदि अवयवों से क्लेश पाता है वह कर्म, (सम ६७)।

उवघायण न [उपघातन] ऊपर देखो ; (विसे २२३)।

उवचय पुं [उपचय] १ वृद्धि, (भग ६, ३)। २ समूह; (पिंड २; ओघ ४०७)। ३ शरीर ; (आव ५)। ४ इन्द्रिय-पर्याप्ति ; (पराण १५)।

उवचयण न [उपचयन] १ वृद्धि ; २ परिपोषण, पुष्टि, (राज)।

उवचर सक [उप+चर्] १ सेवा करना। २ समीप में घूमना-फिरना। ३ आरोप करना। ४ समीप में खाना। ५ उपद्रव करना। उवचरइ, उवचरए, उवचरामो, उवचरंति; (बृह १; पि ३४६; ४५५ ; आचा)।

उवचरिय वि [उपचरित] १ उपासित, सेवित, बहुमानित ; (स ३०)। २ न. उपचार, सेवा, (पंचा ६)।

उवचि सक [उप+चि] १ इकट्ठा करना। २ पुष्ट करना। उवचिणइ, उवचिणाइ, उवचिणंति, भूका—उवचिणिंसु; भवि—उवचिणिस्संति; (ठा २, ४; भग)। कर्म—उवचिज्जइ, उवचिज्जंति ; (भग)।

उवचिट्ठ सक [उप+स्था] उपस्थित होना, समीप आना। उवचिट्ठे, उवचिट्ठेज्जा ; (पि ४६२)।

उवचिय वि [उपचित] १ पुष्ट, पीन ; (पण्ह १, ४, कप्प)। २ स्थापित, निवेशित, (कप्प; पराण २)। ३

उन्नति ; (औप) । ४ व्याप्त ; (अणु) । ५ वृद्ध, बढा हुआ, (आचा) ।
उवच्छंदिद (शौ) वि [उपच्छन्दित] अभ्यर्थित, (अभि १७३) ।
उवजंगल वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे १, ११६) ।
उवजा अक [उप + जन्] उत्पन्न होना । उवजायइ, (विसे ३०२६) ।
उवजाइ स्त्री [उपजाति] छन्द-विशेष, (पिंग) ।
उवजाइय देखो **उवयाइय,** (श्राद्ध १६, सुपा ३५४) ।
उवजाय वि [उपजात] उत्पन्न, (सुपा ६००) ।
उवजीव सक [उप+जीव्] आश्रय लेना । उवजीवइ; (महा) ।
उवजीवग वि [उपजीवक] आश्रित; (सुपा ११६) ।
उवजीवि वि [उपजीविन्] १ आश्रय लेने वाला ; "न करेइ नेय पुच्छइ निद्धम्मा लिंगमुवजीवी" (उव) । २ उपकारक, (विसे २८८६) ।
उवजोइय वि [उपज्योतिष्क] १ अग्नि के समीपमें रहने वाला; २ पाक-स्थान में स्थित, "के इत्थ खत्ता उवजोइया वा अज्झावया वा सह खडिएहिं" (उत्त १२, १८) ।
उवज्जण न [उपार्जन] पैदा करना, कमाना, (सुर ८, १४४)।
उवज्जिण सक [उप+अर्ज्] उपार्जन करना । उवज्जिणेमि; (स ४४३) ।
उवज्झय } पुं [उपाध्याय] १ अध्यापक, पढाने वाला,
उवज्झाय } (पउम ३६, ६० ; पड्) । २ सत्राध्यापक जैन मुनि को दी जाती एक पदवी ; (विसे) ।
उवज्झिय वि [दे] आकारित, बुलाया हुआ ; (राज) ।
उवट्टण देखो **उव्वट्टण** ; (राज) ।
उवट्टणा देखो **उव्वट्टणा** ; (भग, विसे २५१५ टी) ।
उवट्ठ वि [उपस्थ] एक ही स्थान में सतत अवस्थित, (वव ४) । °**काल** पु [°**काल**] आने की वेला, अभ्यागम समय ; (वव ४) ।
उवट्ठंभ पुं [उपष्टम्भ] १ अवस्थान ; (भग) । २ अनुकम्पा, करुणा ; (ठा २) ।
उवट्ठप्प वि [उपस्थाप्य] १ उपस्थित करने योग्य ; २ व्रत—दीक्षा के योग्य "वियत्तकिच्चे सेहे य उवट्ठप्पा य आहिया" (वृह ६) ।
उवट्ठव सक [उप+स्थापय्] १ उपस्थित करना । २ व्रतों का आरोपण करना, दीक्षा देना । उवट्ठवेइ, उवट्ठवेह ; (महा; उवा) । हेकृ—**उवट्ठवेत्तए**; (वृह ४) ।
उवट्ठवणा स्त्री [उपस्थापना] १ चारित्र-विशेष, एक प्रकार की जैन दीक्षा ; (धर्म २) । २ शिष्य में व्रत की स्थापना ; "वयट्ठवणमुवट्ठवणा" (पचभा) ।
उवट्ठवणीय वि [उपस्थापनीय] देखो **उवट्ठप्प**; (ठा ३) ।
उवट्ठा सक [उप+स्था] उपस्थित होना । उवट्ठाएज्जा, (भग) ।
उवट्ठाण न [उपस्थान] १ वैठना, उपवेशन ; (णाया १, १) । २ व्रत-स्थापन ; (महानि ७) । ३ एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना ; (वव ४) । °**दोस** पुं [°**दोष**] नित्यवास दोष; (वव ४) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] आस्थान-मण्डप, सभा-स्थान ; (णाया १, १ ; निर १, १) ।
उवट्ठाणा स्त्री [उपस्थाना] जिसमें जैन साधु-लोक एक वार ठहर कर फिर भी शास्त्र-निषिद्ध अवधि के पहले ही आकर ठहरे वह स्थान ; (वव ४) ।
उवट्ठाव देखो **उवट्ठव** । उवट्ठावेहि; (पि ४६८)। हेकृ—**उवट्ठावित्तए, उवट्ठावेत्तए** , (ठा) ।
उवट्ठावणा देखो **उवट्ठवणा** ; (वृह ६) ।
उवट्ठिय वि [उपस्थित] १ प्राप्त ; " जणवादमुवट्ठिओ" (उत्त १२) । २ समीप-स्थित, (आव १०) । ३ तय्यार, उद्यत ; (धर्म ३) । ४ आश्रित ; " निम्ममत्तमुवट्ठिओ" (आउ; सूत्र १, २) । ५ मुमुक्षु, प्रव्रज्या लेने को तय्यार ; " उवट्ठियं पडिरय, संजय सुतवस्सियं । वुक्कम्म धम्माओ भंसेइ, महामोहं पकुव्वइ " (सम ५१) ।
उवडहित्तु वि [उपदाहयितृ] जलाने वाला "अगणिकाएणं कायमुवडहित्ता भवइ" (सूत्र २, २) ।
उवडिअ वि [दे] अवनत, नमा हुआ ; (षड्) ।
उवणगर न [उपनगर] उपपुर, शाखा-नगर ; (औप) ।
उवणच्च सक [उप+नर्तय्] नचाना, नाच कराना । कवकृ—**उवणच्चिज्जमाण** ; (औप) ।
उवणद्ध वि [उपनद्ध] घटित ; (उत्तर ६१) ।
उवणम सक [उप + नम्] १ उपस्थित करना, ला रखना । २ प्राप्त करना । उवणमइ ; (महा) । वकृ—**उवणमंत** ; (उप १३६ टी ; सूत्र १, २) ।
उवणमिय वि [उपनमित] उपस्थापित ; (सण) ।
उवणय वि [उपनत] उपस्थित ; (से १, ३६) ।
उवणय पुं [उपनय] १ उपसहार, दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृत में जोडना, हेतु का पक्ष में उपसहार ; (पव ६६; ओघ ४४

भा)। २ स्तुति, श्लाघा, (विसे १४०३ टी; पव १४१)। ३ अवान्तर नय ; (राज)। ४ संस्कार-विशेष, उपनयन, (स २७२)।

उवणयण न [**उपनयन**] उपवीत-संस्कार, यज्ञ-सूत्र धारण संस्कार ; (पण्ह १, २)।

उवणिअ देखो **उवणीय** ; (से ४, ५५)।

उवणिक्खित्त वि [**उपनिक्षिप्त**] व्यवस्थापित; (आचा २)।

उवणिक्खेव पुं [**उपनिक्षेप**] धरोहर, रक्षा के लिए दूसरे के पास रखा धन ; (वव ४)।

उवणिग्गम पुं [**उपनिर्गम**] १ द्वार, दरवाजा। (से १२, ६८)। २ उपवन, बगीचा ; (गउड)।

उवणिग्गय वि [**उपनिर्गत**] समीप में निकला हुआ ; (औप)।

उवणिज्जंत देखो **उवणी**।

उवणिमंत सक [**उपनि+मन्त्रय्**] निमन्त्रण देना। भवि—उवणिमंतेहिंति ; (औप)। संकृ—**उवणिमंतिऊण** ; (स २०)।

उवणिमंतण न [**उपनिमन्त्रण**] निमन्त्रण ; (भग ८, ६)।

उवणिविट्ठ वि-[**उपनिविष्ट**] समीप-स्थित ; (राय)।

उवणिसआ स्त्री [**उपनिषत्**] वेदान्त-शास्त्र, वेदान्त-रहस्य, ब्रह्म-विद्या ; (अच्चु ८)।

उवणिहा स्त्री [**उपनिधा**] मार्गण, मार्गणा ; (पंचसं)।

उवणिहि पुंस्त्री [**उपनिधि**] १ समीप में आनीत ; (ठा ५)। २ विरचना, निर्माण ; (अणु)।

उवणिहिय वि [**उपनिहित**] १ समीप में स्थापित ; २ आसन्न-स्थित; (सूत्र २, २)। °**य** पुं [°**क**] नियम-विशेष को धारण करने वाला भिक्षु ; (सूत्र २, २)।

उवणी सक [**उप+नी**] १ समीप में लाना, उपस्थित करना। २ अर्पण करना। ३ इकट्ठा करना। उवणेंति ; (उवा)। उवणेमो; भवि—उवणेहिइ ; (पि ४५५; ४७४ ; ५२१) कवकृ—**उवणिज्जंत** ; (से ११, ५३)। सकृ—"से भिक्खुणो **उवणेत्ता** अणेगे" (सूत्र २, ६, १)।

उवणीय वि [**उपनीत**] १ समीप में लाया हुआ ; (पात्र; महा)। २ अर्पित, उपढौकित ; (औप)। ३ उपनय-युक्त, उपसंहृत; (विसे ६६६ टी; अणु)। ४ प्रशस्त, श्लाघित; (आचा २)। °**चरय** पुं [°**चरक**] अभिग्रह-विशेष को धारण करने वाला साधु; (औप)।

उवण्णत्थ वि [**उपन्यस्त**] उपन्यस्त, उपढौकित; "गुव्विणीए उवण्णत्थं विविहं पाणभोअणं। भुजमाणं विवज्जिज्जा" (दस ५, ३६)।

उवण्णास पुं [**उपन्यास**] १ वाक्योपक्रम, प्रस्तावना, (ठा ४)। २ दृष्टान्त-विशेष ; (दस १)। ३ रचना ; (अभि ६८)। ४ छल-प्रयोग ; (प्रयौ २२)।

उवतल न [**उपतल**] हस्त-तल की चारों ओर का पार्श्व-भाग ; (निचू १)।

उवताव पुं [**उपताप**] संताप, पीडा ; (सूत्र १, ३)।

उवताविय वि [**उपतापित**] १ पीडित ; २ तप्त किया हुआ, गरम किया हुआ; (सुर २, २२६ ; सण)।

उवत्त वि [**उपात्त**] गृहीत ; (पउम २६, ४६ ; सुर १४, १६०)।

उवत्थड वि [**उपस्तृत**] ऊपर २ आच्छादित; (भग)।

उवत्थाणा देखो **उवट्ठाणा** ; (पि ३४१)।

उवत्थिय देखो **उवट्ठिय** ; (सम १७)।

उवत्थु सक [**उप+स्तु**] स्तुति करना, श्लाघा करना। उवत्थुणति ; (पि ४६४)। उवत्थुवंदि (शौ), (उतर २२)।

उवदंस सक [**उप+दर्शय्**] दिखलाना, बतलाना। उवदसइ; (कप्प ; महा)। उवदंसेमि ; (विपा १, १)। भवि—उवदंसिस्सामि , (महा)। वकृ—**उवदंसेमाण**; (उवा)। कवकृ—**उवदंसिज्जमाण** ; (णाया १, १३) संकृ—**उवदंसिय** ; (आचा २)।

उवदंस पुं [**उपदंश**] १ रोग-विशेष, गर्मी, सुजाक। २ अवलेह, चाटना ; (चारु ६)।

उवदंसण न [**उपदर्शन**] दिखलाना; (सण)। °**कूड** पुं [°**कूट**] नीलवंत-नामक पर्वत का एक शिखर ; (ठा २, ३)।

उवदंसिय वि [**उपदर्शित**] दिखलाया हुआ ; (सुपा ३११)।

उवदंसिर वि [**उपदर्शिन्**] दिखलाने वाला ; (सण)।

उवदंसेत्तु वि [**उपदर्शयितृ**] दिखलाने वाला; (पि ३६०)।

उवदव पुं [**उपद्रव**] ऊधम, बखेड़ा ; (महा)।

उवदा स्त्री [**उपदा**] भेंट, उपहार ; (रभा)।

उवदाई स्त्री [**उदकदायिका**] पानी देने वाली "पाउवदाइं च ण्हाणोवदाइं च बाहिरपेसणकारिं ठवेति" (णाया १, ७)।

उवदाण न [**उपदान**] भेंट, नजराना ; (भवि)।

उवदिस सक [**उप+दिश्**] उपदेश देना। उवदिसइ ; (कप्प)।

उवदीव न [**दे**] द्वीपान्तर, अन्य द्वीप ; (दे १, १०६)।

उवदेसग वि [**उपदेशक**] व्याख्याता ; (औप)।

उवदेसणया देखो **उवएसणया** ; (विसे २६१६)।

उवदेसि वि [**उपदेशिन्**] उपदेशक ; (चारु ४)।

उवदेही स्त्री [**उपदेहिका**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, दिमक; (दे १, ६३)।

उवद्दव सक [**उप+द्रु**] उपद्रव करना, ऊधम मचाना। भवि—उवद्दविस्सइ ; (महा)।

उवद्दव देखो **उवदव** ; (ठा ५)।

उवद्दवण न [**उपद्रवण**] उपद्रव करना, उपसर्ग करना : (धर्म ३)।

उवद्दविय वि [**उपद्रुत**] पीडित, भय-भीत किया हुआ; (आव ४; विवे ७६)।

उवद्दुअ वि [**उपद्रुत**] हैरान किया हुआ, (भत्त १०५)।

उवधारणया स्त्री [**उपधारणा**] धारणा, धारण करना; (ठा ८)।

उवधारिय वि [**उपधारित**] धारण किया हुआ ; (भग)।

उवनंद पु [**उपनन्द**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, (कप्प)।

उवनंद सक [**उप+नन्द्**] अभिनन्दन करना। कवकृ— **उवनंदिज्जमाण** ; (कप्प)।

उवनयर देखो **उवणयर** ; (सुपा ३४१)।

उवनिक्खित्त देखो **उवणिक्खित्त** ; (कस)।

उवनिक्खेव सक [**उपनि+क्षेपय्**] १ धरोहर रखना। २ स्थापन करना। कृ—**उवनिक्खेवियव्व** ; (कस)।

उवनिग्गय देखो **उवणिग्गय**; (गाया १, १)।

उवनिबंधण न [**उपनिबन्धन**] १ संबन्ध, २ वि. संबन्ध-हेतु ; (विसे १६३६)।

उवनिमंत देखो **उवणिमंत**। उवनिमंतेइ, उवनिमंतेमि ; (कस; उवा)।

उवनिहिय वि [**औपनिधिक**] देखो **उवणिहिय**; (पण्ह २, १)।

उवन्नत्थ वि [**उपन्यस्त**] स्थापित ; (स ३१०)।

उवप्पदाण / **उवप्पयाण** न [**उपप्रदान**] नीति-विशेष, दाम-नीति, अभिमत अर्थ का दान; (विपा १, ३; गाया १, १)।

उवप्पुय वि [**उपप्लुत**] उपद्रुत, भय से व्याप्त; (राज)।

उवभुंज सक [**उप+भुज्**] उपभोग करना, काम में लाना। उवभुंजइ ; (षड्)। वकृ—**उवभुंजंत** ; (उप पृ १८०)। कवकृ—**उवहुज्जंत**, **उवभुज्जंत**; (से २, १०; सुर ८, १६१)। संकृ—**उवभुंजिऊण**, (महा)।

उवभुंजण न [**उपभोजन**] उपभोग , (सुपा १६)।

उवभुत्त वि [**उपभुक्त**] १ जिसका उपभोग किया हो वह , (वव ३)। २ अधिकृत ; (उप पृ १२४)।

उवभोअ / **उवभोग** पुं [**उपभोग**] १ भोजनातिरिक्त भोग, जिसका फिर २ भोग किया जाय वैसे वस्त्र-गृहादि; "उवभोगो उ पुणो पुणो उवभुज्जइ भवणवलयाई" (उत्त ३३ ; अभि ३१)। २ जिसका एक वार भाग किया जाय वह, अशन-पान वगैरः ; (भग ७, २ ; पडि)।

उवभोग्ग / **उवभोज्ज** वि [**उपभोग्य**] उपभोग-योग्य; (राज ; बृह ३)।

उवमा स्त्री [**उपमा**] १ सादृश्य, दृष्टान्त; (अणु, उउ; प्रासू १२०)। २ स्वनाम-ख्यात एक इन्द्राणी ; (ठा ८)। ३ खाद्य-पदार्थ विशेष; (जीव ३)। ४ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन ; (ठा १०)। ५ अलङ्कार-विशेष; (विसे ६६६ टी)। ६ प्रमाण विशेष, उपमान-प्रमाण , (विसे ४७०)।

उवमाण न [**उपमान**] १ दृष्टान्त, सादृश्य ; २ जिस पदार्थ से उपमा दी जाय वह; (दसनि १)। ३ प्रमाण-विशेष ; (सूअ १, १२)।

उवमालिय वि [**उपमालित**] विभूषित, सुशोभित ;
"अमलामयपडिपुन्नं, कुवलयमालोवमालियमुहं च।
कणयमयपुण्णकलसं, विलसंत पासए पुरओ"
(सुपा ३४)।

उवमिय वि [**उपमित**] १ जिसको उपमा दी गई हो वह ; २ जिसकी उपमा दी गई हो वह; (आवम)। ३ न. उपमा, सादृश्य ; (विसे ६८५)।

उवमेअ वि [**उपमेय**] उपमा के योग्य ; (मै ७३)।

उवय पु [**दे**] हाथी को पकड़नेका खड्डा ; (पाअ)।

उवय देखो **ओवय**। वकृ—**उवयंत** ; (कप्प)।

उवय (अप) देखो **उदय** ; (भवि)।

उवयर सक [**उप+कृ**] उपकार करना, हित करना। उवयरेइ; (सण)। कृ—**उवयरियव्व** ; (सुपा ५६४)।

उवयर सक [उप+चर्] १ आरोप करना। २ भक्ति करना। ३ कल्पना करना। ४ चिकित्सा करना। कवकृ—**उवयरिज्जंत**; (सुपा ५७)।
उवयरण न [उपकरण] साधन, सामग्री; "माए घरोवअरणं अज्ज हु णत्थि त्ति साहिअं तुमए" (काप्र २६; गउड)। २ उपकार, (सत्त ४१ टी)।
उवयरिय वि [उपकृत] १ उपकृत; २ उपकार; (वज्जा १०)।
उवयरिअ वि [उपचरित] आरोपित; (विसे २८३)।
उवयरिया स्त्री [उपचरिका] दासी; (उप पृ ३८७)।
उवया सक [उप+या] समीप में जाना। उवयाइ, (सूअ १, ४, १, २७)। उवयति; (विसे १४६)।
उवयाइय वि [उपयाचित] १ प्रार्थित, अभ्यर्थित। २ न मनौती, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प; (ठा १०; णाया १, ८)।
उवयाण न [उपयान] समीप में गमन, (सूअ १, २)।
उवयार पुं [उपकार] भलाई, हित; (उव; गउड, वज्जा ५८)।
उवयार पुं [उपचार] १ पूजा, सेवा, आदर, भक्ति; (स ३२; प्रति ४)। २ चिकित्सा, शुश्रूषा; (पंचा ६)। ३ लक्षणा, शब्द-शक्ति-विशेष, अध्यारोप, "जो तेसु धम्मसद्दो सो उवयारेण, निच्छएण इह" (दसनि १)। ४ व्यवहार; "णिउणजुत्तोवयारकुसला" (विपा १, २)। ५ कल्पना, "उवयारओ खित्तस्स विणिगमण सरूवओ नत्थि" (विसे)। ६ आदेश; (आवम)।
उवयारग वि [उपचारक] सेवा-शुश्रूषा करने वाला, (निचू ११)।
उवयारण न [उपकारण] अन्य-द्वारा उपकार करना; "उवयारणपारणासु विणओ पउंजियव्वो" (पण्ह २, ३)।
उवयारय वि [उपकारक] उपकार करने वाला; (धम्म ८ टी)।
उवयारि वि [उपकारिन्] उपकारक; (स २०८; विक २३; विवे ७६)।
उवयारिअ वि [औपचारिक] उपचार से सबन्ध रखने वाला; (उवर ३४)।
उवयालि पुं [उपजालि] १ एक अन्तकृद् मुनि, जो वसुदेव का पुत्र था और जिसने भगवान् श्रीनेमिनाथजी के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर मुक्ति पाई थी; (अंत १४)। २ राजा श्रेणिक का इस नाम का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान में देव-गति प्राप्त की थी, (अनु १)।
उवरइ स्त्री [उपरति] विराम, निवृत्ति; (विसे २१७७; २६४०, सम ४४)।
उवरंज सक [उप+रञ्ज्] ग्रस्त करना। कर्म—उवरज्जदि (शौ); (मुद्रा ५८)।
उवरग पुन [उपरक] सब से ऊपर का कमरा, अटारी, अट्टालिका, "उवरगपविट्ठाए कणगमजरीए निरूवणत्थ दारदेसट्ठिएण दिट्ठं तं पुव्ववण्णियचेट्ठियं" (महा)।
उवरत्त वि [उपरक्त] १ अनुरक्त, राग-युक्त; "कुमरगुणेसुवरत्ता" (सुपा २५६)। २ राहु से ग्रसित; (पउम)। ३ म्लान, (स ४७३)।
उवरम अक [उप+रम्] निवृत्त होना, विरत होना। "भो उवरमसु एयाओ असुभज्झवसाणाओ" (महा)।
उवरम पु [उपरम] १ निवृत्ति, विराम; (उप पृ ६३)। २ नाश; (विसे ६२)।
उवरय वि [उपरत] १ विरत, निवृत्त, (आचा; सुपा ५०८)। २ मृत; (स १०४)।
उवरय देखो **उवरग**; "उवरयगया दार पिहिऊण किंपि मुणमुणती चिट्ठइ" (महा)।
उवरल (अप) देखो **उव्वरिय (दे)**; (पिंग)।
उवराग } पु [उपराग] सूर्य वा चन्द्र का ग्रहण, राहु-ग्रहण;
उवराय } (पण्ह, १, २; से ३, ३६; गउड)।
उवराय पु [उपरात्र] दिन, 'राओवरायं अपडिन्ने अन्नगिलायं एगया भुंजे" (आचा)।
उवरि अ [उपरि] ऊपर, ऊर्ध्व; (उव)। °**भासा** स्त्री [°भाषा] गुरु के बोलने के अनन्तर ही विशेष बोलना; (पडि)। °**म, °मग, °मय, °ल्ल** वि [°तन] ऊपर का ऊर्ध्व स्थित; (सम ४३, सुपा ३५; भग; हे २, १६३; सम २२, ८६)। °**हुत्त** वि [°अभिमुख] ऊपर की तरफ; (सुपा २६६)।
उवरिं ऊपर देखो, (कुमा)।
उवरुंध सक [उप+रुध्] १ अटकाव करना, रोकना। २ अड़चन डालना। ३ प्रतिबन्ध करना। कर्म—उवरुज्झइ, उवरुंधिज्जइ; (हे ४, २४८)।

उवरुद्द पु [**उपरुद्र**] नरक के जीवों को दुःख देने वाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; "रुद्दोवरुद्द काले अ, महाकाले ति यावरे" (सम २८)।

"भजंति अंगमंगाणि, ऊरुबाहुसिराणि कर-चरणा।
कप्पेंति कप्पणीहिं, उवरुद्दा पावकम्मरया"
(सूअ १, ५)।

उवरुद्ध वि [**उपरुद्ध**] १ गर्जित। २ प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध, "पासत्थपमुहचोरोवरुद्धघणभव्वसत्थाणं" (सार्ध ६८, उप पृ ३८५)।

उवरोह पुं [**उपरोध**] १ अड़चन, बाधा; (विसे १४१३, स ३१६), "भूओवरोहरहिए" (आव ४)। २ अटकाव, प्रतिबन्ध ; (बृह १; स १५)। ३ घेरा, नगर आदि का सैन्य द्वारा वेष्टन, "उवरोहभया कीरइ सप्परिखे पुरवरस्स पागारो" (बृह ३)। ४ निर्बन्ध, आग्रह; (स ४५७)।

उवरोहि वि [**उपरोधिन्**] उपरोध करने वाला; (आव ४)।

उवल पु [**उपल**] १ पाषाण, पत्थर, (प्राप १७५)। २ टाँकी वगैरः को संस्कृत करने वाला पाषाण-विशेष, (पराण १)।

उवलम्बण पुं [**उपलम्बन**] साँकल वाला एक प्रकार का दीपक ; (अनु)।

उवलंभ सक [**उप+लभ्**] १ प्राप्त करना। २ जानना। ३ उलहना देना। कर्म—उवलंभिज्जइ ; (पि ५४१)। वकृ—**उवलंभेमाण**, (णाया १, १८)।

उवलंभ पुं [**उपलम्भ**] १ लाभ, प्राप्ति ; (सुपा ६)। २ ज्ञान ; (स ६५१)। ३ उलहना, "एव बहूवलंभे" (उप ६४८ टी)।

उवलंभणा स्त्री [**उपलम्भना**] उलहना, "धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खेज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खेज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेति" (णाया १, १८)।

उवलक्ख सक [**उप+लक्षय्**] जानना, पहिचानना। उवलक्खेइ, (महा)। संकृ—**उवलक्खेऊण**, (महा)। कृ—**उवलक्खिज्ज** ; (उप पृ ८७)।

उवलक्खण न [**उपलक्षण**] १ पहिचान; (सुपा ६१)। २ अन्यार्थ-बोधक संकेत, (श्रा ३०)।

उवलक्खिअ वि [**उपलक्षित**] १ पहिचाना हुआ, परिचित; (श्रा १२)।

उवलग्ग वि [**उपलग्न**] लगा हुआ, लग्न; "पउमिणिपत्तोवलग्गजलबिंदुनिचयचित्तं" (कप्प; भवि)।

उवलद्ध वि [**उपलब्ध**] १ प्राप्त ; २ विज्ञात ; "जइ सव्वं उवलद्धं, जइ अप्पा भाविओ उवसमेण" (उव ; णाया १ १३ ; १४)। ३ उपालब्ध, जिसको उलहना दिया गया हो वह ; (उप ७२८ टी)।

उवलद्धि स्त्री [**उपलब्धि**] १ प्राप्ति, लाभ, २ ज्ञान, (विसे २०६)।

उवलद्धु वि [**उपलब्धृ**] ग्रहण करने वाला, जानने वाला, (विसे ६२)।

उवलभ देखो **उवलंभ**=उप+लभ्। वकृ—**उवलभंत**; (पि ४५७)। संकृ—**उवलब्भ** ; (पि ५६०)।

उवलभत्ता }
उवलयभग्गा } स्त्री [**दे**] वलय, कङ्गन ; (दे १, १२०)।

उवलल अक [**उप+लल्**] क्रीडा करना, विलास करना। वकृ—**उवललंत** ; (महा)। प्रयो, वकृ—**उवलालिज्जमाण**, (णाया १, १)।

उवलल्लय न [**दे**] सुरत, मैथुन ; (दे १, ११७)।

उवललिय न [**उपललित**] क्रीडा-विशेष; (णाया १ ६)।

उवलह देखो **उवलंभ**=उप+लभ्। संकृ—**उवलहिय** ; (स ३२) ; **उवलहिऊण** ; (स ६१०)।

उवला सक [**उप+ला**] १ ग्रहण करना। २ आश्रय करना। हेकृ—**उवलाउं**; (वव १)।

उवलि देखो **उवलिंप**। उवलिइज्जा ; (आचा २, ३, १, २)।

उवलिंप सक [**उप+लिप्**] लीपना, पोतना। भवि—उवलिंपिहिइ ; (पि ५४६)।

उवलित्त वि [**उपलिप्त**] लीपा हुआ, पोता हुआ, (णाया १, १)।

उवलीण देखो **उव-लीण**।

उवलुअ वि [**दे**] सलज्ज, लज्जा-युक्त ; (दे १, १०७)।

उवलेव पुं [**उपलेप**] १ लेपना। २ कर्म-बन्ध; (औप)। ३ संश्लेष ; (आचा)। ४ आश्लेष, (सूअ १, १, २)।

उवलेवण न [**उपलेपन**] ऊपर देखो ; (भग ११, ६ ; निचू १, औप)।

उवलेविय वि [**उपलेपित**] लीपा हुआ, पोता हुआ ; (कप्प)।

उवलोभ सक [**उप+लोभय्**] लालच देना, लोभ दिखाना। संक्र—**उवलोभेऊण** ; (महा)।

उवलोहिय वि [**उपलोभित**] जिसको लालच दी गई हो वह ; (उप ७२८ टी)।

उवल्लि सक [**उप+ली**] १ रहना, स्थिति करना। २ आश्रय करना। उवल्लियइ ; (पि १९६; ४७४)। "तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा" (आचा २, ३,१, १ ; २)।

उवल्लीण वि [**उपलीन**] १ स्थित। २ प्रच्छन्न-स्थित; "उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति" (आचा २)।

उववज्ज अक [**उप+पद्**] १ उत्पन्न होना। २ संगत होना, युक्त होना। उववज्जइ; भवि—उववज्जिहिइ; (भग; महा) वकृ—**उववज्जमाण**, (ठा ४)। संकृ—**उववज्जित्ता**; (भग १७, ६)। हेकृ—**उववज्जिउं** ; (सूअ २, १)।

उववज्जण न [**उपवर्जन**] त्याग, "असमंजसोववज्जण-मिह जायइ सव्वसंगचायाओ" (सुपा ४७१)।

उववज्जमाण देखो **उववाय**=उप+वादय्।

उववट्ट अक [**उप+वृत्**] च्युत होना, मरना, एक गति से दूसरी गति में जाना। उववट्टइ ; (भग)। वकृ—**उववट्टमाण** ; (भग)।

उववण न [**उपवन**] बगीचा ; (णाया १, १ ; गउड)।

उववण्ण वि [**उपपन्न**] १ उत्पन्न ; "उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि" (उत्त ६)। २ संगत, युक्त ; (पंचा ६; उवर ४७)। ३ प्रेरित ; "उववण्णो पावकम्मुणा" (उत्त १९)। ४ न. उत्पत्ति, जन्म ; (भग १४,१)।

उववत्ति स्त्री [**उपपत्ति**] १ उत्पत्ति, जन्म ; (ठा २)। २ युक्ति, न्याय; (पउम २, ११७, उवर ४६)। ३ विषय; ४ संभव; "विसउ त्ति वा सभउ त्ति वा उवव त्ति त्ति वा एगट्ठा" (आचू १)।

उववत्तु वि [**उपपत्तृ**] उत्पन्न होने वाला, "देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति" (औप, ठा ८)।

उववन्न देखो **उववण्ण** ; (भग ; ठा २, २ ; स १५८ ; १६२)।

उववयण न [**उपपतन**] देखो **उववाय**=उपपात; "उववयणं उववाओ" (पंचभा)।

उववसण न [**उपवसन**] उपवास ; (सुपा ६१९)।

उववाइय वि [**औपपादिक, औपपातिक**] १ उत्पन्न होने वाला ; "अत्थि मे आया उववाइए, नत्थि मे आया उववाइए" (आचा)। २ देवरूप या नारक रूप से उत्पन्न होने वाला ; (पण्ह १, ४)।

उववाय पुं [**उप+वादय्**] वाद्य बजाना। कवकृ—**उपवज्जमाण, उववज्जमाण** ; (कप्प; राज)।

उववाय पुं [**उपपात**] १ देव या नारक जीव की उत्पत्ति—जन्म ; (कप्प)। २ सेवा, आदर ; "आणोववायवयणनिद्देसे चिट्ठंति" (भग ३, ३)। ३ विनय; ४ आज्ञा ; 'उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा" (वव ४)। ५ प्रादुर्भाव; (पण्ण १६)। ६ उपसंपादन, संप्राप्ति; (निचू ५)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] साध्वाचार-विशेष, पार्श्वस्थों के साथ रह कर संविग्न-विहार की संप्राप्ति ; (पंचभा)। °**य** वि [°**ज**] देव या नारक गति में उत्पन्न जीव ; (आचा)।

उववास पुंन [**उपवास**] उपवास, अनाहार, दिन-रात भोजनादि का अभाव ; (उवा; महा)।

उववासि वि [**उपवासिन्**] जिसने उपवास किया हो वह (पउम ३३, ५१; सुपा ४७८)।

उववासिय वि [**उपवासित**] उपवास किया हुआ, (भवि)।

उवविट्ठ वि [**उपविष्ट**] बैठा हुआ, निषण्ण ; (आवम)।

उवविणिग्गय वि [**उपविनिर्गत**] सतत निर्गत; (जीव३)।

उवविस अक [**उप+विश्**] बैठना। उवविसइ ; (महा)। संकृ—**उवविसिअ** ; (अभि ३८)।

उववीअ न [**उपवीत**] १ यज्ञसूत्र, जनोऊ ; (णाया १, १६ ; गउड)। २ सहित, युक्त ; "गुणसंपओववीओ" (विसे ३४११)।

उववीड अ [**उपपीड**] उपमर्दन ; "सिविणोववीडं आलिंगणेण गाढं पीडिओ" (रंभा)।

उववूह सक [**उप+बृंह्**] १ पुष्ट करना। २ प्रशंसा करना, तारीफ करना। संकृ—**उववूहेऊण** ; (दसनि ३)। कृ—**उववूहेयव्व** ; (दसनि ३)।

उववूहण न [**उपबृंहण**] १ वृद्धि, पोषण ; (पण्ह २, १)। २ प्रशंसा, श्लाघा ; (पंचा २)।

उववूहा स्त्री [**उपबृंहा**] ऊपर देखो; "उववूह-थिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ" (पडि)।

उववूहणिय वि [**उपबृंहणीय**] पुष्टि-कर्ता ; (निचू ८)। स्त्री. पट्ट-विशेष, राजा वगैरः के भोजन-समय में उपभोग में आने वाला पट्टा ; (निचू ६)।

उववूहिय वि [उपबृंहित] १ वृद्धि को प्राप्त पुष्ट, (सं १५)। २ प्रशंसित ; (उप पृ ३८६) ।

उववूहिर वि [उपबृंहिन्] १ पोषक, पुष्टि-कारक ; २ प्रशंसक ; (सण) ।

उववेय वि [उपेत] युक्त, सहित , (णाया १, १ ; औप वसु ; सुर १, ३४ ; विसे ६६६) ।

उवसंखा स्त्री [उपसंख्या] यथावस्थित पदार्थ-ज्ञान; (सूअ २, १६) ।

उवसंगह सक [उपसं+ग्रह्] उपकार करना । कर्म—उवसंगहिज्जइ , (स १६१) ।

उवसंघर सक [उपसं+हृ] उपसंहार करना । उवसंघरमि, (भवि) ।

उवसंघरिय देखो **उवसंहरिय** ; (भवि) ।

उवसंधिय वि [उपसंहृत] जिसका उपसंहार किया गया हो वह, समापित ; (विसे १०११) ।

उवसंचि सक [उपसं+चि] संचय करना । संकृ—**उवसंचिवि** ; (सण) ।

उवसंठिय वि [उपसंस्थित] १ समीप में स्थित; २ उपस्थित ; (सण) ।

उवसंत वि [उपशान्त] १ क्रोधादि-विकार-रहित; (सूअ १, ६; धर्म ३) । २ नष्ट, अवगत, "उवसंतरय कम्मेह" (राय) । ३ पुं. ऐरवत क्षेत्र के स्वनाम-धन्य एक तीर्थङ्कर-देव, (पव ७) । °**मोह** पु [°मोह] ग्यारहवाँ गुण-स्थानक ; (सम २६) ।

उवसंति स्त्री [उपशान्ति] उपशम , (आचा) ।

उवसंधारिय वि [उपसंधारित] संकल्पित; (निचू १)।

उवसंपज्ज [उपसं+पद्] १ समीप में जाना । २ स्वीकार करना । ३ प्राप्त करना । उवसंपज्जइ; (स १६१)। वकृ—**उवसंपज्जंत**, (वव १) । संकृ—**उवसंपज्जित्ता, उवसंपज्जित्ताणं** ; (कप्प ; उवा) । हेकृ—**उवसंपज्जिउं**, (बृह १) ।

उवसंपण्ण वि [उपसंपन्न] १ प्राप्त ; २ समीप-गत , (धर्म ३) ।

उवसंपया स्त्री [उपसंपद्] १ ज्ञान वगैर: की प्राप्ति के लिए दूसरे गुर्वादि के पास जाना, (धर्म ३)। २ अन्य गुरु आदि की सत्ता का स्वीकार करना ; (ठा ३, ३) । ३ लाभ, प्राप्ति; (उत्त २६) ।

उवसंहरिय वि [उपसंहृत] हटाया हुआ "वंतरेण य उवसंहरिया माया" (महा) ।

उवसंहार पु [उपसंहार] १ समाप्ति ; २ उपनय ; (श्रा ३६) ।

उवसग्ग पुं [उपसर्ग] १ उपद्रव, बाधा ; (ठा १०) । २ अव्यय-विशेष, जो धातु के पूर्व में जोड़े जाने से उस धातु के अर्थ की विशेषता करता है ; (पण्ह २, २) ।

उवसग्ग वि [दे] मन्द, आलसी, (दे १, ११३) ।

उवसज्जण न [उपसर्जन] १ अ-प्रधान, गौण ; (विसे २२६२) । २ सम्बन्ध ; (विसे ३००५) ।

उवसत्त वि [उपसक्त] विशेष आसक्ति वाला, (उत्त ३२)।

उवसद्द पु [उपशब्द] सुरत-समय का शब्द ; (तंदु) ।

उवसप्प सक [उप+सृप्] समीप जाना । संकृ—**उवसप्पिऊण**; (महा , स ५२६) ।

उवसप्पि वि [उपसर्पिन्] समीप में जाने वाला; (भवि)।

उवसप्पिय वि [उपसर्पित] पास गया हुआ; (पाअ) ।

उवसम पुं [उप+शम्] १ क्रोध-रहित होना । २ शान्त होना, ठंढा होना । ३ नष्ट होना । उवसमइ ; (कप्प, कस; महा) । कृ—**उवसमियव्व**; (कप्प) । प्रयो—उवसमेइ, (विसे १२८४), उवसमावेइ ; (पि ५५२) , कृ—**उवसमावियव्व**, (कप्प) ।

उवसम पु [उपशम] १ क्रोध का अभाव, क्षमा; (आचा)। २ इन्द्रिय-निग्रह ; (धर्म ३) । ३ पन्द्रहवाँ दिवस; (चंद १०) । ४ मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१) । °**सम्म** न [°सम्यक्त्व] सम्यक्त्व-विशेष ; (भग) ।

उवसमणा स्त्री [उपशमना] आत्मिक प्रयत्न विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल उदय-उदीरणादि के अयोग्य बनाये जाँय वह ; (पंच) ।

उवसमि वि [उपशमिन्] उपशम वाला ; (विसे ५३० टी) ।

उवसमिय वि [उपशमित] उपशम-प्राप्त ; (भवि) ।

उवसमिय वि [औपशमिक] १ उपशम से होने वाला, २ उपशम से संबन्ध रखने वाला ; (सुपा ६४८) ।

उवसाम सक [उप+शमय्] १ शान्त करना । २ रहित करना । उवसामेइ ; (भग)। वकृ—**उवसामेमाण**; (राज) कृ—**उवसामियव्व** ; (कप्प) । संकृ—**उवसामइत्तु** ; (पंच) ।

उवसाम देखो **उवसम** ; (विसे १३०६) ।

उवसामग वि [**उपशमक**] १ क्रोधादि को उपशान्त करने वाला ; (विसे ५२६; आव ४)। २ उपशम से संबन्ध रखने वाला ; " उवसामगसेढिगयस्स होइ उवसामगं तु सम्मतं " (विसे २७३५)।

उवसामण न [**उपशमन**] उपशान्ति, उपशम ; (स ४६६)।

उवसामणया स्त्री [**उपशमना**] उपशम ; (ठा ८)।

उवसामय देखो **उवसामग** ; (सम २६; विसे १३०२)।

उवसामिय वि [**औपशमिक**] १ उपशम-संबन्धी ; २ भाव-विशेष ; " मोहोवसमसहावो, सव्वो उवसामिओ भावो " (विसे ३४६४)। ३ सम्यक्त्व-विशेष ; (विसे ५२६)।

उवसामिय वि [**उपशमित**] शान्त किया हुआ ; (वव १)।

उवसाह सक [**उप+कथ्**] कहना। उवसाहइ; (सण)।

उवसाहण वि [**उपसाधन**] निष्पादक ; (सण)।

उवसाहिय वि [**उपसाधित**] तय्यार किया हुआ; (पउम ३४, ८ ; सण)।

उवसित्त वि [**उपसिक्त**] सिक्त, छिटका हुआ; (रभा)।

उवसिलोअ सक [**उपश्लोकय्**] वर्णन करना, प्रशंसा करना। कृ—**उवसिलोअइदव्व** (शौ) ; (मुद्रा १६८)।

उवसुत्त वि [**उपसुप्त**] सोया हुआ ; (से १५, ११)।

उवसुद्ध वि [**उपशुद्ध**] निर्दोष ; (सूअ १, ७)।

उवसूइय वि [**उपसूचित**] संसूचित ; (सण)।

उवसेर वि [**दे**] रति-योग्य ; (दे १, १०४)।

उवसेवय वि [**उपसेवक**] सेवा करने वाला, भक्त; (भवि)।

उवसोभ अक [**उप+शुभ्**] शोभना, विराजना। वकृ—**उवसोभमाण, उवसोभेमाण** ; (भग; णाया १, १)।

उवसोभिय वि [**उपशोभित**] सुशोभित, विराजित; (औप)।

उवसोहा स्त्री [**उपशोभा**] शोभा, विभूषा ; (सुर ३, १०४)।

उवसोहिय वि [**उपशोधित**] निर्मल किया हुआ, शुद्ध किया हुआ ; (णाया १, १)।

उवसोहिय देखो **उवसोभिय** ; (सुपा ५ ; भवि ; सार्ध ६६)।

उवस्सग्ग देखो **उवसग्ग** ; (कप्प)।

उवस्सय पुं [**उपाश्रय**] जैन साधुओं को निवास करने का स्थान ; (सम १८८ ; ओघ १७ भा ; उप ६४८ टी)।

उवस्सा स्त्री [**उपाश्रा**] द्वेष; (वव १)।

उवस्सिय वि [**उपाश्रित**] १ द्वेषी ; (वव १)। २ अङ्गीकृत ; ३ समीप में स्थित; ४ न द्वेष ; (राज)।

उवह स [**उभय**] दोनों, युगल; (कुमा; हे २, १३८)।

उवह अ [**दे**] 'देखो' अर्थ को बतलाने वाला अव्यय; (षड्)।

उवहट्ट सक [**समा+रभ्**] शुरू करना, आरम्भ करना। उवहट्टइ ; (षड्)।

उवहड वि [**उपहृत**] १ उपढौकित, उपस्थापित; (राज)। २ भोजन-स्थान में अर्पित भोजन ; (ठा ३, ३)।

उवहण सक [**उप+हन्**] १ विनाश करना। २ आघात पहुँचाना। उवहणइ ; (उव)। कर्म—उवहम्मइ ; (षड्)। वकृ—**उवहणंत** ; (राज)।

उवहणण न [**उपहनन**] १ आघात ; २ विनाश ; (ठा १०)।

उवहत्थ सक [**समा+रच्**] १ रचना, बनाना। २ उत्तेजित करना। उवहत्थइ ; (हे ४, ६५)।

उवहत्थिय वि [**समारचित**] १ बनाया हुआ; २ उत्तेजित, (कुमा)।

उवहम्म° देखो **उवहण**।

उवहय वि [**उपहत**] १ विनाशित ; (प्रासू १३५)। २ दूषित ; (बृह १)।

उवहर सक [**उप+हृ**] १ पूजा करना। २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। उवहरइ, (हे ४, २५६)। भूका—उवहरिसु; (ठा ६)।

उवहस सक [**उप+हस्**] उपहास करना, हाँसी करना। कृ—**उवहसणिज्ज**; (स ३)।

उवहसिअ वि [**उपहसित**] १ जिसका उपहास किया गया हो वह ; (पि १५५)। २ न. उपहास; (तंदु)।

उवहा स्त्री [**उपधा**] माया, कपट ; (धर्म ३)।

उवहाण न [**उपधान**] १ तकिया, उसीसा; (दे १, १४० ; सुर १२, २५; सुपा ४)। २ तपश्चर्या; (सूअ १, ३; २, २१)। ३ उपाधि; "सच्छंपि फलिहरयणं उवहाणवसा कलिज्जए कालं" (उप ७२८ टी)।

उवहार पुं [**उपहार**] १ भेंट, उपहार ; (प्रति ७४)। २ विस्तार, फैलाव ; "पहासमुदओवहारेहिं सव्वओ चेव दीवयंत" (कप्प)।

उवहारणया देखो **उवधारणया** ; (राज)।

उवहारिअ वि [**उपधारित**] अवधारित, निश्चित; (सूअ २)।

उवहारिआ } स्त्री [**दे**] दोहने वाली स्त्री; (गा ७३१; दे १,
उवहारी } १०८)।

उवहास पुं [**उपहास**] हाँसी, ठट्ठा ; (हे २, २०१)।

उवहास वि [उपहास्य] हँसी के योग्य, "सुसमत्थो वि हु जो, जणयअज्जियं संपयं निसेवेइ । सो अम्मि! ताव लोए, ममंव उवहासयं लहइ" (सुर १, २३२)।

उवहासणिज्ज वि [उपहसनीय] हास्यास्पद ; (पउम १०६, २०) ।

उवहि पुं [उदधि] समुद्र, सागर ; (से ५, ४०; ४२; भवि)।

उवहि पुस्त्री [उपधि] १ माया, कपट ; (आचा) । २ कर्म; (सूत्र १, २) । ३ उपकरण, साधन ; "तिविहा उवही पण्णत्ता" (ठा ३ ; ओघ २) ।

उवहिय वि [उपहित] १ उपढौकित, अर्पित ; २ निहित, स्थापित ; (आचा; विसे ६३७)। ३ न. उपढौकन, अर्पण ; (निचू २०) ।

उवहिय वि [औपधिक] माया से प्रच्छन्न विचरने वाला ; (णाया १, २) ।

उवहुंज सक [उप+भुज्] उपभोग करना, कार्य में लाना । उवहुंजइ ; (पि ५०७) । कवकृ—**उवहुज्जंत** ; (पि ५४६) ।

उवहुत्त देखो **उवभुत्त** ; (पाअ ; से १०, ४५) ।

उवाइण सक [उप+याच्] मनौती करना, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प करना । हेकृ—"जति णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि, ताणं अहं तुब्भं जायं च दायं च भागं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेस्सामि त्ति कट्टु ओवाइयं **उवाइणित्तए**" (विपा १, ७) ।

उवाइण सक [उपा+दा] १ ग्रहण करना । २ प्रवेश करना । हेकृ—**उवाइणित्तए**; (ठा ३); प्रयो—"तं सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताण जिणपरणत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं **उवाइणावित्तए** " (णाया १, १२) ।

उवाइणाव सक [अति+क्रम्] १ उल्लंघन करना । २ गुजारना, पसार करना । उवाइणावेइ; वकृ—**उवाइणावेंत**; हेकृ—**उवाइणावेत्तए** ; (कस) ; **उवाइणावित्तए** ; (कप्प) । "से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा वहिया से णं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा तद्दिवसं भिक्खायरियाए गंतूण पडिनियत्तए, नो से कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेत्तए। जे खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेइ, उवाइणावेंतं वा साइज्जइ, से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं" (कस) । "नो से कप्पइ तं रयणिं उवाइणावित्तए" (कप्प) ।

उवाइणाविय वि [अतिक्रान्त] १ उल्लङ्घित । २ गुजारा हुआ, पसार किया हुआ, विताया हुआ; "नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा असणं वा ४ पढमाए पोरुसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरुसिं उवाइणावेत्तए । से य आहच्च उवाइणाविए सिया, तं नो अप्पणा भुंजेज्जा" (कस) ।

उवाइय देखो **उवयाइय** ; (णाया १, २ ; सुपा १० ; महा) ।

उवाई स्त्री [उलावकी] पोताकी-नामक विद्या की प्रतिपक्ष-भूत एक विद्या ; (विसे २४५४) ।

उवाएज्ज } **उवाएय** } वि [उपादेय] ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य , (विसे ; स १४८) ।

उवागच्छ } **उवागम** } सक [उपा+गम्] समीप में आना । उवागच्छइ ; (भग; कप्प)। भवि—उवागमिस्संति; (आचा २, ३, १, २) संकृ—**उवागच्छित्ता** ; (भग; कप्प)। हेकृ—**उवागच्छित्तए** ; (कप्प) ।

उवागम पु [उपागम] समीप में आगमन ; (राज) ।

उवागमण न [उपागमन] १ समीप में आगमन । २ स्थान, स्थिति ; (आचानि ३११) ।

उवागय वि [उपागत] १ समीप में आया हुआ ; (आचा २, ३, १, २) । २ प्राप्त; "एगदिवसंपि जीवो पव्वज्जमुवागओ अणन्नमणो" (उव) ।

उवाडिय वि [उत्पाटित] उखेड़ा हुआ ; (विपा १, ६)।

उवाणया } **उवाणहा** } स्त्री [उपानह्] जूता; (षड्)। "पुव्वमुत्तारिआओ उवाणहाओ पएसु ठवियाओ" (सुपा ६१०, सूत्र १, ४, २, ६) ।

उवादा सक [उपा+दा] ग्रहण करना । कर्म—उवादीयंति; (भग)। संकृ—**उवादाय, उवादिएत्ता** ; (भग) । कवकृ—**उवादीयमाण** ; (आचा २) ।

उवादाण न [उपादान] १ ग्रहण, स्वीकार । २ कार्यरूप में परिणत होने वाला कारण ; ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य; "नाओवादाणे च्चिय मुच्छा लोभोति तो रागो" (विसे २६७०) ।

उवादिय वि [उपजग्ध] उपभुक्त; (राज) ।

उवाय पुं [उपाय] १ हेतु, साधन ; (उत्त ३२) । २ दृष्टान्त, "उआओ सो साधम्मेण य विधम्मेण य" (आचू १)। ३ प्रतीकार ; (ठा ४,३) ।

उवाय सक [उप+याच्] मनौती करना । वकृ—**उवायमाण**; (गाया १, २, १७) ।

उवायण न [**उपायन**] भेंट, उपहार, नज़राना ; (उप २४५; सुपा २२४ , ४१० ; गउड) ।

उवायणाव देखो **उवाइणाव** । उवायणावेइ ; वकृ—**उवायणावेंत**; हेकृ—**उवायणावेत्तए** ; (कस) ; **उवायणावित्तए** ; (कप्प) ।

उवायाण देखो **उवादाण**, (अच्चु १२; स २; विसे २६७६) ।

उवायाय वि [**उपायात**] समीप में आया हुआ , (निर १,१) ।

उवारूढ वि [**उपारूढ**] आरूढ ; (स ३३१) ।

उवालंभ सक [**उपा+लभ्**] उलहना देना । उवालंभइ ; (कप्प) । वकृ—**उवालंभंत**; (पउम १६, ४१) संकृ—**उवालंभित्ता**; (बृह ४)। कृ—**उवालंभणिज्ज**, (माल १५५) ।

उवालंभ पुं [**उपालम्भ**] उलहना ; (गाया १, १ ; मा ४) ।

उवालद्ध वि [**उपालब्ध**] जिसको उलहना दिया गया हो वह "उवालद्धो य सो सिवो वभणो" (निचू १, माल १६७)।

उवालह सक [**उपा+लभ्**] उलहना देना । भवि—उवालहिस्सं , (प्राप) ।

उवास सक [**उप+आस्**] उपासना करना, सेवा करना । सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुपण्णं सुतवस्सियं" (सूअ १, ६) । वकृ—**उवासमाण** ; (ठा ६) ।

उवास पुं [**अवकाश**] खाली जगह, आकाश, (ठा २, ४; ८ ; भग) ।

उवासग वि [**उपासक**] १ उपासना करने वाला, सेवक ; २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ; (उत्त २)। °**दसा** स्त्री [°**दशा**] सातवाँ जैन अग-ग्रन्थ ; (सम १) । °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**]श्रावकों को करने योग्य नियम-विशेष; (उत्त २)।

उवासण न [**उपासन**] उपासना, सेवा ; (स ५४३; मै ८६) ।

उवासणा स्त्री [**उपासना**] १ चौर-कर्म, हजामत वगैरहः सफाई ; २ सेवा, शुश्रूषा "उवासणा मसुकम्ममाइया, गुरुराईणं वा उवासणा पज्जुवासणया" (आवम) ।

उवासय देखो **उवासग** ; (सम ११६) ।

उवासय पुं [**उपाश्रय**] जैन मुनिओं का निवास-स्थान ; (उप १४२ टी) ।

उवासिय वि [**उपासित**] सेवित, (पउम ६८, ४२) ।

उवाहण सक [**उपा+हन्**] विनाश करना, मारना । वकृ—**उवाहणंत** ; (पण्ह १, २) ।

उवाहणा देखो **उवाणहा** ; (अनु; गाया १,१५) ।

उवाहि पुस्त्री [**उपाधि**] १ कर्म-जनित विशेषण ;(आचा) । २ सामीप्य, संनिधि ; (भग १, १)। ३ अस्वाभाविक धर्म ; "सुद्धोवि फलिहमणी उपाहिवसओ धरेइ अन्नत्त" (धम्म ११ टी) ।

उवि सक [**उप+इ**] १ समीप आना । २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना । उविंति ; (भग)। वकृ—**उविंत** ; (पि ४६३; प्रामा) ।

उविअ देखो **अविअ** = अपिच ; (स २०६) ।

उविअ वि [**उपेत**] युक्त, सहित ; (भवि) ।

उविअ न [**दे**] शीघ्र, जल्दी ; (दे १, ८६) । २ वि. परिकर्मित, संस्कारित , " णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्धवीरवलए " (गाया १, १) ।

उविंद पुं [**उपेन्द्र**] कृष्ण; (कुमा) । °**वज्जा** स्त्री [°**वज्रा**] ग्यारह अक्षरों के पाद वाला एक छन्द ; (पिंग) ।

उविक्ख सक [**उप+ईक्ष्**] उपेक्षा करना, अनादर करना । वकृ—**उविक्खमाण** ; (द्र १६) ।

उविक्खा स्त्री [**उपेक्षा**] उपेक्षा, अनादर ; (काल) ।

उविक्खिय वि [**उपेक्षित**] तिरस्कृत, अनादृत ; (सुपा ३६५) ।

उविक्खेव पु [**उद्क्षेप**] हजामत, मुण्डन , (तंदु) ।

उवियग्ग वि [**उद्विग्न**] खिन्न, उद्वेग-प्राप्त , (राज) ।

उवीव अक [**उद्+विच्**] उद्वेग करना, खिन्न होना । उवीवइ ; (नाट) ।

उवुज्झमाण देखो **उव्वह** ।

उवे देखो **उवि** । उवेइ, उवेंति ; (औप) । वकृ—**उवेंत** ; (महा) । सकृ—**उवेच्च** ; (सूअ १, १४)।

उवेक्ख देखो **उविक्ख** । उवेक्खह ; (सुपा ३५४) । कृ—**उवेक्खियव्व** ; (स ६०) ।

उवेक्खिअ देखो **उविक्खिय** ; (गा ४२०) ।

उवेच्च देखो **उवे** ।

उवेय वि [**उपेत**] १ समीप-गत ; २ युक्त, सहित ; (संथा ६) ।

उवेय वि [**उपेय**] उपाय-साध्य ; (राज) ।

उवेल्ल अक [प्र+सृ] फैलना, प्रसारित होना। उवेल्लइ; (हे ४, ७७)।

उवेह सक [उप+ईक्ष्] उपेक्षा करना, तिरस्कार करना, उदासीन रहना। उवेहइ; (धम्म १६)। वकृ—**उवेहंत, उवेहमाण**; (स ४६; ठा ६)। कृ—**उवेहियव्व**, (सण)।

उवेह सक [उत्प्र+ईक्ष्] १ जानना, समझना। २ निश्चय करना। ३ कल्पना करना। उवेहाहि, वकृ—**उवेहमाण**; "उवेहमाणे अणुवेहमाणं बूया, उवेहाहि समियाए" (आचा)। संकृ—**उवेहाए**, (आचा)।

उवेहा स्त्री [उपेक्षा] तिरस्कार, अनादर, उदासीनता, (सम ३२)। °**कर** वि [°कर] उपेक्षक, उदासीन; (श्रा २८)।

उवेहा स्त्री [उत्प्रेक्षा] १ ज्ञान, समझ। २ कल्पना। ३ अवधारण, निश्चय, (औप)।

उवेहिय वि [उपेक्षित] अनादृत, तिरस्कृत; (उप १२६, सुपा १३५)।

°**उव्व** देखो **पुव्व**; (गा ४१४)।

उव्वंत वि [उद्वान्त] १ वमन किया हुआ; २ निष्क्रान्त, निर्गत; (अभि २०६)।

उव्वक्क सक [उद्+वम्] १ बाहर निकालना। २ वमन करना। हेकृ—**उव्वक्किउं**, (सुपा १३६)।

उव्वक्क } वि [उद्वान्त] १ बाहर निकाला हुआ, **उव्वक्किय** } (वव १)। २ वमन किया हुआ;
"संतोसामयपाणं, काउं उव्वक्कियं हयासेण।
जं गहिऊण विरई, कलंकिया मोहमूढेण" (सुपा ४३५)।

उव्वग्ग देखो **ओवग्ग**। संकृ—**उव्वग्गिवि**, (भवि)।

उव्वट्ट उभ [उद्+वृत्, वर्त्तय्] १ चलना-फिरना। २ मरना, एक गति से दूसरी गति में जन्म लेना। ३ पिष्टिका आदि से शरीर के मल को दूर करना। ४ कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति को हटा कर लम्बी स्थिति करना। ५ पार्श्व को चलाना-फिराना। ६ उत्पन्न होना, उदित होना। उव्वट्टइ, (भग)। वकृ—**उव्वट्टंत, उव्वट्टमाण; उअत्तंत**; (भग, नाट, उत्तर १०७; बृह १)। संकृ—**उव्वट्टित्ता, उहट्टु, उव्वट्टिय**; (जीव १, विपा १, १; आचा २, ७; स २०६)।
—**उव्वट्टित्तए**; (कस)।

उव्वट्ट देखो **उव्वट्टिय**=उद्वृत्त; (भग)।

उव्वट्ट वि [दे] १ नीराग, राग-रहित, २ गलित; (दे १, १२६)।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] १ शरीर पर से मल वगैरः को दूर करना, २ शरीर को निर्मल करने वाला द्रव्य—सुगन्धि वस्तु; (उवा. गाथा १, १३)। ३ दूसरे जन्म में जाना, मरण; ४ पार्श्व का परिवर्तन, (आव ४)। ५ कर्म-परमाणुओं की ह्रस्व स्थिति को दीर्घ करना; (पंच)।

उव्वट्टण न [अपवर्त्तन] देखो **उव्वट्टणा**=अपवर्तना, (विसे २५१४)।

उव्वट्टणा स्त्री [उद्वर्त्तना] १ मरण, शरीर से जीव का निकलना, (ठा २, ३)। २ पार्श्व का परिवर्तन; (आव ४)। ३ जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति दीर्घ होती है, करण-विशेष, (भग ३१, ३२)।

उव्वट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्मों की दीर्घ स्थिति का ह्रास होता है; (विसे २५१५ टी)।

उव्वट्टिय वि [उद्वृत्त] किसी गति से बाहर निकला हुआ, मृत; "आउक्खएण उव्वट्टिया समाणा" (पण्ह १, १)।

उव्वट्टिय वि [उद्वर्त्तित] १ जिसने किसी भी द्रव्य से शरीर पर का तैल वगैरः का मैल दूर किया हो वह, 'तओ तत्थट्ठिओ चेव अब्भंगिओ उव्वट्टिओ उण्हखलउदगेहिं पमज्जिओ" (महा)। २ प्रच्यावित, किसी पद से भ्रष्ट किया हुआ; (पिंड)।

उव्वड्ढ वि [उद्वृद्ध] वृद्धि-प्राप्त, (आवम)।

उव्वण वि [उल्वण] प्रचण्ड, उद्भट; (उप पृ ७०; गउड, धम्म ११ टी)।

उव्वत्त देखो **उव्वट्ट**=उद्+वृत्। उव्वत्तइ, (पि २८६)। वकृ—**उव्वत्तंत, उव्वत्तमाण**; (से ५, ४२; स २५८; ६२७)। कवकृ—**उव्वत्तिज्जमाण**; (णाया १, ३) संकृ—**उव्वत्तिवि**, (भवि)।

उव्वत्त देखो **उव्वट्ट** (दे)।

उव्वत्त वि [उद्वृत्त] १ उत्तान, चित्त; (से ५, ६२)। २ उल्लसित, (हे ४, ४३४)। ३ जिसने पार्श्व को घुमाया हो वह; (आव ३)। ४ ऊर्ध्व-स्थित, "सो उव्वत्तविसाणो खयवसभो जाओ" (महा)। ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (प्राप)।

उव्वत्त वि [अपवृत्त] उलटा रहा हुआ, विपरीत स्थित; (से १, ६१)।

उव्वत्तण न [उद्वर्त्तन] १ पार्श्व का परिवर्तन; (गा २८३, निचू ४)। २ ऊँचा रहना, ऊर्ध्व-वर्तन; (ओघ १६ भा)।

उव्वत्तिय वि [**उद्वर्त्तित**] १ परिवर्तित, चक्राकार घुमा हुआ; (स ८५); "भमियं व वणतरूहिं उव्वत्तियं व सयलवसुहाए" (सुर १२, १६६) ।
उव्वद्ध देखो **उव्वड्ढ** ; (महा) ।
उव्वम सक [**उद् + वम्**] उलटी करना, पीछा निकाल देना । वकृ—**उव्वमंत** ; (से ५, ६ ; गा ३४१) ।
उव्वमिअ वि [**उद्वान्त**] उलटी किया हुआ, वमन किया हुआ ; (पाअ) ।
उव्वर अक [**उद्+वृ**] शेष रहना, बच जाना ; "तुम्हाण देंताण जमुव्वरेइ देज्जाह साहूण तमायरेण" (उप २११ टी)। वकृ—**उव्वरंत** ; (नाट) ।
उव्वर पुं [**दे**] घर्म, ताप ; (दे १, ८७) ।
उव्वरिअ वि [**दे**] १ अधिक, बचा हुआ, अवशिष्ट ; (दे १, १३२; पिंग, गा ४७४; सुपा ११, ५३२; ओघ १६८ भा) । २ अनीप्सित, अनभीष्ट ; ३ निश्चित ; ४ अगणित; ५ न. ताप, गरमी; (दे १, १३२)। ६ वि. अतिक्रान्त, उल्लङ्घित ; "परदव्वहरणविरया निरयाइदुहाण ते खलुव्वरिया" (सुपा ३६८) ।
उव्वरिअ न [**अपवरिका**] कोठरी, छोटा घर; (सुर १४, १७४) ।
उव्वल सक [**उद् + वल्**] १ उपलेपन करना । २ पीछे लौटना । हेकृ—**उव्वलित्तए** ; (कस) ।
उव्वलण न [**उद्वलन**] १ शरीर का उपलेपन-विशेष ; (णाया १, १; १३) । २ मालिश, अभ्यङ्गन ; (बृह ३, औप) ।
उव्वलिय वि [**उद्वलित**] पीछे लौटा हुआ ; (महा) ।
उव्वस वि [**उद्वस**] उजाड़, वसति-रहित ; (सुपा १८८; ४०६) ।
उव्वसिय वि [**उद्वसित**] ऊपर देखो ; (गा १६४ ; सुर २, ११६ ; सुपा ५४१) ।
उव्वसी स्त्री [**उर्वशी**] १ एक अप्सरा ; (सण) । २ रावण की एक स्वनाम-ख्यात पत्नी ; (पउम ७४, ८) ।
उव्वह सक [**उद् + वह्**] १ धारण करना । २ उठाना । उव्वहइ ; (महा) । वकृ—**उव्वहंत, उव्वहमाण** ; (पि ३६७; से ६, ५)। कवकृ—**उव्वुज्झमाण**; (णाया १,६)।
उव्वहण न [**उद्वहन**] १ धारण ; २ उत्थापन ; (गउड; नाट) ।
उव्वहण न [**दे**] महान् आवेश ; (दे १, ११०) ।

उव्वा स्त्री [**दे**] घर्म, ताप ; (दे १, ८७) ।
उव्वा } अक [**उद्+वा**] १ सूखना, शुष्क होना।
उव्वाअ } उव्वाइ, उव्वाअइ ; (षड् ; हे ४, २४०)।
उव्वाअ वि [**उद्वात**] शुष्क, सूखा ; (गउड) ।
उव्वाअ } वि [**दे**] खिन्न, परिश्रान्त ; (दे १, १०२ ;
उव्वाइअ } बृह १; वव ४; पाअ; गा ७५८; सुपा ४३६)।
उव्वाउल न [**दे**] १ गीत ; २ उपवन, बगीचा ; (दे १, १३४) ।
उव्वाडुल न [**दे**] १ विपरीत सुरत; २ मर्यादा-रहित मैथुन; (दे १, १३३) ।
उव्वाढ वि [**दे**] १ विस्तीर्ण, विशाल ; २ दुःख रहित ; (दे १, १२६) ।
उव्वार (अप) सक [**उद् + वर्तय्**] त्याग करना, छोड देना । कर्म—उव्वारिज्जइ ; (हे ४, ४३८) ।
उव्वाल सक [**कथ्**] कहना, बोलना । उव्वालइ; (षड्)।
उव्वास सक [**उद् + वासय्**] १ दूर करना । २ देश-निकाल करना । ३ उजाड़ करना । उव्वासइ; (नाट; पिंग)।
उव्वासिय वि [**उद्वासित**] १ उजाड़ किया हुआ; (पउम २७, ११) । २ देश-बाहर किया हुआ ; (सुपा ५४२)। ३ दूर किया हुआ ; (गा १०६) ।
उव्वाह पुं [**दे**] घर्म, ताप ; (दे १, ८७) ।
उव्वाह पुं [**उद्वाह**] वीवाह ; (मै २१) ।
उव्वाह सक [**उद् + बाधय्**] विशेष प्रकार से पीडित करना । कवकृ—**उव्वाहिज्जमाण** ; (आचा; णाया १, २) ।
उव्वाहिअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (दे १, १०६) ।
उव्वाहुल न [**दे**] १ उत्सुकता, उत्कण्ठा ; (भवि ; दे १, १३६) । २ वि. द्वेष्य, अप्रीतिकर ; (दे १, १३६) ।
उव्वाहुलिय वि [**दे**] उत्सुक, उत्कण्ठित ; (भवि) ।
उव्विआइअ वि [**उद्वेदित**] उत्पीडित ; (से १३, २६) ।
उव्विक्क न [**दे**] प्रलपित, प्रलाप ; (षड्) ।
उव्विग्ग वि [**उद्विग्न**] १ खिन्न; २ भीत, घबड़ाया हुआ; (हे २, ७६) ।
उव्विग्गिर वि [**उद्वेगशील**] उद्वेग करने वाला ; (वाका ३८) ।
उव्विड वि [**दे**] १ चकित, भीत ; २ क्लान्त, क्लेश-युक्त; (षड्) ।

उव्विडिम वि [दे] १ अधिक प्रमाण वाला ; २ मर्यादा-रहित, निर्लज्ज ; (दे १, १३४) ।

उव्विण्ण देखो **उव्विग्ग** ; (पि २१६) ।

उव्विद्ध वि [**उद्विद्ध**] १ ऊँचा गया हुआ, उच्छ्रित ; (पण्ह १, ४) । २ गभीर, गहरा ; (सम ४४; गाया १, १) । ३ विद्ध; " कोलयसएहिं धरणियले उव्विद्धो " (संथा ८७) ।

उव्विन्न देखो **उव्विग्ग** ; (हे २, ७६ ; सुर ४, २४८) ।

उव्विय अक [**उद्+विज्**] उद्वेग करना, उदासीन होना, खिन्न होना । " को उव्विएज्ज नरवर ! मरणस्स अवस्स गंतव्वे " (स १२६) । वकृ—**उव्वियमाण**; (स १३६) ।

उव्वियणिज्ज वि [**उद्वेजनीय**] उद्वेग-प्रद , (पउम १६, ३६ ; सुपा ५६७) ।

उव्विरेयण न [**उद्विरेचन**] खाली करना । " एवं च भरिउव्विरेयणं कुव्वंतस्स " (काल) ।

उव्विल्ल अक [**उद्+वेल्**] १ चलना, काँपना । २ वेष्टन करना । वकृ—**उव्विल्लंत, उव्विल्लमाण**, (सुपा ८८; उप पृ ७७) ।

उव्विल्ल अक [**प्र+सृ**] फैलना, पसरना । उव्विल्लइ; (भवि) ।

उव्विल्ल वि [**उद्वेल**] चञ्चल, चपल ; (सुपा ३४) ।

उव्विल्लिर वि [**उद्वेलितृ**] चलने वाला, हिलने वाला ; (सुपा ८८) ।

उव्विव अक [**उद्+विज्**] उद्वेग करना, खिन्न होना; उव्विवइ ; (षड्) ।

उव्विव्व वि [दे] १ क्रुद्ध , क्रोध युक्त ; (षड्) । २ उद्भट वेष वाला ; (पात्र) ।

उव्विह सक [**उत्+व्यध्**] १ ऊँचा फेंकना । २ ऊँचा जाना, उडना । 'से जहाणामए केइ पुरिसे उसुं उव्विहइ" (पि १२६) । वकृ—" मणसावि उव्विहंताइं अणेगाइं आससयाइं पासंति" (गाया १, १७ टी—पत्र २३१) । वकृ—**उव्विहमाण** ; (भग १६) । संकृ—**उव्विहित्ता**; (पि १२६) ।

उव्विह पुं [**उद्विह**] स्वनाम-ख्यात एक आजीविक मत का उपासक ; (भग ८, ५) ।

उव्वी स्त्री [**ऊर्वी**] पृथिवी ; (से २, ३०) । °**स** पुं [°**श**] राजा ; (कुमा) ।

उव्वीढ देखो **उव्वूढ** ; (कुमा ; हे १, १२०) ।

उव्वीढ वि [दे] उत्खात, खोदा हुआ ; (दे १, १००) ।

उव्वीढ वि [**उद्विद्ध**] उत्क्षिप्त ; " तस्स उसुस्स उव्वीढस्स समाणस्स " (पि १२६) ।

उव्वील सक [**अव+पीडय्**] पीडा पहुँचाना, मार-पीट करना । वकृ—**उव्वीलेमाण** ; (राज) ।

उव्वीलय वि [**अपव्रीडक**] लज्जा-रहित करने वाला, शिष्य को प्रायश्चित लेने में शरम को दूर करने का उपदेश देने वाला (गुरु) ; (भग २५, ७ ; द्र ४६) ।

उव्वुण्ण } वि [दे] १ उद्विग्न ; २ उत्सिक्त ; ३ शून्य ;
उव्वुन्न } (दे १, १२३) । ४ उद्भट, उल्वण ; (दे १, १२३ ; सुर ३, २०५) ।

उव्वूढ वि [**उद्व्यूढ**] १ धारण किया हुआ, पहना हुआ , (कुमा) । २ ऊँचा लिया हुआ, ऊपर धारण किया हुआ, (से ५, ५४ , ६, ११) । ३ परिणीत, कृत-विवाह ; (सुपा ४५६) ।

उव्वेअणीअ वि [**उद्वेजनीय**] उद्वेग-कारक ; (नाट) ।

उव्वेग पुं [**उद्वेग**] १ शोक, दिलगीरी ; (ठा ३, ३) । २ व्याकुलता ; (भग ३, ६) ।

उव्वेढ सक [**उद्+वेष्ट्**] १ बाँधना । २ पृथक् करना, बन्धन-मुक्त करना । उव्वेढइ ; (षड्) । उव्वेढिज्ज ; (आचा २, ३, २, २) ।

उव्वेढण न [**उद्वेष्टन**] १ बन्धन । २ वि. बन्धन-रहित किया हुआ ; (राज) ।

उव्वेढिअ वि [**उद्वेष्टित**] १ बन्धन-रहित किया हुआ ; २ परिवेष्टित ; (दे ४, ४६) ।

उव्वेत्ताल न [दे] अविच्छिन्न चिल्लाना, निरन्तर रोदन ; (दे १, १०१) ।

उव्वेय देखो **उव्वेग** ; (कुमा; महा) ।

उव्वेयग वि [**उद्वेजक**] उद्वेग-कारक ; (रयण ४०) ।

उव्वेयणग } वि [**उद्वेजनक**] उद्वेग-जनक ; (आउ;
उव्वेयणय } पण्ह १, १) ।

उव्वेल अक [**प्र+सृ**] फैलना । उव्वेलइ ; (षड्) ।

उव्वेल वि [**उद्वेल**] उच्छलित ; (से २, ३०) ।

उव्वेलिअ वि [**उद्वेलित**] फैला हुआ, प्रसृत ; (माल १४२) ।

उव्वेल्ल देखो **उव्वेढ** । उव्वेल्लइ ; (हे ४, २२३) । कर्म— उव्वेल्लिज्जइ ; (कुमा) ।

उव्वेल्ल सक [उद् + वेल्ल्] १ सत्वर जाना । २ त्याग करना। ३ ऊँचा उडना, ऊँचा जाना । ४ अक. फैलना, पसरना । वकृ—**उव्वेल्लंत** ; (पि १०७)।

उव्वेल्ल वि [उद्वेल] १ उच्छलित, उछला हुआ "उव्वेल्ला सलिलनिही " (पउम ६, ७२)। २ प्रसृत, फैला हुआ; (पाअ)। ३ उद्भिन्न ; "हरिसवसुव्वेल्लपुलयाए " (स ६२५)।

उव्वेल्लिअ वि [उद्वेल्लित] १ कम्पित ; (गा ६०५)। २ उत्सारित ; (बृह ३)। ३ प्रसारित ; (स ३३५)।

उव्वेल्लिर वि [उद्वेल्लितृ] सत्वर जाने वाला, (कुमा)।

उव्वेव देखो **उव्विव** । उव्वेवइ ; (षड्)।

उव्वेव देखो **उव्वेग** ; (कुमा; सुर ४, ३६ ; ११, १६४)।

उव्वेवग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक,

" थद्धा छिद्दप्पेहो, अवन्नवाई सयम्मई चवला ।
वंका कोहणसीला, सीसा उव्वेवगा गुरुणा " (उव)।

उव्वेवणय वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक; (पच्च ४५)।

उव्वेवय देखो **उव्वेवग** ; (स २६२)।

उव्वेसर पुं [उव्वेश्वर] इस नामका एक राजा ; (कुमा)।

उव्वेह पुं [उद्वेध] १ ऊँचाई; (सम १०४)। २ गहराई; (ठा १०)। ३ जमीन का अवगाह ; (ठा १०)।

उव्वेहलिया स्त्री [उद्वेधलिका] वनस्पति-विशेष, (पण्ण १)।

उसड्ढ वि [दे] ऊँचा ; (राय)।

उसण पुं [उशनस्] ग्रह-विशेष, शुक्र, भार्गव ; (पाअ)।

उसणसेण पुं [दे] बलभद्र ; (दे १, ११८)।

उसत्त वि [उत्सक्त] ऊपर बँधा हुआ , (णाया १, १)।

उसन्न पुं [उत्सन्न] भ्रष्ट यति-विशेष की एक जाति ; (सं ६१)।

उसप्पिणी देखो **उस्सप्पिणी** ; (जी ४०, विसे २७०६)।

उसभ पुं [ऋषभ, वृषभ] १ स्वनाम-ख्यात प्रथम जिन-देव ; (सम ४३ ; कप्प) २ बैल, साँढ; (जीव ३)। ३ वेष्टन-पट्ट; (पव २१६)। ४ देव-विशेष , (ठा ८)। ५ ब्राह्मण-विशेष ; (उत्त १)। °**कंठ** पुं [°कण्ठ] १ बैल का गला ; २ रत्न-विशेष ; (जीव ३)। °**कूड** पुं [°कूट] पर्वत-विशेष; (ठा ८)। °**णाराय** न [°नाराच] संहनन-विशेष, शरीर-बन्ध-विशेष ; (पंच)। °**दत्त** पुं [°दत्त] ब्राह्मणकुण्ड ग्राम का रहने वाला एक ब्राह्मण, जिसके घर भगवान् महावीर अवतरे थे ; (कप्प)। °**पुर** न [°पुर] नगर विशेष , (विपा २, २)। °**पुरी** स्त्री [°पुरी] एक राजधानी , (ठा ८)। °**सेण** पु [°सेन] भगवान् ऋषभ-देव के प्रथम गणधर ; (आचू १)।

उसर (पे) पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट ; (पि २५६)।

उसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित ; (षड्)।

उसह देखो **उसभ** , (हे १, १३१, १३३; १४१; षड् ; कुमा ; सम १५२ ; पउम ४, ३५)।

उसा अ [उषस्] प्रभात-काल ; (गउड)।

उसिण वि [उष्ण] गरम, तप्त ; (कप्प ठा ३,१)। २ पुन. गरम स्पर्श ; (उत्त १)। ३ गरमी, ताप, (उत्त २)।

उसिय वि [उत्सृत] व्याप्त, फैला हुआ , (सम १३७)।

उसिय वि [उषित] रहा हुआ, निवसित ; (से ८, ६३ ; भत्त १२८)।

उसीर न [उशीर] सुगन्धि तृण-विशेष, खश ; (पण्ह २, ५)।

उसीर न [दे] कमल-दण्ड, बिस ; (दे १, ६४)।

उसु पुं (इषु) १ बाण, शर ; (सूअ १, ५, १)। २ धनुराकार क्षेत्र का बाण-स्थानीय क्षेत्र-परिमाण ;

"धणुवग्गाओ नियमा, जीवावग्गं विसोहइत्ताणं।
सेसस्स छब्भागे, जं मूलं तं उसू होइ" (जो १)।

°**कार**, °**गार**, °**यार** पु [°कार] १ पर्वत-विशेष ; (सम ६६ ; ठा २, ३ ; राज)। २ इस नाम का एक राजा ; ३ स्वनाम-ख्यात एक पुरोहित; (उत्त १४)। ४ वि. बाण बनाने वाला ; (राज)। ५ स्वनाम-ख्यात एक नगर ; (उत्त १४)।

उसुअ पु [दे] दोष, दूषण ; (दे १, ८६)।

उसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित ; (सुपा २२४)।

उसुयाल न [दे] उदूखल ; (राज)।

उसूलग पु [दे] परिखा, शत्रु-सैन्य का नाश करने के लिए ऊपर से आच्छादित गर्त्त विशेष ; (उत्त ६)।

उस्स पुं [दे] हिम, ओस ; "अप्पहरिएसु अप्पुस्सेसु" (बृह ४)।

उस्संकलिअ वि [उत्संकलित] निसृष्ट, परित्यक्त ; (आचा २)।

उस्संखलअ वि [उच्छृङ्खलक] उच्छृङ्खल, निरङ्कुश ; (पि २१३)।

उस्संग पुं [उत्सङ्ग] क्रोड, कोला ; (नाट)।

उस्संघट्ट वि [उत्संघट्ट] शरीर-स्पर्श से रहित, (उप ५५५)।

उस्सक्क अक [उत्+ष्वष्क्] १ उत्कण्ठित होना। २ पीछे हटना। ३ सक. स्थगित करना। संकृ—**उस्सक्कइत्ता**; प्रयो—**उस्सक्कावइत्ता**; (ठा ६)।

उस्सक्कण न [उत्ष्वष्कण] किसी कार्य को कुछ समय के लिये स्थगित करना (धर्म ३)।

उस्सग्ग पुं [उत्सर्ग] १ त्याग; (आव ५)। २ सामान्य विधि; (उप ७८१)।

उस्सण्ण वि [अवसन्न] निमग्न; "अबंभे उस्सण्णा" (पण्ह १, ४)।

उस्सण्ण अ [दे] प्रायः, प्रायेण; (राज)।

उस्सण्हसण्हिआ स्त्री [उत्श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका] परिमाण-विशेष, ऊर्ध्व-रेणु का ६४ वाँ हिस्सा; (इक)।

उस्सन्न वि [उत्सन्न] निज धर्म में आलसी साधु; (गुभा १२)।

उस्सप्पण न [उत्सर्पण] १ उन्नति, पोषण; २ त्रि. उन्नत करने वाला, बढ़ाने वाला; "कंदप्पदप्पउस्सप्पणाइं वयणाइं जंपए जा सो" (सुपा ५०६)।

उस्सप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] उन्नति, प्रभावना; (उप ३२६)।

उस्सप्पिणी स्त्री [उत्सर्पिणी] उन्नत काल विशेष, दश कोटाकोटि-सागरोपम-परिमित काल-विशेष, जिसमें सर्व पदार्थों की क्रमशः उन्नति होती है; (सम ७२; ठा १, १, पउम २०, ६८)।

उस्सय पुं [उच्छ्रय] १ उन्नति, उच्चता; (विसे ३४१)। २ अहिंसा; (पण्ह २, १)। ३ शरीर; (राज)।

उस्सयण न [उच्छ्रयण] अभिमान, गर्व; (सूअ १, ६)।

उस्सर अक [उत्+सृ] हटना, दूर जाना। उस्सरह; (स्वप्न ६)।

उस्सव सक [उत्+श्रि] १ ऊँचा करना। २ खड़ा करना। उस्सवेह; संकृ—**उस्सवित्ता**; (कप्प)। प्रयो, संकृ—**उस्सविय**; (आचा २, १)।

उस्सव पुं [उत्सव] उत्सव; (अभि १६४)।

उस्सवणया स्त्री [उच्छ्रयणता] ऊँचा ढ़ेर करना, इकट्ठा करना; (भग)।

उस्सस अक [उत्+श्वस्] १ उच्छ्वास लेना, श्वास लेना। २ उल्लसित होना। उस्ससइ; (भग)। कवकृ—**उस्ससिज्जमाण**; (ठा १०)।

उस्ससिय वि [उच्छ्वसित] १ उच्छ्वास-प्राप्त; २ उल्लसित; (उत्त २०)।

उस्सा स्त्री [उस्रा] गैया, गौ; (दे १, ८६)।

उस्सा [दे] देखो **ओसा**; (ठा ४, ४)। °**चारण** पुं [°चारण] ओस के अवलम्बन से गति करने की सामर्थ्य वाला मुनि; (पव ६८)।

उस्सार सक [उत्+सारय्] १ दूर करना, हटाना। २ बहुत दिन में पाठनीय ग्रन्थ को एक ही दिन में पढ़ाना। वकृ—**उस्सारिंत**; (बृह १)। संकृ—**उस्सारित्ता**; (महा)। कृ—**उस्सारइदव्व** (शौ); (स्वप्न २०)।

उस्सार पुं [उत्सार] अनेक दिन में पढाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में अध्यापन। °**कप्प** पुं [°कल्प] पाठन-संबन्धी आचार-विशेष; (बृह १)।

उस्सारग वि [उत्सारक] दूर करने वाला; २ उत्सार-कल्प के योग्य; (बृह १)।

उस्सारण न [उत्सारण] १ दूरीकरण; २ अनेक दिनो में पढाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में अध्यापन; "अरिहइ उस्सारणं काउं" (बृह १)।

उस्सारिय वि [उत्सारित] दूरीकृत, हटाया हुआ; (संथा ५७)।

उस्सास पुं [उच्छ्वास] १ ऊसास, ऊँचा श्वास; (पएण १)। २ प्रबल श्वास; (आव ५)। °**नाम** न [°नामन्] उसास-हेतुक कर्म-विशेष; (सम ६७)।

उस्सासय वि [उच्छ्वासक] उसास लेने वाला; (विसे २७१५)।

उस्सिंखल वि [उच्छृङ्खल] स्वैरी, स्वेच्छाचारी, निरङ्कुश; (उप १४६ टी)।

उस्सिंघिय वि [दे] आघ्रात, सूँघा हुआ; (स २६०)।

उस्सिंच सक [उत्+सिच्] १ सिंचना, सेक करना। २ ऊपर सिंचना। ३ आक्षेप करना। ४ खाली करना। "पुराणं वा नावं उस्सिंचेज्जा" (आचा २, ३, १, ११)। उस्सिंचति; (निचू १८)। वकृ—**उस्सिंचमाण**, (आचा २, १, ६)।

उस्सिंचण न [उत्सेचन] १ सिञ्चन। २ कूपादि से जल वगैरः को बाहर खींचना; (आचा)। ३ सिंचन के उपकरण; (आचा २)।

उस्सिक्क सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना। उस्सिक्कइ; (हे ४, ६१)।

उस्सिक्क सक [उत्+क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उस्सिक्कइ; (हे ४, १४४)।

उस्सिक्किअ वि [मुक्त] मुक्त, परित्यक्त; (कुमा)।

उस्सिक्किअ वि [उत्क्षिप्त] १ ऊँचा फेंका हुआ। २ ऊपर रखा हुआ; (स ५०३)।

उस्सिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा किया हुआ; (कप्प)।

उस्सिय वि [उत्सृत] १ व्याप्त; २ ऊँचा किया हुआ; (कप्प)।

उस्सीस न [उच्छीर्ष] तकिया; (सुपा ४३७, णाया १, १; ओघ २३२)।

उस्सुआव सक [उत्सुकय्] उत्कण्ठित करना; उत्सुक करना। उस्सुआवेइ; (उत्तर ७१)।

उस्सुंक } वि [उच्छुल्क] शुल्क-रहित, कर-रहित; **उस्सुक्क** } (कप्प; णाया १, १)।

उस्सुक्क वि [उत्सुक] उत्कण्ठित।

उस्सुक्काव वि [उत्सुकय्] उत्सुक करना, उत्कण्ठित करना। संकृ—**उस्सुक्कावइत्ता**; (राज)।

उस्सुग वि [उत्सुक] उत्कण्ठित; (पउम ७६, २६; पण्ह २, ३)।

उस्सुत्त वि [उत्सूत्र] सूत्र-विरुद्ध, सिद्धान्त-विपरीत; (वव १; उप १४६ टी)।

उस्सुय देखो **उस्सुग**; (भग ५, ४; औप)।

उस्सुय न [औत्सुक्य] उत्कण्ठा, उत्सुकता। °**कर** वि [°**कर**] उत्कण्ठा-जनक; (णाया १, १)।

उस्सूण वि [उच्छून] सूजा हुआ, फूला हुआ; (उप ५६४; गउड; स २०३)।

उस्सूर न [उत्सूर] सन्ध्या, शाम; "वच्चामो नियनयरं उस्सूरं वट्टए जेण" (सुर ७, ६३; उप पृ २२०)।

उस्सेअ पुं [उत्सेक] १ सिंचन; २ उन्नति; ३ गर्व; (चारु ४५)।

उस्सेइम वि [उत्स्वेदिम] आटा से मिश्रित पानी, आटा-धोया जल; (कप्प; ठा ३, ३)।

उस्सेह पु [उत्सेध] १ ऊँचाई; (विपा १, १)। २ शिखर, टोंच; (जीव ३)। ३ उन्नति, अभ्युदय; "पडणंता उस्सेहा" (स ३६६)।

उस्सेहंगुल न [उत्सेधाङ्गुल] एक प्रकार का परिमाण; (विसे ३४० टी)।

उह स [उभ] दोनों, युग्म, युगल; (षड्)।

उहट्ट देखो **उव्वट्ट**=उद्+वृत्।

उहय स [उभय] दोनों, युग्म; (कुमा; भवि)।

उहर न [उपगृह] छोटा घर, आश्रय-विशेष; (पण्ह १, १)।

उहार पुं [उहार] मत्स्य-विशेष; (राज)।

उहु [अप] देखो **अहो**=अहो; (सण)।

उहुर वि [दे] अवाङ्मुख, अधोमुख; (गउड)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे उआराइसद्दसंकलणो पंचमो तरंगो समत्तो।

ऊ

ऊ पुं [**ऊ**] प्राकृत वर्णमाला का षष्ठ स्वर-वर्ण; (हे १, १ ; प्रामा)।

ऊ अ [**दे**] निम्न-लिखित अर्थों का सूचक अव्यय;—१ गर्हा, निन्दा, जैसे—"ऊ णिल्लज्ज"; २ आक्षेप, प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उसे उलटाना, जैसे—"ऊ किं मए भणिअं" ; ३ विस्मय, आश्चर्य ; जैसे—" कह मुणिआ अहयं ; ४ सूचना, जैसे—"ऊ केण ण विण्णायं" (हे २, १६६ ; षड्) ।

ऊअट्ठ वि [**अववृष्ट**] वृष्टि से नष्ट , (पाअ) ।

ऊआ स्त्री [**दे**] यूका, जूं ; (दे १, १३६) ।

ऊआस पुं [**उपवास**] भोजनाभाव , (हे १, १७३) ।

ऊगिय वि [**दे**] अलंकृत ; (षड्) ।

ऊज्झाअ देखो **उवज्झाय** ; (हे १, १७३ ; प्रामा) ।

°**ऊड** देखो **कूड** ; (से १२, ७८ ; गा ५८३) ।

ऊढ वि [**ऊढ**] वहन किया हुआ, धारण किया हुआ "ऊढ-कलं वज्जुणपरिमलेसु सुरसंदिरंतेसु" (गउड) ।

ऊढा स्त्री [**ऊढा**] विवाहिता स्त्री ; (पाअ) ।

ऊढिअय वि [**दे**] १ प्रावृत, आच्छादित ; २ आच्छादन, प्रावरण ; (पाअ) ।

ऊण वि [**ऊन**] न्यून, हीन ; (पउम ११८, ११६) । °**वीसइम** वि [°**विंशतितम**] उन्नीसवाँ ; (पउम १६,८०) ।

ऊण न [**ऋण**] ऋण, करजा ; (नाट) ।

ऊणंदिअ वि [**दे**] आनन्दित, हर्षित ; (दे १, १४१ ; षड्) ।

ऊणिमा स्त्री [**पूर्णिमा**] पूर्णिमा" तओ तीए चेव ऊणिमाए भरिऊण भंडस्स वहणाइं पत्थिओ पारसउलं" (महा) ।

ऊणिय वि [**ऊनित**] कम किया हुआ; (जं २) ।

ऊणोयरिआ स्त्री [**ऊनोदरिता**] कम आहार करना, तप-विशेष ; (भग २५, ७ ; नव २८) ।

ऊमिणण न [**दे**] प्रोंखणक, चुमना; (धर्म २) ।

ऊमिणिय वि [**दे**] प्रोञ्छित, जिसने स्नान के बाद शरीर पोंछा हो वह ; (स ७५) ।

ऊमित्तिअ न [**दे**] दोनों पार्श्वों में आघात करना ; (दे १, १४२) ।

ऊर पु [**दे**] १ ग्राम, गाँव ; २ संघ, समूह ; (दे १, १४३) ।

°**ऊर** देखो **तूर**; (से ८, ६५) ।

°**ऊर** देखो **पूर** ; (से ८, ६५ ; गा ४५; २३१) ।

ऊरण पुं [**ऊरण**] मेष, भेड़ ; (गाय; विसे) ।

ऊरणी स्त्री [**दे**] मेष, भेड ; (दे १, १४०) ।

°**ऊरय** वि [**पूरक**] पूर्त्ति करने वाला ; (भवि)।

ऊरस वि [**औरस**] पुत्र-विशेष, स्व-पुत्र ; (ठा १०)।

ऊरिसंकिअ वि [**दे**] रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्) ।

ऊरी अ [**ऊरी**] १ अंगीकार । २ विस्तार । °**कय** वि [°**कृत**] अंगीकृत, स्वीकृत ; (उप ७२८ टी) ।

ऊरु पुं [**ऊरु**] जङ्घा, जाँघ ; (णाया १, १८ ; कुमा) । °**जाल** न [°**जाल**] जाँघ तक लटकने वाला एक आभूषण; (औप) ।

ऊरुदग्घ वि [**ऊरुदघ्न**] जंघा-प्रमाण (गहरा वगैरः) ; (षड्) ।

ऊरुद्दअस वि [**ऊरुद्वयस**] ऊपर देखो ; (षड्) ।

ऊरुमेत्त वि [**ऊरुमात्र**] ऊपर देखो ; (षड्) ।

ऊल पुं [**दे**] गति-भंग ; (दे १, १३६) ।

°**ऊल** देखो **कूल** ; (गा १८६) ।

ऊस पु [**उस्र**] किरण ; (हे १, ४३) । °**मालि** पुं [°**मालिन्**] सूर्य ; (कुमा) ।

ऊस पुं [**ऊष**] क्षार-भूमि की मिट्टी; (पण्ण १ ; जी ४) ।

ऊसअ न [**दे**] उपधान; ओसीसा; (दे १, १४०; षड्) ।

ऊसढ वि [**उत्सृष्ट**] १ परित्यक्त; २ न. उत्सर्जन, मलादि का त्याग ; "नो तत्थ ऊसढं पकरेज्जा, तं जहा, उच्चारं वा" (आचा २, २, १, ३) ।

ऊसढ वि [**दे, उच्छ्रित**] १ उच्च, श्रेष्ठ ; (आचा २, ४, २, ३ ; जीव ३) । २ ताजा ; " भद्दं भद्दएति वा, ऊसढं ऊसढेति वा, रसियं रसिए ति वा " (आचा २, ४, २, २)।

ऊसण न [**दे**] गति-भङ्ग ; (दे १, १३६) ।

ऊसण्हसण्हिया देखो **उस्सण्हसण्हिया**; (पव २५४) ।

ऊसत्त देखो **उसत्त** ; (कप्प; आवम) ।

ऊसत्थ पु [**दे**] १ जम्भाई ; २ वि. आकुल ; (दे १, १४३) ।

ऊसर अक [**उत्+सृ**] १ खिसकना । २ दूर होना । ३ सक. त्यागना । ऊसरइ ; (भवि) । संकृ—**ऊसरिवि**; (भवि) ।

ऊसर न [**ऊषर**] क्षार-भूमि, जिसमें बीज नहीं पैदा होता है ; "ऊसरदवदलियदड्ढरुक्खनाएण" (सम्य १७; भक्त ७३)।

ऊसरण न [**उत्सरण**] आरोहण, "थाणूसरणं तओ समुप्पयणं" (विसे १२०८)।

ऊसल अक [**उत्+लस्**] उल्लसित होना। ऊसलइ; (हे ४, २०२; षड्; कुमा)।

ऊसल वि [**दे**] पीन, पुष्ट ; (दे १, १४०)।

ऊसलिअ वि [**उल्लसित**] उल्लसित, पादुर्भूत; (कुमा)।

ऊसलिअ वि [**दे**] रोमाञ्चित; पुलकित; (दे १, १४१ ; पाअ)।

ऊसव देखो **उस्सव**=उत्सव; (स्वप्न ६३)।

ऊसव देखो **उस्सव**=उत्+श्रि। उस्सवेह ; (पि ६४ ; ५५१)। संकृ—**ऊसविय** ; (कप्प ; भग)।

ऊसविअ वि [**दे**] १ उद्भ्रान्त, (दे १, १४३)। २ ऊँचा किया हुआ; (दे १, १४३; गाया १, ८ ; पाअ)। ३ उद्वान्त; वमित ; (षड्)।

ऊसविअ वि [**उच्छ्रित**] ऊर्ध्व-स्थित ; (कप्प)।

ऊसस सक [**उत्+श्वस्**] १ उसास लेना, ऊँचा साँस लेना। विकसित होना। ३ पुलकित होना। ऊससइ ; (पि ६४; ३१५)। वकृ—**ऊससंत, ऊससमाण,** (गा ७४; धण ४ ; पि ४९६)।

ऊससण न [**उच्छ्वसन**] उसास। °**लद्धि** स्त्री [°**लब्धि**] श्वासोच्छ्वास की शक्ति ; (कम्म १, ४४)।

ऊससिअ न [**उच्छ्वसित**] १ उसास; (पडि)। २ वि. उल्लसित ; ३ पुलकित ; (स ८३)।

ऊससिर वि [**उच्छ्वसितृ**] उसास लेने वाला; (हे २, १४५)।

ऊसाअंत वि [**दे**] खेद होने पर शिथिल ; (दे १, १४१)।

ऊसाइअ वि [**दे**] १ विक्षिप्त ; २ उत्क्षिप्त ; (दे १, १४१)।

ऊसार सक [**उत्+सारय्**] दूर करना, त्यागना। संकृ—**ऊसारिवि** (अप); (भवि)।

ऊसार पुं [**दे**] गर्त-विशेष ; (दे १, १४०)।

ऊसार पुं [**उत्सार**] परित्याग ; (भवि)।

ऊसार पुं [**आसार**] वेग वाली वृष्टि ; (हे १, ७६ ; षड्)।

ऊसारि वि [**आसारिन्**] वेग से बरसने वाला; (कुमा)।

ऊसारिअ वि [**उत्सारित**] दूर किया हुआ ; (महा ; भवि)।

ऊसास पुं [**उच्छ्वास**] १ उसास, ऊँचा श्वास; (आचू ५)। २ मरण ; (बृह १)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष ; (कम्म १, ४४)।

ऊसासय वि [**उच्छ्वासक**]: उसास लेने वाला; (विसे २७१४)।

ऊसासिअ वि [**उच्छ्वासित**] बाधा-रहित किया हुआ ; (से १२, ६२)।

ऊसाह पुं [**उत्साह**] उत्साह, उछाह ; (मा १०)।

ऊसिक्क सक [**उत्+ष्वष्क्**] ऊँचा करना। संकृ—**ऊसिक्किऊण** ; (भग १, ८ टी)।

ऊसिक्किअ वि [**दे**] प्रदीप्त, शोभायमान ; (पाअ)।

ऊसित्त वि [**उत्सिक्त**] १ गर्वित ; २ उद्धत ; ३ बढा हुआ ; ४ अतिशायित ; (हे १, ११४)।

ऊसित्त वि [**अवसिक्त**] उपलिप्त ; (पाअ)।

ऊसिय देखो **उस्सिय**=उच्छ्रित ; (औप; कप्प; सण)।

ऊससी, **ऊसीसग**, **ऊसीसय** न [**उच्छीर्ष**, °**क**] ओसीसा, सिरहाना; (णाया १, ७ ; पाअ ; सुपा ५३; १२०)।

ऊसुअ वि [**उत्सुक**] उत्कण्ठित ; (गा ५४३; कुमा)।

ऊसुअ वि [**उच्छुक**] जहां से शुक उद्गत हुआ हो वह ; (हे १, ११४)।

ऊसुइअ वि [**उत्सुकित**] उत्सुक किया हुआ ; (गा ३१२)।

ऊसुंभ अक [**उत्+लस्**] उल्लसित होना। ऊसुंभइ ; (हे ४, २०२)।

ऊसुंभिअ वि [**उल्लसित**] उल्लास-प्राप्त ; (कुमा)।

ऊसुंभिअ न [**दे**] १ रोदन-विशेष, गला बैठ जाय ऐसा रुदन ; (दे १, १४२ ; षड्)

ऊसुक्किअ वि [**दे**] विमुक्त, परित्यक्त; (दे १, १४२)।

ऊसुग देखो **ऊसुअ**=उत्सुक ; (उप ५९७ टी)।

ऊसुम्मिअ वि [**दे**] ओसीसा किया हुआ ; (षड्)।

ऊसुर न [**दे**] ताम्बूल, पान ; (हे २, १७४)।

ऊसुरुसुंभिअ [**दे**] देखो **ऊसुंभिअ** ; (दे १, १४२)।

ऊह सक [**ऊह्**] १ तर्क करना। २ विचारना। ऊहइ ; (विसे ८३१)। ऊहेमि; (सुर ११, १८५)। संकृ—**ऊहिऊण** ; (आउ ५२)।

ऊह न [**ऊधस्**] स्तन, (विपा १, २)।
ऊह पुं [**ऊह**] १ विचार, विवेक-बुद्धि ; (राज)। २ तर्क, वितर्क; (सूत्र २, ४)। ३ संख्या-विशेष ; (राज)। ४ ओघ-संज्ञा, अव्यक्त ज्ञान, (विसे ५२२; ५२३)।
ऊहंग न [**ऊहाङ्ग**] संख्या-विशेष ; (राज)।
ऊहट्ट वि [**दे**] उपहसित ; (दे १, १४०)।
ऊहसिय वि [**उपहसित**] जिसका उपहास किया गया हो वह ; (दे १, १४०)।
ऊहा स्त्री [**ऊहा**] तर्क, विचार-बुद्धि, (आवम)।
ऊहिअ वि [**ऊहित**] अनुमान से ज्ञात ; (से ६, ४२)।

इअ सिरि-**पाइअसद्दमहण्णवे** ऊआराइसद्दसंकलणो
छट्ठो तरंगो समत्तो।
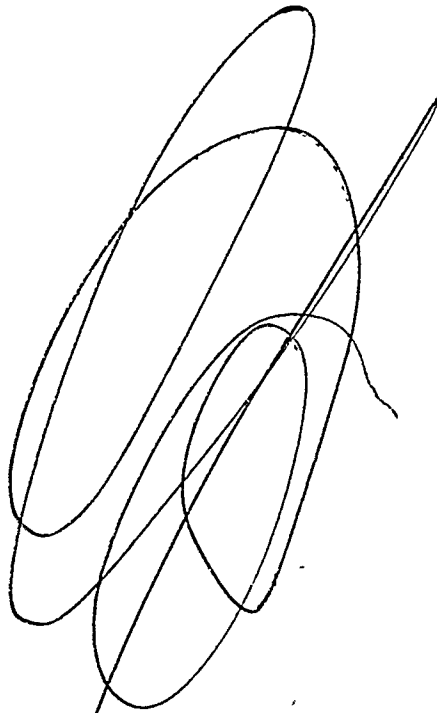
ए

ए पुं [**ए**] स्वर-वर्ण विशेष ; (हे १, १; प्रामा) ।

ए अ [**ए, ऐ**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आमन्त्रण, सम्बोधन; जैसे—"ए एहि सवडहुत्तो मज्झ" (पउम ८, १७४) । २ वाक्यालंकार, वाक्य-शोभा; जैसे—"से जहा-णाम ए" (अणु) । ३ स्मरण ; ४ असूया, ईर्ष्या ; ५ अनुकम्पा, करुणा ; ६ आह्वान ; (हे २, २१७ , भवि, गा ६०४) ।

ए सक [**आ+इ**] आना , आगमन करना । एइ ; (उवा)। भवि—एहिइ ; (उवा) । वकृ—**एंत**; (पउम ८, ४३ ; सुर ११, १४८) ; **इंत**; (सुर ३, १३) । **एज्जंत** ; (पि ५६१); **एज्जमाण** ; (उप ६४८ टी) ।

ए° देखो **एत्तिअ** ; (उवा) ।

ए° देखो **एवं** ; (उवा) ।

एअ स [**एतत्**] यह ; (भग; हे १, ११ ; महा) । °**रिस** वि [°**ादृश**] ऐसा, इसके जैसा ; (द्र ३२) । °**रूव** वि [°**रूप**] ऐसा, इस प्रकार का , (णाया १, १, महा) ।

एअ देखो **एग**; (गउड, नाट; स्वप्न ६०; १०६) । °**आइ** वि [°**ाकिन्**] अकेला; (अभि १६०, प्रति ६५) । °**ारह** त्रि. ब. [°**ादशन्**] ग्यारह की संख्या, दश और एक ; (पि २४५)। °**ारहम** वि [°**ादश**] ग्यारहवाँ ; (भवि) ।

एअ देखो **एव**=एव ; (कुमा) ।

एअ } देखो **एवं** ; "एअ वि सिरीअ दिट्ठआ" (से ३, ४६ ;
एअं } गउड ; पिंग) ।

एअंत देखो **एक्कंत** ; (वेणी १८) ।

एआईस (अप) पुं. ब. [**एकविंशति**] एक्कीस, (पिंग)।

एआरिच्छ वि [**एतादृक्ष**] ऐसा, इसके जैसा; (प्रामा) ।

एइज्जमाण देखो **एय**=एज् ।

एईस वि [**एतादृश**] ऐसा ; (विसे २५४६) ।

एउंजि (अप) अ [**एवमेव**] १ इसी तरह ; २ यही , (भवि) ।

एऊण देखो **एगूण** ; (पिंग) ।

एंत देखो **इ**=इ ।

एंत देखो **ए**=आ+इ ।

एक देखो **एक्क** तथा **एग** ; (षड्; सम ६६, पउम १०३; १७२ ; हेका ११६; पण्ह २, ५ ; पउम ११४, २४ , सुपा १६५ ; कप्प , सम ७१; १५३) । °**इआ** अ [°**दा**] एक समय में, कोई वक्त , (हे २, १६२) । °**ल** (अप) वि [°**क**] एकाकी ; (पि ५६५) । °**लिय** वि [°**ाकिन्**] एकाकी, अकेला ; (उप ७२८ टी) । °**ाणउइ** स्त्री [°**नवति**] संख्या-विशेष, एकानवें ; (सम ६५, पि ४३५) ।

एकूण देखो **अउण**=एकोन ; (सुज्ज १६) ।

एक्क देखो **एक** तथा **एग** ; (हे २, ६६; सुपा १८३; सम ६६; ५५; पउम ३१, १२८ ; गउड, कप्प; मा १८, सुपा ४८६ ; मा ४१; पि ५६५; नाट; णाया १, १ ; गा ६१८; काल; सुर ५, २४२ ; भग ; सम ३६; पउम २१, ६३ ; कप्प) । °**वए** देखो **एगवए** ; (गउड; सुर १, ३८) । °**सणिय** वि [°**ाशनिक**] एक ही वार भोजन करने वाला, (पण्ह २, १) । °**सत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] संख्या-विशेष, ७१, एकहत्तर ; (सम ८२) । °**सरग, सरय** वि [°**सरक, °सर्ग**] एक समान, एक सरीखा ; (उवा; भग १६, पण्ह २,५) । °**सि** अ [°**शस्**] एक वार; "सव्व-जहन्नो उदओ दसगुणिओ एक्कसि कयाणं" (भग) , "एक्कसि कओ पमाओ जीवं पाडेइ भवसमुद्दम्मि" (सुर ८, ११२) "एक्कसि सीलकलंकिअहं देज्जहि पच्छित्ताइं" (हे ४, ४२८) । °**सि** अ [°**त्र**] एक (किसी एक) में, "एक्कसि न खु थिरो सित्ति पिओ कीइवि उवालद्धो" (कुमा) । °**सि, °सिअं** अ [°**दा**] कोई एक समय में; (हे २, १६२) । °**सिं** अ [°**शस्**] एक वार ; (पि ४५१) । °**ाइ** वि [°**ाकिन्**] अकेला ; (प्रयौ २३) । °**ाइ** पु [°**ादि**] स्वनाम-ख्यात एक माण्डलिक; (सुवा); (विपा १, १) । °**ाणउय** वि [°**नवत**] ६१ वाँ ; (पउम ६१, ३०) । °**ारसम** वि [°**ादश**] ग्यारहवाँ ; (विपा १, १; उवा; सुर ११, २५०) । °**ारह** त्रि. ब. [°**ादशन्**] ग्यारह, दश और एक; (षड्) । °**ासीइ** स्त्री [°**ाशीति**] संख्या-विशेष, एकासी ; (सम ८८)। °**ासीइविह** वि [°**ाशीतिविध**] एकासी तरह का; (पण्ण १; १७)। °**ासीय** वि [°**ाशीत**] एकासीवाँ, ८१ वाँ; (पउम ८१, १६)। °**ुत्तरसय** वि [°**ोत्तरशततम**] एक सौ एक वाँ, १०१ वाँ; (पउम १०१, ७६) । °**ोयर** पुं [°**ोदर**] सहोदर भाई, सगा भाई ; (पउम ६, ६० ; ४६ , १८) । °**ोयरा** स्त्री [°**ोदरा**] सगी वहिन , (पउम ८, १०६) ।

एक्कक वि [**एकक**] अकेला ; (हेका ३१) ।

[**चत्वारिंशत्**] उनचालीस ; (सम ६६)। °**चत्तालीसइम** वि [**चत्वारिंशत्तम**] उनचालीसवाँ; (सम ८६)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] नवासी; (पि ४४४)। °**तीस** स्त्रीन [°**त्रिंशत्**] उनतीस, २६। °**तीसइम** वि [°**त्रिंशत्तम**] उनतीसवाँ, २६ वाँ; (पउम २६, ४६)। °**नउइ** देखो °**णउइ**; (सम ६४)। °**नउय** व [°**नवत**] नवासीवाँ ; (पउम ८६, ६५)। °**पन्न**, °**पन्नास** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] उनपचास ; (सम ७० ; भग)। °**पन्नास** वि [°**पञ्चाश**] उनपचासवाँ; (पउम ४६, ४०)। °**पन्नासइम** वि [°**पञ्चाशत्तम**] उनपचासवाँ ; (सम ६६)। °**वीस** स्त्रीन [°**विंशति**] उन्नीस ; (सम ३६; पि ४४४ ; णाया १, १६)। °**वीसइ** स्त्री [°**विंशति**] उन्नीस ; (सम ७३)। °**वीसइम**, °**वीसईम**, °**वीसम** वि [°**विंशतितम**] उन्नीसवाँ , (णाया १, १८ ; पउम १६, ४५; पि ४४६)। °**सट्ठ** वि [°**षष्ट**] उनसठवाँ, ५६ वाँ ; (पउम ५६, ८६)। °**सत्तर** वि [°**सप्तत**] उनसत्तरवाँ ; (पउम ६६, ६०)। °**ासी**, °**ासीइ** स्त्री [°**ाशीति**] उन्नासी; (सम ८७; पि ४४४; ४४६)। °**ासीय** वि [°**ाशीत**] उन्नासीवाँ, ७६ वाँ ; (पउम ७६, ३५)। देखो **अउण**।

एगूरुय पुं [**एकोरुक**] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप; २ उसका निवासी ; (ठा ४, २)।

एग्ग (अप) देखा **एग**; (पिंग)।

एज पुं [**एज**] वायु, पवन ; (आचा)।

एज्जंत देखो **ए** = आ + इ।

एज्जण न [**आयन**] आगमन ; (वव ३)।

एज्जमाण देखो **ए** = आ+इ।

एड सक [**एड्**] छोड़ना, त्याग करना। एडेइ; (भग)। कवकृ—**एडिज्जमाण**; (णाया १, १६)। संकृ—**एडित्ता**; (भग)। कृ—**एडेयव्व** ; (णाया १, ६)।

एडक्क पुं [**एडक**] मेष, भेड़ ; (उप पृ २३४)।

एडया स्त्री [**एडका**] भेडी ; (षड्)।

एण पुं [**एण**] कृष्ण मृग, हरिण ; (कप्पू)। °**णाहि** [°**नाभि**] कस्तूरी ; (कप्पू)।

एणंक पुं [**एणाङ्क**] चन्द्र, चन्द्रमा ; (कप्पू)।

एणिज्ज वि [**एणेय**] हरिण-संबन्धी, हरिण का (मांस वगैरः); (राज)।

31

एणिज्जय पुं [**एणेयक**] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (ठा ८)।

एणिस पुं [**एणिस**] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)।

एणी स्त्री [**एणी**] हरिणी; (पाअ ; पण्ह १, ४)। °**यार** पुं [°**चार**] हरिणी को चराने वाला, उनका पोषण करने वाला ; (पण्ह १, १)।

एणुवासिअ पुं [**दे**] भेक, मेढक ; (दे १, १४७)।

एणेज्ज देखो **एणिज्ज** ; (विपा १, ८)।

एण्हं } अ [**इदानीम्**] अधुना, संप्रति ; (महा ; हे २, **एण्हिं** } १३४)।

एत्तअ वि [**इयत्**, **एतावत्**] इतना ; (अभि ५६ ; स्वप्न ४०)।

एत्तए देखो इ=इ।

एत्तहि (अप) अ [**इतस्**] यहां से ; (कुमा)।

एत्तहे देखो **इत्तहे** ; (कुमा)।

एत्ताहे देखो **इत्ताहे** ; (हे २, १३४ ; कुमा)।

एत्तिअ } वि [**इयत्**, **एतावत्**] इतना ; (हे २, १५७)। **एत्तिल** } °**मत्त**, °**मेत्त** वि [°**मात्र**] इतना ही; (हे १, ८१)।

एत्तुल (अप) ऊपर देखो ; (हे ४, ४०८ ; कुमा)।

एत्तो देखो **इओ** , (महा)।

एत्तोअ अ [**दे**] यहां से लेकर ; (दे १, १४४)।

एत्थ अ [**अत्र**] यहां, यहां पर ; (उवा ; गउड ; चारु १०३)।

एत्थी देखो **इत्थी** ; (उप १०३१ टी)।

एत्थु (अप) देखो **एत्थ**; (कुमा)।

एदंपज्ज न [**ऐदंपर्य**] तात्पर्य, भावार्थ ; (उप ८५६ टी)।

एदिहासिअ (शौ) वि [**ऐतिहासिक**] इतिहास-संबन्धी ; (प्राप)।

एद्दह देखो **एत्तिअ** ; (हे २, १५७ ; कुमा ; काप्र ७७)।

एम (अप) अ [**एवं**] इस तरह, ऐसा ; (षड्; पिंग)।

एमइ (अप) अ [**एवमेव**] इसी तरह, ऐसा ही ; (षड्; वज्जा ६०)।

एमाइ } वि [**एवमादि**] इत्यादि, वगैरः; (सुर ८, २६; **एमाइय** } उव)।

एमाण वि [**दे**] प्रवेश करता हुआ ; (दे १, १४४)।

एमिणिआ स्त्री [**दे**] वह स्त्री, जिसके शरीर को, किसी देश के रिवाज के अनुसार, सूत के धागे से माप कर उस धागे को फेंक दिया जाता है ; (दे १, १४५)।

ऐ

ऐ अ [अयि] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ संभावना ; २ आमन्त्रण , संबोधन ; ३ प्रश्न ; ४ अनुराग, प्रीति ; ५ अनुनय ;" ऐ वीहेमि; ऐ उम्मत्तिए " (हे १, १६६)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ऐआराइअद्दसंकलणो
अट्ठमो तरंगो समत्तो।

ओ

ओ पुं [**ओ**] स्वर वर्ण-विशेष ; (हे १, १ ; प्रामा)।
ओ देखो **अव** = अप ; (हे १, १७२ , प्राप्र, कुमा ; षड्)।
ओ देखो **अव** = अव ; (हे १, १७२ ; प्राप्र, कुमा, षड्)।
ओ देखो **उअ** = उत ; (हे १, १७२ ; कुमा ; षड्)।
ओ देखो **उव** ; (हे १, १७३ ; कुमा)।
ओ अ **[ओ]** इन अर्थों का सूचक अव्यय,—१ सूचना; जैसे— "ओ अविणयतत्तिल्ले" २ पश्चात्ताप, अनुताप, जैसे— "ओ न मए छाया इत्तिआए" (हे २, २०३ ; षड्; कुमा; प्राप्र)। ३ सबोधन, आमन्त्रण ; (नाट—चैत ३४)। ४ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (पंचा १, विसे २०२४)।
ओअ न [**दे**] वार्त्ता, कथा, कहानी; (दे १, १४६)।
ओअअ वि [**अपगत**] अपसृत ; "ओअआअव—" (पि १६५)।
ओअंक पुं [**दे**] गर्जित, गर्जना ; (दे १, १५४)।
ओअंद सक [**आ+छिद्**] १ वलात्कार से छीन लेना। २ नाश करना। ओअंदइ ; (हे ४, १२५ ; षड्)।
ओअंदणा स्त्री [**आच्छेदना**] १ नाश। २ जबरदस्ती छीनना ; (कुमा)।
ओअक्ख सक [**दृश्**] देखना। ओअक्खइ; (हे ४, १८१; षड्)।
ओअग्ग सक [**वि+आप्**] व्याप्त करना। ओअग्गइ , (हे ४, १४१)।
ओअग्गिअ वि [**व्याप्त**] विस्तृत, फैला हुआ ; (कुमा)।
ओअग्गिअ वि [**दे**] १ अभिभूत, परिभूत ; २ न. केश वगैरः को एकत्रित करना ; (दे १, १७२)।
ओअग्घिअ } वि [**दे**] घ्रात, सूँघा हुआ; (दे १, १६२;
ओअघिअ } षड्)।
ओअण्ण वि [**अवनत**] नमा हुआ, नीचे की तरफ मुड़ा हुआ ; (से ११, ११८)।
ओअत्त वि [**अपवृत्त**] उँधा किया हुआ, उलटा किया हुआ ; "ओअत्ते कुंभमुहे जललवकणिआवि किं ठाइ ?" (गा ६५४)।
ओअत्तअ वि [**अपवर्त्तितव्य**] १ अपवर्तन-योग्य ; २ त्यागने योग्य, छोडने लायक ; "कुसुमम्मि व पन्वाअए भमरोअत्तअम्मि" (से ३, ४८)।
ओअम्मअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत ; (षड्)।
ओअर सक [**अव+तॄ**] १ जन्म-ग्रहण करना। २ नीचे उतरना। ओयरइ ; (हे ४, ८५)। वकृ—**ओयरंत**; (ओघ १६१, सुर १४,२१)। हेकृ—**ओयरिउं**; (प्रारू)। कृ—**ओयरियव्व**; (सुर १०, १११)।
ओअरण न [**उपकरण**] साधन, सामग्री ; (गा ६८१)।
ओअरण न [**अवतरण**] उतरना, नीचे आना ; (गउड)।
ओअरय पु [**अपवरक**] कमरा, कोठरी ; (सुपा ४१५)।
ओअरिअ वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ ; (पाअ)।
ओअरिअ वि [**औदरिक**] पेट-भरा, उदर भरने मात्र की चिन्ता करने वाला ; (ओघ ११८ भा)।
ओअरिया स्त्री [**अपवरिका**] कोठरी, छोटा कमरा, (सुपा ४१५)।
ओअल्ल अक [**अव+चल्**] चलना। ओअल्लंति ; (पि १६७, ४८८) वकृ—**ओअल्लंत** ; (पि १६७; ४८८)।
ओअल्ल पु [**दे**] १ अपचार, खराब आचरण, अहित आचरण; (षड्; स ५२१)। २ कम्प, काँपना ; (षड् ; दे १, १६५)। ३ गौओ का बाड़ा; ४ वि. पर्यस्त, प्रक्षिप्त; ५ लम्बमान, लटकता हुआ , (दे १, १६५)। ६ जिसकी आँखें निमीलित होती हो वह ; "मुच्छिज्जंतोअल्ला अक्कता णिअअमहिहरेहि पवंगा" (स १३, ४३)।
ओअल्लअ वि [**दे**] विप्रलब्ध, प्रतारित ; (षड्)।
ओअव सक [**साधय्**] साधना, वश में करना, जीतना। "गच्छाहि णं भो देवाणुप्पिआ ! सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि" (जं ३)। संकृ—**ओअवेत्ता** ; (जं ३)।
ओअवण न [**साधन**] विजय, वश करना, स्वायत्त करना ; (जं ३—पत्र २४८)।
ओआअ पु [**दे**] १ ग्रामाधीश, गाँव का स्वामी ; २ आज्ञा, आदेश ; ३ हस्ती वगैरः को पकडने का गर्त ; ४ वि. अपहृत, छीना हुआ ; (दे १, १६६)।
ओआअव पुं [**दे**] अस्त-समय ; (दे १, १६२)।
ओआर सक [**अप+वारय्**] ढंकना। "कह सुज्जं हत्थेण ओआरेसि" (मै ४६)।
ओआर पुं [**अपकार**] अनिष्ट, हानि, क्षति , (कुमा)।

ओआर पुं [**अवतार**] १ अवतारण ; (ठा १ ; गउड)। २ अवतार, देहान्तर-धारण ; (पड्)। ३ उत्पत्ति, जन्म; " अच्चंतमणोयारो जत्थ जरारोगवाहीणं " (स १३१)। ४ प्रवेश ; (विमे १०४०)।

ओआर देखो **उवयार** ; (पड्)।

ओआरण न [**अवतारण**] उतारना, अवतारित करना ; (दे ४, ४०)।

ओआरिअ वि [**अवतारित**] उतारा हुआ ; (से ११, ६३ ; उप ५६७ टी)।

ओआल पुं [**दे**] छोटा प्रवाह ; (दे १, १५१)।

ओआली स्त्री [**दे**] १ खड्ग का दोष; २ पङ्क्ति, श्रेणि , (दे १, १६४)।

ओआवल पु [**दे**] बालातप, सुबह का सूर्य-ताप ; (दे १, १६१)।

ओआस देखो **अवगास**; (हे १, १७२ ; कुमा ; गा २०); " अम्हारिसाण सुंदर ! ओआसो कत्थ पावाणं " (काप्र ६०३)।

ओआस देखो **उववास** ; (हे १, १७३ ; प्राकृ)।

ओआहिअ वि [**अवगाहित**] जिसका अवगाहन किया गया हो वह ; (से १, ४ ; ८, १००)।

ओइंध सक [**आ+मुच्**] १ छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना। २ उतार कर रख देना। " तो उज्झिऊण लज्ज ओइंधइ कंचुयं सरीराओ " (पउम ३४, १६)। " तहेव य झडंति परिवाडीए ओइंधइ त्ति " (आक ३८)।

ओइण्ण वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ ; (पाअ ; गा ६३)

ओइत्त } **ओइत्तण** } न [**दे**] परिधान, वस्त्र ; (दे १, १५५)।

ओइल्ल वि [**दे**] आरूढ ; (दे १, १५८)।

ओउंठण न [**अवगुण्ठन**] स्त्री के मुँह पर का वस्त्र, घूँघट ; (अभि १६८)।

ओउल्लिय वि [**दे**] पुरस्कृत, आगे किया हुआ ; (षड्)।

ओऊल न [**अवचूल**] लटकता हुआ वस्त्राञ्चल, प्रालम्ब; (पाअ); " मरगयलंबंतमोत्तिओऊलं " (पउम ८, २८३)। देखो **ओचूल**।

ओ अ [**ओम्**] प्रणव, मुख्य मन्त्राक्षर ; (पडि)।

ओंघ देखो **उंघ**। ओंघइ ; (हे ४, १२ टि)।

ओंडल न [**दे**] केश-गुम्फ, केश-रचना, धम्मिल्ल; (दे १, १५०)।

ओंदुर देखो **उंदुर** ; (षड्)।

ओंवाल सक [**छादय्**] ढकना, आच्छादित करना। ओंवालइ ; (हे ४, २१)।

ओंवाल सक [**प्लावय्**] १ डुबोना। २ व्याप्त करना। ओंवालइ ; (हे ४, ४१)।

ओंवालिअ वि [**छादित**] ढका हुआ ; (कुमा)।

ओंवालिअ वि [**प्लावित**] १ डुबाया हुआ ; २ व्याप्त; (कुमा)।

ओकड्ढ वि [**अपकृष्ट**] १ खींचा हुआ ; २ न. अपकर्षण, खींचाव ; (उत्त १६)।

ओकड्ढग देखो **उक्कड्ढग** ; (पण्ह १, ३)।

ओक्कस सक [**अव+कृष्**] १ निमग्न होना, गड़ जाना। २ खींचना। ३ बह जाना। वकृ—**ओकसमाण** ; (कस)।

ओक्कंत वि [**अवक्रान्त**] निराकृत, पराजित; "परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं अणाद्धंसिज्जमाणा विहरंति" (औप)।

ओक्कंदी देखो **उक्कंदी**; (दे १, १७४)।

ओक्कणी स्त्री [**दे**] यूका, जूं; (दे १, १५६)।

ओक्किअ न [**दे**] १ वास, वसन, अवस्थान ; २ वमन, उल्टी ; (दे १, १५१)।

ओक्खंच सक [**आ+कृष्**] खींचना। कर्म— " जह जह आक्खंचिज्जइ, तह तह वेगं पगिण्हमाणेण। भयवं ! तुरगमेणं, इहाणिओ आसमे तुम्ह" (सुर ११, ५१)।

ओक्खंड सक [**अव+खण्डय्**] तोड़ना, भाँगना। कृ— **ओक्खंडेअव्व**, (से १०, २६)।

ओक्खंडिअ वि [**दे**] आक्रान्त ; (दे १, ११२)।

ओक्खंद देखो **अवक्खंद** ; (सुर १०, २१० ; पउम ३७, २६)।

ओक्खल देखो **उऊखल**; (कुमा; प्राप्र)।

ओक्खली [**दे**] देखो **उक्खली**; (दे १,१७४)।

ओक्खिण्ण त्रि [**दे**] १ अवकीर्ण; २ खण्डित, चर्णित; (कस; दे १, १३०)। २ छन्न, ढका हुआ; ३ पार्श्व में शिथिल; (दे १, १३०)।

ओक्खित्त वि [**अवक्षिप्त**] फेंका हुआ; (कस)।

ओखंच देखो **ओक्खंच**।

ओगम देखो **अवगम**। कृ—**ओगमिदव्व** (शौ) ; (मा ४८)।

ओगर देखो **ओग्गर**; (पिंग)।

ओगलिअ वि (**अवगलित**) गिरा हुआ, खिसका हुआ; (गा २०५)।

ओगसण न [**अपकसन**] ह्रास, (गज)।

ओगहिय वि [**अवगृहीत**] उपात्त, गृहीत, (ठा ३)।

ओगाढ वि [**अवगाढ**] १ आश्रित, अधिष्ठित; (ठा २, २)। २ व्याप्त; (गाया १, १६)। ३ निमग्न; (ठा ४)। ४ गंभीर, गहरा; (पउम २०, ६५; से ६, २६)।

ओगास पुं [**अवकाश**] जगह, स्थान; (विवे १३६ टी)।

ओगाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहन करना। ओगाहइ; (षड्)। वकृ—**ओगाहंत**; (आव २)। संकृ—**ओगाहइत्ता, ओगाहित्ता**; (दस ५, भग ५, ४)।

ओगाहण न [**अवगाहन**] अवगाहन: (भग)।

ओगाहणा स्त्री [**अवगाहना**] १ आधार-भूत आकाश-क्षेत्र; (ठा १)। २ शरीर; (भग ६, ८)। ३ शरीर-परिमाण; (ठा ४, १)। ४ अवस्थान, अवस्थिति; (विसे) °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, (भग ६, ८)। °**णाम** पुं [°**नाम**] अवगाहनात्मक परिणाम; (भग ६, ८)।

ओगाहिम वि [**अवगाहिम**] पक्वान्न; (पंचा ५)।

ओगिज्झ } सक [**अव+ग्रह्**] १ आश्रय लेना। २ **ओगिण्ह** } अनुज्ञा-पूर्वक ग्रहण करना। ३ जानना। ४ उद्देश करना। ५ लक्ष्य कर कहना। ओगिण्हइ, (भग; कप्प)। संकृ—**ओगिज्झिय, ओगिण्हइत्ता, ओगिण्हित्ता, ओगिण्हित्ताणं**; (आचा; गाया १, १, कस; उवा)। कृ—**ओघेत्तव्व**; (कप्प; पि ५७०)।

ओगिण्हण न [**अवग्रहण**] सामान्य ज्ञान-विशेष, अवग्रह; (णंदि)।

ओगिण्हणया स्त्री [**अवग्रहणता**] १ ऊपर देखो; (णंदि)। २ मनो-विषयीकरण, मन से जानना, (ठा ८)।

ओगिन्ह देखो **ओगिण्ह**। संकृ—**ओगिन्हित्ता**; (निर १, १)।

ओगुंडिय वि [**अवगुण्डित**] लिप्त, (बृह १)।

ओगुट्ठि स्त्री [**अपकृष्टि**] अपकर्ष, हलकाइ, तुच्छता; (पउम ५६, १५)।

ओगूहिय वि [**अवगूहित**] आलिङ्गित, (गाया १,६)।

ओग्गर पुं [**ओगर**] धान्य-विशेष, व्रीहि-विशेष; (पिंग)।

ओग्गह देखो **उग्गह**; (सम्म ७५; उव, कस; स ३५; ५६८)।

ओग्गहण देखो **ओगिण्हण**। °**पट्टग** पुंन [°**पट्टक**] जैन साध्वीओं को पहनने का एक गुह्याच्छादक वस्त्र; जाँघिया, लंगोट; (कस)।

ओग्गहिय वि [**अवगृहीत**] १ अवग्रह-ज्ञान से जाना हुआ, अवग्रह का विषय। २ अनुज्ञा से गृहीत। ३ बद्ध, बँधा हुआ; (उवा)। ४ देने के लिए उठाया हुआ; (औप)।

ओग्गहिय वि [**अवग्रहिक**] अनुज्ञा से गृहीत, अवग्रह वाला; (औप)।

ओग्गारण न [**उद्गारण**] उद्गार; (चारु ७)।

ओग्गाल पुं [**दे**] छोटा प्रवाह; (दे १, १५१)।

ओग्गाल सक [**रोमन्थाय्**] पगुराना, चवाई हुई वस्तु का पुनः चवाना। ओग्गालइ; (हे ४, ४३)।

ओग्गालिर वि [**रोमन्थायितृ**] पगुराने वाला, चवाई हुई वस्तु का पुनः चवाने वाला; (कुमा)।

ओग्गिअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत; (दे १, १५८)।

ओग्गीअ पुं [**दे**] हिम, बर्फ; (दे १, १४६)।

ओग्घसिय वि [**अवघर्षित**] प्रमार्जित साफ-सुथरा किया हुआ, (राय)।

ओघ पुं [**ओघ**] १ समूह, संघात; (गाया १, ५)। २ संसार, "एते ओघं तरिस्संति समुद्दं ववहारिणो" (सूअ १, ३)। ३ अविच्छेद, अविच्छिन्नता; (पण्ह १, ४)। ४ सामान्य, साधारण। °**सण्णा** स्त्री [°**संज्ञा**] सामान्य ज्ञान; (पण्ण ७)। °**देस** पुं [°**आदेश**] सामान्य विवक्षा; (भग २५, ३)। देखो **ओह**=ओघ।

ओघट्टिद (शौ) वि [**अवघट्टित**] आहत; (प्रयौ २७)।

ओघसर पुं [**दे**] १ घर का जल-प्रवाह; २ अनर्थ, खराबी, नुकसान; (दे १, १७० ; सुर २, ६६)।

ओघसिय देखो **ओग्घसिय**।

ओघेत्तव्व देखो **ओगिण्ह**।

ओचिदी (शौ) स्त्री [**औचिती**] उचितता, औचित्य; (रंभा)।

ओचुंब सक [**अव+चुम्ब्**] चुम्बन करना। संकृ—**ओचुंबिऊण**; (भवि)।

ओचुल्ल न [**दे**] चुल्हा का एक भाग; (दे १, १५३)।

ओचूल } देखो **ओऊल** ; (विपा १, २ ; सुर ३, ७०)।
ओचूलग } २ मुख से हटा हुआ शिथिल—ढीला (वस्त्र); "ओचूलगनियत्था " (जं ३—पत्र २४५)।
ओच्चय देखो **अवचय** ; (महा)।
ओच्चिया स्त्री [**अवचायिका**] तोड़ कर (फूलों को) इकट्ठा करना ; (गा ७६७)।
ओच्चेल्लर न [**दे**] ऊषर-भूमी ; २ जघन के रोम ; (दे १, १३६)।
ओच्छअ } वि [**अवस्तृत**] १ आच्छादित ; २ निरुद्ध,
ओच्छइय } रोका हुआ ; (पण्ह १, ४; गउड ; स १६४)।
ओच्छंदिअ वि [**दे**] १ अपहृत ; २ व्यथित, पीडित ; (षड्)।
ओच्छण्ण वि [**अवच्छन्न**] आच्छादित, ढका हुआ ; " णिच्चोउगो असोगो ओच्छण्णो सालरुक्खेण " (सम १५२)। देखो **ओच्छन्न**।
ओच्छत्त न [**दे**] दन्त-धावन, दतवन; (दे १, १५२)।
ओच्छन्न देखो **ओच्छण्ण**; (स ११२, औप)। २ अवष्टब्ध, आक्रान्त ; (आचा)।
ओच्छर (शौ) सक [**अव+स्तृ**] १ बिछाना, फैलाना। २ आच्छादित करना, ढाँकना। ओच्छरीअदि ; (नाट—उत्तम १०५)।
ओच्छविय } वि [**अवच्छादित**] आच्छादित, ढका
ओच्छाइय } हुआ ; " गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडगपायमूलं " (णाया १, १—पत्र २५; २८ टी ; महा ; स १५०)।
ओच्छाइवि नीचे देखो।
ओच्छाय सक [**अव+छादय्**] आच्छादन करना। संकृ—**ओच्छाइवि** ; (भवि)।
ओच्छायण वि [**अवच्छादन**] ढाँकना, पिधान ; (स ५५७)।
ओच्छाहिय देखो **उच्छाहिय** ;
"ओच्छाहिओ परेण व लद्धिपसंसाहिं वा समुत्तइओ।
अवमाणिओ परेण य जो एसइ माणपिंडो सो॥"
(पिंड ४६५)।
ओच्छिअ न [**दे**] केश-विवरण ; (दे १, १५०)।
ओच्छिण्ण वि [**अवच्छिन्न**] आच्छादित ; "पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छिण्णपलिच्छिण्णा" (जीव ३)।
ओच्छुंद सक [**आ+क्रम्**] १ आक्रमण करना २ गमन करना। ओच्छुंदंति ; (से १३, १६)। कर्म—ओच्छुंदइ ; (से १०, ५५)।
ओच्छुण्ण वि [**आक्रान्त**] १ दबाया हुआ। २ उल्लंघित; "ओच्छुण्णदुग्गमपहा" (से १३, ६३; १५, १३)।
ओच्छोअअ न [**दे**] घर की छत के प्रान्त भाग से गिरता पानी;
"रक्खेइ पुत्तअं मत्थएण ओच्छोअअं पडिच्छंती।
अंसूहिं पहिअघरिणी ओलिज्जंतं ण लक्खेइ" (गा ६२१)।
ओज्जर वि [**दे**] भीरु, डरपोक ; (षड्)।
ओज्जल देखो **उज्जल** (दे)।
ओज्जल्ल वि [**दे**] बलवान्, प्रबल ; (दे १, १५४)।
ओज्जाअ पुं [**दे**] गर्जित, गर्जारव ; (दे १, १५४)।
ओज्झ वि [**दे**] मैला, अस्वच्छ, चोखा नहीं वह ; (दे १, १४८)।
ओज्झंत देखो **ओज्झा** = अप + ध्या।
ओज्झमण न [**दे**] पलायन, भाग जाना ; (दे १, १०३)।
ओज्झर पुं [**निर्झर**] झरना, पर्वत से निकलता जल-प्रवाह ; (गा ६४० ; हे १, ६८ ; कुमा ; महा)।
ओज्झरिअ [**दे**] देखो **उज्झरिअ** ; (दे १, १३३)।
ओज्झरी स्त्री [**दे**] ओझ, आँत का आवरण ; (दे १, १५७)।
ओज्झा सक [**अप+ध्या**] खराब चिन्तन करना। कवकृ—**ओज्झंत** ; (भवि)।
ओज्झा देखो **अउज्झा** ; (उप पृ ३७४)।
ओज्झाय देखो **उवज्झाय** ; (कुमा ; प्रारू)।
ओज्झाय वि [**दे**] दूसरे को प्रेरणा कर हाथ से लिया हुआ ; (दे १, १५६)।
ओज्झावग देखो **उवज्झाय** ; (उप ३५७ टी)।
ओट्ठ पुं [**ओष्ठ**] होठ, अधर , (पउम १, २४ ; स्वप्न १०४; कुमा)।
ओट्टिय वि [**औष्ट्रिक**] उष्ट्र-संबन्धी, उष्ट्र के बालों से बना हुआ ; (कस ; स ५८६)।
ओडड्ढ वि [**दे**] अनुरक्त, रागी, (दे १, १५६)।
ओड्ड पुं [**ओड्र**] १ उत्कल देश; २ वि. उत्कल देश का निवासी, उडिया ; (पिंग)।
ओड्डिअ वि [**ओड्रीय**] उत्कल-देशीय ; (पिंग)।
ओड्ढण न [**दे**] ओढन, उत्तरीय, चादर ; (दे १, १५५)।

ओड्ढिगा स्त्री [**दे**] ओढनी , (स २११)।
ओण देखो **ऊण**=ऊन ; (रंभा)।
ओणंद सक [**अव+नन्द्**] अभिनन्दन करना। कवकृ— **ओणंदिज्जमाण** ; (कप्प)।
ओणम अक [**अव+नम्**] नीचे नमना। वकृ—**ओणमंत**, (से १, ४५)। संकृ—**ओणमिअ, ओणमिऊण**, (आचा २ ; निचू १)।
ओणय वि [**अवनत**] १ नमा हुआ ; (सुर २, ४६)। २ न. नमस्कार, प्रणाम ; (सम २१)।
ओणल्ल अक [**अव+लम्ब्**] लटकना। "केसकलावु खंधे ओणल्लइ" (भवि)।
ओणविय वि [**अवनमित**] नमाया हुआ, अवनत किया हुआ ; (गा ६३५)।
ओणाम सक [**अव+नमय्**] नीचे नमाना, अवनत करना। ओणामेहि ; (मृच्छ ११०)। संकृ—**ओणामित्ता** ; (निचू)।
ओणामणी स्त्री [**अवनामनी**] एक विद्या, जिसके प्रभाव से वृक्ष वगैरः स्वयं फलादि देने के लिए अवनत होते हैं ; (उप पृ १५५; निचू १)।
ओणामिय } वि [**अवनमित**] अवनत किया हुआ ; (से **ओणाविय** } ५, ३६ , ६, ४ , गा १०३ ; भवि)।
ओणिअत्त अक [**अपनि+वृत्**] पीछे हटना, वापिस आना। वकृ—**ओणिअत्तंत** ; (से २, ७)।
ओणिअत्त वि [**अपनिवृत्त**] पीछे हटा हुआ, वापिस आया हुआ ; (से ५, ५८)।
ओणिमिल्ल वि [**अवनिमीलित**] मुद्रित, मूँदा हुआ ; (से ६,८७ , १३, ८२)।
ओणियट्ट देखो **ओनियट्ट**; (पि ३३३)।
ओणिव्व पुं [**दे**] वल्मीक, चींटीओ का खुदा हुआ मिट्टी का ढ़ेर ; (दे १, १५१)।
ओणीवी स्त्री [**दे**] नीवी, कटी-सूत्र , (दे १, १५०)।
ओणुणअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत ; (दे १, १५८)।
ओण्णिद्द न [**औन्निद्र्य**] निद्रा का अभाव, "ओण्णिद्दं दोब्बल्लं" (काप्र ८५ ; दे १, ११७)।
ओण्णिय वि [**और्णिक**] ऊन का बना हुआ, ऊर्णा-निर्मित; (कस)।
ओत्तलहअ पुं [**दे**] विटप ; (दे १, ११६)।
ओत्ताण देखो **उत्ताण**; (विक्र २८)।

ओत्थअ वि [**अवस्तृत**] १ फैला हुआ, प्रसृत ; (से २, ३)। २ आच्छादित, पिहित, "समंतओ ओत्थयं गयणं" (आवम; दे १, १५१ ; स ७७, ३७६)।
ओत्थअ वि [**दे**] अवसन्न, खिन्न ; (दे १, १५१)।
ओत्थइअ देखो **ओच्छइय**; (गा ५६६; से ८, ६२ ; स ५७६)।
ओत्थर देखो **ओच्छर**। ओत्थरइ , (पि ५०५; नाट)।
ओत्थर पुं [**दे**] उत्साह ; (दे १, १५०)।
ओत्थरण न [**अवस्तरण**] बिछौना ; (पउम ४६,८४)।
ओत्थरिअ वि [**अवस्तृत**] १ बिछाया हुआ ; २ व्याप्त ; (से ७, ४७)।
ओत्थरिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त ; २ जो आक्रमण करता हो वह , (दे १, १६६)।
ओत्थल्लपत्थल्ला देखो **उत्थल्लपत्थल्ला**; (दे १, १२२)।
ओत्थाडिय वि [**अवस्तृत**] बिछाया हुआ ; (भवि)।
ओत्थार सक [**अव+स्तारय्**] आच्छादित करना। कर्म— ओत्थारिज्जंति ; (स ६६८)।
ओदइय वि [**औदयिक**] १ उदय, कर्म-विपाक ; (भग ७, १४; विसे २१७४)। २ उदय-निष्पन्न ; (विसे २१७४; सूअ १,१३)। ३ कर्मोदय-रूप भाव ; "कम्मोदयसहावो सव्वो असुहो सुहो य ओदइओ" (विसे ३४६४)। ४ उदय होने पर होनेवाला ; (विसे २१७४)।
ओदच्च न [**औदात्य**] उदात्तता, श्रेष्ठता ; (प्रारु)।
ओदज्ज न [**औदार्य**] उदारता ; (प्रारु)।
ओदण न [**ओदन**] भात, राँधे हुए चावल ; (पण्ह २, ५; ओघ ७१४ ; चारु १)।
ओदरिय वि [**औदरिक**] पेट-भरा, पेट भरने के लिए ही जो साधु हुआ हो वह ; (निचू १)।
ओदहण न [**अवदहन**] तप्त किए हुए लोहे के कोश वगैरः से दागना ; (राज)।
ओदारिय न [**औदार्य**] उदारता ; (प्रारु)।
ओदंपिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त ; २ नष्ट; (दे१, १७१)।
ओद्धंस सक [**अव+ध्वंस्**] १ गिराना। २ हटाना। ३ हराना। कवकृ—"परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं अणोद्धंसिज्जमाणा विहरंति" (औप)।
ओधाव सक [**अव+धाव्**] पीछे दौड़ना। ओधावइ ; (महा)।

ओधुण देखो **अवधुण**। कर्म—ओधुव्वंति; (पि ५३६)। संकृ—**ओधुणिअ** ; (पि ५६१)।
ओधूअ वि [**अवधूत**] कम्पित ; (नाट)।
ओधूसरिअ वि [**अवधूसरित**] धूसर रंग वाला, हलका पीला रंग वाला ; (से १०, २१)।
ओनियट्ट वि [**अवनिवृत्त**] देखो **ओणिअत्त**=अपनिवृत्त ; (कप्प)।
ओपल्ल वि [**दे**] अपदीर्ण, कुण्ठित ; "तते णं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधे ओहरति, तत्थवि य से धारा ओपल्ला" (णाया १, १४)।
ओप्प वि [**दे**] मृष्ट, ओप दिया हुआ ; (षड्)।
ओप्प सक [**अर्पय्**] अर्पण करना। ओप्पेइ ; (हे १, ६३)।
ओप्पा स्त्री [**दे**] शाण आदि पर मणि वगैरः का घर्षण करना ; (दे १, १४८)।
ओप्पाइय वि [**औत्पातिक**] उत्पात-संबन्धी; (औप)।
ओप्पिअ वि [**अर्पित**] समर्पित ; (हे १, ६३)।
ओप्पिअ वि [**दे**] शाण पर घिसा हुआ, "णिवमउडोप्पिअ-पयणह" (दे १, १४८)।
ओप्पील पुं [**दे**] समूह, जत्था ; (पाअ)।
ओप्पुंसिअ, **ओप्पुसिअ** } देखो **उप्पुसिअ**; (गउड; पि ४८६)।
ओबद्ध वि [**अवबद्ध**] १ बँधा हुआ ; २ अवसन्न ; (वव १)।
ओबुज्झ सक [**अव+बुध्**] जानना। वकृ—**ओबुज्झमाण**, (आचा)।
ओब्भालण देखो **उब्भालण** ; (दे १, १०३)।
ओभग्ग वि [**अवभग्न**] भग्न, नष्ट ; (से ३, ६३ ; १०, २६)।
ओभावणा स्त्री [**अपभ्राजना**] लोक-निन्दा, अपकीर्ति ; (राज)।
ओभास अक [**अव+भास्**] प्रकाशना, चमकना। वकृ—**ओभासमाण** ; (भग ११, ६)। प्रयो——ओभासेइ, (भग) ; ओभासंति, ओभासेंति ; (सुज्ज १६) ; वकृ—**ओभासमाण** ; (सूअ १, १४)।
ओभास सक [**अव+भाष्**] याचना करना, माँगना। कवकृ—**ओभासिज्जमाण** ; (निचू २)।
ओभास पुं [**अवभास**] १ प्रकाश ; (औप)। २ महाग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)।
ओभासण न [**अवभासन**] १ प्रकाशन, उद्द्योतन, (भग ८, ८)। २ आविर्भाव ; ३ प्राप्ति ; (सूअ १, १२)।
ओभासण न [**अवभाषण**] याचना, प्रार्थना ; (वव ८)।
ओभासिय वि [**अवभाषित**] १ याचित, प्रार्थित ; (वव ६)। २ न. याचना, प्रार्थना ; (बृह १)।
ओभुग्ग वि [**अवभुग्न**] वक्र, बाँका ; (णाया १, ८—पत्र १३३)।
ओभेडिय वि [**अवमुक्त**] छुड़ाया हुआ, रहित किया हुआ, "तेणवि कड्ढिऊणालक्खं पिव सूई-ओभेडिओ नियकुक्कुडो" (महा)।
ओम वि [**अवम**] १ कम, न्यून, हीन ; (आचा)। २ लघु, छोटा ; (ओघ २२३ भा)। ३ न. दुर्भिक्ष, अकाल ; (ओघ १३ भा)। °**कोट्ठ** वि [°**कोष्ठ**] ऊनोदर, जिसने कम खाया हो वह ; (ठा ४)। °**चेलग**, °**चेलय** वि [°**चेलक**] जीर्ण और मलिन वस्त्र धारण करने वाला ; (उत्त १२ ; आचा)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] १ दिन-क्षय, ज्योतिष की गिनती के अनुसार जिस तिथि का क्षय होता है वह ; (ठा ६)। २ अहोरात्र, रात-दिन , (ओघ २८५)।
ओमइल्ल वि [**अवमलिन**] मलिन, मैला ; (से २, २५)।
ओमंथ (**दे**) देखो **ओमत्थ** ; (पाअ)।
ओमंथिय वि [**दे**] अधोमुख किया हुआ, नमाया हुआ ; (णाया १, १)।
ओमंस वि [**दे**] अपसृत, अपगत ; (षड्)।
ओमज्जण न [**अवमज्जन**] स्नान-क्रिया ; (उप ६४८टी)।
ओमज्जायण पुं [**अवमज्जायन**] ऋषि-विशेष ; (जं ७ ; कस)।
ओमज्जिअ वि [**अवमार्जित**] जिसको स्पर्श कराया गया हो वह, स्पर्शित ; (स ५६७)।
ओमट्ठ वि [**अवमृष्ट**] स्पृष्ट, छुआ हुआ ; (से ५, २१)।
ओमत्थ वि [**दे**] नत, अधोमुख ; (पाअ)।
ओमत्थिय [**दे**] देखो **ओमंथिय** ; (ओघ ३८६)।
ओमल्ल न [**निर्माल्य**] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य ; (षड्)।
ओमल्ल वि [**दे**] घनीभूत, कठिन, जमा हुआ ; (षड्)।
ओमाण पुं [**अपमान**] अपमान, तिरस्कार ; (उत्त २६)।

ओमाण न [**अवमान**] १ जिससे क्षेत्र वगैरः का माप किया जाता है वह, हस्त, दण्ड वगैरः मान ; (ठा २, ४)। २ जिसका माप किया जाता है वह क्षेत्रादि ; (अणु)।

ओमाल देखो **ओमल्ल**=निर्माल्य ; (हे १, ३८ ; कुमा; वज्जा ८८)।

ओमाल अक [**उप+माल्**] १ शोभना, शोभित होना। २ सक. सेवा करना, पूजना। संकृ—**ओमालिवि**; (भवि)। कवकृ—

"अहवावि भत्तिपणमंततियसवहूसीसकुसुमदामेहिं ।
ओमालिज्जंतकमो, नियमा तित्थाहिवो होइ"
(उप ६८६ टी)।

ओमालिअ वि [**उपमालित**] १ शोभित ; २ पूजित, अर्चित ; (भवि)।

ओमालिआ स्त्री [**अवमालिका**] चिमड़ी हुई माला ; (गा १६४)।

ओमास पुं [**अवमर्श**] स्पर्श ; (से ६, ६७)।

ओमिण सक [**अव+मा**] मापना, मान करना। कर्म—ओमिणिज्जइ ; (अणु)।

ओमिय वि [**अवमित**] परिच्छिन्न, परिमित ; (सुज्ज ६)।

ओमील अक [**अव+मील्**] मुद्रित होना, वन्द होना। वकृ—**ओमीलंत**; (से ३, १)।

ओमीस वि [**अवमिश्र**] १ मिश्रित ; २ समीपस्थ। ३ न. सामीप्य, समीपता ;

" सुचिरंपि अच्छमाणो, वेरुलिओ कायमणियओमीसे ।
न उवेइ कायभावं, पाहन्नगुणेण नियएण ॥"
(ओघ ७७२)।

ओमुग्ग देखो **उम्मुग्ग** ; (पि १०४; २३४)।

ओमुच्छिअ वि [**अवमूर्च्छित**] महा-मूर्छा को प्राप्त; (पउम ७, १५८)।

ओमुद्धग वि [**अवमूर्धक**] अधोमुख; "आमुद्धगा धरणियले पडंति" (सूअ १, ५)।

ओमुय सक [**अव+मुच्**] पहनना। ओमुयइ ; (कप्प)। वकृ—**ओमुयंत**, (कप्प)। संकृ—**ओमुइत्ता** ; (कप्प)।

ओमोय पुं [**ओमोक**] आभरण, आभूषण ; (भग ११, ११)।

ओमोयर वि [**अवमोदर**] भूख की अपेक्षा न्यून भोजन करने वाला ; (उत्त ३०)।

ओमोयरिय न [**अवमोदरिक**] १ न्यून-भोजत्व, तप-विशेष ; (आचा)। २ दुर्भिक्ष, अकाल ; (ओघ ७)।

ओमोयरिया स्त्री [**अवमोदरिता, °रिका**] न्यून-भोजन रूप तप ; (ठा ६)।

ओय वि [**ओकस्**] गृह, घर ; (वव ५)।

ओय त्रि [**ओज**] १ एक, असहाय ; (सूअ १, ४, २, १)। २ मध्यस्थ, तटस्थ, उदासीन ; (वृह १)। ३ पुं. विषम राशि ; (भग २५, ३)।

ओय न [**ओजस्**] १ वल ; (आचा)। २ प्रकाश, तेज ; (चंद ५)। ३ उत्पत्ति-स्थान में आहत पुद्गलों का समूह ; (पण्ण ८; संग १८२)। ४ आर्तव, ऋतु-धर्म; (ठा ३, ३)।

ओयंसि वि [**ओजस्विन्**] १ वलवान्; २ तेजस्वी ; (सम १५२ ; औप)।

ओयट्टण न [**अपवर्त्तन**] पीछे हटना, वापिस लौटना; (उप ७६०)।

ओयड्ढ सक [**अप+कृष्**] खींचना। कवकृ—**ओय-ड्ढियंत** ; (पउम ७१, २६)।

ओयण देखो **ओदण** ; (पउम ६६, १६)।

ओयत्त वि [**अववृत्त**] अवनत, अधोमुख ; (पाअ)।

ओयविय वि [**दे**] परिकर्मित ; (पण्ह १, ४ ; औप)।

ओया स्त्री [**ओजस्**] शक्ति, सामर्थ्य; (णाया १, १०—पत्र १७०)।

ओयाइअ देखो **उवयाइय**; (सुपा ६२५ ; दे ४, २२)।

ओयाय वि [**उपयात**] उपागत, समीप पहुँचा हुआ ; (णाया १, ६ ; निर १, १)।

ओयारग वि [**अवतारक**] १ उतारने वाला ; २ प्रवृत्ति करने वाला ; (सम १०६)।

ओयावइत्ता अ [**ओजयित्वा**] १ वल दिखा कर २ चमत्कार दिखा कर ३ विद्या आदि का सामर्थ्य दिखा कर (जो दीक्षा दी जाय वह) ; (ठा ४)।

ओर वि [**दे**] चारु, सुन्दर ; (दे १, १४६)।

ओरंपिअ वि [**दे**] १ आक्रान्त; २ नष्ट ; (दे १, १७१)।

ओरंपिअ वि [**दे**] पतला किया हुआ; छिला हुआ; (पाअ)।

ओरत्त वि [**दे**] १ गर्विष्ठ, अभिमानी; २ कुसुम्भ से रक्त ; ३ विदारित, काटा हुआ ; (दे १, १६५ ; पाअ)।

ओरल्ली स्त्री [**दे**] लम्बा और मधुर आवाज; (दे १, १५४; पाअ)।

ओरस सक [अव+तॄ] नीचे उतरना । ओरसइ (हे ४, ८५) ।
ओरस वि [उपरस] स्नेह-युक्त, अनुरागी ; (ठा १०) ।
ओरस वि [औरस] १ स्वोत्पादित पुत्र, स्व-पुत्र, (ठा १०)। २ उरस्य, हृदयोत्पन्न; (जीव ३) ।
ओरसिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ; (कुमा) ।
ओरस्स वि [औरस्य] हृदयोत्पन्न, आभ्यन्तरिक; (प्रारू) ।
ओराल देखो **उराल**=उदार; (ठा ४; १०; जीव १)।
ओराल देखो **उराल** (दे); (चंद १) ।
ओराल न [औदार] नीचे देखो ; (विसे ६३१) ।
ओरालिय न [औदारिक] १ शरीर विशेष, मनुष्य और पशुओं का शरीर; (औप) । २ वि. शोभायमान, शोभा वाला; (पाअ) । ३ औदारिक शरीर वाला; (विसे ३७५) । °**णाम** न [°नामन्] औदारिक शरीर का हेतु-भूत कर्म, (कम्म १) ।
ओरालिय वि [दे] १ पोंछा हुआ; "मुहि करयलु देवि पुणु ओरालिउ मुहकमलु" (भवि) । २ फैलाया हुआ, प्रसारित "दसदिसि वहकयंवु ओरालिओ" (भवि) ।
ओराली देखो **ओरल्ली**, (सुर ११, ८६) ।
ओरिंकिय न [अवरिङ्कित] महिष का आवाज; "कत्थइ महिसोरिंकिय कत्थइ डुहुडुहुडुहुंतनइसलिल" (पउम ६४, ४३) ।
ओरिल्ल पुं [दे] लम्बा काल, दीर्घ काल; (दे १, १५५)।
ओरुंज न [दे] क्रीडा-विशेष; (दे १, १५६) ।
ओरुंमिअ वि [उपरुद्ध] आवृत, आच्छादित; (गा ६१४) ।
ओरुण्ण वि [अवरुदित] रोया हुआ; (गा ५३८) ।
ओरुद्ध वि [अवरुद्ध] रुका हुआ, बंद किया हुआ; (गा ८००) ।
ओरुभ सक [अव+रुह्] उतरना । वकृ—**ओरुभमाण**; (कस)।
ओरुम्मा अक [उद्+वा] सूखना, सूख जाना । ओरुम्माइ; (हे ४, ११) ।
ओरुह देखो **ओरुभ** । वकृ—**ओरुहमाण**; (संथा ६३; कस) ।
ओरुहण न [अवरोहण] नीचे उतरना; (पउम २६, ५५; विसे १२०८) ।
ओरोध देखो **ओरोह**=अवरोध; (विपा १, ६) ।
ओरोह देखो **ओरुभ** । वकृ—**ओरोहमाण**; (कस; ठा ५)।
ओरोह पुं [अवरोध] १ अन्तःपुर, जनानखाना; (औप)। २ अन्तःपुर की स्त्री; (सुर १, १४३) । ३ नगर के दरवाजा का अवान्तर द्वार; (णाया १; १; औप) । ४ संघात, समूह; (राज) ।
ओलअ पुं [दे] १ श्येन पक्षी, बाज पक्षी; २ अपलाप, निह्नव, (दे १, १६०) ।
ओलअणी स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन, (दे १, १६०) ।
ओलइअ वि [दे. अवलगित] १ शरीर में सटा हुआ, परिहित; (दे १, १६२; पाअ) । २ लगा हुआ; (से १, १६२) ।
ओलइणी स्त्री [दे] प्रिया, स्त्री; (दे १, १६०)।
ओलंड सक [उत्+लङ्घ्] उल्लंघन करना । ओलंडेंति; (णाया १, १—पत्र ६१) ।
ओलंब देखो **अवलंब**=अव+लम्ब् । संकृ—**ओलंबिऊण**, (महा) ।
ओलंब पुं [अवलम्ब] नीचे लटकना; (औप; स्वप्न ७३) ।
ओलंबण न [अवलम्बन] सहारा, आश्रय । °**दीव** पुं [°दीप] शृङ्खला-बद्ध दीपक, (राज) ।
ओलंबिय वि [अवलम्बित] आश्रित, जिसका सहारा लिया गया हो वह; (निचू १) । २ लटकाया हुआ; (औप) ।
ओलंबिय वि [उल्लंबित] लटकाया हुआ; (सुअ २,२ औप)।
ओलंभ पुं [उपालम्भ] उलहना; "अप्पोलंभणिमित्तं पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि" (णाया १, १) ।
ओलक्खिअ वि [उपलक्षित] पहिचाना हुआ; (पउम १३, ४२; सुपा २५४)।
ओलग्ग सक [अव+लग्] १पीछे लगना । २ सेवा करना । ओलग्गंति; (पि ४८८) । हेकृ—**ओलग्गिउं** ; (सुपा २३४; महा) । प्रयो, संकृ—**ओलग्गाविवि**; (सण) ।
ओलग्ग वि [अवरुग्ण] १ ग्लान, बिमार; २ दुर्बल, निर्बल; (णाया १, १—पत्र २८ टी; विपा १, २) ।
ओलग्ग वि [अवलग्न] पीछे लगा हुआ, अनुलग्न; (महा)।
ओलग्ग [दे] देखो **ओलुग्ग**; (दे १, १६४) ।
ओलग्गा स्त्री [दे] सेवा, भक्ति, चाकरी ; "करेउ देवो पसायं मम ओलग्गाए" (स ६३९) । "ओलग्गाए वेलत्ति जंपिउं निग्गओ खुज्जो" (धम्म ८ टी) ।

ओलग्गि वि [**अवलागिन्**] सेवा करने वाला। स्त्री-°णी; (रंभा)।

ओलग्गिअ वि [**अवलग्न**] सेवित ; (वज्जा ३२)।

ओलावअ पुं [**दे**] श्येन, बाज पक्षी, (दे १, १६०, स २१३)।

ओलि देखो **ओली**=आली ; (हे १, ८३)।

ओलिंदअ पुं [**अलिन्दक**] बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ ; (गा २५४)।

ओलिंप सक [**अव+लिप्**] लीपना, लेप लगाना। वकृ— **ओलिंपमाण**; (राज)।

ओलिंभा स्त्री [**दे**] उपदेहिका, दिमक, (दे १, १५३ ; गउड)।

ओलिज्झमाण देखो **ओलिह**।

ओलित्त वि [**अवलिप्त, उपलिप्त**] लीपा हुआ, कृतलेप ; (पराह १, ३ ; उव ; पाअ; दे १, १५८, औप)।

ओलित्ती स्त्री [**दे**] खड्ग आदि का एक दोष, (दे १, १५६)।

ओलिप्प न [**दे**] हास, हाँसी ; (दे १, १५३)।

ओलिप्पंती स्त्री [**दे**] खड्ग आदि का एक दोष, (दे १, १५६)।

ओलिह सक [**अव + लिह्**] आस्वादन करना। कवकृ— **ओलिज्झमाण** ; (कप्प)।

ओली सक [**अव + ली**] १ आगमन करना। २ नीचे आना। ३ पीछे आना। "नीयं च काया ओलिंति" (विसे २०६४)।

ओली स्त्री [**आली**] पंक्ति, श्रेणी ; (कुमा)।

ओली स्त्री [**दे**] कुल-परिपाटी, कुलाचार ; (दे १, १४८)।

ओलुंकी स्त्री [**दे**] बालको की एक प्रकार की क्रीडा; (दे १, १५३)

ओलुंड सक [**वि+रेचय्**] झरना, टपकना, बाहर निकालना। ओलुंडइ ; (हे ४, २६)।

ओलुंडिर वि [**विरेचयितृ**] झरने वाला, (कुमा)।

ओलुंप पुं [**अवलोप**] मसलना, मर्दन करना ; (गउड)।

ओलुंपअ पुं [**दे**] तापिका-हस्त, तवा का हाथा ; (दे १, १६३)।

ओलुग्ग वि [**अवरुग्ण**] १ रोगी, बीमार ; (पाअ)। २ भग्न, नष्ट ; (पराह १, १)। "सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा" (निर १, १)।

ओलुग्ग वि [**दे**] १ सेवक, नौकर ; २ निस्तेज ; निर्बल, बल-हीन; (दे १, १६४)। ३ निश्छाय, निस्तेज; (सुर २ १०२ ; दे १, १६४ ; स ४६६; ५०४)।

ओलुग्गाविय वि [**दे**] १ बीमार; २ विरह-पीडित, (वज्जा ८६)।

ओलुट्ट वि [**दे**] १ असंघटमान, असंगत ; २ मिथ्या, असत्य; (दे १, १६४)।

ओलेहड वि [**दे**] १ अन्यासक्त ; २ तृष्णा-पर ; ३ प्रवृद्ध ; (दे १, १७२)।

ओलोअ देखो **अवलोअ**। वकृ—**ओलोअंत, ओलोएमाण** ; (मा ५; णाया १, १६ ; १, १)।

ओलोट्ट सक [**अप+लुट्**] पीछे लौटना। वकृ—**ओलोट्टमाण** ; (राज)।

ओलोयण न [**अवलोकन**] १ देखना। २ दृष्टि, नजर; (उप पृ १२७)।

ओलोयणा स्त्री [**अवलोकना**] १ देखना। २ गवेषणा, खोज ; (वव ४)।

ओल्ल पुं [**दे**] १ पति, स्वामी ; २ दण्ड-प्रतिनिधि पुरुष, राज-पुरुष विशेष ; (पिंग)।

ओल्ल देखो **उल्ल**=आर्द्र ; (हे १, ८२ ; काप्र १७२)।

ओल्ल देखो **उल्ल**=आर्द्रय्। ओल्लेइ ; (पि १११)। वकृ—**ओल्लंत**, (से १२, ६६)। कवकृ—**ओल्लिज्जंत**; (गा ६२१)।

ओल्लण न [**आर्द्रयण**] गीला करना, भिजाना ; (पि १११)।

ओल्लणी स्त्री [**दे**] मार्जिता, इलायची; दालचीनी आदि मसाला से संस्कृत दधि ; (दे १,१५४)।

ओल्लरण न [**दे**] स्वाप, सोना ; (दे १, १६३)।

ओल्लरिअ वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ ; (दे १, १६३ ; सुपा ३१२)।

ओल्लविंद (शौ) नीचे देखो ; (पि १११; मृच्छ १०५)।

ओल्लिअ वि [**आर्द्रित**] आर्द्र किया हुआ, (गा ३३० ; सण)।

ओल्हव सक [**वि+ध्यापय्**] बुझाना, ठंढा करना। कवकृ— **ओल्हविज्जंत** ; (स ३६२)। कृ—**ओल्हवेयव्व**; (स ३६२)।

ओल्हविअ [**दे**] देखो **उल्हविय**; (सुर १०, १४६)।

ओव न [दे] हाथी वगैरः को बाँधने के लिए किया हुआ गर्त ; (दे १, १४६)।

ओवअण न [**अवपतन**] नीचे गिरना, अधःपात ; (से ६, ७७ ; १३, २२)।

ओवइणी स्त्री [**अवपातिनी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से स्वयं नीचे आता है या दूसरे को नीचे उतारता है ; (सूत्र २, २)।

ओवइय वि [**अवपतित**] १ अवतीर्ण, नीचे आया हुआ ; (से ६, २८; औप)। २ आ पड़ा हुआ, आ डटा हुआ ; (से ६, २६)। ३ न. पतन ; (औप)।

ओवइय पुंस्त्री [दे] तीन इन्द्रिय वाला एक क्षुद्र जन्तु ; "से किं तं तेइंदिया ? तेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा ;— ओवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा" (जीव १)।

ओवइय वि [**औपचयिक**] उपचित, परिपुष्ट ; (राज)।

ओवगारिय वि [**औपकारिक**] उपकार करने वाला ; (भग १३, ६)।

ओवग्ग सक [**उप+वल्, आ+क्रम्**] १ आक्रमण करना; २ पराभव करना। ओवग्गइ; (भवि)। संकृ—**ओवग्गिवि**; (भवि)।

ओवग्गहिय वि [**औपग्रहिक**] जैन साधुओं के एक प्रकार का उपकरण, जो कारण-विशेष से थोड़े समय के लिए लिया जाता है ; (पव ६०)।

ओवग्गिअ वि [**दे.उपवल्गित**] १ अभिभूत; २ आक्रान्त; (से ६, ३० ; पाअ; सुर १३, ४२)।

ओवघाइय वि [**औपघातिक**] उपघात करने वाला, पीड़ा उत्पन्न करने वाला ; "सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लविज्जोवघाइयं" (दस ८)।

ओवच्च सक [**उप+व्रज्**] पास जाना। "सुहाए ओवच्च वासहरं" (भवि)।

ओवट्ट अक [**अप+वृत्**] १ पीछे हटना। २ कम होना, ह्रास-प्राप्त होना। वकृ—**ओवट्टंत** ; (उप ७६२)।

ओवट्ट पुं [**अपवर्त्त**] १ ह्रास, हानि ; २ भागाकार ; (विसे २० ६२)।

ओवट्टणा स्त्री [**अपवर्त्तना**] भागाकार, भाग-हरण ; (राज)।

ओवट्टिअ न [दे] चाटु, खुशामद ; (दे १, १६२)।

ओवट्ट वि [**अववृष्ट**] बरसा हुआ, जिसने वृष्टि की हो वह ; (से ६, ३४)।

ओवट्ठ पुं [**दे.अववर्ष**] १ वृष्टि, वारिस ; (से ६, २५)। २ मेघ-जल का सिञ्चन; (दे १, १५२)।

ओवट्ठिअ वि [**औपस्थितिक**] उपस्थिति के योग्य, नौकर ; (प्रयौ ११)।

ओवड अक [**अव+पत्**] गिरना, नीचे पड़ना। वकृ— **ओवडंत** ; (से १३, २८)।

ओवडण न [**अवपतन**] १ अधःपात ; २ झम्पा-पात, (से २, ३२)।

ओवड्ढ वि [**उपार्ध**] आधे के करीब। °**मोयरिया** स्त्री [°**वमोदरिका**] बारह कवल का ही आहार करना, तप-विशेष ; (भग ७, १)।

ओवड्ढि स्त्री [**अपवृद्धि**] ह्रास ; (निचू २०)।

ओवड्ढी स्त्री [दे] ओढ़नी का एक भाग ; (दे १, १५१)।

ओवण न [**उपवन**] बगीचा, आराम ; (कुमा)।

ओवणिहिय पुं [**औपनिहित, औपनिधिक**] भिक्षाचर-विशेष; समीपस्थ भिक्षा को लेने वाला साधु ; (ठा ५ ; औप)।

ओवणिहिया स्त्री [**औपनिधिकी**] आनुपूर्वी-विशेष, अनुक्रम-विशेष ; (औप)।

ओवत्त सक [**अप+वर्त्तय्**] १ उलटा करना। २ फिराना; घुमाना। ३ फेंकना। संकृ—**ओवत्तिय** ; (दस ५)। कृ—**ओवत्तेअव्व** ; (से १०, ५०)।

ओवत्त वि [**अपवृत्त**] फिराया हुआ ; (से ६, ६१)।

ओवत्तिय वि [**अपवर्त्तित**] १ घुमाया हुआ। २ क्षिप्त ; (णाया १, १—पत्र ४७)।

ओवत्थाणिय वि [**औपस्थानिक**] सभा का कार्य करने वाला नौकर। स्त्री—°**या** ; (भग ११, ११)।

ओवमिय वि [**औपमिक**] उपमा-संबन्धी ; (अणु)।

ओवमिय } न [**औपम्य**] १ उपमा ; (ठा ८; अणु)।
ओवम्म } २ उपमान प्रमाण ; (सूत्र १, १०)।

ओवय सक [**अव+पत्**] १ नीचे उतरना। २ आ पडना। वकृ—**ओवयंत, ओवयमाण**; (कप्प; स ३७०; पि ३६६ ; णाया १, १; ६)।

ओवयण न [**दे. अवपदन**] प्रोङ्खणक, चुमना ; (णाया १, १—पत्र ३६)।

ओवयाइयय वि [**औपयाचितक**] मनौती से प्राप्त किया हुआ, मनौती से मिला हुआ ; (ठा १०)।

ओवयारिय वि [**औपचारिक**] उपचार-संबन्धी ; (पंचा ६ ; पुप्फ ४०६) ।

ओवर पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे १, १५७) ।

ओववाइय वि [**औपपातिक**] १ जिसकी उत्पति होती हो वह ; (पंच १) । २ पुं. संसारी, प्राणी ; (आचा) । ३ देव या नारक जीव ; (दस ४) । ४ न. देव या नारक जीव का शरीर ; (पंच १) । ५ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, औपपातिक सूत्र ; (औप) ।

ओवसग्गिय वि [**औपसर्गिक**] १ उपसर्ग से संबन्ध रखने वाला, उपद्रव—समर्थ रोगादि । २ शब्द-विशेष, प्र परा आदि अव्यय रूप शब्द ; (अणु) ।

ओवसमिअ वि [**औपशमिक**] १ उपशम, २ उपशम से उत्पन्न ; ३ उपशम होने पर होने वाला, (विसे २१७४) ।

ओवसेर न [**दे**] १ चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष, २ वि. रति-योग्य ; (दे १, १७३) ।

ओवह सक [**अव+वह्**] १ वह जाना, वह चलना । २ डूबना । कवकृ—**ओवुब्भमाण**, (कस) ।

ओवहारिअ वि [**औपहारिक**] उपहार-सवन्धी ; (विक ७५) ।

ओवहिय वि [**औपधिक**] माया से गुप्त विचरने वाला ; (गाया १, २) ।

ओवाअअ पुं [**दे**] आपातप, जल-समूह की गरमी ; (षड्) ।

ओवाइय देखो **ओववाइय** ; (राज) ।

ओवाइय देखो **उवयाइय** ; (सुपा ११३) ।

ओवाइय वि [**आवपातिक**] सेवा करने वाला ; (ठा १०) ।

ओवाडण न [**अवपाटन**] विदारण, नाश ; (ठा २, ४) ।

ओवाडिय वि [**अवपाटित**] विदारित ; (औप) ।

ओवाय सक [**उप+याच्**] मनौती करना । वकृ—**ओवायंत, ओवाइयमाण** ; (सुर १३, २०६ ; गाया १, ८—पत्र १३४) ।

ओवाय पुं [**अवपात**] १ सेवा, भक्ति ; (ठा ३, २ ; औप) । २ गर्त, खड्डा ; (पराह १, १) । ३ नीचे गिरना ; (पराह १, ४) ।

ओवाय वि [**औपाय**] उपाय-जन्य, उपाय-संवन्धी ; (उत्त १, २८) ।

ओवार सक [**अप+वारय्**] आच्छादन करना, ढकना । संकृ—**ओवारिअ** ; (अभि २१३) ।

ओवारि न [**दे**] धान्य भरने का एक जात का लम्बा कोठा, गोदाम ; (राज) ।

ओवारिअ वि [**दे**] ढेर किया हुआ, राशी-कृत ; (स ४८७; ४८) ।

ओवारिअ वि [**अपवारित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (मै ६१) ।

ओवास अक [**अव+काश्**] शोभना, विराजना । ओवासइ ; (प्राप) ।

ओवास पुं [**अवकाश**] अवकाश, खाली जगह ; (पाअ, प्राप्र; से १, ५४) ।

ओवास पुं [**उपवास**] उपवास, भोजनाभाव ; (पउम ४२, ८६) ।

ओवाह सक [**अव+गाह्**] अवगाहना । ओवाहइ ; (प्राप्र) ।

ओवाहिअ वि [**अपवाहित**] १ नीचे गिराया हुआ ; (से ६, १६ ; १३, ७२) । २ घुमा कर नीचे डाला हुआ, (से ७, ५५) ।

ओविअ वि [**दे**] १ आरोपित, अध्यासित, २ मुक्त, परित्यक्त, ३ हृत, छीना हुआ ; ४ न. खुशामद ; ५ रुदित, रोदन ; (दे १, १६७) । ६ वि. परिकर्मित, संस्कारित, (कप्प) । ७ खचित, व्याप्त ; (आवम) । ८ उज्ज्वालित, प्रकाशित ; (गाया १, १६) । ९ विभूषित, शृंगारित ; (प्राप) । देखो **उविय** ।

ओविद्ध वि [**अपविद्ध**] १ प्रेरित, आहत ; (से ७, १२) । २ नीचे गिराया हुआ ; (से १३, २९) ।

ओवील सक [**अव+पीडय्**] पीडा पहुँचाना, मार-पीट करना । वकृ—**ओवीलेमाण** ; (गाया १, १८—पत्र २३६) ।

ओवीलय देखो **उव्वीलय** ; (पराह १, ३) ।

ओवुब्भमाण देखो **ओवह** ।

ओवेहा स्त्री [**उपेक्षा**] १ उपदर्शन, देखना ; २ अवधीरणा ; "संजयगिहिचोयणचोयणे य वावारओवेहा" (ओघ १७१ भा) ।

ओव्वण देखो **जोव्वण** , (से ७, ६२) ।

ओव्वत्त अक [**अप+वृत्**] १ पीछे फिरना, लौटना । २ अवनत होना । संकृ—**ओवत्तिऊण** ; (ओघभा ३० टी) ।

ओव्वत्त वि [**अपवृत्त**] पिछे फिरा हुआ ; २ नमा हुआ ; अवनत, (से ८, ८४)।

ओस पुं [**दे**] देखो **ओसा** ; (राज)। °**चारण** पुं [°**चारण**] हिम के अवलम्बन से जाने वाला साधु ; (गच्छ २)।

ओसक्क अक [**अव+ष्वष्क्**] १ पीछे हटना, अपसरण करना। २ भागना, पलायन करना। ३ उदीरणा करना, उत्तेजित करना। ओसक्कइ; (पि ३०२; ३१५)। वकृ— **ओसक्कंत, ओसक्कमाण** ; (से ५, ७३; स ६४)। संकृ—**ओसक्कइत्ता, ओसक्किय, ओसविक्कऊण**; (ठा ८; दस ४; सुर २, १५)।

ओसक्क वि [**दे. अवष्वष्कित**] अपसृत, पीछे हटा हुआ; (दे १, १४६ ; पाअ)।

ओसक्कण न [**अवष्वष्कण**] १ अपसरण ; (स ६३)। २ नियत काल से पहले करना ; (धर्म ३)। ३ उत्तेजन ; (वृह २)।

ओसट्ट वि [**दे**] विकसित, प्रफुल्लित ; (षड्)।

ओसडिअ वि [**दे**] आकीर्ण, व्याप्त ; (षड्)।

ओसढ न [**औषध**] दवा, इलाज, भैषज; (हे १, २२७)।

ओसढिअ वि [**औषधिक**] वैद्य, चिकित्सक ; (कुमा)।

ओसण न [**दे**] उद्वेग, खेद ; (दे १, १५५)।

ओसण्ण वि [**अवसन्न**] १ खिन्न ; (गा ३८२ ; से १३, ३०)। २ शिथिल, ढीला ; (वव ३)। देखो **ओसन्न**।

ओसण्ण वि [**दे**] त्रुटित, खण्डित ; (दे १, १५६; षड्)।

ओसण्णं अ [**दे**] प्रायः, बहुत कर ; (कप्प)।

ओसत्त वि [**अवसक्त**] संबद्ध, संयुक्त; (गाया १, ३; स ४४६)।

ओसधि देखो **ओसहि** ; (ठा २, ३)।

ओसद्ध वि [**दे**] पातित, गिराया हुआ ; (पाअ)।

ओसन्न देखो **ओसण्ण**=अवसन्न ; (सुर ४, ३४ ; गाया १, ५ ; सं ६; पुप्फ २१)। ३ न. एकान्त ; "ओसन्ने देइ गेराहइ वा" (उव)।

ओसन्नं देखो **ओसण्णं** ; (कम्म १, १३ ; विसे २२७५)।

ओसप्पिणी स्त्री [**अवसर्पिणी**] दश कोटाकोटि सागरोपम-परिमित काल-विशेष, जिसमें सर्व पदार्थों के गुणों की क्रमशः हानि होती जाती है ; (सम ७२ ; ठा १)।

ओसमिअ वि [**उपशमित**] शान्ति प्राप्त ; (सम ३७)।

ओसर अक [**अव+तॄ**] १ नीचे आना। २ अवतरना, जन्म लेना। ओसरइ ; (षड्)।

ओसर अक [**अप+सृ**] अपसरण करना, पीछे हटना। २ सरकना, खिसकना, फिसलना। ओसरइ ; (महा; काल)। वकृ—**ओसरंत** ; (गा १८; ३६३ , से ६, २६; ६, ८२ ; १२ , ६; से ६३)।

ओसर सक [**अव+सृ**] आना, तीर्थंकर आदि महापुरुष का पधारना ; (उप ७२८ टी)।

ओसर पुं [**अवसर**] १ अवसर, समय; (सूअ १, २)। २ अन्तर ; (राज)।

ओसरण न [**अवसरण**] १ जिन-देव का उपदेश-स्थान ; (उप १३३ ; रयण १)। २ साधुओं का एकत्रित होना; (सूअ १, १२)।

ओसरण न [**अपसरण**] १ हटना, दूर होना। २ वि. दूर करने वाला ; "बहुपावकम्मओसरणं" (कुमा १)।

ओसरिअ वि [**दे**] १ आकीर्ण, व्याप्त ; २ आँख के इसारे से संज्ञित ; (षड्)। ३ अधोमुख, अवनत ; ४ न. आँख का इसारा ; (दे १, १७१)।

ओसरिअ वि [**अवसृत**] आगत, पधारा हुआ ; (उप ७२८ टी)।

ओसरिअ वि [**अपसृत**] १ पीछे हटा हुआ ; (पउम १६, २३ ; पाअ ; गा ३५१)। २ न. अपसरण ; (से २, ८)।

ओसरिअ वि [**उपसृत**] संमुखागत, सामने आया हुआ ; (पाअ)।

ओसरिआ स्त्री [**दे**] अलिन्दक, बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ; (दे १, १६१)।

ओसव पुं [**उत्सव**] उत्सव, आनन्द-क्षण ; (प्राप्र)।

ओसविय वि [**उच्छ्रयित**] ऊँचा किया हुआ ; (पउम ८, २६६)।

ओसव्विअ वि [**दे**] १ शोभा-रहित ; २ न. अवसाद, खेद ; (दे १, १६८)।

ओसह न [**औषध**] दवाई, भैषज ; (औप ; स्वप्न ५६)।

ओसहि° ही स्त्री [**ओषधि**] १ वनस्पति ; (पराण १)। २ नगरी-विशेष ; (राज)। °**महिहर** पुं [°**महिधर**] पर्वत-विशेष ; (अच्चु ४४)।

ओसहिअ वि [आवसथिक] चन्द्रार्य-दानादि व्रत को करने वाला ; (गा ३४६) ।
ओसा स्त्री [दे] १ ओस, निशा-जल ; (जी ५ : आचा ; विसे २५७६) । २ हिम, बरफ ; (दे १, १६४) ।
ओसाअ पुं [दे] प्रहार की पीडा ; (दे १, १५२) ।
ओसाअ पु [अवश्याय] हिम, ओस , (से १३, ५२ , दे ८, ५३) ।
ओसाअंत वि [दे] १ जँभाई खाता हुआ आलसी, २ बैठता ; ३ वेदना-युक्त ; (दे १, १७०) ।
ओसाअण वि [दे] १ महीशान, जमीन का मालिक , २ आपोशान ; (षड्) ।
ओसाण न [अवसान] १ अन्त , (ठा ४) । २ समीपता, सामीप्य ; (सूअ १, ४) ।
ओसाणिहाण वि [दे] विधि-पूर्वक अनुष्ठित , (दे १, १६३) ।
ओसायण न [अवसादन] परिशाटन, नाश, (विसे) ।
ओसार सक [अप+सारय्] दूर करना । ओसारेहि, (स ४०८) । कर्म—ओसारिज्जंतु; (स ४१०) । संकृ—ओसारिवि ; (भवि) ।
ओसार पुं [दे] गो-वाट, गो-वाड़ा ; (दे १, १४६) ।
ओसार पुं [अपसार] अपसरण, (से १३, १४) ।
ओसार देखो ऊसार = उत्सार, (भवि) ।
ओसार पुं [अवसार] कवच, बख्तर ; (से १२, ५६) ।
ओसारिअ वि [अपसारित] दूर किया हुआ, अपनीत , (गा ६६; पउम २३, ८) ।
ओसारिअ वि [अवसारित] अवलम्बित, लटकाया हुआ , (औप) ।
ओसास (अप) देखो ओवास = अवकाश , (भवि) ।
ओसिअ वि [दे] १ अबल, बल-रहित; (दे १, १५०) । २ अपूर्व, असाधारण; (षड्) ।
ओसिअंत वकृ [अवसीदत्] पीडा पाता हुआ ; (हे १, १०१ ; से ३, ५१) ।
ओसिंघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ ; (दे १, १६२ ; पाअ) ।
ओसिंचित्तु वि [अपसेचयितृ] अपसेक करने वाला , (सूअ २, २) ।
ओसिक्खिअ न [दे] १ गति-व्याघात ; २ अगति-निहित , (दे १, १७३) ।

ओसित्त वि [दे] उपलिप्त ; (दे १, १५८) ।
ओसिय वि [अवसित] १ पर्यवसित ; २ उपशान्त ; (सूअ १, १३) । ३ जित, पराभूत , (विसे) ।
ओसिरण न [दे] व्युत्सर्जन, परित्याग ; (षड्) ।
ओसीअ वि [दे] अधो-मुख, अवनत ; (दे १, १५८) ।
ओसीर देखो उसीर ; (पण्ह २, ५) ।
ओसीस अक [अप+वृत्] १ पीछे हटना ; २ घूमना, फिरना । सकृ—ओसीसिऊण ; (दे १, १५२) ।
ओसीस वि [ ] अपवृत्त , (दे १, १५२) ।
ओसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित ; (प्राप्र) ।
ओसुंखिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, कल्पित ; (दे १, १६१) ।
ओसुंभ सक [अव+पातय्] १ गिरा देना । २ नष्ट करना । कर्म—ओसुब्भति ; (स ७, ६१) । वकृ—ओसुंभ- (स ४, ५४) । कवकृ—ओसुब्भंत ; (पि ५३५) ।
ओसुक्क सक [तिज्] तीक्ष्ण करना, तेज करना । ओसुक्कइ ; (हे ४, १०४) ।
ओसुक्क वि [अवशुष्क] सूखा हुआ ; (पउम ५३, ७६ , दे ५, १४) ।
ओसुक्ख अक [अव+शुष्] सूखना । वकृ—ओसुक्खंत; (से ६, ६३) ।
ओसुद्ध वि [दे] १ विनिपतित ; (दे १, १५७) । २ विनाशित ; (से १३, २२) ।
ओसुब्भंत देखो ओसुंभ ।
ओसुय न [औत्सुक्य] उत्सुकता, उत्कण्ठा , (औप, पि ३२७ ए) ।
ओसोयणी, ओसोवणिया, ओसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से दूसरे को गाढ़ निद्राधीन किया जा सकता है , (सुपा २२० ; णाया १, १६ ; कप्प) ।
ओस्सा [दे] देखो ओसा , (कस) ।
ओस्साड पुं [अवशाट] नाश, विनाश ; (सण) ।
ओह देखो ओघ , (पण्ह १, ४ , गा ५१८ ; निचू १६; ओघ २, धम्म १० टी) । ५ सूत्र, शास्त्र-सम्बन्धी वाक्य ; (विसे ६५७) ।
ओह सक [अव+तॄ] नीचे उतरना । ओहइ; (हे ४, ८५) ।
ओहंक पुं [दे] हास, हाँसी ; (दे १, १५३) ।

ओहंजलिया स्त्री [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष, (जीव १)।
ओहंतर वि [ओघतर] संसार पार करने वाला (मुनि), (आचा)।
ओहंस पु [दे] १ चन्दन ; २ जिस पर चन्दन घिसा जाता है वह शिला, चन्द्रौटा, (दे १, १६८)।
ओहट्ट अक [अप+घट्ट्] १ कम होना, ह्रास पाना। २ पीछे हटना ३ सक. हटाना, निवृत्त करना। ओहट्टइ ; (हे ४, ४१६)। वकृ—**ओहट्टंत**; (से ८, ६०, सुपा २३३)।
ओहट्ट पु [दे] १ अवगुण्ठन, २ नीवी, कटी-वस्त्र ; ३ वि. अपसृत, पीछे हटा हुआ, (दे १, १६६, भवि)।
ओहट्ट } वि [अपघट्टक) निवारक, हटाने वाला, निषेधक;
ओहट्टय } (विपा १, २ ; णाया १, १६, १८)।
ओहट्टिअ वि [दे] दूसरे को दबा कर हाथ से गृहीत ; (दे १, १५६)।
ओहट्ठ पुं [दे] हास, हाँसी ; (दे १, १५३)।
ओहट्ठ वि [अवघृष्ट] घिसा हुआ ; (पउम २७, ३)।
ओहडणी स्त्री [दे] अर्गला ; (दे १, १६०)।
ओहत्त वि [दे] अवनत ; (दे १, १५६)।
ओहत्थिअ वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ ; (से ३५)।
ओहय वि [उपहत] उपघात-प्राप्त ; (णाया १, १)।
ओहय वि [अवहत] विनाशित ; (औप)।
ओहर सक [अप+हृ] अपहरण करना। कर्म—ओहरिआमि ; (पि ६८)।
ओहर अक [अव+हृ] टेढा होना, वक्र होना। २ सक. उलटा करना। ३ फिराना। संकृ—**ओहरिय**, (आचा २, १, ७)।
ओहर न [उपगृह] छोटा गृह, कोठरी ; (पण्ह १, १)।
ओहरण न [अपहरण] उठा ले जाना, अपहार, (उप ६७६)।
ओहरण न [दे] १ विनाशन, हिंसा ; २ असंभव अर्थ की संभावना ; (दे १, १७४)। ३ अस्त्र, हथियार ; (स ५३१; ६३७)। ४ वि. आघ्रात, (षड्)।
ओहरिअ वि (दे. अपहृत) १ फेंका हुआ; (से १३, ३)। २ नीचे गिराया हुआ ; (से ३, ३७)। ३ उतारा हुआ, उत्तारित ; (ओघ ८०६)। ४ अपनीत ; "ओहरियभरव्व भारवहो " (श्रा ४०)।
ओहरिस वि [दे] १ आघ्रात, सूँघा हुआ ; २ पुं. चन्दन घिसने की शिला, चन्द्रौटा, (दे १, १६६)।
ओहल देखो **उऊखल**, (हे १, १७१ ; कुमा)।
ओहलिय वि [अवखलित] निस्तेज किया हुआ, मलिन किया हुआ, "अंसुजलोहलियगंडयलो" (सुर १, १८६ ; सण)।
ओहली स्त्री [दे] ओघ, समूह ; (सुपा ३६४)।
ओहस सक [उप+हस्] उपहास करना। ओहसइ ; (नाट)। कवकृ —**ओहसिज्जंत** ; (से १५, १०)। कृ—**ओहसणिज्ज** ; (स ८)।
ओहसिअ न [दे] १ वस्त्र, कपडा ; २ वि. धूत, कम्पित ; (दे १, १७३)।
ओहसिअ वि[उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह ; (गा ६०; दे १, १७३ ; स ४४८)।
ओहाइअ वि [दे] अधो-मुख ; (दे १, १५८)।
ओहाडण न [अवघाटन] ढकना, पिधान ; (वव १)।
ओहाडणी स्त्री [दे.अवघाटनी] १ पिधानी ; (दे १, १६१)। २ एक प्रकार की ओढनी, (जीव ३)।
ओहाडिय वि [अवघाटित] १ पिहित, बन्द किया हुआ; "वइरामयकवाडोहाडियाओ" (ज १—पत्र ७१)। २ स्थगित, (आव ५)।
ओहाण न [अवधान] उपयोग, ख्याल ; (आचा)।
ओहाण न [अवधावन] अवक्रमण, पीछे हटना, (निचू १६)।
ओहाम सक [तुलय्] तौलना, तुलना करना। ओहामइ ; (हे ४, २५)। वकृ—**ओहामंत**; (कुमा)।
ओहामिय वि [तुलित] तौला हुआ, (पाअ, सुपा २६६)।
ओहामिय वि [दे] १ अभिभूत ; (षड्)। २ तिरस्कृत, (सु ३१३ ; ओघ ६०)। ३ बंद किया हुआ, स्थगित ; "जह वीणावसरवा खणेण ओहामिआ सव्वा" (पउम ४६, ६)।
ओहार सक [अव+धारय्] निश्चय करना। संकृ—**ओहारिअ**; (अभि १६४)।
ओहार पुं [दे] १ कच्छप, २ नदी वगैरः के बीच की शुष्क जगह, द्वीप ; ३ अंश, विभाग ; (दे १, १६७)। ४ जलचर-जन्तु विशेष ; (पण्ह १, ३)।

ओहार पुं [**अवधार**] निश्चय। °**व** वि [°**वत्**] निश्चय वाला ; (द्र ४६)।
ओहारइत्तु वि [**अवधारयितृ**] निश्चय करने वाला, (राज)।
ओहारइत्तु वि [**अवहारयितृ**] दूसरे पर मिथ्याभियोग लगाने वाला ; (राज)।
ओहारण न [**अवधारण**] नियम, निश्चय, (द्र २)।
ओहारणी स्त्री [**अवधारणी**] निश्चयात्मक भाषा ; "ओहारणिं अप्पियकारिणिं च भासं न भासिज्ज सया स पुज्जो" (दस ८, ३)।
ओहारिणी स्त्री [**अवधारिणी**] ऊपर देखो, (भास १४)।
ओहाव सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना। ओहावइ, (हे ४, १६० ; षड्)।
ओहाव अक [**अव+धाव्**] पीछे हटना। वकृ—**ओहावंत**, **ओहावेंत** ; (आव १२६ ; वव ८)।
ओहावण न [**अवधावन**] १ अपसर्पण, पलायन ; (वव १)। २ दीक्षा से भागना, दीक्षा को छोड़ देना, (वव ३)।
ओहावणा स्त्री [**अपभावना**] तिरस्कार, अनादर, (उप १२६ टी ; स ४१०)।
ओहावणा स्त्री [**आक्रान्ति**] आक्रमण, (काल)।
ओहाविअ वि [**अपभावित**] १ तिरस्कृत, (सुपा २२४)। २ ग्लान, ग्लानि-प्राप्त, (वव ८)।
ओहाविअ वि [**अवधावित**] पलायित, अपसृत ; (दस-चू १, २)।
ओहास पुं [**अवहास, उपहास**] हाँसी, हास्य, (प्राप्र; मै ४३)।
ओहासण न [**अवभाषण**] याचना, माँग, विशिष्ट भिक्षा, (आव ४)।
ओहि पुंस्त्री [**अवधि**] १ मर्यादा, सीमा, हद ; (गा १७०, २०६)। २ रूपि-पदार्थ का अतीन्द्रिय ज्ञान-विशेष ; (ठा ; महा)। °**जिण** पुं [°**जिन**] अवधिज्ञान वाला साधु; (पराह २, १)। °**णाण** न [°**ज्ञान**] अवधि ज्ञान; (वव १)। °**णाणावरण** न [°**ज्ञानावरण**] अवधि-ज्ञान का प्रतिबन्धक कर्म ; (कम्म १)। °**दंसण** न [°**दर्शन**] रूपी वस्तु का अतीन्द्रिय सामान्य ज्ञान ; (सम १५)। °**दंसणावरण** न [°**दर्शनावरण**] अवधिदर्शन का आवारक कर्म ; (ठा ६)। °**नाण** देखो °**णाण**, (प्रारु)। °**मरण** न [°**मरण**] मरण-विशेष, (भग १३, ७)।
ओहिअ वि [**अवतीर्ण**] उतरा हुआ ; (कुमा)।
ओहिण्ण वि [**अपभिन्न**] रोका हुआ, अटकाया हुआ, (से १३, २४)।
ओहित्थ न [**दे**] १ विषाद, खेद ; २ रभस, वेग ; ३ वि. विचारित ; (दे १, १६८)।
ओहिर देखो **ओहीर**। ओहिरइ ; (षड्)।
ओहिर देखो **ओहर**=अप+हृ। कर्म—ओहिरिआमि ; (पि ६८)।
ओहीअंत वि [**अवहीयमान**] क्रमश कम होता हुआ ; (से १२, ४२)।
ओहीण वि [**अवहीन**] १ पीछे रहा हुआ, (अभि ५६)। २ अपगत, गुजरा हुआ ; (से १२, ६७)।
ओहीर अक [**नि+द्रा**] सो जाना, निद्रा लेना ; (हे ४, १२)। वकृ—**ओहीरमाण**, (णाया १, १ ; विपा २, १, कप्प)।
ओहीरिअ वि [**अवधीरित**] तिरस्कृत, परिभूत ; (आचा २, १)।
ओहीरिअ वि [**दे**] १ उद्गीत, २ अवसन्न, खिन्न ; (दे १, १६३)।
ओहुअ वि [**दे**] अभिभूत, पराभूत ; (दे १, १५८)।
ओहुंज देखो **उवहुंज**। ओहुंजइ ; (भवि)।
ओहुड वि [**दे**] विफल, निष्फल ; (दे १, १५७)।
ओहुप्पंत वि [**आक्रम्यमाण**] जिस पर आक्रमण किया जाता हो वह ; (से ३, १८)।
ओहुर वि [**दे**] १ अवनत, अवाङ्मुख ; (गउड)। २ खिन्न, खेद-प्राप्त ; ३ स्रस्त, ध्वस्त ; (दे १, १५७)।
ओहुल्ल वि [**दे**] १ खिन्न, २ अवनत, नीचे झुका हुआ, (भवि)।
ओहूणण न [**अवधूनन**] १ कम्प, २ उल्लङ्घन ; ३ अपूर्व करण से भिन्न ग्रन्थि का भेद करना ; (आचा १, ६, १)।
ओहूय वि [**अवधूत**] उल्लंघित, (बृह १)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ओआराइसद्दसंकलणो णवमो तरंगो समत्तो। तस्समत्तीए अ सरविहाओवि समत्तो।

पाइअ-सद्द-महण्णवो।

[प्राकृत-शब्द-महार्णवः]

अर्थात्
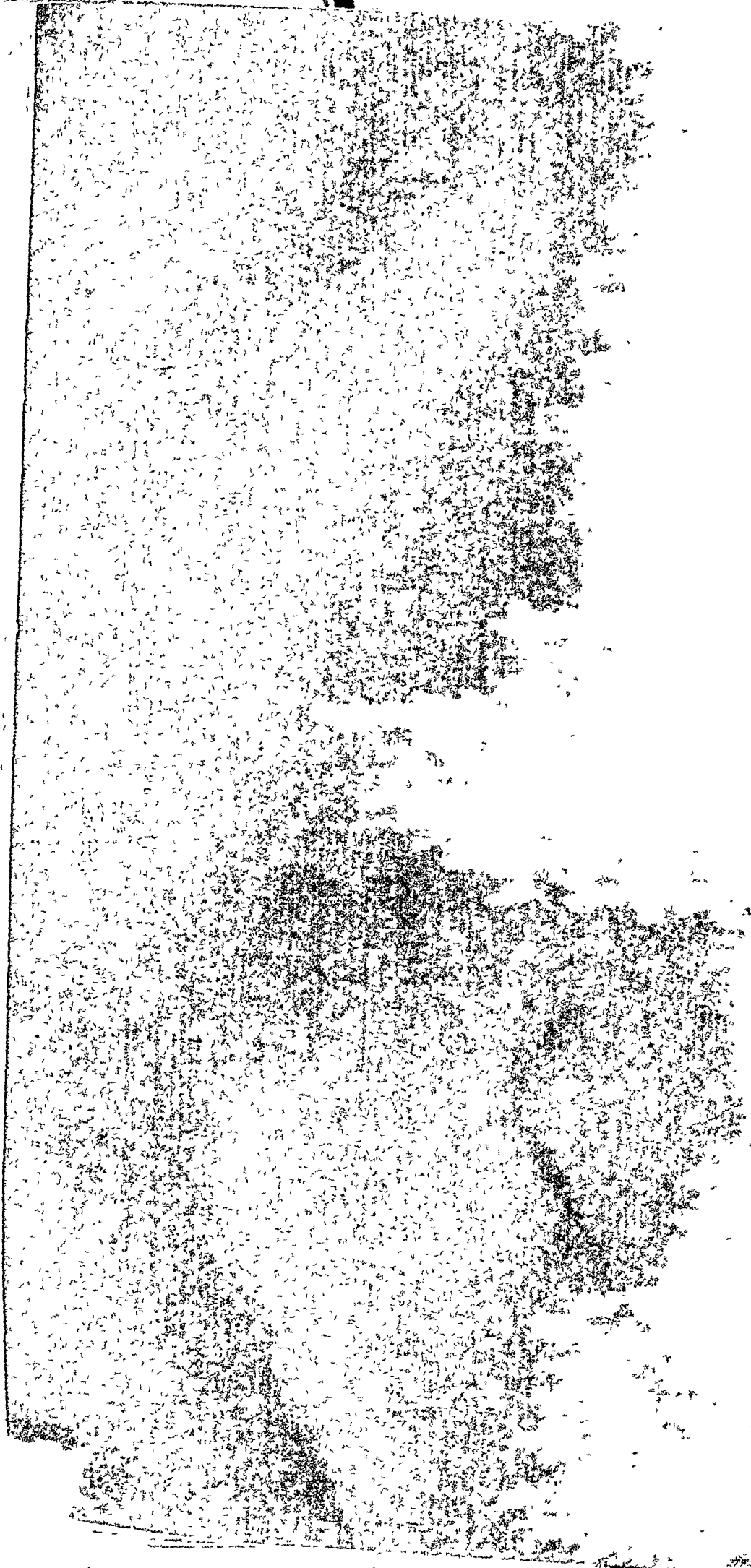
प्राकृत भाषाओं के शब्दों का, संस्कृत-प्रतिशब्दों से युक्त, हिन्दी अर्थों से अलंकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अवतरणों और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित बृहत्कोष।

(द्वितीय खण्ड)

कर्त्ता

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के प्राकृत-साहित्य-व्याख्याता, न्याय-व्याकरण-तीर्थ

पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद शेठ।

कलकत्ता

प्रथम आवृत्ति।

संवत् १९८०।

PAIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY
with Sanskrit equivalents, quotations
AND
complete references.

Vol. II.

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH, Nyaya-Vyakarana-tirtha,

Lecturer in Prakrit, Calcutta University.

CALCUTTA.

FIRST EDITION

1924

आस्ते पुस्तकमिदं कल्याणश्रेयः

संकेत–सूची।

अ	=	अव्यय।
अक	=	अकर्मक धातु।
(अप)	=	अपभ्रंश भाषा।
(अशो)	=	अशोक-लिपि।
उभ	=	सकर्मक तथा अकर्मक।
कर्म	=	कर्मणि-वाच्य।
कवकृ	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त।
क्रि	=	क्रियापद।
क्रिवि	=	क्रिया-विशेषण।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त।
(चूपै)	=	चूलिकापैशाची भाषा।
त्रि	=	त्रिलिङ्ग।
[दे]	=	देशी-शब्द।
न	=	नपुंसकलिंग।
पुं	=	पुंलिंग।
पुंन	=	पुंलिंग तथा नपुंसकलिंग।
पुंस्त्री	=	पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग।
(पै)	=	पैशाची भाषा।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक णिजन्त।
ब	=	बहुवचन।
भकृ	=	भविष्यत्कृदन्त।
भवि	=	भविष्यत्काल।
भूका	=	भूतकाल।
भूकृ	=	भूत-कृदन्त।
(मा)	=	मागधी भाषा।
वकृ	=	वर्तमान कृदन्त।
वि	=	विशेषण।
(शौ)	=	शौरसेनी भाषा।
स	=	सर्वनाम।
संकृ	=	संबन्धक कृदन्त।
सक	=	सकर्मक धातु।
स्त्री	=	स्त्रीलिंग।
स्त्रीन	=	स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग।
हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त।

:o:
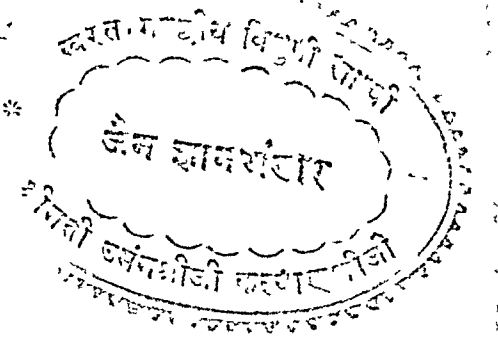
प्रमाण-ग्रन्थों (रेफरन्सेज़) के संकेतों का विवरण।

संकेत। ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिए गए हैं वह।
अंग = अंगचूलिआ	हस्तलिखित।	...	
अंत = अंतगडदसाओ	* १ रोयल एसियाटिक सोसाईटी, लंडन, १९०७	...	
	२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९२०	...	पत्र
अच्चु = अच्चुअसअअं ...	वेणीविलास प्रेस, मद्रास, १८७२ ...	...	गाथा
अजि = अजिअसंतिथव ...	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	गाथा
अणु = अणुओगदारसुत्त ...	राय धनपतिसिंहजी बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६	...	
अनु = अणुत्तरोववाइअदसा	* १ रोयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७	...	
	२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९२०	...	पत्र
अभि = अभिज्ञानशाकुन्तल	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १९१६ ...	...	पृष्ठ
अवि = अविमारक	त्रिवेन्द्र संस्कृत सिरिज़ ...	...	,,
आउ = आउरपच्चक्खाणपयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६६		गाथा
	२ शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२...		,,
आक = १ आवश्यककथा...	हस्तलिखित ...	...	
२ आवश्यक-एर्ज़्यालुंगन्	डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपज़िग, १८९७	...	पृष्ठ
आचा = आचारांग सूत्र ...	* १ उवल्यु, शब्रिं-संपादित, लाइपज़िग, १९१०		
	२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९१६	...	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
	३ प्रो. रवजीभाई देवराज संपादित, राजकोट, १९०६		,,
आचानि = आचाराङ्ग-निर्युक्ति	आगमोदय-समिति, बंबई, १९१६ ...	...	,,
आचू = आवश्यकचूर्णि ...	हस्तलिखित	...	अध्ययन
आनि = आवश्यकनिर्युक्ति ..	१ यशोविजय-जैन-ग्रन्थमाला, बनारस। २ हस्तलिखित।		
आप = आराधनाप्रकरण ...	शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२ ...		गाथा
आरा = आराधनासार ...	माणिकचन्द-दिगंबर-जैन-ग्रन्थमाला, संवत् १९७३...		,,
आव = आवश्यकसूत्र ...	हस्तलिखित	...	
आवम = ,, मलयगिरिटीका	,, ...	...	
इंदि = इन्द्रियपराजयशतक	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८	...	गाथा
इक = दि कोस्मोग्राफी देर् इंदेर्	* डॉ. डवल्यू. किर्फेल्-कृत, लाइपज़िग, १९२०	...	

* ऐसी निशानी वाले संस्करणों में अकारादि क्रम से शब्द-सूची छपी हुई है, इससे ऐसे संस्करणों के पृष्ठ आदि के अंकों का उल्लेख प्रस्तुत कोश में बहुधा नहीं किया गया है, क्योंकि पाठक उस शब्द-सूची से ही अभिलषित शब्द के स्थल को तुरन्त पा सकते हैं। जहां किसी विशेष प्रयोजन से अंक देने की आवश्यकता प्रतीत भी हुई है, वहां पर उसी ग्रन्थ की पद्धति के अनुसार अंक दिए गए हैं, जिससे जिज्ञासु को अभीष्ट स्थल पाने में विशेष सुविधा हो।

संकेत। ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।	जिसके अंक दिए गए हैं वह।
उत= उत्तराध्ययन-सूत्र	१ राय धनपतिसिंह बहादूर, कलकत्ता, संवत् १९३६...	अध्ययन०
	२ स्व-संपादित, कलकत्ता, १९२३	"
उत का = "	डॉ. जे. कारपेंटिअर-संपादित, १९२१ ...	"
उत्तनि = उत्तराध्ययननिर्युक्ति	हस्तलिखित	"
उत्तर = उत्तररामचरित्र	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५ ...	पृष्ठ
उप= उपदेशपद	हस्तलिखित	गाथा
उप पृ = उपदेशपद	जैन-विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा... ...	पृष्ठ
उप टी = उपदेशपद-टीका	हस्तलिखित	मूल-गाथा
उर = उपदेशरत्नाकर	देवचन्द लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१४...	अंश, तरंग
उव = उवएसमाला	* डॉ. एल्. पी. टेसेटोरि-संपादित, १९१३ ...	
उवर = उपदेशरहस्य	मनसुखभाई भगुभाई, अमदावाद, संवत् १९६७ ...	गाथा
उवा = उवासगदसाओ	* एसियाटिक सोसाईटी, बंगाल, कलकत्ता, १८९० ...	
ऊरु = ऊरुभंग	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	पृष्ठ
ओघ = ओघनिर्युक्ति	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९ ...	गाथा
ओघ भा= ओघनिर्युक्ति-भाष्य	"	"
औप = औपपातिकसूत्र	* डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपज़िग, १८८३ ...	
कप्प = कल्पसूत्र	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपज़िग, १८७९ ...	
कप्पू = कर्पूरमञ्जरी	* हार्वर्ड् ओरिएन्टल् सिरिज्, १९०१ ...	
कम्म १= कर्मग्रन्थ पहला	* आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मण्डल, आगरा, १९१८	गाथा
कम्म २= " दूसरा	* " " "	"
कम्म ३= " तीसरा	* " " १९१९	"
कम्म ४= " चौथा	* " " १९२३	"
कम्म ५= " पाँचवाँ	भीमसिंह माणक, बंबई, संवत् १९६८ ...	"
कम्म ६= " छठवाँ	"	"
कम्मप = कर्मप्रकृति	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, १९१७ ...	पत्र
करु = करुणावज्रायुधम्	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, १९१६ ...	पृष्ठ
कर्ण = कर्णभार	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	"
कस = (बृहत्) कल्पसूत्र	* डॉ, डबल्यु. शब्रिं-संपादित, लाइपज़िग, १९०५ ...	
काप्र = काव्यप्रकाश	वामनाचार्यकृत-टीका-युक्त, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई ...	पृष्ठ
काल = कालकाचार्यकथानक	* डॉ. एच् जेकोबी-संपादित, ज़ेड्-डी-एम्-जी, खंड ३४, १८८०	
कुप्र = कुमारपालप्रतिबोध	गायकवाड-ओरिएण्टल्-सिरिज्, १९२० ...	पृष्ठ
कुमा = कुमारपालचरित	* बंबई-संस्कृत-सिरिज्, १९०० ...	
कुम्मा = कुम्मापुत्तचरित्र	स्व-संपादित, कलकत्ता, १९१९	पृष्ठ
खेत्त = लघुक्षेत्रसमास	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८ ...	गाथा
गउड = गउडवहो	* बंबई-संस्कृत-सिरिज्, १८८७	

संकेत। ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गए हैं वह।
गच्छ = गच्छाचारपयन्नो	हस्तलिखित	...	अधिकार
गण = गणधरस्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८...	...	गाथा
गणि = गणिविज्जापयन्नो	राय धनपतिसिंह बहादूर, कलकत्ता, १८४२	...	"
गा = + गाथासप्तशती	* १ डॉ. ए. वेबर्-संपादित, लाइपज़िग, १८८१		"
	२ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९११	...	"
गु = गुरुपारतन्त्र्य-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	"
गुण = गुणानुरागकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	"
गुभा = गुरुवन्दनभाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	"
गुरु = गुरुप्रदक्षिणाकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	"
गोय = गौतमकुलक	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६५	...	"
चउ = चउसरणपयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	...	"
	२ शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२	...	"
चंड = प्राकृतलक्षण	* एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १८८०	...	
चंद = चंदपन्नत्ति	हस्तलिखित ...	...	पाहुड
चारु = चारुदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत -सिरिज्	...	पृष्ठ
चेइय = चैत्यवन्दन भाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	गाथा
जं = जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	देवचंद लालभाई पु० फंड, बम्बई, १९२०	...	वक्षस्कार
जय = जयतिहुअण-स्तोत्र	जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम, प्रथमावृत्ति	...	गाथा
जी = जीवविचार	आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, संवत् १९७८		"
जीत = जीतकल्प	हस्तलिखित ...	...	
जीव = जीवाजीवाभिगमसूत्र	देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	...	प्रतिपत्ति
जीवा = जीवानुशासनकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	गाथा
जो = ज्योतिष्करण्डक	हस्तलिखित ...	...	पाहुड
टि = ‡ टिप्पण (पाठान्तर)	...	...	
टी = † टीका	...	...	
ठा = ठाणंगसुत	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१८-१९२०	...	ठाण०

+ लाइपज़िग वाले संस्करण का नाम "सप्तशतक डेस हाल" है और बम्बई वाले का "गाथासप्तशती"। ग्रन्थ एक ही है, परन्तु बम्बई वाले संस्करण में सात शतकों के विभाग में करीब ७०० गाथाएँ छपी हैं और लाइपज़िग वाले में सीधे नंबर से ठीक १०००। एक से ७०० तक की गाथाएँ दोनों संस्करणों में एक-सी हैं, परन्तु गाथाओं के क्रम में कहीं कहीं दो चार नंबरों का आगा-पीछा है। ७०० के बाद का और ७०० के भीतर भी जहां गाथांक के अनन्तर 'अ' दिया है वह नंबर केवल लाइपज़िग के ही संस्करण का है।

‡ पाठान्तर वाले संस्करणों के जो पाठान्तर हमें उपादेय मालूम पड़े हैं उन्हें भी इस कोष में स्थान दिया गया है और प्रमाण के पास 'टि' शब्द जोड़ दिया है जिससे उस शब्द को उसी स्थान के टिप्पन का समझना चाहिए।

† जहां पर प्रमाण में ग्रन्थ-संकेत और स्थान-निर्देश के अनन्तर 'टी' शब्द लिखा है वहां उस ग्रन्थ के उसी स्थान की टीका के प्राकृतांश से मतलब है।

संकेत। ग्रन्थका नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिए गए हैं वह।
णंदि = णंदिसूत्र	हस्तलिखित		
णमि = णमिऊण-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	गाथा
णाया = णायाधम्मकहासुत	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	...	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
तंदु = तंदुलवेयालियपयन्नो	हस्तलिखित	...	
ति = तिजयपहुत्त	जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	गाथा
तित्थ = तित्थुग्गालियपयन्नो	हस्तलिखित	...	
ती = तीर्थकल्प	"	...	कल्प
दं = दंडकप्रकरण	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	..	गाथा
	२ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९०८		"
दंस = दर्शनशुद्धिप्रकरण	हस्तलिखित	...	तत्व
दस = दशवैकालिकसूत्र	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९००	...	अध्ययन०
	२ डॉ. जीवराज घेलाभाई, अमदावाद, १९१२		"
दसचू = दशवैकालिकचूलिका	"	..	चूलिका
दसनि = दशवैकालिकनिर्युक्ति	भीमसिंह माणेक, बंबई, १९००	...	अध्ययन
दसा = दशाश्रुतस्कन्ध	हस्तलिखित	...	"
दीव = दीवसागरपन्नत्ति	"	..	
दूत = दूतघटोत्कच	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	...	पृष्ठ
दे = देशीनाममाला	बम्बई-संस्कृत-सिरिज्, १८८०	...	वर्ग, गाथा
देव = देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक	हस्तलिखित	...	
द्र = द्रव्यसित्तरी	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९५८	..	गाथा
	२ शा वेणीचंद सूरचंद, म्हेसाणा, १९०६	...	"
धण = ऋषभपंचाशिका	काव्यमाला, सप्तम गुच्छक, बम्बई, १८९०	..	"
धम्म = धर्मरत्नप्रकरण	१ जैन-विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा, १९०५	...	मूल-गाथा
	२ हस्तलिखित	..	"
धर्म = धर्मसंग्रह	"	...	अधिकार
धर्मा = धर्माभ्युदय	जैन-आत्मानन्द-सभा, भावनगर, १९१८		पृष्ठ
ध्व = ध्वन्यालोक	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई	...	"
नव = नवतत्त्वप्रकरण	१ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर	...	गाथा
	२ आय-जैन-धर्म-प्रवर्तक-सभा, अमदावाद, १९०६	...	"
नाट = +नाटकीयप्राकृतशब्दसूची		...	
निचू = निशीथचूर्णि	हस्तलिखित	...	उद्देश
निर = निरयावलीसूत्र	१ हस्तलिखित	...	वर्ग, अध्य०
	२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२२	..	"
निसी = निशीथसूत्र	हस्तलिखित	...	उद्देश
पउम = पउमचरिअ	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	..	पर्व, गाथा

+इस पुस्तक के शब्द, श्रद्धेय श्रीयुत केशवलालभाई प्रेमचंद मोदी, बी.ए., एल्. एल्.बी. के हस्त-लिखित प्राकृत शब्द-संग्रह से लिए गए हैं। इस शब्द-संग्रह में जहां जहां नाटकीय-प्राकृत-शब्द-सूची के अनुसार उन नाटक ग्रन्थों के जो नाम और पृष्ठांक दिये गये हैं वहां वहां वे ही अविकल नाम और पृष्ठांक, इस कोष में 'नाट—' के बाद रखे गये हैं।

$x - y = 0$

(d) $2x - 3y = 0$

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गए हैं वह।
पच	= पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित	...	द्वार, गाथा
		२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९१९	...	"
पंचभा	= पंचकल्पभाष्य	हस्तलिखित ...	...	
पंचव	= पंचवस्तुक	" ...	...	द्वार
पंचा	= पंचासकप्रकरण	जैन धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	...	पंचासक
पंचू	= पंचकल्पचूर्णि	हस्तलिखित ...	...	
पंनि	= पंचनिर्ग्रन्थीप्रकरण	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पंरा	= पंचरात्र	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	...	पृष्ठ
पंसु	= पंचसूत्र	हस्तलिखित ...	...	सूत्र
पक्खि	= पक्खिसूत्र	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	
पच्च	= महापच्चक्खाणपयन्नो	शा बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२	...	गाथा
पडि	= पंचप्रतिक्रमणसूत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	
		२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १९२१	...	
पण्ण	= पण्णवणासुत्त	राय धनपतिसिंह बाहादुर, बनारस, संवत् १९४०	...	पद
पण्ह	= प्रश्नव्याकरणसूत्र	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	...	श्रुतस्कन्ध, द्वार
पभा	= पच्चक्खाण भाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	..	गाथा
पव	= प्रवचनसारोद्धार	" संवत् १९३४	..	द्वार
पसं	= प्रज्ञापनोपाङ्ग-तृतीयपदसंग्रहणी	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पाअ	= पाइअलच्छीनाममाला	* बी. बी. एण्ड कंपनी, भावनगर, संवत् १९७३	...	
पि	= ग्रामेटिक् देर् प्राकृत स्प्राख्न्	डॉ. आर्. पिशेल्-कृत, १९००	...	पैरा
पिंग	= प्राकृतपिंगल	* एसियाटिक् सोसाइटी, बंगाल, कलकता, १९०२	...	
पिंड	= पिंडनिर्युक्ति	हस्तलिखित	...	गाथा
पुप्फ	= पुष्पमालाप्रकरण	जैन-श्रेयस्कर-मंडल, म्हेसाणा, १९११	...	"
प्रति	= प्रतिमानाटक	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	...	पृष्ठ
प्रबो	= प्रबोधचन्द्रोदय	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १९१०	...	"
प्रयौ	= प्रतिमायौगन्धरायण	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	...	"
प्राप	= इन्ट्रडक्शन् टु दि प्राकृत	* पंजाब युनिवर्सिटि, लाहोर, १९१७	...	
प्राप्र	= प्राकृतप्रकाश	* डॉ. कॉवेल्-संपादित, लंडन, १८६८	...	
प्रामा	= प्राकृतमार्गोपदेशिका	* शाह हर्षचन्द्र भूराभाई, बनारस, १९११	...	
प्रारू	= प्राकृतशब्दरूपावली	* शेठ मनसुखभाई भगुभाई, अमदावाद, संवत् १९६८	...	
प्रासू	= प्राकृतसूक्तरत्नमाला	जैन-विविध-साहित्य शास्त्र-माला, बनारस, १९१९	...	गाथा
बाल	= बालचरित	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज् ...	...	पृष्ठ
बृह	= बृहत्कल्पभाष्य	हस्तलिखित ...	...	उद्देश
भग	= भगवतीसूत्र	* १ जिनागमप्रकाश सभा, बम्बई, संवत् १९७४	...	
		२ आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८-१९१९-१९२१	...	शतक, उद्देश

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।	जिसके अंक दिये गए हैं वह।
भत्त	= भत्तपरिण्णापयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर. संवत् १९६६	गाथा
		२ शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १९६२	,,
भवि	= भविसतकहा	* डॉ, एच्. जेकोबी-संपादित, १९१८	
भाव	= भावकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	गाथा
भास	= भाषारहस्य	शेठ मनसुखभाई भगुभाई, अमदावाद.	,,
मध्य	= मध्यमव्यायोग	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज्	पृष्ठ
महा	= आउस्गेव्यालते-एरस्यालुंगन् इन् महाराष्ट्री	* डॉ, एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपज़िग, १८८६	
महानि	= महानिशीथसूत्र	हस्तलिखित	अध्ययन
मा	= मालविकाग्निमित्र	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	पृष्ठ
माल	= मालतीमाधव	,, ,,	,,
मुणि	= मुनिसुव्रतस्वामिचरित	हस्तलिखित	गाथा
मुद्रा	= मुद्राराक्षस	बम्बई-संस्कृत-सिरिज्, १९१७	पृष्ठ
मृच्छ	= मृच्छकटिक	१ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१६	,,
		२ बम्बई-संस्कृत-सिरिज्, १८९६	,,
मै	= मैथिलीकल्याण	माणिकचंद्र-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थमाला, बम्बई, १९७३	,,
रंभा	= रंभामंजरी	* निर्णय-सागर प्रेस, बम्बई, १८८९	
रयण	= रयणसेहरनिवकहा	स्व-संपादित, बनारस, १९१८	पृष्ठ
राज	= अभिधानराजेन्द्र	* जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम.	
राय	= रायपसेणीसुत	हस्तलिखित	
लघु	= लघुसंग्रहणी	भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९०८	गाथा
लहुअ	= लघु-अजितशान्ति-स्मरण	स्व-संपादित, कलकता, संवत् १९७८	,,
वज्जा	= वज्जालग्ग	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकता	पृष्ठ
वव	= व्यवहारसूत्र, सभाष्य	हस्तलिखित	उद्देश
वसु	= वसुदेवहिंडि	,,	
वा	= वाग्भटकाव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	पृष्ठ
वाअ	= वाग्भटालंकार	,, १९१६	,,
विक	= विक्रमोर्वशीय	,, १९१४	,,
विक्र	= विक्रान्तकौरव	माणिकचंद-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थ-माला, संवत् १९७२	,,
विपा	= विपाकश्रुत	स्वसंपादित, कलकता, संवत् १९७६	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
विवे	= विवेकमंजरीप्रकरण	स्वसंपादित, बनारस, संवत् १९७५-७६	गाथा
विसे	= विशेषावश्यक भाष्य	स्व-संपादित, बनारस, वीर-संवत् २४४१	,,
वृष	= वृषभानुजा	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९५	पृष्ठ
वेणी	= वेणीसंहार	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	,,
वै	= वैराग्यशतक	पिंडलभाई जोईभाई पटेल, अमदावाद, १९२०	गाथा
श्रा	= श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	मूल-गाथा

संकेत ।	ग्रन्थका नाम ।	संस्करण आदि ।		जिसके अंक दिये गए हैं वह ।
षड्	= षड्भाषाचन्द्रिका	* बम्बई संस्कृत एन्ड् प्राकृत सिरिज्, १९१६	...	
स	= समराइच्चकहा	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०८-२३	...	पृष्ठ
सं	= संबोधसत्तरी	विट्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अमदावाद, १९२०	...	गाथा
संक्षि	= संक्षिप्तसार	१ हस्तलिखित ...	...	
		२ संस्कृत प्रेस डिपोजिटरी, कलकत्ता, १८८९	...	पृष्ठ
संग	= बृहत्संग्रहणी	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६८	...	गाथा
		२ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७३	...	"
संघ	= संघाचारभाष्य	हस्तलिखित ...	...	प्रस्ताव
संच	= शान्तिनाथचरित्र (देवचन्द्रसूरि-कृत)	" ...	...	
संति	= संतिकरस्तोत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११		गाथा
		२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल,आगरा, १९२१		"
संथा	= संथारगपयन्नो	१ हस्तलिखित	...	"
		२ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	...	"
सट्ठि	= सट्ठिसयपयरण	स्व-संपादित, बनारस, १९१७ ...	...	"
सण	= सनत्कुमारचरित	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, १९२१	...	
सत्त	= उपदेशसप्ततिका	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९७६	...	गाथा
सम	= समवायांगसूत्र	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८	...	पृष्ठ
सम्म	= सम्मतिसुत्र	जैन-धर्म- सारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६५	...	गाथा
सम्य	= सम्यक्त्वस्वरूप पच्चीसी	अबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	"
सार्ध	= गणधरसार्धशतकप्रकरण	जौहरी चुन्नीलाल पन्नालाल, बम्बई, १९१६	...	"
सिग्ध	= सिग्घमवहरउ-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	"
सुज्ज	= सूर्यप्रज्ञप्ति	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९ ...	...	पाहुड
सुपा	= सुपासनाहचरित्र	स्व-संपादित, बनारस, १९१८-१९ ...	...	पृष्ठ
सुर	= सुरसुंदरीचरित्र	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१६	...	परिच्छेद, गाथा
सूअ	= सूअगडांगसुत्त	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९३६	...	श्रुतस्कंध, अध्य०
		२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१७		"
सूक्त	= सूक्तमुक्तावली	दे०ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२	...	पत्र
से	= सेतुबन्ध	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९५ ...	...	आश्वासक,पद्य
स्वप्न	= स्वप्नवासवदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरिज् ...	...	पृष्ठ
हे	= हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण	* १ डॉ. आर्. पिशेल्-संपादित, १८७७	...	पाद,सूत्र
		२ बम्बई-संस्कृत-सिरिज्, १९००	...	"
हेका	= हेमचन्द्र-काव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९०१	...	पृष्ठ

—०—०—०—

क

क पुं [**क**] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम व्यञ्जनाक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; (प्राप, प्रामा) । २ ब्रह्मा ; (दे ५, २६) । ३ किए हुए पाप का स्वीकार ; "कत्ति कडं मे पावं" (आवम) । ४ न. पानी, जल : (स ६११)। ५ सुख , (सुर १६,५५) । देखो °अ = क ।

क देखो **किम्** ; (गउड ; महा) ।

कइ वि. व. [**कति**] कितना "तं भंते ! कइदिसं ओभासेइ" (भग) । °**अ** वि [°**क**] कतिपय, कईएक, "मोएमि जाव तुज्झं, पियरं कइएसु दियहेसु" (पउम ३४,२७) । °**अव** वि [°**पय**] कतिपय,कईएक; (हे १,२५०) । °**इ** अ [°**चित्**] कईएक ; (उप पृ ३) । °**त्थ** वि (°**थ** कितनावाँ, कौन संख्या का ? ; (विसे ६१७) । °**वइय**, °**वय**, °**वाह** वि [°**पय**] कईएक ; (पउम ६१, १६ ; उवा ; पड् ; कुमा ; हे १,२५०) । °**वि** अ [°**अपि**] कईएक ; (काल; महा) । °**विह** वि [°**विध**] कितने प्रकार का; (भग) ।

कइ अ [**कदा**] कब, किस समय ? "एआई उण मज्झो थणभारं कइ णु उव्वहइ ? " (गा ८०३) ।

कइ पु [**कपि**] बन्दर, वानर ; (पाअ) । °**दीव** पु [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष, वानर-द्वीप , (पउम ५५,१६) । °**द्धय**, °**धय** पुं [°**ध्वज**] १ वानर-द्वीप के एक राजा का नाम; (पउम ६,८३) । २ अर्जुन ; (हे २, ६०) । °**हसिअ** न [°**हसित**] १ स्वच्छ आकाश में अचानक बीजली का दर्शन ; २ वानर के समान विकृत मुँह का हसना ; (भग ३,६) ।

कइ देखो **कवि** = कवि ; (गउड ; सुर १, २७) । °**अर** (अप) पुं [**कवि**] श्रेष्ठ कवि; (पिंग) । °**मा** स्त्री [°**त्व**] कवित्व, कविपन; (षड्)। °**राय** पुं [°**राज**] १ श्रेष्ठ कवि, (पिंग) । २ "गउडवहो" नामक प्राकृत काव्य के कर्ता वाक्पतिराज-नामक कवि ; "आसि कइरायइंधो वप्पइराओ त्ति पणइलवो" (गउड ७९७) ।

कइअ पुं [**क्रयिक**] खरीदने वाला, ग्राहक ; "किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ" (उत्त ३५, १४) ।

कइअंक } **कइअंकसइ** } पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे २, १३) ।

कइअव न [**कैतव**] कपट, दम्भ ; (कुमा; प्राप्र) ।

कइआ अ [**कदा**] कब, किस समय ? ; (गा १३८ ; कुमा) ।

कइउल्ल वि [**दे**] थोडा, अल्प ; (दे १, २१) ।

कइंद पुं [**कवीन्द्र**] श्रेष्ठ कवि ; (गउड) ।

कइकच्छु स्त्री [**कपिकच्छु**] वृक्ष-विशेष, केवाँच ; (गा ५३२) ।

कइगई स्त्री [**कैकयी**] राजा दशरथ की एक रानी , (पउम ६५, २१) ।

कइत्थ पु [**कपित्थ**] १ वृक्ष-विशेष, कैथ का पेड़ ; २ फल-विशेष, कैथ, कैथा ; (गा ६४१) ।

कइम वि [**कतम**] बहुत में से कौन सा ? (हे १, ४८ ; गा ११६) ।

कइयहा (अप) अ [**कदा**] कब, किस समय ? (सण) ।

कइर पु [**कदर**] वृक्ष-विशेष , "जं कइररुक्खहिट्ठा इह दससकोडी दविणमत्थि" (श्रा १६) ।

कइरव न [**कैरव**] कमल, कुमुद ; (हे १, १५२) ।

कइरविणी स्त्री [**कैरविणी**] कुमुदिनी, कमलिनी; (कुमा) ।

कइलास पु [**कैलास**, °**श**] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत विशेष ; (पाअ , पउम ५, ५३ ; कुमा) । २ मेरु पर्वत ; (निचू १३) । ३ देव-विशेष, एक नाग-राज , (जीव ३) । °**सय** पुं [°**शय**] महादेव, शिव ; (कुमा) । देखो **केलास** ।

कइलासा स्त्री [**कैलासा**, °**शा**] देव-विशेष की एक राजधानी ; (जीव ३) ।

कइल्लवइल्ल पुं [**दे**] स्वच्छन्द-चारी बैल, (दे २, २५)।

कइविया स्त्री [**दे**] बरतन-विशेष, पीकदान, पीकदानी , (णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

कइस (अप) वि [**कीदृश**] कैसा ; (कुमा) ।

कईया (अप) देखो **कइआ**; (सुपा ११६) ।

कईवय देखो **कइवय**; (पउम २८, १६) ।

कईस पु [**कवीश**] श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि ; (पिंग) ।

कईसर पुं [**कवीश्वर**] उत्तम कवि ; (रंभा) ।

कउ पुं [**क्रतु**] यज्ञ , (कप्पू) ।

कउ (अप) अ [**कुतः**] कहां से ; (हे ४, ४१६) ।

कउअ वि [**दे**] १ प्रधान, मुख्य ; २ चिन्ह निशान , (दे २, ५६) ।

कउच्छेअय पु [**कौक्षेयक**] पेट पर बँधी हुई तलवार ; (हे १, १६२ ; पड्) ।

कउड न [दे. ककुद] देखो **कउह**=ककुद ; (पंड्)।
कउरअ } पुं [**कौरव**] १ कुरु देश का राजा ; २ पुत्री.
कउरव } कुरु वंश में उत्पन्न; ३ वि. कुरु (देश या वंश) से संबन्ध रखने वाला ; ४ कुरु देश में उत्पन्न , (प्राप्र , नाट ; हे १, १६२)।
कउल न [**दे**] १ करीष, गोइठा का चूर्ण , (दे २, ७)।
कउल न [**कौल**] तान्त्रिक मत का प्रवर्तक ग्रन्थ, कौलोपनिषद् वगैरः। २ वि. शक्ति का उपासक। ३ तान्त्रिक मत को जानने वाला; ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी। ५ देवता-विशेष ;

" विससिज्जंतमहापसुदंसणसंभमपरोप्परारूढा ।
गयणे च्चिय गंधउडिं कुणंति तुह कउलणारीओ "
(गउड)।

कउलव देखो **कउरव**; (चंड)।
कउसल न [**कौशल**] कुशलता, दक्षता, हुशियारी ; (हे १, १६२ ; प्राप्र)।
कउह न [**दे**] नित्य, सदा, हमेशा ; (दे २, ५)।
कउह पुंन [**ककुद**] १ बैल के कंधे का कुब्बड , २ सफेद छत्र वगैरः राज-चिह्न ; ३ पर्वत का अग्रभाग, टोंच , (हे १, २२५)। ४ वि. प्रधान, मुख्य ;

" कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु ।
सद्देसु रज्जमाणा, रमंती साइंदियवसट्टा "
(णाया १, १७)।

देखो **ककुह**।
कउहा स्त्री [**ककुभ्**] १ दिशा ; (कुमा)। २ शोभा, कान्ति ; ३ चम्पा के पुष्पों की माला ; ४ इस नाम की एक रागिणी ; ५ शास्त्र ; ६ विकीर्ण केश ; (हे १, २१)।
कए } अ [**कृते**] वास्ते, निमित्त, लिए ; "ततो सो तस्स
कएण } कए, खणेइ खाणीउणेगठाणेसु " (कुम्मा १५ ;
कएणं } कुमा)। " अवरहमज्जिरीणं कएण कामो वहइ चावं " (गा ४७३)।

" लज्जा चत्ता सीलं च खंडिअं अजसघोसणा दिण्णा ।
जस्स कएणं पिअसहि ! सो चेअ जणो जणो जाओ "
(गा ५२५)।

कओ अ [**कुतः**] कहां से ? (आचा ; उव, रयण २६)। °**हुत्त** क्रिवि [**दे**] किस तरफ ; " कओहुत्तं गंतव्वं ?" (महा)।

कओ अ [**क्व**] कहां, किस स्थान में ; " कओ वयामो ?" (णाया १, १४)।
कओल देखो **कवोल** , (से ३, ४६)।
कंइ अ [**दे**] किससे ; " कंइ पंइ सिक्खिउ ए गइलालस " (विक १०२)।
कंक पुं [**कङ्क**] १ पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १; ४ ; अनु ४)। २ एक प्रकार का मजबूत और तीक्ष्ण लोहा ; (उप ४६४)। ३ वृक्ष-विशेष ; ' कंकफलसरलनयणा—" (उप १०३१ टी)। °**पत्त** न [°**पत्र**] बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण, जो उड़ता है ; (वेणी १०२)। °**लोह** पुंन [°**लोह**] एक प्रकार का लोहा; (उप पृ ३२६; सुपा २०७)। °**वत्त** देखो °**पत्त**, (नाट)।
कंकइ पु [**कङ्कति**] वृक्ष-विशेष, नागवला-नामक ओषधि ; (उप १०३१ टी)।
कंकड पुं [**कङ्कट**] वर्म, कवच , " रामो चावे सकंकडे दिट्ठी देंतो " (पउम ४४, २१ ; औप)।
कंकडइय वि [**कङ्कटित**] कवच वाला, वर्मित ; (पण्ह १, ३)।
कंकडुअ } पुं [**काङ्कटुक**] दुर्भेद्य माष, उरद की एक
कंकडुग } जाति, जो कभी पकता ही नहीं ; "कंकडुओ विव मासो, सिद्धिं न उवेइ जस्स ववहारो " (वव ३)।
कंकण न [**कङ्कण**] हाथ का आभरण-विशेष, कँगन ; (श्रा २८ ; गा ६६)।
कंकति पुं [**कङ्कति**] ग्राम-विशेष ; (राज)।
कंकनिज्ज पुंस्त्री [**काङ्कतीय**] माघराज वंश में उत्पन्न ; (राज)।
कंकय पुं [**कङ्कत**] १ नागवला-नामक ओषधि। २ सर्प की एक जाति। ३ पुंस्त्री. कङ्घा, केश सँवारने का उपकरण; (सुअ १, ४)।
कंकलास पु [**कृकलास**] कर्कोट, साँप की एक जाति ; (पाअ)।
कंकाल न [**कङ्काल**] चमड़ी और मांस रहित अस्थि-पञ्जर; " कंकालवेसाए " (श्रा १६), " अह नरकरंककंकालसंकुले भीसणमसाणे " (वज्जा २० ; दे २, ५३)।
कंकावंस पुं [**कङ्कावंश**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण ३३)।
कंकिल्लि देखो **कंकेल्लि** , (सुपा ५५६ ; कुमा)।
कंकेलि पुं [**कङ्केलि**] अशोक वृक्ष ; (मै ६० ; विक २८)।

कंकेल्लि पुं [**दे. कङ्केल्लि**] अशोक वृक्ष ; (दे २, १२; गा ४०४ , सुपा १४०; ५६२ ; कुमा) ।

कंकोड न [**दे. कर्कोट**] १ वनस्पति-विशेष, ककरैल, एक प्रकार की सब्जी, जो वर्षा में ही होती है, (दे २, ७ ; पाअ) । २ पुं एक नागराज , ३ साँप की एक जाति ; (हे १, २६ , पड्) ।

कंकोल पु [**कङ्कोल**] १ कङ्कोल, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद , २ न. उस वृक्ष का फल ; " सकप्पूरेला-कक्कोल तंबोलं " (उप १०३१ टी) । देखो **कक्कोल** ।

कंख सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, वाँछना । कंखइ , (हे ४, १९२ ; पड्) ।

कंखण न [**काङ्क्षण**] नीचे देखो , (धर्म २) ।

कंखा स्त्री [**काङ्क्षा**] १ चाह, अभिलाष ; (सूअ १, १५) । २ आसक्ति, गृद्धि , (भग) । ३ अन्य धर्म की चाह अथवा उसमें आसक्ति रूप सम्यक्त्व का एक अतिचार ; (पडि) । °**मोहणिज्ज** न [°**मोहनीय**] कर्म-विशेष ; (भग) ।

कंखि वि [**काङ्क्षिन्**] चाहने वाला, (आचा ; गउड , सुर १३, २४३) ।

कंखिअ वि [**काङ्क्षित**] १ अभिलषित । २ काङ्क्षा-युक्त, चाह वाला ; (उवा; भग) ।

कंखिर वि [**काङ्क्षितृ**] चाहने वाला, अभिलाषी , (गा ५५; सुपा ५३७) ।

कंगणी स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, कॉंगनी , (पराण १) ।

कंगु स्त्रीन [**कङ्गु**] १ धान्य-विशेष, काँगन ; (ठा ७ , दे ७, १) । २ वल्ली-विशेष , (पराण १) ।

कंगुलिया स्त्री [**दे.कङ्गुलिका**] जिन-मन्दिर की एक बड़ी आशातना, जिन-मन्दिर में या उसके नजदीक लघु या वृद्ध नीति का करना, (धर्म २) ।

कंचण पु [**काञ्चन**] १ वृक्ष-विशेष , २ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी , (उप ७२८ टी) । ३ न. सुवर्ण, सोना ; (कप्प) । °**उर** न [°**पुर**] कलिंग देश का एक मुख्य नगर; (आक) । °**कूड** न [°**कूट**] १ सौमनस-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर, (ठा ७) । २ देव विमान-विशेष, (सम १२) । ३ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८) । °**केअई** स्त्री [°**केतकी**]लता-विशेष ; (कुमा) । °**तिलय** न [°**तिलक**] इस नाम का विद्याधरों का एक नगर; (इक) । °**त्थल** न [°**स्थल**] स्वनाम-ख्यात एक नगर ; (दंस) । °**वलाणग** न [°**वलानक**] चौरासी तीर्थों में एक तीर्थ का नाम ; (राज) । °**सेल** पुं [°**शैल**] मेरु पर्वत; (कप्पू)।

कंचणग पुं [**काञ्चनक**] १ पर्वत विशेष , (सम ७०)। २ काञ्चनक पर्वत का निवासी देव , (जीव ३) ।

कंचणा स्त्री [**कञ्चना**] स्वनाम ख्यात एक स्त्री ; (पराह १, ४) ।

कंचणार पु [**कञ्चनार**] वृक्ष-विशेष ; (पउम ५३, ७६ ; कुमा) ।

कंचणिया स्त्री [**काञ्चनिका**] रुद्राक्ष-माला ; (औप) ।

कंचा (पै) देखो **कण्णा** ; (प्राप्र) ।

कंचि } स्त्री [**काञ्चि,°ञ्ची**] १ स्वनाम-ख्यात एक देश;
कंची } (कुमा) । २ कटी-मेखला, कमर का आभूषण ; (पाअ) । ३ स्वनाम-ख्यात एक नगरी ; (सुपा ४०६) ।

कंची स्त्री [**दे**] मुशल के मुँह में रक्खी जाती लोहे की एक वलयाकार चीज ; (दे २, १) ।

कंचु } पु [**कञ्चुक**] १ स्त्री का स्तनाच्छादक वस्त्र,
कंचुअ } चोली ; (पउम ६, ११ ; पाअ) । २ सर्प-त्वक्, साँप की कचली , (विसे २५१७) । ३ वर्म, कवच ; (भग ६, ३३) । ४ वृक्ष-विशेष ; (हे १, २५;३०) । ५ वस्त्र, कपडा ; "तो उज्झिऊण लज्जा (लज्ज)., ओइं-धइ कंचुय सरीराओ" (पउम ३४, १५) ।

कंचुइ पु [**कञ्चुकिन्**] १ अन्तःपुर का प्रतीहार, चपरासी; (णाया १, १ ; पउम ८, ३६ ; सुर २, १०६) । २ साँप ; (विसे २५१७) । ३ यव, जव ; ४ चणक, चना; ५ जुआरि, अगहन में होने वाला एक प्रकार का अन्न, जोन्हरी । ६ वि. जिसने कवच धारण किया हो वह ; (हे ४, २६३) ।

कंचुइअ वि [**कञ्चुकित**] कञ्चुक वाला ; (कुमा ; विपा १, २) ।

कंचुइज्ज पु [**कञ्चुकीय**] अन्तःपुर का प्रतीहार ; (भग ११, ११) ।

कंचुइज्जंत वि [**कञ्चुकायमान**] कञ्चुक की तरह आचरण करता ; "रोमंचकंचुइज्जंतसव्वगत्तो" (सुपा १८१) ।

कंचुग देखो **कंचुअ** (ओघ ६७६, विसे २५२८) ।

कंचुगि देखो °**कंचुइ** ; (सण) ।

कंचुलिआ स्त्री [**कञ्चुलिका**] कंचली, चोली, (कप्पू) ।

कंछुल्ली स्त्री [**दे**] हार, कण्ठाभरण ; (भवि) ।

कंजिअ न [**काञ्जिक**] काञ्जिक ; (सुर ३, १३३ ; कप्पू)।

कंटअंत वि [**कण्टकायमान**] १ कण्टक जैसा, कण्टक की तरह आचरता ; (से ६, २४)। २ पुलकित होता, (अच्चु ५८)।

कंटइअ वि [**कण्टकित**] १ कण्टक वाला ; (से १, ३२)। २ रोमाञ्चित, पुलकित ; (कुमा ; पाअ)।

कंटइज्जंत देखो **कंटअंत** ; (गा ६७)।

कंटइल पुं [**कण्टकिल**] १ एक जात का वाँस, २ वि. कण्टकों से व्याप्त ; (सूअ १, ५)।

कंटइल्ल देखो **कंटइअ** ; (पण्ह १, १ ; कुमा)।

कंटउच्चि वि [**दे**] कण्टक-प्रोत ; (दे २, १७)।

कंटकिल्ल देखो **कंटइअ** ; (दे २, ७५)।

कंटग } पुं [**कण्टक**] १ काँटा, कण्टक ; (कस, हे १, **कंटय** } ३०)। २ रोमाञ्च, पुलक ; (गा ६७)। ३ शत्रु, दुश्मन ; (णाया १, १)। ४ वृश्चिक का पूँछ ; (वव ६)। ५ शल्य ; (विपा १, ८)। ६ दुःखोत्पादक वस्तु, (उत्त १)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग ; (गण १६)। °**बोंदिया** स्त्री [°**दे**] कण्टक-शाखा ; (आचा २, १, ५)।

कंटाली स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष, कण्टकारिका, भटकटैया ; (दे २, ४)।

कंटिय वि [**कण्टिक**] १ कण्टक वाला, कण्टक-युक्त। २ वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)।

कंटिया स्त्री [**कण्टिका**] वनस्पति-विशेष ; (वृह १ ; आचू १)।

कंटी स्त्री [**दे**] उपकण्ठ, कण्ठिका, पर्वत के नजदीक की भूमि; " एयाओ परूढारुणफलभरवधुरिया भूमिखज्जूरा।
कंटीओ निव्ववंति व, अमंदकरसंदआभोया "
(गउड)।

कंटुल्ल } (दे) देखो **कंकोड** = (दे); (पाअ ; दे **कंटोल** } २, ७)।

कंठ पु [**दे**] १ सूकर, सूअर ; २ मर्यादा, सीमा ; (दे २, ५१)।

कंठ पुं [**कण्ठ**] १ गला, घाँटी ; (कुमा)। २ समीप, पास। ३ अन्चल ; " कंठे वत्थाईणं णिवद्धगंठिम्मि " (दे २, ७८)। °**दरखलिअ** वि [°**दरस्खलित**] गद्गद ; (पाअ)। °**मुरय** न [°**मुरज**] आभरण-विशेष ; (णाया १, १)। °**मुरवी** स्त्री [°**मुरवी**] गले का एक आभरण ; (औप)। °**मुही** स्त्री [°**मुखी**] गले का एक आभूषण ; (राज)। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] १ सुरत-बन्ध विशेष। २ गले का एक आभूषण ; (औप)।

कंठ वि [**कण्ठ्य**] १ कण्ठ से उत्पन्न। २ सरल, सुगम; (निचू १५)।

कंठकुंची स्त्री [**दे**] १ वस्त्र वगैरः के अन्चल में बँधी हुई गाँठ ; २ गले में लटकायी हुई लम्बी नाडि-ग्रन्थि ; (दे २, १८)।

कंठदीणार पुं [**दे**] छिद्र, विवर ; (दे १, २४)।

कंठमल्ल न [**दे**] १ ठठरी, मृत-शिविका ; २ यान पात्र, वाहन, (दे २, २०)।

कंठय पुं [**कण्ठक**] स्वनाम-ख्यात एक चौर-नायक, (महा)।

कंठाकंठि अ [**कण्ठाकण्ठि**] गले गले में ग्रहण कर, (णाया १, २—पत्र ८८)।

कंठिअ पु [**दे**] चपरासी, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कंठिआ स्त्री [**कण्ठिका**] गले का एक आभूषण; (गा ७५)।

कंठीरव पुं [**कण्ठीरव**] सिंह, शार्दूल ; (प्रयौ २१)।

कंड सक [**कण्ड्**] १ व्रीहि वगैरः का छिलका अलग करना। २ खींचना। ३ खुजवाना। वकृ—**कंडंत** ; (ओघ ४६८ ; गा ६६३) ; **कंडिंत**; (णाया १, ७)।

कंड पुंन [**काण्ड**] १ दण्ड, लाठी ; २ निन्दित समुदाय ; ३ पानी, जल ; ४ पर्व, ५ वृक्ष का स्कन्ध ; ६ वृक्ष की शाखा ; ७ वृक्ष का वह एक भाग, जहाँ से शाखाएँ नीकलती हैं ; ८ ग्रन्थ का एक भाग ; ६ गुच्छ, स्तवक ; १० अश्व, घोड़ा ; ११ प्रेत, पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा ; १२ रीढ, पृष्ठभाग की लम्बी हड्डी, १३ खुशामद ; १४ श्लाघा, प्रशंसा ; १५ गुप्तता, प्रच्छन्नता ; १६ एकान्त, निर्जन, १७ तृण-विशेष ; १८ निर्जन पृथ्वी, (हे १, ३०)। १६ अवसर, प्रस्ताव ; (गा ६६३)। २० समूह ; (णाया १, ८)। २१ बाण, शर ; (उप ६६६)। २२ देव-विमान-विशेष ; (राज)। २३ पर्वत वगैरः का एक भाग ; (सम ६५)। २४ खण्ड टुकड़ा, अवयव ; (आचू १)। °**च्छारिय** पु [°**च्छारिक**] १ इस नाम का एक ग्राम; २ एक ग्राम-नायक, (वव ७)। देखो **कंडग**, **कंडय**।

कंड पुं [**दे**] १ फेन, फीन ; २ वि. दुर्बल ; ३ विपन्न, विपत्ति-ग्रस्त ; (दे २, ५१) ।

कंडइअ देखो **कंटइअ**, (गा ५५८) ।

कंडइज्जंत देखो **कंटइज्जंत** ; (गा ६७ अ) ।

कंडग पुंन [**काण्डक**] देखो **कंड**=काण्ड ; (आचा ; आवम) । २५ संयम-श्रेणि विशेष ; (बृह ३) । २६ इस नाम का एक ग्राम, (आचू १) । देखो **कंडय** ।

कंडण न [**कण्डन**] व्रीहि वगैरः को साफ करना, तुष-पृथक्करण ; (श्रा २०) ।

कंडपंडवा स्त्री [**दे**] यवनिका, पर्दा , (दे २,२५) ।

कंडय पुंन [**काण्डक**] देखो **कंड**=काण्ड तथा **कंडग** २७ वृक्ष-विशेष , राक्षसों का चैत्य वृक्ष ; " तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाणं च कंडओ " (ठा ८) । २८ तावीज, गण्डा, यन्त्र ; " वज्झंति कंडयाइं, पउणीकीरंति अगयाइं " (सुर १६, ३२) ।

कंडरीय पुं [**कण्डरीक**] महापद्म राजा का एक पुत्र, पुण्डरीक का छोटा भाई जिसने वर्षों तक जैनी दीक्षा का पालन कर अन्त में उसका त्याग कर दिया था ; (णाया १, १६; उव) ।

कंडलि } स्त्री [**कन्दरिका**] गुफा, कन्दरा, (पि ३३३,
कंडलिआ } हे २, ३८ ; कुमा) ।

कंडवा स्त्री [**कण्डवा**] वाद्य-विशेष ; (राय) ।

कंडार सक [**उत्+कॄ**] खुदना, छील-छाल कर ठीक करना । संकृ—

" गुणं दुवे इह पआवइणो जअम्मि,
जे देहणिम्मवणजोव्वणदाणदक्खा ।
एक्के घडेइ पढमं कुमरीणमंगं,
कंडारिऊण पअडेइ पुणो दुईओ" (कप्पू) ।

कंडावेल्ली स्त्री [**काण्डवल्ली**] वनस्पति विशेष, (पण्ण १) ।

कंडिअ वि [**कण्डित**] साफ-सुथरा किया हुआ, (दे १, ११५) ।

कंडियायण न [**कण्डिकायन**] वैशाली (विहार) का एक चैत्य ; (भग १५) ।

कंडिल्ल पुं [**काण्डिल्य**] १ काण्डिल्य-गोत्र का प्रवर्तक ऋषि-विशेष ; २ पुंस्त्री. काण्डिल्य गोत्र में उत्पन्न ; ३ न. गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है, (ठा ७— पत्र ३९०) । °**यण** पुं [°**यन**] स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष , (चंद १०) ।

कंडु देखो **कंडू** ; (राज) ।

कंडु देखो **कंदु**; (सूअ १, ५) ।

कंडुअ सक [**कण्डूय्**] खुजवाना । कंडुअइ ; (हे १, १२१ ; उव) । कंडुअए ; (पि ४६२) । वकृ— **कंडुअंत** ; (गा ४६०) ; **कडुअमाण**; (प्रासू २८) ।

कडुअ पु [**कान्दविक**] हलवाई, मिठाई वेचने वाला ; "राया चिंतेइ, कओ कंडुयस्स जलकंतरयणसंपत्ती?" (आवम)।

कंडुअ } पुं [**कन्दुक**] गेंद ; (दे ३, ५६ ; राज) ।
कडग }

कंडुज्जुय वि [**काण्डर्जु**] वाण की तरह सीधा ; (स ३१७ ; गा ३५२) ।

कंडुयग वि [**कण्डूयक**] खुजाने वाला ; (औप) ।

कंडुयण न [**कण्डूयन**] १ खुजली, खाज, पामा, रोग-विशेष ; २ खुजवाना ; " पामागहियस्स जहा, कंडुयणं दुक्खमेव मूढस्स " (स ५१५ ; उव २६४ टी ; गउड) ।

कंडुयय देखो **कंडुयग** ; " अकंडुयएहिं " (पण्ह २, १— पत्र १००) ।

कंडुरु पुं [**कण्डुरु**] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने रामचन्द्र के भाई भरत के साथ जैनी दीक्षा ली थी ; (पउम ८५, ५) ।

कंडू स्त्री [**कण्डू**] १ खुजलाहट, खुजवाना ; (णाया १, ५)) । २ रोग-विशेष, पामा, खाज ; (णाया १, १३) ।

कंडूइ स्त्री [**कण्डूति**] ऊपर देखो; (गा ५३२; सुर २, २३) ।

कंडूइअ न [**कण्डूयित**] खुजवाना ; (सूअ १, ३, ३ ; गा १८१) ।

कंडूय देखो **कंडुअ**=कण्डूय् । कंडूयइ ; (महा) । वकृ— **कंडूयमाण** ; (महा) ।

कंडूयग वि [**कण्डूयक**] खुजवाने वाला ; (ठा ५, १) ।

कंडूयण देखो **कंडुयण** , (उप २५६ ; सुपा १७६ ; २२७) ।

कंडूयय देखो **कंडूयग** ; (महा) ।

कंडूर पु [**दे**] वक, वगुला , (दे २, ६) ।

कंडूल वि [**कण्डूल**] खाज वाला, कण्डू-युक्त, कुमा) ।

कंत वि [**कान्त**] १ मनोहर, सुन्दर ; (कुमा) । २ अभिलषित, वाञ्छित ; (णाया १, १) । ३ पु. पति, स्वामी ; (पाअ) । ४ देव-विशेष ; (सुज्ज १६) । ५ न. कान्ति, प्रभा ; (आचा २, ५, १) ।

कंत वि [**क्रान्त**] गत, गुजरा हुआ ; (प्राप)।

कंता स्त्री [**कान्ता**] १ स्त्री, नारी ; (सुर ३, १४ ; सुपा ५७३)। २ रावण की एक पत्नी का नाम ; (पउम ७४, ११)। ३ एक योग-दृष्टि ; (राज)।

कंतार न [**कान्तार**] १ अरण्य, जङ्गल ; (पात्र)। २ दुष्ट, दूषित ; ३ निराश्रय ; ४ पागल ; (कप्पू)।

कंति स्त्री [**कान्ति**] १ तेज, प्रकाश; (सुर २, २३६)। २ शोभा, सौन्दर्य ; (पात्र)। ३ इस नाम की रावण की एक पत्नी ; (पउम ७४, ११)। ४ अहिंसा ; (पण्ह २, १)। ५ इच्छा ; ६ चन्द्र की एक कला ; (राज ; विक १०७)। **°पुरी** स्त्री [**°पुरी**] नगरी-विशेष ; (ती)। **°म, °ल्ल** पुं [**°मत्**] कान्ति-युक्त , (आवम , गउड; सुपा ८, १८८)।

कंति स्त्री [**क्रान्ति**] १ परिवर्तन, फेरफार ; २ गमन, गति ; (नाट—विक ६०)।

कंतु पु [**दे**] काम, कामदेव ; (दे २, १)।

कंथक, °थग, °थय पु [**कन्थक**] अश्व की एक जाति ; (ठा ४, ३ ; उत्त २३)। "जहा से कंबोयाणं आइन्ने कंथए सिया" (उत्त ११)।

कंथा स्त्री [**कन्था**] कथडी, गुदड़ी, पुराने वस्त्र से बना हुआ ओढ़ना , (हे १, १८७)।

कंथार पुं [**कन्थार**] वृक्ष-विशेष ; (उप २२० टी)।

कंथारिया, कंथारी स्त्री [**कन्थारिका, °री**] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी)। **°वण** न [**°वन**] उज्जैन के समीप का एक जंगल, जहां अवन्तीसुकुमार-नामक जैन मुनि ने अनशन व्रत किया था , (आक)।

कंथेर पुं [**कन्थेर**] वृक्ष-विशेष ; (राज)।

कन्थेरी स्त्री [**कन्थेरी**] कण्टकमय वृक्ष-विशेष ; (उर ३, २)।

कंद अक [**क्रन्द्**] कॉंदना, रोना। कंदइ , (पि २३१)। भूका—कंदिंसु ; (पि ५१६)। वकृ—**कंदंत**; (गा ५८४), **कन्दमाण** ; (णाया १, १)।

कंद वि [**दे**] १ दृढ, मजबूत ; २ मत्त, उन्मत्त ; ३ न. स्तरण, आच्छादन , (दे २, ५१)।

कंद पुं [**कन्द, क्रन्दित**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कंद पुं [**कन्द**] १ गूदेदार और बिना रेशे की जड ; जैसे—जमीकन्द, सूरन, शकरकन्द, बिलारीकन्द, ओल, गाजर, लहसुन वगैरः ; (जी ६)। २ मूल, जड़ ; (गउड)। ३ छन्द-विशेष , (पिंग)।

कंद पुं [**स्कन्द**] कार्त्तिकेय; षडानन ; (कुमा ; हे २, ५, ८५)।

कन्दणया स्त्री [**क्रन्दनता**] मोटे स्वर से चिल्लाना ; (ठा ४, १)।

कंदप्प पुं [**कन्दर्प**] १ कामदेव, अनंग , (पात्र)। २ कामोद्दीपक हास्यादि ; "कंदप्पे कुक्कुइए" (पडि; णाया १, १)। ३ देव-विशेष ; (पव ७३)। ४ काम-संबन्धी कषाय ; ५ वि. काम-युक्त, कामी ; (बृह १)।

कंदप्प वि [**कान्दर्प**] कन्दर्प-सबन्धी ; (पव ७३)।

कंदप्पि वि [**कन्दर्पिन्**] कामोद्दीपक ; कन्दर्प का उत्तेजक ; (बव १)।

कंदप्पिय पुं [**कान्दर्पिक**] १ मजाक करने वाला भाण्ड वगैरः ; (औप; भग)। २ भाण्ड-प्राय देवों की एक जाति, (पण्ह २, २)। ३ हास्य वगैरः भाण्ड कर्म से आजीविका चलाने वाला ; (पण्ण २०) । ४ वि. काम-संबन्धी; (बृह १)।

कंदर न [**कन्दर**] १ रन्ध्र, विवर ; (णाया १, २)। २ गुहा, गुफा ; (उवा ; प्रासू ७३)।

कंदरा, कंदरी स्त्री [**कन्दरा**] गुहा; गुफा; (मे ४, १६ , राज)।

कंदल पुं [**कन्दल**] १ अङ्कुर, प्ररोह ; (सुपा ४)। २ लता-विशेष ; (णाया १, ६)।

कंदल न [**दे**] कपाल ; (दे २, ४)।

कंदलग पुं [**कन्दलक**] एक खुर वाला जानवर विशेष ; (पण्ण १)।

कंदलिअ, कंदलिल्ल वि [**कन्दलित**] अङ्कुरित ; (कुमा , पि ५६५)।

कंदली स्त्री [**कन्दली**] १ लता-विशेष , (सुपा ६; पउम ५३, ७६)। २ अङ्कुर, प्ररोह ; "दारिद्दुमकंदलीवणदवो" (उप ७२८ टी)।

कंदविय पु [**कान्दविक**] हलवाई, मिठाई बेचने वाला , (उप २११ टी)।

कंदिंद पुं [**क्रन्देन्द्र, क्रन्दितेन्द्र**] क्रन्दित-नामक देव-निकाय का इन्द्र ; (ठा २, ४—पत्र ८५)।

कंदिय पुं [**क्रन्दित**] १ वाणव्यन्तर देवो की एक जाति ; (पण्ह १, ४ ; औप)। २ न. रोदन, आक्रन्द ; (उत्त २)।

कंदिर वि [क्रन्दिन्] कँदने वाला, (भवि)।

कंदी स्त्री [दे] मूला, कन्द-विशेष ; (दे २, १)।

कंदु पुंस्त्री [कन्दु] एक प्रकार का बरतन, जिसमें मागड वगैरः पकाया जाता है, हॉडा ; (विपा १, ३ ; सूत्र १, ५)।

कंदुअ पुं [कन्दुक] १ गेंद, (पात्र ; स्वप्न ३६ ; मै ६१)। २ वनस्पति-विशेष ; (पगण १)।

कंदुइअ पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचने वाला, (दे २, ४१ ; ६, ६३)।

कंदुग देखो **कंदुअ** ; (राज)।

कंदुट्ट (दे) देखो **कंदोट्ट** ; (पात्र ; धर्मा ५ ; सण)।

कंदोइय देखो **कंदुइअ** ; (सुपा ३८५)।

कंदोट्ट न [दे] नील कमल ; (दे २, ६ ; प्राप्र ; षड् ; गा ६२२ ; उत्तर ११७ ; कप्पू, भवि)।

कंध देखो **खंध** = स्कन्ध ; (नाट ; वज्जा ३६)।

कंधरा स्त्री [कन्धरा] ग्रीवा, गरदन ; (पात्र ; सुर ४, १६६ ; गण ६)।

कंधार पुं [दे [स्कन्ध, ग्रीवा का पीछला भाग ; (उप पृ ८६)।

कंप अक [कम्प्] कॉपना, हिलना। कंपइ ; (हे १, ३०)। वकृ—**कंपंत, कंपमाण**, (महा, कप्प)। कवकृ **कंपिज्जंत**, (मे ६, ३८ ; १३, ५६)। प्रयो, वकृ— **कंपाविंत** ; (सुपा ५६३)।

कंप पु [कम्प] अस्थैर्य, चलन, हिलन ; (कुमा, आउ)।

कंपड पुं [दे] पथिक, मुसाफिर ; (दे २, ७)

कंपण न [कम्पन] १ कम्प, हिलन, (भवि)। २ राग-विशेष। °**वाइअ** त्रि [°**वातिक**] कम्प वायु नामक रोग वाला, (अणु ६)।

कंपि वि [कम्पिन्] कॉपने वाला, (कप्पू)।

कंपिअ वि [कम्पित] कॉपा हुआ, (कुमा)।

कंपिर वि [कम्पितृ] कॉपने वाला, (गा ६५६ ; सुपा १५८ ; श्रा २७)।

कंपिल्ल वि [कम्पवत्] कॉपने वाला, अस्थिर, "निच्चमकंपिल्लं परभयाहि कपिल्लनामपुरं" (उप ६ टी)।

कंपिल्ल पु [काम्पिल्य] १ यदुवंशीय राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ; (अन्त ३)। २ पञ्जाब देश का एक नगर, (ठा १० ; उप ६४८ टी)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (पउम ८, १४३ ; उवा)।

कंब वि [कम्र] १ कामुक, कामी ; २ सुन्दर, मनोहर ; (पि २६५)।

कंबं देखो **कंबा**।

कंबर पु [दे] विज्ञान ; (दे २, १३)।

कंबल पुन [कम्बल] १ कामरी, ऊनी कपडा ; (आचा ; भग)। २ पुं स्वनाम-ख्यात एक बलीवर्द ; (राज)। ३ गौ के गले का चमडा, सास्ना ; (विपा १, २)।

कंबा स्त्री [कम्बा] यष्टि, लकडी ; "दिट्ठो तज्जणएणं, निसढिडं कंबघाएहिं; वद्धो" (सुपा ३६६)।

कंबि } स्त्री [कम्बि, °म्बी] १ दर्वी, कडछी। २ **कंबी** } लीला-यष्टि, छड़ी, शौख से हाथ में रखी जाती लकडी, (उप पृ २३७)।

कंबु पुं [कम्बु] १ शङ्ख; (पगह १, ४)। २ इस नाम का एक द्वीप ; (पउम ४५, ३२)। ३ पर्वत-विशेष; (पउम ४५, ३२)। ४ न. एक देव-विमान, (सम २२)। °**ग्गीव** न [°**ग्रीव**] एक देव-विमान, (सम २२)।

कंबोय पुं [कम्बोज] देश-विशेष ; (पउम २७, ७ ; स ८०)।

कंबोय वि [काम्बोज] कम्बोज देश में उत्पन्न, (स ८०)।

कंभार पुंव. [कश्मीर] इस नाम का एक प्रसिद्ध देश ; (हे २, ६० ; षड्)। °**जम्म** न [°**जन्मन्**] कुङ्कुम, केसर ; (कुमा)। देखो **कम्हार**।

कंभूर (अप) ऊपर देखो ; (षड्)।

कंस पु [कंस] १ राजा उग्रसेन का एक पुत्र, श्रीकृष्ण का मातुल ; (पगह १, ४)। २ महाग्रह-विशेष, (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ कॉसा, एक प्रकार की धातु ; (णाया १, ७—पत्र ११८)। °**णाभ** पु [°**नाभ**] ग्रह विशेष ; (सुज्ज २०, इक)। °**वण्ण** पु [°**वर्ण**] ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। °**वण्णाभ** पुं [°**वर्णाभ**] ग्रह-विशेष, (ठा २, ३)। °**संहारण** पु [°**संहारण**] कृष्ण, विष्णु ; (पिंग)।

कंस न [कांस्य] १ धातु-विशेष, कॉसा, २ वाद्य-विशेष ; ३ परिमाण-विशेष, ४ जल पीने का पात्र, प्याला, (हे १, २६; ७०)। °**ताल** न [°**ताल**] वाद्य-विशेष ; (जीव ३)। °**पत्ती, °पाई** स्त्री [°**पात्री**] कॉसा का बना हुआ पात्र-विशेष ; (कप्प ; ठा ६)। °**पाय** न [°**पात्र**] कॉसा का बना हुआ पात्र ; (दस ६)।

(d) $2x - 3y = 0$

कंसार पुं [दे] कसार, एक प्रकार की मिठाई ; " ता करेऊण कंसार तालपुडसंजुयं चेगं विसमोयगं गोसे उवणेमि एयाणं " (स १८७)।

कंसारी स्त्री [दे] त्रीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु की एक जाति ; (जी १८)।

कंसाल पुं [**कांस्याल**] वाद्य-विशेष, (हे २, ६२, सुपा ५०)।

कंसाला स्त्री [**कसताला, कांस्यताला**] वाद्य का एक प्रकार का निर्घोष, ताल , (णंदि)।

कंसालिया स्त्री [**कांस्यतालिका**] एक प्रकार का वाद्य ; (सुपा २४२)।

कंसिअ पुं [**कांस्यिक**] १ कसेरा, कँसारी, कांस्य-कार; (हे १, ७०)। २ वाद्य-विशेष ; (सुपा २४२)।

कंसिआ स्त्री [**कंसिका**] १ ताल ; (णाया १, १७)। २ वाद्य-विशेष , (आचा २)।

ककुध } **ककुभ** } देखो **कउह**=ककुद ; (पि २०६ ; हे २, १७४)।

ककुह देखो **कउह** = ककुद; (ठा ५, १ , णाया १, १७ ; विपा १, २)। ५ हरिवंश का एक राजा, (पउम २२, ६६)।

ककुहा देखो **कउहा** ; (षड्)।

कक्क पुं [**कल्क**] १ उद्वर्त्तन-द्रव्य, शरीर पर का मैल दूर करने के लिए लगाया जाता द्रव्य; (सूअ १, ६; निचू १)। २ न, पाप ; (भग १२, ५)। ३ माया, कपट ; (सम ७१)। °**गरुग** न [°**गुरुक**] माया, कपट; (पण्ह १, २—पत्र २८)।

कक्कंध पु [**कर्कन्ध**] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)।

कक्कंधु स्त्री [**कर्कन्धु**] बेर का वृक्ष ; (पाअ)।

कक्कड न [**कर्कट**] १ जलजन्तु-विशेष; कुलीर ; (पाअ)। २ ककडी, फल-विशेष; (पव ४)। ३ हृदय का एक प्रकार का वायु ; (भग १०, ३)।

कक्कडच्छ पुं [**कर्कटाक्ष**] ककडी, खीरा ; (कप्प)।

कक्कडिया } **कक्कडी** } स्त्री [**कर्कटिका, °टी**] ककडी (खीरा) का गाछ ; (उप ६६१)।

कक्कणा स्त्री [**कल्कना**] १ पाप; २ माया ; (पण्ह १, २)।

कक्कर पु [**कर्कर**] १ कंकर, पत्थर ; (विपा १, २ ; गउड ; सुपा ५६७ ; प्रासु १६८)। २ कठिन, परुष ; (आचू ४)। ३ कर्कर आवाज वाला; (उत ७)।

कक्करणया स्त्री [**कर्करणता**] १ दोषोद्भावन; दोषोद्भावन-गर्भित प्रलाप; (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

कक्कराइय न [**कर्करायित**] १ कर्कर की तरह आच-रित। २ दोषोच्चारण, दोष प्रकटन ; (आव ४)।

कक्कस वि [**कर्कश**] १ कठोर, परुष ; (पाअ ; सुपा ५८ ; आरा ६४ , पउम ३१, ६६)। २ प्रखर, चण्ड; ३ तीव्र, प्रगाढ ; (विपा १, १)। ४ अनिष्ट, हानि-कारक , (भग ६, ३३)। ५ निष्ठुर, निर्दय ; (उत्रा)। ६ चबा २ कर कहा हुआ वचन ; (आचा २, ४, १)।

कक्कस } **कक्कसार** } पुं [दे] दध्योदन, करम्ब ; (दे २, १४)।

कक्कसेण पुं [**कर्कसेन**] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक स्वनाम-ख्यात कुलकर पुरुष ; (राज)।

कक्कालुआ स्त्री [**कर्कारुका**] १ कूष्माण्ड-वल्ली, कोहला का गाछ; " कक्कालुआ गोछडलित्तवेंटा " (मृच्छ ५६)।

कक्कि पु [**कल्किन्**] भविष्य में होने वाला पाटलिपुत्र का एक राजा , (ती)।

कक्किय न [**कल्किक**] मांस ; (सूअ १, ११)।

कक्केअण पुन [**कर्केतन**] रत्न की एक जाति ; (कप्प; पउम ३, ७५)।

कक्केरअ पु [**कर्केरक**] मणि-विशेष की एक जाति ; (मृच्छ २०२)।

कक्कोड न [**कर्कोट**] शाक-विशेष ; ककरैल, कक्कोडा : (राज)। देखो **कक्कोडय**।

कक्कोडई स्त्री [**कर्कोटकी**] ककोडे का वृक्ष, ककरैल का गाछ ; (पण्ण १ —पत्र ३३)।

कक्कोडय न [**कर्कोटक**] देखो **कक्कोड**। २ पु अनु-वेलन्धर-नामक एक नाग-राज ; ३ उसका आवास-पर्वत ; (भग ३, ६ ; इक)।

कक्कोल पुं [**कङ्कोल**] १ वृक्ष-विशेष; शीतलचीनी के वृक्ष का एक भेद ; (गउड; स ७१)। २ न, फल-विशेष, जो सुगंधी होता है ; (पण्ह २, ५)। देखो **कंकोल**।

कक्ख देखो **कच्छ**=कक्ष ; (उव ; कप्प ; सुर १, ८८ ; पउम ४४, १ : पि ३१८ ; ४२०)।

कक्खड देखो **कक्कस**, (राम ४१ ; ठा १, १ . वज्जा ८४ ; उव)।

कक्खड वि [दे] पीन, पुष्ट ; (दे २, ११ ; कप्प ; आचा ; भवि)।

कक्खडंगी स्त्री [दे] सखी, सहेली ; (दे २, १६)।

कक्खल [दे] देखो **कक्कस** ; (षड्)।

कक्खा देखो **कच्छा**=कक्षा ; (पाअ , णाया १, ८ ; सुर ११, २२१)।

कग्घाड पुं [दे] १ अपामार्ग, चिरचिरा, लटजीरा ; २ किलाट, दूध की मलाई ; (दे २, ५४)।

कग्घायल पु [दे] किलाट, दूध का विकार, दूध की मलाई , (दे २, २२)।

कच्च न [दे, कृत्य] कार्य, काम ; (दे २, २ , षड्)।

कच्च (पै) देखो **कज्ज** ; (प्राप्र)।

कच्च न [**काच**] काच, शीशा ; "कच्चं माणिक्कं च समं आहरणे पउंजीअदि" (कप्पू)।

कच्चंत वि [**कृत्यमान**] पीडित किया जाता ; (सूअ १, २, १)।

कच्चरा स्त्री [दे] १ कचरा, कच्चा खरबूजा; २ कचरा को सूखाकर, तलकर और मसाला डालकर बनाया हुआ खाद्य विशेष, एक प्रकार का आचार, गुजराती में जिसको 'काचरी' कहते हैं ; "पुणो कच्चरा पप्पड़ा दिण्णभेया" (भवि)।

कच्चवार पुं [दे] कतवार, कूडा , (सूक्त ४४)।

कच्चाइणी स्त्री [**कात्यायनी**] देवी-विशेष, चण्डी ; (स ४३७)।

कच्चायण पु [**कात्यायन**] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष; (सुज्ज १०)। २ न. कौशिक गोत्र की शाखा-रूप एक गोत्र ; ३ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न, (ठा ७—पत्र ३६०)।

कच्चायणी स्त्री [**कात्यायनी**] पार्वती, गौरी , (पाअ)।

कच्चि अ [**कच्चित्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ प्रश्न ; २ मंगल ; ३ अभिलाप , ४ हर्ष ; (पिं २७१; हे २, २१७; २१८)।

कच्चु (अप) ऊपर देखो (हे ४, ३२६)।

कच्चूर पुं [**कर्चूर**] वनस्पति-विशेष, कचूर, काली हलदी, (श्रा २०)।

कच्चोल) पुंन [**कच्चोलक**] पात्र-विशेष, प्याला ;
कच्चोलय) (पउम १०२, १२० ; भवि ; सुपा २०१)।

कच्छ पुं [**कक्ष**] १ काँख, कखरी ; २ वन, जंगल ; (भग ३, ६)। ३ तृण, घास ; ४ शुष्क तृण ; ५ वल्ली, लता ; ६ शुष्क काष्ठों वाला जंगल ; ७ राजा वगैरः का जनानखाना ; ८ हाथी को बाँधने का डोर ; ६ पार्श्व, बाजु ; १० ग्रह-भ्रमण ; ११ कक्षा, श्रेणी ; १२ द्वार, दरवाजा ; १३ वनस्पति-विशेष, गूगल ; १४ बिभीतक वृक्ष; १५ घर की भींत ; १६ स्पर्धा का स्थान ; १७ जल-प्राय देश; (हे २, १७)।

कच्छ पुं. ब. [**कच्छ**] १ स्वनाम-ख्यात देश, जो आज कल भी 'कच्छ' नाम से प्रसिद्ध है; (पउम ६८, ६४ ; दे २, १ टी)। २ जलप्राय देश, जल-बहुल देश; (णाया १, १—पत्र ३३ ; कुमा)। ३ कच्छा; लँगोट ; (सुर २, १६)। ४ इक्षु वगैरः की वाटिका ; (कुमा ; आचा २, ३)। ५ महाविदेह वर्ष में स्थित एक विजय-प्रदेश ; (ठा २, ३)। ६ तट, किनारा ; "गोलाणईए कच्छे, चक्खंतो राइआइ पत्ताइं" (गा १७१)। ७ नदी के जल से वेष्टित वन ; (भग)। ८ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र ; (आवम)। ६ कच्छ-विजय का एक राजा; १० कच्छ-विजय का अधिष्ठायक देव ; (जं ४)। ११ पार्श्ववर्ती प्रदेश ; १२ राजा वगैरः के उद्यान के समीप का प्रदेश ; (उप ६८६ टी)। १२ छन्द-विशेष, दोधक छंद का एक भेद ; (पिंग)। °**कूड** न [°**कूट**] १ माल्यवन्त-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर; २ कच्छ-विजय के विभाजक वैताढ्य पर्वत के दक्षिणोत्तर पार्श्ववर्ती दो शिखर ; (ठा ६)। ३ चित्रकूट पर्वत का एक शिखर ; (जं ४)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] कच्छ देश का राजा ; (भवि)। °**ाहिवइ** पु [°**ाधिपति**] कच्छ देश का राजा; (भवि)।

कच्छगावई स्त्री [**कच्छकावती**] महाविदेह वर्ष का एक विजय-प्रदेश ; (ठा २, ३)।

कच्छट्टी स्त्री [दे] कछौटी, लंगोटी, कछनी , (रंभा—टि)।

कच्छभ पुं [**कच्छप**] १ कूर्म, कछुआ ; (पण्ह १, १; णाया १, १)। २ राहु, ग्रह-विशेष ; (भग १२,६)। °**रिंगिय** न [°**रिङ्गित**] गुरु-वन्दन का एक दोष, कछुए की तरह चलते हुए वन्दन करना ; (वृह ३ ; गुभा)।

कच्छभी स्त्री [**कच्छपी**] १ कच्छप-स्त्री, कूर्मी। २ वाद्य-विशेष, (पण्ह २, ५)। ३ नारद की वीणा, (णाया १, १७)। ४ पुस्तक-विशेष ; (ठा ४, २)।

कच्छर पुं [दे] पङ्क, कीच, कर्दम ; (दे २, २)।

कच्छरी स्त्री [**कच्छरी**] गुच्छ-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३२)।

कच्छव (अप) पुं [**कच्छ**] स्वनाम-प्रसिद्ध देश-विशेष ; (भवि)।

कच्छव देखो **कच्छभ** ; (पउम ३४, ३३ ; दे १, १६७ ; गउड)।

कच्छवी देखो **कच्छभी** ; (वृह ३)।

कच्छह देखो **कच्छभ** ; (पाश्र)।

कच्छा स्त्री [**कक्षा**] १ विभाग, अंश, (पउम १६, ७०)। २ उरो-बन्धन, हाथी के पेट पर बाँधने की रज्जू; "उप्पीलियकच्छे" (विपा १, २—पत्र २३ ; औप)। ३ काँख, वगल ; (भग ३, ६ ; प्रामा)। ४ श्रेणि, पङ्क्ति; "चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररगणो दुमस्स पायत्ताणियाहिवस्स सत्त कच्छाओ पणत्ताओ" (ठा ७)। ५ कमर पर बाँधने का वस्त्र ; (गा ६८४)। ६ जनानखाना, अन्तःपुर ; (ठा ७)। ७ संशय-कोटि ; ८ स्पर्धा-स्थान ; ९ घर की भीत; १० प्रकोष्ठ ; (हे २, १७)।

कच्छा स्त्री [**कच्छा**] कटि-मेखला, कमर का आभूषण ; (पाश्र)। °**वई** स्त्री [°**वती**] देखो **कच्छगावई** ; (जं ४)। °**वईकूड** न [°**वतीकूट**] महाविदेह वर्ष में स्थित ब्रह्मकूट पर्वत का एक शिखर ; (इक)।

कच्छु स्त्री [**कच्छू**] १ खुजली, खाज, रोग-विशेष; (प्रासू २८)। २ खाज को उत्पन्न करने वाली ओषधि, कपिकच्छु; (पण्ह २, ५)। °**ल**, °**ल्ल** वि [°**मत्**] खाज रोग वाला; (राज ; विपा १, ७)।

कच्छुट्टिया स्त्री [**दे. कच्छपटिका**] कछौटी, लंगोटी ; (रंभा)।

कच्छुरिअ वि [**दे**] १ ईर्षित, जिसकी ईर्ष्या की जाय वह; २ न. ईर्ष्या ; (दे २, १६)।

कच्छुरिअ वि [**कच्छुरित**] व्याप्त, खचित ; (कुम्मा ६ टी)।

कच्छुरी स्त्री [**दे**] कपिकच्छु, केवाँच ; (दे २, ११)।

कच्छुल पुं [**कच्छुल**] गुल्म-विशेष ; (पगण १—पत्र ३२)।

कच्छुल्ल पुं [**कच्छुल्ल**] स्वनाम-ख्यात एक नारद-मुनि; (णाया १, १६)।

कच्छू देखो **कच्छु** ; (प्रासू ७२)।

कच्छोटी स्त्री [**दे**] कछौटी, लंगोटी ; (रंभा—टि)।

कज्ज वि [**कार्य**] १ जो किया जाय वह ; २ करने योग्य; ३ जो किया जा सके ; (हे २, २४)। ४ प्रयोजन, उद्देश्य ; "न य साहेइ सकज्जं" (प्रासू २७ ; कप्पू)। ५ कारण, हेतु ; (वव २)। ६ काम, काज ;

"अन्नह परिचिंतिज्जइ, सहरिसकंडुज्जएण हियएण ।
परिणमइ अन्नह चिय, कज्जारंभो विहिवसेण"
(सुर ४, १६)।

°**जाण** वि [°**ज्ञ**] कार्य को जानने वाला ; (उप ६४८)।
°**सेण** पुं [°**सेन**] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न स्वनाम ख्यात एक कुलकर-पुरुष ; (सम १५०)।

कज्जउड पुं [**दे**] अनर्थ ; (दे २, १७)।

कज्जमाण वि [**क्रियमाण**] जो किया जाता हो वह, "कज्जं च कज्जमाणं च आगमिस्सं च पावगं" (सूत्र १,८)।

कज्जल न [**कज्जल**] १ काजल, मसी, २ अन्जन, सुरमा; (कुमा)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] सुदर्शना-नामक जम्बू-वृक्ष की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी; (जीव ३)।

कज्जलइअ वि [**कज्जलित**] १ काजल वाला; २ श्याम, कृष्ण, (पाश्र)।

कज्जलंगी स्त्री [**कज्जलाङ्गी**] कज्जल-गृह, दीप के ऊपर रखा जाता पात्र, जिसमें काजल इकट्ठा होता है, कजरौटी ; (अंत; णाया १ १—पत्र ६)।

कज्जला स्त्री [**कज्जला**] इस नाम की एक पुष्करिणी, (इक)।

कज्जलाव अक [**ब्रुड्**] डूबना, बूडना। "आउसंतो समणा! एयं ते णावाए उदयं उत्तिंगेण आसवइ, उवरुवरिं वा णावा कज्जलावेइ" (आचा २, ३, १, १६)। वकृ—**कज्जलावेमाण** ; (आचा २, ३, १, १६)।

कज्जलिअ देखो **कज्जलइअ** ; (से २, ३६ ; गउड)।

कज्जव } पुं [**दे**] १ विष्ठा, मैला ; २ तृण वगैरः का
कज्जवय } संमूह, कूडा, कतवार; (दे २, ११ ; उप १७६; ५६३ ; स २६४ ; दे ६, ५६; अणु)।

कज्जिय वि [**कार्यिक**] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी ; (वव ३)।

कज्जोवग पु [**कार्योपग**] अठासी महाग्रहों में एक ग्रह का नाम ; (ठा २, ३—पत्र ७८)।

कज्झाल न [**दे**] सेवाल, एक प्रकार की घास, जो जलाशयों में लगती है ; (दे २, ८)।

कटरि (अप) अ [**कटरे**] इन अर्थों का द्योतक अव्यय;— १ आश्चर्य विस्मय ; "कटरि थणंतरु मुद्धडहे, जे मणु विच्चिन माइ" (हे ४, ३५०)। २ प्रशंसा, श्लाघा ;

' कटरि भालु सुविसालु, कटरि मुहकमलु पसन्निम " (धम्म ११ टी)।

कटार (अप) न [दे] छुरी, चुरिका ; (हे ४, ४४५)।

कट्ट सक [कृत्] काटना, छेदना। कट्टइ; (भवि)। संकृ— **कट्टि, कट्टिवि, कट्टिअ** ; (रंभा ; भवि ; पिंग)।

कट्ट वि [कृत्त] काटा हुआ, छिन्न ; (उप १८०)।

कट्ट न [कष्ट] १ दुःख ; २ वि. कष्ट-कारक, कष्ट-दायी ; (पिंग)।

कट्टर न [दे] खण्ड, अंश, टुकडा ; " से जहा चित्तय-कट्टरे इ वा वियाणपट्टे इ वा " (अनु)।

कट्टारय न [दे] छुरी, शस्त्र-विशेष ; (स १४३)।

कट्टारी स्त्री [दे] चुरिका, छुरी ; (दे २, ४)।

कट्टिअ वि [कर्त्तित] काटा हुआ, छेदित ; (पिंग)।

कट्टु वि [कर्त्तृ] कर्ता, करने वाला ; (षड्)।

कट्टु अ [कृत्वा] करके ; (गाया १, ५ ; कप्प ; भग)।

कट्टोरग पुं [दे] कटोरा, प्याला, पात्र-विशेष ; " तओ पासेहिं करोडगा कट्टोरगा मंकुआ सिप्पाओ य ठविज्जंति " (निचू १)।

कट्ठ न [कष्ट] १ दुःख, पीड़ा, व्यथा ; (कुमा)। २ पाप ; ३ वि. कष्ट-दायक, पीड़ा-कारक ; (हे २, ३४ ; ६०)। °**हर** न [°गृह] कठघरा, काठ की बनी हुई चार-दिवारी ; (सुर २. १८१)।

कट्ठ न [काष्ठ] काठ, लकडी ; (कुमा, सुपा ३५४)। २ पु राजगृह नगर का निवासी एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी। (आवम)। °**कम्मंत** न [°कर्मान्त] लकड़ी का कार-खाना ; (आचा २, २)। °**करण** न [°करण] श्यामक-नामक गृहस्थ के एक खेत का नाम; (कप्प)। °**कार** पुं [°कार] काठ-कर्म से जीविका चलाने वाला; (अणु)। °**कोलंब** पुं [°कोलम्ब] वृक्ष की शाखा के नीचे झुकता हुआ अग्र-भाग ; (अनु)। °**खाय** पुं [°खाद] कीट विशेष, घुण ; (ठा ४)। °**दल** न [°दल] रहर की दाल ; (राज)। °**पाउया** स्त्री [°पादुका] काठ का जुता, खडाऊँ ; (अनु ४)। °**पुत्तलिया** स्त्री [°पुत्तलिका] कठपुतली ; (अणु)। °**पेज्जा** स्त्री [°पेया] १ मुंग वगैरः का क्वाथ ; २ घृत से तली हुई तण्डुल की राब ; (उवा)। °**महु** न [°मधु] पुष्प-मकरन्द ; (कुमा)। °**मूल** न [°मूल] द्विदल धान्य, जिसका दो टुकड़ा समान होता है ऐसा चना, मुंग आदि अन्न ; (वृह १)। °**हार** पुं [°हार] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, चुद्र कीट-विशेष ; (जीव १)। °**हारय** पुं [°हारक] कठहरा, लकड़हारा ; (सुपा ३८५)।

कट्ठ वि [कृष्ट] विलिखित, चासा हुआ ; " खीरदुमहेट्ठपंथ-कट्ठोल्ला इंधणे य मीसो य " (ओघ ३३६)।

कट्ठण न [कर्षण] आकर्षण, खींचाव ; (गउड)।

कट्ठा स्त्री [काष्ठा] १ दिशा ; (सम ८८)। २ हद, सीमा ; " कवडस्स अहो परा कट्ठा " (श्रा १६)। ३ काल का एक परिमाण, अठारह निमेष ; (तंदु)। ४ प्रकर्ष ; (सुज्ज ६)।

कट्ठिअ पुं [दे] चपरासी, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कट्ठिअ वि [काष्ठित] काठ से संस्कृत भीत वगैरः; (आचा २, २)।

कट्ठिण देखो **कढिण** , (नाट—मालती ५६)।

कड वि [दे] १ चीण, दुर्बल ; २ मृत, विनष्ट ; (दे २, ५१)।

कड वि [कट] १ गण्ड-स्थल, गाल ; (गाया १, १—पत्र ६५)। २ तृण, घास ; ३ चटाई, आस्तरण-विशेष ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। ४ लकडी, यष्टि ; " तेसिं च जुद्धं लयालिट्ठुकडपासाणदंतनिवाएहिं " (वसु)। ५ वंश, बाँस; (विपा १, ६; ठा ४, ४)। ६ तृण-विशेष ; (ठा ४, ४)। ७ छिला हुआ काष्ठ ; (आचा २, २, १)। °**च्छेज्ज** न [°च्छेद्य] कला-विशेष ; (औप ; जं २)। °**तड** न [°तट] १ कटक का एक भाग; २ गण्ड-तल ; (गाया १, १)। °**पूयणा** स्त्री [°पूतना] व्यन्तरी-विशेष ; (विसे २५४६)।

कड वि [कृत] १ किया हुआ, बनाया हुआ, रचित ; (भग ; पण्ह २, ४ ; विपा १, १ ; कप्प ; सुपा २६)। २ युग-विशेष, सत्ययुग ; (ठा ४, ३)। ३ चार की संख्या; (सुअ १, २)। °**जुग** न [°युग] सत्य युग, उन्नति का समय, आदि युग, १७२८००० वर्षों का यह युग होता है; (ठा ४, ३)। °**जुम्म** पुं [°युग्म] सम राशि-विशेष, चार से भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे ऐसी राशि ; (ठा ४, ३)। °**जुम्मकडजुम्म** पुं [°युग्म-कृतयुग्म] राशि-विशेष ; (भग ३४, १)। °**जुम्म-**

°लिओय [°युग्मकल्योज] राशि-विशेष; (भग ३४, १)। °जुम्मतेओग पु [°युग्मत्र्योज] राशि-विशेष ; (भग ३४, १)। °जुम्मदावरजुम्म पुं [°जुग्मद्वापरयुग्म] राशि-विशेष ; (भग ३४, १) °जोगि त्रि [°योगिन्] १ कृत-क्रिय; (निचू १)। २ गीतार्थ, ज्ञानी ; (ओघ १३४ भा)। ३ तपस्वी ; (निचू १)। °वाइ पुं [°वादिन्] सृष्टि को नैसर्गिक न मान कर किसी की बनाई हुई मानने वाला, जगत्कर्तृत्व-वादी ; (सूत्र १, १, १)। °ाइ पुं [°ादि] देखो °जोगि; (भग; णाया १, १—पत्र ७४)। देखो कय=कृत।

कडअल्ल पुं [दे] दौवारिक, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कडअल्ली स्त्री [दे] कण्ठ, गला ; (दे २, १५)।

कडइअ पु [दे] स्थपति, वढई ; (दे २, २२)।

कडइअ वि [कटकित] वलय की तरह स्थित ; (से १३, ४१)।

कडइल्ल पु [दे] दौवारिक, प्रतीहार ; (दे २, १५)।

कडंगर न [कडङ्गर] तुष, छिलका ; (सुपा १२६)।

कडंत न [दे] मूली, कन्द-विशेष ; २ मुसल ; (दे २, ५६)।

कडंतर न [दे] पुराना सूर्प आदि उपकरण ; (दे २, १६)।

कडंतरिअ वि [दे] दारित, विदारित, विनाशित; (दे २,२०)।

कडंब पुं [कडम्ब] वाद्य-विशेष ; (विसे ७८ टी)।

कडंभुअ न [दे] १ कुम्भग्रीव-नामक पात्र-विशेष; २ घड़े का कण्ठ-भाग ; (दे २, २०)।

कडक देखो कडग ; (नाट—रत्ना ५८)।

कडकडा स्त्री [कडकडा] अनुकरण-शब्द विशेष, कड-कड आवाज, (स २५७ ; पि ५५८, नाट—मालती ५६)।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कड़-कड़ आवाज किया हो वह, जीर्ण ; (सुर ३, १६३)।

कडकडिर वि [कडकडायितृ] कड-कड आवाज करने वाला ; (सण)।

कडक्ख पुं [कटाक्ष] कटाक्ष, तिरछी चितवन, भाव-युक्त दृष्टि, आँख का संकेत ; (पाअ ; सुर १,४३; सुपा ६)।

कडक्ख सक [कटाक्षय्] कटाक्ष करना। कडक्खइ ; (भवि)। संकृ—कडक्खेवि ; (भवि)।

कडक्खण न [कटाक्षण] कटाक्ष करना ; (भवि)।

कडक्खिअ वि [कटाक्षित] १ जिस पर कटाक्ष किया गया हो वह ; (रंभा)। २ न. कटाक्ष ; (भवि)।

कडग पुंन [कटक] १ कडा, वलय, हाथ का आभरण-विशेष ; (णाया १, १)। २ यवनिका, पर्दा ; "अन्नस्स सग्गगमणं होही कडंतरेण तं सव्वं। नियमुत्त-ज्झाएणं" (उप १६६ टी)। ३ पर्वत का मल भाग ; ४ पर्वत का मध्य भाग ; ५ पर्वत की सम भूमि, ६ पर्वत का एक भाग ; "गिरिकंदरकडगविसमदुग्गेसु" (पच ८२ ; पगह १, ३ ; णाया १, ४ ; १८)। ७ शिविर, सेना रहने का स्थान; (बृह २)। ८ पुं. देश विशेष; (णाया १, १—पत्र ३३)। देखो कडय।

कडच्छु स्त्री [दे] कर्छो, चमची, डोई ; (दे २, ७)।

कडण न [कदन] १ मार डालना, हिंसा ; (कुमा)। २ नाश करना ; ३ मर्दन ; ४ पाप ; ५ युद्ध ; ६ विह्वलता, आकुलता ; (हे १, २१७)।

कडण न [कटन] १ घर को छत ; २ घर पर छत डालना; (गच्छ १)।

कडणा स्त्री [कटना] घर का अवयव-विशेष ; (भग ८, ६)।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला ; "सुरगिरिकडणिपगिद्दिव-चंदाइच्चाण सिरिमणुहरंति" (सुपा ६१५)।

कडतला स्त्री [दे] लोहे का एक प्रकार का हथियार, जो एक धार वाला और वक्र होता है ; (दे २, १६)।

कडत्तरिअ [दे] देखो कडंतरिअ ; (भवि)।

कडद्दरिअ वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ ; २ न. छिद्रता ; (षड्)।

कडप्प पुं [दे, कटप्र] १ समूह, निकर, कलाप ; (दे २, १३ ; षड् ; गउड ; सुपा ६२ ; भवि ; विक्र ६५)। २ वस्त्र का एक भाग ; (दे २, १३)।

कडय देखो कडग; (सुर १, १६३; पाअ ; गउड; महा, सुपा १६२ ; दे ५, ३३)। ९ लश्कर, सैन्य ; (ठा ६)। १० पुं. काशी देश का एक राजा, (महा)। °वई स्त्री [°वती] राजा कटक की एक कन्या ; (महा)।

कडयड पुं [कडकड] कड़-कड़ आवाज; "कत्थइ खरपव-हाणयकडम (? य) डभज्जंतदुमगहणं" (पउम ६४, ४४)।

कडयडिय वि [दे] परावर्तित, फिराया हुआ, घुमाया हुआ; "नं कुम्मह कडयडिय पिट्ठि नं पविहउ गिरिवरु" (सुपा १७६)।

कडसक्करा स्त्री [दे] वंश-शलाका, बाँस की सलाई; (विपा १, ६)।

कडसी स्त्री [दे] श्मशान, मसाण ; (दे २, ६) ।

कडहू पुं [कटभू] वृक्ष-विशेष , (बृह १) ।

कडा स्त्री [दे] कडी, सिकली, जंजीर की लडी , "वियडक-वाडकडाणं खडक्खग्रो निसुणिग्रो तत्तो" (सुपा ४१४) ।

कडार न [दे] नालिकेर, नरियर , (दे २, १०) ।

कडार पु [**कडार**] १ वर्ण-विशेष, तामड़ा वर्ण, भूरा रंग ; २ वि. कपिल वर्ण वाला, भूरा रंग का, मटमैला रंग का ; (पाअ ; रयण ७७ ; सुपा ३३. ६२) ।

कडाली स्त्री [दे. **कटालिका**] घोड़े के मुँह पर बाँधने का एक उपकरण ; (अनु ६) ।

कडाह पु [**कटाह**] १ कडाह, लोहे का पात्र, लोहे की बडी कडाही ; (अनु ६ ; नाट —मृच्छ ३)। २ वृक्ष-विशेष ; (पउम १३, ७६) । ३ पॉजर की हड्डी, शरीर का एक अवयव ; (पगण १) ।

कडाहपल्हत्थिअ न [दे] दोनों पार्श्वों का अपवर्तन, पार्श्वों को घुमाना-फिराना , (दे २, २५) ।

कडि स्त्री [**कटि**] १ कमर, कटी ; (विपा १, २ ; अनु ६) । २ वृक्षादि का मध्य भाग ; (जं १) । °**तड** न [°**तट**] १ कटी-तल , २ मध्य भाग ; (राय) । °**पट्टय** न [°**पट्टक**] धोती, वस्त्र-विशेष : (बृह ४) । °**पत्त** न [°**पत्र**] १ सर्गादि वृक्ष की पत्ती, २ पतली कमर; (अनु ५) । °**यल** न [°**तल**] कटी-प्रदेश ; (भवि) । °**ल्ल** वि [°**टीय**] देखो **कडिल्ल** (दे) का २ रा अर्थ । °**वट्टी** स्त्री [°**पट्टी**] कमर का पट्टा, कमर-पट्टा ; (सुपा ३३१)। °**वत्थ** न [°**वस्त्र**] धोती, कमर में पहनने का कपड़ा; (दे २, १७) । °**सुत्त** न [°**सूत्र**] कमर का आभूषण, मेखला; (सम १८३ ; कप्पू) । °**हत्थ** पुं [°**हस्त**] कमर पर रखा हुआ हाथ , (दे २, १७) ।

कडिअ वि [**कटित**] १ कट—चटाई से आच्छादित , (कप्प) । २ कट से संस्कृत , (आचा २, २, १) । ३ एक दूसरे में मिला हुआ , "घणकडियकडिच्छाए" (औप) ।

कडिअ वि [दे] प्रीणित, खुशी किया हुआ, (षड्) ।

कडिखंभ पु [दे] १ कमर पर रक्खा हुआ हाथ , (पाअ, दे २, १७) । २ कमर में किया हुआ आघात ; (दे २, १७) ।

कडित्त देखो **कलित्त**, (णाया १, १ टी—पत्र ६) ।

कडिभिल्ल न [दे] शरीर के एक भाग में होने वाला कुष्ट-विशेष , (बृह ३) ।

कडिल्ल वि [दे] १ छिद्र-रहित; निश्छिद्र ; (दे २, ५२ ; षड्) । २ न. कटी-वस्त्र, कमर में पहनने का वस्त्र, धोती वगैरः ; (दे २, ५२ ; पाअ ; षड् , सुपा १५२ ; कप्पू ; भवि ; विसे २६००) । ३ वन, जंगल, अटवी ;

"संसारभवकडिल्ले, संजोगवियोगसोगतरुगहणे ।
कुपहपणट्ठाण तुमं, सत्थाहो नाह ! उप्पन्नो ।।"

(पउम २, ४५ ; वव २; दे २, ५२) । ४ गहन, निविड, सान्द्र ; "भिल्लिभिल्लायइकडिल्लं" (उप १०३१ टी ; दे २, ५२; षड्)। ५ आशीर्वाद, आसीस; ६ पुं. दौवारिक, प्रतीहार ; ७ विपक्ष, शत्रु, दुश्मन ; (दे २, ५२ ; षड्)। ८ कटाह, लोहे का बड़ा पात्र ; (ओघ ६२) । ९ उपकरण-विशेष ; (दस ६) ।

कडी देखो **कडि** ; (सुपा २२६) ।

कडु / **कडुअ** पुं [**कटुक**] १ कडुआ, तिक्त, रस-विशेष ; (ठा १) । २ वि. तित्ता, तिक्त रस वाला, (से १,६१; कुमा) । ३ अनिष्ट ; (पण्ह २, ५) । ४ दारुण, भयंकर , (पण्ह १, १) । ५ परुष, निष्ठुर ; (नाट—रत्ना ६६) । ६ स्त्री. वनस्पति-विशेष, कुटकी ; (हे २, १५५) ।

कडुअ (शौ) अ [**कृत्वा**] करके ; (हे २, २७२) ।

कडुआल पुं [दे] १ घण्टा, घंटा ; (दे २, ५७) । २ छोटी मछली , (दे २, ५७ ; पाअ) ।

कडुइय वि [**कटुकित**] १ कडुआ किया हुआ । २ दूषित ; (गउड) ।

कडुइया स्त्री [**कटुकी**] वल्ली-विशेष, कुटकी; (पगण १)।

कडुच्छय / **कडुच्छु** / **कडुच्छुय** पुंस्त्री (दे) देखो **कडच्छु** ; "धूवकडुच्छय-हत्था" (सुपा ५१; पाअ ; निर ३, १ ; धम्म ६ टी; भग ५, ७) ।

कडुयाविय वि [दे] १ प्रहृत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह ; (उप पृ ६५) । २ व्यथित, पीडित, "सा य (चोरधाडी) कुमारपहारकडुयाविया भग्गा परम्मुहा कया" (महा) । ३ हराया हुआ, पराभूत ; ४ भारी विपद् में फँसा हुआ ; (भवि) ।

कडूइद (शौ) वि [**कटूकृत**] कटुक किया हुआ ; (नाट)।

कडेवर न [**कलेवर**] शरीर, देह , (राय ; हे ४, ३६५) ।

कड्ढ सक [**कृष्**] १ खींचना। २ चास करना। ३ रेखा करना। ४ पढ़ना। ५ उच्चारण करना। कड्ढइ ; (हे ४, १८७)। वकृ—**कड्ढंत, कड्ढमाण** ; (गा ६८७ ; महा)। कवकृ—**कड्ढिज्जंत, कड्ढिज्जमाण** ; (से ५, २६ ; ६, ३६ ; पराह १, ३)। संकृ—**कड्ढिऊण, कड्ढेउ, कड्ढित्तु कड्ढिय** ; (महा), " कड्ढेतु नमोक्कारं " (पंचव), **कड्ढिउ**; (पि ५७७)। कृ—**कड्ढेयव्व** , (सुपा २३६)।

कड्ढ पुं [**कर्ष**] खींचाव, आकर्षण ; (उत्त १६)।

कड्ढण न [**कर्षण**] १ खींचाव, आकर्षण ; (सुपा २६२)। २ वि. खींचने वाला, आकर्षक ; (उप पृ २७७)।

कड्ढणया स्त्री [**कर्षणता**] आकर्षण ; (उप पृ २७७)।

कड्ढाविय वि [**कर्षित**] खींचवाया हुआ, वाहर निकलवाया हुआ ; (भवि)।

कड्ढिय वि [**कृष्ट**] १ आकृष्ट, खींचा हुआ ; (पराह १,३)। २ पठित, उच्चारित ; (स १८२)।

कड्ढोकड्ढ न [**कर्षापकर्ष**] खींचातान ; (उत्त १६)।

कढ सक [**क्वथ्**] १ क्काथ करना। २ उवालना। ३ तपाना, गरम करना। कढइ ; (हे ४, २२०)। वकृ—**कढमाण**, (पि २२१)। कवकृ—" राया जंपइ एयं सिंचह रे रे **कढंत**तिल्लेण " (सुपा १२०), **कढोअमाण** ; (पि २२१)।

कढकढकढेंत वि [**कडकडायमान**] कड़-कड़ आवाज करता ; (पउम २१, ५०)।

कढिअ वि [**क्वथित**] १ उवाला हुआ ; २ खूब गरम किया हुआ ; " कढिओ खलु निंवरसो अइकडुओ एव जाएइ " (श्रा २७ ; ओघ १४७ ; सुपा ४६६)।

कढिआ स्त्री [**दे**] कढी, भोजन-विशेष ; (दे २, ६७)।

कढिण, कढिणग वि [**कठिन**] १ कठिन, कर्कश, कठोर, परुष; (पराह १, ३ ; पाअ)। २ न. तृण-विशेष; (आचा २, २, ३)। ३ पर्ण, पत्ती ; (पराह २, ५)।

कढोर वि [**कठोर**] १ कठिन , परुष , निष्ठुर। २ पुं. इस नाम का एक राजा ; (पउम ३२, २३)।

कण सक [**क्वण्**] शब्द करना , आवाज करना। कणइ; (हे ४, २३६)। वकृ—**कणंत**; (सुर १०, २१८; वज्जा ६६)।

कण सक [**कण्**] आवाज करना। कणइ; (हे ४, २३६)।

कण पुं [**कण**] १ कणा, लेश ; " गुणकणमवि परिकहिउं न सक्कइ" (सार्ध ७६)। २ विकीर्ण दाना; (कुमा)। ३ वनस्पति-विशेष ; (पराण १)। ४ पुं. एक म्लेच्छ देश; (राज)। ५ ग्रह विशेष , ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७७)। ६ तण्डुल, ओदन ; (उत्त १२)। ७ कनिक ; (आचा २ , १)। ८ विंदु; " विंदुइअं कणइअ " (पाअ)। °**इअ** वि [°**वत्**] विन्दु वाला ; (पाअ)। °**कुंडग** पुं [°**कुण्डक**] ओदन की बनी हुई एक भक्ष्य वस्तु ; " कणकुंडगं चइत्ताणं विट्ठं भुंजइ सूयरो " (उत १२)। °**पूपलिया** स्त्री [°**पूपलिका**] भाजन-विशेष , कणिक की वनाई हुई एक खाद्य वस्तु ; (आचा २ , १)। °**भक्ख** पुं [°**भक्ष**] वैशेषिक मत का प्रवर्तक एक ऋषि ; (राज)। °**वित्ति** स्त्री [°**वृत्ति**] भिक्षा, भीख; (सुपा २३४)। °**वियाणग** पुं [°**वितानक**] देखो **कणग वियाणग** ; (सुज्ज २० ; इक)। °**संताणय** पुं [°**संतानक**] देखो **कणग-संताणय** ; (इक)। °**ाद** पुं [°**ाद**] वैशेषिक मत का पवर्तक ऋषि ; (विसे २१६४)। °**ायण्ण** वि [°**ाकीर्ण**] बिन्दु वाला ; (पाअ)।

कण पुं [**क्वण**] शब्द, आवाज ; (उप पृ १०३)।

कणइकेउ पु [**कनकिकेतु**] इस नाम का एक राजा ; (दंस)।

कणइपुर न [**कनकिपुर**] नगर-विशेष ; जो महाराज जनक के भाई कनक की राजधानी थी ; (ती)।

कणइर पुं [**कर्णिकार**] कणेर , वनस्पति-विशेष ; (पराण १—पत्र ३२)।

कणइल्ल पुं [**दे**] शुक, तोता ; (दे २, २१ ; षड् ; पाअ)।

कणई स्त्री [**दे**] लता , वल्ली ; (दे २ , २५ ; षड् ; स ४१६ ; पाअ)।

कणंगर न [**कनङ्गर**] पाषाण का एक प्रकार का हथियार, (विपा १, ६)।

कणकण पुं [**कणकण**] कण-कण आवाज ; (आवम)।

कणकणकण अक [**दे**] कण कण आवाज करना। कणकणकणंति; (पउम २६, ५३)। वकृ—**कणकणकणंत** ; (पउम ५३ , ८६)।

कणकणग पु [**कनकनक**] ग्रह-विशेष , ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)।

कणक्कणिअ वि [**क्वणक्वणित**] कण-कण आवाज वाला; (कप्पू)।
कणग देखो **कण** ; (कप्प ।
कणग (दे) देखो **कणय**= (दे) ; (पराह १, २)।
कणग पुं [**कनक**] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ रेखा-सहित ज्योतिःपिण्ड, जो आकाश से गिरता है, (ओघ ३१० भा; जी ६)। ३ विन्दु ; ४ शलाका, सलाई, (राज)। ५ घृतवर द्वीप का अधिपति देव ; (सुज्ज १६)। ६ विल्व वृक्ष, वेल का पेड़ ; (उत्तर)। ७ न. सुवर्ण, सोना ; (सं ६४ ; जी ३)। °**कंत** वि [°**कान्त**] १ कनक की तरह चमकता ; (आचा २, ५, १)। २ पु देव-विशेष ; (दीव)। °**कूड** न [°**कूट**] १ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (जं ४)। २ पुं स्वर्ण-मय शिखर वाला पर्वत ; (जीव ३)। °**केउ** पुं [°**केतु**] इस नाम का एक राजा ; (णाया १, १४)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] १ मेरु पर्वत; २ स्वर्ण-प्रचुर पर्वत ; (औप)। °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] इस नाम का एक राजा ; (पंचा ५)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष, (विपा २, ६)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] देव-विशेष ; (सुज्ज १६)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] १ देवी-विशेष, २ 'ज्ञाताधर्मसूत्र' का एक अध्ययन ; (णाया २, १)। °**फुल्लिअ** न [**पुष्पित**] जिसमें सोने के फूल लगाए गये हों ऐसा वस्त्र ; (निचू ७)। °**माला** स्त्री [°**माला**] १ एक विद्याधर की पुत्री ; (उत्त ६)। २ एक स्वनाम-ख्यात साध्वी ; (सुर १५, ६७)। °**रह** पु [°**रथ**] इस नाम का एक राजा; (ठा ७ ; १०)। °**लया** स्त्री [°**लता**] चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल-देव की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १—पत्र २०४)। °**वियाणग** पुं [°**वितानक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष, (ठा २, ३—पत्र ७७)। °**संताणग** पुं [°**संतानक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७७)। °**ावलि** स्त्री [°**ावलि**] १ सुवर्ण का एक आभूषण, सुवर्ण के मणिओं से वना आभूषण ; (अंत २७)। २ तप विशेष, एक प्रकार की तपश्चर्या ; (औप)। ३ पु द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र विशेष; (जीव ३)। °**ावलिपविभत्ति** स्त्री [°**ावलि-प्रविभक्ति**] नाट्य का एक प्रकार; (राय)। °**ावलिभद्द** पुं [°**ावलिभद्र**] कनकावलि द्वीप का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °**ावलिमहाभद्द** पुं [°**ावलिमहाभद्र**] कनकावलिवर-नामक समुद्र का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °**ावलिमहावर** पु [°**ावलिमहावर**] कनकावलिवर-नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °**ावलिवर** पु [°**ावलिवर**] १ इस नाम का एक द्वीप ; २ इस नाम का एक समुद्र ; ३ कनकावलिवर समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष ; (जीव ३)। °**ावलिवरभद्द** पुं [°**ावलिवरभद्र**] कनकावलिवर द्वीप का एक अधिपति देव; (जीव ३)। °**ावलिवरमहाभद्द** पु [°**ावलिवरमहाभद्र**] कनकावलिवर-नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °**ावलिवरोभास** पुं [°**ावलिवरावभास**] १ इस नाम का एक द्वीप ; २ इस नाम का एक समुद्र ; (जीव ३)। °**ावलिवरोभासभद्द** पुं [°**ावलिवरावभासभद्र**] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**ावलिवरोभासमहाभद्द** पुं [°**ावलिवरावभासमहाभद्र**] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव, (जीव ३)। °**ावलिवरोभासमहावर** पुं [°**ावलिवरावभासमहावर**] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**ावलिवरोभासवर** पु [°**ावलिवरावभासवर**] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**ावली** स्त्री [°**ावली**] देखो °**ावलि** का १ला और २रा अर्थ ; (पत्र २७१)। देखो **कणय**=कनक।
कणगा स्त्री [**कनका**] १ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक अग्र-महिषी, (ठा ४, २—पत्र ७७)। २ चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, २)। ३ 'णायाधम्मकहा' सूत्र का एक अध्ययन, (णाया २, १)। ४ क्षुद्र जन्तु-विशेष की एक जाति, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष ; (जीव १)।
कणगुत्तम पु [**कनकोत्तम**] इस नाम का एक देव ; (दीव)।
कणय पु [**दे**] १ फूलों को इकट्ठा करना, अवचय, २ वाण, शर ; "असिलिडयकणयतोमर—" पउम ८, ८८ ; पराह १, १ ; दे २, ५६ ; पाअ)।
कणय देखो **कणग**=कनक; (ओघ ३१० भा, प्रासू १५६; हे १, २२८ ; उव ; पाअ ; महा; कुमा)। ८ पुं. राजा जनक के एक भाई का नाम ; (पउम २८, १३२)। ९ रावण का इस नाम का एक सुभट ;

(d) $2x - 3y = 0$

(पउम ५६, ३२)। १० धतूरा, वृक्ष-विशेष ; (से ६, ४८)। ११ वृक्ष-विशेष ; (पगण १—पत्र ३३)। १२ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)। °पव्वय पु [°पर्वत] देखो **कणग-गिरि** ; (सुपा ४३)। °**मय** वि [°**मय**] सुवर्ण का बना हुआ ; (सुपा २०)। °**भ** न [°**भ**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। °**ली** स्त्री [°**ली**] घर का एक भाग, (णाया १, १—पत्र १२)। °**वली** स्त्री [°**वली**] देखो **कणगावली**। ३ एक राज-पत्नी ; (पउम ७, ४५)।

कणयंदी स्त्री [दे] वृक्ष विशेष, पाडरी, पाटल, (दे २, ५८)।

कणवीर पुं [**करवीर**] १ वृक्ष-विशेष, कनेर , (हे १, २५३ ; सुपा १५१)। २ न. कणेर का फूल ; (पगह १, ३)।

कणि पुस्त्री [दे] स्फुरण , स्फूर्ति, " कणी फुरणं " (पाअ)।

कणिआर देखो **कण्णिआर** ; (कुमा ; प्राप्र ; हे २, ६५)।

कणिआरिअ वि [दे] १ कानी आँख से जो देखा गया हो वह ; २ न. कानी नजर से देखना ; (दे २, २४)।

कणिका स्त्री [**कणिका**] कनेक, रोटी के लिए पानी से भिजाया हुआ आटा ; (दे १, ३७)।

कणिक्क वि [**कणिक्क**] मत्स्य-विशेष , (जीव १)।

कणिक्का देखो **कणिका**; (श्रा १४)।

कणिट्ठ वि [**कनिष्ठ**] १ छोटा, लघु ; (पउम १५, १२ ; हे २, १७२)। २ निकृष्ट, जघन्य ; (रंभा)।

कणिय न [**कणित**] १ आर्त-स्वर ; २ आवाज, ध्वनि ; (आव ४)।

कणिय° } देखो **कणिका** ; (कप्प)। २ कणिका, चावल
कणिया } का टुकड़ा ; (आचा २, १, ८)। °**कुंडय** देखो **कण-कुंडग** ; (स ४८७)।

कणिया स्त्री [**क्वणिता**] वीणा-विशेष ; (जीव ३)।

कणिर वि [**क्वणितृ**] आवाज करने वाला ; (उप पृ १०३; पाअ)।

कणिल्ल न [**कनिल्य**] नक्षत्र-विशेष का गोत्र ; (इक)।

कणिस न [**कणिश**] सस्य-शीर्षक, धान्य का अग्र-भाग ; (दे २, ६)।

कणिस्स न [दे] किंशारु, सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग ; (दे २, ६ ; भवि)।

कणीअ } त्रि [**कनीयस्**] छोटा, लघु ; " तस्स भाया
कणीअस } कणीयसो पट्ट नामं " (वसु ; वेणी १७६ ; कप्प ; अंत १४)।

कणीणिगा स्त्री [**कनीनिका**] १ आँख की तारा ; २ छोटी उंगली ; (राज)।

कणुय न [**कणुक**] त्वग् वगैरः का अवयव; (आचा २,१,८)।

कणूया देखो **कणिया** = कणिका ; (कस)।

कणेड्डिआ स्त्री [दे] गुञ्जा, घुङ्गची ; (दे २, २१)।

कणेर देखो **कण्णिआर** ; (हे १, १६८ ; प २५८)।

कणेरु } स्त्री [**करेणु**] हस्तिनी, हाथिन ; (हे २,
कणेरुया } ११६ ; कुमा ; णाया १, १—पत्र ६४)।

कणोवअ न [दे] गरम किया हुआ जल, तेल वगैरः ; (दे २, १६)।

कण्ण पुं [**कन्या**] राशि-विशेष, कन्या-राशि ; " बुहो य कण्णम्मि वट्टए उच्चो " (पउम १७, ८१)।

कण्ण पुं [**कण्व**] इस नामका एक परिव्राजक, ऋषि विशेष ; (औप ; अभि २६२)।

कण्ण पुंन [**कर्ण**] १ कान , श्रवण , श्रोत्र ; " कण्णाइं " (पि ३५८ ; प्रासू २)। २ अङ्ग देश का इस नाम का एक राजा , युधिष्ठिर का बड़ा भाई ; (णाया १, १६) °**उर**, °**ऊर** न [°**पूर**] कान का आभूषण; (प्राप्र ; हेका ४५)। °**गइ** स्त्री [°**गति**] मेरु-सम्बन्धी एक डोरी ; (जो १०)। °**जयसिंहदेव** पुं [°**जयसिंहदेव**] गुजरात देश का बारहवीं शताब्दी का एक यशस्वी राजा ; (ती)। °**देव** पुं [°**देव**] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का सौराष्ट्र-देशीय एक राजा ; (ती)। °**धार** पुं [°**धार**] नाविक , निर्यामक ; (णाया १, ८)। °**पाउरण** पुं [°**प्रावरण**] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप ; २ उस अन्तर्द्वीप का निवासी ; (पगण १)। °**पावरण** देखो °**पाउरण** ; (इक)। °**पीढ** न [°**पीठ**] कान का एक प्रकार का आभूषण ; (ठा ६)। °**पूर** देखो °**ऊर**; (णाया १, ८)। °**रवा** स्त्री [°**रवा**] नदी-विशेष ; (पउम ४०, १३)। °**वालिया** स्त्री [°**वालिका**] कान के ऊपर भाग में पहना जाता एक प्रकार का आभूषण; (औप)। °**वेहणग** न [°**वेधनक**] उत्सव-विशेष, कर्णवेधोत्सव ; (औप)। °**सक्कुली** स्त्री [°**शष्कुली**] १ कान का छिद्र ; २ कान की

लंबाई ; (गाया १, ८) । °सोहण न [°शोधन] कान का मैल निकालने का एक उपकरण ; (निचू ४) । °हार पुं [°धार] देखो °धार ; (अच्चु २४ ; स ३२७) । देखो कन्न ।

कण्णउज्ज पुं [कान्यकुब्ज] १ देश-विशेष, दोआब, गङ्गा और यमुना नदी के बीच का देश; २ न. उस देश का प्रधान नगर, जिसको आजकल 'कनौज' कहते हैं, (ती, कप्पू) ।

कण्णवाल न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरः, (दे २, २३) ।

कण्णगा देखो कन्नगा ; (आव ४) ।

कण्णच्छुरी स्त्री [दे] गृह-गोधा, छिपकली ; (दे २, १६) ।

कण्णडय (अप) देखो कण्ण, (हे ४, ४३२; ४३३) ।

कण्णल (अप) वि [कर्णाट] १ देश-विशेष, कर्णाटक; २ वि. उस देश का निवासी ; (पिंग) ।

कण्णस वि [कन्यस] अधम, जघन्य; (उत्त ५) ।

कण्णस्सरिय वि [दे] १ कानी नजर से देखा हुआ ; २ न. कानी नजर से देखना ; (दे २, २४) ।

कण्णा स्त्री [कन्या] १ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक राशि । २ कन्या, लडकी, कुमारी; (कप्पू ; वि २८२) । °चोलय न [°चोलक] धान्य-विशेष, जवनाल ; (णंदि) । °णय न [°नय] चोल देश का एक प्रधान नगर ; "चोलदेसावयंसे कण्णाणयनयरे" (ती) । °लिय न [°लीक] कन्या के विषय में बोला जाता झूठ ; (पणह १, ३) ।

कण्णाआस न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरः (दे २, २३) ।

कण्णाइंधण न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरः ; (दे २, २३) ।

कण्णाड पुं [कर्णाट] १ देश-विशेष, जो आजकल 'कर्णाटक' नाम से प्रसिद्ध है, २ वि. उस देश में उत्पन्न, वहां का निवासी ; (कप्पू) ।

कण्णास पुं [दे] पर्यन्त, अन्त-भाग ; (दे २, १४) ।

कण्णिआ स्त्री [कर्णिका] १ पद्म-उदर, कमल का बीज-कोष ; (दे ६, १४०) । २ कोण, अस्र ; (अणु, ठा ८) । ३ शालि वगैरः के बीज का मुख-मूल, तुष-मुख ; (ठा ८) ।

कण्णिआर पुं [कर्णिकार] १ वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ ; (कुमा; हे २, ६५ ; प्राप्र) । २ गोशालक का एक भक्त ; (भग १४, १०) । ३ न. कनेर का फूल ; (गाया १, ६) ।

कण्णिलायण न [कर्णिलायन] नक्षत्र-विशेष का एक गोत्र ; (इक) ।

कण्णोरह देखो कन्नीरह ।

कण्णुप्पल न [कर्णोत्पल] कान का आभूषण-विशेष ; (कप्पू) ।

कण्णेर देखो कण्णिआर ; (हे १, १६८) ।

कण्णोच्छडिआ स्त्री [दे] दूसरे की बात गुपचुप सुनने वाली स्त्री ; (दे २, २२) ।

कण्णोड्डिआ } स्त्री [दे] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष,
कण्णोड्डी } नीरङ्गी ; (दे २, २० टी) ।

कण्णोढत्ती [दे] देखो कण्णोच्छडिआ ; (दे २, २२) ।

कण्णोप्पल देखो कण्णुप्पल ; (नाट) ।

कण्णोल्ली स्त्री [दे] १ चञ्चु, चोच, पक्षी का ठोंठ; २ अवतंस, शेखर, भूषण-विशेष; (दे २, ५७) ।

कण्णोवगण्णिआ स्त्री [कर्णोपकर्णिका] कर्णाकर्णी, कानाकानी ; (दे २, ६१) ।

कण्णोस्सरिअ [दे] देखो कण्णस्सरिअ; (दे २, २४)।

कण्ह पुं [कृष्ण] १ श्रीकृष्ण, माता देवकी और पिता वसुदेव से उत्पन्न नववाँ वासुदेव; (गाया १, १६) । २ पांचवाँ वासुदेव और बलदेव के पूर्व जन्म के गुरु का नाम ; (सम १५३) । ३ देशावकाशिक व्रत को अतिचरित करने वाला एक उपासक; (सुपा ५६२) । ४ विक्रम की तृतीय शताब्दी का एक प्रसिद्ध जैनाचार्य, दिगम्बर जैन मत के प्रवर्त्तक शिवभूति-मुनि के गुरु; (विसे २५५३) । ५ काला वर्ण ; (आचा) । ६ इस नाम का एक परिव्राजक, तापस ; (औप) । ७ वि. श्याम-वर्ण, काला रङ्ग वाला ; (कुमा) । °ओराल पुं [°ओराल] वनस्पति-विशेष; (पगण १—पत्र ३४) । °कंद पुं [°कन्द] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष; (पगण १—पत्र ३६)। °कण्णियार पुं [°कर्णिकार] काली कनेर का गाछ ; (जीव ३) । °कुमार पुं [°कुमार] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, ४) । °गोमी स्त्री [°गोमिन्] काला शृगाल ; "कण्हगोमी जहा चित्ता, कंटगं वा विचित्तयं" (वव ६) ।

°णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव का शरीर काला होता है ; (राज)। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] १ क्रूर कर्म करने वाला ; (सूअ २, २)। २ बहुत काल तक संसार में भ्रमण करने वाला (जीव) ; (ठा १, १)। °वंधुजीव पुं [°वन्धुजीव] वृक्ष-विशेष, श्याम पुष्प वाला दुपहरिया ; (जीव २)। °भूम, °भोम पु [°भूम] काली जमीन , (आवम ; विसे १४५८)। °राइ, °राई स्त्री [°राजि, °जी] १ काली रेखा; (भग ६, ५; ठा ८)। २ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ८; जीव ४)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन—परिच्छेद, (णाया २, १)। °रिसि पुं [°ऋषि] इस नाम का एक ऋषि, जिसका जन्म शंखावती नगरी में हुआ था, (ती)। °लेस, °लेस्स वि [°लेश्य) कृष्ण-लेश्या वाला ; (भग)। °लेसा, °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] जीव का अति-निकृष्ट मनः—परिणाम, जघन्य वृत्ति ; (भग ; सम ११ ; ठा १, १)। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] एक देव-विमान ; (राज ; णाया २, १)। °वल्लि,°वल्ली स्त्री [°वल्लि,°ल्ली] वल्ली-विशेष, नागदमनी लता ; (पराण १)। °सप्प पुं [°सर्प] १ काला सॉप , (जीव ३)। २ राहु ; (सुज्ज २०)। देखो **कन्ह** ।

कण्हा स्त्री [कृष्णा] १ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ८—पत्र ४२६)। २ एक अन्तकृत् स्त्री ; (अंत २५)। ३ द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री; (राज)। ४ राजा श्रेणिक की एक रानी; (निर १, ४)। ५ नहा देश की एक नदी ; (आवम)।

कण्हुइ अ [क्वचित्] क्वचित्, कभी ; (सूअ १, १)। २ कहां से ? (उत्त २)।

कतवार पुं [दे] कतवार, कूड़ा; (दे २, ११)।

कति देखो **कइ** = कति ; (पि ४३३; भग)।

कतु देखो **कउ**=कतु ; (कप्प)।

कत्त सक [कृत्] काटना, छेदना, कतरना। कत्ताहि ; (पगह १, १)। वकृ—**कत्तंत** ; (ओघ ४६८)।

कत्त न [दे] कलत्र, स्त्री ; (षड्)।

कत्तण न [कर्त्तन] १ कतरना, फाटना ; (सम १२५ ; उप पृ २)। २ काटने वाला, कतरने वाला ; (सुर १, ७२)।

कत्तणया स्त्री [कर्त्तनता] लवन, कतराई ; (सुर १, ७२)।

कत्तर पु [दे] कतवार, कूड़ा ; " इत्तो य कविलमूसयकत्तरवहुभारितिड्डपभिईहिं ; केसव-किसी विगट्ठा " (सुपा २३७)।

कत्तरिअ वि [कृत्त, कर्त्तित] कतरा हुआ, काटा हुआ, लून ; (सुपा ५४६)।

कत्तरी स्त्री [कर्त्तरी] कतरनी, कैंची ; (कप्प)।

कत्तवीरिअ पुं [कार्त्तवीर्य] नृप-विशेष ; (सम १५३ ; प्रति ३६)।

कत्तव्व वि [कर्त्तव्य] १ करने योग्य ; (स १७२)। २ न कार्य, काज, काम ; (श्रा ६)।

कत्ता स्त्री [दे] अन्धिका-द्यूत की कपर्दिका कौड़ी ; (दे २, १)।

कत्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म, चमड़ा ; (स ४३६ ; गउड ; णाया १, ८)।

कत्तिकेअ पुं [कार्त्तिकेय] महादेव का एक पुत्र; षडानन; (दे ३, ५)।

कत्तिगी स्त्री [कार्त्तिकी] कार्तिक मास की पूर्णिमा; (पउम ८६, ३० ; इक)।

कत्तिम वि [कृत्रिम] कृत्रिम; बनावटी ; (सुपा ८३ ; जं २)।

कत्तिय पुं [कार्त्तिक] १ कार्तिक मास ; (सम ६५)। २ इस नाम का एक श्रेष्ठी ; (निर १, ३, १)। ३ भरत क्षेत्र के एक भावी तीर्थङ्कर के पूर्व भव का नाम ; (सम १५४)।

कत्तिया स्त्री [कृत्तिका] नक्षत्र-विशेष ; (सम ११ ; इक)।

कत्तिया स्त्री [कर्त्तिका] कतरनी, कैंची ; (सुपा २६०)।

कत्तिया स्त्री [कार्त्तिकी] १ कार्तिक मास की पूर्णिमा , (सम ६६)। २ कार्तिक मास की अमावास्या ; (वव १०)।

कत्तिववियं वि [दे] कृत्रिम, दीखाऊ ; " कत्तिववियाहि उवहिप्पहाणाहिं " (सूअ १, ४)।

कत्तु वि [कर्तृ] करने वाला ; " कत्ता भुत्ता य पुन्नपावाणं" (श्रा ६)।

कत्तो अ [कुतः] कहां से, किससे ? (पउम ४७, ८, कुमा)। °च्चय वि [°त्य] कहां से उत्पन्न ? (विसे १०१६)।

कत्थ सक [कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसना। कत्थइ ; (हे १, १८७)।

कत्थ अ [कुतः] कहां से ? (षड्)।

कत्थ अ [क्व, कुत्र] कहां ? (षड् ; कुमा ; प्रासू १२३)। °इ अ [°चित्] कहीं, किसी जगह, (आचा; कप्प ; हे २, १७४)।

कत्थ वि [कथ्य] १ कहने योग्य, कथनीय ; २ काव्य का एक भेद ; (ठा ४, ४—पत्र २८७)। ३ वनस्पति-विशेष ; (राज)।

कत्थंत देखो **कह**=कथय्।

कत्थभाणी स्त्री [कस्तभानी] पानी में होने वाली वनस्पति-विशेष ; (पराण १—पत्र ३४)।

कत्थूरिया } स्त्री [कस्तुरी] मृग-मद , हरिण के नाभि में
कत्थूरी } उत्पन्न होने वाली सुगन्धित वस्तु ; (सुपा २४७ ; स २३६ ; कप्पू)।

कथ वि [दे] १ उपरत , मृत ; २ क्षीण , दुर्वल ; (षड्)।

कदण देखो **कडण** = कदन ; (कुमा)।

कदली देखो **कयली** ; (पराण १—पत्र ३२)।

कदुइया स्त्री [दे] वल्ली-विशेष , कद्दू , लौकी ; (पराण १—पत्र ३३)।

कद्दम } पुं [कर्दम] १ कादो, कीच , (पराह १,
कद्दमग } ४)। २ देव विशेष, एक नाग-राज ; (भग ६ , ३)।

कद्दमिअ वि [कर्दमित] पङ्क-युक्त , कीच वाला ; (से ७ , २० ; गउड)।

कद्दमिअ पुं [दे] महिष , भैंसा ; (दे २ , १५)।

कन्न देखो **कण्ण** = कर्ण ; (सुर १, २ ; सुर २. १७१; सुपा ५२४ ; धम्म १२ टी ; ठा ४ , २ ; सुपा ६५ ; पाअ)। °ायंस पुं [°ावतंस] कान का आभूषण ; (पाअ)।

कन्नउज्ज देखो **कण्णउज्ज** ; (कुमा)।

कन्नगा स्त्री [कन्यका] कन्या, लडकी , कुमारी ; (सुर ३ , १२२ ; महा)।

कन्ना देखो **कण्णा** ; (सुर २ ,१५४ ; पाअ)।

कन्नाड देखो **कण्णाड** ; (भवि)।

कन्नारिय वि [दे] विभूषित, अलंकृत, " आराहें कन्नारिउ गइंदु " (भवि)।

कन्नीरह पुं [कर्णीरथ] एक प्रकार की शिविका , धनाढ्य का एक प्रकार का वाहन ; (गाया १, ३)।

कन्नुल्लड (अप) पुं [कर्ण] कान, श्रवणेन्द्रिय ; (कुमा)।

कन्नेरय देखो **कण्णिआर** ; (कुमा)।

कन्नोली (दे) देखो **कण्णोल्ली** ; (पाअ)।

कन्ह देखो **कण्ह** ; (सुपा ५६६ ; कप्प)। °**सह** न [°सह] जैन साधुओं के एक कुल का नाम ;(कप्प)।

कपिंजल पुं [कपिञ्जल] पक्षि-विशेष—१ चातक , २ गौरा पक्षी ; (पराह.१ , १)।

कपूर देखो **कप्पूर** ; (श्रा २७)।

कप्प अक [क्लृप्] १ समर्थ होना। २ कल्पना, काम में लाना। ३ काटना , छेदना। कप्पइ, कप्पए ; (कप्प; महा; पिंग) कर्म—कप्पिज्जइ; (हे ४, ३५७)। कृ—**कप्पणिज्ज**; (आव ६)। प्रयो—**कप्पावेज्ज**; (निचू १७)। वकृ—**कप्पावंत**; (निवू १७)।

कप्प सक [कल्पय्] १ करना, बनाना। २ वर्णन करना। ३ कल्पना करना। वकृ—**कप्पेमाण,** (विपा १, १)। संकृ—**कप्पेऊण**; (पंचव १)।

कप्प वि [कल्प्य] ग्रहण-योग्य; (पंचा १२)।

कप्प पुं [कल्प] १ काल-विशेष, देवों के दो हजार युग परिमित समय; " कम्माण कप्पिआणं काहि कप्पंतरेसु णिव्वेसं " (अच्चु १८; कुमा)। २ शास्त्रोक्त विधि, अनुष्ठान; (ठा ६)। ३ शास्त्र-विशेष, (विसे १०७५; सुपा ३२४)। ४ कम्बल-प्रमुख उपकरण; (ओघ ४०)। ५ देवों का स्थान, बारह देव-लोक; (भग ५, ४; ठा २; १०)। ६ बारह देव-लोक निवासी देव, वैमानिक देव; (सम २)। ७ वृक्ष-विशेष, मनो-वाञ्छित फल को देने वाला वृक्ष, कल्प-वृक्ष; (कुमा)। ८ शस्त्र-विशेष; " असिखेडयकप्पतोमरविहत्था " (पउम ६,७३)। ६ अधिवास, स्थान; (वृह १)। १० राजा नन्द का एक मन्त्री; (राज)। ११ वि. समर्थ, शक्तिमान्; (गाया १, १३)। १२ सदृश, तुल्य; " केवलकप्पं " (आवम, पराह २, २)। °ट्ठ पुं [°स्थ] बालक, बच्चा; (वव ७)। °ट्ठि स्त्री [°स्थिति] साधुओं को शास्त्रोक्त अनुष्ठान; (वृह ६)। °ट्ठिया स्त्री [°स्थिका] १ लड़की, बालिका; (वव ४)। २ तरुण स्त्री, (वृह १)। °ट्ठी स्त्री [°स्था] १ बालिका, लड़की; (वव ६)। २ कुलाङ्गना, कुल-वधू; (वव ३)। °तरु पुं [°तरु]

(d) $2x - 3y = 0$

कल्प-वृक्ष; (प्रासू १६८, हे २, ७६)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] देवी, देव-स्त्री; (ठा ३)। °दुम, °द्दुम पुं [°द्रुम] कल्प-वृक्ष, (धण ६, महा)। °पायव पुं [°पादप] कल्प-वृक्ष; (पडि; सुपा ३६)। °पाहुड न [°प्राभृत] जैन ग्रन्थ-विशेष; (तो)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] कल्प-वृक्ष; (पण्ह १, ४)। °वडिंसय न [°ावतंसक] १ विमान-विशेष; २ विमान-वासी देव-विशेष; (निर)। °वडिंसया स्त्री [°ावतंसिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें कल्पावतंसक देव-विमानों का वर्णन है; (राय ; निर १)। °विडवि पुं [°विटपिन्] कल्प-वृक्ष ; (सुपा १२६)। °साल पुं [°शाल] कल्प-वृक्ष ; (उप १४२ टी) °साहि पु [°शाखिन्] कल्प-वृक्ष; (सुपा ३६६)। °सुत्त न [°सूत्र]-श्रीभद्रबाहु स्वामि-विरचित एक जैन ग्रन्थ ; (कप्प; कस)। °सुय न [°श्रुत] १ ज्ञान-विशेष; २ ग्रन्थ-विशेष; (णंदि)। °ाईअ पुं [°ातीत] उत्तम जाति के देव-विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव, (पण्ह १, ५ ; पण्ण १)। °ाग पुं [°ाक] विधि को जानने वाला ; (कस ; औप)। °ाय पु [°ाय] कर, चुंगी, राज-देय भाग ; (विपा १, ३)।

कप्पंत पु [कल्पान्त] प्रलय-काल, संहार-समय ; (कप्पू)।

कप्पड पुं [कर्पट] १ कपडा, वस्त्र; (पउम २५, १८ ; सुपा ३४४, स १८०)। २ जीर्ण वस्त्र, लकुटाकार कपडा; (पण्ह १, ३)।

कप्पडिअ वि [कार्पटिक] भिक्षुक, भीखमंगा ; (गाया १, ८ ; सुपा १३८ ; बृह १)।

कप्पडिअ वि [कापटिक] कपटी, मायावी ; (गाया १, ८—पत्र १५०)।

कप्पण न [कल्पन] छेदन, काटना ; (सुपा १३८)।

कप्पणा स्त्री [कल्पना] १ रचना, निर्माण , २ प्ररूपणा, निरूपण , (निचू १)। ३ कल्पना, विकल्प , (विसे १६३२)।

कप्पणी स्त्री [कल्पनी] कतरनी, कैंची , (पण्ह १, १ ; विपा १, ४ ; स ३७१)।

कप्पर पुं [कर्पर] खप्पर, कपाल, सिर की खोपड़ी, (बृह ४ ; नाट)। देखो **कुप्पर**=कर्पर।

कप्परिअ वि [दे] दारित, चीरा हुआ ; (दे २,२०; वज्जा ३४ ; भवि)।

कप्पास पु [कार्पास] १ कपास, रुई ; २ ऊन, (निचू ३)।

कप्पासत्थि पुं [कार्पासास्थि] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (जीव १)।

कप्पासिय वि [कार्पासिक] कपास का बना हुआ, सूता वगैरः , (अणु)।

कप्पासी स्त्री [कर्पासी] रुई का गाछ ; (राज)।

कप्पिय वि [कल्पित] १ रचित, निर्मित ; (औप)। २ स्थापित, समीप में रखा हुआ ; ' से अभए कुमारे तं अल्ल मंसं रुहिरं अप्पकप्पियं करेइ ; (निर १,१)। ३ कल्पना निर्मित, विकल्पित; (दसनि १)। ४ व्यवस्थित; (आचा; सूअ १, २)। ५ छिन्न, काटा हुआ ; (विपा १, ४)।

कप्पिय वि [कल्पिक] १ अनुमत, अ-निषिद्ध ; (उवर १३०)। २ योग्य, उचित ; (गच्छ १ ; वव ८)। ३ पुं. गीतार्थ, ज्ञानी साधु; "किं वा अकप्पिएणं" (वव १)।

कप्पिया स्त्री [कल्पिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, एक उपाङ्ग ग्रन्थ , (जं १ ; निर)।

कप्पूर पुं [कर्पूर] कपूर, सुगन्धि द्रव्य-विशेष ; (पण्ह २, ५ ; सुर २, ६ ; सुपा २६३)।

कप्पोवग पुं [कल्पोपग] १ कल्प-युक्त। २ देव विशेष, बारह देव लोक वासी देव ; (पण्ण २१)।

कप्पोववण्ण पु [कल्पोपपन्न] ऊपर देखो ; (सुपा ८८)।

कप्पोववत्तिआ स्त्री [कल्पोपपत्तिका] देवलोक-विशेष में उत्पत्ति ; (भग)।

कप्फल न [कट्फल] इस नाम की एक वनस्पति, कायफल, (हे २, ७७)।

कप्फाड देखो **कवाड**=कपाट ; (गउड)।

कप्फाड [दे] देखो **कफाड**; (पात्र)।

कफ पुं [कफ] कफ, शरीर स्थित धातु-विशेष; (राज)।

कफाड पुं [दे] गुफा, गुहा ; (दे २, ७)।

कब्बड, **कब्बडग** पुंन [कर्वट] १ खराब नगर, कुत्सित शहर, (भग ; पण्ह १, २)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ वि. कुनगर का निवासी ; (उत्त ३०)।

कब्बाडभयय पुं [दे] ठीका पर जमीन खोदने का काम करने वाला मजदूर ; (ठा ४, १—पत्र २०३)।

कब्बुर, **कब्बुरय** वि [कर्बुर] १ कबरा, चितकबरा, चितला ; (गउड , अच्चु ६)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष , (ठा २, ३ ; राज)।

कव्वुरिअ वि [**कर्वुरित**] अनेक वर्ण वाला, चितकवरा किया हुआ ; "देहकतिकव्वुरियजम्मगिहं" (सुपा ५४); "मणिमयतोरणधोरणितरुणपहाकिरणकव्वुरिअं" (कुम्मा ६ ; पउम ८२, ११)।

कभ (अप) देखो **कफ** ; (पइ्)।

कभल्ल न [**दे**] कपाल, खप्पर ; (अनु ५ ; उवा)।

कम सक [**क्रम्**] १ चलना, पाँव उठाना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. फैलना, पसरना। ४ होना। "मणसोवि विसयनियमो न क्कमइ जओ स सव्वत्थ" (विसे २४६), "न एत्थ उवायंतरं कमइ" (स २०६)। वकृ—**कमंत**, (से २, ६)। कृ—**कमणिज्ज** ; (औप)।

कम सक [**कम्**] चाहना, वाञ्छना। कवकृ—**कम्ममाण**; (दे २, ८५)। कृ—**कमणीय** ; (सुपा ३४; २६२) ; **कम्म** ; (गाया १, १४ टी—पत्र १८८)।

कम पुं [**क्रम**] १ पाद, पग, पाँव ; (सुर १, ८)। २ परम्परा, "नियकुलकमागयाओ पिउणा विज्जाओ मज्झ दिन्नाओ" (सुर ३, २८)। ३ अनुक्रम, परिपाटी; (गउड)। ४ मर्यादा, सीमा ; (ठा ४)। ५ न्याय, फैसला ; "अविआरिअ कमं ण करिस्सदि" (स्वप्न २१)। ६ नियम ; (वृह १)।

कम पुं [**क्लम**] श्रम, थकावट, क्लान्ति, (हे २, १०६; कुमा)।

कमंडलु पुंन [**कमण्डलु**] संन्यासिओं का एक मिट्टी या काष्ठ का पात्र ; (निर ३, १ ; पण्ह १, ४ ; उप ६४८ टी)।

कमंध पुंन [**कवन्ध**] रुंड, मस्तक-हीन शरीर ; (हे १, २३६ ; प्राप्र ; कुमा)।

कमढ पुं [**दे**] १ दही की कलशी, २ पिठर, स्थाली, ३ बलदेव ; ४ मुख, मुँह ; (दे २, ५५)।

कमढ, **कमढग**, **कमढय** पुं [**कमठ,°क**] १ तापस-विशेप, जिसको भगवान् पार्श्वनाथ ने वाद में जीता था और जो मर कर दैत्य हुआ था ; (णमि २२)। २ कूर्म, कच्छप ; (पाअ)। ३ वंश, बाँस ; ४ शल्लकी वृक्ष; (हे १, १९९)। ५ न. मैल, मल ; (निचू ३)। ६ साध्वीओं का एक पात्र ; (निचू १, ओघ ३६ भा)। ७ साध्वीओं को पहनने का एक वस्त्र ; (ओघ ६७५ ; वृह ३)।

कमण न [**क्रमण**] १ गति, चाल ; २ प्रवृति ; (आचू ४)।

कमणिया स्त्री (**क्रमणिका**] उपानत्, जूता ; (वृह ३)।

कमणिल्ल वि [**क्रमणीवत्**] जूता वाला, जूता पहना हुआ, (वृह ३)।

कमणी स्त्री [**क्रमणी**] जूता, उपानत् ; (वृह ३)।

कमणी स्त्री [**दे**] नि:श्रेणि, सीडी ; (-दे २, ८)।

कमणीय वि [**कमनीय**] सुन्दर, मनोहर ; (सुपा ३४ २६२)।

कमल पु [**दे**] १ पिठर, स्थाली ; २ पटह, ढोल ; (दे २, ५४)। ३ मुख, मुँह ; (दे २, ५४ ; षड्)। ४ हरिण, मृग ; "तत्थ य एगो कमलो सगब्भहरिणीए संगओ वसइ" (सुर १५, २०२ ; दे २, ५४ ; अणु ; कप्प, औप)। ५ कलह, झगड़ा ; (पड्)।

कमल न [**कमल**] १ कमल, पद्म, अरविन्द ; (कप्प ; कुमा ; प्रासू ७१)। २ कमलाख्य इन्द्राणी का सिंहासन, ३ संख्या-विशेप, 'कमलाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, (जो २)। ४ छन्द-विशेष; (पिङ्ग)। ५ पु. कमलाख्य इन्द्राणी के पूर्व जन्म का पिता ; (णाया २)। ६ श्रेष्ठि-विशेप ; (सुपा २७५)। ७ पिङ्गल-प्रसिद्ध एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमें गुरु हो वह गण ; (पिंग)। ८ एक जात का चावल, कलम ; (प्राप्र)। **°क्ख** पुं [**°क्ष**] इस नाम का एक यक्ष ; (सण)। **°जय** न [**°जय**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। **°जोणि** पुं [**°योनि**] ब्रह्मा, विधाता ; (पाअ)। **°पुर** न [**°पुर**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। **°प्पभा** स्त्री [**°प्रभा**] १ काल-नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १)। २ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन, (णाया २)। **°वन्धु** पुं [**°वन्धु**] १ सूर्य, रवि ; (पउम ७०, ६२)। २ इस नाम का एक राजा ; (पउम २२, ९८)। **°माला** स्त्री [**°माला**] पोतनपुर नगर के राजा आनन्द की एक रानी, भगवान् अजितनाथ की मातामही—दादी, (पउम ५, ५२)। **°रय** पुं [**°रजस्**] कमल का पराग; (पाअ)। **°वडिंसय** न [**°ावतंसक**] कमला-नामक इन्द्राणी का प्रासाद; (णाया २)। **°सिरी** स्त्री [**°श्री**] कमला-नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म की माता का नाम, (णाया २)। **°सुंदरी** स्त्री [**°सुन्दरी**] इस नाम की एक रानी ; (उप ७२८

(d) $2x - 3y = 0$

टी)। °सेणा स्त्री [°सेना] एक राज-पुत्री; (महा)। °अर, °गर पु [°कर] १ कमलों का समूह। २ सरोवर, ह्रद वगैरः जलाशय ; (से १, २६ ; कप्प)। °पीड, °मेल पुं [°पीड] भरत चक्रवर्ती का अश्व रत्न ; (जं ३ ; पि ६३)। °सण पुं [°सन] ब्रह्मा, विधाता ; (पाअ , दे ७, ६२)।

कमला स्त्री [दे] हरिणी, मृगी ; (पाअ)।

कमला स्त्री [कमला] १ लक्ष्मी; (पाअ ; सुपा २७५)। २ रावण की एक पत्नी ; (पउम ७४, ६)। ३ काल-नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (ठा ४, १)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाया २)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)। °अर पुं [°कर] धनाढ्य धनी , (से १, २६)।

कमलिणी स्त्री [कमलिनी] पद्मिनी, कमल का गाछ ; (पाअ)।

कमव } अक [स्वप्] सोना, सो जाना। कमवइ ;
कमवस } (षड्), कमवसइ; (हे ४, १४६ ; कुमा)।

कमसो अ [क्रमशः] क्रम से, एक एक करके ; (सुर १, ११६)।

कमिअ वि [दे] उपसर्पित, पास आया हुआ; (दे २,३)।

कमेलग } पुंस्त्री [क्रमेलक] उष्ट्र, ऊँट, (पाअ, उप १०३१
कमेलय } टी; करु ३३)। स्त्री—°गी; (उप १०३१ टी)।

कम्म सक [कृ] हजामत करना, क्षौर-कर्म करना। कम्मइ ; (हे ४, ७२ ; षड्)। वकृ—**कम्मंत** ; (कुमा)।

कम्म सक [भुज्] भोजन करना। कम्मइ ; (षड्)। कम्मेइ; (हे ४, ११०)।

कम्म देखो **कम**=क्रम्।

कम्म पुंन [कर्मन्] १ जीव द्वारा ग्रहण किया जाता अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल ; (ठा ४, ४ ; कम्म १, १)। २ काम, क्रिया, करनी, व्यापार; (ठा १ ; आचा)। "कम्मा णाणफला" (पि १७२)। ३ जो किया जाय वह ; ४ व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष ; (विसे २०६६; ३४२०)। ५ वह स्थान, जहां पर चूना वगैरः पकाया जाता है ; (पराह २, ५—पत्र १२३)। ६ पूर्व-कृति, भाग्य; "कम्मता दुब्भगा चेव" (सुअ १, ३, १ ; आचा ; षड्)। ७ कार्मण शरीर ; ८ कार्मण-शरीर नामकर्म, कर्म-विशेष ; (कम्म २, २१)। °कर वि [°कर] नौकर, चाकर ; (आचा) देखो °गार। °करण न [°करण] कर्म-विषयक बन्धन , जीव-पराक्रम विशेष ; (भग ६, १)। °कार वि [°कार] नौकर ; (पउम १७, ७)। °किब्बिस वि [°किल्बिष] कर्म-चाण्डाल, खराब काम करने वाला ; (उत्त ३)। °क्खंध पुं [°स्कन्ध] कर्म-पुद्गलों का पिण्ड; (कम्म ५)। °गर देखो °कर ; (प्राप्र)। °गार पु [°कार] १ कारीगर, शिल्पी; (णाया १,६) देखो °कर। °जोग पुं [°योग] शास्त्रोक्त अनुष्ठान ; (कम्म)। °ट्ठाण न [°स्थान] कारखाना ; (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ कर्म-पुद्गलों का अवस्थान-समय ; (भग ६, ३)। २ वि. संसारी जीव ; (भग १४, ६)। °णिसेग पुं [°निषेक] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष ; (भग ६, ३)। °धारय पुं [°धारय] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास ; (अणु)। °परिसाडणा स्त्री [°परिशाटना] कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों से पृथक्करण ; (सुअ १, १)। °पुरिस पुं [°पुरुष] कर्म-प्रधान पुरुष—१ कारीगर, शिल्पी; (सुअ १, ४, १) ; २ महारम्भ करने वाले वासुदेव वगैरः राजा लोक ; (ठा ३, १—पत्र ११३)। °प्पवाय न [°प्रवाद] जैन ग्रन्थांश-विशेष, आठवाँ पूर्व ; (सम २६)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों का आत्मा में लगना, कर्मों से आत्मा का बन्धन ; (आव ३)। °भूमग वि [°भूमिक] कर्म-भूमि में उत्पन्न ; (पगण १)। °भूमि स्त्री [°भूमि] कर्म-प्रधान भूमि, भरत क्षेत्र वगैरः ; (जी २३)। °भूमिग देखो °भूमग ; (पगण २३)। °भूमिय वि [°भूमिज] कर्म-भूमि में उत्पन्न ; (ठा ३, १—पत्र ११४)। °मास पु [°मास] श्रावण मास ; (जो १)। °मासग पुं [°माषक] मान-विशेष, चार गुञ्जा, चार रत्ती, (अणु)। °य वि [°ज] १ कर्म से उत्पन्न होने वाला, २ कर्म-पुद्गलों का बना हुआ शरीर-विशेष, कार्मण शरीर; (ठा २, १; ५, १)। °या स्त्री [°जा] अभ्यास से उत्पन्न होने वाली बुद्धि, अनुभव ; (णंदि)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] कर्म द्वारा होने वाला जीव का परिणाम ; (भग १४, १)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] कर्म-रूप में परिणत होने वाला पुद्गल-समूह ; (पंच)। °वाइ वि [°वादिन्] भाग्य को ही सब कुछ मानने वाला ; (राज)। °विवाग पुं [°विपाक] १ कर्म परीणाम, कर्म-फल ; २ कर्म-विपाक का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (कम्म १, १)। °संवच्छर पुं

[°संवत्सर] लौकिक वर्ष ; (सुज्ज १०)। °साला स्त्री [°शाला] १ कारखाना, २ कुम्भकार का घटादि बनाने का स्थान ; (बृह २)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] कारीगर, शिल्पी ; (आवम)। °ाजीव [°ाजीव] १ कारीगर ; २ कारीगरी का कोई भी काम बतला कर भिक्षादि प्राप्त करने वाला साधु; (ठा ५, १)। °ादाण न [°ादान] जिससे भारी पाप हो ऐसा व्यापार ; (भग ८, ५)। °ायरिय पुं [°ार्य] कर्म से आर्य, निर्दोष व्यापार करने वाला ; (पण्ण १)। °ावाइ देखो °वाइ ; (आचा)।

कम्म वि [**कार्मण**] १ कर्म-संबन्धी, कर्म-जन्य, कर्म-निर्मित, कर्म-मय ; २ न. कर्म-पुद्गलों का ही बना हुआ एक अत्यन्त सूक्ष्म शरीर, जो भवान्तर में भी आत्मा के साथ ही रहता है ; (ठा १ ; कम्म ४)। २ कर्म-विशेष, कार्मण शरीर का हेतु-भूत कर्म ; (कम्म २, २१)। ३ कार्मण-शरीर का व्यापार ; (कम्म ३, १५ ; कम्म ४)।

कम्मइय न [**कर्मचित, कार्मण**] ऊपर देखो ; (पउम १०२, ६८)।

कम्मंत पुं [**दे. कर्मान्त**] १ कर्म-बन्धन का कारण; (आचा, सूअ २,२)। २ कर्म-स्थान, कारखाना; (दे २,५२)।

कम्मंत वि [**कुर्वत्**] १ हजामत करता हुआ ; २ हजाम, नापित , (कुमा)। °साला स्त्री [°शाला] जहां पर अस्तुरा आदि सजाया जाता हो वह स्थान, (निचू ८)।

कम्मग न [**कर्मक,कार्मक, कार्मण**] देखो **कम्म**= कार्मण , (ठा २, २ ; पण्ण २१ , भग)।

कम्मण न [**कार्मण**] १ कर्म-मय शरीर ; (दं २२)। २ औषध, मन्त्र आदि के द्वारा मोहन-वशीकरण-उच्चाटन आदि कर्म ; (उप १३४ टी ; स १०८)। °गारि वि [°कारिन्] कामण करने वाला ; (सुर १, ६८)। °जोय पुं [°योग] कार्मण-प्रयोग , (गाया १, १४)।

कम्मण न [**भोजन**] भोजन ; (कुमा)।

कम्ममाण देखो **कम**=कम् ।

कम्मय देखो **कम्मग** ; (भग ; पंच)।

कम्मव सक [**उप+भुज्**] उपभोग करना। कम्मवइ ; (हे ४, १११ ; षड्)।

कम्मवण न [**उपभोग**] उपभोग, काम में लाना , (कुमा)।

कम्मस वि [**कल्मष**] १ मलिन ; २ न. पाप ; (पाअ , हे २, ७९ ; प्रामा)।

कम्मा स्त्री [**कर्मन्**] क्रिया, व्यापार ; (ठा ४, २—पत्र २१०)।

कम्मार पुं [**कर्मार**] १ लोहार, लोहकार ; (विसे १५६८)। २ ग्राम-विशेष ; (आचू १)।

कम्मार, **कम्मारग**, **कम्मारय** वि [**कर्मकार,°क**] १ नौकर, चाकर ; (स ५३७ ; ओघ ४, ६४ टी)। २ कारीगर, शिल्पी ; (जीव ३)।

कम्मारिया स्त्री [**कर्मकारिका**] स्त्री-नौकर, दासी ; सुपा ६३०)।

कम्मि, **कम्मिअ** व [**कर्मिन्**] कर्म करने वाला, अभ्यासी ;

" णवकम्मिएण उअ पामरेण दट्ठूण पाउहारीओ।
मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवरासणी मुक्का "
(गा ६६४

२ पाप कर्म करने वाला ; (सूअ १, ७, ६)।

कम्मिया स्त्री [**कर्मिका, कार्मिका**] १ अभ्यास उत्पन्न होने वाली बुद्धि ; (णाया १, १)। २ अक्षीण कर्म-शेष, अवशिष्ट कर्म ; (भग)।

कम्हल न [**कश्मल**] पाप , (राज)।

कम्हा अ [**कस्मात्**] क्यों, किस कारण से ? (औप)।

कम्हार देखो **कंभार** ; (हे २, ७४)। °ज न [°ज] केसर, कुङ्कुम ; (कुमा)।

कम्हिअ पुं [**दे**] माली, मालाकार ; (दे २, ८)।

कम्हीर देखो **कंभार** ; (मुद्रा २४२ ; पि १२०; ३१२)।

कय पुं [**कच**] केश, बाल , (हे १, १७७ ; कुमा)।

कय पुं [**क्रय**] खरीदना ; (सुपा ३४४)।

कय देखो **कड**=कृत ; (आचा ; कुमा , प्रासू १५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, भाग्यशाली ; (स ६०७ ; सुपा ६०६)। °क देखो °ग (पण्ह १, २)। °कज्ज वि [°कार्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ ; (णाया १, ८)। °करण वि [°करण] अभ्यासी, कृताभ्यास ; (बृह १ , पण्ह १, ३)। °किच्च वि [°कृत्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ ; (सुपा २७)। °ग वि [°क] १ अपनी उत्पत्ति में दूसरे की अपेक्षा करने वाला, प्रयत्न-जन्य ; (विसे १८३७ ; स ६५३)। २ पु. दास-विशेष, गुलाम ; "भयगभत्तं वा बलभत्तं वा कयगभत्तं वा" (निचू ६)। ३ न. सुवर्ण, सोना ; (राज)। °ग्घ वि [°घ्न] उपकार न मानने वाला, कृतघ्न , (सुर २, ४४ ; सुपा

५८८)। °जाणुअ वि [°ज्ञायक] कृतज्ञ, उपकार का मानने वाला; (पि ११८)। °ण्णु वि [°ज्ञ] उपकार का मानने वाला, किए हुए उपकार की कदर करने वाला; (धम्म २६)। °ण्णुया स्त्री [°ज्ञता] कृतज्ञता, एहसानमन्दी, निहोरा मानना, (उप पृ ८६)। °त्थ वि [°र्थ] कृतकृत्य, चरितार्थ, सफल-मनोरथ, (भग ; प्रासू २३)। °नासि वि [°न शिन्] कृतघ्न, (आव १६६)। °न्न, °न्नु देखो °ण्णु, "जं कित्तिजलहिराया विवेयनयमंदिरं कयन्नगुरू" (सुपा ३०१ ; महा ; स ३३ ; श्रा २८)। °पंजलि वि [°प्राञ्जलि] कृताञ्जलि, नमस्कार के लिए जिसने हाथ ऊँचा किया हो वह, (आव)। °पडिकइ स्त्री [°प्रतिकृति] १ प्रत्युपकार, (पचा १६)। २ विनय-विशेष, (वव १)। °पडिकइया स्त्री [°प्रतिकृतिता] १ प्रत्युपकार, (णाया १, २)। २ विनय का एक भेद; (ठा ७)। °वलिकम्म वि [°वलिकर्मन्] जिसने देवता की पूजा की है वह; (भग २, ५ ; णाया १, १६—पत्र २१०; तदु)। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] इस नामकी एक नगरी, (संथा)। °माल, °मालय वि [°माल, °क] १ जिसने माला बनाई हो वह। २ पुं. वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ; "अकोल्लविल्लसल्लइकयमालतमालसालड्ढं" (उप १०३१ टी)। ३ तमिस्रा-नामक गुफा का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३)। °लक्खण वि [°लक्षण] जिसने अपने शरीर चिन्ह को सफल किया हो वह; (भग ६, ३३ ; णाया १, १)। °व वि [°वत्] जिसने किया हो वह; (विसे १५५५)। °वणमालपिय पुं [°वनमालप्रिय] इस नाम का एक यक्ष, (विपा २, १)। °वम्म पुं [°वर्मन्] नृप-विशेष, भगवान् विमलनाथ का पिता; (सम १५१)। °वीरिय पुं [°वीर्य] कार्तवीर्य के पिता का नाम; (सूअ १, ८)।

कयं अ [कृतम्] अलम्, बस ; (उवर १४४)।

कयंगला स्त्री [कृतङ्गला] श्रावस्ती नगरी के समीप की एक नगरी; (भग)।

कयंत पुं [कृतान्त] १ यम, मृत्यु, मरण; (सुपा १६६ ; सुर २, ५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त; "मण्णति कयं तं जं कयंतसिद्धं उ सपरहिअं" (सार्ध ११७; सुपा ११६)। ३ रावण का इस नाम का एक सुभट; (पउम ५६, ३१)। °मुह पुं [°मुख] रामचन्द्र के एक सेनापति का नाम; (पउम ६४, ६२)। °वयण पुं [°वदन] राम का एक सेनापति; (पउम ६४, २०)।

कयंध देखो कमंध; (हे १, १३६ ; षड्)।

कयंब देखो कलंब; (पण्ण १, हे १, २२२)।

कयंबिय वि [कदम्बित] अलंकृत, विभूषित; (कप्प)।

कयंबुअ देखो कलंबुअ; (कप्प)।

कयग पुं [कतक] १ वृक्ष-विशेष, निर्मली। २ न. कतक फल, निर्मली-फल, पायपसारी; "जह कयगमंजणाई जलवुट्ठीओ विसोहिंति" (विसे ५३६ टी)।

कयज्ज वि [कदर्य] कंजूस, कृपण, (राज)।

कयड्डि पुं [कपर्दिन्] इस नाम का एक यक्ष-देवता; (सुपा ५४२)।

कयण न [कदन] हिंसा, मार डालना; (हे १, २१७)।

कयत्थ सक [कदर्थय्] हैरान करना, पीड़ा करना। कयत्थसे; (धम्म ८ टी)। कवकृ—कयत्थिज्जंत; (म ८)।

कयत्थण न [कदर्थन] हैरानी, हैरान करना, पीड़न; (सुपा १८० ; महा)।

कयत्थणा स्त्री [कदर्थना] ऊपर देखो; (स ४७२ ; सुर १५, १)।

कयत्थिय वि [कदर्थित] हैरान किया हुआ, पीड़ित; (सुपा २२७ ; महा)।

कयम वि [कतम] बहुत में से कौन? (स ४०२)।

कयर वि [कतर] दो में से कौन? (हे ३, ५८)।

कयर पुं [क्रकर] १ वृक्ष-विशेष, करीर, करील; (स २५६)। २ न. करीर का फल; (पभा १४)।

कयल पुं [कदल] १ कदली वृक्ष, केला का गाछ। २ न. कदली-फल; केला; (हे १, १६७)।

कयल न [दे] अलिञ्जर, पानी भरने का बड़ा गगरा; (दे २, ४)।

कयलि, °ली स्त्री [कदलि, °ली] केला का गाछ, (महा; हे १, २२०)। °समागम पुं [°समागम] इस नाम का एक गाँव; (आवम)। °हर न [°गृह] कदली-स्तम्भ से बनाया हुआ घर; (महा; सुर ३, १४; ११६)।

कयवर पुं [दे] १ कतवार, कूड़ा, मैला; (णाया १, १ ; सुपा ३८; ८७; स २६४; भत्त ८६; पाअ; सण; पुप्फ ३१; निचू ७)। २ विष्ठा; (आव १)।

कयवरुज्झिया स्त्री [दे. कचवरोज्झिका] कूड़ा साफ करने वाली दासी; (णाया १, ७—पत्र ११७)।

hexanoic acid

कयवाउ पु [**कृकवाकु**] कुक्कुट, कुकड़ा, मुर्गा; (गउड)।
कयवाय पुं [**कृकवाक**] कुक्कुट, कुकड़ा, मुर्गा; (पात्र)।
कयसण न [**कदशन**] खराब भोजन; (विवे १३६)।
कयसेहर पुं [**दे**] कुकड़ा, मुर्गा; " कयसेहराण सुम्मइ आलावो भत्ति गोसम्मि " (वज्जा ७२)।
कया अ [**कदा**] कब, किस समय? (ठा ३, ४ ; प्रासू १६६)।
कयाइ अ [**कदापि**] कभी भी, किसी समय भी; (उवा)।
कयाइ, **कयाई**, **कयाई** अ [**कदाचित्**] १ किसी समय, कभी ; (उवा ; वसु)। " अह अन्नया कयाई " (सुपा ५०६; पि ७३)। २-वितर्क-द्योतक अव्यय; " नट्ठेसि कयाइत्ति " (भग १५)।
कयाण न [**क्रयाणक**] बेचने योग्य वस्तु, करियाना ; (उप पृ १२०)।
कयार पुं [**दे**] कतवार, कूड़ा, मैला; (दे २, ११ ; भवि)।
कयावि देखो **कयाइ**=कदापि ; (प्रासू १३१)।
कर सक [**कृ**] करना, बनाना। करइ; (हे ४, २३४)। भूका—कासी, काही, काहीअ, करिंसु; करेंसु, अकासि, अकासी; (हे ४,१६२ ; कुमा ; भग ; कप्प)। भवि—काहिइ, काही, करिस्सइ, करिहिइ, काहं, काहिमि; (हे १,५; पि ५३३; कुमा)। कर्म—कज्जइ, कीरइ, करिज्जइ; (भग ; हे ४, २५०) वकृ—**करंत, करिंत, करेंत, करेमाण** ; (पि ५०६ ; रयण ७२ ; से २, १५; सुर २, २४० ; उवा)। कवकृ—**कज्जमाण, कीरंत, कीरमाण** ; (पि ५४७ ; कुमा ; गा २७२ ; रयण ८६)। संकृ—**करित्ता, करित्ताणं, करिदूण, काउं, काऊण, काऊणं, कट्टु, करिअ, किच्चा, कियाणं** ; (कप्प ; दस ३ ; षड् ; कुमा ; भग ; अभि ४१ ; सूअ १, १, १ ; औप)। हेकृ—**काउं, करेत्तए** ; (कुमा ; भग ८,२)। कृ—**करणिज्ज, करणीअ, करिअव्व, करेअव्व, कायव्व** ; (दस १० ; षड् ; स २१ ; प्रासू १४८ ; कुमा)। प्रयो—करावेइ, करावेइ; (पि ५५३; ५५२)।
कर पुं [**कर**] १ हस्त, हाथ; (सुर १, ५४ ; प्रासू ५७)। २ महसूल, चुँगी ; (उप ७६८ टी ; सुर १, ५४)। ३ किरण, अंशु ; (उप ७६८ टी, कुमा)। ४ हाथी की सूँढ ; (कुमा)। ५ करका, शिला-वृष्टि, ओला; "करच्छडाभडियपक्खिउले " (पउम ६६, १५)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] १ हाथ से ग्रहण करना ; " दइअकरग्गहलुलिओ धम्मिल्लो " (गा ५४४)। २ पाणि-ग्रहण, शादी ; (राज)। °**य** पु [°**ज**] नख ; (काप्र १७२)। °**रुह** पुंन [°**करुह**] १ नख; (हे १, ३४)। २ नृप-विशेष ; (पउम ७७, ८८)। °**लाघव** न [°**लाघव**] कला-विशेष, हस्त-लाघव; (कप्प)। °**वंदण** न [°**वन्दन**] वन्दन का एक दोष, एक प्रकार का शुल्क समझ कर वन्दन करना ; (बृह ३)।
करअडी, **करअरी** स्त्री [**दे**] स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा ; (दे २, १६)।
करआ स्त्री [**करका**] करका, ओला, शिला-वृष्टि ; (अच्चु ६४)।
करइल्ली स्त्री [**दे**] शुष्क वृक्ष, सूखा पेड़ ; (दे २, १७)।
करंक पुं [**दे. करङ्क**] १ भिक्षा-पात्र; (दे २,५५; गउड)। २ अशोक वृक्ष ; (दे २, ५५)।
करंक पुंन [**करङ्क**] १ हड्डी, हाड ; " करंकचयभीसणे मसाणम्मि " (सुपा १७५)। २ अस्थि-पञ्जर, हाड़-पञ्जर ; (उप ७२८ टी)। ३ पानदान, पान वगैरः रखने की छोटी पेटी; " तंबोलकरंकवाहिणीओ " (कप्पू)। ४ हड्डीओं का ढेर; (सुर ६, २०३)।
करंज सक [**भञ्ज्**] तोड़ना, फोड़ना, टुकडा करना। करंजइ ; (हे ४, १०६)।
करंज पुं [**करञ्ज**] वृक्ष-विशेष, करिञ्जा ; (पराण १ ; दे १, १३ ; गा १२१)।
करंज पुं [**दे**] शुष्क त्वक्, सूखी त्वचा ; (दे २, ८)।
करंजिअ वि [**भग्न**] तोड़ा हुआ ; (कुमा)।
करंड, **करंडग**, **करंडय** पुं [**करण्ड, °क**] १ करण्ड, डिब्बा, पेटिका ; (पराह १, ५ ; श्रा १४; ठा ४, ४)।
करंडिया स्त्री [**करण्डिका**] छोटा डिब्बा ; (णाया १, ७ ; सुपा ४२८)।
करंडी स्त्री [**करण्डी**] १ डिब्बा, पेटिका ; (श्रा १४)। २ कुंडी, पात्र-विशेष ; (उप ५६३)।
करंडुय न [**दे**] पीठ के पास की हड्डी ; (पराह १, ४— पत्र ७८)।
करंत देखो **कर**=कृ।
करंब पुं [**करम्ब**] दही और भात का बना हुआ एक खाद्य द्रव्य, दध्योदन ; (पात्र ; दे २, १४ ; सुपा १३६)।

करंविय वि [**करम्बित**] व्याप्त, खचित ; (सुपा ३४ ; गउड) ।
करकंट पुं [**करकण्ट**] इस नाम का एक परिव्राजक, तापस-विशेष ; (औप) ।
करकंडु पु [**करकण्डु**] एक जैन महर्षि ; (महा ; पडि) ।
करकड वि [**दे. कर्कर, कर्कट**] १ कठिन, परुष; (उवा) ।
करकडी स्त्री [**दे. करकटी**] चिथड़ा, निन्दनीय वस्त्र-विशेष, जो प्राचीन काल में वध्य पुरुष को पहनाया जाता था ; (विपा १, २—पत्र २४) ।
करकय पुं [**क्रकच**] करपत्र, करांत, आरा ; (पण्ह १, १) ।
करकर पुं [**करकर**] 'कर कर' आवाज; (णाया १, ६) । °**सुंठ** पुंन [°**शुण्ठ**] तृण-विशेष; (पराण १—पत्र ४०)।
करकरिग पु [**करकरिक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८) ।
करग पुं [**करक**] १ करका, ओला ; (श्रा २० ; ओघ ३४३ ; जी ५) । २ पानी की कलशी, जल-पात्र ; (अनु ५ ; श्रा १६ ; सुपा ३३६ ; ३६४) । देखो **करय**= करक ।
करघायल पुं [**दे**] किलाट, दूध की मलाई ; (दे २, २२) ।
करट्ट पुं [**दे**] अपवित्र अन्न को खाने वाला ब्राह्मण; (मृच्छ २०७) ।
करड पुं [**करट**] १ काक, कौआ ; (उर १, १४) । २ हाथी का गण्ड-स्थल ; (सुपा १३६ ; पाअ) । ३ वाद्य-विशेष ; (विक्र ८७) । ४ कुसुम्भ-वृक्ष ; ५ करीर-वृक्ष ; ६ गिरगिट, सरट ; ७ पाखंडी, नास्तिक ; ८ श्राद्ध-विशेष ; (दे २, ५५ टी) ।
करड पुं [**दे**] १ व्याघ्र, शेर ; २ वि. कबरा, चितकबरा ; (दे २, ५५) ।
करडा स्त्री [**दे**] लाट्वा—१ एक प्रकार का करञ्ज-वृक्ष; २ पक्षि-विशेष, चटक ; ३ भ्रमर, भमरा ; ४ वाद्य-विशेष ; (दे २, ५५) ।
करडि पुं [**करटिन्**] हाथी, हस्ती ; (सुर २, ६६ ; सुपा ५० ; १३६) ।
करडी स्त्री [**दे. करटी**] वाद्य-विशेष ; "अट्ठसयं करडीणं" (जं २) ।
करडूय पुं [**दे**] श्राद्ध-विशेष ; (पिंड) ।
करण न [**करण**] १ इन्द्रिय ; (सुर ४, २३६ ; कुमा) । २ आसन, पद्मासन वगैरः ; (कुमा) । ३ अधिकरण, आश्रय ; (कुमा) । ४ कृति, क्रिया, विधान ; (ठा ३, ४ ; सुर ४, २४५) । ५ कारक-विशेष, साधकतम ; (ठा ३, १ ; विसे १६३६) । ६ उपधि, उपकरण ; (ओघ ६६६) । ७ न्यायालय, न्याय-स्थल ; (उप पृ ११७) । ८ वीर्य-स्फुरण ; (ठा ३, १—पत्र १०६) । ९ ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध बव-बालवादि करण ; (सुर २, १६५) । १० निमित्त, प्रयोजन ; (आचू १) । ११ जेल, कैदखाना ; (भवि) । १२ वि. जो क्रिया जाय वह ; (ओघ २, भा ३) । १३ करने वाला; (कुमा) । °**ाहिवइ** पुं [°**ाधिपति**] जेल का अध्यक्ष; (भवि) ।
करणया स्त्री [**करणता**] १ अनुष्ठान, क्रिया ; २ संयमा-नुष्ठान ; (णाया १, १—पत्र ५०) ।
करणि स्त्री [**दे**] १ रूप, आकार ; (दे २, ७ ; सुपा १०५; ४७५ ; पाअ) । २ सादृश्य, समानता ; (अणु) । ३ अनुकरण, नकल करना ; (गउड) । ४ स्वीकार, अंगीकार ; (उप पृ ३८५) ।
करणिज्ज देखो **कर**=कृ ।
करणिल्ल वि [**दे**] समान, सदृश ; "मयणजमलतोणीरकर-णिल्लेणं पयामथोरेणं निरंतरेणं च ऊरुजुयलेण" (स ३१२); "बंधूयकरणिल्लेण सहावारुणेण अहरेण" (स ३१२) ।
करणीअ देखो **कर**=कृ ।
करपत्त न [**करपत्र**] करपत्र, क्रकच ; (विपा १, ६) ।
करभ पुं [**करभ**] ऊँट, उष्ट्र ; (पण्ह १, १ ; गउड) ।
करभी स्त्री [**करभी**] १ उष्ट्री, स्त्री-ऊँट ; (पिंड) । २ धान्य भरने का एक बड़ा पात्र ; (बृह २ ; कस) । देखो **करही** ।
करम वि [**दे**] क्षीण, दुर्बल ; (दे २, ६ ; पड्) ।
करमंद पुं [**करमन्द**] फल वाला वृक्ष-विशेष ; (गउड) ।
करमद्द पुं [**करमर्द**] वृक्ष-विशेष, करोंदा; (पराण १—पत्र ३२) ।
करमरी स्त्री [**दे**] हठ-हृत स्त्री, बाँदी ; (दे २, १५ ; षड् ; गा ५२७ ; पाअ) ।
करय देखो **करग** ; (उप ७२८ टी ; पराण १ ; कुमा ; उवा ७) । ३ पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १) ।

(c) hexanoic acid

करयंदी स्त्री [दे] मल्लिका, वेला का गाछ ; (दे २, १८) ।

करयर अक [करकराय्] 'कर-कर' आवाज करना । वकृ—**करयरंत** , (पउम ६४, ३५) ।

करुद्द पुं [**करुद्द**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

करलि } स्त्री [**कदलि, °ली**] १ पताका ; २ हरिण की **करली** } एक जाति ; ३ हाथी का एक आभरण ; (हे १, २२० ; कुमा) ।

करव पुन [**दे. करक**] जल-पात्र ; "पालिकरवाउ नीरं पाएउं पुच्छिओ" (सुपा २१४ ; ६३१) ।

करवंदी स्त्री [**करमन्दी**] लता-विशेष, एक जात का पेड़ ; (दे ८, ३५) ।

करवत्तिआ स्त्री [**करपात्रिका**] जल-पात्र-विशेष ; (श्रा १२) ।

करवाल पु [**करवाल**] खड्ग, तलवार ; (पाअ ; सुपा ६०) ।

करविया स्त्री [**दे. करकिका**] पान-पात्र विशेष ; (सुपा ४८८) ।

करवीर पुं [**करवीर**] वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ ; (गउड) ।

करसी [**दे**] देखो **कडसी** ; (हे २, १७४) ।

करह पुं [**करभ**] १ ऊँट, उष्ट्र ; (पउम ५६, ४४ ; पाअ ; कुमा ; सुपा ४२७) । २ सुगंधी द्रव्य-विशेष ; (गउड ६६८) ।

करहंच न [**करहञ्च**] छंद-विशेष ; (पिंग) ।

करहाड पु [**करहाट**] वृक्ष-विशेष, करहार, शिफा कन्द, मैनफल ; (गउड) ।

करहाडय पुं [**करहाटक**] १ ऊपर देखो । २ देश-विशेष ; "करहाडयविसए धन्नऊरयसंनिवेसम्मि" (स २५३) ।

करही देखो **करभी** । ३ इस नाम का एक छन्द; (पिंग)। **°रुह** वि [**°रोह**] ऊँट-सवार, उष्ट्री पर सवारी करने वाला; (महा) ।

कराइणी स्त्री [**दे**] शाल्मली-वृक्ष, सेमल का पेड़ ; (दे २, १८) ।

करादल्ल पुं [**करादल्ल**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (ती ३७) ।

कराल वि [**कराल**] १ उन्नत, ऊँचा ; (अनु ५) । २ दन्तुरित, जिसका दाँत लम्बा और बाहर निकला हो वह ; (गउड) । ३ भयानक, भयंकर ; (कप्पू) । ४ फाड़ने वाला ; ५ विकसित ; (से १०, ४१) । ६ व्य-वहित ; (से ११, ६६) । ७ वि. इस नाम का विदेह-देश का राजा ; (धर्म १) ।

कराल सक [**करालय्**] १ फाड़ना, छिद्र करना । २ विकसित करना । करालेइ ; (से १०, ४१) ।

करालिअ वि [**करालित**] १ दन्तुरित, लम्बा और बहिर्निर्गत दाँत वाला ; (से १२, १०) । २ व्यवहित किया हुआ, अन्तराल वाला बनाया हुआ ; (से ११, ६६) । ३ भयंकर बनाया हुआ ; (कप्पू) ।

कराली स्त्री [**दे**] दतवन, दाँत शुद्ध करने का काष्ठ ; (दे २, १२) ।

करावण न [**कारण**] करवाना, बनवाना, निर्मापन ; (सुपा ३३२ ; धम्म ८ टी) ।

कराविय वि [**कारित**] कराया हुआ ; (स ५६४ ; महा) ।

करि पुं [**करिन्**] हाथी, हस्ती; (पाअ ; प्रासु १६६) । **°धरणट्ठाण** न [**°धरणस्थान**] हाथी को बाँधने का डोर—रज्जू ; (पाअ)। **°नाह** पुं [**°नाथ**] १ ऐरावण, इन्द्र का हाथी ; २ उत्तम हस्ती ; (सुपा १०६) । **°बंधण** न [**°बन्धन**] हाथी पकड़ने का गर्त ; (पाअ) । **°मयर** पुं [**°मकर**] जल-हस्ती ; (पाअ) ।

करिअ } देखो **कर=कृ** ।
करिअव्व }

करिआ स्त्री [**दे**] मदिरा परोसने का पात्र ; (दे २, १४) ।

करिएव्वउ } (अप) देखो **कायव्व**; (हे ४, ४३८ ; **करिएव्वउं** } कुमा; पि २५४) ।

करिंत देखो **कर=कृ** ।

करिणिया } स्त्री [**करिणी**] हस्तिनी, हथिनी; (महा ; **करिणी** } पउम ८०, ५३ ; सुपा ४) ।

करिण पुं [**करिन्**] हाथी, हस्ती ; "रे दुट्ठ करिणाहम ! कुजाय ! संभंतजुवइगहणेण" (उप ६ टी) ।

करित्ता }
करित्ताणं } देखो **कर=कृ** ।
करिदूण }

करिमरी [**दे**] देखो **करमरी** ; (गा ५४; ५५) ।

करिल्ल न [**दे**] १ वंशाङ्कुर, बाँस का कोपड़, रेतीली भूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष-विशेष, जिसे ऊँट खाते हैं ; (दे २, १०)। २ करैला, तरकारी-विशेष ; "थाणु-पुरिसाइकुट्टुप्पलाइसंभियकरिल्लमंसाई" (विसे २६३)। ३ अंकुर, कन्दल ; (अनु)। ४ पुं. करीर-वृक्ष, करील ; (षड्)। ५ वि. वंशाङ्कुर के समान; "हाहा ते चेय करिल्लपियमावाहुसयणदुल्ललियं" (गउड)।

करिस देखो **कड्ढ**=कृष्। करिसइ ; (हे ४, १८७)। वकृ—**करिसंत**; (सुर १, २३०)। संकृ—**करिसित्ता**; (पि ५८२)।

करिस पुं [**कर्ष**] १ आकर्षण, खींचाव। २ विलेखन, रेखा-करण। ३ मान-विशेष, पल का चौथा हिस्सा ; (जो १)।

करिस देखो **करीस** ; (हे १, १०१ ; पाअ)।

करिसग वि [**कर्षक**] खेती करने वाला, कृषीवल ; (उत ३ ; आवम)

करिसण न [**कर्षण**] १ खींचाव, आकर्षण। २ चासना, खेती करना ; ३ कृषि, खेती ; (पण्ह १, १)।

करिसय देखो **करिसग** ; (सुपा २, २६० ; सुर २, ७७)।

करिसावण पुंन [**कार्षापण**] सिक्का विशेष ; (विसे ५०६ ; अणु)।

करिसिद (शौ) वि [**कर्षित**] १ आकर्षित। २ चासा हुआ, खेती किया हुआ ; (हेका ३३१)।

करिसिय वि [**कृशित**] दुर्बल किया हुआ ; (सुअ २, ३)।

करीर पुं [**करीर**] वृक्ष-विशेष, करीर, करील ; (उप ७२८ टी ; श्रा १६ ; प्रासू ६२)।

करीस पुं [**करीष**] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कंडा, गोइठा ; (हे १, १०१)।

करुण देखो **कलुण** ; (स्वप्न ५३; सुपा २१६); "उज्झइ उयारभावं दक्खिण्णं करुणयं च आमुयइ" (गउड)।

करुणा स्त्री [**करुणा**] दया, दूसरे के दुःख को दूर करने की इच्छा ; (गउड; कुमा)।

करुणाइय वि [**करुणायित**] जिस पर करुणा की गई हो वह ; (गउड)।

करुणि वि [**करुणिन्**] करुणा करने वाला, दयालु ; (सण)।

करेअव्व } देखो **कर**=कृ।
करेंत }

करेडु पुं [**दे**] कृकलास, गिरगिट, सरट ; (दे २, ५)।

करेणु पुं [**करेणु**] १ हस्ती, हाथी ; २ कनेर का गाछ ; "एसो करेणू" (हे २, ११६)। ३ स्त्री. हस्तिनी, हथिनी; (हे २, ११६ ; गाया १, १; सुर ८, १३६)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री ; (उत्त १३)। °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (उत्त १३)।

करेणुआ स्त्री [**करेणु**] हस्तिनी, हथिनी ; (पाअ ; महा)।

करेमाण } देखो **कर**=कृ।
करेअव्व }

करेवाहिय वि [**करवाधित**] राज-कर से पीड़ित, महसूल से हैरान ; (औप)।

करोड पुं [**दे**] १ नालिकेर, नलिएर ; २ काक, कौआ ; ३ वृषभ, बैल ; (दे २, ५४)।

करोडग पुं [**दे**] पात्र-विशेष, कटोरा ; (निचू १)।

करोडिय पुं [**करोटिक**] कापालिक, भिक्षुक-विशेष ; (गाया १, ८—पत्र १५०)।

करोडिया } स्त्री [**करोटिका**, °**टी**] १ कूड़ा, बड़े मुँह का
करोडी } एक पात्र; कांस्य-पात्र विशेष ; (अनु ; दे ७, १५ ; पाअ)। २ स्थगिका, पानदान ; (गाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ मिट्टी का एक जात का पात्र; (औप)। ४ कपाल, भिक्षा-पात्र ; (गाया १, ८)। ५ परोसने का एक उपकरण ; (दे २, ३८)।

करोडी स्त्री [**दे**] एक प्रकार की चींटी, क्षुद्र-जन्तु-विशेष ; (दे २, ३)।

कल सक [**कलय्**] १ संख्या करना। २ आवाज करना। ३ जानना। ४ पहिचानना। ५ संबन्ध करना। कलइ ; (हे ४, २५९ ; षड्)। कलयंति ; (विसे २०२६)। भवि—कलइस्सं; (पि ५३३)। कर्म—कलिज्जए; (विसे २०२६)। वकृ—**कलयंत**; (सुपा ४)। कवकृ—**कलिज्जंत**; (सुपा ६४)। संकृ—**कलिऊण**, **कलिअ** ; (महा; अभि १८२)। कृ—**कलणिज्ज**, **कलणीअ** ; (सुपा ६२२; पि ९१)।

कल वि [**कल**] १ मधुर, मनोहर ; (पाअ)। २ पुं. अव्यक्त मधुर शब्द; (गाया १, १६)। ३ कोलाहल, कल-कल ; (चंद १९)। ४ कर्दम, कीच, कादा ; (भत १३०)। ५ धान्य-विशेष, गोल चना, मटर ; (ठा ५, ३)। °**कंठी** स्त्री [°**कण्ठी**] कोकिला, कोयल ; (दे २, ३० ; कप्पू)। °**मंजुल** वि [°**मञ्जुल**] शब्द

(c) hexanoic acid

से मधुर ; (पात्र)। °यंठ वि [°कण्ठ] कोकिल, कोयल ; (कुमा)। °यंठी देखो °कण्ठी ; (सुर ४, ४८)। °हंस पुं [°हंस] एक पक्षी, राज-हंस; (कप्प; गउड)।

कलंक पुं [**कलङ्क**] १ दाग, दोष ; (प्रासु ६४)। २ लाञ्छन, चिन्ह ; (कुमा ; गउड)।

कलंक सक [**कलङ्कय्**] कलंकित करना। कलंकइ ; (भवि)। कृ—**कलंकियव्व** ; (सुपा ४४८ ; ५८१)।

कलंक पुं [**दे**] १ बाँस, वंश ; (दे २, ८)। २ बाँस की बनाई हुई बाड़ ; (गाया १, १८)।

कलंकण न [**कलङ्कन**] कलंकित करना ; (पत्र ८)।

कलंकल वि [**कलङ्कल**] असमञ्जस, अशुभ ; (औप ; संथा)।

कलंकवई स्त्री [**दे**] वृति, वाड, काँटे आदि से परिच्छन्न स्थान-परिधि ; (दे २, २४)।

कलंकिअ वि [**कलङ्कित**] कलंकित, दागी ; (हे ४, ४३८)।

कलंकिल्ल वि [**कलङ्किन्**] कलंक वाला, दागी; (काल; पि ५९५)।

कलंद पुं [**कलन्द**] १ कुण्ड, कुण्डा, रंग-पात्र ; (उवा)। २ जाति से आर्य एक प्रकार के मनुष्य ; (ठा ६—पत्र ३५८)।

कलंब पुं [**कदम्ब**] १ वृक्ष-विशेष, नीप, कदम का गाछ ; (हे १, ३० ; २२२ ; गा ३७ ; कप्पू)। °**चीर** न [°**चीर**] शस्त्र-विशेष ; (विपा १, ६—पत्र ६६)। °**चीरिया** स्त्री [°**चीरिका**] तृण-विशेष, जिसका अग्र भाग अति तीक्ष्ण होता है ; (जीव ३)। °**वालुया** स्त्री [°**वालुका**] १ कदम्ब के पुष्प के आकार वाली धूली ; २ नरक की नदी, "कलंबवालुयाए दड्ढपुव्वो अणंतसो" (उत्त १९)।

कलंबु स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, नालिका; (दे २, ३)।

कलंबुअ न [**कदम्बक**] कदम्ब-वृक्ष का पुष्प, "धारा-हयकलंबुअं पिव समुस्ससियरोमकूवे" (कप्प)।

कलंबुआ [**दे**] देखो **कलंबु** ; (पराण १ ; सुज्ज ४)।

कलंबुआ स्त्री [**कलम्बुका**] १ कदम्ब पुष्प के समान मांस-गोलक ; २ एक गाँव का नाम, जहां पर भगवान् महावीर को कालहस्ती ने सताया था ; (राज)।

कलकल पुं [**कलकल**] १ कोलाहल, कलकलारव ; (श्रा १४)। २ व्यक्त शब्द, स्पष्ट आवाज; (भग ६, ३३ ; राय)। ३ चूना आदि से मिश्रित जल, (विपा १, ६)।

कलकल अक [**कलकलाय्**] 'कल-कल' आवाज करना। वकृ—**कलकलंत, कलकलिंत, कलकलेंत, कलकलमाण**; (पण्ह १, १ ; ३ ; औप)।

कलकलिअ न [**कलकलित**] कोलाहल करना ; (दे ६, ३६)।

कलक्ख देखो **कडक्ख**=कटाक्ष ; (गा ७०२)।

कलचुलि पुं [**करचुलि**] १ क्षत्रिय-विशेष ; २ इस नाम का एक क्षत्रिय-वंश ; (पिंग)।

कलण देखो **करण** ; "तोलुवि कलणेसु होसु सुहमंकेसो" (अच्चु ८२)।

कलण न [**कलन**] १ शब्द, आवाज; २ संख्यान, गिनती, (विसे २०२८)। ३ धारण करना ; (सुपा २५)। ४ जानना ; (सुपा १६)। ५ प्राप्ति, ग्रहण ; "जुत्तं वा सयलकलाकलणं रयणायरसुअस्स" (श्रा १६)।

कलणा स्त्री [**कलना**] १ कृति, करण ; "जुराणं कंदप्प-दप्पं णिहुवणकलणाकंदलिल्लं कुणंता" (कप्पू)। २ धारण करना, लगाना ; "मज्झणहे सिरिखंडपंककलणा" (कप्पू)।

कलणिज्ज देखो **कल**=कलय् ।

कलत्त न [**कलत्र**] स्त्री, भार्या ; (प्रासु ७६)।

कलधोय देखो **कलहोय** ; (औप)

कलभ पुंस्त्री [**कलभ**] १ हाथी का बच्चा ; (णाया १, १)। २ बच्चा, बालक ; "उवमासु अपज्जत्तेभकलभदंता-वहासमूरुजुअं" (हे १, ७)।

कलभिआ स्त्री [**कलभिका**] हाथी का स्त्री-बच्चा; (णाया १, १—पत्र ६३)।

कलम पुं [**दे. कलम**] १ चोर, तस्कर ; (दे २, १० ; पात्र ; आचा)। २ एक प्रकार का उत्तम चावल ; (उवा; जं २ ; पात्र)।

कलमल पुं [**कलमल**] १ पेट का मल ; (ठा ३, ३)। २ वि. दुर्गन्धि, दुर्गन्ध वाला ; (उप ८३३)

कलय देखो **कालय** ; (हे १, ६७)।

कलय पुं [**दे**] १ अर्जुन वृक्ष; २ सोनार, सुवर्णकार ; (दे २, ५४)।

कलय पुं [**कलाद**] सोनार, सुवर्णकार ; (षड्) ।
कलयंदि वि.[**दे**] १ प्रसिद्ध, विख्यात ; २ स्त्री. वृक्ष-विशेष, पाडरी, पाढल ; (दे २, ५८) ।
कलयज्जल न [**दे**] ओष्ठ-लेप, होंठ पर लगाया जाता लेप-विशेष ; (भवि) ।
कलयल देखो **कलकल** ; (हे २; २२० ; पाअ ; गा ५३५) ।
कलयलिर वि [**कलकलायितृ**] कलकल करने वाला ; वज्जा ६६) ।
कलरुद्दाणी स्त्री [**कलरुद्राणी**] इस नाम का एक छन्द ; (पिंग) ।
कलल न [**कलल**] १ वीर्य और शोणित का समुदाय ; "पाइज्जति रडंता सुतत्ततउतंबसंनिभं कललं" (पउम ११८, ८) । "वसकललसंभसोणिय—" (पउम ३६, ५६) । २ गर्भ-वेष्टन चर्म ; ३ गर्भ के अवयव रूप रत-विकार; (गउड) । ४ कादा, कीचड़, कर्दम ; (गउड) ।
कललिय वि [**कललित**] कर्दमित, कीच वाला किया हुआ; "अण्णोण्णकलहविअलियकेसरकीलालकललियद्दारा" (गउड) ।
कलविंक पुं [**कलविङ्क**] पक्षि-विशेष, चटक, गौरिया पक्षी ; (पाअ ; गउड) ।
कलवू स्त्री [**दे**] तुम्बी-पात्र , (दे २, १२ ; षड्) ।
कलस पु [**कलश**] १ कलश, घड़ा; (उवा ; णाया १, १) । २ स्कन्धक छन्द का एक भेद, छन्द-विशेष; (पिंग) ।
कलसिया स्त्री [**कलशिका**] १ छोटा घड़ा ; (अणु) । २ वाद्य-विशेष ; (आचू १) ।
कलह पुं [**कलह**] क्लेश, झगडा; (उव ; औप) ।
कलह देखो **कलभ** ; (उव; पउम ७८, २८) ।
कलह न [**दे**] तलवार की म्यान ; (दे २, ५ ; पाअ) ।
कलह अक [**कलहाय्**] झगड़ा करना, लड़ाई करना । वकृ— **कलहंत, कलहमाण** ; पउम २८, ४ ; सुपा ११ ; २३३ ; ५४६ ।
कलहण न [**कलहन**] झगडा करना ; (उव) ।
कलहाअ देखो **कलह**=कलहाय् । कलहाएदि (शौ) ; (नाट) । वकृ—**कलहाअंत** ; (गा ६०) ।
कलहाइअ वि [**कलहायित**] कलह वाला, झगड़ाखोर ; (पाअ) ।
कलहि वि [**कलहिन्**] झगडाखोर ; (दे ५, ५४) ।
कलहोय न [**कलधौत**] १ सुवर्ण, सोना ; (सण) । २ चाँदी, रजत ; (गउड ; पण्ह १, ४ ; पाअ) ।
कला स्त्री [**कला**] १ अंश, भाग, मात्रा ; (अनु ४) । २ समय का सूक्ष्म भाग ; (विसे २०२८) । ३ चन्द्रमा का सोलहवाँ हिस्सा ; (प्रासू ६५) । ४ कला, विद्या, विज्ञान ; (कप्प ; राय ; प्रासू ११२) । पुरुष-योग्य कला के मुख्य बहत्तर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौसठ भेद हैं , "बावत्तरी कला " (अणु) ; "बावत्तरिकलापडियावि पुरिसा " (प्रासू १२६) । "चउसट्ठिकलापंडिया" (णाया १, ३) । पुरुष-कला ये हैं ;—१ लिपि-ज्ञान । २ अंक-गणित । ३ चित्र-कला । ४ नाट्य-कला । ५ गान, गाना । ६ वाद्य बजाना । ७ स्वर-गत (षड्ज, ऋषभ वगैरः स्वरों का ज्ञान) । ८ पुष्कर-गत (मृदंग, मुरजादि विशेष वाद्य का ज्ञान) । ६ समताल (संगीत के ताल का ज्ञान) । १० द्यूत कला । ११ जनवाद (लोगों के साथ आलाप-संलाप करने की विधि) । १२ पाँसे का खेल । १३ अष्टापद (चौपाट खेलने की रीति) । १४ शीघ्र-कवित्व । १५ दक-मृत्तिका (पृथक्करण-विद्या) । १६ पाक-कला । १७ पान-विधि (जलपान के गुण-दोष का ज्ञान) । १८ वस्त्र-विधि (वस्त्र के सजावट की रीति)। १६ विलेपन-विधि। २० शयन-विधि । २१ आर्या (छन्द-विशेष) बनाने की रीति । २२ प्रहेलिका (विनोद के लिए पहेलियां-गूढ़ाशय पद्य)। २३ मागधिका (छन्द-विशेष) । २४ गाथा (छन्द विशेष) । २५ गीति (छन्द-विशेष)। २६ श्लोक (अनुष्टुप् छन्द)। २७ हिरण्य-युक्ति (चाँदी के आभूषण की यथास्थान योजना) । २८ सुवर्ण युक्ति । २६ चूर्ण-युक्ति (सुगन्धि पदार्थ बनाने की रीति) । ३० आभरण-विधि (आभूषणों की सजावट)। ३१ तरुणी-परिकर्म (स्त्री को सुन्दर बनाने की रीति)। ३२ स्त्री-लक्षण (स्त्री के शुभाशुभ चिह्नों का परिज्ञान) । ३३ पुरुष-लक्षण । ३४ अश्व लक्षण । ३५ गज-लक्षण । ३६ गो-लक्षण । ३७ कुक्कुट लक्षण । ३८ छत्र-लक्षण । ३६ दण्ड-लक्षण । ४० असि-लक्षण । ४१ मणि-लक्षण (रत्न परीक्षा) । ४२ काकणि-लक्षण (रत्न-विशेष की परीक्षा) । ४३ वास्तुविद्या (गृह बनाने और सजाने की रीति) । ४४ स्कन्धावार-मान (सैन्य-परिमाण) । ४५ नगर-मान । ४६ चार (ग्रह-चार का परिज्ञान) । ४७ प्रतिचार (ग्रहों के वक्र-गमन वगैरः का ज्ञान, अथवा रोग-प्रतीकार-ज्ञान) । ४८ व्यूह (सैन्य-रचना) । ४६ प्रतिव्यूह (प्रतिद्वन्द्वि-व्यूह) । ५० चक्रव्यूह । ५१

गरुड व्यूह । ५२ शकट-व्यूह । ५३ युद्ध (मल्ल युद्ध) । ५५ युद्धातियुद्ध (खड्गादि शस्त्र से युद्ध) । ५६ दृष्टि-युद्ध । ५७ मुष्टि-युद्ध । ५८ बाहु-युद्ध । ५९ लता-युद्ध । ६० इषु-शास्त्र (दिव्यास्त्र-सूचक शास्त्र) । ६१ त्सरु-प्रपात (खड्ग-शिक्षा शास्त्र) । ६२ धनुर्वेद । ६३ हिरण्य-पाक (चाँदी बनाने की रीति)। ६४ सुवर्ण-पाक । ६५ सूत्रक्रीड़ा (एकही सूत को अनेक प्रकार कर दिखाना)। ६६ वस्त्र क्रीड़ा । ६७ नालिका खेल (द्यूत-विशेष) । ६८ पत्र-च्छेद्य (अनेक पत्रों में अमुक पत्र का छेदन, हस्त-लाघव)। ६९ कट-च्छेद्य (कट की तरह क्रम से छेद करने का ज्ञान)। ७० सजीव (मरी हुई धातु को फिर असल बनाना) । ७१ निर्जीव (धातु-मारण, रसायण) । ७२ शकुन-रुत (शकुन-शास्त्र) ; (जं २ टी ; सम ८३) । **°गुरु** पुं [**°गुरु**] कलाचार्य, विद्याध्यापक, शिक्षक ; (सुपा २५)। **°यरिय** पुं [**°चार्य**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (णाया १, १)। **°वई** स्त्री [**°वती**] १ कला वाली स्त्री । २ एक पतिव्रता स्त्री; (उप ७३६ ; पडि) । **°सवण्ण** न [**सवर्ण**] संख्या-विशेष ; (ठा १०) ।

कलाइआ स्त्री [**कलाचिका**] प्रकोष्ठ; कोनी से लेकर मणिबन्ध तक का हस्तावयव ; (पाअ) ।

कलाय पुं [**कलाद**] सोनार, सुवर्णकार ; (पण्ह १, २ , णाया १, ८) ।

कलाय पुं [**कलाय**] धान्य-विशेष, गोल चना, मटर ; (ठा ३, ५ ; अनु ५) ।

कलाव पु [**कलाप**] १ समूह, जत्था ; (हे १, २३१)। २ मयूर-पिच्छ ; (सुपा ४८) । ३ शरधि, तूण, जिसमें बाण रक्खे जाते हैं ; (दे २, १५) । ४ कण्ठ का आभूषण ; (औप) ।

कलावग न [**कलापक**] १ चार श्लोकों की एक-वाक्यता । २ ग्रीवा का एक आभरण ; (पण्ह २, ५) ।

कलावि पुंस्त्री [**कलापिन्**] मयूर, मोर ; (उप ७२८ टी) ।

कलि पुं [**कलि**] १ कलह, झगडा ; (कुमा ; प्रासू ६४) । २ युग विशेष, कलि-युग ; (उप ८३३) । ३ पर्वत-विशेष; (ती ५४) । ४ प्रथम भेद; (निचू १५)। ५ एक, अकेला ; (सूअ १, २, ३; भग १८, ४) । ६ दुष्ट पुरुष ; " दुट्ठो कली " (पाअ) । **°ओग, °ओय** पु [**°ओज**] युग्म-राशि विशेष; (भग १८, ४, ठा ४, ३) । **°ओयकडजुम्म** पुं [**°ओजकृतयुग्म**] युग्म-राशि-विशेष , (भग ३४, १) । **°ओयकलिओय** पु [**°ओजकल्योज**] युग्म-राशि विशेष; (भग ३४, १)। **°ओजतेओय** पुं [**°ओजत्र्योज**] युग्म-राशि विशेष ; (भग ३४, १) । **°ओयदावरजुम्म** पुं [**°ओजद्वापरयुग्म**] युग्म-राशि विशेष ; (भग ३४, १) । **°कुंड** न [**°कुण्ड**] तीर्थ-विशेष ; (ती १५) । **°जुग** न [**°युग**] कलि-युग ; (ती २१) ।

कलि पुं [**दे**] शत्रु , दुश्मन ; (दे २, २) ।

कलिअ वि [**कलित**] १ युक्त, सहित; (पण्ह १, २) । २ प्राप्त, गृहीत , ३ ज्ञात, विदित ; (दे २, ५६; पाअ) ।

कलिअ देखो **कल**=कलय् ।

कलिअ पु [**दे**] १ नकुल, न्यौला, नेवला ; २ वि. गर्वित, गर्व-युक्त ; (दे २, ५६) ।

कलिआ स्त्री [**दे**] सखी, सहेली ; (दे २, ५६) ।

कलिआ स्त्री [**कलिका**] अविकसित पुष्प , (पाअ , गा ४४२) ।

कलिंग पुं [**कलिङ्ग**] १ देश-विशेष, यह देश उडीसा से दक्षिण की ओर गोदावरी के मुहाने पर है ; (पउम ९८, ६७; ओघ ३० भा ; प्रासू ६०) । २ कलिंग देश का राजा , (पिंग) ।

देखो **किलिंच**, (गा ७७०) ।

कलिञ्ज पुं [**कलिञ्ज**] कट, चटाई ; (निवू १७) ।

कलिंज न [**दे**] छोटी लकडी ; (दे २, ११) ।

कलिम्व] १ वाँस का पात्र-विशेष ; "कलिंबो वंसकप्परी" (गच्छ २) । २ सूखी लकड़ी ; (भग ८, ३) ।

कलित्त न [**कटित्र**] कमर पर पहना जाता एक प्रकार का चर्म-मय कवच ; (णाया १, १ ; औप) ।

कलिम न [**दे**] कमल, पद्म ; (दे २, ९) ।

कलिल वि [**कलिल**] गहन, घना, दुर्भेद्य ; (पाअ) ।

कलुण वि [**करुण**] १ दीन, दया-जनक, कृपा-पात्र; (हे १, २५४ ; प्रासू १२६ ; सुर २, २२९) । २ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसो में एक रस ; (अणु)।

कलुणा देखो **करुणा** ; (राज) ।

कलुस वि [**कलुष**] १ मलिन, अस्वच्छ , "कलिकलुस" (विपा १, १ ; पाअ) । २ न. पाप, दोष, मैल ; (स १३२ ; पाअ) ।

कव्वाड पुं [**दे**] दक्षिण हस्त, दाहिना हाथ; (दे २, १०)।
कव्वाय पुं [**क्रव्याद**] १ राक्षस, पिशाच ; (पउम ७, १० ; दे २, १५ ; स २१३) । २ वि. कच्चा मांस खाने वाला ; (पउम २२, ३५) ; ३ मांस खाने वाला ; (पाअ) ।
कव्वाल न [**दे**] १ कर्म-स्थान, कार्यालय ; २ गृह, घर ; (दे २, ५२) ।
कस सक [**कष्**] १ ठार मारना । २ कसना, घिसना । ३ मलिन करना । कसंति ; (पण्ण १३) । कवकृ— **कसिज्जमाण** ; (सुपा ६१५) ।
कस पुं [**कश**] चर्म-यष्टि, चाबुक ; (पण्ह १, ३ ; णाया १, २ ; स ३८७) ।
कस पुं [**कष**] १ कसौटी, कष-क्रिया ; " तावच्छेयकसेहिं सुद्धं पासइ सुवन्नमुप्पन्नं " (सुपा ३८६) । २ कसौटी का पत्थर ; (पाअ) । ३ वि. हिंसक, मार डालने वाला, ठार मारने वाला ; (ठा ४, १) । ४ पुंन. संसार, भव, जगत् ; (उत ४) । ५ न. कर्म, कर्म-पुद्गल : " कम्मं कसं भवो वा कसं " (विसे १२२८) । °**पट्ट**, °**वट्ट** पुं [°**पट्ट**] कसौटी का पत्थर ; (अणु ; गा ६२६; सुर २, २४)। °**हि** पुंस्त्री [°**हि**] सर्प की एक जाति ; (पण्ण १) ।
कसई स्त्री [**दे**] फल-विशेष, अरण्यचारी वनस्पति का फल; (दे २, ६) ।
कसट (पै) देखो **कट्ठ**=कष्ट; (हे ४, ३१४ : प्राप्र) ।
कसट्ट पुं [**दे**] कतवार, कूड़ा ; (ओघ ५५७) ।
कसण पुं [**कृष्ण**] १ वर्ण-विशेष; २ वि. कृष्ण वर्ण वाला, काला; श्याम ; (हे २, ७५ ; ११० ; कुमा) । °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] कृष्ण पक्ष, वदि पखवारा ; (पाअ) । °**सार** पुं [°**सार**] १ वृक्ष-विशेष ; २ हरिण की एक जाति ; (नाट—मृच्छ ३) ।
कसण वि [**कृत्स्न**] सकल, सब, सर्व ; (हे २, ७५) ।
कसणसिअ पुं [**दे**] बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई , (दे २, २३) ।
कसणिअ वि [**कृष्णित**] काला किया हुआ ; (पाअ) ।
कसमीर देखो **कम्हीर** ; (पउम ६८, ६५) ।
कसर पुं [**दे**] अधम बैल ; (दे २, ४ ; गा ७६५) । " णणु सीलभरुव्वहणे, तेवि हु सीयंति का(? क)सरुव्व" (पुप्फ ६३) ।
कसर पुंन [**दे. कसर**] रोग-विशेष, कण्डू-विशेष : " कच्छुख(? क)सराभिभूआ खरतिक्खणक्खकंडूइअविकय-तणू " (जं २—पत्र १६५) ।
कसरक्क पुंन [**दे. कसरत्क**] १ चर्वण-शब्द, खाते समय जो शब्द होता है वह ; " खज्जइ न उ कसरक्केहिं " (हे ४, ४२३ ; कुमा) । २ कुड्मल ;
" ते गिरिसिहरा ते पीलुपल्लवा ते करीरकसरक्का ।
लब्भंति करह ! मरुविलसियाइं कत्तो वणेत्थम्मि "
(वज्जा ४६) ।
कसव्व न [**दे**] वाष्प, भाफ ; २ वि. स्तोक, अल्प , ३ प्रचुर, व्याप्त ; (दे २, ५३) । ४ आर्द्र, गीला ; " रुहिरकसव्वालंवियदीहरवणकोलवच्छनिउरंबं " (स ४३७ : दे २, ५३) । ५ कर्कश, परुष; " वूढोअयकयरवतुरण-कलुसपालासफलकसव्वाओ " (गउड) ।
कसा स्त्री [**कशा, कसा**] चर्म-यष्टि, चाबुक, कोड़ा ; (विपा १, ६ ; सुपा ३४५) ।
कसा देखो **कासा** ; (षड्) ।
कसाइ वि [**कषायिन्**] १ कषाय रंग वाला । २ क्रोध-मान-माया-लोभ वाला ; (पण्ण १८ ; आचा) ।
कसाइअ वि [**कषायित**] ऊपर देखो ; (गा ४८२ ; श्रा ३५ ; आचा) ।
कसाय सक [**कशाय्**] ताड़न करना, मारना । भूका— कसाइत्था ; (आचा) ।
कसाय पुं [**कषाय**] १ क्रोध, मान, माया और लोभ ; (विसे १२२६ ; दं ३) । २ रस-विशेष, कसैला ; (ठा १) । ३ वर्ण-विशेष, लाल-पीला रङ्ग ; (उवा २२) । ४ क्वाथ, काढ़ा ; ५ वि. कसैला स्वाद वाला; ६ कषाय रंग वाला ; ७ सुगन्धी, खुशबूदार , (हे २, १६०) ।
कसार [**दे**] देखो **कंसार** ; (भवि) ।
कसिअ न [**कशिका**] प्रतोद, चाबुक ; " अंधो मए भद्दवदीए कसिअं आढत्तं " (प्रयौ १०८) ।
कसिआ स्त्री ऊपर देखो ; (सुर १३, १७०) ।
कसिआ स्त्री [**दे**] फल-विशेष, अरण्यचारी नामक वनस्पति का फल ; (दे २, ६) ।
कसिट (पै) देखो **कट्ठ**=कष्ट ; (षड्) ।
कसिण देखो **कसण**=कृष्ण, कृत्स्न ; (हे २, ७५ ; कुमा ; पाअ ; दे ४, १२) ।

कसेरु } पुन [**कशेरु, °क**] जलीय कन्द-विशेष; (गउड;
कसेरुय } पराण १)।
कस्सल पुं [**दे**] पङ्क, कर्दम, कादा ; (दे २, २)।
कस्सय न [**दे**] प्राभृत, उपहार, भेंट; (दे २, १२)।
कस्सव पु [**°काश्यप**] १ वंश-विशेष ; " कस्सववंसुतंसो" (विक ६५)। २ ऋषि-विशेष ; (अभि २६)।
कह सक [**कथय्**] कहना, बोलना। कहइ, (हे ४,२)। कर्म—कत्थइ, कहिज्जइ ; (हे १, १८७ ; ४, २४९)। वकृ—**कहंत, कहिंत, कहेमाण**; (रयण ७२ ; सुर ११, १४८)। कवकृ—**कत्थंत, कहिज्जंत, कहिज्जमाण**; (राज ; सुर १, ४४ ; गा १९८; सुर १४, ६४)। संकृ—**कहिउं, कहिऊण** ; (महा , काल)। कृ—**कहणिज्ज, कहियव्व, कहेयव्व, कहणीय,** (सूत्र १, १, १ ; सुर ४, १९२ ; सुपा ३१६ ; (पगह २, ४ ; सुर १२, १७०)।
कह सक [**क्वथ्**] क्वाथ करना, उबालना। कहइ ; (षड्)।
कह पुं [**कफ**] कफ, शरीरस्थ धातु विशेष, बलगम , (कुमा)।
कह देखो **कहं** ; (हे १, २९ ; कुमा ; षड्)। **°कहवि** देखो **कहं-कहंपि** ; (गउड ; उप ७२८ टी)। **°वि** देखो **कहं-पि** ; (प्रासू ११४; १४१)।
कहआ अ [**कथंवा**] वितर्क और आश्चर्य अर्थ को बतलाने वाला अव्यय ; (से ७, ३४)।
कहं अ [**कथम्**] १ कैसे, किस तरह ? (स्वप्न ४५ ; कुमा)। २ क्यों, किस लिए ? (हे १, २९ ; षड् ; महा)। **°कहंपि** अ [**°कथमपि**] किसी तरह ; (गा १४९)। **°कहा** स्त्री [**°कथा**] राग-द्वेष को उत्पन्न करने वाली कथा, विकथा ; (आचा)। **°चि, °ची** अ [**°चित्**] किसी तरह, किसी प्रकार से ; (श्रा १२ ; उप ५३० टी)। **°पि** अ [**°अपि**] किसी तरह ; (गउड)।
कहकह पुं [**कहकह**] प्रमोद-कलकल, खुशी का शोर ; (ठा ३, १—पत्र ११९ ; कप्प)।
कहकह अक [**कहकहय्**] खुशी का शोर मचाना। वकृ—**कहकहिंत** ; (पगह १, २)।
कहकहकह पुं [**कहकहकह**] खुशी का शोर; (भग)।
कहग वि [**कथक**] १ कहने वाला, (सट्ठि २३)। २ पुं. कथा-कार ; (उप १०३१ टी)।
कहण न [**कथन**] कथन, उक्ति ; (धर्म १)।
कहणा स्त्री [**कथना**] ऊपर देखो ; (श्रत २ ; उप ४९७; ६९८)।
कहय देखो **कहग** ; (दे १, १४५)।
कहल्ल पुंन [**दे**] कर्पर, खप्पर ; (अंत १२)।
कहा स्त्री [**कथा**] कथा, वार्ता, हकीकत ; (सुर २, २५० ; कुमा ; स्वप्न ८३)।
कहाणग } न [**कथानक**] १ कथा, वार्ता; (श्रा १२ ;
कहाणय } उप पृ ११९)। २ प्रसंग, प्रस्ताव ; " कयं से नामं जालिणित्ति कहाणयविसेसेण" (स १३३ ; ५८८)। ३ प्रयोजन, कार्य ; "कहाणयविसेसेण समागओ पाडलावहं" (स ५८५)।
कहाव सक [**कथय्**] कहलाना, बुलवाना। कहावेइ ; (महा)।
कहावण पुं [**कार्षापण**] सिक्का-विशेष ; (हे २ , ७१ ; ९३ ; कुमा)।
कहाविअ वि [**कथित**] कहलाया हुआ ; (सुपा ६५ ; ४५७)।
कहि }
कहिआ } अ [**क्व, कुत्र**] कहां, किस स्थान में ? (उवा; भग; नाट , कुमा ; उवा)।
कहिं }
कहित्तु वि [**कथयितृ**] कहने वाला, भाषक ; (सम १५)।
कहिय वि [**कथित**] कथित, उक्त ; (उव ; नाट)।
कहिया स्त्री [**कथिका**] कथा, कहानी ; (उप १०३१ टी)।
कहु (अप) अ [**कुतः**] कहां से, ? (षड्)।
कहेड वि [**दे**] तरुण, जुवान ; (दे २, १३)।
कहेत्तु देखो **कहित्तु** ; (ठा ४, २)।
काइअ वि [**कायिक**] शारीरिक, शरीर-सबन्धी ; (श्रा ३४ ; प्रामा)।
काइआ } स्त्री [**कायिकी**] १ शरीर-सबन्धी क्रिया, शरीर
काइगा } से निर्वृत्त व्यापार ; (ठा २, १ ; सम १०; नव १७)। २ शौच-क्रिया ; (स ६४९)। ३ मूत्र, पेशाव; (ओघ २१९ ; उप पृ २७८)।
काइंदी स्त्री [**काकन्दी**] इस नाम की एक नगरी, बिहार की एक नगरी ; (संथा ७६)।
काइणी स्त्री [**दे**] गुन्जा, लाल रत्ती ; (दे २, २१)।

काई स्त्री [**काकी**] कौए की मादा ; (विपा १, ३)।
काउ स्त्री [**कापोती**] लेश्या-विशेष, आत्मा का एक प्रकार का परिणाम ; (भग ; आचा)। °**लेसा** स्त्री [°**लेश्या**] आत्म-परिणाम विशेष ; (सम ; ठा ३, १)। °**लेस्स** वि [°**लेश्य**] कापोत लेश्या वाला ; (पण्ण १७ ; भग)। °**लेस्सा** देखो °**लेसा** ; (पण्ण १७)।
काउं देखो **कर**=कृ।
काउंबर पुं [**काकोदुम्बर**] नीचे देखो ; (राज)।
काउंबरी स्त्री [**काकोदुम्बरी**] ओषधि-विशेष ; "निवंब-उंबउंबरकाउंबरिबोरि—" (उप १०३१ टी ; पण्ण १)।
काउकाम विं [**कर्त्तु काम**] करने को चाहने वाला; (ओघ ५३७)।
काउड्डावण न [**कायोड्डायन**] उच्चाटन, दूर-स्थित दूसरे के शरीर का आकर्षण करना ; (णाया १, १४)।
काउदर पुं [**काकोदर**] साँप की एक जाति ; (पण्ह १, १)।
काउमण वि [**कर्त्तु मनस्**] करने की चाह वाला; (उव ; उप पृ ७० ; सं ६०)।
काउरिस पुं [**कापुरुष**] १ खराब आदमी, नीच पुरुष ; २ कातर, डरपोक पुरुष ; (गउड ; सुर ८, १५० ; सुपा १६२)।
काउल्ल पुं [**दे**] वक, बगुला ; (दे २, ६)।
काउसग्ग, **काउस्सग्ग** पुं [**कायोत्सर्ग**] १ शरीर पर के ममत्व का त्याग ; (उत्त २६)। २ कायिक क्रिया का त्याग ; ३ ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता ; (पडि)।
काऊ देखो **काउ** ; (ठा १ ; कम्म ४, १३)।
काऊण, **काऊणं** देखो **कर**=कृ।
काओदर देखो **काउदर** ; (स्वप्न ६८)।
काओली स्त्री [**काकोली**] कन्द-विशेष, वनस्पति-विशेष; (पण्ण १)।
काओवग पुं [**कायोपग**] संसारी आत्मा ; (सूअ २, ६)।
काओसग्ग देखो **काउसग्ग** ; (भवि)।
काक पुं [**काक**] १ कौआ, वायस ; (अनु ३)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष, (ठा २,-३—पत्र ७८)। °**जंघा** स्त्री [°**जङ्घा**] वनस्पति-विशेष, चकसेनी, घूंघची; (अनु ३)। देखो **काग**, **काय**=काक।
काकंदग पुं [**काकन्दक**] एक जैन महर्षि; (कप्प)।
काकंदिय पुं [**काकन्दिक**] एक जैन महर्षि ; (कप्प)।
काकंदिया स्त्री [**काकन्दिका**] जैन मुनिओ की एक शाखा ; (कप्प)।
काकंदी देखो **काइंदी** ; (णाया १, ६ ; ठा ५, १)।
काकणि देखो **कागणि** ; (विपा १, २)।
काकलि देखो **कागलि** ; (ठा १०—पत्र ४७१)।
काग देखो **काक** ; (दे १, १०६ ; प्रासू ६०)। °**ताल-संजीवगनाय** पुं [°**तालसंजीवकन्याय**] काकतालीय-न्याय ; (उप १४२ टी)। °**तालिज्ज**, °**ताढीअ** न [°**तालीय**] जैसे कौए का अतर्कित आगमन और ताल-फल का अकस्मात् गिरना होता है ऐसा अवितर्कित संभव, अकस्मात् किसी कार्य का होना ; (आचा ; दे ५, १५)। °**थल** न [°**स्थल**] देश-विशेष; (दे २, २७)। °**पाल** पुं [°**पाल**] कुष्ठ-विशेष ; (राज)। °**पिंडी** स्त्री [°**पिण्डी**] अग्र-पिण्ड ; (आचा २, १, ६)। देखो **काय**=काक।
कागंदी देखो **काइंदी** ; (अनु २)।
कागणि स्त्री [**दे**] १ राज्य ; " असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जायइ कागणिं " (विसे ८६२)। २ मांस का छोटा टुकड़ा ; (औप)।
कागणी देखो **कागिणी** ; (श्रा २७ ; ठा ७)।
कागल पुं [**काकल**] ग्रीवास्थ उन्नत प्रदेश ; (अनु)।
कागलि, **कागली** स्त्री [**काकलि**, °**ली**] १ सूक्ष्म गीत-ध्वनि, स्वर-विशेष ; (सुपा ५६ ; उप पृ ३५)। २ देवी-विशेष, भगवान् अभिनन्दन की शासन-देवी; (पव २७)।
कागिणी स्त्री [**काकिणी**] १ कौड़ी, कपर्दिका, (उर ७, ३ ; उव ; श्रा २८ टी)। २ बीस कौडी के मूल्य का एक सिक्का ; (उप ५४५)। ३ रत्न-विशेष; (सम २७ ; उप ६८६ टी)।
कागी स्त्री [**काकी**] १ कौए की मादा ; (वव ३)। २ विद्या-विशेष ; (विसे २४५३)।
कागोणंद पुं [**काकोनन्द**] इस नाम की एक म्लेच्छ-जाति, " मिच्छा कागोणंदा विक्खाया महियलम्मि ते सूरा " (पउम ३४, ४१)।
काण वि [**काण**] काना, एकाक्ष, (सुपा ६४३)।
काण वि [**दे**] १ सच्छिद्र, काना ; (आचा २, १, ८)। २ चुराया हुआ। °**क्कय** पुं [°**क्रय**] चुराई हुई चीज को खरीदना ; (सुपा ३४३ ; ३४४)।

काणच्छि } स्त्री [**दे**] टेढी नजर से देखना, कटाक्ष ;
काणच्छिया } (दे २, २४ ; भवि) । "काणच्छियाओ य जहा विडो तहा करेइ " (आवम) ।

काणण न [**कानन**] १ वन, जंगल ; (पात्र) । २ बगीचा, उपवन ; (अनु ; औप) ।

काणत्थेव पुं [**दे**] विरल जल-वृष्टि, बुंद बुंद बरसना ; (दे २, २६) ।

काणद्धी स्त्री [**दे**] परिहास; (दे २, २८) ।

काणिक्का स्त्री [**दे**] वडी ईंट ; (वृह ३) ।

काणिट्टा स्त्री [**काणेष्टा**] लोह की ईंट ; (वव ४) ।

काणिय न [**काण्य**] आँख का रोग ; " काणियं भिम्मियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा " (आचा) ।

काणीण पुं [**कानीन**] कुँवारी कन्या से उत्पन्न पुत्र ; (भवि) ।

कादंव देखो **कायंव** ; (पण्ह १, १) ।

कादंवरी देखो **कायंवरी** ; (अभि १८८) ।

कापुरिस देखो **काउरिस** ; (गाया १, १) ।

काम सक [**कामय्**] चाहना, वाञ्छना । कामेइ ; (पि ४६१) । कामेंति ; (गउड) । वकृ—**कामेंत का-मअमाण** ; (गा २५६ ; अभि ६१) ।

काम पुं [**काम**] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा, (उत १४; आचा ; प्रासू ६६) । २ सुन्दर शब्द, रूप वगैर : विषय ; (भग ७, ७ ; ठा ४, ४) । ३ विषय का अभिलाष ; (कुमा) । ४ मदन, कन्दर्प ; (कुमा ; प्रासू १) । ५ इन्द्रिय-प्रीति ; (धर्म १)। ६ मैथुन ; (पगण २) । ७ छन्द-विशेष ; (पिंग) । °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३)। °**कम** न [°**कम**] लान्तक देव-लोक के इन्द्र का एक यात्रा-विमान , (ठा १०—पत्र ४३७) । °**काम** वि [°**काम**] विषय की चाह वाला ; (पगण २) । °**कामि** वि [°**कामिन्**] विषयाभिलाषी ; (आचा) । °**कूड** न [°**कूट**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**गम** वि [°**गम**] १ स्वेच्छाचारी, स्वैरी ; (जीव ३) । २ न. देखो °**कम** ; (जीव ३) । °**गामि** स्त्री [°**गामी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३५) । °**गुण** न [°**गुण**] १ मैथुन ; (पण्ह १, ४) । २ शब्द-प्रमुख विषय ; (उत १४) । °**घड** पुं [°**घट**] ईप्सित चीज को देने वाला दिव्य कलश , (श्रा १४) । °**जल** न [°**जल**] स्नान-पीठ, जिस पर बैठकर स्नान किया जाता है वह पट्ट ; "सिणाणपीढं तु कामजलं" (निचू १३) । °**जुग** पुं [°**युग**] पक्षि-विशेष ; (जीव ३) । °**ज्झय** न [°**ध्वज**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**ज्झया** स्त्री [°**ध्वजा**] इस नाम की एक वेश्या ; (विपा १, २) । °**ट्ठि** वि [°**र्थिन्**] विषयाभिलाषी ; (गाया १, १) । °**ड्ढिय** पुं [°**र्द्धिक**] १ जैन साधुओं का एक गण. (ठा ६—पत्र ४५१) । २ न. जैन मुनिओं का एक कुल. (राज) । °**णयर** न [°**नगर**] विद्याधरों का एक नगर· (इक) । °**दाइणी** स्त्री [°**दायिनी**] ईप्सित फल को देने वाली विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३५) । °**दुहा** स्त्री [°**दुघा**] काम-धेनु ; (श्रा १६) । °**देअ**, °**देव** पुं [°**देव**] १ अनंग, कन्दर्प, (नाट , स्वप्न ५५) । २ एक जैन श्रावक का नाम ; (उवा) । °**धेणु** स्त्री [°**धेनु**] ईप्सित फल देने वाली गौ; (काल) । °**पाल** पुं [°**पाल**] १ देव-विशेष ; (दीव) । २ बलदेव, हलायुध ; (पात्र)। °**पिपासय** वि [°**पिपासक**] विषयाभिलाषी; (भग) । °**पुर** न [°**पुर**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर; (इक) । °**प्पभ** न [°**प्रभ**] देव विमान-विशेष ; (जीव ३) । °**फास** पुं [°**स्पर्श**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष (सुज्ज २०) । °**महावण** न [°**महावन**] बनारस के समीप का एक चैत्य ; (भग १५) । °**रूअ** पुं [°**रूप**] देश-विशेष, जो आसाम में है ; (पिंग) । °**लेस्स** न [°**लेश्य**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान ; (जीव ३)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] रति-शास्त्र ; (धर्म २) । °**समणुण्ण** वि [°**समनोज्ञ**] कामासक्त, कामान्ध , (आचा) । °**सिंगार** न [°**शृङ्गार**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३) । °**सिट्ठ** न [°**शिष्ट**] एक देव-विमान ; (जीव ३) । °**ावट्ट** न [°**ावर्त**] देव-विमान-विशेष ; (जीव ३) । °**ावसाइत्ता** स्त्री [°**ावशायिता**] योगी का एक तरह का ऐश्वर्य, 'जिसमें योगी अपनी इच्छा के अनुसार सर्व पदार्थों का अपने चित्त में समावेश करता है ; (राज) । °**ासंसा** स्त्री [°**ाशंसा**] विषयाभिलाष , (ठा ४, ४) ।

कामं अ [**कामम्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अवधारण ; (सूअ २, १) । २ अनुमति, सम्मति ; (निचू १६) । ३ अभ्युपगम, स्वीकार ; (सूअ २, ६) । ४ अतिशय, आधिक्य ; (हे २, २१७ ;

कामंग न [**कामाङ्ग**] कन्दर्प का उत्तेजक स्नान वगैरः ; (सूत्र २, २)।
कामंदुहा स्त्री [**कामदुघा**] काम-धेनु, ईप्सित वस्तु को देने वाली दिव्य गौ, (पउम ८२, १४)।
कामंध पुं [**कामान्ध**] विषयातुर, तीव्र-कामी ; (प्रासू १७६)।
कामकिसोर पुं [**दे**] गर्दभ, गधा, (दे २, ३०)।
कामग वि [**कामक**] १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय ; (पराह १, १)। २ चाहने वाला, इच्छुक ; (सूत्र १, २, २)।
कामण न [**कामन**] चाह, अभिलाष, "परइत्थिकामणेणं जीवा नरयम्मि वच्चति" (महा)।
कामय देखो **कामग** ; (उवा)।
कामि वि [**कामिन्**] विषयाभिलाषी ; (आचा ; गउड)।
कामिअ वि [**कामित**] वाञ्छित, अभिलषित ; (सुपा २५५)।
कामिअ वि [**कामिक**] १ काम-संबन्धी, विषय संबन्धी ; (भत्त १११)। २ न. तीर्थ-विशेष ; (ती २८)। ३ सरोवर-विशेष, जिसमें गिरने से ईप्सित जन्म मिलता है ; (राज)। ४ इच्छा पूर्ण करने वाला ; (स ३६०)। ५ वि. इच्छुक, इच्छा वाला, साभिलाष ; (विपा १, १)।
कामिआ स्त्री [**कामिका**] इच्छा, अभिलाषा; "अकामिआए चिणति दुक्खं" (पराह १, ३)।
कामिंजुल पु [**कामिञ्जुल**] पक्षि-विशेष ; (दे २, २६)।
कामिड्ढि पुं [**कामर्द्धि**] एक जैन मुनि, आर्य सुहस्ति-सूरि का एक शिष्य ; (कप्प)।
कामिड्ढिय न [**कामर्द्धिक**] जैन मुनिओं का एक कुल ; (कप्प)।
कामिणी स्त्री [**कामिनी**] कान्ता, स्त्री ; (सुपा ५)।
कामुअ } त्रि [**कामुक**] कामी, विषयाभिलाषी ; (मै
कामुग } २५ ; महा)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] काम-शास्त्र, रति-शास्त्र ; (उप ५३० टी)।
कामुत्तरवडिंसग न [**कामोत्तरावतंसक**] देव-विमान विशेष ; (जीव ३)।
काय पुं [**काय**] १ शरीर, देह ; (ठा ३, १ ; कुमा)। २ समूह, राशि ; (विसे ९००)। ३ देश-विशेष ; (पराह १, १)। ४ वि. उस देश में रहने वाला, (पराण १)। °**गुत्त** वि [°**गुप्त**] शरीर को वश में रखने वाला ; (भग)। °**गुत्ति** स्त्री [°**गुप्ति**] शरीर का वश में रखना, जितेन्द्रियता; (भग)। °**जोअ**, °**जोग** पुं [°**योग**] शरीर-व्यापार, शारीरिक क्रिया ; (भग)। °**जोगि** वि [°**योगिन्**] शरीर-जन्य क्रिया वाला ; (भग)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर रहना ; (ठा २, ३)। °**णिरोह** पुं [°**निरोध**] शरीर-व्यापार का परित्याग ; (आव ४)। °**तिगिच्छा** स्त्री [°**चिकित्सा**] १ शरीर-रोग की प्रतिक्रिया ; २ उसका प्रतिपादक शास्त्र ; (विपा १, ८)। °**भवत्थ** वि [°**भवस्थ**] माता के उदर में स्थित ; (भग)। °**वंझ** पु [°**वन्ध्य**] ग्रह-विशेष ; (राज)। °**समिअ** स्त्री [°**समित**] शरीर की निर्दोष प्रवृति करने वाला; (भग)। °**समिइ** स्त्री [°**समिति**] शरीर की निर्दोष प्रवृति ; (ठा ८)।
काय पुं [**काक**] १ कौआ, वायस ; (उप पृ ३३ ; हेका १४८ ; वा २६)। २ वनस्पति-विशेष, काला उम्बर ; (पराण १—पत्र ३५)। देखो **काक, काग**।
काय पुं [**काच**] काँच, सीसा ; (महा ; आचा)।
काय पुं [**दे**] १ कावर, वहङ्गी, बोझ ढोने के लिए तराजूनुमॉ एक वस्तु, इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं ; (गाया १, ८ टी—पत्र १५२)। °**कोडिय** पुं [°**कोटिक**] कावर से भार ढोने वाला ; (गाया १, ८ टी)। देखो **काव**।
काय पुं [**दे**] १ लक्ष्य, वेध्य, निशाना ; २ उपमान, जिस पदार्थ की उपमा दो जाय वह ; (दे २, २६)।
कायंचुल पु [**दे**] कामिञ्जुल, जल-पक्षी विशेष ; (दे २, २६)।
कायंदी स्त्री [**दे**] परिहास, उपहास ; (दे २, २८)।
कायंदी देखो **काइंदी** ; (स ६)।
कायंधुअ पुं [**दे**] कामिञ्जुल, जल-पक्षी विशेष ; (दे २, २६)।
कायंब } पुं [**कादम्ब, °क**] १ हंस-पक्षी; (पाअ, कप्प)।
कायंबग } २ गन्धर्व-विशेष ; ३ कदम्ब-वृक्ष ; (राज)। ४ वि. कदम्ब-वृक्ष-संबन्धी; "कायंबपुप्फगोलयमसूरअइमुत्तयस्स पुप्फं व" (पुप्फ २६८)।
कायंबर न [**कादम्बर**] मद्य-विशेष; गुड़ का दारू ; "कायंबरपसन्ना" (पउम १०२, १२२)।

कायंबरी स्त्री [**कादम्बरी**] १ मदिरा, दारू ; (पात्र ; पउम ११३, १०)। २ अटवी विशेष ; (स ५५१)।

कायक न [**दे. कायक**] हरा रंग की रुई से बना हुआ वस्त्र ; (आचा २, ५, १)।

कायत्थ पु [**कायस्थ**] जाति-विशेष, कायथ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति, लेखक, लिखने का काम करने वाली मनुष्य-जाति ; (मुद्रा ७६ , मृच्छ ११७)।

कायपिउच्छा, **कायपिउला** स्त्री [**दे**] कोकिला, कोयल, पिकी ; (दे २, ३० ; पड्)।

कायर वि [**कातर**] अधीर, डरपोक , (णाया १, १ , प्रासू ५८)।

कायर वि [**दे**] प्रिय, स्नेह-पात्र ; (दे २, ५८)।

कायरिय वि [**कातर**] १ डरपोक, भयभीत, अ-धीर ; "धीरेणवि मरियव्व कायरिएणावि अवस्समरियव्व" (प्रासू १०६)। २ पु. गोशालक का एक भक्त ; (भग ८,५)।

कायरिया स्त्री [**कातरिका**] माया, कपट; (सुअ १, २, १)।

कायल पुं [**दे**] १ काक, कौआ ; (दे २, ५८ ; पात्र)। २ वि. प्रिय, स्नेह-पात्र ; (दे २, ५८)।

कायलि देखो **कागलि** ; (नाट—मृच्छ ६२)।

कायवंझ [**कायवन्ध्य**] ग्रह-विशेष; ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (राज)।

कायव्व देखो **कर**=कृ।

काया स्त्री [**काया**] शरीर, देह ; (प्रासू ११२)।

कायाग पुं [**कायाक**] नट-विशेष, बहुरुपिया ; (बृह ४)।

कार सक [**कारय्**] करवाना, बनवाना। कारेइ, कारेह ; (पि ४७२; सुपा ११३)। भूका—कारेत्था; (पि ५१७)। वकृ—**कारयंत** , (सुर १६, १०), **कारेमाण**, (कप्प)। कवकृ —**कारिज्जंत** ; (सुपा ५७)। संकृ—**कारिऊण**, (पि ५८४)। कृ—**कारेयव्व** , (पचा ६)।

कार वि [**दे**] कटु, कडवा, तीता ; (दे २, २६)।

कार पुंन. देखो **कारा**=कारा ; (स ६११, णाया १,१)।

कार पुं [**कार**] १ क्रिया, कृति, व्यापार ; (ठा १०)। २ रुप, आकृति ; ३ संघ का मध्य भाग ; (वव ३)।

°**कार** वि [°**कार**] करने वाला ; (पउम १७, ७)।

कारंकड वि [**दे**] परुष, कठिन ; (दे २, ३०)।

कारंड, **कारंडग**, **कारंडव** पुं [**कारण्ड**, °**क**] पक्षि-विशेष; "हंसकारंडव-चक्कवाओवसोभियं" (भवि ; औप ; स ६०१, णाया १, १ ; पगह १, १ ; विक ४१)।

कारग वि [**कारक**] १ करने वाला ; (पउम ८२, ७६ ; उप पृ २१५)। २ कराने वाला ; (श्रा ६ ; विसे)। ३ न. कर्ता, कर्म वगैरः व्याकरण-प्रसिद्ध कारक; (विसे ३३८४)। ४ कारण, हेतु ; "कारगं ति वा कारगं ति वा साहारणं ति वा एगट्ठा" (आचू १)। ५ उदाहरण, दृष्टान्त ; (ओघ १६ भा)। ६ पुंन. सम्यक्त्व-विशेष, शास्त्रानुसार शुद्ध क्रिया ; "जं जह भणियं तुमए तं तह करणम्मि कारगो होइ" (सम्य १४)।

कारण न [**कारण**] १ हेतु, निमित ; (विसे २०६८ ; स्वप्न १७)। २ प्रयोजन , (आचा)। ३ अपवाद ; (कप्प)।

कारणिज्ज वि [**कारणीय**] प्रयोजनीय , (स ३२६)।

कारणिय वि [**कारणिक**] १ प्रयोजन से किया जाता , (उवर १०८)। २ कारण से प्रवृत्त ; (वव २)। ३ पु न्याय-कर्ता, न्यायाधीश ; (सुपा ११८)।

कारय देखो **कारग** ; (श्रा १६ ; विसे ३४२०)।

कारव सक [**कारय्**] करवाना, बनवाना। कारवेइ ; (उव)। वकृ—**कारविंत** ; (सुपा ६३२ ; पुप्फ ४७)। संकृ—**कारवित्ता** ; (कप्प)।

कारवण न [**कारण**] निर्मापन, बनवाना , (राज)।

कारवस पु [**कारवश**] देश-विशेष ; (भवि)।

कारवाहिय वि [**कारवाधित**] देखो **करवाहिय** ; (औप)।

कारविय वि [**कारित**] कराया हुआ , (सुर १, २२६)।

कारह वि [**कारभ**] करभ-संबन्धी ; (गउड)।

कारा स्त्री [**कारा**] कैदखाना , (दे २, २० ; पात्र)। °**गार** पुंन [°**गार**] कैदखाना, जेल ; (सुपा १२२ , सार्ध ५२)। °**घर** न [°**गृह**] कैदखाना ; (अच्चु ८३)। °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] कैदखाना, जेलखाना , (कप्प)।

कारा स्त्री [**दे**] लेखा, रेखा ; (दे २, ३६)।

कारायणी स्त्री [**दे**] शाल्मलि-वृक्ष, सेमल का पेड ; (दे २, १८)।

काराव देखो **कारव**। कारावेइ ; (पि ५५२)। भवि—काराविस्सं ; (पि ५२८)।

कारावण देखो **कारवण** ; (पगह १, ३ ; उप ४०६)।

कारावय वि [**कारक**] कराने वाला , विधापक ; (स ५५७)।

काराविय वि [**कारित**] करवाया हुआ, बनवाया हुआ ; (विसे १०१६ ; सुर ३, २४ ; स १६३)।
कारि वि [**कारिन्**] कर्ता, करने वाला ; "एयस्स कारिणो वालिसत्तमारोविया जेण" (उव ५६७ टी)। "एयअणत्थस्स कारिणी अहयं " (सुर ८, ५६)।
कारिम वि [**दे**] कृत्रिम, बनावटी, नकली ; (दे २, २७ ; गा ४५७ ; षड् ; उप ७२८ टी ; स ११६ ; प्रासू २०)।
कारिय वि [**कारित**] कराया हुआ, बनवाया हुआ ; (पण्ह २, ५)।
कारियल्लई स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, करेला का गाछ; (पण्ण १—पत्र ३३)।
कारिया स्त्री [**कारिका**] करने वाली, कर्त्री ; (उवा)।
कारिल्ली स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष, करैला का गाछ; (सुक्त ६१)।
कारीस पुं [**कारीष**] गोइठा का अग्नि, कंडा की आग; (उत्त १२)।
कारु पुं [**कारु**] कारीगर, शिल्पी ; (पाअ ; प्रासू ८०)।
कारुइज्ज वि [**कारुकीय**] कारीगर से संबन्ध रखने वाला; (पण्ह १, २)।
कारुणिय वि [**कारुणिक**] दयालु, कृपालु ; (ठा ४, २ ; सण)।
कारुण्ण, **कारुन्न** न [**कारुण्य**] दया, करुणा ; (महा ; उप ७२८ टी)।
कारेमाण, **कारेयव्व** देखो **कार**=कारय्।
कारेल्लय न [**दे**] करैला, तरकारी विशेष ; (अनु ६)।
कारोडिय पुं [**कारोटिक**] १ कापालिक, भिक्षुक-विशेष ; २ ताम्बूल-वाहक, स्थगीधर ; (औप)।
काल न [**दे**] तमिस्र, अन्धकार ; (दे २, २६; षड्)।
काल पुं [**काल**] १ समय, वख्त ; (जी ४६)। २ मृत्यु, मरण ; (विसे २०६७ ; प्रासू ११२)। ३ प्रस्ताव, प्रसङ्ग, अवसर ; (विसे २०६७)। ४ विलम्ब, देरी ; (स्वप्न ६१)। ५ उमर, वय ; (स्वप्न ४२)। ६ ऋतु ; (स्वप्न ४२)। ७ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८)। ८ ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग ; (गण १६)। ६ सातवीं नरक-पृथ्वी का एक नरकावास ; (ठा ५, ३—पत्र ३४१ ; सम ५८)। १० नरक के जीवों को दुःख देने वाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २८)। ११ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १—पत्र १६८)। १२ प्रभञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १—पत्र १६८)। १३ इन्द्र-विशेष, पिशाच-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३—पत्र ८५)। १४ पूर्वीय लवण समुद्र के पाताल-कलशों का अधिष्ठाता देव ; (ठा ४, २—पत्र २२६)। १५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र ; (निर १, १)। १६ इस नाम का एक गृहपति ; (णाया २, १)। १७ अभाव ; (बृह ४)। १८ पिशाच देवों की एक जाति ; (पण्ण १)। १६ निधि-विशेष ; (ठा ६—पत्र ४४६)। २० वर्ण-विशेष, श्याम-वर्ण ; (पण्ण २)। २१ न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३५)। २२ निरयावली सूत्र का एक अध्ययन ; (निर १, १)। २३ काली-देवी का सिंहासन ; (णाया २)। २४ वि. कृष्ण, काला रंग का ; (सुर २, ५)। °**कंखि** वि [°**काङ्क्षिन्**] १ समय की अपेक्षा करने वाला; (आचा)। २ अवसर का ज्ञाता ; (उत्त ६)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ समय-सबन्धी शास्त्रीय विधान ; २ उसका प्रतिपादक शास्त्र; (पंचभा)। °**काल** पुं [°**काल**] मृत्यु-समय ; (विसे २०६६)। °**कूड** न [°**कूट**] उत्कट विष-विशेष ; (सुपा २३८)। °**क्खेव** पुं [°**क्षेप**] विलम्ब, देरी ; (से १३, ४२)। °**गय** वि [°**गत**] मृत्यु-प्राप्त, मृत ; (णाया १, १ ; महा)। °**चक्क** न [°**चक्र**] १ वीस सागरोपम परिमित समय ; (णंदि)। २ एक भयंकर शस्त्र ; " जाहे एवमवि न सक्कइ ताहे कालचक्कं विउव्वइ " (आवम)। °**चूला** स्त्री [°**चूडा**] अधिक मास वगैरः का अधिक समय ; (निचू १)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] अवसर का जानकार ; (उप १७६ टी ; आचा)। °**दट्ठ** वि [°**दष्ट**] मौत से मरा हुआ ; (उप ७२८ टी)। °**देव** पुं [°**देव**] देव-विशेष ; (दीव)। °**धम्म** पुं [°**धर्म**] मृत्यु, मरण ; (णाया १, १ ; विपा १, २)। °**न्न**, °**न्नु** देखो **ण्णु** ; (पि २७६ ; सुपा १०६)। °**परियाय** पुं [°**पर्याय**] मृत्यु-समय; (आचा)। °**परिहीण** न [°**परिहीन**] विलम्ब, देरी; (राय)। °**पाल** पुं [°**पाल**] देव-विशेष, धरणेन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °**पास** पुं [°**पाश**] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग; (गण १८)। °**पिट्ठ**, °**पुट्ठ** पुंन [°**पृष्ठ**] १ धनुष ; २ कर्ण का धनुष ; ३ काला हरिण ; ४ क्रौञ्च पक्षी ; (पि ५३)।

°**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] जो पु-वेद कर्म का अनुभव करता हो वह; (सूअ १, ४, १, २ टी)। °**प्पभ** पु [°**प्रभ**] इस नाम का एक पर्वत; (ठा १०)। °**फोडय** पुंस्त्री [°**स्फोटक**] प्राणहर फोडा। स्त्री—°**डिया**; (रभा)। °**मास** पुं [°**मास**] मृत्यु-समय; “ कालमासे कालं किच्चा ” (विपा १, १; २; भग ७, ६)। °**मासिणी** स्त्री [°**मासिनी**] गर्भिणी, गुर्विणी; (दस ५, १)। °**मिग** पुं [°**मृग**] कृष्ण मृग की एक जाति; (जं २)। °**रत्ति** स्त्री [°**रात्रि**] प्रलय-रात्रि, प्रलय-काल; (गउड)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] देव-विमान विशेष, काली देवी का विमान; (णाया २)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] जगत् को काल-कृत मानने वाला, समय को ही सब कुछ मानने वाला; (णंदि)। °**वासि** पुं [°**वर्षिन्**] अवसर पर बरसने वाला मेघ, (ठा ४, ३—पत्र २६०)। °**संदीव** पुं [°**संदीप**] असुर-विशेष, त्रिपुरासुर; (आक)। °**समय** पु [°**समय**] समय, वख्त, (सुज्ज ८)। °**समा** स्त्री [°**समा**] समय-विशेष, आरक-रूप समय; (जो २)। °**सार** पु [°**सार**] मृग की एक जाति, काला मृग; “एक्को वि कालसारो ण देइ गंतुं पयाहिणवलंतो ” (गा २५)। °**सोअरिय** पुं [°**सौकरिक**] स्वनाम-ख्यात एक कसाई; (आक)। °**ागरु**, °**ागुरु**, °**ायरु** न [°**ागुरु**] सु-गन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में लाया जाता है; (णाया १, १, कप्प; औप; गउड)। °**ायस**, °**ास** न [°**ायस**] लोहे की एक जाति, (हे १, २६९; कुमा; प्राप्र; से ८, ४६)। °**ासवेसियपुत्त** पुं [°**ास्यवैशिकपुत्र**] इस नाम का एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में थे; (भग)।

कालंजर पु [**कालञ्जर**] १ देश-विशेष; (पिंग)। २ पर्वत-विशेष; (आवम)। देखो **कालिंजर**।

कालक्खर सक [**दे**] १ निर्भर्त्सना करना, फटकारना। २ निर्वासित करना, बाहर निकाल देना। “ तो तेणं भणिया भज्जा, पिए ! पुत्तो कालक्खरियइ एसो, तो सा रोसेण भणइ तयभिमुहं, मइ जीवंतीए इमं न होइ ता जाउ दव्वंपि; किं कज्जइ लच्छीए, पुत्तविउत्ताण पिउणा पिययम ! जयम्मि ” (सुपा ३९९; ४००)।

कालक्खर पुंन [**कालाक्षर**] १ अल्प ज्ञान, अल्प शिक्षा; २ वि. अल्प-शिक्षित; “ कालक्खरदूसिक्खिअ धम्मिअ रे निंबकीडअसरिच्छ ” (गा ८७८)।

कालक्खरिअ वि [**दे**] १ उपालब्ध, निर्भर्त्सित; २ निर्वासित; “ तहवि न विरमइ दुलहो अणाहकुलडाए संगमे, तत्तो कालक्खरिओ पिउणा ” (सुपा ३८८); “तो पिउणा कालेणं कालक्खरिओ ” (सुपा ४८८)।

कालक्खरिअ वि [**कालाक्षरिक**] अक्षर-ज्ञान वाला, शिक्षित; “भो तुम्हाणं सव्वाणं मज्झे अहं एक्को कालक्खरिओ ” (कप्पू)।

कालग } पु [**कालक**] १ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (पुप्फ **कालय** } १४६; २४०)। २ भ्रमर, भमरा; (राज)। देखो **काल**; (उवा; उप ६८६ टी)।

कालय वि [**दे**] धूर्त, ठग; (दे २, २८)।

कालवट्ठ न [**दे. कालपृष्ठ**] धनुष; (दे २, २८)।

कालवेसिय पुं [**कालवैशिक**] एक वेश्या-पुत्र; (उत्त २)।

काला स्त्री [**काला**] १ श्याम-वर्ण वाली; २ तिरस्कार करने वाली; (कुमा)। ३ एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ५, १)। ४ वेश्या-विशेष; (उत्त २)।

कालि पुं [**कालिन्**] विहार का एक पर्वत; (ती १३)।

कालिआ स्त्री [**दे**]१ शरीर, देह; २ कालान्तर; ३ मेघ, बारिस; (दे २, ५८)। ४ मेघ-समूह, बादल; (पाअ)।

कालिआ स्त्री [**कालिका**] १ देवी-विशेष; (सुपा १८२)। २ एक प्रकार का तोफानी पवन; (उप ७२८ टी; णाया १, ६)।

कालिंग पुं [**कालिङ्ग**] १ देश-विशेष; “ पत्तो कालिंगदेसओ ” (श्रा १२)। २ वि. कलिङ्ग देश में उत्पन्न; (पउम ६६, ५५)।

कालिंगी स्त्री [**कालिङ्गी**] वल्ली-विशेष, तरबूज का गाछ; (पण्ण १)।

कालिंजण न [**दे**] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़; (दे २, २९)।

कालिंजणी स्त्री [**दे**] ऊपर देखो; (दे २, २९)।

कालिंजर पुं [**कालिञ्जर**] १ देश-विशेष; (पिंग)। २ पर्वत-विशेष; (उत्त १३)। ३ न. जंगल-विशेष; (पउम ५८, ९)। ४ तीर्थ-स्थान विशेष; (ती ६)।

कालिंदी स्त्री [**कालिन्दी**] १ यमुना नदी ; (पाअ)। २ एक इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी ; (पउम १०२, १५६)।

कालिंव पुं [**दे**] १ शरीर, देह ; २ मेघ, वारिस ; (दे २, ५६)।

कालिग देखो **कालिय**=कालिक ; (राज)।

कालिगी स्त्री [**कालिकी**] संज्ञा-विशेष, वहुत समय पहले गुजरी हुई चीज का भी जिससे स्मरण हो सके वह ; (विसे ५०८)।

कालिज्ज न [**कालेय**] हृदय का गूढ मांस-विशेष ; (तंदु)।

कालिम पुंस्त्री [**कालिमन्**] श्यामता, कृष्णता, दागीपन ; (सुर ३, ४४ ; श्रा १२)।

कालिअ पुं [**कालिय**] इस नाम का एक सर्प ; (सुपा १८१)।

कालिय वि [**कालिक**] १ काल में उत्पन्न, काल-संवन्धी ; २ अनिश्चित, अव्यवस्थित ; "हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया" (उत्त ५; करु १६)। ३ वह शास्त्र, जिसको अमुक समय में ही पढने की शास्त्रीय आज्ञा है ; (ठा २, १—पत्र ४६)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष ; (णाया १, १७—पत्र २२८)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक जैन मुनि ; जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में से थे ; (भग)। °**सण्णि** वि [°**संज्ञिन्**] कालिकी संज्ञा वाला ; (विसे ५०६)। °**सुय** न [°**श्रुत**] वह शास्त्र जो अमुक समय में ही पढा जा सके ; (णंदि)। °**णुओग** पु [°**नुयोग**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (भग)।

काली स्त्री [**काली**] १ विद्या-देवी विशेष ; (संति ५)। २ चमरेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ५, १ ; णाया २, १)। ३ वनस्पति-विशेष, काकजङ्घा ; (अनु ४)। ४ श्याम-वर्ण वाली स्त्री ; "सामा गायइ महुरं, काली गायइ खरं च रुक्खं च" (ठा ७)। ५ राजा श्रेणिक की एक रानी ; (निर १, १)। ६ चौथी जैन शासन-देवी ; (संति ६) ७ पार्वती, गौरी ; (पाअ)। ८ इस नाम का एक छंद ; (पिंग)।

कालुण न [**कारुण्य**] दया, करुणा। °**वडिया** स्त्री [°**वृत्ति**] भीख माँग कर आजीविका करना ; (विपा १, १)।

कालुणिय देखो **कारुणिय** ; (सूअ १, १, १)।

कालुसिय न [**कालुष्य**] कलुषता, मलिनता ; (आउ)।

कालेज्ज न [**दे**] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ ; (दे २, २६)।

कालेय न [**कालेय**] १ काली देवी का अपत्य ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, कालचन्दन ; (स ७५)। ३ हृदय का मांस-खण्ड, कलेजा ; (सूअ १, ५, १ ; रंभा)।

कालोद देखो **कालोय** ; (जीव ३)।

कालोदधि पुं [**कालोदधि**] समुद्र-विशेष ; (पण्ह १, ५)।

कालोदाइ पुं [**कालोदायिन्**] इस नाम का एक दार्शनिक विद्वान ; (भग ७, १०)।

कालोय पु [**कालोद**] समुद्र-विशेष, जो धातकी-खण्ड द्वीप को चारों तरफ घिर कर स्थित है ; (सम ६७)।

काव } पुं [**दे**] १ कावर, वहङ्गी, बोझ ढोनेके लिए तरा-
कावड } जूनुमाँ एक वस्तु, इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं ; (जीव ३ ; पउम ७५, ५२)। °**कोडिय** पुं [°**कोटिक**] कावर से भार ढोने वाला ; (अणु)। देखो **काय**=(दे)।

कावडिअ पुं [**दे**] वैवधिक, कावर से भार ढोने वाला ; (पउम ७५, ५२)।

कावध पुं [**कावध्य**] एक महा-ग्रह, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (राज)।

कावलिअ वि [**दे**] अ-सहन, अ सहिष्णुः (दे २, २८)।

कावलिअ वि [**कावलिक**] कवल-प्रक्षेप रूप आहार, (भग ; संग १८१)।

कावालिअ पुं [**कापालिक**] वाम-मार्गी, अघोर सम्प्रदाय का मनुष्य ; (सुपा १७४ ; ३६७ ; दे १, ३१ ; प्रवो ११५)।

कावालिआ } स्त्री [**कापालिकी**] कापालिक-व्रत वाली
कावालिणी } स्त्री ; (गा ४०८)।

काविट्ठ न [**कापिष्ठ**] देव-विमान विशेष ; (सम २७, पउम २०, २३)।

काविल न [**कापिल**] १ सांख्य-दर्शन ; (सम्म १४५)। २ वि. सांख्य मत का अनुयायी ; (औप)।

काविलिय वि [**कापिलीय**] १ कपिल-मुनि-संवन्धी ; २ न. कपिल-मुनि के वृत्तान्त वाला एक ग्रन्थांश ; 'उत्तराध्ययन' सूत्र का आठवाँ अध्ययन ; (सम ६४)।

काविसायण देखो **कविसायण** ; (जीव ३)।

कावी स्त्री [**दे**] नीलवर्ण वाली, हरा रंग की चीज ; (दे २, २६) ।

कावुरिस देखो **कापुरिस** ; (स ३७५) ।

कावेअ न [**कापेय**] वानरपन, चञ्चलता ; (अच्चु ६२)।

कास देखो **कङ्ख=कृप्** । कासइ ; (षड्) ।

कास अक [**कास्**] १ कहरना, रोग-विशेष से खराब आवाज करना । २ कासना, खाँसी की आवाज करना । ३ खोखार करना । ४ छींक खाना । वकृ—**कासंत, कासमाण** ; (पराह १, ३—पत्र ५४ ; आचा) । संकृ—**कासित्ता** ; (जीव ३) ।

कास पुं [**काश, °स**] १ रोग-विशेष, खाँसी ; (गाया १, १३) । २ तृण-विशेष, कास ; "कासकुसुमंव मन्ने सुनिष्फलं जम्म-जीवियं निययं" (उप ७२८ टी) ; "कासकुसुमंव विहलं" (आप ५८) । ३ उसका फूल जो सफेद और शोभायमान होता है ; "ता तत्थ नियइ धूलिं ससहरहरहासकाससंकासं" (सुपा ४२८ ; कुमा) । ४ ग्रह-विशेष, ग्रह-देव-विशेष; (ठा २, ३) । ५ रस ; (ठा ७) । ६ संसार, जगत् ; (आचा) ।

कास देखो **कंस=कांस्य** ; (हे १, २६ ; षड्) ।

कासंकस वि [**कासङ्कष**] प्रमादी, संसार में आसक्त ; (आचा) ।

कासग देखो **कासय** ; "जेण रोहंति बीजाइं, जेण जीवंति कासगा" (निचू १) ।

कासण न [**कासन**] खोखारना, खाट्कार ; (ओघ २३५) ।

कासमद्दग पु [**कासमर्दक**] वनस्पति-विशेष, गुच्छ-विशेष ; (परण १—पत्र ३२) ।

कासय } पुं [**कर्षक**] कृषीवल, किसान ; (दे १, ८७ ;
कासव } पाअ) ;

"जह वा लुणाइ सस्साइं, कासवो परिणयाइं छित्तम्मि ।
तह भूयाइं कयंतो, वत्थुसहावो इमो जम्हा"
(सुपा ६५१) ।

कासव पुं [**कश्यप**] १ इस नाम का एक ऋषि ; (प्रामा) । २ हरिण की एक जाति ; ३ एक जात की मछली ; ४ दक्ष प्रजापति का जामाता ; ५ वि. दारू पीने वाला ; (हे १, ४३ ; षड्) ।

कासव न [**काश्यप**] १ इस नाम का एक गोत्र ; (ठा ७; गाया १, १ ; कप्प) । २ पुं. भगवान् ऋषभदेव का एक पूर्व पुरुष ; ३ वि. काश्यप गोत्र में उत्पन्न-काश्यप-गोत्रीय ; (ठा ७—पत्र ३६० ; उत्त ७ ; कप्प; सूत्र १, ६) । ४ पुं. नापित, हजाम ; (भग ६, १० ; आवम) । ५ इस नाम का एक गृहस्थ ; (अंत १८) । ६ न. इस नाम का एक 'अंतगडदसा' सूत्र का अध्ययन ; (अंत १८) ।

कासविज्जया स्त्री [**काश्यपीया**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प) ।

कासवी स्त्री [**काश्यपी**] १ पृथिवी, धरित्री ; (कुमा) । २ कश्यप-गोत्रीया स्त्री ; (कप्प) । **°रइ** स्त्री [**°रति**] भगवान् सुमतिनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२) ।

कासा स्त्री [**कृशा**] दुर्बल स्त्री ; (हे १, १२७ ; षड्) ।

कासाइया } स्त्री [**काषायी**] कषाय-रंग से रंगी हुई
कासाई } साड़ी, लाल साड़ी ; (कप्प ; उवा) ।

कासाय वि [**काषाय**] कषाय-रंग से रंगा हुआ वस्त्रादि; (गउड)।

कासार न [**कासार**] १ तलाव, छोटा सरोवर ; (सुपा १६६) । २ पक्वान्न-विशेष, कँसार ; (स १८६) । ३ पुं. समूह, जत्था ; (गउड) । ४ प्रदेश, स्थान ; (गउड) । **°भूमि** स्त्री [**°भूमि**] नितम्ब-प्रदेश ; (गउड)।

कासार न [**दे**] धातु-विशेष, सीसपत्रक ; (दे २, २७) ।

कासि पु [**काशि**] १ देश-विशेष, काशी जिला ; "कासित्ति जणवओ" (सुपा ३१ ; उत्त १८) । २ काशी देश का राजा; (कुमा) । ३ स्त्री. काशी नगरी, बनारस शहर; (कुमा) । **°पुर** न [**°पुर**] काशी नगरी, बनारस शहर ; (पउम ६, १३७) । **°राय** पुं [**°राज**] काशी-देश का राजा ; (उत्त १८) । **°व** पुं [**°प**] काशी-देश का राजा ; (पउम १०४, ११) । **°वड्ढण** पुं [**°वर्धन**] इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (ठा ८—पत्र ४३०) ।

कासिअ न [**दे**] १ सूक्ष्म वस्त्र, बारीक कपड़ा ; २ सफेद वस्त्र ; (दे २, ५६) ।

कासिअ न [**कासित**] छींक, चुत् ; (राज) ।

कासिज्ज न [**दे**] काकस्थल-नामक देश ; (दे २, २७) ।

कासिल्ल वि [**कासिक**] खाँसी रोग वाला; (विपा १, ७—पत्र ७२) ।

कासी स्त्री [**काशी**] काशी, बनारस ; (गाया १, ८) । **°राय** पुं [**°राज**] काशी का राजा ; (पिंग) । **°स** पुं [**°श**] काशी का राजा ; (पिंग) । **°सर** पुं [**°श्वर**] काशी का राजा ; (पिंग) ।

काहल वि [दे] १ मृदु, कोमल ; २ ठग, धूर्त; (दे २, ५८)।

काहल वि [कातर] कातर, डरपोक, अ-धीर ; (हे १, २१४ ; २५४)।

काहल पुंन [काहल] १ वाद्य-विशेष ; (सुर ३, ६६ ; औप ; याँदि)। २ अव्यक्त आवाज; (पण्ह २, २)।

काहला स्त्री [काहला] वाद्य-विशेष ; महा-ढक्का ; (विक ८७)।

काहली स्त्री [दे] तरुणी, युवति; (दे २, २६)।

काहल्ली स्त्री [दे] १ खर्च करने का धान्यादि ; २ तवा, जिस पर पूरी वगैरः पकाया जाता है ; (२, ५६)।

काहार पुं [दे] कहार, पानी वगैरः ढोने का काम करने वाला नौकर ; (दे २, २७ ; भवि)।

काहावण पु [कार्षापण] सिक्का-विशेष ; (हे २,७१ ; पण्ह १, २ ; पड् ; प्राप्र)।

काहिय वि [काथिक] कथा-कार, वार्ता करने वाला ; (वृह १)।

काहिल पुं [दे] गोपाल, ग्वाला ; स्त्री—°ला : (दे २, २८)।

काहिलिआ स्त्री [दे] तवा, जिस पर पूरी आदि पकाया जाता है ; (पाअ)।

काहीइदाण न [करिष्यतिदान] प्रत्युपकार की आशा से दिया जाता दान ; (ठा १०)।

काहे अ [कदा] कब, किस समय? (हे २, ६५ ; अंत २४ ; प्राप्र)।

काहेणु स्त्री [दे] गुन्जा, लाल रत्ती ; (दे २, २१)।

कि देखो **किं** ; (हे १, २६ ; पड्)।

कि सक [कृ] करना, बनाना ; "इक्कियं करणे" (विसे ३३००)। कवकृ—**किज्जंत**; (सुर १, ६० ; ३, १४ ; ५६)।

किअ देखो **कय**=कृत ; (काप्र ६२५ ; प्रासू १५ ; धम्म २४ ; मै ६५ ; वज्जा ४)।

किअ देखो **किव**=कृप ; (षड्)।

किअंत वि [कियत्] कितना ; (सण)।

किअंत देखो **कयंत** ; (अच्चु ५६)।

किआडिआ स्त्री [कृकाटिका] गला का उन्नत भाग ; (पाअ)।

किइ स्त्री [कृति] कृति, क्रिया, विधान ; (पड् ; प्राप्र ; उव)। °**कम्म** न [°कर्मन्] १ वन्दन, प्रणाम ; (सम २१)। २ कार्य-करण ; (भग १४, ३)।

किं स [किम्] कौन, क्या, क्यों, निन्दा, प्रश्न, अतिशय, अल्पता और सादृश्य को बतलाने वाला शब्द; (हे १, २९ ; ३, ५८ ; ७१ ; कुमा ; विपा १, १ ; निचू १३)। "किं कुल्लंति मणीओ जाउ सहस्सेहिं घिप्पंति" (प्रासू ४)। °**उण** अ [°पुनः] तब फिर, फिर क्या ? (प्राप्र)।

किंकत्तव्वया देखो **किंकायव्वया** ; (आचा २, २, ३)।

किंकम्म पुं [किंकर्मन्] इस नाम का एक गृहस्थ ; (अंत)।

किंकर पुं [किङ्कर] नौकर, चाकर, दास ; (सुपा ६० ; २२३)। °**सच्च** पुं [°सत्य] १ परमेश्वर, परमात्मा ; २ अच्युत, विष्णु ; (अच्चु २)।

किंकरी स्त्री [किङ्करी] दासी, नौकरानी ; (कप्पू)।

किंकायव्वया स्त्री [किंकर्त्तव्यता] क्या करना है यह जानना। °**मूढ** वि [°मूढ] किंकर्त्तव्य-विमूढ, हक्काबक्का, भौंचक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय ; (महा)।

किंकिअ वि [दे] सफेद, श्वेत ; (दे २, ३१)।

किंकिच्चजड वि [किंकृत्यजड] हक्काबक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय ; (श्रा २७)।

किंकिणिआ स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र घण्टिका ; (सुपा १५६)।

किंकिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो ; (सुपा १५४; कुमा)।

किंगिरिड पुं [किङ्गिरिट] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति ; (राज)।

किंच अ [किञ्च] समुच्चय-द्योतक अव्यय, और भी, दूसरा भी ; (सुर १, ४० ; ४१)।

किंचण न [किञ्चन] १ द्रव्य-हरण, चोरी ; (विसे ३४५१)। २ अ, कुछ, किञ्चित् ; (वव २)।

किंचहिय वि [किञ्चिदधिक] कुछ ज्यादः ; (सुपा ४३०)।

किंचि अ [किञ्चित्] अल्प, ईषत्, थोड़ा ; (जी १ ; स्वप्न ४७)।

किंचिम्मत्त वि [किञ्चिन्मात्र] स्वल्प, बहुत थोड़ा, यत्किञ्चित् ; (सुपा १४२)।

किंचूण वि [**किञ्चिदून**] कुछ कम, पूर्ण-प्राय ; (औप) ।
किंजक्क पुं [**किञ्जल्क**] पुष्प-रेणु, पराग ; (णाया १, १) ।
किंजक्ख पुं [**दे**] शिरीष-वृक्ष, सिरस का पेड़ ; (दे २, ३१) ।
किंणेदं (शौ) अ [**किमिदम्, किमेतत्**] यह क्या ? ; (पड्, कुमा) ।
किंतु अ [**किन्तु**] परन्तु, लेकिन ; (सुर ४, ३७) ।
किंथुग्घ देखो **किंसुग्घ** ; (राज) ।
किंदिय न [**केन्द्र**] १ वर्तुल का मध्य-स्थल ; २ ज्योतिष में इष्ट लग्न से पहला, चौथा, सातवाँ और दशवाँ स्थान ; " किंदियठाणट्ठियगुरुम्मि " (सुपा ३९) ।
किंदुअ पुं [**कन्दुक**] कन्दुक, गेंद ; (भवि) ।
किंधर पु [**दे**] छोटी मछली ; (दे २, ३२) ।
किंनर पु [**किन्नर**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति, (पण्ह १, ४) । २ भगवान् धर्मनाथजी के शासन-देव का नाम ; (सति ८) । ३ चमरेन्द्र की रथ-सेना का अधिपति देव ; (ठा ५, १) । ४ एक इन्द्र ; (ठा २. ३) । ५ देव-गन्धर्व, देव-गायन ; (कुमा) । °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] किन्नर के कण्ठ जितना बडा एक मणि, (जीव ३) ।
किंनरी स्त्री [**किन्नरी**] किन्नर देव की स्त्री ; (कुमा) ।
किंपय वि [**दे**] कृपण, कंजूस ; (दे २, ३१) ।
किंपाग पुं [**किम्पाक**] १ वृक्ष-विशेष : " हुंति मुहि चिय महुरा विसया किंपागभूरुहफलं व" (पुप्फ ३९२ ; औप) । २ न. उसका फल, जो देखने में और स्वाद में सुन्दर परन्तु खाने से प्राण का नाश करता है, " किंपागफलोवमा विसया " (सुर १२, १३८) ।
किंपि अ [**किमपि**] कुछ भी, (प्रासू ६०) ।
किंपुरिस पुं [**किंपुरुष**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पण्ह १, ४) । २ एक इन्द्र, किन्नर-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र, (ठा २, ३) । ३ वैरोचन बलीन्द्र के रथ-सेना का अधिपति देव ; (ठा ५, १—पत्र ३०२) । °**कंठ** पुं [°**कण्ठ**] मणि की एक जाति, जो किंपुरुष के कण्ठ जितना वड़ा होता है ; (जीव ३) ।
किंवोड वि [**दे**] स्खलित, गिरा हुआ, भुला हुआ ; (दे २, ३१) ।
किंमज्झ वि [**किंमध्य**] असार, निःसार; (पण्ह २, ४) ।

किंसारु पु [**किंशारु**] सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग ; (दे २, ६) ।
किंसुग्घ न [**किंस्तुघ्न**] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण ; (विसे ३३५०) ।
किंसुअ पुं [**किंशुक**] १ पलाश का पेड़, टेसु, ढाक ; (सुर ३ ४६) । २ न. पलाश का पुष्प : (हे १, २९. ८६) ।
किक्किंडि पुं [**दे**] सर्प, साँप ; (दे २, ३२) ।
किक्किंधा स्त्री [**किष्किन्धा**] नगरी-विशेष, (से १४, ५५) ।
किक्किंधि पुं [**किष्किन्धि**] १ पर्वत विशेष ; (पउम ६, ४५) । २ इस नाम का एक राजा; (पउम ६, १५४; १०, २०) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष, (पउम ६, ४५) ।
किच्च वि [**कृत्य**] १ करने योग्य, कर्तव्य, फरज ; (सुपा ४६५ ; कुमा) । २ वन्दनीय, पूजनीय ; "न पिट्ठओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ " (उत ३) । ३ पुं. गृहस्थ, (सूअ १, १, ४) । ४ न. शास्त्रोक्त अनुष्ठान, क्रिया कृति, (आचा २, २, २, सूअ १, १, ४) ।
किच्चंत वि [**कृत्यमान**] १ छिन्न किया जाता, काटा जाता ; २ पीडित किया जाता, सताया जाता, (राज) ।
किच्चण न [**दे**] प्रक्षालन, धोना ; " हरिअच्छेयण छप्पइयघच्चणं किच्चणं च पोत्ताणं" (ओघ १६८—पत्र ७२) ।
किच्चा स्त्री [**कृत्या**] १ काटना, कर्तन, (उप पृ ३५९) । २ क्रिया, काम, कर्म ; ३ देव वगैर की मूर्ति का एक भेद; ४ जादुगिरी, जादू ; ५ रोग-विशेष, महामारी का रोग, (हे १, १२८) ।
किच्चा देखो **कर=कृ** ।
किच्चि स्त्री [**कृत्ति**] १ मृग वगैर. का चमडा; २ चमडे का वस्त्र; ३ भूर्जपत्र, भोजपत्र, ४ कृतिका नक्षत्र; (हे २,१२; ८९, षड्) । °**पाउरण** पु [°**प्रावरण**] महादेव, शिव, (कुमा) । °**हर** पु [°**धर**] महादेव, शिव, (षड्) ।
किच्चिरं अ [**कियच्चिरम्**] कितने समय तक, कब तक ? (उप १२८ टी) ।
किच्छ न [**कृच्छ्र**] १ दुःख, कष्ट ; (ठा ५, १) ।

२ वि. कष्ट-साध्य, कष्ट-युक्त ; (हे १, १२८)। ३ क्रिवि. दुःख से, मुश्किल से : (सुर ८, १४८)।
किज्ज वि [क्रेय] खरीदने योग्य; " अकिज्जं किज्जमेव वा" (दस ७)।
किज्जंत देखो **कि**=कृ।
किज्जिअ वि [कृत] किया गया, निर्मित ; (पिंग)।
किट्ट सक [कीर्त्तय्] १ श्लाघा करना, स्तुति करना। २ वर्णन करना। ३ कहना, बोलना। किट्टइ, किट्टेइ ; (आचा ; भग)। वकृ—**किट्टमाण** ; (पि २८९)। संकृ—**किट्टइत्ता, किट्टित्ता**; (उत्त २९ ; कप्प)। हेकृ—**किट्टित्तए** ; (कस)।
किट्ट स्त्रीन [किट्ट] १ धातु का मल, मैल ; (उप ५३२)। २ रंग-विशेष ; (उर ६, ५)। ३ तेल, घी वगैरः का मैल। स्त्री—°**ट्टी** ; (पभा ३३)।
किट्टण देखो **कित्तण** ; (बृह ३)।
किट्टि स्त्री [किट्टि] १ अल्पीकरण-विशेष, विभाग-विशेष; " अपुव्वविसोहीए अणुभागोणूणविभयणं किट्टी " (पंच १२; आवम)।
किट्टिय वि [कीर्तित] १ वर्णित, प्रशंसित ; (सूअ २, ६)। २ प्रतिपादित, कथित ; (सूअ २, २ ; ठा ७)।
किट्टिया स्त्री [कीटिका] वनस्पति-विशेष ; (पराण १ ; भग ७, २)।
किट्टिस न [किट्टिस] १ खली, सरसों, तिल आदि का तैल-रहित चूर्ण ; (अणु)। २ एक प्रकार का सूत, सूता; (अणु ; आवम)।
किट्टी देखो **किट्ट**=किट्ट।
किट्टीकय वि [किट्टीकृत] आपस में मिला हुआ, एकाकार , जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ ; (उव)।
किट्ठ वि [क्लिष्ट] क्लेश-युक्त; (भग ३, २; जीव ३)।
किट्ठ वि [कृष्ट] जोता हुआ, हल-विदारित ; (सुर ११, ५६ ; भग ३, २)। २ न. देव-विमान विशेष; " जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामकंडं मल्लं किट्ठं (? ट्ठं) चावोण्णयं अरणवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववरणा " (सम ३९)।
किट्ठि स्त्री [कृष्टि] १ कर्षण; २ खींचाव, आकर्षण। ३ देव-विमान विशेष ; (सम ९)। °**कूड** न [°कूट] देव-विमान-विशेष ; (सम ९)। °**घोस** न [°घोष] विमान-विशेष ; (सम ९) °**जुत्त** न [°युक्त] विमान-विशेष ; (सम ९)। °**ज्झय** न [°ध्वज] विमान-विशेष ; (सम ९)। °**प्पभ** न [°प्रभ] देव-विमान विशेष ; (सम ९)। °**वण्ण** न [°वर्ण] विमान-विशेष ; (सम ९)। °**सिंग** न [°शृङ्ग] विमान-विशेष ; (सम ९)। °**सिट्ठ** न [°शिष्ट] एक देव-विमान ; (सम ९)।
किट्ठियावत्त न [कृष्ट्यावर्त्त] देव-विमान विशेष; (सम ९)।
किट्ठुत्तरवडिंसग न [कृष्ट्युत्तरावतंसक] इस नाम का एक देव-विमान, देव-भवन ; (सम ९)।
किडि पुं [किरि] सूकर, सूअर ; (हे १, २५१ ; षड्)।
किडिकिडिया स्त्री [किटिकिटिका] सूखी हड्डी का आवाज ; (गाया १, १—पत्र ७४)।
किडिभ पुं [किटिभ] रोग-विशेष, एक जात का क्षुद्र कोढ; (लहुअ १५ ; भग ७, ६)।
किडिया स्त्री [दे] खिड़की, छोटा द्वार ; (स ५८३)।
किड्ड अक [क्रीड्] खेलना, क्रीड़ा करना। वकृ—**किड्डंत**; (पि ३९७)।
किड्डकर वि [क्रीडाकर] क्रीड़ा-कारक ; (औप)।
किड्डा स्त्री [क्रीडा] १ क्रीड़ा, खेल; (विपा १, ७)। २ बाल्यावस्था ; (ठा १०—पत्र ५१९)।
किड्डाविया स्त्री [क्रीडिका] क्रीड़न-वाली, बालक को खेल-कूद कराने वाली दाई ; (गाया १, १६—पत्र २११)।
किढि वि [दे] १ संभोग के लिए जिसको एकान्त स्थान में लाया जाय वह ; (वव ३)। २ स्थविर, वृद्ध ; (बृह १)।
किढिण न [किठिन] संन्यासिओं का एक पात्र, जो बाँस का बना हुआ होता है ; (भग ७, ९)।
किण सक [क्री] खरीदना। किणइ ; (हे ४, ५२)। वकृ—"से **किणं** किणावेमाणे हणं घायमाणे" (सूअ २, १)। **किणंत** ; (सुपा ३६६)। संकृ—**किणित्ता**; (पि ५८२)। प्रयो—किणावेइ ; (पि ५५१)।
किण पुं [किण] १ घर्षण-चिन्ह, घर्षण की निशानी ; (गउड)। २ मांस-ग्रन्थि; ३ सूखा घाव; (सुपा ३७०; वज्जा ३६)।
किणइय वि [दे] शोभित, विभूषित ; (पउम ६२, ९)।
किणण न [क्रयण] किनना, खरीद, क्रय; (उप पृ २५८)।
किणा देखो **किण्णा**; (प्राप्र; हे ३, ६९)।

किणिकिण अक [**किणिकिणय्**] किण किण आवाज करना । वकृ—**किणिकिणिंत**; (औप) ।

किणिय वि [**क्रीत**] किना हुआ, खरीदा हुआ ; (सुपा ४३४) ।

किणिय पुं [**किणिक**] १ मनुष्य की एक जाति, जो वादित्र वनाती और वजाती है ; (वव ३) । २ रस्सी वनाने का काम करने वाली मनुष्य-जाति ; " किणिया उ वरत्ताओ वलिंति " (पंचू) ।

किणिय न [**किणित**] वाद्य-विशेष ; (राय) ।

किणिया स्त्री [**किणिका**] छोटा फोडा, फुनसी ;

" अन्नेवि सइं महियलनिसीयणुप्पन्नकिणियपोगिल्ला ।
मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा कहवि हिंडंति "
(स १८०) ।

किणिस सक [**शाणय्**] तीक्ष्ण करना, तेज करना । किणिसइ ; (पिंग) ।

किणो अ [**किमिति**] क्यों, किस लिए ? (दे २, ३१ ; हे २, २१६ ; पाअ ; गा ६७ ; महा) ।

किण्ण वि [**कीर्ण**] १ उत्कीर्ण, खुदा हुआ; "उवलकिरणव्व कट्ठघडियव्व" (सुपा ५७१) । २ त्तिप्त, फेंका हुआ ; (ठा ६) ।

किण्ण पुं [**किण्व**] १ फल वाला वृत्त-विशेष, जिससे दारू वनता है ; (गउड ; आचा) । २ न. सुरा-वीज, किण्व-वृत्त के वीज, जिस का दारु वनता है ; (उत्त २) । °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] किण्व-वृत्त के फल से वनी हुई मदिरा ; (गउड) ।

किण्ण वि [**दे**] शोभमान, राजमान ; (दे २, ३०) ।

किण्णं अ [**किंनम्**] प्रश्नार्थक अव्यय, (उवा) ।

किण्णर देखो **किंनर** ; (जं १ , राय ; इक) ।

किण्णा अ [**कथम्**] क्यों, क्यों कर, कैसे ? "किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता" (विपा २, १—पत्र १०६) ।

किण्णु अ [**किंनु**] इन अर्थों का सुचक अव्यय ;—१ प्रश्न ; २ वितर्क ; ३ सादृश्य ; ४ स्थान, स्थल ; ५ विकल्प; (उवा ; स्वप्न ३४) ।

किण्ह देखो **कण्ह** ; (गा ६५ ; णाया १, १ ; उर ६, ५ ; पण्ण १७) ।

किण्ह न [**दे**] १ वारीक कपडा ; २ सफेद कपड़ा ; (दे २, ५६) ।

किण्हा देखो **कण्हा** ; (ठा ५, ३—पत्र ३५१ ; कम्म ४ १३) ।

कितव पुं [**कितव**] द्यूतकर, जूआरी ; (दे ४, ८) ।

कित्त देखो **किट्ट**=कीर्तय् । भवि—कित्तइस्सं ; (पडि) । संकृ—**कित्तइत्ताण** ; (पच्च ११६) ।

कित्तण न [**कीर्त्तन**] १ श्लाघा, स्तुति; "तव य जिणुत्तम संति कित्तणं" (अजि ४ ; से ११, १३३) । २ वर्णन, प्रतिपादन; ३ कथन, उक्ति; (विसे ६४० ; गउड; कुमा) ।

कित्तवारिअ देखो **कत्तवीरिअ** ; (ठा ८) ।

कित्ति स्त्री [**कीर्त्ति**] १ यश, कीर्त्ति, सुख्याति ; (औप ; प्रासू ४३ ; ७४ , ८२) । २ एक विद्या-देवी; (पउम ७, १४१) । ३ केसरि-द्रह की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२) । ४ देव-प्रतिमा विशेष; (णाया १, १ टी— पत्र ४३) । ५ श्लाघा, प्रशंसा ; (पंच ३) । ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर ; (ज ४) । ७ सौधर्म देवलोक की एक देवी ; (निर) । ८ पुं इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पांचवें वलदेव ने दीक्षा ली थी ; (पउम २०, २०५) । °**कर** वि [°**कर**] १ यशस्कर, ख्याति-कारक, (णाया १, १) । २ पुं भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम ; (राज) । °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] नृप-विशेष , (धम्म) । °**धम्म** पुं [°**धर्म**] इस नाम का एक राजा ; (दंस) । °**धर** पु [°**धर**] १ नृप-विशेष , (तंदु) । २ एक जैन मुनि, दूसरे वलदेव के गुरु; (पउम २०,२०५) । °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] कीर्त्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव वगैरः ; (ठा ६) । °**म** वि [°**मत्**] कीर्त्ति-युक्त । °**मई** स्त्री [°**मती**] १ एक जैन साध्वी, (आक) । २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री; (उत १३) । °**य** वि [°**द**] कीर्तिकर, यशस्कर ; (औप) ।

कित्ति स्त्री [**कृत्ति**] चर्म, चमड़ा; "कुत्तो अम्हाण वग्घकित्तो य" (काप्र ८६३ ; गा ६४० ; वज्जा ४४) ।

कित्तिम वि [**कृत्रिम**] वनावटी, नकली; (सुपा २४ ; ६१३) ।

कित्तिय वि [**कीर्त्तित**] १ उक्त, कथित, "कित्तियवंदियमहिया" (पडि) । २ प्रशंसित, श्लाघित ; (ठा २, ४) । ३ निरुपित, प्रतिपादित ; (तंदु) ।

कित्तिय वि [**कियत्**] कितना , (गउड) ।

किन्न वि [**क्लिन्न**] आर्द्र, गीला ; (हे ४, ३२९) ।

किन्ह देखो **कण्ह** ; (कप्प) ।

किपाड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ , (पड्) ।
किब्बिस न [**किल्बिष**] १ पाप, पातक ; (पण्ह १, २) । २ मांस ; "निग्गयं च से वीयपासंणं किब्बिसं" (स २६३) । ३ पुं. चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति ; (भग १२, ५) । ४ वि. मलिन, ५ अधम, नीच ; (उत्त ३)। ६ पापी, दुष्ट ; (धर्म ३) । ७ कर्बुर, चितकबरा ; (तंदु) ।
किब्बिसिय पुं [**किल्बिषिक**] १ चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति ; (ठा ३, ४—पत्र १६२) । २ केवल वेषधारी साधु ; (भग) । ३ वि. अधम, नीच; (सूअ १, १, ३)। ४ पाप-फल को भोगने वाला दरिद्र, पंगु वगैर. ; (गाया १, १) । ५ भाण्ड-चेष्टा करने वाला ; (औप) ।
किब्बिसिया स्त्री [**कैल्बिषिकी**] १ भावना-विशेष, धर्म-गुरु वगैरः की निन्दा करने की आदत ; (धर्म ३) । २ केवल वेष-धारी साधु की वृत्ति , (भग) ।
किम (अप) अ [**कथम्**] क्यों, कैसे ? (हे ४, ४०१)।
किमण देखो **किवण** ; (आचा) ।
किमस्स पुं [**किमश्व**] नृप-विशेष, जिसने इन्द्र को संग्राम में हराया था और शाप लगने से जो मर कर अजगर हुआ था ; (निचू १) ।
किमि पुं [**कृमि**] १ क्षुद्र जीव, कीट-विशेष; (पण्ह १,३)। २ पेट में, फुनसी में और बवासीर में उत्पन्न होता जन्तु-विशेष, (जी १५)। ३ द्वीन्द्रिय कीट-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र २३)। °**य** न [°**ज**] कृमि-तन्तु से उत्पन्न वस्त्र; "कोसेज्जपट्टमाई जं, किमियं तु पवुच्चइ" (पंचभा) । °**राग** , °**राय** पुं [°**राग**] किरमिजी का रंग ; (कम्म १, २० , दे २, ३२ ; पण्ह २, ४) । °**रासि** पुं [°**राशि**] वनस्पति-विशेष , (पण्ण १—पत्र ३६) ।
किमिघरवसण [दे] देखो **किमिहरवसण** ; (पड्) ।
किमिच्छय न [**किमिच्छक**] इच्छानुसार दान , (णाया १, ८—पत्र १५०) ।
किमिण वि [**कृमिमत्**] कृमि-युक्त ; "किमिणवहुदुरभिगंधेसु" (पण्ह २, ५) ।
किमिराय वि [दे] लाक्षा से रक्त ; (दे २, ३२) ।
किमिहरवसण न [दे] कौशेय वस्त्र ; (दे २, ३३) ।
किमु अ [**किमु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ प्रश्न; २ वितर्क ; ३ निन्दा ; ४ निषेध ; (हे २, २१७ ; पिग) ।
किमुय अ [**किमुत**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ प्रश्न ; २ विकल्प ; ३ वितर्क ; ४ अतिशय ; (हे २, २१८) "अमरनररायमहियं ति पूइयं तेहिं, किमुय सेसेहिं" (विसे १०६१) ।
किम्मिय न [दे. **किम्मित**] जड़ता, जाड्य ; (राज) ।
किम्मीर वि [**किर्मीर**] १ कर्बर, कबरा; (पाअ) । २ पु. राक्षस-विशेष, जिसको भीमसेन ने मारा था ; (वेणी ११७) । ३ वंश-विशेष; "जाया किम्मीरवंमे " (रंभा) ।
कियत्थ देखो **कयत्थ** ; (भवि) ।
कियव्व देखो **कइअव** ; (उप ७२८ टी) ।
किया देखो **किरिया** ; " हयं नाणं कियाहीणं " (हे २, १०४) ; " मग्गणुसारी सद्धो पन्नवणिज्जो कियावरो चेव " (उप १६६ ; विसे ३५६३ टी ; कप्पू) ।
कियाणं देखो **कर**=कृ ।
कियाणग न [**क्रयाणक**] किराना, करियाना, वेचने योग्य चीज ; (सुर १, ६०) ।
किर पुं [दे] सूकर, सूअर ; (दे २, ३० ; षड्) ।
किर अ [**किल**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ संभावना ; २ निश्चय ; ३ हेतु, निश्चित कारण ; ४ वार्ता-प्रसिद्ध अर्थ , ५ अरुचि ; ६ अलीक, असत्य ; ७ संशय, संदेह ; (हे २, १८६ ; षड् ; गा १२६ ; प्रासू १७ ; दस १)। ७ पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (कम्म ४, ७६) ।
किर सक [**कॄ**] १ फेंकना । २ पसारना, फैलाना । ३ बिखेरना । वकृ—**किरंत** ; (से ४, ५८ ; १४, ५७) ।
किरण पुंन [**किरण**] किरण, रश्मि, प्रभा ; (सुपा ३५१; गउड ; प्रासू ८२) ।
किरणिल्ल वि [**किरणवत्**] किरण वाला, तेजस्वी ; (सुर २, २४२) ।
किराड, **किराय** पुं [**किरात**] १ अनार्य देश-विशेष ; (पव १४८) । २ भील, एक जंगली जाति ; (सुर २, २७ ; १८० ; सुपा ३६१ ; हे १, १८३) ।
किरि पु [**किरि**] भालु का आवाज ; " कत्थइ किरित्ति कत्थइ हिरित्ति कत्थइ छिरित्ति रिच्छाणं सद्दो"(पउम ६४,४५)।
किरि पुं [**किरि**] सूकर, सूअर ; (गउड) ।
किरिइरिआ, **किरिकिरिआ** स्त्री [दे] १ कर्णोपकर्णिका, एक कान से दूसरे कान गई हुई बात, गप ; २ कुतूहल, कौतुक ; (दे २, ६१) ।

किरित्तण देखो **कित्तण** , (नाट—माल ६७)।

किरिया स्त्री [**क्रिया**] १ क्रिया, कृति, व्यापार, प्रयत्न ; (सुत्र २, १ ; ठा ३, ३)। २ शास्त्रोक्त अनुष्ठान, धर्मानुष्ठान ; (सुत्र २, ४ ; पव १४६)। ३ सावद्य व्यापार ; (भग १७, १)। ४ °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] कर्मबन्ध का कारण ; (सूत्र २, २ ; आव ४)। °**वर** वि [°**पर**] अनुष्ठान-कुशल ; (षड्)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] १ आस्तिक, जीवादि का अस्तित्व मानने वाला ; (ठा ४, ४)। २ केवल क्रिया से ही मोक्ष होता है ऐसा मानने वाला ; (सम १०६)। °**विसाल** न [°**विशाल**] एक जैन ग्रन्थांश, तेरहवाँ पूर्व-ग्रन्थ , (सम २६)।

किरीड पुं [**किरीट**] मुकुट, शिरा-भूषण ; (पाअ)।

किरीडि पुं [**किरीटिन्**] अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (वेणी १६२)।

किरीत वि [**क्रीत**] किना हुआ, खरीदा हुआ , (प्राप्र)।

किरीय पुं [**किरीय**] १ एक म्लेच्छ देश; २ उसमें उत्पन्न म्लेच्छ जाति; (राज)।

किरोलय न [**किरोलक**] फल-विशेष, किरोलिका वल्ली का फल ; (उर ६, ५)।

किल देखो **किर**=किल ; (हे २, १८६ ; गउड ; कुमा)।

किलंत वि [**क्लान्त**] खिन्न, श्रान्त ; (षड्)।

किलंज न [**किलिञ्ज**] बाँस का एक पात्र, जिस में गैया वगैरः को खाना खिलाया जाता है ; (उवा)।

किलकिल अक [**किलकिलाय्**] 'किल किल' आवाज करना, हँसना। " किलकिलइ व्व सहरिसं मणिकंचीकिंकिणिरवेण " (कप्पू)।

किलकिलाइय न [**किलकिलायित**] 'किलकिल' ध्वनि, हर्ष-ध्वनि ; (आवम)।

किलणी स्त्री [**दे**] रथ्या, गली ; (दे २, ३१)।

किलम्म अक [**क्लम्**] क्लान्त होना, खिन्न होना। किलम्मइ ; (कप्पू)। किलम्मसि ; (वज्जा ६२)। वक्ट—**किलम्मंत** ; (पि १३६)।

किलाचक्क न [**क्रीडाचक्र**] इस नाम का एक छन्द—वृत्त ; (पिंग)।

किलाड पुं [**किलाट**] दूध का विकार-विशेष, मलाई ; (दे २, २२)।

किलाम सक [**क्लमय्**] क्लान्त करना, खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना। किलामेज्ज ; (पि १३६)। वक्ट—**किलामेंत** ; (भग ५, ६)। कवक्ट—**किलामीअमाण** , (मा ४६)।

किलाम पुं [**क्लम**] खेद, परिश्रम, ग्लानि ; " खमणिज्जो मे किलामो " (पडि, विसे २४०४)।

किलामणया स्त्री [**क्लमना**] खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना ; (भग ३, ३)।

किलामिअ वि [**क्लमित**] खिन्न किया हुआ, हैरान किया हुआ, पीडित ; " तण्हाकिलामिअंगो" (पउम १०३, २२ ; सुर १०, ४८)।

किलिंच न [**दे**] छोटी लकडी, लकड़ी का टुकडा ; " दंतंतरसोहणयं किलिंचमित्तं पि अविदिन्नं" (भत्त १०२ ; पाअ ; दे २, ११)।

किलिंचिअ न [**दे**] ऊपर देखो , (गा ८०)।

किलिंत देखो **किलंत** ; (नाट—मृच्छ २५ ; पि १३६)।

किलिकिंच अक [**रम्**] रमण करना, क्रीड़ा करना। किलिकिंचइ ; (हे ४, १६८)।

किलिकिंचिअ न [**रत**] रमण, क्रीड़ा, संभोग ; (कुमा)।

किलिकिल अक [**किलकिलाय्**] 'किल किल' आवाज करना। वक्ट—**किलिकिलंत** ; (उप १०३१ टी)।

किलिकिलि न [**किलिकिलि**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

किलिकिलिकिल देखो **किलकिल**। वक्ट—**किलिकिलिकिलंत** ; (पउम ३३, ८)।

किलिगिलिय न [**किलिकिलित**] 'किल किल' आवाज करना, हर्ष-द्योतक ध्वनि-विशेष ; (स ३७० ; ३८५)।

किलिट्ठ वि [**क्लिष्ट**] १ क्लेश-युक्त, (उत्त ३२)। २ कठिन, विषम ; ३ क्लेश-जनक ; (प्राप्र ; हे २, १०६ ; उव)।

किलिण्ण देखो **किलिन्न** ; (स्वप्न ८५)।

किलित्त वि [**क्लृप्त**] कल्पित, रचित ; (प्राप्र ; षड् ; हे १, १४५)।

किलित्ति स्त्री [**क्लृप्ति**] रचना, कल्पना ; (पि ५६)।

किलिन्न वि [**क्लिन्न**] आर्द्र, गीला ; (हे १, १४५ ; २, १०६)।

किलिम्म देखो **किलम्म**। किलिम्मइ ; (पि१७७)। वक्ट—**किलिम्मंत** ; (से ६, ८० ; ११, ५०)।

किलिम्मिअ वि [दे] कथित, उक्त; (दे २, ३२)।
किलिव देखो कीव ; (षा २ ; मै ४३)।
किलिस्स अक [क्लिश्] खेद पाना, थक जाना, दुःखी होना। वकृ—किलिस्संत ; (पउम २१, ३८)।
किलिस्स देखो किलेस; "मिच्छत्तमच्छभीयाण, सिविमगकिलिस्सम्मि दुहाणं" (सुपा ६४)।
किलिस्सिअ वि [क्लेशित] आयासित, क्लेश-प्राप्त ; (स १४६)।
किलिस्स देखो किलिस्स = क्लिश्। किलिस्सइ ; (महा; उव)। वकृ—किलिस्संत ; (नाट—माल ३१)।
किलिम्सिअ वि [क्लिष्ट] क्लेश-प्राप्त, क्लेश-युक्त ; (उप पृ ११६)।
किलीण देखो किलिण्ण ; (भवि)।
किलीव देखो कीव ; (स ६०)।
किलेस पुं [क्लेश] १ खेद, थकावट; (औप)। २ दुःख, पीड़ा, बाधा; (पउम २२, ७५ ; सुज्ज २०)। ३ दुःख का कारण ; ४ कर्म, शुभाशुभ कर्म ; (कुछ १)। °यर वि [°कर] क्लेश-जनक ; (पउम २२, ७५)।
किलेसिय वि [क्लेशित] दुःखी किया हुआ ; (सुर ४, १६७ ; १६९)।
किल्हा देखो किट्ठा ; (मै ६१)।
किव पुं [कृप] १ इस नाम का एक ऋषि, कृपाचार्य ; (हे १, १२८)। "भाइसयसमत्तं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणीं णीतं (? सउणिं किवं) आसत्थामं" (णाया १, १६—पत्र २०८)।
किवँ (अप) देखो कहं ; (कुमा)।
किवण वि [कृपण] १ गरीब, रंक, दीन ; (सुअ १, १, ३ ; सम्म ६०)। २ दरिद्र, निर्धन ; (पण्ह १, २)। ३ कंजूस, कम-खर्चा ; (दे २, ३१)। ४ कमीन, कायर ; (सुअ २, २)।
किवा स्त्री [कृपा] दया, मेहरबानी ; (हे १, १२८)। °वन्न वि [°पन्न] कृपा-प्राप्त, दयालु ; (पउम ६५, ४७)।
किवाण पुन [कृपाण] खड्ग, तलवार ; (सुपा १५८ ; हे १, १२८ ; गउड)।
किवालु वि [कृपालु] दयालु, दया करने वाला ; (पउम १४, ५० ; ६३, २०)।
किविड न [दे] १ खलिहान, धान्य भरने का स्थान ; २ [illegible] में जो हुआ हो वह ; (दे २, ६०)।

किविडी स्त्री [दे] १ किवाड़, पार्श्व-द्वार ; २ घर का पिछला आँगन ; (दे २, ६०)।
किविण देखो किवण ; (हे १, ४६ ; १२८ ; गा १३६ ; सुर ३, ४४ ; प्रासू ५१ ; पण्ह १, १)।
किस वि [कृश] १ दुर्बल, निर्बल ; (उवर ११२)। २ पतला ; (हे १, १२८ ; ठा ४, २)।
किसंग वि [कृशाङ्ग] दुर्बल शरीर वाला; (गा ६५०)।
किसर पुं [कृशर] १ पक्वान्न-विशेष, तिल, चावल और दूध की बनी हुई एक खाद्य चीज ; २ खिचड़ी, चावल और दाल का मिश्रित भोजन-विशेष ; (हे १, १२८)।
किसर देखो केसर ; "मअमहिअमअणकिसरं" (हे १, १४६)।
किसरा स्त्री [कृशरा] खिचड़ी, चावल-दाल का मिश्रित भोजन-विशेष ; (हे १, १२८ ; दे १, ८८)।
किसल देखो किसलय ; (हे १, २६९ ; कुमा)।
किसलइय वि [किसलयित] अङ्कुरित, नये अङ्कुर वाला; (सुर ३, ३६)।
किसलय पुंन [किसलय] १ नूतन अङ्कुर ; (धा २०)। २ कोमल पत्ती ; (जी ९)। "सव्वोवि किसलओ खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ" (पण्ण १)। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष ; (अजि १९)।
किसा देखो कासा ; (हे १, १२७)।
किसाणु पुं [कृशानु] १ अग्नि, वह्नि, आग ; २ वृक्ष-विशेष, चित्रक वृक्ष ; ३ तीन की संख्या ; (हे १, १२८ ; षड्)।
किसि स्त्री [कृषि] खेती, चास ; (विसे १६१४ ; सुर १५, २०० ; प्राप्र)।
किसिअ वि [कृशित] दुर्बलता-प्राप्त, कृशता-युक्त ; (गा ४० ; वज्जा ६०)।
किसिअ वि [कृषित] १ विलिखित, खेती किया हुआ ; २ जोता हुआ, कृष्ट ; ३ खींचा हुआ ; (हे १, १२८)।
किसीवल पुं [कृषीवल] कृषक, किसान ; "[illegible]" (धा १९)।
किसोर पुं [किशोर] बाल्यावस्था के बाद की अवस्था वाला बालक ; "[illegible]" (सुपा ५८१)।
किसोरी स्त्री [किशोरी] कुमारी, अविवाहित युवती ; (णाया १, ८)।

किस्स देखो **किलिस**=क्लिश् । संकृ—**किस्सइत्ता** ; (सूअ १, ३, २)।

किह } देखो **कहं**; (आचा; कुमा; भग ३, २; णाया १,१७)।
किहं }

कीअ देखो **कीव** ; (षड् ; प्राप्र) ।

कीइस वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ; (स १४०) ।

कीकस पुं [**कीकश**] १ कृमि-जन्तु विशेष; २ न. हड्डी, हाड़ ; ३ कठिन, कठोर ; (राज) ।

कीचअ देखो **कीयग** ; (वेणी १७७) ।

कीड देखो **किड्ड**=क्रीड् । भवि—कीडिस्सं; (पि २२६) ।

कीड पुं [**कीट**] १ कीड़ा, चुद्र जन्तु ; (उव) । २ कीट-विशेष; चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (उत्त २) ।

कीडइल्ल वि [**कीटवत्**] कीड़ा वाला, कीटक-युक्त ; (गउड) ।

कीडण न [**क्रीडन**] खेल, क्रीड़ा ; (सुर १, ११८) ।

कीडय पुं [**कीटक**] देखो **कीड**=कीट ; (नाट ; सुपा ३७०) ।

कीडय न [**कीटज**] कीड़े के तन्तु से उत्पन्न होता वस्त्र, वस्त्र-विशेष ; (अणु) ।

कीडा देखो **किड्डा** ; (सुर ३, ११६ ; उवा) ।

कीडाविया देखो **किड्डाविया** ; (राज) ।

कीडिया स्त्री [**कीटिका**] पिपीलिका, चींटी; (सुर १०, १७६) ।

कीडी स्त्री [**कीटी**] ऊपर देखो ; (उप १४७ टी ; दे २, ३) ।

कीण सक [**क्री**] खरीदना, मोल लेना । कीणइ, कीणए ; (षड्) । भवि—क्रीणिस्सं ; (पि ५११ ; ५३४) ।

कीणास पुं [**कीनाश**] यम, जम ; (पाअ, सुपा १८३) । °**गिह** न [°**गृह**] मृत्यु, मौत ; (उप १३६ टी) ।

कीय वि [**क्रीत**] १ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ ; (सम ३६ ; पण्ह २, १ ; सुपा ३४५) । २ जैन साधुओं के लिए भिचा का एक दोष; (ठा ३, ४)। ३ न. क्रय, खरीद, (दस ३ ; सूअ १, ६) । °**कड**, °**गड** वि [°**कृत**] १ मूल्य देकर लिया हुआ ; (बृह १) । २ साधु के लिए मोल से किना हुआ, जैन साधु के लिए भिचा-दोष-युक्त वस्तु ; (पि ३३०) ।

कीयग पुं [**कीचक**] विराट देश के राजा का साला, जिस-भीम ने मारा था ; (उप ६४८ टी) । "नवमं दूयं विराडनयरं, तत्थ णं तुमं कि(? की)यगं भाउसयसमग्गं" (णाया १, १६—पत्र २०६) ।

कीया स्त्री [**कीका**] नयन-तारा; "मरकतमसारकलित्तनयण-कीयरासिवन्ने" (णाया १, १ टी—पत्र ६) ।

कीर पु [**दे.कीर**] शुक, तोता ; (दे २, २१ ; उप १, १४) ।

कीर पुं [**कीर**] १ देश-विशेष, काश्मीर देश ; २ वि. काश्मीर देश संबन्धी, ३ वि. काश्मीर देश में उत्पन्न ; (विसे ४६४ टी) ।

कीरंत } देखो **कर**=कृ ।
कीरमाण }

कीरल पुं [**कीरल**] देश-विशेष ; (पउम ६८, ६४) ।

कीरिस देखो **केरिस** ; (गा ३७४ ; मा ४) ।

कीरी स्त्री [**कीरी**] लिपि-विशेष, कीर देश की लिपि ; (विसे ४६४ टी) ।

कील अक [**क्रीड्**] क्रीड़ा करना, खेलना । कीलइ; (प्राप्र) । वकृ—**कीलंत, कीलमाण**; (सुर १, १२१; पि २४०) । संकृ—**कीलेत्ता, कीलिऊण**; (सुर १, ११७; पि २४०)।

कील वि [**दे**] स्तोक, अल्प, थोड़ा ; (दे २, २१) ।

कील देखो **खील** ; (पाअ) ।

कीलण न [**क्रीडन**] क्रीड़ा, खेल ; (औप) । °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] बालक को खेल-कूद कराने वाली दाई ; (णाया १, १) ।

कीलणअ न [**क्रीडनक**] खिलौना ; (अभि २४२) ।

कीलणिआ } स्त्री [**दे**] रथ्या, गली ; (दे २, ३१) ।
कीलणी }

कीला स्त्री [**दे**] १ नव-वधू, दुलहिन ; (दे २, ३३) ।

कीला स्त्री [**कीला**] सुरत समय में किया जाता हृदय-ताडन विशेष ; (दे २, ६४) ।

कीला स्त्री [**क्रीडा**] खेल, क्रीडन ; (सुपा ३५८ ; सुर १, ११७)। °**वास** पुं [°**वास**] क्रीड़ा करने का स्थान; (इक)।

कीलाल न [**कीलाल**] रुधिर, खून, रक्त; (उप ८६; पाअ) ।

कीलालिअ वि [**कीलालित**] रुधिर-युक्त, खून वाला ; (गउड) ।

कीलावण न [**क्रीडन**] खेल कराना ; (णाया १, २)।

कीलावणय न [**क्रीडनक**] खिलौना, (निर १, १) ।

कीलिअ न [**क्रीडित**] क्रीड़ा, रमण, क्रीड़न ; (सम १५ ; स २४१) ।

कीलिअ वि [**कीलित**] खूँटा ठोका हुआ ; " लिहियव्व कीलियव्व " (महा ; सुपा २५४) ।

कीलिआ स्त्री [**कीलिका**] १ छोटा खूँटा, खूँटी ; (कम्म १, ३६) । २ शरीर-संहनन विशेष, शरीर का एक प्रकार का बाँधा, जिसमें हड्डियां केवल खूँटो से बँधी हुई हों ऐसा शरीर-बन्धन ; (सम १४६; कम्म १, ३६) ।

कीव पुं [**क्लीव**] १ नपुंसक ; (बृह ४) । २ वि. कातर, अधीर ; (सुर २, १४ ; णाया १, १) ।

कीव पुं [**दे. कीव**] पक्षि-विशेष; (पगह १,१—पत्र ८) ।

कीस वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ; (भग; पगण ३४) ।

कीस वि [**किंस्व**] कौन स्वभाव वाला, कैसे स्वभाव का ; (भग) ।

कीस अ. [**कस्मात्**] क्यों, किस से, किस कारण से ? (उव ; हे ३, ६८) ।

कु अ. [**कु**] १ अल्प, थोड़ा ; २ निषिद्ध, निवारित ; ३ कुत्सित, निन्दित ; (हे २, २१७ ; से १, २६; सम्म १) । ४ विशेष, ज्याद ; (णाया १, १४) । **°उरिस** पुं [**°पुरुष**] खराब आदमी, दुर्जन ; (से १२, ३३) । **°चर** वि [**°चर**] खराब चाल-चलन वाला, सदाचार-रहित ; (आचा) । **°डंड** पुं [**°दण्ड**] पाश विशेष, जिसका प्रान्त भाग काष्ट का होता है ऐसा रज्जु-पाश ; (पगह १, ३) । **°डंडिम** वि [**°दण्डिम**] दगड देकर छीना हुआ द्रव्य ; (विपा १, ३) । **°तित्थ** न [**°तीर्थ**] १ जलाशय में उतरने का खराब मार्ग ; (प्रासू ६०) । २ दूषित दर्शन ; (सूत्र १, १, १) । ३ **°तित्थि** वि [**°तीर्थिन्**] दूषित मत का अनुयायी , (कुमा) । **°दंडिम** देखो **डंडिम** ; (णाया १, १—पत्र ३७) । **°दंसण** न [**°दर्शन**] दुष्ट मत, दूषित धर्म ; (पगण २) । **°दंसणि** वि [**°दर्शनिन्**] १ दुष्ट दार्शनिक; २ दूषित मत का अनुयायी, (श्रा ६) । **°दिट्ठि** स्त्री [**°दृष्टि**] १ कुत्सित दर्शन ; (उत्त २८) । २ दूषित मत का अनुयायी ; (धर्म २) । **°दिट्ठिय** वि [**दृष्टिक**] दुष्ट दर्शन का अनुयायी, मिथ्यात्वी; (पउम ३०, ४४) । **°प्पवयण** न [**°प्रवचन**] १ दूषित शास्त्र ; २ वि. दूषित सिद्धान्त को मानने वाला ; (अणु) । **°प्पावयणिय** वि [**°प्रावचनिक**] १ दूपित सिद्धान्त का अनुसरण करने वाला , (सूत्र १, २, २) । २ दूषित आगम-संबन्धी (अनुष्ठान); (अणु) । **°भत्त** न [**°भक्त**] खराब भोजन; (पउम २०, १६६) । **°मार** पुं [**°मार**] १ कुत्सित मार ; (सूत्र २, २) । २ अत्यन्त मार, मृत-प्राय करने वाला ताडन ; (णाया १, १४) । **°रंडा** स्त्री [**°रण्डा**] रॉड़, विधवा ; (श्रा १६) । **°रुव, °रूव** न [**°रूप**] १ खराब रूप ; (उप ३६२ टी ; पगह १, ४) । २ माया-विशेष ; (भग १२, ५) । **°लिंग** न [**°लिङ्ग**] १ कुत्सित भेप ; (दंस) । २ पुं. कीट वगैरः क्षुद्र जन्तु ; (विसे १७५४) । ३ वि. कुतीर्थिक, दूपित धर्म का अनुयायी ; (आवम) । **°लिंगि** पुं [**लिङ्गिन्**] १ कीट वगैर क्षुद्र जन्तु ; (ओघ ७४८) । २ वि. कुतीर्थिक, असत्य धर्म का अनुयायी ; (पगह १, २) । **°वय** न [**°पद**] खराब शब्द ;

" सो सोहइ दूसंतो, कइयणरइयाइं विविहकव्वाइं ।
जो भंजिऊण कुवयं, अन्नपयं सुंदरं देइ "
(वज्जा ६) ।

°वियप्प पुं [**°विकल्प**] कुत्सित विचार ; (सुपा ४४) । **°वुरिस** देखो **°उरिस** ; (पउम ६५, ४५) । **°संसग्ग** पुं [**°संसर्ग**] खराब सोवत, दुर्जन-संगति ; (धर्म ३) । **°सत्थ** पुंन [**°शास्त्र**] कुत्सित शास्त्र, अनाप्त-प्रणीत सिद्धान्त , " ईसरमयाइया सव्वे कुसत्था " (निचू ११) । **°समय** पुं [**°समय**] १ अनाप्त-प्रणीत शास्त्र; (सम्म १)। २ वि. कुतीर्थिक, कुशास्त्र का प्रणेता और अनुयायी ; (सम) । **°सल्लिय** वि [**°शल्यिक**] जिसके भीतर खराब शल्य घुस गया हो वह , (पगह २, ४) । **°सील** न [**°शील**] १ खराब स्वभाव ; (आचा) । २ अब्रह्मचर्य, व्यभिचार ; (ठा ४, ४) । ३ वि. जिसका आचरण अच्छा न हो वह, दुराचारी ; (ओघ ७६३) । ४ अब्रह्मचारी, व्यभिचारी ; (ठा ५, ३) । **°सुमिण** पुंन. [**°स्वप्न**] खराब स्वप्न; (श्रा ६) । **°हण** वि [**°धन**] अल्प धन वाला, दरिद्र ; (पगह २, १—पत्र १००) ।

कु स्त्री [**कु**] १ पृथिवी, भूमि; "कुसमयविसासणं " (सम्म १ टी—पत्र ११४ : से १, २६) । **°त्तिअ** न [**°त्रिक**] १ तीनों जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; २ तीन जगत् में स्थित पदार्थ ; (औप) । **°त्तिअ** वि [**°त्रिज**] तीनों जगत् में उत्पन्न वस्तु ; (आवम) । **°त्तिआवण** पुंन [**°त्रिकापण**] तीनों जगत् के पदार्थ जहां मिल सके ऐसी दुकान ; (भग ; णाया १, १—पत्र ५३) ।

°वलय न [°वलय] पृथ्वी-मण्डल, (श्रा २७)।
कुअरी देखो कुआँरी ; (पि २५१)।
कुअलअ देखो कुवलय ; (प्राप्र)।
कुआँरी देखो कुमारी ; (गा २६८)।
कुइमाण वि [दे] म्लान, शुष्क ; (दे २, ४०)।
कुइय वि [कुचित] अवस्यन्दित, क्षरित ; (ठा ६)।
कुइय वि [कुपित] क्रुद्ध, कोप-युक्त ; (भवि)।
कुइयण्ण पु [कुविकर्ण] इस नाम का एक गृहपति, एक गृहस्थ, (विसे ६३२)।
कुउअ पुंन [कुतुप] स्नेह-पात्र, घी तैल वगैरः भरनेका चमडे का पाल-विशेष, "तुप्पाइं को(? कु)उआइं" (पाअ)। देखो कुतुव।
कुउआ स्त्री [दे] तुम्बी-पात्र, तुम्बा ; (दे २, १२)।
कुऊल न [दे] १ नीवी, नारा, इजारबन्द ; २ पहने हुए कपड़े का प्रांत भाग, अञ्चल, (दे २, ३८)।
कुऊहल न [कुतूहल] १ अपूर्व वस्तु देखने की लालसा— उत्सुकता ; २ कौतुक, परिहास ; (हे १, ११७ ; कुमा)।
कुओ अ [कुतः] कहांसे ? (षड्)। °इ अ [°चित्] कहींसे, किसीसे ; (स १८५)। °वि अ [°अपि] कहीं से भी ; (काल)।
कुंआरी स्त्री [कुमारी] वनस्पति-विशेष, कुवारपाठा, घी कुवार, घीगुवार ; (श्रा २० ; जी १०)।
कुंकण न [दे] १ कोकनद, रक्त कमल ; (पण्ण १— पत्र ४०)। २ पुं. क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीड़े की एक जाति ; (उत्त ३६)।
कुंकण पुं [कोङ्कण] देश-विशेष ; (अणु ; सार्ध ३४)।
कुंकुम न [कुङ्कुम] केसर, सुगन्धी द्रव्य-विशेष ; (कुमा; श्रा १८)।
कुंग पु [कुङ्ग] देश-विशेष , (भवि)।
कुंच सक [कुञ्च्] १ जाना, चलना , २ अक. सकुचित होना ; ३ टेढा चलना ; (कुमा; गउड)।
कुंच पुं [क्रौञ्च] १ पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १ ; उप पृ २०८; उर १, १४)। २ इस नाम का एक असुर, (पाअ)। ३ इस नामका एक अनार्य देश , ४ वि. उसके निवासी लोग ; (पव २७४)। °रवा स्त्री [°रवा] दण्डकारण्य की इस नाम की एक नदी ; (पउम ४२, १५)। °वीरग न [°वीरक] एक प्रकार का जहाज ; (निचू १६)। °रि पुं [°रि] कार्तिकेय, स्कन्द ; (पाअ)। देखो कोंच।
कुंचल न [दे] मुकुल, कलि, बौर ; (दे २, ३६ ; पाअ)।
कुंचि वि [कुञ्चिन्] १ कुटिल, वक्र ; २ मायावी, कपटी ; (वव १)।
कुंचिगा देखो कोंचिगा।
कुंचिय वि [कुञ्चित] १ संकुचित ; (सुपा ५८)। २ कुण्डल आकार वाला, गोलाकृति, (औप; जं २)। ३ कुटिल, वक्र ; (वव १)।
कुंचिय पुं [कुञ्चिक] इस नाम का एक जैन उपासक , (भत्त १३३)।
कुंचिया देखो कोंचिगा। रूई से भरा हुआ पहनने का एक प्रकार का कपड़ा; (जीत)।
कुंजर पुं [कुञ्जर]हस्ती, हाथी , (हे १, ६६ ; पाअ)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, हस्तिनापुर ; (पउम ६५, ३४)। °सेणा स्त्री [°सेना] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक रानी ; (उत्त २६)। °वत्त न [°वर्त] नगर-विशेष , (सुर ३, ८८)।
कुंट वि [कुण्ट] १ कुब्ज, वामन ; (आचा)। २ हाथ-रहित, हस्त-हीन ; (पव ११० ; निचू ११ ; आचा)।
कुंटलविंटल न [दे] १ मंत्र-तंत्रादि का प्रयोग, पाखण्ड-विशेष ; (आवम)। २ मन्त्र-तंत्रादि से आजीविका चलाने वाला ; (आक)।
कुंटार वि [दे] म्लान, सूखा, मलिन ; (दे २, ४०)।
कुंटि स्त्री [दे] १ गठरी, गाँठ ; (दे २, ३४)। २ शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का औजार ; "मुसलुक्खलहलदंताल-कुटिकुद्दालपमुहसत्थाणं" (सुपा ५२६)।
कुंठ वि [कुण्ठ] १ मंद, अलस; (श्रा १६)। २ मूर्ख, बुद्धि-रहित ; (आचा)।
कुंड न [कुण्ड] १ कूँडा, पात्र-विशेष ; (षड्)। २ जलाशय-विशेष ; (णादि)। ३ इस नाम का एक सरोवर ; (ती ३४)। ४ आज्ञा, आदेश; "वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा" (कप्प)। °कोलिय पुं [°कोलिक] एक जैन उपासक; (उवा)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] मगध देश का एक गाँव; (कप्प, पउम २, २१)। °धारि वि [°धारिन्] आज्ञा-कारी ; (कप्प)। °पुर न [°पुर] ग्राम-विशेष ; (कप्प)।
कुंड न [दे] ऊख पीलने का जीर्ण काण्ड, जो बाँस का बना हुआ होता है ; (दे २, ३३ , ४, ४५)।

कुंडभी स्त्री [दे] छोटी पताका ; (आवम) ।

कुंडल पुंन [**कुण्डल**] १ कान का आभूषण ; (भग ; औप)। २ पुं. विदर्भ देश के एक राजा का नाम ; (पउम ३०, ७७)। ३ द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र-विशेष ; ५ देव-विशेष; (जीव ३)। ६ पर्वत-विशेष; (ठा १०)। ७ गोल आकार; (सुपा ९२)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] कुण्डल-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव ; (जीव ३)। °**मंडिअ** वि [°**मण्डित**] १ कुण्डल से विभूषित। २ विदर्भ देश का इस नाम का एक राजा; (पउम ३०, ७४)। °**महाभद्द** पुं [°**महाभद्र**] देव-विशेष ; (जीव ३)। °**महावर** पु [°**महावर**] कुण्डलवर समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (सुज्ज १९)। °**वर** पु [°**वर**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेष ; ३ देव-विशेष ; (जीव ३)। ४ पर्वत-विशेष ; (ठा ३, ४)। °**वरभद्द** पुं [°**वरभद्र**] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (जीव ३)। °**वरमहाभद्द** पुं [°**वरमहाभद्र**] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव, (जीव ३)। °**वरोभास** पु [°**वरावभास**] १ द्वीप-विशेष ; २ समुद्र-विशेप ; (जीव ३)। °**वरोभासभद्द** पुं [°**वरावभासभद्र**] कुण्डलवरावभास द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**वरोभासमहाभद्द** पुं [°**वरावभासमहाभद्र**] देखो पूर्वोक्त अर्थ, (जीव ३)। °**वरोभासमहावर** पु [°**वरावभासमहावर**] कुण्डलवरावभास समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष, (जीव ३)। °**वरोभासवर** पु [°**वरावभासवर**] समुद्र-विशेष का अधिपति देव-विशेष ; (जीव ३)

कुंडला स्त्री [**कुण्डला**] विदेहवर्ष-स्थित नगरी-विशेष, (ठा २, ३)।

कुंडलि वि [**कुण्डलिन्**] कुण्डल वाला ; (भास ३३)।

कुंडलिअ वि [**कुण्डलित**] वर्तुल, गोल आकार वाला, (सुपा ९२ ; कप्पू)।

कुंडलिआ स्त्री [**कुण्डलिका**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

कुंडलोद पुं [**कुण्डलोद**] इस नाम का एक समुद्र ; (सुज्ज १९)।

कुंडाग पुं [**कुण्डाक**] सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष ; (आवम)।

कुंडि देखो **कुंडी** ; (महा)।

कुंडिअ पु [दे] ग्राम का अधिपति, गाँव का मुखिया ; (दे २, ३७)।

कुंडिअपेसण न [दे] ब्राह्मण-विष्टि, ब्राह्मण की नौकरी, ब्राह्मण की सेवा ; (दे २, ४३)।

कुंडिगा, **कुंडिया** स्त्री [**कुण्डिका**] नीचे देखो ; (रंभा ; अनु ५ ; भग ; णाया २, ५)।

कुंडी स्त्री [**कुण्डी**] १ कुण्डा, पात्र-विशेष ; "तेसिमहो-भूमीए ठविया कुडी य तेल्लपडिपुन्ना" (सुपा २६९)। २ कमण्डल, संन्यासी का जल-पात्र ; (महा)।

कुंढ देखो **कुंठ** ; (सुपा ४२२)।

कुंढय न [दे] १ चुल्ली, चुल्हा ; २ छोटा बरतन ; (दे २, ६३)।

कुंत पुं [दे] शुक, तोता ; (दे २, २१)।

कुंत पुं [**कुन्त**] १ हथियार विशेष, भाला ; (पण्ह १, १ ; औप)। २ राम के एक सुभट का नाम; (पउम ५९,३८)।

कुंतल पु [**कुन्तल**] १ केश, बाल ; (सुर १, १ ; सुपा ६१ ; २००)। २ देश-विशेष ; (सुपा ६१ ; उव ४९५)। °**हार** पुं [°**हार**] धम्मिल्ल, संयत केश ; (पाअ)।

कुंतल पुं [दे] सातवाहन, नृप-विशेष ; (दे २, ३६)।

कुंतला स्त्री [**कुन्तला**] इस नाम की एक रानी; (दंस)।

कुंतली स्त्री [दे] करोटिका, परोसने का एक उपकरण ; (दे २, ३८)।

कुंतली स्त्री [**कुन्तली**] कुन्तल देश की रहने वाली स्त्री; कप्पू)।

कुंती स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर; (दे २, ३४)।

कुंती स्त्री [**कुन्ती**] पाण्डवों की माता का नाम ; (उप ६४८ टी)। °**विहार** पुं [°**विहार**] नासिक-नगर का एक जैन मन्दिर, जिसका जीर्णोद्धार कुन्तीजी ने किया था ; (ती २८)।

कुंतीपोट्टलय वि [दे] चतुष्कोण, चार कोण वाला ; (दे २, ४३)।

कुंथु पुं [**कुन्थु**] १ एक जिन-देव, इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न सतरहवाँ तीर्थंकर और छठवाँ चक्रवर्ती राजा ; (सम ४३ ; पडि)। २ हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ९८)। ३ चमरेन्द्र की हस्ति-सेना का अधिपति देव-विशेष; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ एक क्षुद्र जन्तु, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (उत्त ३६ ; जी १७)।

कुंद पुं [**कुन्द**] १ पुष्प-वृक्ष विशेष; (जं २)। २ न. पुष्प-विशेष, कुन्द का फूल; (सुर २, ७६ ; णाया १, १)। ३

विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। ४ पुंन. छन्द-विशेष ; (पिंग)।
कुंदय वि [द्रे] कृश, दुर्बल ; (दे २, ३७) ।
कुंदा स्त्री [**कुन्दा**] एक इन्द्राणी, मानिभद्र इंद्र की पटरानी; (इक)।
कुंदीर न [दे] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल ; (दे २, ३६)।
कुंदुक्क पुं [**कुन्दुक्क**] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ४१) ।
कुंदुरुक्क पु [**कुन्दुरुक**] सुगन्धि पदार्थ-विशेष ; (गाया १, १—पत्र ४१ ; सम १३७) ।
कुंदुल्लुअ पुं [दे] पक्षि-विशेष, उलुक, उल्लू ; (पाअ)।
कुंधर पुं [दे] छाटी मछली ; (दे २, ३२) ।
कुंपय पुन [**कूपक**] तैल वगैरः रखने का पात्र-विशेष ; (रयण ३१) ।
कुंपल पुन [**कुट्मल, कुड्मल**] १ इस नाम का एक नरक ; २ मुकुल, कलि, कलिका, (हे १, २६ ; कुमा ; षड्)।
कुंवर [दे] देखो **कुंधर** ; (पाअ) ।
कुंभ पुं [**कुम्भ**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, भगवान् मल्लिनाथ का पिता ; (सम १५१; पउम २०, ४५) । २ स्वनाम-ख्यात जैन महर्षि, अठारहवें तीर्थंकर के प्रथम शिष्य; (सम १५२) । ३ कुम्भकर्ण का एक पुत्र ; (से १२,६५) । ४ एक विद्याधर सुभट का नाम ; (पउम १०, १३) । ५ परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २६) । ६ कलश, घड़ा ; (महा ; कुमा) । ७ हाथी का गण्ड-स्थल; (कुमा)। ८ धान्य मापने का एक परिमाण , (अणु) । ६ तरने का एक उपकरण , (निचू १) । १० ललाट, भाल-स्थल ; (पव २)। ११ °**अण्ण** पुं [°**कर्ण**] रावण के छोटे भाई का नाम ; (१५, ११) । °**आर** पुं [°**कार**] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का बरतन बनाने वाला; (हे १, ८) । °**उर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (दंस) । °**गार** देखो °**आर** ; (महा)। °**ग्ग** न [°**अग्र**] मगध-देश-प्रसिद्ध एक परिमाण, (गाया १, ८—पत्र १२५) ।°**सेण** पु [°**सेन**] उत्सर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर के प्रथम शिष्य का नाम, (तित्थ) ।
कुंभंड न [**कूष्माण्ड**] फल-विशेष, कोहला ; (कप्पू) ।
कुंभार पुं [**कुम्भकार**] कुम्हार, घडा आदि मिट्टी का बरतन बनाने वाला ; (हे १, ८) । °**वाय** पु [°**पाक**] कुम्हार का बरतन पकाने का स्थान; (ठा ८) ।
कुंभि पुं [**कुम्भिन्**] १ हस्ती, हाथी ; (सण)। २ नपुंसक-विशेष, एक प्रकार का षण्ढ पुरुष ; (पुप्फ १२७) ।
कुंभिणी स्त्री [दे] जल का गर्त ; (दे २, ३८)।
कुंभिय वि [**कुम्भिक**] कुम्भ-परिमाण वाला ; (ठा ४,२)।
कुंभिल पुं [दे. **कुम्भिल**] १ चोर , स्तेन ; (दे २, ६२ ; विक ५६) । २ पिशुन, दुर्जन ; (दे २, ६२)।
कुंभिल्ल वि [दे] खोदने योग्य ; (दे २, ३६) ।
कुंभी स्त्री [**कुम्भी**] १ पात्र-विशेष, घड़े के आकार वाला छोटा कोष्ठ ; (सम १२५) । २ कुम्भ, घड़ा ; (जं ३)। °**पाग** पु [°**पाक**] १ कुम्भी में पकना ; (पण्ह २, ५)। २ नरक की एक प्रकार की यातना , (सूअ १, १, १) ।
कुंभी स्त्री [**कूष्माण्डी**] कोहले का गाछ, "चलिओ कुंभीफल दंतुराउ" (गउड) ।
कुंभी स्त्री [दे] केश-रचना, केश-सयम ; (दे २, ३४) ।
कुंभील पुं [**कुम्भील**] जलचर प्राणि-विशेष, नक्र, मगर , (चारु ६४) ।
कुंभुब्भव पुं [**कुम्भोद्भव**] ऋषि-विशेष, अगस्त्य ऋषि ; (कप्पू) ।
कुकुला स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन , (दे २, ३३) ।
कुकुस [दे] देखो **कुक्कुस** ; (दस ५, ३४)।
कुकुहाइय न [**कुकुहायित**] चलते समय का शब्द-विशेष ; (तदु) ।
कुकूल पुं [**कुकूल**] कारीषाग्नि, कंडे की आग ; (पण्ह १, १) ।
कुक्क देखो **कोक्क** । कुक्कइ ; (पि १६७; ४८८) ।
कुक्क पुं [दे] कुत्ता, कुक्कुर ; "कुक्केहि कुक्कहि अ वुक्कयंतें" (मृच्छ ३६) ।
कुक्कयय न [दे] आभरण-विशेष ; "अदु अंजणिं अलंकारं कुक्कययं मे पयच्छाहि" (सूअ १, ४, २, ७) । देखो **कुक्कुडय** ।
कुक्की स्त्री [दे] कुत्ती, कुकुरी ; (मृच्छ ३६) ।
कुक्कुअ वि [**कुत्कुच**] भाँड की तरह शरीर के अवयवों की कुचेष्टा करने वाला ; (धर्म २ ; पव ६) ।
कुक्कुअ न [**कौकुच्य**] कुचेष्टा, कामोत्पादक अंग-विकार , (पउम ११, ६७ ; आचा) ।
कुक्कुअ वि [**कुकूज**] आक्रन्द करने वाला ; (उत्त २१) ।
कुक्कुआ स्त्री [**कुचकुचा**] अवस्यन्दन, क्षरण; (बृह ६)।
कुक्कुइअ वि [**कौकुचिक**] भाँड़ की तरह कुचेष्टा करने वाला, काम-चेष्टा करने वाला ; (भग ; औप) ।

कुक्कुइअ न [**कौकुच्य**] काम-कुचेष्टा ; "भंडाईण व नयणाइयाण सवियारकरणमिह भणियं। कुक्कुइयं" (सुपा ५०६; पडि)।

कुक्कुड पुं [**कुक्कुट**] १ कुक्कुट, मुर्गा ; (गा ५८२, उवा)। २ वनस्पति-विशेष ; (भग १५)। ३ विद्या द्वारा किया जाता हस्त-प्रयोग-विशेष, (वव १)। °**मंसय** न [°**मांसक**] १ मुर्गा का मास , २ बीजपूरक वनस्पति का गुदा , (भग १५)।

कुक्कुड वि [**दे**] मत्त, उन्मत्त ; (दे २, ३७)।

कुक्कुडय न [**कुक्कुटक**] देखो **कुक्कयय** ; (सूत्र १, ४, २, ७ टी)।

कुक्कुडिया } स्त्री [**कुक्कुटिका, °टी**] कुक्कुटी, मुर्गी ;
कुक्कुडी } (णाया १, ३ ; विपा १, ३)।

कुक्कुडेसर न [**कुक्कुटेश्वर**] तीर्थ-विशेष ; (ती १६)।

कुक्कुर पुं [**कुक्कुर**] कुत्ता, श्वान ; (पउम ६४, ८० ; सुपा २७७)।

कुक्कुरुड पु [**दे**] निकर, समूह ; (दे २, १३)।

कुक्कुस पुं [**दे**] धान्य आदि का छिलका, भूँसा ; (दे २, ३६ ; दस ५, ३४)।

कुक्कुह पु [**कुक्कुभ**] पक्षि-विशेष ; (गउड)।

कुक्खि [**दे. कुक्षि**] देखो **कुच्छि**; (दे २, ३४; औप ; स्वप्न ६१ ; करु ३३)।

कुग्गाह पु [**कुग्राह**] १ कदाग्रह, हठ ; (उप ८३३ टी)। २ जल-जन्तु विशेष ; "कुग्गाहगाहाइयजंतुसकुलो" (सुपा ६२६)।

कुच पुं [**कुच**] स्तन, थन ; (कुमा)।

कुच्च न [**कूर्च**] १ दाढ़ी-मूँछ ; (पाअ; अभि २१२)। २ तृण-विशेष ; (पण्ह २, ३)। देखो **कुच्चग**।

कुच्चंधरा स्त्री [**कूर्चधरा**] दाढी-मूँछ धारण करने वाली ; (ओघ ८३ भा)।

कुच्चग } देखो **कुच्च** ; (आचा २, २, ३ ; काल)।
कुच्चय } ३ कूची, तृण-निर्मित तूलिका, जिससे दीवाल में चूना लगाया जाता है ; (उप पृ ३४३ ; कुमा)।

कुच्चिय वि [**कूर्चिक**] दाढ़ी-मूँछ वाला ; (बृह १)।

कुच्छ सक [**कुत्स्**] निन्दा करना, धिक्कारना। कृ— कुच्छ, **कुच्छणिज्ज** ; (श्रा २७ ; पण्ह १, ३)।

कुच्छ पुं [**कुत्स**] १ ऋषि-विशेष ; २ गोत्र-विशेष ; "थेरस्स णं अज्जसिवभूइस्स कुच्छसगुत्तस्स" (कप्प)।

कुच्छ देखो **कुच्छ**=कुत्स्।

कुच्छग पुं [**कुत्सक**] वनस्पति-विशेष ; (सूत्र २, २)।

कुच्छणिज्ज देखो **कुच्छ**=कुत्स्। "अन्नेसिं कुच्छणिज्जं साणाणं भवखणिज्जं हि" (श्रा २७)।

कुच्छा स्त्री [**कुत्सा**] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा; (ओघ ४४४; उप ३२० टी)।

कुच्छि पुंस्त्री [**कुक्षि**] १ उदर, पेट ; (हे १, ३५ , उवा; महा)। २ अठचालीस अंगुल का मान , (जं २)। °**किमि** पु [°**कृमि**] उदर में उत्पन्न होता कीड़ा, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पण्ण १)। °**धार** पुं [°**धार**] १ जहाज का काम करने वाला नौकर ; "कुच्छिधारकन्नधारगब्भजसंजत्ताणावावाणियगा" (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ एक प्रकार का जहाज का व्यापारी ; (णाया १, १६)। °**पूर** पुं [°**पूर**] उदर-पूर्ति ; (वव ४)। °**वेयणा** स्त्री [°**वेदना**] उदर का रोग-विशेष; (जीव ३)। °**सूल** पुन [°**शूल**] रोग-विशेष ; (णाया १, १३, विपा १, १)।

कुच्छिंभरि वि [**कुक्षिम्भरि**] एकलपेटा, पेटू, स्वार्थी; "हा तियचरित्तकुत्तिं(? च्छिं)भरिए !" (रंभा)।

कुच्छिमई स्त्री [**दे. कुक्षिमती**] गर्भिणी, आपन्न-सत्वा; (दे २, ४१ ; षड्)।

कुच्छिय वि [**कुत्सित**] खराब, निन्दित, गर्हित ; (पंचा ७ ; भवि)।

कुच्छिल्ल न [**दे**] १ वृति का विवर, वाड़ का छिद्र ; (दे २, ३४)। २ छिद्र, विवर ; (पाअ)।

कुच्छेअय पु [**कौक्षेयक**] तलवार, खड्ग ; (दे १, १६१; षड्)।

कुज पुं [**कुज**] वृक्ष, पेड़ ; (जं २)।

कुजय पुं [**कुजय**] जूआरी, जूआखोर; (सूत्र १, २, २)।

कुज्ज वि [**कुब्ज**] १ कुब्ज, वामन ; (सुपा २ ; कप्पू)। २ पुन पुष्प-विशेष ; (षड्)।

कुज्जय पु [**कुब्जक**] १ वृक्ष-विशेष, शतपत्रिका ; (पउम ४२, ८, कुमा)। २ न उस वृक्ष का पुष्प ; "बंधेउं कुज्जयपसूणं" (हे १, १८१)।

कुज्झ सक [**क्रुध्**] क्रोध करना, गुस्सा करना। कुज्झइ ; (हे ४, २१७ ; षड्)।

कुट्ट सक [**कुट्ट्**] १ कूटना, पीटना, ताड़न करना। २ काटना, छेदना। ३ गरम करना। ४ उपालम्भ देना। भवि—कुट्टइस्सं ; (पि ५२८)। वकृ—**कुट्टिंत**; (सुर ११,

१)। वक्त—कुट्टिज्जंत, कुट्टिज्जमाण ; (सुपा ३६० ; प्रासू ६६ ; राय)। संकृ—कुट्टिय; (भग १४, ८)।

कुट्ट पु [कुट] घडा, कुम्भ ; (सूत्र २, ७)।

कुट्ट पुंन [दे] १ कोट, किला ; "दिज्जंति कवाडाइं कुट्टवरि भडा ठविज्जति" (सुपा ५०३)। २ नगर, शहर; (सुर १५, ८१)। °वाल पुं [°पाल] कोटवाल, नगर-रक्षक ; (सुर १५, ८१)।

कुट्टण न [कुट्टन] १ छेदन, चूर्णन, भेदन , (औप)। २ कूटना, ताडन ; (हे ४, ४३८)।

कुट्टणा स्त्री [कुट्टना] शारीरिक पीडा, (सूत्र १, १२)।

कुट्टणी स्त्री [कुट्टनी] १ मूसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हे , (बृह १)। २ दूती, कूटनी, कुट्टिनी ; (रंभा)।

कुट्टा स्त्री [दे] गौरी, पार्वती ; (दे २, ३५)।

कुट्टाय पुं [दे] चर्मकार, मोची ; (दे २, ३७)।

कुट्टिंत देखो कुट्ट=कुट्ट्।

कुट्टिंतिया देखो कोट्टंतिया ; (राज)।

कुट्टिंब [दे] देखो कोट्टिंब ; (पाअ)।

कुट्टिणी स्त्री [कुट्टिनी] कूटनी, दूती ; (कप्पू ; रंभा)।

कुट्टिम देखो कोट्टिम=कुट्टिम; (भग ८, ६ , राय ; जीव ३)।

कुट्टिय वि [कुट्टित] १ कूटा हुआ, ताड़ित ; (सुपा १५ ; उत्त १६)। २ छिन्न, छेदित ; (बृह १)।

कुट्ठ पुन [कुष्ठ] १ पसारी के यहां बेची जाती एक वस्तु ; (विसे २६३ ; पगह २, ५)। २ रोग-विशेष, कोढ़ ; (वव ६)।

कुट्ठ पुं [कोष्ठ] १ उदर, पेट ; "जहा विस कुट्ठगयं मंतमूल-विसारया। वेज्जा हणंति मंतेहिं" (पडि)। २ कोठा, कुसूल, धान्य भरने का बड़ा भाजन ; (पगह २, १)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] एक बार जानने पर नहीं भूलने वाला ; (पगह २, १)। देखो कोट्ठ, कोट्ठग।

कुट्ठ वि [क्रुष्ट] १ शपित, अभिशप्त ; २ न. शाप, अभि-शाप-शब्द ; "उट्टं कुट्ठं केहिं पेच्छंता आगया इत्थ" (सुपा २५०)।

कुट्ठा स्त्री [कुष्टा] इमली, चिञ्चा ; (बृह १)।

कुट्ठि वि [कुष्ठिन्] कुष्ट रोग वाला ; (सुपा २४३ ; ५७६)।

कुड पुं [कुट] १ घड़ा, कलश ; (दे २, ३५ ; गा २२६ ; विसे १४५६)। २ पर्वत , ३ हाथी वगेरः का बन्धन-स्थान ; (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ वृक्ष, पेड़ ; "तडवियसिहडमंडियकुडग्गो" (सुपा ५६२)। °कंठ पुं [°कण्ठ] पात्र-विशेष, घडा के जैसा पात्र ; (दे २, २०)। °दोहिणी स्त्री [°दोहिनी] घट-पूर्ण दूध देने वाली ; (गा ६३७)।

कुडंग पुन [कुटङ्क] १ कुञ्ज, निकुञ्ज, लता वगेरः से ढका हुआ स्थान , (गा ६८० ; हेका १०५)। २ वन, जंगल ; (उप २२० टी)। ३ वाँस की जाली, वाँस की बनी हुई छत ; (बृह १)। ४ गह्वर, कोटर ; (राज)। ५ वंश-गहन , (णाया १, ८ , कुमा)।

कुडंग पुंन [दे, कुटङ्क] लता-गृह, लता से ढका हुआ घर ; (दे २, ३७ ; महा ; पाअ ; षड्)।

कुडंगा स्त्री [कुटङ्का] लता-विशेष ; (पउम ५३, ७६)।

कुडंगी स्त्री [दे, कुटङ्की] वाँस की जाली ; "एक्कपहारेण निवडिया वसकुडंगी" (महा ; सुर १२, २०० , उप पृ २८१)।

कुडंब देखो कुडुंब ; (महा , गा ६०६)।

कुडग देखो कुड ; (आवम ; सूअ १, १२)।

कुडभी स्त्री [कुटभी] छोटी पताका ; (सम ६०)।

कुडय न [दे] लता-गृह, लता से आच्छादित घर, कुटीर, झोंपड़ा , (दे २, ३७)।

कुडय पुन [कुटज] वृक्ष-विशेष, कुरैया ; (णाया १,६; पगण १७ ; स १६४), "कुडयं दलइ" (कुमा)।

कुडव पुं [कुडव] अनाज नापने का एक माप ; (णाया १, ७ ; उप पृ ३७०)।

कुडाल देखो कुड्डाल ; (उवा)।

कुडिअ वि [दे] कुब्ज, वामन ; (पाअ)।

कुडिआ स्त्री [दे] वाड़ का विवर ; (दे २, २४)।

कुडिच्छ न [दे] १ वाड़ का छिद्र ; २ कुटी, झोंपडा। ३ वि. त्रुटित, छिन्न ; (दे २, ६४)।

कुडिल वि [कुटिल] वक्र, टेढा ; (सुर १, २० ; २, ८६)।

कुडिलविडल न [दे, कुटिलविटल] हस्ति-शिक्षा ; (राज)।

कुडिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर ; (पाअ)। २ वि. कुब्ज, कूबड़ा ; (पाअ)।

कुडिल्लय वि [दे. कुटिलक] कुटिल, टेढा, वक्र ; (दे २, ४० ; भवि)।

कुडिव्वय देखो **कुलिव्वय** ; (राज)।

कुडी स्त्री [**कुटी**] छोटा गृह, झोंपड़ा, कुटीर; (सुपा १२० ; वज्जा ६४)।

कुडीर न [**कुटीर**] झोंपड़ा, कुटी ; (हे ४, ३६४ ; पउम ३३, ८५)।

कुडीर न [**दे**] बाड़ का छिद्र ; (दे २, २४)।

कुडुंग पुं [**दे**] लतागृह, लताओं से ढ़का हुआ घर ; (षड्; गा १७५ ; २३२ अ)।

कुडुंब न [**कुटुम्ब**] परिजन, परिवार, स्वजन-वर्ग ; (उवा ; महा ; प्रासू १६७)।

कुडुंबय पु [**कुस्तुम्बक**] १ वनस्पति-विशेष, धनियाँ ; (पण्ण १—पत्त ४०)। २ कन्द-विशेष ; " पलंडुलसण-कंदे य कंदली य कुडुंबए " (उत्त ३६, ६८ का)।

कुडुंबि } **कुडुंबिअ** } वि [**कुटुम्बिन्, °क**] १ कुटुम्ब-युक्त, गृहस्थ; २ कुनबे वाला, कर्षक ; (गउड)। ३ संबन्धी; " सोभागुणसमुदएणं आणाणकुडुंविएणं " (कप्प)।

कुडुंबीअ न [**दे**] सुरत, संभोग, मैथुन ; (षड्)।

कुडुंभग पुं [**दे**] जल-मण्डूक, पानी का मेढ़क; (निचू १)।

कुडुक्क पुं [**दे**] लता-गृह ; (षड्)।

कुडुच्चिअ न [**दे**] सुरत, संभोग, मैथुन ; (दे २, ४१)।

कुडुल्ली (अप) स्त्री [**कुटी**] कुटिया, झोंपड़ी; (कुमा)।

कुड्ड पुंन [**कुड्य**] १ भित्ति, भींत ; (पउम ६८, ६ ; हे २, ७८)।

> " अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति गणिरीए।
> पढमव्विअ दिअहद्धे कुड्डो लेहाहिं चित्तलिओ "
> (गा २०८)।

कुड्ड न [**दे**] आश्चर्य, कौतुक, कुतूहल ; (दे २, ३३ ; पाअ ; षड् ; हे २, १७४)।

कुड्डगिलोई [**दे**] गृह-गोधा, छिपकली ; (दे २, १६)।

कुड्डलेवणी स्त्री [**दे. कुड्यलेपनी**] सुधा, खड़ी, खटिका ; (दे २, ४२)।

कुड्डाल न [**दे**] हल का ऊपला विस्तृत अंश ; (उवा)।

कुढ पुंन [**दे**] १ चुरायी हुई वस्तु की खोज में जाना ; (दे २, ६२ ; सुपा ५०३)। २ छीनी हुई चीज को छुड़ाने वाला, वापिस लेने वाला ; (दे २, ६२)।

कुढार पुं [**कुठार**] कुल्हाड़ा, फरसा ; (हे १, १६६ ; षड्)।

कुढावय न [**दे**] अनुगमन, पीछे जाना ; (विसे १४३६ टी)।

कुढिय वि [**दे**] कूढ, मूर्ख, वेसमझ ; " कुणंति नेउराइं पुणो पुणो कुढियपुरिसोव्व " (सुर ३, १४२)।

कुण सक [**कृ**] करना, बनाना। कुणइ, कुणउ, कुण ; (भग ; महा ; सुपा ३२०)। वकृ—**कुणंत, कुणमाण** ; (गा १६५ ; सुपा ३६ ; ११३ ; आचा)।

कुणक्क पुं [**कुणक**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३५)।

कुणव न [**कुणप**] १ मुरदा, मृत-शरीर ; (पाअ ; गउड)। २ वि. दुर्गन्धी ; (हे १, २३१)।

कुणाल पुं.व. [**कुणाल**] १ देश-विशेष ; (णाया १, ८ ; उप ६८६ टी)। २ प्रसिद्ध महाराज अशोक का एक पुत्र; (विसे ८६१)। **°नयर** न [**°नगर**] एक शहर, उजैन ; " आसी कुणालनयरे " (संथा)।

कुणाला स्त्री [**कुणाला**] इस नाम की एक नगरी ; (सुपा १०३)।

कुणि } **कुणिअ** } पुं [**कुणि**] १ हस्त-विकल, ठूँठ, हाथ-कटा मनुष्य ; (पउम २, ७७)। २ जन्म से ही जिसका एक हाथ छोटा हो वह ; ३ जिसका एक पॉव छोटा हो, खञ्ज ; (पण्ह २, ५—पत्र १५० ; आचा)।

कुणिआ स्त्री [**दे**] वृति-विवर, वाड़ का छिद्र ; (दे २, २४)।

कुणिम पुंन [**दे.कुणप**] १ शव, मृतक, मुरदा ; (पण्ह २, ३)। २ मांस; (ठा ४, ४ ; औप)। ३ नरकावास-विशेष ; (सुअ १, ५, १)। ४ शव का रुधिर, वसा वगैरः ; (भग ७, ६)।

कुणुकुण अक [**कुणुकुणाय्**] शीत से कम्प होने पर 'कड कड़' आवाज करना। वकृ—**कुणुकुणंत** ; (सुर २, १०३)।

कुण्हरिया स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३५)।

कुतत्ती स्त्री [**दे**] मनोरथ, वाञ्छा ; (दे २, ३६)।

कुतुव पुंन [**कुतुप**] १ तैल वगैरः भरने का चमड़े का पात्र, (दे ५, २२)। देखो **कुउअ**।

कुत्त पुं [**दे**] कुत्ता, कुर्कुर ; (रंभा)।

कुत्त न [दे. कुतक] ठेका, इजारा ; (विपा १, १—पत्र ११)।
कुत्तिय पुंस्त्री [दे] एक जात का कीड़ा, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष : "कर।लिय कुतिय विच्छू" (आप १७ ; पभा ४१)।
कुत्ती स्त्री [दे] कुती, कुकुरी ; (रंभा)।
कुत्थ अ [कुत्र] कहां, किस स्थान में ? (उत्तर १०४)।
कुत्थ देखो **कढ** । कुत्थसि; कुत्थसु ; (गा ५०१ अ)।
कुत्थण न [क्वथन] सड़ना, सड़ जाना ; (वव ४)।
कुत्थर न [दे] १ विज्ञान ; (दे २, १३)। २ कोटर, वृक्ष की पोल, गह्वर ; (सुपा २४६)। ३ सर्प वगैरः का विल ; (उप ३५७ टी)।
कुत्थुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष ; (राय)।
कुत्थुंभरी स्त्री [कुस्तुम्बरी] वनस्पति-विशेष, धनियाँ ; (पगण १—पत्र ३१)।
कुत्थुह पुंन [कौस्तुभ] मणि-विशेष, जो विष्णु की छाती पर रहता है ; (हेका २५७)।
कुत्थुहवत्थ न [दे] नीवी, नारा, इजारवन्द ; (दे २, ३८)।
कुदो देखो **कुओ** ; (हे १, ३७)।
कुद्द वि [दे] प्रभूत, प्रचुर ; (दे २, ३४)।
कुद्दण पुं [दे] रासक, रासा ; (दे २, ३८)।
कुद्दव पुं [कोद्रव] धान्य-विशेष, कोदा, कोदव ; (सम्य १२)।
कुद्दाल पुं [कुद्दाल] १ भूमि खोदने का साधन, कुदार, कुदारी ; (सुपा ५२६)। २ वृक्ष-विशेष ; (जं २)।
कुद्ध वि [क्रुद्ध] कुपित, क्रोध-युक्त ; (महा)।
कुप्प सक [कुप्] कोप करना, गुस्सा करना। कुप्पइ ; (उव ; महा)। वकृ—**कुप्पंत** ; (सुपा १६७)। कृ-**कुप्पियव्व** ; (स ६१)।
कुप्प सक [भाष्] बोलना, कहना। कुप्पइ; (भवि)।
कुप्प न [कुप्य] सुवर्ण और चाँदी को छोड़ कर अन्य धातु और मिट्टी वगैरः के बने हुए गृह-उपकरण ; "लोहाई उवक्खरो कुप्पं" (बृह १ ; पडि)।
कुप्पढ पुं [दे] १ गृहाचार, घर का रिवाज ; २ समुदाचार; सदाचार ; (दे २, ३६)।
कुप्पर न [दे] सुरत के समय किया जाता हृदय-ताड़न-विशेष ; २ समुदाचार, सदाचार ; ३ नर्म, हाँसी, ठट्ठा; (दे २, ६४)।
कुप्पर पुं [कूर्पर] १ कफोणि, हाथ का मध्य भाग; २ जानु, घुटना ; ३ रथ का अवयव-विशेष ; (जं ३)।
कुप्पर पुं [कर्पर] देखो **कप्पर**। भींत को परत, भींत की जीर्ण-शीर्ण थर; "एयाओ पाडलावंडुकुप्परा जुगणभित्तीओ" (गउड)।
कुप्पल देखो **कुंपल** ; (पि २७७)।
कुप्पास पुं [कूर्पास] कञ्चुक, काँचली, जनानी कुरती ; (हे १, ७२ ; कप्पू ; पाअ)।
कुप्पिय वि [कुपित] १ कुपित, क्रुद्ध; २ न. क्रोध, गुस्सा, "कुप्पियं नाम कुज्झियं" (आचू ४)।
कुप्पिस देखो **कुप्पास** ; (हे १, ७२ ; दे २, ४०)।
] भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष ; (पव २७)।
कुबेर पुं [कुबेर] १ कुबेर, यक्ष-राज, धनेश ; (पाअ ; गउड)। २ भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठाता यक्ष-विशेष; (संति ८)। ३ काञ्चनपुर के एक राजा का नाम ; (पउम ७, ४५)। ४ इस नाम का एक श्रेष्ठी ; (उप ७२८ टी) । ५ एक जैन मुनि ; (कप्प)। °**दिसा** पुं [°दिश्] उत्तर दिशा ; (सुर २, ८५)। °**नयरी** स्त्री [°नगरी] कुबेर की राजधानी, अलका ; (पाअ)।
कुबेरा स्त्री [कुबेरा] जैन साधु-गण की एक शाखा ; (कप्प)।
कुब्बड वि [दे] कूबड़, कुब्ज, वामन ; (श्रा २७)।
कुब्बर पुं [कूबर] वैश्रमण के एक पुत्र का नाम; (अंत ५)।
कुभंड पुं [कुभाण्ड] देव-विशेष की जाति; (ठा२,३—पत्र ८५)।
कुभंडिंद पुं [कुभाण्डेन्द्र] इन्द्र-विशेष, कुभाण्ड देवों का स्वामी ; (ठा २, ३)।
कुमर देखो **कुमार** ; (हे१,६७; सुपा २४३; ६५६; कुमा)।
कुमरी देखो **कुमारी**; (कप्पू ; पाअ)।
कुमार पुं [कुमार] १ प्रथम-वय का बालक, पाँच वर्ष तक का लड़का ; (ठा १० ; णाया १, २)। २ युवराज, राज्यार्ह पुरुष ; (पगह १, ५)। ३ भगवान् वासुपूज्य का शासनाधिष्ठाता यक्ष ; (संति ७)। ४ लोहकार, लोहार ; "चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव" (उत्त २३)। ५ कार्त्तिकेय, स्कन्द ; (पाअ)। ६ शुक पक्षी ; ७ घुड़सवार ; ८ सिन्धु नद ; ९ वृक्ष-विशेष, वरुण-वृक्ष ; (हे १, ६७)। १० अ-विवाहित, ब्रह्मचारी; (सम ५०)। °**गाम** पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष ; (आचा २,३)। °**णंदि**

पुं [°नन्दिन्] इस नाम का एक सोनार ; (आवम) । °धम्म पुं [°धर्म] एक जैन साधु ; (कप्प) । °वाल पुं [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध जैन राजा ; (दे १, ११३ टी) ।

कुमार पुं [दे] कुआँर का महीना, आश्विन मास ; (ठा२,१) ।

कुमारा स्त्री [कुमारा] इस नाम का एक सनिवेश ; "तत्रो भगवं कुमाराए संनिवेसे गत्रो" (आवम) ।

कुमारिय पुं [कुमारिक] कसाई, शौनिक , (बृह १) ।

कुमारिया स्त्री [कुमारिका] देखो **कुमारी** ; (पि ३५०) ।

कुमारी स्त्री [कुमारी] १ प्रथम वय की लड़की ; २ अविवाहित कन्या ; (हे ३, ३२) । ३ वनस्पति-विशेष, घीकुआरी , (पव ४) । ४ नवमल्लिका ; ५ नदी-विशेष ; ६ जम्बू-द्वीप का एक भाग, ७ वनस्पति-विशेष, अपराजिता ; ८ सीता ; ९ बड़ी इलाची ; १० वन्ध्या ककड़ी की लता ; ११ पक्षि-विशेष ; (हे ३, ३२) ।

कुमारी स्त्री [दे, कुमारी] गौरी, पार्वती ; (दे २, ३५) ।

कुमुअ पु [कुमुद] १ इस नाम का एक वानर ;(से१,३४)। २ महाविदेह-वर्ष का एक विजय-युगल, भूमि-प्रदेश-विशेष ; (ठा२, ३— पत्र ८०)। ३ न. चन्द्र-विकासी कमल ; (णाया १, ३—पत्र ९६; से १, २६) । ४ सख्या-विशेष, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २) । ५ शिखर-विशेष ; (ठा ८) । ६ वि. पृथ्वी में आनन्द पाने वाला; ७ खराब प्रीति वाला; (से १, २६) । देखो- **कुमुद** ।

कुमुअंग न [कुमुदाङ्ग] संख्या-विशेष, 'महाकमल' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो२) ।

कुमुआ स्त्री [कुमुदा] १ इस नाम की एक पुष्करिणी ; (ज ४) । २ एक नगरी ; (दीव) ।

कुमुइणी स्त्री [कुमुदिनी] १ चन्द्र-विकासी कमल का पेड; (कुमा; रंभा)। २ इस नाम की एक रानी ; (उप १०३१ टी) ।

कुमुद देखो **कुमुअ** ; (इक) । देव-विमान विशेष ; (सम ३३ ; ३५) । °**गुम्म** न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष; (सम ३५) । °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष ; (इक) । °**प्पभा** स्त्री [°प्रभा] इस नाम की एक पुष्करिणी ; (जं ४) । °**वण** न [°वन] मथुरा नगरी के समीप का एक जङ्गल; (ती २१) । °**गर** पुं [°कर] कुमुद-षण्ड, कुमुदों से भरा हुआ वन ; (पराह १, ४) ।

कुमुदंग देखो **कुमुअंग** ; (इक) ।

कुमुदग न [कुमुदक] तृण-विशेष, (सूत्र २, २) ।

कुमुली स्त्री [दे] चुल्ली, चुल्हा , (दे २, ३९) ।

कुम्म पुं [कूर्म] कच्छप, कछुआ ; (पात्र) । °**ग्गाम** पुं [°ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम; (भग १५) ।

कुम्मण वि [दे] म्लान, शुष्क ; (दे २, ४०) ।

कुम्मास पुं [कुल्माष] १ अन्न-विशेष, उडिद ; (ओघ ३५९ ; पराह २, ५) । २ थोड़ा भीजा हुआ मुग वगैरः धान्य , (पराह २, ५—पत्र १४८) ।

कुम्मी स्त्री [कूर्मी] १ स्त्री-कछुआ, कच्छपी । २ नारद की माता का नाम ; (पउम ११, ५३) । °**पुत्त** पुं [°पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुक्ति पाई थी ; (ओैप) ।

कुम्ह पुव. [कुश्मन्] देश-विशेष ; (हे २, ७४) ।

कुय पुं [कुच] १ स्तन, थन । २ वि. शिथिल , (वव ७) । ३ अस्थिर ; (निचू १) ।

कुयवा स्त्री [दे] वल्ली-विशेष ; (पराण १—पत्र ३३) ।

कुरंग पुं [कुरङ्ग] १ मृग की एक जाति ; (जं २) । २ कोई भी मृग, हरिण ; (पराह १, १, गउड) । स्त्री—°**गी** ; (पात्र) । °**च्छी** स्त्री [°ाक्षी] हरिण के नेत्र जैसे नेत्र वाली स्त्री, मृग-नयनी स्त्री ; (वाञ्च २०) ।

कुरंटय पुं [कुरण्टक] वृक्ष-विशेष, पियवाँसा ; (उप १०३१ टी) ।

कुरकुर देखो **कुरुकुर** । वकृ—**कुरकुराइंत** ; (रंभा)।

कुरय पुं [कुरक] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३५)।

कुरर पुं [कुरर] कुरल-पक्षी, उत्क्रोश ; (पराह १, १ ; उप १०२६) ।

कुररी स्त्री [दे] पशु, जानवर ; (दे २, ४०) ।

कुररी स्त्री [कुररी] १ कुरर पक्षी की मादा , २ गाथा-छन्द का एक भेद ; (पिंग) । ३ मेषी, भेड़ी , (रंभा) ।

कुरल पुं [कुरल] १ केश, बाल ; "कुरलकुरलीहि कलिओ तमालदलसामलो अइसणिद्धो" (सुपा २४ , पात्र) । २ पक्षि-विशेष ; (जीव १) ।

कुरली स्त्री [कुरली] १ केशों की वक्र सटा , (सुपा १ ; २४) । २ कुरल-पक्षिणी ; "कुरलिव्व नहंगणे भमइ" (पउम १७, ७९) ।

कुरवय पुं [कुरवक] वृक्ष-विशेष, कटसरैया , (गा ६ ; मा ४० ; विक्र २९ ; स ४१४ ; कुमा ; दे ५, ९) ।

कुरा स्त्री [**कुरा**] वर्ष-विशेष, अकर्म भूमि विशेष ; (ठा २, ३ ; १०) ।

कुरिण न [**दे**] बड़ा जंगल, भयंकर अटवी ; (ओघ ४४७)।

कुरु पुंब. [**कुरु**] १ आर्य देश-विशेष, जो उत्तर भारत में है . (णाया १, ८ ; कुमा) । २ भगवान् आदिनाथ का इस नाम का एक पुत्र ; (ती १६) । ३ अकर्म-भूमि विशेष; (ठा ६) । ४ इस नाम का एक वंश , (भवि) । ५ पुंस्त्री. कुरु वंश में उत्पन्न, कुरु-वंशीय ; (ठा ६) । °**अरा**, °**अरी** देखो नीचे °**चरा**, °**चरी**; (षड्) । °**खेत्त** °**क्खेत्त**, न [°**क्षेत्र**] १ दिल्ली के पास का एक मैदान, जहां कौरव और पाण्डवों की लड़ाई हुई थी ; २ कुरु देश की राजधानी, हस्तिनापुर नगर ; (भवि ; ती १६) । °**चंद** पु [°**चन्द्र**] इस नाम का एक राजा , (धम्म ; आवम) । °**चर** वि [°**चर**] कुरु देश का रहने वाला । स्त्री—°**चरा**, °**चरी**, (हे ३, ३१) । °**जंगल** न [°**जङ्गल**] कुरु-भूमि ; देश-विशेष ; (भवि ; ती ७) । °**णाह** पुं [°**नाथ**] दुर्योधन , (गा ४४३ ; गउड) । °**दत्त** पु [°**दत्त**] इस नाम का एक श्रेष्ठी और जैन महर्षि ; (उत्त २ ; संथा) । °**मई** स्त्री [°**मती**] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की पटरानी , (सम १५२) । °**राय** पुं [°**राज**] कुरु देश का राजा ; (ठा ७) । °**वइ** पु [°**पति**] कुरु देश का राजा , (उप ७२८ टी) ।

कुरुकुया स्त्री [**कुरुकुचा**] पाँव का प्रक्षालन ; (ओघ ३१८) ।

कुरुकुर अक [**कुरुकुराय्**] 'कुर कुर' आवाज करना, कुलकुलाना, बड़बड़ाना । कुरुकुराअसि ; (पि ५५८) । वकृ—**कुरुकुराअंत** ; (कप्पू) ।

कुरुकुरिअ न [**दे**] रणरणक, औत्सुक्य , (दे २, ४२)।

कुरुगुर देखो **कुरुकुर** । कुरुगुरेंति ; (स ५०३) ।

कुरुचिल्ल पुं [**दे**] १ कुलीर, जल-जन्तु-विशेष , २ न. ग्रहण, उपादान ; (दे २, ४१) । देखो **कुरुविल्ल** ।

कुरुच्च वि [**दे**] अनिष्ट, अप्रिय , (दे २, ३६) ।

कुरुड वि [**दे**] १ निर्दय, निष्ठुर , (दे २, ६३ ; भवि) । २ निपुण, चतुर ; (दे २, ६३ ; भवि) ।

कुरुण न [**दे**] राजा का या दूसरे का धन , (राज) ।

कुरुय न [**दे. कुरुक**] माया, कपट ; (सम ७१) ।

कुरुया स्त्री [**दे.कुरुका**] शरीर-प्रक्षालन, स्नान; (वव १)।

कुरुर देखो **कुरर** , (कुमा) ।

कुरुल पुं [**दे**] १ कुटिल केश, वक्र बाल ; (दे २, ६३ ; भवि) । २ वि. निर्दय ; ३ निपुण, चतुर ; (दे २, ६३) ।

कुरुल अक [**कु**] आवाज करना, कौए का बोलना । कुरुलहि , (भवि) ।

कुरुलिअ न [**कुत**] वायस का शब्द, कौए का आवाज , (भवि) ।

कुरुव देखो **कुरु** ; (पउम ११८, ८३ ; भवि) ।

कुरुवग देखो **कुरवय** ; (सुपा ७७) ।

कुरुविंद पु [**कुरुविन्द**] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति ; (गउड) । २ तृण-विशेष ; (पण्ण १ ; पण्ह १, ४—पत्र ७८) । ३ कुटिलिक-नामक रोग, एक प्रकार का जंघा रोग ; "एणीकुरुविंदचत्तवट्टाणुपुव्वजंघे" (औप) । °**वत्त** पुन [°**वर्त**] भूषण-विशेष , (कप्प) ।

कुरुविंदा स्त्री [**कुरुविन्दा**] इस नाम की एक वणिग्-भार्या, (पउम ५५, ३८) ।

कुरुविल्ल [**दे**] देखो **कुरुचिल्ल** ; (पाअ) ।

कुल पुंन [**कुल**] १ कुल, वंश, जाति ; (प्रासू १७) । २ पैतृक वश ; (उत्त ३) । ३ परिवार, कुटुम्ब , (उप ६७७) । ४ सजातीय समूह , (पण्ह १, ३) । ५ गोत्र, (सुपा ८ ; ठा ४, १) । ६ एक आचार्य की संतति; (कप्प)। ७ घर, गृह ; (कप्प , सुअ १, ४, १) । ८ सान्निध्य, सामीप्य, (आचा) । ९ ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध नक्षत्र-सञ्ज्ञा, (सुज्ज १० ; इक) । "कुलो, कुलं" (हे १, ३३) । °**उव्व** पु [°**पूर्व**] पूर्वज, पूर्व-पुरुष; (गउड) । °**कम** पु [°**क्रम**] कुलाचार, वंश-परम्परा का रिवाज ; (सट्ठि ७४) । °**कर** देखो नीचे °**गर** , (ठा १०) । °**कोडि** स्त्री [°**कोटि**] जाति-विशेष , (पव १५१ , ठा ६ , १०) । °**क्कम** देखो **कम** ; (सट्ठि ६) । °**गर** पु [°**कर**] कुल की स्थापना करने वाला, युग के प्रारम्भ में नीति वगैरः की व्यवस्था करने वाला महा-पुरुष, (सम १२६, धण ५) । °**गेह** न [°**गेह**] पितृ-गृह ; (सण) । °**घर** न [°**गृह**] पितृ-गृह, (औप) । °**ज** वि [°**ज**] कुलीन; खानदान कुल में उत्पन्न; (द ५) । °**जाय** वि [°**जात**] कुलीन, खानदान कुल का, (सुपा ५९८ , पाअ) । °**जुअ** वि [°**युत**] कुलीन , (पव ६४) । °**णाम** न [°**नामन्**] कुल के अनुसार किया जाना नाम ; (अणु) । °**तंतु** पुं [°**तन्तु**] कुल-संतान, कुल-संतति , (वव ६) । °**तिलग** वि [°**तिलक**] कुल में श्रेष्ठ, (भग ११,११) । °**त्थ**

वि [°स्थ] कुलीन, खानदान वंश का; (गाया १, ५)। °त्थेर पुं [°स्थविर] श्रेष्ठ साधु ; (पंचू)। °दिणयर पु [°दिनकर] कुल में श्रेष्ठ ; (कप्प)। °दाव पु [°दीप] कुल-प्रकाशक, कुल में श्रेष्ठ; (कप्प)। °देव पु [°देव] गोत्र-देवता ; (काल)। °देवया स्त्री [°देवता] गोत्र-देवता ; (सुपा ५६७)। °देवी स्त्री [°देवी] गोत्र-देवी; (सुपा ६०२)। °धम्म पु [°धर्म] कुलाचार; (ठा१०)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष; (सम ६६; सुपा ४३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] वंश-रक्षक पुत्र ; (उत १)। °बालिया स्त्री [°बालिका] कुलीन कन्या ; (सुर १,४३ ; हेका ३०१)। °भूसण न [°भूषण] १ वंश का दीपाने वाला, २ एक केवली भगवान् ; (पउम ३६, १२२)। °मय पुं [°मद] कुल का अभिमान ; (ठा १०)। °मयहरिया, °महत्तरिया स्त्री [°महत्तरिका] कुल में प्रधान स्त्री, कुटुम्ब की मुखिया ; (सुपा ७६; आवम)। °य देखो °ज ; (सुपा ५६८)। °रोग पुं [°रोग] कुल-व्यापक रोग ; (जं २)। °वइ पुं [°पति] तापसों का मुखिया, प्रधान सन्यासी ; (सुपा १६०; उप ३१)। °वंस पुं [°वंश] कुल रूप वंश, वंश ; (भग ११, १०)। °वंस पु [°वंश्य] कुल में उत्पन्न, वंश में संजात ; (भग ६,३३)। °वडिंसय पुं [°ावतंसक] कुल-भूषण, कुल-दीपक; (कप्प)। °वहू स्त्री [°वधू] कुलीन स्त्री, कुलाङ्गना ; (आव ५ ; पि ३८७)। °संपण्ण वि [°संपन्न] कुलीन, खानदान कुल का ; (औप)। °समय पुं [°समय] कुलाचार ; (सूअ १, १, १)। °सेल पुं [°शैल] कुल-पर्वत ; (सुपा ६०० ; सं ११६)। °सेलया स्त्री [°शैलजा] कुल पर्वत से निकली हुई नदी ; "कुलसेलयावि सरिया नूणं नीयथरमणुसरइ" (सुपा ६००)। °हर न [°गृह] पितृ-गृह, पिता का घर ; (गा १२१ ; सुपा ३६४; से ६,५३)। °ाजीव वि [°ाजीव] अपने कुल की बड़ाई बतला कर आजीविका प्राप्त करने वाला; (ठा ५,१)। °ाय न [°ाय] पक्षी का घर, नीड़ ; (पाअ)। °ायार पुं [°ाचार] कुलाचार वंश-परम्परा से चला आता रिवाज; (वव १)। °ारिय पुं [°ार्य] पितृ-पक्ष की अपेक्षा से आर्य ; (ठा३, १)। °ालय वि [°ालय] गृहस्थों के घर भीख माँगने वाला ; (सूअ २, ६)।

कुलंकर पुं [**कुलङ्कर**] इस नाम का एक राजा ; (पउम ८२, २६)।

कुलंप पुं [**कुलम्प**] इस नाम का एक अनार्य देश; २ उसमें रहने वाली जाति ; (सूअ २, २)।

कुलकुल देखो **कुरकुर**। कुलकुलइ ; (भवि)।

कुलक्ख पुं [**कुलक्ष**] १ एक म्लेच्छ देश ; २ उसमें रहने वाली जाति ; (पण्ह १, १, इक)।

कुलडा स्त्री [**कुलटा**] व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली ; (सुपा ३८४)।

कुलत्थ पुंस्त्री [**कुलत्थ**] अन्न-विशेष, कुलथी ; (ठा ५, ३ ; णाया १,५)। स्त्री—°त्था ; (श्रा १८)।

कुलफंसण पुं [**दे**] कुल-कलङ्क, कुल का दाग, कुल की अपकीर्ति ; (दे २, ४२ ; भवि)।

कुलल पुं [**कुलल**] १ पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। २ गृद्ध पक्षी ; (उत १४)। ३ कुरर पक्षी ; (सूअ १,११)। ४ मार्जार, बिड़ाल ; "जहा कुक्कुडपोयस्स णिच्चं कुललओ भय" (दस ४)।

कुलव देखो **कुडव** ; (जो २)।

कुलसंतइ स्त्री [**दे**] चुल्ली, चुल्हा ; (दे २, ३६)।

कुलाण देखो **कुणाल** ; (राज)।

कुलाल पु [**कुलाल**] कुम्भकार, कुम्हार ; (पाअ ; गउड)।

कुलाल पु [**कुलाट**] १ मार्जार, बिलाड़ ; २ ब्राह्मण, विप्र ; (सूअ २, ६)।

कुलिंगाल पुं [**कुलाङ्गार**] कुल में कलंक लगाने वाला, दुराचारी ; (ठा ४, १—पत्र १८५)।

कुलिक / **कुलिय** पुं [**कुलिक**] १ ज्योतिः-शास्त्र में प्रसिद्ध एक कुयोग ; (गण १८)। २ न. एक प्रकार का हल ; (पण्ह १, १)।

कुलिय न [**कुड्य**] १ भींत, भित्ति ; (सूअ १,२,१)। २ मिट्टी की बनाई हुई भींत; (बृह २ ; कस)।

कुलिया स्त्री [**कुलिका**] भींत, कुड्य ; (बृह २)।

कुलिर पुं [**कुलिर**] मेष वगैरः बारह राशि में चतुर्थ राशि; (पउम १७, १०८)।

कुलिव्वय पुं [**कुटिव्रत**] परिव्राजक का एक भेद, तापस-विशेष, घर में ही रहकर क्रोधादि का विजय करने वाला; (औप)।

कुलिस पुंन [**कुलिश**] वज्र, इन्द्र का मुख्य आयुध; (पाअ; उप ३२० टी)। °णिणाय पुं [°निनाद] रावण का इस नाम का एक सुभट ; (पउम ५६, २६)। °मज्झ न [°मध्य] एक प्रकार की तपश्चर्या ; (पउम २२, २४)।

कुलीकोस पुं [**कुटीकोश**] पक्षि-विशेष; (पराह १,१—पत्र ८)।

कुलीण वि [**कुलीन**] उत्तम कुल में उत्पन्न; (प्रासू ७१)।

कुलीर पुं [**कुलीर**] जन्तु-विशेष ; (पाअ ; दे २,४१)।

कुलुंच सक [**दह, म्लै**] १ जलाना। २ म्लान करना। संकृ— "मालइकुसुमाइं **कुलुंचिऊण** मा जाणि णिव्वुओ सिसिरो" (गा ४२६)।

कुलुक्किय वि [**दे**] १ जला हुआ; "विरहदवग्गिकुलुक्किय-कायहो" (भवि)।

कुल्ल पुं [**दे**] १ ग्रीवा, कण्ठ; २ वि. असमर्थ, अशक्त; ३ छिन्न-पुच्छ, जिसका पूँछ कट गया हो वह; (दे २,६१)।

कुल्ल अक [**कूर्द**] कूदना। वकृ—"माईरक्खसाण वलं मुक्कलुक्कारपाइक्क**कुल्लंत**वग्गंतमेणामुहं" (पउम ५३, ७६)।

कुल्लउर न [**कुल्यपुर**] नगर विशेष ; (संथा)।

कुल्लड न [**दे**] १ चुल्ली, चुल्हा; (दे २,६३)। २ छोटा पात्र, पुड़वा; (दे २,६३; पाअ)।

कुल्लरिअ पुं [**दे**] कान्दविक, हलवाई, मीठाई बनाने वाला; (दे २,४१)।

कुल्लरिया स्त्री [**दे**] हलवाई की दुकान; (आवम)।

कुल्ला स्त्री [**कुल्या**] १ जल की नीक, सारिणी, (कुमा; हे २,७६)। २ नदी, कृत्रिम नदी; (कप्पू)।

कुल्लाग पुं [**कुल्याक**] संनिवेश-विशेष, मगध देश का एक गाँव; (कप्प)।

कुल्लुडिया स्त्री [**कुल्लुडिका**] घटिका, घड़ी; (सुअ१,४,२)।

कुल्हरिअ [**दे**] देखो **कुल्लरिअ** ; (महा)।

कुल्ह पुं [**दे**] शृगाल, सियार ; (दे २,३४)।

कुवणय न [**दे**] लकुट, यष्टि, लकडी ; (राज)।

कुवलय न [**कुवलय**] १ नीलोत्पल, हरा रंग का कमल ; (पाअ)। २ चन्द्र-विकासी कमल ; (श्रा २७)। ३ कमल, पद्म ; (गा ५)।

कुविंद पुं [**कुविन्द**] तन्तुवाय, कपडा बुनने वाला ; (सुपा १८८)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] वल्ली-विशेष ; (पराण १—पत्र ३३)।

कुविय वि [**कुपित**] क्रुद्ध, जिसको गुस्सा हुआ हो वह ; (पराह १, १ ; सुर २, ५; हेका ७३ ; प्रासू ६४)।

कुविय देखो **कुप्प**=कुप्य; (पराह१,५; सुपा४०६)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] बिछौना आदि गृहोपकरण रखने की कुटिया, घर का वह भाग जिसमें गृहोपकरण रक्खे जाते है ; (पराह १,४—पत्र १३३)।

कुवेणी स्त्री [**कुवेणी**] शस्त्र-विशेष, एक जात का हथियार; (पराह १,३—पत्र ४४)।

कुवेर देखो **कुबेर** ; (महा)।

कुव्व सक [**कृ, कुर्व**] करना, बनाना। कुव्वइ; (भग)। भूका—कुव्वित्था ; (पि ५१७)। वकृ—**कुव्वंत, कुव्वमाण** ; (ओघ १५ भा ; णाया १,६)।

कुस पुं न [**कुश**] १ तृण-विशेष, दर्भ, डाभ, काश ; (विपा १,६ ; निचू १)। २ पुं. दाशरथी राम के एक पुत्र का नाम ; (पउम १००, २)। °**ग्ग** न [°**ाग्र**] दर्भ का अग्र भाग जो अत्यन्त तीक्ष्ण होता है ; (उत्त ७)। °**ग्गनयर** न [°**ाग्रनगर**] नगर-विशेष, विहार का एक नगर, राजगृह, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है ; (पउम २, ६८)। °**ग्गपुर** न [°**ाग्रपुर**] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (सुर १, ८१)। °**ट्ट** पु [°**ावर्त्त**] आर्य देश-विशेष ; (सत्त ६७ टी)। °**ट्ट** पुं [°**ार्थ**] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी शौर्यपुर था ; (इक)। °**त्त** न [°**क्त,**°**ाक्त**] आस्तरण-विशेष, एक प्रकार का बिछौना ; (णाया १, १—पत्र १३)। °**त्थलपुर** न [°**स्थलपुर**] नगर-विशेष ; (पउम २१, ७६)। °**मट्टिया** स्त्री [°**मृत्तिका**] डाभ के साथ कुटी जाती मिट्टी, (निचू १८)। °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष; (अणु)।

कुसण न [**दे**] तीमन, आर्द्र करना ; (दे २, ३५)।

कुसल वि [**कुशल**] १ निपुण, चतुर, दक्ष, अभिज्ञ ; (आचा; णाया १, २)। २ न. सुख, हित ; (राय)। ३ पुण्य ; (पंचा ६)।

कुसला स्त्री [**कुशला**] नगरी-विशेष, विनीता, अयोध्या ; (आवम)।

कुसी स्त्री [**कुशी**] लोहे का बना हुआ एक हथियार ; (दे ८, ५)।

कुसुंभ पुंन [**कुसुम्भ**] १ वृक्ष-विशेष, कसुम, कर्र, (ठा ८—पत्र ४०५)। २ न. कसुम का पुष्प, जिसका रंग बनता है ; (जं २)। ३ रंग-विशेष, (श्रा १२)।

कुसुंभिअ वि [**कुसुम्भित**] कुसुम्भ रंग वाला ; (श्रा१२)।

कुसुंभिल पुं [**दे**] पिशुन, दुर्जन, चुगलीखोर; (दे२,४०)।

कुसुंभी स्त्री [**कुसुम्भी**] वृक्ष-विशेष, कसूम का पेड़; (पाअ)।

कुसुम न [**कुसुम**] १ पुष्प, फूल, (पाअ; प्रासू ३४)। २ पु. इस नाम का भगवान् पद्मप्रभ का शासनाधिष्ठायक यक्ष, (संति ७)। °**केउ** पुं [°**केतु**] अरुणवर द्वीप का अधिष्ठायक देव, (दीव)। °**चाय**, °**चाव** पु [°**चाप**] कामदेव, मकरध्वज, (सुपा ५६, ५३०, महा)। °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] वसन्त ऋतु; (कुमा)। °**णयर** न [°**नगर**] नगर-विशेष, पाटलिपुत्र, आजकल जो 'पटना' नाम से प्रसिद्ध है ; (आवम)। °**दंत** पु [°**दन्त**] एक तीर्थङ्कर देव का नाम, इस अवसर्पिणी काल के नववें जिन-देव, श्री सुविधिनाथ; (पउम १, ३)। °**दाम** न [°**दामन्**] फूलों की माला, (उवा)। °**धणु** न [**धनुष्**] कामदेव ; (कुमा)। °**पुर** न [°**पुर**] देखो ऊपर °**णयर**, (उप ४८६)। °**बाण** पुं [°**बाण**] कामदेव, (सुर ३, १६२ ; पाअ)। °**रअ** पुं [°**रजस्**] मकरन्द ; (पाअ)। °**रद** पु [°**रद**] देखो **दंत** ; (पउम २०, ५)। °**लया** स्त्री [°**लता**] छन्द-विशेष ; (अजि १५)। °**संभव** पु [°**संभव**] मधु-मास, चैतमास ; (अणु)। °**सर** पु [°**शर**] कामदेव, (सुर ३, १०६)। °**ाअर** पु [°**ाकर**] इस नाम का एक छन्द ; (पिंग)। °**ाउह** पु [°**ायुध**] काम, कामदेव ; (स ५३८)। °**ावई** स्त्री [°**ावती**] इस नाम की एक नगरी ; (पउम ५, २६)। °**ासव** पुं [°**ासव**] किञ्जल्क, पराग, पुष्प-रेणु ; (णाया १, १ ; औप)।

कुसुमाल पु [**दे**] चोर, स्तेन ; (दे २, १०)।

कुसुमालिअ वि [**दे**] शून्य-मनस्क, भ्रान्त-चित्त ; (दे २, ४२)।

कुसुमिअ वि [**कुसुमित**] पुष्पित, पुष्प-युक्त, खिला हुआ; (णाया १, १ ; पउम ३३, १४८)।

कुसुमिल्ल वि [**कुसुमवत्**] ऊपर देखो, (सुपा २२३)।

कुसुर [**दे**] देखो **कसुर**; (हे २, १७४ टि)।

कुसूल पुं [**कुशूल**] कोष्ठ, अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना एक प्रकार का बडा पात्र, (पाअ)।

कुह अक [**कुथ्**] सड जाना, दुर्गन्धी होना। कुहइ ; (भवि, हे ४, ३६५)।

कुह पुं [**कुह**] वृक्ष, पेड, गाछ ; "कुहा महीरुहा वच्छा" (दस ७)।

कुह देखो **कहं** ; (गा ५०७ अ)।

कुहंड पु [**कूष्माण्ड**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (औप)।

कुहंडिया स्त्री [**कूष्माण्डी**] कोहला का गाछ, (राय)।

कुहग पुं [**कुहक**] कन्द-विशेष ; "लाहिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य" (उत्त ३६, ६६ का)।

कुहड वि [**दे**] कुब्ज, कूबड़ा ; (दे २, ३६)।

कुहण पुं [**कुहन**] १ वृक्षों का एक प्रकार, वृक्षों की एक जाति ; "से किं तं कुहणा ? कुहणा अणेगविहा पराणत्ता" (पराण १—पत्र ३५)। २ वनस्पति-विशेष ; ३ भूमि स्फोट ; (पराण १—पत्र ३० ; आचा)। ४ देश-विशेष, ५ इस में रहने वाली जाति; (पराह १, १—पत्र १४; इक)।

कुहण वि [**क्रोधन**] क्रोधी, क्रोध करने वाला ; (पगह १, ४—पत्र १००)।

कुहणी स्त्री [**दे**] कूर्पर, हाथ का मध्य-भाग ; (सुपा ४१२)।

कुहय पुंन [**कुहक**] १ वायु-विशेष, दौड़ते हुए अश्व उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार का वायु, "धण-गज्जियहयकुहए" (गच्छ २)। २ इन्द्रजालादि कौतुक ; "अलोलुए अक्कुहए अमाई" (दस ६, २)।

कुहर न [**कुहर**] १ पर्वत का अन्तराल; (णाया १, १—पत्र ६३)। "गेहंव वितरहिअं णिज्जरकुहरं व सलिल-सुगणविअं" (गा ६०७)। २ छिद्र, बिल, विवर, (पगह १, ४ ; पासू २)। ३ पुं.व. देश-विशेष ; (पउम ६८, ६७)।

कुहाड पुं [**कुठार**] कुल्हाड, फरसा; (विपा १, ६ ; पउम ६६, २४ ; स २१४)।

कुहाडी स्त्री [**कुठारी**] कुल्हाड़ी, कुठार; (उप ६६३)।

कुहावणा स्त्री [**कुहना**] १ आश्चर्य-जनक दम्भ-क्रिया, दम्भ-चर्या ; २ लोगों से द्रव्य हासिल करने के लिए किया हुआ कपट-भेष ; (जीत)।

कुहिअ वि [**दे**] लिप्त, पोता हुआ ; (दे २, ३५)।

कुहिअ वि [**कुथित**] १ थोडी दुर्गन्ध वाला ; (णाया १, १२—पत्र १७३)। २ सड़ा हुआ, (उप ५६७ टी)। ३ विनष्ट ; (णाया १, १)। °**पूइय** वि [°**पूतिक**] अत्यन्त सड़ा हुआ ; (पगह २, ५)।

कुहिणी स्त्री [**दे**] १ कूर्पर, हाथ का मध्य भाग ; २ रथ्या, महल्ला ; (दे २, ६२)।

कुहिल पुंस्त्री [**कुहुमत्**] कोयल पक्षी ; (पिंग)।

कुहु स्त्री [**कुहु**] कोकिल पक्षी का आवाज ; (पिंग)।

कुहुण देखो **कुहण**=कुहन ; (उत्त ३६, का)।

कुहुव्वय पुं [**कुहुव्वत**] कन्द-विशेष ; (उत्त ३६, ६८) ।

कुहेड पुं [**दे**] ओषधी-विशेष, गुंरटक, एक जात का हर्रे का गाछ ; (दे २, ३५) ।

कुहेड) पुं [**कुहेट, °क**] १ चमत्कार उपजाने वाला मन्त्र-**कुहेडअ**) तन्त्रादि ज्ञान ; "कुहेडविज्जासवदारजीवी न गच्छई मरणं तम्मि काले" (उत २०, ४५) । २ आभाणक, वक्रोक्ति-विशेष ; 'तेसु न विम्हयइ सयं आहट्टुकुहेडएहिं व" (पव ७३ ; वृह १) ।

कुहेडगा स्त्री [**कुहेटका**] कन्द-विशेष, पिणडालु ; (पव ४)।

कूअण न [**कूजन**] १ अव्यक्त शब्द ; २ वि. ऐसा आवाज करने वाला ; (ठा ३, ३) ।

कूअणया स्त्री [**कूजनता**] कूजन, अव्यक्त शब्द ; (ठा ३, ३) ।

कूइय न [**कूजित**] अव्यक्त आवाज; (महा ; सुर ३, ४८)।

कूचिया स्त्री [**कूचिका**] बुद्बुद, बुलबुला, पानी का बुलका ; (विसे १४६७) ।

कूज अक [**कूज्**] अव्यक्त शब्द करना । कूजाहि ; (चारु २१) । वकृ—**कूजंत**; (मै २६) ।

कूजिअ न [**कूजित**] अव्यक्त आवाज ; (कुमा; मै २६)।

कूड पुं [**दे. कूट**] पाश, फाँसी, जाल ; (दे २, ४३ ; राय ; उत्त ५ ; सूअ १, ५, २) ।

कूड पुंन [**कूट**] १ असत्य, छल-युक्त, झूठा ; "कूडतुलकूडमाणे" (पडि) । २ भ्रान्ति-जनक वस्तु ; (भग ७, ६) । ३ माया, कपट, छल, दगा, धोखा ; (सुपा ६२७)। ४ नरक ; (उत ५) । ५ पीड़ा-जनक स्थान, दुःखोत्पादक जगह ; (सूअ १, ५, १, उत्त ६)। ६ शिखर, टोंच ; (ठा ४, २ ; रंभा) । ७ पर्वत का मध्य भाग ; (जं २) । ८ पाषाणमय यन्त्र-विशेष, मारने का एक प्रकार का यन्त्र ; (भग १५)। ९ समूह, राशि; (निर १, १) । **°कारि** वि [**°कारिन्**] धोखेबाज, दगाखोर ; (सुपा ६२७) । **°ग्गाह** पुं [**°ग्राह**] धोखे से जीवों को फँसाने वाला ; (विपा १, २) । स्त्री—**°ग्गाहणी** ; (विपा १, २) । **°जाल** न [**°जाल**] धोखे की जाल, फाँसी ; (उत्त १९)। **°तुला** स्त्री [**°तुला**] झूठा नाप, बनावटी नाप ; (उवा १) । **°पास** न [**°पाश**] एक प्रकार की मछली पकड़ने की जाल ; (विपा १, ८) । **°प्पओग** पुं [**°प्रयोग**] प्रच्छन्न पाप ; (आव ४) । **°लेह** पुं [**°लेख**] १ जाली लेख, दूसरे के हस्ताक्षर-तुल्य अक्षर बना कर धोखेबाजी करना ; २ दूसरे के नाम से झूठी चिट्ठी वगैरः लिखना ; (पडि ; उवा) । **°वाहि** पुं [**°वाहिन्**] बैल, बलीवर्द; (आव ५)। **°सक्ख** न [**°साक्ष्य**] झूठी गवाही; (पंचा १)। **°सक्खि** वि [**°साक्षिन्**] झूठी साक्षी देने वाला; (श्रा १४)। **°सक्खिज्ज** न [**°साक्ष्य**] झूठी गवाही ; (सुपा ३७५) । **°सामलि** स्त्री [**°शाल्मलि**] १ वृक्ष-विशेष के आकार का एक स्थान, जहां गरुड-जातीय देवों का निवास है; (सम १३; ठा २,३) । २ नरक स्थित वृक्ष-विशेष ; (उत्त २०) । **°ागार** न [**°ागार**] १ शिखर के आकार वाला घर; (ठा ४, २) । २ पर्वत पर बना हुआ घर; (आचा २,३,३) । ३ पर्वत में खुदा हुआ घर ; (निचू १२) । ४ हिंसा-स्थान ; (ठा ४,२) । **°ागारसाला** स्त्री [**°ागारशाला**] षड्यन्त्र वाला घर, षड्यन्त्र करने के लिए बनाया हुआ घर ; (विपा १,३) । **°ाहच्च** न [**°ाहत्य**] पाषाण-मय यन्त्र की तरह मारना, कुचल डालना ; (भग १५) ।

कूडग देखो **कूड** ; (आवम) ।

कूण अक [**कूणय्**] संकुचित होना, संकोच पाना ; (गउड) ।

कूणिअ वि [**कूणित**] संकोच-प्राप्त, संकोचित ; (गउड) ।

कूणिअ वि [**दे**] ईषद् विकसित, थोड़ा खिला हुआ ; (दे २, ४४) ।

कूणिअ पुं [**कूणिक**] राजा श्रेणिक का पुत्र ; (औप) ।

कूय अक [**कूज्**] अव्यक्त आवाज करना । वकृ—**कूयंत**, **कूयमाण** ; (ओघ २१ भा ; विपा १,७) ।

कूय पुं [**कूप**] १ कूप, कुँआ ; (गउड) । २ घी, तैल वगैरः रखने का पात्र, कुतुप ; (णाया १,१—पत्र ५८ ; औप) । **°दद्दुर** पुं [**°दर्दुर**] १ कूप का मेढक ; २ वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो, अल्पज्ञ ; (उप ६४८ टी) । देखो **कूव** ।

कूर वि [**क्रूर**] १ निर्दय, निष्कृप, हिंसक ; (पण्ह १, ३)। २ भयंकर, रौद्र ; (णाया १,८ ; सूअ १, ७) । ३ पुं. रावण का इस नाम का एक सुभट ; (पउम ५६,२९) ।

कूर न [**कूर**] भात, ओदन, (दे २,४३) । **°गडुअ, °गड्डुअ** पुं [**°गडुक**] एक जैन महर्षि ; (आचा ; भाव ८) ।

कूर° अ [**ईषत्**] थोड़ा, अल्प; (हे २,१२९ ; षड्) ।

कूरपिउड न [**दे**] भोजन-विशेष, खाद्य-विशेष ; (आवम) ।

कूरि वि [**क्रूरिन्**] १ निर्दयी, क्रूर चित्त वाला ; २ निर्दय परिवार वाला ; (पण्ह १,३) ।

कूल न [दे] सैन्य का पिछला भाग, (दे २,४३ ; से १२, ६२)।

कूल न [कूल] तट, किनारा , (पाअ ; णाया १, १६)। °**धमग** पुं [°ध्मायक] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो किनारे पर खड़ा हो आवाज कर भोजन करता है ; (औप)। °**वालग,** °**वालय** पु [°बालक] एक जैन मुनि , (आव, काल)।

कूलंकसा स्त्री [कूलङ्कषा] नदी, तीर को तोड़ने वाली नदी ; (वेणी १२०)।

कूव पुंन [दे] १ चुराई चीज की खोज में जाना ; (दे २, ६२ , पाअ)। २ चुराई चीज को छुडाने वाला, छीनी हुई चीज को लडाई वगैरः कर वापिस लेने वाला ; "तए णं सा दोवदी देवी पउमणाभं एवं वयासी—एवं खलु देवा० जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वारवतीए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे मम प्पियभाउए परिवसति , तं जइ णं से छण्हं मासाणं ममं कूवं नो हव्वमागच्छइ, तए णं अह देवा० जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि" (णाया १, १६—पत्र २१५)। "दोवईए कूवग्गाहा" (उप ६४८ टी; दे ६, ६२)।

कूव, कूवग, कूवय पु [कूप,°क] १ कूप, कुँआ, गर्त, (प्रासू ४५)। २ स्नेह-पात्र, कुतुप; (वज्जा ७२; उप पृ ४१२)। ३ जहाज का मध्य स्तम्भ, जहाँ पर सढ बाँधा जाता है , (औप; णाया १,८)। °**तुला** स्त्री [°तुला] कूपतुला, ढेंकुवा , (दे १, ६३ , ८७)। °**मंडुक्क** पुं [°मण्डूक] १ कूप का मेढक; २ अल्पज्ञ मनुष्य, जो अपना घर छोड बाहर न जाता हो , (निचू १)।

कूवय पुं [कूपक] देखो **कूव**=कूप ; (रयण ३२)। स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि ; (अत ३)।

कूवर पुंन [कूवर] १ जहाज का एक अवयव, जहाज का मुख-भाग ; "सचुण्णियकट्ठकूवरा" (णाया १, ६—पत्र १५७)। २ रथ या गाडी वगैरः का एक अवयव, युगन्धर; (से १२, ८४)।

कूवल न [दे] जघन-वस्त्र , (दे २, ४३)।

कूविय न [कूजित] अव्यक्त शब्द ; "तह कहवि कुणइ सो सुरयकूवियं तप्पुरो जेण" (सुपा ५०८)।

कूविय पुं [कूपिक] इस नाम का एक संनिवेश—गाँव ; (आवम)।

कूविय वि [दे] मोष-व्यावर्तक, चुरायी हुई चीज की खोज कर उसे लेने वाला; (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ चोर की खोज करने वाला ; (णाया १, १)।

कूविया स्त्री [कूपिका] १ छोटा कूप , (उप ७२८ टी)। २ छोटा स्नेह-पात्र ; (राज)।

कूवी स्त्री [कूपी] ऊपर देखो ; "एयाओ अमयकूवीओ" (उप ७२८ टी)।

कूसार पु [दे] गर्ताकार, गर्त जैसा स्थान, खड्डा ; "कूसारसलतपओ" (दे २,४४ ; पाअ)।

कूहंड पुं [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति , (पगह १,४)।

के सक [क्री] किनना, खरीदना । केइ, केअइ ; (पट्)।

के° वि [कियत्] कितना ? °**च्चिरेण** अ [°चिरेण] कितने समय में ? (अंत २४)। °**च्चिरं** अ [°चिरं] कितने समय तक ? (पि १४६)। °**च्चिरेण** देखो °**चिरेण**; (पि १४६)। °**दूर** न [°दूर] कितना दूर ? "केद्दूरे सा पुरी लंका ? ' (पउम ४८, ४७)। °**महालय** वि [°महालय] कितना वड़ा ? (णाया १,८)। °**महालिय** वि [°महत्] कितना वडा ? (पगण २१)। °**महिड्डिय** वि [°महर्द्धिक] कितनी वड़ी ऋद्धि वाला , (पि १४६)।

केअइ पुं [केकय] देश-विशेष, जिसका आधा भाग आर्य और आधा भाग अनार्य है, सिन्धु देश की सीमा पर का देश ; (इक)। "केयइअद्धं च आरियं भणियं" (पगण १ ; सत ६७ टी)।

केअई स्त्री [केतकी] वृक्ष-विशेष, केवड़ा का वृक्ष ; (कुमा, दे ८, २५)।

केअग, केअय पु [केतक] १ वृक्ष-विशेष, केवड़ा का गाछ, केतकी ; (गउड)। २ न. केतकी-पुष्प, केवड़ा का फूल : (गउड)। ३ चिन्ह, निशान; (ठा १०)।

केअल देखो **केवल** ; (अभि २६)।

केअव देखो **कइअव**=कैतव ; "जं केअवेण पिम्म" (गा७४४)।

केआ स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी ; (दे २, ४४ ; भग १३,६)।

केआर पु [केदार] १ जेत, खेत ; (सुर २, ७८)। २ आलवाल, क्यारी ; (पाअ ; गा ६६०)।

केआरवाण पुं [दे] वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड़, (दे २,४५)।

केआरिआ स्त्री [केदारिका] घास वाली जमीन, गोचर-भूमि , (कप्पू)।

केउ पु [**केतु**] १ ध्वज, पताका ; (सुपा २२६) । २ ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २० , गउड) । ३ चिन्ह, निशान ; (औप) । ४ तुला-सूत्र, रुई का सूता ; (गउड) । °**खेत्त** न [°**क्षेत्र**] मेघ-वृष्टि से ही जिसमें अन्न पैदा हो सकता हो एसा क्षेत्र-विशेष ; (आव ६) । °**मई** स्त्री [°**मती**] किन्नरेन्द्र और किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष ; (भग १०, ५ ; णाया २) । °**माल** न [°**माल**] वैताढ्य पर्वत पर स्थित इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक) ।

केउ पुं [**दे**] कन्द, कोंदा ; (दे २, ४४) ।

केउग, **केउय** पु [**केतुक**] पाताल-कलश विशेष ; (सम ७१ , ठा ४, २—पत्र २२६) ।

केऊर पुंन [**केयूर**] १ हाथ का आभूषण-विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द ; (पाअ ; भग ६, ३३) । २ पुं. दक्षिण समुद्र का पाताल-कलश ; (पत्र २७२) ।

केऊव पुं [**केयूप**] दक्षिण समुद्र का एक पाताल-कलश , (इक) ।

केंकाय अक [**केङ्काय्**] 'कें कें' आवाज करना । वकृ—"पेच्छइ तओ जडागि **केंकायंतं** महीपडियं" (पउम ४४, ५४) ।

केंसुअ देखो **किंसुअ** , (कुमा) ।

केकई स्त्री [**केकयी**] १ राजा दशरथ की एक रानी, केकय देश के राजा की कन्या ; (पउम २२, १०८ ; उप पृ ३७) । २ आठवें वासुदेव की माता , (सम १५२) । ३ अपर-विदेह के विभीषण-वासुदेव की माता ; (आवम) ।

केकय पुं [**केकय**] १ देश-विशेष, यह देश प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर तथा सिंधु देश की सीमा पर स्थित है ; २ इस देश का रहने वाला ; (पण्ह १, १) । ३ केकय देश का राजा ; (पउम २२, १०८) ।

केकसिया स्त्री [**कैकसिका**] रावण की माता का नाम ; (पउम ७, ५४) ।

केका स्त्री [**केका**] मयूर-शब्द । °**रव** पुं [°**रव**] मयूर की आवाज, मयूर-वाणी ; (णाया १, १—पत्र २५) ।

केकाइय न [**केकायित**] मयूर का शब्द ; (सुपा ७६) ।

केक्कई देखो **केकई**, (पउम ७६, २६) ।

केक्कसी स्त्री [**कैकसी**] रावण की माता , (पउम १०३, ११४) ।

केक्काइय देखो **केकाइय** ; (णाया १, ३—पत्र ६५)

केगई देखो **केकई** ; (पउम १, ६४ ; ३०, १८४) ।

केगाइय देखो **केकाइय** ; (राज) ।

केज्ज वि [**क्रेय**] बेचने की चीज ; (ठा ६) ।

केढ, **केढव** पुं [**कैटभ**] १ इस नाम का एक प्रतिवासुदेव राजा, (पउम ५,१५६) । २ दैत्य-विशेष ; (हे १,२४० ; कुमा) । °**रिउ** पु [°**रिपु**] श्रीकृष्ण, नारायण , (कुमा) ।

केत्तिअ, **केत्तिल** वि [**कियत्**] कितना ? (हे २, १५७; कुमा ; षड् ; महा) ।

केत्तुल (अप) ऊपर देखो; (कुमा , षड् ; हे ४,४०८) ।

केत्थु (अप) अ [**कुत्र**] कहां, किस जगह ? (हे ४,४०५) ।

केद्दह देखो **केत्तिअ** ; (हे २,१५७ ; प्राप्र) ।

केम, **केम्ब** (अप) देखो **कहं** ; (षड् , हे ४, ४०१ , ४१८) ।

केय न [**केत**] १ गृह, घर; २ चिह्न, निशानी ; (पव ४) ।

केयण न [**केतन**] १ वक्र वस्तु, टेढी चीज , २ चंगेरी का हाथा , (ठा ४, २—पत्र २१८) । ३ सकेत, संकेत-स्थान , (वव ४) । ४ धनुष की मूठ ; (उत्त ६) । ५ मछली पकड़ने की जाल ; (सूअ १, ३, १) । ६ स्थान, जगह ; (आचा) ।

केयय देखो **केकय**; (सुपा १४२) ।

केर, **केरय** वि [**दे. संबन्धिन्**] संबन्धी वस्तु, संबन्धी चीज; (स्वप्न ५१ ; हे ४, ३५६ ; ३७३ ; प्राप्र ; भवि)।

केरव न [**कैरव**] १ कुमुद, सफेद कमल ; (पाअ ; सुपा ४६) । २ कैतव, कपट ; (हे १, १५२)।

केरिच्छ वि [**कीदृक्ष**] कैसा, किस तरह का ? (हे १, १०५; प्राप्र ; काल) ।

केरिस वि [**कीदृश**] कैसा, किस तरह का ? (प्रामा) ।

केरी स्त्री [**ककरी**] वृक्ष-विशेष, करीर का गाछ ; "निंबंब-चोरिकेरि—" (उप १०३१ टी) ।

केल देखो **कयल**=कदल ; (हे १, १६७) ।

केलाइय वि [**समारचित**] साफसुफ किया हुआ ; (कुमा) ।

केलाय सक [**समा+रचय्**] समारचन करना, साफ कर ठीक करना । केलायइ ; (हे ४, ६५) ।

केलास पुं [**कैलास**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पर्वत-विशेष ; (से ६, ७३ ; गउड ; कुमा) । २ इस नाम का एक नाग-राज ; (इक) । ३ इस नाग-राज का आवास-पर्वत;

(ठा ४, २)। ५ मिट्टी का एक तरह का पात्र; (निर १, ३)। देखो **कइलास**।

केलि देखो **कयलि**; (कुमा)।

केलि } स्त्री [**केलि, °ली**] १ क्रीडा, खेल, गम्मत, (कुमा; **केली** } पाअ; कप्पू)। २ परिहास, हाँसी, ठठा; (पाअ; औप)। ३ काम-क्रीडा; (कप्पू; औप)। **°आर** वि [**°कार**] क्रीड़ा करने वाला, विनोदी; (कप्पू)। **°काणण** न [**°कानन**] क्रीड़ोद्यान, (कप्पू)। **°किल, °गिल** वि [**°किल**] १ विनोदी, क्रीड़ा-प्रिय; (सुपा ३१४)। २ व्यन्तर-जातीय देव-विशेष; (सुपा ३२०)। ३ स्थान विशेष; (पउम ५५, १७)। **°भवण** न [**°भवन**] क्रीड़ा-गृह, विलास-घर; (कप्पू)। **°विमाण** न [**°विमान**] विलास-महल; (कप्पू)। **°सअण** न [**°शयन**] काम-शय्या; (कप्पू)। **°सेज्जा** स्त्री [**°शय्या**] काम-शय्या; (कप्पू)।

केली देखो **कयली**; (हे १, १२०)।

केली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री; (दे २, ४४)।

केलीगिल वि [**कैलीकिल**] केलीकिल स्थान में उत्पन्न; (पउम ५५, १७)।

केव° देखो **के°**; (भग; पण्ण १७—पत्र ५४५; विसे २८६१)।

केवँ (अप) देखो **कहं**, (कुमा)।

केवइय वि [**कियत्**] कितना? (सम १३४; विसे ६४६ टी)।

केवट्ट पुं [**कैवर्त्त**] धीवर, मच्छीमार; (पाअ; स २५८; हे २, ३०)।

केवड (अप) देखो **केत्तिअ**; (हे ४, ४०८; कुमा)।

केवल वि [**केवल**] १ अकेला, असहाय; (ठा २, १; औप)। २ अनुपम, अद्वितीय; (भग ६, ३३)। ३ शुद्ध, अन्य वस्तु से अ-मिश्रित; (दस ४)। ४ संपूर्ण, परिपूर्ण; (निर १, १)। ५ अनन्त, अन्त-रहित; (विसे ८४)। ६ न. ज्ञान-विशेष, सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, भूत, भावि वगैरः सर्व वस्तुओं का ज्ञान, सर्वज्ञता; (विसे ८२७)। **°कप्प** वि [**°कल्प**] परिपूर्ण, संपूर्ण; (ठा ३, ४)। **°णाण** न [**°ज्ञान**] सर्व-श्रेष्ठ ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान; (ठा २, १)। **°णाणि, °नाणि** वि [**°ज्ञानिन्**] १ केवल-ज्ञान वाला, सर्वज्ञ; (कप्प; औप)। २ पुं. इस नाम के एक अर्हन् देव, अतीत उत्सर्पिणी-काल के प्रथम तीर्थङ्कर; (पव ६)। **°ण्णाण, °नाण, °न्नाण** देखो **°णाण**; (विसे ८२६; ८२६; ८२३)। **°दंसण** न [**°दर्शन**] परिपूर्ण सामान्य बोध; (कम्म ४, १२)।

केवलं अ [**केवलम्**] केवल, फक्त, मात्र; (स्वप्न ६२; ६३; महा)।

केवलाअ सक [**समा+रभ्**] आरम्भ करना, शुरू करना। केवलाअइ; (षड्)।

केवलि वि [**केवलिन्**] केवल ज्ञान वाला, सर्वज्ञ; (भग)। **°पक्खिय** वि [**पाक्षिक**] १ स्वयंबुद्ध; २ जिनदेव, तीर्थंकर; (भग ६, ३१)।

केवलिअ वि [**केवलिक**] १ केवलज्ञान वाला; (भग)। २ परिपूर्ण, सपूर्ण; "सामाइयं केवलियं पसत्थं" (विसे २६८१)।

केवलिअ वि [**कैवलिक**] १ केवल ज्ञान से संवन्ध रखने वाला; (दं १७)। २ केवलि-प्रोक्त; (सूअ १, १४)। ३ केवल-ज्ञानि-संबन्धी; (ठा ४, २)। ४ न. केवल ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान; (आव ४)।

केवलिअ न [**कैवल्य**] केवल ज्ञान; "केवलिए सपत्ते" (सत्त ६७ टी; विसे ११८०)।

केस पुं [**केश**] केश, वाल; (उप ७६८ टी; प्रयौ २६)। **°पुर** न [**°पुर**] वैताढ्य पर स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)। **°लोअ** पुं [**°लोच**] केशों का उन्मूलन; (भग; पण्ह २, ४)। **°वाणिज्ज** न [**°वाणिज्य**] केश वाले जीवों का व्यापार; (भग ८, ५)। **°हत्थ, °हत्थय** पुं [**°हस्त, °क**] केश-पाश, समारचित केश, संयत वाल; (कप्प; पाअ)।

केस देखो **किलेस**; (उप ७६८ टी; धम्म २२)।

केसर पुं [**कवीश्वर**] उत्तम कवि, श्रेष्ठ कवि; (उप ७२८ टी)।

केसर पुंन [**केसर**] १ पुष्प-रेणु, किञ्जल्क; (से १, ५०; दे ६, १३)। २ सिंह वगैरः के स्कन्ध का वाल, केसरा; (से १, ५०; सुपा २१५)। ३ पुं. वकुल वृक्ष; (कप्पू; गउड; पाअ)। ४ न. इस नाम का एक उद्यान, काम्पिल्य नगर का एक उपवन; (उत्त १७)। ५ फल-विशेष; (राज)। ६ सुवर्ण, सोना; ७ छन्द-विशेष; (हे १, १४६)। ८ पुष्प-विशेष; (गउड ११२२)।

केसरा स्त्री [**केसरा**] १ सिंह वगैरः के स्कन्ध पर के वालो की सटा ; "केसरा य सीहाण" (प्रासू ५१ ; गउड ; प्रामा)।

केसरि पुं [**केसरिन्**] १ सिंह, वनराज, कराठीरव ; (उप ७२८ टी ; से ८, ६४ ; पराह १, ४)। २ द्रह-विशेष, नीलवन्त पर्वत पर स्थित एक ह्रद ; (सम १०४)। ३ नृप-विशेष, भरत-क्षेत्र के चतुर्थ प्रतिवासुदेव ; (सम १५४)। °**द्दह** पुं [°**द्रह**] द्रह-विशेष ; (ठा २, ३)।

केसरिआ स्त्री [**केसरिका**] साफ करने का कपड़े का टुकडा ; (भग ; विसे २५५२ टी)।

केसरिल्ल वि [**केसरवत्**] केसर वाला ; (गउड)।

केसरी स्त्री [**केसरी**] देखो **केसरिआ** : "तिदंडकुडिय-छत्तछलुयकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए" (णाया १, ५—पत्र १०५)।

केसव पु [**केशव**] १ अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (सम)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव, नारायण; (गउड)।

केसि वि [**क्लेशिन्**] क्लेश-युक्त, क्लिष्ट ; (विसे ३१५४)।

केसि पुं [**केशि**] १ एक जैन मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्य , (राय ; भग)। २ असुर-विशेष, अश्व के रूप को धारण करने वाला एक दैत्य, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ; (मुद्रा २६२)।

केसि पुं [**केशिन्**] देखो **केसव** ; (पउम ७५, २०)।

केसिअ वि [**केशिक**] केश वाला, वाल युक्त। स्त्री—°**आ**; (सुअ १, ४, २)।

केसी स्त्री [**केशी**] सातवें वासुदेव की माता ; (पउम २०, १८४)।

°**केसी** स्त्री [°**केशी**] केश वाली स्त्री; "विइराणकेसी" (उवा)।

केसुअ देखो **किंसुअ** ; (हे १, २९ ; ८६)।

केह (अप) वि [**कीदृश्**] कैसा, किस तरह का ? (भवि; षड् कुमा)।

केहिं (अप) अ. लिए, वास्ते ; (दे ४, ४२५)।

कैअव न [**कैतव**] कपट, दम्भ ; (हे १, १ ; गा १२४)।

कोअ देखो **कोक** ; (दे २, ४५ टी)।

कोअ देखो **कोव** ; (गउड)।

कोअंड देखो **कोदंड** ; (पाअ)।

कोआस अक [**वि+कस्**] विकसना, खीलना। कोआसइ , (हे ४ १९५)।

कोआसिय वि [**विकसित**] विकसित, प्रफुल्ल ; (कुमा , जं २)।

कोइल पु [**कोकिल**] १ कोयल, पिक ; (पराह १, ४ ; उप २३ ; स्वप्न ६१)। २ छन्द का एक भेद ; (पिंग)। °**च्छय** पुं [°**च्छद**] वनस्पति-विशेष, तलकराटक ; (पराण १७—पत्र ५२७)।

कोइला स्त्री [**कोकिला**] स्त्री-कोयल, पिकी : "कोइला पंचम सर" (अणु ; पाअ)।

कोइला स्त्री [**दे**] कोयला, काष्ठ के अंगार; (दे २, ४८)।

कोउआ स्त्री [**दे**] गाइठा का अग्नि, करीषाग्नि ; (दे २, ४८ ; पाअ)।

कोउग } न [**कौतुक**] १ कुतूहल, अपूर्व वस्तु देखने का
कोउय } अभिलाष ; (सुर २, २२६)। २ आश्चर्य, विस्मय ; (वव १)। ३ उत्सव ; (राय)। ४ उत्सुकता, उत्कराठा ; (पंचव १)। ५ दृष्टि-दोषादि से रक्षा के लिए किया जाता मषी-तिलक, रक्षा-बन्धनादि प्रयोग ; (राय , औप ; विपा १, १ , पराह १, २ ; धर्म ३)। ६ सौभाग्य आदि के लिए किया जाता स्नपन, विस्मापन, धूप, होम वगैरः कर्म ; (वव १ ; णाया १, १४)।

कोउहल } देखो **कुऊहल** , (हे १, ११७ ; १७१ ; २,
कोउहल्ल } ९९ ; कुमा ; प्राप्र)।

कोउहल्लि वि [**कुतूहलिन्**] कुतूहली, कौतुकी, कुतूहल-प्रिय ; (कुमा)।

कोऊहल } देखो **कुऊहल**; (कुमा ; पि ६१)।
कोऊहल्ल }

कोंकण पुं [**कोङ्कण**] देश-विशेष ; (स ४१२)।

कोंकणग पुं [**कोङ्कणक**] १ अनार्य देश-विशेष ; (इक)। २ वि. उस देश में रहने वाला ; (पराह १, १ ; विसे १४१२)।

कोंच पुं [**क्रौञ्च**] १ नाम का एक अनार्य देश ; (पराह १, १)। २ पक्षि-विशेष ; (ठा ७)। ३ द्वीप-विशेष ; (ती ४५)। ४ इस नाम का एक असुर ; (कुमा)। ५ वि. कौञ्च देश का निवासी ; (पराह १, १)। °**रिउ** पु [°**रिपु**] कार्त्तिकेय, स्कन्द; (कुमा)। °**वर** पु [°**वर**] इस नाम का एक द्वीप; (अणु)। °**वीरग** पुंन [°**वीरक**] एक प्रकार का जहाज ; (बृह १)। देखो **कुंच**।

कोंचिगा स्त्री [**कुञ्चिका**] ताली, कुञ्जी ; (उप १७७)।

कोंचिय वि [**कुञ्चित**] आकुञ्चित, संकुचित, (पण्ह १, ४)।

कोंटलय न [**दे**] १ ज्योतिष-संबन्धी सूचना, २ शकुनादि निमित्त संबन्धी सूचना; "पउजणे कोंटलयस्स" (ओघ २२१ भा)।

कोंठ देखो **कुंठ** ; (हे १, ११६ पि)।

कोंड देखो **कुंड**, (हे १, २०२)।

कोंड पु [**कौण्ड, गौड**] देश-विशेष, (इक)।

कोंडल देखो **कुंडल**, (राज)। °**मेत्तग** पु [°**मित्रक**] एक व्यन्तर देव का नाम, (बृह ३)।

कोंडलग पु [**कुण्डलक**] पक्षि-विशेष, (औप)।

कोंडलिआ स्त्री [**दे**] १ श्वापद जन्तु-विशेष, साही, श्वाविन्; २ कीडा, कीट, (दे २, ५०)।

कोंडिअ पु [**दे**] ग्राम-निवासी लोगो में फूट करा कर छल से गॉव का मालिक बन बैठने वाला ; (दे २, ४८)।

कोंडिया देखो **कुंडिया**, (पण्ह २, ५)।

कोंडिण्ण देखो **कोडिन्न** ; (राज)।

कोंढ देखो **कुंढ** ; (हे १, ११६)।

कोंढुल्लु पु [**दे**] उलूक, उल्लू, पक्षि-विशेष; (दे २, ४६)।

कोंत देखो **कुंत**, (पण्ह १, १, सुर २, २८)।

कोंती देखो **कुंती**, (णाया १, १६—पत्र २१३)।

कोक पु [**कोक**] १ चक्रवाक पक्षी ; (दे ८, ४३)। २ वृक, भेड़िआ ; (इक)।

कोकंतिय पुंस्त्री [**दे**] जन्तु-विशेष, लोमड़ी, लोखरिआ, (पण्ह १, १)। स्त्री—°**या**, (णाया १, १—पत्र ६५)।

कोकणय न [**कोकनद**] १ रक्त कुमुद ; २ रक्त कमल ; (पण्ण १, स्वप्न ७२)।

कोकासिय [**दे**] देखो **कोक्कासिय** ; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

कोकुइय देखो **कुक्कुइअ**, (ठा ६—पत्र ३७१)।

कोवक सक [**व्या+हृ**] बुलाना, आह्वान करना। कोक्कइ, (हे १, ७६, षड्)। वकृ— **कोक्कंत** ; (कुमा)। संकृ—**कोक्किवि**, (भवि)। प्रयो—कोक्कावइ; (भवि)।

कोक्कास पु [**कोक्कास**] इस नाम का एक वर्धकि, वढई ; (आचू १)।

कोक्कासिय [**दे**] देखो **कोआसिअ** ; (दे २, ५०)।

कोक्किकय वि [**व्याहृत**] आहूत, बुलाया हुआ ; (भवि)।

कोक्कुइय देखो **कुक्कुइअ**, (कस ; औप)।

कोखुब्भ देखो **खोखुब्भ**। वकृ—**कोखुब्भमाण** ; (पि ३१६)।

कोच्चप्प न [**दे**] अलीक-हित, भूठी भलाई, दीखावटी हित; (दे २, ४६)।

कोच्चिय पुस्त्री [**दे**] शैक्षक, नया शिष्य ; (वव ६)।

कोच्छ न [**कौत्स**] १ गोत्र-विशेष ; २ पुंस्त्री. कौत्स गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७—पत्र ३९०)।

कोच्छ वि [**कौक्ष**] १ कुक्षि-संबन्धी, उदर से सबन्ध रखने वाला ; २ न. उदर-प्रदेश ; " गणियायारकणेरुकोत्थ(? च्छ)हत्थी" (णाया १, १—पत्र ६४)।

कोच्छभास पु [**दे.कुत्सभाष**] काक, कौआ, वायस ; "न मणी सयसाहस्सो आविज्झइ कोच्छभासस्स" (उव)।

कोच्छेअय देखो **कुच्छेअय** ; (हे १, १६१ ; कुमा ; षड्)।

कोज्ज देखो **कुज्ज** ; (कप्प)।

कोज्जप्प न [**दे**] स्त्री-रहस्य; (दे २,४६)।

कोज्जय देखो **कुज्जय** ; (णाया १,८—पत्र १२५)।

कोज्जरिअ वि [**दे**] आपूरित, पूर्ण किया हुआ, भरा हुआ; (षड्)।

कोज्झरिअ वि [**दे**] ऊपर देखो, (दे २, ५०)।

कोटुंभ पुन [**दे**] हाथ से आहत जल ; "कोटुंभो जलकरप्फालो" (पाअ)। देखा **कोट्टुंभ**।

कोट्ट देखो **कुट्ट**=कुट्ट्। कवकृ—**कोट्टिज्जमाण** ; (आवम)। सकृ— **कोट्टिय** ; (जीव ३)।

कोट्ट न [**दे**] १ नगर, शहर ; (दे २, ४५)। २ कोट, किला, दुर्ग ; (णाया १,८—पत्र१३४; उत्त ३० ; बृह १; सुपा ११८)। °**वाल** पुं [°**पाल**] कोटवाल, नगर-रक्षक ; (सुपा ४१३)।

कोट्टंतिया स्त्री [**कुट्टयन्तिका**] तिल वगैरः को चूरने का उपकरण ; (णाया १,७—पत्र ११७)।

कोट्टग पुं [**कोट्टाक**] १ वर्धकि, वढई ; (आचार, १,२)। २ न. हरे फलो को सूखाने का स्थान-विशेष ; (बृह १)।

कोट्टण देखो **कुट्टण** ; (उप १७६ ; पण्ह १, १)।

कोट्टर देखो **कोडर** ; (महा ; हे ४, ४२२ ; गा ५६३ अ)।

कोट्टवीर पुं [**कोट्टवीर**] इस नाम का एक मुनि, आचार्य शिवभूति का एक शिष्य ; (विसे २५५२)।

कोट्टा स्त्री [दे] १ गौरी, पार्वती ; (दे २,३५—१,१७४) । २ गला, गर्दन ; (उप ६६१) ।

कोट्टिंच पुं [दे] द्रोणी, नौका, जहाज ; (दे २,४७) ।

कोट्टिम पुंन [कुट्टिम] १ रत्नमय भूमि ; (णाया १,२) । २ फरस-बंध जमीन, बँधी हुई जमीन ; (जं १) । ३ भूमि तल ; (सुर ३,१००)। ४ एक या अनेक तला वाला घर; (वव४)। ५ झोंपड़ा, मढी ; ६ रत्न को खान , ७ अनार का पेड़ ; (हे१,११६ ; प्राप्र) ।

कोट्टिम वि [कृत्रिम] बनावटी, बनाया हुआ, अ-कुदरती , (पउम ६६,२६) ।

कोट्टिल / **कोट्टिल्ल** पुं [कौट्टिक] मुद्गर, मुगरी, मुगरा ; (राज , विपा १ ६—पत्र ६६ , ६६) ।

कोट्टी स्त्री [दे] १ दोह, दोहन ; २ विषम स्खलना ; (दे २, ६४) ।

कोट्टुंभ पुन [दे] हाथ से आहत जल; "कोट्टुंभं करहए तोए" (दे २,४७) ।

कोट्टुम अक [रम्] क्रीड़ा करना, रमण करना । कोट्टुमइ ; (हे ४, १६८) ।

कोट्टुवाणी स्त्री [कोट्टुवाणी] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प) ।

कोट्ठ देखो **कुट्ठ**=कुष्ठ , (भग १६, ६ ; णाया १, १७)।

कोट्ठ / **कोट्ठग** / **कोट्ठय** देखो **कुट्ठ**=कोष्ठ ; (णाया १, १ ; ठा ३, १ ; पाअ) । ३ आश्रय-विशेष, आवास-विशेष, (ओघ २००, वव १) । ४ अपवरक, कोठरी; (दस ५,१; उप ४८६) । ५ चैत्य-विशेष ; (णाया २,१) । °**ागार** न [°ागार] धान्य भरने का घर ; (ओप ; कप्प) । २ भाण्डागार, भण्डार ; (णाया १, १) ।

कोट्ठार पुंन [कोष्ठागार] भाण्डागार, भण्डार, (पउम २, ३)।

कोट्ठि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ-रोगी ; (आचा) ।

कोट्ठिया स्त्री[कोष्ठिका] छोटा कोष्ठ, लघु कुशूल ; (उवा) ।

कोट्ठु पुं [क्रोष्टु] शृगाल, सियार ; (पड्) ।

कोडंड देखो **कोदंड** ; (स २५६) ।

कोडंडिय देखो **कोदंडिय** , (कप्प) ।

कोडंब न [दे] कार्य, काम, काज, (दे २, २) ।

कोडय [दे] देखो **कोडिअ** ; (पाअ) ।

कोडर न [कोटर] गह्वर, वृक्ष का पोला भाग, विवर ; (गा ५६२)।

कोडल्ल पुं [कोरग] पक्षि-विशेष ; (राज) ।

कोडाकोडि स्त्री [कोटाकोटि] संख्या-विशेष, करोड़ को करोड़ से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (सम १०५ ; कप्प ; उव) ।

कोडाल पु [कोडाल] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक पुरुष ; २ न. गोत्र विशेष , (कप्प) ।

कोडि स्त्री [कोटि] १ संख्या विशेष, करोड, १००००००० ; (णाया १,८; सुर १, ६७: ४, ६१)। २ अग्र-भाग, अणी, नोक ; (से १२,२६ , पाअ) । ३ अंश, विभाग, भाग ; 'नत्थिक्कसो पएसो लोए वालग्गकोडिमित्तोवि" (पव ३६ , ठा ६) । °**कोडि** देखो **कोडाकोडि**; (सुपा २६६) । °**बद्ध** वि [°बद्ध] करोड़ संख्या वाला ; (वव ३) । °**भूमि** स्त्री [°भूमि] एक जैन तीर्थ , (ती ४३) । °**सिला** स्त्री [°शिला] एक जैन तीर्थ ; (पउम ४८, ६६) । °**सो** अ [°शस्] करोड़ो, अनेक करोड़, (सुपा ४२०)। देखो **कोडी**।

कोडिअ न [दे] १ छोटा मिट्टी का पात्र, लघु शराव ; (दे २,४७) ।२ पु. पिशुन, दुर्जन, चुगलीखोर , (पड्) ।

कोडिअ पु [कोटिक] १ एक जैन मुनि ; (कप्प) । २ एक जैन मुनि-गण , (कप्प , ठा ६) ।

कोडिण्ण / **कोडिन्न** न [कौण्डिन्य] १ इस नाम का एक नगर ; (उप ६४८ टी) । २ वासिष्ठ गोत्र की शाखा रूप एक गोत्र ; (कप्प) । ३ पुं. कौण्डिन्य गोत्र का प्रवर्तक पुरुष, ४ त्रि. कौण्डिन्य-गोत्रीय, (ठा ७—पत्र ३६०; कप्प) । ५ पुं. एक मुनि, जो शिवभूति का शिष्य था, (विसे २५५२)। ६ महागिरिसूरि का शिष्य, एक जैन मुनि , (कप्प) । ७ गोतम-स्वामी के पास दीक्षा लेने वाले पाँच सौ तापसों का गुरु , (उप १४२ टी) ।

कोडिन्ना स्त्री [कौण्डिन्या] कौण्डिन्य-गोत्रीय स्त्री, (कप्प)।

कोडिल्ल पु [दे] पिशुन, दुर्जन, चुगलीखोर , (दे २,४० ; पड्) ।

कोडिल्ल देखो **कोट्टिल** ; (राज) ।

कोडिल्ल पुं [कौटिल्य] इस नाम का एक ऋषि, चाणक्य - मुनि ; (वव १ ; अणु) ।

कोडिल्लय न [कौटिल्यक] चाणक्य-प्रणीत नीति-शास्त्र ; (अणु) ।

कोडी देखो **कोडि** ; (उव ; ठा ३, १ ; जी ३७)। °**करण** न [°**करण**] विभाग, विभजन ; (पिंड ३०७)। °**णार** न [°**नार**] इस नाम का सोरठ देश का एक नगर; (ती ५६)। °**मातसा** स्त्री [°**मातसा**] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७—पत्र ३९३)। °**वरिस** न [°**वर्ष**] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष ; (इक; पव १७४)। °**वरिसिया** स्त्री [°**वर्षिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा , (कप्प)। °**सर** पु [°**श्वर**] करोड़-पति, कोटीश; (सुपा ३)।

कोडीण न [**कोडीन**] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा रूप है ; २ वि. इस गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७—पत्र ३९०)।

कोडुंबि देखो **कुडुंबि** ; (ठा ३, १—पत्र १२५)।

कोडुंबिय पुं [**कौटुम्बिक**] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया; (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का वडा आदमी; (पण्ह १,५—पत्र ९४)। ३ वि. कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्ब से संबन्ध रखने वाला, कुटुम्ब-संबन्धी ; (महा; जीव ३)।

कोडूसग पुं [**कोदूषक**] अन्न-विशेष, कोद्रव की एक जाति ; (राज)।

कोड्ड [दे] देखो **कुड्ड** ; (दे २,३३ ; स ६४१ ; ६४२ ; हे ४, ४२२ ; गाया १, १६—पत्र २२४ ; उप ८९२ ; भवि)।

कोड्डम देखो **कोट्टुम** ; (कुमा)।

कोड्डमिअ न [**रत**] रति-क्रीडा-विशेष ; (कुमा)।

कोड्डिय वि [दे] कुतुहली, कुतुकी, उत्कण्ठित; (उप ७६८ टी)।

कोड्ढ, **कोढ** पुं [**कुष्ठ**] रोग-विशेष, कुष्ठ-राग, (पि ६६; गाया १, १३ ; श्रा २०)।

कोढि वि [**कुष्ठिन्**] कुष्ठ-रोग से ग्रस्त; कुष्ठ-रोगी ; (आचा)।

कोढिक, **कोढिय** वि [**कुष्ठिक**] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त; (पण्ह २, ५ ; विपा १,७)।

कोण वि [दे] १ काला, श्याम वर्ण वाला ; (दे २, ४५)। २ पुं. लकुट, लकडी, यष्टि; (दे २, ४५ ; निचू १ ; पाअ)। ३ वीणा वगैरः वजाने की लकडी, वीणा-वादन-दण्ड; (जीव ३)।

कोण, **कोणग** पुंन [**कोण**] कोण, अस्र, घर का एक भाग; (गउड ; दे २, ४५ ; रंभा)।

कोणव पुं [**कौणप**] राक्षस, पिशाच ; (पाअ)।

कोणालग पुं [**कोनालक**] जलचर पक्षि-विशेष ; (पण्ह)।

कोणाली स्त्री [दे] गोष्ठी, गोठ, (बृह १)।

कोणिअ, **कोणिग** पु [**कोणिक**] राजा श्रेणिक का पुत्र, नृप-विशेष ; (अंत; गाया १, १ ; महा ; उव)।

कोणु स्त्री [दे] लेखा, रेखा ; (दे २, २६)।

कोण्ण पुं [दे. **कोण**] गृह-कोण, घर का एक भाग ; (दे २, ४५)।

कोतव न [**कौतव**] मूषक के रोम से निष्पन्न सूता ; (राज)।

कोतुहल देखो **कुऊहल** , (काल)।

कोत्तलंका स्त्री [दे] दारू परोसने का भाजन, पात्र-विशेष ; (दे २, १४)

कोत्तिअ वि [**कौतुकिक**] कौतूकी, कुतुहली; (गा ६७२)।

कोत्तिअ पुं [**कोत्रिक**] १ भूमि-शयन करने वाला वान-प्रस्थ ; (औप)। २ न. एक प्रकार का मद्य ; (ठा ९)।

कोत्थ देखो **कोच्छ**=कौत्स।

कोत्थर न [दे] १ विज्ञान ; (दे २, १३)। २ कोटर, गह्वर ; (सुपा २४७ ; निचू १५)।

कोत्थल पुं [दे] १ कुशूल, कोष्ठ; (दे २,४८)। २ कोथली, थैला; (स १९२)। °**कारा** स्त्री [°**कारी**] भमरी, कीट-विशेष; (बृह १)।

कोत्थुभ, **कोत्थुह**, **कोथुभ** पुं [**कौस्तुभ**] वासुदेव के वक्षःस्थल का मणि ; (ती १० ; प्राप्र ; महा ; गा १५१ ; पण्ह १, ४)।

कोदंड पुं [**कोदण्ड**] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप ; (अंत १६)।

कोदंडिम, **कोदंडिय** देखो **कु-दंडिम** ; (जं ३ ; कप्प)।

कोदूसग देखो **कोडूसग** ; (भग ६, ७)।

कोद्दव देखो **कुद्दव** ; (भवि)।

कोद्दाल देखो **कुद्दाल** ; (पण्ह १, १—पत्र २३)।

कोद्दालिया स्त्री [**कुद्दालिका**] छोटा कुदार, कुदारी ; (विपा १, ३)।

कोध्र पु [**कोध्र**] इस नाम का एक राजा; जिसने दाशरथि भरत के साथ जैन दीक्षा ली थी ; (पउम ८५, ४)।

कोप्प देख **कुप्प**=कुप्। कोप्पइ ; (नाट)।

कोप्प पुं [दे] अपराध, गुनाह ; (दे २, ४५)।

कोप्प वि [**कोप्य**] द्वेष्य, अप्रीतिकर ; "अकोप्पजंघजुगला" (पण्ह १, ३)।

कोप्पर पुंन [**कूर्पर**] १ हाथ का मध्य भाग ; (श्रोघ २६६ भा ; कुमा ; हे १, १२४) । २ नदी का किनारा, तट, तीर ; (ओघ ३०) ।

कोबेरी स्त्री [**कौबेरी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२) ।

कोभग } पुं [**कोभक**] पक्षि-विशेष ; (अंत , औप) ।
कोभगक }

कोमल वि [**कोमल**] मृदु, सुकुमार ; (जी १० ; पात्र ; कप्पू) ।

कोमार वि [**कौमार**] १ कुमार से संबन्ध रखने वाला, कुमार-संबन्धी ; (विपा १, ७१) । २ कुमारी-संबन्धी ; (पात्र) । ३ कुमारी में उत्पन्न ; (दे १, ८१) । स्त्री—**°रिया, °री** ; (भग १५) । **°भिच्च** न [**°भृत्य**] वैद्यक शास्त्र-विशेष, जिसमें बालकों के स्तन-पान-संबन्धी वर्णन है ; (विपा १, ७—पत्र ७५) ।

कोमारी स्त्री [**कौमारी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३७)।

कोमुइया स्त्री [**कौमुदिका**] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी, जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती थी ; (विसे १४७६ ,) ।

कोमुई स्त्री [**दे**] पूर्णिमा, कोई भी पूर्णिमा ; (दे २, ४८) ।

कोमुई स्त्री [**कौमुदी**] १ शरद् ऋतु की पूर्णिमा ; (दे २, ४८) । २ चन्द्रिका, चाँदनी ; (औप ; धम्म ११ टी) । ३ इस नाम की एक नगरी , (पउम ३६, १००) । ४ कार्तिक की पूर्णिमा ; (राय) । **°नाह** पुं [**°नाथ**] चन्द्रमा, चाँद ; (धम्म ११ टी) । **°महूसव** पु [**°महोत्सव**] उत्सव-विशेष ; (पि ३६६) ।

कोमुदिया देखो **कोमुइया** ; (णाया १, ५—पत्र १००) ।

कोमुदी देखो **कोमुई=**कौमुदी ; (णाया १, १ ; २) ।

कोयवग } पुं [**दे**] रूई से भरे हुए कपडे का बना हुआ
कोयवय } प्रावरण-विशेष ; (णाया १, १७—पत्र २२६) ।

कोयवी स्त्री [**दे**] रूई से भरा हुआ कपडा ; (बृह ३) ।

कोरंग पुं [**कोरङ्ग**] पक्षि-विशेष ; (पगह १, १—पत्र ८)।

कोरंट } पुं [**कोरण्ट, °क**] १ वृक्ष-विशेष , (पात्र) ।
कोरंटग } २ न. इस नाम का भृगुकच्छ (भडौच) शहर का एक उपवन ; (वव १) । ३ कौरण्टक वृक्ष का पुष्प ; (पगह १,४ ; जं १) ।

कोरय } पुंन [**कोरक**] फलोत्पादक मुकुल, फल की कली,
कोरव } (पात्र) । "चत्तारि कोरवा पन्नत्ता" (ठा ४, १—पत्र १८५) ।

कोरव्व पुंस्त्री [**कौरव्य**] १ कुरु-वंश में उत्पन्न ; (सम १५२ ; ठा ६) । २ कौरव्य-गोत्रीय ; ३ पुं आठवाँ चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त ; (जीव ३) ।

कोरव्वीया स्त्री [**कौरव्वीया**] इस नाम की षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) ।

कोरिंट } देखो **कोरंट** ; (णाया १, १—पत्र १६ ;
कोरिंटय } कप्प ; पउम ४२, ८ ; औप ; उवा) ।
कोरेंट }

कोल पुं [**दे**] ग्रीवा, नोक, गला ; (दे २, ४५) ।

कोल पुं [**क्रोड**] १ सूअर, वराह; (पगह १, १—पत्र ७, स १११) । २ उत्सङ्ग, कोला ; " कोलीकय—" (गउड) ।

कोल पुं [**कोल**] १ देश-विशेष ; (पउम ९८, ६६) । २ घुण, काष्ठ-कीट, (सम ३६) । ३ शूकर, वराह, सूअर; (उप ३२० टी ; णाया १, १; कुमा ; पात्र) । ४ मूषिक के आकार का एक जन्तु ; (पगह १, १—पत्र ७) । ५ अस्त्र-विशेष ; (धम्म ५) । ६ मनुष्य की एक नीच जाति ; (आचू ४) । ७ बदरी-वृक्ष, बैर का गाछ ; ८ न. बदरी-फल, बैर , (दस ५, १ ; भग ६, १०) । **°पाग** न [**°पाक**] नगर-विशेष, जहां श्रीऋषभदेव भगवान् का मदिर है, यह नगर दक्षिण में है ; (ती ४५) । **°पाल** पु [**°पाल**] देव-विशेष, धरणेन्द्र का लोकपाल ; (ठा ३, १—पत्र १०७) । **°सुणय, °सुणह** पुंस्त्री [**°शुनक**] १ बडा शूकर, सूअर की एक जाति, जंगली वराह ; (आचा २, १, ५) । २ शिकारी कुत्ता, (पगण ११) । स्त्री—**°णिया** ; (पगण ११) । **°वास** पुंन [**°वास**] काष्ठ, लकड़ी ; (सम ३९) ।

कोल वि [**कौल**] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी ; २ तान्त्रिक मत से संबन्ध रखने वाला ; " कोलो धम्मो कस्स णो भाइ रम्मो" (कप्पू) । ३ न. बदर-फल-संबन्धी ; (भग ६, १०) । **°चुण्ण** न [**°चूर्ण**] बैर का चूर्ण, बैर का सत्तु; (दस ५, १) । **°ट्ठिय** न [**°ास्थिक**] बैर की गुठिया ; (भग ६, १०) ।

कोलंब पुं [**दे**] पिठर, स्थाली ; (दे २, ४७; पात्र) । २ गृह, घर ; (दे २, ४७) ।

कोलंब पुं [**कोलम्ब**] वृक्ष की शाखा का नमा हुआ अग्र भाग ; (अनु ५) ।

कोलगिणी स्त्री [**कोली, कोलकी**] कोल-जातीय स्त्री ; (आचू ४) ।

कोलघरिय वि [**कौलगृहिक**] कुल-गृह-संवन्धी, पितृ-गृह-संवन्धी, पितृ-गृह से सवन्ध रखने वाला ; (उवा) ।

कोलज्जा स्त्री [**दे**] धान्य रखने का एक तरह का गर्त्त ; (आचा २, १, ७) ।

कोलर देखो **कोटर** ; (गा ५६३ अ) ।

कोलव न [**कौलव**] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध एक करण; (विसे ३३४८)।

कोलाल वि [**कौलाल**] १ कुम्भकार-संवन्धी ; २ न. मिट्टी का पात्र ; (उवा) ।

कोलालिय पुं [**कौलालिक**] मिट्टी का पात्र वेचने वाला; (वृह २) ।

कोलाह पुं [**कोलाभ**] साँप की एक जाति ; (पगण १) ।

कोलाहल पुं [**दे**] पक्षी का आवाज, पक्षि-शब्द ; (दे २, ५०) ।

कोलाहल पुं [**कोलाहल**] तुमुल, शोरगुल, रौला, वहुत दूर जाने वाला अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द ; (दे २, ५०; हेका १०५ ; उत ६) ।

कोलाहलिय वि [**कोलाहलिक**] कोलाहल वाला, शोरगुल वाला ; (पउम ११७, १६) ।

कोलिअ पुं [**दे**] कोली, तन्तुवाय, कपड़ा बुनने वाला ; (दे २,६५ ; णंदि ; पव २ ; उप पृ २१०) । २ जाल का कीड़ा, मकडा ; (दे २, २५ ; पाअ ; श्रा २० ; आव ४ ; वृह १) ।

कोलित्त न [**दे**] उल्मुक, लूका ; (दे २, ४६) ।

कोलीकय वि [**क्रोडीकृत**] स्वीकृत, अंगीकृत ; (गउड) ।

कोलीण न [**कौलीन**] १ किंवदन्ती, लोक-वार्ता, जन-श्रुति; (मा ३७) । २ वि. वंश-परंपरागत, कुलक्रम से आयात ; ३ उत्तम कुल में उत्पन्न ; ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी ; (नाट—महावी १३३) ।

कोलीर न [**दे**] लाल रंग का एक पदार्थ, कुरुविन्द ; "कोलीररत्तणयणेअं" (दे २, ४६) ।

कोलुण्ण न [**कारुण्य**] दया, अनुकम्पा, करुणा; (निचू ११)। °**पडिया**, °**वडिया** स्त्री [°**प्रतिज्ञा**] अनुकम्पा की प्रतिज्ञा; (निचू ११) ।

कोल्ल पुंन [**दे**] कोयला, जली हुई लकड़ी का टुकड़ा ; (निचू १) ।

कोल्लइर न [**कोल्लकिर**] १ वार्धक्य, बुढ़ापन ; (पिंड) । २ नगर-विशेष ; (आव ३) ।

कोल्लपाग न [**कोल्लपाक**] दक्षिण देश का एक नगर, जहां श्री ऋषभदेव का मन्दिर है ; (ती ४५) ।

कोल्लर पुं [**दे**] पिठर, स्थाली ; (दे २,४७) ।

कोल्ला देखो **कुल्ला**; (कुमा) ।

कोल्लाग देखो **कुल्लाग** ; (अंत) ।

कोल्लापुर न [**कोल्लापुर**] दक्षिण देश का एक नगर ; (ती ३४) ।

कोल्लासुर पुं [**कोल्लासुर**] इस नाम का एक दैत्य , (ती ३४) ।

कोल्लुग [**दे**] देखो **कोल्हुअ** ; (वव १; वृह १) ।

कोल्हाहल न [**दे**] फल-विशेष, विम्बी-फल; (दे२,३६) ।

कोल्हुअ पुं [**दे**] १ शृगाल, सियार ; (दे २, ६५ ; पाअ ; पउम ७, १७ ; १०५, ४२) । २ कोल्हू, चरखी, ऊख से रस निकालने की कल ; (दे २, ६५ ; महा) ।

कोव पुं [**कोप**] क्रोध, गुस्सा ; (विपा १,६ ; प्रासू १७५) ।

कोवण वि [**कोपन**] क्रोधी, क्रोध-युक्त; (पाअ, सुपा ३८५ ; सम ३४७ ; स्वप्न ८२) ।

कोवासिअ देखो **कोआसिय**; (पाअ) ।

कोवि वि [**कोपिन्**] क्रोधी, क्रोध-युक्त ; (सुपा २८१ ; श्रा २०) ।

कोविअ वि [**कोविद**] निपुण, विद्वान् , अभिज्ञ; (आचा ; सुपा १३० ; ३६२) ।

कोविअ वि [**कोपित**] १ क्रुद्ध किया हुआ। २ दूषित, दोष-युक्त किया हुआ ; "वइरो किर दाहो वायगंति नवि कोवियं वयण" (उव) ।

कोविआ स्त्री [**दे**] शृगाली, स्त्री-सियार ; (दे २, ४६) ।

कोविआर पुं [**कोविदार**] वृक्ष-विशेष ; (विक्र ३३) ।

कोविणी स्त्री [**कोपिनी**] कोप-युक्त स्त्री ; (श्रा १२) ।

कोस पुं [**दे**] १ कुसुम्भ रंग से रक्त वस्त्र ; २ समुद्र, जलधि, सागर ; (दे २, ६५) ।

कोस पुं [**क्रोश**] कोस, मार्ग की लम्बाई का परिमाण, दो मील ; (कप्प ; जी ३२) ।

कोस पुं [**कोश**, °**ष**] १ खजाना, भण्डार; (णाया १,१३१; पउम ५, २४) । २ तलवार की म्यान ; (सुअ १, ६) । ३ कुड्मल, "कमलकोसव्व" (कुमा) । ४ मुकुल, कली ; (गउड) । ५ गोल, वृत्ताकार; "ता मुहमेलियकर-कोसपिहियपसरंतदंतकरपसरं" (सुपा २७ ; गउड) । ६ दिव्य-भेद, तप्त लोहे का स्पर्श वगैरः शपथ ; "एत्थ अम्हे

कोसविसएहिं पच्चाएमो" (स ३२४)। ७ अभिधान-शास्त्र, शब्दार्थ-निरूपक ग्रन्थ, जैसा प्रस्तुत पुस्तक। ८ पुंन. पान-पात्र, चषक; (पाअ)। ८ न. नगर-विशेष, "कोसं नाम नयरं" (स १३३)। °पाण न [°पान] सौगन, शपथ; (गा ४४८)। °हिव पुं [°धिप] खजानची, भंडारी; (सुपा ७३)।

कोसंब पुं [**कोशाम्र**] फल-वृक्ष-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३१)। °**गंडिया** स्त्री [°**गण्डिका**] खड्ग-विशेष, एक प्रकार की तलवार; (राज)।

कोसंबिया स्त्री [**कौशाम्बिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा, (कप्प)।

कोसंबी स्त्री [**कौशाम्बी**] वत्स देश की मुख्य नगरी; (ठा १०; विपा १, ५)।

कोसग पुं [**कोशक**] साधुओं का एक चर्म-मय उपकरण, चमड़े की एक प्रकार की थैली; (धर्म ३)।

कोसट्टइरिआ स्त्री [**दे**] चण्डी, पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी; (दे २, ३५)।

कोसय न [**दे. कोशक**] लघु शराव, छोटा पान-पात्र; (दे २, ४७; पाअ)।

कोसल न [**कौशल**] कुशलता, निपुणता, चातुरी, (कुमा)।

कोसल न [**दे**] नीवी, नारा, इजारबन्द; (दे २, ३८)।

कोसल } पुं [**कोसल, °क**] १ देश-विशेष; (कुमा; **कोसलग** } महा)। २ एक जैन महर्षि, सुकोसल मुनि; (पउम २२, ४४)। ३ कोसल देश का राजा, ४ वि. कोशल देश में उत्पन्न; (ठा ५; २)। ५ °**पुर** न [°**पुर**] अयोध्या नगरी, (आक १)।

कोसला स्त्री [**कोसला**] १ नगरी-विशेष, अयोध्या-नगरी; (पउम २०, २८)। २ अयोध्या-प्रान्त, कोसल-देश; (भग ७, ६)।

कोसलिअ वि [**कौशलिक**] १ कोसल देश में उत्पन्न, कोसल-देश-संबन्धी; (भग २०, ८)। २ अयोध्या में उत्पन्न, अयोध्या-संबन्धी; (जं २)।

कोसलिअ न [**दे. कौशलिक**] प्राभृत, भेंट, उपहार; (दे २, १२; सण, सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसलिआ स्त्री [**दे. कौशलिका**] ऊपर देखो; (दे २, १२; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसल्ल न [**कौशल्य**] निपुणता, चतुराई; (कुमा; सुपा १६; सुर १०, ८०)।

कोसल्ल न [**दे**] प्राभृत, भेंट, उपहार; "तं पुरजणकोसल्लं नरवइणा अप्पियं कुमारस्स" (महा)।

कोसल्लया स्त्री [**कौशल्य**] निपुणता, चतुराई; "तह मज्झ-नीइकोसल्लया य खीणच्चिय इयाणिं" (सुपा ६०३)।

कोसल्ला स्त्री [**कौशल्या**] दाशरथि राम की माता; (उप पृ ३७४)।

कोसल्लिअ न [**दे. कौशलिक**] भेंट, उपहार; (दे २, १२; महा; सुपा ४१३; ५२७; सण)।

कोसा स्त्री [**कोशा**] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या, जिसके यहां जैन महर्षि श्रीस्थूलभद्र मुनि ने निर्विकार भाव से चातुर्मास किया था; (विवे ३३)।

कोसिण वि [**कोष्ण**] थोड़ा गरम; (नाट—वेणी)।

कोसिय न [**कौशिक**] १ मनुष्य का गोत्र विशेष; (अभि ४१; ठा ३६०)। २ वीसवें नक्षत्र का गोत्र; (चंद १०)। ३ पुं. उलूक, घूक, उल्लू; (पाअ; सार्ध ५६)। ४ सॉप-विशेष, चण्डकोशिक-नामक दृष्टि-विष सर्प, जिसको भगवान् श्रीमहावीर ने प्रबोधित किया था; (आवम)। ५ वृक्ष-विशेष; ६ इन्द्र; ७ नकुल; ८ कोशाध्यक्ष, खजानची; ९ प्रीति, अनुराग; १० इस नाम का एक राजा; ११ इस नाम का एक असुर; १२ सर्प को पकडने वाला, गारुड़िक; १३ अस्थि-सार, मज्जा; १४ शृङ्गार रस; (हे १, १५६)। १५ इस नाम का एक तापस; (भवि)। १६ पुंस्त्री. कौशिक गोत्र में उत्पन्न, कौशिक-गोत्रीय; (ठा ७—पत्र ३६०); स्त्री—**कोसिई**; (मा १६)।

कोसिया स्त्री [**कोशिका**] १ भारतवर्ष की एक नदी; (कस)। २ इस नाम की एक विद्याधर-राज-कन्या; (पउम ७, ५४)। ३ चमड़े का जूता; "कोसियमालाभूसियसिरोहरो विगय-वसणो य" (स २२३)। देखो **कोसी**।

कोसियार पुं [**कोशिकार**] १ कीट-विशेष, रेशम का कीड़ा; (पण्ह १, ३)। २ न. रेशमी वस्त्र; (ठा ५, ३)।

कोसी स्त्री [**कोशी**] देखो **कोसिया**; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। २ गोलाकार एक वस्तु; 'कंचणकोसीपविद्वदंताणं' (औप)।

कोसुम वि [**कौसुम**] फूल-संबन्धो, फूल का बना हुआ; "कोसुमा बाणा" (गउड)।

कोसेअ } न [**कौशेय**] १ रेशमी वस्त्र, रेशमी कपड़ा **कोसेज्ज** } (दे २, ३३; सम १५३; पण्ह १, ४)। २ तसर का बना हुआ वस्त्र; (जीव ३)।

कोह पुं [क्रोध] गुस्सा, कोप; (ओघ २ भा ; ठा ४, १)। °मुंड वि [°मुण्ड] क्रोध-रहित ; (ठा ५, ३)।
कोह पुं [कोथ] सड़ना, शीर्णता ; (भग ३, ६)।
कोह पुं [दे. कोथ] कोथली थैला ; (विसे २६८८)।
कोह वि [क्रोधवत्] क्रोध-युक्त, कोप-सहित; "कोहाए माणाए मायाए लोभाए .....आसायणाए" (पडि)।
कोहंगक पुं [कोभङ्गक] पक्षि-विशेष ; (औप)।
कोहंझाण न [क्रोधध्यान] क्रोध-युक्त चिन्तन; (आउ ११)।
कोहंड न [कूष्माण्ड] १ कुष्माण्डी-फल, कोहला ; (पि ७६; ८६; १२७)। २ न. देव-विमान-विशेष ; (ती ५६)। ३ पु. व्यन्तर-श्रेणीय देव-जाति-विशेष ; (पव १६४)।
कोहंडी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहले का गाछ ; (हे१, १२४; दे २, ५० टी)।
कोहण वि [क्रोधन] १ क्रोधी, गुस्साखोर ; (सम ३७ ; पउम ३५, ७)। २ पुं. इस नाम का रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३२)।
कोहल देखो कुऊहल ; (हे १, १७१)।
कोहलिअ वि [कुतूहलिन्] कुतूहली ; कुतूहल-प्रेमी। स्त्री—°आ; (गा ७६८)।
कोहलिआ स्त्री [कूष्माण्डिका] कोहले का गाछ ;

"जह लंघेसि परवइं, निययवइं भरसहंपि मोत्तूणं।
तह मण्णे कोहलिए, अज्जं कल्लंपि फुट्टिहिसि" (गा७६८)।

कोहली देखो कोहंडी , (हे २, ७३ ; दे २, ५० टी)।
कोहल्ल देखो कोहल ; (षड्)।
कोहल्ली स्त्री [दे] तापिका, तवा, पचन-पात्र विशेष, (दे २, ४६)।
कोहल्ली देखो कोहंडी ; (षड्)।
कोहि } वि [क्रोधिन्] क्रोधी, क्रोध-स्वभावी, गुस्सा-
कोहिल्ल } खोर ; (कम्म ४, १४० ; बृह २)।
°क्किसिय देखो किसिय=कृषित ; (उप ७२८ टी)।
°क्कूर देखो कूर=कूर ; (वा २६)।
°क्केर देखो °केर ; (हे २, ६६)।
°क्खंड देखो खंड ; (गउड)।
°क्खंभ देखो खंभ ; (से ३, ५६)।
°क्खम देखो खम ; (प्रासू २७)।
°क्खलण देखो खलण , (गउड)।
°क्खिंसा देखो खिंसा , (सुपा ५१०)।
°क्खु देखो खु ; (कप्पू ; अभि ३७ , चारु १४)।
°क्खुत्त देखो खुत्त ; (गउड)।
°क्खेड्डु देखो खेड्डु ; (सुपा ५५२)।
°क्खेव देखो खेव; " खारक्खेवं व खए" (उप ७२८ टी)।
°क्खोडी देखो खोडी ; (पण्ह १, ३)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे कयाराइसद्दसंकलणो
दसमो तरंगो समत्तो।

ख

ख पुं [**ख**] १ व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है ; (प्रामा ; प्राप)। २ न. आकाश, गगन ; "गज्जंते खे मेहा" (हे १, १८७ ; कुमा ; दे ६, १२१)। ३ इन्द्रिय ; (विसे ३४४३)। °**ग** पु [°**ग**] १ पक्षी, खग ; (पात्र ; दे २, ५०)। २ मनुष्य की एक जाति, जो विद्या के बल से आकाश में गमन करते है, विद्याधर-लोक ; (आग ५६)। देखो **खय**=खग। °**गइ** स्त्री [°**गति**] १ आकाश-गति ; २ कर्म-विशेष, जो आकाश-गति का कारण है ; (कम्म २, ३; नव ११)। °**गामिणी** स्त्री [°**गामिनी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है ; (पउम ७, १४५)। °**पुप्फ** न [°**पुष्प**] आकाश-कुसुम, असंभवित वस्तु; (कुमा)।

खइ वि [**क्षयिन्**] १ क्षय वाला, नाश वाला। २ क्षय रोग वाला, क्षय-रोगी ; (सुपा २३३ ; ५७६)।

खइअ वि [**क्षपित**] नाशित, उन्मूलित ; (औप ; भवि)।

खइअ वि [**खचित**] १ व्याप्त, जटित ; २ मण्डित, विभूषित ; (हे १, १९३ ; औप ; स ११४)।

खइअ वि [**खादित**] १ खाया हुआ, भुक्त, ग्रस्त ; (पात्र ; स २५० ; उप पृ ४६)। २ आक्रान्त ; "तह य होंति उ कसाया। खइओ जेहिं मणुस्सो कज्जाकज्जाइं न मुणेइ" (स ११४)। ३ न. भोजन, भक्षण ; "खइएण व पीएण व न य एसो ताइओ हवइ अप्पा" (पच्च ६२ ; ठा ४, ४—पत्र २७६)।

खइअ वि [**क्षयित**] क्षय-प्राप्त, क्षीण ; "किमिकायखइय-देहो" (सुर १६, १६१)।

खइअ पुं [**दे**] हेवाक, स्वभाव ; (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

खइअ) पुं [**क्षायिक**] १ क्षय, विनाश, उन्मूलन ; "से किं तं **खइग**) खइए? खइए अट्ठण्हं कम्मपयडीणं खइएणं" (अणु)। २ वि. क्षय से उत्पन्न, क्षय-संबन्धी, क्षय से सबन्ध रखने वाला, ३ कर्म-नाश से उत्पन्न ; "कम्मक्खय-सहावो खइओ" (विसे ३४६५ ; कम्म १, १५ ; ३, १६ ; ४, २२ ; सम्य, २३ ; औप)।

खइत्त न [**क्षैत्र**] खेतों का समूह, अनेक खेत, (पि ६१)।

खइया स्त्री [**खदिका**] खाद्य-विशेष, सेका हुआ व्रीहि ; "दहिय-पायसखइयनियोए" (भवि)।

खइर पुं [**खदिर**] वृक्ष-विशेष, खैर का गाछ ; (आचा ; कुमा)।

खइर वि [**खादिर**] खदिर-वृक्ष-संबन्धी; (हे १, ६७; सुपा १६१)।

खइव [**दे**] देखो **खइअ** ; (ठा ४, ४—पत्र १७६ टी)।

खउड पुं [**खपुट**] स्वनाम प्रसिद्ध एक जैनाचार्य; (आवम ; आचू)।

खउर अक [**क्षुभ्**] १ क्षुब्ध होना, डर से विह्वल होना। २ सक. कलुषित करना। खउरइ; (हे ४, १५४; कुमा)। "खउरेंति घिइग्गहणं" (स ५, ३)।

खउर वि [**दे**] कलुषित ; "दरदड्ढविवण्णविद्दुमर-अक्खउरा" (स ५, ४७ ; स ५७८)।

खउर न [**क्षौर**] क्षौर-कर्म, हजामत , (हेका १८६)।

खउर पुन [**खपुर**] खैर वगैरः का चिकना रस, गोंद ; (वृह ३ ; निचू १६)। °**कढिणय** न [°**कठिनक**] तापसो का एक प्रकार का पात्र ; (विसे १४६५)।

खउरिअ वि [**क्षुब्ध**] कलुषित ; (पाअ , वृह ३)।

खउरिअ वि [**क्षौरित**] मुण्डित, लुञ्चित, कश-रहित किया हुआ ; (से १०, ४३)।

खउरिअ वि [**खपुरित**] खरण्टित, चिपकाया हुआ; (निचू१)।

खउरीकय वि [**खपुरीकृत**] गोंद वगैर. की तरह चिकना किया हुआ ;

"कलुसीकओ य किट्टीकओ य खउरीकओ य .मलिणिओ।
कम्मेहि एस जीवो, नाऊणवि मुज्झई जेण" (उव)।

खओवसम पु [**क्षयोपशम**] कुछ भाग का विनाश और कुछ का दबना ; (भग)।

खओवसमिय वि [**क्षयोपशमिक**] १ क्षयोपशम से उत्पन्न, क्षयोपशम-संबन्धी ; (सम १४५ ; ठा २,१, भग)। २ क्षयोपशम ; (भग ; विसे २१७५)।

खंखर पुं [**दे**] पलाश वृक्ष ; (ती ५३)।

खंगार पु [**खङ्गार**] राजा खेंगार, विक्रम की बारहवीं शताब्दी का सौराष्ट्र देश का एक भूपति, जिसको गूजरात के राजा सिद्धराज ने मारा था ; (ती ५)। °**गढ** पुं [°**गढ**] नगर-विशेष, सौराष्ट्र का एक नगर, जो आजकल 'जूनागढ के नाम से प्रसिद्ध है ; (ती ५)।

खंच सक [**कृष्**] १ खींचना। २ वश में करना। खंचइ ; (भवि)। "ता गच्छ तुरियतुरियं तुरयं मा खंच मुंच मुक्क-लयं" (सुपा १६८)।

खंचिय वि [**कृष्ट**] १ खींचा हुआ ; (स ५७४) । २ वश में किया हुआ ; (भवि) ।

खंज अक [**खञ्ज्**] लंगड़ा होना ; (कप्पू) ।

खंज वि [**खञ्ज**] लंगड़ा, पङ्गु, लूला ; (सुपा २७६) ।

खंजण पु [**खञ्जन**] १ पक्षि-विशेष, खञ्जरीट ; (दे २, ७०) । २ वृक्ष-विशेष ; "ताडवडखज्जखंजणसुक्खयरगहीर-दुक्खसंचारे" (स २५६) ।

खंजण पुं [**दे**] १ कर्दम, कीच ; (दे २,६६ , पाअ) । २ कज्जल, काजल, मषी ; (ठा ४,२) । ३ गाड़ी के पहिए के भीतर का काला कीच ; (पण्ण १७—पत्र ५२५) ।

खंजर पु [**दे**] सूखा हुआ पेड ; (दे २, ६८) ।

खंजा स्त्री [**खञ्जा**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

खंजिअ त्रि [**खञ्जित**] जो लंगडा हुआ हो, पंगूभूत ; (कप्पू) ।

खंड सक [**खण्डय्**] तोड़ना, टुकड़ा करना, विच्छेद करना । खंडइ; (हे ४,३६७)। कवकृ—**खंडिज्जंत**; (से १३,३२ ; सुपा १३४) । हेकृ—**खंडित्तए**; (उवा) । कृ—**खंडियव्व**; (उप ७२८ टी) ।

खंड पुंन [**खण्ड**] १ टुकड़ा, अंश, हिस्सा ; (हे २,६७, कुमा) । २ चीनी, मिश्री ; (उर ६,८) । ३ पृथ्वी का एक हिस्सा ; "छक्खंड—" (सण) । °**घडग** पुं [°**घटक**] भिक्षुक का जल-पात्र ; (णाया १, १६) । °**प्पवाया** स्त्री [°**प्रपाता**] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा ; (ठा २,३) । °**भेय** पुं [°**भेद**] विच्छेद-विशेष, पदार्थ का एक तरह का पृथक्करण, पटके हुए घड़े की तरह पृथग्भाव ; (भग ५, ४) । °**मल्लय** पुंन [°**मल्लक**] भिक्षा-पात्र ; (णाया १, १६) । °**सो** अ [°**शस्**] टुकड़ा टुकड़ा, खण्ड-खण्ड ; (पि ५१६) । °**ाभेय** देखो °**भेय** , (ठा १०) ।

खंड न [**दे**] १ मुण्ड, शिर, मस्तक ; २ दारू का बरतन, मद्य-पात्र ; (दे २, ६८) ।

खंडई स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (दे २,६७) ।

खंडग न [**खण्टक**] शिखर-विशेष ; (ठा ६ ; इक) ।

खंडण न [**खण्डन**] १ विच्छेद, भञ्जन, नाश ; (णाया १, ८) । २ कण्डन, धान्य वगैरः का छिलका अलग करना ; "खंडणदलणाइं गिहकम्मे" (सुपा १४) । ३ वि. नाश करने वाला, नाशक ; (सुपा ४३२) ।

खंडणा स्त्री [**खण्डना**] विच्छेद, विनाश; (कप्पू; निचू १) ।

खंडपट्ट पुं [**खण्डपट्ट**] १ द्यूतकार, जूआरी, (विपा १,३) । २ धूर्त, ठग; ३ अन्याय से व्यवहार करने वाला; (विपा १,३) ।

खंडरक्ख पुं [**खण्डरक्ष**] १ दाण्डपाशिक, कोटवाल; (णाया १,१ ; पण्ह १,३ ; औप) । २ शुल्कपाल, चुंगी वसूल करने वाला ; (णाया १,१ ; विसे २३६० ; औप) ।

खंडव न [**खाण्डव**] इन्द्र का वन-विशेष, जिसको अर्जुन ने जलाया बतलाया जाता है ; (नाट—वेणी ११४) ।

खंडा स्त्री [**खण्ड**] मिश्री, चीनी, सक्कर ; (ओघ ३७३) ।

खंडा स्त्री [**खण्डा**] इस नाम की एक विद्याधर-कन्या ; (महा) ।

खंडाखंडि अ [**खण्डशस्**] टुकड़े टुकड़ा, खण्डखण्ड ; (उवा ; णाया १,६) । °**डीकय** वि [°**कृत**] टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (सुर १६, ५६) ।

खंडामणिकंचण न [**खण्डामणिकाञ्चन**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक) ।

खंडावत्त न [**खण्डावर्त्त**] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक) ।

खंडाहंड वि [**खण्डखण्ड**] टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (सुपा ३८५) ।

खंडिअ पुं [**खण्डिक**] छात्र, विद्यार्थी ; (औप) ।

खंडिअ वि [**खण्डित**] छिन्न, विछिन्न; (हे १, ५३ ; महा) ।

खंडिअ पु [**दे**] १ मागध, बिरुद-पाठक ; २ वि. अनिवार, निवारण करने को अशक्य ; (दे २, ७८) ।

खंडिआ स्त्री [**खण्डिका**] खण्ड, टुकड़ा ; (अभि ६२) ।

खंडिआ स्त्री [**दे**] नाप-विशेष, बीस मन का नाप , (सं २४) ।

खंडी स्त्री [**दे**] १ अपद्वार, छोटा गुप्त द्वार ; (णाया १, १८—पत्र २३६) । २ किले का छिद्र; (णाया १, २—पत्र ७६) ।

खंडुअ न [**दे**] बाहु-वलय, हाथ का आभूषण-विशेष ; (मृच्छ १८१) ।

खंत देखो **खा** ।

खंत वि [**क्षान्त**] क्षमा-शील, क्षमा-युक्त; (उप ३२० टी; कप्पू; भवि) ।

खंतव्व वि [**क्षन्तव्य**] क्षमा-योग्य, माफ करने लायक; (विक ३८; भवि) ।

खंति स्त्री [**क्षान्ति**] क्षमा, क्रोध का अभाव; (कप्प, महा; प्रासू ४८) ।

खंति देखो **खा** ।

खंद पुं [**स्कन्द**] १ कार्त्तिकेय, महादेव का एक पुत्र, (हे २, ५; प्राप्र; णाया १,१—पत्र ३६)। २ रा॰ नाम का एक सुभट ; (पउम ६७, ११)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक जैन मुनि ; (उव)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] १ स्कन्द-कृत उपद्रव, स्कन्दावेश; (जं २)। २ ज्वर-विशेष ; (भग ३, ६)। °**मह** पुं [°**मह**] स्कन्द का उत्सव ; (णाया १,१)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] एक चोर-सेनापति की भार्या का नाम ; (विपा १, ३)।

खंदग, **खंदय** पुं [**स्कन्दक**] १-२ ऊपर देखो । ३ एक जैन मुनि , (उव ; भग ; अंत , सुपा ४०८)। ४ एक परिव्राजक, जिसने भगवान् महावीर के पास पीछे से जैन दीक्षा ली थी ; (पुप्फ ८४)।

खंदिल पुं [**स्कन्दिल**] एक प्रख्यात जैनाचार्य, जिसने मथुरा में जैनागमों को लिपि-बद्ध किया, (गच्छ १)।

खंध पु [**स्कन्ध**] १ पुद्गल-प्रचय, पुद्गलों का पिण्ड ; (कम्म ४, ६६)। २ समूह, निकर , (विसे ६००)। ३ कन्धा, काँध ; (कुमा)। ४ पेड़ का धड़, जहां से शाखा निकलती है ; (कुमा)। ५ छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**करणी** स्त्री [°**करणी**] साध्वीओं को पहनने का उप-करण-विशेष ; (ओघ ६७७)। °**मंत** वि [°**मत्**] स्कन्ध वाला ; (णाया १, १)। °**वीय** पुं [°**वीज**] स्कन्ध ही जिसका बीज होता है ऐसा कदली वगैरः गाछ ; (ठा ५, २)। °**सालि** पुं [°**शालिन्**] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (राज)।

खंधग्गि पुं [**दे. स्कन्धाग्नि**] स्थूल काष्ठों की आग, (दे २, ७० ; पाअ)।

खंधमंस पुं [**दे**] हाथ, भुजा, बाहू ; (दे २, ७१)।

खंधमसी स्त्री [**दे**] स्कन्ध-यष्टि, हाथ ; (षड्)।

खंधय देखो **खंध** ; (पिंग)।

खंधयट्ठि स्त्री [**दे**] हाथ, भुजा , (दे २, ७१)।

खंधर पुंस्त्री [**कन्धर**] ग्रीवा, डोक, (सण)। स्त्री—°**रा**; (महा)।

खंधलट्ठि स्त्री [**दे**] स्कन्ध-यष्टि, हाथ, भुजा ; (षड्)।

खंधवार देखो **खंधावार**; (महा)।

खंधार पुं. व. [**स्कन्धार**] देश-विशेष ; (पउम ६८, ६६)।

खंधार देखो **खंधावार** ; (पउम ६६, २८ ; महा ; विसे २४४१)।

खंधाल वि [**स्कन्धमत्**] स्कन्ध वाला ; (सुपा १२६)।

खंधावार पुं [**स्कन्धावार**] छावनी, सैन्य का पडाव, शिविर ; (णाया १, ८ ; स ६०३ ; महा)।

खंधि वि [**स्कन्धिन्**] स्कन्ध वाला ; (औप)।

खंधी स्त्री. देखो **खंध** ; (औप)।

खंधोधार पु [**दे**] बहुत गरम पानी की धारा , (दे २, ७२)।

खंप सक [**सिच्**] सिञ्चना, छिटकना । खंपइ ; (भवि)।

खंपणय न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; "बहुसेयसिन्नमलमइलखंपणय-चिक्कणसरीरो" (सुपा ११)।

खंभ पु [**स्तम्भ**] खभा, थभा : (हे १, १८७ , २, ४; ६ ; भग ; महा)।

खंभल्लिअ वि [**स्तम्भनिगडित**] खंभे से बाँधा हुआ ; (से ६, ८५)।

खंभाइत्त न [**स्तम्भादित्य**] गुर्जर देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम से प्रसिद्ध है ; (ती २३)।

खंभालण न [**स्तम्भालगन**] थम्भे से बाँधना ; (पगह १, ३)।

खक्खरग पुंन [**दे**] सूखी हुई गंठी ; (धर्म २)।

खग्ग पुं [**खड्ग**] १ पशु-विशेष, गेंडा ; (उप १४८ ; पगह १, १)। २ पुंन. तलवार, असि , (हे १, ३४ ; स ५३१)। °**धेणुआ** स्त्री [°**धेनु**] छूरी, चाकू ; (दंस)। °**पुरा** स्त्री [°**पुरा**] विदेह-वर्ष की स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी , (ठा २, ३)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] पूर्वोक्त ही अर्थ , (इक)।

खग्गि पुं [**खड्गिन्**] जन्तु-विशेष, गेंडा ; (कुमा)।

खग्गिअ पुं [**दे**] ग्रामेश, गाँव का मुखिया ; (दे २, ६६)।

खग्गी स्त्री [**खड्गी**] विदेह वर्ष की नगरी-विशेष ; (ठा २, ३)।

खग्गूड वि [**दे**] १ शठ-प्राय, धूर्त्त-सदृश ; (ओघ ३६ भा)। २ धर्म-रहित, नास्तिक-प्राय ; (ओघ ३५ भा)। ३ निद्रालु , ४ रस-लम्पट ; (बृह १)।

खच सक [**खच्**] १ पावन करना, पवित्र करना । २ कस कर बाँधना । खचइ ; (हे ४, ८९)।

खचिअ देखो [illegible] कुमा)। ३ पिञ्जरित , (कप्प)।

खच्चल्ल पुं [[illegible] ; (दे २, ६६)।

खच्चोल पु [[illegible] २, ६६)।

खज्ज पु [**खर्ज**] वृक्ष-विशेष ; (स २५६)।
खज्ज वि [**खाद्य**] १ खाने योग्य वस्तु, (पण्ह १, २)। २ न. खाद्य-विशेष ; (भवि)।
खज्ज वि [**क्षय्य**] जिस का क्षय किया जा सके वह, (पड्)।
खज्जंत देखो **खा**।
खज्जग देखो **खज्ज**=खाद्य ; (भग १५)।
खज्जमाण देखो **खा**।
खज्जय देखो **खज्ज**=खाद्य ; (पउम ६६, १६)।
खज्जिअ वि [**दे**] १ जीर्ण, सड़ा हुआ ; २ उपालब्ध, जिसको उलहना दिया गया हो वह ; (दे २, ७८)।
खज्जिर (अप) वि [**खाद्यमान**] जो खाया गया हो वह ; (सण)।
खज्जू स्त्री [**खर्जू**] खुजली, पासा; (राज)।
खज्जूर पुं [**खर्जूर**] १ खजूर का पेड़; (कुमा ; उत ३४)। २ न. खजूर-फल ; (पउम ४१, ६ ; सुपा ५७)।
खज्जूरी स्त्री [**खर्जूरी**] खजूर का गाछ, (पाअ; पण्ण १)।
खज्जोअ पु [**दे**] नक्षत्र ; (दे २, ६६)।
खज्जोअ पु [**खद्योत**] कीट-विशेष, जुगनू ; (सुपा ४७ ; णाया १, ८)।
खट्ट न [**दे**] १ तीमन, कढ़ी ; (दे २, ६७)। २ वि. खट्टा, अम्ल ; (पण्ण १—पत्र २७ ; जीव १)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] खट्टे जल की वर्षा; (भग ७, ६)।
खट्टंग न [**दे**] छाया, आतप का अभाव ; (दे २, ६८)।
खट्टंग न [**खट्वाङ्ग**] १ शिव का एक आयुध; (कुमा)। २ चारपाई का पाया या पाटी ; ३ प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा माँगने का एक पात्र ; ४ तान्त्रिक मुद्रा-विशेष ;

"हत्थट्ठियं कवालं, न मुयइ नूणं खणंपि खट्टंगं ।
सा तुह विरहे वालय, वाला कावालिणी जाया"
(वज्जा ८८)।

खट्टक्खड पु [**खट्वाक्षक**] रत्नप्रभा-नामक पृथिवी का एक नरकावास ; "कालं काऊण रयणप्पभाए पुढवीए खट्टक्खडाभिहाणे नरए पलिओवमाऊ चेव नारगो उववन्नोत्ति" (स ८६)।
खट्टा स्त्री [**खट्वा**] खाट, पलंग, चारपाई; (सुपा ३३७, हे १, १६५)। °**मल्ल** पुं [°**मल्ल**] विमारी की प्रवलता से जो खाट से उठ न सकता हो वह ; (बृह १)।
खट्टिअ } [**दे. खट्टिक**] खटोक, शौनिक, कसाई, (गा
खट्टिक्क } ६८२ ; सुअ २, २ ; दे २, ७०)।
खड न [**दे**] तृण, घास ; (दे २, ६७ ; कुमा)।
खडइअ वि [**दे**] सकुचित, संकोच-प्राप्त ; (दे २, ७२)।
खडंग न [**षडङ्ग**] छः अंग, वेद के ये छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त। °**वि** वि [°**वित्**] छहों अंगों का जानकार ; (पि २६५)।
खडक्कय पुंन [**खटत्कृत**] आहट देना, ध्वनि के द्वारा सूचना, भिकली वगैरः का आवाज; 'वियडकवाडकडाण खडक्कओ निसुणिओ तत्तो" (सुपा ४१४)।
खडक्कार पु [**खटत्कार**] ऊपर देखो; (सुर ११, ११२; विक ६०)।
खडक्किआ } स्त्री [**दे**] खिडकी, छोटा द्वार ; (कप्पू;
खडक्की } महा ; दे २, ७१)।
खडखड पुं [**खडखड**] देखो **खाडखड** ; (इक)।
खडखडग वि [**दे**] छोटा और लम्बा ; (राज)।
खडणा स्त्री [**दे**] गैया, गौ ; (गा ६३६ अ)।
खडहड पुं [**खटखट**] साँकल वगैरः का आवाज, खटत्कार ; (सुपा ५०२)।
खडहडी स्त्री [**दे**] जन्तु-विशेष, गिलहरी, गिल्ली· (दे २,७२)।
खडिअ देखो **खट्टिअ** ; (गा ६८२ अ)।
खडिअ देखो **खलिअ** ; (गा १६२ अ)।
खडिआ स्त्री [**खटिका**] खड़ी, लड़कों को लिखने की खडी, (कप्पू)।
खडी स्त्री [**खटी**] ऊपर देखो ; (प्रारू)।
खडुआ स्त्री [**दे**] मौक्तिक, मोती ; (दे २, ६८)।
खडुक्क अक [**आविस्+भू**] प्रकट होना, उत्पन्न होना। खडुक्कंति ; (वज्जा ४६)।
खड्ड सक [**मृद्**] मर्दन करना। खड्डइ ; (हे ४, १२६)।
खड्ड } न [**दे**] १ श्मश्रु, दाढी-मूँछ; (दे २, ६६ ;
खड्डग } पाअ)। २ वड़ा, महान् ; (विसे २५७६ टी)। ३ गर्त के आकार वाला ; (उवा)।
खड्डा स्त्री [**दे**] १ खानि, आकर ; (दे २, ६६)। २ पर्वत का खात, पर्वत का गर्त; (दे २, ६६)। ३ गर्त, गढा, खड्डा ; (सुर २, १०३ ; स १५२ ; सुपा १५ ; श्रा १६ ; महा ; उत्त २ ; पंचा ७)।
खड्डिअ वि [**मृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह ; (कुमा)।
खड्डुया स्त्री [**दे**] ठोकर, आघात ; "खड्डुया मे चवेटा मे" (उत्त १, ३८)।

खड्डोलय पु [दे] खड्डा, गर्त, गढ़ा ; (स ३६३)।

खण सक [खन्] खोदना। खणइ ; (महा)। कर्म—खम्मइ, खणिज्जइ ; (हे ४, २४४)। वकृ—खणेमाण ; (सुर २, १०३)। संकृ—**खणेत्तु** ; (आचा)। कवकृ—**खन्नमाण** ; (पि ५४०)।

खण पुं [क्षण] काल-विशेष, बहुत थोड़ा समय ; (ठा २, ४ ; हे २, २०; गउड, प्रासू १३४)। °**जोइ** वि [°**योगिन्**] क्षणमात्र रहने वाला ; (सूअ १, १, १)। °**भंगुर** वि [°**भङ्गुर**] क्षण-विनश्वर, क्षणिक ; (पउम ८, १०५ ; गा ४२३ ; निवि ११४)। °**या** स्त्री [°**दा**] रात्रि, रात ; (उप ७६८ टी)।

खणक्खण } **खणखणखण** } अक [**खणखणाय्**] 'खण-खण' आवाज करना। खणखणंति ; (पउम ३६, ५३)। वकृ—**खणक्खणंत** ; (स ३८४)।

खणग वि [**खनक**] खोदने वाला ; (गाया १, १८)।

खणण न [**खनन**] खोदना ; (पउम ८६, ६०; उप पृ २२१)।

खणय देखो **खण**=क्षण ; (आचा; उवा)।

खणय वि [**खनक**] खोदने वाला ; (दे १, ८५)।

खणाविय वि [**खानित**] खुदाया हुआ, (सुपा ४५४, महा)।

खणि स्त्री [**खनि**] खान, आकर ; (सुपा ३५०)।

खणित्त न [**खनित्र**] खोदने का अस्त्र, खन्ती, (दे ४, ४)।

खणिय वि [**क्षणिक**] १ क्षण-विनश्वर, क्षण-भंगुर ; (विसे १६७२)। २ वि. फुरसद वाला, काम-धंधा से रहित ; "नो तुम्हे विव अम्हे खणिया इय वुत्तु नीहरिओ" (धम्म ८ टी)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] सर्व पदार्थ को क्षण-विनश्वर मानने वाला, बौद्धमत का अनुयायी ; (राज)।

खणिय वि [**खनित**] खुदा हुआ ; (सुपा २५६)।

खणी देखो **खणि** ; (पाअ)।

खणुसा स्त्री [दे] मन का दुःख, मानसिक पीड़ा; (दे २, ६८)।

खण्ण न [दे] खात, खोदा हुआ ; (दे २, ६६; बृह ३ ; वव १)।

खण्ण वि [**खन्य**] खोदने योग्य ; (दे २, ३६)।

खण्णु देखो **खाणु** , (दे २, ६६ ; पड्)।

खण्णुअ पुं [दे **स्थाणुक**] कीलक, खूँटी ; (दे २, ६८; गा ६४ ; ४२२ अ)।

खत्त न [दे] १ खात, खोदा हुआ ; (दे २, ६६ ; पाअ)। २ शस्त्र से तोड़ा हुआ ; (ओघ ३४०)। ३ सेंध, चोरी करने के लिए दीवाल में किया हुआ छेद ; (उप पृ ११६ ; गाया १, १८)। ४ खाद, गोबर ; (उप ५९७ टी)। °**खणग** पुं [°**खनक**] सेंध लगाकर चोरी करने वाला ; (गाया १,१८)। °**खणण** न [°**खनन**] सेंध लगाना; (गाया १, १८)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] करीष के समान रस वाला मेघ ; (भग ७, ६)।

खत्त पु [**क्षत्र**] क्षत्रिय, मनुष्य-जाति-विशेष; (सुपा १९७; उत्त १२)।

खत्त वि [**क्षात्र**] १ क्षत्रिय-संबन्धी, क्षत्रिय का ; २ न. क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन ; "अहर अखत्तं करेइ कोइ इमो" (धम्म ८ टी ; नाट)।

खत्तय पु [दे] १ खेत खोदने वाला ; २ सेंध लगाकर चोरी करने वाला। ३ ग्रह-विशेष, राहु ; (भग १२, ६)।

खत्ति पुंस्त्री [**क्षत्रिन्**] नीचे देखो; "खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के" (सूअ १, ६, २२)।

खत्तिअ पुंस्त्री [**क्षत्रिय**] मनुष्य की एक जाति, क्षत्री, राजन्य ; (पिंग ; कुमा ; हे २, १८५ ; प्रासू ८०)। °**कुंडग्गाम** पुं [°**कुण्डग्राम**] नगर-विशेष, जहां श्रीमहावीर देव का जन्म हुआ था ; (भग ६, ३३)। °**कुंडपुर** न [°**कुण्डपुर**] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (आचा २, १५, ४)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] धनुर्विद्या ; (सूअ २, २)।

खत्तिणी } **खत्तियाणी** } स्त्री [**क्षत्रियाणी**] क्षत्रिय जाति की स्त्री; (पिंग ; कप्प)।

खद्ध वि [दे] १ भुक्त, भक्षित ; (दे २, ६७; सुपा ६१० ; उप पृ २५२ ; सण ; भवि)। २ प्रचुर, बहुत ; "खद्धे भवदुक्खजले तरइ विणा नेय सुगुरुतरिं" (सार्ध ११४ ; दे २, ६७ ; पव २ ; बृह ४)। ३ विशाल, बड़ा ; (ओघ ३०७; ठा ३, ४)। ४ अ. शीघ्र, जल्दी ; (आचा २, १, ९)। °**दाणिअ** वि [°**दानिक**] समृद्ध, ऋद्धि-संपन्न ; (ओघ ८६)।

खन्न [दे] देखो **खण्ण** ; (पाअ)।

खन्नमाण देखो **खण**=खन्।

खन्नुअ [दे] देखो **खण्णुअ** ; (पाअ)।

खपुसा स्त्री [दे] एक प्रकार का जूता ; (बृह ३)।

खप्पर पुं [**कर्पर**] १ मनुष्य-जाति-विशेष ; "पत्ते तम्मि दसगणगेसु पवलं जं खप्पराणं वलं" (रंभा)। २ भिक्षा-पात्र, कपाल ; (सुपा ४९५)। ३ खोपड़ी, कपाल ; (हे १, १८१)। ४ घट वगैरः का टुकड़ा ; (पउम २०, १६६)।

खप्पर } वि [**दे**] रूक्ष, रुखा, निष्ठुर ; (दे २, ६६ ;
खप्पुर } पाअ)।

खम सक [**क्षम्**] १ क्षमा करना, माफ करना। २ सहन करना। खमइ ; (उवर ८३, महा)। कर्म—खमिज्जइ ; (भवि)। कृ—**खमियव्व**; (सुपा ३०७, उप ७२८ टी; सुर ४, १६७)। प्रयो—खमावइ ; (भवि)। संकृ—**खमावइत्ता, खमावित्ता** ; (पडि ; काल)। कृ—**खमावियव्व** ; (कप्प)।

खम वि [**क्षम**] १ उचित, योग्य ; "सचित्तो आहारो न खमो मणसा वि पत्थेउं" (पच ५४ ; पाअ)। २ समर्थ, शक्तिमान् ; (दे १, १७ ; उप ६५० ; सुपा ३)।

खमग पुं [**क्षमक, क्षपक**] तपस्वी जैन साधु ; (उप पृ ३६२ ; ओघ १४० ; भत्त ४४)।

खमण न [**क्षपण, क्षमण**] १ उपवास ; (बृह १ ; निचू २०)। २ पुं. तपस्वी जैन साधु ; (ठा १०—पत्र ५१४)।

खमय देखो **खमग** ; (ओघ ५६४; उप ४८६; भत्त ४०)।

खमा स्त्री [**क्षमा**] १ पृथिवी, भूमि ; "उव्वूढखमाभारो" (सुपा ३४८)। २ क्रोध का अभाव, क्षान्ति ; (हे २, १८)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा, नृप, भूपति ; (धर्म १६)। °**समण** पुं [°**श्रमण**] साधु, ऋषि, मुनि ; (पडि)। °**हर** पुं [°**धर**] १ पर्वत, पहाड़ ; २ साधु, मुनि ; (सुपा ६२६)।

खमावणया } स्त्री [**क्षमणा**] खमाना, माफी माँगना ;
खमावणा } (भग १७, ३ ; राज)।

खमाविय वि [**क्षमित**] माफ किया हुआ ; (हे ३, १५२ ; सुपा ३६४)।

खम्मक्खम पुं [**दे**] १ संग्राम, लड़ाई ; २ मन का दुःख ; ३ पश्चात्ताप का नीसास ; (दे २, ७६)।

खय देखो **खच**। खअइ ; (षड्)।

खय अक [**क्षि**] क्षय पाना, नष्ट होना। खअइ ; (षड्)।

खय देखो **खग** ; (पाअ)। ३ आकाश तक ऊँचा पहुँचा हुआ; (से ६, ४२)। °**राय** पुं [°**राज**] पक्षिओं का राजा; गरुड़-पक्षी; (पाअ)। °**वइ** पुं [°**पति**] गरुड़-पक्षी ; (से १५, ५०)।

खय न [**क्षत**] १ व्रण, घाव ; "खारक्खेवं व खए" (उप ७२८ टी)। २ व्रणित, घवाया हुआ; "सुणओव्व कीडखओ" (श्रा १४ ; सुपा ३४६ ; सुर १२, ६१)। °**यार** पुंस्त्री [°**चार**] शिथिलाचारी साधु या साध्वी ; (वव ३)।

खय वि [**खात**] खोदा हुआ ; (पउम ६१, ४२)।

खय पुं [**क्षय**] १ क्षय, प्रलय, विनाश ; (भग ११, ११)। २ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा ; (लहुअ १५)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] नाश-कारक ; (सुपा ६५५)। °**काल**, °**गाल** पुं [°**काल**] प्रलय-काल ; (भवि, हे ४, ३७७)। °**ग्गि** पुं [°**अग्नि**] प्रलय-काल की आग ; (से १२, ८१)। °**नाणि** पुं [°**ज्ञानिन्**] केवलज्ञानी, परिपूर्ण ज्ञान वाला, सर्वज्ञ ; (विसे ५१८)। °**समय** पुं [°**समय**] प्रलय-काल ; (लहुअ २)।

खयंकर वि [**क्षयकर**] नाश-कारक ; (पउम ७, ८१, ६६, ३४ ; पुप्फ ८२)।

खयंतकर वि [**क्षयान्तकर**] नाश-कारक ; (पउम ७, १७०)।

खयर पुंस्त्री [**खचर**] १ आकाश में चलने वाला, पक्षी; (जी २०)। २ विद्याधर, विद्या बल से आकाश में चलने वाला मनुष्य; (सुर ३, ८८; सुपा २४०)। °**राय** पु [°**राज**] विद्याधरो का राजा ; (सुपा १३४)।

खयर देखो **खइर**=खदिर ; (अंत १२ ; सुपा ५६३)।

खयाल पुंन [**दे**] वंश-जाल, वाँस का वन ; (भवि)।

खर अक [**क्षर्**] १ झरना, टपकना। २ नष्ट होना। खरइ ; (विसे ४५५)।

खर वि [**खर**] १ निष्ठुर, रुखा, परुष, कठोर; (सुर २, ६ ; दे २, ७८ ; पाअ)। २ पुंस्त्री. गर्दभ, गधा ; (पण्ह १, १ ; पउम ५६, ४४)। ३ पु. छन्द-विशेष ; (पिंग)। ४ न. तिल का तैल ; (ओघ ४०६)। °**कंट** न [°**कण्ट**] बबूल वगैरः की शाखा ; (ठा ३, ४)। °**कंड** न [°**काण्ड**] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम काण्ड—अंश-विशेष; (जीव ३)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] जिसमें अनेक जीवों की हानि होती हो ऐसा काम, निष्ठुर धंधा, (सुपा ५०५)। °**कम्मिअ** वि [°**कर्मिन्**] १ निष्ठुर कर्म करने वाला ; २ कोटवाल, दाण्डपाशिक ; (ओघ २१८)। °**किरण** पुं [°**किरण**] सूर्य, सूरज ; (पिंग ; सण)। °**दूसण** पु [°**दूषण**] इस नाम का एक विद्याधर राजा, जो रावण का बनौई था ; (पउम १०, १७)। °**नहर** पु [°**नखर**] श्वापद जन्तु, हिंसक प्राणी ; (सुपा १३६; ४७४)। °**निस्सण** पु [°**निःस्वन**] इस नाम का रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३०)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ अनार्य देश-विशेष

रा निशानी, (पराह १, ४)। °मुही स्त्री [°मुखी] १ वाद्य-विशेष; (पउम ५७, २३; सुपा ५०; औप)। २ नपुंसक दासी ; (वव ६)। °यर वि [°तर] १ विशेष कठोर ; (सुपा ६०६)। २ पुं. इस नाम का एक जैन गच्छ; (राज)। °सन्नय न [°संज्ञक] तिल का तैल ; (ओघ ४०६)। °साविआ स्त्री [°शाविका] लिपि-विशेष ; (सम ३५)। °स्सर पुं [°स्वर] परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २६)।

खर वि [क्षर] विनश्वर, अस्थायी ; (विसे ४५७)।

खरंट सक [खरण्टय्] १ धूत्कारना, निर्भर्त्सना करना। २ लेप करना। खरंटए ; (सूक्त ८६)।

खरंट वि [खरण्ट] १ धूत्कारने वाला, तिरस्कारक ; २ उपलिप्त करने वाला ; ३ अशुचि पदार्थ ; (ठा ४, १ ; सूक्त ८६)।

खरंटण न [खरण्टन] १ निर्भर्त्सन, परुष भाषण; (वव १)। २ प्रेरणा ; (ओघ ४० भा)।

खरंटणा स्त्री [खरण्टना] ऊपर देखो ; (ओघ ७५)।

खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना। संकृ—खरडिवि, (सुपा ४१५)

खरड पुं [खरट] एक जघन्य मनुष्य-जाति ; "अह केणइ खरडेणं किणिउं हट्टम्मि वरुणवाणियस्स" (सुपा ३६२)।

खरडिअ वि [दे] १ रूक्ष, रूखा ; २ भग्न, नष्ट ; (दे २, ७६)।

खरडिअ वि [लिप्त] जिसको लेप किया गया हो वह, पोता हुआ ; (ओघ ३७३ टी)।

खरण न [दे] बबूल वगैरः की कराटक-मय डाली; (ठा४,३)।

खरय पुं [दे] १ कर्मकर, नौकर ; (ओघ ४३८)। २ राहु; (भग १२, ६)।

खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज करना। वकृ—खरहरंत ; (गउड)।

खरहिअ पुं [दे] पौत्र, पोता, पुत्र का पुत्र ; (दे २, ७२)।

खरा स्त्री [खरा] जन्तु-विशेष, नकुल की तरह भुज से चलने वाला जन्तु-विशेष ; (जीव २)।

खरिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित ; (दे २, ६७ ; भवि)।

खरिआ स्त्री [दे] नौकरानी, दासी ; (ओघ ४३८)।

खरिंसुअ पुं [दे. खरिंशुक] कन्द-विशेष ; (श्रा २०)।

खरुट्ठी स्त्री [खरोष्ट्री] देखो खरोट्ठिआ ; (पराण १)।

खरुल्ल वि [दे] १ कठिन, कठोर ; २ स्थपुट, विषम और ऊँचा ; (दे २, ७८)।

खरोट्ठिआ स्त्री [खरोष्ट्रिका] लिपि विशेष ; (सम ३५)।

खल अक [स्खल्] १ पड़ना, गिरना। २ भूलना। ३ रुकना। खलइ ; (प्राप्र)। वकृ—खलंत, खलमाण ; (से २, २७ ; गा ५४६ ; सुपा ६४१)।

खल वि [खल] १ दुर्जन, अधम मनुष्य ; (सुर १, १६)। २ न. धान साफ करने का स्थान ; (विपा १, ८; श्रा १४)। °पू वि [°पू] खले को साफ करने वाला ; (कुमा ; षड् ; प्रामा)।

खलइअ वि [दे] रिक्त, खाली ; (दे २, ७१)।

खलक्खल अक [खलखलाय्] 'खल-खल' आवाज करना। खोलक्खलेइ ; (पि ५५८)।

खलगंडिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त ; (दे २, ६७)।

खलण न [स्खलन] १ नीचे देखो ; (आचा ; से ८, ५५ ; गा ४६६; वज्जा २६)।

खलणा स्त्री [स्खलना] १ गिर जाना, निपतन ; (दे २, ६४)। २ विराधना, भञ्जन ; (ओघ ७८८)। ३ अटकायत, रुकावट ; "होज्जा गुणो, ण खलणं करेमि जइ अस्स वसणस्स" (उप ३३९ टी)।

खलभलिय वि [दे] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त ; (भवि)।

खलहर } पुं [खलखल] नदी के प्रवाह का आवाज; "वह-
खलहल } माणवाहिणीणं दिसिदिसिमुव्वंतखलहरसद्दो" (सुर ३, ११ ; २, ७५)।

खला अक [दे] खराब करना, नुकसान करना। "ताणवि खलो खलाइ य" (पउम ३७, ६३)।

खलिअ वि [स्खलित] १ रुका हुआ; २ गिरा हुआ, पतित; (हे २, ७७ ; पात्र)। ३ न. अपराध, गुनाह ; ४ भूल ; (से १, ६)।

खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलि-खचित ; (दे ४, १०)।

खलिण [खलिन] १ लगाम ; (पात्र)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष ; (पव ५)।

खलिया स्त्री [खलिका] तिल वगैरः का तैल-रहित चूर्ण; (सुपा ४१४)।

खलियार सक [खली+कृ] १ तिरस्कार करना, धूत्कारना। २ ठगना। ३ उपद्रव करना। खलियारसि, खलियारेंति ; (सुपा २३७ ; स ४६८)।

खलियार पुं [**खलिकार**] तिरस्कार, निर्भर्त्सना ; (पउम ३६, ११६)।

खलियारण न [**खलीकरण**] तिरस्कार ; (पउम ३६,८४)।

खलियारणा स्त्री [**खलीकरणा**] वञ्चना, ठगाई, (स २८)।

खलियारिअ वि [**खलीकृत**] १ तिरस्कृत ; (पउम ६६, २)। २ वञ्चित, ठगा हुआ ; (स २८)।

खलिर वि [**स्खलितृ**] स्खलना करने वाला ; (वज्जा ५८ ; सण)।

खली स्त्री [**दे, खली**] तिल-पिण्डिका, तिल वगैरः का स्नेह-रहित चूर्ण ; (दे २, ६६ ; सुपा ४१५ ; ४१६)।

खलीकय देखो **खलियारिअ** ; (चउ ४४)।

खलीकर देखो **खलियार**=खली+कृ । खलीकरेइ ; (स २७)। कर्म—खलीकरीयइ, खलीकिज्जइ, (स २८ ; सण)।

खलीण न [**खलीन**] देखो **खलिण** ; (सुपा ७७ ; स ५७४)। २ नदी का किनारा, "खलीणमट्टियं खणमाणे" (विपा १,१—पत्र—१६)।

खलु अ [**खलु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अव-धारण, निश्चय ; (जी ७)। २ पुनः, फिर ; (आचा)। ३ पादपूर्ति और वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है; (आचा ; निचू १०)। °**खित्त** न [°**क्षेत्र**] जहां पर जरूरी चीज मिले वह क्षेत्र ; (वव ८)।

खलुंक पुं [**दे**] १ गली बैल, अविनीत बैल; (ठा ४, ३—पत्र २४८)। २ अविनीत शिष्य, कुशिष्य ; (उत्त २७)।

खलुंकिज्ज वि [**दे**] १ गली बैल संबन्धी, २ उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन ; (उत्त २७)।

खलुय न [**खलुक**] गुल्फ, पाँव का मणि-बन्ध ; (विपा १, ६)।

खल्ल न [**दे**] १ वाड़ का छिद्र ; २ विलास ; (दे २, ७७)। ३ खाली, रिक्त; "जाया खल्लकवोला परिसोसियमंससोणिया धणियं" (उप ७२८ टी ; दे १, ३८)।

खल्लइअ वि [**दे**] १ संकुचित, संकोच-युक्त; २ प्रहृष्ट, हर्ष-युक्त ; (दे २, ७६ ; गउड)।

खल्लग } पुंन [**दे**] १ पाँव का रक्षण करने वाला चमडा,
खल्लय } एक प्रकार का जूता ; (धर्म ३)। २ थैला ; (उप १०३१ टी)।

खल्ला स्त्री [**दे**] चर्म, चमड़ा, खाल ; (दे २, ६६ ; पाअ)।

खल्लाड देखो **खल्लीड** ; (निचू २०)।

खल्लिरा स्त्री [**दे**] संकेत ; (दे २, ७०)।

खल्लिहड (अप) देखो **खल्लीड** ; (हे ४, ३८६)।

खल्ली स्त्री [**दे**] सिर का वह चमड़ा, जिसमें केश पैदा न होता हो ; (आवम)।

खल्लीड पुं [**खल्वाट**] जिसके सिर पर बाल न हो, गञ्जा, चंदला ; (हे १, ७४ ; कुमा)।

खल्लूड पुं [**खल्लूट**] कन्द-विशेष, (पण्ण १—पत्र ३६)।

खव सक [**क्षपय्**] १ नाश करना । २ डालना, प्रक्षेप करना। ३ उल्लंघन करना। खवेइ ; (उव)। खव-यंति ; (भग १८, ७)। कर्म—खविज्जंति ; (भग)। वकृ—**खवेमाण** ; (णाया १, १८)। संकृ—**खवइत्ता**, **खवित्तु** , **खवेत्ता**; (भग १५ ; सम्य १६ ; औप)।

खव पुं [**दे**] १ वाम हस्त, बायाँ हाथ ; २ गर्दभ, रासभ ; (दे २, ७७)।

खवग वि [**क्षपक**] १ नाश करने वाला, क्षय करने वाला; २ पुं. तपस्वी जैन मुनि ; (उव ; भाव ८)। ३ क्षपक श्रेणि में आरूढ़ ; (कम्म ५)। °**सेढि** स्त्री [°**श्रेणि**] क्षपण-क्रम, कर्मों के नाश की परिपाटी ; (भग ६, ११ ; उवर ११४)।

खवडिअ वि [**दे**] स्खलित, स्खलना-प्राप्त ; (दे २, ७१)।

खवण } न [**क्षपण**] १ क्षय, नाश; (जीत)। २
खवणय } डालना, प्रक्षेप ; (कम्म ४, ७५)। ३ पुं. जैन मुनि ; (विसे २५८५ ; मुद्रा ७८)।

खवय पुं [**दे**] स्कन्ध, कधा ; (दे २, ६७)।

खवय देखो **खवग** ; (सम २६ ; आरा १३ ; आचा)।

खवलिअ वि [**दे**]कुपित, क्रुद्ध ; (दे २, ७२)।

खवल्ल पुं [**खवल्ल**] मत्स्य-विशेष ; (विपा १, ८—पत्र ८३ टी)।

खवा स्त्री [**क्षपा**] रात्रि, रात। °**जल** न [°**जल**] अवश्याय, हिम ; (ठा ४, ४)।

खविअ वि [**क्षपित**] १ विनाशित, नष्ट किया हुआ, (सुर ४, ५७ ; प्राप)। २ उद्वेजित ; (गा १३४)।

खव्व पुं [**दे**] १ वाम कर, बाँया हाथ ; २ रासभ, गधा ; (दे २, ७७)।

खव्व वि [**खर्व**] वामन, कुब्ज ; (पाअ)।

खव्वुर देखो कव्वुर; (विक्र २८) ।
खव्वुल न [दे] मुख, मुँह ; (दे २, ६८) ।
खस अक [दे] खिसकना, गिर पड़ना । खसइ ; (पिंग) ।
खस पुव [खस] १ अनार्य देश-विशेष, हिन्दुस्थान की उत्तर में स्थित इस नाम का एक पहाड़ी मुलक ; (पउम ९८ ६६)। २ पुंस्त्री. खस देश में रहने वाला मनुष्य. (पगह १—पत्र १४; इक) ।
खसखस पुं [खसखस] पोस्ता का दाना, उशीर, खस, (सं ६६) ।
खसफस अक [दे] खसना, खिसकना, गिर पड़ना । वकृ —**खसफसेमाण** ; (सुर २, १५) ।
खसफसि वि [दे] व्याकुल, अधीर । °हूअ वि [°भूत] व्याकुल बना हुआ ; (हे ४, ४२२) ।
खसर देखो **कसर** = दे कसर ; (जं २ ; स ४८०) ।
खसिअ देखो **खइअ** = खचित ; (हे १, १९३) ।
खसिअ न [कम्पित] रोग-विशेष. खाँसी; (हे १, १८१) ।
खसिअ वि [दे] खिसका हुआ ; (सुपा २८१) ।
खसु पुं [दे] रोग-विशेष, पामा ; गुजराती में 'खस', (सण) ।
खह देखो **ख** ; (ठा ३, १) ।
खहयर देखो **खयर** ; (औप ; विपा १, १) ।
खहयरी स्त्री [खचरी] १ पक्षिणी, मादा पक्षी । २ विद्याधरी, विद्याधर की स्त्री ; (ठा ३, १) ।
खा } सक [खाद्] खाना, भोजन करना, भक्षण करना । खाइ,
खाअ } खाअइ ; खाउ ; (हे ४, २२८) । खंति ; (सुपा ३७० ; महा) । भवि—खाहिइ , (हे ४, २२८) । कर्म—खज्जइ ; (उव) । वकृ—**खंत, खाअंत, खायमाण** ; (कुप्र १४ ; पउम २२, ७५ ; विपा १, १) । "खंता पिअंता इह जे मरंति, पुणोवि ते खंति पिअंति गयं !" (कुप्र १४) । कवकृ—**खज्जंत, खज्जमाण** ; (पउम २२, ४३; गा २४८; पउम १७, ८१, ८२, ४०)। हेकृ—**खाइउं** ; (पि ५७३) ।
खाअ वि [ख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत , (उप ३२६ ; ६२३; नव २७ ; हे २, ९०) । °**कित्तीय** वि [°कीर्त्तिक] यशस्वी, कीर्तिमान् ; (पउम ७, ४८) । °**जस** वि [°यशस्] वही अर्थ ; (पउम ५, ८) ।
खाअ वि [खादित] भुक्त, भक्षित, "खाउग्गिरणा—" (गा ६६८ ; भवि) ।
खाअ वि [खात] १ खुदा हुआ, २ न. खुदा हुआ जलाशय ; "खाओदगाइं" (कप्प) । ३ ऊपर में विस्तार वाली और नीचे में संकट ऐसी परिखा ; ४ ऊपर और नीचे समान रूप मे खुदी हुई परिखा ; (औप) । ५ खाई, परिखा ; (पाअ) ।
खाइ स्त्री [खाति] खाई, परिखा ; (सुपा ३३४) ।
खाइ स्त्री [ख्याति] प्रसिद्धि, कीर्ति ; (सुपा ५२६ ; ठा ३, ४) ।
खाइ [दे] देखो **खाइं**; (औप) ।
खाइअ देखो **खइअ** = क्षायिक ; (विसे ४९ ; २१७५ ; सत्त ६७ टी) ।
खाइअ वि [खादित] खाया हुआ, भुक्त, भक्षित ; (प्रापनिर १ १) ।
खाइआ स्त्री [दे. खातिका] खाई, परिखा; (दे २, ७३ ; पाअ ; सुपा ५२६ ; भग ५, ७ ; पगह २, ५) ।
खाइं अ [दे] १—२ वाक्य की शोभा और पुनः शब्द के अर्थ का सूचक अव्यय ; (भग ५, ४ ; औप) ।
खाइग देखो **खाइअ** = क्षायिक ; (सुपा ५५१) ।
खाइम न [खादिम] अन्न-वर्जित फल, औषध वगैरः खाद्य चीज; (सम ३९; ठा ४२; औप) ।
खाइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-संबन्धी; (हे १,६७) ।
खाओवसम } देखो **खओवसमिय** ; (सुपा ५५१ ;
खाओवसमिअ } ६४८ ; सम्य २३) ।
खाडइअ वि [दे] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित ; (दे २, ७३) ।
खाडखड पुं [खाडखड] चौथी नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६) ।
खाडहिला स्त्री [दे] एक प्रकार का जानवर, गिलहरी, गिल्ली ; (पगह १, १ उप पृ २०५ ; विसे ३०४ टी) ।
खाण न [खादन] भोजन, भक्षण ; "खाणेण अ पाणेण अ तह गहिओ मंडलो अडअणाए" (गा ६६२ ; पउम १४, १३९) ।
खाण न [ख्यान] कथन, उक्ति ; (राज) ।
खाणि स्त्री [खानि] खान, आकर ; (दे २, ६६ ; कुमा ; सुपा ३४८) ।
खाणिअ वि [खानित] खुदवाया हुआ , (हे ३, ५७) ।
खाणी देखो **खाणि** ; (पाअ) ।

खाणु } पुं [**स्थाणु**] स्थाणु, ठूठा वृक्ष; (पण्ह २, ५,
खाणुय } हे २, ७ ; कस)।

खाम सक [**क्षमय्**) खमाना, माफी माँगना। खामेइ ; (भग)। कर्म—खामिज्जइ, खामीअइ , (हे ३, १५३)। संकृ— **खामेत्ता** ; (भग)।

खाम वि [**क्षाम**] १ कृश, दुर्वल ; " खामपंडुकवोल " (उप ६८६ टी ; पाअ)। २ क्षीण, अशक्त, (दे ६, ४६)

खामणा स्त्री [**क्षमणा**] क्षमापना, माफी माँगना, क्षमा-याचना ; (सुपा ५६४ , विवे ७६)।

खामिय वि [**क्षमित**] १ जिसके पास क्षमा माँगी गई हो वह, खमाया हुआ ; (विसे २३८८ ; हे ३, १५२)। २ सहन किया हुआ , ३ विलम्बित , विलम्ब किया हुआ ; " तिण्णि अहोरत्ता पुण न खामिया मे कयंतेण " (पउम ४३, ३१ ; हे-३, १५३)।

खार पुं [**क्षार**] १ क्षरण, झरना, संचलन , (ठा ८)। २ भस्म, खाक ; (गाया १, १२) । ३ खार, क्षार ; लवण-विशेष ; (सूत्र १, ७)। ४ लवण, नोन ; (वृह ४)। ५ जानवर-विशेष ; (पण्ण १)। ६ सर्जिका, सज्जी; (सूत्र १, ४, २)। ७ वि कटुक स्वाद वाला, कटुक चीज, (पण्ण १७—पत्र ५३०)। ८ खारी चीज, लवण स्वाद वाली वस्तु; (भग ७, ६; सूत्र १, ७)। °**तउसी** स्त्री [°**त्रपुषी**] कटु तपुषी, वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १७)। °**तिल्ल** न [°**तैल**] खारे से संस्कृत तैल ; (पण्ह २, ५)। °**मेह** पु [°**मेघ**] क्षार रस वाले पानी की वर्षा ; (भग ७, ६)। °**वत्तिय** वि [°**पात्रिक**] क्षार-पात्र में जिमाया हुआ; २ क्षार-पात्र का आधार-भूत ; (औप)। °**वत्तिय** वि [°**वृत्तिक**] खार में फेंका हुआ, खारसे सिञ्चा हुआ ; (औप ; दसा ६)। °**वावी** स्त्री [°**वापी**] क्षार से भरी हुई वापी ; (पण्ह १,१)।

खारंफिडी स्त्री [**दे**] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष ; (दे २, ७३)।

खारदूसण वि [**खारदूषण**] खरदूषण का, खरदूषण-संबन्धी ; (पउम ४५, १५)।

खारय न [**दे**] मुकुल, कली ; (दे २,७३)।

खारायण पुं [**क्षारायण**] १ ऋषि-विशेष ; २ माण्डव्य गोत्र की शाखाभूत एक गोत्र ; (ठा ७)।

खारि स्त्री [**खारि**] एक प्रकार का नाप; (गा ८१२)।

खारिंभरी स्त्री [**खारिम्भरी**] खारी-परिमित वस्तु जिसमें अट सके ऐसा पात्र भर कर दूध देने वाली ; (गा ८१२)।

खारिय वि [**क्षरित**] १ स्रावित, झराया हुआ, (वव ६)। २ पानी में घिसा हुआ ; (भवि)।

खारी देखो **खारि** ; (गा ८१२ ; जो १)।

खारुगणिय पु [**क्षारुगणिक**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ जाति ; (भग १२, २)।

खारोदा स्त्री [**क्षारोदा**] नदी-विशेष ; (राज)।

खाल सक [**क्षालय्**] धोना, पखारना, पानी से साफ करना। कृ—**खालणिज्ज** ; (उप ३२६)।

खाल स्त्रीन [**दे**] नाला, मोरी, अशुचि निकलने का मार्ग ; (ठा २, ३)। स्त्री —**खाला** ; (कुमा)।

खालण न [**क्षालन**] प्रक्षालन, पखारना ; (सुपा ३२८)।

खालिअ वि [**क्षालित**] धौत, धोया हुआ ; (ती १३)।

खावणा स्त्री [**ख्यापना**] प्रसिद्धि, प्रकथन ; "अक्खाणं खावणाभिहाणं वा" (विसे)।

खावियंत वि [**खाद्यमान**] जिसको खिलाया जाता हो वह, "कागणिमंसाइं खावियंतं" (विपा १, २—पत्र २४)।

खावियग वि [**खादितक**] जिसको खिलाया गया हो वह ; "कागणिमंसखावियगा" (औप)।

खावेंत वि [**ख्यापयत्**] प्रख्याति करता हुआ, प्रसिद्धि करता, (उप ८३३ टी)।

खास पुं [**कास**] रोग-विशेष, खाँसी की बिमारी, खाँसी ; (विपा १,१ ; सुपा ४०४ , सण)।

खासि वि [**कासिन्**] खाँसी का रोग वाला; (सुपा ५७६)।

खासिअ न [**कासित**] खाँसी, खाँसना ; (हे १,१८१)।

खासिअ पुं [**खासिक**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ-जाति ; (पण्ह १, १ —पत्र १४ ; इक ; सूत्र १, ५, १)।

खिइ स्त्री [**क्षिति**] पृथिवी, धरा ; (पउम २०, १५६ ; स ४१६)। °**गोयर** पुं [°**गोचर**] मनुष्य, मानुष, आदमी ; (पउम ५३, ४३)। °**पइट्ठ** न [°**प्रतिष्ठ**] नगर-विशेष ; (स ६)। °**पइट्ठिय** न [°**प्रतिष्ठित**] १ इस नाम का एक नगर ; (उप ३२० टी ; स ७)। २ राजगृह नाम का नगर, जो आजकल विहार में 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है ; (ती १०)। °**सार** पुं [°**सार**] इस नाम का एक दुर्ग ; (पउम ८०, ३)।

खिंखिणिया स्त्री [**किङ्किणिका**] क्षुद्र घण्टिका ; (उवा)।

खिंखिणी स्त्री [**किङ्किणी**] ऊपर देखो ; (ठा १० ; णाया १, १ ; अजि २७) ।

खिंखिणी स्त्री [**दे**] शृगाली, स्त्री-सियार, (दे २, ७४) ।

खिंग पु [**खिङ्ग**] रंडीबाज, व्यभिचारी ; "अणेगखिंगज-णउव्वासियरसणे" (रंभा) ।

खिंस सक [**खिंस्**] निन्दा करना, गर्हा करना, तुच्छ करना । खिंसए; (आचा) । कर्म—खिंसिज्जइ; (वृह १) । कवकृ—**खिंसिज्जंत** ; (उप ५८८) । कृ—**खिंसणिज्ज**; (णाया १,३) ।

खिंसण न [**खिंसन**] अवर्णवाद, निन्दा, गर्हा , (औप) ।

खिंसणा स्त्री [**खिंसना**] निन्दा, गर्हा ; (औप ; उप १३४ टी) ।

खिंसा स्त्री [**खिंसा**] ऊपर देखो ; (ओघ ६० ; द्र ४२) ।

खिंसिय वि [**खिंसित**] निन्दित, गर्हित ; (ठा ६) ।

खिक्खिंड पु [**दे**] कृकलास, गिरगिट, सरट; (दे २, ७४)।

खिक्खियंत वि [**खिखीयमान**] 'खि-खि' आवाज करता ; (पगह १,३—पत्र ४६) ।

खिक्खिरी स्त्री [**दे**] डोम वगैरः की स्पर्श रोकने की लकडी ; (दे २, ७३) ।

खिच्च पुंन [**दे**] खीचडी, कृसरा ; (दे १, १३४) ।

खिज्ज अक [**खिद्**] १ खेद करना, अफसोस करना । २ उद्विग्न होना, थक जाना । खिज्जइ, खिज्जए ; (स ३४ , गउड, पि ४५७) । कृ—**खिज्जियव्व** ; (महा ; गा ५१३) ।

खिज्जणिया स्त्री [**खेदनिका**] खेद- क्रया, अफसोस, मन का उद्वेग ; (णाया १, १६—पत्र २०२) ।

खिज्जिअ न [**दे**] उपालम्भ, उलहना ; (दे २, ७४) ।

खिज्जिअ वि [**खिन्न**] १ खेद-प्राप्त ; २ न. खेद ; (स ५५५) । ३ प्रणय-जन्य रोष ; (णाया १,६—पत्र १६५) ।

खिज्जिअय न [**खेदितक**] छन्द-विशेष ; (अजि ७) ।

खिज्जिर वि [**खेदितृ**] खेद करने वाला, खिन्न होने की आदत वाला ; (कुमा ७, ६०) ।

खिड्ड न [**खेल**] खेल, क्रीड़ा, मजाक ; "खिड्डेण मए भणियं एयं" (सुपा ३०२) । "बालत्तणं खिड्डपरो गमेइ" (सत ६८) । °**कर** वि [°**कर**] खेल करने वाला, मजाक करने वाला ; (सुपा ७८) ।

खिण्ण वि [**खिन्न**] १ खिन्न, खेद-प्राप्त ; २ श्रान्त, थका हुआ ; (दे १, १२४ ; गा २६६) ।

खिण्ण देखो **खीण** ; (प्राप) ।

खित्त वि [**क्षिप्त**] १ फेंका हुआ ; (सुर ३ १०२ ; सुपा ३५७) । २ प्रेरित ; (दे १, ६३) । °**इत्त**, °**चित्त** वि [°**चित्त**] भ्रान्त-चित्त, विक्षिप्त-मनस्क, पागल ; (ठा ५, २ ; ओघ ४६७ ; ठा ५, १) । °**मण** वि [°**मनस्**] चित्त-भ्रम वाला ; (महा) ।

खित्त देखो **खेत्त** ; (अणु ; प्रासू ; पडि) । °**देवया** स्त्री [°**देवता**] क्षेत्र का अधिष्ठायक देव ; (श्रा ४७) । °**वाल** पु [°**पाल**] देव-विशेष, क्षेत्र-रक्षक देव , (सुपा १५२) ।

खित्तय न [**क्षिप्तक**] छन्द-विशेष ; (अजि २४ ; २५) ।

खित्तय न [**दे**] १ अनर्थ, नुकसान ; २ वि. दीप्त, प्रज्वलित, (दे २, ७६) ।

खित्तिअ वि [**क्षैत्रिक**] १ क्षेत्र-संबन्धी ; २ पुं. व्याधि-विशेष ; "तालुपुडं गरलाणं जह बहुवाहीण खित्तिओ वाही" (श्रा १२) ।

खिन्न देखो **खिण्ण**=खिन्न , (पात्र ; महा) ।

खिप्प वि [**क्षिप्र**] शीघ्र, त्वरा-युक्त । °**गइ** वि [°**गति**] १ शीघ्र गति वाला । २ पुं. अमितगति इन्द्र का एक लोक-पाल ; (ठा ४, १) ।

खिप्पं अ [**क्षिप्रम्**] तुरन्त, शीघ्र, जल्दी ; (प्रासू ३७ , पडि) ।

खिप्पंत देखो **खिव** ।

खिप्पामेव अ [**क्षिप्रमेव**] शीघ्र ही, तुरन्त ही; (जं ३ ; महा) ।

खिर अक [**क्षर्**] १ गिरना, गिर पड़ना । २ टपकना, झरना । खिरइ; (हे ४, १७३) । वकृ—**खिरंत**; (पउम १०, ३२)।

खिरिय वि [**क्षरित**] १ टपका हुआ ; २ गिरा हुआ ; (पात्र) ।

खिल न [**खिल**] अकृष्ट-भूमि, ऊषर जमीन; (पगह १, २—पत्र २६) ।

खिलीकरण न [**खिलीकरण**] खाली करना, शून्य करना; "जुवजणधीरखिलीकरणकवाडओ वेसवाडओ" (मै. ८) ।

खिल्ल सक [**कीलय्**] रोकना, रुकावट डालना । "भणइ इमाणं बन्धव ! गमणं खिल्लेमि कड्ढिउं रहं" (सुपा १३७)।

खिल्ल अक [**खेल्**] क्रीड़ा करना, खेल करना, तमाशा करना । वकृ—**खिल्लंत** ; (सुपा ३६६) ।

खिल्लण न [**खेलन**] खिलौना, खेलनक ; (सुर १५,२०८) ।

खिल्लहड } पु [**दे. खिल्लहड**] । कन्द-विशेष, (श्रा २० ; धर्म २) ।
खिल्लहल

खिव सक [**क्षिप्**] १ फेंकना। २ प्रेरना। ३ डालना। खिवइ, खिवेइ, (महा)। वकृ—**खिवेमाण**, (णाया १, २)। कवकृ—**खिप्पंत**; (काल)। संकृ—**खिविय**; (कम्म ४, ७४)। कृ—**खिवियव्व**, (सुपा १५०)।
खिवण न [**क्षेपण**] १ फेंकना, क्षेपण; (स १२,३६)! २ प्रेरण, इधर उधर चलाना; (से ५, ३)।
खिविय वि [**क्षिप्त**] १ क्षिप्त, फेंका हुआ; २ प्रेरित; (सुपा २)।
खिव्व देखो **खिव**। संकृ—"अह **खिव्विऊण** सव्व, पोए ते पत्थिया रयणभूमिं" (धम्म १२ टी)।
खिस अक [**दे**] सरकना, खिसकना। संकृ—"नियगामे गच्छतस्स **खिसिऊण** वाहणाहितो पडियं" (सुपा ५२७; ५२८)।
खीण देखो **खिण्ण**=खिन्न, "कोवेत्थ सुरयखीणो" (पउम ३२, ३)।
खीण वि [**क्षीण**] १ क्षय-प्राप्त, नष्ट, विच्छिन्न; (सम्म ६० ; हे २, ३)। २ दुर्बल, कृश; (भग २, ५)। °**दुह** वि [°**दुःख**] दुःख-रहित; (सम १५३)। °**मोह** वि [°**मोह**] १ जिसका मोह नष्ट हो गया हो वह; (ठा ३, ४)। २ वि. बारहवाँ गुण-स्थानक; (सम २६)। °**राग** वि [°**राग**] १ वीतराग, राग-रहित; २ पुं. जिन-देव, तीर्थंकर देव; (गच्छ १)।
खीयमाण वि [**क्षीयमाण**] जिसका क्षय होता जाता हो वह; (गा ६८६ टी)।
खीर न [**क्षीर**) १ दुग्ध, दूध; (हे २, १७; प्रासू १३; १६८)। २ पानी, जल; (हे २, १७)। ३ पु क्षीरवर समुद्र का अधिष्ठायक देव; (जीव ३)। ४ समुद्र-विशेष, क्षीर-समुद्र; (पउम ६६, १८)। °**कयंब** पुं [°**कदम्ब**] इस नाम का एक ब्राह्मण-उपाध्याय; (पउम ११, ६)। °**काओली** स्त्री [°**काकोली**] वनस्पति-विशेष, खीरविदारी; (पण्ण १)। °**जल** पुं [°**जल**] क्षीर-समुद्र, समुद्र-विशेष; (दीव)। °**जलनिहि** पुं [°**जलनिधि**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सुपा २६५)। °**दुम**, °**द्दुम** पुं [°**द्रुम**] दूध वाला पेड, जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति; (ओघ ३४६; निचू १)। °**धाई** स्त्री [**धात्री**] दूध पिलाने वाली दाई; (णाया १,१)। °**पूर** पु [°**पूर**] उबलता हुआ दूध; (पण्ण १७)। °**प्पभ** पुं [**प्रभ**] क्षीरवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °**मेह** पुं [°**मेघ**] दूध-समान स्वाद वाले पानी की वर्षा; (तित्थ)। °**वई** स्त्री [°**वती**] प्रभूत दूध देने वाली; (बृह ३)। °**वर** पु [°**वर**] द्वीप-विशेष; (जीव ३)। °**वारि** न [°**वारि**] क्षीर समुद्र का जल; (पउम ६६, १८)। °**हर** पुं [°**गृह**, °**धर**] क्षीर-सागर; (वज्जा २४)। °**ासव** पुं [°**ाश्रव**] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से वचन दूध की तरह मधुर मालूम हो, २ ऐसी लब्धि वाला जीव; (पराह २,१; औप)।
खीरइय वि [**क्षीरकित**] सजात-क्षीर, जिसमें दूध उत्पन्न हुआ हो वह; "तए णं साली पत्तिया वत्तिआ गब्भिया पसूया आगयगन्धा खीर(?र)इया बद्धफला" (णाया १, ७)।
खीरि वि [**क्षीरिन्**] १ दूध वाला; २ पुं. जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति; (उप १०३१ टी)।
खीरिज्जमाण वि [**क्षीर्यमाण**] जिसका दोहन किया जाता हो वह; (आचा २, १, ४)।
खीरिणी स्त्री [**क्षीरिणी**] १ दूध वाली; (आचा २, १, ४)। २ वृक्ष-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३१)।
खीरी स्त्री [**क्षैरेयी**] खीर, पक्वान्न-विशेष; (सुपा ६३६, पाअ)।
खीरोअ पुं [**क्षीरोद**] समुद्र-विशेष, क्षीर-सागर; (हे २, १८२; गा ११७; गउड; उप ५३० टी; स ३४४)।
खीरोआ स्त्री [**क्षीरोदा**] इस नाम की एक नदी; (इक; ठा २, ३)।
खीरोद देखो **खीरोअ**; (ठा ७)।
खीरोदक, **खीरोदय** पु [**क्षीरोदक**] क्षीर-सागर; (णाया १, ८; औप)।
खीरोदा देखो **खीरोआ**; (ठा ३, ४—पत्र १६१)।
खील, **खीलग**, **खीलय** पुं [**कील**, °**क**] खीला, खूँट, खूँटी; (स १०६; सूत्र १, ११; हे १, १८१; कुमा)। °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] मार्ग-विशेष, जहां धूली ज्यादः रहने से खूँट के निशान बनाये गये हों; (सूत्र १, ११)।
खीलावण न [**क्रीडन**] खेल कराना, क्रीडा कराना। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] खेल-कूद कराने वाली दाई; (णाया १, १—पत्र ३७)।
खीलिया स्त्री [**कीलिका**] छोटी खूँटी; (आवम)।
खीव पुं [**क्षीव**] मद-प्राप्त, मदोन्मत्त; (दे ८, ६६)।
खु अ [**खलु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ निश्चय, अवधारण; २ वितर्क, विचार; ३ संशय, संदेह; ४ संभा-

वना ; ५ विस्मय, आश्चर्य ; (हे २, १६८ ; षड् ; गा ६ ; १४२ ; ४०१ ; स्वप्न ६ ; कुमा) ।

खु° देखो **खुहा** ; (पण्ह २, ४ ; सुपा १६८ ; णाया १, १३) ।

खुइ स्त्री [**क्षुति**] १ छीक ; २ छीक का निशान ; (णाया १, १६ ; भग ३, १) ।

खुंखुणय पुं [**दे**] नाक का छिद्र ; (दे २, ७६; पाअ) ।

खुंखुणी स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला ; (दे २, ७६) ।

खुंट पुं [**दे**] खूँट, खूँटी । °**मोडय** वि [°**मोटक**] १ खूँटे को मोडने वाला, उससे छूटकर भाग जाने वाला, २ पुं. इस नाम का एक हाथी ; (नाट—मृच्छ ८४) ।

खुंडय वि [**दे**] स्खलित; स्खलना-प्राप्त ; (दे २, ७१) ।

खुंपा स्त्री [**दे**] वृष्टि को रोकने के लिए बनाया जाता एक तृणमय उपकरण ; (दे २, ७५) ।

खुंभण वि [**क्षोभण**] चोभ उपजाने वाला ; (पण्ह १, १—पत्र २३) ।

खुज्ज } वि [**कुब्ज**] १ कूबड़ा; २ वामन; (हे १, १८१;
खुज्जय } गा ५३४) । ३ वक्र, टेढा ; (ओघ) । ४ एक पार्श्व से हीन ; (पव ११०) । ५ न. संस्थान-विशेष, शरीर का वामन आकार ; (ठा ६ ; सम १४६ ; औप) । स्त्री—**खुज्जा**; (णाया १, १) ।

खुज्जिय वि [**कुब्जिन्**] कूबड़ा ; (आचा) ।

खुट्ट सक [**तुड्**] १ तोड़ना, खण्डित करना, टुकड़ा करना । २ अक. खूटना, चीण होना । ३ टूटना, त्रुटित होना । खुट्टइ ; (नाट—साहित्य २२६ ; हे ४, ११६)। खुट्टंति, (उव) ।

खुट्ट वि [**दे**] त्रुटित, खण्डित, छिन्न ; (हे २, ७४ ; भवि) ।

खुड देखो **खुट्ट=तुड्** । खुडइ ; (हे ४, ११६) । खुडेंति; (से ८, ४८) । वकृ—" पवगभिन्नमत्थया खुडंतदित्तमोत्तिया " (पउम ५३, ११२ ; स ४४८) । संकृ—**खुडिऊण** ; (स ११३) ।

खुडक्किअ [**दे**] देखो **खुडुक्किअ** ; (गा २२६) ।

खुडिअ वि [**खण्डित**] त्रुटित, खण्डित, विच्छिन्न ; (हे १, ५३ ; षड्)

खुडुक्क अक [**दे**] १ नीचे उतरना । २ स्खलित होना । ३ शल्य की तरह चुभना । ४ गुस्सा से मौन रहना । खुडुक्कइ ; (हे ४, ३६५) । वकृ—**खुडुक्कंत** ; (कुमा) ।

खुडुक्किअ वि [**दे**] १ शल्य की तरह चुभा हुआ, खटका हुआ ; (उप ३५५) । २ रोष-मूक, गुस्सा से मौन धारण करने वाला । स्त्री—°**आ** ; (गा २२६ अ) ।

खुड्ड } वि [**दे. क्षुद्र, क्षुल्लक**] १ लघु, छोटा, (दे २,
खुड्डग } ७४ ; कप्प ; दस ३ , आचा २,२,३ ; उत्त १) । २ नीच, अधम, दुष्ट ; (पुप्फ ४४१) । ३ पुं. छोटा साधु, लघु शिष्य ; (सूअ १, ३, २) । ४ पुंन. अंगुलीय-विशेष, एक प्रकार की अंगूठी ; (औप ; उप २०४) ।

खुड्डमड्डा अ [**दे**] १ बहु, अत्यन्त ; २ फिर फिर ; (निचू २०) ।

खुड्डय देखो **खुड्ड** ; (हे २, १७४; षड् , कप्प; सम ३५ ; णाया १, १) ।

खुड्डाग } देखो **खुड्डग** ; (औप , पण्ण ३६ ; णाया
खुड्डाय } १, ७ ; कप्प) । °**णियंठ** न [°**नैर्ग्रन्थ**] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवाँ अध्ययन ; (उत्त ६) ।

खुड्डिअ न [**दे**] सुरत, मैथुन; संभोग ; (दे २, ७५)।

खुड्डिआ स्त्री [**दे. क्षुद्रिका**] १ छोटी, लघु; (ठा २, ३; आचा २, २, ३)। २ डवरा, नहीं खुदा हुआ छोटा तलाव; (जं १ ; पण्ह २, ५) ।

खुणुक्खुडिआ स्त्री [**दे**] घ्राण, नाक, नासिका ; (दे २, ७६) ।

खुण्ण वि [**क्षुण्ण**] १ मर्दित ; (गा ४४५; निचू १) । २ चूर्णित ; (दे ५, ४५) । ३ मग्न, लीन ; " अजरामरपहखुण्णा साहू सरणं सुकयपुण्णा" (चउ ३८ ; संथा)।

खुण्ण वि [**दे**] परिवेष्टित ; (दे २, ७५) ।

खुत्त वि [**दे**] निमग्न, डूबा हुआ ; (दे २, ७४ ; णाया १, १ ; गा २७६ ; ३२४ ; संथा ; गउड) ।

°**खुत्तो** अ [**कृत्वस्**] वार, दफा; (उव; सुर १४; ६१)।

खुद्द वि [**क्षुद्र**] तुच्छ, नीच, दुष्ट, अधम ; (पण्ह १, १ ; ठा ६) ।

खुद्द न [**क्षौद्रय**] क्षुद्रता, तुच्छता, नीचता; (उप ६१५) ।

खुद्दिमा स्त्री [**क्षुद्रिमा**] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७—पत्र ३६३) ।

खुद्ध वि [**क्षुब्ध**] चोभ-प्राप्त, घवड़ाया हुआ ; (सुपा ३२५) ।

खुधिय वि [**क्षुधित**] क्षुधातुर, भूखा; (सूअ १, ३,१) ।

खुन्न देखो **खुण्ण**=क्षुण्ण ; (पि ५६८) ।
खुन्न देखो **खुण्ण**=(दे) ; (पाअ) ।
खुप्प अक [**मस्ज्**] डूबना, निमग्न होना । खुप्पइ ; (हे ४, १०१) । वकृ—**खुप्पंत** ; (गउड ; कुमा ; ओघ २३ ; से १३, ६७) । हेकृ—**खुप्पिउं** ; (तंदु) ।
खुप्पिवासा स्त्री [**क्षुत्पिपासा**] भूख और प्यास ; (पि ३१८) ।
खुब्भ अक [**क्षुभ्**] १ क्षोभ पाना, क्षुभित होना । २ नीचे डूबना । वकृ—**खुब्भंत** ; (ठा ७—पत्र ३८३) ।
खुब्भण न [**क्षोभण**] क्षोभ, घबड़ाहट ; (राज) ।
खुभ अक [**क्षुभ्**] डरना, घवड़ाना । खुभइ ; (रयण १८) । कृ—**खुभियव्व**, (पण्ह २, ३) ।
खुभिय वि [**क्षुभित**] १ क्षोभ-युक्त, घवड़ाया हुआ ; (पण्ह १, ३) । २ न. क्षोभ, घबड़ाहट ; (ओघ) । ३ कलह, झगड़ा ; (वृह ३) ।
खुम्मिय वि [**दे**] नमित, नमाया हुआ ; (णाया १,१—पत्र ४७) ।
खुर पुं [**खुर**] जानवर के पाँव का नख ; (सुर १, २४८ ; गउड ; प्रासू १७१) ।
खुर पुं [**क्षुर**] छूरा, अस्तूरा ; (णाया १, ८ ; कुमा ; प्रयौ १०७) । °**पत्त** न [°**पत्र**] अस्तूरा, छूरा ; (विपा १, ६) ।
खुरप्प पुं [**क्षुरप्र**] १ घास काटने का अस्त्र-विशेष, खुरपा ; (सम १३४) । २ शर-विशेष, एक प्रकार का बाण ; (वेणी ११७) ।
खुरसाण पुं [**खुरशान**] १ देश-विशेष ; (पिंग) । २ खुरशान देश का राजा ; (पिंग) ।
खुरहखुडी स्त्री [**दे**] प्रणय-कोप ; (षड्) ।
खुरासाण देखो **खुरसाण** ; (पिंग) ।
खुरि वि [**खुरिन्**] खुर वाला जानवर ; (आव ३) ।
खुरु पुं [**खुरु**] प्रहरण-विशेष, आयुध-विशेष ; (सुर १३, १६३) ।
खुरुडुक्खुडी स्त्री [**दे**] प्रणय-कोप ; (दे २, ७६) ।
खुरुप्प देखो **खुरप्प** ; (पउम ५६, १६ ; स ३८४) ।
खुलिअ देखो **खुडिअ** ; (पिंग) ।
खुलुह पुं [**दे**] गुल्फ, पैर की गाँठ, फीली ; (दे २, ७५ ; पाअ) ।
खुल्ल न [**दे**] कुटी, कुटीर ; (दे २, ७४) ।
खुल्ल } वि [**क्षुल्ल**, °**क**] १ छोटा, लघु, क्षुद्र ; (पण्ण १) ।
खुल्लग } २ पुं द्वीन्द्रिय जीव-विशेष ; (जीव १) ।
खुल्लण (अप) देखो **खुड्ड** ; (पिंग) ।
खुल्लय वि [**क्षुल्लक**] १ लघु, क्षुद्र, छोटा ; (भवि) । २ कपर्दक-विशेष, एक प्रकार की कौडी ; (णाया १, १८—पत्र २३५) ।
खुल्लिरी स्त्री [**दे**] संकेत ; (दे २, ७०) ।
खुव पुं [**क्षुप**] जिसकी शाखा और मूल छोटे होते है ऐसा एक वृक्ष ; (णाया १, १—पत्र ६५) ।
खुवय पुं [**दे**] तृण-विशेष, कण्टकि-तृण ; (दे २, ७५) ।
खुव्व देखो **खुभ** । खुव्वइ ; (षड्) ।
खुव्वय न [**दे**] पत्ते का पुड़वा ; (वव २) ।
खुह देखो **खुभ** । कृ—**खुहियव्व** ; (सुपा ६१६) ।
खुहा स्त्री [**क्षुध्**] भूख, बुभुक्षा ; (महा ; प्रासू १७३) । °**परिसह**, °**परीसह** पुं [°**परिषह**, °**परीषह**] भूख की वेदना को शान्ति से सहन करना ; (उत्त २ ; पंचा १) ।
खुहिअ वि [**क्षुभित**] १ क्षोभ-प्राप्त ; (से १, ४६ ; सुपा २४१) । २ क्षोभ, संत्रास ; (ओघ ७) ।
खूण न [**क्षूण**] नुकसान, हानि ; (सुर ४, ११३ ; महा) । २ अपराध, गुनाह ; (महा) । ३ न्यूनता, कमी ; (सुपा ७ ; ४३०) ।
खेअ सक [**खेदय्**] खिन्न करना, खेद उपजाना । खेएइ ; (विसे १४७२ ; महा) ।
खेअ पु [**खेद**] १ खेद, उद्वेग, शोक ; (उप ७२८ टी) । २ तकलीफ, परिश्रम ; (स ३१५) । ३ संयम, विरति ; (उत्त १५) । ४ थकावट, श्रान्ति ; (आचा) । °**ण्ण**, °**न्न** वि [°**ज्ञ**] निपुण, कुशल, चतुर, जानकार ; (उप ६०८ ; ओघ ६४७) ।
खेअ देखो **खेत्त** ; (सुअ १, ६ , आचा) ।
खेअ पुं [**क्षेप**] त्याग, मोचन ; (से १२, ४८) ।
खेअण न [**खेदन**] १ खेद, उद्वेग । २ वि. खेद उपजाने वाला ; (कुमा) ।
खेअर देखो **खयर** ; (कुमा ; सुर ३, ६) । °**हिव** पुं [°**धिप**] विद्याधरों का राजा ; (पउम २८, ५७) । °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] विद्याधरों का राजा ; (पउम २८, ४४) ।
खेअरिंद पुं [**खेचरेन्द्र**] खेचरों का राजा ; (पउम ६, ५२) ।
खेअरी देखो **खहयरी** ; (कुमा) ।

खेआलु वि [दे] १ निःसह, मन्द, आलसी ; २ अ-सहिष्णु, ईर्ष्यालु ; (दे २, ७७) ।
खेइय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ; (स ६३४) ।
खेचर देखो **खेअर** ; (ठा ३, १) ।
खेज्जणा स्त्री [खेदना] खेद–सूचक वाणी, खेद ; (णाया १, १८) ।
खेड सक [कृष्] खेती करना, चास करना । खेडइ ; (सुपा २७६) । "अह अन्नया य दुन्निवि हलाइं खेडंति अप्प-णच्चेव" (सुपा २३७) ।
खेड न [खेट] १ धूली का प्राकार वाला नगर ; (औप , पण्ह १, २) । २ नदी और पर्वतों से वेष्टित नगर ; (सुअ २, २) । ३ पुं. मृगया, शिकार ; (भवि) ।
खेडग न [खेटक] फलक, ढाल ; (पण्ह १, ३) ।
खेडण न [कर्षण] खेती करना ; (सुपा २३७) ।
खेडण न [खेटन] खदेडना, पीछे हटाना; (उप २२६) ।
खेडणअ न [खेलनक] खिलौना; (नाट—रत्ना ६२) ।
खेडय पुं [क्ष्वेटक] १ विष, जहर ; (हे २, ६) । २ ज्वर-विशेष ; (कुमा) ।
खेडय वि [स्फेटक] नाशक, नाश करने वाला , (हे २, ६, कुमा) ।
खेडय न [खेटक] छोटा गाँव ; (पाअ ; सुर २, १६२) ।
खेडावग वि [खेलक] खेल करने वाला, तमासगिर (उप पृ १८८) ।
खेडिअ वि [कृष्ट] हल से विदारित , (दे १, १३६) ।
खेडिअ पुं [स्फेटिक] १ नाश वाला, नश्वर ; २ अना-दर वाला ; (हे २, ६) ।
खेड्डु अक [रम्] क्रीडा करना, खेल करना। खेड्डइ ; (हे ४, १६८)। खेड्डंति ; (कुमा) ।
खेड्डु, **खेड्डुय** न [खेल] १ क्रीडा, खेल, तमाशा, मजाक ; (हे २, १८४ ; महा; सुपा २७८ , स ५०६) । २ बहाना, छल ; "मयखेड्डुयं विहिऊण" (सुपा ५२३) ।
खेड्डा स्त्री [क्रीडा] क्रीडा, खेल, तमाशा ; (औप , पउम ८, ३७ ; गच्छ २) ।
खेड्डिया स्त्री [दे] वारी, दफा ; "भद्द! पच्छिमा खेड्डिया" (स ४८५) ।
खेत्त पुंन [क्षेत्र] १ आकाश ; (विसे २०८८) । २ कृषि-भूमि, खेत , (बृह १) । ३ जमीन, भूमि ; ४ देश, गाँव, नगर वगैरः स्थान , (कप्प ; पचू ; विसे) । ५ भार्या, स्त्री ; (ठा १०) । °**कप्प** पुं [°कल्प] १ देश का रिवाज ; (बृह ६) । २ क्षेत्र-संबन्धी अनुष्ठान ; ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें क्षेत्र-विषयक आचार का प्रतिपादन हो; (पंचू)। °**पलिओवम** न [°पल्योपम] काल का नाप-विशेष ; (अणु) । °**रिय** पु [°ार्य] आर्य भूमि में उत्पन्न मनुष्य , (पण्ण १) । देखो **खित्त**=क्षेत्र।
खेत्ति वि [क्षेत्रिन्] क्षेत्र वाला, क्षेत्र का स्वामी ; (विसे १४६२) ।
खेम न [क्षेम] १ कुशल, कल्याण, हित ; (पउम ६५, १७ ; गा ४६६ , भत्त ३६ ; रयण ६) । २ प्राप्त वस्तु का परिपालन ; (णाया १, ५) । ३ वि. कुशलता-युक्त, हित-कर, उपद्रव-रहित , (णाया १, १ ; दस ७) । ४ पुं पाटलिपुत्र के राजा जितशत्रु का एक अमात्य ; (आचू १) । °**पुरी** स्त्री [°पुरी] १:नगरी-विशेष, (पउम २०, ७)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी , (ठा २, ३) ।
खेमंकर पु [क्षेमङ्कर] १ कुलकर पुरुष-विशेष ; (पउम ३, ५२) । २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ कुलकर-पुरुष ; (सम १५३) । ३ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि, (पउम २१, ८०)। ५ वि. कल्याण-कारक, हित-जनक ; (उप २११ टी) ।
खेमंधर पु [क्षेमन्धर] १ कुलकर पुरुष-विशेष; (पउम ३, ५२) । २ ऐरवत क्षेत्र का पाँचवाँ कुलकर पुरुष-विशेष ; (सम १५३) । ३ वि. क्षेम-धारक, उपद्रव-रहित ; (राज)।
खेमय पु [क्षेमक] स्वनाम-प्रसिद्ध एक अन्तकृद् जैन मुनि ; (अंत) ।
खेमलिज्जिया स्त्री [क्षेमलिया] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प) ।
खेमा स्त्री [क्षेमा] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३) । २ क्षेमपुरी-नामक नगरी-विशेष; (पउम २०,१०) ।
खेरि स्त्री [दे] १ परिशाटन, नाश , "धणखेरिं वा" (बृह २) । २ खेद, उद्वेग ; ३ उत्कण्ठा, उत्सुकता ; (भवि) ।
खेल अक [खेल्] खेलना, क्रीड़ा करना, तमाशा करना । खेलइ ; (कप्पू) । खेलउ ; (गा १०६) । वकृ—**खेलंत** ; (पि २०६) ।
खेल पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ, निष्ठीवन, थूथू , (सम १० ; औप ; कप्प ; पडि) ।
खेलण, **खेलणय** न [खेलन, °क] १ क्रीडा, खेल । २ खिलौना ; (आक ; स १२७) ।

११)। °पसिण न [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे वस्त्र में देवता का आह्वान किया जाता है ; (ठा १०)।

खोमिय न [क्षौमिक] १ कपास का बना हुआ वस्त्र (ठा ३, ३)। २ सन का बना हुआ वस्त्र ; (कप्प)।

खोय देखो **खोद** ; (सम १५१ ; इक)।

खोर } न [दे] पात्र-विशेष, कचोलक ; (उप पृ ३१५ ,
खोरय } गंदि)।

खोल पुं [दे] १ छोटा गधा ; (दे २, ८०)। २ वस्त्र का एक देश ; (दे २, ८० ; ५, ३०; बृह १)। ३ मद्य का नीचला कीट-कर्दम ; (आचा २, १, ८ ; बृह १)।

खोल्ल न [दे] कोटर, गह्वर " खोल्लं कोत्थरं " (निचू १५)।

खोसलय वि [दे] दन्तुर, लम्बे और बाहर निकले हुए दाँत वाला ; (दे २,७७)।

खोह देखो **खोभ**=क्षोभय्। खोहइ ; (भवि)। वकृ—**खोहंत**; (से १५, ३३)। कवकृ—**खोहिज्जंत** ; (से २, ३)।

खोह देखो **खोभ** = क्षोभ ; (पगह १, ४ ; कुमा ; सुपा ३६७)।

खोहण देखो **खोभण** , (श्रा १२ ; सुपा ५०२)।

खोहिय देखो **खोमिय** ; (संग)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे खआराइसद्दसंकलणो
एआरहमो तरंगो समत्तो।
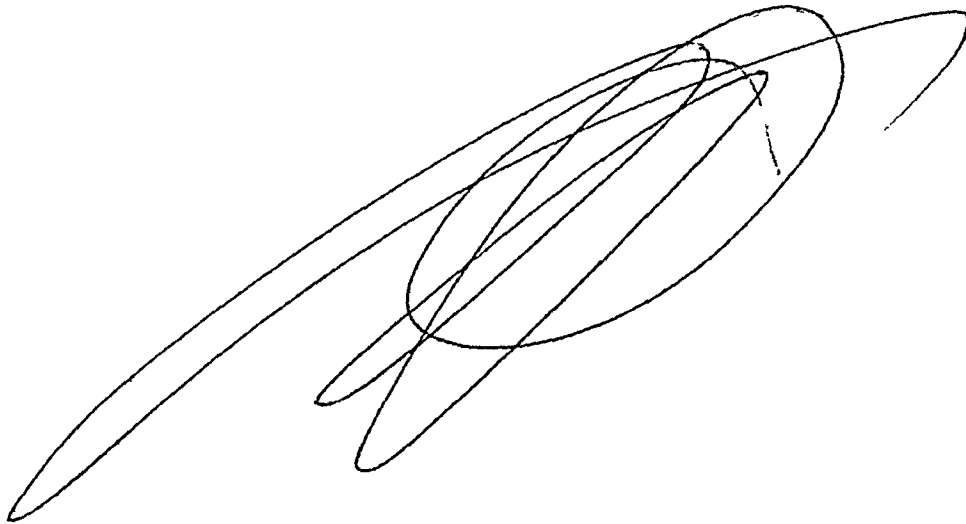
ग

ग पु [**ग**] व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है, (प्रामा; प्राप)।

°**ग** वि [°**ग**] १ जाने वाला; २ प्राप्त होने वाला, जैसे—पारग, नसग, (आचा ; महा)।

गइ स्त्री [**गति**] १ ज्ञान, अवबोध , (विसे २५०२)। २ प्रकार भेद ; (से १, ११)। ३ गमन, चलन, देशान्तर-प्राप्ति ; (कुमा)। ४ जन्मान्तर-प्राप्ति, भवान्तर-गमन ; (ठा १, १ , दं)। ५ देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक और मुक्त जीव की अवस्था, देवादि-योनि ; (ठा ५, ३)। °**तस** पुं [°**त्रस**] अग्नि और वायु के जीव , (कम्म ३. १३ ; ४, १६)। °**नाम** न [°**नामन्**] देवादि-गति का कारण-भत कर्म ; (सम ६७)। °**प्पवाय** पु [°**प्रपात**] १ गति की नियतता , (पण्ण १६)। २ ग्रन्थांश-विशेष ; (भग ८, ७)।

गइंद पुं [**गजेन्द्र**] १ ऐरावण हाथी, इन्द्र-हस्ती ; २ श्रेष्ठ हाथी ; (गउड ; कुमा)। °**पय** न [°**पद**] गिरनार पर्वत पर का एक जल-तीर्थ ; (ती ३)।

गउ } पुं [**गो**] बैल, वृषभ, सॉंड ; (हे १, १५८)।
गउअ } °**पुच्छ** पुंन [°**पुच्छ**] १ बैल का पूँछ , २ २ वाण-विशेष ; (कुमा)।

गउअ पुं [**गवय**] गो-तुल्य आकृति वाला जंगली पशु-विशेष ; (कुमा)।

गउआ स्त्री [**गो**] गैया, गौ ; (हे १, १५८)।

गउड पु [**गौड**] १ स्वनाम-ख्यात देश, बंगाल का पूर्वी भाग ; (हे १, २०२ ; सुपा ३८६)। २ गौड देश का निवासी ; (हे १, २०२)। ३ गौड देश का राजा ; (गउड ; कुमा)। °**वह** पुं [°**वध**] वाक्पतिराज का बनाया हुआ प्राकृत-भाषा का एक काव्य-ग्रन्थ ; (गउड)।

गउण वि [**गौण**] अ-प्रधान, अ-मुख्य ; (दे १, ३)।

गउणी स्त्री [**गौणी**] शक्ति-विशेष, शब्द की एक शक्ति ; (दे १, ३)।

गउरव देखो **गारव** ; (कुमा; हे १, १६३)।

गउरविय वि [**गौरवित**] गौरव-युक्त किया हुआ, जिसका आदर—सम्मान किया गया हो वह, "तज्जणयाइं तत्थागयाइं येवेहिं चेव दियहेहि, गउरवियाइं रयणायरेण" (सुपा ३५६ ; ३६०)।

गउरी स्त्री [**गौरी**] १ पार्वती, शिव-पत्नी; (सुपा १०६)। २ गौर वर्ण वाली स्त्री ; ३ स्त्री-विशेष ; (कुमा)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] पार्वती का पुत्र, स्कन्द, कार्तिकेय, (सुपा ४०१)।

गंअ देखो **गय** = गत ; " भीया जहागयगइं पडिवज्ज गंए" (रंभा)।

गंग पुं [**गङ्ग**] मुनि-विशेष, द्विक्रिय मत का प्रवर्तक आचार्य, (ठा ७ ; विसे २४२५)। °**दत्त** पु [°**दत्त**] १ एक जैन मुनि, जो षष्ठ वासुदेव के पूर्व-जन्म के गुरु थे; (स १५३)। २ नववें वासुदेव के पूर्वजन्म का नाम, (पउम २०, १७१)। ३ इस नाम का एक जैन श्रेष्ठी; (भग १६, ५)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] एक सार्थवाह की स्त्री का नाम ; (विपा १, ७)।

गंग° देखो **गंगा**। °**प्पवाय** पुं [°**प्रपात**] हिमाचल पर्वत पर का एक महान् ह्रद, जहा से गंगा निकलती है; (ठा २, ३)। °**सोअ** पु [°**स्रोतस्**] गंगा नदी का प्रवाह ; (पि ८५)।

गंगली स्त्री [**दे**] मौन, चुप्पी ; (सुपा २७८ ; ४८७)।

गंगा स्त्री [**गङ्गा**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध नदी ; (कस ; सम २७ ; कप्प)। २ स्त्री-विशेष ; (कुमा)। ३ गोशालक के मत से काल-परिमाण-विशेष ; (भग १५)। ४ गंगा नदी की अधिष्ठायिका देवी, (आवम)। ५ भीष्मपितामह की माता का नाम ; (णाया १, १६)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] हिमाचल पर्वत पर स्थित ह्रद-विशेष, जहा से गंगा निकलती है ; (ठा ८)। °**कूड** न [°**कूट**] हिमाचल पर्वत का एक शिखर , (ठा २, ३)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष, जहां गंगा-देवी का भवन है. (ठा २, ३)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] गगा की अधि-ष्ठायिका देवी, देवी-विशेष; (इक)। °**वत्त** पुं [°**वर्त्त**] आवर्त-विशेष ; (कप्प)। °**सय** न [°**शत**] गोशालक के मत में एक प्रकार का काल-परिमाण ; (भग १५)। °**सागर** पुं [°**सागर**] प्रसिद्ध तीर्थ-विशेष, जहां गंगा समुद्र में मिलती है; (उत्त १८)।

गंगेअ पुं [**गाङ्गेय**] १ गंगा का पुत्र, भीष्मपितामह ; (णाया १, १६; वेणी १०४)। २ द्वैक्रिय मत का प्रवर्तक आचार्य ; (आचू १)। ३ एक जैन मुनि, जो भगवान् पार्श्वनाथ के वंश के थे ; (भग ६, ३२)।

गंछ } पुं [**दे**] वरुड, इस नाम की एक म्लेच्छ जाति ;
गंछय } (दे २, ८४)।

गंज पु [**दे**] गाल ; (दे २, ८१)।

गंज पुं [**गञ्ज**] भोज्य-विशेष, एक प्रकार की खाद्य वस्तु ; (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] तृण, लकड़ी वगैरः इन्धन रखने का स्थान ; (निचू १५)।

गंजण न [**गञ्जन**] १ अपमान, तिरस्कार; (सुपा ४८०)।
"वगिणावि रणुप्पन्ना, वज्झति गया न चेव केसरिणो।
संभाविज्जइ मरणं, न गंजणं धीरपुरिसाणं" (वज्जा ४२)।
२ कलंक, दाग ; "गंजणरहिओ जम्मो" (वज्जा १८)।

गंजा स्त्री [**गञ्जा**] सुरा-गृह, मद्य की दुकान ; (दे २, ८५ टी)।

गंजिअ पु [**गाञ्जिक**] कल्य-पाल, दारू वेचने वाला, कलाल, (दे २, ८५ टी)।

गंजिअ वि [**गञ्जित**] १ पराजित, अभिभूत : "तग्गरिम-गंजिओ इव" (उप ९८६ टी)। २ हत, मारा हुआ, विनाशित ; (पिंग)। ३ पीड़ित , (हे ४, ४०९)।

गंजिल्ल वि [**दे**] १ वियाग-प्राप्त, वियुक्त ; २ भ्रान्त-चित्त, पागल ; (दे २, ८३)।

गंजोल वि [**दे**] समाकुल, व्याकुल , (षड्)।

गंजोल्लिअ वि [**दे**] १ रोमाञ्चित, जिसके राम खड़े हुए हों वह ; (दे २, १०० , भवि)। २ न. हसाने के लिए किया जाता अंग-स्पर्श, गुदगुदी, गुदगुदाहट ; (दे २, १००)।

गंठ सक [**ग्रन्थ्**] १ गठना, गूँथना। २ रचना, बनाना। गंठइ ; (हे ४, १२० ; षड्)।

गंठ देखो **गंथ** ; (राय , सुअ २, ५ ; धर्म २)।

गंठि पुस्त्री [**ग्रन्थि**] १ गाँठ, जोड़ , २ बाँस आदि को गिरह, पर्व ; (हे १, ३५ ; ४, १२०)। ३ गठरी, गाँठ; (णाया १, १ ; औप)। ४ रोग-विशेष , (लहुअ १५)। ५ राग-द्वेष का निविड़ परिणाम-विशेष ; (उप २५३),
"गंठित्ति सुदुब्भेओ कक्खडघणरूढगूढगंठि व्व।
जीवस्स कम्मजणिओ घणरागद्दोसपरिणामो" (विसे ११९५)।
°**छेअ** पुं [°**च्छेद**] गाँठ तोड़ने वाला, चार-विशेष, पाकेट-मार ; (दे २, ८६)। °**भेय** पुं [°**भेद**] ग्रन्थि का भेदन ; (धर्म १)। °**भेयग** वि [°**भेदक**] १ ग्रन्थि को भेदने वाला ; २ पुं. चार-विशेष; (णाया १, १८, पण्ह १, ३)। °**वण्ण** पुं [°**पर्ण**] सुगन्धि गाछ विशेष ; (कप्पू)। °**सहिय** वि [°**सहित**] १ गाँठ-युक्त; २ न. प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष ; (धर्म २; पडि)।

गंठिम न [**ग्रन्थिम**] १ ग्रन्थन से बनी हुई माला वगैरः ; (पण्ह २, ५ ; भग ९, ३३)। २ गुल्म-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३२)।

गंठिय वि [**ग्रथित**] गूँथा हुआ, गठा हुआ , (कुमा)।

गंठिय वि [**ग्रन्थिक**] गाँठ वाला ; (सूअ २, ५)।

गंठिल्ल वि [**ग्रन्थिमत्**] ग्रन्थि-युक्त, गाँठ वाला; (राज)।

गंड पुं [**दे**] १ वन, जंगल , २ दाण्डपाशिक कोटवाल , ३ छोटा मृग ; (दे २, ९९)। ४ नापित, नाई ; (दे २, ९९; आचा २, १,२)। ५ न. गुच्छ, समूह ; "कुसु-मदामगंडमुग्गथियं" (महा)।

गंड पुन [**गण्ड**] १ गाल, कपाल ; (भग ; सुपा ८)। २ राग-विशेष, गण्डमाला , "ता मा कुणह वीयं गंडोवरि-फोडियातुल्लं" (उप ७६८ टी , आचा)। ३ हाथी का कुम्भस्थल , (पव २६)। ४ कुच, स्तन ; (उत्त ८)। ५ ऊख का जत्था, इक्षु-समूह , (उप पृ ३५६)। ६ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ७ फोड़ा, स्फोटक ; (उत्त १०)। ८ गाँठ, ग्रन्थि , (अवि १७ ; अभि १८४)। °**भेअ**, °**भेअअ** पु [°**भेदक**] चोर-विशेष, पाकेटमार ; (अवि १७, अभि १८४)। °**माणिया** स्त्री [°**माणिका**] धान्य का एक प्रकार का नाप ; (राय)। °**माला** स्त्री [°**माला**] रोग-विशेष, जिसमें ग्रीवा फूल जाती है; (सण)। °**यल** न [°**तल**] कपाल तल; (सुर ४, १२७)। °**लेहा** स्त्री [°**लेखा**] कपोल-पाली, गाल पर लगाई हुई कस्तूरी वगैरः की छटा; (निर १, १; गउड)। °**वच्छा** स्त्री [°**वक्षस्का**] पीन स्तनों से युक्त छाती वाली स्त्री ; (उत्त ८)। °**वाणिया** स्त्री [°**पाणिका**] बाँस का पात्र-विशेष, जो डाला से छोटा होता है, (भग ७, ८)। °**वास** पु [°**पार्श्व**] गाल का पार्श्व-भाग , (गउड)।

गंडइया स्त्री [**गण्डकिका**] नदी-विशेष ; (आवम)।

गंडय पु [**गण्डक**] १ गेंडा, जानवर-विशेष ; (पाअ ; दे ७, ५७)। २ उद्घाषणा करने वाला पुरुष, टेर लगाने वाला पुरुष ; (ओघ ६४४)।

गंडली स्त्री [**दे**] गंडरी, ऊख का टुकड़ा; (उप पृ १०९)।

गंडि पुं [**गण्डि**] जन्तु-विशेष ; (उत्त १)।

गंडि वि [**गण्डिन्**] १ गण्डमाला का रोग वाला; (आचा)। २ गण्ड राग वाला, (पण्ह २, ५)।

गंडिया स्त्री [**गण्डिका**] १ गंडरी, ऊख का टुकड़ा ; (महा)। २ सोनार का एक उपकरण , (ठा ४, ४)।

३ एक अर्थ के अधिकार वाली ग्रन्थ-पद्धति ; (सम १२६)।

गंडिल देखो **गंधिल** ; (इक)।

गंडिलावई देखो **गंधिलावई** ; (इक)।

गंडी स्त्री [**गण्डी**] १ सोनार का एक उपकरण : (ठा ४, ४—पत्र २७१)। २ कमल की कर्णिका; (उत ३६)। °**तिंदुग** न [°**तिन्दुक**] यक्ष-विशेष; (ती ३८)। °**पय** पुं [°**पद**] हाथी वगैरः चतुष्पद जानवर ; (ठा ४, ४)। °**पोत्थय** पुंन [°**पुस्तक**] पुस्तक-विशेष ; (ठा ४, २)।

गंडीरी स्त्री [**दे**] गण्डेरी; ऊख का टुकड़ा ; (दे २, ८२)।

गंडीव न [**गाण्डीव**] १ अर्जुन का धनुष; (वेणी ११२)।

गंडीव न [**दे, गाण्डीव**] धनुष, कार्मुक; (दे २, ८४ ; महा : पात्र)।

गंडीवि पुं [**गाण्डीविन्**] अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (वेणी ५८)।

गंडुअ न [**गण्डु**] ओसीसा, सिरहना; (महा)।

गंडुअ न [**गण्डुत्**] तृण-विशेष ; (दे २, ७५)।

गंडुल पु [**गण्डोल**] कृमि-विशेष, जो पेट में पैदा होता है ; (जी १५)।

गंडूपय पुं [**गण्डूपद**] जन्तु-विशेष ; (राज)।

गंडूल देखो **गंडुल** ; (पण्ह १, १—पत्र २३)।

गंडूस पु [**गण्डूष**] पानी का कुल्ला ; (गा २७० ; सुपा ४४६), "बहुमइरागंडूसपाणं" (उप ९८६ टी)।

गंत देखो **गा**।

गंतव्व } **गंता** } देखो **गम**=गम्।

गंतिय न [**गन्तृक**] तृण-विशेष; (पणण १—पत्र ३३)।

गंती स्त्री [**गन्त्री**] गाडी, शकट ; (धम्म १२ टी; सुपा २७७)।

गंतुं देखो **गम**=गम्।

गंतुंपच्चागया स्त्री [**गत्याप्रत्यागता**] भिक्षा-चर्या-विशेष, जैन मुनियों की भिक्षा का एक प्रकार ; (ठा ६)।

गंतुकाम वि [**गन्तुकाम**] जाने की इच्छा वाला ; (श्रा १४)।

°**तुमण** वि [**गन्तुमनस्**] ऊपर देखा ; (वसु)।

गंतूण } °**तूणं** } देखो **गम**=गम्।

गंथ देखो **गंठ**—ग्रन्थ्। गथइ ; (पि ३३३)। कर्म—गथीअंति ; (पि ५४८)।

गंथ पुं [**ग्रन्थ**] १ शास्त्र, सूत्र, पुस्तक ; (विसे ८६४ ; १३८३)। २ धन-धान्य वगैरः बाह्य और मिथ्यात्व, क्रोध, मान आदि आभ्यन्तर उपधि, परिग्रह : (ठा २, १ ; बृह १ ; विसे २५७३)। ३ धन, पैसा ; (स २३६)। ४ स्वजन, संबन्धी लोग ; (पण्ह २, ४)। °**ईअ** पुं [°**तीत**] जैन साधु ; (सूअ १, ६)।

गंथि देखो **गंठि** ; (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

गंथिम देखो **गंठिम** ; (णाया १, १३)।

गंदिला स्त्री [**गन्दिला**] देखो **गंधिल** ; (इक)।

गंदीणी स्त्री [**दे**] क्रीड़ा—विशेष, जिसमें आँख बंद की जाती है ; (दे २, ८३)।

गंदुअ देखो **गेंदुअ** ; (पड्)।

गंध पुं [**गन्ध**] १ गन्ध, नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की बास, महक ; (औप; भग ; हे १, १७७)। २ लव, लेश ; (से ६, ३)। ३ चूर्ण-विशेष ; (पण्ह १, १)। ४ वानव्यन्तर देवों की एक जाति ; (इक)। ५ न, देव-विमान-विशेष, (निर १, ४)। ६ वि, गन्ध-युक्त पदार्थ ; (सूअ १, ६)। °**उडी** स्त्री [°**कुटी**] गन्ध-द्रव्य का घर ; (गउड; हे १, ८)। °**कासाइया** स्त्री [°**काषायिका**] सुगन्धि कषाय रंग की साड़ी; (उवा; भग ६, ३३)। °**गुण** पुं [°**गुण**] गन्धस्य गुण ; (भग)। °**ट्टय** न [°**ाट्टक**] गन्ध-द्रव्य का चूर्ण ; (ठा ३, १—पत्र ११७)। °**ड्ढ** वि [°**ाढ्य**] गन्ध-पूर्ण, सुगन्ध-पूर्ण ; (पंचा २)। °**णाम** न [°**नामन्**] गन्ध का हेतुभूत कर्म-विशेष ; (अणु)। °**तेल्ल** न [°**तैल**] सुगन्धित तैल ; (कप्पू)। °**दव्व** न [°**द्रव्य**] सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य ; (उत १)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] देवी-विशेष, सौधर्म देवलोक की एक देवी ; (निर १, ४)। °**द्धणि** स्त्री [°**घ्राणि**] गन्ध-तृप्ति; (णाया १, १—पत्र २५; औप)। °**नाम** देखो °**णाम** ; (सम ६७)। °**मय** पुं [°**मृग**] कस्तूरी-मृग, कस्तुरिया हरिन ; (सुपा २)। °**मंत** वि [°**मत्**] १ सुगन्धित, सुगन्ध-युक्त ; २ अतिशय गन्ध वाला, विशेष गन्ध से युक्त ; (ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °**मादण**, °**मायण** पुं [°**मादन**] १ पर्वत-विशेष, इस नाम का एक पहाड़ ; (सम १०३ ; पण्ह २, २ ; ठा २, ३—पत्र ६९)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर ; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ नगर-विशेष ; (इक)। °**वई**

स्त्री [°वती] भूतानन्द-नामक नागेन्द्र का आवास-स्थान ; (दीव)। °वट्टय न [°वर्तक] सुगन्धित लेप-द्रव्य ; (विपा १, ६) । °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] गन्ध-द्रव्य की बनाई हुई गोली ; (णाया १,१ ; औप) । °वह पुं [°वह] पवन, वायु ; (कुमा ; गा ५४२) । °वास पुं [°वास] १ सुगन्धित वस्तु का पुट ; २ चूर्ण-विशेष ; (सुपा ६७)। °समिद्ध वि [°समृद्ध] १ सुगन्धित, सुगन्ध-पूर्ण ; २ न. नगर-विशेष ; (आवम ; इक) । °सालि पु [°शालि] सुगन्धित व्रीहि ; (आवम) । °हत्थि पुं [°हस्तिन्] उत्तम हस्ती, जिसकी गन्ध से दूसरे हाथी भाग जाते हैं ; (सम १ ; पडि) । °हरिण पुं [°हरिण] कस्तुरिया हरन ; (कप्पू) । °हारग पुं [°हारक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश ; २ गन्धहारक देश का निवासी ; (पराह १, १ —पत्र १४) ।

गंधपिसाय पुं [दे] गन्धिक, पसारी ; (दे २, ८७) ।

गंधय देखो **गंध** ; (महा) ।

गंधलया स्त्री [दे] नासिका, घ्राण ; (दे २, ८५) ।

गंधव्व पुं [गन्धर्व] १ देव-गायन, स्वर्ग-गायक ; (उत्त १; सण) । २ एक प्रकार की देव-जाति, व्यंतर देवों की एक जाति; (पराह १, ४; औप) । ३ यक्ष-विशेष, भगवान् कुन्थुनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष ; (संति ८) । ४ न. मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१) । ५ नृत्य-युक्त गीत, गान ; (विपा १, २) । °कंठ न [°कण्ठ] रत्न की एक जाति; (राय) । °घर न [°गृह] संगीत-गृह, संगीतालय, संगीत का अभ्यास-स्थान; (जं १) । °णगर, °नगर न [°नगर] असत्य-नगर, संध्या के समय में आकाश में दिखाता मिथ्या-नगर, जो भावि उत्पात का सूचक है ; (अणु ; पव १६८) । °पुर न [°पुर] देखो °णगर ; (गउड) । °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष ; (सम ३५) । °विवाह पुं [°विवाह] उत्सव-रहित विवाह, स्त्री-पुरुष की इच्छा के अनुसार विवाह ; (सण) । °साला स्त्री [°शाला] गान-शाला, संगीत-गृह, संगीतालय; (वव १०) ।

गंधव्व वि [गान्धर्व] १ गंधर्व-संबधी, गंधर्व से संबन्ध रखने वाला ; (जं १ ; अभि ११५) । २ पुं. उत्सव-हीन विवाह, विवाह-विशेष; "गंधव्वेण विवाहेण सयमेव विवाहिया" (आवम) । ३ न. गीत, गान ; (पात्र) ।

गंधव्विअ वि [गान्धर्विक] १ गंधर्व-विद्या में कुशल ; (सुपा १६६) ।

गंधा स्त्री [गन्धा] नगरी-विशेष ; (इक) ।

गंधाण न [गन्धान] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

गंधार पुं [गन्धार] देश-विशेष, कन्धार ; (स ३८) । २ पर्वत-विशेष ; (स ३६) । ३ नगर-विशेष ; (स ३८) ।

गंधार पुं [गान्धार] स्वर-विशेष, रागिनी-विशेष; (ठा ७)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] १ सती-विशेष, कृष्ण वासुदेव की एक स्त्री ; (पडि ; अंत १५) । २ विद्या-देवी-विशेष ; (संति ६) । ३ भगवान् नमिनाथ की शासन-देवी ; (संति १०)।

गंधावइ, **गंधावाइ** पुं [गन्धापातिन्] स्वनाम-प्रसिद्ध एक वृत्त वैताढ्य पर्वत, (इक ; ठा २, ३—पत्र ६६; ८० ; ठा ४, २—पत्र २२३) ।

गंधि वि [गन्धिन्] गंध-युक्त, गंध वाला ; (कप्प ; गउड) ।

गंधिअ वि [दे] दुर्गन्ध, खराब गन्ध वाला; (दे २, ८३) ।

गंधिअ पु [गान्धिक] गन्ध-द्रव्य वेचने वाला, पसारी ; (दे २, ८७) ।

गंधिअ वि [गन्धिक] गंध-युक्त; "सुगन्धवरगन्धगन्धिए" (औप) । °साला स्त्री [°शाला] दारू वगैरः गन्ध वाली चीज की दुकान ; (वव ६) ।

गंधिअ वि [गन्धित] गन्ध-युक्त, गन्ध वाला; (स ३७२; गा ५४५ ; ८७२)

गंधिल पुं [गन्धिल] वर्ष-विशेष, विजय-क्षेत्र विशेष ; (ठा २, ३ ; इक) ।

गंधिलावई स्त्री [गन्धिलावती] १ क्षेत्र-विशेष, विजय-वर्ष-विशेष ; (ठा २, ३ ; इक) २ नगरी-विशेष; (इ ६१) । °कूड न [°कूट] १ गन्धमादन पर्वत का एक शिखर; (जं ४)। २ वैताढ्य पर्वत का शिखर-विशेष ; (ठा ६) ।

गंधिल्ली स्त्री [दे] छाया, छाँहो ; (उप १०३१ टी) ।

गंधुत्तमा स्त्री [गन्धोत्तमा] मदिरा, सुरा ; (दे २,८६) ।

गंधेल्ली स्त्री [दे] १ छाया, छाँही , २ मधु-मक्षिका ; (दे २, १००) ।

गंधोदग, **गंधोदय** न [गन्धोदक] सुगन्धित जल, सुगन्ध-वासित पानी ; (औप ; विपा १, ६) ।

गंधोल्ली स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा ; २ रजनी, रात ; (दे २, ६६) ।

गंप्पि, **गंप्पिणु** देखो **गम**=गम् ।

गंभीर वि [गम्भीर] १ गम्भीर, अस्ताघ, अ-तुच्छ, गहरा; (औप ; से ६, ४४ ; कप्प) । २ पुंन. गहन-स्थान, गहन

(d) $2x - 3y = 0$

गणणाइआ स्त्री [दे. गण-नायिका] पार्वती, चण्डी, शिव-पत्नी ; (दे २, ८७)।
गणय देखो **गणग** ; (औप ; सुपा २०३)।
गणसम वि [दे.] गोष्ठी-रत, गोठ में लीन ; (दे २, ८६)।
गणायमह पुं [दे] विवाह-गणक ; (दे २, ८६)।
गणाविअ वि [गणित] गिनती कराया हुआ; (स ६२६)।
गणि वि [गणिन्] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया। स्त्री—**गणिणी**; (सुपा ६०२)। २ पुं आचार्य, गच्छ-नायक, साधु-समुदाय का नायक ; (ठा ८)। ३ जिन-देव का प्रधान साधु-शिष्य ; (पउम ६१, १०)। ४ परिच्छेद, निश्चय, सिद्धान्त ; (णंदि)। °**पिडग** न [°**पिटक**] १ बारह मुख्य जैन आगम ग्रन्थ, द्वादशाङ्गी ; (सम १ ; १०६)। २ निर्युक्ति वगैरः से युक्त जैन आगम; (औप)। ३ पुं. यक्ष-विशेष, जिन-शासन का अधि-ष्ठायक देव ; (संति ४)। ४ निश्चय-समूह, सिद्धान्त-समूह; (णंदि)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] १ शास्त्र-विशेष ; २ ज्योतिष और निमित्त शास्त्र का ज्ञान ; (णदि)।
गणिम न [गणिम] गिनती से बेची जाती वस्तु, संख्या पर जिसका भाव हो वह ; (श्रा १८ ; णाया १, ८)।
गणिय वि [गणित] १ गिना हुआ, २ न. गिनती, संख्या; (ठा ६ ; जं २)। ३ जैन साधुओं का एक कुल ; (कप्प)। ४ अंक-गणित, गणित-शास्त्र ; (णदि ; अणु)। °**लिवि** स्त्री [°**लिपि**] लिपि-विशेष, अंक-लिपि ; (सम ३५)।
गणिय पुं [गणिक] गणित-शास्त्र का ज्ञाता ; "गणियं जाणइ गणिओ" (अणु)।
गणिया स्त्री [गणिका] वेश्या, गणिका ; (श्रा १२ ; विपा १, २)।
गणिर वि [गणयितृ] गिनती करने वाला; (गा २०८)।
गणेत्तिआ } स्त्री [दे] १ रुद्राक्ष का बना हुआ हाथ का
गणेत्ती } आभूषण-विशेष ; (णाया १, १६—पत्र २१३; औप ; भग ; महा)। २ अक्ष-माला ; (दे २, ८१)।
गणेसर पुं [गणेश्वर] १ गण का नायक। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।
गत्त न [गात्र] देह, शरीर ; (औप ; पाअ ; सुर २, १०१)।
गत्त देखो **गड्ड** ; (भग १५)। स्त्री—**गत्ता** ; (सुपा २१४)।
गत्त न [दे] १ ईषा, चौपाई की लकड़ी विशेष ; २ पंक, कर्दम ; (दे २, ६६)। ३ वि. गत, गया हुआ; (पड्)।
गत्ताडी } स्त्री [दे] १ गवादनी, वनस्पति-विशेष ; (दे
गत्ताडी } २, ८२)। २ गायिका, गाने वाली स्त्री; (पड्; दे २, ८२)।
गत्थ वि [ग्रस्त] कवलित, ग्रास किया हुआ ; "अइमहच्छ-लोभगच्छा (? त्था)" (पण्ह १, ३—पत्र ४४ ; नाट—चैत १४६)।
गद सक [गद्] बोलना, कहना। वकृ—**गदंत**; (नाट—चैत ४५)।
गद्दतोय पुं [गर्दतोय] लोकान्तिक देवों की एक जाति ; (सम ८५ ; णाया १, ८)।
गद्दभ पुं [दे] कटु-ध्वनि, कर्ण-कटु आवाज ; (दे २, ८२ ; पाअ ; स १११ ; ४२०)।
गद्दभ देखो **गद्दह**=गर्दभ ; (आक)।
गद्दभय देखो **गद्दहय** ; (आचा २, ३, १ ; आवम)।
गद्दभाल पुं [गर्दभाल] स्वनाम-प्रसिद्ध एक परिव्राजक ; (भग)।
गद्दभालि पुं [गर्दभालि] एक जैन मुनि; (ती २५)।
गद्दभिल्ल पुं [गर्दभिल्ल] उज्जयिनी का एक राजा ; (निचू १० ; पि २६१ ; ४००)।
गद्दभी स्त्री [गर्दभी] १ गधी, गदही ; (पि २६१)। २ विद्या-विशेष ; (काल)।
गद्दह पुं [गर्दभ] १ गदहा, गधा, खर ; (सम ५० ; दे २, ८० ; पाअ ; हे २, ३७)। २ इस नाम का एक मन्त्रि-पुत्र ; (बृह १)।
गद्दह न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल ; (दे २,८३)।
गद्दहय पुं [गर्दभक] १ क्षुद्र जन्तु-विशेष, जो गो-शाला वगैरः में उत्पन्न होता है; (जी १७)। २ देखो **गद्दह** ; (नाट)।
गद्दही देखो **गद्दभी** ; (नाट—मृच्छ ५८ ; निचू १०)।
गद्दिअ वि [दे] गर्वित, गर्व-युक्त ; (दे २, ८३)।
गद्ध पुं [गृध्र] पक्षि-विशेष, गीध, गिद्ध ; (औप)।
गन्न वि [गण्य] १ माननीय, आदरास्पद; "हियमप्पणो करेंतो, कस्स न होइ गरुओ गुरुगन्नो", "सव्वो गुणेहि गन्नो" (उव)। २ न. गणना, गिनती ; "मुल्लस्स कुणइ गन्नं" (सुपा २५३)।

गब्भ पुं [**गर्भ**] १ कुक्षि, पेट, उदर ; (ठा ५, १)। २ उत्पत्ति-स्थान, जन्म-स्थान ; (ठा २, ३)। ३ भ्रूण, अन्तरापत्य ; (कप्प)। ४ मध्य, अन्तर, भीतर का ; (णाया १, ८)। °**गरा** स्त्री [°**करी**] गर्भाधान करने वाली विद्या-विशेष (सूअ २, २)। °**घर** न [°**गृह**] भीतर का घर, घर का भीतरी भाग ; (णाया १, ८)। °**ज** वि [°**ज**] गर्भ में उत्पन्न होने वाला प्राणी, मनुष्य, पशु वगैरः (पउम १०२, ६७)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ गर्भ में रहने वाला ; २ गर्भ से उत्पन्न होने वाला मनुष्य वगैरः ; (ठा २, ३)। °**मास** पुं [°**मास**] कार्त्तिक से लेकर माघ तक का महीना ; (वव ७)। °**य** देखो °**ज** ; (जी २३)। °**वई** स्त्री [°**वती**] गर्भिणी स्त्री ; (सुपा २७६)। °**वक्कंति** स्त्री [°**व्युत्क्रान्ति**] १ गर्भाशय में उत्पत्ति; (ठा २, ३)। °**वक्कंतिअ** वि [°**व्युत्क्रान्तिक**] गर्भाशय में जिसकी उत्पत्ति होती है वह ; (सम २ ; २५)। °**हर** देखो **घर** , (सुर ६, २१ ; सुपा १८२)।

गब्भर न [**गह्वर**] १ कोटर, गुहा, २ गहन, विषम स्थान; (आव ४ ; पि ३३२)।

गब्भिज्ज पुं [**दे. गर्भज**] जहाज का निम्न-श्रेणिस्थ नौकर ; " कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज(? ज्ज)संजत्ताणावावाणि-यगा " (णाया १, ८—पत्र १३३ ; राज)।

गब्भिण } वि [**गर्भित**] १ जिसको गर्भ पैदा हुआ हो
गब्भिय } वह, गर्भ-युक्त ; (हे १, १०८ ; प्राप्र ; णाया १, ७)। २ युक्त, सहित ; " वेडिसदलनीलभित्ति-गब्भिणयं " (कुमा ; पड्)।

गब्भिल्ल देखो **गब्भिज्ज** ; (णाया १, १७—पत्र २२८)।

गम सक [**गम्**] १ जाना, गति करना, चलना। २ जानना, समझना। ३ प्राप्त करना। भूका—गमिही; (कुमा)। कर्म-गम्मइ, गमिज्जइ; (हे ४,२४९)। कवकृ—**गम्ममाण**; (स ३४०)। संकृ—**गंतुं,गमिअ,गंता, गंतूण,गंतूणं**, (कुमा ; षड् ; प्राप्र ; औप ; कस ;), **गडुअ, गडिअ, गदुअ** (शौ) ; (हे ४, २७२; पि ५८१; नाट—मालती ४०), **गमेप्पि, गमेप्पिणु, गंप्पि, गंप्पिणु** (अप), (कुमा)। हेकृ—**गंतुं** ; (कस; श्रा १४)। कृ—**गंतव्व, गमणिज्ज, गमणीअ**, (णाया १, १; गा २४९ ; उत्त, भग ; नाट)।

गम सक [**गमय्**] १ ले जाना। २ व्यतीत करना, पसार करना, गुजारना। गमेंति ; (गउड)। "बुहा ! मुहा मा दियहे गमेह" (सत्त ४)। कर्म—गमेज्जंति; (गउड)। वकृ—**गमंत** ; (सुपा २०२)। संकृ—**गमिऊण**, (पि) हेकृ—**गमित्तए** ; (पि ५७८)।

गम पुं [**गम**] १ गमन, गति, चाल , (उप २२० टी)। २ प्रवेश , (पउम १, २९)। ३ शास्त्र का तुल्य पाठ, एक तरह का पाठ, जिसका तात्पर्य भिन्न हो; (दे १, १, विसे ५४९ ; भग)। ४ व्याख्या, टीका ; (विसे ९१३)। ५ बोध, ज्ञान, समझ ; (अणु ; णदि)। ६ मार्ग, रास्ता ; (ठा ७)।

गमग वि [**गमक**] बोधक, निश्चायक ; (विसे ३१५)।

गमण न [**गमन**] गमन, गति ; (भग ; प्रासू १३२)। २ वेदन, बोध ; (णदि)। ३ व्याख्यान, टीका , ४ पुष्य वगैर. नव नक्षत्र ; (राज)।

गमणया } स्त्री [**गमन**] गमन, गति "लोगंतगमणयाए"
गमणा } (ठा ४, ३)। "पायवंदए पहारेत्थ गमणाए" (णाया १, १—पत्र २९)।

गमणिज्ज देखो **गम**=गम्।

गमणिया स्त्री [**गमनिका**] १ संक्षिप्त व्याख्यान, दग्-दर्शन ; (राज)। २ गुजारना, अतिक्रमण ; "कालगमणिया एत्थ उवाओ" (उप ७२८ टी)

गमणी स्त्री [**गमनी**] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है ; (णाया १, १६—पत्र २१३)। २ जूता; "सव्वोवि जणो जलं विगाहिंतो उत्ता-रइ गमणीओ चरणाहिंतो" (सुपा ६१०)।

गमणीअ देखो **गम** = गम्।

गमय देखो **गमग** , (विसे २९७३)।

गमाव देखो **गम** = गमय्। गमावइ ; (सण)।

गमिद वि [**दे**] १ अपूर्ण ; २ गूढ ; ३ स्खलित ; (षड्)।

गमिय वि [**गमित**] १ गुजारा हुआ, अतिक्रांत ; (गउड)। २ ज्ञापित, बोधित, निवेदित , (विसे ५५६)।

गमिय न [**गमिक**] शास्त्र-विशेष, सदृश पाठ वाला शास्त्र "भंग-गणियाइं गमियं सरिसगमं च कारणवसेण" (विसे ५४९ ; ५५४)।

गमिर वि [**गन्तृ**] जाने वाला; (हे २, १४५)।

गमेप्पि } देखो **गम**=गम्।
गमेप्पिणु }

गमेस देखो **गवेस**। गमेसइ, (हे ४, १८९)। गमेति; (कुमा)।

गम्म वि [गम्य] १ जानने योग्य; २ जो जाना जा सके; (उवर १७०; सुपा ४२६)। हटाने योग्य, आक्रमणीय; (सुर २, १२९; १५, १४४)। ४ जाने योग्य; ५ भोगने योग्य स्वपत्नी वगैरः; (सुर १२, ५२)।

गम्ममाण देखो **गम=गम्**।

गय वि [दे] १ घूर्णित, भ्रमित, घुमाया गया; (दे २, ८९, षड्)। २ मृत, मरा हुआ, निर्जीव; (दे २, ८९)।

गय वि [गत] १ गया हुआ; (सुपा ३३४)। २ अतिक्रान्त, गुजरा हुआ; (दे १, ५६)। ३ विज्ञात, जाना हुआ; (गउड)। ४ नष्ट, हत; (उप ७२८ टी)। ५ प्राप्त; "आवईगयपि सुहए" (प्रासू ८३ : १०७)। ६ स्थित, रहा हुआ; "मणगयं" (उत १)। ७ प्रविष्ट, जिसने प्रवेश किया हो, (ठा ४, १)। ८ प्रवृत; (सूत्र १, १, १)। ९ व्यवस्थित; (ओप)। १० न. गति, गमन, "उत्तमो गइदमग्गजगुज्जियगयविक्कमो भयवं"; (वसु; सुपा ५७८, आचा)। °**पाण** वि [°प्राण] मृत, मरा हुआ; (श्रा २७)। °**राय** वि [°राग] राग-रहित, वीतराग, निरोह; (उप ७२८ टी)। °**वइया**, °**वई** स्त्री [°पतिका] १ विधवा, रांड; (ओप; पउम २९, ४२)। २ जिसका पति विदेश गया हो वह स्त्री; प्रोषित-भर्तृका; (गा ३३२; पउम २९, ४२)। °**वय** वि [°वयस्] वृद्ध, बुड्ढा; (पाअ)। °**णुगइअ** वि [°ानुगतिक] अंध-परम्परा का अनुयायी, अंध-श्रद्धालु; (उवर ४६

गय पुं [गज] १ हाथी, हस्ती, कुञ्जर; (अणु; ओप; प्रासू १५४; सुपा ३३४)। २ एक अंतकृत् जैन मुनि, गज-सुकुमाल मुनि; (अंत ३)। ३ इस नाम का एक शेठ; (उप ७६८टी)। ४ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २)। °**उर** न [°पुर] नगर-विशेष, कुरु देश का प्रधान नगर, हस्तिनापुर; (उप १०१४; महा; सण)। °**कण्ण**, °**कन्न** पुं [°कर्ण] १ द्वीप-विशेष; २ उसमें रहने वाला; (जीव ३, ठा ४, २)। °**कलभ** पुं [°कलभ] हाथी का बच्चा; (राय)। °**गय** वि [°गत] हाथी ऊपर आरूढ, (ओप)। °**ग्गपय** पुं [°ाग्रपद] पर्वत-विशेष, (आक)। °**त्थ** वि [°स्थ] हाथी ऊपर स्थित; (पउम ८, ८६)। °**पुर** देखो °**उर**; (सूत्र १, ५, १)। °**वंधय** पुं [°वन्धक] हाथी को पकड़ने वाली जाति; (सुपा ६४२)। °**सारिणी** स्त्री [°सारिणी] वनस्पति, विशेष-गुच्छ विशेष, (पण्ण १—पत्र ३२)। °**मुह** पुं [°मुख] १ गणेश, गणपति, शिव-पुत्र; (पाअ)। २ यक्ष-विशेष; (गण ११)। °**राय** पुं [°राज] प्रधान हाथी, श्रेष्ठ हस्ती; (सुपा ३८९)। °**वइ** पु [°पति] गजेन्द्र, श्रेष्ठ हस्ती; (णाया १ १६; सुपा ३८९)। °**वर** पुं [°वर] प्रधान हाथी। °**वरारि** पुं [°वरारि] सिंह, शार्दूल, वनराज; (पउम १७, ७९)। °**वहू** स्त्री [°वधू] हथिनी, हस्तिनी; (पाअ)। °**वोही** स्त्री [°वीथी] शुक्र वगैरः महा-ग्रहों का चार-क्षेत्र-विशेष; (ठा ९)। °**सलण** पुं [°श्वसन] हाथी की सूँढ; (ओप)। °**सुकुमाल** पु [°सुकुमाल] एक प्रसिद्ध जैन मुनि, उसी भव में मुक्ति-गत जैन साधु-विशेष; (अंत, पडि)। °**ारि** पुं [°ारि] सिंह, पञ्चानन; (भवि)। °**ारोह** पुं [°ारोह] हस्तिपक, महावत; (पाअ)।

गय पु [गद] रोग, बिमारी; (ओप; सुपा ५७८)।

गयंक पुं [गजाङ्क] देवों की एक जाति, दिक्कुमार देव; (ओप)।

गयंद पु [गजेन्द्र] श्रेष्ठ हाथी; (गउड)।

गयण न [गगन] गगन, आकाश, अम्बर, (हे २, १६४; गउड)। °**गइ** पुं [°गति] एक राज-कुमार, (दंस)। °**चर** वि [°चर] आकाश में चलने वाला, पक्षी, विद्याधर वगैरः (सुपा २५०)। °**मंडल** पु [°मण्डल] एक राजा; (दंस)।

गयणरइ पुं [दे] मेघ, मेह, बादल; (दे २, ८८)।

गयणिंदु पुं [गगनेन्दु] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४५)।

गयसाउल, **गयसाउल्ल** वि [दे] विरक्त, वैरागी (दे २, ८७; षड्)

गया स्त्री [गदा] लोहे का या पाषाण का अस्त्र-विशेष, लोहे का मुग्दर या लाठी; (राय)। °**हर** पु [°धर] वासुदेव; (उत ११)।

गया स्त्री [गया] स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष; (उप २५१)।

°**गर** वि [°कर] करने वाला, कर्ता, (सण)।

गर पुं [गर] १ विष-विशेष, एक प्रकार का जहर; (निचू १)। २ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध ववादि करणों में से एक; (विसे ३३४८)।

°**गरण** देखो **करण**; (रयण ९३)।

गरल न [गरल] १ विष, जहर; (पाअ प्रासू ३९)। २ रहस्य; ३ वि. अव्यक्त, अस्पष्ट; "अ-गरलाए अ-मम्मणाए"; (ओप)।

गरलिगावद्ध वि [गरलिकावद्ध] निक्षिप्त, उपन्यस्त ; (निचू १)।

गरह सक [गर्ह्] निन्दा करना, घृणा करना। गरहइ, गरहह; (भग)। वकृ—**गरहंत**; (द्र १५)। कवकृ—**गरहिज्जमाण**; (गाया १, ८)। संकृ—**गरहित्ता**, (आचा २, १५)। हेकृ—**गरहित्तए**, (कस, ठा २, १)। कृ—**गरहणिज्ज, गरहणीय, गरहियव्व** ; (सुपा १८४ ; ३७६ ; पण्ह २, १)।

गरहण न [गर्हण] निन्दा, घृणा ; (पि १३२)।

गरहणया } स्त्री [गर्हणा] निन्दा, घृणा ; (भग १७, ३.
गरहणा } औप ; पण्ह २, १)।

गरहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा ; (भग)।

गरहिअ वि [गर्हित] निन्दित, घृणित ; (सं ६३ ; द्र ३३ ; सण)।

°गरिअ वि [कृत] किया हुआ, निर्मित ; (दे ७, ११)।

गरिट्ठ वि [गरिष्ठ] अति गुरु, बड़ा भारी ; (सुपा १० ; १२८ ; प्रासू १५४)।

गरिम पुंस्त्री [गरिमन्] गुरुता, गुरुत्व, गौरव ; (हे १, ३५ ; सुपा २३ ; १०६)।

गरिह देखो **गरह**। गरिहइ, गरिहामि ; (महा ; पडि)।

गरिह पु [गर्ह] निन्दा, गर्हा ; (प्राप्र)।

गरिहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा ; (ओघ ७६१ ; स १६०)।

गरु देखो **गुरु** ; "गरुयरगताए खिविऊण" (सुपा २१४)।

गरुअ वि [गुरुक] गुरु, वडा, महान् ; (हे १, १०६ ; प्राप्र ; प्रासू ३६)।

गरुअ सक [गुरुकाय्] गुरु करना, वड़ा वनाना। गरुएइ ; (पि १२३)।

> "हंसाण सरेहिं सिरी, सारिज्जेइ अह सराण हंसेहिं।
> अण्णोण्णं चिअ एए, अप्पाणं णवर गरुअंति"
> (हेका २५५)।

गरुआ } अक [गुरुकाय्] १ वडा वनना। २ वडे
गरुआअ } की तरह आचरण करना। गरुआइ, गरुआअइ, (हे ३, १३८)।

गरुइअ वि [गुरुकित] वड़ा किया हुआ ; (से ६, २० ; गउड)।

गरुई } स्त्री [गुर्वी] वडी, ज्येष्ठा, महती, (हे १,१०७ :
गरुवी } प्राप्र ; निचू १)।

गरुदक देखो **गरुअ** ; "णवजोव्वणरूअपसाहिणा सिंगारगुणगरुक्केण" (प्राप)।

गरुड देखो **गरुल** ; (संति १ ; स२६५, पिंग)। छन्द-विशेष ; (पिंग)। **°त्थ** न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, उरगास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र ; (पउम १२, १३० ; ७१, ६६)। **°द्धय** पु [°ध्वज] विष्णु वासुदेव ; (पउम ६१, ५७)। **°वूह** पु [°व्यूह] सेना की एक प्रकार की रचना ; (महा , पि २४०)।

गरुडंक पुं [गरुडाङ्क] १ विष्णु, वासुदेव , २ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ७)।

गरुल पुं [गरुड] १ पक्षि-राज, पक्षि-विशेष , (पण्ह १, १)। २ यक्ष-विशेष, भगवान् शान्तिनाथ का शासन-यक्ष ; (संति ८)। ३ भवनपति देवों की एक जाति, सुपर्णकुमार देव, (पण्ह १, ४)। ४ सुपर्णकुमार देवों का इन्द्र , (सूअ १, ६)। **°केउ** पुं [°केतु] देखो **°ज्झय** ; (राज)। **°ज्झय, °द्धय** पुं [°ध्वज] १ गरुड पक्षी के चित्र वाली ध्वजा ; (राय)। २ वासुदेव कृष्ण , ३ देव-जाति विशेष ; सुपर्णकुमार देव ; (आवम, सम ; पि)। **°व्वूह** देखो **गरुड-वूह** ; (जं २) ; **°सत्थ** न [°शास्त्र] गरुडास्त्र, अस्त्र-विशेष , (महा)। **°सण** न [°सन] आसन-विशेष ; (राय)। **°ववाय** न [°पपात] शास्त्र-विशेष, जिसका याद करने से गरुड देव प्रत्यक्ष होता है ; (ठा १०)। देखो **गरुड**।

गरुवी देखो **गरुई** ; (कुमा)।

गल अक [गल्] १ गल जाना, सड़ना। २ खतम होना, समाप्त होना। ३ झरना, टपकना, गिरना। ४ पिघलना, नरम होना। ५ सक गिराना, टपकाना। "जाव रत्ती गलइ" (महा)। वकृ—" नवेण रस-सोएहिं **गलंतम्** असुइरसं " (महा , सुर ४, ६८ ; सुपा २०४)। **गलिंत** , (पण्ह १, ३; प्रासू ७२)। प्रयो, वकृ—**गलावेमाण**; (णाया १, १२)।

गल } पुं [गल] १ गला, ग्रीवा, कण्ठ ; (सुपा ३३ ,
गलअ } पाअ)। २ वडिश, मच्छी पकडने का काँटा , (उप १८८; विपा १, ८, सुर ८, १४०)। **°गज्जि** स्त्री [°गर्जि] गले की गर्जना ; (महा)। **°गज्जिय** न [°गर्जित] गल-गर्जन, (महा)। **°लाय** वि [°लात] गले में लगाया हुआ, कण्ठ न्यस्त ; (औप)।

गलई स्त्री [गलकी] वनस्पति-विशेष ; (राज)।

गलग देखो **गलअ** (पण्ह १, १)।
गलत्थ देखो **खिव**। गलत्थइ ; (हे ४, १४३ ; भवि)।
गलत्थण न [**क्षेपण**] १ क्षेपण, फेंकना ; २ प्रेरण ; (से ५, ५३ ; सुपा २८)।
गलत्थलिअ वि [**दे**] १ क्षिप्त, फेंका हुआ, २ प्रेरित ; (दे २, ८७)।
गलत्थल्ल पुं [**दे**] गलहस्त, हाथ से गला पकड़ना, (णाया १, ६ ; पण्ह १, ३—पत्र ५३)।
गलत्थल्लिअ [**दे**] देखो **गलत्थलिअ** ; (से ५, ४३ ; ८, ६१)।
गलत्था स्त्री [**दे**] प्रेरणा ;

" गरुयाणं चिय भुवणम्मि आवया न उण हुंति लहुयाण।
गहकल्लोलगलत्था, ससिसूराणं न ताराणं "

(उप ७२८ टी)।
गलत्थिअ वि [**क्षिप्त**] १ प्रेरित ; (सुपा ६३५)। २ फेंका हुआ ; (दे २, ८७; कुमा)। ३ बाहर निकाला हुआ; (पाअ)।
गलद्धअ पुं [**दे**] प्रेरित, क्षिप्त ; (षड्)।
गलाण देखो **गिलाण** ; (नाट—चैत ३४)।
गलि / **गलिअ** वि [**गलि, °क**] दुर्विनीत, दुर्दम ; (श्रा १२ ; सुपा २७६)। °**गद्दह** पुं [°**गर्दभ**] अविनीत गदहा ; (उत्त २७)। °**वइल्ल** पुं [°**बलीवर्द**] दुर्विनीत बैल ; (कप्पू)। °**स्स** पुं [°**श्व**] दुर्दम घोड़ा ; (उत्त १)।
गलिअ वि [**गलित**] १ गला हुआ, पिघला हुआ ; (कप्प)। २ चालित, प्रक्षालित; (कुमा)। ३ स्खलित, पतित ; (से १, २)। ४ नष्ट, नाश-प्राप्त; (सुपा २४३; नाण)।
गलिअ वि [**दे**] स्मृत, याद किया हुआ, (दे २, ८१)।
गलिंत देखो **गल**=गल्।
गलिर वि [**गलितृ**] निरन्तर पिघलता, टपकता, "बहुसोगगलिरनयणेण" (श्रा १४)।
गलुल देखो **गरुल**; (अच्चु १; षड्)।
गलोई / **गलोया** स्त्री [**गडूची**] वल्ली-विशेष, गिलोय, गुरच ; (हे १, १२४ ; जी १०)।
गल्ल पुं [**गल्ल**] १ गाल, कपोल ; (दे २, ८१ ; उवा)। २ हाथी का गण्ड-स्थल, कुम्भ-स्थल ; (षड्)। °**मसूरिया** स्त्री [°**मसूरिका**] गाल का उपधान ; (जीत)।
गल्लक्क पुंन [**दे**] १ स्फटिक मणि ; (प्राप ; पि २९६)।
गल्लत्थ देखो **गलत्थ**। गल्लत्थइ ; (षड्)।
गल्लप्फोड पुं [**दे**] डमरुक, वाद्य-विशेष ; (दे २, ८६)।
गल्लोल्ल न [**दे**] गडुक, पात्र-विशेष ; (निचू १)।
गव पुंस्त्री [**गो**] पशु, जानवर ; (सूअ १, २, ३)।
गवक्ख पुं [**गवाक्ष**] १ गवाक्ष, वातायन ; (औप ; पण्ह २, ४)। २ गवाक्ष के आकृति का रत्न-विशेष ; (जीव ३)। °**जाल** न [°**जाल**] १ रत्न-विशेष का ढग ; (जीव ३ ; राय)। २ जाली वाला वातायन ; (औप)।
गवच्छ पुं [**दे**] आच्छादन, ढकना ; (राय)।
गवच्छिय वि [**दे**] आच्छादित, ढका हुआ ; (राय; जीव ३)।
गवत्त न [**दे**] घास, तृण ; (दे २, ८५)।
गवय पुं [**गवय**] गो की आकृति का जङ्गली पशु-विशेष ; (पण्ह १, १)।
गवर पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।
गवल पुं [**गवल**] १ जङ्गली पशु-विशेष ; जंगली महिष; (पउम ८८, ६)। २ न. महिष का सिंग ; (पण्ण १७ ; सुपा ६२)।
गवा स्त्री [**गो**] गैया, गाय ; (पउम ८०, १३)।
गवायणी स्त्री [**गवादनी**] इन्द्रवारुणी, वनस्पति-विशेष; (दे २, ८२)।
गवार वि [**दे**] गँवार, छोटे गाँव का निवासी; (वज्जा ४)।
गवालिय न [**गवालीक**] गौ के विषय में अनृत भाषण; (पण्ह १, २)।
गविअ वि [**दे**] अवधृत, निश्चित ; (षड्)।
गविट्ठ वि [**गवेषित**] खोजा हुआ ; (सुपा १५४ ; ६४०; स ४८४ ; पाअ)।
गविल न [**दे**] जात्य चीनी, शुद्ध मिस्री ; (उर ५, ६)।
गवेधुआ स्त्री [**गवेधुका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प)।
गवेलग पुंस्त्री [**गवेलक**] १ मेष, भेड़ ; (णाया १, १ ; औप)। २ गौ और भेड; (ठा ७)।
गवेस सक [**गवेषय्**] गवेषणा करना, खोजना, तलास करना। गवेसइ ; (महा ; षड्)। भूका—गवेसित्था ; (आचा)। वकृ—**गवेसंत, गवेसयंत, गवेसमाण** ; (श्रा १२ ;

सुपा ४१० ; सुर १, २०२ ; णाया १, ४)। हेकृ—**गवेसित्तए** ; (कप्प)।

गवेसइत्तु वि [**गवेषयितृ**] खोज करने वाला, गवेषक ; (ठा ४, २)।

गवेसग वि [**गवेषक**] ऊपर देखो ; (उप पृ ३३)।

गवेसण न [**गवेषण**] खोज, अन्वेषण ; (औप , सुर ४, १४३)।

गवेसणया, **गवेसणा** स्त्री [**गवेषणा**] १ खोज, अन्वेषण; (औप, सुपा २३३)। २ शुद्ध भिक्षा की याचना, (ओघ ३)। ३ भिक्षा का ग्रहण ; (ठा ३, ४)।

गवेसय देखो **गवेसग**; (भवि)।

गवेसाविय वि [**गवेषित**] १ दूसरे से खोजवाया हुआ, दूसरे द्वारा खोज किया गया ; (स २०७ ; ओघ ६२२ टी)। २ गवेषित, अन्वेषित, खोजा हुआ , (स ६८)।

गवेसि वि [**गवेषिन्**] खोज करने वाला, गवेषक; (पुप्फ ४४०)।

गवेसिअ वि [**गवेषित**] अन्वेषित, खोजा हुआ ; (सुर १५, १२६)।

गव्व पुं [**गर्व**] मान, अहंकार, अभिमान ; (भग १५ , पव २१६)।

गव्वर न [**गह्वर**] कोटर, गुहा ; (स ३६३)।

गव्वि वि [**गर्विन्**] अभिमानी, गर्व-युक्त ; (श्रा १२ ; दे ७, ६१)।

गव्विट्ठ वि [**गर्विष्ठ**] विशेष अभिमानी, गर्व करने वाला , (दे १, १२८)।

गव्विय वि [**गर्वित**] गर्व-युक्त, जिसको अभिमान उत्पन्न हुआ हो वह ; (पाअ ; सुपा २७०)।

गव्विर वि [**गर्विन्**] अहंकारी, अभिमानी; (हे २, १५९ ; हेका ४५)। स्त्री—**°री** ; (हेका ४५)।

गस सक [**ग्रस्**] खाना, निगलना, भक्षण करना। गसइ; (हे ४, २०४ ; षड्)। वकृ—**गसंत**; (उप ३२० टी)।

गसण न [**ग्रसन**] भक्षण, निगलना; (स ३५७)।

गसिअ वि [**ग्रस्त**] भक्षित, निगलित ; (कुमा ; सुर ६, ६० ; सुपा ४८६)।

गह सक [**ग्रह्**] १ ग्रहण करना, लेना। २ जानना। गहेइ, (सण)। वकृ—**गहंत** ; (श्रा २७)। संकृ—**गहाय, गहिअ, गहिऊण, गहिया, गहेउं** ; (पि ५९१ ; नाट; पि ५८६; सूअ १, ४, १; १, ५, २)। कृ—**गहीअव्व, गहेअव्व** ; (रयण ७० ; भग)।

47

गह पुं [**ग्रह**] १ ग्रहण, आदान, स्वीकार ; (विसे ३७१ ; सुर ३, ६२)। २ सूर्य, चन्द्र वगैरः ज्योतिष्क देव ; (गउड ; पण्ह १, २)। ३ कर्म का बन्ध ; (दस ४)। ४ भूत वगैरः का आक्रमण, आवेश ; (कुमा ; सुर २, १४४)। ५ गृद्धि, आसक्ति, तल्लीनता ; (आचा)। ६ संगीत का रस-विशेष ; (दस २)। **°खोभ** पुं [**°क्षोभ**] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंकेश ; (पउम ५, २६६)। **°गज्जिय** न [**°गर्जित**] ग्रहों के संचार से होने वाली आवाज; (जीव ३)। **°गहिय** वि [**°गृहीत**] भूतादि से आक्रान्त, पागल ; (कुमा ; सुर २, १४४)। **°चरिय** न [**°चरित**] १ ज्योतिष-शास्त्र , (वव ४)। २ ज्योतिष-शास्त्र का परिज्ञान ; (सम ८३)। **°दंड** पुं [**°दण्ड**] दण्डाकार ग्रह-पंक्ति; (भग ३, ७)। **°नाह** पुं [**°नाथ**] १ सूर्य, सूरज ; (श्रा २८)। २ चन्द्र, चन्द्रमा ; (उप ७२८ टी)। **°मुसल** न [**°मुशल**] मुशलाकार ग्रह-पंक्ति ; (जीव ३)। **°सिंघाडग** न [**°शृङ्गाटक**] १ पानी-फल के आकार वाली ग्रह-पङ्क्ति ; (भग ३, ७)। २ ग्रह-युग्म, ग्रह की जोड़ी; (जीव ३)। **°हिव** पुं [**°धिप**] सूर्य, सूरज ; (श्रा २८)।

गह° न [**गृह**] घर, मकान। **°वइ** पुं [**°पति**] गृहस्थ, गृही, संसारी ; (पउम २०, ११६ ; प्राप्र ; पाअ)। **°वइणी** स्त्री [**°पत्नी**] गृहिणी, स्त्री ; (सुपा २२६)।

गहकल्लोल पुं [**दे. ग्रहकल्लोल**] राहु, ग्रह-विशेष; (दे २, ८६ ; पाअ)।

गहगह अक [**दे**] हर्ष से भर जाना, आनन्द-पूर्ण होना। गहगहइ ; (भवि)।

गहण न [**ग्रहण**] १ आदान, स्वीकार; (से ४, ३३ ; प्रासू १४)। २ आदर, सम्मान ; ३ ज्ञान, अवबोध ; (से ४, ३३)। ४ शब्द, आवाज; (आचा २, ३, ३; आवम)। ५ ग्रहण करने वाला; ६ इन्द्रिय ; (विसे १७०७)। ७ चन्द्र-सूर्य का उपराग, (भग १२, ६)। ८ ग्राह्य, जिसका ग्रहण किया जाय वह, (उत्त ३२)। ९ शिक्षा-विशेष; (आव)।

गहण न [**ग्राहण**] ग्रहण कराना, अंगीकार कराना ; "जो आसि बंभचेरगहणगुरू" (कुमा)।

गहण वि [**गहन**] १ निविड, दुर्भेद्य, दुर्गम ; "काले अणाइणिहणे जोणीगहणम्मि भीसणे इत्थ" (जी ४९) ;

"फलसारगलिखिगहणा" (गउड)। २ वन, झाडी, घना कानन ; (पाअ ; भग)। ३ वृक्ष-गह्वर, वृक्ष का कोटर; (विपा १, ३—पत्र ४६)।

गहण न [दे] १ निर्जल स्थान, जल-रहित प्रदेश, (दे २, ८२ ; आचा २, ३, ३)। २ बन्धक, धरोहर, गिरों ; (सुपा ५४८)।

गहणय न [दे] गहना, आभूषण ; (सुपा १५४)।

गहणया स्त्री [ग्रहण] ग्रहण, स्वीकार, उपादान; (औप)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] गुदाशय, गाँड ; (पण्ह १, ४ ; औप)।

गहणी स्त्री [दे] जबरदस्ती हरण की हुई स्त्री, बाँदी ; (दे २, ८४ ; से ६, ४७)।

गहत्थि पुं [गभस्ति] किरण, त्विषा ; (पाअ)।

गहर पुं [दे] गृध्र, गीध पक्षी ; (दे २, ८४ ; पाअ)।

गहवइ पुं [दे] १ ग्रामीण, गाँव का रहने वाला ; (दे २, १००)। २ चन्द्रमा, चाँद ; (दे २, १०० ; पाअ ; वाअ १५)।

गहिअ वि [दे] वक्रित, मोड़ा हुआ, टेढ़ा किया हुआ ; (दे २, ८५)।

गहिअ वि [गृहीत] १ उपात्त, स्वीकृत ; (औप ; ठा ४, ४)। २ पकड़ा हुआ ; (पण्ह १, ३)। ३ ज्ञात, उपलब्ध, विदित ; (उत्त २ ; षड्)।

गहिअ वि [गृद्ध] आसक्त, तल्लीन ; (आचा)।

गहिआ स्त्री [दे] १ काम-भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह स्त्री ; (दे २, ८५)। २ ग्रहण करने योग्य स्त्री; (षड्)।

गहिर वि [गभीर] गहरा, गम्भीर, अ-स्ताघ ; (दे १, १०१ ; काप्र ६२५ ; कप्प ; गउड ; औप ; प्राप्र)।

गहिल वि [ग्रहिल] भूतादि से आविष्ट, पागल, (श्रा १४)।

गहिलिय, **गहिल्ल** वि [दे. ग्रहिल] आवेश-युक्त, पागल, भ्रान्त-चित्त ; (पउम ११३, ४३ ; षड् , श्रा १२ ; उप ५६७ टी ; भवि)।

गहीअ देखो **गहिअ**=गृहीत ; (श्रा १२ ; रयण ६८)।

गहीर देखो **गभीर** ; (प्रासू ६)।

गहीरिअ न [गाभीर्य] गहराई, गम्भीरपन , (हे २, १०७)।

गहीरिम पुंस्त्री [गभीरिमन्] गहराई, गम्भीरता ; (हे ४, ४१६)।

गहेअव्व, **गहेउं** देखो **गह**=ग्रह्।

गहेण (अप) देखो **गह**=ग्रह्। गहेणइ ; (षड्)।

गा, **गाअ** सक [गै] १ गाना, आलापना। २ वर्णन करना। ३ श्लाघा करना। गाइ, गाअइ; (हे ४,६)। वकृ—**गंत, गाअंत, गायमाण**; (गा ५४६; पि ४७६ ; पउम ६४,२४)। कवकृ—**गिज्जंत** ; (गउड ; गा ६४२ ; सुपा २१ ; सुर ३, ७६)। संकृ—**गाइउ** ; (महा)।

गाअ पु [गो] बैल, वृषभ, साँढ , (हे १, १५८)।

गाअ न [गात्र] १ शरीर, देह ; (सम ६०)। २ शरीर का अवयव ; (औप)।

गाअ वि [गायक] गाने वाला ; (कुमा)।

गाअंक पुं [गवाङ्क] महादेव, शिव ; (कुमा)।

गाअण वि [गायन] गाने वाला, गवैया, (सुपा ५५ ; सण)।

गाइअ वि [गीत] १ गाया हुआ ; "किन्नरेण तो गाइयं गीय" (सुपा १६)। २ न. गीत, गान, गाना ; (आव ४)।

गाइआ स्त्री [गायिका] गाने वाली स्त्री ; (गा ६४४)।

गाइर वि [गाथक] गाने वाला, गवैया ; (सुपा ५४)।

गाई स्त्री [गो] गैया, गौ ; (हे १, १५८ , दे ४, १८ , गा २७१ ; सुर ७, ६५)।

गाउ, **गाउअ**, **गाऊअ** न [गव्यूत] १ कोस, क्रोश, दो हजार धनुष-प्रमाण जमीन; (पि २५४ ; औप ; इक , जी १८; विसे ८२ टी)। २ दो कोस, क्रोश-युग्म (ओघ १२)।

गागर पुं [दे] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, घघरा ; गुजराती में 'घाघरो' ; (पण्ह १,४)। २ मत्स्य-विशेष; (पण्ण १)।

गागरी [दे] देखो **गायरी** ; (पि ६२)।

गागलि पुं [गागलि] एक जैन मुनि ; (उत्त १०)।

गागेज्ज वि [दे] मथित, आलोडित ; (दे २, ८८)।

गागेज्जा स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन ; (दे २, ८८)।

गाडिअ वि [दे] विधुर, वियुक्त ; (दे २,८३)।

गाढ वि [गाढ] १ गाढ, निविड, सान्द्र ; (पाअ ; सुर १४, ४८)। २ मजबूत, दृढ , (सुर ४,२३७)। ३ क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय , (कप्प)।

गाण न [गान] गीत, गाना ; (हे ४,६)।

गाण वि [गायन] गवैया, गीत-प्रवीण , (दे २, १०८)।

गाणंगणिअ पुं [**गाणङ्गणिक**] छ ही मास के भीतर एक साधु-गण से दूसरे गण में जाने वाला साधु ; (बृह १)।

गाणी स्त्री [**दे**] गवादनी, वनस्पति-विशेष, इन्द्रवारुणी , (दे २, ८२)।

गाथा देखो **गाहा** , (भग ; पिंग)।

गाध वि [**गाध**] स्ताघ, अ-गहरा ; (दे ५, २४)।

गाम पुं [**ग्राम**] १ समूह, निकर ; "चवलो इंदियगामो" (सुर २, १३८)। २ प्राणि-समूह, जन्तु-निकर ; (विसे २८६६)। ३ गाँव, वसति, ग्राम; (कप्प; णाया १,१८, औप)। ४ इन्द्रिय-समूह ; (भग, औप)। °**कंडग,** °**कंडय** पु [°**कण्टक**] १ इन्द्रिय-समूह रूप काँटा , (भग , औप) । २ दुर्जनो का रूक्ष आलाप, गाली ; (आचा) । °**घायग** वि [°**घातक**] गाँव का नाश करने वाला ; (पण्ह १,३) । °**णिद्धमण** न [°**निर्धमन**] गाँव का पानी जाने का रास्ता, नाला ; (कप्प) । °**धम्म** पुं [°**धर्म**] १ विषयाभिलाप, विषय की वाञ्छा , (ठा १०) । २ इन्द्रियो का स्वभाव ; ३ विषय-प्रवृत्ति ; (आचा) । ४ मैथुन , (सूअ १, २,२) । ५ शब्द, रूप वगैर· इन्द्रियों का विषय, (पण्ह १,४) । ६ गाँव का धर्म, गाँव का कर्तव्य ; (ठा १०) । °**द्ध** पुंन [°**ार्ध**] आधा गाँव । २ उत्तर भारत, भारत का उत्तर प्रदेश ; (निचू १२) । °**मारी** स्त्री [°**मारी**] गाँव भर में फैली हुई बिमारी-विशेष ; (जीव ३) । °**रोग** पुं [°**रोग**]ग्राम-व्यापक बिमारी, (जं २) । °**वइ** पुं [°**पति**] गाँव का मुखिया ; (पाअ)। °**णुग्गाम** न [°**ानुग्राम**] एक गाँव से दूसरे गाँव , (औप)। °**यार** पुं [°**ाचार**] विषय ; (आवम) ।

गामउड } **गामऊड** } पु [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २, ८९ ; बृह ३) ।

गामंतिय न [**ग्रामान्तिक**] १ गाँव की सीमा ; (आचा)। २ वि. गाँव की सीमा में रहने वाला ; (दसा १) । ३ पुं. जैनेतर दार्शनिक विशेष ; (सूअ २,२) ।

गामगोह पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २, ८९) ।

गामड पु [**ग्रामक**] गाँव, छोटा गाँव ; (श्रा १६) ।

गामण न [**दे. गमन**] भूमि में गमन, भू-सर्पण ; (भग ११, ११) ।

गामणह न [**दे**] ग्राम-स्थान, ग्राम-प्रदेश ; (षड्) ।

गामणि देखो **गामणी** ; (दे २, ८९, षड्) ।

गामणिसुअ पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २,८९) ।

गामणी पुं [**दे**] गाँव का मुखिया ; (दे २,८९ ; प्रामा)।

गामणी वि [**ग्रामणी**] १ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक ; (से ७, ६० , धण १ ; गा ४४६ , षड्) । २ पु. तृण-विशेष , (दे २, ११२) ।

गामपिंडोलग पु [**दे**] भीख से पेट भरने के लिऐ गाँव का आश्रय लेने वाला भीखारी ; (आचा) ।

गामरोड पु [**दे**] छल से गाँव का मुखिया बन बैठने वाला ; गाँव के लोगो में फूट उत्पन्न कर गाँव का मालिक होने वाला; (दे २, ९०) ।

गामहण न [**दे**] १ ग्राम-स्थान, गाँव का प्रदेश; (दे २,९०)। २ छोटा गाँव ; (पाअ) ।

गामाग पु [**ग्रामाक**] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक सन्निवेश ; (आवम) ।

गामार वि [**दे. ग्रामीण**] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहने वाला , (वज्जा ४) ।

गामि वि [**गामिन्**] जाने वाला ; (गा १६७ ; आचा) । स्त्री—°**णी**; (कप्प) ।

गामिअ वि [**ग्रामिक**] १ देखो **गामिल्ल,** (दे २, १००) । २ ग्राम का मुखिया ; (निचू २) । ३ विषयाभिलाषी ; (आचा) ।

गामिणिआ स्त्री [**गामिनिका**] गमन करने वाली स्त्री ; "ललिअहसवहुगामिणिआहि" (अजि २६) ।

गामिल्ल } **गामिल्लुअ** } **गामीण** } वि [**ग्रामीण**] गाँव का निवासी, गँवार ; (पउम ७७, १०८ ; विसे १ टी; दे ८, ४७)। स्त्री— °**ल्ली** ; (कुमा) ।

गामुअ वि [**गामुक**] जाने वाला ; (स १७५) ।

गामेइआ स्त्री [**ग्रामेयिका**] गाँव की रहने वाली स्त्री, गँवार स्त्री ; (गउड) ।

गामेणी स्त्री [**दे**] छागी, अजा, बकरी ; (दे २, ८४) ।

गामेयग वि [**ग्रामेयक**] गाँव का निवासी, गँवार; (बृह १)।

गामेरेड [**दे**] देखो **गामरोड**; (षड्) ।

गामेलुअ } **गामेल्ल** } देखो **गामिल्ल** ; (मृच्छ २७५ ; विपा १,१ ; विसे १४११) ।

गामेस पुं [**ग्रामेश**] गाँव का अधिपति; (दे २,३७) ।

गायरी स्त्री [**दे**] गर्गरी, कलशी, छोटा घड़ा, (दे २,८९) ।

°**गार** वि [°**कार**] कारक, कर्ता; (भवि) ।

गार पुं [**दे.ग्रावन्**] पत्थर, पाषाण, कङ्कर; (वव ४) ।

गार न [**अगार**] गृह, घर, मकान; (ठा ६) । °**त्थ** पुंस्त्री [°**स्थ**] गृहस्थ, गृही; (निचू१) । °**त्थिय** पुंस्त्री [°**स्थित**]

गृहस्थ, गृही, संसारी; "गारत्थियजणउचियं भासासमिओ न भासिज्जा" (पुप्फ १८१; ठा ६) ।

°**गारय** वि [**कारक**] कर्ता, करने वाला; (स १५१) ।

गारव पुंन [**गौरव**] १ अभिमान, अहंकार; २ अभिलाष, लालसा; "तओ गारवा पण्णत्ता" (ठा ३,४ ; श्रा ३५; सम ८) । ३ महत्व, गुरुत्व, प्रभाव ; (कुमा) । ४ आदर, सम्मान , (षड् ; प्राप्र) ।

गारविय वि [**गौरवित**] १ गौरवान्वित, महत्वशाली । २ गर्व-युक्त, अभिमानी ; ३ लालसा वाला, अभिलाषी ; (सूअ १,१,१) ।

गारविल्ल वि [**गौरववत्**] ऊपर देखो ; (कम्म१,५६) ।

गारि पुंस्त्री [**अगारिन्**] गृही, संसारी, गृहस्थ; (उत्त ५,१६) ।

गारिहत्थिय स्त्रीन [**गार्हस्थ्य**] गृहस्थ-संबन्धी, संसारि-संबन्धी । स्त्री—°**या** ; (पव २३५) ।

गारुड, **गारुल** वि [**गारुड**] १ गरुड-संबन्धी ; २ सर्प के विष को उतारने वाला, सर्प-विष को दूर करने वाला ; ३ पुं सर्प-विष को दूर करने वाला मन्त्र ; (उप ९८६ टी ; से १४, ५७) । ४ न. शास्त्र-विशेष, मन्त्र-शास्त्र-विशेष, सर्प-विष-नाशक मन्त्र का जिसमें वर्णन हो वह शास्त्र ; (ठा ६) । °**मंत** पुं [°**मन्त्र**] सर्प-विष का नाशक मन्त्र ; (सुपा २१९) । °**विउ** वि [°**विद्**] गारुड मन्त्र का जानकार, गारुड शास्त्र का जानकार ; (उप ९८६ टी) ।

गाल सक [**गालय्**] १ गालना, छानना । २ नाश करना । ३ उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना । गालयइ ; (विसे ६४) । वकृ—**गालेमाण** : (भग ९,३३) । कवकृ—**गालिज्जंत** ; (सुपा १७३) । प्रयो—गालावेइ ; (णाया १, १२) ।

गालण न [**गालन**] छानना, गालना; (पण्ह १, १ ; उप पृ ३७९) ।

गालणा स्त्री [**गालना**] १ गालना, छानना ; २ गिरवाना; ३ पिघलवाना ; (विपा १,१) ।

गालवाहिया स्त्री [**दे**] छोटी नौका, डोंगी ; "एत्थंतरम्मि समागया गालवाहियाए निज्जामआ" (स ३५१) ।

गालि स्त्री [**गालि**] गाली, अपशब्द, असभ्य वचन, (सुपा ३७०) ।

गालिय वि [**गालित**] १ छाना हुआ । २ अतिक्रान्त । ३ विनाशित, ४ चित ; "गालियमिंठो निरंकुसो वियरिओ राय-हत्थी" (महा) ।

गाली स्त्री [**गाली**] देखो **गालि** ; (पव ३८) ।

गाव (अप) देखो **गा** । गावइ ; (पिंग) । वकृ—**गावंत** ; (पि २५४) ।

गाव (अप) देखो **गव्व** ; (भवि) ।

गाव वि [**दे**] गत, गया हुआ, गुजरा हुआ ; (षड्) ।

गाव, **गावाण** पुं [**ग्रावन्**] १ पत्थर, पाषाण; (पाअ) । २ पहाड़, गिरि ; (हे ३, ५६) ।

गावि (अप) देखो **गव्विय** ; (भवि) ।

गावी स्त्री [**गो**] गौ, गैया ; (हे २, १७४ ; विपा १, २ ; महा) ।

गास पुं [**ग्रास**] ग्रास, कवल ; (सुपा ४८८) ।

गाह देखो **गह=ग्रह्** । कर्म—गाहिज्जइ ; (प्राप्र) ।

गाह सक [**ग्राहय्**] ग्रहण कराना । गाहेइ ; (औप) ।

गाह सक [**गाह्**] १ गाहना, ढूँढना । २ पढना, अभ्यास करना । ३ अनुभव करना । ४ टोह लगाना । गाहदि (शौ) ; (मृच्छ ७२) । कवकृ—**गाहिज्जंत** ; (वज्जा ४) ।

गाह पुं [**गाध**] स्ताघ, थाह ; (ठा ४, ४) ।

गाह पु [**ग्राह**] १ गाह, कुंभीर, नक्र, जल-जन्तु विशेष ; (दे २, ८९ ; णाया १, ४ ; जी २०) । २ आग्रह, हठ ; (विसे २५८९; पउम १६, १२) । ३ ग्रहण, आदान; (निचू १) । ४ गारुड़िक, सर्प को पकड़ने वाली मनुष्य-जाति ; (बृह १) । °**वई** स्त्री [°**वती**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८०) ।

गाहग वि [**ग्राहक**] १ ग्रहण करने वाला, लेने वाला; (सुपा ११) । २ समझने वाला, जानने वाला, (सुपा ३४३) । ३ समझाने वाला, शिक्षक, आचार्य, गुरू ; (औप) । ४ ज्ञापक, बोधक । स्त्री—**गाहिगा** ; (औप) ।

गाहण न [**ग्राहण**] १ ग्रहण कराना ; २ ग्रहण, आदान ; "गाहण तवचरियस्सा गहणं चिय गाहणा होंति" (पचभा) । ३ शास्त्र, सिद्धान्त ; (वव ४) । ४ बोधक वचन, शिक्षा, उपदेश ; (पण्ह २, २) ।

गाहणया, **गाहणा** स्त्री [**ग्राहणा**] ऊपर देखो ; (उप पृ ३१४ ; आचा ; गच्छ १) ।

गाहय देखो **गाहग** ; (विसे ८३१ ; स ४९८) ।

गाहा स्त्री [**गाथा**] १ छन्द-विशेष, आर्या, गीति , (ठा ५, ३ , अजि ३७ ; ३८) । २ प्रतिष्ठा , ३ निश्चय ; "सेसपयाण य गाहा" (आव ४) । ४ सूत्रकृतांग सूत्र का सोलहवाँ अध्ययन ; (सूअ १, १, १) ।

गाहा स्त्री [दे] गृह, घर, मकान ; "गाहा घरं गिहमिति एगट्ठा" (वव ८)। °**वइ** पुंस्त्री [°**पति**] १ गृहस्थ, गृही, संसारी; (ठा ४,४ ; सुपा २२६)। २ धनी, धनाढ्य; (उत्त १)। ३ भंडारी, भाण्डागारिक , (सम २७)। स्त्री—°**णी**; (णाया १, ५ ; उवा)।
गाहाल पुं [**ग्राहाल**] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु विशेष : (जीव १)।
गाहावई स्त्री [**ग्राहावती**] १ नदी विशेष , २ द्वीप विशेष, ३ ह्रद-विशेष, जहां से ग्राहावती नदी निकलती है; (जं ४)।
गाहाविय वि [**ग्राहित**] जिसको ग्रहण कराया गया हो वह ; (सुर ११, १८३)।
गाहिणी स्त्री [**गाहिनी**] १ गाहने वाली स्त्री। २ छन्द-विशेष , (पिंग)।
गाहिपुर न [**गाधिपुर**] नगर-विशेष : (गउड)।
गाहिय वि [**ग्राहित**] १ जिसको ग्रहण कराया गया हो वह ; २ आमित, ऊकसाया हुआ ; (सूअ १, २, १)।
गाहीकय वि [**गाथीकृत**] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ ; (सूअ १, १६)।
गाहु स्त्री [**गाहु**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
गाहुलि पुंस्त्री [**दे**] ग्राह, नक्र, क्रूर जल-जन्तु विशेष . (दे २, ८६)।
गाहुलिया देखो **गाहा** = गाथा ; (सुपा २६४)।
गिंठि स्त्री [**गृष्टि**] १ एक वार व्यायी हुई ; २ एक वार व्यायी हुई गौ : (हे १, २६)।
गिंधुअ [**दे**] देखो **गेंडुअ**; (पाअ)।
गिंधुल्ल [**दे**] देखो **गेंडुल्ल** , (पाअ)।
गिंभ (अप) देखो **गिम्ह** ; (हे ४, ४४२)।
गिंह देखो **गिम्ह** ; (पड्)।
गिज्जंत देखो **गा** ।
गिज्झ अक [**गृध्**] आसक्त होना, लम्पट होना। गिज्झइ ; (हे ४, २१७)। गिज्झइ ; (णाया १, ८)। वकृ—**गिज्झंत**, (औप)। कृ—**गिज्झियव्व**, (पण्ह २, ५)।
गिज्झ वि [**गृह्य, ग्राह्य**] १ ग्रहण करने योग्य : २ अपनी तरफ में किया जा सके ऐसा , (ठा ३, २)।
गिट्ठि देखो **गिंठि** ; " वारेंतस्सवि वला दिट्ठा गिट्ठिव्व जवसम्मि" (उप ७२८ टी ; पाअ ; गा ६४०)।
गिड्डिया स्त्री [**दे**] गेडी, गेंद खेलने की लकड़ी ; (पव ३८)।
गिण देखो **गण** = गणय्। गिणंति ; (सद्दि ६७)।
गिण्ह देखो **गह**=ग्रह्। गिण्हइ ; (कप्प)। वकृ—**गिण्हंत, गिण्हमाण**, (सुपा ६१६ ; णाया १, १)। संकृ—**गिण्हिउं, गिण्हिऊण, गिण्हित्ता**; (पि ५७४ ; ५८५ ; ५८२)। हेकृ—**गिण्हित्तए** ; (कप्प)। कृ—**गिण्हियव्व, गिण्हेयव्व**; (अणु, सुपा ५१३)।
गिण्हणा स्त्री [**ग्रहण**] उपादान, आदान ; (उत्त १६, २७)।
गिद्ध पुं [**गृध्र**] पक्षि-विशेष, गीध, (पाअ ; णाया १,१६)।
गिद्ध वि [**गृद्ध**] आसक्त, लम्पट, लोलुप ; (पण्ह १, २ . आचू ३)।
गिद्धि स्त्री [**गृद्धि**] आसक्ति, लम्पटता, गार्ध्य , (सूअ १, ६)।
गिम्ह पुं [**ग्रीष्म**] ऋतु-विशेष, गरमी की मोसिम , (हे २, ७४ , प्राप्र)।
गिर सक [**गॄ**] १ बोलना, उच्चारण करना। २ गिलना, निगलना। गिरइ , (षड्)।
गिरा स्त्री [**गिर्**] वाणी, भाषा, वाक् ; (हे १, १६)।
गिरि पुं [**गिरि**] १ पहाड़, पर्वत , (गउड ; हे १, २३)। °**अडी** स्त्री [°**तटी**] पर्वतीय नदी: (गउड)। °**कण्णई**, °**कण्णी** स्त्री [°**कर्णी**] वल्ली-विशेष, लता-विशेष , (पण्ण १—पत्र ३३ ; श्रा २०)। °**कूड** न [°**कूट**] १ पर्वत का शिखर। २ पुं रामचन्द्र का महल , (पउम ८०, ४)। °**जण्ण** पुं [°**यज्ञ**] कोकण देश में वर्षा-काल में किया जाता एक प्रकार का उत्सव , (बृह १)। °**णई** स्त्री [°**नदी**] पर्वतीय नदी, (पि ३८५)। °**णाल** पुं [°**नार**] प्रसिद्ध पर्वत विशेष, जो काठियावाड में आज-कल भी "गिरनार" के नाम से विख्यात है ; (ती ३)। °**दारिणी** स्त्री [°**दारिणी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३६)। °**नई** देखो °**णई**, (सुपा ६३५)। °**पक्खंदण** न [°**प्रस्कन्दन**] पहाड़ पर से गिरना ; (निचू ११)। °**यडय** न [°**कटक**] पर्वत-नितम्ब , (गउड)। °**पब्भार** पुं [°**प्राग्भार**] पर्वत-नितम्ब ; (सण्ण)। °**राय** पुं [°**राज**] मेरु पर्वत ; (इक)। °**वर** पुं [°**वर**] प्रधान पर्वत, उत्तम पहाड ; (सुपा १७६)। °**वरिंद** पुं [°**वरेन्द्र**] मेरु पर्वत; (श्रा २७)। °**सुआ** स्त्री [°**सुता**] पार्वती, गौरी ; (पिंग)।
गिरि पुं [**दे**] बीज-कोश ; (दे ६, १४८)।

गिरिंद पु [**गिरीन्द्र**] १ श्रेष्ठ पर्वत, २ मेरु पर्वत ; ३ हिमाचल ; (कप्पू) ।
गिरिडी स्त्री [**दे**] पशुओं के दाँत को बाँधने का उपकरण-विशेष, "दंतगिरिडिं-पवंधइ" (सुपा २३७) ।
गिरिस पुं [**गिरिश**] महादेव, शिव; (पाअ, दे ६,१२१) । °**वास** पुं [°**वास**] कैलाश पर्वत; (से ६, ७५) ।
गिरीस पु [**गिरीश**] १ हिमाचल पर्वत; २ महादेव, शिव ; (पिंग) ।
गिल सक [**गॄ**] गिलना, निगलना, भक्षण करना । सकृ—**गिलिऊण** ; (नाट) ।
गिलण न [**गरण**] निगरण, भक्षण, (हे ४,४४५) ।
गिला } अक [**ग्लै**] १ ग्लान होना, बिमार होना । २
गिलाअ } खिन्न होना, थक जाना । ३ उदासीन होना । गिलाइ, गिलायइ, गिलाएमि ; (भग ; कस ; आचा) । वकृ—**गिलायमाण**, (ठा ३,३) ।
गिला स्त्री [**ग्लानि**] १ बिमारी, रोग, २ खेद, थाक ; (ठा ८) ।
गिलाण वि [**ग्लान**] १ बिमार, रोगी ; (सूअ १, ३,३) । २ अशक्त, असमर्थ, थका हुआ : (ठा ३,४) । ३ उदासीन, हर्ष-रहित, (णाया १, १३, हे २, १०६) ।
गिलाणि स्त्री [**ग्लानि**] ग्लानि, खेद, थकावट, (ठा ५,१) ।
गिलायय वि [**ग्लायक**] ग्लानि-युक्त, ग्लान, (औप) ।
गिलासि पुंस्त्री [**ग्रासिन्**] व्याधि-विशेष, भस्मक रोग ; (आचा) । स्त्री—°**णी** ; (आचा) ।
गिलिअ वि [**गिलित**] निगला हुआ, भक्षित ; (सुपा ३, २०६ ; सुपा ६४०) ।
गिलिअवंत वि [**गिलितवत्**] जिसने भक्षण किया हो वह ; (पि ५६६) ।
गिलोइया } स्त्री [**दे**] गृह-गोधा, छिपकली ; (सुपा
गिलोई } ६४० ; पुप्फ २६७) ।
गिल्लि स्त्री [**दे**] १ हाथी की पीठ पर कसा जाता होदा, होदा ; (णाया १,१—पत्र ४३ टी ; औप) । २ डोली, दो आदमी से उठाई जाती एक प्रकार की शिबिका, (सूअ २,२; दसा ६) ।
गिव्वाण पु [**गीर्वाण**] देव, सुर, त्रिदश ; (उप ५३० टी) ।
गिह न [**गृह**] घर, मकान ; (आचा, श्रा २३; स्वप्न ६४) । °**त्थ** पुंस्त्री [**स्थ**] गृहस्थ, गृही, संसारी ; (कप्प, द्र ५) । स्त्री—°**त्था**; (पउम ४६, ३३) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] घर का मालिक ; (श्रा २८) । °**लिंगि** पुंस्त्री [°**लिङ्गिन्**] गृहस्थ, गृही, ससारी, (दंस)। °**वइ** पुंस्त्री [°**पति**] गृहस्थ, गृही, घर का मालिक; (ठा ५, ३; सुपा २३४) । °**वास** पुं [°**वास**] १ घर में निवास ; २ द्वितीयाश्रम, संसारिपन, "गिहवासं पासं पिव मन्नतो वसइ दुक्खिओ तम्मि" (धम्म ; सुअ १,६) । °**ावट्ट** पु [°**ावर्त्त**] द्वितीय आश्रम, संसारिपन ; (सूअ १,४,१) । °**ासम** पुं [°**ाश्रम**] घरवास, द्वितीयाश्रम ; (स १४८) ।
गिहि पुं [**गृहिन्**] गृही, संसारी, गृहस्थ ; (ओघ १७ भा, नव ४३) । °**धम्म** पुं [°**धर्म**] गृहस्थ-धर्म, श्रावक-धर्म ; (राज) । °**लिंग** न [°**लिङ्ग**] गृहस्थ का वेष ; (बृह १) ।
गिहिणी स्त्री [**गृहिणी**] गृहिणी, भार्या, स्त्री ; (सुपा ८३; श्रा १६) ।
गिहीअ वि [**गृहीत**] आत्त, उपात्त, ग्रहण किया हुआ ; (स ४२८) ।
गिहेलुय पुं [**गृहैलुक**] देहली, द्वार के नीचे की लकडी ; (निचू १३) ।
गी स्त्री [**गिर्**] वाणी, भाषा, वाक् ; "थिरमुज्जलं च छाया-घणं च गीविलसियं जस्स" (गउड) ।
गीआ स्त्री [**गीता**] छन्द-विशेष, (पिंग) ।
गीइ स्त्री [**गीति**] १ छन्द-विशेष, आर्या-वृत्त का एक भेद ; २ गान, गीत ; (ठा ७ ; उप १३० टी) ।
गीइया स्त्री [**गीतिका**] ऊपर देखो ; (औप ; णाया १,१) ।
गीय वि [**गीत**] १ पद्य-मय वाक्य, गेय, जो गाया जाय वह; (पण्ह २,५ ; अणु) । २ कथित, प्रतिपादित; (णाया १,१) । ३ प्रसिद्ध, विख्यात, (संथा) । ४ न. गान, ताल और बाजे के अनुसार गाना ; (जं२; उत्त१) । ५ संगीत-कला, गान-कला, सगीत-शास्त्र का परिज्ञान, (णाया १,१) । ६ पु. गीतार्थ, उत्सर्ग-अपवाद वगैरः का जानकार जैन साधु, विद्वान् जैन मुनि; (उप७७३) । °**जस** पुं [°**यशस्**] इन्द्र-विशेष, गन्धर्व देवों का एक इन्द्र ; (ठा२,३ ; इक) । °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] १ विद्वान् जैन मुनि ; (उप ८३३ टी; वव ४; सुपा १२७) । २ संगीत-रहस्य ; (मै१४) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (पउम ५५,५३)। °**रइ** स्त्री [°**रति**] १ संगीत-क्रीडा ; (औप) । २ पुं. गन्धर्व देवों का एक इन्द्र ; (इक; भग३,८) । ३ गन्धर्व-सेना का अधिपति देव-विशेष; (ठा ७)। ४ वि. संगीत-प्रिय, गान-प्रिय ; (विपा१,२) ।
गीवा स्त्री [**ग्रीवा**] कण्ठ, डोक ; (पाअ) ।

गुंछ देखो **गुच्छ** ; (हे १,२६) ।

गुंछा स्त्री [**दे**] १ बिन्दु , २ दाढी-मूँछ ; ३ अधम, नीच ; (दे २,१०१) ।

गुंज अक [**हस्**] हसना, हास्य करना । गुंजइ; (हे४,१६६) ।

गुंज अक [**गुञ्ज्**] १ गुन गुन करना, भ्रमर आदि का आवाज करना । २ गर्जना, सिंह वगैरः का आवाज करना । "गुजंति सीहा" (महा)। वकृ-- **गुंजंत,** (णाया १,१—पत्र ५; रभा)।

गुंज पुं [**गुञ्ज**] १ गुञ्जारव करता वायु, (पउम १३,४३)। २ पर्वत-विशेष, " गुंजवरपव्वय ते" (पउम ८,६०, ६४) ।

गुंजा स्त्री [**गुञ्जा**] १ लता- विशेष, (सुर २,६) । २ फल-विशेष, घुङ्‌गची ; (णाया १,१, गा३१०)। ३ भम्भा, वाद्य-विशेष , (आचा)। ४ परिमाण-विशेष, (ठा४,१))। ५ गुञ्जा-रव, गुञ्जन, गुन गुन आवाज; "गुंजाचक्ककुहरोवगूढं" (राय)। ६ वायु-विशेष, गुञ्जारव करता वायु; (जीव१, जी७) । °**फल,** °**हल** न [°**फल**] फल-विशेष, घुङ्‌गची, (सुर२,६;सुपा२६१) ।

गुंजालिया स्त्री [**गुञ्जालिका**] वक्र-सारिणी, टेढी कियारी, (णाया १,१)। २ गोल पुष्करिणी ; (निचू १२)। ३ वक्र नदी, (पराह ११) ।

गुंजाविअ वि [**हासित**] हसाया हुआ , (कुमा ७,४१) ।

गुंजिअ न [**गुञ्जित**] गुन गुन आवाज, भ्रमर वगैर का शब्द , (कुमा) ।

गुंजिर वि [**गुञ्जितृ**] गुन गुन आवाज करने वाला, (उप १०३१ टी) ।

गुंजुल्ल देखो **गुंजोल्ल** । गुंजुल्लइ , (हे ४,२०२) ।

गुंजेल्लिअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ, (दे२,९२)।

गुंजोल्ल अक [**उत्+लस्**] उल्लास पाना, विकसित होना । गुंजोल्लइ ; (हे ४, २०२) ।

गुंजोल्लिअ वि [**उल्लसित**] उल्लसित, विकसित; (कुमा) ।

गुंठ सक [**उद्+धूलय्. गुण्ठ्**] धूल वाला करना, धूली के रङ्ग का करना, धूसरित करना। गुंठइ, (हे४,२९) । वकृ— **गुंठंत** : (कुमा) ।

गुंठ पु [**दे**] १ अधम अश्व, दुष्ट घोडा; (दे२,९१, स ४५४) । २ वि. मायावी, कपटी ; (वव३) ।

गुंठा स्त्री [**दे**] माया, दम्भ, छल ; (वव ३) ।

गुंठिअ वि [**गुण्ठित**] १ धूसरित, २ व्याप्त; ३ आच्छादित, (दे १, ८५) ।

गुंठी स्त्री [**दे**] नीरंगी, स्त्री का वस्त्र-विशेष ; (दे२,९०) ।

गुंड न [**दे**] मुस्ता से उत्पन्न होने वाला तृण-विशेष, (दे २, ९१) ।

गुंडण न [**गुण्डन**] धूलि का लेप, धूल का शरीर में लगाना ; "रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्मं सहसि" (णाया १, १—पत्र ७१) ।

गुंडिअ वि [**गुण्डित**] १ धूलि-लिप्त, धूलि-युक्त (पाअ)। २ लिप्त, पाता हुआ; "सुगणगुडिअगातं" (विपा १, २—पत्र २४) । ३ घिरा हुआ ; "सउणी जह पंसुगुंडिया" (सूअ १, २, १) । ४ आच्छादित, प्रावृत ; (आचा) । ५ प्रेरित , (पराह १, ३) ।

गुंथण न [**ग्रन्थन**] गूँथना, गठना , (रयण १८) ।

गुंद पु [**गुन्द्र**] वृक्ष-विशेष , (पाअ) ।

गुंदल न [**दे. गुन्दल**] १ आनन्द-ध्वनि, खुशी का आवाज, हर्ष का तुमुल-ध्वनि ; "मत्तवरकामिणीसघकयगुदलं" (सुर ३, ११५) । "करिणीहि कलहेहि य खणमेक्क हरिसगुंदल काउ" (सुपा १३७) । २ हर्ष-भर. आनन्द-सदोह, खुशी की वृद्धि , "अमंदआणदगुदलपुरुव" , "आणंदगुदलेणं ललइ लीलावईहिं परिकलिओ" (सुपा २२; १३६) । ३ वि आनन्द-मग्न, खुशी में लीन . "तं तह दट्ठु आणंदगुदलं" (सुपा १३४) ।

गुंदवडय न [**दे**] एक जात की मीठाई, गुजराती में जिस-को 'गुंदवडा' कहते है ; (सुपा ४८५) ।

गुंदा } स्त्री [**दे**] १ बिन्दु, २ अधम, नीच , (दे २, **गुंपा** } १०१) ।

गुंफ सक [**गुम्फ्**] गूँथना, गठना । गुंफइ , (पड्) । वकृ—**गुंफंत** , (कुमा) ।

गुंफ पु [**गुम्फ्**] १ रचना, गूँथना, ग्रन्थन, (उप १०३१ टी ; दे १, १५० , ६, १४२) ।

गुंफ पु [**दे**] गुप्ति, कारागार, जेल , (दे २, ९०) ।

गुंफण न [**दे**] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष . "गफणफरणसुकारएहि" (सुर २, ८) ।

गुंफी स्त्री [**दे**] शतपदी, क्षुद्र कीट-विशेष, गोजर, कनखजूरा, (दे २, ९१) ।

गुग्गुल पु [**गुग्गुल**] सुगन्धित द्रव्य-विशेष, गूगल . (सुपा १५१) ।

गुग्गुली स्त्री [**गुग्गुल**] गूगल का पेड , (जी १०) ।

गुग्गुलु देखो **गुग्गुल** ; (स ४३६) ।

गुच्छ } पुं [**गुच्छ**] १ गुच्छा, गुच्छक, स्तवक, (उत्त २;
गुच्छय } स्वप्न ७२)। २ वृक्षों की एक जाति ; (पराण १)। ३ पत्ती का समूह ; (जं १)।

गुच्छय देखो **गोच्छय** : (ओघ ६६८)।

गुच्छिय वि [**गुच्छित**] गुच्छा वाला, गुच्छ-युक्त ; "निच्चं गुच्छिया" (राय)।

गुज्ज देखो **गोज्ज** ; (सुपा २८१)।

गुज्जर पु [**गूर्जर**] १ भारत का एक प्रान्त, गुजरात देश ; (पिंग)। २ वि. गुजरात का निवासी। स्त्री—°री, (नाट)।

गुज्जरत्ता स्त्री [**गूर्जरत्रा**] गुजरात देश ; (सार्ध ६८)।

गुज्जलिअ वि [दे] संघटित, (षड्)।

गुज्झ } वि [**गुह्य**] १ गोपनीय, छिपाने योग्य ; (णाया
गुज्झअ } १, १ ; हे २, १२४)। २ न. गुप्त बात, रहस्य, "सिमतिणिहियियगयं गुज्झं पिव तक्खणा फुट्ट" (उप ७२८ टी)। ३ लिंग, पुरुष-चिन्ह , ४ योनि, स्त्री-चिन्ह ; (धर्म २)। ५ मैथुन, सभोग ; (पराह १, ४)। °**हर** वि [°**धर**] गुप्त बात को प्रकट नहीं करने वाला ; (दे २, ८३)। °**हर** वि [°**हर**] रहस्य-भेदी, गुप्त बात को प्रसिद्ध करने वाला ; (दे २, ६३)।

गुज्झअ } पुं [**गुह्यक**] देवों की एक जाति; (ठा ५, ३)।
गुज्झग }

गुट्ठ न [दे] स्तम्ब, तृण-काण्ड; "अज्जुणगुट्ठं व तस्स जाणूइं" (उवा)।

गुट्ठ देखो **गोट्ठ** , (पात्र ; भत १६२)।

गुट्ठी देखो **गोट्ठी** ; (सूक्त ५८)।

गुड सक [**गुड्**] १ हाथी को कवच वगैरः से सजाना। २ लड़ाई के लिए तय्यार करना, सजाना। "गुडह गइंदे पउणीकरेह रहवक्कपाइक्के" (सुपा २८८)। कवकृ— "गुडिअ**गुडिज्जंत**भडं" (से १२, ८७)।

गुड पुं [**गुड**] १ गुड, ईख का विकार, लाल शक्कर; (हे १, २०२; प्रासू १५१)। २ एक प्रकार का कवच; (राज)। °**सत्थ** न [°**सार्थ**] नगर-विशेष ; (आक)।

गुडदालिअ वि [दे] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ, (दे २, ६२)।

गुडा स्त्री [**गुडा**] १ हाथी का कवच ; २ अश्व का कवच ; (विपा १, २)।

गुडिअ वि [**गुडित**] कवचित, वर्मित, कृत-संनाह ; (से १२, ७३ ; ८७ ; विपा १, २)।

गुडिआ स्त्री [**गुटिका**] गोली ; (गा १७७)।

गुडोलद्धिआ स्त्री [दे] चुम्बन ; (दे २, ६१)।

गुण सक [**गुणय्**] १ गिनना। २ आवृत्ति करना, याद करना। गुणइ ; (सूक्त ५१ ; हे ४, ४२२)। गुणेइ ; (उव)। वकृ—**गुणमाण** ; (उप पृ ३६६)।

गुण पुन [**गुण**] १ गुण, पर्याय, स्वभाव, धर्म ; (ठा ५, ३)। २ ज्ञान, सुख वगैरः एक ही साथ रहने वाला धर्म , (सम्म १०७ ; १०६)। ३ ज्ञान, विनय, दान, शौर्य, सदाचार वगैरः दोष-प्रतिपक्षी पदार्थ ; (कुमा , उत्त १६ , अणु , ठा ४, ३ ; से १, ४)। ४ लाभ, फायदा ; "विहवेहिं गुणाइं मग्गंति" (हे १, ३४ ; सुपा १०३)। ५ प्रशस्तता, प्रशंसा ; (णाया १, १)। ६ रज्जू , डोरा, धागा ; (से १, ४)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध ए, ओ और अर् रूप स्वर-विकार , (सुपा १०३)। ८ जैन गृहस्थ को पालने का व्रत-विशेष , गुण-व्रत , (पचव ३)। ६ रूप, रस, गन्ध वगैरः द्रव्याश्रित धर्म , "गुण-पच्चक्खत्तणओ गुणीवि जाओ घडोव्व पच्चक्खो" (ठा१,१, उत्त २८)। १० प्रत्यञ्चा, धनुष का रोदा, (कुमा)। ११ कार्य, प्रयोजन, (भग २,१०)। १२ अप्रधान, अ-मुख्य, गौण, (हे १,३४)। १३ अंश, विभाग; (अणु)। १४ उपकार, हित ; (पंचा ५)। °**कर** वि [°**कर**] १ लाभ-कारक ; २ उपकार-कारक, (पंचा ५)। °**कार** पुं [°**कार**] गुना करना, अभ्यास-राशि; (सम ६०)। °**चंद** पु [°**चन्द्र**] १ एक राज-कुमार ; (आवम)। २ एक जैन मुनि और ग्रन्थकार; ३ श्रेष्ठि-विशेष ; (राज)। °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] गुणों का स्वरूप-विशेष, मिथ्यादृष्टि वगैरः चउदह गुण-स्थानक ; (कम्म ४; पव ६०)। °**ट्ठिअ** पु [°**र्थिक**] गुण को प्रधान मानने वाला मत, नय-विशेष; (सम्म १०७)। °**ड्ढ** वि [°**ाढ्य**] गुणी, गुणवान् ; (सुर ३, २०; १३०)। °**ण्ण** °**ण्णु**, °**न्न**, °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] गुण का जानकार ; (गउड ; उवर ८६ ; उप ५३० टी; सुपा १२२)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] गुणी पुरुष; (सूअ १, ४)। °**मंत** वि [°**वत्**] गुणी, गुण-युक्त ; (आचा २, १, ६)। °**रयणसंवच्छर** न [°**रत्नसंवत्सर**] तपश्चर्या-विशेष ; (भग)। °**व**, °**वंत** वि [°**वत्**] गुणी, गुण-युक्त, (श्रा ३६; उप ८७५)। °**व्वय** न [°**व्रत**] जैन गृहस्थ को पालने योग्य व्रत-विशेष; (पडि)। °**सिलय** न [°**शिलक**] राजगृह नगर का एक चैत्य ; (णाया १, १)। °**सेढि** स्त्री [°**श्रेणि**] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष ; (पंच)।

°**सेण** पुं [°**सेन**] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा, (स ६)। °**हर** वि [°**धर**] १ गुणों को धारण करने वाला, गुणी; २ तन्तु-धारक ; स्त्री— °**रा** ; (सुपा ३२७)। °**ायर** पुं [°**ाकर**] गुणों की खान, अनेक गुण वाला, गुणी ; (पउम १५,६८ ; प्रासू १३४) ।

गुण देखो **पगूण** । "गुणसट्ठि अपमत्ते सुराउवंधं तु जइ इहागच्छे" (कम्म २,८ ; ४, ५४ ; ५६ ; श्रा ४४) ।

°**गुण** वि [°**गुण**] गुना, आवृत्त ; "वीसगुणो तीसगुणो" (कुमा ; प्रासू २६) ।

गुणा स्त्री [**दे**] मिष्टान्न-विशेष ; (भवि) ।

गुणाविय वि [**गुणित**] पढाया हुआ, पाठित ; "तत्थ सो अज्जएण सयलाओ धणुव्वेयाइयाओ महत्थविज्जाओ गुणाविओ" (महा) ।

गुणि वि [**गुणिन्**] गुण-युक्त, गुण वाला ; (उप ५६७ टी ; गउड ; प्रासू २६) ।

गुणिअ वि [**गुणित**] १ गुना हुआ, जिसका गुणा किया गया हो वह ; (श्रा ६) । २ चिन्तित, याद किया हुआ , (से ११, ३१) । ३ पठित, अधीत , (ओघ ६२) । ४ जिस पाठ की आवृत्ति की गई हो वह, परावर्त्तित ; (वव ३) ।

गुणिल्ल वि [**गुणवत्**] गुणी, गुण-युक्त, (पि ५६५) ।

गुत्त वि [**गुप्त**] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ ; (णाया १,४ ; सुर ७, २३४) । २ रक्षित; (उत्त १५) । ३ स्व-पर की रक्षा करने वाला, गुप्ति-युक्त, मन वगैरः की निर्दोष प्रवृत्ति वाला ; (उप ६०४) । ४ एक स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (आक) ।

गुत्त देखो **गोत्त** , (पाअ ; भग ; आवम) ।

गुत्तण्हाण न [**दे**] पितृ-तर्पण; (दे २, ६३) ।

गुत्ति स्त्री [**गुप्ति**] १ कैदखाना, जेल , (सुर १,७३ ; सुपा ६३) । २ कठघरा ; (सुपा ६३) । ३ मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति का रोकना; ४ मन वगैर. की निर्दोष प्रवृत्ति ; (ठा २, १; सम ८) । °**गुत्त** वि [°**गुप्त**] मन वगैरः की निर्दोष प्रवृत्ति वाला, संयत, (पण्ह २,४) । °**पाल** पुं [°**पाल**] जेल का रक्षक, कैदखाना का अध्यक्ष ; (सुपा ४६७) । °**सेण** पु [°**सेन**] ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव; (सम१५३) ।

गुत्ति स्त्री [**दे**] १ वन्धन ; (दे २, १०१ ; भवि) । २ इच्छा, अभिलाषा ; ३ वचन, आवाज , ४ लता, वल्ली ; ५ सिर पर पहनी जाती फूल की माला ; (दे २, १०१) ।

गुत्तिंदिय वि [**गुप्तेन्द्रिय**] इंद्रिय-निग्रह करने वाला, संयतेंद्रिय ; (भग ; णाया १,४) ।

गुत्तिय वि [**गौप्तिक**] रक्षक, रक्षण करने वाला ; "नगरगुत्तिए सद्दावेइ" (कप्प) ।

गुत्थ वि [**ग्रथित**] गुम्फित, गूँथा हुआ; (स ३०२ ; प्राप ; गा ६३ ; कप्पू) ।

गुत्थंड पु [**दे**] भास-पक्षी, पक्षि-विशेष ; (दे २, ६२) ।

गुद पुस्त्री [**गुद**] गाँड, गुदा ; (दे ६, ४६) ।

गुप्प अक [**गुप्**] व्याकुल होना । गुप्पइ ; (हे ४,१५० ; षड्) । वकृ—**गुप्पंत, गुप्पमाण** ; (कुमा ६, १०२; कप्प; औप) ।

गुप्प वि [**गोप्य**] १ छिपाने योग्य । २ न. एकान्त, विजन ; (ठा ४,१) ।

गुप्पई स्त्री [**गोष्पदी**] गौ का पैर डूबे उतना गहरा ; "को उत्तरिउं जलहिं, निव्वुडए गुप्पईनीर" (धम्म १२ टी) ।

गुप्पंत न [**दे**] १ शयनीय, शय्या ; २ वि. गोपित, रक्षित ; (दे २,१०२) । ३ संमूढ, मुग्ध, घवड़ाया हुआ, व्याकुल ; (दे २, १०२ ; से १,२ ; २,४) ।

गुप्पय देखो **गो-पय** ; (सूक्त ११) ।

गुप्फ पुं [**गुल्फ**] फीली, पैर की गाँठ; (स ३३; हे २,६०) ।

गुप्फगुमिअ वि [**दे**] सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त; (दे २, ६३) ।

गुब्भ देखो **गुप्फ** ; (षड्) ।

गुभ सक [**गुफ्**] गूँथना, गठना । गुभइ; (हे १,२३६) ।

गुम सक [**भ्रम्**] घूमना, पर्यटन करना, भ्रमण करना । गुमइ; (हे ४, १६१) ।

गुमगुम } अक [**गुमगुमाय्**] १ गुम गुम आवाज
गुमगुमाअ } करना । २ मधुर अव्यक्त ध्वनि करना । वकृ—**गुमगुमंत, गुमगुमिंत, गुमगुमायंत** ; (औप ; णाया१, १ ; कप्प, पउम ३३, ६) ।

गुमगुमाइय वि [**गुमगुमायित**] जिसने गुम-गुम आवाज किया हो वह ; (औप) ।

गुमिअ वि [**भ्रमित**] भ्रमित, घुमाया हुआ , (कुमा) ।

गुमिल वि [**दे**] १ मूढ, मुग्ध ; २ गहन, गहरा ; ३ प्रस्खलित , ४ आपूर्ण, भरपूर ; (दे २, १०२) ।

गुमुगुमुगुम देखो **गुमगुम** । वकृ— **गुमुगुमुगुमंत, गुमुगुमुगुमेंत**; (पउम २, ४० ; ६२, ६) ।

गुम्म अक [**मुह्**] मुग्ध होना, घवड़ाना, व्याकुल होना । गुम्मइ ; (हे ४, २०७) ।

गुम्म पुंन [**गुल्म**] १ लता, वल्ली, वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १) । २ झाड़ी, वृक्ष-घटा ; (पाअ) । ३ सेना-विशेष, जिसमें

ज्योतिष्क देवों की एक जाति ; (कप्प ; औप; भग; जी ३३ ; उक्त)।

गेह न [**गेह**] गृह, घर, मकान; (स्वप्न १६ ; गउड)। °जामाउय पुं [°**जामातृक**] घरजमाई, सर्वदा ससुर के घर में रहने वाला जामाता ; (उप पृ ३६६)। °**गार** वि [°**ाकार**] १ घर के आकार वाला ; २ पुं. कल्पवृक्ष की एक जाति ; (सम १७)। °**लु** वि [°**वत्**] घर वाला, गृही, संसारी ; (पड्)। °**ासम** पुं [°**ाश्रम**] गृहस्थाश्रम ; (पउम ३१, ८३)।

गेहि वि [**गृद्ध**] लोलुप, आसक्त ; (ओघ ८७)।

गेहि स्री [**गृद्धि**] आसक्ति, गार्ध्य, लालच ; (स ११३, पण्ह १, ३)।

गेहि वि [**गेहिन्**] नीचे देखो; (णाया १, १४)।

गेहिअ वि [**गेहिक**] १ घर वाला, गृही। २ पुं. भर्ता, स्वामी, पति ; (उत्त २)।

गेहिअ वि [**गृद्धिक**] आसक्त, लोलुप, लालची ; (पण्ह १, ३)।

गेहिणी स्री [**गेहिनी**] गृहिणी, स्री ; (सुपा ३४१ ; कुमा ; कप्पू)।

गो पुं [**गो**] १ रश्मि, किरण ; (गउड)। २ स्वर्ग, देवभूमि ; (सुपा १४२)। ३ बैल, बलीवर्द ; ४ पशु, जानवर ; ५ स्री. गैया ; " अपरप्परियतिरियानियमियदिग्गमणचेओगिलो गोव्व " (विसे १७५८ ; पउम १०३, ५० ; सुपा २७५)। ६ वाणी, वाग् ; (सूअ १, १३)। ७ भूमि ; " जं महइ विंझवणगोयराण लोआ पुलिंदाण " (गउड; सुपा १४२)। °**आल** देखो °**वाल** ; (पुप्फ २१६)। °**उल्ल** वि [°**मत्**] गो-युक्त, जिसके पास अनेक गौ हों वह; (दे २, ६८)। °**उल** न [°**कुल**] १ गौओं का समूह ; (आव ३)। २ गोष्ठ, गो-वाड़ा; " गओ गोउलगओ !" (आवम)। °**उलिय** वि [°**कुलिक**] गो-कुल वाला, गो-कुल का मालिक, गोवाला ; (सण)। °**किलंजय** न [°**किलञ्जक**] पात्र-विशेष, जिसमें गौ को खाना दिया जाता है : (भग ७, ८)। °**कीड** पुं [°**कीट**];पशुओं की मक्खी, बग्घी, (जी १६)। °**क्खीर**, °**खीर** न [°**क्षीर**] गैया का दूध ; (सम ६०; णाया १, १)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] गौ की चोरी, गौ का हरण ; (पण्ह १, ३)। °**ग्गहण** न [°**ग्रहण**] ऊपर देखो ; (णाया १, १८)। °**णिसज्जा** स्री [°**निषद्या**] आसन-विशेष, गौ की तरह बैठना ; (ठा ५, १)। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] १ गौओं का तालाव आदि में उतरने का रास्ता ; क्रम से नीची जमीन; (जीव ३)। २ लवण समुद्र वगैरः की एक जगह ; (ठा १०)। °**त्तास** वि [°**त्रास**] १ गौओं का त्रास देने वाला ; २ पुं एक कूटग्राह का पुत्र; (विपा १, २)। °**दास** पुं [°**दास**] १ एक जैन मुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य ; २ एक जैन मुनि-गण ; (कप्प ; ठा ६)। °**दोहिया** स्री [°**दोहिका**] १ गौ का दोहन ; २ आसन-विशेष, गौ दोहने के समय जिस तरह बैठा जाता है उस तरह का उपवेशन ; (ठा ५, १)। °**दुह** वि [°**दुह्**] गौ को दोहने वाला ; (षड्)। °**धूलिआ** स्री [°**धूलिका**] लग्न-विशेष, गौओं को चरा कर पीछे घुमने का समय, सायंकाल ; "वेलव्व गोधूलिया" (रंभा)। °**पय**, °**प्पय** न [°**ष्पद**] १ गौ का पैर डूबे उतना गहरा; "लद्धम्मि जम्मि जीवाण जायइ गोपयं व भवजलही" (आप ६६)। २ गो-पद-परिमित भूमि; (अणु)। ३ गौ का पैर ; (ठा ४, ४)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] श्रेष्ठि-विशेष, शालिभद्र के पिता का नाम ; (ठा १०)। °**भूमि** स्री [°**भूमि**] गौओं को चरने की जगह ; (आवम)। °**म** वि [°**मत्**] गौ वाला ; (विसे १४६८)। °**मड** न [°**मृत**] गौ का शव; (णाया १, ११—पत्र १७३)। °**मय** न [°**मय**] गोवर, गौ का मल, गो-विष्ठा ; (भग ५, २)। °**मुत्तिया** स्री [°**मूत्रिका**] १ गौ का मूत्र, गो-मूत्र; (ओघ ६४ भा)। २ गो-मूत्र के आकार वाली गृह-पंक्ति; (पंचव २)। °**मुहिअ** न [°**मुखित**] गौ के मुख का आकार वाली ढ़ाल; (णाया १, १८)। °**रहग** पुं [°**रथक**] तीन वर्ष का बैल ; (सूअ १,४, २)। °**रोयण** स्रीन [°**रोचन**] स्वनाम-ख्यात पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष, गोमस्तक-स्थित शुष्क पित्त; (सुर १, १३७) ; स्री—°**णा**; (पंचा ४)। °**लेहणिया** स्री [°**लेहनिका**] ऊपर भूमि ; (निचू ३)। °**लोम** पुं [°**लोम**] १ गौ का रोम, बाल; २ द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जीव १)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ इन्द्र ; २ सूर्य ; ३ राजा ; (सुपा १४२)। ४ महादेव ; ५ बैल; (हे १, २३१)। °**वइय** पुं [°**व्रतिक**] गौओं की चर्या का अनुकरण करने वाला एक प्रकार का तपस्वी; (णाया १, १५)। °**वय** देखो °**पय**; (गज)। °**वाड** पुं [°**वाट**] गौओं का वाड़ा ; (दे १, १४६)। °**व्वइय** देखो °**वइय** ; (औप)। °**साला** स्री [°**शाला**]

गौओं का वाड़ा ; (निचू ८) । °हण न [°धन] गौओं का समूह ; (गा ६०६ ; सुर १, ४६) ।

गोअ देखो **गोव**=गोपय् । कृ—**गोअणिज्ज**; (नाट—मालती १२१) ।

गोअंट पुं [**दे**] १ गौ का चरण ; २ स्थल-शृङ्गाट, स्थल में होने वाला शृङ्गाट का पेड़ ; (दे २, ९८) ।

गोअग्गा स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला : (दे २, ६६) ।

गोअल्ला स्त्री [**दे**] दूध बेचने वाली स्त्री ; (दे २, ९८) ।

गोआ स्त्री [**गोदा**] नदी-विशेष, गोदावरी नदी ; "गोआणा-इकच्छकुडंगवासिणा दरिअसीहेण" (गा १७५) ।

गोआ स्त्री [**दे**] गर्गरी, कलशी, छोटा घड़ा; (दे २, ८९) ।

गोआअरी स्त्री [**गोदावरी**] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ३५५) ।

गोआलिआ स्त्री [**दे**] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (दे २, ९८) ।

गोआवरी देखो **गोआअरी** ; (हे २, १७४) ।

गोउर न [**गोपुर**] नगर का दरवाजा ; (सम १३७ ; सुर १, ५६) ।

गोंजी } **गोंठी** } स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर , (दे २, ९५) ।

गोंड देखो **कोंड**=कौण्ड ; (इक) ।

गोंड न [**दे**] कानन, वन, जंगल ; (दे २, ९४) ।

गोंडी स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ९५) ।

गोंदल देखो **गुंदल**; (भवि) ।

गोंदीण न [**दे**] मयूर-पित्त, मोर का पित्त ; (दे २, ९७)।

गोंफ पुं [**गुल्फ**] पाद-ग्रन्थि, पैर की गाँठ ; (पराह १, ४) ।

गोकण्ण } **गोकन्न** } पुं [**गोकर्ण**] १ गौ का कान । २ दो खुर वाला चतुष्पद-विशेष ; (पराह १, १) । ३ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष ; ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य ; (ठा ४, २) ।

गोक्खुरय पुं [**गोक्षुरक**] एक ओषधि का नाम, गोखरू ; (स २५६) ।

गोच्चय पु [**दे**] प्राजन-दण्ड, कोड़ा ; (दे २, ९७) ।

गोच्छ देखो **गुच्छ** ; (से ६, ४७ ; गा ५३२) ।

गोच्छअ } **गोच्छग** } पुंन [**गोच्छक**] पात्र वगैरः साफ करने का वस्त्र-खण्ड ; (कस ; पराह २, ५) ।

गोच्छड न [**दे**] गोमय, गो-विष्टा, (मृच्छ ३४) ।

गोच्छा स्त्री [**दे**] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ९५) ।

गोच्छिय देखो **गुच्छिय** ; (औप ; णाया १, १) ।

गोछड देखो **गोच्छड**; (नाट—मृच्छ ४१) ।

गोजलोया स्त्री [**गोजलौका**] क्षुद्र कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पराण १५) ।

गोज्ज पु [**दे**] १ शारीरिक दोष वाला बैल, (सुपा २८१)। २ गाने वाला, गवैया, गायक ;

" वीणावससणाह, गीयं नडनट्टछत्तगोज्जेहिं ।
वंदिजणेण सहरिसं, जयसद्दालायणं च कयं "
(पउम ८५, १९) ।

गोट्ठ पुं [**गोष्ठ**] गोवाडा, गौओ के रहने का स्थान ; (महा ; पउम १०३, ४० ; गा ४४७) ।

गोट्ठामाहिल पुं [**गोष्ठामाहिल**] कर्म-पुद्गलों को जीव प्रदेश से अबद्ध मानने वाला एक जैनाभास आचार्य ; (ठा ७) ।

गोट्ठि देखो **गोट्ठी** , (आवम) ।

गोट्ठिल्ल } **गोट्ठिल्लग** } **गोट्ठिल्लय** } पुं [**गौष्ठिक**] एक मण्डली के सदस्य, समान-वयस्क दोस्त , (णाया १, १६—पत्र २०५ ; विपा १, २—पत्र ३७) ।

गोट्ठी स्त्री [**गोष्ठी**] १ मण्डली, समान वय वालों की सभा (प्राप; दसनि १ ; णाया १, १६) । २ वार्तालाप, परामर्श : (कुमा) ।

गोड पुं [**गौड**] १ देश-विशेष, (स २८६) । २ वि. गौड देश का निवासी ; (पराह १, १) ।

गोड पुं [**दे**] गोड, पाद, पैर , (नाट—मृच्छ १५५) ।

गोडा स्त्री [**गोला**] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ५८, १०३) ।

गोडी स्त्री [**गौडी**] गुड की बनी हुई मदिरा, गुड का दारू ; (बृह २) ।

गोड्ड वि [**गौड**] १ गुड का बना हुआ ; २ मधुर, मिष्ट ; (भग १८, ६) ।

गोड्ड [**दे**] देखो **गोड** ; (मृच्छ १२०) ।

गोण पु [**दे**] १ साक्षी ; (दे २, १०४) । २ बैल, वृषभ, बलीवर्द , (दे २, १०४ ; कुमा ; हे २, १७४ . सुपा ५४७ , औप ; दस ५, १ ; आचा २, ३, ३ ; उप ६०४ ; विपा १, १) । °इन्न वि [°वत्] गौ वाला, गौओं का मालिक ; (सुपा ५४७) । °वइ पुंस्त्री [°पति] गौओं का मालिक, गौ वाला ; (सुपा ५४७) ।

गोण वि [**गौण**] १ गुण-निष्पन्न, गुण-युक्त, यथार्थ ; (विपा १,२ ; औप)। २ अ-प्रधान, अ-मुख्य ; (औप)।
गोणंगणा स्त्री [**गवाङ्गना**] गैया, गौ ; (सुपा ४६५)।
गोणत्त, **गोणत्तय** पुंन [**दे**] वैद्य का औजार रखने का थैला ; (उप ३१७ ; स ४८४)।
गोणस पुं [**गोनस**] सर्प की एक जाति, फण-रहित साँप की एक जाति ; (पण्ह १,१ ; उप पृ ४०३)।
गोणा स्त्री [**दे**] गौ, गैया ; (षड्)।
गोणिक्क पुं [**दे**] गो-समूह, गौओं का समूह ; (दे २,६७, पाअ)।
गोणिय वि [**दे**] गौओं का व्यापारी ; (वव ६)।
गोणी स्त्री [**दे**] गौ, गैया ; (ओघ २३ भा)।
गोण्ण देखो **गोण**=गौण ; (कप्प ; णाया १,१—पत्र ३७)।
गोत्त पुं [**गोत्र**] १ पर्वत, पहाड़; (श्रा १४)। २ न. नाम, अभिधान, आख्या ; (से १५, १०)। ३ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से प्राणी उच्च या नीच जाति का कहलाता है ; (ठा २, ४)। ४ पुंन. गोत, वंश, कुल, जाति ; "सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता" (ठा ७)। °**क्खलिय** न [°**स्खलित**] नाम-विपर्यास, एक के बदले दूसरे के नाम का उच्चारण; (से ११,१७)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] कुल-देवी; (श्रा १४)। °**फुसिया** स्त्री [°**स्पर्शिका**] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १)।
गोत्ति वि [**गोत्रिन्**] समान गोत्र वाला, कुटुम्बी, स्वजन ; (सुपा १०६)।
गोत्ति देखो **गुत्ति** ; (स २४२)।
गोत्तिअ वि [**गोत्रिक**] समान गोत्र वाला, स्वजन; (श्रा २७)।
गोत्थुभ देखो **गोथुभ** ; (इक)।
गोत्थूभा देखो **गोथूभा** ; (इक)।
गोथुभ, **गोथूभ** पुं [**गोस्तूप**] १ ग्यारहवें जिन-देव का प्रथम शिष्य ; (सम १५२ ; पि २०८)। २ वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत ; (सम ६६)। ३ न. मानुषोत्तर पर्वत का एक शिखर ; (दीव)।
गोथूभा स्त्री [**गोस्तूपा**] १ वापी-विशेष, अञ्जन पर्वत पर की एक वापी ; (ठा ३, ३)। २ शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी की राजधानी ; (ठा ४,२)।
गोदा स्त्री [**दे. गोदा**] नदी-विशेष, गोदावरी; (षड् ; गा ६५५)।
गोध पुं [**गोध**] १ म्लेच्छ देश ; २ गाध देश का निवासी मनुष्य ; (राज)।
गोधा स्त्री [**गोधा**] गोह, हाथ से चलने वाली एक साँप की जाति; (पण्ह १,१ ; णाया १, ८)।
गोन्न देखो **गोण्ण** ; (णाया १,१६—पत्र २००)।
गोपुर देखो **गोउर** ; (उत ६ ; अभि १८५)।
गोफणा स्त्री [**दे**] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष; (राज)।
गोमट्टा स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला ; (दे २, ६६)।
गोमाअ, **गोमाउ** पुं [**गोमायु**] शृगाल, गीदड़ ; (नाट—मृच्छ ३२०; पि १६५; णाया १,४ ; स २२६; पाअ)।
गोमाणसिया स्त्री [**गोमानसिका**] शय्याकार स्थान विशेष; (जीव ३)।
गोमाणसी स्त्री [**गोमानसी**] ऊपर देखो ; (जीव ३)।
गोमि, **गोमिअ** वि [**गोमिन्**] जिसके पास अनेक गौ हों वह, (अणु; निचू २)।
गोमिअ देखो **गोम्मिअ** ; (राज)।
गोमी स्त्री [**दे**] कनखजूरा, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ;(जी १६)।
गोमुह पुं [**गोमुख**] १ यक्ष-विशेष, भगवान् ऋषभदेव का शासन-यक्ष ; (संति ७)। २ एक अन्तर्द्वीप द्वीप-विशेष ; ३ गोमुख-द्वीप का निवासी मनुष्य; (ठा ४,२)। ४ न. उपलेपन; (दे २, ६८)।
गोमुही स्त्री [**गोमुखी**] वाद्य-विशेष; (अणु ; राय)।
गोमेअ, **गोमेज्ज** पुं [**गोमेद**] रत्न की एक जाति ; (कुमा ७० ; उत्त २)।
गोमेह पुं [**गोमेध**] १ यक्ष-विशेष, भगवान् नेमिनाथ का शासन-देव ; (सं ८)। २ यज्ञ-विशेष, जिसमें गौ का वध किया जाता है ; (पउम ११,४१)।
गोम्मिअ पुं [**गौल्मिक**] कोटवाल, नगर-रक्षक; (पण्ह १,२)।
गोम्ही देखो **गोमी** ; (राज)।
गोय देखो **गोत्त** ; (सम ३३ ; कम्म १)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] अपने कुल को उत्तम मानने वाला, वंशाभिमानी ; (आचा)।
गोय न [**दे**] उदुम्बर वगैरः का फल ; (आव ६)।
गोयम पुं [**गोतम**] १ ऋषि-विशेष ; (ठा ७)। २ छोटा बैल ; (औप)। ३ न. गोत्र-विशेष ; (कप्प ; ठा ७)।
गोयम वि [**गौतम**] १ गोतम गोत्र में उत्पन्न, गोतम-गोत्रीय ; "जे गोयमा ते सत्तविहा पण्णत्ता" (ठा ७ ; भग ; जं १)। २ पुं. भगवान् महावीर का प्रधान शिष्य ; (भग १४, ७ ; उवा)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार, राजा

अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर्वत पर मुक्त हुआ था; (अंत २) । ४ एक मनुष्य-जाति, जो बैल द्वारा भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह चलाती है ; (णाया १, १४) । ५ एक ब्राह्मण , (उप ६१७) । ६ द्वीप-विशेष ; (सम ८० ; उप ५९७ टी) । °**केसिज्ज** न [°**केशीय**] उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन, जिसमें गौतमस्वामी और केशिमुनि का संवाद है ; (उत्त २३) । °**सगुत्त** वि [°**सगोत्र**] गोतम गोत्रीय , (भग; आवम) । °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] भगवान् महावीर के सर्व-प्रधान शिष्य का नाम ; (विपा १,१—पत्र २) ।

गोयमज्जिया } स्त्री [**गौतमार्यिका**] जैन मुनि-गण की
गोयमेज्जिया } एक शाखा ; (राज ; कप्प) ।

गोयर पुं [**गोचर**] १ गौओं को चरने की जगह ; "णो गोयरे णो वणगाणियाणं" (वृह ३) । २ विषय ; "अंबुरुहगोयरं णमह...सयंभु" (गउड)। ३ इन्द्रिय का विषय, प्रत्यक्ष, "इअ राया उज्जाणं तं कासी नयणगोअरं सव्वं"(कुमा)। ४ भिक्षाटन, भिक्षा के लिए भ्रमण ; (ओघ ६६ भा ; दस ५,१) । ५ भिक्षा, माधुकरी ; (उप २०४) । ६ वि. भूमि में विचरने वाला, "विंभत्वणगोयराण पुलिंदाण" (गउड) । °**चरिआ** स्त्री [°**चर्या**] भिक्षा के लिए भ्रमण; (उप १३७ टी ; पउम ४, ३) । °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] १ पशुओं को चरने की जगह ; (दे ३, ४०) । २ भिक्षा-भ्रमण की जगह; (ठा ६)। °**वत्ति** वि [°**वर्तिन्**] भिक्षा के लिए भ्रमण करने वाला ; (गा २०४) ।

गोयरी स्त्री [**गौचरी**] भिक्षा, माधुकरी ; (सुपा २६६) ।

गोर पुं [**गौर**] १ शुक्ल वर्ण, सफेद रंग ; २ वि. गौर वर्ण वाला, शुक्ल ; (गउड ; कुमा) । ३ अवदात, निर्मल , (णाया १,८) । °**खर** पुं [°**खर**] गर्दभ की एक जाति ; (पण्ण१) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष, हिमाचल ; (निचू १) । °**मिग** पुं [°**मृग**] १ हरिण की एक जाति , २ न. उस हरिण के चमड़े का बना हुआ वस्त्र ; (आचा २, ५, १) ।

गोरअ देखो **गोरव** ; (गा ८६) ।

गोरंग वि [**गौराङ्ग**] शुक्ल शरीर वाला : (कप्पू) ।

गोरंफिडी स्त्री [**दे**] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष ; (दे२,९८) ।

गोरडित वि [**दे**] त्रस्त, ध्वस्त , (षड्) ।

गोरव न [**गौरव**] १ महत्त्व, गुरुत्व ; (प्रासू ३०) । २ आदर, सम्मान, बहुमान ; (विसे ३४७३ ; रयण ५३) । ३ गमन, गति ; (ठा ६) ।

गोरविअ वि [**गौरवित**] सम्मानित, जिसका आदर किया गया हो वह ; (दे ४,५) ।

गोरस पुंन [**गोरस**] गोरस, दूध, दही, मठा वगैरः ; (णाया १,८ ; ठा ४,१) ।

गोरा स्त्री [**दे**] १ लाङ्गल-पद्धति, हल-रेखा ; २ चक्षु, आँख ; ३ ग्रीवा, डोक ; (दे २, १०४) ।

गोरि° देखो **गोरी** ; (हे १, ४) ।

गोरिअ न [**गौरिक**] विद्याधर का नगर-विशेष ; (इक) ।

गोरी स्त्री [**गौरी**] १ शुक्ल-वर्णा स्त्री; (हे ३,२८) । २ पार्वती, शिव-पत्नी ; (कुमा ; सुपा २४० ; गा १) । ३ श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम ; (अंत १५) । ४ इस नाम की एक विद्या-देवी; (संति ६) । °**कूड** न [°**कूट**] विद्याधर-नगर-विशेष ; (इक) ।

गोल पु [**दे**] १ साक्षी ; (दे २,९५) । २ पुरुष का निन्दा-गर्भ आमन्त्रण ; (णाया १, ९) । ३ निष्ठुरता, कठोरता ; (दस ७)

गोल पुं [**गोल**] १ वृक्ष-विशेष ; "कदम्बगोलणिहकंटअंत-णिअंगे" (अच्चु ५८) । २ गोलाकार, वृत्ताकार, मण्डलाकार वस्तु ; (ठा ४,४; अनु ५) । ३ गोलक, कुंडा; (सुपा२७०)। ४ गेंद, कन्दुक ; (सूअ १,४) ।

गोलग } पुं [**गोलक**] ऊपर देखो ; (सूअ २,२ ; उप पृ
गोलय } ३९२ काल) ।

गोला स्त्री [**दे**] गौ, गैया ; (दे २, १०४ ; पात्र) । २ नदी, कोई भी नदी ३ सखी, सहेली, संगिनी ; (दे २, १०४) । ४ गोदावरी नदी; (दे २,१०४ ; गा ५८ ; १७५; हेका २६७ ; पि ८५ ; १६४ ; पाअ ; षड्) ।

गोलिय पु[**गौडिक**] गुड़ बनाने वाला ; (वव ६) ।

गोलिआ स्त्री [**दे**] १ गोली, गुटिका ; (राय; अणु) । २ गेंद, लड़कों के खेलने की एक चीज ; "तीए दासीए घडो गोलियाए भिन्नो" (दसनि २) । ३ बड़ा कुंडा, बड़ी थाली ; (ठा ८) । °**लिंछ**, °**लिच्छ** न [°**लिञ्छ**, °**लिच्छ**] १ चुल्ली, चुल्हा ; २ अग्नि-विशेष ; (ठा ८—पत्र ४१७) ।

गोलियायण न [**गोलिकायन**] १ गोल-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है ; २ वि. गोलिकायन-गोत्रीय ;(ठा७) ।

गोली स्त्री [**दे**] मथनी, मथनिया, दही मथने की लकड़ी ; (दे ३, ९५) ।

गोल्ल न [**दे**] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल ; (णाया१,८ ; कुमा) ।

गोल्ल पुं [**गौल्य**] १ देश-विशेष; (आवम)। २ न. गोत्र-विशेष, जो काश्यप गोत्र की शाखा है; ३ वि. गौल्य गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७)।

गोल्हा स्त्री [**दे**] बिम्बी, वल्ली-विशेष, कुन्दरुन का पेड़; (दे २, ६५; आवम; पाअ)।

गोव सक [**गोपय्**] १ छिपाना। २ रक्षण करना। गोवए, गोवेइ, (सुपा ३४६; महा)। कवकृ—**गोविज्जंत**; (सुपा ३३७; सुर ११, १६२; प्रासू ६५)।

गोव } पुं [**गोप**] गौओं का रक्षक, ग्वाला, गो-पाल;
गोवअ } (उवा ७; दे २, ५८; कप्पू)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष; "गोवगिरिसिहरसंठियचरमजिणा-ययणदारमवरुद्धं" (मुणि १०८६७)।

गोवड्डण देखो **गोवद्धण**; (पि २६१)।

गोवण न [**गोपन**] १ रक्षण; २ छिपाना; (श्रा २८; उप ५६७ टी)।

गोवद्धण पुं [**गोवर्धन**] १ पर्वत-विशेष; (पि २६१)। २ ग्राम-विशेष; (पउम २०, ११५)।

गोवर पुन [**दे**] गोबर, गोमय, गो-विष्ठा; (दे २, ६६; उप ५६७ टी)।

गोवर पुं [**गोवर**] १ मगध देश का एक गाँव, गौतम-स्वामी की जन्म-भूमि; (आक)। २ वणिग्-विशेष; (उप ५६७ टी)।

गोवल न [**गोवल**] गोधन, गोकुल, गौओं का समूह; "चारिंति गोवलाइं" (सुपा ४३३)। २ गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०)।

गोवलायण देखो **गोवल्लायण**; (सुज्ज १०)।

गोवलिय पुं [**गोवालक**] ग्वाला, अहीर; (सुपा ४३३)।

गोवल्लायण वि [**गोवलायन**] १ गोवल गोत्र में उत्पन्न; २ न. नक्षत्र-विशेष; (इक)।

गोवा पुं [**गोपा**] गौओं का पालन करने वाला, ग्वाला; (प्रामा)।

गोवाय सक [**गोपाय्**] १ छिपाना; २ रक्षण करना। वकृ—**गोवायंत**; (उप ३५७)।

गोवाल पुं [**गोपाल**] गौ पालने वाला, ग्वाला, अहीर; (दे २, २८)। °**गुज्जरी** स्त्री [°**गुर्जरी**] भैरव राग वाली भाषा-विशेष, गुजरात के अहीरों का गीत; (कुमा)।

गोवालय पुं [**गोपालक**] ऊपर देखो; (पउम ५, ६६)।

गोवालि पुं [**गोपालिन्**] ग्वाला, गोप, अहीर; (सुपा ४३२; ४३३)।

गोवालिणी स्त्री [**गोपालिनी**] गोप-स्त्री, अहीरिन; (सुपा ४३२)।

गोवालिय पुं [**गोपालिक**] गोप, अहीर, ग्वाला; (सुपा ४३३)।

गोवालिया स्त्री [**गोपालिका**] गोप-स्त्री, गोपी, अहीरिन; (णाया १, १६)।

गोवाली स्त्री [**गोपाली**] वल्ली-विशेष; (पण्ण १)।

गोविअ वि [**दे**] अ-जल्पाक, नहीं बोलने वाला; (दे २, ६७)।

गोविअ वि [**गोपित**] १ छिपाया हुआ; २ रक्षित; (सुर १, ८८; निर १, ३)।

गोविआ स्त्री [**गोपिका**] गोपांगना, अहीरिन; (कुमा; गा ११४)।

गोविंद पुं [**गोपेन्द्र**] १ स्वनाम-ख्यात एक योग-विषयक ग्रन्थ-कार; २ एक जैन मुनि; (पंचव; णंदि)।

गोविंद पुं [**गोविन्द**] १ विष्णु, कृष्ण; २ एक जैन मुनि; (ठा १०)। °**णिज्जुत्ति** स्त्री [°**निर्युक्ति**] इस नाम का एक जैन दार्शनिक ग्रन्थ; (निचू ११)।

गोविल्ल न [**दे**] कञ्चुक, चोली; (दे २, ६४)।

गोवी स्त्री [**दे**] बाला, कन्या, कुमारी, लड़की; (दे २, ६६)।

गोवी स्त्री [**गोपी**] गोपाङ्गना, अहीरिन; (सुपा ४३५)।

गोव्वर [**दे**] देखो **गोवर**; (उप ५६३; ५६७ टी)।

गोस पुंन [**दे**] प्रभात, सुबह, प्रातः-काल; (दे २, ६६; सण; गउड; वव ६; पंचव २; पाअ; षड्; पव ४)।

गोसंधिय पुं [**गोसंधित**] गोपाल, अहीर; (राज)।

गोसग्ग पुंन [**दे. गोसर्ग**] प्रातः-काल, प्रभात; (दे २, ६६; पाअ)।

गोसण्ण [**दे**] मूर्ख, बेवकूफ; (दे २, ६७; षड्)।

गोसाल } पुं. व. [**गोशाल**] १ देश-विशेष; (पउम
गोसालग } ६८, ६५)। २ पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य, जिसने पीछे अपना आजीविक मत चलाया था; (भग १५)।

गोसाविआ स्त्री [**दे**] १ वेश्या, वाराङ्गना; (मृच्छ ५५)। २ मूर्ख-जननी; (नाट—मृच्छ ७०)।

गोसिय वि [दे] प्राभातिक, प्रातःकाल-संबन्धी; (सण) ।
गोसीस न [**गोशीर्ष**] चन्दन-विशेष, सुगन्धित काष्ठ-विशेष ; (पण्ह २, ४ ; ५; कप्प ; सुर ४, १४ ; सण)।
गोह पुं [**दे**] १ गाँव का मुखिया; (दे २,८६) । २ भट, सुभट, योद्धा; (दे २, ८६ ; महा) । ३ जार, उपपति; (उप पृ २१५) । ४ सिपाही, पुलिस ; (उप पृ ३३५)। ५ पुरुष, आदमी, मनुष्य ; (मृच्छ ५७) ।
गोहा देखो **गोधा** ; (दे २, ७३ ; भग ८,३) ।
गोहिया स्त्री [**गोधिका**] १ गोधा, गोह, जलजन्तु-विशेष ; (सुर १०, १८६) । २ साँप की एक जाति ; (जीव २) । ३ वाद्य-विशेष ; (अनु) ।
गोहुर न [**दे**] गोमय, गो-विष्ठा ; (दे २, ६६) ।
गोहूम पुं [**गोधूम**] अन्न-विशेष, गेहूँ ; (कस) ।
गोहेर, **गोहेरय** पुं [**गोधेर**] जन्तु-विशेष, साँप की तरह का जनावर ; (पउम ४८, ६२ ; ६१) ।
°ग्गह देखो **गह**=ग्रह ; (गउड) ।
°ग्गहण देखो **गहण**=ग्रहण ; (अभि ५६) ।
°ग्गहण देखो **गहण**=ग्राहण ; (कुमा) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे गआराइसद्दसंकलणो
बारहमो तरंगो समत्तो ।
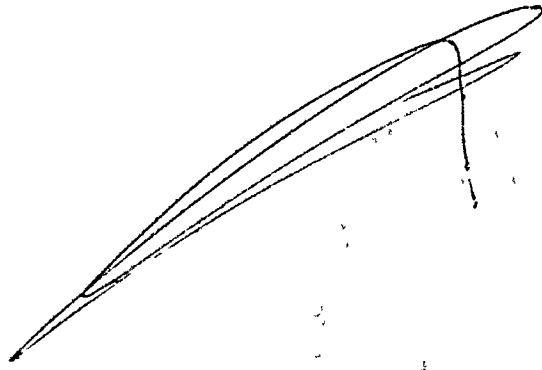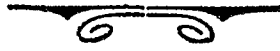
घ

घ पुं [घ] कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप ; प्रामा) ।
घअंद न [दे] मुकुर, दर्पण ; (षड्) ।
घइं (अप) अ. पाद-पूरक और अनर्थक अव्यय ; (हे ४, ४२४ ; कुमा) ।
घओअ) पुं [घृतोद] १ समुद्र-विशेष, जिसका पानी
घओद) घी के तुल्य स्वादिष्ठ है ; (इक ; ठा ७) । २ मेघ-विशेष ; (तित्थ) ३ वि. जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाशय । स्त्री—°**आ**, °**दा** ; (जीव ३; राय) ।
घंघ पुं [दे] गृह, मकान, घर; (दे २, १०५) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] अनाथ-मण्डप, भिक्षुकों का आश्रय-स्थान ; (ओघ ६२६ ; वव ७ ; आचा) ।
घंघल (अप) न [**झकट**] १ झगड़ा, कलह ; (हे ४, ४२२) । २ मोह, घबराहट ; (कुमा) ।
घंघोर वि [दे] भ्रमण-शील, भटकने वाला; (दे २, १०६) ।
घंचिय पुं [दे] तेली, तेल निकालने वाला ; गुजराती में 'घांची' ; (सुर १६, १६०) ।
घंट पुंस्त्री [**घण्ट**] घण्टा, कांस्य-निर्मित वाद्य-विशेष ; (ओघ ८६ भा) । स्त्री—°**टा**; (हे १, १९५ ; राय) ।
घंटिय पुं [**घाण्टिक**] घण्टा बजाने वाला ; (कप्प) ।
घंटिया स्त्री [**घण्टिका**] १ छोटा घण्टा ; (प्रामा) । २ किंकिणी ; (सुर १, २४८ ; जं २) । ३ आभरण-विशेष ; (णाया १, ९) ।
घंस पुं [**घर्ष**] घर्षण, घिसन ; (णाया १, १—पत्र ६३) ।
घंसण न [**घर्षण**] घिसन, रगड़ ; (स ४७) ।
घंसिय वि [**घर्षित**] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ; (औप) ।
घक्कूण देखो **घे** ।
घग्घर न [दे] घघरा, लहँगा, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र ; (दे २, १०७) ।
घग्घर पुं [**घर्घर**] १ शब्द-विशेष ; (गा ८००) । २ खोखला गला ; "घग्घरगलम्मि" (दे ६, १७) । ३ खोखला आवाज; "रुयमाणी घग्घरेण सद्देण" (सुर २, ११२) । ४ न. शाड्वल, शैवाल वगैरः का समूह ; (गउड) ।
घट्ट सक [**घट्ट्**] १ स्पर्श करना, छूना । २ हलना, चलना । ३ संघर्ष करना । ४ आहत करना । घट्टइ ; (सुपा ११६) । वकृ—**घट्टंत**, (ठा ७) । कवकृ—**घट्टिज्जंत**; (से २, ७) ।
घट्ट अक [**भ्रंश्**] भ्रष्ट होना । घट्टइ ; (षड्) ।
घट्ट पुं [दे] १ कुसुम्भ रंग से रँगा हुआ वस्त्र ; २ नदी का घाट ; ३ वेणु, वंश ; (दे २, १११) ।
घट्ट पुं [**घट्ट**] १ शर्कराप्रभा-नामक नरक-भूमि का एक नरकावास, (इक) । २ पुंन. जमाव; (श्रा २८) । ३ समूह, जत्था ; "हयघट्टाइं" (सुपा २५६) । ४ वि. गाढा, निबिड़ ; "मूल-घट्टकररुहओ" (सुपा ११) ।
घट्टंसुअ न [दे.**घट्टांशुक**] वस्त्र-विशेष, बूटेदार कौसुम्भ वस्त्र ; (कुमा) ।
घट्टण न [**घट्टन**] १ छूना, स्पर्श करना । २ चलाना, हिलना ; (दस ४) ।
घट्टणग पुं [**घट्टनक**] पात्र वगैरः को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता एक प्रकार का पत्थर ; (बृह ३) ।
घट्टणया) स्त्री [**घट्टना**] १ आघात, आहनन ; (औप ;
घट्टणा) ठा ४, ४) । २ चलन, हिलन ; (ओघ ९) । ३ विचार ; ४ पृच्छा ; (बृह ४) । ५ कदर्थना, पीडा , (आचा) । ६ स्पर्श, छूना ; (पण्ण १६) ।
घट्टय देखो **घट्ट** ; (महा) ।
घट्टिय वि [**घट्टित**] १ आहत, संघर्ष-युक्त ; (जं १) । २ प्रेरित, चालित ; (पण्ह १, ३) । ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ ; (जं १ ; राय) ।
घट्ठ वि [**घृष्ट**] १ घिसा हुआ; (हे२, १७४; औप; सम१३७) ।
घड सक [**घट्**] १ चेष्टा करना । २ करना, बनाना । ३ अक. परिश्रम करना । ४ संगत होना, मिलना । घडइ ; (हे १, १९५) वकृ—**घडंत, घडमाण**; (से १, ५ ; निचू १) । कृ—**घडियव्व** ; (णाया १,१—पत्र ६०) ।
घड सक [**घटय्**] १ मिलाना, जोड़ना, संयुक्त करना । २ बनाना, निर्माण करना । ३ संचालन करना । घडेइ ; (हे ४, ५०) । भवि— घडिस्सामि; (स ३६४) । । वकृ— **घडंत** , (सुपा २५५) । संकृ— **घडिअ** ; (दस ५, १) ।
घड पुं [**घट**] घड़ा, कुम्भ, कलश ; (हे १,१९५) । °**कार** पुं [°**कार**] कुम्भकार, मिट्टी का बरतन बनाने वाला ; (उप पृ ४१५) । °**चेडिया** स्त्री [°**चेटिका**] पानी भरने वाली दासी, पनिहारी ; (सुपा ४९०) । °**दास** पुं [°**दास**] पानी भरने वाला नौकर ; (आचा) । °**दासी** स्त्री [°**दासी**] पानी भरने वाली, पनिहारी ; (सूअ १,१५) ।

घड वि [**दे**] सूत्रीकृत, बनाया हुआ ; (षड्)।

घडइअ वि [**दे**] संकुचित ; (षड्)।

घडग पुं [**घटक**] छोटा घड़ा ; (जं २ ; अणु)।

घडण न [**घटन**] १ घड़ना, कृति, निर्माण ; (से ७,७१)। २ यत्न, चेष्टा, परिश्रम ; (अनु ४ ; पण्ह २,१)।

घडणा स्त्री [**घटना**] मिलान, मेल, संयोग ; (सूत्र १,१,१)।

घडय देखो **घडग** ; (जं २)।

घडा स्त्री [**घटा**] समूह, जत्था ; (गउड)।

घडाघडी स्त्री [**दे**] गोष्ठी, सभा, मण्डली ; (षड्)।

घडाव सक [**घटय्**] १ बनाना। २ बनवाना। ३ संयुक्त करना, मिलाना। घडावइ ; (हे ४,३४०)। संकृ— **घडावित्ता** ; (आवम)।

घडि° स्त्री [**घटी**] देखो **घडिआ**=घटिका ; (प्रासू ५५)। **°मंतय, °मत्तय** न [**°मात्रक**] छोटे घड़े के आकार का पात्र-विशेष ; (राज ; कस)। **°जंत** न [**°यन्त्र**] रेंट, पानी निकालने की कल ; (पात्र)।

घडिअ वि [**घटित**] १ कृत, निर्मित, (पात्र)। २ संसक्त संबद्ध, श्लिष्ट, मिला हुआ ; (पात्र ; स १६४ ; औप; महा)।

घडिअघडा स्त्री [**दे**] गोष्ठी, मण्डली ; (दे २, १०५)।

घडिआ स्त्री [**घटिका**] १ छोटा घड़ा, कलशी; (गा ४६०; श्रा २७)। २ घड़ी, मुहूर्त ; (सुपा १०८)। ३ समय बताने वाला यन्त्र, घटी-यन्त्र ; (पात्र)। **°लय** न [**°लय**] घण्टा-गृह, घण्टा बजाने का स्थान ; (सुर ७, १७)।

घडिआ } **घडी** } स्त्री [**दे**] गोष्ठी, मण्डली ; (षड् ; दे २,१०५)।

घडी स्त्री [**घटी**] देखो **घडिआ** ; (स २३८ ; प्रासू)।

घडुक्कय पुं [**घटोत्कच**] भीम का पुत्र; (हे ४,२६६)।

घडुब्भव वि [**घटोद्भव**] १ घट से उत्पन्न ; २ पुं. ऋषि-विशेष, अगस्त्य मुनि ; (प्राकृ)।

घढ न [**दे**] थूहा, टीला, स्तूप ; (पात्र)।

घण पुं [**घन**] १ मेघ, बादल ; (सुर १३, ४५ ; प्रासू ७२)। २ हथौड़ा; (दे ६,११)। ३ गणित-विशेष, तीन अंकों का पूरण करना, जैसे दो का घन आठ होता है; (ठा १०—पत्र ४६६ ; विसे ३५४०)। ४ वाद्य का शब्द-विशेष, कांस्य-ताल वगैरः ; (ठा २,३)। ५ वि. दृढ, ठोस ; (औप)। ६ अविरल, निविड़, निश्छिद्र, सान्द्र ; (कुमा ; औप)। ७ गाढ़, प्रगाढ़ ; "जाया पीई घणा तेसिं" (उप ५६७ टी)। ८ अतिशय, अधिक, अत्यन्त ; (राय)। ९ कठिन, तरलता-रहित, स्त्यान ; (जी ७; ठा ३, ४)। १० न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३७)। ११ पिण्ड ; (सूत्र १,१,१)। १२ वाद्य-विशेष ; (सुज्ज १२)। **°उदहि** देखो **घणोदहि** ; (भग)। **°णिचिय** वि [**°निचित**] अत्यन्त निविड़ ; (भग)। **°तव** न [**°तपस्**] तपश्चर्या-विशेष; (भग ७, ८; औप)। **°दंत** पुं [**°दन्त**] १ इस नाम का एक अन्त-द्वीप ; २ उसका निवासी मनुष्य ; (ठा ४,२)। **°माल** न [**°माल**] वैताढ्य पर्वत पर स्थित विद्याधर-नगर-विशेष ; (इक)। **°मुइंग** पुं [**°मृदङ्ग**] मेघ की तरह गंभीर आवाज वाला वाद्य-विशेष ; (औप)। **°रह** पुं [**°रथ**] एक जैन मुनि ; (पउम २०, १९)। **°वाउ** पुं [**°वायु**] स्त्यान वायु, जो नरक-पृथ्वी के नीचे है ; (उत्त ३६)। **°वाय** पुं [**°वात**] देखो **°वाउ**, (भग; जी ७)। **°वाहण** पुं [**°वाहन**] विद्याधरों के एक राजा का नाम ; (पउम ५,७७)। **°विज्जुआ** स्त्री [**°विद्युता**] देवी-विशेष, एक दिक्कुमारी देवी का नाम ; (इक)। **°समय** पुं [**°समय**] वर्षा-काल, वर्षा ऋतु ; (कुमा ; पात्र)।

घणघणाइय न [**घनघनायित**] रथ का चीत्कार, अव्यक्त शब्द-विशेष ; (पण्ह १,३)।

घणवाहि पुं [**दे**] इन्द्र, स्वर्ग-पति ; (दे २, १०७)।

घणसार पुं [**घनसार**] कपूर ; (पात्र; भवि)। **°मंजरी** स्त्री [**°मञ्जरी**] एक स्त्री का नाम ; (कप्पू)।

घणा स्त्री [**घना**] धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (णाया २,१—पत्र २५१)।

घणा स्त्री [**घृणा**] घृणा, जुगुप्सा, गर्हा ; (प्राप्र)।

घणिय न [**घनित**] गर्जना, गर्जन ; (सुज्ज २०)।

घणोदहि पुं [**घनोदधि**] पत्थर की तरह कठिन जल-समूह ; (सम ३७)। **°वलय** न [**°वलय**] वलयाकार कठिन जल-समूह ; (पण्ण २)।

घण्ण पुं [**दे**] १ उर, वक्षस्, छाती ; २ वि. रक्त, रंगा हुआ ; (दे २, १०५)।

घत्त सक [**क्षिप्**] १ फेंकना, डालना। २ प्रेरना। घत्तइ ; (हे ४,१४३)। संकृ—"अंकाओ **घत्तिऊण** वत्त्रीणं" (पउम ७८,२० ; स ३५१)।

घत्त सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। भवि—घत्तिस्स ; (प्रयौ ३३)।

घत्त सक [**गवेषय्**] खोजना, ढूँढना। घत्तइ; (हे ४,१८९)। संकृ—**घत्तिअ** ; (कुमा)।

घत्त वि [घात्य] १ मार डालने योग्य ; २ जो मारा जा सके ; (पि २८१ ; सूअ १, ७, ६ ; ८) ।
घत्तण न [क्षेपण] फेंकना ; (कुमा) ।
घत्ता स्त्री [घत्ता] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
घत्ताणंद न [घत्तानन्द] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
घत्तिय वि [क्षिप्त] प्रेरित ; (स २०७) ।
घत्थ वि [ग्रस्त] १ भक्षित, निगला हुआ, कवलित ; (पउम ७१,५१ ; पण्ह १, ५) । २ आक्रान्त, अभिभूत ; (सुपा ३५२ ; महा) ।
घम्म पुं [घर्म] घाम, गरमी, संताप ; (दे १, ८७ ; गा ४१४) । २ पसीना, स्वेद ; (हे ४,३२७) ।
घम्मा स्त्री [घर्मा] पहली नरक-पृथिवी ; (ठा ७) ।
घम्मोई स्त्री [दे] तृण-विशेष ; (दे २, १०६) ।
घम्मोडी स्त्री [दे] १ मध्याह्न काल ; २ मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; ३ ग्रामणी-नामक तृण; (दे २, ११२) ।
घय न [घृत] घी, घृत ; (हे १, १२६ ; सुर १६, ६३) । °**आसव** पुं [°आश्रव] जिसका वचन घी की तरह मधुर लगे ऐसा लब्धिमान् पुरुष ; (आवम) । °**किट्ट** न [°किट्ट] घी का मैल (धर्म २) । °**किट्टिया** स्त्री [°किट्टिका] घी का मैल ; (पव ४) । °**गोल** न [°गौल] घी और गुड़ की बनी हुई एक प्रकार की मीठाई, मिष्टान्न-विशेष; (सुपा ६३३) । °**घट्ट** पुं [°घट्ट] घी का मैल; (वृह १) । °**पुन्न** पुं [°पूर्ण] घेवर, मिष्टान्न-विशेष ; (उप्र १४२ टी) । °**पूर** पुं [°पूर] घेवर, मिष्टान्न-विशेष ; (सुपा ११) । °**पूसमित्त** पुं [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि, आर्यरक्षित सूरि का एक शिष्य; (आचू १) । °**मंड** पुं [°मण्ड] ऊपर का घी, घृतसार ; (जीव ३) । °**मिल्लिया** स्त्री [°इलिका] घी का कीट, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (जो १६) । °**मेह** पुं [°मेघ] घी के तुल्य पानी बरसने वाली वर्षा ; (जं ३) । °**वर** पुं [°वर] द्वीप-विशेष ; (इक) । °**सागर** पुं [°सागर] समुद्र-विशेष ; (दीव) ।
घयण पुं [दे] भाण्ड, भडवा ; (उप पृ २०४ ; २७५ ; पंचव ४) ।
घर पुंन [गृह] घर, मकान, गृह ; (हे २, १४४ ; ठा ५, १ ; प्रासू ४५) । °**कुडी** स्त्री [°कुटी] १ घर के बाहर की कोठरी ; २ चौक के भीतर की कुटिया ; (ओघ १०५) । ३ स्त्री का शरीर; (तंदु) । °**कोइला**, °**कोइलिआ** स्त्री [°कोकिला] गृहगोधा, छिपकली ; (पिंड; सुपा ६४०) । °**गोली** स्त्री [°गोली] गृहगोधा, छिपकली ; (दे २, १०५) । °**गोहिआ** स्त्री [°गोधिका] छिपकली, जन्तु-विशेष ; (दे २, १९) । °**जामाउय** पुं [°जामातृक] घर-जमाई, ससुर-घर में ही हमेशा रहने वाला जामाता ; (णाया १, १६) । °**त्थ** पुं [°स्थ] गृही, संसारी, घरबारी ; (प्रासू १३१) । °**नाम** न [°नामन्] असली नाम, वास्तविक नाम; (महा) । °**वाडय** न [°पाटक] ढकी हुई जमीन वाला घर; (पाअ) । °**वार** न [°द्वार] घर का दरवाजा ; (कप्र १६५) । °**सउणि** पुं [°शकुनि] पालतू जानवर ; (वव २) । °**समुदाणिय** पुं [°समुदानिक] आजीविक मत का अनुयायी साधु ; (औप) । °**सामि** [°स्वामिन्] घर का मालिक ; (हे २, १४४) । °**सामिणी** स्त्री [°स्वामिनी] गृहिणी, स्त्री ; (पि ६२) । °**सूर** [°शूर] अलीक शूर, झूठा शूर, घर में ही बहादुरी दखाने वाला ; (दे) ।
घरंगण न [गृहाङ्गण] घर का आँगन, चौक; (गा ४४०) ।
घरग देखो **घर** ; (जीव ३) ।
घरघंट पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी ; (दे २, १०७ ; पाअ) ।
घरघरग पुं [दे] ग्रीवा का आभूषण-विशेष ; (जं १) ।
घरट्ट पुं [घरट्ट] अन्न पीसने का पाषाण यन्त्र; (गा ८००; सण) ।
घरट्ट पुं [दे] अरघट्ट, अरहट, पानी का चरखा; (निचू १) ।
घरट्टी स्त्री [घरट्टी] शतघ्नी, तोप ; (दे ३, १०) ।
घरणी देखो **घरिणी** ; "तं वरघरिणिं वरिणिं व" ७२८ टी ; प्रासू ४५) ।
घरयंद पुं [दे] आदर्श, दर्पण, शीशा ; (दे २, १०७) ।
घरस पुं [दे, गृहवास] गृहाश्रम, गृहस्थाश्रम ; (वृह ३) ।
घरसण देखो **घंसण** ; (सण) ।
घरिणी स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, भार्या, पत्नी ; (उप ७२८ टी ; से २, ३८ ; सुर २, १०० ; कुमा) ।
घरिल्ल पुं [गृहिन्] गृही, संसारी, घरबारी; (गा ७३६) ।
घरिल्ला स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, पत्नी ; (कुमा) ।
घरिल्ली स्त्री [दे] गृहिणी, पत्नी; (दे २, १०६) ।
घरिस पुं [घर्ष] घर्षण, रगड़ ; (णाया १, १६) ।
घरिसण न [घर्षण] घर्षण, रगड़ ; सण) ।
घरोइला स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली ; (पि १६८) ।

घरोल न [**दे**] गृह-भोजन-विशेष ; (दे २, १०६) ।

घरोलिया } स्त्री [**दे**] गृहगोधिका, छिपकली ; गुजराती में
घरोली } 'घरोली' ; (पराह १, १; दे २, १०५) ।

घलघल पुं [**घलघल**] 'घल घल' आवाज, ध्वनि-विशेष ; (विपा १, ६) ।

घल्ल सक [**क्षिप्**] फेंकना, डालना, घालना। घल्लइ ; घल्लति ; (भवि; हे ४, ३३४ ; ४२२) ।

घल्ल वि [**दे**] अनुरक्त, प्रेमी ; (दे २, १०५) ।

घल्लिअ वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ, डाला हुआ ; (भवि) ।

घल्लिअ वि [**दे**] घटित, निर्मित, किया हुआ; "अइरुद्देणं तेणवि घल्लिओ तिक्खखग्गगुरुघाओ" (सुपा २४६) ।

घस सक [**घृष्**] १ घिसना, रगड़ना। २ मार्जन करना, सफा करना। घसइ ; (महा ; षड्) । संकृ—"**घसिऊण** अरणिकट्ठं अग्गी पज्जालिओ मए पच्छा" (सुर ७, १८६) ।

घसण देखो **घंसण** ; (सुपा १४ ; दे १, १६६) ।

घसणिअ वि [**दे**] अन्विष्ट, गवेषित ; (षड्) ।

घसणी स्त्री [**घर्षणी**] सर्प-रेखा, लकीर; (स ३५७) ।

घसा स्त्री [**दे**] १ पोली जमीन ; २ भूमि-रेखा , लकीर ; (राज) ।

घसिय वि [**घृष्ट**] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ ; (दसा ५) ।

घसिर वि [**ग्रसितृ**] बहु-भक्षक, बहुत खाने वाला; (ओघ १३३ भा) ।

घसी स्त्री [**दे**] १ भूमि-राजि, लकीर ; २ नीचे उतरना, अवतरण ; (राज) ।

घाइ वि [**घातिन्**] घातक, नाशक, हिंसक ; (गा ४३७ ; विसे १२३८ ; भग) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कर्म-विशेष ; ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म ; (अंत) °**चउक्क** न [°**चतुष्क**] पूर्वोक्त चार कर्म ; (प्रारू) ।

घाइअ वि [**घातित**] १ मारित, विनाशित; (णाया १, ८; उव) । २ घवाया हुआ, जो शक्ति-शून्य हुआ हो, सामर्थ्य-रहित ; "करणाइं घाइयाइं जाया अह वेयणा मंदा" (सुर ४, २३६) ।

घाइआ स्त्री [**घातिका**] १ विनाश करने वाली स्त्री, मारने वाली स्त्री ; (जं २) । २ घात, हत्या, ३ घाव करना ; (सुर १६, १५०) ।

घाइज्जमाण } देखो **घाय**=हन् ।
घाइयव्व }

घाइयव्व देखो **घाय**=घातय् ।

घाइर वि [**घ्रायिन्**] सूँघने वाला ; (गा ८८६) ।

घाउकाम वि [**हन्तुकाम**] मारने की इच्छा वाला; (णाया १, १८) ।

घाएंत देखो **घाय**=हन् ।

घाड अक [**भ्रंश्**] भ्रष्ट होना, च्युत होना। घाडइ (षड्) ।

घाड पुं [**घाट**] १ मित्रता, सौहार्द ; (बृह. णाया १, २) । २ मस्तक के नीचे का भाग ; (णाया १, ८—पत्र १३३) ।

घाडिय वि [**घाटिक**] वयस्य, मित्र ; (णाया १, २ ; बृह १) ।

घाडेरुय पुं [**दे**] खरगोश की एक जाति (?)

"जे तुह संगमसुहासारज्जुनिबद्धा दुहं मए रुद्धा।
घाडेरुयससया इव अबंधणा ते पलायंति"
(उप ७२८ टी) ।

घाण पुं [**दे**] १ घानी, कोल्हू, तिल-पीडन-यन्त्र ; (पिंड) । २ घान, चक्की आदि में एक वार डालने का परिमाण (सुपा १४) ।

घाण पुंन [**घ्राण**] नाक, नासिका ; "दो घाणा" (पराण १५ ; उप ६४८ टी, दे २, ७६) । °**रिस** पुंन [°**अर्शस्**] नासिका में होने वाला रोग-विशेष ; (ओघ १८४ भा) ।

घाणिंदिय न [**घ्राणेन्द्रिय**] नासिका, नाक; (उत २६) ।

घाय सक [**हन्**] मारना, मार डालना, विनाश करना। वकृ—**घाएह** ; (उव) । वकृ—"**घाएंत** रिउभड वहवे" (पउम ६०, १७) । **घायंत** ; (पउम २४ २६ ; विसे १७६३) कवकृ—"से धरणे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहिं चोरएहिं स **घाइज्जमाण** पासइ" (णाया १, १८) कृ—**घाइयव्व** ; (पउम ६६, ३४) ।

घाय सक [**घातय्**] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना विनाश करवाना। वकृ—**घायमाण**; (सूअ २, १) । कृ—**घाइयव्व** ; (पउम ६६, ३४) ।

घाय पुं [**घात**] १ प्रहार, चोट, वार ; (पउम ५६ २५) । २ नरक ; (सूअ १, ५, १) । ३ हत्या विनाश, हिंसा , (सूअ १, १, २) । ४ संसार ; (सूअ १, ७)

$x - 2y = 0$

(d) $2x - 3y = 0$

घायग वि [**घातक**] मार डालने वाला, विनाशक ; (स २६४, सुपा २०७)।

घायण न [**हनन**] १ हत्या, नाश, हिंसा, (सुपा ३४६; द २६)। २ वि. हिंसक, मार डालने वाला; (स १०८)।

घायण पुं [**दे**] गायक, गवैया, (दे २, १०८, हे २, १७४; षड्)।

घायणा स्त्री [**हनन**] मारना, हिंसा, वध, (पण्ह १, १)।

घायय देखो घायग; (विसे १७६३; स २६७)।

घायावणा स्त्री [**घातना**] १ मरवाना, दूसरे द्वारा मारना, २ लुटपाट मचवाना, "वहुग्गामघायावणाहिं ताविया" (विपा १, ३)।

घार अक [**घारय्**] १ विष का फैलना, विष की असर से बेचैन होना। २ सक विष से बेचैन करना। ३ विष से मारना। कर्म—"घारिज्जतो य तओ विसेण" (स १८६) हेकृ—**घारिज्जिउं** ; (स १८६)।

घार पुं [**दे**] प्राकार, किला, दुर्ग; (दे २, १०८)।

घारंत पुं [**दे**] घृतपूर, घेवर, एक जात की मीठाई; (दे २, १०८)।

घारण न [**घारण**] विष की असर से होने वाली बेचैनी; (सुपा १२४)।

घारिय वि [**घारित**] जो विष की असर से बेचैन हुआ हो; "तस्सा भोगो। सव्वत्थ तदुवघाया विसघारियभोगतुल्लोत्ति" (उप ४४२)। "विसघा(? घा)रियस्स जह वा घणचन्दणकामिणीसंगो" (उवर ६७)। "विसघारिओ सि धत्तूरिओ सि मोहेण किंव ठगिओ सि" (सुपा १२४ ; ४४७)।

घारिया स्त्री [**दे**] मिष्टान्न-विशेष, गुजराती में जिसे 'घारी' कहते हैं ; (भवि)

घारी स्त्री [**दे**] १ शकुनिका, पक्षि-विशेष ; (दे २,१०७; पाअ)। २ छन्द-विशेष , (पिंग)।

घास पुं [**घास**] तृण, पशुओं को खाने का तृण ; (दे ३, ८५ ; औप)।

घास पु [**ग्रास**] १ कवल, कौर ; (औप ; उत्त २)। २ आहार, भोजन ; (आचा ; ओघ ३३०)।

घास पुं [**घर्ष**] घर्षण, रगड ; "जो मे उवज्जिओ इह करघसणेण चरणघासेण" (सुपा १४)।

घासेसणा स्त्री [**ग्रासैषणा**] आहार-विषयक शुद्धि अशुद्धि का पर्यालोचन ; (ओघ ३३८)।

घि देखो **घे**। भवि—घिच्छिइ;(विसे १०२३)। कर्म—घिप्पति, (प्रास् ४)। संकृ—**घित्तूण** ; (कुमा ७, ४६)। हेकृ—**घित्तुं** ; (सुपा २०६)। कृ—**घित्तव्व** ; (सुर १४,७७)।

घिअ न [**घृत**] घी, घीव, आज्य ; (गा २२)।

घिअ वि [**दे**] भर्त्सित, तिरस्कृत, अवधीरित; (दे २,१०८)।

घिं } पुं [**ग्रीष्म**] १ गरमी की ऋतु, ग्रीष्म काल ; **घिंसु** } "घिंसिसिरवासे" (ओघ ३१० भा ; उत्त २, ८, पि ६; १०१)। २ गरमी, अभिताप ; (सूअ १, ४, २)।

घिट्ठ वि [**दे**] कुब्ज, कूबड़ा ; (दे २, १०८)।

घिट्ठ वि [**घृष्ट**] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ ; (सुपा २७८; गा ६२६ अ)।

घिणा स्त्री [**घृणा**] १ जुगुप्सा ; २ दया, अनुकम्पा ; (हे १, १२८)।

घित्त (अप) वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ, डाला हुआ ; (भवि)।

घित्तुमण वि [**ग्रहीतुमनस्**] ग्रहण करने की इच्छा वाला; (सुपा २०६)।

घित्तूण } देखो **घि**। **घिप्प** }

घिस सक [**ग्रस्**] ग्रसना, निगलना, भक्षण करना। घिसइ ; (हे ४, २०४)।

घिसरा स्त्री [**दे**] मछली पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

घिसिअ वि [**ग्रस्त**] कवलित, निगला हुआ, भक्षित ; (कुमा ७, ४६)।

घुंघुरुड पुं [**दे**] उत्कर, ढग, समूह ; (दे २, १०६)।

घुंट पुं [**दे**] घूंट, एक बार में पीने योग्य पानी आदि ; (हे ४, ४२३)।

घुग्घ } (अप) पुं [**घुग्घिका**] कपि-चेष्टा, बन्दर की **घुग्घिअ** } चेष्टा ; (हे ४, ४२३ ; कुमा)।

घुग्घुच्छण न [**दे**] खेद, तकलीफ, परिश्रम; (दे २,११०)।

घुग्घुरि पुं [**दे**] मण्डूक, भेक, मेढ़क ; (दे २,१०६)।

घुग्घुस्सुअ वि [**दे**] निःशंक होकर गया हुआ ; (षड्)।

घुग्घुस्सुसय न [**दे**] साशंक वचन, आशंका-युक्त वाणी ; (दे २, १०६)।

घुघुघुघुघुघ अक [**घुघुघुघाय्**] 'घुघु' आवाज करना, घूक का बोलना। वकृ—**घुघुघुघुघुघुघेंत** ; (पउम १०५,५६)।

घुघुय अक [**घुघूय्**] ऊपर देखो। वकृ—**घुघुयंत** ; (णाया १, ८—पत्र १३३)।

घुट्टघुणिअ न [**दे**] पहाड़ की बड़ी शिला ; (दे २, ११०) ।

घुट्ठ वि [**घुष्ट**] घोषित, ऊँची आवाज से जाहिर किया हुआ ; (पउम ३, ११८ ; भवि) ।

घुडुक्क अक [**गर्ज्**] गरजना, गर्जारव करना । घुडुक्कइ ; (हे ४, ३९५) ।

घुण पुं [**घुण**] काष्ठ-भक्षक कीट ; (ठा ४, १ ; विसे १५३६) ।

घुणाहुणिआ) स्त्री [**दे**] कर्णोपकर्णिका, कानाकानी ; (दे
घुणाहुणी) २, ११० ; महा) ।

घुणिय वि [**घुणित**] घुणों से विद्ध ; (बृह १) ।

घुण्ण देखो **घुम्म** । वकृ—**घुण्णंत** (नाट) ।

घुण्णिअ वि [**घूर्णित**] १ घुमा हुआ ; २ भ्रान्त, भटका हुआ ; (दे ८, ४६) ।

घुत्तिअ वि [**दे**] गवेषित, अन्वेषित ; (दे २, १०६) ।

घुन्न) देखो **घुम्म** । घुमइ , (पिंग) । वकृ—**घुन्नंत** ;
घुम) (पण्ह १, ३) ।

घुमघुमिय वि [**घुमघुमित**] १ जिसने 'घुम घुम' आवाज किया हो वह ; २ न. 'घुम घुम' ध्वनि ; "महुरगभीरघुमघुमियवरमद्दलं" (सुपा ५०) ।

घुम्म अक [**घूर्ण्**] घूमना, चक्राकार फिरना । घुम्मइ ; (हे ४, ११७ ; षड्) । वकृ—**घुम्मंत, घुम्ममाण** ; (हेका ३३ ; गाया १, ९) । संकृ—**घुम्मिऊण** , (महा) ।

घुम्मण न [**घूर्णन**] चक्राकार भ्रमण ; (कुमा) ।

घुम्मिय वि [**घूर्णित**] घुमा हुआ, चक्र की तरह फिरा हुआ ; (सुपा ६४) ।

घुम्मिर वि [**घूर्णितृ**] घुमने वाला, फिरने वाला, चक्राकार घूमने वाला ; (उप पृ ६२ ; गा १८० ; गउड) ।

घुयग पुं [**दे**] एक तरह का पत्थर, जो पात्र वगैरः को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता है ; (पिंड) ।

घुरहुर देखो **घुरुघुर** । वकृ—**घुरहुरंत** ; (श्रा१२) ।

घुरुक्क अक [**दे**] घुरकना, घुड़कना, गरजना । "घुरुक्कंति वग्घा" (महा) ।

घुरुघुर अक [**घुरुघुराय्**] घुरघुराना, 'घुर घुर' आवाज करना, व्याघ्र वगैरः का बोलना । घुरुघुरंति; (पि ५५८) । वकृ—**घुरुघुरायंत** ; (सुपा ५०५) ।

घुरुघुरि पुं [**दे**] मण्डूक, मेंढक, भेक ; (दे २, १०९) ।

घुरुघुरु) देखो **घुरुघुर** । घुरुहुरइ ; (महा) । वकृ—
घुरुहुर) **घुरुघुरुमाण** ; (महा) ।

घुल देखो **घुम्म** । घुलइ ; (हे ४, ११७) ।

घुलकि स्त्री [**दे**] हाथी की आवाज, करि-शब्द, (पिंग) ।

घुलघुल अक [**घुलघुलाय्**] 'घुल घुल' आवाज करना । वकृ—**घुलघुलाअमाण** ; (पि ५५८) ।

घुलिअ वि [**घूर्णित**] चक्राकार घुमा हुआ ; (कुमा) ।

घुल्ला स्त्री [**दे**] कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (पण्ण १) ।

घुसण देखो **घुसिण** ; (कुमा) ।

घुसल सक [**मथ्**] मथना, विलोडन करना । घुसलइ (हे ४, १२१) ।

घुसलिअ वि [**मथित**] मथित, विलोडित ; (कुमा) ।

घुसिण न [**घुसृण**] कुङ्कुम, सुगन्धित द्रव्य-विशेष, केसर ; (हे १, १२८) ।

घुसिणल्ल वि [**घुसृणवत्**] कुङ्कुम वाला, कुङ्कुम-युक्त ; (कुमा) ।

घुसिणिअ वि [**दे**] गवेषित, अन्विष्ट ; (दे २, १०६) ।

घुसिम न [**दे**] घुसृण, कुङ्कुम , (षड्) ।

घुसिरसार न [**दे**] अग्रस्नान, विवाह के अवसर में स्नान के पहले लगाया जाता मसूरादि का पिसान ; (हे २, ११०) ।

घूअ पुंस्त्री [**घूक**] उलूक, उल्लू, पक्षि-विशेष ; (गाया १, ८ ; पउम १०५, ५६) । स्त्री—**घूई** ; (विपा १, ३) । °**रि** पुं [°**रि**] काक, कौआ, वायस ; (तंदु) ।

घूणाग पुं [**घूणाक**] स्वनाम-ख्यात सन्निवेश-विशेष, विशेष ; (आचू १) ।

घूरा स्त्री [**दे**] १ जङ्घा, जाँघ ; २ खलका, शरीर का अवयव विशेष ; "गद्दभाण वा घूराओ कप्पेंति" (सूअ २, २, ४५) ।

घे देखो **गह**=ग्रह् । घेइ , (षड्) । भवि—घेच्छं ; (विसे ११२७) । कर्म—घेप्पइ ; (हे ४, २५६) । कवकृ—**घेप्पंत, घेप्पमाण** ; (गा ५८१; भग ; स १५२) । संकृ—**घेऊण, घक्कूण, घेक्कूण, घेत्तुआण, घेत्तुआणं, घेत्तूण, घेत्तूणं** ; (नाट—मालती ७१ ; पि ५८४ ; हे ४, २१० ; पि ; उव ; प्राप्र) । हेकृ—**घेत्तुं, घेत्तूण** ; (हे ४, २१० ; पउम ११८, २४) । कृ—**घेत्तव्व** ; (हे ४, २१० ; प्राप्र) ।

घेउर पुन [दे] घेवर, घृतपूर, मिष्टान्न-विशेष ; "गा भणइ नियगेहेवि हु घयघेउरभोयणं समाकुणइ" (सुपा १३)।

घेक्कूण देखो घे।

घेत्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहण करने की इच्छा वाला; (पउम १११, १६)।

घेप्प°, **घेप्पंत**, **घेप्पमाण** } देखो घे।

घेवर [दे] देखो घेउर ; (दे २. १०८)।

घोट्ट, **घोट्टय** } सक [पा] पीना, पान करना । घोट्टइ; (हे ४, १०)। वकृ—घोट्टयंत ; (स २५७)। हेकृ—घोट्टिउं ; (कुमा)।

घोड देखो घुम्म। घोडइ ; (से ५, १०)।

घोड, **घोडग**, **घोडय** } पुंस्त्री [घोट, °क] घोड़ा, अश्व, हय ; (दे २, १११ ; पंच ५२ ; उत्त ; उप २०८)। २ पुं. कायोत्सर्ग का एक दोष ; (पव ५)। °**रक्खग** पुं [°रक्षक] अश्वपाल ; (उप ५९७ टी)। °**ग्गीव** पुं [°ग्रीव] अश्वग्रीव-नामक तिवासुदेव, नृप-विशेष ; (आवम)। °**मुह** न [°मुख] जैनेतर शास्त्र-विशेष ; (अणु)।

घोडिय पु [दे] मित्र, वयस्य ; (वृह ५)।

घोडी स्त्री [घोटी] १ घोड़ी ; २ वृक्ष-विशेष ; "सीयल्लिणाडिच्छूतण्णरसइराइसंकिण्णे" (स २५६)।

घोण न [घोण] घोड़े का नाक ; (सण)।

घोणस पुं [घोनस] एक जात का साँप ; (पउम ३९, १७)।

घोणा स्त्री [घोणा] १ नाक, नासिका ; (पाअ)। २ घोड़े का नाक ; ३ सूअर का मुख-प्रदेश ; (से २, ६४ ; गउड)।

घोर अक [घुर्] निद्रा में घुर् घुर् आवाज करना । घोरंति ; (गा ८००)। वकृ—घोरंत ; (स ४२४ ; उप १०३१ टी)।

घोर वि [दे] १ नाशित, विनाशित ; २ पुं. गीध, पक्षि-विशेष ; (दे २, ११२)।

घोर वि [घोर] भयंकर, भयानक, विकट ; (सूअ १, ५, १ ; सुपा ३४५ ; सुर २, २४३ ; प्रासू १३९)। २ निर्दय, निष्ठुर ; (पाअ)।

घोरि पुं [दे] शलभ-पशु की एक जाति ; (दे २, १११)।

घोल देखो **घुम्म** । घोलइ ; (हे ४, ११७)। वकृ—**घोलंत** ; (कप्प ; गा ३७१ ; कुमा)।

घोल सक [घोलय्] १ घिसना, रगड़ना ; २ मिलाना ; (विसे २०४४ ; से ४, ५२)।

घोल न [दे] कपड़े से छाना हुआ दही ; (पभा ३३)।

घोलण न [घोलन] घर्षण, रगड़ ; (विसे २०४४)।

घोलणा स्त्री [घोलना] पत्थर वगैरः का पानी की रगड़ से गोलाकार होना ; (स ४७)।

घोलवड, **घोलवडय** } न [दे] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य, दहीवड़ा ; (पभा ३३ ; श्रा २० ; सुपा ४९५)।

घोलाविअ वि [घोलित] मिश्रित किया हुआ, मिलाया हुआ ; (से ४, ५२)।

घोलिअ न [दे] १ शिलातल ; २ हठ-कृत, बलात्कार ; (दे २, ११२)।

घोलिअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ ; (पाअ)।

घोलिअ वि [घोलित] रगड़ा हुआ, मर्दित ; (औप)।

घोलिर वि [घूर्णितृ] घुमने वाला, चक्राकार फिरने वाला ; (गा ३३८ ; स ५७८ ; गउड)।

घोस सक [घोषय्] १ घोषणा करना, ऊँचे आवाज से जाहिर करना। २ घोखना, ऊँचे आवाज से अध्ययन करना। घोसइ ; (हे १, २६० ; प्रामा)। प्रयो—**घोसावेइ** ; (भग)।

घोस पुं [घोष] १ ऊँचा आवाज ; (स १०७ ; कुमा ; गा ५४)। २ आभीर-पल्ली, अहीरों का महल्ला ; (हे १, २६०)। ३ गोष्ठ, गौओं का वाड़ा ; (ठा २, ४-पत्र ८६ ; पाअ)। ४ स्तनितकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। ५ उदात्त आदि स्वर-विशेष ; (वव १०)। ६ अनुनाद ; (भग ६, १)। ७ न. देव-विमान-विशेष (सम १२, १७)। °**सेण** पुं [°सेन] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्म का धर्म-गुरु, एक जैन मुनि ; (पउम २०, १७६)।

घोसण न [घोषण] १ ऊँची आवाज ; (निचू १)। २ घोषणा, ढिंढोरा पिटवा कर जाहिर करना ; (राय)।

घोसणा स्त्री [घोषणा] ऊपर देखो ; (णाया १, १३ ; गा ५२४)।

घोसय न [दे] दर्पण का घरा, दर्पण रखने का उपकरण-विशेष ; (अंत)।

घोसाडई स्त्री [घोषातकी] लता-विशेष ; (पण्ण १७—पत्र ५३०)।

घोसालई } स्त्री [दे] शरद् ऋतु में होने वाली लता-विशेष;
घोसाली } (दे २, १११ ; पण्ण १ —पत्र ३३) ।
घोसावण न [घोषण) घोषणा, डोंडी पिटवा कर जाहिर करना ; (उप २११ टी) ।
घोसिअ वि [घोषित] जाहिर किया हुआ; (उव) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि घआराइसद्दसंकलणो तेरहमो तरंगो समत्तो।

च

च पुं [च] तालु-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)।
च अ [च] इन अर्थों में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ;—१ और, तथा ; (कुमा; हे २,:२१७) । २ पुनः, फिर; (कम्म ४, २३ ; ६६ ; प्रासू ५) । ३ अवधारण, निश्चय; (पंच १३) । ४ भेद, विशेष; (निचू १) । ५ अतिशय, आधिक्य ; (आचा ; निचू ४) । ६ अनुमति, सम्मति (निचू १) । ७ पाद-पूर्ति, पाद-पूरण ; (निचू १) ।
चआ स्त्री [त्वक्] चमड़ी, त्वचा; (षड्) ।
चइअ वि [शकित] जा समर्थ हुआ हो, शक्त; (से ६, ५१) ।
चइअ देखो चविअ ; (पउम १०३, १२६) ।
चइअ वि [त्यक्त] मुक्त, परित्यक्त ; (कुमा ३,४६) ।
चइअ वि [त्याजित] छुड़वाया हुआ, मुक्त कराया हुआ ; (ओघ ११५) ।
चइअ देखो चय=त्यज् ।
चइअ देखो चु ।
चइइअ देखो चेइअ; (षड्) ।
चइउं } देखो चय=त्यज् ।
चइऊण }
चइऊण देखो चु ।
चइत्त देखो चेइअ; (हे २, १३ ; कुमा) ।
चइत्त पुं [चैत्र] मास-विशेष, चैत्र मास ;| (हे १,१५२) ।
चइत्ता देखा चु ।
चइत्ताणं } देखो चय=त्यज् ।
चइयव्व }
चइद (शौ) वि [चकित] भीत, शंकित ; (अभि २१३) ।
चइयव्व देखो चु ।
चउ वि [चतुर्] चार, संख्या-विशेष ; (उवा ; कम्म ४,२ ; जी ३३) । °आलीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] चौआलीस, ४४ ; (पि ७५ ; १६६) । °कट्ठ न [°काष्ठ] चारों दिशा ; (कुमा) । °कट्ठी स्त्री [°काष्ठी] चौकठा, चौखटा, द्वार के चारों ओर का काठ, द्वार का ढाँचा ; (निचू १) । °क्कोण वि [°कोण] चार कोण वाला, चतुरस्र ; (णाया १,१३) । °ग न देखो चउक्क=चतुष्क ; (दं ३०) । °गइ स्त्री [°गति] नरक, तिर्यग्, मनुष्य और देव की योनि; (कम्म ४, ६६) । °गइअ वि [°गतिक] चारों गति में भ्रमण करने वाला; (श्रा ६) । °गमण न [°गमन] चारों दिशाएं; (कप्प) । °गुण, °ग्गुण वि [°गुण] चौगुना; (हे १,१७१ ; षड्) । °चत्ता स्त्री [°चत्वारिंशत्] संख्या-विशेष, चौआलीस; (भग) । °चरण पुं [°चरण] चौपाया, चार पैर के जन्तु, पशु ; (उप ७६८ टी ; सुपा ४०६) । °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४५) । °ट्ठ देखो °त्थ ; (हे २, ३३) । °ट्ठाणवडिअ वि [°स्थानपतित] चार प्रकार का ; (भग) । °णउइ स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, चौरानवे, ६४; (पि ४४६) । °णउय वि [°नवत] चौराणवाँ, ६४ वाँ ; (पउम ६४, १०६) । °णवइ देखो °णउइ ; (सम ६७ ; श्रा ४४) । °ण्ण (अप) देखो °पन्न ; (पिंग) । °तिस, °तीस न [°त्रिंशत्] चौंतीस, ३४; (भग; औप) । °तीसइम देखो °त्तीसइम ; (पउम ३४, ६१) । °तीसा स्त्री, देखो °तीस (प्राप्) । °त्तालीस वि [°चत्वारिंश] चौआलीसवाँ, ४४ वाँ ; (पउम ४४, ६८) । °त्तीसइम वि [°त्रिंश] १ चौंतीसवाँ, ३४ वाँ; (कप्प)। २ न. सोलह दिनों का लगातार उपवास; (णाया १,१—पत्र ७२)। °त्थ वि [°थ] १ चौथा ; (हे १,१७१) । २ पुंन. उपवास ; (भग)। °त्थचउत्थ पुंन [°थचतुर्थ] एक एक उपवास ; (भग) । °त्थभत्त न [°थभक्त] एक दिन का उपवास ; (भग) । °त्थभत्तिय त्रि [°थभक्तिक] जिसमे एक उपवास किया हो वह ; (पण्ह २, १) । °त्थिमंगल न [°थीमङ्गल] वधू-वर के समागम का चतुर्थ दिन, जिसके बाद जामाता अकेला अपने घर जाता है ; (गा ६४६ अ) । °त्थी स्त्री [°थी] १ चौथी । २ संप्रदान-विभक्ति, चौथी विभक्ति ; (ठा ८)। ३ तिथि-विशेष; (सम ६)। °द्दंत देखो °दंत; (राज)। °द्दस त्रि. व. [°दशन्] संख्या-विशेष, चौदह; (नव २; जी ४७) । °द्दसपुव्वि पुं [°दशपूर्विन्] चौदह पूर्व ग्रन्थों का ज्ञान वाला मुनि; (ओघ २)। °द्दसम वि. देखो °द्दसम ;

(गाया १, १४)। °दसहा अ [°दशधा] चौदह प्रकारों से; (नव ५)। °दसी स्त्री [°दशी] तिथि-विशेष, चतुर्दशी; (रयण ७१)। °द्दंत पुं [°दन्त] ऐरावत, इन्द्र का हाथी; (कप्प)। °द्दस देखो °दस; (भग)। °द्दसपुव्वि देखो °दसपुव्वि; (भग ५, ४)। °द्दसम वि [°दश] १ चौदहवाँ, १४ वाँ; (पउम १४, १५८)। २ लगातार छ दिनों का उपवास; (भग)। °द्दसी देखो °दसी; (कप्प)। °द्दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवाँ, ११४ वाँ; (पउम ११४,३५)। °द्दह देखो °दस; (पि १६६; ४४३)। °द्दही देखो °दसी; (प्राप्र)। °द्दिसं °द्दिसिं अ [°दिश्] चारों दिशाओं की तरफ, चारों दिशाओं में; (भग; महा; ठा ४, २)। °द्धा अ [°धा] चार प्रकार से; (उव)। °नाण न [°ज्ञान] मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यव ज्ञान; (भग; महा)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति वगैरः चार ज्ञान वाला; (सुपा ८३; ३२०)। °पण्ण देखो °पन्न। °पण्णइम वि [°पञ्चाश] १ चौपनवाँ, ५४ वाँ; २ न. लगातार छब्बीस दिनों का उपवास; (णाया २—पत्र २५१)। °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, ५४; (पउम २०, १७; सम ७२; कप्प) °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] चौवनवाँ, ५४ वाँ; (पउम ५४, ४८)। °पय देखो °प्पय; (णाया १, ८; जी २१)। °पाल न [°पाल] सूर्याभ देव का प्रहरण-कोश; (राय)। °पइया, °प्पइया स्त्री [°पदिका] १ छन्द-विशेष; (पिंग)। २ जन्तु-विशेष की एक जाति; (जीव २)। °प्पई स्त्री [°पदी] देखो °पइया; (सुपा १६०)। °प्पन्न देखो °पन्न; (सम ७२)। °प्पय पुंस्त्री [°पद] १ चौपाया प्राणी, पशु; (जी ३१)। २ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण; (विसे ३३५०)। °प्पह पुं [°पथ] चौहट्टा, चौराहा, चौरास्ता; (प्रयौ १००)। °प्पुड वि [°पुट] चार पुट वाला, चौसर, चौपड़; (विपा १,१)। °प्फाल वि [°फाल] देखो °प्पुड; (णाया १, १—पत्र ५३)। °ब्बाहु वि [°बाहु] १ चार हाथ वाला; २ पुं. चतुर्भुज, श्रीकृष्ण; (नाट)। °ब्भुअ [°भुज] देखो °बाहु; (नाट; सूत्र १, ३, १)। °भंग पुन [°भङ्ग] चार प्रकार, चार विभाग; (ठा ४, १)। °भंगी स्त्री [°भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग; (भग)। °भाइया स्त्री [°भागिका] चौसठ पल का एक नाप; (अणु)। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] कपड़े के साथ कूटी हुई मिट्टी; (निचू १८)। °मंडलग न [°मण्डलक] लग्न-मण्डप, विवाह-मण्डप; (सुपा ६३)। °मासिअ देखो चाउम्मासिअ; (श्रा ४७)। °मुह °म्मुह, पुं [°मुख] १ ब्रह्मा, विधाता; (पउम ११,७२; २८,४८)। २ वि. चार मुँह वाला, चार द्वार वाला; (औप; सण)। °वग्ग पुंन [°वर्ग] चार वस्तुओं का समुदाय; (निचू १५)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, पचास और चार, ५४; (पि २६५; २७३, सम ७२)। °वार वि [°द्वार] चार दरवाजे वाला; (गृह), (कुमा)। °विह वि [°विध] चार प्रकार का; (दं ३२; नव ३)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] चौवीस, वीस और चार; २४; (सम ४३; दं १; पि ३४)। °वीसइ (अप) स्त्री [°विंशति] वीस और चार, चौवीस; (पि ४४५)। °वीसइम वि [°विंशतितम] १ चौवीसवाँ; (पउम २४, ४०)। २ न. ग्यारह दिनों का लगातार उपवास; (भग)। °व्वग्ग देखो °वग्ग; (आचा २,२)। °व्वार पुन [°वार] चार वार, चार दफा; (हे १, १७१; कुमा)। °व्विह देखो °विह; (ठा ४,२)। °व्वीस देखो °वीस; (सम ४३)। °व्वीसइम देखो °वीसइम; (णाया १, १)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ, साठ और चार; (सम ७७; कप्प)। °सट्ठिम वि [°षष्टितम] चौसठवाँ; (पउम ६४, ४७)। °स्सट्ठि देखो °सट्ठि; (कप्पू)। °स्साल स्त्री [°शाल] चार शालाओं से युक्त घर; (स्वप्न ५१)। °हट्ट, °हट्टय पुंन [°हट्ट, °क] चौहट्टा, बाजार; (महा; श्रा २७; सुपा ४५५)। °हत्तर वि [°सप्तत] चौहत्तरवाँ, ७४ वाँ; (पउम ७४, ४३)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] चौहत्तर, सत्तर और चार; (पि २४५; २६४)। °हा अ [°धा] चार प्रकार से; (ठा ३,१; जी १६)। देखो चो°।

चउक्क न [चतुष्क] चौकड़ी, चार वस्तुओं का समूह; (सम ४०; सुर १४, ७८; सुपा १४)। "वरणचउक्केण" (श्रा २३)।

चउक्क [दे. चतुष्क] चौक, चौराहा, जहां चार रास्ता मिलता हो वह स्थान; (दे ३, २; षड्; णाया १, १; औप; कप्प; अणु; बृह १; जीव १; सुर १,६३; भग)। २ आँगन, प्राङ्गण; (सुर ३, ७२)।

चउक्कर पुं [दे] कार्त्तिकेय, शिव का एक पुत्र; (दे ३, ५)।

चउक्कर वि [चतुष्कर] चार हाथ वाला, चतुर्भुज; (उत्त ८)।

चउक्किआ स्त्री [दे. चतुष्किका] आँगन, छोटा चौक ; (सुर ३, ७२)।

चउज्झाइया स्त्री [दे] नाप-विशेष ; (भग ७, ८) ।

चउबोल स्त्रीन [चौबोल] छन्द-विशेष; (पिंग)। स्त्री—°ला ; (पिंग) ।

चउर वि [चतुर] १ निपुण, दक्ष, हुशियार ; (पाअ ; वेणी ६६) । २ क्रिवि. निपुणता से, हुशियारी से ; "केसी गायइ चउरं" (ठा ७)।

चउरंग वि [चतुरङ्ग] १ चार अंग वाला, चार विभाग वाला; (सैन्य वगैरः) (सण) । २ न. चार अंग, चार प्रकार ; (उत्त ३) ।

चउरंगि वि [चतुरङ्गिन्] चार विभाग वाला, (सैन्य वगैरः); स्त्री—°णी ; (सुपा ४५६)।

चउरंत वि [चतुरन्त] १ चार पर्यन्त वाला, चार सीमाएं वाला ; २ पुं. संसार; (औप) । स्त्री—°ता [°ता] पृथिवी, धरणी ; (ठा ४. १) ।

चउरंस वि [चतुरस्र] चतुष्कोण, चार कोण वाला ; (भग ; आचा ; दं १२) ।

चउरंसा स्त्री [चतुरंसा] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

चउरय पुं [दे] चौरा, चबूतरा, गाँव का सभा-स्थान ; (सम १३८ टी) ।

चउरस्स देखो **चउरंस** ; (विसे २७६७) ।

चउरचिंध पुं [दे] सातवाहन, राजा शालिवाहन ; (दे ३, ७) ।

चउराणण वि [चतुरानन] १ चार मुँह वाला । २ पुं. ब्रह्मा, विधाता ; (गउड) ।

चउरासी / **चउरासीइ** स्त्री [चतुरशीति] संख्या-विशेष, चौरासी, ८४; (जी ४५; सण ; उवा; पउम २०,१०३ ; सम ६०; कप्प) ।

चउरासीइम वि [चतुरशीतितम] चौरासीवाँ, ८४-वाँ ; (पउम ८४,१२ ; कप्प) ।

चउरासीय स्त्रीन [चतुरशीति] चौरासी ; "चउरासीयं तु गणहरा तस्स उप्पन्ना" (पउम ४, ३५) ।

चउरिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] त्वक्, जिह्वा, नाक और चक्षु इन चार इन्द्रिय वाला; (जन्तु); (भग;ठा १, १; जी १८)।

चउरिमा स्त्री [चतुरिमन्] चतुरता, चातुर्य, निपुणता ; (सट्टि १६)।

चउरिया / **चउरी** स्त्री [दे] लग्न-मण्डप, विवाह-मण्डप ; गुजराती में 'चोरी' ; (रंभा ; सुपा ५५२) ।

चउरुत्तरसय वि [चतुरुत्तरशततम] एकसौ चारवाँ,१०४ वाँ ; (पउम१०४,३५) ।

चउसर वि [दे] चौसर, चार सरा वाला (हारादि); (सुपा ५१० ; ५१२) ।

चउहार पुं [चतुराहार] चार प्रकार का आहार, अशन, पान, खादिम और स्वादिम ; "कंतासिज्जंपि न संछवेमि चउहारपरिहारो" (सुपा५७३) ।

चओर पुंन [दे] पात्र-विशेष; "भुतावसाणे य आयमणवेलाए अवणीएसु चओरेसु" (स २५२) ।

चओर / **चओरग** पुंस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १; सुपा ३७) ।

चओवचइय वि [चयोपचयिक] वृद्धि-हानि वाला; (उप २५८ टी; आचा) ।

चंकम अक [चङ्क्रम्] १ वारं वार चलना । २ इधर उधर घूमना। ३ बहुत भटकना । ४ टेढ़ा चलना । ५ चलना-फिरना । वकृ—**चंकमंत**; (उप१३०टी; ६८६टी)। हेकृ—**चंकमिउं**; (स ३५६) । कृ—**चंकमियव्व** ; (पि ५५६) ।

चंकमण न [चङ्क्रमण] १ इधर उधर भ्रमण ; २ बहुत चलना; ३ वारंवार चलना; ४ टेढ़ा चलना; ५ चलना, फिरना; (सम१०६ ; णाया१,१) ।

चंकमिय वि [चंक्रमित] १ जिसने चंक्रमण किया हो वह। २-६ ऊपर देखो ; (उप ७२८ टी; निचू१) ।

चंकमिर वि [चंक्रमितृ] चंक्रमण करने वाला ; (सण) ।

चंकम्म अक [चंक्रम्य] देखो **चंकम** । वकृ—**चंकम्मंत**, **चंकम्ममाण**; (गा ४६३ ; ६२३ ; उप पृ २३६; पण्ह २, ५; कप्प) ।

चंकम्मण देखो **चंकमण**; (णाया १, १—पत्र ३८) ।

चंकम्मिअ देखो **चंकमिअ** ; (से ११, ६६) ।

चंकार पुं [चकार] च-वर्ण, 'च' अक्षर ; (ठा १०) ।

चंग वि [दे. चङ्ग] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य; (दे ३,१; उपपृ १२६; सुपा१०६ ; कप्पू ३५ ; धम्म ६ टी ; कप्पू ; प्राप ; सण ; भवि) ।

चंगवेर पुं [दे] काष्ठ-पात्री, काठ का बना हुआ छोटा पात्र-विशेष ; "पीढए चंगवेरे य" (दस७) ।

चंगिम पुंस्त्री [दे.चङ्गिमन्] सुन्दरता, सौन्दर्य, श्रेष्ठता, चारुपन;

(नाट)। स्त्री—°मा; (विवे१००; उप पृ१८१; सुपा ५; १२३; २६३)।

चंगेरी स्त्री [दे] टोकरी, कठारी, तृण आदि का बना पात्र-विशेष; (विसे ७१०; पण्ह १,१)।

चंच पुं [**चञ्च**] १ पङ्कप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास; (इक)। २ न. देव-विमान-विशेष; (इक)।

चंचपुड पु [**दे**] आघात, अभिघात; "खुरवलणचंचपुडेहिं धरणिअलं अभिहणमाणं" (जं ३)।

चंचप्पर न [**दे**] असत्य, भूठ, अनृत; "चंचप्परं न भणिमो" (दे ३, ४)।

चंचरीअ पुं [**चञ्चरीक**] भ्रमर, भमरा; (दे ३,६)।

चंचल वि [**चञ्चल**] १ चपल, चञ्चल; (कप्प; चारु १)। २ पुं. रावण के एक सुभट का नाम; (पउम ५६, ३६)।

चंचला स्त्री [**चञ्चला**] १ चञ्चल स्त्री। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

चंचलिअ वि [**चञ्चलित**] चञ्चल किया हुआ, "मणया-णिलचंचे(? च)ल्लियकेसराइं" (विक २६)।

चंचा स्त्री [**चञ्चा**] १ नरकट की चटाई। २ चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-नगरी-विशेष; (दीव)।

चंचाल (अप) देखो **चंचल**; (सण)।

चंचु स्त्री [**चञ्चु**] चोंच, पक्षी का ठोंठ; (दे ३,२३)।

चंचुच्चिय न [**दे. चञ्चुरित, चञ्चूच्चित**] कुटिल गमन, टेढ़ी चाल; (औप)।

चंचुमालइय वि [**दे**] रोमाञ्चित, पुलकित, (कप्प; औप)।

चंचुय पुं [**चञ्चुक**] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश का निवासी मनुष्य; (पण्ह१,१)।

चंचुर वि [**चञ्चुर**] चपल, चंचल; (कप्पू)।

चंछ सक [**तक्ष्**] छिलना। चंछइ; (षड्)।

चंड सक [**पिष्**] पीसना। चंडइ; (षड्)।

चंड देखो **चंद**; (इक)।

चंड वि [**चण्ड**] १ प्रबल, उग्र, प्रखर, तीव्र; (कप्प)। २ भयानक, डरावना; (उत्त २६; औप)। ३ अति क्रोधी, क्रोध-स्वभावी; (उत्त १; १०; पिंग; णाया १,१८)। ४ तेजस्वी, तेजिल; (उप पृ ३२१)। ५ पुं. राक्षस वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५,२६४)। ६ क्रोध, कोप; (उत्त १)। °**किरण** पुं [°**किरण**] सूर्य, रवि; (उप पृ ३२१)। °**कोसिय** पुं [°**कौशिक**] एक सर्प, जिसने भगवान् महावीर को सताया था; (कप्प)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष; (इक)। °**पज्जोअ** पुं [°**प्रद्योत**] उज्जयिनी के एक प्राचीन राजा का नाम; (आवम)। °**भाणु** पुं [°**भानु**] सूर्य, सूरज; (कुम्मा १३)। °**रुद्द** पुं [°**रुद्र**] प्रकृति-क्रोधी एक जैन आचार्य; (भाव१७)। °**वडिंसय** पुं [°**ावतंसक**] नृप-विशेष; (महा)। °**वाल** पुं [°**पाल**] नृप-विशेष; (कप्पू)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक राजा का नाम; (कप्पू)। °**लिय** न [°**ालीक**] क्रोध-वश कहा हुआ भूठ; (उत्त १)।

चंडंसु पुं [**चण्डांशु**] सूर्य, सूरज, रवि; (कप्पू)।

चंडमा पुं [**चन्द्रमस्**] चन्द्रमा, चाँद; (पिंग)।

चंडा स्त्री [**चण्डा**] १ चमरादि इन्द्रों की मध्यम परिषद्; (ठा ३,२; भग ४,१)। २ भगवान् वासुपूज्य की शासन-देवी; (संति१०)।

चंडातक न [**चण्डातक**] स्त्री का पहनने का वस्त्र, चोली, लहँगा; (दे ३,१३)।

चंडार पुंन [**दे**] भण्डार, भाण्डागार; (कुमा)।

चंडाल पु [**चण्डाल**] १ वर्णसंकर जाति-विशेष, शूद्र और ब्राह्मणी से उत्पन्न; (आचा; सूअ १,८)। २ डोम; (उत्त १; अणु)।

चंडालिय वि [**चण्डालिक**] चण्डाल-संबन्धी, चण्डाल जाति में उत्पन्न; (उत्त १)।

चंडाली स्त्री [**चण्डाली**] १ चण्डाल-जातीय स्त्री। २ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२)।

चंडिअ वि [**दे**] कृत्त, छिन्न, काटा हुआ; (दे ३, ३)।

चंडिक्क पुंन [**दे. चाण्डिक्य**] रोष, गुस्सा, क्रोध, रौद्रता; (दे ३, २; षड्; सम ७१)।

चंडिक्किअ वि [**दे. चाण्डिक्यित**] १ रोष-युक्त, रौद्राकार वाला, भयंकर; (णाया १, १; पण्ह २, २; भग ७, ८; उवा)।

चंडिज्ज पुं [**दे**] कोप, क्रोध, गुस्सा; २ वि. पिशुन, खल, दुर्जन; (दे ३, २०)।

चंडिम पुंस्त्री [**चण्डिमन्**] चण्डता, प्रचण्डता; (सुपा ६६)।

चंडिया स्त्री [**चण्डिका**] देखो **चंडी**; (स २६२; नाट)।

चंडिल वि [**दे**] पीन, पुष्ट; (दे ३, ३)।

चंडिल पुं [**चण्डिल**] हजाम, नापित; (दे ३, २; पाअ; गा २६१ अ)।

चंडी स्त्री [**चण्डी**] १ क्रोध-युक्त स्त्री; (गा ६०८)। २ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी ; (पाअ)। ३ वनस्पति-विशेष ; (पराण १)। °**देवग** वि [°**देवक**] चण्डी का भक्त ; (सुअ १, ७)।

चंद पुं [**चन्द्र**] १ चन्द्र, चन्द्रमा, चाँद ; (ठा २, ३; प्रासू १३ ; ५५ ; पाअ)। २ नृप-विशेष ; (उप ७२८ टी)। ३ रामचन्द्र, दाशरथी राम, (से १, ३४)। ४ राम के एक सुभट का नाम , (पउम ५६, ३८)। ५ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, २)। ६ राशि-विशेष ; (भवि)। ७ आह्लादक वस्तु ; ८ कपूर ; ६ स्वर्ण, सोना ; १० पानी, जल; (हे २, १६४)। ११ एक जैन आचार्य; (गच्छ ४)। १२ एक द्वीप का नाम, द्वीप-विशेष; (जीव ३)। १३ राधावेध की पुतली का वाम नयन, आँख का गोला ; (णंदि)। १४ नं. देव-विमान-विशेष ; (सम ८)। १५ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (दीव)। °**अंत** देखो °**कंत** ; (विक्र १३६)। °**उत्त** देखो °**गुत्त**; (मुद्रा १६८)। °**कंत** पुं [°**कान्त**] १ मणि-विशेष ; (स ३६०)। २ न. देव-विमान विशेष ; (सम ८)। ३ वि. चन्द्र की तरह आह्लादक ; (आवम)। °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] १ नगरी-विशेष ; (उप ६७३)। २ एक कुलकर-पुरुष की पत्नी ; (सम १५०)। °**कूड** न [°**कूट**] १ देव-विमान-विशेष ; (सम ८)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८)। °**गुत्त** पु [°**गुप्त**] मौर्यवंश का एक स्वनाम-विख्यात राजा ; (विसे ८६२)। °**चार** पुं [°**चार**] चन्द्र की गति ; (चंद १०)। °**चूड**, °**चूल** पुं [°**चूड**] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा ; (पउम ५, ४५ ; दंस)। °**च्छाय** पुं [°**च्छाय**] अंग देश का एक राजा, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी ; (णाया १, ८)। °**जसा** स्त्री [°**यशस्**] एक कुलकर पुरुष की पत्नी, (सम १५०)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] देव-विमान-विशेष , (सम ८)। °**णक्खा** स्त्री [°**नखा**] रावण की बहिन का नाम, (पउम १०, १८)। °**णह** पुं [°**नख**] रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३१)। °**णही** देखो °**णक्खा**; (पउम ७, ६८)। °**णागरी** स्त्री [°**नागरी**] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प)। °**दरिसणिआ** स्त्री [°**दर्शनिका**] उत्सव-विशेष, बच्चे के पहली वार के चन्द्र-दर्शन के उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव ; (राज)। °**दिण** न [°**दिन**] प्रतिपदादि तिथि; (पंच५)। °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष;(जीव ३)। °**द्ध** न [°**ार्ध**] आधा चन्द्र, अष्टमी तिथि का चन्द्र; (जीव ३)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] तप-विशेष ; (ठा २, ३)। °**पन्नत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**] एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ ; (ठा २, १—पत्र १२६)। °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] वक्षस्कार पर्वत-विशेष; (ठा २,३)। °**पुर** न [°**पुर**] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरा**] नगरी-विशेष, भगवान् चन्द्रप्रभ की जन्म-भूमि ; (पउम २०, ३४)। °**प्पभ** वि [°**प्रभ**] १ चन्द्र के तुल्य कान्ति वाला; २ पुं. आठवें जिन-देव का नाम ; (धर्म २)। ३ चन्द्रकान्त, मणि-विशेष ; (पराण १)। ४ एक जैन मुनि ; (दंस)। ५ न. देव-विमान-विशेष ; (सम ८)। ६ चन्द्र का सिंहासन ; (णाया २, १)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] १ चन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १)। २ मदिरा-विशेष, एक जात का दारू; (जीव३)। ३ इस नाम की एक राज-कन्या; (उप १०३१ टी)। ४ इस नाम की एक शिविका, जिसमें बैठ कर भगवान् शीतलनाथ और महावीर-स्वामी दीक्षा के लिए बाहर निकले थे ; (आवम)। °**प्पह** देखो °**प्पभ** ; (कप्प ; सम ४३)। °**भागा** स्त्री [°**भागा**] एक नदी; (ठा ५, ३)। °**मंडल** पुन [°**मण्डल**] १ चन्द्र का मण्डल, चन्द्र का विमान ; (नं ७ ; भग)। २ चन्द्र का विम्ब ; (पराह १,४)। °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] १ चन्द्र का मण्डल-गति से परिभ्रमण ; २ चन्द्र का मण्डल , (सुज्ज ११)। °**मणि** पुं [°**मणि**] चन्द्रकान्त, मणि-विशेष ; (विक्र १२६)। °**माला** स्त्री [°**माला**] १ चन्द्राकार हार ; २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**मालिया** स्त्री [°**मालिका**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (औप)। °**मुही** स्त्री [°**मुखी**] १ चन्द्र के समान आह्लादक मुख वाली स्त्री; २ सीता-पुत्र कुश की पत्नी, (पउम १०६, १२)। °**रह** पुं [°**रथ**] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, १५ ; ४४)। °**रिसि** पुं [°**ऋषि**] एक जैन ग्रन्थकार मुनि; (पंच ५)। °**लेस** न [°**लेश्य**] देव-विमान-विशेष; (सम ८)। °**लेहा** स्त्री [°**लेखा**] १ चन्द्र की रेखा, चन्द्र-कला। २ एक राज-पत्नी; (ती १०)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] १ चन्द्र के विमान का नाम; (चंद १८)। २ देखो **चंडवडिंसग**; (उत्त १३)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान; (सम ८)। °**वयण** वि [°**वदन**] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद-जनक मुँह वाला; २ पुं. राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६६)। °**विकंप** पुं [°**विकम्प**] चन्द्र का

विकल्प-चेत्र; (जो १०)। °विमाण न [°विमान] चंद्र का विमान; (जं ७)। °विलासि वि [°विलासिन्] चन्द्र के तुल्य मनोहर; (राय)। °वेग पुं [°वेग] एक विद्याधर-नरेश; (महा)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष, चान्द्र मासों से निष्पन्न संवत्सर; (चंद १०)। °साला स्त्री [°शाला] अट्टालिका, अटारी; (दे ३, ६)। °सालिया स्त्री [°शालिका] अट्टालिका; (णाया १,१)। °सिंग न [°शृङ्ग] देव-विमान-विशेष; (सम ८)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देव-विमान; (सम ८)। °सिरी स्त्री [°श्री] द्वितीय कुलकर पुरुष की माँ का नाम; (आचू १)। °सिहर पुं [°शिखर] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४३)। °सूरदंसावणिया, °सूरपासणिया स्त्री [°सूरदर्शनिका] बालक का जन्म होने पर तीसरे दिन उसको कराया जाता चन्द्र और सूर्य का दर्शन, और उसके उपलक्ष में किया जाता उत्सव; (भग ११,११; विपा १,२)। °सूरि पुं [°सूरि] स्वनाम-विख्यात एक जैन आचार्य; (गण)। °सेण पु [°सेन] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र; २ एक विद्याधर राज-कुमार; (महा)। °सेहर पुं [°शेखर] १ भूप-विशेष; (ती ३८)। २ महादेव, शिव; (पि ३६५)। °हास पु [°हास] खड्ग-विशेष; (से १४, ५२; गउड)।

चंद वि [चान्द्र] चन्द्र-संबन्धी; (चंद १२)। °कुल न [°कुल] जैन मुनियों का एक कुल; (गच्छ ४)।

चंदअ देखो चंद = चन्द्र; (हे २, १६४)।

चंदइल्ल पुं [दे] मयूर, मोर; (दे ३, ५)।

चंदंक पुं [चन्द्राङ्क] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा; (पउम ५, ४३)।

चंदग [चन्द्रक] देखो चंद। °विज्झ, °वेज्झ न [°वेध्य] राधावेध; "चंदगविज्झं लद्धं, केवलसरिसं समाउपरिहीणं" (संथा १२२; निचू ११)।

चंदट्ठिआ स्त्री [दे] १ भुज, शिखर, कन्धा; २ गुच्छा, स्तबक; (दे ३, ६)।

चंदण पुन [चन्दन] १ सुगन्धित वृक्ष-विशेष, चन्दन का पेड़; (प्रासू ६)। २ न. सुगन्धित काष्ठ-विशेष, चन्दन की लकड़ी; (भग ११, ११; हे २,१८२)। ३ घिसा हुआ चन्दन; (कुमा)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर; (जं)। °कलस पुं [°कलश] चन्दन-चर्चित कुम्भ, माङ्गलिक घट; (औप)। °घड पुं [°घट] मंगल-कारक घड़ा; (जीव ३)। °बाला स्त्री [°बाला] एक साध्वी स्त्री, भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या; (पडि)। °वइ पुं [°पति] स्वनाम-ख्यात एक राजा, (उप ६८६टी)।

चंदणग पुंन [चन्दनक] १ ऊपर देखो। २ पुं. द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, जिसके कलेवर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं; (पण्ह १,१; जी १५)।

चंदणा स्त्री [चन्दना] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या, चन्दनबाला; (सम १५२; कप्प)।

चंदणी स्त्री [दे] चन्द्र की पत्नी, रोहिणी; "चंदो विय चंदणीजोगो" (महा)।

चंदम पुं [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद; (भग)।

चंदवडाया स्त्री [दे] जिसका आधा शरीर ढका और आधा नंगा हो ऐसी स्त्री; (दे ३,७)।

चंदा स्त्री [चन्द्रा] चन्द्र-द्वीप की राजधानी; (जीव ३)।

चंदाअव पुं [चन्द्रातप] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चन्द्र की प्रभा; (से १, २७)। देखो चंदायय।

चंदाणण पुं [चन्द्रानन] ऐरवत क्षेत्र के प्रथम जिन-देव; (सम १५३)।

चंदाणणा स्त्री [चन्द्रानना] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद उत्पन्न करने वाली; २ शाश्वती जिन-प्रतिमा-विशेष; (ठा१,१)।

चंदाभ वि [चन्द्राभ] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद-जनक। २ पुं. आठवाँ जिनदेव, चन्द्रप्रभ स्वामी; (आचू २)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार; (पउम ३, ५५)। ४ न. एक देव-विमान; (सम १४)।

चंदायण न [चान्द्रायण] तप-विशेष; (पंचा १६)।

चंदायण न [चन्द्रायण] चन्द्र का छ छ मास पर दक्षिण और उत्तर दिशा में गमन; (जो ११)।

चंदायय देखो चंदाअव। २ आच्छादन-विशेष, वितान, चँदवा; (सुर ३, ७२)।

चंदालग न [दे] ताम्र का भाजन-विशेष; (सुअ १,४,२)।

चंदावत्त न [चन्द्रावर्त्त] एक देव-विमान; (सम ८)।

चंदाविज्झय देखो चंदग-विज्झ; (णंदि)।

चंदिआ स्त्री [चन्द्रिका] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना; (से ५, २; गा ७७)।

चंदिण न [दे] चन्द्रिका, चन्द्रप्रभा;

"मेहाण दाणं चंदाण, चंदिणं तरुवराण फलनिवहो।
सप्पुरिसाण विढत्तं, सामन्नं सयललोआणं॥" (आ१०)।

चंदिम देखो **चंदम** ; (औप ; कप्प)। २ एक जैन मुनि ; (अनु २)।

चंदिमा स्त्री [**चन्द्रिका**] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना ; (हे १; १८५)।

चंदिमाइय न [**चान्द्रिक**] 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन ; (राज)।

चंदिल पुं [**चन्दिल**] नापित, हजाम; (गा २६१; दे ३,२)।

चंदुत्तरवडिंसग न [**चन्द्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान ; (सम ८)।

चंदेरी स्त्री [**दे**] नगरी-विशेष ; (ती ४५)।

चंदोज्ज } न [**दे**] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल ;
चंदोज्जय } (दे ३, ४)।

चंदोत्तरण न [**चन्द्रोत्तरण**] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान ; (विपा १, ५—पत्र ६०)।

चंदोयर पुं [**चन्द्रोदर**] एक राज-कुमार ; (धम्म)।

चंदोवग न [**चन्द्रोपक**] संन्यासी का एक उपकरण ; (ठा ४, २)।

चंदोवराग पुं [**चन्द्रोपराग**] चन्द्र-ग्रहण, चन्द्रमो का ग्रहण, राहु-ग्रास ; (ठा १० ; भग ३, ६)।

चंद्र देखो **चंद** ; (हे २, ८० ; कुमा)।

चंप सक [**दे**] चाँपना, दावना, दबाना। चंपइ; (आरा २५)। कर्म—चपिज्जइ ; (हे ४, ३६५)।

चंप सक [**चर्च्**] चर्चा करना। चंपइ ; (प्राप्र)। संकृ—**चंपिऊण** ; (वज्जा ६४)।

चंपग देखो **चंपय** ; "असुइट्ठाणे पडिया, चंपगमाला न कोरइ सीसे" (आव ३)।

चंपडण न [**दे**] प्रहार, आघात ; "सरभसचलतविअडगुडिअ-गंधसिंधुरणिवहचलणचंपडणसमुप्पइआ ...... धूलीजालोली" (विक ८४)।

चंपण न [**दे**] चाँपना, दबाना ; (उप १३७ टी)।

चंपय पुं [**चम्पक**] १ वृक्ष-विशेष, चम्पा का पेड ; (स १५२ ; भग)। २ देव-विशेष ; (जीव ३)। ३ न. चम्पा का फूल ; (कुमा)। °**माला** स्त्री [°**माला**] १ छन्द-विशेष ; (पिंग)। २ चम्पा के फूलो का हार , (आव ३)। °**लया** स्त्री [°**लता**] १ लताकार चम्पक वृक्ष , २ चम्पक वृक्ष की शाखा ; (जं १ ; औप)। °**वण** न [°**वन**] चम्पक वृक्षो की प्रधानता वाला वन ; (भग)।

चंपा स्त्री [**चम्पा**] अंग देश की राजधानी, नगरी-विशेष, जिसको आजकल 'भागलपुर' कहते हैं ; (विपा १, १ ; कप्प) °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] वही अर्थ ; (पउम ८, १५६)।

चंपा स्त्री. देखो **चंपय**। °**कुसुम** न [°**कुसुम**] चम्पा का फूल ; (राय)। °**वण्ण** वि [°**वर्ण**] चम्पा के फूल के तुल्य रंग वाला, सुवर्ण-वर्ण। स्त्री—°**ण्णी** (अप) ; (हे ४, ३३०)।

चंपारण (अप) पु [**चम्पारण्य**] १ देश-विशेष, चपारन, भागलपुर का प्रदेश ; २ चंपारन का निवासी ; (पिंग)।

चंपिअ वि [**दे**] चाँपा हुआ, दवाया हुआ, मर्दित ; (सुपा १३७ ; १३८)।

चंपिज्जिया स्त्री [**चम्पीया**] जैन मुनि गण की एक शाखा, (कप्प)।

चंभ पु [**दे**] हल से विदारित भूमि-रेखा ; (दे ३, १)।

चकप्पा स्त्री [**दे**] त्वक्, त्वचा, चमड़ी ; (दे ३,३)।

चकिद देखो **चइद** , (कुमा)।

चकोर पुंस्त्री [**चकोर**] पक्षि-विशेष, चकोर पक्षी ; (सुपा ४५७)। स्त्री—°**री** ; (रयण ४६)।

चक्क पुं [**चक्र**] १ पक्षि-विशेष, चक्रवाक पक्षी ; (पाअ ; कुमा ; सण)। "तो हरिसपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगो" (उप ७२८ टी)। २ न. गाड़ी का पहिया ; (पगह १,१)। ३ समूह ; (सुपा १५०, कुमा)। ४ अस्त्र-विशेष ; (पउम ७२, ३१ ; कुमा)। ५ चक्राकार आभूषण, मस्तक का आभरण-विशेष ; (औप)। ६ व्यूह-विशेष, सैन्य की चक्राकार रचना-विशेष, (गाया १, १ ; औप)। °**कंत** पुं [°**कान्त**] देव-विशेष, स्वयंभूरमण समुद्र का अधिष्ठाता देव; (दीव)। °**जोहि** पु [°**योधिन्**] १ चक्र से लडने वाला योद्धा , (ठा ६)। २ वासुदेव, तीन खंड पृथिवी का राजा ; (आव १)। °**ज्झय** पु [°**ध्वज**] चक्र के निशान वाली ध्वजा ; (जं १)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] चक्रवर्ती राजा ; (सण)। °**पाणि** पु [°**पाणि**] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्। २ वासुदेव, अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (पउम ७३, ३)। °**पुरा**, °**पुरी** स्त्री [°**पुरा**] विदेह वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३; इक)। °**प्पहु** देखो °**पहु**; (सण)। °**यर** पुं [°**चर**] भिक्षुक, भीखमंगा , (उप ६१७)। °**रयण** न [°**रत्न**] अस्त्र-विशेष, चक्रवर्ती राजा का मुख्य आयुध ; (पगह १,४)। °**वइ** पुं [°**पति**] सम्राट् ; (पिंग)। °**वइ**, °**वट्टि** पुं [°**वर्तिन्**] छ खगड भूमि का अधिपति राजा, सम्राट् ; (पिंग ; सण ; ठा ३,१ ; पडि ; प्रासू १७५)। °**वट्टित्त** न [°**वर्तित्व**] सम्राट्पन, साम्राज्य ; (सुर ४, ६१)।

(d) $2x - 3y = 0$

°वत्ति देखो °वट्टि; (पि २८६)। °विजय पुं [°विजय] चक्रवर्ती राजा से जीतने योग्य क्षेत्र-विशेष; (ठा ८)। °साला स्त्री [°शाला] वह मकान, जहाँ तिल पीला जाता हो, तैलिक-गृह; (वव १०)। °सुह पुं [°शुभ, °सुख] देव-विशेष, मानुषोत्तर पर्वत का अधिपति देव; (दीव)। °सेण पुं [°सेन] स्वनाम-ख्यात एक राजा; (दंस)। °हर पुं [°धर] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; (सम १२६; पउम २, ८५; ४, ३६; कप्प)। २ वासुदेव, अर्ध-चक्री राजा; (राज)।

चक्कआअ देखो **चक्कवाय**; (पि ८२)।

चक्कंग पुं [**चक्राङ्ग**] पक्षि-विशेष; (सुपा ३४)।

चक्कणभय न [**दे**] नारंगी का फल; (दे ३, ७)।

चक्कणाहय न [**दे**] ऊर्मि, तरङ्ग, कल्लोल; (दे ३,६)।

चक्कम } **चक्कम्म** } अक [**भ्रम्**] घूमना, भटकना, भ्रमण करना। चक्कमइ; (दे २, ६)। चक्कम्मइ; (हे ४, १६१)। वकृ—**चक्कमंत**; (स ६१०)।

चक्कम्मविअ वि [**भ्रमित**] घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (कुमा)।

चक्कय देखो **चक्क**; (पण्ण १)।

चक्कल न [**दे**] कुण्डल, कर्ण का आभूषण; २ दोला-फलक, हिंडोला का पटिया; (दे ३, २०)। ३ वि. वर्तुल, गोलाकार पदार्थ; (दे ३, २०; भवि; वज्जा ६४; आवम, पड्)। ४ विशाल, विस्तीर्ण; (दे ३,२०; भवि)।

चक्कलिअ वि [**दे**] चक्राकार किया हुआ; (से ११, ६८; स ३८४; गउड)। °भिण्ण वि [°**भिन्न**] गोलाकार खण्ड, गोल टुकडा; (वृह १)।

चक्कवाई स्त्री [**चक्रवाकी**] चक्रवाक-पक्षी की मादा; (रंभा)।

चक्कवाग } **चक्कवाय** } पुं [**चक्रवाक**] पक्षि-विशेष; (णाया १, १; पण्ह १, १; स ३३७; कप्पू; स्वप्न ५१)।

चक्कवाल न [**चक्रवाल**] १ चकाकार भ्रमण "रीइज्ज न चक्कवालेण" (पुप्फ १७८)। २ मण्डल, चक्राकार पदार्थ, गोल वस्तु; (पण्ण ३६; औप; णाया १, १६)। ३ गोल जलाशय; "संसारचक्कवाले" (पञ्च ५२)। ४ गोल जल-समूह, जल-राशि; "जह खुहियचक्कवाले पोयं रयणभ-रियं समुद्दम्मि। निज्जामगा धरिंती" (पञ्च ७६)। ५ आव-श्यक कार्य, नित्य-कर्म; (पंचव ४)। ६ समूह, राशि, ढग; (आउ)। ७ पुं. पर्वत विशेष; (ठा १०)। °विक्खंभ पुं [°विष्कम्भ] चक्राकार घेरा, गोल परिधि; (भग; ठा २, ३)। °सामायारी स्त्री [°सामाचारी] कृत्य-कर्म-विशेष, (पंचव ४)।

चक्कवाला स्त्री [**चक्रवाला**] गोल पंक्ति; चक्राकार श्रेणी; (ठा ७)।

चक्काअ देखो **चक्कवाय**; (हे १, ८)।

चक्काग न [**चक्रक**] चक्राकार वस्तु; "चक्कागं भंजमा-णस्स समो भंगो अ दीसइ" (पण्ण १; पि १६७)।

चक्कार पुं [**चक्रार**] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६३)। °वद्द न [°**वद्द**] शकट, गाड़ी; (दस ५, १)।

चक्काह पुं [**चक्राभ**] सोलहवें जिन-देव का प्रथम शिष्य; (सम १५२)।

चक्काहिव पुं [**चक्राधिप**] चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; (सण)।

चक्काहिवइ पुं [**चक्राधिपति**] ऊपर देखो; (सण)।

चक्कि } **चक्किय** } वि [**चक्रिन्, चक्रिक**] १ चक्र वाला, चक्र वि-शिष्ट। २ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; (सण)। ३ तेली; ४ कुम्भार; (कप्प; औप; णाया १,१)। °साला स्त्री [°**शाला**] तेल वेचने की दुकान; (वव ९)।

चक्किय वि [**चकित**] भयभीत; "समुद्दगंभीरसमा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसिया" (उत्त ११)।

चक्किय पुं [**चाक्रिक**] १ चक्र से लड़ने वाला योद्धा; २ भिक्षुक की एक जाति; (औप; णाया १, १)।

चक्किया कि [**शक्नुयात्**] सके, कर सके, समर्थ हो सके; (कप्प; कस; पि ४६५)।

चक्की स्त्री [**चक्री**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

चक्कुलंडा स्त्री [**दे**] सर्प की एक जाति; (दे ३, ५)।

चक्केसर पुं [**चक्रेश्वर**] १ चक्रवर्ती राजा; (भवि)। २ विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन ग्रन्थकार मुनि; (राज)।

चक्केसरी स्त्री [**चक्रेश्वरी**] १ भगवान् आदिनाथ की शासन-देवी; (संति ९)। २ एक विद्या-देवी; (संति ५)।

चक्कोडा स्त्री [**दे**] अग्नि-भेद, अग्नि-विशेष; (दे ३,२)।

चक्ख सक [**आ+स्वादय्**] चखना, चीखना, स्वाद लेना। चक्खइ; (पि २०२)। वकृ—**चक्खंत**; (गा १७१)। कवकृ—**चक्खिज्जंत, चक्खीअंत**; (पि २०२)। संकृ—

चक्खिऊण ; (से १३, ३६)। हेकृ—**चक्खिउं** ; (वज्जा ४६)।

चक्खडिअ न [**दे**] जीवितव्य, जीवन ; (दे ३, ६)।

चक्खण न [**आस्वादन**] आस्वादन, चीखना ; (उप पृ २५२)।

चक्खिअ वि [**आस्वादित**] आस्वादित, चीखा हुआ ; (हे ४, २५८ ; गा ६०३ ; वज्जा ४६)।

चक्खिंदिय न [**चक्षुरिन्द्रिय**] नयनेन्द्रिय, आँख, चक्षु ; (उत्त २६, ६३)।

चक्खु पुंन [**चक्षुष्**] १ आँख, नेत्र, चक्षु ; (हे १, ३३ ; सुर ३, १५३ ; सम १)। २ पुं. इस नाम का एक कुलकर पुरुष; (पउम ३, ५३)। ३ न. देखो नीचे °**दंसण**; (कम्म ३, १७ ; ४, ६)। ४ ज्ञान, वोध ; (ठा ३, ४)। ५ दर्शन, अवलोकन ; (आचा)। °**कंत** पुं [°**कान्त**] देव-विशेष, कुण्डलोद समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] एक कुलकर पुरुष की पत्नी ; (सम १५०)। °**दंसण** न [°**दर्शन**] चक्षु से वस्तु का सामान्य ज्ञान ; (सम १५)। °**दंसणवडिया** स्त्री [°**दर्शनप्रतिज्ञा**] आँख से देखने का नियम, नयनेन्द्रिय का संयम ; (निचू ६ ; आचा २, २)। °**दय** वि [°**दय**] ज्ञान-दाता ; (सम १ ; पडि)। °**पडिलेहा** स्त्री [°**प्रतिलेखा**] आँख से देखना ; (निचू १)। °**परिन्नाण** न [°**परिज्ञान**] रूप-विषयक ज्ञान, आँख से होने वाला ज्ञान; (आचा)। °**पह** पुं [°**पथ**] नेत्र-मार्ग, नयन-गोचर; (पण्ह १, ३)। °**फास** पुं [°**स्पर्श**] दर्शन, अवलोकन ; (औप)। °**भीय** वि [°**भीत**] अवलोकन मात्र से ही डरा हुआ ; (आचा)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] १ लोचन-युक्त, आँख वाला ; (विसे)। २ पुं. एक कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५०)। °**लोल** वि [°**लोल**] देखने का शौकीन, जिसकी नयनेन्द्रिय संयत न हो वह ; (कस)। °**लोलुय** वि [°**लोलुप**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (कस)। °**ल्लोयणलेस्स** वि [°**लोकनलेश्य**] सुरूप, सुन्दर रूप वाला; (राय; जीव ३)। °**विप्पहय** वि [**वृत्ति-हत**] दृष्टि से अपरिचित ; (वव ८)। °**स्सव** पुं [°**श्रवस्**] सर्प, साँप ; (स ३३४)।

चक्खुड्डुण न [**दे**] प्रेक्षणक, तमाशा ; (दे ३, ४)।

चक्खुय देखो **चक्खुस** ; (आवम)।

चक्खुरक्खणी स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम ; (दे ३, ७)।

चक्खुस वि [**चाक्षुष**] आँख से देखने योग्य वस्तु, नयन-ग्राह्य ; (पण्ह १, १; विसे ३३११)।

चगोर देखो **चओर** ; (प्राकृ)।

चच्च पुं [**चर्व**] समालम्भन, चन्दन वगैरः का शरीर में उप-लेप ; (दे ६, ७६)।

चच्चर न [**चत्वर**] चौहट्टा, चौरास्ता, चौक ; (णाया १, १ ; पण्ह १, ३ ; सुर १, ६२; हे २, १२; कुमा)।

चच्चरिअ पुं [**दे. चञ्चरीक**] भ्रमर, भमरा; (षड्)।

चच्चरिया स्त्री [**चर्चरिका**] १ नृत्य-विशेष ; (रंभा)। २ देखो **चच्चरी** ; (स ३०७)।

चच्चरी स्त्री [**चर्चरी**] १ गीत-विशेष, एक प्रकार का गान; "वित्थरियचच्चरीरवमुहरियउज्जाणभूभागे" (सुर ३, ५४); "पारंभियचच्चरीगीया" (सुपा ५५)। २ गाने वाली टोली, गाने वालों का यूथ ; "पवत्ते मयणमहूसवे निग्गयासु विचित्त-वेसासु नयरचच्चरीसु" , "कहं नीयचच्चरी अम्हाण चच्चरीए समासन्नं परिव्वयइ" (स ४२)। ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ४ हाथ की ताली का आवाज; (आव १)।

चच्चसा स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष; "अट्ठसयं चच्चसाणं, अट्ठसयं चच्चसावायगाणं" (राय)।

चच्चा स्त्री [**दे**] १ शरीर पर सुगन्धि पदार्थ का लगाना, विलेपन ; (दे ३, १६ ; पाअ ; जं १ ; णाया १, १ ; राय)। २ तल-प्रहार, हाथ की ताली ; (दे ३,१६; षड्)।

चच्चार सक [**उपा+लभ्**] उपालम्भ देना, उलहना देना। चच्चारइ ; (षड्)।

चच्चिक्क वि [**दे**] १ मण्डित, विभूषित; "चंदुज्जयचच्चिक्का दिसाउ" (दे ३,४)। "तणुप्पहापडलचच्चिक्को" (धम्म ६टी) ; "साहू गुणरयणचच्चिक्का" (चउ ३६)। २ पुंन. विलेपन, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का शरीर पर मसलना; (हे २,७४) ; "चच्चिक्को" (षड्); "कुंकुमचच्चिक्कछुरियंगो" (पउम २८,२८); "पिच्छइ सुवन्नकलसं सुरचंदणपंकचच्चिक्कं" (उप ७६८ टी); " घणलेहिदपंकचच्चिक्को" (मृच्छ११०)।

चच्चुप्प सक [**अर्पय्**] अर्पण करना, देना। चच्चुप्पइ ; (हे ४,३६)।

चच्छ सक [**तक्ष्**] छिलना, काटना। चच्छइ; (हे ४,१६४)।

चच्छिअ वि [**तष्ट**] छिला हुआ ; (कुमा)।

चज्ज सक [**दृश्**] देखना, अवलोकन करना। चज्जइ ; (दे ३, ४ ; षड्)।

चज्जा स्त्री [**चर्या**] १ आचरण, वर्तन; २ चलन, गमन।

चणइया स्त्री [**चणकिका**] मसूर, अन्न-विशेष; (ठा ५,३) ।
चणग देखो **चणअ** ; (सुपा ६३१ ; सुर ३, १४८) ।
°**गाम** पुं [°**ग्राम**] ग्राम-विशेष, गौड़ देश का एक ग्राम ; (राज) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष, राजगृह-नगर का असली नाम ; (राज) ।
चत्त पुंन [**दे**] तर्कु, तकुआ, सूत बनाने का यन्त्र ; (दे ३, १ ; धर्म २) ।
चत्त वि [**त्यक्त**] छोड़ा हुआ, परित्यक्त ; (पण्ह २, १ ; कुमा १, १६) ।
चत्तर देखो **चच्चर** ; (पि २६६ ; नाट) ।
चत्ता देखो **चत्तालीसा** ; (उवा) ।
चत्ताल वि [**चत्वारिंश**] चालीसवाँ; (पउम ४०, १७)।
चत्तालीस न [**चत्वारिंशत्**] १ चालीस, ४० ; "चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता" (सम ६६ ; कप्प) । २ चालीस वर्ष की उम्र वाला; "चत्तालीसस्स विन्नाणं" (तंदु) ।
चत्तालीसा स्त्री [**चत्वारिंशत्**] चालीस, ४० ; "तीसा चत्तालीसा " (पण्ण २) ।
चत्थरि पुंस्त्री [**दे. चत्तरि**] हास, हास्य; (दे ३, २) ।
चपेटा स्त्री [**दे. चपेटा**] कराघात, थप्पड़, तमाचा, (षड्) ।
चप्प सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना, दबाना । संकृ— **चप्पिवि** ; (भवि) ।
चप्पडग न [**दे**] काष्ठ-यन्त्र-विशेष; (पण्ह १,३—पत्र ५३) ।
चप्पलअ वि [**दे**] १ असत्य, झूठा ; (कुमा ८, ७६)। २ बहुमिथ्यावादी, बहुत झूठ बोलने वाला ; (षड्) ।
चप्पिय वि [**आक्रान्त**] आक्रान्त, दबाया हुआ; (भवि)।
चप्पुडिया, **चप्पुडी** स्त्री [**चप्पुटिका**] चपटी, अंगुष्ठ के साथ अंगुली की ताली ; (गाया १, ३—पत्र ६५ ; दे ८, ४३) ।
चप्फल, **चप्फलय** न [**दे**] १ शेखर-विशेष, एक तरह का शिरोभूषण; २ वि. असत्य, झूठा, मिथ्याभाषी; (दे ३, २० ; हे ३, ३८ ; कुमा ८, २५) ।
चमक्क पुं [**चमत्कार**] विस्मय, आश्चर्य ; "संजणियजणचमक्को" (धम्म ६ टी; उप ७६८ टी) । °**यर** वि [°**कर**] विस्मय-जनक ; (सण) ।
चमक्क, **चमक्कर** सक [**चमत्+कृ**] विस्मित करना, आश्चर्यान्वित करना । चमक्केइ, चमक्कंति ; (विवे ४३ ; ४८) । वकृ—**चमक्करंत** ; (विक्र ६६) ।
चमक्कार पुं [**चमत्कार**] आश्चर्य, विस्मय ; (सुर १०, ८ ; वज्जा २४) ।
चमक्किअ वि [**चमत्कृत**] विस्मित, आश्चर्यान्वित ; (सुपा १२२) ।
चमड, **चमढ** सक [**भुज्**] भोजन करना, खाना । चमडइ ; (षड्) । चमढइ ; (हे ४, ११०) ।
चमढ सक [**दे**] १ मर्दन करना, मसलना । २ प्रहार करना । ३ कदर्थन करना, पीड़ना । ४ निन्दा करना । ५ आक्रमण करना । ६ उद्विग्न करना, खिन्न करना । कवकृ— **चमढिज्जंत** ; (ओघ १२८ भा ; बृह १) ।
चमढण न [**भोजन**] भोजन, खाना ; (कुमा) ।
चमढण न [**दे**] १ मर्दन, अवमर्दन ; (ओघ १८७ भा ; स २२) । २ आक्रमण ; (स ५७६) । ३ कदर्थन, पीड़न ; ४ प्रहार ; (ओघ १६३) । ५ निन्दा, गर्हणा ; (ओघ ७६) । ६ वि. जिसकी कदर्थना की जाय वह ; (ओघ २३७) ।
चमढणा स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (बृह १) ।
चमढिअ वि [**दे**] मर्दित, विनाशित ; (वव २) ।
चमर पुं [**चमर**] पशु-विशेष, जिसके बालों का चामर बनता है; "वराहरुरुचमरसेविए रण्णे" (पउम ६४, १०५ ; पण्ह १, १) । २ पुं. पाँचवें जिनदेव का प्रथम शिष्य; (सम १५२) । ३ दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का इन्द्र ; (ठा २, ३) । °**चंच** पुं [°**चञ्च**] चमरेन्द्र का आवास-पर्वत ; (भग १३, ६)। °**चंचा** स्त्री [°**चञ्चा**] चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-पुरी विशेष ; (गाया २) । °**पुर** न [°**पुर**] विद्याधरों का नगर-विशेष ; (इक) ।
चमर पुंन [**चामर**] चँवर, चामर, वाल-व्यजन ; (हे १, ६७) । °**धारी**, °**हारी** स्त्री [°**धारिणी**] चामर वीजने वाली स्त्री ; (सुपा ३३६; सुर १०, १५७) ।
चमरी स्त्री [**चमरी**] चमर-पशु की मादा ; (से ७, ४८ ; स ४४१ ; औप ; महा) ।
चमस पुंन [**चमस**] चमचा, कलछी, दर्वी ; (औप) ।
चमुक्कार पुं [**चमत्कार**] १ आश्चर्य, विस्मय ; " पेच्छागयसुरकिन्नरचित्तचमुक्कारकारयं " (सुर १३, ६७) । २ बिजली का प्रकाश ; " ताव य विज्जुचमक्कारथंतरं चंडचडडसंसद्दो " (सुर २, ११०) ।
चमू स्त्री [**चमू**] १ सेना, सैन्य, लश्कर ; (आवम) । २ सेना-विशेष, जिसमें ७२६ हाथी, ७२६ रथ, २१८७

$2y = 0$
(d) $2x - 3y = 0$

घोड़े और ३६४५ पैदल हो ऐसा लश्कर; (पउम ५६, ६)।
चम्म न [चर्मन्] छाल, त्वक्, चाम, खाल ; (हे १, ३२ ; स्वप्न ७० ; प्रासू १७१)। °**किड** वि [°किट] चमड़े से सीआ हुआ ; (भग १३, ६)। °**कोस**, °**कोसय** पुं [°कोश, °क] १ चमड़े का बना हुआ थैला; २ एक तरह का चमड़े का जूता ; (ओघ ७२८ ; आचा २, २, ३ ; वव ८)। °**कोसिया** स्त्री [°कोशिका] चमड़े की बनी हुई थैली ; (सूअ २, २)। °**खंडिय** वि [°खण्डिक] १ चमड़े का परिधान वाला ; २ सब उपकरण चमड़े का ही रखने वाला ; (णाया १, १५)। °**ग** वि [°क] चमड़े का बना हुआ, चर्ममय ; (सूअ २, २)। °**पक्खि** पुं [°पक्षिन्] चमड़े की पाँख वाला पक्षी ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °**पट्ट** पुं [°पट्ट] चमड़े का पटा, वर्ध ; (विपा १, ६)। °**पाय** न [°पात्र] चमड़े का पात्र ; (आचा २,६, १)। °**यर** पुं [°कार] मोची, चमार ; (स २८६ ; दे २, ३७)। °**रयण** न [°रत्न] चक्रवर्ती का रत्न-विशेष, जिससे सुबह में बोये हुए शालि वगैरः उसी दिन पक कर खाने योग्य हो जाते हैं ; (पव २१२)। °**रुक्ख** पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष ; (भग ८, ३)।
चम्मट्ठि स्त्री [चर्मयष्टि] चर्म-मय यष्टि, चर्म-दण्ड ; (कप्पू)।
चम्मट्ठिअ अक [चर्मयष्टीय्] चर्म-यष्टि की तरह आचरण करना। वकृ—**चम्मट्ठिअंत** ; (कप्पू)।
चम्मट्ठिल पुं [चर्मास्थिल] पक्षि-विशेष; (पराह १, १)।
चम्मार पुं [चर्मकार] चमार, मोची ; (विसे २६८८)।
चम्मारुअ पुं [चर्मकारक] ऊपर देखो ; (प्राप)।
चम्मिय वि [चर्मित] चर्म से बँधा हुआ, चर्म-वेष्टित ; (औप)।
चम्मेट्ठ पुं [चर्मेष्ट] प्रहरण-विशेष, चमड़े से वेष्टित पाषाण वाला आयुध ; (पराह १, १)।
चय सक [त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। चयइ ; (गाअ; हे ४, ८६)। कर्म—चइज्जइ; (उव)। वकृ—**चयंत**; (सुपा ३८८)। संकृ—चइअ, चइउं, **चिच्चा**, चइऊण, चइत्ता, चइत्ताणं, चइत्तु ; (कुमा ; उत्त १८ ; महा ; ठा ; उत्त १)। कृ—चइयव्व; (सुपा ११६ ; ४०५ ; ५२१)।
चय सक [शक्] सकना, समर्थ होना। चयइ ; (हे ४, ८६)। वकृ—**चयंत**, (सूअ १, ३, ३ ; से ६, ५०)।
चय अक [च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। चयइ; (भवि)। चयंति ; (भग)। वकृ—**चयमाण** ; (कप्प)।
चय पुं [चय] १ शरीर, देह ; (विपा १, १ ; उवा)। २ समूह, राशि, ढग ; (विसे २२१६ ; सुपा ५७१; कुमा)। ३ इकट्ठा होना ; (अणु)। ४ वृद्धि ; (आचा)।
चय पुं [च्यव] च्यव, जन्मान्तर-गमन , (ठा ८; कप्प)।
चयण न [चयन] १ इकट्ठा करना ; (पव २)। २ ग्रहण, उपादान ; (ठा २, ४)।
चयण न [त्यजन] त्याग, परित्याग ; (सट्ठि ३६)।
चयण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-गमन ; (ठा १—पत्र १६)। २ पतन, गिर जाना। °**कप्प** पुं [°कल्प] १ पतन-प्रकार, चारित्र वगैरः से गिरने का प्रकार ; २ शिथिल साधुओं का विहार; (गच्छ १; पंचभा)।
चर सक [चर्] १ गमन करना, चलना, जाना। २ भक्षण करना। ३ सेवना। ४ जानना। चरइ ; (उव ; महा)। भूका—चरिंसु ; (गउड)। भवि—चरिस्सं ; (पि १७३)। वकृ—**चरंत, चरमाण**; (उत्त २ ; भग ; विपा१, १)। संकृ—**चरिअ, चरिऊण**; (नाट—मृच्छ १०; आवम)। हेकृ—**चरिउं,चारए**; (ओघ ६५; कस)। कृ—**चरियव्व**; (भग ६, ३३)। प्रयो, कृ—**चारियव्व** ; (गण १७—पत्र ४६७)।
चर पुं [चर] १ गमन, गति ; २ वर्तन ; (दंस; आवम)। ३ दूत, जासूस ; (पाअ; भवि)।
°**चर** वि [°चर] चलने वाला ; (आचा)।
चरंती स्त्री [चरन्ती] जिस दिशा में भगवान् जिनदेव वगैरः ज्ञानी पुरुष विचरते हों वह ; (वव १)।
चरग पुं [चरक] १ देखो **चर**=चर। २ संन्यासिओं का झुंड विशेष, यूथबंध घूमने वाले त्रिदण्डिओं की एक जाति ; (भग ; गच्छ २)। ३ भिक्षुकों की एक जाति ; (पराण २०)। ४ दंश-मशकादि जन्तु ; (राज)।
चरचरा स्त्री [चरचरा] 'चर चर' आवाज; (स २५७)।
चरड पुं [चरट] लुटेरे की एक जाति ; (धम्म १२ टी ; सुपा २३२ ; ३३३)।
चरण न [चरण] १ संयम, चारित्र, व्रत, नियम ; (ठा ३, १ ; ओघ २ ; विसे १)। २ चरना, पशुओं का तृणादि-

भत्तण ; (सुर २, ३) । ३ पद्य का चौथा हिस्सा, (पिंग)। ४ गमन, विहार ; (णंदि ; सुअ १, १०, २) । ५ सेवन, आदर ; (जीव २) । ६ पाद, पाँव ; (३,७) । °**करण** न [°**करण**] संयम का मूल और उत्तर गुण ; सूअ१,१. सम्म १६४)। °**करणाणुओग** पुं [°**करणानुयोग**] संयम के मूल और उत्तर गुणों की व्याख्या ; (निचू १५) । °**कुसील** पुं [°**कुशील**] चारित्र को मलिन करने वाला साधु, शिथिलाचारी साधु ; (पव २) । °**णय** [°**नय**] क्रिया को मुख्य मानने वाला मत ; (आचा)। °**मोह** पुंन [°**मोह**] चारित्र का आवारक कर्म-विशेष ; (कम्म १) ।

चरम वि [**चरम**] १ अन्तिम, अन्त का, पर्यन्तवर्ती ;(ठा २, ४ ; भग ८,३ ; कम्म ३, १७ ; ४, १६ ; १७) । २ अनन्तर भव में मुक्ति पाने वाला ; ३ जिसका विद्यमान भव अन्तिम हो वह; (ठा २, २)। °**काल** पुं [°**काल**] मरण-समय ; (पंचव ४) । °**जलहि** पुं [°**जलधि**] अन्तिम समुद्र, स्वयंभूरमण समुद्र ; (लहुअ २) ।

चरमंत पुं [**चरमान्त**] सब से अन्तिम, सब से प्रान्त-वर्ती; (सम ६६) ।

चरय देखो **चरग** ; (औप ; णाया १, १५) ।

चरिगा देखो **चरिया**=चरिका ; (राज) ।

चरित्त न [**चरित्र**] १ चरित, आचरण ; २ व्यवहार; (भवि ; प्रासू ४०) । ३ स्वभाव, प्रकृति ; (कुमा) ।

चरित्त न [**चारित्र**] संयम, विरति, व्रत, नियम ; (ठा २, ४ ; ४,४ ; भग) । °**कप्प** पुं [°**कल्प**] संयमानुष्ठान का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (पंचभा) । °**मोह** पुंन [°**मोह**] कर्म-विशेष, संयम का आवारक कर्म ; (भग) । °**मोहणिज्ज** न [°**मोहनीय**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा २, ४) । °**चरित्त** न [°**चारित्र**] आंशिक संयम, श्रावक-धर्म ; (पडि ; भग ८,२) । °**यार** पुं [°**चार**] संयम का अनुष्ठान; (पडि) । °**रिय** पुं [°**र्य**] चारित्र से आर्य, विशुद्ध चारित्र वाला, साधु, मुनि ; (पगण १) ।

चरित्ति पुंस्त्री [**चारित्रिन्**] संयम वाला, साधु, मुनि ; (उप ६६६ ; पंचव १) ।

चरिम देखो **चरम** ; (सुर १,१०; औप ; भग ; ठा २, ४) ।

चरिय पुं [**चरक**] चर-पुरुष, जासूस, दूत ; (सुपा ५२८) ।

चरिय न [**चरित**] १ चेष्टित, आचरण ; (औप ; प्रासू ८६) । २ जीवनी, जीवन-चरित ; (सुपा २) । ३ चरित्र-ग्रन्थ ; (सुपा ६५८) । ४ सेवित, आश्रित ; (पगह १,३) ।

चरिया स्त्री [**चरिका**] १ परिव्राजिका, संन्यासिनी ; (ओघ ५६८) । २ किला और नगर के बीच का मार्ग ; (सम १३७ ; पगण १,१) ।

चरिया स्त्री [**चर्या**] १ आचरण, अनुष्ठान ; "दुक्करचरिया मुणिवराणं" (पउम १४, १५२) । २ गमन, गति, विहार; (सुअ १, १, ४) ।

चरु पुं [**चरु**] स्थाली-विशेष, पात्र-विशेष , (औप; भवि)।

चरुगिणय देखो **चारुइणय** ; (इक) ।

चरुल्लेव न [**दे**] नाम, आख्या ; (दे ३, ६) ।

चल सके [**चल्**] १ चलना, गमन करना । २ अक. काँपना, हिलना । चलइ ; (महा ; गउड) । वकृ—**चलंत, चलमाण** ; (गा ३५६ ; सुर ३,४० ; भग) । हेकृ—**चलिउं,** (गा ४८४) । प्रयो, संकृ—**चलइत्ता** ; (दस ५, १) ।

चल वि [**चल**] १ चपल, अस्थिर ; (स ४२० ; वज्जा ६६) । २ पु. रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३६) ।

चलचल वि [**चलचल**] १ चंचल, अस्थिर ; "चलचलय-कोडिमोडणकराइं नयणाइं तरुणीणं" (वज्जा ६०) । २ पुं. घी में तलाती चीज का पहला तीन घान ; (निचू ४) ।

चलण पुं [**चरण**] पाँव, पैर, पाद ; (औप ; से ६,१३) । °**मालिया** स्त्री [°**मालिका**] पैर का आभूषण-विशेष ; (पगह २, ५ , औप) । °**वंदण** न [°**वन्दन**] पैर पर सिर झुका कर प्रणाम, प्रणाम-विशेष ; (पउम ८, २०६) ।

चलण न [**चलन**] चलना, गति, चाल ; (से ६, १३) ।

चलणा स्त्री [**चलना**] १ चलन, गति ; २ कम्प, हिलन ; (भग १६, ६) ।

चलणाउह पुं [**चरणायुध**] कुक्कुट, मुर्गा ; (दे ३, ७) ।

चलणाओह पुं [**दे. चरणायुध**] ऊपर देखो ; (षड्) ।

चलणिया स्त्री [**चलनिका**] नीचे देखो ; (ओघ ६७६) ।

चलणी स्त्री [**चलनी**] १ साध्वीओं का एक उपकरण ; (ओघ ३१५ भा) । २ पैर तक का कीच ; (जीव ३; भग ७, ६) ।

चलवलण न [**दे**] चटपटाई, चचलता ; (पउम १०२,६) ।

चलाचल वि [**चलाचल**] चंचल, अस्थिर ; (पउम ११२,६)।

चलिंदिय वि [**चलेन्द्रिय**] इन्द्रिय-निग्रह करने में असमर्थ, जिसकी इन्द्रियाँ काबू में न हो वह ; (आचा २, ५, १) ।

चलिअ न [**चलित**] १ विकलता, अस्थैर्य, चंचलता ; (पाअ)। २ चला हुआ, कम्पित; (आवम) । ३ प्रवृत्त ; (पाअ ; औप) । ४ विनष्ट ; (धम्म २) ।

(d) $2x - 3y = 0$

चामीअर न [**चामीकर**] सुवर्ण, सोना ; (पात्र ; सुपा ७७ ; णाया १, ४) ।
चामुंडा देखो **चाउंडा** ; (विसे ; पि) ।
चाय देखो **चय**=शक् । वकृ—**चायंत, चाएंत,** सूत्र १, ३, १ ; वव ३) ।
चाय देखो **चाव** ; (सुपा ४३० ; से १४, १५ ; पिंग) ।
चाय पुं [**त्याग**] १ छोड़ना, परित्याग ; (प्रासू ८ ; पंचव १) । २ दान ; (सुर १, ६५) ।
चायग, चायय पुं [**चातक**] पक्षि-विशेष, चातक-पक्षी; (सण ; प्राप्र ; दे ६, ६०) ।
चार पुं [**चार**] १ गति, गमन ; "पायचारेण" (महा ; उप पृ १२३ ; रयण १५) । २ भ्रमण, परिभ्रमण ; (स १६) । ३ चर-पुरुष, जासूस ; (विपा १, ३ ; महा ; भवि) । ४ कारागार, कैदखाना ; (भवि) । ५ संचार, संचरण ; (औप) । ६ अनुष्ठान, आचरण ; (आचानि ४५ ; महा) । ७ ज्योतिष-क्षेत्र, आकाश; (ठा २, २) ।
चार पुं [**दे**] १ वृक्ष-विशेष, पियाल वृक्ष, चिरोंजी का पेड़ ; (दे ३, २१ ; अणु ; पणण १६) । २ बन्धन-स्थान ; (दे ३, २१) । ३ इच्छा, अभिलाष ; (दे ३, २१; भवि, सुपा ५११) । ४ न. फल-विशेष, मेवा विशेष ; (पणण १६) । °**क्कय** पुं [°**क्रय**] बेचने वाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना ; (सुपा ५११) ।
चारए देखो **चर**=चर् ।
चारग दे [**चारक**] देखो **चार** ; (औप ; णाया १; १ ; पण्ह १, ३ ; उप ३५७ टी) । °**पाल** पुं [°**पाल**] जेलखाना का अध्यक्ष ; (विपा १, ६—पत्र ६५) । °**पालग** पुं [°**पालक**] कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर ; (उप पृ ३३७) । °**भंड** न [°**भाण्ड**] कैदी को शिक्षा करने का उपकरण ; (विपा १, ६) । °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर ; (उप पृ ३३७) ।
चारण पुं [**दे**] ग्रन्थि-च्छेदक, पाकेटमार, चोर-विशेष ; (दे ३, ६) ।
चारण पुं [**चारण**] १ आकाश में गमन करने की शक्ति रखने वाले जैन मुनिओं की एक जाति ; (औप ; सुर ३, १५ ; अजि १६) । २ मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति करने वाली जाति, भाट ; (उप ७६८ टी ; प्रामा) । ३ एक जैन मुनि-गण ; (ठा ६) ।
चारणिआ स्त्री [**चारणिका**] गणित-विशेष; (ओघ २१ टी)।
चारभड पुं [**चारभट**] शूर पुरुष, लड़वैया, सैनिक; (पण्ह १, २ ; १, ३ ; बृह १) ।
चारय देखो **चारग** ; (सुपा २०७ ; स १५) ।
चारवाय पुं [**दे**] ग्रीष्म ऋतु का पवन ; (दे ३, ६) ।
चारहड देखो **चारभड** , (धम्म १२ टी ; भवि) ।
चारहडी स्त्री [**चारभटी**] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति ; (सुपा ४४१ ; ४४२ ; हे ४, ३६६) ।
चारागार न [**चारागार**] कैदखाना, जेलखाना ; (सुर १६, १७) ।
चारि स्त्री [**चारि**] चारा, पशुओं के खाने की चीज, घास आदि ; (ओघ २३८) ।
चारि वि [**चारिन्**] १ प्रवृत्ति करने वाला ; (विसे २४३ टी ; उव ; आचा) । २ चलने वाला, गमन-शील ; (औप ; कप्पू) ।
चारिअ वि [**चारित**] १ जिसको खिलाया गया हो वह ; (से २, २७) । २ विज्ञापित, जताया हुआ ; (पणण १७ —पत्र ४६७) ।
चारिअ पुं [**चारिक**] १ चर पुरुष, जासूस ; (पण्ह १, २ ; पउम २६, ६५) । "चोरुत्ति चारिउत्ति य होइ जओ परदारगामित्ति" (विसे २३७३) । २ पंचायत का मुखिया पुरुष, समुदाय का अगुआ ; (स ४०६) ।
चारित्त देखो **चरित्त**=चारित्र ; (ओघ ६ भा ; उप ६७७ टी) ।
चारित्ति देखो **चरित्ति** ; (पुप्फ १५४) ।
चारियव्व देखो **चर**=चर् ।
चारी स्त्री [**चारी**] देखो **चारि**=चारि; (स ४८७; ओघ २३८ टी) ।
चारु वि [**चारु**] १ सुन्दर, शोभन, प्रवर ; (उवा ; औप) । २ पुं. तीसरे जिनदेव का प्रथम शिष्य; (सम १५२) । ३ न. प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष ; (जीव १ ; राय) ।
चारुइणय पुं [**चारुकिनक**] १ देश-विशेष; २ वि. उस देश का निवासी; (औप; अंत) । स्त्री—°**णिया** ; (औप) ।
चारुणय पुं [**चारुनक**] ऊपर देखो ; (औप) । स्त्री—°**णिया** ; (औप ; णाया १, १) ।
चारुवच्छि पुं. व. [**चारुवत्सि**] देश-विशेष ; (पउम ६८, ६४) ।
चारुसेणी स्त्री [**चारुसेनी**] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

(महा)। °पिय पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक मुख्य उपासक ; (उवा)।
चुलसी स्त्री [चतुरशीति] चौरासी, अस्सी और चार, ८४ ; (महा ; जी ४७)। "चुलसीए नागकुमारावाससयसहस्सेसु" (भग)।
चुलसीइ देखो चुलसी ; (पउम २०, १०२ ; जं २)।
चुलिआला स्त्री [चुलियाला] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
चुलुअ पुंन [चुलुक] चुल्लु, पसर, एक हाथ का संपुटाकार ; (दे ३, १८ ; सुपा २१६ ; प्रासु ५७)।
चुलुचुल अक [स्पन्द्] फरकना, थोड़ा हिलना। चुलुचुलइ ; (हे ४, १२७)।
चुलुचुलिअ वि [स्पन्दित] १ फरका हुआ, कुछ हिला हुआ ; २ न. स्फुरण, स्पन्दन ; (पाअ)।
चुलुप्प पुं [दे] छाग, अज, बकरा ; (दे ३, १६)।
चुल्ल पुं [दे] १ शिशु, बालक ; २ दास, नौकर ; (दे ३, २२)। ३ वि. छोटा लघु ; (ठा २, ३)। °ताय पुं [°तात] पिता का छोटा भाई, चाचा ; (पि ३२५)। °पिउ पुं [°पितृ] चाचा, पिता का छोटा भाई ; (विपा १, ३)। °माउया स्त्री [°मातृ] १ छोटी माँ, माता की छोटी सपत्नी, विमाता-विशेष ; (उप २६४ टी ; गाया १, १ ; विपा १, ३)। २ चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री ; (विपा १, ३ —पत्र ४०)। °सयग, °सयय पुं [°शतक] भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासकों में से एक ; (उवा)। °हिमवंत पुं [°हिमवत्] छोटा हिमवान् पर्वत, पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम १२ ; इक)। °हिमवंतकूड न [°हिमवत्कूट] १ क्षुद्र हिमवान् पर्वत का शिखर-विशेष; २ पुं. उसका अधिपति देव-विशेष; (जं४)। °हिमवंतगिरिकुमार पुं [°हिमवद्गिरिकुमार] देव-विशेष, जो क्षुद्र हिमवत्कूट का अधिष्ठायक है ; (जं ४)।
चुल्लग [दे] देखो चोल्लक ; (ग्राक)।
चुल्लि } स्त्री [चुल्लि, °ल्ली] चूल्हा, जिसमें आग रख कर
चुल्ली } रसोई की जाती है वह; (दे १,८७; सुर २,१०३)।
चुल्ली स्त्री [दे] शिला, पाषाण-खण्ड ; (दे ३, १५)।
चुल्लोडय पुं [दे] बड़ा भाई; (दे ३, १७)।
चूअ पुं [दे] स्तन-शिखा, थन का अग्र भाग ; (दे३,१८)।
चूअ पुं [चूत] १ वृक्ष-विशेष, आम्र, आम का गाछ ; (गउड ; भग; सुर ३, ४८)। २ देव-विशेष ; (जीव ३)। °वडिंसग न [°ावतंसक] विमान का अवतंस-विशेष ; (राय)। °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; जीव ३)।
चूआ स्त्री [चूता] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; ठा ४, २)।
चूड पुं [दे] चूड़ा, बाहु-भूषण, वलयावली ; (दे ३, १८ ; ७, ५२ ; ५६ ; पाअ)।
चूडा देखो चूला; (सुर २, २४२ ; गउड ; णाया १,१ ; सुपा १०४)।
चूडुल्लअ (अप) देखो चूड ; (हे ४, ३६५)।
चूर सक [चूरय्, चूर्णय्] खण्ड करना, तोड़ना, टुकड़े टुकड़ा करना। चूरेमि ; (धम्म ६ टी)। भवि—चूरइस्सं ; (पि ५२८)। वकृ—चूरंत; (सुपा २६१ ; ५६०)।
चूर (अप) पुंन [चूर्ण] चूर, भुरभुर ; "जिह गिरिसिंगहु पडिअ सिल, अन्नुवि चूरु करेइ" (हे ४, ३३७)।
चूरिअ वि [चूर्ण, चूर्णित] चूर चूर किया हुआ, टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (भवि)।
चूल° देखो चूला। °मणि न [°मणि] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)।
चूलअ [दे] देखो चूड ; (नाट)।
चूला स्त्री [चूडा] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा ; (पाअ)। २ शिखर, टोंच; "अवि चलइ मेरुचूला" (उप ७२८ टी)। ३ मयूर-शिखा ; ४ कुक्कुट-शिखा ; ५ शेर की केसरा ; ६ कुंत वगैरः का अग्र भाग ; ७ विभूषण, अलंकार ;

"तिविहा य दव्वचूला, सच्चित्ता मीसगा य अच्चित्ता।
कुक्कुड सीह मोरसिहा, चूलामणि अग्गकुंतादी ॥
चूला विभूसणंति य, सिहरंति य होंति एगट्ठा" (निचू१)।

८ अधिक मास ; ९ अधिक वर्ष ; १० ग्रन्थ का परिशिष्ट ; (दसचू १)। °कम्म न [°कर्मन्] संस्कार-विशेष, मुण्डन ; (आवम)। °मणि पुंस्त्री [°मणि] १ सिर का सर्वोत्तम आभूषण-विशेष, मुकुट-रत्न, शिरो-मणि ; (औप ; राय)। २ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ ; "तिलोयचूलामणि नमो ते" (धण १)।
चूलिय पुं [चूलिक] १ अनार्य देश-विशेष ; २ उस देश का निवासी ; (पण्ह १, १)। ३ क्लीन, संख्या विशेष, चूलिकांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २, ४) स्त्री—°या ; (राज)।

(d) $2x - 3y = 0$

चूलियंग न [**चूलिकाङ्ग**] संख्या-विशेष, प्रयुत को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; जीव ३) ।

चूलिया देखो **चूला** ; (सम ६६ ; सुर ३, १२ ; णंदि ; निचू १ ; ठा ४, ४) ।

चूव (अप) देखो **चूअ** ; (भवि) ।

चूह सक [**क्षिप्**] फेंकना, डालना, प्रेरना । चूहइ ; (षड्) ।

चे अ [**चेत्**] यदि, जो ; (उत्त १६) । "एवं च कश्रो तित्थं, न चेइनेजंति को आहो ?" (विसे २५८६) ।

चे देखो **चय**=त्यज् । चेइ ; (आचा) । संकृ—**चेच्चा** ; (कप्प ; औप) ।

चे } देखो **चि** । चेइ, चेअइ, चेए, चेअए ; (षड्) ।
चेअ }

चेअ सक [**चित्**] १ चेतना, सावधान होना, ख्याल रखना । २ सुध आना, स्मरण करना, याद आना । चेयइ ; (स ५३८) । ३ सक. जानना; ४ अनुभव करना । चेयए ; (आवम) ।

चेअ सक [**चेतय्**] १ ऊपर देखो । २ देना, अर्पण करना, वितरण करना । ३ करना, बनाना । "जो अंतरायं चेएइ" (सम ५१) । चेएइ, चेएसि, चेएमि ; (आचा) । वकृ—**चेते[ए]माण** ; (ठा ५, २—पत्र ३१४ ; सम ३६) ।

चेअ अ [**एव**] अवधारण-सूचक अव्यय, निश्चय बताने वाला अव्यय ; (हे २, १८४) ।

चेअ न [**चेतस्**] १ चेत, चेतना, ज्ञान, चैतन्य ; (विसे १६६१ ; भग १६) । २ मन, चित्त, अन्तःकरण ; (दस ५, १ ; ठा ६, २) ।

चेइ पुं [**चेदि**] देश-विशेष, (इक ; सत ६७टी) । °**वइ** पुं [°**पति**] चेदि देश का राजा; (पिंग) ।

चेइ° } पुंन [**चैत्य**] १ चिता पर बनाया हुआ स्मारक,
चेइअ } स्तूप, कबर वगैरः स्मृति चिह्न ; "मडयदाहेसु वा मडयथूभियासु वा मडयचेइएसु वा" (आचा २, २, ३) । २ व्यन्तर का स्थान, व्यन्तरायतन , (भग ; उवा ; राय ; निर १, १ ; विपा १, १; २) । ३ जिन-मन्दिर, जिन-गृह, अर्हन्मन्दिर ; (ठा ४, २—पत्र ४३० ; पंचभा ; पंचा १२ ; महा ; द ४; २७), "पडिमं कासी य चेइए रम्मे" (पव ७६) । ४ इष्ट देव की मूर्ति, अभीष्ट देवता की प्रतिमा ; "कल्लाणं मंगलं चेइयं पज्जुवासामो" (औप ; भग) । ५ अर्हत्प्रतिमा, जिन-देव की मूर्ति ; (ठा ३, १; उवा; पण्ह २, ३ ; आव २ ; पडि), "विइएणं उप्पाएणं नंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ, तहिं चेइयाइं वदइ" (भग २०, ६), "जिणबिंबे मंगल-चेइयंति समयन्नुणो विति" (पव ७६) । ६ उद्यान, बगीचा ; "मिहिलाए चेइए वच्छे सीअच्छाए मणोरमे" (उत्त ६, ६) । ७ सभा-वृक्ष, सभा-गृह के पास का वृक्ष; ८ चबूतरा वाला वृक्ष ; ६ देवों का चिह्न-भूत वृक्ष ; १० वह वृक्ष जहां जिनदेव को केवलज्ञान उत्पन्न होता है ; (ठा ८ ; सम १३; १५६) । ११ वृक्ष, पेड़ ; "वाएण हीरमाणम्मि चेइयम्मि मणोरमे" (उत्त ६, १०) । १२ यज्ञ स्थान ; १३ मनुष्यों का विश्राम स्थान ; (षड् ; हे २, १०७) । °**खंभ** पुं [°**स्तम्भ**] स्तूप, थुभ ; (सम ६३ ; राय ; सुज्ज १८) । °**घर** न [°**गृह**] जिन-मन्दिर, अर्हन्मन्दिर ; (पउम २, १२ ; ६४, २६) । °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] जिन-प्रतिमा-संबन्धी महोत्सव-विशेष; (धर्म ३) । °**थूभ** पुं [°**स्तूप**] जिन-मन्दिर के समीप का स्तूप , (ठा ४, २; ज १) । °**दव्व** न [°**द्रव्य**] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-संबन्धी स्थावर या जंगम मिलकत ; (वव ६ ; पंचभा ; उप ४०७ ; द्र ४) । °**परिवाडी** स्त्री [°**परिपाटी**] क्रम से जिन मन्दिरों की यात्रा ; (धर्म २) । °**मह** पुं [°**मह**] चैत्य-संबन्धी उत्सव; (आचा २, १, २) । °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] १ चबूतरा वाला वृक्ष, जिसके नीचे चौतरा बाँधा हो ऐसा वृक्ष ; २ जिन-देव को जिसके नीचे केवलज्ञान उत्पन्न होता है वह वृक्ष; ३ देवताओं का चिह्न भूत वृक्ष ; ४ देव-सभा के पास का वृक्ष ; (सम १३; १५६ ; ठा ८) । °**वंदण** न [°**वन्दन**] जिन-प्रतिमा की मन, वचन और काया से स्तुति; (पव १; संघ १; ३)। °**वंदणा** स्त्री [°**वन्दना**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (संघ १) । °**वास** पुं [°**वास**] जिन-मन्दिर में यतिओं का निवास ; (दंस) । °**हर** देखो °**घर**; (जीव १ ; पउम ६५, ६२ ; सुपा १३ ; द्र ६५ ; उवर १६०) ।

चेइअ वि [**चेतित**] कृत, विहित ; "तत्थ ३ अगारीहिं अगाराइं चेइआइं भवंति" (आचा २, १, २, २), "चेइअं कुडमेगद्" (बृह २; कस) ।

चेंध देखो **चिंध** ; (प्राप्र) ।

चेच्चा देखो **चे**=त्यज् ।

चेट्ठ अक [**चेष्ट्**] प्रयत्न करना, आचरण करना। वकृ—**चेट्ठमाण** ; (काल)।

चेट्ठ देखो **चिट्ठ**=स्था ; (दे १, १७४)।

चेट्ठण न [**स्थान**] स्थिति, अवस्थान ; (वव ४)।

चेट्ठा स्त्री [**चेष्टा**] प्रयत्न, आचरण; (ठा ३, १ ; सुर २, १०६)।

चेट्ठिय देखो **चिट्ठिय**=चेष्टित ; (औप ; महा)।

चेड पुं [**दे**] बाल, कुमार, शिशु ; (दे ३, १० ; णाया १, २ ; बृह १)।

चेड } **चेडग** } **चेडय** } पुं [**चेट, °क**] १ दास, नौकर ; (औप ; कप्प)। २ नृप-विशेष, वैशालिका नगरी का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा; (आचू १; भग ७, ६; महा)। ३ मैला देवता, देव की एक जघन्य जाति ; (सुपा २१७)।

चेडिआ स्त्री [**चेटिका**] दासी, नौकरानी; (भग ६, ३३ ; कप्पू)।

चेडी स्त्री [**चेटी**] ऊपर देखो ; (आवम)।

चेडी स्त्री [**दे**] कुमारी, वाला, लड़की; (पाअ)।

चेत्त न [**चैत्य**] चैत्य-विशेष ; (षड्)।

चेत्त पुं [**चैत्र**] १ मास-विशेष, चैत मास ; (सम २६ ; हे १, १५२)। २ जैन मुनिओं का एक गच्छ ; (बृह ६)।

चेदि देखो **चेइ** ; (सण)।

चेदीस पुं [**चेदीश**] चेदि देश का राजा ; (सण)।

चेयग वि [**चेतक**] दाता, देने वाला ; (उप ६५७)।

चेयण पुं [**चेतन**] १ आत्मा, जीव, प्राणी , (ठा ४, ४)। २ वि. चेतना वाला, ज्ञान वाला ; " भुवि चेयणं च किमरूवं" (विसे १८४५)।

चेयणा स्त्री [**चेतना**] ज्ञान, चेत, चैतन्य, सुध, ख्याल; (आव ६ ; सुर ४, २४५)।

चेयण्ण } **चेयन्न** } न [**चैतन्य**] ऊपर देखो ; (विसे ४७५ ; सुपा २० ; सुर १४, ८)।

चेयस देखो **चेअ**=चेतस् ;

" ईणादासेण आविट्ठे, कलुसाविलचेयसे।
जे अंतरायं चेएइ, महामोहं पकुव्वइ " (सम ५१)।

चेया देखो **चेयणा** ; " पत्तेयमभावाओ, न रेणुतेल्लं व समुदए चेया " (विसे १६५२)।

चेल } **चेलय** } न [**चेल**] वस्त्र, कपडा ; (आचा ; औप)। **°कण्ण** न [**°कर्ण**] व्यञ्जन-विशेष, एक तरह का पंखा ; (स ५४६)। **°गोल** न [**°गोल**] वस्त्र का गेंद, कन्दुक ; (सूअ १, ४, २)। **°हर** न [**°गृह**] तम्बू, पट-मण्डप, रावटी ; (स ५३७)।

चेलय न [**दे**] तुला-पात्र; " द्विहीतुलाए भुवणं, तुलंति जे चित्तचेलए निहियं " (वज्जा ५६)।

चेलिय देखो **चेल**; " रयणकंचणचेलियवहुधन्नभरभरिया" (पउम ६६, २५ ; आचा)।

चेलुंप न [**दे**] मुशल, मूषल ; (दे ३, ११)।

चेल्ल } **चेल्लअ** } [**दे**] देखो **चिल्ल** (दे) ; (पउम ६७, १३; १६ ; स ४६६ ; दसनि १ , उप २६८)।

चेल्लग } **चेल्लय** } [**दे**] देखो **चिल्लग** ; (पण्ह १, ४—पत्र ६८; ती ३३)।

चेव अ [**एव, चैव**] १ अवधारण-सूचक अव्यय, निश्चय-दर्शक शब्द ; " जो कुणइ परस्स दुहं पावइ तं चेव सो अणंत-गुणं " (प्रासु २६ ; महा) । " अवहारणे चेव-सद्दो यं " (विसे ३५६५)। २ पाद-पूरक अव्यय ; (पउम ८, ८८)।

चेव अ [**इव**] सादृश्य-द्योतक अव्यय ; " पेच्छइ गणहर-वसहं सरयरविं चेव तेएणं" (पउम ३, ४; उत्त १६, ३)।

चो° देखो **चउ** ; (हे १, १७१ ; कुमा ; सम ६० , औप ; भग ; णाया १, १ ; १४); विपा १, १ ; सुर १४, ६७)। **°आला** स्त्री [**°चत्वारिंशत्**] चालीस और चार, ४४ ; (विसे २३०४)। **°वट्ठि** स्त्री [**°षष्टि**] चौसठ, ६४ ; (कप्प)। **°वत्तरि** स्त्री [**°सप्तति**] सतर और चार, ७४ ; (सम ८४)।

चोअ सक [**चोदय्**] १ प्रेरणा करना। २ कहना। चोएइ; (उव ; स १५)। कवकृ—**चोइज्जंत, चोइज्जमाण**; (सुर २, १० ; णाया १, १६)। संकृ—**चोइऊण** ; (महा)।

चोअअ वि [**चोदक**] प्रेरक, प्रश्न-कर्त्ता, पूर्व-पक्षी ; (अणु)।

चोअण न [**चोदन**] प्रेरण, प्रेरणा ; (भत्त ३६ ; उप २८)।

चोइअ वि [**चोदित**] प्रेरित, (स १५ ; सुपा १५० ; औप; महा)।

चोक्क [**दे**] देखो **चुक्क**=(दे) ; (महा)।

(d) $2x - 3y = 0$

चोक्ख वि [दे] चोखा, शुद्ध, शुचि, पवित्र ; (णाया १, १ ; उप १४२ टी ; वृह १ ; भग ६, ३३ ; राय ; औप)।

चोक्खा स्त्री [**चोक्षा**] परिव्राजिका-विशेष, इस नाम की एक संन्यासिनी ; (णाया १, ८)।

चोज्ज न [दे] आश्चर्य, विस्मय ; (दे ३, १४ ; सुर ३, ४ ; सुपा १०३ ; सड्ढि १५६ ; महा)।

चोज्ज न [**चौर्य**] चोरी, चोर-कर्म ; "तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबंभसेवणं " (उत्त ३५, ३ ; णाया १, १८)।

चोज्ज न [**चोद्य**] १ प्रश्न, पृच्छा ; २ आश्चर्य, अद्भुत; ३ वि. प्रेरणा-योग्य ; (गा ४०६)।

चोट्टी स्त्री [दे] चोटी, शिखा ; (दे ३, १)।

चोड्ड न [दे] वृन्त, फल और पत्ती का बन्धन ; (विक्र २८)।

चोड पुं [दे] बिल्व, वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़; (दे ३, १६)।

चोप्पण न [दे] १ कलह, झगड़ा ; (निचू २०)। २ काष्ठानयन आदि जघन्य कर्म ; (सूअ २, २)।

चोत्त } पुंन [दे] प्रतोद, प्राजन-दण्ड; (दे ३, १६; पाअ)।
चोत्तअ }

चोद [दे] देखो **चोय** ; (पण्ह २, ५—पत्त १५०)।

चोदग देखो **चोअअ** ; (ओघ ४ भा)।

चोप्पड सक [म्रक्ष्] स्निग्ध करना, घी-तेल वगैरः लगाना। चोप्पडइ; (हे ४, १९१)। वकृ—**चोप्पडमाण** ; (कुमा)।

चोप्पड न [म्रक्षण] घी, तैल वगैरः स्निग्ध वस्तु ; " णेह-ज्जयस्स जोग्गं किंचिवि कयचोप्पडाईयं " (सुपा ४३०)।

चोप्पाल न [दे] मत्तवारण, वरण्डा; (जं २)।

चोप्फुल्ल वि [दे] स्निग्ध, स्नेह वाला, प्रेम-युक्त; (दे ३, १५)।

चोय } न [दे] त्वचा, छाल; (पण्ह २, ५—पत्त १५० टी)। २ आम वगैरः का रुंछा ; (निचू १५ ; आचा २, १, १०)। ३ गन्ध-द्रव्य विशेष ; (अणु ; जीव १ ; राय)।
चोयग }

चोयग देखो **चोअअ** ; (णंदि)।

चोयणा स्त्री [**चोदना**] प्रेरणा ; (स १५ ; उप ६४८ टी)।

चोर पुं [**चोर**] तस्कर, दूसरे का धन चुराने वाला; (हे ३, १३४ ; पण्ह १, ३)। °**कीड** पुं [°**कीट**] विष्ठा में उत्पन्न होता कीट ; (जी १७)।

चोरंकार पुं [**चौर्यकार**] चोर, तस्कर ; " चोरंकारकरं जं थूलमदत्तं तयं वज्जे " (सुपा ३३४)।

चोरग वि [**चोरक**] १ चुराने वाला। २ पुंन. वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।

चोरण न [**चोरण**] १ चोरी, चुराना ; (सुर ८, १२२)। २ वि. चोर, चोरी करने वाला ; (भवि)।

चोरली स्त्री [दे] श्रावण मास की कृष्ण चतुर्दशी ; (दे ३, १६)।

चोराग पुं [**चोराक**] संनिवेश-विशेष, इस नाम का एक छोटा गाँव ; (आवम)।

चोरासी } देखो **चउरासी** ; (पि ४३९ ; ४४६)।
चोरासीइ }

चोरिअ न [**चौर्य**] चोरी, अपहरण; (हे २, १०७ ; ठा १, १ ; प्रासू ६५ ; सुपा ३७६)।

चोरिअ वि [**चौरिक**] १ चोरी करने वाला ; (पव ४१)। २ पुं. चर, जासूस ; (पण्ह १, १)।

चोरिअ वि [**चोरित**] चुराया हुआ ; (विसे ८५७)।

चोरिआ स्त्री [**चौर्य,चौरिका**] चोरी, अपहरण; (गा २०६; षड् ; हे १, ३५ ; सुर ६, १७८)।

चोरिक्क न [**चौरिक्य**] ऊपर देखो ; (पण्ह १, ३)।

चोरी स्त्री [**चौरी**] चोरी, अपहरण ; (श्रा २७)।

चोल वि [दे] १ वामन, कुब्ज ; (दे ३, १८)। २ पुं. पुरुष-चिह्न, लिङ्ग ; (पव ६१)। ३ न. गन्ध-द्रव्य विशेष ; मञ्जिष्ठा ; (उर ६, ४)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] जैन मुनि का कटी-वस्त्र ; (ओघ ३४)। °**य** पुं [°**ज**] मजीठ का रंग ; (उर ६, ४)।

चोल पुं [**चोल**] देश-विशेष, द्रविड़ और कलिङ्ग के बीच का देश ; (पिंग ; सण)।

चोलअ न [दे] कवच, वर्म ; (नाट)।

चोलअ } न [**चौल, °क**] संस्कार-विशेष, मुण्डन; "विहिणा
चोलग } चूलाकम्मं बालाणं चोलयं नाम " (आवम ; पण्ह १, २)।

चोलुक्क देखो **चालुक्क** ; (ती ५)।

चोलोयणग } न [**चूलापनयन**] १ चूलोपनयन, संस्कार-विशेष, मुण्डन; (णाया १, १—पत्र ३८)। २ शिखा-धारण, चूडा-धारण; (भग ११, ११—पत्त ५४४ ; औप)।
चोलोवणय }
चोलोवणयण }

चोल्लक [दे] देखो **चोलग** ; (पण्ह २, ४)।

चोल्लक } पुंन [**दे**] १ भोजन ; (उप पृ १२ ; आवम;
चोल्लग } उत्त ३) । २ वि. क्षुद्रक, छोटा, लघु ; (उप पृ ३१) ।
चोल्लय पुंन [**दे**] थैला, बोरा, गोन ; " परं मम समक्खं तोलेह चोल्लए "राइणा उक्केल्लाविआइं चोल्लयाइं" (महा)।
चोव्वड देखो **चोप्पड**=म्रक्ष् । चोव्वडइ; (षड्) ।
च्च अ [**एव**] अवधारण-सूचक अव्यय ; (हे २, १८४; कुमा ; षड्) ।
च्चिअ देखो **चिअ**=एव ; (हे २, १८४ ; कुमा) ।
च्चेअ } देखो **चेव**=एव; (पि ६२ ; जी ३२) ।
च्चेव }

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि चयाराइसद्दसकलणो चउद्दसमो तरंगो समत्तो।

छ

छ पुं [**छ**] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप, प्रामा) । २ आच्छादन, ढ़कना ; " छ ति य दोसाण छायणे होइ" (आवम) ।
छ त्रि. ब. [**षष्**] संख्या-विशेष; छह, "छ छंडिआओ जिण-सासणम्मि" (श्रा ६; जी ३२; भग १, ८)। °**उत्तरसय** वि [°**उत्तरशततम**] एक सौ और छठवाँ ; (पउम १०६, ४६) । °**क्कम्म** न [°**कर्मन्**] छः प्रकार के कर्म, जा ब्राह्मणों के कर्त्तव्य हैं, यथा—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह ; (निचू १३) । °**क्काय** न [°**काय**] छः प्रकार के जीव, पृथिवी, अग्नि, पानी, वायु, वनस्पति और त्रस जीव ; (श्रा ७ ; पचा १५) । °**गुण**, °**ग्गुण** वि [°**गुण**] छगुना ; (ठा ६ ; पि २७०) । °**च्चरण** पुं [°**चरण**] भ्रमर, भमरा; (कुमा) । °**ज्जीव-निकाय** पुं [°**जीवनिकाय**] देखो °**क्काय**; (आचा) । °**णउइ**, °**णवइ** स्त्री [°**णवति**] संख्या-विशेष, छानवे, ६६ ; (सम ६८; अजि १०) । °**त्तीस** स्त्रीन [°**त्रिंशत्**] संख्या-विशेष, छत्तीस, ३६ ; (कप्प) । °**त्तीसइम** वि [°**त्रिंशत्तम**] छत्तीसवाँ; (पउम ३६, ४३; पगण ३६) । °**द्दस** त्रि. ब. [**षोडशन्**] षोडश, सोलह । °**द्दसहा** अ [**षोडशधा**] सोलह प्रकार का ; (वव ४) । °**द्दिसि** न [°**दिश्**] छः दिशाएं—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा ; (भग) । °**द्धा** अ [°**धा**] छह प्रकार का; (कम्म १, ३८) । °**नवइ**, °**नुवइ**, °**न्नउइ** देखो °**णउइ**, (कम्म ३, ४ ; १२ ; सम ७०)। °**न्नउय** वि [°**णवत**] छानहवाँ, ६६ वाँ ; (पउम ६६, ५०) । °**प्पण्ण**, **प्पन्न** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] छप्पन, ५६ ; (राज ; सम ७३) । °**प्पन्न** वि [°**पञ्चाश**] छप्पनवाँ ; (पउम ५६, ४८) । °**ब्भाय** पुं [°**भाग**] छठवाँ हिस्सा ; (पि २७०) । °**ब्भासा** स्त्री [°**भाषा**] प्राकृत, संस्कृत, मागधी, शौरसेनी, पैशाचिका और अपभ्रंश ये छः भाषाएं ; (रंभा) । °**मासिय**, °**म्मासिय** वि [**षाण्मासिक**] छह मास में होने वाला, छह मास संवन्धी ; (सम २१ ; औप) । °**वरिस** वि [°**वार्षिक**] छह वर्ष की उम्र वाला; (सार्ध २६) । °**वीस** देखो °**व्वीस**; (पिंग) । °**व्विह** वि [°**विध**] छह प्रकार का ; (कस ; नव ३)। °**व्वीस** स्त्रीन [°**विंशति**] छव्वीस, वीस और छह ; (सम ४५)। °**व्वीसइम** वि [°**विंशतितम**] १ छव्वीसवाँ, २६ वाँ; (पउम २६, १०३)। २ लगातार वारह दिनों का उपवास ; (णाया १, १) । °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] संख्या-विशेष, साठ और छह ; (कम्म २, १८)। °**स्सयरि** स्त्री [°**सप्तति**] छिहत्तर; (कम्म २, १७) । °**हा** देखो °**द्धा** ; (कम्म १, ५ ; ८) ।
छइ देखो **छवि**=छवि ; (वा १२) ।
छइअ वि [**स्थगित**] आवृत, आच्छादित, तिरोहित; (हे २, १७ ; षड्) ।
छइल } वि [**दे**] विदग्ध, चतुर, हुशियार ; (पिंग ; दे ३,
छइल्ल } २४ ; गा ७२० ; वज्जा ४ ; पाअ ; कुमा) ।
छउअ वि [**दे**] तनु, कृश, पतला ; (दे ३, २५) ।
छउम पुंन [**छद्मन्**] १ कपट, शठता, माया ; (सम १ ; षड्) । २ छल, वहाना ; (हे २, ११२ ; षड्) । ३ आवरण, आच्छादन; (सम १ ; ठा २, १) ।
छउमत्थ वि [**छद्मस्थ**] १ अ-सर्वज्ञ, संपूर्ण ज्ञान से वञ्चित ; २ राग-सहित, सराग ; (ठा ४, १ ; ६ ; ७) ।
छउलूअ देखो **छलूअ** ; (राज ; विसे २५०८) ।
छंकुई स्त्री [**दे**] कपिकच्छू, वृत्त-विशेष, केवाँच ; (दे ३, २४) ।

$y = 0$

(d) $2x - 3y = 0$

छंट पु [**दे**] छीटा, जल का छीटा, जल-च्छटा; २ वि. शीघ्र, जल्दी करने वाला; (दे ३, ३३)।

छंट सक [**सिच्**] सींचना। छंटसु ; (सुपा २६८)।

छंटण न [**सेचन**] सिंचन, सिंचना; (सुपा १२६ ; कुमा)।

छंटा स्त्री [**दे**] देखो **छंट** ; (पात्र)।

छंटिअ वि [**सिक्त**] सींचा हुआ ; (सुपा १३८)।

छंड देखो **छड्ड=मुच्**। छंडइ ; (आरा ३२ ; भवि)।

छंडिअ वि [**दे**] छन्न, गुप्त ; (षड्)।

छंडिअ वि [**मुक्त**] परित्यक्त, छोडा हुआ ; (आरा ; भवि)।

छंद सक [**छन्दय्**] १ चाहना, वाञ्छना। २ अनुज्ञा देना, संमति देना। ३ निमन्त्रण देना। कवकृ—

" अंतेउरपुरबलवाहणेहि वरसिरिघरेहि मुणिवसभा।
कामेहि बहुविहेहि य **छंदिज्जंतावि** नेच्छंति " (उव)।

संकृ—**छंदिअ** ; (दस १०)।

छंद पुन [**छन्द**] १ इच्छा, मरजी, अभिलाषा ; (आचा ; गा २०२; स २३६, उव; प्रासू ११)। २ अभिप्राय, आशय; (आचा; भग)। ३ वशता, अधीनता; (उत्त ४; हे १, ३३)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] स्वच्छन्दी, स्वैरी, (उप ७६८ टी)। °**इत्त** वि [°**वत्**] स्वैरी ; (भवि)। °**णुवत्तण** न [°**ानुवर्त्तन**] मरजी के अनुसार बरतना ; (प्रासू १४)। °**णुवत्तय** वि [°**ानुवर्त्तक**] मरजी का अनुसरण करने वाला; (णाया १, ३)।

छंद पुन [**छन्दस्**] १ स्वच्छन्दता, स्वैरिता ; (उत्त ४)। २ अभिलाष, इच्छा, ३ आशय, अभिप्राय ; (सूअ १, २, २ ; आचा ; हे १,३३)। ४ छन्दः-शास्त्र ; (सुपा २८७ ; औप)। ५ वृत्त, छन्द ; (वज्जा ४)। °**ण्णुय** वि [°**ज्ञ**] छन्द का जानकार ; (गउड)।

छंदण न [**वन्दन**] वन्दन, प्रणाम, नमस्कार; (गुभा ४)।

छंदणा स्त्री [**छन्दना**] १ निमन्त्रण ; (पंचा १२)। २ प्रार्थना ; (बृह १)।

छंदा स्त्री [**छन्दा**] दीक्षा का एक भेद, अपने या दूसरे के अभिप्राय-विशेष से लिया हुआ संन्यास ; (ठा ३, २ ; पंचभा)।

छंदिअ वि [**छन्दित**] अनुज्ञात, अनुमत ; (ओघ ३८०)। २ निमन्त्रित ; (निचू २)।

°**छंदो**° देखो **छंद=छन्दस्** ; (आचा ; अभि १२६)।

छक्क वि [**षट्क**] छक्का, छः का समूह; " अंतररिउछक्का-अक्कंता " (सुपा ५१६ ; सम ३५)।

छग देखो **छ=षष्** ; (कम्म ४)।

छग न [**दे**] पुरीष, विष्ठा ; (पण्ह १, ३—पत्र ५४; ओघ ७२)।

छगण न [**दे**] गोमय, गोबर ; (उप ५६७ टी , पंचा १३; निचू १२)।

छगणिया स्त्री [**दे**] गोइंठा, कंडा ; (अनु ५)।

छगल पुस्त्री [**छगल**] छाग, अज ; (पण्ह १, १ ; औप)। स्त्री—°**ली** ; (दे २, ८४)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (ठा १०)।

छग्ग देखो **छक्क** ; (दं ११)।

छग्गुरु पुं [**षड्गुरु**] १ एक सौ और अस्सी दिनों का उपवास ; २ तीन दिनों का उपवास ; (ठा ३, १)।

छच्छुंदर पुंन [**दे**] छुछुन्दर, मूसे की एक जाति; (सं १६)।

छज्ज अक [**राज्**] शोभना, चमकना। छज्जइ; (हे ४,१००)।

छज्जिअ वि [**राजित**] शोभित, अलंकृत ; (कुमा)।

छज्जिआ स्त्री [**दे**] पुष्प-पात्र, चगेरी ; (स ३३४)।

छट्टा [**दे**] देखो **छंटा** ; (षड्)।

छट्ठ वि [**षष्ठ**] १ छठवाँ ; (सम १०४ ; हे १, २६५)। २ न. लगातार दो दिनों का उपवास ; (सुर ४, ५५)। °**क्खमण** न [°**क्षमण, °क्षपण**] लगातार दो दिनों का उपवास ; (अंत ६ ; उप पृ ३४३)। °**क्खमय** पुं [°**क्षमक, °क्षपक**] दो दो दिनों का बराबर उपवास करने वाला तपस्वी ; (उप ६२२)। °**भत्त** न [°**भक्त**] लगातार दो दिनों का उपवास ; (धर्म ३)। °**भत्तिय** वि [°**भक्तिक**] लगातार दो दिनों का उपवास करने वाला ; (पण्ह १,१)।

छट्ठी स्त्री [**षष्ठी**] १ तिथि-विशेष ; (सम २९)। २ विभक्ति-विशेष, संबन्ध-विभक्ति ; (णंदि ; हे १, २६५)। ३ जन्म के बाद किया जाता उत्सव-विशेष ; (सुपा ५७८)।

छड सक [**आ+रुह्**] आरूढ होना, चढना। छडइ ; (षड्)।

छडक्खर पुं [**दे**] स्कन्द, कार्त्तिकेय ; (दे ३, २६)।

छडछडा स्त्री [**छटच्छटा**] सूर्य वगैरः से अन्न को झाडते समय होता एक प्रकार का अव्यक्त आवाज; (णाया १, ७—पत्र ११६)।

छडा स्त्री [**दे**] विद्युत, बिजली ; (दे ३, ३४)।

छडा स्त्री [**छटा**] १ समूह, परम्परा ; (सुर ४, २४३ ; सा १२) । २ छींटा, पानी का बुंद ; (पाअ) ।

छडाल वि [**छटावत्**] छटा वाला ; (पउम ३५,१८) ।

छड्ड सक [**छर्दय्, मुच्**] १ वमन करना । २ छोड़ना, त्याग करना । ३ डालना, गिराना । छड्डइ ; (है २, ३६ ; ४, ९१ ; महा ; उव) । कर्म—छड्डिज्जइ ; (पि २९१) । वकृ—छड्डंत ; (भग) । संकृ—छड्डेउं "भमीए खोरं जह पियइ दुट्ठमज्जारी" (विस १४७१), छड्डित्तु ; (वव २) ।

छड्डण न [**छर्दन, मोचन**] १ परित्याग, विमोचन ; (उप १७९ ; संथ ८९) । २ वमन, वान्ति ; (विपा १, ८) ।

छड्डवण न [**छर्दन, मोचन**] १ छुड़वाना, मुक्त करवाना । २ वमन कराना । ३ वमन कराने वाला ; ४ छुडाने वाला ; (कुमा) ।

छड्डुय वि [**छर्दक, मोचक**] त्याग कराने वाला, त्याजक; (दे २, ६२) ।

छड्डावण देखो **छड्डवण** ; (सुपा ५१७) ।

छड्डाविय वि [**छर्दित, मोचित**] १ वमन कराया हुआ ; २ छुड़वाया हुआ ; (आवम; बृह १) ।

छड्डि स्त्री [**छर्दि**] वमन का रोग ; (पड् , हे २, ३६) ।

छड्डि स्त्री [**छर्दिस्**] छिद्र, दूषण ; 'जा जग्गइ परछड्डि, सा नियछड्डीए किं सुयइ' (महा) ।

छड्डिय } वि [**छर्दित, मुक्त**] १ वान्त, वमन **छड्डियल्लिय** } किया हुआ । २ त्यक्त, मुक्त ; (विस २६०६ ; दे १, ४६ ; औप) ।

छण सक [**क्षण्**] हिंसा करना । छणे; (आचा) । प्रयो—छणावेइ ; (पि ३१८) ।

छण पुं [**क्षण**] १ उत्सव, मह ; (हे २, २०) । २ हिंसा ; (आचा) । °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा ; (गउ ३७१) । °**ससि** पुं [°**शशिन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सुपा ३०६) ।

छणण न [**क्षणन**] हिनन, हिंसा ; (आचा) ।

छणिंदु पुं [**क्षणेन्दु**] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्र ; (सुपा ३२ ; ४०४) ।

छण्ण वि [**छन्न**] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ ; (बृह १ ; औप) । २ आच्छादित, ढका हुआ ; (गा ५८०) । ३ न, माया, कपट; (सूअ १, २, २) । ४ निर्जन, विजन, रहस् ; ५ क्रिवि. गुप्त रीति से, प्रच्छन्न रूप से ;

"जं छण्णं आयरियं, तइया जणणीए जोव्वणमएण ।
तं पडिव(? यडि)ज्जइ इण्हिं सुएहिं सीलं चयंतेहिं"
(उप ७२८ टी) ।

छण्णालय न [**दे.षण्णालक**] त्रिकाष्ठिक, तिपाई, संन्यासीओं का एक उपकरण ; (भग ; औप ; णाया १, ५) ।

छत्त न [**छत्र**] छाता, आतपत्र ; (णाया १, ५ ; प्रासू ५२) । °**धार** पुं [°**धार**] छाता धारण करने वाला नौकर ; (जीव ३) । °**पडागा** स्त्री [°**पताका**] १ छत्र-युक्त ध्वज ; २ छत्र के ऊपर की पताका ; (औप) । °**पलासय** न [°**पलाशक**] कृतमंगला नगरी का एक चैत्य ; (भग)। °**भंग** पुं [°**भङ्ग**] राज-नाश, नृप-मरण ; (राज) । °**हार** देखो °**धार** ; (आवम) । °**ाइच्छत्त** न [°**ातिच्छत्र**] १ छत्र के ऊपर का छाता ; (सम १३७) । २ पुं. ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध योग-विशेष ; (सुज्ज १२) ।

छत्त पुं [**छात्र**] विद्यार्थी, अभ्यासी ; (उप पृ ३३१; १६९ टी)।

छत्तंतिया स्त्री [**छत्रान्तिका**] परिषद्-विशेष, सभा-विशेष ; (बृह १) ।

छत्तच्छय (अप) पुं [**सप्तच्छद**] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन ; (सण) ।

छत्तधन्न न [**दे**] घास, तृण ; (पाअ) ।

छत्तवण्ण देखो **छत्तिवण्ण** ; (प्राप्र) ।

छत्ता स्त्री [**छत्रा**] नगरी-विशेष ; (आवम) ।

छत्तार पुं [**छत्रकार**] छाता बनाने वाला कारीगर ; (पण्ण १)।

छत्ताह पुं [**छत्राभ**] वृक्ष-विशेष ; "णग्गाहसत्तिवण्णे, साले पियए पियंगुछत्ताहे" (सम १५२) ।

छत्ति वि [**छत्रिन्**] छत्र-युक्त, छाता वाला ; (भास ३३)।

छत्तिवण्ण पुं [**सप्तपर्ण**] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन ; (हे १, २६५ ; कुमा) ।

छत्तोय पुं [**छत्रौक**] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३५) ।

छत्तोव पुं [**छत्रोप**] वृक्ष-विशेष ; (औप ; अत) ।

छत्तोह पुं [**छत्रौघ**] वृक्ष-विशेष ; (औप ; पण्ण १—पत्र ३१ ; भग) ।

छद्दवण देखो **छड्डवण** ; (राज) ।

छद्दी स्त्री [**दे**] शय्या, बिछौना ; (दे ३, २४) ।

छन्न देखो **छण्ण** ; (कप्प ; उप ६४८ टी ; प्रासू ८२) ।

छप्पइगिल्ल वि [षट्पदिकावत्] यूका-युक्त, यूका वाला; (बृह ३)।
छप्पइया स्त्री [षट्पदिका] यूका, जू; (ओघ ७२४)।
छप्पंती स्त्री [दे] नियम-विशेष, जिसमें पद्य लिखा जाता है; (दे ३, २५)।
छप्पण्ण } वि [दे. षट्प्रज्ञक] विदग्ध, चतुर, चालाक;
छप्पण्णय } (दे ३, २४; पात्र; वज्जा ५८)।
छप्पत्तिआ स्त्री [दे] १ चपत, थप्पड़, तमाचा; २ चपाती, रोटी, फुलका:
"छप्पत्तिआवि खज्जइ, निप्पत्ते पुत्ति ! एत्थ को देसो ?।
निग्रपुरिसंवि रमिज्जइ, परपुरिसविवज्जिए गामे"
(गा ८८७)।
छप्पन्न [दे] देखो छप्पण्ण; (जय ६)।
छप्पय पु [षट्पद] १ भ्रमर, भमरा; (हे १, २६५; जीव ३)। २ वि. छः स्थान वाला; ३ छः प्रकार का; (विसे २८६१)। ४ न. छन्द-विशेष; (पिंग)।
छब्बय न [दे] वंश-पिटक, घी वगैरः को छानने का उपकरण विशेष; "मुइंगाईमक्कोडएहिं संसत्तगं च नाऊणं। गालेज्ज छब्बएणं" (ओघ ५५८)।
छब्भामरी स्त्री [षड्भ्रामरी] एक प्रकार की वीणा; (गाया १, १७—पत्र २२६)।
छमच्छम अक [छमच्छमाय्] 'छम् छम्' आवाज करना, गरम चीज पर दिया जाता पानी का आवाज। छमच्छमइ; (वज्जा ८८)।
छमा° देखो छमा। °रुह पुं [°रुह] वृक्ष, पेड, दरख्त; (कुमा)।
छमच्छय पुं [दे] सप्तच्छद, वृक्ष-विशेष, सतौना; (दे ३, २५)।
छमा स्त्री [क्षमा, क्ष्मा] पृथिवी, धरिणी, भूमि; (हे २, १८)। °हर पुं [°धर] पर्वत, पहाड़; (षड्)। देखो छम°।
छमी स्त्री [शमी] वृक्ष-विशेष, अग्नि-गर्भ वृक्ष; (हे १, २६५)।
छम्म देखो छउम; (हे २, ११२; षड्; पउम ४०, ५; सण)।
छम्मुह पुं [षण्मुख] १ स्कन्द, कार्तिकेय; (हे १, २६५)। २ भगवान् विमलनाथ का अधिष्ठायक देव; (संति ८)।
छय न [छद] १ पर्ण, पत्ती, पत्र; (औप)। २ आवरण, आच्छादन; (से ६, ४७)।
छय न [क्षत] १ व्रण, घाव; (हे २, १७)। २ पीड़ित, मर्दित; (सूअ १, २, २)।

छयल्ल [दे] देखो छइल्ल; (रंभा)।
छरु पुं [त्सरु] खड्ग-मुष्टि, तलवार का हाथा; (पण्ह १, ४)। °प्पवाय न [°प्रवाद] खड्ग-शिक्षा-शास्त्र; (जं २)।
छल सक [छलय्] ठगना, वञ्चना। छलिज्जेज्जा; (स २१३)। संकृ—छलिउं, छलिऊण; (महा)। कृ—छलिअव्व; (श्रा १४)।
छल न [छल] १ कपट, माया; (उव)। २ व्याज, बहाना; (पात्र; प्रासू ११४)। ३ अर्थ-विघात, वचन-विघात, एक तरह का वचन-युद्ध; (सूअ १, १२)। °ाययण न [°ायतन] छल, वचन-विघात; (सूअ १, १२)।
छलंस वि [षडस्र] षट्-कोण, छह कोण वाला; (ठा ८)।
छलण न [छलन] ठगाई, वञ्चना; (सुर ६, १८१)।
छलणा स्त्री [छलना] १ ठगाई, वञ्चना; (ओघ ७८५; उप ७७६)। २ छल, माया, कपट; (विसे २५४५)।
छलत्थ वि [षडर्थ] छह अर्थ वाला; (विसे ६०१)।
छलसीअ स्त्रीन [षडशीति] संख्या-विशेष, अस्सी और छह, ८६; (भग)।
छलसीइ स्त्री. ऊपर देखो; (सम ६२)।
छलिअ वि [छलित] १ वञ्चित, विप्रतारित, ठगा हुआ; (भवि; महा)। २ शृङ्गार-काव्य; ३ चोर का इसारा, तस्कर-संज्ञा; (राज)।
छलिअ वि [दे] विदग्ध, चालाक, चतुर; (दे ३, २४; पात्र)।
छलिअ न [छलिक] नाट्य-विशेष; (मा ४)।
छलिअ वि [स्खलित] स्खलना-प्राप्त; (ओघ ७८६)।
छलिया देखो छालिया; "चीणाकूरं छलियातक्केण दिन्नं" (महा)।
छलुअ } पुं [षडुलूक] वैशेषिक मत-प्रवर्तक कणाद ऋषि;
छलुग } (कप्प; ठा ७; विसे २३०२); "दव्वाइछ-
छलूअ } प्पयत्थोवएसणाओ छलूउत्ति" (विसे २५०८; २४५५)।
छल्ली स्त्री [दे] त्वचा, वल्कल, छाल; (दे ३, २४; जी १३; गा ११५; ठा ४, १; णाया १, १३)।
छल्लुय देखो छलुअ; (पि १४८)।
छव देखो छिव। छवेमि; (सुपा ५७३)।
छवडी स्त्री [दे] चर्म, चाम, चमड़ा; (दे ३, २५)।

(महा) । °पिय पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक मुख्य उपासक ; (उवा) ।

चुलसी स्त्री [चतुरशीति] चौराती, अस्सी और चार, ८४ ; (महा ; जी ४७) । "चुलसीए नागकुमारावाससयसहस्सेसु" (भग) ।

चुलसीइ देखो **चुलसी** ; (पउम २०, १०२ ; जं २) ।

चुलिआला स्त्री [चुलियाला] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

चुलुअ पुंन [चुलुक] चुल्लु, पसर, एक हाथ का संपुटाकार ; (दे ३, १८ ; सुपा २१६ ; प्रासू ५७) ।

चुलुचुल अक [स्पन्द्] फरकना, थोड़ा हिलना । चुलुचुलइ ; (हे ४, १२७) ।

चुलुचुलिअ वि [स्पन्दित] १ फरका हुआ, कुछ हिला हुआ ; २ न. स्फुरण, स्पन्दन ; (पाअ) ।

चुलुप्प पुं [दे] छाग, अज, वकरा ; (दे ३, १६) ।

चुल्ल पुं [दे] १ शिशु, वालक ; २ दास, नौकर ; (दे ३, २२) । ३ वि. छोटा लघु ; (ठा २, ३) । °ताय पुं [°तात] पिता का छोटा भाई, चाचा ; (पि ३२५) । °पिउ पुं [°पितृ] चाचा, पिता का छोटा भाई ; (विपा १, ३) । °माउया स्त्री [°मातृ] १ छोटी माँ, माता की छोटी सपत्नी, विमाता-विशेष ; (उप २६४ टी ; णाया १, १ ; विपा १, ३) । २ चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री ; (विपा १, ३ —पत्र ४०) । °सयग, °सयय पुं [°शतक] भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासकों में से एक ; (उवा) । °हिमवंत पुं [°हिमवत्] छोटा हिमवान् पर्वत, पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम १२ ; इक) । °हिमवंतकूड न [°हिमवत्कूट] १ क्षुद्र हिमवान् पर्वत का शिखर-विशेष; २ पुं. उसका अधिपति देव-विशेष; (जं४) । °हिमवंतगिरिकुमार पुं [°हिमवद्गिरिकुमार] देव-विशेष, जो क्षुद्र हिमवत्कूट का अधिष्ठायक है ; (जं ४) ।

चुल्लग [दे] देखो **चोल्लक** ; (भाक) ।

चुल्लि) स्त्री [चुल्लि, °ल्ली] चूल्हा, जिसमें आग रख कर
चुल्ली) रसोई की जाती है वह; (दे १,८७; सुर २,१०३)।

चुल्ली स्त्री [दे] शिला, पाषाण-खण्ड ; (दे ३, १५) ।

चुल्लोडय पुं [दे] बड़ा भाई; (दे ३, १७) ।

चूअ पुं [दे] स्तन-शिखा, थन का अग्र भाग ; (दे३,१८) ।

चूअ पुं [चूत] १ वृक्ष-विशेष, आम्र, आम का गाछ ; (गउड ; भग; सुर ३, ४८) । २ देव-विशेष ; (जीव ३) । °वडिंसग न [°ावतंसक] विमान का अवतंस-विशेष ; (राय) । °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; जीव ३) ।

चूआ स्त्री [चूता] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; ठा ४, २) ।

चूड पुं [दे] चूड़ा, बाहु-भूषण, वलयावली ; (दे ३, १८ ; ७, ५२ ; ५६ ; पाअ) ।

चूडा देखो **चूला**; (सुर २, २४२ ; गउड ; णाया १,१ ; सुपा १०४) ।

चूडुल्लअ (अप) देखो **चूड** ; (हे ४, ३६५) ।

चूर सक [चूरय्, चूर्णय्] खण्ड करना, तोड़ना, टुकड़े टुकड़ा करना । चूरेमि ; (धम्म ६ टी) । भवि—चूरइस्सं ; (पि ५२८) । वकृ—चूरंत; (सुपा २६१ ; ५६०) ।

चूर (अप) पुंन [चूर्ण] चूर, भुरभुर ; "जिह गिरिसिंगहु पडिअ सिल, अन्नुवि चूरु करेइ" (हे ४, ३३७) ।

चूरिअ वि [चूर्ण, चूर्णित] चूर चूर किया हुआ, टुकड़े टुकड़ा किया हुआ ; (भवि) ।

चूल° देखो **चूला** । °मणि न [°मणि] विद्याधरों का एक नगर ; (इक) ।

चूलअ [दे] देखो **चूड** ; (नाट) ।

चूला स्त्री [चूडा] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा ; (पाअ) । २ शिखर, टोंच; "अवि चलइ मेरुचूला" (उप ७२८ टी) । ३ मयूर-शिखा ; ४ कुक्कुट-शिखा ; ५ शेर की केसरा ; ६ कुंत वगैरः का अग्र भाग ; ७ विभूषण, अलंकार ;

> "तिविहा य दव्वचूला, सच्चित्ता मीसगा य अच्चित्ता ।
> कुक्कुड सीह मोरसिहा, चूलामणि अग्गकुंतादी ॥
> चूला विभूसणंति य, सिहरंति य होंति एगट्ठा" (निचू१) ।

८ अधिक मास ; ६ अधिक वर्ष ; १० ग्रन्थ का परिशिष्ट ; (दसचू १) । °कम्म न [°कर्मन्] संस्कार-विशेष, मुण्डन ; (आवम) । °मणि पुंस्त्री [°मणि] १ सिर का सर्वोत्तम आभूषण-विशेष, मुकुट-रत्न, शिरो-मणि ; (औप ; राय) । २ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ ; "तिलोयचूलामणि नमो ते" ([illegible]

[illegible] लिक] १ अनार्य देश-विशेष ; [illegible] पण्ह १, १) । २ स्त्रीन [illegible] लाख से गुणने पर [illegible] ठा २, ४) स्त्री—

चोक्ख वि [दे] चोखा, शुद्ध, शुचि, पवित्र ; (णाया १, १ ; उप १४२ टी ; बृह १ ; भग ६, ३३ ; राय ; औप)।
चोक्खा स्त्री [**चोक्षा**] परिव्राजिका-विशेष, इस नाम की एक संन्यासिनी ; (णाया १, ८)।
चोज्ज न [दे] आश्चर्य, विस्मय ; (दे ३, १४ ; सुर ३, ४ ; सुपा १०३ ; सड्ढि १५६ ; गहा)।
चोज्ज न [**चौर्य**] चोरी, चोर-कर्म ; "तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अवभसेवणं " (उत्त ३५, ३ ; णाया १, १८)।
चोज्ज न [**चोद्य**] १ प्रश्न, पृच्छा ; २ आश्चर्य, अद्भुत; ३ वि. प्रेरणा-योग्य ; (गा ४०६)।
चोट्टी स्त्री [दे] चोटी, शिखा ; (दे ३, १)।
चोड्ड न [दे] वृन्त, फल और पत्ती का बन्धन ; (विक २८)।
चोढ पुं [दे] बिल्व, वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़ ; (दे ३, १६)।
चोप्पण न [दे] १ कलह, झगड़ा ; (निचू २०)। २ काष्ठानयन आदि जघन्य कर्म ; (सूअ २, २)।
चोय } पुंन [दे] प्रतोद, प्राजन-दण्ड; (दे ३, १६; पात्र)।
चोयअ }
चोद [दे] देखो **चोय** ; (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।
चोदग देखो **चोअअ** ; (ओघ ४ भा)।
चोप्पड सक [**म्रक्ष्**] स्निग्ध करना, घी-तेल वगैरः लगाना। चोप्पडइ, (हे ४, १९१)। वकृ—**चोप्पडमाण** ; (कुमा)।
चोप्पड न [**म्रक्षण**] घी, तैल वगैरः स्निग्ध वस्तु ; " गेह-व्वयस्स जोग्गं किंचिवि पत्थचोप्पडाईयं " (सुपा ४३०)।
चोप्पाल न [दे] मत्तवारण, वरण्डा; (जं २)।
चोप्पुच्छ वि [दे] स्निग्ध, स्नेह वाला, प्रेम-युक्त; (दे ३, १५)।
चोय } न [दे] त्वचा, छाल; (पण्ह २, ५—पत्र १५० टी)। २ आम वगैरः का छूंछा ; (निचू १५ ; आचा २, १, १०)। ३ गन्ध-द्रव्य विशेष ; (अणु ; जीव १ ; राय)।
चोयग }
चोयग देखो **चोअअ** ; (णंदि)।
चोयणा स्त्री [**चोदना**] प्रेरणा ; (स १५ ; उप ६४८ टी)।
चोर पुं [**चोर**] तस्कर, दूसरे का धन चुराने वाला; (हे ३, १३४ ; पण्ह १, ३)। °**कीड** पुं [°**कीट**] विष्ठा में उत्पन्न होता कीट ; (जी १७)।
चोरंकार पुं [**चौर्यकार**] चोर, तस्कर ; " चोरंकारकरं जं थूलमदत्तं तयं वज्जे " (सुपा ३३४)।
चोरग वि [**चोरक**] १ चुराने वाला। २ पुंन. वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।
चोरण न [**चोरण**] १ चोरी, चुराना ; (सुर ८, १२२)। २ वि. चोर, चोरी करने वाला ; (भवि)।
चोरली स्त्री [दे] श्रावण मास की कृष्ण चतुर्दशी ; (दे ३, १६)।
चोराग पुं [**चोराक**] संनिवेश-विशेष, इस नाम का एक छोटा गाँव ; (आवम)।
चोरासी } देखो **चउरासी** ; (पि ४३६ ; ४४६)।
चोरासीइ }
चोरिअ न [**चौर्य**] चोरी, अपहरण; (हे २, १०७ ; ठा १, १ ; प्रासू ६५ ; सुपा ३७६)।
चोरिअ वि [**चौरिक**] १ चोरी करने वाला ; (पव ४१)। २ पुं. चर, जासूस ; (पण्ह १, १)।
चोरिअ वि [**चोरित**] चुराया हुआ ; (विसे ८५७)।
चोरिआ स्त्री [**चौर्य,चौरिका**] चोरी, अपहरण; (गा २०६; षड् ; हे १, ३५ ; सुर ६, १७८)।
चोरिक्क न [**चौरिक्य**] ऊपर देखो ; (पण्ह १, ३)।
चोरी स्त्री [**चौरी**] चोरी, अपहरण ; (श्रा २७)।
चोल वि [दे] १ वामन, कुब्ज ; (दे ३, १८)। २ पुं. पुरुष-चिह्न, लिङ्ग ; (पव ६१)। ३ न. गन्ध-द्रव्य विशेष ; मञ्जिष्ठा ; (उर ६, ४)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] जैन मुनि का कटी-वस्त्र ; (ओघ ३४)। °**य** पुं [°**ज**] मजीठ का रंग ; (उर ६, ४)।
चोल पुं [**चोल**] देश-विशेष, द्रविड़ और कलिङ्ग के बीच का देश ; (पिंग ; सण)।
चोलअ न [दे] कवच, वर्म ; (नाट)।
चोलअ } न [**चौल**, °**क**] संस्कार-विशेष, मुण्डन; "विहिणा चूलाकम्मं बालाणं चोलयं नाम " (आवम ; पण्ह १, २)।
चोलग }
चोलुक्क देखो **चालुक्क** ; (ती ५)।
चोलोयणग } न [**चूलापनयन**] १ चूलोपनयन, संस्कार-विशेष, मुण्डन; (णाया १, १—पत्र ३८)। २ शिखा-धारण, चूड़ा-धारण; (भग ११, ११—पत्र ५४४ ; औप)।
चोलोवणय }
चोलोवणयण }
चोल्लक [दे] देखो **चोलग** ; (पण्ह २, ४)।

चोल्लक } पुंन [दे] १ भोजन ; (उप पृ १२ ; आवम; **चोल्लग** } उत्त ३) । २ वि. चुद्रक, छोटा, लघु ; (उप पृ ३१) ।

चोल्लय पुंन [दे] थैला, बोरा, गोन ; " परं मम समक्खं तलेह चोल्लए "राइणा उक्केल्लाविग्राइं चोल्लयाइं" (महा)।

चोव्वड देखो **चोप्पड**=म्रक्ष्। चोव्वडइ; (षड्) ।

च्च अ [**एव**] अवधारण-सूचक अव्यय ; (हे २, १८४; कुमा ; षड्) ।

च्चिअ देखो **चिअ**=एव ; (हे २, १८४ ; कुमा) ।

च्चेअ } देखो **चेव**=एव; (पि ६२ ; जी ३२) ।
च्चेव }

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि चयाराइसद्दसकलणो चउद्दसमो तरंगो समत्तो।

छ

छ पुं [**छ**] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप, प्रामा) । २ आच्छादन, ढ़कना ; " छ ति य दोसाण छायणे होइ" (आवम) ।

छ त्रि. व. [**षष्**] संख्या-विशेष; छह, "छ छंडिआओ जिण-सासणम्मि" (श्रा ६; जी ३२; भग १, ८)। °**उत्तरसय** वि [°**उत्तरशततम**] एक सौ और छठवाँ ; (पउम १०६, ४६) । °**क्कम्म** न [°**कर्मन्**] छः प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्तव्य हैं, यथा—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह ; (निचू १३) । °**क्काय** न [°**काय**] छः प्रकार के जीव, पृथिवी, अग्नि, पानी, वायु, वन स्पति और त्रस जीव ; (श्रा ७ ; पंचा १५) । °**गुण**, °**ग्गुण** वि [°**गुण**] छगुना ; (ठा ६ ; पि २७०) । °**च्चरण** पुं [°**चरण**] भ्रमर, भमरा; (कुमा) । °**ज्जीव-निकाय** पुं [°**जीवनिकाय**] देखो °**क्काय**; (आचा) । °**णउइ**, °**ण्णवइ** स्त्री [°**णवति**] संख्या-विशेष, छानवे, ६६ ; (सम ६८; अजि १०) । °**त्तीस** स्त्रीन [°**त्रिंशत्**] संख्या-विशेष, छत्तीस, ३६ ; (कप्प) । °**त्तीसइम** वि [°**त्रिंशत्तम**] छत्तीसवाँ; (पउम ३६, ४३; पण्ण ३६ °**द्दस** त्रि. व. [**षोडशन्**] षोडश, सोलह । °**द** [°**षोडशधा**] सोलह प्रकार का ; (वव ४) । °**द्दिसि** न [°**दिश्**] छः दिशाएं—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा ; (भग) । °**द्धा** अ [°**धा**] छह प्रकार का; (कम्म १, ३८) । °**नवइ**, °**नुवइ**, °**न्नउइ** देखो °**णउइ**; (कम्म ३, ४ ; १२ ; सम ७०)। °**न्नउय** वि [°**णवत**] छानहवाँ, ६६ वाँ ; (पउम ६६, ५०) । °**प्पण्ण**, °**प्पन्न** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] छप्पन, ५६ ; (राज ; सम ७३) । °**प्पन्न** वि [°**पञ्चाश**] छप्पनवाँ ; (पउम ५६, ४८) । °**ब्भाय** पुं [°**भाग**] छठवाँ हिस्सा ; (पि २७०) । °**ब्भासा** स्त्री [°**भाषा**] प्राकृत, संस्कृत, मागधी, शौरसेनी, पैशाचिका और अपभ्रंश ये छः भाषाएं ; (रंभा) । °**मासिय**, °**म्मासिय** वि [**षाण्मासिक**] छह मास में होने वाला, छह मास संबन्धी ; (सम २१ ; औप) । °**वरिस** वि [°**वार्षिक**] छह वर्ष की उम्र वाला; (सार्ध २६) । °**वीस** देखो °**व्वीस**; (पिंग) । °**व्विह** वि [°**विध**] छह प्रकार का ; (कस ; नव ३) । °**व्वीस** स्त्रीन [°**विंशति**] छव्वीस, वीस और छह ; (सम ४५)। °**व्वीसइम** वि [°**विंशतितम**] १ छव्वीसवाँ, २६ वाँ; (पउम २६, १०३)। २ लगातार बारह दिनों का उपवास ; (णाया १, १) । °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] संख्या-विशेष, साठ और छह ; (कम्म २, १८)। °**स्सयरि** स्त्री [°**सप्तति**] छिहत्तर, (कम्म २, १७) । °**हा** देखो °**द्धा** ; (कम्म १, ५ ; ८) ।

छइ देखो **छवि**=छवि ; (वा १२) ।

छइअ वि [**स्थगित**] आवृत, आच्छादित, [illegible] (हे २, १७ ; षड्) ।

छइल } वि [**दे**] विदग्ध, चतुर, हुशि[illegible] **छइल्ल** } २४ ; गा ७२० ; वज्जा ४ ; [illegible]

छउअ वि [**दे**] तनु, कृश, पतला; [illegible]

छउम पुंन [**छद्मन्**] १ कपट, [illegible] षड्) । २ छल, बहाना ; [illegible] आवरण, आच्छादन; ([illegible]

छउमत्थ वि [**छद्मस्थ** [illegible] २ राग[illegible] खो [illegible] दे [illegible]

छंट पुं [**दे**] छींटा, जल का छीटा, जल-च्छटा; २ वि. शीघ्र, जल्दी करने वाला; (दे ३, ३३)।

छंट सक [**सिच्**] सींचना। छंटसु ; (सुपा २६८)।

छंटण न [**सेचन**] सिंचन, सिंचना; (सुपा १३६ ; कुमा)।

छंटा स्त्री [**दे**] देखो **छंट** ; (पात्र)।

छंटिअ वि [**सिक्त**] सींचा हुआ ; (सुपा १३८)।

छंड देखो **छड्ड=मुच्**। छंडइ ; (आरा ३२ ; भवि)।

छंडिअ वि [**दे**] छन्न, गुप्त ; (षड्)।

छंडिअ वि [**मुक्त**] परित्यक्त, छोडा हुआ ; (आरा ; भवि)।

छंद सक [**छन्दय्**] १ चाहना, वाञ्छना। २ अनुज्ञा देना, संमति देना। ३ निमन्त्रण देना। कवकृ—

" अरोउरपुरजलवाहणेहि वरसिरिघरेहि मुणिवसभा।
कामेहि बहुविहेहि य **छंदिज्जंतावि** नेच्छंति " (उव)।

संकृ—**छंदिय** ; (दस १०)।

छंद पुंन [**छन्द**] १ इच्छा, मरजी, अभिलाषा ; (आचा ; गा २०१; स २३६; उव; प्रासू ११) । २ अभिप्राय, आशय; (आचा, भग) । ३ वशता, अधीनता; (उत्त ४; हे १, ३३)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] स्वच्छन्दी, स्वैरी; (उप ७६८ टी)। °**इत्त** वि [°**वत्**] स्वैरी ; (भवि)। °**णुवत्तण** न [°**नुवर्त्तन**] मरजी के अनुसार वरतना ; (प्रासू १४)। °**णुवत्तय** वि [°**नुवर्त्तक**] मरजी का अनुसरण करने वाला, (गाया १, ३)।

छंद पुंन [**छन्दस्**] १ स्वच्छन्दता, स्वैरिता ; (उत्त ४)। २ अभिलाष, इच्छा ; ३ आशय, अभिप्राय ; (सूत्र १, २, २ ; आचा ; हे १,३३)। ४ छन्दः-शास्त्र ; (सुपा २८७ ; औप)। ५ वृत्त, छन्द ; (वज्जा ४) । °**ण्णुय** वि [°**ज्ञ**] छन्द का जानकार ; (गउड)।

छंदण न [**वन्दन**] वन्दन, प्रणाम, नमस्कार; (गुभा ४)।

छंदणा स्त्री [**छन्दना**] १ निमन्त्रण ; (पंचा १२)। २ प्रार्थना ; (बृह १)।

छंदा स्त्री [**छन्दा**] दीक्षा का एक भेद, अपने या दूसरे के अभिप्राय-विशेष से लिया हुआ संन्यास ; (ठा २, २ ; पंचभा)।

छंदिअ वि [**छन्दित**] अनुज्ञात, अनुमत ; (ओघ ३८०)। २ निमन्त्रित ; (निचू २)।

°**दो**° देखो **छंद=छन्दस्** ; (आचा ; अभि १२६)।

छक्क वि [**षट्क**] छक्का, छः का समूह; "अंतररिउछक्का-अक्कंता " (सुपा ५१६ ; सम ३५)।

छग देखो **छ=षष्** ; (कम्म ४)।

छग न [**दे**] पुरीष, विष्ठा ; (पण्ह १, ३—पत्र ५४, ओघ ७२)।

छगण न [**दे**] गोमय, गोबर ; (उप ५६७ टी , पंचा १३; निचू १२)।

छगणिया स्त्री [**दे**] गोइंठा, कंडा ; (अनु ५)।

छगल पुस्त्री [**छगल**] छाग, अज ; (पण्ह १, १; औप)। स्त्री—°**ली** ; (दे २, ८४)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (ठा १०)।

छग्ग देखो **छक्क** ; (दं ११)।

छग्गुरु पुं [**षड्गुरु**] १ एक सौ और अस्सी दिनों का उपवास ; २ तीन दिनों का उपवास ; (ठा २, १)।

छच्छुंदर पुंन [**दे**] छछुन्दर, मूसे की एक जाति; (सं १६)।

छज्ज अक [**राज्**] शोभना, चमकना। छज्जइ; (हे ४,१००)।

छज्जिअ वि [**राजित**] शोभित, अलंकृत ; (कुमा)।

छज्जिआ स्त्री [**दे**] पुष्प-पात्र, चगेरी ; (स ३३४)।

छट्टा [**दे**] देखो **छंटा** ; (षड्)।

छट्ठ वि [**षष्ठ**] १ छठवाँ ; (सम १०४ ; हे १, २६५)। २ न. लगातार दो दिनों का उपवास ; (सुर ४, ५५)। °**क्खमण** न [°**क्षमण**, °**क्षपण**]: लगातार दो दिनों का उपवास ; (अंत ६ ; उप पृ ३४३)। °**क्खमय** पुं [°**क्षमक**, °**क्षपक**] दो दो दिनों का बराबर उपवास करने वाला तपस्वी ; (उप ६२२)। °**भत्त** न [°**भक्त**] लगातार दो दिनों का उपवास ; (धर्म ३)। °**भत्तिय** वि [°**भक्तिक**] लगातार दो दिनों का उपवास करने वाला ; (पण्ह १,१)।

छट्ठी स्त्री [**षष्ठी**] १ तिथि-विशेष ; (सम २६)। २ विभक्ति-विशेष, संबन्ध-विभक्ति ; (णंदि ; हे १, २६५)। ३ जन्म के बाद किया जाता उत्सव-विशेष ; (सुपा ५७८)।

छड सक [**आ+रुह्**] आरूढ होना, चढ़ना। छडइ ; (षड्)।

छडक्खर पुं [**दे**] स्कन्द, कार्त्तिकेय ; (दे ३, २६)।

छडछडा स्त्री [**छटच्छटा**] सूर्य वगैरः से अन्न को झाड़ते समय होता एक प्रकार का अव्यक्त आवाज; (गाया १, ७—पत्र ११६)।

छडा स्त्री [**दे**] विद्युत, बिजली ; (दे ३, २४)।

छडा स्त्री [**छटा**] १ समूह, परम्परा ; (सुर ४, २४३ ; वा १२)। २ छींटा, पानी का बुंद ; (पाअ)।

छडाल वि [**छटावत्**] छटा वाला ; (पउम ३५,१८)।

छड्ड सक [**छर्दय्, मुच्**] १ वमन करना। २ छोड़ना, त्याग करना। ३ डालना, गिराना। छड्डइ ; (हे २, ३६ , ४, ६१ ; महा ; उव)। कर्म—छड्डिज्जइ ; (पि २६१)। वकृ—**छड्डंत** ; (भग)। संकृ—**छड्डेउं** भूमीए खीरं जह पियइ दुट्ठमज्जारो" (विस १४७१), **छड्डित्तु** ; (वव २)।

छड्डण न [**छर्दन, मोचन**] १ परित्याग, विमोचन ; (उप १७६ ; ओघ ८६)। २ वमन, वान्ति ; (विपा १, ८)।

छड्डवण न [**छर्दन, मोचन**] १ छुड़वाना, मुक्त करवाना। २ वमन कराना। ३ वमन कराने वाला ; ४ छुडाने वाला ; (कुमा)।

छड्डय वि [**छर्दक, मोचक**] त्याग कराने वाला, त्याजक; (दे २, ६२)।

छड्डावण देखो **छड्डवण** ; (सुपा ५१७)।

छड्डाविय वि [**छर्दित, मोचित**] १ वमन कराया हुआ ; २ छुड़वाया हुआ ; (आवम; बृह १)।

छड्डि स्त्री [**छर्दि**] वमन का रोग ; (षड् ; हे २, ३६)।

छड्डि स्त्री [**छर्दिस्**] छिद्र, दूषण ; 'जो जग्गइ परछड्डिं, सो नियछड्डीए किं सुयइ" (महा)।

छड्डिअ } **छड्डियल्लिय** } वि [**छर्दित, मुक्त**] १ वान्त, वमन किया हुआ। २ त्यक्त, मुक्त ; (विसे २६०६ ; दे १, ४६ ; औप)।

छण सक [**क्षण्**] हिंसा करना। छणे; (आचा)। प्रयो— छणावेइ ; (पि ३१८)।

छण पुं [**क्षण**] १ उत्सव, मह ; (हे २, २०)। २ हिंसा ; (आचा)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा ; (स ३७१)। °**ससि** पुं [°**शशिन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सुपा ३०६)।

छणण न [**क्षणन**] हिंसन, हिंसा ; (आचा)।

छणिंदु पुं [**क्षणेन्दु**] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्र ; (सुपा ३३ ; ४०४)।

छण्ण वि [**छन्न**] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ ; (बृह १ ; प्राप)। २ आच्छादित, ढका हुआ ; (गा ५८०)। ३ न. माया, कपट; (सूअ १, २, २)। ४ निर्जन, विजन, रहस् ; ५ क्रिवि. गुप्त रीति से, प्रच्छन्न रूप से ;
"जं छण्णं आयरियं, तइया जणणीए जोव्वणमएण।
तं पडिव(? यडि)ज्जइ इण्हिं सुएहिं सीलं चयंतेहिं"
(उप ७२८ टी)।

छण्णालय न [**दे. षण्णालक**] त्रिकाष्ठिक, तिपाई, संन्यासीओं का एक उपकरण ; (भग ; औप ; णाया १, ५)।

छत्त न [**छत्र**] छाता, आतपत्र ; (णाया १, ५ ; प्रास ५२)। °**धार** पुं [°**धार**] छाता धारण करने वाला नौकर ; (जीव ३)। °**पडागा** स्त्री [°**पताका**] १ छत्र-युक्त ध्वज ; २ छत्र के ऊपर की पताका ; (औप)। °**पलासय** न [°**पलाशक**] कृतमंगला नगरी का एक चैत्य ; (भग)। °**भंग** पुं [°**भङ्ग**] राज-नाश, नृप-मरण ; (राज)। °**हार** देखो °**धार** ; (आवम)। °**ाइच्छत्त** न [°**ातिच्छत्र**] १ छत्र के ऊपर का छाता ; (सम १३७)। २ पुं. ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध योग-विशेष ; (सुज्ज १२)।

छत्त पुं [**छात्र**] विद्यार्थी, अभ्यासी ; (उप पृ ३३१; १६६ टी)।

छत्तंतिया स्त्री [**छत्रान्तिका**] परिषद्-विशेष, सभा-विशेष ; (बृह १)।

छत्तच्छय (अप) पुं [**सप्तच्छद**] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन ; (सण)।

छत्तधन्न न [**दे**] घास, तृण ; (पाअ)।

छत्तवण्ण देखो **छत्तिवण्ण** ; (प्राप्र)।

छत्ता स्त्री [**छत्रा**] नगरी-विशेष ; (आवम)।

छत्तार पुं [**छत्रकार**] छाता बनाने वाला कारीगर ; (पण्ण १)।

छत्ताह पुं [**छत्राभ**] वृक्ष-विशेष ; "णग्गोहसत्तिवण्णे, साले पियए पियंगुछत्ताहे" (सम १५२)।

छत्ति वि [**छत्रिन्**] छत्र-युक्त, छाता वाला ; (भास ३३)।

छत्तिवण्ण पुं [**सप्तपर्ण**] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन ; (हे १, २६५ ; कुमा)।

छत्तोय पुं [**छत्रौक**] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष , (पण्ण १—पत्र ३५)।

छत्तोव पुं [**छत्रोप**] वृक्ष-विशेष ; (औप ; अंत)।

छत्तोह पुं [**छत्रौघ**] वृक्ष-विशेष ; (औप ; पण्ण १—पत्र ३१ ; भग)।

छद्दवण देखो **छड्डवण** ; (राज)।

छद्दी स्त्री [**दे**] शय्या, बिछौना ; (दे ३, २४)।

छन्न देखो **छण्ण** ; (कप्प ; उप ६४८ टी ; प्रासू ८२)।

छवि स्त्री [**छवि**] १ कान्ति, तेज ; (कुमा ; पाअ) । २ अंग, शरीर ; (पण्ह १, १) । ३ चर्म, चमड़ी; (पाअ; जीव ३) । ४ अवयव ; (पडि) । ५ अंगी, शरीरी; (ठा ४, १) । ६ अलङ्कार-विशेष ; (अणु) । °**च्छेअ** पुं [°**च्छेद**] अङ्ग का विच्छेद, अवयव-कर्तन ; (पडि) । °**च्छेयण** न [°**च्छेदन**] अंग-च्छेद ; (पण्ह १, १) । °**त्ताण** न [°**त्राण**] चमड़ी का आच्छादन, कवच, वर्म ; (उत २) ।

छविअ वि [**स्पृष्ट**] छूआ हुआ ; (श्रा २७) ।

छव्वग [**दे**] देखो **छव्वय** ; (राज) ।

छव्विअ वि [**दे**] पिहित, आच्छादित ; (गउड) ।

छह (अप) देखो **छ**=षष् ; (पि ४४१) ।

छहत्तर वि [**षट्सप्तत**] छहत्तरवाँ, ७६ वाँ ; (पउम ७६, २७) ।

छाइअ वि [**छादित**] आच्छादित, ढका हुआ ; (पउम ११३, ५४ ; कुमा) ।

छाइल्ल वि [**छायावत्**] छाया वाला, कान्ति-युक्त ; (हे २, १५६ ; षड्) ।

छाइल्ल पुं [**दे**] १ प्रदीप, दीपक; "जोइक्खं तह छाइल्लयं च दोवं मुणेज्जाहि" (वज्र ७ ; दे ३, ३५) । २ वि. सदृश, समान, तुल्य ; ३ ऊन, अधूरा ; (दे ३, ३५) । ४ सुरूप, सुडौल, रूपवान् ; (दे ३, ३५ ; षड्) ।

छाई देखो **छाया** ; (षड्) ।

छाई स्त्री [**दे**] माता, देवी, देवता ; (दे ३, २६) ।

छाउमत्थिय वि [**छाद्मस्थिक**] केवलज्ञान उत्पन्न होने के पहले की अवस्था में उत्पन्न, सर्वज्ञता की पूर्वावस्था से संबन्ध रखने वाला ; (सम ११ ; पण्ण ३६) ।

छाओवग वि [**छायोपग**] १ छाया-युक्त, छाया वाला ; (वृक्षादि) ; २ पुं. सेवनीय पुरुष, माननीय पुरुष ; (ठा ४,३) ।

छागल वि [**छागल**] १ अज-संबन्धी ; (ठा ५, ३) । २ पुं. अज, बकरा ; स्त्री— °**ली** ; (पि २३१) ।

छागलिय पुं [**छागलिक**] छागों से आजीविका करने वाला, अजा-पालक ; (विपा १, ४) ।

छाण न [**दे**] १ धान्य वगैरः का मलना ; (दे ३, ३४) । २ गोमय, गोबर ; (दे ३, ३४ ; सुर १२, १७ ; गाया १, ७ ; जीव १) । ३ वस्त्र, कपड़ा ; (दे ३,३४ ; जीव३) ।

छाणण न [**दे**] छानना, गालन ; " भूमीपेहणजलछाणणाइं जयणाओ होइ न्हाणाइं" (सद्वि ४५ टी) ।

छाणवइ (अप) देखो **छण्णवइ** ; (पिंग) ।

छाणी स्त्री [**दे**] १ धान्य वगैरः का मलन ; २ वस्त्र, कपड़ा ; (दे ३,३४) । ३ गोमय, गोबर ; (दे ३, ३४ ; धर्म २) ।

छाय सक [**छादय्**] आच्छादन करना, ढकना । छायइ ; (हे ४, २१) । वकृ—**छायंत** ; (पउम ७, १४) ।

छाय वि [**दे**] १ बुभुक्षित, भूखा; (दे ३, ३३ ; पाअ ; उप ७६८ टी ; ओघ २६० भा) । २ कृश, दुर्बल ; (दे ३, ३३ ; पाअ) ।

छायंसि वि [**छायावत्**] कान्तिमान्, तेजस्वी ; (सम १५२) ।

छायण न [**छादन**] आच्छादन, ढकना ; (पिंग ; महा ; सं ११) ।

छायणिया } स्त्री [**दे**] डेरा, पड़ाव, छावनी ; " तो तत्येव
छायणी } ठिओ एसो कुणिता गिहछायणिं " (श्रा १२ ; महा) ।

छाया स्त्री [**छाया**] १ आतप का अभाव; छाँही; (पाअ) । २ कान्ति, प्रभा, दीप्ति; (हे १, २४६ ; औप ; पाअ) । ३ शोभा; (औप) । ४ प्रतिबिम्ब, परछाईं; (प्रासू ११४ ; उत २) । ५ धूप-रहित स्थान, अनातप देश ; (ठा २, ४) । °**गइ** स्त्री [°**गति**] १ छाया के अनुसार गमन ; २ छाया के अवलम्बन से गति ; (पण्ण १६) । °**पास** पुं [°**पार्श्व**] हिमाचल पर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति ; (ती ४५) ।

छाया स्त्री [**दे**] १ कीर्ति, यश, ख्याति ; २ भ्रमरी, भमरी ; (दे ३, ३४) ।

छायाइत्तय वि [**छायावत्**] छाया-वाला, छाया-युक्त । स्त्री—°**इत्तिआ** ; (हे २, २०३) ।

छायाला स्त्री [**षट्चत्वारिंशत्**] छियालीस, चालीस और छह, ४६ ; (भग) ।

छायालीस स्त्रीन. ऊपर देखो; (सम ६६ ; कप्प) ।

छायालीस वि [**षट्चत्वारिंश**] छियालीसवाँ, ४६वाँ; (पउम ४६, ६६) ।

छार वि [**क्षार**] १ पिघलने वाला, झरने वाला ; २ खारा, लवण-रस वाला; ३ पुं. लवण, नोन,-निमक; ४ सज्जी, सज्जी-खार ; ५ गुड़; (हे २, १७ ; प्राप्र) । ६ भस्म, भूति; (विसे १२५६; स ४४; प्रासू १४५; णाया १,२) । ७ मात्सर्य, असहिष्णुता; (जीव ३) ।

(d) $2x - 3y = 0$

छार पुं [दे] अच्छभल्ल, भालूक ; (दे ३, २६) ।

छारय देखो **छार**; (श्रा २७) ।

छारय न [दे] १ इक्षु शल्क, ऊख की छाल, (` ३,३४)। २ मुकुल, कली ; (दे ३, ३४; पाअ) ।

छाल पुं [**छाग**] अज, बकरा ; (हे १, १६१) ।

छालिया स्त्री [**छागिका**] अजा, छागी ; (सुर ७,३०; सण)।

छाली स्त्री [**छागी**] ऊपर देखो ; (प्रासा) ।

छाव पुं [**शाव**] बालक, बच्चा, शिशु ; (हे १, २६५ ; प्राप्र ; वव १) ।

छावण देखो **छायण** ; (बृह १) ।

छावट्ठि स्त्री [**षट्षष्टि**] छाछठ, छियासठ, ६६ ; (सम ७८ ; विसे २७६१) ।

छावत्तरि स्त्री [**षट्सप्तति**] छिहत्तर, सत्तर और छ, ७६ ; (पउम १०२, ८६ ; सम ८५) । °**म** वि [°**तम**] छिहत्तरवाँ ; (कप) ।

छावलिय वि [**षडावलिक**] छ. आवलिका-परिमित समय वाला ; (विसे ५३१) ।

छासट्ठ वि [**षट्षष्ट**] छियासठवाँ ; (पउम ६६, ३७) ।

छासी स्त्री [**दे**] छाछ, तक्र, मठा ; (दे ३, २६) ।

छासीइ स्त्री [**षडशीति**] छियासी, अस्सी और छ । °**म** वि [°**तम**] छियासीवाँ, ८६ वाँ ; (पउम ८६, ७४) ।

छाहत्तरि (अप) देखो **छावत्तरि** ; (पि २४५) ।

छाहा, **छाहिया**, **छाही** } स्त्री [**छाया**] १ छाँही, आतप का अभाव ; २ प्रतिबिम्ब, परछाई ; (षड् ; प्राप ; सुर २, २४७ ; ६, ६५ ; हे १, २४६ ; गा २४) ।

छाही स्त्री [**दे**] गगन, आकाश । °**मणि** पुं [°**मणि**] सूर्य, सूरज ; (दे ३, २६) ।

छिअ देखो **छीअ** ; (दे ८, ७२ ; प्रामा) ।

छिंछई स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (हे २, १७४ ; गा ३०१ ; ३५० ; पाअ) ।

छिंछरमण न [**दे**] क्रीड़ा-विशेष, चक्षु-स्थगन की क्रीड़ा, (दे ३, ३०) ।

छिंछय पुं [**दे**] १ देह, शरीर ; २ जार, उपपति ; ३ न. फल-विशेष, शलाटु-फल ; (दे ३, ३६) ।

छिंछोली स्त्री [**दे**] छोटा जल-प्रवाह ; (दे ३, २७ ; पाअ) ।

छिंड न [**दे**] १ चूडा, चोटी ; (दे ३, ३५ ; पाअ) । २ छत्र, छाता ; ३ धूप-यन्त्र ; (दे ३, ३५) ।

छिंडिआ स्त्री [**दे**] १ बाड का छिद्र ; २ अपवाद ; "छ छिंडिआओ जिणसासणम्मि" (पत्र १४८ ; श्रा ६) ।

छिंडी स्त्री [**दे**] बाड़ का छिद्र; (णाया १, २—पत्र ७६)।

छिंद सक [**छिद्**] छेदना, विच्छेद करना । छिंदइ ; (प्राप्र; महा) । भवि—छेच्छं ; (हे ३, १७१) । कर्म—छिज्जइ; (महा)। वकृ —**छिंदमाण**; (णाया १, १)। कवकृ—**छिज्जंत**, **छिज्जमाण**; (श्रा ६ ; विपा १, २) । संकृ— **छिंदिऊण**, **छिंदित्ता**, **छिंदित्तु**, **छिंदिय**, **छेत्तूण**; (पि ५८५; भग १४, ८; पि ५०६ ; ठा ३, २ ; महा) । कृ— **छिंदियव्व** ; (पण्ह २, १) । हेकृ—**छेत्तुं**, (आचा) ।

छिंदण न [**छेदन**] छेद, खण्डन, कर्तन, (ओघ १५४ भा) ।

छिंदावण न [**छेदन**] कटवाना, दूसरे द्वारा छेदन कराना ; (महानि ७) ।

छिंदाविय वि [**छेदित**] विच्छिन्न कराया गया; (स २२६) ।

छिंपय पुं [**छिम्पक**] कपड़ा छापने का काम करने वाला; (दे १, ६८ ; पाअ) ।

छिक्क न [**दे**] क्षुत, छींक ; (दे ३, ३६ ; कुमा) ।

छिक्क वि [**दे**, **छुप्त**] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (दे ३, ३६ ; हे २, १३८ ; से ३, ४६ ; स ४४४) । °**परोइया** स्त्री [°**प्ररोदिका**] वनस्पति-विशेष ; (विसे १७५४) ।

छिक्क वि [**छीत्कृत**] छी छी आवाज से आहूत; "पुव्विंपि वीरसुणिआ छिक्काछिक्का पहावए तुरियं" (ओघ १२४ भा)।

छिक्कंत वि [**दे**] छींक करता हुआ ; (सुपा ११६) ।

छिक्का स्त्री [**दे**] छिक्का, छींक ; (स ३२२) ।

छिक्कारिअ वि [**छीत्कारित**] छी छी आवाज से आहूत, अव्यक्त आवाज से बुलाया हुआ; (ओघ १२४ भा. टी) ।

छिक्किय न [**दे**] छींकना, छींक करना ; (स ३२४) ।

छिक्कोअण वि [**दे**] असहन, असहिष्णु ; (दे ३, २६)।

छिक्कोट्टली स्त्री [**दे**] १ पैर का आवाज ; २ पाँव से धान्य का मलना ; ३ गोइठा का टुकड़ा, गोबर खण्ड ; (दे ३, ३७) ।

छिक्कोलिअ वि [**दे**] तनु, पतला, कृश ; (दे ३, २५) ।

छिक्कोवण [**दे**] देखो **छिक्कोअण**; (ठा ६—पत्र ३७२) ।

छिच्चोलय पुं [**दे**] देखो **छिव्वोल्ल** ; (पाअ) ।

छिच्छई देखो **छिंछई** ; (षड्) ।

छिच्छय देखो **छिंछय** ; (षड्) ।

छिछि अ [दे. धिक्धिक्] छी छी, धिक् धिक्, अनेक धिक्कार ; (हे २, १७४ ; षड्) ।
छिज्ज वि [छेद्य] १ जो खण्डित किया जा सके ; २ छेदने योग्य ; (सूअ २, ५) । ३ न. छेद, विच्छेद, द्विधाकरण ; " पावंति:वंधवहरोहछिज्जमरणावसाणाइं " (ओघ ४६ भा ; पुप्फ १८६) ।
छिज्जंत वि [क्षीयमाण] क्षय पाता, दुर्बल होता ; "छिज्जंतेहिं अणुदिणं, पच्चक्खम्मिवि तुमम्मि अंगेहिं" (गा ३४७) ।
छिज्जंत } देखो **छिंद** ।
छिज्जमाण }
छिड्ड न [छिद्र] १ छिद्र, विवर ; (पउम २०, १६२ ; अनु ६ ; उप पृ १३८) । २ अवकाश, अवसर ; (पण्ह १, ३) । ३ दूषण, दोष ; (सुपा ३६०) । °**पाणि** पुं [°**पाणि**] एक प्रकार का जैन साधु ; (आचा २,१, ३) ।
छिण्ण देखो **छिन्न** ; (णाया १, १८ ; सूअ १, ८) ।
छिण्ण पुं [दे] जार, उपपति ; (दे ३, २७ ; षड्) ।
छिण्णच्छोडण न [दे] शीघ्र, तुरंत, जल्दी ; (दे ३,२६) ।
छिण्णयड वि [दे] टक से छिन्न ; (पाअ) ।
छिण्णा स्त्री [दे] असती, कुलटा ; (दे ३, २७) ।
छिण्णाल पुं [दे] जार, उपपति ; (दे ३, २७ ; षड् ; उत्त २७) ।
छिण्णालिआ } स्त्री [दे] असती, कुलटा, पुश्चली ;
छिण्णाली } (मृच्छ ५५ ; दे ३, २७) ।
छिण्णोब्भवा स्त्री [दे] दूर्वा, दाभ ; (दे ३, २६) ।
छित्त देखो **खित्त**=क्षेत्र ; (औप ; उप ८३३ टी ; हेका ३०) ।
छित्त वि [दे] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (दे ३, २७, गा १३ ; सुपा ५०४ ; पाअ) ।
छित्तर [दे] देखो **छेत्तर** ; (स ८ ; २२३ ; उप पृ ११७ ; ५३० टी) ।
छित्ति स्त्री [छित्ति] छेद, विच्छेद, खण्डन ; (विसे १४५८ ; अजि ५) ।
छिद्द देखो **छिड्ड** ; (णाया १,२ ; ठा ५,१ ; पउम ६४,६) ।
छिद्द पुं [दे] छोटी मछली ; (दे ३, २६) ।
छिद्दिय वि [छिद्रित] छिद्र-युक्त, छिद्र वाला ; (गउड) ।
छिन्न वि [छिन्न] १ खण्डित, त्रुटित, छेद-युक्त ; (भग ; प्रासू १४६) । २ निर्धारित, निश्चित ; (बृह १) । ३ न. छेद, खण्डन ; (उत्त १५) । °**गंथ** वि [°**ग्रन्थ**] स्नेह-रहित, स्नेह-मुक्त ; (पण्ह २, ५) । २ पुं. त्यागी, साधु, मुनि, निर्ग्रन्थ ; (ठा ६) । °**च्छेय** पुं [°**च्छेद**] नय-विशेष, प्रत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा से रहित मानने वाला मत ; (णंदि) । °**द्धाणंतर** वि [°**ध्वान्तर**] मार्ग-विशेष, जहाँ गाँव, नगर वगैरः कुछ भी न हो ऐसा रास्ता ; (बृह १) । °**मडंब** वि [°**मडम्ब**] जिस गाँव या शहर के समीप में दूसरा गाँव वगैरः न हो ; (निचू १०) । °**रुह** वि [°**रुह**] काट कर बोने पर भी पैदा होने वाली वनस्पति ; (जीव १० ; पण्ण ३६) ।
छिप्प न [क्षिप्र] जल्दी, शीघ्र । °**तूर** न [°**तूर्य**] शीघ्र २ बजाया जाता वाद्य ; (विपा १, ३ ; णाया १, १८) ।
छिप्प न [दे] १ भिक्षा, भीख ; (दे ३,३६ ; सुपा ११५) । २ पुच्छ, लाङ्गूल ; (दे ३, ३६ ; पाअ) ।
छिप्पंत देखो **छिव**=स्पृश् ।
छिप्पंती स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष ; २ उत्सव-विशेष ; (दे ३, ३७) ।
छिप्पंदूर न [दे] १ गोमय-खण्ड, गोबर-खण्ड ; २ वि. विषम, कठिन ; (दे ३, ३८) ।
छिप्पाल पुं [दे] सस्यासक्त बैल, खाने में लगा हुआ बैल ; (दे ३, २८) ।
छिप्पालुअ न [दे] पूँछ, लाङ्गूल ; (दे ३, २६) ।
छिप्पिंडी स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष ; २ उत्सव-विशेष ; ३ पिष्ट, पिसान ; (दे ३, ३७) ।
छिप्पिअ वि [दे] क्षरित, झरा हुआ, टपका हुआ ; (पाअ) ।
छिप्पोर न [दे] पलाल, तृण ; (दे ३, २८) ।
छिप्पोल्ली स्त्री [दे] अजादि की विष्ठा ; (निचू १) ।
छिमिछिमिछिम अक [छिमिछिमाय्] छिम छिम आवाज करना । वकृ— **छिमिछिमिछिमंत** ; (पउम २६, ४८) ।
छिरा स्त्री [शिरा] नस, नाडी, रग ; (ठा २, १ ; हे १,२६६) ।
छिरि पुं [दे] भालूक का आवाज ; (पउम ६४, ४५) ।
छिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर ; (दे ३, ३५ ; षड्) । २ कुटी, कुटिया, छोटा घर ; ३ वाड का छिद्र ; (दे ३,३५) । ४ पलाश का पेड़ ; (ती ६) ।
छिल्लर न [दे] पल्वल, छोटा तलाव ; (दे ३, २८ ; सुर ४, २२६) ।
छिल्ली स्त्री [दे] शिखा, चोटी ; (दे ३, २७) ।
छिव सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना । छिवइ ; (हे ४, १८२) । कर्म— छिप्पइ, छिविज्जइ ; (हे ४, २५७) ।

वकृ—छिवंत ; (गा २६६)। कवकृ—छिप्पंत, छिवि-ज्जमाण ; (कुमा ; गा ४४३ ; स ६३२ ; श्रा १२)।

छिवट्ठ [दे] देखो **छेवट्ठ** ; (कम्म २, ४)।

छिवण न [**स्पर्शन**] स्पर्श, छूना; (उप १८७ टी; ६७७)।

छिवा स्त्री [दे] श्लक्ष्ण कश, चीकना चाबुक; "छिवापहारे य" (णाया १, २—पत्र ८६ ; पण्ह १, ३ ; विपा १,६)।

छिवाडिआ } स्त्री [दे] १ वल्ल वगैरः की फली, सीम; **छिवाडी** } (जं१)। २ पुस्तक विशेष, पतले पन्ने वाला ऊँचा पुस्तक, जिसके पन्ने विशेष लंबे और कम चौड़े हों ऐसा पुस्तक ; (ठा ४, २ ; पत्र ८०)।

छिविअ वि [**स्पृष्ट**] १ छूआ हुआ; (दे ३, २७)। २ न. स्पर्श, छूना ; (से २, ८)।

छिविअ न [दे] ईख का टुकड़ा ; (दे ३, २७)।

छिव्वोल्लअ [दे] देखो **छिव्वोल्ल** ; (गा ६०५ अ)।

छिव्व वि [दे] कृत्रिम, बनावटी ; (दे ३, २७)।

छिव्वोल्ल न [दे] १ निन्दार्थक मुख-विकूणन, अरुचि-प्रकाशक मुख-विकार-विशेष ; २ विकूणित मुख ; (दे ३, २८)।

छिह सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। छिहइ ; (हे ४, १८२)।

छिहंड न [**शिखण्ड**] मयूर की शिखा; (णाया १, १—पत्र ५७ टी)।

छिहंडअ पुं [दे] दही का बना हुआ मिष्टान्न, दधिसर ; गुजराती में जिसे 'सिखंड' कहते हैं ; (दे ३, २६)।

छिहंडि पुं [**शिखण्डिन्**] १ मयूर, मोर। २ वि. मयूर-पिच्छ को धारण करने वाला ; (णाया १,१—पत्र ५७टी)।

छिहली स्त्री [दे] शिखा, चोटी ; (बृह ४)।

छिहा स्त्री [**स्पृहा**] स्पृहा, अभिलाष; (कुमा; हे १,१२८; षड्)।

छिहिंडिभिल्ल न [दे] दधि, दही ; (दे ३, ३०)।

छिहिअ वि [**स्पृष्ट**] छूआ हुआ ; (कुमा)।

छीअ स्त्रीन [**क्षुत**] छिक्का, छींक; (हे १, ११२; २, १७ ; ओघ ६४३ ; पडि)। स्त्री—°आ ; (श्रा २७)।

छीअमाण वि [**क्षुवत्**] छींक करता ; (आचा २,२,३)।

छीण वि [**क्षीण**] क्षय-प्राप्त, कृश, दुर्बल ; (हे २, ३ ; गा ८४)।

छीर न [**क्षीर**] १ जल, पानी ; २ दुग्ध, दूध ; (हे २, १७ ; गा ५६७)। °**विराली** स्त्री [°**बिडाली**] वन-स्पति-विशेष, भूमि-कूष्माण्ड ; (पण्ण १—पत्र ३५)।

छीरल पुं [**क्षीरल**] हाथ से चलने वाला एक तरह का जन्तु, साँप की एक जाति; (पण्ह १, १)।

छीवोल्लअ [दे] देखो **छिव्वोल्ल** ; (गा ६०३)।

छु सक [**क्षुद्**] १ पीसना। २ पीलना। कर्म—छुज्जइ; (उव)। कवकृ—**छुज्जमाण** ; (संथा ६०)।

छुअ देखो **छीअ** ; (प्राप्र)।

छुई स्त्री [दे] बलाका, बक-पङ्क्ति; (दे ३, ३०)।

छुंछुई स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच का पेड़ ; (दे ३, ३४)।

छुंछुमुसय न [दे] रणरणक, उत्सुकता, उत्कण्ठा ; (दे ३, ३१)।

छुंद सक [**आ+क्रम्**] आक्रमण करना। छुंदइ ; (हे ४, १६० ; षड्)।

छुंद वि [दे] बहु, प्रभूत ; (दे ३, ३०)।

छुक्कारण न [**धिक्कारण**] धिक्कारना, निंदा ; (बृह २)।

छुच्छ वि [**तुच्छ**] तुच्छ, क्षुद्र, हलका ; (हे १, २०४)।

छुच्छुक्कर सक [**छुच्छु+कृ**] 'छु छु' आवाज करना, श्वानादि को बुलाने को आवाज करना। छुच्छुक्करेंति; (आचा)।

छुज्जमाण देखो **छु**।

छुट्ट अक [**छुट्**] छूटना, बन्धन-मुक्त होना। छुट्टइ; (भवि)। छुट्टह ; (धम्म ६ टी)।

छुट्ट वि [**छुटित**] छुटा हुआ, बन्धन-मुक्त ; (सुपा ४०७ ; सूक्त ८६)।

छुट्ट वि [दे] छोटा, लघु ; (पात्र)।

छुट्टण न [**छोटन**] छुटकारा, मुक्ति ; (श्रा २७)।

छुड वि [दे] १ लिप्त ; २ क्षिप्त, फेंका हुआ ; (भवि)।

छुडु अ [दे] १ यदि, जो; (हे ४, ३८५; ४२२)। २ शीघ्र, तुरन्त ; (हे ४, ४०१)।

छुड्ड वि [**क्षुद्र**] क्षुद्र, तुच्छ, हलका, लघु ; (औप)।

छुड्डिया स्त्री [**क्षुद्रिका**] आभरण-विशेष ; (पण्ह २, ५—पत्र १४६ टी)।

छुण्ण वि [**क्षुण्ण**] १ चूर्णित, चूर २ किया हुआ ; २ विहत, विनाशित ; ३ अभ्यस्त ; (हे २, १७ ; प्राप्र)।

छुत्त वि [**छुप्त**] स्पृष्ट, छूआ हुआ ; (हे २, १३८ ; कुमा)।

छुत्ति स्त्री [दे] छूत, अशौच ; (सुक्त ८६)।

छुद्दहीर पुं [दे] १ शिशु, बच्चा, बालक ; २ शशी, चन्द्रमा ; (दे ३, ३८)।

छुद्दिया देखो **छुड्डिया** ; (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

छुद्द देखो खुद्द ; (प्राप्र) ।

छुद्द वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित ; (सण) ।

छुन्न देखो छुण्ण ; "जंतम्मि पावमइणा छुन्ना छन्नेण कम्मेण" (संथा ५६) ।

छुप्पंत देखो छुव ।

छुब्भ अक [क्षुभ्] क्षुब्ध होना, विचलित होना । छुब्भंति , (पि ६६) ।

छुब्भत्थ [दे] देखो छोब्भत्थ ; (दे ३, ३२) ।

छुभ देखो छुह । छुभइ, छुभेइ ; (महा ; रयण २०) । संकृ—छुभित्ता ; (वि ६६) ।

छुमा देखो छमा ; (दसचू १) ।

छुर सक [छुर्] १ लेप करना, लीपना । २ छेदन करना, छेदना । ३ व्याप्त करना ; (वा १२ ; पउम २८,२८) ।

छुर पुं [क्षुर] १ छुरा, नापित का अस्त्र ; २ पशु का नख, खुर ; ३ वृक्ष-विशेष, गोखरू ; ४ वाण, शर, तीर ; (हे २, १७ ; प्राप्र) । ५ न. तृण-विशेष; (पण्ण १) । °घरय न [°गृहक] नापित की छुरा वगैरः रखने की थैली; (निचू १)।

छुरण न [क्षुरण] अवलेपन ; (कप्पू) ।

छुरमड्डि पुं [दे] नापित, हजाम ; (दे ३, ३१) ।

छुरहत्थ पुं [दे. क्षुरहस्त] नापित, हजाम; (दे ३,३१) ।

छुरिआ स्त्री [दे] मृत्तिका, मिट्टी ; (दे ३, ३१) ।

छुरिआ } स्त्री [क्षुरिका] छुरी, चाकू ; (महा ; सुपा छुरिगा } ३८१ ; स १४७) ।

छुरिय वि [छुरित] १ व्याप्त ; २ लिप्त ; (पउम २८,२८) ।

छुरी स्त्री [क्षुरी] छुरी, चाकू ; (दे २, ४ ; प्रासू ६५) ।

छुल्ल देखो छुड्डु ; (सुपा १५६) ।

छुव सक [छुप्] स्पर्श करना, छूना । कर्म—छुप्पइ, छुविज्जइ ; (हे ४, २४६) । कवकृ—छुप्पंत ; (उप ३३६ ; ७२८ टी) ।

छुह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना । छुहइ ; (उव; हे ४, १४३) । संकृ—छोढूण, छोढूणं; (स ८५; विसे ३०१) ।

छुहा स्त्री [सुधा] १ अमृत, पीयूष ; (हे १, २६५ ; कुमा) । २ खड़ी, मकान पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष, चूना ; (दे १, ७८ ; कुमा) । °अर पुं [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा ; (पड्) ।

छुहा स्त्री [क्षुध्] क्षुधा, भूख, बुभुक्षा ; (हे १, १७, दे २, ४२) ।

छुहाइअ वि [क्षुधित] भूखा, बुभुक्षित ; (पाअ) ।

छुहाउल वि [क्षुदाकुल] ऊपर देखो ; (गा ५८१) ।

छुहालु वि [क्षुधालु] ऊपर देखो; (उप पृ १६०; १५० टी)।

छुहिअ वि [क्षुधित] ऊपर देखो ; (उव ; उप ७२८ टी , प्रासू १८०) ।

छुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ ; (दे ३, ३०) ।

छूढ वि [क्षिप्त] क्षिप्त, प्रेरित ; (हे २, ६२ ; १२७, कुमा) ।

छूहिअ न [दे] पार्श्व का परिवर्तन ; (षड्) ।

छेअ सक [छेदय्] १ छिन्न करना । २ तोड़वाना, छेदवाना । कर्म—छेइज्जंति; (पि ५४३) । संकृ—छेएत्ता; (महा) ।

छेअ पुं [दे] १ अन्त, प्रान्त, पर्यन्त ; (दे ३, ३८ ; पाअ से ७, ४८ ; कम्म १, ३६)। २ देवर, पति का छोटा भाई (दे ३, ३८) । ३ एक देश, एक भाग ; (से १, ७) । ४ निर्विभाग अंश ; (कम्म ४, ८२) ।

छेअ वि [छेक] निपुण, चतुर, हुशियार ; (पाअ ; प्रासू १७२ ; औप ; णाया १, १) । °ायरिय पुं [°चार्य] शिल्पाचार्य, कलाचार्य ; (भग ७, ६) ।

छेअ पुं [छेद] १ नाश, विनाश ; "विज्जाच्छेओ कओ भद्द" (सुर ५, १६४) । २ खण्ड, विभाग ; (से १, ७) । ३ छेदन, कर्तन ; "जीहाछेअं" (गा १५३; से ७, ४८) । ४ छः जैन आगम-ग्रन्थ, वे ये हैं ,—निशीथसूत्र, महानिशीथसूत्र, दशा-श्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहारसूत्र, पञ्चकल्पसूत्र; (विसे २२६५) । ५ छिन्न विभाग, अलग किया हुआ अंश; (स ७, ४८) । ६ कमी, न्यूनता ; (पंचा १६) । ७ प्रायश्चित्त विशेष ; (ठा ४,१) । ८ शुद्धि-परीक्षा का एक अंग, धर्म-शुद्धि जानने का एक लक्षण, निर्दोष बाह्य आचरण ; "सो छेएण सुद्धोत्ति" (पंचव ३) । °रिह न [°र्ह] प्रायश्चित्त-विशेष ; (ठा १०) ।

छेअअ } वि [छेदक] छेदन करने वाला, काटने वाला. छेअग } (नाट ; विसे ५१३) ।

छेअण न [छेदन] १ खण्डन, कर्तन, द्विधा करण; (सम ३६. प्रासू १४०) । २ कमी, न्यूनता, ह्रास ; (आचा) । ३ शस्त्र, हथियार; (सुअ २, ३)। ४ निश्चायक वचन; (बृह १) ५ सूक्ष्म अवयव; (बृह १)। ६ जल-जीव विशेष ; (सुअ २, ३) ।

छेओवट्ठावण न [छेदोपस्थापन] जैन संयम-विशेष, बड़ी दीक्षा ; (नव २६ ; चा ११) ।

छेओवट्ठावणिय न [छेदोपस्थापनीय] ऊपर देखो ; (सक)।

छेंछई [दे] देखो छिछई ; (गा २०१)।

छेंड [दे] देखो छिंड ; (दे ३, ३५)।

छेंडा स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी; २ नवमालिका, लता-विशेष; (दे ३, ३६)।

छेंडी स्त्री [दे] छोटी गली, छोटा रास्ता ; (दे ३, ३१)।

छेग देखो छेअ=छेक ; (दे ३, ४७)।

छेज्ज देखो छिज्ज ; (दस २ ; महा)।

छेण पुं [दे] स्तेन, चोर ; (षड्)।

छेत्त देखो खेत ; (गा ६ ; उप ३५७टी ; स १६४ ; भवि)।

छेत्तर न [दे] शूर्पवगैरः पुराना गृहोपकरण; (दे ३, ३२)।

छेत्तसोवणय न [दे] खेत में जागना ; (दे ३, ३२)।

छेत्तु वि [छेत्तृ] छेदने वाला, काटने वाला ; (आचा)।

छेद देखो छेअ=छेदय्। कर्म—छेदीअंति ; (पि ५४३)। संकृ—छेद्दिऊण, छेद्देत्ता ; (पि ५८६ ; भग)।

छेद देखो छेअ=छेद ; (पउम ४४, ६७ ; औप ; वव १)।

छेदअ वि [छेदक] छेदने वाला ; (पि २३३)।

छेदोवट्ठावणिय देखो छेओवट्ठावणिय ; (ठा ३, ४)।

छेप्प पुं [दे] १ स्थासक, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का विलेपन ; २ चोर, चोरी करने वाला ; (दे ३, ३६)।

छेप्प न [दे. शेप] पुच्छ, लाङ्गूल , (गा ६२ ; विपा १, २ ; गउड)।

छेभय पुं [दे] चन्दन आदि का विलेपन, स्थासक ; (दे ३,३२)।

छेल, छेलअ, छेलय पुंस्त्री [दे] अज, छाग, बकरा ; (दे ३, ३२ ; स १५०)। स्त्री—°लिआ, °ली ; (पि २३१ ; पण्ह १, १—पत्र १४)।

छेलावण न [दे] १ उत्कृष्ट हर्ष-ध्वनि ; २ बाल-क्रीडन ; ३ चीत्कार, ध्वनि-विशेष ; "छेलावणमुक्किट्ठाइ बालकीलावणं च सेंटाइ" (आवम)।

छेलिय न [दे] सेण्टित, चीत्कार करना, अव्यक्त ध्वनि-विशेष; (पण्ह १, ३ ; विसे ५०१)।

छेली स्त्री [दे] थोडे फूल वाली माला ; (दे ३, ३१)।

छेवग न [दे] मारी वगैरः फैली हुई बिमारी ; (वव ५ ; निचू १)।

छेवट्ठ, छेवट्ठ न [दे. सेवार्त्त, छेदवृत्त] १ संहनन-विशेष, शरीर-रचना-विशेष, जिसमें मर्कट-बन्ध, वेठन, और खीला न हो कर यों ही हड्डियाँ आपस में जुडी हो ऐसी शरीर-रचना ; (सम ४४ ; १४६ ; भग ; कम्म १, ३६)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पूर्वोक्त संहनन की प्राप्ति होती है वह कर्म ; (कम्म १, ३६)।

छेवाडी [दे] देखो छिवाडी ; (पत्र ८० ; निचू १२ ; जीव ३)।

छेह पुं [दे. क्षेप] प्रेरण, क्षेपण ; "तो वअपरिणामोणअभुमआवलिरुब्भमाणदिट्ठिच्छेहो" (से ४, १७)।

छेहत्तरि (अप) देखो छाहत्तरि ; (पिंग)।

छोइअ पुं [दे] दास, नौकर ; (दे ३, ३३)।

छोइआ स्त्री [दे] छिलका, ईख वगैरः की छाल; (उप ७६८ टी) , "उच्छुखंडे पत्तियए छोइयं पणामेइ"(महा)।

छोड सक [छोटय्] छोड़ना, बन्धन से मुक्त करना । छोडइ, छोडेइ ; (भवि ; महा) । संकृ—छोडिवि; (सुपा २४६)।

छोडाविय वि [छोटित] छुड़वाया हुआ, बन्धन-मुक्त कराया हुआ ; (स ६२)।

छोडि स्त्री [दे] छोटी, लघु, क्षुद्र ; (पिंग)।

छोडिअ वि [छोटित] १ छोड़ा हुआ, बन्धन-मुक्त किया हुआ; "वत्थाओ छोडिओ गंठी " (सुपा ५०४; स ४३१)। २ घट्टित, आहत ; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

छोडिअ देखो फोडिअ ; (औप)।

छोढूण, छोढूणं देखो छुह।

छोब्भ पुं [दे] पिशुन, खल, दुर्जन ; (दे ३, ३३)। देखो छोभ।

छोब्भ वि [क्षोभ्य] क्षोभ-योग्य, क्षोभणीय , "होंति सत्तपरिवज्जिया य छोभा(? ब्भा) सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया" (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

छोब्भत्थ वि [दे] अप्रिय, अनिष्ट ; (दे ३, ३३)।

छोब्भाइत्ती स्त्री [दे] १ अस्पृश्या, छूने को अयोग्या ; २ द्वेष्या, अप्रीतिकर स्त्री ; (दे ३, ३६)।

छोभ [दे] देखो छोब्भ ; (दे ३, ३३ टि)। २ निस्सहाय, दीन ; (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। ३ न. अभ्याख्यान, कलंक-आरोपण, दोषारोप ; (बृह १ ; वव २)। ४ न. वन्दन-विशेष, दो खमासमण-रूप वन्दन ; (गुभा १)। ५ आघात; "कोवेण धमधमंतो दंतच्छोभे य देइ सो तम्मि" (महा)।

छोम देखो छउम ; (गाया १, ६—पत्र १५७)।

छोयर पुं [दे] छोरा, लड़का, छोकरा ; (उप पृ ३१५)।

छोलिअ देखो छोडिअ=छोटित ; (पिंग)।

छोल्ल सक [**तक्ष्**] छीलना, छाल उतारना। छोल्लइ; (षड्)। कर्म—छोल्लिज्जंतु ; (हे ४, ३६५)।

छोल्लण न [**तक्षण**] छीलना, निस्तुषीकरण, छिलका उतारना ; (णाया १, ७)।

छोल्लिय वि [**तष्ट**] छिलका उतारा हुआ, तुष-रहित किया हुआ ; (उप १७५)।

छोह पुं [**दे**] १ समूह, यूथ, जत्था ; २ विक्षेप ; (दे ३, ३६)। ३ आघात ; "ताव य सो मायंगा छोहं जा देइ उत्तरिज्जम्मि" (महा)।

छोह पुं [**क्षेप**] १ क्षेपण, फेंकना ; "नियदिट्ठिच्छोहअमय-धाराहिं" (सुपा २६८)।

छोहर [**दे**] देखो **छोयर** ; (सुपा ५५२)।

छोहिय वि [**क्षोभित**] क्षोभ-प्राप्त, घबड़ाया हुआ, व्याकुल किया गया ; (उप १३७ टी)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवम्मि** छआराइसद्दसंकलणो पंचदसमो तरंगो समत्तो।

ज

ज पुं [**ज**] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप)।

ज स [**यत्**] जो, जो कोई ; (ठा ३, १ ; जी ८ ; कुमा ; गा १०६)।

°**ज** वि [°**ज**] उत्पन्न ; "आसाइयरसनेओ होइ विसेसेण णेहजो दहणो" (गा ७६६)। "आरंभज"—(आचा)।

जअड अक [**त्वर्**] त्वरा करना, शीघ्रता करना। जअडइ; (हे ४, १७० ; षड्)। वकृ—**जअडंत** ; (हे ४, १७०)। प्रयो— जअडावंति ; (कुमा)।

जअल वि [**दे**] छन्न, आच्छादित ; (षड्)।

जइ पुं [**यति**] १ साधु, जितेन्द्रिय, संन्यासी ; (औप ; सुपा ४४४)। २ छन्द-शास्त्र में प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, कविता का विश्राम-स्थान ; (धम्म १ टी)।

जइ अ [**यदा**] जिस समय, जिस वक्त ; (प्राप्र)।

जइ अ [**यदि**] यदि, जो ; (सम १५५; विपा १,१)। °**वि** अ [°**अपि**] जो भी ; (महा)।

जइ अ [**यत्र**] जहां, जिस स्थान में ; (षड्)।

जइ वि [**जयिन्**] जीतने वाला, विजयी ; (कुमा)।

जइआ अ [**यदा**] जिस समय, जिस वक्त ; (उव ; हे ३, ६५)।

जइच्छा स्त्री [**यदृच्छा**] १ स्वतन्त्रता ; २ स्वेच्छाचार ; (राज)।

जइण वि [**जैन**] १ जिन-देव का भक्त, जिन-धर्मी; २ जिन भगवान् का, जिन-देव से संबन्ध रखने वाला; (विसे ३८३ ; धम्म ६ टी; सुर ८, ६४)। स्त्री—°**णी**; (पंचा ३)।

जइण वि [**जयिन्**] जीतने वाला; "मणपवणजइणवेगं" (उवा ; णाया १, १—पत्र ३१)।

जइण वि [**जविन्**] वेग वाला, वेग-युक्त, त्वरा-युक्त; "उवइयउप्पइयचवलजइणसिग्घवेगाहिं" (औप)।

जइत्त वि [**जैत्र**] १ जीतने वाला, विजयी ; (ठा ६)। २ पुं. नृप-विशेष; (रंभा)।

जइत्ता देखो **जय**=जि।

जइय वि [**जयिक**] जयावह, विजयी; (णाया १, ८—पत्र १३३)

जइय वि [**यष्टृ**] याग करने वाला; "तुब्भे जइया जन्नाणं" (उत्त २५, ३८)।

जइयव्व देखो **जय**=यत्।

जइवा अ [**यदिवा**] अथवा, या; (वव १)।

जइस (अप) वि [**यादृश**] जैसा, जिस तरह का; (षड्)।

जउ न [**जतु**] लाक्षा, लाख ; (ठा ४,४ ; उप पृ २४)।

जउ पुं [**यदु**] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा ; २ सुप्रसिद्ध क्षत्रिय वंश ; (उव)। °**णंदण** पुं [°**नन्दन**] १ यदु-वंशीय, यदुवंश में उत्पन्न। २ श्रीकृष्ण ; (उव)।

जउ पुं [**यजुस्**] वेद-विशेष, यजुर्वेद , (अणु)।

जउण पुं [**यमुन**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ; (उप ४५७)।

जउणा, **जउ णा**, **जउ णा** } स्त्री [**यमुना**] भारत की एक प्रसिद्ध नदी ; (ठा १, २ ; हे १, ४ ; १७८)।

जओ अ [**यतः**] १ क्योंकि, कारण कि ; (श्रा २८)। २ जिससे, जहां से, (प्रासू ८२, १४८)।

जं अ [**यत्**] १ क्योंकि, कारण कि ; २ वाक्यान्तर का संवन्ध-सूचक अव्यय ; (हे १, २४ ; महा ; गा ६६)। °**किंचि** अ [°**किञ्चित्**] १ जो कुछ, जो कोई; (पडि ; पण्ह १, ३)। २ असंबद्ध, अयुक्त, तुच्छ, नगण्य; (पंचव४)।

(d) $2x - 3y = 0$

जंकयसुकय वि [दे] अल्प सुकृत से ग्राह्य, थोड़े उपकार से अधीन होने वाला; (दे ३, ४५)।

जंगम वि [जंगम] १ चलने वाला, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में जा सकता हो वह (ठा ६; भवि)। २ छन्द विशेष; (पिंग)।

जंगल पुं [जङ्गल] १ देश-विशेष, सपादलक्ष देश; (कुमा; सत्त ६७ टी)। २ निर्जल प्रदेश; (बृह १)। ३ न. मांस, "गयकुंभवियारियमोत्तिएहिं जं जंगलं किणइ" (वज्जा ४२)।

जंगा स्त्री [दे] गोचर-भूमि, पशुओं को चरने की जगह; (दे ३, ४०)

जंगिअ वि [जाङ्गमिक] १ जंगम वस्तु से संबन्ध रखने वाला, जंगम-संबन्धी। २ न. जंगम जीवों के रोम का बना हुआ कपड़ा, (ठा ३, ३; ५, ३; कस)।

जंगुलि स्त्री [जाङ्गुलि] विष उतारने का मन्त्र, विष-विद्या; (ती ४५)।

जंगुलिय पुं [जाङ्गुलिक] गारुडिक, विष-मन्त्र का जानकार; (पउम १०५, ५७)।

जंगोल स्त्रीन [जाङ्गुल] विष-विघातक तन्त्र, विष-विद्या, आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें विष की चिकित्सा का प्रतिपादन है; (विपा १, ७—पत्र ७५)। स्त्री—°**ली**; (ठा ८)।

जंघा स्त्री [जङ्घा] जाँघ, जानु के नीचे का भाग; (आचा; कप्प)। °**चर** वि [°चर] पादचारी, पैर से चलने वाला; (अणु)। °**चारण** पुं [°चारण] एक प्रकार के जैन मुनि, जो अपने तपोबल से आकाश में गमन कर सकते हैं; (भग २०, ८; पव ६७)। °**संतारिम** वि [°संतार्य] जाँघ तक पानी वाला जलाशय; (आचा २, ३, २)।

जंघाच्छेअ पुं [दे] चत्वर, चौक; (दे ३, ४३)।

जंघामय } वि [दे] जंघाल, द्रुत-गामी, वेग से जाने **जंघालुअ** } वाला; (दे ३, ४२; षड्)।

जंत सक [यन्त्र्] १ वश करना, काबू में करना। २ जकड़ना, बाँधना; (उप पृ १३१)।

जंत न [यन्त्र] १ कल, युक्ति-पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिए पदार्थ-विशेष, तिल-यन्त्र, जल-यन्त्र आदि; (जीव ३; गा ५५४; पडि; महा; कुमा)। २ वशीकरण, रक्षा वगैरः के लिए किया जाता लेख-प्रयोग; (पण्ह १, २)। ३ संयमन, नियन्त्रण; (राय)। °**पत्थर** पुं [°प्रस्तर] गोफण का पत्थर; (पण्ह १, २)। °**पिल्लणकम्म** न [°पीडनकर्मन्] यन्त्र द्वारा तिल, ईख आदि पीलने का धंधा; (पडि)। °**पुरिस** पुं [°पुरुष] यन्त्र-निर्मित पुरुष, यन्त्र से पुरुष की चेष्टा करने वाला पुतला; (आवम)। °**वाडचुल्ली** स्त्री [°पाटचुल्ली] इक्षु-रस पकाने का चुल्हा; (ठा ८—पत्र ४१७)। °**हर** न [°गृह] धारा-गृह, पानी का फव्वारा वाला स्थान; (कुमा)।

जंत देखो **जा**=या।

जंतण न [यन्त्रण] १ नियन्त्रण, संयमन, काबू। २ रोकने वाला, प्रतिरोधक, (से ४, ४६)।

जंतिअ पुं [यान्त्रिक] यन्त्र-कर्म करने वाला, कल चलाने वाला; (गा ५५४)।

जंतिअ वि [यन्त्रित] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ; (पउम ५३, १४५)।

जंतु पुं [जन्तु] जीव, प्राणी; (उत्त ३; सण)।

जंतुग न [जन्तुक] जलाशय में होने वाला तृण-विशेष (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

जंप सक [जल्प्] बोलना, कहना। जंपइ; (प्राप्र)। वकृ—**जंपंत, जंपमाण**; (महा; गा १९८; सुर ४, २)। संकृ—**जंपिऊण, जंपिऊणं, जंपिय**; (प्रारू; महा)। हेकृ—**जंपिउं**; (महा)। कृ—**जंपिअव्व**; (गा २४२)।

जंपण न [जल्पन] उक्ति, कथन; (श्रा १२; गउड)।

जंपण न [दे] १ अकीर्ति अपयश; २ मुख, मुँह; (दे ३, ५१; भवि)।

जंपय वि [जल्पक] बोलने वाला, भाषक; (पण्ह १, ३)।

जंपाण न [जम्पान] १ वाहन-विशेष, सुखासन, शिबिका-विशेष; (ठा ४, ३; औप; सुपा ३६३; उप ६५६)। २ मृतक-यान, शव-यान; (सुपा २१६)।

जंपिच्छअ वि [दे] जिसको देखे उसी को चाहने वाला; (दे ३, ४४; पाअ)।

जंपिय वि [जल्पित] कथित, उक्त; (प्रासु १३०)।

जंपिय देखो **जंप**।

जंपिर वि [जल्पितृ] १ जल्पाक, वाचाट; (दे २, ६७)। २ बोलने वाला, भाषक; (हे २, १४५; श्रा २७; गा १९२; सुपा ४०३)।

जंपेक्खिरमग्गिर } वि [दे] जिसको देखे उसीकी याचना करने **जंपेच्छिरमग्गिर** } वाला; (षड्; दे ३, ४४)।

जंबवई स्त्री [**जाम्बवती**] श्रीकृष्ण की एक पत्नी ; (अंत १४; आचू १) ।

जंबाल न [**दे**] १ जंबाल, सैवाल, जलमल, सिवार ; (दे ३, ४२ ; पाम्र) ।

जंबाल पुंन [**जम्बाल**] १ कर्दम, कादा, पंक ; (पाम्र ; ठा ३, ३) । २ जरायु, गर्भ-वेष्टन चर्म ; (सूम्र १, ७)।

जंबीरिय (अप) न [**जम्बीर**] नींबु, फल-विशेष ; (सण)।।

जंबु पुं [**जम्बु**] १ जम्बुक, सियार ; " उद्धमुहुन्नइयजंबुगणं" (पउम १०५, ५७) । २ एक प्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी के शिष्य, अन्तिम केवली ; (कप्प ; वसु ; विपा १, १) । ३ न. जम्बू वृक्ष का फल ; (श्रा ३६)।

जंबु° देखो **जंबू** ; (कप्प ; कुमा ; इक ; पउम ५६ , २२ ; से १३, ८६) ।

जंबुअ पुं [**दे**] १ वेतस वृक्ष; २ पश्चिम दिक्पाल; (दे ३, ५२)।

जंबुअ } पुं [**जम्बुक**] १ सियार, गीदड़ ; (प्रासू १७१;
जंबुग } उप ७६८ टी ; पउम १०५, ६४) । २ जम्बू-वृक्ष का फल, जामुन ; (सुपा २२६) ।

जंबुल पुं [**दे**] १ वानीर वृक्ष ; २ न. मद्य-भाजन, सुरा-पात्र ; (दे ३, ४१) ।

जंबुल्ल वि [**दे**] जल्पाक, वाचाट , बकवादी ; (पाम्र) ।

जंबुवई देखो **जंबवई** ; (अंत ; पडि) ।

जंबू स्त्री [**जम्बू**] १ वृक्ष-विशेष, जामुन का पेड़ ; (गाया १, १ ; औप) । २ जंबू वृक्ष के आकार का एक रत्न-मय शाश्वत पदार्थ, सुदर्शना, जिसके कारण यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता है ; (जं १) । ३ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी का मुख्य शिष्य; (जं १) । **°दीव** पुं [**°द्वीप**] भूखण्ड विशेष, द्वीप-विशेष, सब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप, जिसमें यह भारत आदि क्षेत्र वर्तमान हैं ; (जं १; इक) । **°दीवग** वि [**°द्वीपक**] जम्बू-द्वीप-संबन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न ; (ठा ४, २; ६) । **°दीवपण्णत्ति** स्त्री [**°द्वीपप्रज्ञप्ति**] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें जंबूद्वीप का वर्णन है; (जं १) । **°पीढ, °पेढ** न [**°पीठ**] सुदर्शना-जम्बू का अधिष्ठान-प्रदेश; (जं ४; इक) । **°पुर** न [**°पुर**] नगर-विशेष ; (इक)। **°मालि** पुं [**°मालिन्**] रावण का एक पुत्र , रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, २२ ; से १३ , ८६) । **°मेघपुर** न [**°मेघपुर**] विद्याधर-नगर विशेष ; (इक) । **°संड** पुं [**°षण्ड**] ग्राम-विशेष ; (आवम) । **°सामि** पुं [**°स्वामिन्**] सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष ; (आवम) ।

जंबूअ पुं [**जम्बूक**] सियार, गीदड़ ; (ओघ ८४ भा) ।

जंबूणय न [**जाम्बूनद**] १ सुवर्ण, सोना ; (सम ६५ ; पउम ५. १२६) । २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ; (पउम ४८, ६८) ।

जंबूलय पुंन [**जम्बूलक**] उदक-भाजन विशेष; (उवा)।

जंभ पुं [**दे**] तुष, धान्य वगैरः का छिलका ; (दे ३,४०)।

जंभंत देखो **जंभा**=जृम्भ् ।

जंभग वि [**जृम्भक**] १ जँभाई लेने वाला । २ पुं. व्यन्तर-देवों की एक जाति ; (कप्प ; सुपा ४०) ।

जंभणंभण } वि [**दे**] स्वच्छन्द-भाषी, जो मरजी में आवे
जंभणभण } वह बोलने वाला ; (षड् ; दे ३, ५४) ।
जंभणय }

जंभणी स्त्री [**जृम्भणी**] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-विशेष ; (सूम्र २, २ ; पउम ७, १४४) ।

जंभय देखो **जंभग**; (णाया १, १ ; अंत; भग १४, ८)।

जंभल पुं [**दे**] जड़, सुस्त, मन्द ; (दे ३, ४१) ।

जंभा स्त्री [**जृम्भा**] जँभाई, जृम्भण ; (विपा १, ८) ।

जंभा } अक [**जृम्भ्**] जँभाई लेना । जंभाइ, जंभाअइ;
जंभाअ } (हे ४, १५७ ; २४० ; प्राप्र ; षड्) । वकृ—**जंभंत, जंभाअंत**; (गा ५४६ ; से ७, ६५ ; कप्प) ।

जंभाइअ न [**जृम्भित**] जँभाई, जृम्भा ; (पडि) ।

जंभिय न [**जृम्भित**] १ जँभाई, जृम्भा । २ पुं. ग्राम-विशेष, जहां भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था ; यह गाँव पारसनाथ पहाड़ के पास की ऋजुवालिका नदी के किनारे पर था ; (कप्प) ।

जक्ख पुं [**यक्ष**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पगह १, ४ ; औप) । २ धनेश, कुवेर, यक्षाधिपति ; (प्राप्र)। ३ एक विद्याधर-राजा, जो रावण का मौसेरा भाई था ; (पउम ८, १०२) । ४ द्वीप-विशेष ; ५ समुद्र-विशेष; (चंद २०) । ६ श्वान, कुत्ता ; " अह आयविराहणया जक्खुल्लिहणे पवयणम्मि " (ओघ १६३ भा) । **°कद्दम** पुं [**°कर्दम**] १ केसर, अगर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी का समभाग मिश्रण ; (भवि) । २ द्वीप-विशेष ; ३ समुद्र-विशेष; (चंद २०)। **°ग्गह** पुं [**°ग्रह**] यक्षावेश, यक्ष-कृत उपद्रव; (जीव ३; जं २) । **°णायग** पुं [**°नायक**]

यक्षों का अधिपति, कुबेर ; (अणु)। °दित्त न [°दीप्त] देखो नीचे °यदित्तय ; (पव २६)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] महर्षि स्थूलभद्र की बहिन, एक जैन साध्वी ; (पडि)। °भद्द पुं [°भद्र] यक्षद्वीप का अधिपति देव-विशेष; (चंद २०)। °मंडलपविभत्ति स्त्री [°मण्डलप्रविभक्ति] एक तरह का नाट्य ; (राय)। °मह पुं [°मह] यक्ष के लिए किया जाता महोत्सव ; (आचा २, १, २)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] यक्ष द्वीप का अधिपति देव ; (चंद २०)। °महावर पुं [°महावर] यक्ष समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष ; (चंद २०)। °राय पुं [°राज] १ यक्षों का राजा, कुबेर। २ प्रधान यक्ष ; (सुपा ४६२)। ३ एक विद्याधर राजा ; (पउम ८, १२४)। °वर पुं [°वर] यक्ष-समुद्र का अधिपति देव-विशेष : (चंद २०)। °इट्ठ वि [°विष्ट] यक्ष का आवेश वाला, यक्षाविष्ठित ; (ठा ५, १ ; वव २)। °यदित्तय, °लित्तय न [°दीप्तक] १ कभी २ किसी दिशा में बिजली के समान जो प्रकाश होता है वह, आकाश में व्यन्तर-कृत अग्नि-दीपन ; (भग ३, ६ ; वव ७)। २ आकाश में दिखाता अग्नि-युक्त पिशाच ; (जीव ३)। °विस पुं [°वेश] यक्ष-कृत आवेश, यक्ष का मनुष्य-शरीर में प्रवेश; (ठा २, १)। °हिव पुं [°धिप] १ वैश्रमण, कुबेर, यक्ष-राज। २ एक विद्याधर राजा ; (पउम ८, ११२)। °हिवइ पुं [°धिपति] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पाअ ; पउम ८, ११६)।

जक्खरत्ति स्त्री [दे. यक्षरात्रि] दीपालिका, दीवाली, कार्तिक वदि अमास का पर्व ; (दे ३, ४३)।

जक्खा स्त्री [यक्षा] एक प्रसिद्ध जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी ; (पडि)।

जक्खिंद पुं [यक्षेन्द्र] १ यक्षों का स्वामी, यक्षों का राजा ; (ठा ४, १)। २ भगवान् अरनाथ का शासनाधिष्ठायक देव ; (पव २६ ; संति ८)।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] १ यक्ष-योनिक स्त्री, देवीओं की एक जाति ; (आवम)। २ भगवान् श्रीनेमिनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२)।

जक्खी स्त्री [याक्षी] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी)।

जक्खुत्तम पुं [यक्षोत्तम] यक्ष-देवों की एक अवान्तर जाति ; (पण्ण १)

जक्खेस पुं [यक्षेश] १ यक्षों का स्वामी। २ भगवान् अभिनन्दन का शासन-यक्ष ; (संति ७)।

जग न [यकृत्] पेट की दक्षिण-ग्रन्थि ; (पण्ह १, १)।

जग पुं [दे] जन्तु, जीव, प्राणी ; "पुढो जगा परिसंखाय भिक्खू" (सूअ १, ७, २०)।

जग न [जगत्] जग, ससार, दुनियाँ ; (स २४६ ; सुर ३, १३१)। °गुरु पुं [°गुरु] १ जगत् में सर्व-श्रेष्ठ पुरुष ; २ जगत् का पूज्य ; ३ जिन-देव, तीर्थंकर ; (सं २१ ; पंचा ४)। °जीवण वि [°जीवन] १ जगत् को जीलाने वाला ; २ पुं. जिन-देव ; (राज)। °णाह पुं [°नाथ] जगत् का पालक, परमेश्वर, जिन-देव ; (गदि)। °पियामह पुं [°पितामह] १ ब्रह्मा, विधाता। २ जिन-देव ; (णंदि)। °प्पगास वि [°प्रकाश] जगत् का प्रकाश करने वाला, जगत्प्रकाशक ; (पउम २२, ४७)। °प्पहाण न [°प्रधान] जगत् में श्रेष्ठ ; (गउड)।

जगई स्त्री [जगती] १ प्राकार, किला, दुर्ग ; (सम १३ ; चैत्य ६१)। २ पृथिवी ; (उत्त १)।

जगजग अक [चकास्] चमकना, दीपना। वकृ—**जगजगंत, जगजगेंत** ; (पउम ७७, २३ ; १४, १३४)।

जगड सक [दे] १ झगड़ना, झगड़ा करना, कलह करना। २ कदर्थन करना, पीड़ना। ३ उठाना, जागृत करना। वकृ—**जगडंत** ; (भवि)। कवकृ— **जगडिज्जंत**; (पउम ८२, ६ ; राज)।

जगडण न [दे] नीचे देखो ; (उव)।

जगडणा स्त्री [दे] १ झगड़ा, कलह। २ कदर्थन, पीड़न ; "सेणा च्चिय वम्महणायगस्स जगजगडणापसत्तस्स" (उप ५३० टी)।

जगडिअ वि [दे] विद्रावित, कदर्थित ; (दे ३, ४४ ; सार्ध ६७ ; उव)।

जगर पुं [जगर] सनाह, कवच, वर्म ; (दे ३, ४१)।

जगल न [दे] १ पङ्क वाली मदिरा, मदिरा का नीचला भाग ; (दे ३, ४१)। २ ईख की मदिरा का नीचला भाग ; (दे ३, ४१ ; पाअ)।

जगार पुं [दे] राब, यवागू ; (पत्र ४)।

जगार पुं [जकार] 'ज' अक्षर, 'ज' वर्ण ; (निचू १)।

जगार पुं [यत्कार] 'यत्' शब्द ; "जगारुद्दिट्ठाणं तगारेण निद्देसो कीरइ" (निचू १)।

जगारी स्त्री [जगारी] अन्न-विशेष, एक प्रकार का क्षुद्र अन्न ; "अन्नाणं ओयणजवगमुग्गजगारीइ" (पंचा ५) ।

जगुत्तम वि [जगदुत्तम] जगत्-श्रेष्ठ, जगत् में प्रधान ; (पण्ह २, ४) ।

जग्ग अक [जागृ] १ जागना, नींद से उठना । २ सचेत होना, सावधान होना । जग्गइ, जग्गि ; (हे ४, ८० ; षड् ; प्रासू ६८) । वकृ—**जग्गंत** ; (सुपा १८५) । प्रयो—जग्गावइ ; (पि ५५६) ।

जग्गण न [जागरण] जागना, निद्रा-त्याग; (ओघ १०६) ।

जग्गविअ वि [जागरित] जगाया हुआ, नींद से उठाया हुआ ; (सुपा ३३१) ।

जग्गह पुं [यद्ग्रह] जो प्राप्त हो उसे ग्रहण करने की राजाज्ञा ; "रण्णा जग्गहो घोसिओ" (आवम) ।

जग्गाविअ देखो **जग्गविअ** ; (से १०, ५६) ।

जग्गाह देखो **जग्गह** ; (आक) ।

जग्गिअ वि [जागृत] जगा हुआ, त्यक्त-निद्र ; (गा ३८५; कुमा ; सुपा ५६३) ।

जग्गिर वि [जागरितृ] १ जागने वाला ; २ सावचेत रहने वाला ; (सुपा २१८) ।

जघण न [जघन] कमर के नीचे का भाग, ऊरु-स्थल ; (कप्प ; औप) ।

जच्च पुं [दे] पुरुष, मरद, आदमी ; (दे ३, ४०) ।

जच्च वि [जात्य] १ उत्तम जात वाला, कुलीन, श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर ; (णाया १, १; श्रा १२ ; सुपा ७७; कप्प) । २ स्वाभाविक, अकृत्रिम , (तंदु) । ३ सजातीय, विजाति-मिश्रण से रहित, शुद्ध ; (जीव ३) ।

जच्चंजण न [जात्याञ्जन] १ श्रेष्ठ अञ्जन ; (णाया १, १) । २ मर्दित अञ्जन, तैल वगैरः से मर्दित अञ्जन ; (कप्प) ।

जच्चंदण न [दे] १ अगरु, सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है ; २ कुंकुम, केसर ; (दे ३, ५२) ।

जच्चंध वि [जात्यन्ध] जन्म से अन्धा; (सुपा ३६५) ।

जच्चण्णिय, जच्चन्निय वि [जात्यन्वित] सुकुल में उत्पन्न, श्रेष्ठ जाति का ; (सूअ १, १० ; बृह ३) ।

जच्चास पुं [जात्यश्व, जात्याश्व] उत्तम जाति का घोड़ा; (पउम ५४, २६) ।

जच्चिय (अप) वि [जातीय] समान जाति का ; (सण) ।

जच्चिर न [यच्चिर]जहाँ तक, जितने समय तक ; (वव ७)।

जच्छ सक [यम्] १ उपरम करना, विराम करना । २ देना, दान करना । जच्छइ ; (हे ४, २१५ ; कुमा) ।

जच्छंद वि [दे] स्वच्छन्द, स्वैर ; (दे ३, ४३ ; षड्) ।

जज देखो **जय**=यज् । वकृ—**जजमाण**; (नाट—शकु ७२)।

जजु देखो **जउ** = यजुष् ; (णाया १, ५ ; भग) ।

जज्ज वि [जय्य] जो जीता जा सके वह, जीतने को शक्य; (हे २, २४) ।

जज्जर वि [जर्जर] जीर्ण, सच्छिद्र, खोखला, जाँजर ; (गा १०१ ; सुर ३, १३६) ।

जज्जर सक [जर्जरय्] जीर्ण करना, खोखला करना । कवकृ—**जज्जरिज्जंत, जज्जरिज्जमाण** ; (नाट—चैत ३३ ; सुपा ६४) ।

जज्जरिय वि [जर्जरित] जीर्ण किया गया, छिद्रित, खोखला किया हुआ ; (ठा ४, ४ ; सुर ३, १६५ ; कस) ।

जट्ट पुं [जर्त] १ देश-विशेष ; (भवि) । २ उस देश का निवासी ; (हे २, ३०) ।

जट्ठ वि [इष्ट] यजन किया हुआ, याग किया हुआ ; (स ५५) ।

जट्ठि स्त्री [यष्टि] लकड़ी ; "जट्ठिमुट्ठिलउडपहारेहिं" (महा; प्राप्र) ।

जड वि [जड] १ अचेतन, जीव-रहित पदार्थ ; २ मूर्ख, आलसी, विवेक-शून्य , (पाअ ; प्रासू ७१) । ३ शिशिर, जाडे से ठंढा होकर चलने को अशक्त; (पाअ) ।

जड देखो **जढ** ; (षड्) ।

जड°, जडा स्त्री [जटा] सटे हुए वाल, मिले हुए वाल ; (हेका २५७ ; सुपा २५१) । **°धर** वि [°धर] १ जटा को धारण करने वाला । २ पु. जटा-धारी तापस, संन्यासी ; (पउम ३६, ७५) । **°धारि** पुं [°धारिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पउम ३३, १) ।

जडाउ, जडाउण पुं [जटायु] स्वनाम-प्रसिद्ध गृध्र पक्षि-विशेष ; (पउम ४४, ५५ ; ४०) ।

जडागि पुं [जटाकिन्] ऊपर देखो ; (पउम ४१, ६५) ।

जडाल वि [जटावत्] जटा-युक्त, जटा-धारी ; (हे २, १५६) ।

जडासुर पुं [जटासुर] असुर-विशेष ; (वेणी १७७) ।

जडि वि [जटिन्] १ जटा वाला, जटा-युक्त; २ पुं जटाधारी तापस ; (औप ; भत्त १००)।

जडिअ वि [दे. जटित] जड़ित, जड़ा हुआ, खचित, संलग्न; (दे ३, ४१ ; महा ; पाअ) ।

जडिम पुंस्त्री [जडिमन्] जड़ता, जड़पन, जाड्य; (सुपा ६) ।

जडियाइलग } पुं [दे. जटिकादिलक] ग्रह-विशेष, ग्रहा-
जडियाइलय } धिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३; चंद २०) ।

जडिल वि [जटिल] १ जटा-वाला, जटा-युक्त ; (उवा ; कुमा २, ३५) । २ व्याप्त, खचित; "उल्लसियबहलजालो-लिजडिले जलणे पवेसो वा" (सुपा ४६५) । ३ पुं. सिंह, केसरी ; ४ जटाधारी तापस ; (हे १, १६४ ; भग १५ ; पव ६४) ।

जडिलय पुं [दे] राहु, ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २०) ।

जडिलिय } वि [जटिलित] जटिल किया हुआ, जटा-
जडिलिल्ल } युक्त किया हुआ ; (सुपा १२५ ; ३६६) ।

जड्ड न [जाड्य] जड़ता, जड़पन ; (उप ३२० टी ; सार्ध १२०) ।

जड्ड देखो **जड** ; (पव १०७ ; पंचभा) ।

जड्ड पुं [दे] हाथी, हस्ती; (ओघ २३८ ; बृह १) ।

जड्डा स्त्री [दे] जाड़ा, शीत ; (सुर १३, २१५; पिंग) ।

जढ वि [त्यक्त] परित्यक्त, मुक्त, वर्जित ; (हे ४, २५८ ; ओघ ६०) "जढ़वि न सम्मत्तजढो" (सत ७१ टी) ।

जढर } न [जठर] पेट, उदर ; (हे १, २५४ ; प्राप्र ;
जढल } षड्) ।

जण सक [जनय्] उत्पन्न करना, पैदा करना । जणेइ, जणंति ; (प्रासू १५ ; १०८ ; महा) । जणयंति ; (आचा) । वकृ—**जणंत**, **जणेमाण** ; (सुर १३, २१ ; द्र ३६ ; उत्त) ।

जण पुं [जन] १ मनुष्य, मानव, आदमी, लोग, व्यक्ति ; (औप ; आचा ; कुमा ; प्रासू ६ ; ६५ ; स्वप्न १६) । २ देहाती मनुष्य ; (सूअ १, १, २) । ३ समुदाय, वर्ग, लोक ; (कुमा ; पंचव ४) । ४ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; "जेण सुहज्झप्पजणं" (विसे ६६०) । °**जत्ता** स्त्री [°यात्रा] जन-समागम, जन-संगति ; "जणजत्तारहियाणं होइ जइत्तं जईण सया" (दंस ४) । °**ट्ठाण** न [°स्थान] १ दण्डकारण्य, दक्षिण का एक जंगल ; २ नगर-विशेष, नासिक ; (ती २८) । °**वइ** पुं [°पति] लोगों का मुखिया ; (औप) । °**वय** पुं [°व्रज] मनुष्य-समूह ; (पउम ४, ५) । °**वाय** पुं [°वाद] १ जन-श्रुति, किंवदन्ती ; (सुपा ३००) । २ मनुष्यों की आपस में चर्चा; (औप) । ३ लोकापवाद, लोक में निन्दा ; "जणवायभएणं" (आव १) । °**स्सुइ** स्त्री [°श्रुति] किंवदन्ती । °**ववाय** पुं [°ापवाद] लोक में निन्दा ;(गा ४८४) ।

जणइ स्त्री [जनिका] उत्पादिका, उत्पन्न करने वाली ; (कुमा) ।

जणइउ } पुं [जनयितृ] १ जनक, पिता; (राज) ।
जणइत्तु } २ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; (ठा ४, ४) ।

जणउत्त पुं [दे] ग्राम का प्रधान पुरुष, गाँव का मुखिया ; (दे ३, ५२ ; षड्) । २ विट, भाण्ड; (दे ३, ५२) ।

जणंगम पुं [जनङ्गम] चाण्डाल, "रायाणो हुति रंका य बंभणा य जणंगमा" (उप १०३१ टी ; पाअ) ।

जणग देखो **जणय** ; (भग ; उप पृ २१६ ; सुर २, २३७)।

जणण न [जनन] १ जन्म देना, उत्पन्न करना , पैदा करना ; (सुपा ५६७ ; सुर ३, ६ ; द्र ५७) । २ वि. उत्पादक , जनक ; (उर ६, ६ ; कुमा ; भवि), "जण-मणपसायजणणा" (वसु) ।

जणणि } स्त्री [जननि, °नी] १ माता, अम्बा ; (सुर
जणणी } ३, २५ ; महा ; पाअ) । २ उत्पन्न करने वाली स्त्री, उत्पादिका ; (कुमा) ।

जणद्दण पुं [जनार्दन] श्रीकृष्ण, विष्णु ; (उप ६४८ टी; पिंग) ।

जणमेअअ पुं [जनमेजय] स्वनाम-प्रसिद्ध नृप-विशेष ; (चारु १२) ।

जणय वि [जनक] १ उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; "दिट्ठिविसं पिसुणाणं सव्वं सव्वस्स भयजणयं" (प्रासू १६)। २ पुं. पिता, बाप; (पाअ ; सुर ३, २५ ; प्रासू ७७) । ३ देखो **जण**=जन ; (सूअ १, ६) । ४ मिथिला का एक राजा, राजा जनक, सीता का पिता; (पउम २१,३३)। ५ पुंन. ब. माता-पिता, मा-बाप; "जं किंपि कोई साहइ, तज्जणयाइं कुणंति तं सव्वं" (सुपा ३५६ ; ५६८) । °**तणआ** स्त्री [°तनया] राजा जनक की पुत्री, राजा रामचन्द्र की पत्नी, सीता, जानकी ; (से १, ३७) । °**दुहिया**, °**धूआ** (°दुहितृ) वही अर्थ ; (पउम २३, ११ ; ४८, ४) । °**नंदण** पुं [°नन्दन] राजा जनक

का पुत्र, भामण्डल ; (पउम ६५, २५) । °नंदणी स्त्री [°नन्दनी] सीता, राम-पत्नी, जानकी; (पउम ६४, ४६) । °णंदिणी स्त्री [°नन्दिनी] वही अर्थ; (पउम ४५, १८) । °निवतणया स्त्री [°नृपतनया] राजा जनक की पुत्री, सीता ; (पउम ४८, ६०) । °पुत्ती स्त्री [°पुत्री] वही अर्थ ; (रयण ७८) । °सुअ पुं [°सुत] जनक राजा का पुत्र, भामण्डल ; (पउम ६५, २८) । °सुआ स्त्री [°सुता] जानकी, सीता ; (पउम ३७, ६२ ; से २, ३८ ; १०, ३) ।

जणयंगया स्त्री [जनकाङ्गजा] जानकी, सीता, राजा रामचन्द्र की पत्नी ; (पउम ४१, ७८) ।

जणवय पुं [जनपद] १ देश, राष्ट्र, जन-स्थान, लोकालय ; (औप) । २ देश-निवासी जन-समूह ; (पण्ह १, ३ ; आचा) ।

जणवय वि [जानपद] देश में उत्पन्न, देश का निवासी; (आचा) ।

जणि (अप) अ [इव] तरह, माफिक, जैसा ; (हे ४, ४४४ ; षड्) ।

जणिअ वि [जनित] उत्पादित, उत्पन्न किया हुआ ; (पाअ) ।

जणी स्त्री [जनी] स्त्री, नारी, महिला ; (गाया २— पत्र २५३ ; पउम १५, ७३) ।

जणु देखो **जणि** ; (हे ४, ४४४; कुमा ; षड्) ।

जणुक्कलिआ स्त्री [जनोत्कलिका] मनुष्यों का छोटा समूह ; (भग) ।

जणुम्मि स्त्री [जनोर्मि] तरंग की तरह मनुष्यों की भीड़ ; (भग) ।

जणेमाण देखो **जण** = जनय् ।

जणेर (अप) वि [जनक] १ उत्पादक, पैदा करने वाला ; २ पु. पिता, बाप ; (भवि) ।

जणेरि (अप) स्त्री [जननी] माता, माँ; (भवि) ।

जण्ण पुं [यज्ञ] १ यज्ञ, याग, मख, क्रतु ; (प्राप्र ; गा २२७) । २ देव-पूजा ; ३ श्राद्ध ; (जीव ३) । °इ, °जाइ वि [°याजिन्] यज्ञ करने वाला ; (औप ; निवू १) । °इज्ज वि [°ीय] १ यज्ञ-संबन्धी, यज्ञ का ; २ न. 'उत्तराध्ययन सूत्र' का एक प्रकरण ; (उत्त २५) । °ट्ठाण न [°स्थान] १ यज्ञ का स्थान ; २ नगर-विशेष, नासिक; (ती २०) । °मुह न [°मुख] यज्ञ का उपाय ; (उत्त २५) । °वाड पुं [°वाट] यज्ञ-स्थान; (गा २२७) । °सेट्ठ पुं [°श्रेष्ठ] श्रेष्ठ यज्ञ, उत्तम याग ; (उत्त १२) ।

जण्णय देखो **जणय** ; (प्राप्र) ।

जण्णयत्ता स्त्री [दे. यज्ञयात्रा] वरात, विवाह की यात्रा, वर के साथिओं का गमन ; (उप ६५४) ।

जण्णसेणी स्त्री [याज्ञसेनी] द्रौपदी, पाण्डव-पत्नी ; वेणी ३७) ।

जण्णहर पुं [दे] नर-राक्षस, दुष्ट मनुष्य ; (षड्) ।

जण्णिय पुं [याज्ञिक] याजक, यज्ञ करने वाला; (आवम) ।

जण्णोवईय } न [यज्ञोपवीत] यज्ञ-सूत्र, जनोऊ ; (उत्त
जण्णोववीय } २ ; आवम) ।

जण्णोहण पुं [दे] राक्षस, पिशाच ; (दे ३, ४३) ।

जण्ह न [दे] १ छोटी स्थाली; २ वि. कृष्ण, काले रंग का; (दे ३, ५१) ।

जण्हई स्त्री [जाह्नवी] गंगा नदी, भागीरथी ; (अच्चु ६)।

जण्हली स्त्री [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द ; (दे ३, ४०) ।

जण्हवी स्त्री [जाह्नवी] १ सगर चक्रवर्ती की एक पत्नी, भगीरथ की जननी ; (पउम ५, २०१) । २ गङ्गा नदी, भागीरथी , (पउम ४१, ५१; कुमा) ।

जण्हु पुं [जह्नु] भरत-वंशीय एक राजा ; (प्राप्र; हे २, ७५) । °सुआ स्त्री [°सुता] गङ्गा नदी, भागीरथी; (पाअ) ।

जण्हुआ स्त्री [दे] जानु, घुटना ; (पाअ) ।

जत्त देखो **जय**=यत् । भवि—जत्तिहामि ; (निर १, १) ।

जत्त पुं [यत्न] उद्योग, उद्यम, चेष्टा ; (उप पृ ५८) ।

जत्ता स्त्री [यात्रा] १ देशान्तर-गमन, देशाटन ; (ठा ४, १ ; औप) । २ गमन, गति ; " जतत्ति होइ गमणं " (पंचभा ; औप) । ३ देव-पूजा के निमित्त किया जाता उत्सव-विशेष, अष्टाहिका, रथयात्रा आदि; " हुं नायं पारद्धा सिद्धाययणेसु जत्ताओ " (सुर ३, ३८) । ४ तीर्थ-गमन, तीर्थ-भ्रमण ; (धर्म २) । ५ शुभ प्रवृत्ति ; (भग १८, १०) ।

जत्ति स्त्री [दे] १ चिन्ता ; २ सेवा, सुश्रूषा ; "अजायणाए तज्जत्ती न कया तम्मि केणवि" (श्रा २८) ।

जत्तिय वि [यावत्] जितना ; (प्रासू १५६; आवम)

जत्तो देखो **जओ** (हे २, १६०) ।

जत्थ अ [यत्र] जहां, जिसमें ; (हे ३, १६१ ; प्रासू ७६)।

जदि देखो जइ=यदि, (निचू २)।

जदिच्छा देखो जइच्छा ; (बृह ३ ; मा १२)।

जदु देखो जउ=यदु, (कुमा ; ठा ८)।

जधा देखो जहा ; (ठा २, ३ ; ३, १)।

जन्न देखो जण्ण ; (पण्ह १, २ ; ४, पउम ११, ४६)।

जन्नत्ता } स्त्री [दे] जगत ; गुजराती में 'जान' ; (सुपा ३६६, उप ५६८ टी)।
जन्ना }

जन्नु देखो जण्णु ; (पउम ६८, १०)।

जन्नोवईय देखो जण्णोवईय; (गाया १, १६ —पत्र२१३)।

जन्हवी देखो जण्हवी ; (ठा ६, ६)।

जप देखो जव=जप् ; (षड्)।

जपिर वि [जपितृ] जाप करने वाला; (षड्)।

जप्प देखो जंप। जप्पइ; (षड्)। जप्पेति ; (पि २६६)।

जप्प पुं [जल्प] १ उक्ति, कथन। २ छल का उपालम्भ रूप भाषण ; (राज)।

जप्प वि [याप्य] गमन कराने योग्य। °जाण न [°यान] वाहन-विशेष, शिविका ; (दे ६, १२२)।

जप्पभिइ } अ [यत्प्रभृति] जब से, जहां से लेकर ; (णाया १, १; कप्प)।
जप्पभिइं }

जप्पिअ वि [जल्पित] १ उक्त, कथित ; (प्राप)। २ न. उक्ति, वचन ; (अच्चु २)।

जम सक [यमय्] १ काबू में रखना, नियत्रण करना। २ जमाना, स्थिर करना। जमेइ; (से १०, ७०)। संकृ— जमइत्ता ; (औप)।

जम पुं [यम] १ अहिंसादि पाँच महाव्रत, साधु का व्रत ; (णाया १, ५ ; ठा २, ३)। २ दक्षिण दिशा का एक लोकपाल, देव-विशेष, जम-देवता, जमराज; (पण्ह १,१; पाअ; दे १, २४५)। ३ भरणी नक्षत्र का अधिपति देव ; (सुज्ज १०)। ४ किष्किन्धा नगरी का एक राजा ; (पउम ७, ४६)। ५ तापस-विशेष ; (आवम)। ६ मृत्यु, मौत ; (आव ४ ; महा)। ७ सयमन, नियन्त्रण ; (आवम)। °काइय पुं [°कायिक] असुर-विशेष, परमाधार्मिक देव, जो नारकी के जीवों को दुःख देते हैं; (पण्ह १, १)। °घोस पु [°घोष] ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव ; (पव ७)। °पुरी स्त्री [°पुरी] जम की नगरी, मौत का स्थान ; "को जमपुरीसनाणे नमसाणे एवमुल्लवइ ?" (सुपा ४६२)। °प्पभ पुं [°प्रभ] यमदेव का उत्पात-पर्वत, पर्वत विशेष; (ठा १०)। °भड पुं [°भट] यमराज का सुभट ; (महा)। °मंदिर न [°मन्दिर] यमराज का घर, मृत्यु-स्थान ; (महा)। °लय न [°लय] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (पउम ४५, १०)।

जमग पु [यमक] १ पक्षि-विशेष ; २ देव-विशेष ; (जीव ३)। ३ पर्वत-विशेष; (जीव ३ ; सम ११४ ; इक)। ४ द्रह विशेष ; (जीव ३ ; इक)। देखो जमय।

जमगं } अ [दे] एक साथ, एक ही समय में, युगपत् ; (धम्म ११ टी ; णाया १,४, औप ; विपा १, १)।
जमगसमगं }

जमणिया स्त्री [जमनिका] जैन साधु का उपकरण-विशेष; (राज)।

जमदग्गि पुं [यमदग्नि] तापस-विशेष, इस नाम का एक संन्यासी, परसुराम का पिता ; (पि २३७)।

जमय देखो जमग। ५ न. अलंकार-शास्त्र में प्रसिद्ध अनुप्रास-विशेष ; ६ छन्द-विशेष; (पिंग)।

जमल न [यमल] १ जोड़ा, युग्म, युगल ; (णाया १, १ ; हे २, १७३ ; से ५, ५६)। २ समान श्रेणि में स्थित, तुल्य पंक्ति वाला ; (राय)। ३ सहवर्ती, सहचारी, (भग १५)। ४ समान, तुल्य ; (राय ; औप)। °ज्जुणभंजग पुं [°र्जुनभञ्जक] श्रीकृष्ण वासुदेव ; (पण्ह १, ४)। °पद, °पय न [°पद] १ प्रायश्चित-विशेष ; (निचू १)। २ आठ अंकों की संख्या ; (पण्ण १२)। °पाणि पु [°पाणि] मुष्टि, मुट्ठी; (भग १६,३)।

जमलिय वि [यमलित] १ युग्म रूप से स्थित ; (राय)। २ सम-श्रेणि रूप से अवस्थित ; (णाया १, १ ; औप)।

जमलोइय वि [यमलौकिक] १ यमलोक-संबन्धी, यम-लोक से संबन्ध रखने वाला ; २ परमाधार्मिक देव, असुरों की एक जाति , (सुअ १; १२)।

जमा स्त्री [यामी] दक्षिण दिशा ; (ठा १०—पत्र ४७८)।

जमालि पुं [जमालि] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार, जो भगवान् महावीर का जामाता था, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी और पीछे से अपना अलग पन्थ निकाला था ; (णाया १, ८ ; ठा ७)।

जमावण न [यमन] १ नियन्त्रण करना ; २ विषम वस्तु को सम करना ; (निच १)।

जमिअ वि [यमित] नियन्त्रित, संयमित, काबू में किया हुआ ; (से ११, ४१ ; सुपा ३)।
जमुणा देखो जँउणा; (पि १७६ ; २५१)।
जमू स्त्री [जमू] ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी का नाम ; (इक)।
जम्म अक [जन्] उत्पन्न होना। जम्मइ ; (हे ४, १३६ ; पड्)। वक्र—**जम्मंत**; (कुमा), "जम्मंतीए सोगो, वड्ढंतीए य वड्ढए चिंता" (सूक्त ८८)।
जम्म सक [जम्] खाना, भक्षण करना। जम्मइ , (पड्)।
जम्म पुंन [जन्मन्] जन्म, उत्पत्ति, (ठा ६ ; महा, प्रासू ६०)।
जम्मण न [जन्मन्] जन्म, उत्पत्ति, उत्पाद , (हे २, १७४; गाया १, १ ; सुर १, ६)।
जम्मा स्त्री [याम्या] दक्षिण दिशा ; (उप पृ ३७५)।
जय सक [जि] १ जीतना। २ अक उत्कृष्टपन से वरतना। जयइ , (महा)। जयंति , (स ३६)। संकृ—**जइत्ता**, (ठा ६)।
जय सक [यज्] १ पूजा करना। २ याग करना। जयइ , (उत्त २५, ४)। वकृ—**जअनाण** ; (अभि १२५)।
जय अक [यत्] १ यत्न करना, चेष्टा करना। २ ख्याल करना, उपयोग करना। जयइ , (उव)। भवि—जइस्सामि; (महा)। वकृ—**जयंत**; **जयमाण** ; (स २६० ; श्रा २६ ; ओघ १२४ ; पुप्फ २४१)। कृ—**जईयव्व** ; (उव ; सुर १, ३४)।
जय न [जगत्] जगत्, दुनियाँ, संसार ; (प्रासू १५५ , से ६, १)। °**त्तय** न [°त्रय] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (सुपा ७६ ; ६५)। °**नाह** पुं [°नाथ] परमेश्वर, परमात्मा ; (पउम ८६, ६५)। °**पहु** पु [°प्रभु] परमेश्वर ; (सुपा २८ ; ८६)। °**णंद** वि [°नन्द] जगत् को आनन्द देने वाला ; (पउम ११७, ६)।
जय वि [यत] १ संयत, जितेन्द्रिय ; (भास ६५)। २ उपयोग रखने वाला, ख्याल रखने वाला ; (उत्त १ ; आव ४)। ३ न. छठवाँ गुण-स्थानक ; (कम्म ४, ४८)। ४ ख्याल, उपयोग, सावधानता ; (गाया १, १—पत्र ३३), "जयं चरे जयं चिट्ठे" (दस ४)।
जय पुं [जव] वेग, शीघ्र-गमन, दौड़ ; (पाअ)।
जय पुं [जय] १ जय, जीत, शत्रु का पराभव ; (औप ; कुमा)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक चक्रवर्ती राजा ; (सम १५२)। °**उर** न [°पुर] नगर-विशेष ; (स ६)। °**कम्मा** स्त्री [°कर्मा] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३६)। °**घोस** पुं [°घोष] १ जय-ध्वनि ; २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि; (उत्त २५)। °**चंद** पुं [°चन्द्र] १ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का एक कन्नौज का अन्तिम राजा। २ पन्नरहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य ; (रयण ६४)। °**जत्ता** स्त्री [°यात्रा] शत्रु पर चढ़ाई ; (सुपा ५४१)। °**पडाया** स्त्री [°पताका] विजय का झंडा ; (श्रा १२)। °**पुर** देखो °**उर** ; (वसु)। °**मंगला** स्त्री [°मङ्गला] एक राज-कुमारी ; (दस ३)। °**लच्छी** स्त्री [°लक्ष्मी] जय-लक्ष्मी, विजय-श्री ; (से ४, ३१ ; काप्र ७४३)। °**वंत** वि [°वत्] जय-प्राप्त, विजयी ; (पउम ६६,४६)। °**वल्लह** पु [°वल्लभ] नृप-विशेष ; (दंस १)। °**संध** पु [°सन्ध] पुण्डरीक-नामक राजा का एक मन्त्री ; (आचू ४)। °**संधि** पुं [°सन्धि] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (आव ४)। °**सद्द** पुं [°शब्द] विजय-सूचक आवाज; (औप)। °**सिंह** पुं [°सिंह] १ सिंहल द्वीप का एक राजा ; (रयण ४८)। २ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा, जिसका दूसरा नाम 'सिद्धराज' था ; "जेण जयसिंहदेवो राया भणिऊण सयलदेसम्मि" (मुणि १०९००)। ३ स्वनाम-ख्यात जैनाचार्य विशेष ; (सुपा ६५८), "सिरिजयसिहो सूरी सयंभरीमण्डलम्मि सुप्रसिद्धो" (मुणि १०८७२)। °**सिरी** स्त्री [°श्री] विजय-श्री, जय-लक्ष्मी ; (आवम)। °**सेण** पु [°सेन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा , (महा)। °**ावह** वि [°ावह] १ जय को वहन करने वाला, विजयी ; (पउम ७०, ७ ; सुपा २३४)। २ विद्याधर-नगर विशेष ; (इक)। °**ावहपुर** न [°ावहपुर] एक विद्याधर-नगर ; (इक)। °**ावास** न [°ावास] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात नगर ; (इक)।
जय पुंस्त्री [जया] तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि ; (जं १)।
जयं देखो जया=यदा। °**प्पभिइ** अ [°प्रभृति] जब से, जिस समय से ; (स ३१६)।
जयंत पुं [जयन्त] १ इन्द्र का पुत्र; (पाअ)। २ एक भावी बलदेव ; (सम १५४)। ३ एक जैन मुनि, जो वज्रसेन मुनि के तृतीय शिष्य थे ; (कप्प)। ४ इस नाम के देव-विमान में रहने वाली एक उत्तम देव-जाति ; (सम ५६)। ५ जंबूद्वीप की जगती के पश्चिम द्वार का एक अधिष्ठाता देव ; (ठा ४, २)। ६ न. देव-विमान विशेष ; (सम ५६)।

७ जम्बूद्वीप की जगती का पश्चिम द्वार : (ठा ४, २)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (ठा ४)।

जयंती स्त्री [जयन्ती] १ वल्ली-विशेष ; (पगण १)। २ सप्तम बलदेव की माता ; (सम १५२)। ३ विदेह वर्ष की एक नगरी : (ठा २, ३)। ४ अंगारक-नामक ग्रह को एक अग्र-महिषी ; (ठा ४,१)। ५ जम्बूद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)। ६ भगवान् महावीर की एक उपासिका ; (भग १२, २)। ७ भगवान् महावीर के आठवें गणधर की माता ; (आवम)। ८ अञ्जनक पर्वत की एक वापी ; (ती २४)। ९ नवमी तिथि ; (जं ७)। १० जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।

जयण न [यजन] १ याग, पूजा ; २ अभय-दान ; (पगह २, १)।

जयण न [यतन] १ यत्न, प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम ; "जयण-घडण-जोग-चरितं" (अनु)। २ यतना, प्राणी की रक्षा ; (पगह २, १)।

जयण वि [जवन] वेग वाला, वेग-युक्त ; (कप्प)।

जयण न [जयन] १ जीत, विजय ; (मुद्रा २६८ ; कप्पू)। २ वि. जीतने वाला ; (कप्प)।

जयण न [दे] घोड़े का बख्तर, हय-संनाह ; (दे ३,४०)।

जयणा स्त्री [यतना] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश ; (निचू १)। २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग ; (दस ४)। ३ उपयोग, किसी जीव को दुःख न हो इस तरह प्रवृत्ति करने का ख्याल ; (निचू १ ; सं ६७ ; औप)।

जयद्दह पुं [जयद्रथ] सिन्धु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था ; (णाया १, १६)।

जया अ [यदा] जिस समय, जिस वख्त ; (कप्प ; काल)।

जया स्त्री [जया] १ विद्या-विशेष ; (पउम ७, १४१)। २ चतुर्थ चक्रवर्ती राजा की अग्र-महिषी ; (सम १५२)। ३ भगवान् वासुपूज्य की स्वनाम-ख्यात माता ; (सम १५१)। ४ तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि ; (सुज्ज १०)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी ; (ती ६)। ६ ओषधि-विशेष ; (राज)।

जयिण देखो **जइण**=जयिन् ; (पगह १, ४)।

जर अक [जॄ] जीर्ण होना, पुराना होना, बूढ़ा होना। जरइ ; (हे ४, २३४)। कर्म—जीरइ, जरिज्जइ ; (हे ४, २५०)। वकृ—**जरंत** ; (अच्चु ७६)।

जर पुं [ज्वर] रोग-विशेष, बुखार ; (कुमा)।

जर पुं [जर] १ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६,३)। २ वि. जीर्ण, पुराना ; (दे ३, ५६)।

जर वि [जरत्] जीर्ण, पुराना, वृद्ध, बूढ़ा; (कुमा; सुर २, ६६ ; १०४)। स्त्री—**ई** ; (कुमा ; गा ४७२ अ)। °**गव** पुं [°गव] बूढ़ा बैल; (बृह १; अनु ४)। °**गवी** स्त्री [°गवी] बूढी गौ; (गा ४६२)। °**ग्गु** पुं [°गु] १ बूढ़ा बैल; २ स्त्री. बूढी गौ ; "जिण्णा य जरग्गवो पडिया" (पउम ३३, १६)।

जर° देखो **जरा** ; (कुमा ; अंत १६ ; वव ७)।

जरंड वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा ; (दे ३, ४०)।

जरग्ग वि [जरत्क] जीर्ण, पुराना ; (अनु ५)।

जरठ वि [जरठ] १ कठिन, परुष ; २ जीर्ण, पुराना ; (णाया १, १—पत्र ५)। देखो—**जरढ**।

जरड वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा; (दे ३, ४०)।

जरढ देखो **जरठ** ; (पि १९८ ; से १०, ३८)। २ प्रौढ, मजबूत ; (से १, ४३)।

जरय पुं [जरक] रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६—पत्र ३६५)। °**मज्झ** पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)। °**वत्त** पुं [°वर्त] नरकावास-विशेष; (ठा ६)। °**वसिट्ठ** पुं [°वशिष्ट] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)।

जरलद्दिअ } वि [दे] ग्रामीण, ग्राम्य ; (दे ३, ४४)।
जरलविअ }

जरा स्त्री [जरा] बुढापा, वृद्धत्व ; (आचा ; कस ; प्रासू १३४)। °**कुमार** पुं [°कुमार] श्रीकृष्ण का एक भाई ; (अंत)। °**संध** पुं [°सन्ध] राजगृह नगर का एक राजा, नववाँ प्रतिवासुदेव, जिसको श्री कृष्ण वासुदेव ने मारा था ; (सम १५३)। °**सिंध** पु [°सिन्ध] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (पगह १, ४—पत्र ७२)। °**सिंधु** पुं [°सिन्धु] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (णाया १, १६—पत्र २०६ ; पउम ५, १५६)।

जराहिरण (अप) देखो **जल-हरण** ; (पिंग)।

जरि वि [ज्वरिन्] बुखार वाला, ज्वर से पीड़ित ; (सुपा २४३)।

जरि वि [जरिन्] जरा-युक्त, वृद्ध, बूढ़ा ; (दे ३, ५७ : उर ३, १)।

जरिअ वि [ज्वरित] ज्वर-युक्त, बुखार वाला; (गा २५६ ; सुपा २८६)।

जल अक [**ज्वल्**] १ जलना, दग्ध होना। २ चमकना। जलइ; (महा)। वकृ—**जलंत** ; (उवा; गा २६४)। हेकृ— **जलिउं**; (महा)। प्रयो, वकृ—**जलिंत** ; (महानि ७)।

जल देखो **जड** ; (श्रा १२ ; आव ४)।

जल न [**जाड्य**] जड़ता, मन्दता ; "जलधोयजललेवा" (सार्ध ७३ ; से १, २४)।

जल पु [**ज्वल**] देदीप्यमान, चमकीला ; (सूत्र १, ५, १)।

जल न [**जल**] १ पानी, उदक ; (सुअ १, ५, २ ; जी २)। २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °**कंत** पुं [°**कान्त**] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति ; (पराण १ ; कुम्मा १५)। २ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। ३ जलकान्त इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °**करप्फाल** पु [°**करास्फाल**] हाथ से आहत पानी , (पाअ)। °**करि** पुस्त्री [°**करिन्**] पानी का हाथी, जल-जन्तु विशेष ; (महा)। °**कलंब** पुं [°**कदम्ब**] कदम्ब वृक्ष की एक जाति; (गउड)। °**कीडा**, °**कीला** स्त्री [°**क्रीडा**] पानी में की जाती क्रीडा, जल-केलि; (णाया १, २)। °**केलि** स्त्री [°**केलि**] जल-क्रीडा ; (कुमा)। °**चर** देखो °**यर** ; (कप्प ; हे १,१७७)। °**चार** पुं [°**चार**] पानी में चलना, (आचा २,५, १)। °**चारण** पु [°**चारण**] जिसके प्रभाव से पानी में भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी अलौकिक शक्ति रखने वाला मुनि ; (गच्छ २)। °**चारि** पुं [°**चारिन्**] पानी में रहने वाला जतु, (जी २०)। °**चारिया** स्त्री [°**चारिका**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति; (राज)। °**जंत** न [°**यन्त्र**] पानी का यन्त्र, पानी का फवारा; (कुमा)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] समुद्र, सागर ; (उप ७२८ टी)। °**णिहि** पुं [°**निधि**] समुद्र, सागर ; (गउड)। °**णोलो** स्त्री [°**नीली**] शैवाल , (दे ३, ४२)। °**तुसार** पुं [°**तुषार**] पानी का बिन्दु ; (पाअ)। °**थंभिणी** स्त्री [°**स्तम्भिनी**] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३६)। °**द** पुं [°**द**] मेघ, अभ्र ; (सुद्रा २६२ ; पव १८)। °**द्दा** स्त्री [°**आर्द्रा**] पानी से भींजाया हुआ पखा ; (सुपा ४१३)। °**निहि** देखो °**णिहि** ; (प्रासू १२७)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] १ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °**य** न [°**ज**] कमल, पद्म ; (पउम १२, ३७ ; औप ; पराण १)। °**य** देखो °**द** ; (काल ; गउड ; से १, २४)। °**यर** पुंस्त्री [°**चर**] जल में रहने वाला ग्रहादि जन्तु; (जी २०) , स्त्री—°**री** ; (जीव २)। °**रंकु** पुं [°**रङ्कु**] पक्षि-विशेष, ढेंक-पक्षी; (गा ५७८, गउड)। °**रक्खस** पुं [°**राक्षस**] राक्षस की एक जाति ; (पराण १)। °**रमण** न [°**रमण**] जल-क्रीडा, जल-केलि ; (णाया १, १३)। °**रय** पुं [°**रय**] जलप्रभ-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °**रासि** पुं [°**राशि**] समुद्र, सागर ; (सुपा १६५ ; उप २६४ टी)। °**रुह** पुंन [°**रुह**] पानी में पैदा होने वाली वनस्पति ; (पराण १)। °**रूव** पु [°**रूप**] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (भग ३, ८)। °**लिहिलर** न [°**लिलिलर**] पानी में उत्पन्न होने वालो वस्तु-विशेष ; (दंस १)। °**वायस** पुंस्त्री [°**वायस**] जलकौआ, पक्षि-विशेष ; (कुमा)। °**वासि** वि [°**वासिन्**] १ पानी में रहने वाला ; २ पु. तापसों की एक जाति, जा पानो में ही निमग्न रहते है ; (औप)। °**वाह** पुं [°**वाह**] १ मेघ, अभ्र ; (उप पृ ३२ ; सुपा ८६)। २ जन्तु-विशेष ; (पउम ८८, ७)। °**विच्छुय** पुं [°**वृश्चिक**] पानी का विच्छी, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पराण १)। °**वीरिय** पुं [°**वीर्य**] १ इक्ष्वाकु वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा ; (ठा ८)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (जीव१)। °**सय** न [°**शय**] कमल, पद्म ; (उप १०३१ टी)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] प्रपा, पानी पिलाने का स्थान ; (श्रा१२)। °**सूग** न [°**शूक**] १ शैवाल। २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °**सेल** पुं [°**शैल**] समुद्र के भीतर का पर्वत ; (उप ५६७ टी)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] जल-हस्ती, पानी का एक जन्तु; (पाअ)। °**हर** पुं [°**धर**] १ मेघ, अभ्र ; (सुर २, १०४ ; से १, ५६)। २ एक विद्याधर सुभट ; (पउम १२, ६५)। °**हर** पुं [°**भर**] जल-समूह ; (गउड)। °**हर** न [°**गृह**] समुद्र, सागर ; (से १, ५६)। °**हरण** न [°**हरण**] १ पानी की क्यारी ; (पाअ)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**हि** पुं [°**धि**] १ समुद्र, सागर ; (महा ; सुपा २२३)। २ चार की संख्या ; (विवे १४४) °**ासय** पुंन [°**आशय**] सरोवर, तलाव; (सुर ३, १)।

जलइय पुं [**जलकित**] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोक-पाल ; (ठा ४, १—पत्र १६८) ।
जलंजलि पुं [**जलाञ्जलि**] तर्पण, दोनो हाथो में लिया हुआ जल ; (सुर ३, ५१ : कप्पू) ।
जलग पुं [**ज्वलक**] अग्नि, आग ; (पिंड) ।
जलजलिंत वि [**जाज्वल्यमान**] देदीप्यमान, चमकता : (कप्प) ।
जलण पुं [**ज्वलन**] १ अग्नि, वह्नि , (उप ६४८ टी) । २ देवों को एक जाति, अग्निकुमार-नामक देव-जाति ; (पण्ह १, ४)। ३ वि. जलता हुआ, ४ चमकता, देदीप्यमान ; "एईए जलणजलणोवमाए" (उव ६४८ टी) । ५ जलाने वाला ; (सुअ १, १, ४) । ६ न. अग्नि सुलगाना, (पण्ह १, ३) । ७ जलाना, भस्म करना , (गच्छ २) । °**जडि** पुं [°**जटिन्**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४६) । °**मित्त** पु [°**मित्र**] स्वनाम-ख्यात एक प्राचीन कवि ; (गउड) ।
जलावण न [**ज्वालन**] जलाना, दग्ध करना; (पण्ह १, १)।
जलिअ वि [**ज्वलित**] १ जला हुआ, प्रदीप्त ; (सूअ १, ५, १) । २ उज्ज्वल, कान्ति-युक्त , (पण्ह २, ५) ।
जलूगा, **जलूया** स्त्री [**जलौकस्**] १ जन्तु-विशेष, जोंक, जलिका, जल का कीड़ा , (पउम १, २४ ; पण्ह १, १) । २ पक्षि-विशेष ; (जीव १) ।
जलूसग पु [**दे**] रोग-विशेष ; (उप पृ ३३२) ।
जलोयर न [**जलोदर**] रोग-विशेष, जलन्धर,. जठराम ; (सण) ।
जलोयरि वि [**जलोदरिन्**] जलन्धर रोग से पीड़ित; (राज)।
जलोया देखो **जलूया** ; (जी १५) ।
जल्ल पुं [**दे. जल्ल**] १ शरीर का मैल, सूखा पसीना ; (सम १० ; ४०; ओप) । २ नट की एक जाति, रस्सी पर खेल करने वाला नट , (पण्ह २, ४ ; ओप . णाया १, १) । ३ वन्दी, बिरुद पाठक ; (णाया १, १) । ४ एक म्लेच्छ देश ; ५ उस देश में रहने वाली म्लेच्छ जाति, (पण्ह १, १—पत्र १४) ।
जल्लार पुं [**जल्लार**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक अनार्य देश; २ जल्लार देश का निवासी (इक) ।
जल्लिय न [**दे. जल्लक**] शरीर का मैल ; (उत्त २४) ।
जल्लोसहि स्त्री [**दे. जल्लौषधि**] एक तरह की आध्यात्मिक शक्ति, जिसके प्रभाव से शरीर के मैल से रोग का नाश होता है ; (पण्ह २, १ ; विसे ७७६) ।
जव सक [**यापय्**] १ गमन करवाना, भेजना । २ व्यवस्था करना । जवइ ; (हे ४, ४०) । हेक्र— **जवित्तए**; (सूअ १, ३, २) । कृ— **जवणिज्ज, जवणीय**, (णाया १, ५ ; हे १, २४८) ।
जव सक [**जप्**] जाप करना, बार बार मन हो मन देवता का नाम स्मरण करना, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण करना। जवइ ; (रंभा) । "तप्पति तवमणेगे जवंति मंते तहा सुविज्जाओ" (सुपा २०२) । वकृ—**जवंत**; (नाट) । कवकृ— **जविज्जंत** ;(सुर १३, १८६) ।
जव पुं [**जप**] जाप, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण, बार बार मन हो मन देवता का नाम-स्मरण ; (पण्ह २, २ ; सुपा १२०) ।
जव पुं [**यव**] १ अन्न-विशेष ; (णाया १, १ ; पण्ह १, ४) । २ परिमाण-विशेष, आठ यूका का नाप ; (ठा ८)। °**णाली** स्त्री [°**नाली**] वह नाली जिसमें यव बोए जाते हों; (आचू १) । °**मज्झ** न [°**मध्य**] १ तप-विशेष , (पउम २२, २४) । २ आठ यूका का एक नाप ; (पव २५) । °**मज्झा** स्त्री [°**मध्या**] व्रत-विशेष, प्रतिमा-विशेष; (ठा ४, १) । °**राय** पुं [°**राज**] नृप-विशेष, (बृह १) । °**वंसा** स्त्री [°**वंशा**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १) ।
जव पुं [**जव**] वेग, दौड़ , शीघ्र गति ; (कुमा) ।
जवजव पुं [**यवयव**] अन्न-विशेष, एक तरह का यव-धान्य; (ठा ३, १) ।
जवण न [**दे**] हल की शिखा, हल की चोटी ; (दे ३, ४१) ।
जवण न [**जपन**] जाप, पुनः पुनः मन्त्र का उच्चारण ; " अहिणा दट्ठस्स जए को कालो मंत-जवणम्मि" (पउम ८६, ६० ; स ६) ।
जवण वि [**जवन**] १ वेग से जाने वाला; (उप ७६८ टी) । २ पु वेग, शीघ्र गति ; (आवम) ।
जवण पु [**यवन**] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६४) । २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति ; (पण्ह १, १) । ३ यवन देश का राजा ; (कुमा) ।
जवण न [**यापन**] निर्वाह, गुजारा ; (उत्त ८) ।
जवणा स्त्री [**यापना**] ऊपर देखो ; (पव २) ।

जवणाणिया स्त्री [**यवनानिका**] लिपि-विशेष ; (राज)।
जवणालिया स्त्री [**यवनालिका**] कन्या का कञ्चुक, (आवम)।
जवणिआ स्त्री [**यवनिका**] परदा, (दे ४, १, सण, कप्पू)।
जवणिज्ज देखो **जव**=यापय्।
जवणी स्त्री [**यवनी**] १ परदा, आच्छादक पट, (दे २, २५)। २ सचारिका, दूती, (अभि ५७)।
जवणी स्त्री [**यावनी**] १ यवन की स्त्री। २ यवन की लिपि ; (सम ३५, विसे ४६४ टी)।
जवणीअ देखो **जव**=यापय्।
जवपचमाण पुं [**दे**] जात्य अश्व का वायु-विशेष, प्राण-वायु ; (गउड)।
जवय } पुं [**दे**] यव का अङ्कुर; (द ३,४२)।
जवरय }
जवली स्त्री [**दे**] जव, वेग, " गच्छति गरुयनेहेण पवरतुरयाहिरूड़ा जवलीए " (सुपा २७६)।
जववारय [**दे**] देखो **जवरय**, (पचा ८)।
जवस न [**यवस**] १ तृण, घास ; " गिद्धिव्व जवसम्मि" (उप ७२८ टी, उप पृ ८८)। २ गेहूँ वगैरः धान्य, (आचा २, ३, २)।
जवा स्त्री [**जपा**] १ वल्ली-विशेष, जवा-पुष्प का वृत्त; २ गुड़हल का फूल, (कुमा)।
जवास पुं [**यवास**] वृत्त-विशेष, रक्त पुष्प वाला वृत्त-विशेष, " पाउसि जवासो " (श्रा २३, पराण १)। " जवासाकुसुमे इ वा " (पराण १७)।
जवि } वि [**जविन्**] १ वेग वाला, वेग-युक्त; (सुपा
जविण } ११२)। २ अश्व, घोडा, (राज)।
जविय वि [**यापित**] १ गमित, गुजारा हुआ ; २ नाशित, (कुमा)।
जस पु [**यशस्**] १ कीर्ति, इज्जत, सुख्याति ; (औप ; कुमा)। २ संयम, त्याग, विरति, (बव १ ; दस ५, २)। ३ विनय, (उत्त ३)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम शिष्य ; (सम १५२)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ का आठवाँ प्रधान शिष्य ; (कप्प)। °**कित्ति** स्त्री [°**कीर्त्ति**] सुख्याति, सुप्रसिद्धि, (सूअ १, ६, आचू १)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य; (कप्प, सार्ध १३)। °**म, मंत** वि [°**वत्**] १ यशस्वी, इज्जतदार, कीर्त्ति वाला, (पण्ह १, ४)। २ पु. स्वनाम-प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुष ; (सम १५०)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ द्वितीय चक्रवर्ती सगर-राज की माता ; (सम १५२)। २ तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी की रात्रि ; (चंद १०)। °**वम्म** पु [°**वर्मन्**] स्वनाम-ख्यात नृप-विशेष; (गउड)। °**वाय** पुं [°**वाद**] साधु-वाद, यशोगान, प्रशंसा ; (उप ६८६ टी)। °**विजय** पु [°**विजय**] विक्रम की अठारहवीं शताब्दी का एक जैन सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार, न्यायाचार्य श्रीमान् यशोविजय उपाध्याय, (राज)। °**हर** पुं [°**धर**] १ भारतवर्ष का भूत कालिक अठारहवाँ जिन-देव ; (पव ८)। २ भारत वर्ष के एक भावी जिन-देव ; (पव ४६)। ३ एक राज-कुमार, (धम्म)। ४ पक्ष का पाँचवाँ दिन ; (जं ७)। ५ वि. यश को धारण करने वाला, यशस्वी ; (जीव ३)। देखो **जसो°**।
जसद पु [**जसद**] धातु-विशेष, जस्ता, (राज)।
जसा स्त्री [**यशा**] कपिलमुनि की माता, (उत्त ८)।
जसो° देखो **जस**। °**आ** स्त्री [°**दा**] १ नन्द-नामक गोप की पत्नी, (गा ११२, ६५७)। २ भगवान् महावीर की पत्नी, (कप्प)। °**कामि** वि [°**कामिन्**] यश चाहने वाला, (दस २)। °**कित्तिनाम** न [°**कीर्त्तिनामन्**] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से सुयश फैलता है ; (सम ६७)। °**धर** पु [°**धर**] १ धरणेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १)। २ न ग्रैवेयक देवलोक का प्रस्तट, (इक)। °**हरा** स्त्री [°**धरा**] १ दक्षिण रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिशा-कुमारी देवी; (ठा ८)। २ जम्बू-वृक्ष विशेष, सुदर्शना; (जीव ३)। ३ पक्ष की चौथी रात्रि, (जं ४)।
जह सक [**हा**] त्याग देना, छोड देना। जहइ ; (पि ६७)। वकृ—**जहंत**, (बव ३)। कृ—**जहणिज्ज**, (राज)। संकृ—**जहित्ता**, (पि ५८२)।
जह अ [**यत्र**] जहां, जिसमें ; (हे २, १६१)।
जह अ [**यथा**] जिस तरह से, जैसे ; (ठा ३, १ ; स्वप्न २०)। °**क्कम** न [°**क्रम**] क्रम के अनुसार, अनुक्रम, (पचा ६)। °**क्खाय** देखो **अह-क्खाय**; (आवम)। °**ट्ठिय** वि [°**स्थित**] वास्तविक, सत्य, (सुर १, १६२ ; सुपा ५७)। °**त्थ** वि [°**र्थ**] वास्तविक, सत्य ; (पंचा १५)। °**त्थनाम** वि [°**र्थनामन्**] नाम के अनुसार

(d) $2x - 3y = 0$

गुण वाला, अन्वर्थ ; (श्रा १६)। °त्थवाइ वि [°र्थवादिन्] सत्य-वक्ता ; (सुर १४, १६)। °प्प न [याथात्म्य] वास्तविकता, सत्यता ; (राज)। °रिह न [°र्ह] उचितता के अनुसार ; (सुपा १६२)। °वट्टिय वि [°वृत्त] सत्य, यथार्थ; (सुपा ५२६)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] विधि के अनुसार ; "नहगामिणिपमुहाओ जहविहिणा साहियव्वाओ" (सुर ३, २८)। °संख न [°संख्य] संख्या के क्रम से, क्रमानुसार ; (नाट)। देखो जहा=यथा।

जहण न [जघन] कमर के नीचे का भाग ; (गा १६६ ; णाया १, ६)।

जहणरोह पुं [दे] ऊरु, जघा, जाँघ ; (दे ३, ४४)।

जहणूसव } न [दे] अर्धोरुक, जघनांशुक, स्त्री को **जहणूसुअ** } पहनने का वस्त्र-विशेष ; (दे ३, ४५; पड्)।

जहण्ण } वि [जघन्य] निकृष्ट, हीन, अधम, नीच, (सम ८; **जहन्न** } भग ; ठा १, १ ; जी ३८ ; दं ६)।

जहा देखो **जह**=हा। जहाइ, (पि ३५०)। संकृ—**जहाइत्ता, जहाय** ; (सूअ १, २, १; पि ५६१)।

जहा देखो **जह**=यथा, (हे १, ६७ ; कुमा) °**जुत्त** वि [°युक्त] यथोचित, योग्य; (सुर २, २०१)। °**जेट्ठ** न [°ज्येष्ठ] ज्येष्ठता के क्रम से; (अणु)। °**णामय** वि [°नामक] जिसका नाम न कहा गया हो, अनिर्दिष्ट-नामा, कोई, (जीव ३)। °**तच्च** न [°तथ्य] सत्य, वास्तविक; (आचा)। °**तह** न [°तथ] सत्य, वास्तविक ; (राज)। °**तह** न [याथातथ्य] १ वास्तविकता, सत्यता; "जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं" (सूअ १, ६)। २ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन ; (सूअ १, १३)। °**पवट्टकरण** न [°प्रवृत्तकरण] आत्मा का परिणाम-विशेष; (आचा)। °**भूय** वि [°भूत] सच्चा, वास्तविक, (णाया १, १)। °**राइणिया** स्त्री [°रात्निकता] ज्येष्ठता के क्रम से, बडप्पन के अनुसार, (कस)। °**रुह** देखो **जह-रिह**; (स ४६३)। °**वित्त** न [°वृत्त] जैसा हुआ हो वैसा, यथार्थ, (स २४)। °**सत्ति** स्त्रीन [°शक्ति] शक्ति के अनुसार; (पंचा ३)।

जहाजाय वि [दे. यथाजात] जड, मूर्ख, बेवकूफ ; (दे ३, ४१ ; पण्ह १, ३)।

जहि } देखो **जह**=यत्र; (हे २, १६१ ; गा १३१ ; **जहिं** } प्रासू ५६)।

जहिच्छ न [यथेच्छ] इच्छा के अनुसार ; (सुपा १६, पिंग)।

जहिच्छिय न [यथेप्सित] इच्छानुकूल, इच्छानुसार, (पंचा १)।

जहिच्छिया स्त्री [यदृच्छा] मरजी, स्वेच्छा, स्वच्छन्दता ; (गा ४५३ ; विसे ३१६ ; स ३३२)।

जहिट्ठिल पुं [युधिष्ठिर] पाण्डु-राज का ज्येष्ठ पुत्र, जेष्ठ पाण्डव ; (हे १, १०७ ; प्राप्र)।

जहिमा स्त्री [दे] विदग्ध पुरुष की बनाई हुई गाथा ; (दे ३, ४२)।

जहुट्ठिल देखो **जहिट्ठिल** ; (हे १, ९६ ; १०७)।

जहुत्त न [यथोक्त] कथनानुसार, (पडि)।

जहेअ अ [यथैव] जैसे ही ; (से ६, १६)।

जहेच्छ देखो **जहिच्छ**, (गा ८८२)।

जहोइय न [यथोदित] कथितानुसार, (धर्म ३)।

जहोइय } न [यथोचित] योग्यता के अनुसार ; (से **जहोच्चिय** } ८, ५ ; सुपा ४७१)।

जा अक [जन्] उत्पन्न होना। जाअइ, (हे ४, १३६)। वकृ—**जायंत** ; (कुमा)। सकृ—"एक्कें च्चिय निव्विण्णा पुणो पुणो **जाइउं** च मरिउं च" (स १३०)।

जा सक [या] १ जाना, गमन करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। जाइ, (सुपा ३०१)। जंति ; (महा)। वकृ—**जंत**; (सुर ३, १४३; १०, ११७)। कवकृ—**जाइज्जमाण**, (पण्ह १, ४)।

जा देखो **जाव**=यावत् ; (हे १, २७१; कुमा, सुर १५, १३८)।

जाअर देखो **जागर**, (मुद्रा १८७)।

जाइ स्त्री [जाति] १ पुष्प-विशेष, मालती; (कुमा)। २ सामान्य नैयायिकों के मत से एक धर्म-विशेष, जो व्यापक हो, जैसे मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व; (विसे १६०१)। ३ जात, कुल, गोत्र, वंश, ज्ञाति; (ठा ४, २, सूअ ६, १३, कुमा)। ४ उत्पत्ति, जन्म, (उत्त ३, पडि)। ५ क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति, (उत्त ३)। ६ पुष्प-प्रधान वृक्ष, जाई का पेड ; (पण्ण १)। ७ मद्य-विशेष ; (विपा १, २)। °**आजीव** पुं [°आजीव] जाति की समानता बतला कर भिक्षा प्राप्त करने वाला साधु, (ठा ५, १)। °**थेर** पुं [°स्थविर] साठ वर्ष की उम्र का मुनि; (ठा ३,

२)। °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, (सम ६७) । °**प्पसण्णा** स्त्री [°**प्रसन्ना**] जाति के पुष्पों से वासित मदिरा ; (जीव ३) । °**फल** न [°**फल**] १ वृक्ष-विशेष; २ फल-विशेष, जायफल, एक गर्म मसाला; (सुर १३,३३; सण) । °**मंत** वि [°**मत्**] उच्च जाति का; (आचा २, ४, २)। °**मय** पुं [°**मद**] जाति का अभिमान; (ठा १०) । °**वत्तिया** स्त्री [°**पत्रिका**] १ सुगन्धि फल वाला वृक्ष-विशेष ; २ फल-विशेष, एक गर्म मसाला ; (सण) । °**सर** पुं [°**स्मर**] १ पूर्व जन्म की स्मृति ; २ वि. पूर्व जन्म का स्मरण करने वाला, पूर्व-जन्म का ज्ञान वाला, " जाइसराइं मन्ने इमाइं नयणाइं सयललोयस्स " (सुर ४, २०८) । °**सरण** न [°**स्मरण**] पूर्व जन्म की स्मृति, (उत्त १६) । °**स्सर** देखो °**सर**; (कप्प; विसे १६७१, उप २२० टी) ।

जाइ देखो **जाया** ; (षड्) ।

जाइ स्त्री [**दे**] १ मदिरा, सुरा, दारू, (दे ३, ४५) । २ मदिरा-विशेष; (विपा १, २) ।

जाइ वि [**यायिन्**] जाने वाला, (ठा ४, ३) ।

जाइअ वि [**याचित**] प्रार्थित, माँगा हुआ; (विसे २५०४; गा १६५) ।

जाइच्छिय वि [**याद्दच्छिक**] स्वेच्छा-निर्मित ; (विसे २५) ।

जाइज्जंत देखो **जाय**=यातय् ।

जाइज्जंत / **जाइज्जमाण** } देखो **जाय**=याच् ।

जाइणी स्त्री [**याकिनी**] एक जैन साध्वी, जिसको सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्रसूरि अपनी धर्म-माता समझते थे , (उप १०३६) ।

जाउ अ [**जातु**] किसी तरह ; (उप ५४७) । °**कण्ण** पु [°**कर्ण**] पूर्वभद्रपदा नक्षत्र का गोत्र ; (इक) ।

जाउया स्त्री [**यातृका**] देवर-पत्नी, पति के छोटे भाई की स्त्री ; (गाया १, १६) ।

जाउर पुं [**दे**] कपित्थ वृक्ष ; (दे ३, ४५) ।

जाउल पु [**जातुल**] वल्ली-विशेष, (पण्ण १--पत्र ३२)।

जाउहाण पुं [**यातुधान**] राक्षस , (उप १०३१ टी ; पाअ) ।

जाग पुं [**याग**] १ यज्ञ, अध्वर,होम, हवन ; (पउम १४, ४७ ; स १७१) । २ देव-पूजा ; (गाया १,१) ।

जागर अक [**जागृ**] जागना, निद्रा-त्याग करना । जागरइ; (षड्) । वकृ—**जागरमाण** ; (विसे २७१६)। हेकृ—**जागरित्तए, जागरेत्तए** ; (कप्प ; कस) ।

जागर वि [**जागर**] १ जागने वाला, जागता ; (आचा ; कप्प ; श्रा २५) । २ पुं जागरण, निद्रा-त्याग ; (मुद्रा १८७, भग १२, २ ; सुर १३, ६७) ।

जागरइत्तु वि [**जागरितृ**] जागने वाला ; (श्रा २३) ।

जागरिअ वि [**जागृत**] जागा हुआ, निद्रा-रहित, प्रबुद्ध ; (गाया १, १६ ; श्रा २५) ।

जागरिअ वि [**जागरिक**] निद्रा-रहित ; (भग १२,२) ।

जागरिया स्त्री [**जागरिका, जागर्या**] जागरण, निद्रा-त्याग, (गाया १, १ ; औप) ।

जाडी स्त्री [**दे**] गुल्म; लता-प्रतान ; (दे ३, ४५) ।

जाण सक [**ज्ञा**] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना । जाणइ, (हे ४, ७) । वकृ—**जाणंत, जाणमाण**; (कप्प; विपा १, १) । संकृ—**जाणिऊण, जाणित्ता, जाणित्तु**; (पि ५८६; महा, भग) । हेकृ—**जाणिउं**; (पि ५७६) । कृ—**जाणियव्व** ; (भग ; अंत १२)।

जाण पुंन [**यान**] १ रथादि वाहन, सवारी ; (औप , पण्ह २, ५ , ठा ४, ३) । २ यान-पात्र, नौका, जहाज ; "णाणं संसारसमुद्दतारणे बंधुर जाणं" (पुप्फ ३७) । ३ गमन, गति ; (राज) । °**पत्त**, °**वत्त** न [°**पात्र**] जहाज, नौका, (नमि ५ , सुर १३, ३१)। °**साला** स्त्री[°**शाला**] १ तबेला; २ वाहन बनाने का कारखाना, (औप; आचा २,२,२)।

जाण न [**ज्ञान**] ज्ञान, बोध, समझ ; (भग ; कुमा) ।

जाण° वि [**जानत्**]जानता हुआ ; "जाणं काएण णाउट्टी" (सूअ १, ५, १) । "आसुपण्णेण जाणया" (आचा) ।

जाणई स्त्री [**जानकी**] सीता, राम-पत्नी ; (पउम १०६, १८ ; से ६, ६) ।

जाणग त्रि [**ज्ञायक**] जानकार, ज्ञानी, जानने वाला, (सूअ १, १, १ ; महा ; सुर १०, ६५) ।

जाणगी देखो **जाणई** ; (पउम ११७, १८) ।

जाणण न [**दे**] वरात, गुजरातीमें " जान " ; "जो तदवत्थाए समुचिओत्ति जाणणणाइओ" (उप ५६७ टी) ।

जाणण न [**ज्ञान**] जानना, जानकारी, समझ, बोध; (हे ४, ७, उप पृ २३, सुपा४१६; सुर १०, ७१; रयण१४; महा)।

जाणणया / **जाणणा** } स्त्री. ऊपर देखो; (उप ५१६ ; विसे २१४८; अणु ; आचू ३) ।

जाणय देखो **जाणग** ; (भग ; महा) ।

जाणय वि [**ज्ञापक**] जनाने वाला, समझाने-वाला; (औप) ।

जाणया स्त्री [**ज्ञान**] ज्ञान, समझ ; जानकारी , "एएसिं पयाणं जाणयाए सवणयाए" (भग) ।

जाणवय वि [**जानपद**] १ देश मे उत्पन्न, देश-सबन्धी, (भग ; णाया १, १—पत्र १) ।

जाणाव सक [**ज्ञापय्**] ज्ञान कराना, जनाना । जाणावइ, जाणावेइ ; (कुमा , महा) । हेकृ— **जाणाविउ**, **जाणावेउं** : (पि ५५१) । कृ—**जाणावेयव्व** ; (उप पृ ३३) ।

जाणावण न [**ज्ञापन**] ज्ञापन, बोधन , (पउम ११, ८८, सुपा ६०६) ।

जाणावणा } स्त्री [**ज्ञापनी**] विद्या-विशेष , (उप पृ
जाणावणी } ४२, महा) ।

जाणाविय वि [**ज्ञापित**] जनाया, विज्ञापित, मालूम कराया, निवेदित ; (सुपा ३५६ , श्रावम) ।

जाणि वि [**ज्ञानिन्**] ज्ञाता, जानकार ; (कुमा) ।

जाणिअ वि [**ज्ञात**] जाना हुआ, विदित ; (सुर ४, २१४; ७, ३६) ।

जाणु न [**जानु**] १ घोटू, घुटना ; २ ऊरु और जघा का मध्य भाग, (तदु; निर १, ३ , णाया १, २) ।

जाणु } वि [**ज्ञायक**] जानने वाला, ज्ञाता, जानकार ;
जाणुअ } (ठा ३, ४ , णाया १, १३) ।

जाणे अ [**जाने**] उत्प्रेक्षा-सूचक अव्यय; मानो ; (अभि १५०) ।

जाम सक [**मृज्**] मार्जन करना, सफा करना । जामइ ; (नाट—प्राप्र ८० टी) ।

जाम पु [**याम**] १ प्रहर, तीन घण्टा का समय, (सम ४४; सुर ३, २४२) । २ यम, अहिंसा आदि पाँच व्रत ; ३ उम्र विशेष, आठ से बत्तीस, बत्तीस से साठ और साठ से अधिक वर्ष की उम्र ; (आचा) । ४ वि यम-संबन्धी, जमराज का , (सुपा ४०५) । °इल्ल वि [°वत्] १ प्रहर वाला; (हे २, १५६) । २ पुं. प्राहरिक, पहरेदार, यामिक; (सुपा ५) । °दिसा स्त्री [°दिश्] दक्षिण दिशा , (सुपा ४०५) । °वई स्त्री [°वती] रात्रि, रात ; (गउड) ।

जाम देखो **जाव** = यावत् ; (आरा ३३) ।

जामाउ } पुं [**जामातृ,°क**] जामाता, लड़की का पति ;
जामाउय } (पउम ८६, ४ , हे १, १३१ , गा ६८३) ।

जामि स्त्री [**जामि, यामि**] बहिन, भगिनी ; (राज) ।

जामिग पुं [**यामिक**] प्राहरिक, पहरेदार, (उप ८३३) ।

जामिणी स्त्री [**यामिनी**] रात्रि, रात ; (उप ७२८ टी) ।

जामिल्ल देखो **जामिग** ; (सुपा १४६ ; २६६) ।

जाय सक [**याच्**] प्रार्थना करना, माँगना । वकृ—**जायंत**, (पण्ह १, ३) । कवकृ—**जाइज्जंत**, (पउम ५, ६८) ।

जाय सक [**यातय्**] पीडना, यन्त्रणा करना । जाएइ ; (उव) । कवकृ—**जाइज्जंत**; (पण्ह १, १) ।

जाय देखो **जाग** , (णाया १, १) ।

जाय वि [**जात**] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो; (ठा ६) । २ न. समूह, सघात; (दस ४) । ३ भेद, प्रकार ; (ठा १०; निचू १६) । ४ वि. प्रवृत्त; (औप) । ५ पु. लडका, पुत्र; (भग ६, ३३ ; सुपा २७६) । ६ न. बच्चा, संतान ; " जायं तीए जइ कहवि जायए पुन्नजोगेण" (सुपा ५६८)। ७ जन्म, उत्पत्ति; (णाया १, १) । °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ प्रसूति-कर्म ; (णाया १, १) । २ संस्कार-विशेष ; (वसु) । °**तेय** पु [°**तेजस्**] अग्नि, वह्नि; (सम ५०)। °**निद्दुया** स्त्री [°**निद्रुता**] मृत-वत्सा स्त्री ; (विपा १, २)। °**मूअ** वि [°**मूक**] जन्म से मूक; (विपा १, १) । °**रूव** न [°**रूप**] १ सुवर्ण, सोना, (औप) । २ रूप्य, चाँदी; (उत्त ३५) । ३ सुवर्ण-निर्मित ; (सम ६५) । °**वेय** पु [°**वेदस्**] अग्नि, वह्नि ; (उत्त २२) ।

जाय वि [**यात**] गत, गया हुआ ; (सूअ १, ३, १) । २ प्राप्त ; (सूअ १, १०) । ३ न. गमन, गति; (आचा)।

जायग वि [**याचक**] १ माँगने वाला , २ पुं. भिक्षुक ; (श्रा २३ ; सुपा ४१०) ।

जायग वि [**याजक**] यज्ञ करने वाला ; (उत्त २५, ६) ।

जायण न [**याचन**] याचना, प्रार्थना ; (श्रा १४ ; प्रति ६१) ।

जायण न [**यातन**] कदर्थन, पीडन ; (पण्ह १, २) ।

जायणया } स्त्री [**याचना**] याचना, प्रार्थना, माँगना ,
जायणा } (उप पृ ३०२ ; सम ४० ; स २६१) ।

जायणा स्त्री [**यातना**] कदर्थना, पीड़ा; (पण्ह १, १)।

जायणी स्त्री [**याचनी**] प्रार्थना की भाषा , (ठा ४,१)।

जायव पुस्त्री [**यादव**] यदुवंश में उत्पन्न, यदुवंशीय ; (णाया १, १६ , पउम २०, ५६) ।

जाया स्त्री [**जाया**] स्त्री, औरत, (गा ६; सुपा ३८६) ।

जाया देखो **जत्ता** ; (पण्हसू २, ४ ; अ १, ७) ।

जाया स्त्री [**जाता**] चमरेन्द्र आदि इन्द्रों की बाह्य परिषत्; (भग; ठा ३, २)।
जायाइ पुं [**यायाजिन्**] यज्ञ-कर्ता, याजक; (उत्त २५, १)।
जार पुं [**जार**] १ उपपति; (हे १, १७७)। २ मणि का लक्षण-विशेष; (जीव ३)।
जारिच्छ वि [**यादृक्ष**] ऊपर देखो; (प्रामा)।
जारिस वि [**यादृश**] जैसा, जिस तरह का; (हे १,१४२)।
जारेकण्ह न [**जारेकृष्ण**] गोत्र-विशेष, जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है; (ठा ७)।
जाल सक [**ज्वालय्**] जलाना, दग्ध करना। "तो जलियजलणजालावलीसु जालेमि नियदेहं" (महा)। संकृ—**जालेवि**; (महा)।
जाल न [**जाल**] १ समूह, संघात, (सुर ४, १३५; स ४४३)। २ माला का समूह, दाम-निकर; (राय)। ३ कारीगरी वाले छिद्रों से युक्त गृहांश, गवाक्ष-विशेष; (औप; णाया १, १)। ४ मछली वगैरः पकडने की जाल, पाश-विशेष; (पण्ह १, १; ४)। ५ पैर का आभूषण-विशेष; (औप)। °**कडग** पु [°**कटक**] १ सच्छिद्र गवाक्षों का समूह; २ सच्छिद्र गवाक्ष-समूह से अलंकृत प्रदेश; (जीव ३)। °**घरग** न [°**गृहक**] सच्छिद्र गवाक्ष वाला मकान; (राय; णाया १, २)। °**पंजर** न [°**पञ्जर**] गवाक्ष; (जीव ३)। °**हरग** देखो °**घरग**; (औप)।
जाल पुं [**ज्वाल**] ज्वाला, अग्नि-शिखा; (सुर ३, १८८; जी ६)।
जालंतर न [**जालान्तर**] सच्छिद्र गवाक्ष का मध्यभाग; (सम १३७)।
जालंधर पुं [**जालन्धर**] १ पंजाब का एक स्वनाम-ख्यात शहर; (भवि)। २ न. गोत्र-विशेष, (कप्प)।
जालंधरायण न [**जालन्धरायण**] गोत्र-विशेष, (आचा २, ३)।
जालग देखो **जाल**=जाल, (पण्ह १, १; ५; औप; णाया १, १)।
जालघडिआ स्त्री [**दे**] चन्द्रशाला, अट्टालिका; (दे ३,४६)।
जालय देखो **जाल**=जाल; (गउड)।
जाला स्त्री [**ज्वाला**] १ अग्नि की शिखा; (आचा; सुर २, २४६)। २ नवम चक्रवर्ती की माता; (सम १५२)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ की शासन-देवी, (संति ६)।
जाला अ [**यदा**] जिस समय, जिस काल में; "ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घेप्पंति" (हे ३,६५)।
जालाउ पु [**जालायुष्**] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (राज)।
जालाव सक [**ज्वालय्**] जलाना, दाह देना। वकृ—**जालावंत**; (महानि ७)।
जालाविअ वि [**ज्वालित**] जलाया हुआ, (सुपा १८६)।
जालि पुं [**जालि**] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु १)। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र, जिसने दीक्षा ले कर शत्रुंजय पर्वत पर मुक्ति पाई थी; (अंत १४)।
जालिय पुं [**जालिक**] जाल-जीवि, वागुरिक; (गउड)।
जालिय वि [**ज्वालित**] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ; (उव; उप ५६७ टी)।
जालिया स्त्री [**जालिका**] १ कञ्चुक, (पण्ह १, ३—पत्र ४४; गउड)। २ वृन्त; (राज)।
जालुग्गाल पुं [**जालोद्गाल**] मछली पकड़ने का साधन-विशेष; (अभि १८३)।
जाव सक [**यापय्**] १ गमन करना, गुजारना। २ वरतना। ३ शरीर का प्रतिपालन करना। जावइ; (आचा)। जावेइ; (हे ४, ४०)। जावए; (सूअ १, १, ३)।
जाव अ [**यावत्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय; — १ परिमाण; २ मर्यादा; ३ अवधारण, निश्चय; "जावदयं परिमाणे मज्जायाएऽवधारणे चेइ" (विसे ३५१६; णाया १, ७)। °**ज्जीव** स्त्री न [°**ज्जीव**] जीवन पर्यन्त; (आचा)। स्त्री—°**वा**; (विसे ३५१८; औप)। °**ज्जीविय** वि [°**ज्जीविक**] यावज्जीव-संबन्धी, (स ४४१)। देखो **जावं**।
जाव पुं [**जाप**] मन ही मन वार वार देवता का स्मरण, मन्त्र का उच्चारण; (सुर ६, १७४, सुपा १७१)।
जावइ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३४)।
जावइअ वि [**यावत्**] जितना; "जावइया वयणपहा" (सम्म १४४, भत्त ६४)।
जावं देखो **जाव**, (पउम ६८, ५०)। °**ताव** अ [°**तावत्**] १ गणित-विशेष; २ गुणाकार; (ठा १०)।
जावंत देखो **जावइअ**; (भग १, १)।

$x - y = 0$
(d) $2x - 3y = 0$

जिट्ठाणी स्त्री [**ज्येष्ठा**] बड़े भाई की पत्नी , (सुपा ४८७)।
जिण सक [**जि**] जीतना, वश करना। जिणइ ; (हे ४, २४१ ; महा)। कर्म—जिणिज्जइ, जिव्वइ ; (हे ४, २४२)। वकृ—**जिणंत, जिणयंत**; (पि ४७३ ; पउम १११, १७)। कवकृ—**जिव्वमाण** ; (उत ७, २२)। संकृ—**जिणित्ता, जिणिऊण, जिणेऊण, जेऊण, जेउआण**; (पि ; हे ४, २४१ ; षड् ; कुमा)। हेकृ—**जिणिउं, जेउं** : (सुर १, १३० ; रभा)। कृ—**जिच्च, जिणेयव्व, जेयव्व** ; (उत्त ७, २२ ; पउम १६, १६ ; सुर १४, ७६)।
जिण पुं [**जिन**] १ राग आदि अन्तरङ्ग शत्रुओं को जीतने वाला, अर्हन् देव, तीर्थकर; (सम १; ठा ४, १ ; सम्म १)। २ बुद्ध देव,बुद्ध भगवान् , (दे १, ५)। ३ केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ; (पण्ण १)। ४ चौदह पूर्व ग्रन्थो का जानकार; (उत ५)। ५ जैन साधु-विशेष, जिनकल्पी मुनि ; ६ अवधि-ज्ञान आदि अतीन्द्रिय ज्ञान वाला ; (पचा ४ ; ठा ३, ४)। ७ वि. जीतने वाला; (पचा ३, २०)। °**इंद** पु [°**इन्द्र**] अर्हन् देव ; (सुर ४, ८१)। °**कप्प** पु [°**कल्प**] एक प्रकार के जैन मुनिओं का आचार, चारित्र-विशेष; (ठा ३, ४ ; बृह १)। °**कप्पिय** पुं [°**कल्पिक**] एक प्रकार का जैन मुनि; (ओघ ६६६)। °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] जिन-देव का वतलाया हुआ धर्मानुष्ठान, (पंचव १)। °**घर** न [°**गृह**] जिन-मन्दिर ; (भग २, ८ ; णाया १, १६—पत्र २१०)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ जिन-देव, अर्हन् देव , (कम्म ३, १; अजि २६)। २ स्व-नाम-ख्यात जैन आचार्य-विशेष ; (गु १२ ; सण)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] अर्हन् देव की पूजा के उपलक्ष में किया जाता उत्सव विशेष, रथ-यात्रा ; (पंचा ७)। °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से जीव तीर्थकर होता है ; (राज)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य-विशेष, (गण २६ ; सार्ध १५०)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन श्रेष्ठी; (पउम २०, ११६)।°**दव्व** न [°**द्रव्य**] जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धनादि वस्तु ; "वड्ढंतो जिणदव्वं तित्थगरत्तं लहइ जीवो " (उप ४१८ ; दंस १)। °**दास** पुं [°**दास**] १ स्व-नाम-प्रसिद्ध एक जैन उपासक; (आचू ६)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि और ग्रन्थकार, निशीथ-सूत्र का चूर्णिकार ; (निचू २०)। °**देव** पु [°**देव**] १ अर्हन् देव; (गु ७)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य; (आक)। ३ एक जैन उपासक, (आचू ४)। °**धम्म** पु [°**धर्म**] जिनदेव का उपदिष्ट धर्म ; जैन धर्म; (ठा ५, २, हे १, १८७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**) जिन-देव, अर्हन् देव; (सुपा २३५)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] अर्हन् देव की मूर्ति; (णाया १, १६—पत्र २१०; राय, जीव ३)। " जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं " (दसचू २)। °**पवयण** न [°**प्रवचन**]जैन आगम, जिनदेव-प्रणीत शास्त्र ; (विसे १३५०)। °**पसत्थ** वि [°**प्रशस्त**] तीर्थंकर-भाषित, जिनदेव-कथित ; (पण्ह २, ५)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] जिन-देव, अर्हन् देव ; (उप ३२० टी)। °**पाडिहेर** न [°**प्रातिहार्य**] जिन-देव की अर्हता-सूचक देव-कृत अशोक वृक्ष आदि आठ वाह्य विभूतियाँ, वेये है;—१ अशोक वृक्ष, २ सुर-कृत पुष्प-वृष्टि, ३ दिव्य-ध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामण्डल, ७ दुन्दुभि-नाद, ८ छत्र, (दंस १)। °**पालिय** पुं [°**पालित**] चम्पा नगरी का निवासी एक श्रेष्ठि-पुत्र, (णाया १, ६)। °**बिंब** न [°**बिम्ब**] जिन-मूर्ति, जिन-देव की प्रतिमा , (पडि ; पंचा ७)। °**भड** पुं [°**भट**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य, जो सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्रीहरिभद्र सूरि के गुरू थे : (सार्ध ५८)। °**भद्द** पु [°**भद्र**] स्वनाम-प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार , (आव ४)। °**भवण** न [°**भवन**] अर्हन् मन्दिर; (पंचव ४)। °**मय** न [°**मत**] जैन दर्शन ; (पंचा ४)। °**माया** स्त्री [°**मातृ**] जिन-देव की जननी ; (सम १५१)। °**मुद्दा** स्त्री [°**मुद्रा**) जिन-देव जिस तरह से कायोत्सर्ग में रहते है उस तरह शरीर का विन्यास, आसन-विशेष, (पंचा ३)। °**यंद** देखो °**चंद**; (सुर १, १० ; सुपा ७६)। °**रक्खिय** पुं [°**रक्षित**] स्वनाम-ख्यात एक सार्थवाह-पुत्र, (णाया १, ६)। °**वइ** पुं [°**पति**] जिन -देव, अर्हन्-देव; (सुपा ८६)। °**वई** स्त्री [°**वाच्**] जिन-देव की वाणी; (बृह १)। °**वयण** न [°**वचन**] जिन-देव की वाणी, (ठा ६)। °**वयण** न [°**वदन**] जिनदेव का मुख ; (औप)। °**वर** पुं [°**वर**] अर्हन् देव ; (पउम ११, ४ ; अजि १)। °**वरिंद** पुं [°**वरेन्द्र**] अर्हन् देव; (उप ७७६) ।°**वल्लह** पुं [°**वल्लभ**] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य और प्रसिद्ध स्तोत्र-कार ; (लहुअ १७)। °**वसह** पुं [°**वृषभ**] अर्हन् देव ; (राज)। °**सकहा** स्त्री [°**सक्थि**] जिन-देव की अस्थि; (भग १०, ५)। °**सासण** न [°**शासन**] जैन दर्शन ; (उत्त १८ ; सूअ १, ३, ४)। °**हंस** पु [°**हंस**]

एक जैन आचार्य ; (दं ४७)। °**हर** देखो °**घर**; (पउम ११, ३ ; सुपा ३६१ ; महा)। °**हरिस** पु [°हर्ष] एक जैन मुनि; (रयण ६४)। °**ायण** न. [°ायतन] जिन-देव का मन्दिर ; (पंचव ४)।

जिणंद देखो **जिणिंद** "सव्वे जिणंदा सुरविंदवंदा" (पडि; जी ४८)।

जिणण न [**जयन**] जय, जीत ; (संण)।
जिणिंद पुं [**जिनेन्द्र**] जिन भगवान्, अर्हन् देव ; (प्रासू ५२)। °**गिह** न [°गृह] जिन-मन्दिर ; (सुर ३, ७२)। °**चंद** पु [°चन्द्र] जिन-देव ; (पउम ६५, ३६)।
जिणिय वि [**जित**] पराभूत, वशीकृत ; (सुपा ५२२ ; रयण २७)।
जिणिस्सर देखो **जिणेसर**; (पंचा १६)।

जिणुत्तम पुं [**जिनोत्तम**] जिन-देव , (अजि ४)।
जिणेस पुं [**जिनेश**] जिन भगवान् , अर्हन् देव; (सुपा २६०)।

जिणेसर पु [**जिनेश्वर**] १ जिन देव, अर्हन् देव ; (पउम १, २३)। २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (सुर १६, २३६ ; साधं ७६ ; गु ११)।
जिण्ण वि [**जीर्ण**] १ पुराना, जर्जर ; (हे १, १०२ ; चारु ४६ , प्रासू ७६)। २ पचा हुआ, "जिण्णे भोअण-मत्ते" (हे १, १०२)। ३ वृद्ध, बूढा; (बृह १)। °**सेट्ठि** पुं [°श्रेष्ठिन्] १ पुराना शेठ ; २ श्रेष्ठि पद से च्युत ; (आव ४)।
जिण्ण (अप) देखो **जिअ**=जित ; (पिंग)।
जिण्णासा स्त्री [**जिज्ञासा**] जानने की इच्छा; (पंचा ४)।
जिण्णिअ } (अप) देखो **जिणिय** ; (पिंग)।
जिण्णाअ }

जिण्णोब्भवा स्त्री [**दे**] दूर्वा, दूब ; (दे ३, ४६)।
जिण्हु वि [**जिष्णु**] १ जित्वर, जीतने वाला, विजयी ; (प्रामा)। २ पुं. अर्जुन. मध्यम पंडव; (गउड)। ३ विष्णु, श्रीकृष्ण ; ४ सूर्य, रवि, ५ इन्द्र, देव-नायक ; (हे२,७५)।
जित्त देखो **जिअ**=जित ; (महा ; सुपा ३६५; ६४३)।
जित्तिअ } वि [**यावत्**] जितना ; (हे २. १५६; षड्)।
जित्तिल }

जित्तुल (अप) ऊपर देखो; (कुमा)।
जिध (अप) अ [**यथा**] जैसे, जिस तरह से ; (हे ४, ४०१)।
जिन्न देखो **जिण्ण** ; (सुपा ६)।
जिन्नासिय वि [**जिज्ञासित**] जानने के लिए इष्ट, जानने के लिए चाहा हुआ ; (भास ७५)।
जिन्नुद्धार पुं [**जीर्णोद्धार**] पुराने और टूटे-फूटे मन्दिर आदि को सुधारना ; (सुपा ३०६)।
जिब्भा स्त्री [**जिह्वा**] जीभ, रसना ; (पण्ह २, ५ ; उप ६८६ टी)।
जिब्भिंदिय न [**जिह्वेन्द्रिय**] रसनेन्द्रिय, जीभ ; (ठा ८,२)।
जिब्भिया स्त्री [**जिह्विका**] १ जीभ ; २ जीभ के आकार वाली चीज ; (जं ४)।
जिम सक [**जिम्, भुज्**] जीमना, भोजन करना, खाना। जिमइ ; (हे ४, ११० ; षड्)।
जिम (अप) देखो **जिध** ; (षड् , भवि)।
जिमण न [**जेमन, भोजन**] जीमन, भोजन ; (श्रा १६ ; चैत्य ५६)।
जिमिअ वि [**जिमित, भुक्त**] १ जिसने भोजन किया हुआ हो वह ; (पउम २०, १२७ ; पुप्फ ३५ , महा)। २ जो खाया गया हो वह, भक्षित ; (दे ३, ४६)।
जिम्म देखो **जिम**=जिम्। जिम्मइ ; (हे ४, २३०)।
जिम्ह पु [**जिह्म**] १ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से प्रायः एक वर्ष तक जमीन में चिकनापन रहता है ; (ठा ४, ४—पत्र २७०)। २ वि. कुटिल, कपटी, मायावी ; (सम ७१)। ३ मन्द, अलस ; (जं २)। ४ न. माया, कपट ; (वव३)।
जिम्ह न [जैह्म्य] कुटिलता, वक्रता, माया, कपट ; (सम ७१)।
जिवँ } (अप) देखो **जिव** ; (कुमा ; षड् ; हे ४,३३७)।
जिह }
जिहा देखो **जीहा** ; (षड्)।
जीअ देखो **जीव** =जीव्। जीअइ ; (गा १२४ ; हे १, १०१)। वकृ—**जीअंत** ; (स ३, १२ ; गा ८१६)।
जीअ देखो **जीव**=जीव ; (गउड)। ५ पानी, जल ; (से २, ७)।
जीअ देखो **जीविअ** ; (हे १, २७१; प्राप्र; सुर २,२३०)।
जीअ न [**जीत**] १ आचार, रीवाज, रूढि ; (औप ; राय; सुपा ४३)। २ प्रायश्चित से सम्बन्ध रखने वाला एक तरह का रीवाज, जैन सूत्रों मे उक्त रीति से भिन्न तरह के प्राय-

स्थविरों का परम्परागत आचार ; (ठा ५, २) । ३ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (ठा ५ , २ ; वव १) । ४ मर्यादा, स्थिति, व्यवस्था ; (णंदि) । °कप्प पुं [°कल्प] १ परम्परा से आगत आचार ; २ परम्परागत आचार का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (पचा ६ ; जीत) । °कप्पिय वि [°कल्पिक] जीत कल्प वाला ; (ठा १०) । °धर वि [°धर] १ आचार-विशेष का जानकार ; २ स्वनाम-ख्यात एक जैनाचार्य ; (णदि) । °ववहार पुं [°व्यवहार] परम्परा के अनुसार व्यवहार ; (धर्म २ ; पंचा १६) ।

जीअण देखो **जीवण** ; (नाट—चैत २५८) ।

जीअव वि [**जीवितवत्**] जीवित वाला, श्रेष्ठ जीवन वाला; (पगह १, १) ।

जीआ स्त्री [**ज्या**] १ धनुष की डोर ; (कुमा) । २ पृथिवी, भूमि, ३ माता, जननी; (हे २, ११५ ; षड्) ।

जीमूअ पुं [**जीमूत**] १ मेघ, वर्षा ; (पाअ ; गउड) । २ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से जमीन दश वर्ष तक चिकनी रहती है ; (ठा ४, ४) ।

जीर° देखो **जर** = जृ ।

जीरय न [**जीरक**] जीरा, मसाला-विशेष ; (सुर १,२२) ।

जीव अक [**जीव्**] १ जीना, प्राण धारण करना । २ सक. आश्रय करना । जीवइ ; (कुमा) । वकृ—**जीवंत, जीवमाण** ; (विपा १, ५ ; उप ७२८ टी) । हेकृ—**जीविउं** ; (आचा) । संकृ—**जीविअ** ; (नाट) । कृ—**जीविअव्व, जीवणिज्ज** ; (सूअ १, ७) । प्रयो—जीवावेहि ; (पि ५५२) ।

जीव पुंन [**जीव**] १ आत्मा, चेतन, प्राणी; (ठा १, १ ; जी १ ; सुपा २३५) । "जीवाइं" (पि ३६७) । २ जीवन, प्राण-धारण ; "जीओ त्ति जीवणं पाणधारणं जीवियंति पज्जाया" (विसे ३५०८ ; सम १) । ३ बृहस्पति, सुर-गुरु ; (सुपा १०८) । ४ बल, पराक्रम ; (भग २, १) । ५ देखो **जीअ** = जीव । °काय पुं [°काय] जीव-राशि, जीव-समूह , (सूअ १, ११) । °ग्गाह न [°ग्राह] जिन्दे को पकड़ना; (णाया १,२) । °णिकाय पुं [°निकाय] जीव-राशि ; (ठा ६) । °त्थिकाय पुं [°ास्तिकाय] जीव-समूह, जीव-राशि ; (भग १३, ४ ; अणु) । °दय वि [°दय] जीवित देने वाला ; (सम १) । °दया स्त्री [°दया] प्राणि दया, दुःखी जीव का दुःख से रक्षण ; (महानि २) । °देव पुं [°देव] स्वनाम-ख्यात प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (सुपा १) । °पएस पुं [**प्रदेशजीव**] अन्तिम प्रदेश में ही जीव की स्थिति को मानने वाला एक जैनाभास दार्शनिक ; (राज) । °पएसिय पुं [°**प्रादेशिक**] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा७) । °लोग, °लोय पुं [°लोक] १ जीव-जाति, प्राणि-लोक, जीव-समूह ; (महा) । °विजय न [°विचय] जीव के स्वरूप का चिन्तन ; (राज) । °विभत्ति स्त्री [°विभक्ति] जीव का भेद ; (उत्त ३६) । °वुड्ढिय न [°वृद्धिक] अनुज्ञा, संमति, अनुमति ; (णंदि) ।

जीवंजीव पुं [**जीवजीव**] १ जीव-बल, आत्म-पराक्रम ; (भग २, १) । २ चकोर-पक्षी ; (राज) ।

जीवंत देखो **जीव** = जीव् । °मुक्क पुं [°मुक्त] जीवन्मुक्त, जीवन-दशा ही में संसार-बन्धन से मुक्त महात्मा ; (अच्चु ४७) ।

जीवग पुं [**जीवक**] १ पक्षि-विशेष ; (उप ५८०) । २ नृप-विशेष ; (तित्थ) ।

जीवजीवग पुं [**जीवजीवक**] चकोर पक्षी ; (पगह १, १—पत्र ८) ।

जीवण न [**जीवन**] १ जीना, जिन्दगी ; (विसे ३५३१ ; पउम ८, २५०) । २ जीविका, आजीविका ; (स २२७ ; ३१०) । ३ वि. जिलाने वाला , (राज) । °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] आजीविका ; (उप २६४ टी) ।

जीवमजीव पुं [**जीवाजीव**] चेतन और जड़ पदार्थ ; (आवम) ।

जीवम्मुत्त देखो **जीवंत-मुक्क** ; (उवर १६१) ।

जीवयमई स्त्री [**दे**] मृगों के आकर्षण के साधन-भूत व्याध-मृगी; (दे ३, ४६) ।

जीवा स्त्री [**जीवा**] १ धनुष की डोरी ; (स ३८४) । २ जीवन, जीना; (विसे ३५३१) । ३ क्षेत्र का विभाग-विशेष, (सम १०४) ।

जीवाउ पु [**जीवातु**] जिलाने वाला औषध, जीवनौषध ; (कुमा) ।

जीवाविय वि [**जीवित**] जिलाया हुआ ; (उप ७६८ टी) ।

जीवि वि [**जीविन्**] जीने वाला ; (गा ८४७) ।

जीविअ वि [**जीवित**] १ जो जिन्दा हो ; २ न. जीवित, जीवन, जिन्दगी; (हे १, २७१; प्राप्र) । °नाह पुं [°नाथ] प्राण-पति ; (सुपा ३१५) । °रिसिका स्त्री [°रिसिका] वनस्पति-विशेष ; (पगण १— पत्र ३६) ।

जीविआ स्त्री [**जीविका**] १ आजीविका, निर्वाह-साधक वृत्ति; (ठा ४, २; स २१८; णाया १, १)।
जीविओसविय वि [**जीवितोत्सविक**] जीवन में उत्सव के तुल्य, जीवनोत्सव के समान, (भग ६, ३३; राय)।
जीविओसासिय वि [**जीवितोच्छ्वासिक**] जीवन को बढाने वाला, (भग ६, ३३)।
जीविगा देखो **जीविआ**; (स २१८)।
जीह अक [**लस्ज्**] लज्जा करना, शरमाना। जीहइ; (हे ४, १०३, षड्)।
जीहा स्त्री [**जिह्वा**] जीभ, रसना; (आचा; स्वप्न ७८)। °**ल** वि [°**वत्**] लम्बी जीभ वाला; (पउम ७, १२०, नमि ८; सुर २, ६२)।
जीहाविअ वि [**लज्जित**] लज्जा-युक्त किया गया, लजाया गया; (कुमा)।
जु देखो **जुंज** (कुमा)। कवकृ — **जुज्जंत**; (सम्म १०७; से १२, ८७)।
जु° स्त्री [**युध्**] लड़ाई, युद्ध, "जुवि दातिभए घेप्पइ" (विसे ३०१६)।
जुअ देखो **जुग**; (से १२, ६०; इक; पगह १, १)। ६ युग्म, जोड़ा, उभय; (पिंग, सुर २,१०२; सुपा १६०)।
जुअ वि [**युत**] युक्त, संलग्न, सहित; (दे १, ८१; सुर ४, ६४)।
जुअ देखो **जुव**; (गा २२८; कुमा; सुर २, १७७)।
जुअइ स्त्री [**युवति**] तरुणी, जवान स्त्री; (गउड; कुमा)।
जुअंजुअ (अप) अ [**युतयुत**] जुदा जुदा, अलग अलग, भिन्न भिन्न; (हे ४, ४२२)।
जुअण [**दे**] देखो **जुअल**=(दे); (षड्)।
जुअय न [**युतक**] जुदा, पृथक्; (दे ७, ७३)।
जुअरज्ज न [**यौवराज्य**] युवराजपन; (स २६८)।
जुअल न [**युगल**] १ युग्म, जोड़ा, उभय; (पाअ)। २ वे दो पद्य जिनका अर्थ एक दूसरे से सापेक्ष हो; (आ १४)।
जुअल पुं [**दे**] युवा, तरुण, जवान; (दे ३,४७)।
जुअलिअ वि [**दे**] द्विगुणित; (दे ३, ४७)।
जुअलिय देखो **जुगलिय**, (णाया १, १)।
जुआण देखो **जुवाण**, (गा ५७; २४६)।
जुआरि स्त्री [**दे**] जुआरि, अन्न-विशेष, (सुपा ५४६; सुर १, ७१)।
जुइ स्त्री [**द्युति**] कान्ति, तेज, प्रकाश, चमक, (औप; जीव ३)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] तेजस्वी, प्रकाश-शाली; (स ६४१; पउम १०२, १५६)।
जुइ स्त्री [**युति**] संयोग, युक्तता; (ठा ३, ३)।
जुइ पुं [**युगिन्**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (पउम ३२, ५७)।
जुउच्छ सक [**जुगुप्स्**] घृणा करना, निन्दा करना। जुउच्छइ; (हे ४, ४; षड्; से ५, ५)।
जुउच्छिय वि [**जुगुप्सित**] निन्दित; (निचू ४)।
जुंगिय वि [**दे**] जाति, कर्म या शरीर से हीन, जिसको संन्यास देने का जैन शास्त्रों में निषेध है; (पुप्फ १२५)।
जुंज सक [**युज्**] जोड़ना, युक्त करना। जुंजइ; (हे ४, १०६)। वकृ— **जुंजंत**; (ओघ ३२६)।
जुंजण न [**योजन**] जोड़ना, युक्त करना, किसी कार्य में लगाना; (सम १०६)।
जुंजणया } स्त्री [**योजना**] १ ऊपर देखो; (औप; ठा ७)।
जुंजणा } २ करण-विशेष—मन, वचन और शरीर का व्यापार; "मणवयणकायकिरिया पन्नरसविहाउ जुंजणा-करणं" (विसे ३३६०)।
जुंजम [**दे**] देखो **जुंजुमय**; (उप ३१८)।
जुंजिअ वि [**दे**] बुभुक्षित, भूखा; (णाया १, १—पत्र ६६; ६८ टी)।
जुंजुमय न [**दे**] हरा तृण विशेष, एक प्रकार का हरा घास, जिसको पशु चाव से खाते हैं; (स ४८७)।
जुंजुरुड वि [**दे**] परिग्रह-रहित; (द ३, ४७)।
जुग पुं [**युग**] १ काल-विशेष—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि ये चार युग; (कुमा)। २ पाँच वर्ष का काल; (ठा २, ४—पत्र ८६; सम ७५)। ३ न. चार हाथ का यूप; (औप; पगह १, ४)। ४ शकट का एक अंग, धुर, गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलों के कन्धे पर रक्खे जाते हैं; (उप पृ १३६, उत्त २)। ५ चार हाथ का परिमाण; (अणु)। ६ देखो **जुअ**=युग। °**प्पवर** वि [°**प्रवर**] युग-श्रेष्ठ; (भग)। °**प्पहाण** वि [°**प्रधान**] १ युग-श्रेष्ठ, (रभा)। २ पुं. युग-श्रेष्ठ जैन आचार्य, जैन आचार्य की एक उपाधि; (पव २६४, गुरु १)। °**बाहु** पुं [°**बाहु**] १ विदेह वर्ष में उत्पन्न स्वनाम-प्रसिद्ध एक जिन-देव, (विपा २, १)। २ विदेह वर्ष का एक त्रि-खण्डाधिपति राजा; (आचू ४)। ३ मिथिला का एक राजा; (तित्थ)।

४ वि. यूप को तरह लम्बा हाथ वाला, दीर्घ-बाहु ; (ठा ६)। °मच्छ पुं [°मत्स्य] मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८—पत्र ८८ टी)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष ; (ठा ५, ३)।

जुगंतर न [**युगान्तर**] यूप-परिमित भूमि-भाग, चार हाथ जमीन : (पण्ह २, १)। °**पलोयणा** स्त्री [°**प्रलोकना**] चलते समय चार हाथ जमीन तक दृष्टि रखना ; (भग)।

जुगंधर न [**युगन्धर**] १ गाड़ी का काष्ठ-विशेष, शकट का एक अवयव ; (जं १)। २ पुं. विदेह वर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव ; (आचू १)। ३ एक जैन मुनि : (पउम २०, १८)। ४ एक जैन आचार्य , (आवम)।

जुगल न [**युगल**] युग्म, जोड़ा, उभय ; (अणु ; राय)।

जुगलि वि [**युगलिन्**] स्त्री-पुरुष के युग्म रूप से उत्पन्न होने वाला : (रयण २२)।

जुगलिय वि [**युगलित**] १ युग्म-युक्त, द्वन्द्व-सहित ; (जीव ३)। २ युग्म रूप से स्थित ; (गज)।

जुगव वि [**युगवत्**] समय के उपद्रव से वर्जित , (अणु , राय)।

जुगव } अ [**युगपत्**] एक ही साथ, एक ही समय में ,
जुगवं } "कारणकज्जविभागो दीवपगासाण जुगवजम्मेवि" (विसे ५३६ टी ; औप)।

जुगुच्छ देखो **जुउच्छ** । जुगुच्छइ , (हे ४, ४)।

जुगुच्छणया } स्त्री [**जुगुप्सा**] घृणा, तिरस्कार ; (स
जुगुच्छा } १६७ ; प्राप्र)।

जुगुच्छिय वि [**जुगुप्सित**] घृणित, निन्दित , (कुमा)।

जुग्ग न [**युग्य**] १ वाहन, गाड़ी वगैरः यान ; (आचा)। २ शिविका, पुरुष-यान ; (सूअ २, २ ; जं २)। ३ गोल्ल देश में प्रसिद्ध दो हाथ का लम्बा-चौड़ा यान-विशेष, शिविका-विशेष ; (णाया १, १ ; औप)। ४ पि. यान-वाहक अश्व आदि ; ५ भार-वाहक ; (ठा ४, ३)। °**यरिया**, °**रिया** स्त्री [°**चर्या**] वाहन की गति; (ठा ४, ३—पत्र २३९)।

जुग्ग वि [**योग्य**] लायक, उचित , (विसे २९९२ ; सं ३१ ; प्रासू ५९ ; कुमा)।

जुग्ग न [**युग्म**] युगल, द्वन्द्व, उभय, (कुमा ; प्राप्र; प्राप)।

जुज्ज देखो **जुंज** । जुज्जइ ; (हे ४, १०९ ; षड्)।

जुज्जंत देखो **जु** ।

जुज्झ अक [**युध्**] लड़ाई करना, लड़ना । जुज्झइ ; (हे ४, २१७ . षड्)। वकृ—**जुज्झंत, जुज्झमाण** ; (सुर ६, २२२ ; २, ५१)। संकृ—**जुज्झित्ता** : (ठा ३, २)। प्रयो—जुज्झावेइ ; (महा)। वकृ —**जुज्झावेंत** ; (महा)। कृ—**जुज्झावेयव्व** ; (उप पृ २२५)।

जुज्झ न [**युद्ध**] लड़ाई, सग्राम, समर ; (णाया १, ८ ; कुमा ; कप्पू ; गा ६८४)। °**इजुद्ध** न [°**ातियुद्ध**] महायुद्ध, पुरुषों की बहत्तर कलाओं में एक कला; (औप)।

जुज्झण न [**योधन**] युद्ध, लड़ाई ; (सुपा ५२७)।

जुज्झिअ वि [**युद्ध**] १ लड़ा हुआ, जिसने संग्राम किया हो वह ; (से १५, ३७)। २ न. युद्ध, लड़ाई, संग्राम , (स १२६)।

जुट्ठ वि [**जुष्ट**] सेवित ; (प्रामा)।

जुडिअ वि [**दे**] आपस में जुटा हुआ, लड़ने के लिए एक दूसरे से भीड़ा हुआ ; "सुहडहिं समं सुहडा जुडिया तह साइणोवि साईहि" (उप ७२८ टी)।

जुण्ण वि [**दे**] विदग्ध, निपुण, दक्ष ; (दे ३, ४७)।

जुण्ण वि [**जीर्ण**] जूना, पुराना; (हे १,१०२; गा ५३४)।

जुण्हा स्त्री [**ज्योत्स्ना**] चाँदनी, चन्द्रिका, चन्द्र का प्रकाश , (सुपा १२१ ; सण)।

जुत्त वि [**युक्त**] १ संगत, उचित, योग्य, (णाया १, १६; चंद २०)। २ संयुक्त, जोड़ा हुआ, मिला हुआ, संबद्ध; (सूअ १,१, १,आचू)। ३ उद्युक्त, किसी कार्य में लगा हुआ, (पव ६४)। ४ सहित, समन्वित ; (सूअ १, १,३ ; आचा)। °**ासंखिज्ज** न [°**ासंख्येय**] संख्या-विशेष ; (कम्म ४, ७८)।

जुत्ति स्त्री [**युक्ति**] १ योग, योजन, जोड़, संयोग , (औप; णाया १, १०)। २ न्याय, उपपत्ति; (उत्त ९५० , प्रासू ६३)। ३ साधन, हेतु ; (सूअ १, ३, ३)। °**ण्ण** वि [°**ज्ञ**] युक्ति का जानकार ; (औप)। °**सार** वि [°**सार**] युक्ति-प्रधान, युक्त, न्याय-संगत, प्रमाण-युक्त ; (उप ७२८ टी)। °**सुवण्ण** न [°**सुवर्ण**] बनावटी सोना ; (दस १०, ३९)। °**सेण** पुं [°**षेण**] ऐरवत वर्ष के अष्टम जिन-देव ; (सम १५३)।

जुत्तिय वि [**यौक्तिक**] गाड़ी वगैरः में जो जोता जाय ; "जुत्तियतुरंगमाणं" (सुपा ७७)।

जुद्ध देखो **जुज्झ**=युद्ध ; (कुमा)।

जुन्न देखो **जुण्ण** ; (सुर १, २४४)।

जुन्हा देखो **जुण्हा** ; (सुपा १५७)।

जुप्प देखो **जुंज** । जुप्पइ; (हे ४, १०९) । जुप्पसि; (कुमा)।

जुम्म न [**युग्म**] १ युगल, दोनों, उभय ; (हे २, ६२ , कुमा)। २ पुं. सम राशि ; (ओघ ४०७ ; ठा ४, ३—पत्र

२३७) । **°पएसिय** वि [**°प्रादेशिक**] सम-संख्य प्रदेशों से निष्पन्न ; (भग २५, ४) ।

जुम्ह° स [**युष्मत्**] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम ; "जुम्हदम्हपयरणं" (हे १, २४६) ।

जुरुमिल्ल वि [**दे**] गहन, निबिड, सान्द्र ; "दुहजुरुमिल्ला-वत्थं" (दे ३, ४७) ।

जुव पुं [**युवन्**] जवान, तरुण ; (कुमा) । **°राअ** पुं [**°राज**] गद्दी का वारिस राज-कुमार, भावी राजा; (सुर २, १७५ ; अभि ८२) ।

जुवइ स्त्री [**युवति**] तरुणी, जवान स्त्री ; (हे १, ४ ; औप ; गउड ; प्रासू ६३ ; कुमा) ।

जुवंगव पु [**युवगव**] तरुण बैल ; (आचा २, ४, २) ।

जुवरज्ज न [**यौवराज्य**] १ युवराजपन ; (उप २११ टी ; सुर १६, १२७) । २ राजा के मरने पर जबतक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तबतक का राज्य ; (आचा २, ३, १) । ३ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य ; (बृह १) ।

जुवल देखो **जुगल** ; (स ४७८ ; पउम ६५, २३) ।

जुवलिय देखो **जुगलिय** ; (भग ; औप) ।

जुवाण देखो **जुव** ; (पउम ३,१४६ ; गाया १,१; कुमा) ।

जुवाणी देखो **जुवई** ; (पउम ८, १८४) ।

जुव्वण, **जुव्वणत्त** } देखो **जोव्वण**, (प्रासू ४६ , ११६) । "पढमं चिय बालत्तं, तत्तो कुमरत्तजुव्वणत्ताइं" (सुपा २४३) ।

जुसिअ वि [**जुष्ट**] सेवित ; "पाएण देइ लोगो उवगारिसु परिचिए व जुसिए वा" (ठा ४, ४) ।

जुहिट्ठिर, **जुहिट्ठिल**, **जुहिट्ठिल्ल** } देखो **जहिट्ठिल** ; (पिंग ; उप ६४८ टी ; गाया १, १६—पत्र २०८; २२६) ।

जुहु सक [**हु**] १ देना, अर्पण करना । २ हवन करना, होम करना । जुहुणामि ; (ठा ७—पत्र ३८१ ; पि ५०१) ।

जूअ न [**द्यूत**] जूआ, द्यूत ; (पाअ) । **°कर** वि [**°कर**] जूआरी, जूए का खिलाड़ी ; (सुपा ५२२) । **°कार** वि [**°कार**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (गाया १, १८) । **°कारि** वि [**°कारिन्**] जूआरी ; (महा) । **°केलि** स्त्री [**°केलि**] द्यूत-क्रीड़ा ; (रयण ४८) । **°खलय** न [**°खलक**] जूआ खेलने का स्थान ; (राज) । **°केलि** देखो **°केलि** , (रयण ४७) ।

जूअ पुं [**यूप**] १ जूआ, धुर, गाडी का अवयव-विशेष जो बैलों के कन्धे पर डाला जाता है ; (उप पृ १३६) । २ स्तम्भ-विशेष, "जूअसहस्सं मुसल-सहस्सं च उस्सवेह" (कप्प) । ३ यज्ञ-स्तम्भ ; (ज ३) । ४ एक महापाताल-कलश ; (पव २७२) ।

जूअअ पु [**दे**] चातक पक्षी ; (दे ३, ४७) ।

जूअग पु [**यूपक**] देखो **जूअ=यूप** ; (सम ७१) ।

जूअग पुं [**दे**] सन्ध्या की प्रभा और चन्द्र की प्रभा का मिश्रण ; (ठा १०) ।

जूआ स्त्री [**यूका**] १ जूँ, चीलड, क्षुद्र कीट-विशेष ; (जी १६) । २ परिमाण-विशेष, आठ लिक्षा का एक नाप ; (ठा ६ ; इक) । **°सेज्जायर** वि [**°शय्यातर**] यूकाओं को स्थान देने वाला , (भग १५) ।

जूआर वि [**द्यूतकार**] जूआरी, जूए का खेलाडी ; (रंभा; भवि ; सुपा ४००) ।

जूआरि, **जूआरिय** } वि [**द्यूतकारिन्**] जूआ खेलने वाला, जूए का खेलाडी ; (द्र ४३ ; सुपा ४०० ; ४८८, स १५०) ।

जूड पुं [**जूट**] कुन्तल, केश-कलाप ; (दे ४, २४ ; भवि) ।

जूर अक [**क्रुध्**] क्रोध करना, गुस्सा करना । **जूरइ** ; (हे ४, १३५ , षड्) ।

जूर अक [**खिद्**] खेद करना, अफसोस करना । **जूरइ** ; (हे ४, १३२ ; षड्) । **जूर** ; (कुमा) । भवि— **जूरिहिइ** ; (हे २, १६३) । वकृ—**जूरंत** ; (हे २, १६३) ।

जूर अक [**जूर्**] १ झुरना, सूखना ; २ सक. वध करना, हिंसा करना ; (राज) ।

जूरण न [**जूरण**] १ सूखना, झुरना ; २ निन्दा, गर्हण ; (राज) ।

जूरव सक [**वञ्च्**] ठगना, वंचना । **जूरवइ** ; (हे ४, ६३) ।

जूरवण वि [**वञ्चन**] ठगने वाला ; (कुमा) ।

जूरावण न [**जूरण**] झुराना, शोषण ; (भग ३, २) ।

जूराविअ वि [**क्रोधित**] क्रुद्ध किया हुआ, कोपित ; (कुमा) ।

जूरिअ वि [**खिन्न**] खेद-प्राप्त , (पाअ) ।

जूरुम्मिलय वि [**दे**] गहन, निबिड, सान्द्र ; (दे ३, ४७) ।

जूल देखो **जूर=क्रुध्** । जूलइ ; (गा ३५४) ।

जूव देखो **जूअ**=द्यूत ; (णाया १, २—पत्र ७६) ।
जूव } देखो **जूअ**=यूप ; (इक ; ठा ४, २) ।
जूवय }
जूस देखो **झूस** , (ठा २, १ , कप्प) ।
जूस पुन [**यूष**] जूस, मूँग वगैरः का क्वाथ, कढी ; (ओघ १४७ ; ठा ३, १) ।
जूसअ वि [**दे**] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ , (षड्) ।
जूसणा स्त्री [**जोषणा**] सेवा ; (कप्प) ।
जूसिय वि [**जुष्ट**] १ सेवित ; (ठा २, १) । २ त्त्वपित, चीण ; (कप्प) ।
जूह न [**यूथ**] समूह, जत्था , (ठा १० , गा ५४८) । °**वइ** पु [°**पति**] समूह का अधिपति, यूथ का नायक , (से ६, ६८ , णाया १, १ , सुपा १३७) । °**ाहिव** पु [°**ाधिप**] पूर्वोक्त ही अर्थ , (गा ५४८) । °**ाहिवइ** पु [°**ाधिपति**] यूथ-नायक , (उत्त ११) ।
जूहिय वि [**यूथिक**] यूथ में उत्पन्न , (आचा २, २) ।
जूहिया स्त्री [**यूथिका**] लता-विशेष, जूही का पेड (पराण १ , पउम ५३, ७६) ।
जूही स्त्री [**यूथी**] लता-विशेष, माधवी लता , (कुमा) ।
जे अ. १ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (हे २,२१७), २ अवधारण-सूचक अव्यय , (उव) ।
जेउ वि [**जेतृ**] जीतने वाला, विजेता : (भग २०, २) ।
जेउआण }
जेउं } देखो **जिण**=जि ।
जेऊण }
जेक्कार पुं [**जयकार**] 'जय जय' आवाज, स्तुति ; "हुंति देवाण जेक्कारा" (गा ३३२) ।
जेट्ठ देखो **जिट्ठ**=ज्येष्ठ ; (हे २, १७२ ; महा ; उवा) ।
जेट्ठ देखो **जिट्ठ** =ज्यैष्ठ ; (महा) ।
जेट्ठा देखो **जिट्ठा**; (सम ८ ; आचू ४)। °**मूल** पु [°**मूल**] जेठ मास ; (ओप ; णाया १, १३)। °**मूली** स्त्री [°**मूली**] जेठ मास की पूर्णिमा : (सुज्ज १०) ।
जेण अ [**येन**] लक्षण-सूचक अव्यय, "भमररुअं जेण कमलवणं" (हे २, १८३ ; कुमा) ।
जेत्त देखो **जइत्त** ; (पि ६१) ।
जेत्तिअ } वि [**यावत्**] जितना : (हे २, १५७ ; गा ७१;
जेत्तिल } गउड) ।
जेत्तुल } (अप) ऊपर देखो , (हे ४, ४३५) ।
जेत्तुल्ल }
जेद्दह देखो **जेत्तिअ**, (हे २, १५७ , प्राप्र) ।
जेम सक [**जिम्**, **भुज्**] भोजन करना । जेमइ, (हे ४, ११०, षड्) । वकृ—**जेमंत**; (पउम १०३, ८५) ।
जेम (अप) अ [**यथा**] जैसे, जिस तरह से , (सुपा ३८३ , भवि) ।
जेमण } न [**जेमन**] जीमन, भोजन ; (ओघ ८८
जेमणग } ओप) ।
जेमणय न [**दे**] दक्षिण अंग , गुजराती में 'जमणु'; (दे; ३, ४८) ।
जेमावण न [**जेमन**] भोजन कराना, खिलाना , (भग ११, ११) ।
जेमाविय वि [**जेमित**] भोजित, जिसको भोजन कराया गया हो वह ; (उप १३६ टी) ।
जेमिय वि [**जेमित**] जीमा हुआ, जिसने भोजन किया हो वह ; (णाया १, १—पत्र ४१ टी) ।
जेयव्व देखो **जिण**=जि ।
जेव देखो **एव**=एव , (रंभा ; कप्पू) ।
जेवँ (अप) देखो **जिवँ** ; (हे ४, ३९७) ।
जेवड (अप) देखो **जेत्तिअ** , (हे ४, ४०७) ।
जेव्व देखो **एव** = एव; (पि ; नाट) ।
जेह (अप) वि [**यादृश**] जैसा, (हे ४,४०२, षड्) ।
जेहिल पुं [**जेहिल**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (कप्प)।
जो } सक [**दृश्**] देखना । जोइ; (सण) । "एसा हु
जोअ } वकवंकं , जोयइ तुह समुहं जेण" (सुर ३, १२६) । जोयंति ; (स ३६१) । कर्म— जोइज्जइ; (रयण ३२) । वकृ— **जोअंत** ; (धम्म ११ टी; महा ; सुर १०, २४४) । कवकृ—**जोइज्जंत**, (सुपा ५७) ।
जोअ अक [**द्युत्**] प्रकाशित होना, चमकना । जोइ ; (कुमा) । भूका—जोइंसु ; (भग) । वकृ—**जोअंत**; (कुमा ; महा) ।
जोअ सक [**द्योतय्**] प्रकाशित करना । जोअइ , (सूअ १, ६, १, १३) । "तल्लवि य गिहं पुण वालपंडिया जोयए दुहिया" (सुपा ६११) । जोएज्जा ; (पिम ६१२) ।
जोअ सक [**योजय्**] जोड़ना, युक्त करना । जोएइ ; (महा) । वकृ—**जोइयव्व**, **जोएअव्व**, **जोयणिय**, **जोयणिज्ज**; (उप ५६६ ; स ५६८ ; ओप ; निचू १) ।

जोअ पुं [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा; (दे ३, ४८)। २ युगल, युग्म; (गाया १, १ टी—पत्र ४३)।
जोअ देखो **जोग**; (अवि २५; स ३६१; कुमा)। °**वडय** न [°**वटक**] चूर्ण-विशेष, पाचक चूर्ण, हाजमा; (स २५२)।
जोअंगण [दे] देखो **जोइंगण**; (भवि)।
जोअग वि [**द्योतक**] १ प्रकाशने वाला। २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध निपात वगैरः पद; (विसे १००३)।
जोअड पुं [दे] खद्योत, कीट-विशेष; (षड्)।
जोअण न [दे] लाचन, नेत्र, चत्नु; (दे ३, ५०)।
जोअण न [**योजन**] १ परिमाण-विशेष, चार कोश; (भग; इक)। २ सबन्ध, संयोग, जोड़ना; (पण्ह १, १)।
जोअण न [**यौवन**] युवावस्था, तरुणता; (उप १४२ टी; गा १६७)।
जोअणा स्त्री [**योजना**] जोड़ना, संयाग करना; (उप पृ २२१)।
जोआ स्त्री [**द्यो**] १ स्वर्ग; २ आकाश, (षड्)।
जोआवइत्तु वि [**योजयितृ**] जोड़ने वाला, सयुक्त करने वाला, (ठा ४, ३)।
जोइ वि [**योगिन्**] १ युक्त, संयोग वाला। २ चित्त-निरोध करने वाला, समाधि लगाने वाला; ३ पुं. मुनि, यति, साधु; (सुपा २१६; २१७)। ४ रामचन्द्र का स्वनाम-ख्यात एक सुभट, (पउम ६७, १०)।
जोइ पुं [**ज्योतिस्**] १ प्रकाश, तेज; (भग; ठा ४, ३)। २ अग्नि, वह्नि; "सप्पिं जहा पडियं जोइमज्झे" (सूअ १, १३)। ३ प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु; "जहा हि अंधे सह जाइणावि" (सूअ १, १२)। ४ अग्नि का काम करने वाला कल्पवृत्त; (सम १७)। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ; (चद १)। ६ ज्ञान; ७ ज्ञान-युक्त; ८ प्रसिद्धि-युक्त; ९ सत्कर्म-कारक; (ठा ४, ३)। १० स्वर्ग; ११ ग्रह वगैरः का विमान; (राज)। १२ ज्योतिष-शास्त्र; (निर ३, ३)। °**अंग** पुं [°**अङ्ग**] अग्नि का काम करने वाला कल्प-वृक्ष विशेष; (ठा १०)। °**रस** न [°**रस**] रत्न की एक जाति; (णाया १, १)। देखो **जोइस**=ज्योतिष्।
जोइअ पुं [दे] कीट-विशेष, खद्योत; (दे ३, ५०)।
जोइअ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ, विलाकित, (सुर ३, १७३; महा; भवि)।
जोइअ वि [**योजित**] जोड़ा हुआ; (स ३६४)।
जोइअ देखो **जोगिय**; (राज)।
जोइंगण पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्र-गोप; (दे ३, ५०)।
जोइक्क पुन [**ज्योतिष्क**] प्रदीप आदि प्रकाशक पदार्थ; "किं सूरस्स दंसणाहिगमे जाइक्कंतर गवेसीयदि" (रंभा)।
जोइक्ख पुं [दे. **ज्योतिष्क**] १ प्रदीप, दीपक; (दे ३, ४९; पव ४; वव ७)। २ प्रदीप आदि का प्रकाश; (ओघ ६५३)।
जोइणी स्त्री [**योगिनी**] १ योगिनी, सन्यासिनी। २ एक प्रकार की देवी, ये चौसठ हैं; (सति ११)।
जोइर वि [दे] स्खलित; (दे ३, ४९)।
जोइस न [दे] नक्षत्र, (दे ३, ४९)।
जोइस देखो **जोइ**=ज्योतिस्; (चद १; कप्प; विसे १८७०; जो १; ठा ६)। °**राय** पुं [°**राज**] १ सूर्य; २ चन्द्र; (चद १)। °**लय** पु [°**लय**] सूर्य आदि देव; (उत्त ३६)।
जोइस पुं [**ज्योतिष**] १ देवो की एक जाति, सूर्य, चन्द्र, ग्रह आदि; (कप्प; औप; दंड २७)। २ न. सूर्य आदि का विमान, (ति १२; जो १)। ३ शास्त्र-विशेष, ज्योतिष-शास्त्र; (उत्त २)। ४ सूर्य आदि का चक्र, ५ सूर्य आदि का मार्ग, आकाश; "जे गहा जोइसम्मि चारं चरति" (पण्ण २)।
जोइस पु [**ज्यौतिष**] १ सूर्य, चन्द्र आदि देवों की एक जाति; (कप्प; पंचा २)। २ वि. ज्योतिष शास्त्र का जानकार, जोतिषी; (सुपा १५६)।
जोइसिअ वि [**ज्यौतिषिक**] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवज्ञ, जोतिषी, (स २२; सुर ४, १००; सुपा २०३)। २ सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव; (औप; जी २४; पण्ण २)। °**राय** पुं [°**राज**] १ सूर्य, रवि; २ चन्द्रमा; (पण्ण २)।
जोइसिंद पुं [**ज्योतिरिन्द्र**] १ सूर्य, रवि; २ चन्द्र, चन्द्रमा; (ठा ६)।
जोइसिण पुं [**ज्यौत्स्न**] शुक्ल पक्ष, (जो ४)।
जोइसिणा स्त्री [**ज्योत्स्ना**] चन्द्र की प्रभा, चन्द्रिका; (ठा २, ४)। °**पक्ख** पुं [°**पक्ष**] शुक्ल पक्ष; (चद १५)। °**भा** स्त्री [°**भा**] चन्द्र की एक अग्र-महिषी; (भग १०, ५)।

जोइसिणी स्त्री [ज्योतिषी] देवी-विशेष , (पगण १७—पत्र ४६६) ।

जोई स्त्री [दे] विद्युत्, बिजली ; (दे ३, ४६ ; पड्) ।

जोईरस देखो **जोइ-रस** ; (कप्प ; जीव ३) ।

जोईस पु [योगीश] योगीन्द्र, योगि-राज , (स १) ।

जोईसर पु [योगीश्वर] ऊपर देखो ; (सुपा ८३ , रयण६) ।

जोक्कार देखो **जेक्कार** , (गा ३३२ अ) ।

जोक्ख वि [दे] मलिन, अ-पवित्र ; (दे ३, ४८) ।

जोग पुं [योग] १ व्यापार, मन, वचन और शरीर की चेष्टा ; (ठा ४, १ , सम १० ; स ४७०) । २ चित्त-निरोध, मनः-प्रणिधान, समाधि ; (पउम ६८, २३ , उत्त १) । ३ वश करने के लिए या पागल आदि बनाने के लिए फेंका जाता चूर्ण-विशेष , 'जोगो मइमोहकरो गीमे खित्तो इमाण सुत्ताण" (सुर ८, २०१) । ४ संबन्ध, संयोग, मेलन ; (ठा १०) । ५ ईप्सित वस्तु का लाभ ; (गाया १, ५) । ६ शब्द का अवयवार्थ-संबन्ध ; (भास २४) । ७ बल, वीर्य, पराक्रम ; (कम्म ५) । °क्खेम न [°क्षेम] ईप्सित वस्तु का लाभ और उसका संरक्षण ; (गाया १, ५) । °त्थ वि [°स्थ] योग-निष्ठ, ध्यान-लीन ; (पउम ६८, २३) । °त्थ पुं [°ार्थ] शब्द के अवयवों का अर्थ, व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ ; (भास २४) । °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] चित्त-निरोध से उत्पन्न होने वाला ज्ञान-विशेष, (राज) । °धर [°धर] समाधि में कुशल, योगी , (पउम ११६, १७) । °परिव्वाइया स्त्री [°परिव्राजिका] समाधि-प्रधान व्रतिनी-विशेष , (गाया १, ६) । °पिंड पुं [°पिण्ड] वशीकरण आदि के योग से प्राप्त की हुई भिक्षा ; (पंचा १३ ; निचू १३) । °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] हाथ का विन्यास-विशेष ; (पंचा ३) । °व वि [°वत्] १ शुभ प्रवृत्ति वाला , (सूत्र १, २, १) । २ योगी, समाधि करने वाला ; (उत्त ११) । °वाहि वि [°वाहिन्] १ शास्त्र-ज्ञान की आराधना के लिए शास्त्रोक्त तपश्चर्या को करने वाला ; २ समाधि में रहने वाला ; (ठा ३, १ —पत्र १२०)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] शास्त्रों की आराधना के लिए शास्त्र-निर्दिष्ट अनुष्ठान, तपश्चर्या-विशेष ; "इय वुत्तो जोगविही", "एसा जोगविही" (अंग) । °सत्थ न [°शास्त्र] चित्त-निरोध का प्रतिपादक शास्त्र ; (उवर १६०) ।

जोग देखो **जोग्ग** , " इय सो न एत्थ जोगो, जोगो पुण होइ अक्कूरो" (धम्म १२; सुर २, २०५ ; महा ; सुपा २०८)।

जोगि देखो **जोइ**=योगिन् ; (कुमा) ।

जोगिंद पुं [योगीन्द्र] महान् योगी, योगीश्वर , (रयण २६) ।

जोगिणी देखो **जोइणी** ; (सुर ३, १८६) ।

जोगिय वि [यौगिक] दो पदों के सम्बन्ध से बना हुआ शब्द, जैसे—उप-करोति, अभि-षेणयति ; (पण्ह २, २—पत्र ११४) । २ यन्त्र-प्रयोग से बना हुआ ; (उप पृ ६४) ।

जोगीसर देखो **जोईसर** ; (स २०१) ।

जोगेसरी स्त्री [योगेश्वरी] देवी-विशेष ; (सण) ।

जोगेसी स्त्री [योगेशी] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १४२) ।

जोग्ग वि [योग्य] योग्य, उचित, लायक ; (ठा ३,१ ; सुपा २८) । २ प्रभु, समर्थ, शक्तिमान् , (निचू २०) ।

जोग्गा स्त्री [दे] चाटु, खुशामद ; (दे ३, ४८) ।

जोग्गा स्त्री [योग्या] १ शास्त्र का अभ्यास ; (भग ११, ११ ; जं ३) । २ गर्भ-धारण में समर्थ योनि ; (तंदु) ।

जोड सक [योजय्] जोड़ना, सयुक्त करना । वकृ—**जोडेंत** ; (सुर ४, १६) । संकृ—**जोडिऊण** ; (महा) ।

जोड पुंन [दे] १ नक्षत्र ; (दे ३, ४६ ; वि ६) । २ रोग-विशेष ; (सण) ।

जोडिअ पु [दे] व्याध, बहेलिया , (दे ३, ४६) ।

जोडिअ वि [योजित] जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ; (सुपा १४६ , ३५१) ।

जोण पु [योन,यवन] म्लेच्छ देश विशेष ; (गाया १,१)।

जोणि स्त्री [योनि] १ उत्पत्ति-स्थान , (भग ; सं ८२ ; प्रासू ११५) । २ कारण, हेतु, उपाय ; (ठा ३, ३ ; पंचा ४) । ३ जीव का उत्पत्ति-स्थान; (ठा ७) । ४ स्त्री-चिन्ह, भग, (अणु) । °विहाण न [°विधान] उत्पत्ति-शास्त्र ; (विसे १७७५) । °सूल न [°शूल] योनि का एक रोग , (गाया १, १६) ।

जोणिय वि [योनिक,यवनिक] अनार्य देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री-°या , (इक , औप ; गाया १,१ —पत्र ३७)।

जोण्णलिआ स्त्री [दे] अन्न-विशेष, जुआरि, जोन्हरी ; (दे ३, ५०) ।

जोण्ह वि [ज्यौत्स्न] १ शुक्ल, श्वेत ; "कालो वा जोण्हो वा केणणुभावेण चंदस्स " (सुज्ज १६) । २ पुं. शुक्ल पक्ष ; (जो ४) ।

जोण्हा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र-प्रकाश ; (पड् ; काप्र १६७)।

जोण्हाल वि [**ज्योत्स्नावत्**] ज्योत्स्ना वाला, चन्द्रिका-युक्त ; (हे २, १५६) ।

जोत्त } न [**योक्त्र,°क**] जोत, रस्सी या चमड़े का तस्मा,
जोत्तय } जिससे बैल या घोड़ा, गाडी या हल में जोता जाता है ; (पण्ह २, ५ ; गा ६६२) ।

जोव देखो **जोअ**=दृश् । जोवइ ; (महा, भवि) ।

जोव पु [**दे**] १ बिन्दु, २ वि. स्तोक, थोड़ा ; (दे ३, ५२) ।

जोवण न [**दे**] १ यन्त्र, कल, 'आउज्जोवण" (ओघ ६० भा) । २ धान्य का मर्दन, अन्न-मलन ; (ओघ ६० भा) ।

जोवारि स्त्री [**दे**] अन्न-विशेष, जुआरि , (दे ३, ५०) ।

जोविय वि [**दृष्ट**] विलोकित ; (स १४७) ।

जोव्वण न [**यौवन**] १ तारुण्य, जवानी ; (प्राप्र , कप्प) । २ मध्य भाग ; (से २, १) ।

जोव्वणणीर } न [**दे**] वय.-परिणाम, वृद्धत्व, बूढापा ;
जोव्वणवेअ } " जोव्वणणीरं तरुणत्तणे वि विजिएंदिया-ण पुरिसाण " (दे ३, ५१) ।

जोव्वणिया स्त्री [**यौवनिका**] यौवन, जवानी ; (राय) ।

जोव्वणोवय न [**दे**) बूढापा, वृद्धत्व, जरा ; (दे ३, ५१) ।

जोस देखो **जुस**=जुष् । वकृ—**जोसंत**, (राज) । प्रयो—संकृ—**जोसिआण** ; (वव ७) ।

जोसिअ वि [**जुष्ट**] सेवित ; (सूअ १, २, ३) ।

जोसिआ स्त्री [**योषित्**] स्त्री, महिला, नारी , (पड् ; धर्म २) ।

जोसिणी देखो **जोण्हा** ; (अभि ३१) ।

जोह अक [**युध्**] लड़ना । जोहइ ; (भवि) ।

जोह पुं [**योध**] सुभट, योद्धा , (औप ; कुमा) । °**ट्ठाण** न [°**स्थान**] सुभटों का युद्ध-कालीन शरीर-विन्यास, अंग-रचना-विशेष , (ठा १ ; निचू २०) ।

जोहणा देखो **जोण्हा** ; (मै ७१) ।

जोहि वि [**योधिन्**] लड़ने वाला, लड़वैया ; (औप) ।

जोहिया स्त्री [**योधिका**] जन्तु-विशेष, हाथ से चलने वाली एक प्रकार की सर्प-जाति , (जीव २) ।

°**ज्जेव** } देखो **एव**=एव ; (पि २३; ८५) ।
°**ज्जेव्व** }

ज्झड देखो **झड** । ज्झडइ ; (हे ४, १३० टि) ।

ज्झहुराविअ वि [**दे**] निवासित, निवास-प्राप्त ; (पड्) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि जआराइसद्द-संकलणो सोलहमो तरंगो समत्तो ।

झ

झ पुं [**झ**] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा ; प्राप) । २ ध्यान , (विसे ३१६८) ।

झंकार पुं [**झङ्कार**] नूपुर वगैरः का आवाज , (सुर ३, १८ ; पडि ; सण) ।

झंकारिअ न [**दे**] अवचयन, फूल वगैरः का आदान ; (दे ३, ५६) ।

झंख अक [**सं+तप्**] संतप्त होना, संताप करना । झंखइ ; (हे ४, १४०) ।

झंख अक [**वि+लप्**] विलाप करना, वकवाद करना । झंखइ ; (हे ४, १४८) । वकृ—**झंखंत** ; (कुमा) । "धणनासाओ गहिलीभूओ झंखइ नरेस ! एस धुवं । सोमोवि भणइ झंखसि तुमेव बहुलोहगहगहिओ" (श्रा १४) ।

झंख सक [**उपा+लभ्**] उपालंभ देना, उलहना देना । झंखइ; (हे ४, १५६) ।

झंख अक [**निर्+श्वस्**] निःश्वास लेना । झंखइ , (हे ४, २०१) ।

झंख वि [**दे**] तुष्ट, संतुष्ट, खुश ; (दे ३, ५३) ।

झंखण न [**उपालम्भ**] उपालम्भ, उलहना ; (कुमा) ।

झंखर पुं [**दे**] शुष्क तरु, सूखा पेड ; (दे ३, ५४) ।

झंखरिअ [**दे**] देखो **झंकारिअ** ; (दे ३, ५६) ।

झंखावण वि [**संतापक**] संताप करने वाला ; (कुमा) ।

झंखिर वि [**निःश्वसितृ**] निःश्वास लेने वाला ; (कुमा ७, ४४) ।

झंझ पुं [**झंझ**] कलह, झगडा ; (सम ५०) । °**कर** वि [°**कर**] कलहकारी, फूट कराने वाला , (सम ३७) । °**पत्त** वि [°**प्राप्त**] क्लेश-प्राप्त ; (सूअ १, १३) ।

झंझण } अक [**झंझणाय्**] झन झन शब्द करना ।
झंझणक्क } झंझणइ ; (गा ५७५ अ) । झंझणक्कइ, (पिंग) ।

3. Sh...
(a) phenyl acetic acid
(c) hexanoic acid
...entar...

झंझणा स्त्री [**झञ्झना**] झन झन शब्द, (गउड)।

झंझा स्त्री [**झञ्झा**] १ प्रचण्ड वायु-विशेष ; (गा १७०, सण)। २ कलह, क्लेश, झगड़ा ; (उव, वृह ३)। ३ माया, कपट, ४ क्रोध, गुस्सा ; (सूअ १, १३)। ५ तृष्णा, लोभ ; (सूअ २, २, २)। ६ व्याकुलता, व्यग्रता, (आचा)।

झंझिय वि [**झञ्झित**] बुभुक्षित, भूखा, (णाया १,१)।

झंट सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना। झंटइ ; (हे ४, १६१)।

झंट अक [**गुञ्ज्**] गुञ्जारव करना। वकृ—**झंटंतभमिर**-भमरउलमालियं मालियं गहिउं" (सुपा ५२६)।

झंटण न [**भ्रमण**] पर्यटन, परिभ्रमण, (कुमा)।

झंटलिआ स्त्री [**दे**] चंक्रमण, कुटिल गमन, (दे ३, ५५)।

झंटिअ त्रि [**दे**] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहृत, (दे ३, ५५)।

झंटी स्त्री [**दे**] छोटा किन्तु ऊँचा केश-कलाप, (दे ३, ५३)।

झंडली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; (दे ३, ५४)।

झंडुअ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड, (दे ३, ५३)।

झंडुली स्त्री [**दे**] असती, कुलटा ; २ क्रीडा, खेल, (दे ३, ६१)।

झंदिय वि [**दे**] प्रद्रुत, पलायित, (पड्)।

झंप सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना। झंपइ, (हे ४,१६१)।

झंप सक [**आ+च्छादय्**] झाँपना, आच्छादन करना, ढकना। झंपइ ; (पिंग)। संकृ—**झंपिऊण, झंपिवि**, (कुमा ; भवि)।

झंपण न [**भ्रमण**] परिभ्रमण, पर्यटन, (कुमा)।

झंपणी स्त्री [**दे**] पक्ष्म, आँख के वाल; (दे ३, ५४, पाअ)।

झंपा स्त्री [**झम्पा**] एकदम कूदना, झम्पा-पात, (सुपा १६८)।

झंपिअ वि [**दे**] १ त्रुटित, टूटा हुआ; २ घट्टित, आहत ; (दे ३, ६१)।

झंपिअ वि [**आच्छादित**] झंपा हुआ, वंद किया हुआ ; (पिंग)। "पईवओ झंपिओ झत्ति" (महा), "तओ एवं भणमाणस्स सहत्थेण झंपिअं मुहकुहरं सुमइस्स णाइलेणं" (महानि ४)।

झक्किअ न [**दे**] वचनीय, लोक-निन्दा, (दे ३, ५, भवि)।

झख देखो **झंख=वि+लप्**। वकृ—**झखंत**, (जय २३)।

झगड पु [**दे**] झगडा, कलह ; (सुपा ५४६, ५४७)।

झग्गुली स्त्री [**दे**] अभिसारिका ; (विक १०१)।

झज्झर पुं [**झर्झर**] १ वाद्य-विशेष, झाँझ, २ पटह, ढोल; ३ कलि-युग ; ४ नद-विशेष ; (पि २१४)।

झज्झरिय वि [**झर्झरित**] वाद्य-विशेष के शब्द से युक्त ; (ठा १०)।

झज्झरी स्त्री [**दे**] दूसरे के स्पर्श को रोकने के लिए चाडाल-लोक जो लकड़ी अपने पास रखते हैं वह ; (दे ३, ५४)।

झड अक [**शद्**] १ झड़ना, पके फल आदि का गिरना, टपकना। २ हीन होना। ३ सक. झपट मारना, गिराना। झडइ ; (हे ४, १३०)। वकृ—**झडंत**, (कुमा)। कवकृ—"वासासु सीयवाएहिं झडिज्जंता" (आव १)। संकृ—"**झडिऊण** पल्लविल्ला, पुणोवि जायंति तरुवरा तुरियं। धीराणवि धणरिद्धी, गयावि न हु दुल्लहा एव" (उप ७२८ टी)।

झडत्ति अ [**झटिति**] शीघ्र, जल्दी, तुरत, (उप ७२८ टी, महा)।

झडप्प अ [**दे**] शीघ्रता, जल्दी ; (उप पृ ११० ; रंभा)।

झडप्प सक [**आ + छिद्**] झपटना, झपट मारना, छीनना। झडप्पमि. (भवि)। संकृ—**झडप्पिवि** ; (भवि)।

झडप्पड न [**दे**] झटपट, झटिति, शीघ्र, (हे ४, ३८८)।

झडप्पिअ वि [**आच्छिन्न**] छीना हुआ ; (भवि)।

झडि अ [**झटिति**] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ; "झडि आपल्लवइ पुणो" (गा ६१३)।

झडिअ वि [**दे**] १ शिथिल, ढीला, सुस्त ; (गा २३०)। २ श्रान्त, खिन्न, (षड्)। ३ झडा हुआ, गिरा हुआ, "करच्छडाझडियपक्खिउले" (पउम ६६, १५)।

झडित्ति देखो **झडत्ति**, (सुर २ ४)।

झडिल देखो **जडिल**, (हे १, १९४)।

झडी स्त्री [**दे**] निरन्तर वृष्टि, गुजराती में 'झडी'; (दे ३,५३)।

झण सक [**जुगुप्स्**] घृणा करना। झणइ ; (षड्)।

झणज्झण अक [**झणझणाय्**] 'झन झन' आवाज करना। वकृ—**झणज्झणंत**, (प्राप)।

झणज्झणिअ वि [**झणझणित**] झन झन आवाज वाला; (पिंग)।

झणझण देखो **झणज्झण**। झणझणइ ; (वज्जा ६६)।

झणझणारव पु [**झणझणारव**] 'झन झन' आवाज ; (महा)।

झणझणिय देखो **झणज्झणिअ** ; (सुपा ५०)।

झणि देखो **झुणि**, (रंभा)।

झत्ति देखो **झडत्ति**; (हे १,४२ ; पड् ; महा ; सुर २, ६)।

झत्थ वि [**दे**] गत, गया हुआ, २ नष्ट ; (दे ३, ६१)।

(d) $2x - 3y = 0$

झपिअ वि [दे] पर्यस्त, उत्क्षिप्त : (पड्)।

झप्प देखो **झाण**। झप्पइ ; (पड्)।

झमाल न [दे] इन्द्रजाल, माया-जाल; (दे ३, ५३)।

झय पुस्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका, (हे २, २७ ; औप)। स्त्री—°**या** ; (औप)।

झर अक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना, गिरना। झरइ, (हे ४, १७३)। वक्र—**झरंत** ; (कुमा, सुर ३, १०)।

झर सक [स्मृ] याद करना। झरइ, (हे ४, ७४, पड्)। कृ—**झरेयव्व**, (बृह ५)।

झरंक } पु [दे] तृण का बनाया हुआ पुरुष, चञ्चा ; (दे
झरंत } ३, ५५)।

झरग वि [स्मारक] चिन्तन करने वाला, ध्यान करने वाला, "भणगं करग झरगं पभावगं णाणदंसणगुणाणं" (तंदु)।

झरझर पुं [झरझर] निर्झर आदि का 'झर झर' आवाज; (सुर ३, १०)।

झरण न [क्षरण] झरना, टपकना, पतन, (वव १)।

झरणा स्त्री [क्षरणा] ऊपर देखो, (आवम)।

झरय पुं [दे] सुवर्णकार, (दे ३, ५४)।

झरिय वि [क्षरित] टपका हुआ, गिरा हुआ, पतित ; (उव ; ओघ ७६०)।

झरुअ पु [दे] मशक, मच्छड ; (दे ३, ५४)।

झलक्किअ वि [दग्ध] जला हुआ, भस्मीभूत ; "जयगुरुगुरु-विरहानलजालोलिझलक्किय हियय" (सुपा ६५७; हे ४, ३९५)।

झलझल अक [जाज्वल्] झलकना, चमकना, दीपना। वक्र—**झलझलंत** ; (भवि)।

झलझलिआ स्त्री [दे] झोली, कोथली, थैली, (दे ३,५६)।

झलहल देखो **झलझल**। झलहलइ, (सुपा १८६)। वक्र —**झलहलंत**, (धा २८)।

झला स्त्री [दे] मृगतृष्णा, धूप में जल-ज्ञान, व्यर्थ तृष्णा, (दे ३, ५३, पाअ)।

झलुंकिअ } वि [दे] दग्ध, जला हुआ, (दे ३,५६)।
झलुसिअ }

झल्लरी स्त्री [झल्लरी] वलयाकार वाद्य-विशेष, झालर ; (ठा १, औप, सुर ३, ६६ ; सुपा ५० ; कप्प)।

झल्लोज्झलअ वि [दे] संपूर्ण, परिपूर्ण, भरपूर ; (भवि)।

झवणा स्त्री [क्षपणा] १ नाश, विनाश ; (विसे ९६१)। २ अध्ययन, पठन ; (विसे ९५८)।

झस पुं [झष] १ मत्स्य, मछली ; (पण्ह १, १)। २ °**चिंधय** पु [°चिह्नक] कामदेव, स्मर ; (कुमा)।

झस पु [दे] १ अयश, अपकीर्ति ; २ तट, किनारा ; ३ वि. तटस्थ, मध्यस्थ ; ४ दीर्घ-गंभीर, लम्बा और गभीर ; (दे ३, ६०)। ५ टंक से छिन्न ; (दे ३, ६०, पाअ)।

झसय पुं [झषक] छोटा मत्स्य ; (दे २, ५७)।

झसर पुन [दे] शस्त्र विशेष, आयुध-विशेष, "सरझसरसत्ति-सव्वल--" (पउम ८, ६५)।

झसिअ वि [दे] १ पर्यस्त, उत्क्षिप्त ; २ आक्रुष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह ; (दे ३, ६२)।

झसिंध पु [झषचिह्न] काम, स्मर ; (कुमा)।

झसुर न [दे] १ ताम्बूल, पान ; (दे ३, ६१ ; गउड)। २ अर्थ ; (दे ३, ६१)।

झा सक [ध्यै] चिन्ता करना, ध्यान करना। झाइ, झाअइ, (हे ४, ६)। वक्र—**झायंत, झायमाण** ; (प्रारू, महा)। संकृ—**झाऊणं** ; (आरा ११२)। हेकृ—**झाइत्तए**, (कस)। कृ—**झायव्व, झेय, झाइयव्व, झाएयव्व** ; (कुमा, आरा ७८ ; आव ४, ति १०, सुर १४, ८४)।

झाइ वि [ध्यायिन्] चिन्तन करने वाला, ध्यान करने वाला, (आचा)।

झाउ वि [ध्यातृ] ध्यान करने वाला, चिन्तक ; (आव४)।

झाड न [दे झाट] १ लता-गहन, निकुञ्ज, झाडी ; (दे ३, ५७ ; ७, ८४, पाअ ; सुर ७, २४३)। २ वृक्ष, पेड ; "आअल्ली झाडभेअम्मि" (दे १, ६१), "दिट्ठो य तए पोमाडज्झाडयस्स इमम्मि पएसे विणिग्गओ पायओ" (स १४४)।

झाडण न [झाटन] १ झोप, चय, क्षीणता, २ प्रस्फोटन, झाड़ना ; (राज)।

झाडल न [दे] कर्पास-फल, कर्पास, (दे ३, ५७)।

झाडावण स्त्रीन [झाटन] झड़वाना, सफा कराना, मार्जन कराना। स्त्री—°**णी**, (सुपा ३७३)।

झाण पुन [ध्यान] १ चिन्ता, विचार, उत्कण्ठा-पूर्वक स्मरण, सोच, (आउ ४, ठा ४, १, हे २, २६)। २ एक ही वस्तु में मन की स्थिरता, लौ लगाना ; (ठा ४, १)। ३ मन आदि की चेष्टा का निरोध ; ४ दृढ प्रयत्न से मन वगैरः का व्यापार ; (विसे ३०७१, ठा ४, १)

3. ...
(a) phenyl acetic acid
(c) hexanoic acid
...entar...

झाणंतरिया स्त्री [ध्यानान्तरिका] १ दो ध्यानों का मध्य भाग, वह समय जिसमें प्रथम ध्यान की समाप्ति हुई हो और दूसरे का आरम्भ जबतक न किया गया हो और अन्य अनेक ध्यान करने के बाकी हों ; (ठा ६ ; भग ५, ४)। २ एक ध्यान समाप्त होने पर शेष ध्यानों में किसी एक का प्रथम प्रारंभ करने का विमर्श ; (बृह १)।

झाणि वि [ध्यानिन्] ध्यान करने वाला ; (आरा ८६)।

झाम सक [दह्] जलाना, दाह देना, दग्ध करना। झामेइ : (सुअ २, २, ४४)। वकृ—**झामंत** ; (सुअ २, २, ४४)। प्रयो— झामावेइ ; (सूअ २, २, ४४)।

झाम वि [दे] दग्ध, जला हुआ : (आचा २, १, १)। °**थंडिल** न [°स्थण्डिल] दग्ध भूमि , (आचा २,१,१) ।

झाम वि [ध्याम] अनुज्ज्वल ; (पण्ह १,२—पत्र ४०)।

झामण न [दे] जलाना, आग लगाना प्रदीपनक, (वव २)।

झामर वि [दे] वृद्ध, बुड्ढा ; (दे ३, ५७)।

झामल न [दे] १ आँख का एक प्रकार का रोग, गुजराती में "झामर" । २ वि. झामर रोग वाला , (उप ७६८ टी ; श्रा १२)।

झामिअ वि [दे] दग्ध, प्रज्वलित ; (दे ३, ५६ , वव ७ ; आवम)। २ श्यामलित, काला किया हुआ; ३ कलङ्कित ; "घणदड्ढपयगाएवि जीए जा झामिओ नेय" (सार्ध १६)।

झाय वि [ध्मात] भस्मीकृत, दग्ध ; (णंदि)।

झायव्व देखो झा।

झारुआ स्त्री [दे] चीरी, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (दे ३,५७)।

झावण न [ध्मापन] देखो झामण; (राज)।

झावणा न [ध्मापना] दाह, जलाना , अग्नि-संस्कार ; (आवम)।

झिंखण न [दे] गुस्सा करना ; (उप १८३ टी)।

झिंखिअ न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा , (दे ३, ५५)।

झिंगिर } पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की **झिंगिरड** } एक जाति ; (जीव १)।

झिंझिअ वि [दे] बुभुक्षित, भूखा, (बृह ६)।

झिंझिणी } स्त्री [दे] एक प्रकार का पेड़, लता-विशेष, (उप **झिंझिरी** } १०३१ टी ; आचा २, १, ८, बृह १)।

झिज्जंत } वि [क्षीयमाण] जो क्षय को प्राप्त होता **झिज्जमाण** } हो, कृश होता हुआ ; (से ५,५८; उप ७२८ टी ; कुमा)।

झिण्ण देखो झीण ; (से १, ३५ ; कुमा)।

झिमिय } न [दे] शरीर के अवयवों की जड़ता; (आचा)। **झिम्मिय** }

झिया देखो झा। झियाइ, झियायइ ; (उवा ; भग; कस ; पि ४७६)। वकृ—**झियायमाण** ; (णाया १,१—पत्र २८ ; ६०)।

झिरिड न [दे] जीर्ण कूप, पुराना इनारा ; (दे ३, ५७)।

झिलिअ वि [दे] झीला हुआ, पकड़ी हुई वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो; (सुपा १७८)।

झिल्ल अक [स्ना] झीलना, स्नान करना । झिल्लइ , (कुमा)।

झिल्लिआ स्त्री [झिल्लिका] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति ; (पाअ ; पण्ण १)।

झिल्लिरिआ स्त्री [दे] १ चीहीं-नामक तृण ; २ मशक, मच्छड , (दे ३, ६२)।

झिल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने की एक तरह की जाल ; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

झिल्ली स्त्री [दे] लहरी, तरंग ; (गउड)।

झिल्ली स्त्री [झिल्ली] १ वनस्पति-विशेष, (पण्ण १ , उप १०३१ टी)। २ कीट-विशेष ; (गा ४६४)।

झीण वि [क्षीण] दुर्बल, कृश ; (हे २, ३ ; पाअ)।

झीण न [दे] १ अंग, शरीर ; २ कीट, कीड़ा ; (दे ३, ६२)।

झीरा स्त्री [दे] लज्जा, शरम ; (दे ३, ५७)।

झुंख पुं [दे] तुणय-नामक वाद्य , (दे ३ ५८)।

झुंझिय वि [दे] १ बुभुक्षित, भूखा ; (पण्ह १, ३—पत्र ४६)। २ झुरा हुआ, मुरझा हुआ ; (भग १६, ४)।

झुंझुमुसय न [दे] मन का दुःख ; (दे ३, ५८)।

झुंटण न [दे] १ प्रवाह , (दे ३,५८)। २ पशु-विशेष, जो मनुष्य के शरीर की गरमी से जीता है और जिसका रोम कपड़े के लिये बहु-मूल्य है ; (उप ५५१)।

झुंपडा स्त्री [दे] झोपड़ा, तृण-कुटीर, तृण-निर्मित घर; (हे ४, ४१६ , ४१८)।

झुंवणग न [दे] प्रालम्ब ; (णाया १, १)।

झुज्झ देखो जुज्झ = युध् । झुज्झइ ; (पि २१४)। वकृ— **झुज्झंत** ; (हे ४, ३७६)।

झुट्ट वि [दे] झूठ, अलीक, असत्य ; (दे ३, ५८)।

झुण सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना। झुणइ ; (हे ४, ४ ; सुपा ३१८)।
झुणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज ; (हे १, ५२ ; पड् ; कुमा)।
झुणिअ वि [जुगुप्सित] निन्दित, घृणित ; (कुमा)।
झुत्ती स्त्री [दे] छेद, विच्छेद ; (दे ३, ५८)।
झुमुझुमुसय न [दे] मन का दुःख ; (दे ३, ५८)।
झुल्ल अक [अन्दोल्] भूलना, डोलना, लटकना। वकृ— **झुल्लंत** , (सुपा ३१७)।
झुल्लण स्त्रीन [दे] छन्द-विशेष। स्त्री—°**णा**, (पिंग)।
झुल्लुरी स्त्री [दे] गुल्म, लता, गाछ , (दे ६, ५८)।
झुस देखो **झूस**। संकृ—**झुसित्ता** , (पि २०६)।
झुसणा देखो **झूसणा** , (राज)।
झुसिय देखो **झूसिय** , (वृह २)।
झुसिर न [शुषिर] १ रन्ध्र, विवर, पोल , खाली जगह ; (गाया १, ८ , सुपा ६२०)। २ वि. पोला, छूँछा ; (ठा २, ३ ; गाया १, २ , पण्ह १, २)।
झूर सक [स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। झूरइ , (हे ४, ७४)। वकृ—**झूरंत** ; (कुमा)।
झूर सक [जुगुप्स्] निन्दा करना , घृणा करना। "निरुवमसोहग्गमइं, दिट्ठूण तस्स रूवगुणरिद्धिं। इंदो,वि देवराया, झूरइ नियमण नियहत्थं" (रयण ४)।
झूर अक [क्षि] झुरना, क्षीण होना, सूखना। वकृ—**झूरंत**, **झूरमाण** , (सण ; उप पृ २७)।
झूर वि [दे] कुटिल, वक्र, टेढ़ा ; (दे ३, ५६)।
झूरिय वि [स्मृत] चिन्तित, याद किया हुआ ; (भवि)।
झूस सक [जुष्] १ सेवा करना। २ प्रीति करना। ३ क्षीण करना, खपाना। वकृ—**झूसमाण** ; (आचा) । संकृ—**झूसित्ता**, **झूसित्ताणं**, **झूसेत्ता** ; (औप , पि ५८३ ; अंत २७)।
झूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा, आराधना , (उवा , अंत , औप ; गाया १, १)।
झूसरिअ वि [दे] १ अशर्य, अत्यन्त ; २ स्वच्छ, निर्मल ; (दे ३, ६२)।
झूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित , आराधित , (गाया १, १ , औप)। २ क्षपित, क्षिप्त, परित्यक्त ; (उवा ; ठा २, २)।
झेंडुअ पुं [दे] कन्दुक, गेंद ; (दे ३, ५६)।
झेय देखो **झा**।
झेर पुं [दे] पुराना घण्टा ; (दे ३, ५६)।
झोंडलिआ स्त्री [दे] रासक के समान एक प्रकार की क्रीडा , (दे ३, ६०)।
झोट्टी स्त्री [दे] अर्ध-महिषी, भैंस की एक जाति ; (दे ३, ५६)।
झोड सक [शाटय्] पेड़ आदि से पत्र वगैरः को गिराना। झोडइ ; (पि ३२६)।
झोड न [दे] १ पेड़ आदि से पत्र आदि का गिराना ; २ जीर्ण वृक्ष ; (गाया १, ११—पत्र १७१)।
झोडण न [शाटन] पातन, गिराना ; (पण्ह १, १—पत्र २३)।
झोडप्प पुं [दे] १ चना, अन्न-विशेष , २ सूखे चने का शाक ; (दे ३, ५६)।
झोडिअ पुं [दे] व्याध, शिकारी, बहेलिया ; (दे ३, ६०)।
झोलिआ } स्त्री [दे. **झोलिका**] झोली, थैली, कोथली ;
झोल्लिआ } (दे ३, ५६ ; सूअ २, ४)।
झोस देखो **झूस**। झोसेइ ; (आचा) । वकृ—**झोसमाण**, **झोसेमाण** ; (सुपा २६ ; आचा) । संकृ—"संलेहणाए सम्मं **झोसित्ता** नियदेहं तु" (सुर ६, २४६)।
झोस सक (**गवेषय्**) खोजना, अन्वेषण करना। झोसहि ; (वृह ३)।
झोस पुं [दे] झाड़ना, दूर करना , (ठा ५, २)।
झोसण न [दे] गवेषण, मार्गण ; "आभोगणं ति वा मग्गणं ति वा झोसणं ति वा एगट्ठं" (वव २)।
झोसणा देखो **झूसणा** ; (सम ११६ , भग)।
झोसिअ देखो **झूसिय** , (आचा , हे ४, २५८)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि झआराइसद्दसकलणो सतरहमो तरंगो समत्तो।

ट

ट पुं [ट] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रामा; प्राप)।
टंक पुं [टङ्क] १ तलवार आदि का अग्र भाग ; (पण्ह १, १—पत्र १८)। २ एक प्रकार का सिक्का , (श्रा १२ ; सुपा ५१३) । ३ एक दिशा में छिन्न पर्वत ; (गाया १,१—

पत्र ६३)। ४ पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी, छेनी, (से ५, ३५ : उप पृ ३१५)। ५ परिमाण-विशेष, चार मासे की तौल ; (पिंग)। ६ पक्षि-विशेष, (जीव १)।

°क पुं [दे] १ तलवार, खड्ग, २ खात, खुदा हुआ जलाशय ; ३ जङ्घा, जाँघ, ४ भित्ति, भीत, ५ तट, किनारा, (दे ४, ४)। ६ खनित्र, कुदाल ; (दे ४, ४ ; से ५,३५)। ७ वि. छिन्न, छेदा हुआ, काटा हुआ, (दे ४, ४)।

टंकण पुं [**टङ्कन**] म्लेच्छ की एक जाति, (विसे १४४४)।

टंकवत्थुल पु [दे] कन्द-विशेष, एक जाति की तरकारी ; (श्रा २०)।

टंका स्त्री [दे] १ जंघा, जाँघ, (पाग्र)। २ स्वनामख्यात एक तीर्थ ; (ती ४३)।

टंकार पुं [**टङ्कार**] धनुष का शब्द, (भवि)।

टंकार पुं [दे] ओजस्, तेज, (गउड)।

टंकिअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ, (दे ४, १)।

टंकिअ वि [**टङ्कित**] टाँकी से काटा हुआ, (दे ४, ५०)।

टंवरय वि [दे] भार वाला, गुरु, भारी, (दे ४, २)।

टक्क पुं [**टक्क**] देश-विशेष, (हे १, १९५)।

टक्कर पुं [दे] ठोकर, अंग से अंग का आघात, (सुर १२, ६७, वव १)।

टक्कारी स्त्री [दे] अरणि-वृक्ष का फल, (दे ४, २)।

टगर पुं [**तगर**] १ वृक्ष-विशेष, तगर का वृक्ष, २ सुगन्धित काष्ठ-विशेष, (हे १, २०५ ; कुमा)।

टट्टइआ स्त्री [दे] जवनिका, पर्दा, (दे ४, १)।

टप्पर वि [दे] विकराल कर्ण वाला, भयंकर कान वाला ; (दे ४, २ ; सुपा ५२० ; कप्पू)।

टमर पुं [दे] केश-चय, बाल-समूह ; (दे ४, १)।

टयर देखो **टगर** ; (कुमा)।

टलटल अक [**टलटलाय्**] 'टल टल' आवाज करना। वकृ—**टलटलंत**, (प्रासू १६३)।

टलटलिय वि [**टलटलित**] 'टल टल' आवाज वाला; (उप ६४८ टी)।

टसर न [दे] विमोटन, मोड़ना ; (दे ४, १)।

टसर पु [**त्रसर**] टसर, एक प्रकार का सूता ; (हे १, २०५ ; कुमा)।

टसरोट्ट न [दे] शेखर, अवतंस, (दे ४, १)।

टार पुं [दे] अधम अश्व, हठी घोड़ा ; (दे ४, २)। "अइसिक्खिआवि न मुअइ, अणयं टारव्व टारत्त" (श्रा २७)। २ टट्टु, छोटा घोड़ा, (उप १५५)।

टाल न [दे] कोमल फल, गुठली उत्पन्न होने के पहले की अवस्था वाला फल ; (दस ७)।

टिंट° } [दे] देखो **टेंटा**, (भवि)। °**साला** °**शाला**] जूआखाना, जूआ खेलने का अड्डा ; (सुपा ४६५)।
टिंटा } [

टिंवरु } पुंन [दे] वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़, (दे ४, ३ : उप १०३१ टी, पाग्र)।
टिंवरुअ }

टिंवरुणी स्त्री [दे] ऊपर देखो : (पि २१८)।

टिक्क न [दे] १ टीका, तिलक, २ सिर का स्तवक, मस्तक पर रक्खा जाता गुच्छा ; (दे ४, ३)।

टिक्किद (शौ) वि [दे] तिलक-विभूषित, (कप्पू)।

टिग्घर वि [दे] स्थविर, वृद्ध, बूढा ; (दे ४, ३)।

टिट्टिभ पु [**टिट्टिभ**] १ पक्षि विशेष। २ जल-जन्तु विशेष ; (सुर १०, १८५)। स्त्री— °**भी**, (विपा १,३)।

टिट्टियाव सक [दे] बालने की प्रेरणा करना, 'टिटि' आवाज करने को सिखलाना। टिट्टियावेइ ; (गाया १, ३)। कवकृ—**टिट्टियावेज्जमाण** ; (गाया १, ३—पत्र ६४)।

टिप्पणय न [**टिप्पनक**] विवरण, छोटी टीका; (सुपा३२४)।

टिप्पी स्त्री [दे] तिलक, टीका, (दे ४. ३)।

टिरिटिल्ल सक [**भ्रम्**] घूमना, फिरना, चलना। टिरिटिल्लइ ; (हे ४, १६१)। वकृ—**टिरिटिल्लंत**, (कुमा)।

टिविडिक्क सक [**मण्डय्**] मण्डित करना, विभूषित करना। टिविडिक्कइ, (हे ४, ११५ : कुमा)। वकृ—**टिविडिक्कंत**, (सुपा २८)।

टिविडिक्किअ वि [**मण्डित**] विभूषित, अलकृत ; (पाग्र)।

टुंट वि [दे] छिन्न-हस्त, जिसका हाथ कटा हुआ हो वह ; (दे ४, ३, प्रासू १४२ ; १४३)।

टुंटुण्ण अक [**टुण्टुणाय्**] 'टुन टुन' आवाज करना। वकृ—**टुंटुण्णंत**, (गा ६८५, काप्र ६६५)।

टुंवय पु [दे] आघात-विशेष, गुजराती में 'ठुंबो', (सुर१२,६७)।

टुट्ट अक [**त्रुट्**] टूटना, कट जाना। टुट्टइ ; (पिंग)। वकृ—**टुट्टंत**, (से ६, ६३)।

टूवर पु [**तूवर**] १ जिसको दाढी-मूँछ न उगी हो ऐसा चपरासी, २ जिसने दाढी मूँछ कटवा दी हो ऐसा प्रतिहार ; (हे १, २०५ ; कुमा)।

टेंटा स्त्री [दे] जुआखाना, जूआ खेलने का अड्डा ; (दे४,३)।

ठविआ स्त्री [दे] प्रतिमा, मूर्त्ति, प्रतिकृति ; (दे ४, ५) ।
ठविर देखो **थविर** ; (पि १६६) ।
ठा अक [स्था] बैठना, स्थिर होना, रहना, गति का रुकाव करना । ठाइ, ठाअइ ; (हे ४, १६ ; षड्) । वकृ—**ठायमाण** ; (उप १३० टी) । संकृ—**ठाइऊण, ठाऊण** ; (पि ३०६ , पंचा १८) । हेकृ—**ठाइत्तए, ठाउं** , (कस ; आव ५)। कृ—**ठाणिज्ज, ठायव्व, ठाएयव्व** ; (गाया १, १४ ; सुपा ३०२ ; सुर ६, ३३) ।
ठाइ वि [स्थायिन्] रहने वाला, स्थिर होने वाला , (औप ; कप्प) ।
ठाएयव्व देखो **ठा** ।
ठाएयव्व देखो **ठाव** ।
ठाण पुं [दे] मान, गर्व, अभिमान ; (दे ४, ५) ।
ठाण पुंन [स्थान] १ स्थिति, अवस्थान, गति की निवृत्ति ; (सूअ १, ५, १ ; बृह १) । २ स्वरूप-प्राप्ति ; (सम्म १) । ३ निवास, रहना , (सूअ १, ११ ; निचू १) । ४ कारण, निमित्त, हेतु ; (सूअ १, १, २ ; ठा २, ४) । ५ पर्यङ्क आदि आसन; (राज) । ६ प्रकार, भेद, (ठा १०; आचू ४) । ७ पद, जगह ; (ठा १०) । ८ गुण, पर्याय, धर्म ; (ठा ५, ३ ; आव ४) । ६ आश्रय, आधार, वसति, मकान, घर , (ठा ४, ३) । १० तृतीय जैन अङ्ग-ग्रन्थ, 'ठाणांग' सूत्र ; (ठा १) । ११ 'ठाणांग' सूत्र का अध्ययन, परिच्छेद ; (ठा १ ; २ ; ३ ; ४ ; ५) । १२ कायोत्सर्ग ; (औप) । °**भट्ठ** वि [°भ्रष्ट] १ अपनी जगह से च्युत; (गाया १,६) । २ चारित्र से पतित , (तंदु)। °**इय** वि [°तिग] कायोत्सर्ग करने वाला ; (औप) । °**ायय** न [°ायत] ऊँचा स्थान ; (बृह ५) ।
ठाणि वि [स्थानिन्] स्थान वाला, स्थान-युक्त ; (सूअ १, २; उव) ।
ठाणिज्ज देखो **ठा** ।
ठाणिज्ज वि [दे] १ गौरवित, सम्मानित; (दे ४, ५) । २ न. गौरव , (षड्) ।
ठाणुक्कडिय } **ठाणुक्कुडुय** } वि [स्थानोत्कटुक] १ उत्कटुक आसन वाला, (पराह २, १; भग) । २ न. आसन-विशेष , (इक) ।
ठाणु देखो **खाणु** । °**खंड** न [°खण्ड] १ स्थाणु का अवयव, २ वि. स्थाणु की तरह ऊँचा और स्थिर रहा हुआ, स्तम्भित शरीर वाला ; (गाया १, १—पत्र ६६) ।

ठाम } **ठाय** } (अप) देखो **ठाण** ; (पिंग ; सण) ।
ठाव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना । ठावइ, ठावेइ; (पि ५५३ ; कप्प, महा) । वकृ—**ठावंत, ठाविंत** ; (चेइ २० , सुपा ८८) । संकृ—**ठावइत्ता, ठावेत्ता** , (कस ; महा) । कृ—**ठाएयव्व** , (सुपा ५४५) ।
ठावण न [स्थापन] स्थापन, धारण, (पचा १३) ।
ठावणया } **ठावणा** } देखो **ठवणा** , (उप ६८६ टी; ठा १ , बृह ५)।
ठावय वि [स्थापक] स्थापन करने वाला; (गाया १, १८, सुपा २३४) ।
ठावर वि [स्थावर] रहने वाला, स्थायी , (अच्चु १३) ।
ठाविअ वि [स्थापित] स्थापित, रखा हुआ , (ठा ३, १ ; श्रा १२; महा) ।
ठावित्तु वि [स्थापयितृ] ऊपर देखो ; (ठा ३, १) ।
ठिअअ न [दे] ऊर्ध्व, ऊँचा , (दे ४, ६) ।
ठिइ स्त्री [स्थिति] १ व्यवस्था, क्रम, मर्यादा, नियम , "जयट्ठिई एसा" (ठा ४, १ ; उप ७२८ टी) । २ स्थान, अवस्थान ; (सम २) । ३ अवस्था, दशा ; (जी ४८) । ४ आयु, उम्र, काल-मर्यादा ; (भग १४, ५ , नव ३१; परण ४ ; औप) । °**क्खय** पुं [°क्षय] आयु का क्षय, मरण , (विपा २, १) । °**पडिया** देखो °**वडिया**; (कप्प) । °**बंध** पुं [°बन्ध] कर्म-बन्ध की काल-मर्यादा ; (कम्म ४, ८२) । °**वडिया** स्त्री [°पतिता] पुत्र-जन्म-सम्बन्धी उत्सव-विशेष ; (गाया १, १) ।
ठिक्क न [दे] पुरुष-चिह्न ; (दे ४, ५) ।
ठिक्करिआ स्त्री [दे] ठिकरी, घड़ा का टुकड़ा ; (श्रा १४) ।
ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित; (ठा २, ४) । २ व्यवस्थित, नियमित , (सूअ १, ६) । ३ खड़ा ; (भग ६,३३) । ४ निषण्ण, बैठा हुआ ; (निचू १ ; प्राप्र ; कुमा) ।
ठिर देखो **थिर**, (अच्चु १ , गा १३१ अ) ।
ठिविअ न [दे] १ ऊर्ध्व, ऊँचा; २ निकट, समीप ; ३ हिक्का, हिचकी , (दे ४, ६) ।
ठिव्व सक [वि+घुट्] मोड़ना । संकृ—**ठिव्विऊण** ; (सुपा १६) ।
ठीण वि [स्त्यान] १ जमा हुआ (घृत आदि) ; (कुमा)। २ ध्वनि-कारक, आवाज करने वाला ; ३ न. जमाव ; ४ आलस्य ; ५ प्रतिध्वनि ; (हे १, ७४ ; २, ३३) ।
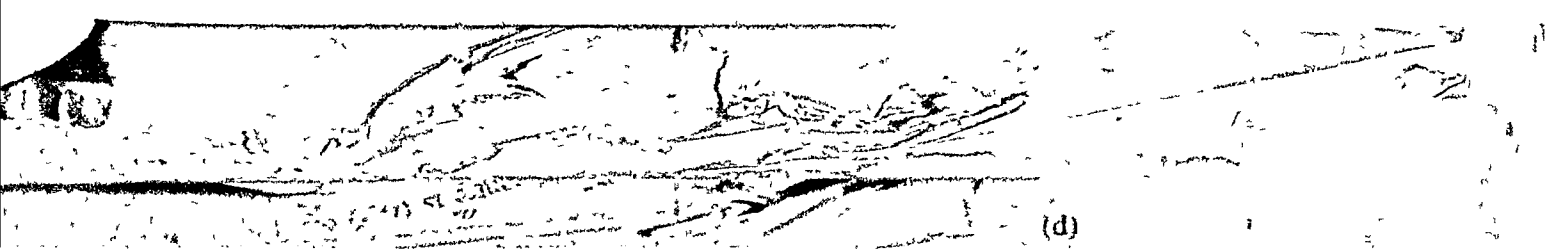
ठुंठ पुन [दे] ठुँठा, स्थाणु , (जं १) ।
ठेर पुंस्त्री [**स्थविर**] वृद्ध, बूढा ; (गा ८८३ अ ; पि१६६), " पउरजुवाणो गामो, महुमासो जोअणं पई ठेरो । जुण्णसुरा साहीणा, असई मा होउ किं मरउ ?" (गा १६७)। स्त्री—°**री** ; (गा ६५४ अ) ।
ठोड पु [दे] १ जोतिषी, दैवज्ञ ; २ पुरोहित; (सुपा ५५२) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ठयाराइसद्द-
संकलणो एगूणवीसइमो तरंगो समत्तो ।

ड

ड पुं [**ड**] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष , (प्रामा ; प्राप) ।
डओयर न [**दकोदर**] पेट का रोग-विशेष, जलोदर; (निचू १)।
डंक पुं [**दे**] १ डंक, वृश्चिक आदि का काँटा ; (पण्ह १,१) । २ दंश-स्थान, जहाँ पर वृश्चिक आदि डसा हो ; " जह सव्व-सरीरगयविसं निरंभितु डक्कमाणिति " (सुपा ६०६)।
डंगा स्त्री [दे] डाँग, लाठी, यष्टि ; (सुपा २३८ ; ३८८; ५४६) ।
डंड देखो **दंड** ; (हे १, १२७ ; प्राप्र) ।
डंड न [दे] वस्त्र के सीए हुए टुकड़े ; (दे ४, ७) ।
डंडय पुं [दे] रथ्या, महल्ला ; (दे ४, ८) ।
डंडारण्ण न [**दण्डारण्य**] दक्षिण का एक प्रसिद्ध जंगल, दण्डकारण्य ; (पउम ६८, ४२) ।
डंडि } स्त्री [**दे**] सीए हुए वस्त्र-खण्ड ; (दे ४, ७ ; पण्ह १, ३)।
डंडी }
डंबर पुं [**दे**] घर्म, गरमी, प्रस्वेद ; (दे ४, ८) ।
डंबर पुं [**डम्बर**] आडम्बर, आटोप ; (उप १४२ टी; पिंग) ।
डंभ देखो **दंभ** ; (हे १, २१७) ।
डंभण न [**दम्भन**] दागने का शस्त्र-विशेष, (विपा १, ६)।
डंभणया } स्त्री [**दम्भना**] १ दागना । २ माया, कपट, दम्भ, वञ्चना , (उप पृ ३१५ , पण्ह २,१)।
डंभणा }
डंभिअ पुं [**दे**] जूआरी, जूए का खेलाडी ; (दे ४,८)।
डंभिअ वि [**दाम्भिक**] वञ्चक, मायावी, कपटी ; (कुमा , षड्)।

डंस सक [**दंश्**] डसना, काटना । डंसइ, डंसए; (षड्) ।
डंस पुं [**दंश**] क्षुद्र जन्तु-विशेष, डाँस ; (जी १८) ।
डक्क वि [**दष्ट**] डसा हुआ, दाँत से काटा हुआ ; (हे २, २ ; गा ५३१) ।
डक्क वि [**दे**] दन्त-गृहीत, दाँत से उपात्त ; (दे ४,६) ।
डक्क स्त्रीन [**डक्क**] वाद्य-विशेष ; (सुपा १६५) ।
डगण न [दे] यान-विशेष ; (राज) ।
डगमग अक [**दे**] चलित होना, हिलना, काँपना । डगमगीति; (पिंग) ।
डगल न [**दे**] १ फल का टुकड़ा ; (निचू १५) । २ ईंट, पाषाण वगैरः का टुकड़ा ; (ओघ ३५६ ; ७८ भा) ।
डग्गल पुं [**दे**] घर के ऊपर का भूमि-तल ; (दे ४,८) ।
डज्झ }
डज्झंत } देखो **डह** ।
डज्झमाण }
डट्ठ देखो **डक्क**=दष्ट ; (हे १, २१७) ।
डड्ढ वि [**दग्ध**] प्रज्वलित, जला हुआ ; (हे १, २१७ ; गा १४६) ।
डड्ढाडी स्त्री [**दे**] दव-मार्ग आग का रास्ता ; (दे ४,८)।
डप्फ न [**दे**] सेल्ल, कुन्त, आयुध-विशेष ; (दे ४, ७) ।
डब्भ पुं [**दर्भ**] डाभ, कुश, तृण-विशेष ; (हे १, २१७) ।
डमडम अक [**डमडमाय्**] 'डम डम' आवाज करना, डमरुक आदि का आवाज होना । वकृ—**डमडमंत**; (सुपा १६३) ।
डमडमिय वि [**डमडमायित**] जिसने 'डम डम' आवाज किया हो वह ; (सुपा १५१ ; ३३८) ।
डमर पुंन [**डमर**] १ राष्ट्र का भीतरी या बाह्य विप्लव, बाहरी या भीतरी उपद्रव ; (णाया १, १ ; जं २ ; पव ४ ; औप) । २ कलह, लड़ाई, विग्रह ; (पण्ह १,२ ; दे ८,३२)।
डमरुअ } पुंन [**डमरुक**] वाद्य-विशेष, कापालिक योगिओं के बजाने का बाजा , (दे २, ८६ ; पउम ५७, २३ ; सुपा ३०६ ; षड्) ।
डमरुग }
डर अक [**त्रस्**] डरना, भय-भीत होना । डरइ; (हे ४,१६८)।
डर पुं [**दर**] डर, भय, भीति ; (हे १, २१७ ; सण) ।
डरिअ वि [**त्रस्त**] भय-भीत, डरा हुआ ; (कुमा ; सुपा ६५५ ; सण) ।
डल पुं [**दे**] लोष्ट, ढेला ; (दे ४, ७) ।
डल्ल सक [**पा**] पीना । डल्लइ ; (हे ४,१०) ।

डल्ल } न [**दे**] पिटिका, डाला, डाली, बाँस का बना हुआ
डल्लग } फल-फूल रखने का पात्र ; (दे ४, ७ , आवम) ।

डल्लिर वि [**पातृ**] पीने वाला ; (कुमा) ।

डव सक [**आ+रभ्**] आरम्भ करना, शुरू करना । डवइ ; (षड्) ।

डव्व पुं [**दे**] वाम हस्त, बायाँ हाथ ; गुजराती में 'डावो' ; (दे ४, ६) ।

डस देखो **डस** । डसइ ; (हे १, २१८ ; पि २२२) । हेकृ—**डसिउं** ; (सुर २, २४३) ।

डसण न [**दशन**] १ दंश, दाँत स काटना ; (हे १, २१७) । २ दाँत ; (कुमा) ।

डसिअ वि [**दष्ट**] डसा हुआ, काटा हुआ ; (सुपा ४४६ ; सुर ६, १८५) ।

डह सक [**दह्**] जलाना, दग्ध करना । डहइ, डहए , (हे १, २१८ ; षड् ; महा ; उव) । भवि—डहिहिइ ; (हे ४, २४६) । कवकृ—**डज्झंत, डज्झमाण** ; (सम १३७ ; उप पृ ३३ ; सुपा ८५) । हेकृ—**डहिउं** ; (पउम ३१, १७) । कृ—**डज्झ** , (ठा ३, २ ; दस १०) ।

डहण न [**दहन**] १ जलाना, भस्म करना ; (वृह १) । २ पुं. अग्नि, वह्नि ; (कुमा) । ३ वि. जलाने वाला ; "तस्स सुहासुहडहणो अप्पा जलणो पयासेइ" (आरा ८४) ।

डहर पुं [**दे**] १ शिशु, बालक, बच्चा , (दे ४,८ , पाअ ; वव ३; दस ६, १, सूअ १, २, १; २, ३, २१; २२; २३)। २ वि. लघु, छोटा, क्षुद्र, (ओघ १७८; २६० भा) । °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] छोटा गाँव; (वव ७) ।

डहरिया स्त्री [**दे**] जन्म से अठारह वर्ष तक की लडकी ; (वव ४) ।

डहरी स्त्री [**दे**] अलिञ्जर, मिट्टी का घड़ा ; (दे ४, ७) ।

डाअल न [**दे**] लोचन, आँख, नेत्र ; (दे ४, ६) ।

डाइणी स्त्री [**डाकिनी**] १ डाकिन, डायन, चुड़ैल, प्रेतिनी; २ जंतर-मंतर जानने वाली स्त्री ; (पण्ह १,३ ; सुपा ५०५; स ३०७ ; महा) ।

डाउ पु [**दे**] १ फलिहंसक वृक्ष, एक जाति का पेड , २ गणपति की एक तरह की प्रतिमा ; (दे ४, १२) ।

डाग पुंन [**दे**] भाजी, पत्राकार तरकारी ; (भग ७, १० ; दसा १ ; पव २) ।

डागिणी देखो **डाइणी**; (सूअ १, ३, ४) ।

डामर वि [**डामर**] भयंकर ; "डमडमियडमरुयाडोवडामरो" (सुपा १५१) । २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम २०, २१) ।

डामरिय वि [**डामरिक**] लड़ाई करने वाला, विग्रह-कारक; (पण्ह १, २) ।

डाय [**दे**] देखो **डाग** ; (राज) ।

डायाल न [**दे**] हर्म्य-तल, प्रासाद-भूमि ; (आचा २, २,१) ।

डाल स्त्रीन [**दे**] १ डाल, शाखा, टहनी ; (सुपा १४० : पचा १६ ; भवि ; हे ४, ४४५) । २ शाखा का एक देश; (आचा २, १, १०) । स्त्री—°**ला** ; (महा ; पाअ ; वज्जा २६), °**ली** ; (दे ४,६ ; पच्च १० ; सण, निचू १)।

डाव पु [**दे**] वाम हस्त; बायाँ हाथ ; गुजराती में 'डावो' (दे ४, ६) ।

डाह देखो **दाह** ; (हे १,२१७ ; गा २२६ ; ५३५ ; कुमा)।

डाहर पुं [**दे**] देश-विशेष ; (पिंग) ।

डाहाल पु [**दे**] देश-विशेष , (सुपा २६३) ।

डाहिण देखो **दाहिण**; (गा ७७७ ; पिंग) ।

डिअली स्त्री [**दे**] स्थूणा, खंभा, खूँटी ; (दे ४, ६) ।

डिंडव वि [**दे**] जल में पतित ; (षड्) ।

डिंडिम न [**डिण्डिम**] डुगडुगी, डुग्गी, वाद्य-विशेष ; (सुर ६,१८१) ।

डिंडिलिअ न [**दे**] १ खलि-खचित वस्त्र, तैल-किट्ट से व्याप्त कपड़ा ; २ स्खलित हस्त ; (दे ४, १०) ।

डिंडी स्त्री [**दे**] सीए हुए वस्त्र खाड ; (दे ४, ७) । °**बंध** पुं [°**बन्ध**] गर्भ-संभव ; (निवू ११) ।

डिंडीर पुंन [**डिण्डीर**] समुद्र का फेन, समुद्र-कफ , (उप ७२८ टी ; सुपा २२२) ।

डिंफिअ वि [**दे**] जल-पतित, पानी में गिरा हुआ ; (दे ४, ६) ।

डिंब पुंन [**डिम्ब**] १ भय, डर ; (से २, १६) । २ विघ्न, अन्तराय ; (णाया १, १—पत्र ६ ; औप) । ३ विप्लव, डमर ; (जं २) ।

डिंभ अक [**स्रंस्**] १ नीचे गिरना । २ ध्वस्त होना, नष्ट होना । डिंभइ ; (हे ४, १६७ ; षड्) । वकृ—**डिंभंत** ; (कुमा ७, ४२) ।

डिंभ पुंन [**डिम्भ**] बालक, बच्चा, शिशु ; (पाअ ; हे १, २०२ ; महा ; सुपा १६) । "अहं दुक्खियाइं तह मुक्खियाइं जह चिंतियाइं डिंभाइं" (विवे १११) ।

(d) $2x - 3y = 0$

डिंभिया स्त्री [डिम्भिका] छोटी लड़की ; (गाथा १,१८)।
डिक्क अक [गर्ज्] साँढ का गरजना। डिक्कइ ; (षड्)।
डिडुर पुं [दे] भेक, मण्डूक, मेंढक ; (दे ४, ६)।
डित्थ पु [डित्थ] १ काष्ठ का बना हुआ हाथी ; २ पुरुष-विशेष, जो श्याम, विद्वान्, सुन्दर, युवा और देखने में प्रिय हो ऐसा पुरुष , (भास ७७)।
डिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना। डिप्पइ, डिप्पए ; (षड्)।
डिप्प अक [वि+गल्] १ गल जाना, सड़ जाना। २ गिर पड़ना। डिप्पइ, डिप्पए , (षड्)।
डिमिल न [दे] वाद्य-विशेष , (विक्र ८७)।
डिल्ली स्त्री [दे] जल-जन्तु -विशेष ; (जीव १)।
डीण वि [दे] अवतीर्ण ; (दे ४, १०)।

डीणोवय न [दे] उपरि, ऊपर , (दे ४, १०)।
डीर न [दे] कन्दल, नवीन अकुर , (दे ४, १०)।
डुंगर पु [दे] शैल, पर्वत, गुजराती में 'डुगर' ; (दे ४, ११ ; हे ४, ४४५ ; जं २)।
डुंघ पु [दे] नारियर का बना हुआ पात्र-विशेष, जो पानी निकालने के काम में आता है ; (दे ४, ११)।
डुंडुअ पु [दे] १ पुराना घण्टा ; (दे ४, ११)। २ बड़ा घण्टा , (गा १७२)।
डुंडुक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ; (विक्र ८७)।
डुंडुल्ल अक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। डुंडुल्लइ , (षड्)।
डुंब पु [दे] डोम, चाण्डाल, श्व-पच ; (दे ४, ११ ; २, ७३ ; ७, ७६)। देखो डोंब ; (पव ६)।
डुज्जय न [दे] कपड़े का छोटा गट्ठा, वस्त्र-खण्ड ; "खिविउं वयणम्मि डुज्जयं अहय, बद्धा रुक्खस्स थुड" (सुपा ३६६)।
डुल अक [दोलय्] डोलना, काँपना, हिलना। डुलइ ; (पिंग)।
डुलि पु [दे] कच्छप, कछुआ ; (उप पृ १३६)।
डुहडुहडुहु अक [डुहडुहाय्] 'डुह डुह' आवाज करना, नदी के वेग का खलखलाना। वक्ृ—डुहडुहडुहुंतनइसलिलं" (पउम ६४, ४३)।
डेकुण पु [दे] मत्कुण, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष ; (पड्)।
डेड्डुर पुं [दे] दर्दुर, भेक, मण्डूक, मेंढक, (षड्)।
डेर वि [दे] ककटाक्ष, नीची ऊँची आँख वाला ; (पिंग)।
डेव सक [उत्+लंघ्] उल्लंघन करना, कूद जाना, अतिक्रमण करना। वक्ृ—डेवमाण ; (राज)।
डेवण न [उल्लङ्घन] उल्लंघन, अतिक्रमण ; (ओघ ३६)।

डोअ पु [दे] काष्ठ का हाथा, दाल, शाक आदि परोसने का काष्ठ पात्र-विशेष ; गुजराती में 'डोयो' ; (दे ४,११; महा)।
डोअण न [दे] लोचन, आँख ; (दे ४, ६)।
डोंगिली स्त्री [दे] १ ताम्बूल रखने का भाजन-विशेष ; २ ताम्बूलिनी, पान बेचने वाले की स्त्री ; (दे ४, १२)।
डोंगी स्त्री [दे] १ हस्तबिम्ब, स्थासक; २ पान रखने का भाजन-विशेष ; (दे ४, १३)।
डोंब पुं [दे] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ एक म्लेच्छ-जाति; (पण्ह १, १ ; इक ; पत्र ६)। ३ देखो डुंब ; (पाअ)।
डोंबिलग } पुं [दे] १ म्लेच्छ देश-विशेष ; २ एक अनार्य
डोंबिलय } जाति ; (पण्ह १, १ ; इक)। ३ डोम, चाण्डाल; (स २८६)।
डोड्ड पु [दे] एक जघन्य मनुष्य-जाति; " दिट्ठो तक्खणजिमिओ निग्गच्छंतो वहिं डोड्डो ; तो तस्सुदरं फालिअ" (उप १३६ टी)।
डोर पुं [दे] डोर, गुण, रस्सी ; (गा२११ ; वज्जा६६)।
डोल अक [दोलय्] १ डोलना, हिलना, भूलना। २ सशयित होना, सन्देह करना। वक्ृ—डोलंत ; (अच्चु ६०)।
डोल पुं [दे] १ लोचन, आँख, नयन ; गुजराती में-'डोलो'; (दे ४, ६)। २ जन्तु-विशेष ; (बृह १)। ३ फल विशेष ; (पंचव २)।
डोला स्त्री [दोला] हिंडोला, भूलना ; (हे १, २१७ ; पाअ)।
डोला स्त्री [दे] डाली, शिविका, पालकी ; (दे ४, ११)।
डोलाअंत वि [दोलायमान] संशय करने वाला, डँवाडोल; (अच्चु ७)।
डोलाइअ वि [दोलायित] संशयित, डँवाडोल , "भडस्स डोलाइअं हिअअं" (गा ६६६)।
डोलायमाण देखो डोलाअंत ; (निचू १०)।
डोलाविय वि [दोलित] कम्पित, हिलाया हुआ ; (पउम ३१, १२४)।
डोलिअ पुं [दे] कृष्णसार, काला हिरन ; (दे ४, १२)।
डोलिर वि [दोलावत्] डोलने वाला, काँपने वाला ; "दरडोलिरसीसं" (कुमा)।
डोल्लणग पु [दे] पानी में होने वाला जन्तु-विशेष ; (सूअ २, ३)।
डोव [दे] देखो डोअ , (गांदि , उप पृ २१०)। स्त्री—°वा ; (पभा २७)।

डोसिणी स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश ; (षड्) ।

डोहल पुं [दोहद] १ गर्भिणी स्त्री का अभिलाष, २ मनोरथ, लालसा ; (हे १, २१७ , कुमा) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि डआराइसद्द-संकलणो वीसइमो तरंगो समत्तो ।

ढ

ढ पुं [ढ] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, यह मूर्धन्य है, क्योंकि इसका उच्चारण मूर्धा से होता है , (प्रामा ; प्राप) ।

ढंक पुं [दे] काक, वायस, कौआ ; (दे ४, १३ , जं २ ; प्राप ; सण ; भवि ; पाअ) । °**वत्थुल** न [°**वास्तुल**] शाक-विशेष, एक तरह की भाजी ; (धर्म २) ।

ढंक पुं [ढङ्क] कुम्भकार-जातीय एक जैन उपासक ; (विसे २३०७) ।

ढंक देखो **ढक्क** । भवि—ढंकिस्सं ; (पि २२१) ।

ढंकण न [दे.छादन] १ ढकना, पिधान ; (प्रासु ६० ; अणु) ।

ढंकण देखो **ढिंकुण** ; (राज) ।

ढंकणी स्त्री [दे.छादनी] ढकनी, पिधानिका, ढकने का पात्र-विशेष , (दे ४, १४) ।

ढंकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल ; (दे ४, १४) ।

ढंख देखो **ढंक**=(दे) ; (पि २१३ , २२३) ।

ढंखर पुन [दे] फल-पत्र से रहित डाल ; " ढंखरसेसोवि हु महुअरेण मुक्का ण मालई-विडवो " (गा ७५५ ; वज्जा ५२) ।

ढंखरी स्त्री [दे] वीणा-विशेष, एक प्रकार की वीणा ; (दे ४, १४) ।

ढंढ पुं [दे] १ पंक, कीच, कर्दम ; (दे ४, १६) । २ वि. निरर्थक, निकम्मा ; (दे ४, १६ ; भवि) ।

ढंढण पुं [ढण्ढन] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (विवे ३२; पडि) ।

ढंढणी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच, वृक्ष-विशेष , (दे ४, १३) ।

ढंढर पुं [दे] १ पिशाच ; २ ईर्ष्या ; (दे ४, १६) ।

ढंढरिअ पुं [दे] कर्दम, पंक, कादा ; (दे ४, १५) ।

ढंढल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, भ्रमण करना । ढंढल्लइ ;(हे ४, १६१) ।

ढंढल्लिअ वि [भ्रान्त] भ्रान्त, घूमा हुआ ; (कुमा) ।

ढंढसिअ पु [दे] १ ग्राम का यक्ष ; २ गाँव का वृक्ष ; (दे ४, १५) ।

ढंढुल्ल देखो **ढंढल्ल** । ढंढुल्लइ ; (सण) ।

ढंढोल सक [गवेषय्] खोजना, अन्वेषण करना । ढंढोलइ ; (हे ४, १८९) । संकृ—**ढंढोलिअ** ; (कुमा) ।

ढंढोल्ल देखो **ढंढुल्ल** । संकृ—**ढंढोल्लिवि** ; (सण) ।

ढंस अक [वि + वृत्] धसना, धसकर रहना, गिर पडना । ढंसइ ; (हे ४, ११८) । वकृ—**ढंसमाण** ; (कुमा) ।

ढंसय न [दे] अयश, अपकीर्ति ; (दे ४, १४) ।

ढक्क सक [छादय्] १ ढकना, आच्छादन करना, बन्द करना । ढक्कइ ; (हे ४,२१) । भवि—ढक्किस्सं ; (गा३१४) । कर्म—"ढक्किज्जउ कूवाई" (सुर १२, १०२) । संकृ—"तत्थ ढक्किउं दारं", **ढक्किऊण, ढक्केऊण** ; (सुपा ६४० ; महा , पि २२१) । कृ— **ढक्केयव्व**; (दस २) ।

ढक्क पु [ढक्क] १ देश-विशेष, २ देश-विशेष में रहने वाली एक जाति, (भवि) । ३ भाट की एक जाति; (उप पृ११२) ।

ढक्कय न [दे] तिलक , (दे ४, १४) ।

ढक्करि वि [दे] अद्भुत, आश्चर्य-जनक ; (हे ४, ४२२) ।

ढक्का स्त्री [ढक्का] वाद्य-विशेष ; (गा ५२६ ; कुमा ; सुपा २४२) ।

ढक्किअ वि [छादित] बन्द किया हुआ, आच्छादित ; (स ४६६ , कुमा) ।

ढगढग्गा स्त्री [दे] 'ढग ढग' आवाज, पानी वगैर. पीने की आवाज ; "सोणिअं ढगढग्गाए घोट्टयंतो" (स २५७) ।

ढज्झंत देखो **डज्झंत** ; (पि २१२ ; २१६) ।

ढड्ड पु [दे] भेरी, वाद्य-विशेष ; (दे ४, १३) ।

ढड्डर पु [दे] १ बडी आवाज, महान् ध्वनि, (ओघ १५६) । २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, बड़े स्वर से प्रणाम करना ; (गुभा २५) । ३ वि. वृद्ध, बूढा ; "ढड्ढरसड्ढाण मग्गेण" ; (सार्ध३८) ।

ढणिय वि [ध्वनित] शब्दित, ध्वनित ; (सुर १३, ८४) ।

ढमर न [दे] १ पिठर , स्थाली ; (दे ४, १७ ;पाअ) । २ गरम पानी, उष्ण जल ; (दे ४, १७) ।

ढयर पुं [दे] पिशाच ; (दे ४, १६ ; पाअ) । २ ईर्ष्या, रोष ; (दे ४, १६) ।

ढल अक [दे] १ टपकना, नीचे पड़ना, गिरना । २ झुकना । वकृ—ढलंत ; (कुमा), "ढलंतसेयचामरुप्पील।" (उप ६८६ टी) ।

ढलिय वि [दे] झुका हुआ ; (उप पृ ११८) ।

ढाल सक [दे] १ टालना, नीचे गिराना । २ झूकाना, चामर वगैरः का वीजना । ढालए ; (सुपा ४७) ।

ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ ; "सीसाओ ढालिओ मुगो" (सुर ३, २२८) ।

ढाव पुं [दे] आग्रह, निर्बन्ध ; (कुमा) ।

ढिंक पुं [ढिङ्क] पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १—पत्र ८) ।

ढिंकुण } पुं [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, गौ आदि को लगने
ढिंकुण } वाला कीट-विशेष ; (राज ; जी १८) ।

ढिंग देखो ढिंक ; (राज) ।

ढिंढय वि [दे] जल में पतित ; (दे ४, १५) ।

ढिक्क अक [गर्ज्] साँड़ का गरजना । ढिक्कइ ; (हे ४, ९९) । वकृ—ढिक्कमाण ; (कुमा) ।

ढिक्कय न [दे] नित्य, हमेशा, सदा ; (दे ४, १५) ।

ढिक्किय न [गर्जन] साँड़ की गर्जना ; (महा) ।

ढिढ्ढिस न [ढिङ्किस] देव-विमान विशेष ; (इक) ।

ढिल्ल स्त्री [दे] ढीला, शिथिल ; (पि १५०) ।

ढिल्ली स्त्री [ढिल्ली] भारतवर्ष की प्राचीन और अद्यतन राज-धानी, दिल्ली शहर ; (पिंग) । °नाह पुं [°नाथ] दिल्ली का राजा, (कुमा) ।

ढुंढुल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना । ढुंढुल्लइ ; (हे ४, १६१) । ढुंढुल्लन्ति ; (कुमा) ।

ढुंढुल्ल सक [गवेषय्] ढूँढना, खोजना, अन्वेषण करना । ढुंढुल्लइ ; (हे ४, १८९) ।

ढुंढुल्लण न [गवेषण] खोज, अन्वेषण ; (कुमा) ।

ढुंढुल्लिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, ढूँढा हुआ ; (पाअ) ।

ढुक्क सक [ढौक्]१ भेंट करना, अर्पण करना । २ उपस्थित करना । ३ अक. लगना, प्रवृत्ति करना । ४ मिलना । वकृ—ढुक्कंत ; (पिंग) । कवकृ—ढुक्कंत ; (उप ९८६ टी ; पिंग) ।

ढुक्क वि [दे. ढौकित] १ उपस्थित ; (स २५१) । २ मिलित ; (पिंग) । ३ प्रवृत्त ; " चिंतिउं ढुक्को " (श्रा २७ ; सण ; भवि) ।

ढुक्किअ वि [ढौकित] ऊपर देखो ; (पिंग) ।

ढुम } सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना । ढुमइ ; ढुसइ ;
ढुस } (हे ४, १६१ ; कुमा) ।

ढेंक पुं [ढेङ्क] पक्षि-विशेष ; (दज्जा ३४) ।

ढेंका स्त्री [दे] १ हर्ष, खुशी ; २ ढेंकुवा, ढेकली, कूप-तुला ; (दे ४; १७) ।

ढेंकिय देखो ढिक्किय ; (गउ) ।

ढेंकी स्त्री [दे] बलाका, बक-पङ्क्ति; (दे ४,१५) ।

ढेंकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल ; (दे ४, १४) ।

ढेंढिअ वि [दे] धूपित, धूप दिया हुआ ; (दे ४, १६) ।

ढेणियालग } पुंस्त्री [ढेणिकालक] पक्षि-विशेष ; (पण्ह
ढेणियालय } १, १) । स्त्री—°लिया ; (अनु ४) ।

ढेल्ल वि [दे] निर्धन, दरिद्र ; (दे ४, १६) ।

ढोअ देखो ढुक्क=ढौक् । ढोएज्जह ; (महा) ।

ढोइय वि [ढौकित] १ भेंट किया हुआ ; २ उपस्थित किया हुआ ; (महा ; सुपा १६८ ; भवि) ।

ढोंघर वि [दे] भ्रमण-शील, घूमने वाला ; (दे ४, १५) ।

ढढोल्ल पुं [दे] १ ढोल, पटह ; २ देश-विशेष, जिसकी राज-धानी धौलपुर है ; (पिंग) ।

ढोवण } न [ढौकन, °क] १ भेंट करना, अर्पण करना;
ढोवणय } (कुमा) । २ उपहार, भेंट ; (सुपा २८०) ।

ढोविय वि [ढौकित] उपस्थापित, उपस्थित किया हुआ ; (स ५०८) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ढयाराइसद्द-
संकलणो एक्कवीसइमो तरंगो समत्तो ।

ण तथा न

ण पुं [ण, न] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है, इससे यह मूर्धन्य कहाता है ; (प्राप ; प्रामा) ।

ण अ [न] निषेधार्थक अव्यय, नहीं, मत ; (कुमा ; गा २ ; प्रासू १५६) । °उण, °उणा, °उणाइ, °उणो अ [पुनः] न तु, नहीं कि ; (हे १, ६५ ; षड्) । °संति-परलोगवाइ वि [°शान्तिपरलोकवादिन्] मोक्ष और परलोक नहीं है ऐसा मानने वाला ; (ठा ८) ।

ण स [तत्] वह ; (हे ३, ७० ; कुमा) ।

ण स [**इदम्**] यह, इस ; (हे ३, ७७ ; उप ६६० ; गा १३१ ; १६६) ।

ण वि [**ज्ञ**] जानकार, पण्डित, विचक्षण ; (कुमा २,८८) ।

णअ देखो **णव**=नव ; (गा १००० ; नाट—चैत ४२) । °**दीअ** पुं [°**द्वीप**] वङ्गाल का एक विख्यात नगर, जो न्याय-शास्त्र का केन्द्र गिना जाता है, जिसको आजकल 'नदिया' कहते हैं ; (नाट—चैत १२६) ।

णइ अ. १ निश्चय-सूचक अव्यय ; "गईए णइ" (हे २, १८४ ; षड्) । २ निषेधार्थक अव्यय ; "नइ माया नेय पिया" (सुर २, २०६) ।

णइ° देखो **णई** ; (गउड ; हे २,६७; गा १६७; सुर १३,३५) ।

णइअ वि [**नयिक**] नय-युक्त, अभिप्राय-विशेष वाला ; (सम ४०) ।

णइअ देखो **णी**=नी ।

णइमासय न [**दे**] पानी में होने वाला फल-विशेष ; (दे ४, २३) ।

णई स्त्री [**नदी**] नदी, पर्वत आदि से निकला वह स्रोत जो समुद्र या बड़ी नदी में जाकर मिले ; (हे १, २२६ ; पाअ) । °**कच्छ** पुं [°**कच्छ**] नदी के किनारे पर की झाडी ; (णाया १, १) । °**गाम** पुं [°**ग्राम**] नदी के किनारे पर स्थित गाँव ; (प्राप्र) । °**णाह** पुं [°**नाथ**] समुद्र, सागर ; (उप ७२८ टी) । °**वइ** पुं [°**पति**] समुद्र, सागर; (पण्ह १, ३) । °**संतार** पुं [°**संतार**] नदी उतरना, जहाज आदि से नदी पार जाना ; (राज) । °**सोत्त** पुं [°**स्रोतस्**] नदी का प्रवाह; (प्राप्र ; हे १, ४) ।

णउ (अप) देखो **इव** ; (कुमा) ।

णउअ न [**नयुत**] 'नयुतांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक) ।

णउअंग न [**नयुताङ्ग**] 'प्रयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक) ।

णउइ स्त्री [**नवति**] संख्या-विशेष, नव्वे, ६० ; (सम ६४) ।

णउइय वि [**नवत**] ६० वाँ ; (पउम ६०, ३१) ।

णउल पुं [**नकुल**] १ न्यौला, (पण्ह १, १ , जी २२) । २ पाँचवाँ पाण्डव ; (णाया १, १६) ।

णउली स्त्री [**नकुली**] विद्या-विशेष, सर्प-विद्या की प्रतिपक्ष विद्या ; (राज) ।

णं अ. १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय , (हे ४, २८३ ; उवा ; पडि) । २ प्रश्न-सूचक अव्यय ; ३ स्वीकार-द्योतक अव्यय ; (राज) ।

णं (शौ) देखो **णणु** ; (हे ४, २८३) ।

णं (अप) देखो **इव** ; (हे ४, ४४४ ; भवि ; सण ; पडि) ।

णंगअ वि [**दे**] रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्) ।

णंगर पुं [**दे**] लंगर, जहाज को जल-स्थान में थामने के लिए पानी में जो रस्सी आदि डाली जाती है वह; (उप ७२८ टी ; सुर १३, १६३ ; स २०२) ।

णंगल } न [**लाङ्गल**] हल, जिससे खेत जोता और बोया जाता है ; (पउम ७२, ७३ ; पण्ह १,४; पाअ)।
णंगल }

णंगल पुंन [**दे**] चञ्चु, चाँच ; "जडाउणो रुट्ठो । नहणंगलेसु पहरइ, दसाणणं विउलवच्छयले" (पउम ४४, ४०) ।

णंगलि पुं [**लाङ्गलिन्**] बलभद्र, हली ; (कुमा) ।

णंगलिय पुं [**लाङ्गलिक**] हल के आकार वाले शस्त्र-विशेष को धारण करने वाला सुभट ; (कप्प ; औप) ।

णंगूल न [**लाङ्गूल**] पुच्छ, पूँछ; (ठा ४,२; हे १,२५६)।

णंगूलि वि [**लाङ्गूलिन्**] १ लम्बा पूँछ वाला; २ पुं. वानर, बन्दर ; (कुमा) ।

णंगोल देखो **णंगूल** ; (णाया १, ३ ; पि १२७) ।

णंगोलि } पुं [**लाङ्गूलिन्, °क**] १ अन्तर्द्वीप-विशेष; २ उसका निवासी मनुष्य ; (पि १२७ ; ठा ४,२)।
णंगोलिय }

णंतग न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (कस ; आव ५) ।

णंद अक [**नन्द्**] १ खुश होना, आनन्दित होना । २ समृद्ध होना । णंदइ, णंदए ; (षड्) । कवकृ—**णंदिज्जमाण** ; (औप) । कृ—**णंदिअव्व, णंदेअव्व** ; (षड्) ।

णंद पुं [**नन्द**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर का एक राजा ; (मुद्रा १६८ ; णंदि) । २ भरत क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव ; (सम १५४) । ३ भरत क्षेत्र में होने वाले नववें तीर्थंकर का पूर्व-भवीय नाम ; (सम १५४) । ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि ; (पउम २०, २०) । ५ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी ; (सुपा ६३८) । ६ न. देव-विमान विशेष ; (सम २६) । ७ लोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन ; (णाया १, १—पत्र ४३ टी) । ८ वि. समृद्ध होने वाला; (औप) । °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान विशेष, (सम २६) । °**कूड** न [°**कूट**] एक देव-विमान ; (सम २६) । °**ज्झय** न [°**ध्वज**] एक देव-विमान, (सम २६) । °**प्पभ** न [°**प्रभ**] देव-विमान विशेष ; (सम २६) । °**मई** स्त्री [°**मती**] एक अन्त-

पाण्डवों का समान-कालीन एक राजा ; (णाया १, १६—पत्र २०८)। °राय पुं [°राग] समृद्धि में हर्ष; (भग २, ५)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १)। °वड्डणा देखा °वद्धणा, (इक)। °वद्धण पु [°वर्धन] १ भगवान् महावीर का जेष्ठ भ्राता ; (कप्प)। २ पक्ष-विशेष ; (कप्प)। ३ एक राज-कुमार , (विपा १, ६)। ४ न. नगर-विशेष ; (सुपा ८८)। °वद्धणा स्त्री [°वर्धना] १ एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)। २ एक पुष्करिणी ; (ठा ४, २)। °सेण पुं [°षेण] १ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चतुर्थ जिन-देव , (सम १५३)। २ एक जैन कवि ; (अजि ३८)। ३ एक राज-कुमार ; (ठा १०)। ४ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (उव)। ५ देव-विशेष ; (राज)। °सेणा स्त्री [°षेणा] १ पुष्करिणी विशेष ; (जीव ३)। २ एक दिक्कुमारी देवी ; (दीव)। °सेणिया स्त्री [°षेणिका] राजा श्रेणिक की एक पत्नी ; (अंत)। °स्सर पु [°स्वर] १ देखो णंदीसर ; (राज)। २ बारह प्रकार के वाद्यों का एक ही साथ आवाज ; (जीव ३)।

णंदिअ न [दे] सिंह की चिल्लाहट ; (दे ४, १६)।

णंदिअ वि [नन्दित] १ समृद्ध, (औप)। २ जैन मुनि-विशेष ; (कप्प)।

णंदिक्ख पुं [दे] सिंह, मृगेन्द्र ; (दे ४, १६)।

णंदिज्ज न [नन्दीय] जैन मुनिओं का एक कुल ; (कप्प)।

णंदिणी स्त्री [नन्दिनी] पुत्री, लड़की ; (पउम ४६,२)। °पिउ पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक स्वनाम-ख्यात गृहस्थ उपासक ; (उवा)।

णंदिणी स्त्री [दे] गौ, गैया ; (दे ४, १८ ; पाअ)।

णंदी देखो णंदि ; (महा ; ओघ ३२१ भा ; पण्ह १, १ , औप ; सम १५२ ; णंदि)।

णंदी स्त्री [दे] गौ, गैया; (दे ४, १८ ; पाअ)।

णंदीसर पुं [नन्दीश्वर] स्वनाम प्रसिद्ध एक द्वीप ; (णाया १, ८ ; महा)। °वर पुं [°वर] नन्दीश्वर द्वीप ; (ठा ४, ३)। °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष ; (जीव ३)।

णंदुत्तर पुं [नन्दोत्तर] देव-विशेष, नागकुमार के भूतानन्द-नामक इन्द्र के रथ सैन्य का अधिपति देव ; (ठा ५, १ ; इक) °वडिंसग न [°ावतंसक] एक देव-विमान ; (सम २६)।

णंदुत्तरा स्त्री [नन्दोत्तरा] १ पश्चिम रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८ ; इक)। २ कृष्णा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (जीव ३)। ३ पुष्करिणी-विशेष ; (ठा ४, २)। ४ राजा श्रेणिक की एक पत्नी ; (अंत. ७)।

णकार पुं [णकार, नकार] 'ण' या 'न' अक्षर , (विसे २८६७)।

णक्क पु [नक्र] १ जलजन्तु-विशेष, ग्राह, नाका ; (पण्ह १, १ ; कुमा)। २ रावण का एक स्वनाम-ख्यात सुभट ; (पउम ५६, २८)।

णक्क पु [दे] १ नाक, नासिका ; (दे ४, ४६ ; विपा १, १ ; औप)। २ वि. मूक, वाचा-शक्ति से रहित ; (दे ४, ४६)। °सिरा स्त्री [°सिरा] नाक का छिद्र; (पाअ)।

णक्कंचर पुं [नक्तञ्चर] १ राक्षस, २ चोर ; ३ विडाल; ४ वि. रात्रि में चलने फिरने वाला ; (हे १, १७७)।

णक्ख पुं [नख] नख, नाखून ; (हे २, ६६ ; प्राप्र)। °अ वि [°ज] नख से उत्पन्न ; (गा ६७१)। °आउह पुं [°आयुध] सिंह, मृगारि. (कुमा)।

णक्खत्त पुन [नक्षत्र] कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि ज्योतिष्क-विशेष ; (पाअ ; कप्प ; इक ; सुज्ज १०)। °दमण पु [°दमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश; (पउम ५, २६६)। °मास पु [°मास] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध समय-मान विशेष ; (वव १)। °मुह न [°मुख] चन्द्र, चाँद ; (राज)। °संवच्छर पु [°संवत्सर] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध वर्ष-विशेष ; ठा ६)।

णक्खत्त वि [नाक्षत्र] नक्षत्र-संबन्धी ; (जं ७)।

णक्खत्तणेमि पुं [दे. नक्षत्रनेमि] विष्णु, नारायण ; (दे ४, २२)।

णक्खन्नण न [दे] नख और कण्टक निकालने का शस्त्र-विशेष ; (बृह १)।

णक्खि वि [नखिन्] सुन्दर नख वाला; (बृह १)।

णग देखो णय=नग ; (पण्ह १, ४; उप ३५६ टी , सुर ३, ३४)। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत, (ठा ६)। [°वर] पुं [°वर] श्रेष्ठ पर्वत; (णाया १, १)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] मेरु-पर्वत; (पउम ३, ७६)।

णगर न [नकर, नगर] शहर, पुर ; (बृह १ ; कप्प ; सुर ३, २०)। °गुत्तिय, °गोत्तिय पुं [°गुप्तिक] नगर

रक्षक, कोटवाल, दरोगा ; (णाया १, १८ ; औप ; पराह १, २ ; णाया १, २)। °घाय पु [°घात] शहर में लूट-पाट ; (णाया १, १८)। °णिद्धमण न [°निर्ध्मन] नगर का पानी जाने का रास्ता, मोरी, खाल , (णाया १, २)। °रक्खिय पु [°रक्षिक] देखो °गुत्तिय ; (निचू ४)। °वास पुं [°वास] राज-धानी, पाट-नगर ; (जं १—पत्र ७४)।

णगरी देखो णयरी ; (राज)।

णगाणिआ स्त्री [नगाणिका] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

णगिंद पुं [नगेन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत ; (पउम ६७, २७)। २ मेरु पर्वत ; (सुज्ज १, ६)।

णगिण वि [नग्न] नंगा वस्त्र-रहित; (आचा; उप पृ ३६३)।

णग्ग वि [नग्न] नंगा, वस्त्र रहित, (प्राप्र ; दे ४, २८)। °इ पुं [°जित्] गन्धार देश का एक स्वनाम-ख्यात राजा, (औप ; महा)।

णग्गाड वि [दे] निर्गत, बाहर निकला हुआ; (षड्—पृष्ठ१८१)।

णग्गोह पुं [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, वड़ का पेड़ ; (पाअ ; सुर १, २०५)। °परिमंडल न [°परिमण्डल] संस्थान-विशेष, शरीर का आकार-विशेष; (ठा ६)।

णघुस पुं [नघुष] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (पउम २२, ५५)।

णचिरा देखो अइरा = अचिरात् ; (पि ३६५)।

णच्च अक [नृत्] नाचना, नृत्य करना। णच्चइ ; (षड्)। वकृ—णच्चंत, णच्चमाण; (सुर २, ७५ ; ३, ७७)। हेकृ—णच्चिउं, (गा ३६१)। कृ—णच्चियव्व; (पउम ८०, ३२)। प्रयो, कवकृ —णच्चाविज्जंत; (स २६)।

णच्च न [ज्ञत्व] जानकारी, पंडिताई ; (कुमा)।

णच्च न [नृत्य] नाच, नृत्य ; (दे ५, ८)।

णच्चग वि [नर्तक] १ नाचने वाला। २ पुं. नट, नचवैया; (वव ६)।

णच्चण न [नर्तन] नाच, नृत्य ; (कप्पू)।

णच्चणी स्त्री [नर्तनी] नाचने वाली स्त्री ; (कुमा ; कप्पू ; सुपा १६६)।

णच्चा } देखो णा=ज्ञा।
णच्चाण }

णच्चाविअ वि [नर्तित] नचाया हुआ ; (ओघ २६५ ; ठा ६)।

णच्चासन्न न [नात्यासन्न] अति समीप में नहीं ; (णाया १, १)।

णच्चिर वि [नर्त्तितृ] नचवैया, नाचने वाला, नर्तन-शील, (गा ४२० ; सुपा ५४ ; कुमा)।

णच्चिर वि [दे] रमण-शील ; (दे ४, १८)।

णच्चुण्ह वि [नात्युष्ण] जो अति गरम न हो; (ठा ५,३)।

णज्ज सक [ज्ञा] जानना। णज्जइ ; (प्राप्र)।

णज्जंत } देखो णा=ज्ञा।
णज्जमाण }

णज्जर वि [दे] मलिन, मैला; (दे ४, १६)।

णज्झर वि [दे] विमल, निर्मल; (दे ४, १६)।

णट्ट अक [नट्] १ नाचना। २ सक. हिंसा करना। णट्टइ ; (हे ४, २३०)।

णट्ट पुं [नट] नर्तकों की एक जाति ; " णच्चंति णट्टा पभणंति विप्पा " सण ; कप्प)।

णट्ट न [नाट्य] नृत्य, गीत और वाद्य; नट-कर्म ; (णाया १, ३; सम ८३)। °पाल पुं [°पाल] नाट्य-स्वामी, सूत्र-धार ; (आचू १)। °मालय पुं [°मालक] देव-विशेष, खण्डप्रपात गुहा का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३)। °आरिअ पुं [°चार्य] सूत्रधार ; (मा ४)।

णट्ट न [नृत्य] नाच, नृत्य ; (से १, ८ ; कप्पू)।

णट्टअ न [नाट्यक] देखो णट्ट=नाट्य ; (मा ४)।

णट्टअ } वि [नर्तक]नाचने वाला, नचवैया ; (प्राप्र ; णट्टग } णाया १, १ ; औप)। स्त्री—°ई ; (प्राप्र; हे २, ३० ; कुमा)।

णट्टार पुं [नाट्यकार] नाट्य करने वाला ; (सण)।

णट्टावअ वि [नर्त्तक] नचाने वाला ; (कप्पू)।

णट्टिया स्त्री [नर्तिका] नटी, नर्तकी, नाचने वाली स्त्री; (महा)।

णट्टुमत्त पुं [नर्तुमत्त] स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर; (महा)।

णट्ठ वि [नष्ट] १ नष्ट, अपगत, नाश-प्राप्त; (सूअ १, ३, ३ ; प्रासू ८६)। २ अहोरात्र का सतरहवाँ मुहूर्त ; (राज)। °सुइअ वि [°श्रुतिक] १ जो बधिर हुआ हो ; (णाया १, १ – पत्र ६३)। २ शास्त्र के वास्तविक ज्ञान से रहित ; (राज)।

णट्ठव वि [नष्टवत्] १ नाश-प्राप्त। २ न. अहोरात्र का एक मुहूर्त ; (राज)।

णड अक [**गुप्**] १ व्याकुल होना। २ सक. खिन्न करना। णडइ, णडंति; (हे ४, १५०; कुमा)। कर्म—णडिज्जइ; (गा ७७)। कवकृ—**णडिज्जंत;** (सुपा ३३८)।

णड देखो **णल**=नड; (हे २, १०२)।

णड पुं [**नट**] १ नर्तकों की एक जाति, नट; (हे १, १९५ ; प्राप्र)। °**खाइया** स्त्री [°**खादिता**] दीक्षा-विशेष, नट की तरह कृत्रिम साधुपन ; (ठा ४, ४)।

णडाल न [**ललाट**] भाल, कपाल ; (हे १, ४७ ; २५७ ; गउड)।

णडालिआ स्त्री [**ललाटिका**] ललाट-शोभा, कपाल में चन्दन आदि का विलेपन ; (कुमा)।

णडाविअ वि [**गोपित**] १ व्याकुल किया हुआ; २ खिन्न किया हुआ ; (सुपा ३२५)।

णडिअ वि [**गुपित**] व्याकुल ; (से १०, ७० ; सण)।

णडिअ वि [**दे**] १ वञ्चित, विप्रतारित ; (दे ४, १६)। २ खेदित, खिन्न किया हुआ; (दे ४,१६; पाअ; णाया १,६)।

णडी स्त्री [**नटी**] १ नट की स्त्री , (गा ६ ; ठा ६)। २ लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी)। ३ नाचने वाली स्त्री ; (वृह ३)।

णडुली स्त्री [**दे**] कच्छप, कछुआ ; (दे ४, २०)।

णडूरी स्त्री [**दे**] भेक, मेंढक ; (दे ४, २०)।

णड्डुल न [**दे**] १ रत, मैथुन ; २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस; (दे ४, ४७)।

णड्डुली देखो **णडुली**; (दे ४, २०)।

णणंदा स्त्री [**ननान्दृ**] पति की बहिन; (षड् ; हे ३,३५)।

णणु अ [**ननु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय; —१ अवधारण, निश्चय ; (प्रासू १६१ ; निवू १)। २ आशंका; ३ वितर्क; ४ प्रश्न ; (उव ; सण ; प्रति ५५)।

णण्ण पुं [**दे**] १ कूप, कुआँ ; २ दुर्जन , खल ; ३ बडा भाई ; (दे ४, ४६)।

णत्त न [**नक्त**] रात्रि, रात ; (चंद १०)।

णत्त देखो **णत्तु** ; "अंकनिवेसियनियनियपुत्तपडिपुत्तनत्तपुत्तीयं" (सुपा ६)।

णत्तंचर देखो **णक्कंचर** ; (कुमा ; पि २७०)।

णत्तण न [**नर्तन**] नाच, नृत्य ; (नाट—शकु ८०)।

णत्तिअ पुं [**नप्तृक**] १ पौत्र, पुत्र का पुत्र ; २ दौहित्र, पुत्री का पुत्र ; (हे १, १३७ ; कुमा)।

णत्तिआ, **णत्ती** } स्त्री [**नप्त्री**] १ पुत्र की पुत्री; (कुमा)। २ पुत्री की पुत्री ; (राज)।

णत्तु, **णत्तुअ** } पुं [**नप्तृ , °क**] देखो **णत्तिअ** ; (निर २, १, हे १, १३७ ; सुपा १९२ ; विपा १, ३)।

णत्तुआ देखो **णत्तिआ** ; (वृह १ ; विपा १, ३)।

णत्तुइणी स्त्री [**नप्तृकिनी**] १ पौत्र की स्त्री; २ दौहित्र की स्त्री ; (विपा १, ३)।

णत्तुई देखो **णत्ती** ; (विपा १, ३ ; कप्प)।

णत्तुणिआ देखो **णत्तिआ** ; (दस ७, १५)।

णत्थ वि [**न्यस्त**] स्थापित, निहित ; (णाया १, १ ; ३, विसे ९१६)।

णत्थण न [**दे**] नाक में छिद्र करना ; (सुर १४, ४१)।

णत्था स्त्री [**दे**] नासा-रज्जु ; (दे ४, १७ ; उवा)।

णत्थि अ [**नास्ति**] अभाव-सूचक अव्यय ; (कप्प ; उवा; सम्म ३९)।

णत्थिअ वि [**नास्तिक**] १ परलोक आदि नहीं मानने वाला ; (प्राह)। २ पुं. नास्तिक-मत का प्रवर्तक, चार्वाक। °**वाय** पुं [°**वाद**] नास्तिक-दर्शन ; (उप १३२ टी)।

णद सक [**नद्**] नाद करना, आवाज करना। वकृ—**णदंत**; (सम ५० ; नाट—मृच्छ १५५)।

णद पुं [**नद**] नाद, आवाज, शब्द ; "गद्दहेव्व गवां मज्झे विस्सरं नयई नदं" (सम ५०)।

णदी देखो **णई** ; (से ६, ६५ ; पराण ११)।

णद्दिअ वि [**दे**] दुःखित ; (दे ४, २०)।

णद्दिअ न [**नर्दित**] घोष, आवाज, शब्द ; (राज)।

णद्ध वि [**नद्ध**] १ परिहित ; (गा ५२० ; पउम ७, ६२; सुपा ३५५)। २ नियन्त्रित; (सुपा ३५५)।

णद्ध वि [**दे**] आरूढ ; (दे ४, १८)।

णद्धंवय न [**दे**] १ अ-घृणा, घृणा का अभाव ; २ निन्दा ; (दे ४, ४७)।

णपहुत्त वि [**अप्रभूत**] अ-पर्याप्त ; (गउड)।

णपहुप्पंत वि [**अप्रभवत्**] अपर्याप्त होता ; (गउड)।

णपुंस, **णपुंसग**, **णपुंसय** } पुंन [**नपुंसक**] नपुंसक, क्लीव, नामर्द; (ओघ २१ ; श्रा १६ ; ठा ३, १ ; सम ३७; महा)। °**वेय** पुं [°**वेद**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के स्पर्श की वाञ्छा होती है; (ठा९)

णप्प सक [**ज्ञा**] जानना। णप्पइ ; (प्राप्र)।

णभ देखो **णह**=नभस् ; (हे १, १८७ ; कुमा ; वज्जा)।

णम सक [**नम्**] नमन करना, प्रणाम करना। णमामि ; (शन)। वकृ—**णमंत, णममाण**; (पि ३६७; आचा)। कवकृ—**णमिज्जंत** ; (से ६, ३५)। संकृ—**णमिऊण, णमिऊणं,, णमेऊण** ; (जी १ ; पि ५८५ ; सहा)। कृ—**णमणिज्ज, णमियव्व** ; (रयण ४६ ; उप २११ टी ; पउम ६६, २१)। संकृ—**णमिअ** ; (कम्म ४,१)।

णमंस सक [**नमस्य्**] नमन करना, नमस्कार करना। णमंसइ; (भग)। वकृ—**णमंसमाण**; (णाया १, १ ; भग)। संकृ—**णमंसित्ता** ; (ठा ३, १ ; भग)। हेकृ—**णमंसित्तए** ; (उवा)। कृ—**णमंसणिज्ज णमंसियव्व** ; (औप ; सुपा ६३८ ; पउम ३५, ४६)।

णमंसण न [**नमस्यन**] नमन, नमस्कार ; (अजि ५ ; भग)।

णमंसणया } स्त्री [**नमस्यना**] प्रणाम, नमस्कार ;
णमंसणा } (भग ; सुपा ६०)।

णमंसिय वि [**नमस्यित**] जिसको नमन किया गया हो वह ; (पण्ह २, ४)।

णमक्कार देखो **णमोक्कार** ; (गउड ; पि ३०६)।

णमण न [**नमन**] प्रणति, नमना ; (दे ७, १६; रयण ४६)।

णमस्सिअ न [**दे**] उपयाचितक, मनौती ; (दे ४, २२)।

णमि पुं [**नमि**] १ स्वनाम-ख्यात एक्कीसवाँ जिन-देव ; (सम ४३)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध राजर्षि ; (उत्त ३६)। भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र ; (धण १४)।

णमिअ वि [**नत**] प्रणत, जिसने नमन किया हो वह ; "पडिवक्खरायाणो तस्स राइणो नमिया" (महा)।

णमिअ वि [**नमित**] नमाया हुआ ; (गा ६६०)।

णमिअ देखो **णम**।

णमिआ स्त्री [**नमिता**] १ स्वनाम-ख्यात एक स्त्री ; २ 'ज्ञाताधर्मकथासूत्र' का एक अध्ययन ; (णाया २)।

णमिर वि [**नम्र**] नमन करने वाला ; (कुमा ; सुपा २७ ; सण)।

णमुइ पुं [**नमुचि**] स्वनाम-ख्यात एक मन्त्री ; (महा)।

णमुदय पुं [**नमुदय**] आजीविक मत का एक उपासक ; (भग ७, १०)।

णमेरु पुं [**नमेरु**] वृक्ष-विशेष ; (सुर ७, १६ ; स ६३३)।

णमो अ [**नमस्**] नमस्कार, नमन ; (भग ; कुमा)।

णमोक्कार पुं [**नमस्कार**] १ नमन, प्रणाम; (हे १, ६२ ; २, ४)। २ जैन शास्त्र में प्रसिद्ध एक सूत्र—मन्त्र-विशेष; (विसे २८०५)। °**सहिय** न [°**सहित**] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष, (पडि)।

णम्म पुंन [**नर्मन्**] १ हाँसी, उपहास; २ क्रीड़ा, केलि ; (हे १, ३२ ; श्रा १४ ; दे २, ६४ ; पाअ)।

णम्मया स्त्री [**नर्मदा**] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी; (सुपा ३८०)। २ स्वनाम-ख्यात एक राज-पत्नी ; (स ५)।

णय दे। **णद** = नद्। 'वित्थरं नयई नई" (सम ५०)।

णय पुं [**नग**] १ पहाड़, पर्वत ; (उप पृ २५६ ; सुपा ३४८)। २ वृक्ष, पेड़; (हे १, १७७)। देखो **णग**।

णय अ [**नच**] नहीं ; (उप ७६८ टी)।

णय वि [**नत**] १ नमा हुआ, प्रणत, नम्र ; (णाया १, १)। २ जिसको नमस्कार किया गया हो वह ; "नीनेसवियडपडिवक्खनयक्कमा विक्कमा राया" (सुपा ५६६)। ३ न. देव-विमान विशेष; (सम ३७)। °**सच्च** पुं [**सत्य**] श्रीकृष्ण, नारायण ; (अच्चु ७)।

णय पुं [**नय**] १ न्याय, नीति; (विसे ३३६५; सुपा ३४८; स ५०१)। २ युक्ति; (उप ७६८)। ३ प्रकार, रीति; "जलणा वि घेप्पई पवणा भुयगा य केणइ नएण" (स ४५४)। ४ वस्तु के अनेक धर्मों में किसी एक को मुख्य रूप से स्वीकार कर अन्य धर्मों की उपेक्षा करने वाला मत, एकांश-ग्राहक बोध; (सम्म २१ ; विसे ६१४ ; ठा ३, ३)। ५ विधि ; (विसे ३३६५)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार ; (रंभा)। °**त्थि** वि [°**र्थिन्**] न्याय चाहने वाला; (श्रा १४)। °**व, °वंत** वि [°**वत्**] नीति वाला, न्याय परायण; (सम ५०; सुपा ५४२)। °**विजय** पुं [°**विजय**] विक्रम को सतरहवीं शताब्दी के एक जैन मुनि, जो सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री यशोविजयजी के गुरू थे; (उवर २०२)।

णयण न [**नयन**] १ ले जाना, प्रापण, (उप १३४)। २ जानना, ज्ञान ; ३ निश्चय; (विसे ६१४)। ४ वि. ले जाने वाला; "वयणाइं सुपहनयणाइं" (सुपा ३७७)। ५ पुंन. आँख, नेत्र, लोचन; (हे १, ३३ ; पाअ)। °**जल** न [°**जल**] अश्रु, आँसू ; (पाअ)।

णयय पुं [**दे नवत**] ऊन का बना हुआ आस्तरण-विशेष ; (णाया १, १—पत्र १३)।

णयर देखो **णगर** ; (हे १, १७७ ; सुर ३, २० ; ओप ; भग) ।
णयरंगणा स्त्री [**नगराङ्गना**] वेश्या, गणिका ;(श्रा २७)।
णयरी स्त्री [**नगरी**] शहर, पुरी ; (उवा ; पउम ३६, १००) ।
णर पुं [**नर**] १ मनुष्य, मानुष, पुरुष; (हे १,२२६, सूअ १, १, ३) । २ अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (कुमा) । °**उसभ** पुं [°**वृषभ**] श्रेष्ठ मनुष्य, अङ्गीकृत कार्य का निर्वाहक पुरुष ; (औप) । °**कंतप्पवाय** पुं [°**कान्तप्रपात**] ह्रद-विशेष ; (ठा २, ३) । °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम २७) । °**कंताकूड** न [°**कान्ताकूट**] रुक्मि पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८) । °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] १ मुनि-सुव्रत भगवान् को शासन-देवी; (राज) । २ विद्या-देवी विशेष ; (संति ५) । °**देव** पुं [°**देव**] चक्रवर्ती राजा ; (ठा ५, १) । °**नायग** पुं [°**नायक**] राजा, नरपति ; (उप २११ टी) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा, भूपाल; (सुपा ६ ; सुर १,६१) । °**पहु** पुं [°**प्रभु**] राजा, नरेश, (उप ७२८ टी; सुर २, ८४)। °**पोहत्ति** पुं [°**पोहत्विन्**] राज-विशेष ; (उप ७२८ टी)। °**लोअ** पुं [°**लोक**] मनुष्य लोक ; (जी २२ ; सुपा ४१३) । °**वइ** पुं [°**पति**] नरेश, राजा; (सुर १, १०४) । °**वर** पुं [°**वर**] १ राजा, नरेश ; (सुर १ १३१ ; १५, १४) । २ उत्तम पुरुष ; (उप ७२८ टी) । °**वरिंद** पुं [°**वरेन्द्र**] राजा, भूमि-पति; (सुपा ५६ ; सुर २, १७६) । °**वरीसर** पुं [°**वरेश्वर**] श्रेष्ठ राजा ; (उत्त १८) । °**वसभ**, °**वसह** पु [°**वृषभ**] १ देखा °**उसभ**; (पण्ह १, ४ ; सम १५३) । २ राजा, नृपति ; (पउम ३, १४)। ३ पुं. हरिवंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा, (पउम २२, ६७) । °**वाल** पु [°**पाल**] राजा, भूपाल; (सुपा २७३)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (आक १ ; सण) । °**वेय** पुं [°**वेद**] पुरुष वेद, पुरुष को स्त्री के स्पर्श की अभिलाषा, (कम्म ४) । °**सिंघ**, °**सिंह**, °**सीह** पुं [°**सिंह**] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य; (सम १५३; पउम १००, १६) । २ अर्ध भाग में पुरुष का और अर्ध भाग में सिंह का आकार वाला, श्रीकृष्ण, नारायण ; (णाया १, १६) । °**सुंदर** पुं [°**सुन्दर**] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (धम्म) । °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] राजा, नरेश, (गा ३६४; सुपा २५) ।

णरग, **णरय** पुं [**नरक**] नारक जीवों का स्थान; (विपा १, १; पउम १४, १६ ; श्रा ३ ; प्रासू २६; उव) । °**वाल**, °**वालय** पुं [°**पाल**, °**क**] परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवों को यातना करते हैं ; (पउम २६, ५१ ; ८, २३७) ।
णराअ, **णराच** पुन [**नाराच**] १ लोहमय बाण ; २ संहनन-विशेष, शरीर की रचना का एक प्रकार ; (हे१, ६७) । ३ छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
णरायण पु [**नारायण**] श्रीकृष्ण, विष्णु ; (पिंग) ।
णरिंद पुं [**नरेन्द्र**] १ राजा, नरेश ; (सम १५३ ; प्रासू १०७; कप्प) । २ गारुड़िक, सर्प के विष को उतारने वाला, (स २१६) । °**कंत** न [°**कान्त**] देव-विमान विशेष ; (सम २२) । °**पह** पुं [°**पथ**] राज-मार्ग, महापथ ; (पउम ७६, ८) । °**वसह** पुं [°**वृषभ**] श्रेष्ठ राजा ; (उत्त ६) ।
णरिंदुत्तरवडिंसग न [**नरेन्द्रोत्तरावतंसक**] देव-विमान-विशेष ; (सम २२) ।
णरीस पु [**नरेश**] राजा, नर-पति ; "सो भरहद्धनरीसो होही पुरिसा न संदेहा " (सुर १२, ८०) ।
णरीसर पु [**नरेश्वर**] राजा, नर-पति ; (अजि ११) ।
णरुत्तम पु [**नरोत्तम**] उत्तम पुरुष; (पउम ४८, ७५) ।
णरेंद देखो **णरिंद** ; (पि १५६ ; पिंग) ।
णरेसर देखो **णरीसर** ; (उप७२८ टी, सुपा५५ ; ५६१)।
णल न [**नड**] तृण-विशेष, भीतर से पोला शराकार तृण ; (हे २, २०२ ; ठा ८) ।
णल न [**नल**] १ ऊपर देखो ; (पण्ण १ ; उप १०३१ टी ; प्रासू ३३) । २ पुं. राजा रामचन्द्र का एक सुभट ; (से ८, १८) । ३ वैश्रमण का एक स्वनाम-ख्यात पुत्र ; (अंत ५) । °**कुब्बर**, °**कूबर** पुं [°**कूबर**] १ दुर्लंघपुर का एक स्वनाम-ख्यात राजा ; (पउम १२ ७२) । २ वैश्रमण का एक पुत्र ; (आवम) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] चण्डप्रद्योत राजा का एक स्वनाम-ख्यात हाथी; (महा)
णलय न [**दे**] उशीर, खस का तृण; (दे ४, १६; पाअ) ।
णलाड देखो **णडाल** ; (हे २, १२३ ; कुमा) ।
णलाडंतव वि [**ललाटन्तप**] ललाट को तपाने वाला ; (कुमा) ।
णलिअ न [**दे**] गृह, घर, मकान ; (दे ४, २० ; षड्) ।

(d) $2x - 3y = 0$

णलिण न [नलिन] १ रक्त कमल ; (राय ; चंद १० ; पाअ)। २ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष; (ठा २, ३)। ३ 'नलिनाङ्ग' का चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह : (ठा २, ४ ; इक)। ४ देव-विमान विशेष ; (सम ३३ ; ३५)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर ; (दीव)। °कूड पु [°कूट] वक्षस्कार-पर्वत विशेष; (ठा २, ३)। °गुम्म न [°गुल्म] १ देव विमान-विशेष ; (सम ३५)। २ वृक्ष-विशेष ; (ठा ८)। ३ अध्ययन-विशेष ; (आव ४)। ४ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (राज)। °वई स्त्री [°वती] विदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश विशेष; (ठा २, ३)।

णलिणंग न [नलिनाङ्ग] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक)।

णलिणि } स्त्री [**नलिनी**] कमलिनी, पद्मिनी ; (पाअ;
णलिणी } गाया १, १)। °गुम्म देखो **णलिण-गुम्म**; (निर २, १ ; विसे)। °वण न [°**वन**] उद्यान-विशेष ; (णाया २)।

णलिणोदग पुं [नलिनोदक] समुद्र-विशेष ; (दीव)।

णल्लय न [दे] १ वृति विवर, वाड का छिद्र ; २ प्रयोजन ; ३ निमित्त, कारण ; ४ वि. कर्दमित, कीच वाला ; (दे ४ ४६)।

णव देखो णम। णमइ ; (षड् ; हे ४, १५८ , २२६)।

णव वि [नव] नया, नूतन, नवीन, (गउड; प्रासू ७१)। °वहुआ, °वहू स्त्री [°वधू] नवोढा, दुलहिन; (हेका ५१; सुर ३, ५२)

णव त्रि. व. [नवन्] संख्या-विशेष, नव, ९ ; (ठा ९)। °इ स्त्री [°ति] संख्या-विशेष नब्बे, ९०, (सण)। °ग न [°**क**] नव का समुदाय, (दं ३८)। । °**जोयणिअ** वि [°**योजनिक**] नव योजन का परिमाण वाला ; (ठा ९)। °**णउइ**, °णउइ स्त्री [°**नवति**] संख्या-विशेष, निन्यानवे, ९९ ; (सम ९९; १००)। °**नउय** वि [°**नवत**] ९९ वाँ ; (पउम ९९, ७५)। °**नवइ** देखो °**णउइ**; (कम्म २, ३०)। °**नवमिया** स्त्री [°**नवमिका**] जैन साधु का व्रत-विशेष; (सम ८८)। °**म** वि [°**म**] नववाँ ; (उवा)। °**मी स्त्री** [°**मी**] तिथि-विशेष; पक्ष का नववाँ दिवस ; (सम २९)। °**मीपक्ख** पुं [°**मीपक्ष**] आठवाँ दिन, अष्टमी ; (जं ३)।

णवकार देखो **णमोक्कार**; (सट्ठि १; चेइय ३० ; सण)।

णवख (अप) वि [**नव**] अनोखा, नूतन, नया ; (हे ४, ४२२)। स्त्री—°**खी**; (हे ४, ४२०)।

णवणीअ पुंन [**नवनीत**] मक्खन, मसका ; (कप्प ; औप ; प्रामा)। " अणलहअोव्व नवणीओ " (पउम ११८, २३)।

णवणीइया स्त्री [**नवनीतिका**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १)।

णवमालिया स्त्री [**नवमालिका**] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष, नेवार ; (कप्प)।

णवमिया स्त्री [**नवमिका**] १ रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी ; (ठा ८)। २ सत्पुरुष-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १)। ३ शक्रेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ८)।

णवय देखो **णअय** ; (णाया १, १७)।

णवयार देखो **णवकार** ; (पंचा १; पि ३०६)।

णवर } अ. १ केवल, फक्त ; (हे २, १८७ ; कुमा ; षड् ;
णवरं } उवा ; सुपा ८ ; जी २७ ; गा १५)। २ अनन्तर, बाद में ; (हे २, १८८ ; प्राप्र)।

णवरंग } पुं [**नवरङ्ग**, °**क**] १ नूतन रङ्ग, नया वर्ण; (सुर
णवरंगय } ३, ५२)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ३ कौसुम्भ रङ्ग का वस्त्र ; (गउड; गा २४१; सुर ३ , ५२ ; पाअ)।

णवरि } देखो **णवर** ; (हे २, १८८ ; से १, ३६ ;
णवरिअ } प्रामा ; सुर, २६ ; षड् ; गा १७२)।

णवरिअ न [**दे**] सहसा, जल्दी, तुरन्त ; (दे ४, २२ ; पाअ)।

णवलया स्त्री [**दे**] वह व्रत, जिसमें पति का नाम पूछने पर उसे नहीं बताने वाली स्त्री पलाश की लता से ताडित की जाती है ; (दे ४, २१)।

णवल्ल देखो **णव**=नव ; (हे २, १६५; कुमा ; उप ७२८ टी)।

णवसिअ न [**दे**] उपयाचितक, मनौती ; (दे ४, २२ ; पाअ ; वज्जा ८६)।

णवा स्त्री [**नवा**] १ नवोढा, दुलहिन; २ युवति स्त्री; (सम्म १, ३, २)। ३ जिसको दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए हों ऐसी साध्वी; (वव ४)। ४ अ. प्रश्नार्थक अव्यय, अथवा नहीं ? (रयण ६७)।

णवि अ. १ वैपरीत्य-सूचक अव्यय, "णवि हा वणे" (हे २, १७८ ; कुमा) । २ निषेधार्थक अव्यय ; (गउड) ।
णविअ देखो **णमिअ**=नत ; (हे ३, १५६ ; भवि) ।
णविअ वि [**नव्य**] नूतन, नया ; (आचा २, २, ३) ।
णवुत्तरसय वि [**नवोत्तरशततम**] एकसौ नववाँ ; (पउम १०६, २७) ।
णवुल्लडय (अप) देखो **णव**=नव ; (कुमा) ।
णवोढा स्त्री [**नवोढा**] नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन ; (काप्र १६७) ।
णवोद्धरण न [**दे**] उच्छिष्ट, जूठा ; (दे ४, २३) ।
णव्व पुं [**दे**] आयुक्त, गाँव का मुखिया ; (दे ४, १७) ।
णव्व वि [**नव्य**] नूतन, नया, नवीन ; (श्रा २७) ।
णव्व° देखो **णा**=ज्ञा ।
णव्वाउत्त पुं [**दे**] १ ईश्वर, धनाढ्य, भोगी; २ नियोगी का पुत्र, सूबा का लड़का ; (दे ४, २२) ।
णस सक [**नि+अस्**] स्थापन करना । नवेज्ज; (विसे ६४३)। कर्म—नस्सए; (विसे ६७०) । संकृ—**नसिऊण** (स ६०८) ।
णस अक [**नश्**] भागना, पलायन करना । णसइ; (पिंग)।
णसग न [**न्यसन**] न्यास, स्थापन; (जीव १) ।
णसा स्त्री [**दे**] नस, नाड़ी ; "असुईरसनिज्झरणे हड्डुक्कर-डम्मि चम्मनसनद्धे" (सुपा ३५५) ।
णसिअ वि [**नष्ट**] नाश-प्राप्त ; (कुमा) ।
णस्स देखो **नस**=नश् । णस्सइ, णस्सए; (षड् ; कुमा) । वकृ—**नस्संत, नस्समाण** ; (श्रा १६ ; सुपा २१५) ।
णस्सर वि [**नश्वर**] विनश्वर, भंगुर, नाश पाने वाला; "खण-नस्सराइं रूवाइं" (सुपा २४३) ।
णस्सा स्त्री [**नासा**]नासिका, घ्राणेन्द्रिय, (नाट-मृच्छ ६२) ।
णह देखो **णक्ख** ; (सम ६० ; कुमा) ।
णह न [**नभस्**] १ आकाश, गगन ; (प्राप्र; हे १. ३२)। २ पुं. श्रावण मास ; (दे ३, १६) । °**अर** वि [°**चर**] १ आकाश में विचरने वाला ; (से १४, ३८) । २ पुं. विद्याधर, आकाश-विहारी मनुष्य ; (सुर ६, १८६) । °**केउमंडिय** न [°**केतुमण्डित**] विद्याधरों का एक नगर ; (इक) । °**गमा** स्त्री [°**गमा**] आकाश-गामिनी विद्या ; (सुर १३, १८६) । °**गामिणी** स्त्री [°**गामिनी**] आकाश-गामिनी विद्या ; (सुर ३, २८) । °**च्चर** देखो °**अर**; (उप ५६७ टी) । °**च्छेदणय** न [°**च्छेदनक**] नख उतारने का शस्त्र ; (आचा २, १, ७, १) । °**तिलय** न [°**तिलक**] १ नगर-विशेष; २ सुभट-विशेष ; (पउम ५५, १७) । °**वाहण** पुं [°**वाहन**] नृप-विशेष ; (सुर ६, २६)। °**सिर** न [°**शिरस्**] नख का अग्र भाग; (भग ५, ४) । °**सिहा** स्त्री [°**शिखा**] नख का अग्र भाग; (कप्प) । °**सेण** पुं [°**सेन**] राजा उग्रसेन का एक पुत्र; (राज) । °**हरणी** स्त्री [°**हरणी**] नख उतारने का शस्त्र ; (बृह ३) ।
णहमुह पुं [**दे**] घूक, उल्लू ; (दे ४, २०) ।
णहर पुं [**नखर**] नख, नाखून ; (सुपा ११ ; ६०६) ।
णहरण पुं [**दे**] नखी, नखवाला जन्तु, श्वापद; (वज्जा १२)।
णहरणी स्त्री [**दे**] नहरनी, नख उतारने का शस्त्र; (पंचव ३)।
णहराल पुं [**नखरिन्**] नख वाला श्वापद जन्तु; (उप ५३० टी) ।
णहरी स्त्री [**दे**] चुरिका, छुरी ; (दे ४, २०) ।
णहवल्ली स्त्री [**दे**] विद्युत्, बिजली; (दे ४, २२) ।
णहि पुं [**नखिन्**] नख-प्रधान जन्तु, श्वापद जन्तु; (अणु)।
णहि अ [**नहि**] निषेधार्थक अव्यय, नहीं; (स्वप्न ४१; पिंग; सण) ।
णहु अ [**नखलु**] ऊपर देखो; (नाट—मृच्छ २६१; गाया १, ६) ।
णा सक [**ज्ञा**] जानना, समझना । भवि—णाहिइ ; (विसे १०१३) । णाहिसि; (पि ५३४) । कर्म—णव्वइ, णज्जइ; हे ४, २५२) । कवकृ—**णज्जंत, णज्जमाण** ; (से १३, ११; उप १००१ टी) । संकृ—**णाउं, णाऊण, णाऊणं, णच्चा, णच्चाणं** ; (महा ; पि ५८६ ; औप; सुअ १, २, ३; वि ५८७) । कृ—**णायव्व, णेअ**; (भग; जी ६ ; सुर ४, ७० ; दं २ ; हे २, १६३ ; नव ३१) ।
णा अ [**न**] निषेध-सूचक अव्यय; (गउड) ।
णाअक्क (अप) देखो **णायग**; (पिंग) ।
णाइ पुं [**ज्ञाति**] इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न क्षत्रिय-विशेष । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] भगवान् श्री महावीर ; (आचा) । °**सुय** पुं [°**सुत**] भगवान् श्री महावीर ; (आचा) ।
णाइ स्त्री [**ज्ञाति**] १ नात, समान जाति ; (पउम १००, ११ ; औप ; उवा) । २ माता-पिता आदि स्वजन, सगा ; (णाया १, १) । ३ ज्ञान, बोध ; (आचा ; ठा ५, ३) ।
णाइ (अप) देखो **इव**; (कुमा) ।
णाइ (अप) नीचे देखा ; (भवि) ।
णाइं देखो **ण**=न ; (हे २, १६० ; उवा) ।
णाइणी (अप) स्त्री [**नागी**] नागिन, सर्पिणी; (भवि)।

णाइत्त } पु [दे] जहाज द्वारा व्यापार करने वाला सौदा-
णाइत्तग } गर ; (उप पृ १०१ ; उप ५६२)।

णाइय वि [**नादित**] १ उक्त, कथित, पुकारा हुआ , (णाया १, १; औप)। २ न आवाज, शब्द, (णाया १, १)। ३ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ; (राय)।

णाइल पुं [**नागिल**] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, (कप्प)। २ जैन मुनिओं का एक वंश; (पउम ११८, ११७)। ३ एक श्रेष्ठी; (महानि ४)।

णाइला } स्त्री [**नागिला**] जैन मुनिओं की एक शाखा ;
णाइली } (कप्प) ।

णाइव वि [ज्ञातिमत्]स्वजन-युक्त, (उत्त ४)।

णाउ वि [ज्ञातृ] जानकार, जानने वाला, (द्र ६)।

णाउड्ड पु [दे] १ सद्भाव, सन्निष्ठा; २ अभिप्राय; ३ मनोरथ, वाञ्छा ; (दे ४, ४७)।

णाउल्ल वि [दे] गोमान्, जिसके पास अनेक गैया हों; (दे ४, २३)।

णाउं
णाऊण } देखो **णा**=ज्ञा ।
णाऊणं

णाग पुंन [नाक] स्वर्ग, देवलोक ; (उप ७१२)।

णाग पुं [नाग] १ सर्प, साँप ; (पउम ८, १७८)। २ भवनपति देवों का एक अवान्तर जाति, नाग-कुमार, देव , (णंदि)। ३ हस्ती, हाथी ; (औ।)। ४ वृक्ष-विशेष , (कप्प)। ५ स्वनाम-ख्यात एक गृहस्थ ; (अंत ४)। ६ एक प्रसिद्ध वंश : ७ नाग-वंश में उत्पन्न ; (राज)। ८ एक जैन आचार्य ; (कप्प)। ६ स्वनाम-ख्यात एक द्वीप ; १० एक समुद्र ; (सुज्ज १६)। ११ वक्षस्कार-पर्वत विशेष ; (ठा २, ३)। १२ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण ; (विसे ३३५०)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति ; (सम ६६)। °**केसर** पुं [°**केसर**] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष ; (राज)। °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] नाग देवता के आवेश से उत्पन्न ज्वर आदि ; (जीव ३)। °**जण्ण**, °**जन्न** पु [°**यज्ञ**] नाग पूजा, नाग देवता का उत्सव ; (णाया १, ८)। °**ज्जुण** पुं [°**र्जुन**] एक स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य ; (णंदि)। °**दंत** पुं [°**दन्त**] खूँटी ; (जीव ३)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक स्वनाम-ख्यात राज-पुत्र ; (ठा ३, ४ ; सुपा ५३५)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र ; (आक)। °**वइ** पु [°**पति**] नागकुमार देवों का राजा, नागेन्द्र ; (औप)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (पउम २०, १०)। °**बाण** पुं [°**बाण**] दिव्य अस्त्र-विशेष ; (जीव ३)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] नाग-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (सुज्ज १६)। °**भूय** न [°**भूत**] जैन मुनिओं का एक कुल; (कप्प)। °**महाभद्द** पु [°**महाभद्र**] नागद्वीप का एक अधिष्ठायक देव; (सुज्ज १६)। °**महावर** पु [°**महावर**] नाग समुद्र का अधिपति देव ; (सुज्ज १६ , इक)। °**मित्त** पु [°**मित्र**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि जो आर्य महागिरि के शिष्य थे ; (कप्प)। °**राय** पु [°**राज**] नागकुमार देवों का स्वामी, इन्द्र-विशेष ; (पउम ३, १४७)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] वृक्ष-विशेष ; (ठा ८)। °**लया** स्त्री [°**लता**] वल्ली-विशेष, ताम्बूली लता ; (पएण १)। °**वर** पुं [°**वर**] १ श्रेष्ठ सर्प ; २ उत्तम हाथी ; (औप)। ३ नाग समुद्र का अधिपति देव ; (सुज्ज १६)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] लता-विशेष ; (सण)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] द्रौपदी के पूर्व जन्म का नाम; (उप ६४८ टी)। °**सुहुम** न [°**सूक्ष्म**] एक जेनेतर शास्त्र ; (अणु)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक स्वनाम-ख्यात गृहस्थ ; (आवम)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] एक प्राचीन जैन ऋषि ; (णंदि)।

णागणिय न [**नाग्न्य**] नग्नता, नंगापन ; (सूअ १,७)।

णागर वि [**नागर**] १ नगर-संवन्धी; २ नगर का निवासी, नागरिक ; (सुर ३, ६६ ; महा)।

णागरिअ पुं [**नागरिक**] नगर का रहने वाला ; (रंभा)।

णागरिआ स्त्री [**नागरिका**] नगर में रहने वाली स्त्री , (महा)।

णागरी स्त्री [**नागरी**] १ नगर में रहने वाली स्त्री। २ लिपि-विशेष, हिन्दी लिपि ; (विसे ४६४ टी)।

णागिंद पुं [**नागेन्द्र**] १ नाग देवों का इन्द्र ; २ शेष नाग ; (सुपा ७७ ; ६३६)।

णागिल देखो **णाइल** ; (राज)।

णागी स्त्री [**नागी**] नागिन, सर्पिणी ; (आव ४)।

णागेंद देखो **णागिंद** ; (णाया १, ८)।

णाड देखो **णट्ट**=नाट्य ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

णाडइज्ज वि [**नाटकीय**] नाटक-संबन्धी, नाटक में भाग लेने वाला पात्र; (णाया १, १ ; कप्प)।

णाडइणी स्त्री [**नाटकिनी**] १ नर्तकी, नाचने वाली स्त्री; (वृह ३)।

णाडग } न [**नाटक**] १ नाटक, अभिनय, नाट्य-क्रिया ;
णाडय } (बृह १ ; सुपा १ ; ३५६ ; सार्ध ६५)। २ रंग-शाला में खेलने में उपयुक्त काव्य ; (हे ४, २७०)।

णाडाल देखो **णडाल** ; (गउड)।

णाडि स्त्री [**नाडि**] १ रज्जु, वरत्रा ; २ नाड़ी, नस, सिरा ; (कुमा)।

णाडी स्त्री [**नाडी**] ऊपर देखो ; (हे १, २०२)।

णाडीअ पुं [**नाडीक**] वनस्पति-विशेष ; (भग १०, ७)।

णाण न [**ज्ञान**] ज्ञान, बोध, चैतन्य, बुद्धि ; (भग ८,२ ; हे २, ४२ ; कुमा ; प्रासू २८)। °**धर** वि [°**धर**] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् ; (सुपा ५०८)। °**प्पवाय** न [°**प्रवाद**] जैन ग्रन्थांश-विशेष, पाँचवाँ पूर्व ; (सम २६)। °**मायार** देखो °**यार** ; (पडि)। °**व, वंत** वि [°**वत्**] ज्ञानी, विद्वान् ; (पि ३४८ ; आचा ; अच्चु ४६)। °**वि** वि [°**वित्**] ज्ञान-वेत्ता ; (आचा)। °**यार** पुं [°**चार**] ज्ञान-विषयक शास्त्रोक्त विधि; (राज)। °**वरण** न [°**वरण**] ज्ञान का आच्छादक कर्म ; (धण ४४)। °**वरणिज्ज** न [°**वरणीय**] अनन्तर उक्त अर्थ ; (सम ६६ ; औप)।

णाणक } न [**दे**] सिक्का, मुद्रा ; (मृच्छ १७ ; राज)।
णाणग }

णाणत्त न [**नानात्व**] भेद, विशेष, अन्तर; (आघ ६१८)।

णाणत्ता स्त्री [**नानाता**] ऊपर देखो ; (विसे २१६१)।

णाणा अ [**नाना**] अनेक, जुदा जुदा ;(उवा ; भग ; सुर १, ८६)। °**विह** वि [°**विध**] अनेक प्रकार का, विविध ; (जीव ३ ; सुर ४, २४५ ; दं१३)।

णाणि वि [**ज्ञानिन्**] ज्ञानी जानकार, विद्वान् ; (आचा ; उव)।

णादिय देखो **णाइय** ; (कप्प)।

णाभि पुं [**नाभि**] १ स्वनाम-ख्यात एक कुलकर पुरुष, भगवान् ऋषभदेव का पिता ; (सम १५०)। २ पेट का मध्य भाग; ३ गाड़ी का एक अवयव ; (दस ७)। °**नंदण** पुं [°**नन्दन**] भगवान् ऋषभदेव ; (पउम ४, ६८)।

णाम सक [**नमय्**] १ नमाना, नीचा करना। २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। णामेइ ; (हेका ४६)। वकृ—**णामयंत** ; (विसे २९६०)। संकृ—**णामित्ता** ; (निचू १)।

णाम पुं [**नाम**] १ परिणाम, भाव ; (भग २५, ५)। २ नमन ; (विसे २१७६)।

णाम अ [**नाम**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ संभावना ; (से ५, ४)। २ आमन्त्रण, संबोधन ; (बृह २ ; जं १)। ३ प्रसिद्धि, ख्याति ; (कप्प)। ४ अनुज्ञा, अनुमति ; (विसे)। ५—६ वाक्यालंकार और पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (ठा ४, १ ; राज)।

णाम न [**नामन्**] नाम, आख्या, अभिधान ; (विपा१, १ ; विसे २५)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कर्म-विशेष, विचित्र परिणाम का कारण-भूत कर्म; (स६७)। °**धिज्ज,** °**धेज्ज,** °**धेय** न [°**धेय**] नाम, आख्या ; (कप्प ; सम ७१ ; पउम ४, ८०)। °**पुर** न [° **पुर**] एक विद्याधर-नगर ; (इक)। °**मुद्दा** स्त्री [°**मुद्रा**] नाम से अङ्कित मुद्रा ; (पउम ५, ३२)। °**सच्च** वि [°**सत्य**]नाम-मात्र से सच्चा, नामधारी ; (ठा १०)। °**हेअ** देखो °**धेय**; (पउम २०, १७६ ; स्वप्न ४३)।

णामण न [**नमन**] नमाना, नीचा करना ; (विसे३००८)।

णाममंतक्ख पुं [**दे**] अपराध, गुनाह ; (गउड)।

णामिय वि [**नमित**] नमाया हुआ ; (सार्ध ८०)।

णामिय न [**नामिक**] वाचक शब्द, पद; (विसे१००३)।

णामुक्कसिअ } न [**दे**] कार्य, काम, काज ; (हे २,
णामोक्कसिअ } १७४ ; दे ४, २५)।

णाय वि [**दे**] गर्विष्ठ , अभिमानी ; (दे ४, २३)।

णाय देखो **णाग**; (काप्र ७७७ ; कप्पू; औप ; गउड ; वज्जा १४ ; सुपा ६३६; पउम २१, ४६)।

णाय पुं [**नाद**] शब्द, आवाज, ध्वनि ; (औप ; पउम२२, ३८ ; स २१३)।

णाय पुं [**न्याय**] १ न्याय, नीति; (औप ; स १५६; आचा)। २ उपपत्ति, प्रमाण ; (पंचा ४; विसे)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] न्याय-कर्ता ; (आचू१)। °**यर** वि [°**कर**] १ न्याय-कर्ता। २ पुं. न्यायाधीश; (श्रा १४)। °**ण्ण** वि [°**ज्ञ**] न्याय का जानकार; (उप ३४६)।

णाय पुं [**नाक**] स्वर्ग, देव-लोक ; (पाअ)।

णाय वि [**ज्ञात**] १ जाना हुआ, विदित ; (उव ; सुर ३, ३६)। २ ज्ञाति-संबन्धी, सगा, एक बिरादरी का ; (कप्प ; आउ ६)। ३ वंश-विशेष में उत्पन्न ; (औप)। ४ पुं. वंश-विशेष ; (ठा ६)। ५ क्षत्रिय-विशेष; (सूअ१, ६ ; कप्प)। ६ न. उदाहरण, दृष्टान्त; (उव; सुपा१२८)।

°कुमार पुं [°कुमार] ज्ञात-वंशीय राज-पुत्र ; (णाया १, ८)। °कुल न [°कुल] वंश-विशेष ; (पण्ह १, ३)। °कुलचंद पुं [°कुलचन्द्र] भगवान् श्रीमहावीर ; (आचा)। °कुलनंदण पुं [°कुलनन्दन] भगवान् श्रीमहावीर ; (पण्ह १, १)। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्रीमहावीर ; (आचा)। °मुणि पुं [°मुनि] भगवान् श्रीमहावीर ; (पण्ह २, १)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] माता या पिता के द्वारा संबन्ध, संबन्धि-जन ; (वव ६)। °संड न [°षण्ड] उद्यान-विशेष, जहां भगवान् श्रीमहावीर देव ने दीक्षा ली थी ; (आचा २, ३, १)। °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्रीमहावीर। °सुय न [°श्रुत] ज्ञाताधर्मकथा नामक जैन आगम-ग्रन्थ ; (णाया २, १)। °धम्मकहा स्त्री [°धर्मकथा] जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (सम १)।

णायग पुं [**नायक**] नेता, मुखिया, अगुआ ; (उप ६४८ टी ; कप्प ; सम १ ; सुपा २२)।

णायत्त पुं [**दे**] समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला वणिक् ; "पवहणवाणिज्जपरो सुहंकरो आसि नाम नायत्तो" (उप५९७ टी)

णायर देखो **णागर** ; (महा ; सुपा १८८)।

णायरिय देखो **णागरिय** ; (सुर १४, १३३)। स्त्री— °या ; (भवि)।

णायरी देखो **णागरी** ; (भवि)।

णायव्व देखो **णा**=ज्ञा।

णार पुं [**नार**] चतुर्थ नरक-पृथिवी का एक प्रस्तट; (इक)।

णारइअ वि [**नारकिक**] १ नरक-पृथिवी में उत्पन्न ; २ पुं. नरक का जीव ; (हे १, ७९)।

णारंग पुं [**नारङ्ग**] १ वृक्ष-विशेष, संतरे का वृक्ष ; २ न. फल-विशेष, कमला नीबू, संतरा ; (पउम ४१, ९ ; सुपा २३० ; ५६३ ; गउड; कुमा)।

णारग देखो **णारय**=नारक ; (विसे १९००)।

णारद देखो **णारय** ; (प्रयौ ५१)।

णारदीअ वि [**नारदीय**] नारद-संबन्धी ; (प्रयौ ५१)।

णारय पुं [**नारद**] १ मुनि-विशेष, नारद ऋषि ; (सम १५४; उप ६४८ टी)। २ गन्धर्व सैन्य का अधिपति देव-विशेष ; (ठा ७)।

णारय वि [**नारक**] १ नरक में उत्पन्न, नरक-संबन्धी; "जायए नारयं दुक्खं" (सुपा १६२)। २ पुं. नरक में उत्पन्न प्राणी, नरक का जीव ; (भग)।

णारसिंह वि [**नारसिंह**] नरसिंह-संबन्धी ; (उप ६४८ टी)।

णाराय देखो **णराअ** ; (हे १, ६७ ; उवा ; सम १४९ ; अजि १४)। °वज्ज न [°वज्र] संहनन-विशेष ; (पउम ३, १०९)।

णारायण पुं [**नारायण**] १ विष्णु, श्रीकृष्ण ; (कुमा ; स ६२२)। २ अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (पउम ५, १२२ ; ७३, २०)।

णारायणी स्त्री [**नारायणी**] देवी-विशेष, गौरी, दुर्गा ; (गउड)।

णारि° देखो **णारी**; (कप्प ; राज)। °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष ; (सम २७; ठा २, ३)।

णारिएर } पुं [**नालिकेर**]१ नारियर का पेड़; २ न. नलियर का फल ; (अभि १२७ ; पि १२८)।
णारिएल } देखो **णालिअर**।

णारिंग न [**नारिङ्ग**] नारंगी का फल, मीठा नीबू, कमला नीबू ; (कप्पू)।

णारी स्त्री [**नारी**] १ स्त्री, औरत, जनाना, महिला ; (हेका २२८ ; प्रासू ९२ ; १५६)। २ नदी-विशेष ; (इक)। °कंतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] द्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। देखो **णारि°**।

णारुट्ट पुं [**दे**] कूआर, गर्ताकार स्थान ; (पाअ)।

णारोट्ट पुं [**दे**] १ बिल, साँप आदि का रहने का स्थान, विवर ; २ कूपार, गर्ताकार स्थान ; (दे ४, २३)।

णाल न [**नाल**] १ कमल-दण्ड ; (से १, २८)। २ गर्भ का आवरण ; (उप ९७४)।

णालंदइज्ज वि [**नालन्दीय**] १ नालन्दा-संबन्धी। २ न. नालंदा के समीप में प्रतिपादित अध्ययन-विशेष, 'सूत्रकृतांग' सूत्र का सातवाँ अध्ययन ; (सूअ २, ७)।

णालंदा स्त्री [**नालन्दा**] राजगृह नगर का एक महल्ला ; (कप्प ; सूअ २, ७)।

णालंबिअ न [**दे**] आक्रन्दित, आक्रन्द-ध्वनि ; (दे ४,२४)।

णालंबि पुं [**दे**] कुन्तल, केश-कलाप ; (दे ४, २४)।

णाला } स्त्री [**नाडि**] नाड़ी, नस, सिरा ; (से १, २८ ;
णालि } कुमा)।

णालि वि [**दे**] भ्रस्त, गिरा हुआ ; (षड्)।

णालिअ वि [**दे**] मूढ, मूर्ख, अजान ; (हे ४, ४२२)।

णालिअर देखो **णारिएर** ; (दे २, १० ; पउम १, २०) । °**दीव** पुं [°**द्वीप**] द्वीप-विशेष ; (कम्म १, १६) ।

णालिआ स्त्री [**नालिका**] १ वल्ली विशेष ; (दे २,३) । २ घटिका, घड़ी, काल नापने का एक तरह का यन्त्र ; (पाअ; विसे ६२७) । ३ अपने शरीर से चार अंगुल लम्बी लाठी ; (ओघ ३६) । ४ द्यूत-विशेष, एक तरह का जूआ ; (औप ; भग ६, ७) । °**खेड्डा** स्त्री [°**क्रीडा**] एक तरह की द्यूत-क्रीड़ा ; (औप) ।

णालिएर देखो **णारिएर**, (णाया १, ६) ।

णालिएरी स्त्री [**नालिकेरी**] नलियर का गाछ ; (गउड ; वि १२६) ।

णाली स्त्री [**नाली**] १ वनस्पति-विशेष, एक लता ; (पण्ण १) । २ घटिका, घडी ; (जीव ३) ।

णाली स्त्री [**नाडी**] नाड़ी, नस, सिरा ; (विपा १, १) ।

णालीय वि [**नालीय**] नाल-संबन्धी ; (आचा) ।

णावइ (अप) देखो **इव** ; (हे ४, ४४४ ; भवि) ।

णावण न [**दे**] दान, वितरण , (पण्ह १,३—पत्र ५३) ।

णावा स्त्री [**नौ**] नौका, जहाज ; (भग ; उवा) । °**वाणिय** पुं [°**वाणिज**] समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला वणिक् ; (णाया १, ८) ।

णावापूरय पुं [**दे**] चुलुक, चुल्लू ; "तिहिं णावापूरएहिं आयामइ" (बृह १) ।

णाविअ पुं [**नापित**] नाई, हजाम ; (हे १, २३० ; कुमा ; पड्) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] नाइयों का अड्डा ; (श्रा १२) ।

णाविअ पुं [**नाविक**] जहाज चलाने वाला, नौका हाँकने वाला ; (णाया १, ६ ; सुर १३, ३१) ।

णास देखो **णस्स** । णासइ ; (पड् ; महा) । वकृ— णासंत ; (सुर१, २०२ ; २, २५) । कृ—णासियव्व, (सुर ७, १२६) ।

णास सक [**नाशय्**] नाश करना । णासइ ; (हे ४, ३१) । णासइ ; (महा ; उव) ।

णास पुं [**नाश**] नाश, ध्वंस ; (प्रासू १५३ ; पाअ) । °**यर** वि [°**कर**] नाश-कारक ; (सुर १२, १६४) ।

णास पुं [**न्यास**] १ स्थापन ; (गा ६६ ; उत्त ३०२) । २ धरोहर, रखने योग्य धन आदि ; (उप ७६८ टी ; धर्म २) ।

णासग वि [**नाशक**] नाश करने वाला ; (सुर२, ५८) ।

णासण न [**नाशन**] १ पलायन, अपक्रमण ; (धर्म२) । २ वि. नाश करने वाला ; (से ३, २७ ; गण २२) । स्त्री— °**णी** ; (से ३, २७) ।

णासण न [**न्यासन**] स्थापन, व्यवस्थापन ; (अणु) ।

णासणा स्त्री [**नाशना**] विनाश ; (विसे ६३६) ।

णासव सक [**नाशय्**] नाश करना । णासवइ ; (हे४, ३१) ।

णासविय वि [**नाशित**] नष्ट किया हुआ, भगाया हुआ ; (उप ३५७ टी ; कुमा) ।

णासा स्त्री [**नासा**] नाक, घ्राणेन्द्रिय ; (गा २२ ; आचा ; उवा) ।

णासि वि [**नाशिन्**] विनश्वर, नष्ट होने वाला ; (विसे १६८१) ।

णासिक्क न [**नासिक्य**] दक्षिण भारत का एक स्वनाम-प्रसिद्ध नगर जो आज कल भी 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है ; (उप पृ २१३ ; १४१ टी) ।

णासिगा स्त्री [**नासिका**] नाक, घ्राणेन्द्रिय ; (महा) ।

णासिय वि [**नाशित**] नष्ट किया हुआ ; (महा) ।

णासियव्व देखो **णास**=नश् ।

णासिर वि [**नशितृ**] नष्ट होने वाला, विनश्वर ; (कुमा) ।

णासीकय वि [**न्यासीकृत**] धरोहर रूप से रखा हुआ ; (श्रा १४) ।

णासेक्क देखो **णासिक्क** ; (उप १४१) ।

णाह पुं [**नाथ**] स्वामी, मालिक ; (कुमा ; प्रासू १२ ; ६६)।

णाहल पुं [**लाहल**] म्लेच्छ की एक जाति; (हे १, २५६ ; कुमा) ।

णाहि देखो **णाभि** ; (कुमा ; कप्पू) । °**रुह** पुं [°**रुह**] ब्रह्मा, चतुर्मुख ; (अच्चु ३६) ।

णाहिं (अप) अ [**नहि**] नहीं, नाहीं ; (हे ४, ४१६ , कुमा ; भवि) ।

णाहिणाम न [**दे**] वितान के बीच की रस्सी ; (दे ४, २४) ।

णाहिय वि [**नास्तिक**] १ परलोक आदि को नहीं मानने वाला ; २ पुं. नास्तिक मत का प्रवर्तक । °**वाइ**, °**वादि** वि [°**वादिन्**] नास्तिक मत का अनुयायी ; (सुर ६, २० ; स १६४) । °**वाय** पुं [°**वाद**] नास्तिक दर्शन ; (गच्छ २) ।

णाहिविच्छेअ } पुं [**दे**] जघन, कटी के नीचे का भाग;
णाहीए-विच्छेअ } (दे ४,२४) ।

(d) $2x - 3 = 0$

णि अ [**नि**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय ; (उत्त १) । २ नियतपन, नियम ; (ठा १०) । ३ आधिक्य, अतिशय ; (उत १ ; विपा १, ६) । ४ अधा-भाग, नीचे ; (सण) । ५ नित्यपन ; ६ संशय ; ७ आदर ; ८ उपरम, विराम ; ९ अन्तर्भाव, समावेश ; १० समीपता, निकटता ; ११ चेप, निन्दा ; १२ बन्धन ; १३ निषेध ; १४ दान ; १५ राशि, समूह ; १६ मुक्ति, मोक्ष ; (हे २, २१७ : २१८) । १७ अभिमुखता, संमुखता ; (सूअ १,६) । १८ अल्पता, लघुता ; (पण्ह १, ४) ।

णि अ [**निर्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय ; (उत्त ६) । २ आधिक्य, अतिशय , (उत्त १) । ३ प्रति-षेध, निषेध ; (सम १३७ ; सुपा १६८) । ४ बहिर्भाव ; ५ निर्गमन, निष्क्रमण ; (ठा ३, १; सुपा १३) ।

णिअ सक [**दृश्**] देखना । णिअइ ; (षड् ; हे ४,१८१)। वकृ—**णिअंत** ; (कुमा ; महा ; सुपा २६६) । संकृ—**णिएउं** ; (भवि) ।

णिअ वि [**निज**] आत्मीय, स्वकीय ; (गा १५० ; कुमा ; सुपा ११) ।

णिअ वि [**नीत**] ले जाया गया ; (से ५, ६ ; सण) ।

णिअ वि [**नीच**] नीच, जघन्य, निकृष्ट ; (कम्म ३, ३) ।

णिअइ स्त्री [**निकृति**] माया, कपट ; (पण्ह १, २) ।

णिअइ स्त्री [**नियति**] १ नियतपन, भवितव्यता, नियमितता; (सूअ १, १, ३) । २ अवश्यं-भाविता ; (ठा ४, ४ ; सूअ १, १, २) । °**पव्वय** पु [°**पर्वत**] पर्वत-विशेष ; (जीव ३) । °**वाइ** वि [°**वादिन्**] 'सब कुछ भवितव्यता के अनुसार ही हुआ करता है, प्रयत्न वगैरः अकिञ्चित्कर है' ऐसा मानने वाला; (राज) ।

णिअंटिय वि [**नियन्त्रित**] १ बँधा हुआ, जकड़ा हुआ । २ न. आशय-कर्तव्य नियम-विशेष ; (ठा १०) ।

णिअंठ वि [**निर्ग्रन्थ**] १ धन रहित । २ पुं. जैन मुनि, संयत, यति ; (भग ; ठा ३, १ ; ५, २) । ३ जिन भग-वान् ; (सूअ १, ६) ।

णिअंठि° देखो **णिग्गंथी** । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] १ एक विद्याधर-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सत्यकि था ; (ठा १०) । २ एक जैन मुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था ; (भग ५, ८) ।

णिअंठिय वि [**नैर्ग्रन्थिक**] १ निर्ग्रन्थ-संबन्धी ; २ जिन देव-संबन्धी । स्त्री—°**या**; "एसा आणा णियंठिया" (सूअ१,६)।

णिअंठी देखो **णिग्गंथी** ; (ठा ६) ।

णिअंतिय वि [**नियन्त्रित**] संयमित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ ; (महा ; सण) ।

णिअंधण न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ४, २८) ।

णिअंब पुं [**नितम्ब**] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का वस-ति-स्थान; (ओघ ४०) । २ स्त्री की कमर का पीछला भाग, कमर के नीचे का भाग ; (कुमा ; गउड) । ३ मूल भाग ; (से ८, १०१) । ४ कटी-प्रदेश, कमर ; (जं ४) ।

णिअंबिणी स्त्री [**नितम्बिनी**] १ सुन्दर नितम्ब वाली स्त्री ; २ स्त्री, महिला ; (कप्पू ; पाअ ; सुपा ५३८) ।

णिअंस सक [**नि + वस्**] पहनना । णियंसइ ; (महा) । संकृ—**णियंसित्ता** ; (जीव ३ ; पि ७४) । प्रयो—णियंसावेइ ; (पि ७४) ।

णिअंसण न [**दे. निवसन**] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ४, ३८; गा ३५१ ; पाअ ; गउड ; पण्ह १, ३ ; सुपा १५१ ; हेका ३१) ।

णिअक्क सक [**दृश्**] देखना । णिअक्कइ ; (प्राप्र) ।

णिअक्कल वि [**दे**] वर्तुल, गोलाकार पदार्थ ; (दे ४, ३६ ; पाअ) ।

णिअग वि [**निजक**] आत्मीय, स्वकीय ; (उवा) ।

णिअच्छ सक [**दृश्**] देखना । णिअच्छइ ; (हे ४;१८१)। वकृ—**णिअच्छंत, णिअच्छमाण** ; (गा २३८ ; गउड ; गा ५००) । संकृ—**णिअच्छिऊण, णिअच्छिअ** ; (सुर १, १५७ ; कुमा) । कृ—**णिअच्छियव्व** ; (गउड) ।

णिअच्छ सक [**नि+यम्**] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना । २ अवश्य प्राप्त करना । ३ जोड़ना । संकृ—**णिअ-च्छइत्ता** ; (सूअ १, १, १ ; २) ।

णिअच्छिअ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ ; (पाअ) ।

णिअट्ट अक [**नि+वृत्**] निवृत्त होना, पीछे हटना, रुकना । णिअट्टइ ; (सण) । वकृ —**णिअट्टमाण** ; (आचा) ।

णिअट्ट सक [**निर् + वृत्**] बनाना, रचना, निर्माण करना ; (औप) ।

णिअट्ट सक [**नि + अट्**] अनुसरण करना; (औप) ।

णिअट्ट पुं [**निवर्त**] व्यावर्तन, निवृत्ति ; "अणियट्टगामीणं" (आचा) ।

णिअट्ट वि [**निवृत्त**] व्यावृत्त, पीछे हटा हुआ ; (धर्म १, १

णिअट्टि स्त्री [**निवृत्ति**] १ निवर्तन, पीछे हटना ; (प्राचू १)। २ अध्यवसाय-विशेष ; (सम २६)। ३ मोह-रहित अवस्था ; (सूत्र १, ११)। °**बायर** न [°**बादर**] १ गुण-स्थानक विशेष ; (सम २६)। २ पुं. गुण-स्थानक विशेष में वर्तमान जीव ; (आव ४)।

णिअट्टिय वि [**निवर्त्तित**] व्यावर्तित, पीछे हटाया हुआ ; (औप)।

णिअट्टिय वि [**निर्वर्तित**] रचित, निर्मित, बनाया हुआ; (औप)।

णिअट्टिय वि [**न्यर्दित**] अनुगत, अनुसृत ; (औप)।

णिअड न [**निकट**] १ निकट, समीप, पास ; (गा ४०२; पाअ ; सुपा ३५२)। २ वि. पास का, समीप का ; (पाअ)।

णिअडि स्त्री [**दे. निकृति**] माया, कपट ; (दे ४, २६ ; पण्ह १, २ ; सम ५१ ; भग १२, ५ ; सूत्र २, २ ; णाया १, १८ ; आव ५)।

णिअडिअ वि [**निगडित**] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ ; (गा ५५६ ; उप पृ ५२ ; सुपा ६३)।

णिअडिअ वि [**निकटिक**] समीप-वर्ती, पार्श्व में स्थित ; (कप्पू)।

णिअडिल्ल वि [**निकृतिमत्**] कपटी, मायावी ; (ठा ४, ४ ; औप ; भग ८, ६)।

णिअत्त देखो **णिअट्ट**=नि+वृत्। णिअत्तइ; (महा ; पि २८६)। वकृ—**णिअत्तंत, णिअत्तमाण** ; (गा ७६ ; ५३७ ; से ५, ६७ ; नाट)। प्रयो--णिअत्तावेहि ; (पि २८६)।

णिअत्त देखो **णिअट्ट**=निवृत्त ; (पउम २२, ६२ ; गा ६५८ ; सुपा ३१७)।

णिअत्तण न [**निवर्तन**] १ भूमि का एक नाप ; (उवा)। २ निवृत्ति, व्यावर्त्तन ; (आव ४)।

णिअत्तणिअ वि [**निवर्तनिक**] निवर्तन परिमाण वाला ; (भग ३, १)।

णिअत्ति देखो **णिअट्टि** ; (उत्त ३१)।

णिअत्थ वि [**दे**] १ परिहित, पहना हुआ ; (दे ४, ३३ ; आवम ; भवि)। २ परिधापित, जिसको वस्त्र आदि पहनाया गया हो वह ; "णियत्था तो गणियाए" (विसे २६०७)।

णिअद सक [**नि+गद**] कहना, बोलना। णिअददि (शौ) ; (नाट—रत्न ४५)। वकृ—**णिअदंत**; (नाट)।

णिअद्दिअ देखो **णिअट्टिय**=न्यर्दित ; (राज)।

णिअद्धण न [**दे**] परिधान, पहनने का वस्त्र ; (षड्)।

णिअम सक [**नि+यमय्**] नियन्त्रित करना, नियम में रखना। संकृ—**णिअमेऊण** ; (पि ५८६)।

णिअम पुं [**नियम**] १ निश्चय; (जी १४)। २ ली हुई प्रतिज्ञा, व्रत ; "परिवाविज्जइ णिअमा णिअमसमत्ती तुमे मज्झ" (उप ७२८ टी)। ३ प्रायोपवेशन, संकल्प-पूर्वक अनशन-मरण के लिए उद्यम ; (से ५, २)। °**सा** अ [°**सात्**] नियम से ; (औप)। °**सो** अ [°**शस्**] निश्चय से; (श्रा १४)।

णिअमण न [**नियमन**] नियन्त्रण, संयमन; (विसे १२५८)।

णिअमिय वि [**नियमित**] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित ; (से ४, ३७)।

णिअय न [**दे**] १रत, मैथुन; २ शयनीय, शय्या; ३घट, घडा, कलश ; (दे ४, ४८)। ४ वि. शाश्वत, नित्य ; (दे ४, ४८; पाअ ; सूत्र १, ८ ; राय)।

णिअय वि [**निजक**] निजका, स्वकीय, आत्मीय; (पाअ)।

णिअय वि [**नियत**] नियम-बद्ध, नियमानुसारी ; (उवा)।

णिअया स्त्री [**नियता**] जम्बू-वृक्ष विशेष,जिससे यह जम्बू-द्वीप कहलाता है ; (इक)।

णिअर पुं [**निकर**] राशि, समूह, जत्था; (गा ५६६ ; पाअ; गउड)।

णिअरण न [**दे**] दण्ड, शिक्षा ; (स ४५६)।

णिअरिअ वि [**दे**] राशि-रूप से स्थित ; (दे ४, ३८)।

णिअल न [**दे**] नूपुर, स्त्री का पादाभरण-विशेष ; (दे ४, २८)।

णिअल पुं [**निगड**] बेड़ी, साँकल ; (से ३, ८; विपा १, ६)। देखो **णिगल**।

णिअलाइअ, **णिअलाविअ**, **णिअलिअ** } वि. [**निगडित**] साँकल से नियन्त्रित, जकड़ा हुआ, (गा ४५४ ; ५०० ; पाअ; गउड , स ५, ४८)।

णिअल्ल पुं [**दे. नियल्ल**] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)।

णिअल्ल वि [**निज**] स्वकीय, आत्मीय ; (महा)।

णिअस देखो **णिअंस**। णियसइ ; (सुपा ६२)।

णिअसण देखो **णिअंसण**; (हेका ५६ ; काप्र २०१)।

णिअसिय वि [**निवसित**] परिहित, पहना हुआ ; (सुपा १५३)।

णिअह देखो **णिवह** ; (नाट—मालती १३८)।

(d) $2x - 3y = 0$

णिआ° देखो **णिअय**=(दे)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] नित्य-वादी, पदार्थ को नित्य मानने वाला ; (ठा ८)।
णिआइय देखो **णिकाइय** , (सूअ १, ६)।
णिआग पुं [**नियाग**] १ नियत योग ; २ निश्चित पूजा ; ३ मोक्ष, मुक्ति, (आचा , सूअ १, १, २)। ४ न. आमन्त्रण दे कर जो भिक्षा दी जाय वह, (दस ३)।
णिआग देखो **णाय**=न्याय ; (आचा)।
णिआण न [**निदान**] १ कारण, हेतु, " अहो अप्प नियाणा महतो विवाआ " (स ३६० ; पाअ ; णाया १, १३)। २ किसी व्रतानुष्ठान की फल-प्राप्ति का अभिलाष, संकल्प-विशेष; (श्रा ३३ ; ठा १०)। ३ मूल कारण ; (आचा)। °**कड** वि [°**कृत्**] जिसने अपने शुभानुष्ठान के फल का अभिलाष किया हो वह ; (सम १५३)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] वही अनन्तर उक्त अर्थ; (ठा ६)।
णिआण न [**निपान**] कूप या तलाव के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, आहाव, हौदी ; " पइमवण पइहट्टं पइमग्गं पइसहं पइनियाणं " (उप ७२८ टी)।
णिआणिआ स्त्री [**दे**] खराब तृणों का उन्मूलन ; (दे ४, ३५)।
णिआम देखो **णिअम**=नियमय्। संकृ —उवसग्गा **णियामित्ता** आमोक्खाए परिव्वए " (सूअ १, ३, ३)।
णिआमग } वि [**नियामक**] नियम-कर्ता, नियन्ता , (सुपा
णिआमय } ३१६)। २ निश्चायक, विनिगमक ; (विसे ३४७० ; स १७०)।
णिआमिअ वि [**नियमित**] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित ; (स २६३)।
णिआर सक [**काणेक्षित कृ**] कानी नजर से देखना। णिआरइ ; (हे ४, ६६)।
णिआरिअ वि [**काणेक्षितीकृत**] १ कानी नजर से देखा हुआ; आधी नजर से देखा हुआ। २ न. आधी नजर से निरीक्षण ; (कुमा)।
णिआह पु [**निदाघ**] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म ऋतु ; २ उष्णा, घम, गरमी , (गउड)।
णिइग } वि [**दे, नित्य , नैत्यिक**] नित्य, शाश्वत, अविनश्वर;
णिइय } (पएह २, ४—पत्र १४१ ; सूअ १, १, ४ ; २, ४ ; णंदि ; आचा ; सम १३२)।
णिउअ वि [**निवृत**] परिवेष्टित, परिक्षिप्त ; (हे १,१३१)।
णिउअ वि [**नियुत**] सुसंगत, सुश्लिष्ट ; (णाया १, १८)।
णिउंचिअ वि [**निकुञ्चित**] संकुचित, सकुचा हुआ, थोड़ा मुड़ा हुआ ; (गा ५६३ ; से ६, १६ ; पाअ ; स ३३५)।
णिउंज सक [**नि+युज्**] जोड़ना, संयुक्त करना, किसी कार्य में लगाना। कर्म—णिउंजोअसि ; (पि ५४६)। वकृ —**णिउंजमाण** ; (सुअ १, १०)। संकृ —**निउंजिऊण, निउंजिय** ; (स १०४ ; महा)। कृ—**णिउंजियव्व, णिउत्तव्व** ; (उप पृ १० ; कुमा)।
णिउंज पुं [**निकुञ्ज**] १ गहन, लता आदि से निबिड़ स्थान; (कुमा ; गा २१७)। २ गह्वर ; (दे ६, १२३)।
णिउंभ पुं [**निकुम्भ**] कुम्भकर्ण का एक पुत्र ; (से १२,६२)।
णिउंभिला स्त्री [**निकुम्भिला**] यज्ञ-स्थान ; (से १५,३६)।
णिउक्क वि [**दे**] तूष्णीक, मौन रहने वाला ; (दे ४, २७ ; पाअ)।
णिउक्कण पुं [**दे**] १ वायस, काक, कौआ ; २ वि. मूक, वाक्-शक्ति से हीन ; (दे ४, ५१)।
णिउज्जम वि [**निरुद्यम**] उद्यम-रहित, आलसी ; (सुअ २, २)।
णिउड्ड अक [**मस्ज् , नि+ब्रुड्**] मज्जन करना, डूबना। णिउड्डइ ; (हे १,१०१)। वकृ—**णिउड्डमाण** ; (कुमा)।
णिउड्ड वि [**मग्न , निब्रुडित**] डूबा हुआ, निमग्न ; (से १०, १५ ; १५, ७४)।
णिउण वि [**निपुण**] १ दक्ष, चतुर, कुशल ; (पाअ ; स्वप्न ५३ ; प्रासू ११ ; जी ६)। २ सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके ; (जो २ ; राय)। ३ क्रिवि. दक्षता से, चतुराई से, कुशलता से ; (जीव ३)।
णिउण वि [**निगुण**] १ नियत गुण वाला ; २ निश्चित गुण से युक्त , (राज)। ३ सुनिश्चित, विनिर्णीत ; (पंचा४)।
णिउणिय वि [**नैपुणिक**] निपुण, दक्ष, चतुर ; (ठा ६)।
णिउत्त वि [**नियुक्त**] १ व्यापारित, कार्य में लगाया हुआ ; (पचा ८)। २ निबद्ध ; (विसे ३८८)।
णिउत्त वि [**निर्वृत्त**] निष्पन्न, सिद्ध ; (उत्तर १०४)।
णिउत्तव्व देखो **णिउंज**=नि+युज्।
णिउद्ध न [**नियुद्ध**] बाहु-युद्ध, कुश्ती ; (उप २६२)।
णिउर पु [**निकुर**] वृक्ष-विशेष ; (णाया १,६—पत्र १६०)।
णिउर न [**नूपुर**] स्त्री के पाँव का एक आभरण ; (हे १, १२३ , कुमा)।

(c) hexanoic acid

णिउर वि [**दे**] १ छिन्न, काटा हुआ ; २ जीर्ण, पुराना; (षड्) ।

णिउरंब न [**निकुरम्ब**] समूह, जत्था ; (पाअ ; सुर ३, ६१ ; गा ४६५ ; सुपा ४५४) ।

णिउरुंब न [**निकुरुम्ब**] समूह, जत्था ; (स ४३७ ; गा ४६५ अ ; पि १७७) ।

णिउल पुं [**दे**] गाँठ, गठरी ; "एवं बहु भणिऊणं समप्पिओ दविणनिउलोत्ति" (महा) ।

णिऊढ वि [**निगूढ**] गुप्त, प्रच्छन्न : (अच्चु ४५) ।

णिएल्ल देखो **णिअल्ल**=निज ; (आवम) ।

णिओअ सक [**नि+योजय्**] किसी कार्य में लगाना । णिओएदि (शौ) ; (नाट—विक्र ५) ।

णिओअ देखो **णिओग** ; (से ८, २६ ; अभि २७ ; सण; से ३४८) । १० आज्ञा, आदेश ; (स २१४) ।

णिओइअ वि [**नियोजित**] नियुक्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ ; (स ४४२ ; अभि ६६) ।

णिओग पुं [**नियोग**] १ नियम, आवश्यक कर्तव्य ; (विसे १८७६ ; पंचव ४) । २ सम्बन्ध, नियोजन ; (बृह १) । ३ अनुयोग, सूत्र की व्याख्या; (विसे) । ४ व्यापार, कार्य ; (वव २) । ५ अधिकार-प्रेरण ; (महा) । ६ राजा, नृप, आज्ञा-विधाता ; (जीत) । ७ गाँव, ग्राम ; ८ क्षेत्र, भूमि ; (बृह १) । ६ संयम, त्याग ; (सूअ १,१६) । देखो **णिओअ** । °**पुर** न [°**पुर**] १ राजधानी ; २ देश, राष्ट्र ; ३ राज्य; (जीत) ।

णिओगि वि [**नियोगिन्**] नियोग-विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञा-प्राप्त, अधिकारी ; (सुपा ३७१) ।

णिओजिय देखो **णिओइअ** ; (आवम) ।

णिंत } देखो **णी**=गम् ।
णिंतूण }

णिंद सक [**निन्द्**] निन्दा करना, जुगुप्सा करना । णिंदामि, (पडि) । वकृ—**णिंदंत** ; (श्रा ३६) । कवकृ—**णिंदिज्जंत** ; (सुपा ३६३) । संकृ—**णिंदित्ता, णिंदिअ**; (आचा २; ३, १ ; श्रा ४०) । हेकृ—**णिंदिउं, णिंदित्तए** ; (महा ; ठा २, १) । कृ—**णिंदिअव्व, णिंदणिज्ज** ; (पण्ह २, १ ; उव १०३१ टी ; णाया १, ३) ।

णिंद वि [**निन्द्य**] निन्दा-योग्य, निन्दनीय ; (आवू १) ।

णिंद (अप) स्त्री [**नाद्र**] निंद, निद्रा ; (भवि) ।

णिंदण न [**निन्दन**] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा; (उप ४४६; ७२८ टी) ।

णिंदणा स्त्री [**निन्दना**] निन्दा, जुगुप्सा ; (औप ; ओघ ७६१ ; पण्ह २, १) ।

णिंदय वि [**निन्दक**] निन्दा करने वाला ; (पउम ६०, २१) ।

णिंदा स्त्री [**निन्दा**] घृणा, जुगुप्सा ; (आव ४) ।

णिंदिअ वि [**निन्दित**] जिसकी निन्दा की गई हो वह ; (गा २६७ ; प्रासू १५८) ।

णिंदिणी स्त्री [**दे**] कुत्सित तृणों का उन्मूलन ; (दे ४, ३५) ।

णिंदु स्त्री [**निन्दु**] मृत-वत्सा स्त्री, जिसके बच्चे जीवित न रहते हों ऐसी स्त्री ; (अंत ७ ; श्रा १६) ।

णिंब पुं [**निम्ब**] नीम का पेड़ ; (हे १, २३० ; प्रासू २६) ।

णिंबोलिया स्त्री [**निम्बगुलिका**] नीम का फल ; (णाया १, १६) ।

णिकर पुं [**निकर**] समूह, जत्था, राशि , (कप्पू) ।

णिकरण न [**निकरण**] १ निश्चय, निर्णय ; २ निकार, दुःख-उत्पादन ; (आचा) ।

णिकरिय वि [**निकरित**] सारीकृत, सर्वथा संशोधित ; (औप) ।

णिकाइय वि [**निकाचित**] १ व्यवस्थापित, नियमित ; (णंदि) । २ अत्यन्त निविड रूप से बँधा हुआ (कर्म) ; (उत्त ; सुपा ५७६) । ३ न. कर्मों का निविड़ रूप से बन्धन; (ठा ४, २) ।

णिकाम न [**निकाम**] १ निश्चय, निर्णय ; २ अत्यन्त, अतिशय ; (सूअ १, १०) ।

णिकाय सक [**नि+काचय्**] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना । २ निविड़ रूप से बाँधना । ३ निमन्त्रण देना । णिकाइंति ; (भग) । भूका—णिकाइंसु ; (भग ; सूअ २,१) । भवि—णिकाइस्संति ; (भग) । संकृ—**णिकाय** ; (आचा) ।

णिकाय पुं [**निकाय**] १ समूह, जत्था, यूथ, वर्ग, राशि ; (ओघ ४०७ ; विसे ६०० ; दं २८) । २ मोक्ष, मुक्ति ; (आचा) । ३ आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष ; (अणु) । °**काय** पुं [°**काय**] जीव-राशि, छओं प्रकार के जीवों का समूह ; (दस ४) ।

णिघंटु पुं [निघण्टु] शब्द-कोश, नाम संग्रह; (औप; भग)।
णिघस पुं [निकष] १ कसौटी का पत्थर ; (अणु) । २ कसौटी पर की जाती सुवर्ण की रेखा ; (सुपा ३६१) ।
णिचय पुं [निचय] १ समूह, राशि ; २ उपचय, पुष्टि ; (ओघ ४०७ ; स ३६६ ; आचा : महा) ।
णिचिअ वि [निचित] १ व्याप्त, भरपूर ; (अजि ५) । २ निबिड, पुष्ट ; (भग) ।
णिचुल पुं [निचुल] वृक्ष-विशेष, वंजुल वृक्ष ; (स १११; कुमा) ।
णिच्च वि [नित्य] १ अ-विनश्वर, शाश्वत ; (आचा ; औप) । २ न. निरन्तर, सर्वदा, हमेशा ; (महा ; प्रासू १४ ; १०१) । °**च्छणिय** वि [°क्षणिक] निरन्तर उत्सव वाला ; (णाया १, ४) । °**मंडिया** स्त्री [°मण्डिता] जम्बू वृक्ष विशेष ; (इक) । °**वाय** पुं [°वाद] पदार्थों को नित्य मानने वाला मत ; "सुहदुक्खसंपओगो न जुज्जइ निच्चवायपक्खम्मि" (सम १८) । °**सो** अ [°शस्] सदा, सर्वदा, निरन्तर ; (महा) । °**लोअ**, °**लोग**, °**लोव** पुं [°लोक] १ एक विद्याधर-राजा ; (पउम ६, ५२) । २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३) । ३ न नगर-विशेष ; (पउम ६, ५२ ; इक) । ४ वि. सर्वदा प्रकाश वाला ; (कप्प) ।

णिच्च देखो **णीय**=नीच; (सम ५५) ।
णिच्चक्खु वि [निश्चक्षुष्] चक्षु-रहित, नेत्र-हीन, अन्धा ; (पउम ८२, ५१) ।
णिच्चट्ट (अप) वि [गाढ] गाढ, निबिड :(हे४, ४२२)।
णिच्चय देखो **णिच्छय** ; (प्रयौ २१ ; पि ३०१) ।
णिच्चर देखो **णिज्जर** । णिच्चरइ ; (हे ४, ३ टि) ।
णिच्चल सक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना । णिच्चलइ ; (हे ४, १७३) । प्रयो—णिच्चलावेइ ; (कुमा) ।
णिच्चल सक [मुच्] दुःख को छोडना, दुःख का त्याग करना । णिच्चलइ ; (हे ४,६२ टि) । भूका—णिच्चलीअ; (कुमा) ।
णिच्चल वि [निश्चल] स्थिर, दृढ, अचल ; (हे २, २१; ७७) । °**पय** न [°पद] मुक्ति, मोक्ष ; (पंचव ; ४)।
णिच्चिंत वि [निश्चिन्त] चिन्ता-रहित, वेफीकर ; (विक ४३ ; प्रासू २७ ; सुपा २२५) ।
णिच्चिट्ठ वि [निश्चेष्ट] चेष्टा-रहित ; (सुपा १४) ।
णिच्चिद (शौ) देखो **णिच्छिय** ; (पि ३०१) ।
णिच्चुज्जोअ, **णिच्चुज्जोव** वि [नित्योद्द्योत] १ सदा प्रकाश-युक्त । २ पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष, ; (ठा २, ३) । ३ न. एक विद्याधर-नगर ; (इक)।
णिच्चुड्ड वि [दे] १ उद्वृत्त, बाहर निकला हुआ ; (षड्)। २ निर्दय, दया-हीन ; (पाअ) ।
णिच्चुव्विग्ग वि [नित्योद्विग्न] सदा खिन्न ; (दस ५, २) ।
णिच्चेट्ठ देखो **णिच्चिट्ठ** ; (णाया १, २ ; सुर ३,१७२)।
णिच्चेयण वि [निश्चेतन] चेतना-रहित; (महा) ।
णिच्चोउया स्त्री [नित्यर्तुका] हमेशा रजस्वला रहने वाली स्त्री ; (ठा ५, २) ।
णिच्चोरिक्क न [निश्चौर्य] १ चोरी का अभाव । २ वि. चोरी-रहित ; (उप १३६ टी) ।
णिच्छइय वि [नैश्चयिक] १ निश्चय-संबन्धी । २ पु. निश्चय नय, द्रव्यार्थिक नय, परिणाम-वाद ; (विसे) ।
णिच्छउम वि [निश्छद्मन्] १ कपट-रहित, माया-वर्जित; (गच्छ ८ ; सुपा ३५०) । २ क्रिवि. बिना कपट ; (सार्ध ५१) ।
णिच्छक्क वि [दे] १ निर्लज्ज, वेशरम, धृष्ट ; (बृह १ ; वव ५) । २ अवसर को नहीं जानने वाला, अ-समयज्ञ ; (राज) ।
णिच्छम्म देखो **णिच्छउम** ; (उव ; सार्ध १४५) ।
णिच्छय सक [निर्+चि] निश्चय करना, निर्णय करना । वकृ—**णिच्छयमाण** ; (उप ७२८ टी) ।
णिच्छय पुं [निश्चय] १ निश्चय, निर्णय ; (भग ; प्रासू १७७) । २ नियम, अविनाभाव ; (राज) । ३ नय-विशेष, द्रव्यार्थिक नय, वास्तविक पदार्थ को ही मानने वाला मत, परिणाम-वाद ; (बृह ४ ; पंचा १३) । °**कहा** स्त्री [°कथा] अपवाद ; (निचू ५) ।
णिच्छल्ल सक [छिद्] छेदना, काटना । णिच्छल्लइ ; (हे ४, १२४) ।
णिच्छल्लिअ वि [छिन्न] काटा हुआ; (कुमा ; स २५८; गउड) ।
णिच्छाय वि [निश्छाय] कान्ति-रहित, शोभा-हीन ;(पण्ह १, २) ।
णिच्छारय वि [निस्सारक] सार-रहित ; " निच्छारयछारयधूलीण " (श्रा २७) ।

णिच्छिड्ड वि [**निश्छिद्र**] छिद्र-रहित ; (गाया १, ६ ; उप २११ टी) ।

णिच्छिण्ण वि [**निच्छिन्न**] पृथक्-कृत, अलग किया हुआ, काटा हुआ ; (विसे २७३) ।

णिच्छिद्द देखो **णिच्छिड्ड** ; (स ३५०) ।

णिच्छिन्न देखो **णिच्छिण्ण** ; (पुप्फ ४६३ ; महा) ।

णिच्छिय वि [**निश्चित**] निश्चित, निर्णीत, अ-संदिग्ध ; (णाया १, १ ; महा) ।

णिच्छीर वि [**निःक्षीर**] क्षीर-रहित, दुग्ध-वर्जित; (पण्ण १)।

णिच्छुंड वि [**दे**] निर्दय, करुणा-रहित ; (दे ४, ३२) ।

णिच्छुट्ट वि [**निश्छुटित**] निर्मुक्त, छूटा हुआ ; (सुर ६, ७२) ।

णिच्छुभ सक [**नि+क्षिप्**] १ बाहर निकालना । २ फेंकना । णिच्छुभइ ; (भग) । कर्म—णिच्छुब्भइ ; (पि ६६) । कवकृ—**णिच्छुब्भमाण** ; (विपा १,२) । संकृ—**णिच्छुभित्ता, णिच्छुभिउं**; (भग ; निर १,१) । प्रयो — णिच्छुभावेइ , (णाया १, ८) ।

णिच्छुभण न [**निक्षेपण**] निःसारण, निष्काशन ; (निचू १) ।

णिच्छुभाविय वि [**निक्षेपित**] निस्सारित, बाहर निकाला हुआ ; (णाया १, ८) ।

णिच्छुहणा स्त्री [**निक्षेपणा**] बाहर निकलने की आज्ञा, निर्भर्त्सना ; (णाया १, १६ टी—पत्र २००) ।

णिच्छूढ वि [**निक्षिप्त**] १ उद्वृत्त, निर्गत ; (हे ४, २५८) । २ फेंका हुआ, निक्षिप्त , (प्रामा) । ३ निस्सारित, निष्कासित; (णाया १,८—पत्र १४६; १,१६—पत्र १९९)।

णिच्छूढ न [**निष्ठ्यूत**] थूक, खखार, (विसे ५०१) ।

णिच्छोड सक [**निर्+छोटय्**] १ बाहर निकलने के लिए धमकाना । २ निर्भर्त्सन करना । ३ छुड़वाना । णिच्छोडेइ ; णिच्छोडेंति ; (णाया १, १६ : १८) । णिच्छोडेज्जा ; (उवा) । संकृ —**णिच्छोडइत्ता** ; (भग १५) ।

णिच्छोडण न [**निश्छोटन**] निर्भर्त्सन, बाहर निकालने की धमकी ; (उव) ।

णिच्छोडणा स्त्री [**निश्छोटना**] ऊपर देखो , (णाया १, १६—पत्र १९९) ।

णिच्छोल सक [**निर्+तक्ष्**] छीलना, छाल उतारना । णिच्छोलेइ ; (निचू १) । वकृ—**णिच्छोलंत** ; (निचू १) । संकृ—**णिच्छोलिऊण** ; (महा) ।

णिजंतिय वि [**नियन्त्रित**] नियमित, अकुंशित ; (सुर ३, ४) ।

णिजिण्ण देखो **णिज्जिण्ण** ; (ठा ४, १) ।

णिजुद्ध देखो **णिउद्ध** ; (निचू १२) ।

णिजोजण न [**नियोजन**] नियुक्ति, कार्य में लगाना, भार-अर्पण , (उप १७९ टी) ।

णिजोजिय देखो **णिओइय** ; (उप १७९ टी) ।

णिज्ज वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ ; (दे ४, २५ ; षड्) ।

णिज्जंत देखो **णी**=नी ।

णिज्जण वि [**निर्जन**] १ विजन, मनुष्य-रहित, २ न एकान्त-स्थान, (गउड) ।

णिज्जप्प वि [**निर्याप्य**] १ निर्वाह-कारक, २ निर्बल, बल को नहीं बढ़ाने वाला ; " अरसविरससीयलुक्खणिज्जप्प-पाणभोयणाइ " (पण्ह २, ५) ।

णिज्जर सक [**निर्+जॄ**] १ क्षय करना, नाश करना । २ कर्म-पुद्गलों को आत्मा से अलग करना । णिज्जरेइ, णिज्जरए, णिज्जरेंति , (भग ; ठा ४,१) । भूका—णिज्जरिंसु, णिज्ज-रेंसु ; (पि ५१६ ; भग) । भवि—णिज्जरिस्संति ; (ठा ४, १) । वकृ—**णिज्जरमाण** ; (भग १८, ३) । कवकृ—**णिज्जरिज्जमाण** ; (ठा १० ; भग) ।

णिज्जरण न [**निर्जरण**] नीचे देखो ; (औप) ।

णिज्जरणा स्त्री [**निर्जरणा**] १ नाश, क्षय, २ कर्म-क्षय, कर्म-नाश ; ३ जिससे कर्मों का विनाश हो ऐसा तप ; (नव १; सुर १४, ६५) ।

णिज्जरा स्त्री [**निर्जरा**] कर्म-क्षय, कर्म-विनाश; (आचा ; नव २४) ।

णिज्जरिय वि [**निर्जीर्ण**] क्षीण, विनाश-प्राप्त ; (तंदु) ।

णिज्जवग वि [**निर्यापक**] १ निर्वाह करने वाला । २ आरा-धक, आराधन करने वाला ; (ओघ २८ भा) । ३ पुं. जैन मुनि-विशेष, जो शिष्य के भारी प्रायश्चित्त का भी ऐसी तरह से विभाग कर दे कि जिससे वह उसे निवाह सके ; (ठा ८ ; भग २५, ७) ।

णिज्जवणा स्त्री [**निर्यापना**] १ निगमन, दर्शित अर्थ का प्रत्युच्चारण ; (विसे२६३२) । २ हिंसा ; (पण्ह१, १)।

णिज्जवय देखो **णिज्जवग** ; (ओघ २८ भा टी ; द्र ४६)।

णिज्जा अक [**निर्+या**] बाहर निकलना । णिज्जायंति ; (भग) । भवि—णिज्जाइस्सामि ; (औप) । वकृ—**णिज्जायमाण** ; (ठा ५, ३) ।

णिज्जाण न [**निर्याण**] १ बाहर निकलना, निर्गम ; (ठा ५,३) । २ आवृत्ति-रहित गमन ; (औप) । ३ मोक्ष, मुक्ति ; (आव ४) ।

णिज्जाणिय त्रि [**नैर्याणिक**] निर्याण-संबन्धी, निर्गम-संबन्धी ; (भग १३, ६ ; निचू ८) ।

णिज्जामग } पुं [**निर्यामक**] कर्णधार, जहाज का नियन्ता ; (विसे २६५६ ; णाया १, १७ ; औप ; सुर १३, ४८) ।
णिज्जामय }

णिज्जामिय वि [**निर्यामित**] पार पहुँचाया हुआ, तारित; (महा) ।

णिज्झाय पुं [**दे**] उपकार ; (दे ४, ३४) ।

णिज्जाय वि [**निर्यात**] निर्गत, निःसृत ; (वसु ; उप पृ २८६) ।

णिज्जायण न [**निर्यातन**] वैर-शुद्धि, बदला ; (महा) ।

णिज्जायणा स्त्री [**निर्यातना**] ऊपर देखो ; (उप ४३१टी) ।

णिज्जावय देखो **णिज्जामय** ; (भवि) ।

णिज्जास पुं [**निर्यास**] वृक्षों का रस, गोंद ; (सूअ२,१) ।

णिज्जिअ वि [**निर्जित**] जीता हुआ, पराभूत ; (ओघ १८ भा टी ; सुर ६, ३६ ; औप) ।

णिज्जिण सक [**निर्+जि**] जीतना, पराभव करना । निज्जिणइ ; (भवि) । संकृ—**निज्जिणिऊण** ; (महा) ।

णिज्जिणिय देखो **णिज्जिअ** ; (सुपा २६) ।

णिज्जिण्ण } वि [**निर्जीर्ण**] नाश-प्राप्त, क्षीण ; (भग ; ठा ४, १) ।
णिज्जिन्न }

णिज्जीव वि [**निर्जीव**] जीव-रहित, चैतन्य-वर्जित ; (औप ; श्रा २० ; महा) ।

णिज्जुत्त वि [**निर्युक्त**] १ संबद्ध, संयुक्त ; (विसे १०८५ ; ओघ १ भा) । २ खचित, जड़ित ; (औप) । ३ प्ररूपित, प्रतिपादित ; (आवम) ।

णिज्जुत्ति स्त्री [**निर्युक्ति**] व्याख्या, विवरण, टीका ; (विसे ६६५ ; ओघ २ ; सम १०७) ।

णिज्जुद्ध देखो **णिउद्ध** ; (स ४७०) ।

णिज्जूढ वि [**निर्यूढ**] १ निस्सारित, निष्कासित ; (णाया १,१—पत्र ६४) २ अ-मनोज्ञ, अ-सुन्दर; (ओघ ५४८) । ३ उद्धृत, ग्रन्थान्तर से अवतारित , (दसनि १) ।

णिज्जूह सक [**निर्+ग्रूह्**] १ परित्याग करना । २ रचना, निर्माण करना । कर्म—णिज्जूहिज्जइ ; (पि २२१) । हेकृ—**णिज्जूहित्तए** ; (वव २) । कृ—**णिज्जूहियव्व** ; (कप्प) ।

णिज्जूह पुं [**दे. निर्यूह**] १ नीव्र, छदि, गृहाच्छादन, पटल; (दे ४, २८ ; स १०६) । २ गवाक्ष, गोख ; "इय जाव चिंतए मंती निज्जूहट्ठिओ" (धम्म ६ टी ; वव १) । ३ द्वार के पास का काष्ठ-विशेष ; (णाया १, १—पत्र १२; पण्ह १, १) । ४ द्वार, दरवाजा ; (सुर २, ८३) ।

णिज्जूहणया } स्त्री [**निर्यूहणा**] १ निस्सारण, बाहर निकालना ; (वव १) । २ परित्याग ; (ठा ४, २) । ३ विरचना, निर्माण ; (विसे ५५१) ।
णिज्जूहणा }

णिज्जोअ पुं [**दे**] १ प्रकर, राशि ; २ पुष्पों का अवकर ; (दे ४, ३३) ।

णिज्जोअ } पुं [**दे. निर्योग**] परिकर, सामग्री ; "पायणिज्जोगो" (ओघ ६६८ ; णाया १,१—पत्र ५४)।
णिज्जोग }

णिज्जोमि पुं [**दे**] रज्जू, रस्सी ; (दे ४, ३१) ।

णिज्झर अक [**क्षि**] क्षीण होना । णिज्झरइ ; (हे ४, २० ; षड्) । वकृ—**णिज्झरंत** ; (कुमा ६, १३) ।

णिज्झर वि [**दे**] जीर्ण, पुराना ; (दे ४, २६) ।

णिज्झर पुं [**निर्झर**] झरना, पहाड़ से गिरता पानी का प्रवाह ; (हे १, ६८ ; २, ६०) ।

णिज्झरण न [**निर्झरण**] ऊपर देखो ; (पउम ६४, ५२, सुर ६, ६४ ; सुपा ३५५) ।

णिज्झरणी स्त्री [**निर्झरिणी**] नदी, तरंगिणी ; (कुमा) ।

णिज्झा सक [**नि+ध्यै**] देखना, निरीक्षण करना । णिज्झाइ, णिज्झाअइ ; (हे ४, ६) । वकृ—**णिज्झाअंत, णिज्झाएमाण** ; (मा ४ ; आचा २, ३,१) । संकृ—**णिज्झाइऊण, णिज्झाइत्ता** ; (महा ; आचा) ।

णिज्झा सक [**निर्+ध्यै**] विशेष चिन्तन करना । संकृ—**णिज्झाइत्ता** ; (आचा) ।

णिज्झाइ वि [**निध्यायिन्**] देखने वाला ; (आचा) ।

णिज्झाइत्तु वि [**निध्यातृ**] देखने वाला, निरीक्षक ; (उत्त १६ ; सम १५) ।

णिज्झाइत्तु वि [**निर्ध्यातृ**] अतिशय चिन्तन करने वाला; (ठा ६) ।

णिज्झाइय वि [**निध्यात**] १ दृष्ट, विलोकित ; (स ३५२; धण ४५) । २ न. दर्शन, निरीक्षण ; (महा—पृष्ठ ५८) ।

णिज्झाडिय वि [**निर्ध्राटित**] विनाशित ; (उप ६४८ टी) ।

णिज्झाय वि [**दे**] निर्दय, दया-रहित ; (दे ४, ३७) ।

णिज्झाय वि [**निध्यात**] दृष्ट, विलोकित ; (सुर ६, १८८ ; सुपा ४४८)।

णिज्झूर वि [**दे**] जीर्ण, पुराना ; (दे ४, २६)।

णिज्झोड सक [**छिद्**] छेदना, काटना। णिज्झोडइ ; (हे ४, १२४)।

णिज्झोडण न [**छेदन**] छेदन, कर्तन ; (कुमा)।

णिज्झोसइत्तु वि [**निर्झोषयितृ**] क्षय करने वाला, कर्मों का नाश करने वाला ; (आचा)।

णिट्टंक वि [**दे**] १ टङ्क-च्छिन्न ; २ विषम, अ-समान ; (दे ४; ५०)।

णिट्टंकिय वि [**निष्टङ्कित**] निश्चित, अवधारित ; (सुपा २६०)।

णिट्टुअ अक [**क्षर्**] टपकना, चूना। णिट्टुअइ ; (हे ४, १७३)।

णिट्टुइअ वि [**क्षरित**] टपका हुआ ; (पाअ)।

णिट्टुह अक [**वि+गल्**] गल जाना, नष्ट होना। णिट्टुहइ ; (हे ४, १७५)।

णिट्ठ देखो **णिट्ठा**=नि+स्था। निट्ठइ ; (भवि)।

णिट्ठव } **णिट्ठव** } सक [**नि+स्थापय्**] १ समाप्त करना, पूर्ण करना। २ अन्त करना, खतम करना। ३ विशेष रूप से स्थापन करना, स्थिर करना। भूका—णिट्ठवंसु ; (भग २६, १)। संकृ—**णिट्ठविअ** ; (पिंग)। कृ—**णिट्ठवणिज्ज** ; (उप ५६७ टी)।

णिट्ठवण न [**निष्ठापन**] १ अन्त करना, समाप्ति। २ वि. नाश-कारक, खतम करने वाला ; (सुपा १६१; गउड)। ३ समाप्त करने वाला ; (जा ५)।

णिट्ठवय वि [**निष्ठापक**] समाप्त करने वाला ; (आव ६)।

णिट्ठविअ वि [**निष्ठापित**] १ समाप्त किया हुआ ; (पंचव २)। २ विनाशित ; (स ६, १)।

णिट्ठा अक [**नि+स्था**] खतम होना, समाप्त होना। णिट्ठाइ ; (विसे ६२७)।

णिट्ठा स्त्री [**निष्ठा**] १ अन्त, अवसान, समाप्ति ; (विसे २८३३ ; सुपा १३)। २ सद्भाव ; (आचू १)। °**भासि** वि [°**भाषिन्**] निष्ठा-पूर्वक बोलने वाला, निश्चय-पूर्वक भाषण करने वाला ; (आचा)।

णिट्ठाण न [**निष्ठान**] १ दही वगैरः व्यञ्जन ; (ठा ४, २; पण्ह २, ५)। २ समाप्ति ; (नि १)। °**कहा** स्त्री [°**कथा**] भक्त-कथा विशेष, दही वगैरः व्यञ्जन की बातचीत; (ठा ४, २)।

णिट्ठावण देखो **णिट्ठवण** ; (सुपा ३५७)।

णिट्ठिय वि [**निष्ठित**] १ समाप्त किया हुआ, पूर्ण किया हुआ; (उप १०३१ टी; कम्म ४, ७४)। २ नष्ट किया हुआ, विनाशित ; (सुपा ४४६)। ३ स्थिर ; (से ५, ७)। ४ निष्पन्न , सिद्ध ; (आचा २, १, ६)। ५ पुं. मोक्ष, मुक्ति ; (आचा)। °**ट्ठ** वि [°**ार्थ**] कृतकृत्य ; (पण्ण ३६)। °**ट्ठि** वि [°**ार्थिन्**] मुमुक्षु, मोक्ष का इच्छुक ; (आचा)।

णिट्ठिय वि [**नैष्ठिक**] निष्ठा-युक्त, निष्ठा वाला ; (पण्ह २, ३)।

णिट्ठीव पुं [**निष्ठीव**] थूक, मुँह का पानी; (रंभा)।

णिट्ठुभय वि [**निष्ठीवक**] थूकने वाला ; (पण्ह २, १ ; आप)।

णिट्ठुर } **णिट्ठुल** } वि [**निष्ठुर**] निष्ठुर, परुष, कठिन ; (प्राप्र ; हे १, २५४ ; पाअ ; गउड)।

णिट्ठुवण न [**निष्ठीवन**] १ थूक, खखार ; (वव १)। २ वि. थूकने वाला; (ठा ५, १)।

णिट्ठुह अक [**नि+स्तम्भ्**] निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना ; स्तब्ध होना। णिट्ठुहइ; (हे ४, ६७; षड्)।

णिट्ठुह वि [**दे**] स्तब्ध, निश्चेष्ट ; (दे ४, ३३)।

णिट्ठुहण न [**दे.निष्ठीवन**] थूक, मुँह का पानी, खखार ; (महा)।

णिट्ठुहावण वि [**निष्टम्भक**] निश्चेष्ट करने वाला, स्तब्ध करने वाला ; (कुमा)।

णिट्ठुहिअ न [**दे**] थूक, निष्ठीवन, खखार; (दे ४, ४१)।

णिड पुं [**दे**] पिशाच, राक्षस ; (दे ४, २५)।

णिडल } **णिडाल** } न [**ललाट**] भाल, ललाट ; (पि २६०; पउम १००, ५७ ; सुपा २८)।

णिड्ड न [**नीड**] पक्षि-गृह ; (पाअ)।

णिड्डहण न [**निर्दहन**] जला देना ; (उप ५६३ टी)।

णिड्डुह देखो **णिट्टुअ**। णिड्डुहइ ; (कुमा ; षड्)।

णिणाय पुं [**निनाद**] शब्द, आवाज, ध्वनि ; (णाया १, १ ; पउम २, १०३ ; से ६, ३०)।

णिण्ण वि [**निम्न**] १ नीचा, अधस्तन ; (उत्त १२ ; उव १०३१ टी) । २ क्रिवि. नीचे, अधः; (हे २, ४२)।

णिण्णक्खु क्रि [**निस्सारयति**] बाहर निकालता है ; "ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु" (आचा २,२,१)।

णिण्णगा स्त्री [**निम्नगा**] नदी, तरङ्गिणी ; (पण्ण १; पण्ह २, ४) ।

णिण्णट्ठ वि [**निर्नष्ट**] नाश-प्राप्त ; (सुर ६, ६२) ।

णिण्णय पुं [**निर्णय**] १ निश्चय, अवधारण ; (हे १, ६३)। २ फैसला ; (सुपा ६६) ।

णिण्णया देखो **णिण्णगा** ; (पाअ) ।

णिण्णार वि [**निर्नगर**] नगर से निर्गत ; (भग १५) ।

णिण्णाला स्त्री [**दे**] चञ्चु, चोच ; (दे ४, ३६) ।

णिण्णास सक [**निर्+नाशय्**] विनाश करना । वकृ— **निन्नासिंत** ; (सुपा ६५४) ।

णिण्णास पुं [**निर्णाश**] विनाश ; (भवि) ।

णिण्णासिय वि [**निर्णाशित**] विनाशित , (सुर ३, २३१ ; भवि) ।

णिण्णिद्द वि [**निर्निद्र**] निद्रा-रहित ; (गा ६५६) ।

णिण्णिमेस वि [**निर्निमेष**] १ निमेष-रहित , २ चेष्टा-रहित ; ३ अनुपयोगी ; (ठा ५, २) ।

णिण्णीअ वि [**निर्णीत**] निश्चित, नक्की किया हुआ ; (श्रा १२) ।

णिण्णुण्णअ वि [**निम्नोन्नत**] ऊँचा-नीचा, विषम ; (अभि २०६) ।

णिण्णेह वि [**निःस्नेह**] स्नेह-रहित ; (हे ४, ३६७ ; सुर ३, २२२ ; महा) ।

णिण्हइया स्त्री [**निह्नविका**] लिपि-विशेष ; (सम ३५) ।

णिण्हग, **णिण्हय**, **णिण्हव** पुं [**निह्नव**] १ सत्य का अपलाप करने वाला, मिथ्यावादी ; (ओघ ४० भा ; ठा ७ ; ओप) । २ अपलाप ; (सार्ध ४१) ।

णिण्हव सक [**नि+ह्नु**] अपलाप करना । णिण्हवइ ; (विसे २२६६ ; हे ४, २३६) । कर्म—णिण्हवीअदि (शौ) ; (नाट—रत्ना ३६) । वकृ—**णिण्हवंत**, **णिण्हवेमाण** ; (उप २११ टी ; सुर ३, २०१) ।

णिण्हवग वि [**निह्नावक**] अपलाप करने वाला , (ओघ ४८ भा) ।

णिण्हवण न [**निह्नवन**] अपलाप; (विपा १, २ ; उव) ।

णिण्हविद देखो **णिण्हुविद**; (नाट—शकु १२६) ।

णिण्हुय वि [**निह्नुत**] अपलपित ; (सुपा २६८) ।

णिण्हुव देखो **णिण्हव**=नि+ह्नु । कर्म—णिण्हुविज्जंति; (पि ३३०) ।

णिण्हुविद (शौ) वि [**नि+ह्नुत**] अपलपित, (पि ३३०)।

णितिय देखो **णिच्च**, (आचा ; ठा १०) ।

णितुडिअ वि [**नितुडित**] टूटा हुआ, छिन्न ; (अच्चु५४) ।

णित्त देखो **णेत्त** ; (पाअ ; सुपा २६१ , लहुअ १४) ।

णित्तम वि [**निस्तमस्**] १ अन्धकार-रहित ; २ अज्ञान-रहित ; (अजि ८) ।

णित्तल वि [**दे**] अ-निवृत्त; (भग १५) ।

णित्ति (अप) देखो **णीइ** ; (भवि) ।

णित्तिंस वि [**निस्त्रिंश**] निर्दय, करुणा-हीन ; (सुपा ३१५)।

णित्तिरडि वि [**दे**] निरन्तर, अ-व्यवहित; (दे ४, ४०)।

णित्तिरडिअ वि [**दे**] त्रुटित, टूटा हुआ ; (दे ४, ४१) ।

णित्तुप्प वि [**दे**] स्नेह-रहित, घृत आदि से वर्जित, (बृह १)।

णित्तुल वि [**निस्तुल**] १ निरुपम, असाधारण ; (उप पृ ५३) । २ क्रिवि. असाधारण रूप से ; "अण्णहा नित्तुलं मरसि" (सुपा ३४५) ।

णित्तुस वि [**निस्तुष**] तुष-रहित, विशुद्ध ; (पण्ह २, ४ ; उप १७६ टी) ।

णित्तेय वि [**निस्तेजस्**] तेज-रहित , (णाया १,१) ।

णित्थणण न [**निस्तनन**] विजय-सूचक ध्वनि ; (सुर २, २३३) ।

णित्थर सक [**निर्+तॄ**] पार करना, पार उतरना । णित्थरेइ ; (सुपा ४४६) । "णित्थरति खलु कायरावि पायनिज्जामयगुणेण महण्णवं" (स १६३) । कवकृ—**णित्थरिज्जंत** ; (राज) । कृ—**णित्थरियव्व** ; (णाया १, ३ ; सुपा १२६) ।

णित्थरण न [**निस्तरण**] पार-गमन, पार-प्राप्ति ; (ठा ४, ४ , उप १३४ टी) ।

णित्थरिअ देखो **णित्थिण्ण**; (उप १३४ टी) ।

णित्थाण वि [**निःस्थान**] स्थान-रहित, स्थान-भ्रष्ट ; (णाया १, १८) ।

णित्थाम वि [**निःस्थामन्**] निर्बल, मन्द; (पाअ, गउड; सुपा ४८६) ।

णित्थार सक [**निर्+तारय्**] १ पार उतारना, तारना । २ बचाना, छुटकारा देना । णित्थारेसु ; (काल) ।

णित्थार पुं [निस्तार] १ छुटकारा, मुक्ति; २ बचाव, रक्षा; ३ उद्धार; (गाया १, ९ टी—पत्र १६६ ; सुर २, ५१; ७, २०१ ; सुपा २६६)।

णित्थारग वि [निस्तारक] पार जाने वाला, पार उतरने वाला ; (स १८३)।

णित्थारणा स्त्री [निस्तारणा] पार-प्रापण, पार पहुँचाना; (जं ३)।

णित्थारिय वि [निस्तारित] बचाया हुआ, रक्षित, उद्धृत ; (भग ; सुपा ४४६)।

णित्थिण्ण, णित्थिन्न वि [निस्तीर्ण] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त ; "णित्थिण्णो समुद्दं" (स ३६७)। २ जिसको पार किया हो वह, "णित्थिन्ना आवया गई" (सुर ८, ८६)। "नित्थिण्णभवसमुद्दो" (स १३६)।

णिदंस सक [नि+दर्शय्] १ उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना । २ दिखाना । णिदंसेइ; (पिंग)। वकृ—णिदंस- (सुपा ८६)।

णिदंसण न [निदर्शन] १ उदाहरण, दृष्टान्त; (अभि २०३)। २ दिखाना ; (ठा १०)।

णिदंसिअ वि [निदर्शित] प्रदर्शित, दिखाया हुआ ; "एवं विचिंतिऊणं निदंसिओ नियकरो मए तीए" (सुर ६, ८२ ; उप ९९७ ; सार्ध ४०)।

णिदरिसण देखो णिदंसण ; (उव ; उप ३८४)।

णिदा स्त्री [दे] १ वेदना-विशेष, ज्ञान-युक्त वेदना ; (भग १९, ५)। २ जानते हुए भी की जाती प्राणि-हिंसा ; (पिंड)।

णिदाण देखो णिआण ; (विपा १, १; अंत १५; नाट—वेणी ३३)।

णिदाया देखो णिदा ; (पण्ण ३५)।

णिदाह पुं [निदाघ] १ घर्म, घाम, उष्ण । २ ग्रीष्म-काल, गरमी की मौसिम । ३ जेष्ठ मास ; (आव ५)।

णिदाह पुं [निदाह] असाधारण दाह; (आव ५)।

णिदेसिअ वि [निदेशित] १ प्रदर्शित ; २ उक्त, कथित; (पउम ५, १४५)।

णिद्दंझाण न [निद्राध्यान] निद्रा में होता ध्यान, दुर्ध्यान-विशेष; (आउ)।

णिद्दंद वि [निर्द्वन्द्व] द्वन्द्व-रहित, क्लेश-वर्जित ; (सुपा ४५५)।

णिद्दंभ वि [निर्दम्भ] दम्भ-रहित, कपट-रहित ; (सुपा १४७)।

णिद्दडी (अप) देखो णिद्दा=निद्रा ; (पि५६६)।

णिद्दड्ढ वि [निर्दग्ध] १ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ ; (सुर १४, २६ ; अंत १५)। २ पुं. नृप-विशेष; (पउम ३२, २२)। ३ रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६)। °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष, एक नरक-प्रदेश ; (ठा ६)। °वत्त पुं [°वर्त] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)। °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] नरक-प्रदेश विशेष ; (ठा ६)।

णिद्दय वि [निर्दय] दया-हीन, करुणा-रहित, निष्ठुर ; (पण्ह १, १ ; गउड)।

णिद्दलण न [निर्दलन] १ मर्दन, विदारण; (आचा)। २ वि. मर्दन करने वाला ; (वज्जा ४२)।

णिद्दलिअ वि [निर्दलित] मर्दित, विदारित ; (पाअ ; सुर ५, २२२ ; सार्ध ७९)।

णिद्दह सक [निर्+दह्] जला देना, भस्म करना । निद्दहइ ; (महा ; उव)। णिद्दहेज्जा ; (पि २२२)।

णिद्दा अक [नि+द्रा] निद्रा लेना, नींद करना । णिद्दाइ; (षड्)। वकृ—णिद्दाअंत ; (से १, ५६)।

णिद्दा स्त्री [निद्रा] १ निद्रा, नींद ; (स्वप्न ५६ ; कप्पू)। २ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें एकाध आवाज देने पर ही आदमी जाग उठे; (कम्म १, ११)। °अंत वि [°वत्] निद्रा-युक्त, निद्रित ; (से १, ५६)। °करी स्त्री [°करी] लता-विशेष; (दे ७, ३४)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें बड़ी कठिनाई से आदमी उठाया जा सके ; (कम्म १, ११ ; सम १५)। °ल, °लु वि [°वत्] निद्रा वाला; (संक्षि२०; पि ५९५; प्राप्र)। °वअ वि [°प्रद] निद्रा देने वाला ; (से ६, ४३)।

णिद्दाअ वि [निद्रात] जो नींद में हो ; (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [निर्दाव] अग्नि-रहित ; (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [निर्दाय] दाय-रहित, पैतृक धन से वर्जित ; (से १, ५६)।

णिद्दाइअ वि [निद्रित] निद्रा-युक्त ; (महा)।

णिद्दाणी स्त्री [निद्राणी] विद्यादेवी-विशेष; (पउम ७,१४४)।

णिद्दाया देखो णिदा; (पण्ण ३५)।

णिद्दारिअ वि [निर्दारित] खण्डित, विदारित ; (से ५, ८३ ; १३, ६५)।

णिद्दाव वि [निर्दाव] १ दावानल-रहित, २ जंगल-रहित ; (स ६, ४३)।

णिद्दिट्ठ वि [निर्दिष्ट] १ कथित, उक्त ; (भग)। २ प्रतिपादित, निरूपित ; (पचा ३, दस)।

णिद्दिट्ठु वि [निर्देष्टृ] निर्देश करने वाला; (विसे १५०४; विक्र ६४)।

णिद्दिस सक [निर्+दिश्] १ उच्चारण करना, कथन करना। २ प्रतिपादन करना, निरूपण करना। निद्दिसइ ; (विसे १५२६)। कर्म—णिद्दिसइ ; (नाट—मालवि ५३)। हेकृ—निद्दट्ठुं, (पि ५७६)। कृ—**णिद्दिस्स**, **णिद्दस्स** , (विसे १५२३)।

णिद्दुक्ख वि [निर्दुःख] दुःख-रहित, सुखी; (सुपा ५३७)।

णिद्दर पुं [दे. नेत्तर] देश-विशेष, (इक)।

णिद्देस पुं [निर्देश] १ लिङ्ग या अर्थ-मात्र का कथन ; (ठा ८—पत्र ४२७)। २ विशेष का अभिधान ; " अविसेसियमुद्देसो विसेसिओ होइ निद्देसो " (विसे १४६७ ; १५०३)। ३ निश्चय-पूर्वक कथन ; (विसे १५२६)। ४ प्रतिपादन, निरूपण ; (उत १ ; णदि)। ५ आज्ञा, हुकुम ; (पाअ , दस ६, २)। ६ वि. जिसको देश-निकाले की आज्ञा हुई हो वह ; (उत्त ४, ८२)।

णिद्देसग } **णिद्देसय** } वि [निर्देशक] निर्देश करने वाला ; (विसे १५०८ ; १५००)।

णिद्दोत्थ न [निर्दौःस्थ्य] १ दुःस्थता का अभाव; (वव ४)। २ वि. स्वस्थ, दुःस्थता-रहित ; (वव ७)।

णिद्दोस वि [निर्दोष] दोष-रहित, दूषण-वर्जित, विशुद्ध ; (गउड ; सुर १, ७३)।

णिद्ध न [स्निग्ध] स्नेह, रस-विशेष ; (ठा १ ; अणु)। २ स्नेह-युक्त, चिकना ; (हे २, १०६ ; उव ; षड्)। ३ कान्ति युक्त, तेजस्वी ; (बृह ३)।

णिद्धंत वि [निध्मात] अग्नि-संयोग से विशोधित, मल-रहित ; (पण्ह १, ४ ; औप)।

णिद्धंधस वि [दे] १ निर्दय, निष्ठुर ; (दे ४, ३७ ; ओघ ४४५ ; पाअ ; पुप्फ ४५४ ; सद्धि २६ ; सुपा २४५ ; श्रा ३६)। २ निर्लज्ज, वेशरम ; (निचू १२८)।

णिद्धण वि [निर्धन] धन रहित, अकिंचन ; (हे २, ६० ; गाया १, १८ ; दे ४, ५ ; उप ७६८ टी ; महा)।

णिद्धण्ण वि [निर्धान्य] धान्य-रहित ; (तंदु)।

णिद्धम वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहने वाला ; (दे ४, ३८)।

णिद्धमण न [दे] खाल, मोरी, पानी जाने का रास्ता ; (दे ४, ३६ ; उर २, १० , ठा ५, १ ; आवम; तंदु ; उत्त ; णाया १, २)।

णिद्धमण न [निध्मान] १ तिरस्कार, अवहेलना ; (उप पृ ३४६)। २ पुं. यक्ष-विशेष ; (आव ४)।

णिद्धमाय वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहने वाला ; (दे ४, ३८)।

णिद्धम्म वि [दे] एकमुख-यायी, एक ही तरफ जाने वाला; (दे ४, ३५)।

णिद्धम्म वि [निर्धर्मन्] धर्म-रहित, अधर्मी ; (श्रा २७)।

णिद्धय वि [दे] देखो **णिद्धम** ; (दे ४, ३८)।

णिद्धाइऊण देखो **णिद्धाव** ।

णिद्धाडण न [निर्धाटन] निस्सारण, निष्कासन, वाहर निकालना ; (पण्ह १, १)।

णिद्धाडाविय वि [निर्धाटित] अन्य द्वारा वाहर निकलवाया हुआ, अन्य द्वारा निस्सारित; (महा)।

णिद्धाडिय वि [निर्धाटित] निस्सारित, निष्कासित ; (पाअ ; भवि)।

णिद्धारण न [निर्धारण] १ गुण या जाति आदि को लेकर समुदाय में एक भाग का पृथक्करण ; २ निश्चय, अवधारण ; (विसे ११६८)।

णिद्धाव सक [निर्+धाव्] दौड़ना। संकृ—**णिद्धाइऊण**;(महा)।

णिद्धाविय वि [निर्धावित] दौड़ा हुआ, धावित ; (महा)।

णिद्धुण सक [निर्+धू] १ विनाश करना। २ दूर करना। संकृ—**निद्धुणे**, **णिद्धूय**; (दस ७, ५७ ; सूअ १, ५)।

णिद्धुणिय } **णिद्धुय** } वि [निर्धूत] १ विनाशित,नष्ट किया हुआ; २ अपनीत; (सुपा ५६६; औप)।

णिद्धूम वि [निर्धूम] १ धूम-रहित ; (कप्प ; पउम ५३, १०)। २ एक तरह का अपलक्षण ; (वव २)।

णिद्धूय देखो **णिद्धुय**; (जीव ३)।

णिद्धोअ वि [निर्धौत] १ धोया हुआ ; (गा ६३६; से १४, १६; स १६१)। २ निर्मल, स्वच्छ, "निद्धोयउदयकंखिर—" (वज्जा १५८)।

णिद्धोभास वि [स्निग्धावभास] चमकीला, स्निग्धपन से चमकता; (णाया १ १—पत्र ४)।

णिग्घण न [निघ्न] विनाश, मौत, (नाट—मृच्छ २५२)।

णिधत्त न [**निधत्त**] १ कर्मों का एक तरह का अवस्थान; बंधे हुए कर्मों का तप्त सूची-समूह की तरह अवस्थान ; २ वि. निविड़ भाव को प्राप्त कर्म पुद्गल, (ठा ४,२) ।
णिधत्ति स्त्री [**निधत्ति**] करण-विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल निविड़रूप से व्यवस्थापित होता है ; (पंच ५) ।
णिधम्म देखो **णिद्धम्म** = निर्धर्मन् ; (ओघ ३७ भा) ।
णिधाण देखो **णिहाण**, (नाट—महावीर १२०) ।
णिधूय देखो **णिद्धुण** ।
णिपडिय वि [**निपतित**] नीचे गिरा हुआ ; (सण) ।
णिपाइ वि [**निपातिन्**] १ नीचे गिरने वाला । २ सामने गिरने वाला; (सूत्र १, ६) ।
णिप्पअंप देखो **णिप्पकंप** ; (से ६,७८) ।
णिप्पएस वि [**निष्प्रदेश**] १ प्रदेश-रहित । २ पुं. परमाणु; (विसे) ।
णिप्पंक वि [**निष्पङ्क**] कर्दम-रहित ; (सम १३७ ; भग) ।
णिप्पंकिय वि [**निष्पङ्कित**] पङ्क-रहित; (भवि) ।
णिप्पंख सक [**निर्+पक्षय्**] पक्ष-रहित करना, पंख तोड़ना । णिप्पंखेंति ; (विपा १,८) ।
णिप्पंद त्रि [**निष्पन्द**] चलन-रहित, स्थिर ; (से २,४२) ।
णिप्पकंप वि [**निष्प्रकम्प**] कम्प-रहित, स्थिर ; (सम १०६ ; पण्ह २,४) ।
णिप्पक्ख वि [**निष्पक्ष**] पक्ष-रहित ; (गउड) ।
णिप्पगल वि [**निष्प्रगल**] टपकने वाला, झरने वाला, चूने वाला; (ओघ ३५; ओघ ३४ भा) ।
णिप्पच्चवाय वि [**निष्प्रत्यवाय**] १ प्रत्यवाय-रहित निर्विघ्न; (ओघ २४ टी) । २ निर्दोष, विशुद्ध, शोभित, "णिप्पच्चवाय-चरणा कज्जं साहंति" (सार्ध ११७) ।
णिप्पच्छिम वि [**निष्पश्चिम**] १ अन्तिम, अन्त का; (से १२,२१) । २ परिशिष्ट, अवशिष्ट, बाकी का, "णिप्पच्छिमाइं असई दुक्खालोआइं महुअपुप्फाइं" (गा १०४) ।
णिप्पट्ठ वि [**दे**] अधिक ; (दे ४,३१) ।
णिप्पट्ठ वि [**निःस्पष्ट**] अस्पष्ट, अव्यक्त । °पसिणवागरण वि [°**प्रश्नव्याकरण**] निरुत्तर किया हुआ; (भग १५; णाया १,५ ; उवा) ।
णिप्पट्ठ वि [**निःस्पृष्ट**] नहीं छूआ हुआ । °पसिणवागरण वि [°**प्रश्नव्याकरण**] निरुत्तर किया हुआ; (भग १५) ।
णिप्पडिकम्म वि [**निष्प्रतिकर्मन्**] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, मलिन ; (सम ५७; कुपा ४८५) ।
णिप्पडियार वि [**निष्प्रतिकार**] निरुपाय, प्रतिकार-वर्जित; (पण्ह २,४) ।
णिप्पणिअ वि [**दे**] जल-धौत, पानी से धोया हुआ; (षड्) ।
णिप्पण्ण देखो **णिप्फण्ण**; (गा ६८६) ।
णिप्पण्ण वि [**निष्प्रज्ञ**] बुद्धि-रहित, प्रज्ञा-शून्य ; (उप १७६ टी) ।
णिप्पत्त वि [**निष्पत्र**] पत्र-रहित ; (गा ८८७ ; वव १) ।
णिप्पत्ति } देखो **णिप्फत्ति**, (पचा १८; संक्षि ६) ।
णिप्पद्दि }
णिप्पभ वि [**निष्प्रभ**] निस्तेज, फीका; (महा) ।
णिप्परिग्गह वि [**निष्परिग्रह**] परिग्रह-रहित ; (उत्त १४) ।
णिप्पडिवयण वि [**निष्प्रतिवचन**] निरुत्तर, उत्तर देने में असमर्थ, (सम ६०) ।
णिप्पसर वि [**निष्प्रसर**] प्रसर-रहित, जिसका फैलाव न हो; (पि ३०५) ।
णिप्पह देखो **णिप्पभ** ; (से १०,१२; हे २,५३) ।
णिप्पाण वि [**निष्प्राण**] प्राण-रहित, निर्जीव; (णाया १,२)।
णिप्पाव देखो **णिप्फाव** ; (पि ३०५) ।
णिप्पिच्छ वि [**दे**] १ ऋजु, सरल ; २ दृढ़, मजबूत; (दे ४, ४६) ।
णिप्पिट्ठ वि [**निष्पिष्ट**] पीसा हुआ; (दे ८,२० ; सण) ।
णिप्पिवास वि [**निष्पिपास**] पिपासा-रहित, तृष्णा-वर्जित, निःस्पृह ; (पण्ह १,१; णाया १,१; सुर १,१३) ।
णिप्पिह वि [**निःस्पृह**] स्पृहा-रहित, निर्मम; (हे २,२३, उप ३२० टी) ।
णिप्पीडिअ वि [**निष्पीडित**] दबाया हुआ, (से ५, २५)।
णिप्पीलण न [**निष्पीडन**] दबाव, दबाना; (आचा) ।
णिप्पीलिय देखो **णिप्पीडिअ** । २ निचोड़ा हुआ, "निप्पीलियाइं पोत्ताइं" (स ३३२) ।
णिप्पुंसण न [**निष्पुंसन**] १ पोंछना, मार्जन ; २ अभिमर्दन ; (हे २, ५३) ।
णिप्पुन्नग वि [**निष्पुण्यक**] १ पुण्य-रहित । २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक कुलपुत्र ; (सुपा ५४५) ।
णिप्पुलाय पुं [**निष्पुलाक**] आगामी चौबिसी में होने वाले एक स्वनाम-ख्यात जिन-देव , (सम १५३) ।
णिप्फंद देखो **णिप्पंद** ; (हे २, २११ ; णाया १, २ , सुर ३, १७२) ।
णिप्फंस वि [**दे**] निस्त्रिंश, निर्दय ; (षड्) ।

णिप्फज्ज अक [निर्+पद्] नीपजना, सिद्ध होना । णिप्फज्जइ ; (स ६१६)। वकृ—**णिप्फज्जमाण** ; (पण्ह १, ४)।

णिप्फडिअ वि [निस्फटित] १ विशीर्ण ; २ जिसका मिजाज ठिकाने पर न हो ; ३ अङ्कुश-रहित ; (उप १२८ टी)।

णिप्फण्ण वि [निष्पन्न] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध ; (से २,१२ ; महा)।

णिप्फत्ति स्त्री [निष्पत्ति] निष्पादन, सिद्धि ; (उव ; उप २८० टी ; सार्ध १०६)।

णिप्फन्न देखो **णिप्फण्ण** ; (कप्प ; णाया १, १६)।

णिप्फरिस वि [दे] निर्दय, दया-हीन ; (दे ४, ३७)।

णिप्फल वि [निष्फल] फल-रहित, निरर्थक ; (से १४, २६ ; गा १३६)।

णिप्फाअ देखो **णिप्फाव** ; (प्राप्र)।

णिप्फाइऊण देखो **णिप्फाय** ।

णिप्फाइय वि [निष्पादित] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ ; (विसे ७ टी; उप २११ टी ; महा)।

णिप्फाय सक [निर्+पादय्] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना । संकृ—**णिप्फाइऊण** ; (पंचा ७)।

णिप्फायग वि [निष्पादक] नीपजाने वाला, बनाने वाला, सिद्ध करने वाला ; (विसे ४८३ ; ठा ६ ; उप ८२८)।

णिप्फायण न [निष्पादन] नीपजाना, निर्माण, कृति ; (आव ४)।

णिप्फाव पुं [निष्पाव] धान्य-विशेष, वल्ल ; (हे २, ५३; पण्ण १ ; ठा ५, ३ ; श्रा १८)।

णिप्फिड अक [नि+स्फिट्] बाहर निकलना । वकृ—**णिप्फिडंत** ; (स ५७४)।

णिप्फिडिअ वि [निस्फिटित] निर्गत, बाहर निकला हुआ ; (पउम ६, २२७ ; ८०, ६०)।

णिप्फुर पुं [निस्फुर] प्रभा, तेज ; (गउड)।

णिप्फेड पुं [निस्फेट] निर्गमन, बाहर निकलना; (उप पृ २५२)।

णिप्फेडिय वि [निस्फेटित] १ निस्सारित, निष्कासित ; (सुम २, २)। २ भगाया हुआ, नसाया हुआ ; (पुप्फ १२५)। ३ अपहृत, छीना हुआ ; (ठा ३, ४)।

णिप्फेस पुं [दे] शब्द-निर्गम, आवाज निकलना ; (दे ४, २६)।

णिप्फेस पुं [निष्पेष] १ पेषण, पीसना ; २ संघर्ष ; (२, ५३)।

णिबंध सक [नि + बन्ध] १ बाँधना । २ करना । निबंधइ; (भग)।

णिबंध पुंन [निबन्ध] १ संबन्ध, संयोग ; (विसे ६६८)। २ आग्रह, हठ ; (महा)। " णिबन्धाणि" (पि ३५८)।

णिबंधण न [निबन्धन] कारण, प्रयोजन, निमित्त ; (पाम; प्रासु ६६)।

णिबद्ध वि [निबद्ध] १ बँधा हुआ ; (महा)। २ संयुक्त, संबद्ध; (से ६, ४४)।

णिबिड वि [निबिड] सान्द्र, घना, गाढ ; (गउड ; कुमा)।

णिबिडिय वि [निबिडित] निबिड किया हुआ ; (गउड)।

णिबुक्क [दे] देखो **णिब्बुक्क** ; (पण्ह, १, ३—पत्र ४६)।

णिबुड्ड अक [नि+मस्ज्] निमज्जन करना, डूबना । वकृ—**णिबुड्डिज्जंत, निबुड्डमाण**; (अच्चु ६३ ; उत्त)।

णिबुड्ड वि [निमग्न] डूबा हुआ, निमग्न ; (गा ३७ ; सुर ३, ५१ ; ४, ८०)।

णिबुड्डण न [निमज्जन] डूबना, निमज्जन ; (पउम १०, ४३)।

णिबोल देखो **णिबुड्ड**=नि+मस्ज् । वकृ—**णिबोलिज्जमाण**; (राज)।

णिबोह पुं [निबोध] १ प्रकृष्ट बोध, उत्तम ज्ञान ; २ अनेक प्रकार का बोध ; (विसे २१८७)।

णिबोहण न [निबोधन] प्रबोध, समझाना ; (पउम १०२, ६२)।

णिब्बंध पुं [निर्बन्ध] आग्रह ; (गा ६७५ ; महा ; सुर ३, ८)।

णिब्बंधण न [निर्बन्धन] निबन्धन, हेतु, कारण ; " सारीरियखेयनिब्बंधणं धणं " (काल)।

णिब्बल वि [निर्बल] बल-रहित, दुर्बल ; (आचा)।

णिब्बहिं अ [निर्बहिस्] अत्यन्त बाहर; (ठा ६—पत्र ३५३)।

णिब्बाहिर वि [निर्बाह्य] बाहर का, बाहर गया हुआ; " संजमनिब्बाहिरा जाया " (उव)।

णिब्बुक्क वि [दे] १ निर्मूल, मूल-रहित । २ क्रिवि. मूल से; " णिब्बुक्कछिण्णधय—" (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

णिब्बुड्ड देखो **णिबुड्ड**= निमग्न ; (स २६० ; गउड)।

णिब्भंछण देखो **णिब्भच्छण** ; (उव १०३)।

णिब्भंजण न [दे] पक्वान्न के पकाने पर जो शेष घृत रहता है वह ; (पभा ३३) ।
णिब्भंत वि [निर्भ्रान्त] निःसंदेह, संशय-रहित ; (ति१४)।
णिब्भग्ग न [दे] उद्यान, बगीचा ; (दे ४, ३४) ।
णिब्भग्ग वि [निर्भाग्य] भाग्य-रहित, कम-नसीब ; (उप ७२८ टी ; सुपा ३८५) ।
णिब्भच्छ सक [निर्+भर्त्स्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना, आक्रोश-पूर्वक अपमान करना । णिब्भच्छेइ, णिब्भच्छेज्जा ; (णाया १, १८ ; उवा) । संकृ—**णिब्भच्छिअ** ; (नाट—मालती १७१) ।
णिब्भच्छण न [निर्भर्त्सन] तिरस्कार, अपमान, परुष वचन से अवहेलना ; (पराह १, ३ ; गउड) ।
णिब्भच्छणा स्त्री [निर्भर्त्सना] ऊपर देखो; (भग १५ ; णाया १, १६) ।
णिब्भच्छिअ वि [निर्भर्त्सित] अपमानित, अवहेलित ; (गा ८६८ ; सुपा ४०७) ।
णिब्भय वि [निर्भय] भय-रहित, निडर ; (णाया १, ४ ; महा) ।
णिब्भर सक [निर्+भृ] भरना, पूर्ण करना । कवकृ—**णिब्भरंत** ; (से १५, ७४) ।
णिब्भर वि [निर्भर] १ पूर्ण, भरपूर ; (से१०, १७) । २ व्यापक, फैलने वाला ; (कुमा) । ३ क्रिवि. पूर्ण रूप से ; "मेघो य णिब्भरं वरिसइ" (आवम) ।
णिब्भिंद सक [निर्+भिद्] तोड़ना, विदारण करना । कवकृ—**णिब्भिज्जंत, णिब्भिज्जमाण** ; (से १४, २६ ; भग १८, २ ; जीव ३) ।
णिब्भिच्च वि [नर्भीक] भय-रहित, निडर ; (सुपा १४३ ; २४६ ; २७५) ।
णिब्भिज्जंत, **णिब्भिज्जमाण** देखो **णिब्भिंद** ।
णिब्भिट्ट वि [दे] आक्रान्त ; (भवि) ।
णिब्भिण्ण वि [निर्भिन्न] १ विदारित, तोड़ा हुआ ; (पाअ) । २ विद्ध; (से ५, ३४) ।
णिब्भीअ वि [निर्भीक] भय-रहित ; (से १३, ७०) ।
णिब्भुग्ग वि [दे] भग्न, खण्डित ; (दे ४, ३२) ।
णिब्भेय पुं [निर्भेद] भेदन, विदारण ; (सुपा ३२७) ।
णिब्भेयण न [निर्भेदन] ऊपर देखो ; (सुर २, ६६) ।
णिभ देखो **णिह**=निभ ; (उव ; जं ३) ।
णिभंग पुं [निभङ्ग] भञ्जन, खण्डन, त्रोटन ; (राज)।
णिभाल सक [नि+भालय्] देखना, निरीक्षण करना । णिभालेहि ; (आवम) । वकृ—**णिभालयंत**; (उपपृ ५३)। कवकृ—**णिभालिज्जंत** ; (उप ६८६ टी) ।
णिभालिय वि [निभालित] दृष्ट, निरीक्षित; (उपपृ ५८) ।
णिभिअ, **णिभुअ** देखो **णिहुअ** ; (पराह २, ३ ; गा ८००) ।
णिमेल सक [निर्+मेलय्] बाहर करना । कवकृ—**णिमेल्लंत** ; (पराह १,३—पत्र ४५) ।
णिमेलण न [दे] गृह, घर, स्थान ; (कप्प) ।
णिम सक [नि+अस्] स्थापन करना । णिमइ ; (हे४, १९९ ; षड्) । णिमेइ ; (पि ११८) । वकृ—**णिमेंत** ; (से १, ४१) ।
णिमंत सक [नि+मन्त्रय्] निमन्त्रण देना, न्यौता देना । णिमंतेइ ; (महा) । वकृ—**णिमंतेमाण** ; (आचा २, २, ३) । संकृ—**णिमंतिऊण** ; (महा) ।
णिमंतण न [निमन्त्रण] निमन्त्रण, न्यौता ; (उपपृ११३)।
णिमंतणा स्त्री [निमन्त्रणा] ऊपर देखो ; (पंचा १२) ।
णिमंतिय वि [निमन्त्रित] जिसको न्यौता दिया गया हो वह ; (महा) ।
णिमग्ग वि [निमग्न] डूबा हुआ ; (पउम १०६, ४ ; औप)। °**जला** स्त्री [°जला] नदी-विशेष ; (जं ३) ।
णिमज्ज अक [नि+मस्ज्] डूबना, निमज्जन करना । णिमज्जइ ; (पि ११८) । वकृ—**णिमज्जंत** ; (गा ६०६ ; सुपा ६४) ।
णिमज्जग वि [निमज्जक] १ निमज्जन करने वाला । पुं. वानप्रस्थाश्रमी तापस-विशेष, जो स्नान के लिए थोड़े समय तक जलाशय में निमग्न रहते हैं ; (औप) ।
णिमज्जण न [निमज्जन] डूबना, जल-प्रवेश ; (सुपा ३५४) ।
णिमाणिअ देखो **णिम्माणिअ**=निर्मानित ; (भवि) ।
णिमिअ वि [न्यस्त]स्थापित, निहित ; (कुमा ; से १,४२; स ६ ; ७६०; सण) ।
णिमिअ वि [दे] आघ्रात, सूँघा हुआ ; (षड्) ।
णिमिण देखो **णिम्माण**=निर्माण; (कम्म १, २५) ।
णिमित्त न [निमित्त] १ कारण, हेतु ; (प्रासू १०४) । २ कारण-विशेष, सहकारि-कारण ; (सुअ २, २) । ३ शास्त्र-विशेष, भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र ; (ओव १६ भा;

ठा ८)। ४ अतीन्द्रिय ज्ञान में कारण-भूत पदार्थ; (ठा ८)। ५ जैन साधुओं को भिक्षा का एक दोष; (ठा ३, ४)। °पिंड पु [°पिण्ड] भविष्य आदि बतला कर प्राप्त की हुई भिक्षा; (आचा २, १, ६)।

णिमित्तिअ देखो **णेमित्तिअ**; (सुपा ४०२)।

णिमिल्ल अक [नि+मील्] आँख मूँदना, आँख मींचना। णिमिल्लइ; (हे ४, २३२)।

णिमिल्ल वि [निमीलित] जिसने नेत्र बंद किया हो, मुद्रित-नेत्र; (से ६, ६१; ११, ५०)।

णिमिल्लण देखो **णिमीलण**; (राज)।

णिमिस पुं [निमिष] नेत्र-संकोच, अक्षि-मीलन; (गा ३८५; सुपा २१६; गउड)।

णिमीलण न [निमीलन] अक्षि-संकोच; (गा ३६७; सूअ १, ५, १, १२ टी)।

णिमीलिअ वि [निमीलित] मुद्रित-(नेत्र), (गा १२३; से ६, ८६; महा)।

णिमीस न [निमिश्र] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

णिमे सक [नि+मा] स्थापन करना। णिमेसि; (गउड)।

णिमेण न [दे] स्थान, जगह; (दे ४, ३७)।

णिमेल स्त्रीन [दे] दन्त-मांस; (दे ४, ३०)। स्त्री—°ला; (दे ४, ३०)।

णिमेस पुं [निमेष] निमीलन, अक्षि-संकोच; (श्रा १६; उव)।

णिमेसि देखो **णिमे**।

णिमेसि वि [निमेषिन्] आँख मूँदने वाला; (सुपा ४४)।

णिम्म सक [निर्+मा] बनाना, निर्माण करना। णिम्मइ; (षड्)। णिम्मेइ, (धम्म १२ टी)। कवकृ—**णिम्माअंत**; (नाट—मालती ५४)।

णिम्मइअ वि [निर्मित] रचित, कृत; (गा ५००; ६०० अ)।

णिम्मंथण न [निर्मथन] १ विनाश। २ वि. विनाशक; "तह य पयट्टसु सिग्वं अणत्थनिम्मथणं तित्थं" (सुपा ७१)।

णिम्मंस वि [निर्मांस] मांस-रहित, शुष्क, (णाया १, १; भग)।

णिम्मंसा स्त्री [दे] देवी-विशेष, चामुण्डा; (दे ४,३५)।

णिम्मंसु वि [दे. निःश्मश्रु] तरुण, जवान, युवा; (दे ४, ३२)।

णिम्मक्खिअ देखो **णिम्मच्छिअ**=निर्मक्षिक; (नाट)।

णिम्मच्छ सक [नि+म्रक्ष्] विलेपन करना। णिम्मच्छइ; (भवि)।

णिम्मच्छण न [निम्रक्षण] विलेपन; (भवि)।

णिम्मच्छर वि [निर्मात्सर्य] मात्सर्य-रहित, ईर्ष्या-शून्य; (उप पृ ८४)।

णिम्मच्छिअ वि [निम्रक्षित] विलिप्त; (भवि)।

णिम्मच्छिअ न [निर्मक्षिक] १ मक्षिका का अभाव। २ विजन, निर्जनता; (अभि ६८)।

णिम्मज्जाय वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित; (दे १, १३३)।

णिम्मज्जिय वि [निर्माजित] उपलिप्त; (स ७५)।

णिम्मणुय वि [निर्मनुज] मनुष्य-रहित; (सण)।

णिम्मद्दग वि [निर्मर्दक] १ निरन्तर मर्दन करने वाला। २ पुं. चोरों की एक जाति; (पण्ह १, ३)।

णिम्मद्दिय वि [निर्मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो; (पण्ह १, ३)।

णिम्मम वि [निर्मम] १ ममता-रहित, निःस्पृह; (अच्चु ६६; सुपा १४०)। २ पुं. भारत-वर्ष के एक भावी जिन-देव; (सम १५४)।

णिम्मय वि [दे] गत, गया हुआ; (दे ४, ३४)।

णिम्मल वि [निर्मल] मल रहित, विशुद्ध; (स्वप्न ७०; प्रासू १३१)। २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट; (ठा६)।

णिम्मल्ल न [निर्माल्य] देव का उच्छिष्ट द्रव्य; (हे१, ३८; षड्)।

णिम्मव सक [निर्+मा] बनाना, रचना, करना। णिम्मवइ; (हे ४, १६; षड्)। कर्म—निम्मविज्जति; (वज्जा १२२)।

णिम्मव सक [निर्+मापय्] बनवाना, कराना; (ठा ४, ४; कुमा)।

णिम्मवइत्तु वि [निर्मापयितृ] बनवाने वाला; (ठा ४, ४)।

णिम्मवण न [निर्माण] रचना, कृति; (उप ६४८ टी; सुपा २३, ६५; ३०५)।

णिम्मवण न [निर्मापण] बनवाना, कराना; (कप्पू)।

णिम्मविअ वि [निर्मित] बनाया हुआ, रचित; (कुमा; गा १०१; सुर १६, ११)।

णिम्मविअ वि [निर्मापित] बनवाया हुआ; (कुमा)।

णिम्मह सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ अक. फैलना। णिम्महइ; (हे ४, १६२)। वकृ—**णिम्महंत, णिम्म-हमाण**; (से ७, ६२; १५, ५३; स १२६)।

णिम्मइ पुं [निर्मथ] १ विनाश ; २ वि. विनाशक . (भवि)।
णिम्मइण न [निर्मथन] १ विनाश ; २ वि.विनाश-कारक, (सुपा ७५)। स्त्री —°णी ; (सुर १६, १८४)।
णिम्महिअ वि [गत] गया हुआ , (कुमा)।
णिम्महिअ वि [निर्मथित] विनाशित ; (हेका ५०)।
णिम्माअंत देखो **णिम्म**।
णिम्माइअ देखो **णिम्माय** , (पि ५६१)।
णिम्माण सक [निर्+मा] बनाना, करना, रचना। णिम्माणइ, (हे ४, १६; षड् ; प्राप्र)।
णिम्माण न [निर्माण] १ रचना, बनावट, कृति ; २ कर्म-विशेष, शरीर के अङ्गोपाङ्ग क निर्माण में नियामक कर्म-विशेष , (सम ६७)।
णिम्माण वि [निर्मान] मान-रहित ; (से ३, ४५)।
णिम्माणअ वि [निर्मायक] निर्माण-कर्ता, बनाने वाला ; (से ३, ४५)।
णिम्माणिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ , (कुमा)।
णिम्माणिअ वि [निर्मानित] अपमानित, तिरस्कृत ; (भवि)।
णिम्माणुस वि [निर्मानुष] मनुष्य-रहित, (सुपा ४४४)। स्त्री—°सी ; (महा)।
णिम्माय वि [निर्मात] १ रचित, विहित, कृत ; (उव ; पाअ ; वज्जा ३४)। २ निपुण, अभ्यस्त, कुशल ; (औप; कप्प)। "नाहियसत्थेसु निम्माया परिवाइया" (सुर १२,४२)।
णिम्माव सक [निर्+मापय्] बनवाना, करवाना। णिम्मापइ; (सण)। कृ—**णिम्मवित्त**; (सूअ २,१,२२)।
णिम्माविय वि [निर्मापित] बनवाया हुआ, कारित ; (सुपा २६७)।
णिम्मिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ ; (ठा ८ ; प्रासू १२७)। °**वाइ** वि [°वादिन्] जगत् को ईश्वरादि-कृत मानने वाला ; (ठा ८)।
णिम्मिस्स वि [निर्मिश्र] १ मिला हुआ, मिश्रित। °**वल्ली** स्त्री [°वल्ली] अत्यन्त नजदीक का स्वजन, जैसे माता, पिता, भाई, भगिनी, पुत्र और पुत्री ; (वव १०)।
णिम्मीसुअ वि [दे] श्मश्रु-रहित, दाढी मूँछ वर्जित; (पड्)।
णिम्मुक्क वि [निर्मुक्त] मुक्त किया गया ; (सुपा १७३)।
णिम्मुक्ख पुं [निर्मोक्ष] मुक्ति, छुटकारा ; (विसे २४६८)।
णिम्मूल वि [निर्मूल] मूल-रहित, जिसका मूल काटा गया हो वह ; (सुपा ५३५)।
णिम्मेर वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज ; (ठा ३, १ ; औप ; सुपा ६)।
णिम्मोअ पुं [निर्मोक] कञ्चुक, सर्प की त्वचा ; (हे २, १८२; भत्त ११०; से १, ६०)।
णिम्मोअणी स्त्री [निर्मोचनी] कञ्चुक, निर्मोक ; (उत्त १४, ३४)।
णिम्मोडण न [निर्मोटन] विनाश ; (मै ६१)।
णिम्मोल्ल वि [निर्मूल्य] मूल्य-रहित ; (कुमा)।
णिम्मोह वि [निर्मोह] मोह-रहित, (कुमा , श्रा १२)।
णिरइ स्त्री [निर्ऋति] मूला-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)।
णिरइयार वि [निरतिचार] अतिचार-रहित, दूषण-वर्जित ; (सुपा १००)।
णिरइसय वि [निरतिशय] अत्यन्त, सर्वाधिक ; (काल)।
णिरईआर देखो **णिरइयार** ; (सुपा १०० ; रयण १८)।
णिरंकुस वि [निरङ्कुश] अंकुश-रहित, स्वच्छन्दी ; (कुमा; श्रा २८)।
णिरंगण वि [निरङ्गण] निर्लेप, लेप-रहित , (औप , उव ; णाया १; ११—पत्र १७१)।
णिरंगी स्त्री [दे] सिर का अवगुण्ठन, घूँघट ; (दे ४, ३१ , २, २०)।
णिरंजण वि [निरञ्जन] निर्लेप, लेप-रहित ; (स ५८२; कप्प)।
णिरंतय वि [निरन्तक] अन्त-रहित ; (उप १०३१ टी)।
णिरंतर वि [निरन्तर] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित ; (गउड ; हे १, १४)।
णिरंतराय वि [निरन्तराय] १ निर्विघ्न, निर्बाध ; २ व्यवधान-रहित, सतत ; "धम्मं करेह विमलं च निरन्तरायं" (पउम ४४, ६७)।
णिरंतरिय वि [निरन्तरित] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित; (जीव ३)।
णिरंध्र वि [नीरन्ध्र] छिद्र-रहित ; (विक्र ६७)।
णिरंबर वि [निरम्बर] वस्त्र-रहित, नग्न ; (आवम)।
णिरंभा स्त्री [निरम्भा] एक इन्द्राणी, वैरोचन इन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ५, १ ; इक)।
णिरंस वि [निरंश] अंश-रहित, अखण्ड, संपूर्ण ; (विसे)।
णिरक्क पुं [दे] १ चोर, स्तेन ; २ पृष्ठ, पीठ ; ३ वि. स्थित ; (दे ४, ४६)।
णिरक्किय वि [निराकृत] अपाकृत, निरस्त ; (उत्त ६,५६)।
णिरक्ख सक [निर्+ईक्ष्] निरीक्षण करना, देखना।

णिरक्खद ; (हे ४, ४१८)। "तोवि ताव दिट्ठीए णिरक्खिज्जा" (सुहा)।

णिरक्खर वि [निरक्षर] मूर्ख, ज्ञान-रहित ; (कप्पू ; वज्जा १५८)।

णिरग्गल वि [निरर्गल] १ रुकावट से रहित ; (सुपा १६२ ; ४७१)। २ स्वच्छन्दी, स्वैरी, निरंकुश; (पाअ)।

णिरग्घण वि [निरर्घन] अर्घन-रहित : (उव)।

णिरट्ठ } वि [निरर्थ, °क] १ निरर्थक, निष्प्रयोजन,
णिरट्ठग } निकम्मा ; (उत्त २०)। २ न. प्रयोजन का अभाव; "णिरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो" (उत्त २,४२)।

णिरण वि [निर्ऋण] ऋण-रहित, करज से मुक्त ; (सुपा ५६३ ; ५६६)।

णिरणास देखो णिरिणास = नश्। णिरणासइ ; (हे ४,१७८)।

णिरणुकंप वि [निरनुकम्प] अनुकम्पा-रहित, निर्दय ; (णाया १, २ ; बृह १)।

णिरणुक्कोस वि [निरनुक्रोश] निर्दय, दया शून्य ; (णाया १, २ ; प्रासू ९८)।

णिरणुताव वि [निरनुताप] पश्चात्ताप-रहित ; (णाया १,२)।

णिरणुतावि वि [निरनुतापिन्] पश्चात्ताप-वर्जित ; (पव २७४)।

णिरत्थ वि [निरस्त] अपास्त, निराकृत ; (वव ८)।

णिरत्थ } वि [निरर्थ, °क] अपार्थक, निकम्मा, निष्प्र-
णिरत्थग } योजन ; (दे ४, १६ ; पउम ६५, ४ ; पराह
णिरत्थय } १, २ ; उव ; सं ४१)।

णिरप्प अक [स्था] बैठना। णिरप्पइ ; (हे ४, १६)। भूका—णिरप्पीअ ; (कुमा)।

णिरप्प पुं [दे] १ पृष्ठ, पीठ; २ वि. उद्वेष्टित; (दे ४,४९)।

णिरभिग्गह वि [निरभिग्रह] अभिग्रह-रहित ;(आ। ६)।

णिरभिराम वि [निरभिराम] असुन्दर, अचारु; (पराह १,३)।

णिरभिलप्प वि [निरभिलाप्य] अनिर्वचनीय, वाणी से बतलाने को अशक्य ; (विसे ४८८)।

णिरभिस्संग वि [निरभिष्वङ्ग] आसक्ति-रहित, निःस्पृहः (पंना २, ६)।

णिरय पुं [निरय] १ नरक, पाप-भोग-स्थान ; (ठा ४, १; आचा ; सुपा १४०)। २ नरक-स्थित जीव, नारक; (ठा १०)। °पाल पुं [°पाल] देव-विशेष; (ठा ४,१)। °वलिया स्त्री [°वलिका] १ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष; (निर १, १)। २ नरक-विशेष; (पराग २)। ३ नरक जीवों को दुःख देने वाले देवों की एक जाति, परमाधार्मिक देव ; (पराह १, १)।

णिरय वि [निरत] आसक्त, तत्पर, तल्लीन; (उप ६७६; उव ; सुपा २६)।

णिरय वि [नीरजस्] रजो-रहित, निर्मल ; (भग ; गा ८७८)।

णिरव सक [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना। णिरवइ; (षड्)।

णिरव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना। णिरवइ; (षड्)।

णिरवइक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित, निरीह, निःस्पृह; (विसे ७ टी)।

णिरवकंख वि [निरवकाङ्क्ष] स्पृहा-रहित, निःस्पृह; (औप)।

णिरवकंखि वि [निरवकाङ्क्षिन्] निःस्पृह; (णाया १,६)।

णिरवगाह वि [निरवगाह] अवगाहन-रहित; (षड्)।

णिरवग्गह वि [निरवग्रह] निरंकुश, स्वच्छन्दी, स्वैरी ; (पाअ)।

णिरवच्च वि [निरपत्य] अपत्य-रहित, निःसंतान; (भग; सम १५०)।

णिरवज्ज वि [निरवद्य] निर्दोष, विशुद्ध; (दस ५, १ ; सुर ८, १८३)।

णिरवणाम देखो णिरोणाम; (उव)।

णिरवयक्ख देखो णिरवइक्ख ; (णाया १, ६; पउम २, ६३)।

णिरवयव वि [निरवयव] अवयव-रहित, निरंश ; (विसे)।

णिरवयास वि [निरवकाश] अवकाश-रहित; (गउड)।

णिरवराह वि [निरपराध] अपराध-रहित, बेगुनाह ; (महा)।

णिरवराहि वि [निरपराधिन्] ऊपर देखो ; (भाव ६)।

णिरवलंब वि [निरवलम्ब] सहारा रहित; (पराह १,३)।

णिरवलाव वि [निरपलाप] १ अपलाप—रहित ; २ गुप्त बात को प्रकट नहीं करने वाला, दूसरे को नहीं कहने वाला ; (सम ५७)।

णिरवसंक वि [निरपशङ्क] दुःशङ्का-वर्जित ; (भवि)।

णिरवसर वि [निरवसर] अवसर-रहित ; (गउड)।

णिरवसाण वि [निरवसान] अन्त-रहित ; (गउड)।

णिरवसेस वि [निरवसेस] सब, सकल ; (हे १, १४ ; षड् ; से १, ३७)।

णिरवाय वि [निरपाय] १ उपद्रव-रहित, विघ्न-वर्जित; २ निर्दोष, विशुद्ध ; (श्रा १६ ; सुपा २७५)।

णिरविक्ख } देखो **णिरवइक्ख**; (श्रा ६ ; उव ; पि
णिरवेक्ख } ३४१ ; से ६, ७५; सुत्र १, ६ ; पंचा ४;
णिरवेच्छ } निचू २० ; नाट—चैत २५७) ।
णिरस्स सक [निर्+अस्] अपास्त करना । णिरसइ; (सण)।
णिरसण वि [निरशन] आहार-रहित, उपोषित ; (उव ; सुपा १८१) ।
णिरसि वि [निरसि] खड्ग-रहित ; (गउड) ।
णिरसिअ वि [निरस्त] परास्त, अपास्त ; (दे ५, ५६)।
णिरहंकार वि [निरहंकार] गर्व-रहित ; (उव) ।
णिरहारि वि [निराहारिन्] आहार-रहित, उपोषित; "हवेउ य वक्कलधारी, निरहारी बंभचेरवयधारी " (सुपा २५२)।
णिरहिगरण वि [निरधिकरण] अधिकरण-रहित, हिंसा-रहित, निर्दोष ; (पंचा १६) ।
णिरहिगरणि वि [निरधिकरणिन्] ऊपर देखो ; (भग १६, १) ।
णिरहिलास वि [निरभिलाष] इच्छा-रहित, निरीह; (गउड)।
निराइअ वि [निरायत] लम्बा किया हुआ, विस्तारित; (से ४, ५२ ; ७, ३६) ।
णिराउह वि [निरायुध] आयुध-वर्जित, निःशस्त्र ; (महा)।
णिराकर } सक [निरा+कृ] १ निषेध करना । २ दूर करना,
णिरागर } हटाना । ३ विवाद का फैसला करना । निराकरिमो ; (कुप्र २१५) । संकृ—**णिराकिच्च**; (सुत्र १,१, १; १, ३, ३; १, ११) ।
णिरागरण न [निराकरण] १ निषेध, प्रतिषेध । २ फैसला, निपटारा ; (स ४०६) ।
णिरागरिय वि [निराकृत] हटाया हुआ, दूर किया हुआ; (पउम ४६, ५१ ; ६१, ५६) ।
णिरागस वि [निराकर्ष] निर्धन, रङ्क ; (निचू २) ।
णिरागार वि [निराकार] १ आकृति-रहित । २ अपवाद-रहित ; (धर्म २) ।
णिराणंद वि [निरानन्द] आनन्द-रहित, शोकातुर; (महा) ।
णिराणिउ (अप) अ निश्चित, नक्की ; (कुमा) ।
णिराणुकंप देखो **णिरणुकंप** ; "णिक्किवणिराणुकंपो आसुरियं भावणं कुणइ" (ठ ४, ४) , "अह सो णिराणुकंपो" (संथा ८४ ; पउम २६, २५) ।
णिराणुवत्ति वि [निरनुवर्तिन्] १ अनुसरण नहीं करने वाला ; २ सेवा नहीं करने वाला ; (उव) ।
णिराद वि [दे] नष्ट, विनाश-प्राप्त ; (दे ४, ३०) ।

णिराबाध } वि [निराबाध] आबाधा-रहित, हरकत-
णिराबाह } रहित ; (अभि १११ ; सुपा२५३ ; ठा १० ; आव ४) ।
णिरामगंध वि [निरामगन्ध] दूषण-रहित, निर्दोष चारित्र वाला ; (आचा ; सुत्र १, ६) ।
णिरामय वि [निरामय] रोग-रहित, नीरोग ; (सुपा५७५)।
णिरामिस वि [निरामिष] आसक्ति हीन, निरीह, निरभिष्वङ्ग; "आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो णिरामिसा" (उत्त १४, ४६) ।
णिराय वि [दे] १ ऋजु, सरल ; (दे ४, ५० ; पाअ) । २ प्रकट, खुला ; ३ पुं. रिपु, शत्रु ; (दे ४, ५०) । ४ वि. लम्बा किया हुआ ; (से २, ४०) ।
णिरायंक वि [निरातङ्क] आतङ्क-रहित, नीरोग ; (औप) ।
णिरायरिय देखो **णिरागरिय** ; (पउम ६१, ४६) ।
णिरायव वि [निरातप] आतप-रहित ; (गउड) ।
णिरायार देखो **णिरागार** ; (पउम ६, ११८) ।
णिरायास वि [निरायास] परिश्रम-रहित ; (पण्ह २, ४) ।
णिरारंभ वि [निरारम्भ] आरम्भ-वर्जित; (सुपा १४०; गउड)।
णिरालंब वि [निरालम्ब] आलम्बन-रहित ; (गा ६५ ; आरा ८) ।
णिरालंबण वि [निरालम्बन] आलम्बन-रहित ; (औप; णाया १, ६) ।
णिरालय वि [निरालय] स्थान-रहित, एकत्र स्थिति नहीं करने वाला ; (औप) ।
णिरालोय वि [निरालोक] प्रकाश-रहित ; (निर१, १) ।
णिरावकंखि वि [निरवकाङ्क्षिन्] आकाङ्क्षा-रहित, निःस्पृह; (सूत्र १, १०) ।
णिरावयक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित, निरीह ; (णाया १, १ ; ६ ; भत्त १४८) ।
णिरावरण वि [निरावरण] १ प्रतिबन्धक-रहित ; (औप)। २ नग्न ; (सुर १४, १७८) ।
णिरावराह वि [निरपराध] अपराध-रहित ; (सुपा४२३) ।
णिराविक्ख } देखो **णिरावयक्ख** ; "विसएसु णिराविक्खा
णिरावेक्ख } तरंति संसार-कंतारं" (भत्त ४६ ; पउम ६, ८ ; १००, ११) ।
णिरास वि [निराश] १ आशा-रहित, हताश ; (पउम ४४, ५६ ; दे ४, ४८ ; संक्षि १६) । २ न. आशा का अभाव; (पण्ह १, ३) ।

णिरास वि [दे] नृशंस, क्रूर ; (षड्)।
णिरासंस वि [**निराशंस**] आकाङ्क्षा-रहित, निरीह ; (सुपा ६२१)।
णिरासय वि [**निराश्रय**] निराधार; (वज्जा १५२)।
णिरासव वि [**निराश्रव**] आश्रव-रहित, कर्म-बन्धन के कारणों से रहित ; (पण्ह २, ३)।
णिराह वि [दे] निर्दय, निष्करुण ; (दे ४, ३७)।
णिरिंअ वि [दे] अवशेषित, बाकी रखा हुआ ; (दे ४, २८)।
णिरिंक वि [दे] नत, नमा हुआ ; (दे ४, ३०)।
णिरिंगी [दे] देखो **णीरंगी** ; (गउड)।
णिरिंधण वि [**निरिन्धन**] इन्धन-रहित ; (भग ७, १)।
णिरिक्ख सक [**निर्+ईक्ष्**] देखना, अवलोकन करना। णिरिक्खइ, णिरिक्खए ; (सण ; महा)। वकृ—**णिरिक्खंत, णिरिक्खमाण** ; (सण ; उप २११ टी)। संकृ—**णिरिक्खिऊण** ; (सण)। कृ—**णिरिक्खणिज्ज** ; (कप्पू)।
णिरिक्खण न [**निरीक्षण**] अवलोकन ; (गा १५०)।
णिरिक्खणा स्त्री [**निरीक्षणा**] अवलोकन, प्रतिलेखना ; (ओघ ३)।
णिरिक्खिअ वि [**निरीक्षित**] आलोकित, दृष्ट ; (कप्पू ; पउम ४८, ४८)।
णिरिग्घ सक [**नि+ली**] १ आश्लेष करना। २ अक छिपना। णिरिग्घइ ; (हे ४, ५५)।
णिरिग्घिअ वि [**निलीन**] आश्लिष्ट, आलिङ्गित; (कुमा)।
णिरिण वि [**निर्ऋण**] ऋण-मुक्त, उऋण ; (ठा ३, १ टी—पत्र १२०)।
णिरिणास सक [**गम्**] गमन करना। णिरिणासइ ; (हे ४, १६२)।
णिरिणास सक [**पिष्**] पीसना। णिरिणासइ; (हे ४, १८५)।
णिरिणास अक [**नश्**] पलायन करना, भागना। णिरिणासइ; (हे ४, १७८ ; कुमा)।
णिरिणासिअ वि [**गत**] गया हुआ, यात ; (कुमा)।
णिरिणासिअ वि [**पिष्ट**] पीसा हुआ ; (कुमा)।
णिरिणिज्ज सक [**पिष्**] पीसना। णिरिणिज्जइ ; (हे ४, १८५)।
णिरिणिज्जिअ वि [**पिष्ट**] पीसा हुआ ; (कुमा)।
णिरिति स्त्री [**निरिति**] एक रात्रि का नाम ; (कप्प)।
णिरीह वि [**निरीह**] निष्काम, निःस्पृह ; (कुमा ; सुपा ४२१)।
णिरु (अप) अ. निश्चित, नक्की ; (हे ४, ३४४ ; सुपा ८६; सण ; भवि)।
णिरुअ देखो **णिरुज** ; (विसे १५८५ ; सुपा ४४६)।
णिरुईकय वि [**निरुजीकृत**] नीरोग किया गया ; (उप ५६७ टी)।
णिरुंभ सक [**नि+रुध्**] निरोध करना, रोकना। णिरुंभइ; (औप)। कवकृ—**णिरुंभमाण, णिरुब्भंत**; (स ५३१ ; महा) संकृ—**णिरुंभइत्ता** ; (सूअ १, ४, २)। कृ—**णिरुंभियव्व, णिरुद्धव्व**; (सुपा ४०४; विसे ३०८१)।
णिरुंभण न [**निरोधन**] अटकाव, रुकावट ; (सूअ १, ५ ; भवि)।
णिरुक्कंठ वि [**निरुत्कण्ठ**] उत्कण्ठा-रहित, निरुत्साह ; (नाट)।
णिरुग्घ देखो **णिरिग्घ**। णिरुग्घइ ; (षड्)।
णिरुच्चार वि [**निरुच्चार**] १ उच्चार—पुरीषोत्सर्ग के लिए लोगों के निर्गमन से वर्जित; (णाया१,८—पत्र १४६)। २ पाखाना जाने से जो रोका गया हो ; (पण्ह १, ३)।
णिरुच्छव वि [**निरुत्सव**] उत्सव-रहित ; (अभि१८६)।
णिरुच्छाह वि [**निरुत्साह**] उत्साह-हीन ; (से१४, ३५)।
णिरुज वि [**निरुज**] १ रोग-रहित। २ न. रोग का अभाव। °**सिख** न [°**शिख**] एक प्रकार की तपश्चर्या ; (पव२७१)।
णिरुज्जम वि [**निरुद्यम**] उद्यम-रहित, आलसी ; (उव ; स ३१० ; सुपा ३८४)।
णिरुट्ठाइ वि [**निरुत्थायिन्**] नहीं उठने वाला ; (उत्त १ ; ३)।
निरुत्त वि [**निरुक्त**] १ उक्त, कथित ; (सत ७१)। २ न. निश्चित उक्ति ; (अणु)। ३ व्युत्पत्ति ; (विसे २ ; ६६३)। ४ वेदाङ्ग शास्त्र-विशेष ; (औप)।
णिरुत्त क्रिवि [**दे**] १ निश्चित, नक्की, चोक्कस ; (दे ४, ३० ; पउम ३५, ३२ ; कुमा ; सण; भवि), "तहवि हु मरइ निरुत्तं पुरिसो संपत्थिए काले" (पउम११, ६१)। २ वि. निश्चिन्त, चिन्ता-रहित; (कुमा)।
णिरुत्तत्त वि [**निरुत्तप्त**] विशेष ताप-युक्त, संतप्त ; (उव)।
णिरुत्तम वि [**निरुत्तम**] अत्यन्त श्रेष्ठ; (काल)।
णिरुत्तर वि [**निरुत्तर**] उत्तर-रहित किया हुआ, परास्त ; (सुर १२, ६६)।
णिरुत्ति स्त्री [**निरुक्ति**] व्युत्पत्ति ; (विसे ६६२)।

णिरुत्तिअ वि [**नैरुक्तिक**] व्युत्पत्ति के अनुसार जिसका अर्थ किया जाय वह शब्द ; (अणु) ।

णिरुद्दर वि [**निरुदर**] छोटा पेट वाला, अनुदर । स्त्री—°**रा**; (पण्ह १, ४) ।

णिरुद्ध वि [**निरुद्ध**] १ रोका हुआ ; (णाया१, १) । २ आवृत, आच्छादित ; (सुअ १, २, ३) । ३ पुं. मत्स्य की एक जाति ; (कप्प) ।

णिरुब्भव } देखो **णिरुंभ** ।
णिरुब्भंत }

णिरुलि पुंस्त्री [**दे**] कुम्भीर की आकृति वाला एक जन्तु ; (दे ४, २७) ।

णिरुवकिट्ठ देखो **णिरुवक्किट्ठ** ; (भग) ।

णिरुवक्कम वि [**निरुपक्रम**] १ जो कम न किया जा सके वह (आयुष्य); (सुर २, १३२; सुपा २०४) । २ विघ्न-रहित, अ-बाघ ; " नियनिरुवक्कमविक्कमअक्कंतसमग्ग-रिउचक्को " (सुपा ३६) ।

णिरुवक्कय वि [**दे**] अ-कृत, नहीं किया हुआ; (दे ४, ४१)।

णिरुवक्किट्ठ वि [**निरुपक्लिष्ट**] क्लेश-वर्जित, दुःख-रहित; (भग २५, ७) ।

णिरुवक्केस वि [**निरुपक्लेश**] शोक आदि क्लेशों से रहित; (ठा ७) ।

णिरुवगारि वि [**निरुपकारिन्**] उपकार को नहीं मानने वाला, प्रत्युपकार नहीं करने वाला; (आवम) ।

णिरुवग्गह वि [**निरुपग्रह**] उपकार नही करने वाला; (ठा ४, ३) ।

णिरुवट्ठाणि वि [**निरुपस्थानिन्**] निरुद्यमी, आलसी; (आचा)।

णिरुवद्दव वि [**निरुपद्रव**] उपद्रव-रहित, आबाधा-वर्जित ; (औप) ।

णिरुवम वि [**निरुपम**] अ-समान, अ-साधारण ; (औप ; महा) ।

णिरुवयरिय वि [**निरुपचरित**] वास्तविक, तथ्य; (णाया १, ५) ।

णिरुवयार वि [**निरुपकार**] उपकार-रहित; (उव) ।

णिरुवलेव वि [**निरुपलेप**] लेप-वर्जित, अ-लिप्त; (कप्प)। "रयणमिव णिरुवलेवा" (पउम १४, ६४) ।

णिरुवसग्ग वि [**निरुपसर्ग**] १ उपसर्ग-रहित, उपद्रव-वर्जित; (सुपा २८७) । २ पुं. मोक्ष, मुक्ति; (पंडि ; धर्म २) । ३ न. उपसर्ग का अभाव ; (वव ३) ।

णिरुवहय वि [**निरुपहत**] १ उपघात-रहित, अक्षत ; (भग ७, १) । २ रुकावट से शून्य, अ-प्रतिहत; (सुपा २६८)।

णिरुवहि वि [**निरुपधि**] माया-रहित, निष्कपट; (दसनि १)।

णिरुवार सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना । णिरुवारइ ; (हे ४, २०६) ।

णिरुवारिअ वि [**गृहीत**] उपात्त, गृहीत; (कुमा) ।

णिरुवालंभ वि [**निरुपालम्भ**] उपालम्भ-शून्य ; (गउड ।

णिरुव्विग्ग वि [**निरुद्विग्न**] उद्वेग-रहित ; (णाया १, १—पत्र ६) ।

णिरुस्साह वि [**निरुत्साह**] उत्साह-हीन; (सुअ १,४,१)।

णिरूव सक [**नि+रूपय्**] १ विचार कर कहना । २ विवेचन करना । ३ देखना । ४ दिखलाना । ५ तलाश करना । निरू-वेइ; (महा) । वकृ—**णिरूविंत, निरूवमाण**; (सुर १५, २०५ ; कुप्र २७५) । संकृ—**णिरूविऊण**; (पंचा ८) । कृ—**णिरूवियव्व**; (पंचा ११) । हेकृ—**निरूविउं** ; (कुप्र २०८) ।

णिरूवण न [**निरूपण**] १ विलोकन, निरीक्षण ; (उप ३३७) । २ वि. दिखलाने वाला । स्त्री—°**णी** ; (पउम ११, २२) ।

णिरूवणया स्त्री [**निरूपणा**] निरूपण ; (उप ६३०) ।

णिरूवाविअ वि [**निरूपित**] गवेषित, जिस की खोज कराई गई हो वह ; (स ५३६; ७४२) ।

णिरूविअ वि [**निरूपित**] १ देखा हुआ ; (से १३, १३; सुपा ५२३) । २ आलोचना कर कहा हुआ ; ३ विवेचित, प्रतिपादित; (हे २, ४०) । ४ दिखलाया हुआ; ५ गवेषित; (प्रारू) ।

णिरूसुअ वि [**निरुत्सुक**] उत्कण्ठा-रहित ; (गउड) ।

णिरूह पुं [**निरूह**] अनुवासना-विशेष, एक तरह का विरेचन; (णाया १, १३) ।

णिरेय वि [**निरेजस्**] निष्कम्प, स्थिर; (भग २५, ४) ।

णिरेयण वि [**निरेजन**] निश्चल, स्थिर ; (कप्प ; औप)।

णिरोणाम पुं [**निरवनाम**] नम्रता-रहित, गर्वित, उद्धत;(उव)।

णिरोय वि [**नीरोग**] रोग-रहित ; (औप; णाया १, १) ।

णिरोव पुं [**दे**] आदेश, आज्ञा, रुक्का ; (सुपा २२४) ।

णिरोवयार वि [**निरुपकार**] उपकार को नहीं मानने वाला; (ओघ ११३ भा) ।

णिरोवयारि वि [**निरुपकारिन्**] ऊपर देखो ; (उव) ।

णिरोविअ देखो **णिरूविअ** ; (सुपा ४५६ ; महा) ।

णिरोह पुं [**निरोध**] रुकावट, रोकना; (ठा ४, १; औप; पाअ)।
णिरोहग वि [**निरोधक**] रोकने वाला ; (रंभा)।
णिरोहण न [**निरोधन**] रुकावट ; (पगह १, १)।
णिलंक पुं [**दे**] पतद्ग्रह,पिकदान, ष्ठीवन-पात्र; (दे ४,३१)।
णिलय पुं [**निलय**] घर, स्थान, आश्रय ; (से २, २ ; गा ४२१ ; पाअ)।
णिलयण न [**निलयन**] वसति, स्थान ; (विसे)।
णिलाड न [**ललाट**] भाल, कपाल ; (कुमा)।
णिलिअ देखो **णिलीअ** । णिलिअइ ; (षड्)।
णिलिंत नीचे देखो ।
णिलिज्ज } सक [**नि+ली**] १ आश्लेष करना, भेटना।
णिलीअ } २ दूर करना। ३ अक छिप जाना। णिलिज्जइ, णिलीअइ ; (हे ४, ५५)। णिलिज्जिज्जा ; (कप्प)। वकृ—**णिलिंत, णिलिज्जमाण; णिलीअंत, णिलीअमाण** (कप्प ; सुअ २, २ ; कुमा ; पि ४७४)।
णिलीइर वि [**निलेतृ**] आश्लेष करने वाला, भेटने वाला ; (कुमा)।
णिलुक्क देखो **णिलीअ** । णिलुक्कइ; (हे ४, ५५, षड्)। वकृ—**णिलुक्कंत** ; (कुमा)।
णिलुक्क सक [**तुड्**] तोड़ना। णिलुक्कइ; (हे ४, ११६)।
णिलुक्क वि [**दे. निलीन**] १ निलीन, खूब छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त, तिरोहित ; (गाया १, ८ ; से १५, २ ; गा ६४ ; सुर ६, ५ ; उव ; सुपा ६४०)। २ लीन, आसक्त ; (विवे ६०)।
णिलुक्कण न [**निलयन**] छिपना; (कुप्र २५२)।
णिल्लंक [**दे**] देखो **णिलंक** ; (दे ४, ३१)।
णिल्लंछण न [**निर्लाञ्छन**] शरीर के किसी अवयव का छेदन; (उवा ; पडि)।
णिल्लच्छ देखो **णेल्लच्छ** ; (पि ६६)।
णिल्लच्छण वि [**निर्लक्षण**] १ मूर्ख, बेवकूफ; (उप ७६७ टी)। २ अपलक्षण वाला, खराब ; (श्रा १२)।
णिल्लज्ज वि [**निर्लज्ज**] लज्जा-रहित ; (हे २,१९७; २००)
णिल्लज्जिम पुंस्त्री [**निर्लज्जिमन्**] निर्लज्जपन, बेशरमी ; (हे १, ३५)। स्त्री—°**मा** ; (हे १, ३५)।
णिल्लस अक [**उत्+लस्**] उल्लसना, विकसना। णिल्लसइ ; (हे ४, २०२)।
णिल्लसिअ वि [**उल्लसित**] उल्लास-युक्त, विकसित ; (कुमा)।
णिल्लसिअ वि [**दे**] निर्गत, निःसृत, निर्यात; (दे ४,३६)।
णिल्लालिअ वि [**निर्लालित**] निःसारित, बाहर निकाला हुआ ; (णाया १, १ ; ८—पत्र १३३ ; सुर १२, २३५ ; महा)।
णिल्लुंछ सक [**मुच्**] छोड़ना, त्याग करना। णिल्लुंछइ; (हे ४, ९१)।
णिल्लुंछिअ वि [**मुक्त**] त्यक्त, छोड़ा हुआ ; (कुमा)।
णिल्लुत्त वि [**निर्लुप्त**] विनाशित ; (विक २५)।
णिल्लूर सक [**छिद्**] छेदन करना, काटना। णिल्लूरइ : (हे ४, १२४)। णिल्लूरह; (आरा ६८)।
णिल्लूरण न [**छेदन**] छेद, विच्छेद ; (कुमा)।
णिल्लूरिय वि [**छिन्न**] काटा हुआ, विच्छिन्न; "आवत-विद्दुमाहयनिल्लूरियदवियसंखउलं" (पउम ८, २५८)।
णिल्लेव वि [**निर्लेप**] लेप-रहित ; (विसे ३०८३)।
णिल्लेवग पुं [**निर्लेपक**] रजक, धोबी ; (आचू ४)।
णिल्लेवण न [**निर्लेपन**] १ मल को दूर करना ; (वव १)। २ वि. निर्लेप, लेप-रहित; (ओघ १९ भा)। °**काल** पुं [°**काल**] वह काल, जिस समय नरक में एक भी नारक जीव न हो ; (भग)।
णिल्लेविअ वि [**निर्लेपित**] १ लेप-रहित किया हुआ ; २ बिलकुल खूट गया हुआ ; (भग)।
णिल्लेहण न [**निर्लेखन**] उद्वर्त्तन, पोंछना ; (आचा २, ३, २)।
णिल्लोभ } वि [**निर्लोभ**] लोभ-रहित, अ-लुब्ध ; (सुपा
णिल्लोह } ३६१ ; श्रा १२ ; भवि)।
णिव पुं [**नृप**] राजा, नरेश ; (कुमा ; रयण ४७)। °**तणय** वि [°**संबन्धिन्**] राज संबन्धी, राजकीय ; (सुपा ५३९)।
णिवइ पुं [**नृपति**] ऊपर देखो ; (ठा ३, १ ; पउम ३०, ९)। °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] राज-मार्ग, जाहिर रास्ता ; (पउम ७९, १९)।
णिवइअ वि [**निपतित**] १ नीचे गिरा हुआ ; (णाया १, ७)। २ एक प्रकार का विष ; (ठा ४, ४)।
णिवइत्तु वि [**निपतितृ**] नीचे गिरने वाला ; (ठा ४,४)।
णिवच्छण न [**दे**] अवतारण, उतारना ; (दे ४, ४०)।
णिवज्ज अक [**निर्+पद्**] निष्पन्न होना, नीपजना, बनना। णिवज्जइ ; (षड्)।

णिवज्ज अक [**नि+सद्**] बैठना । णिवज्जसु ; (स ५०६)। वकृ—**णिवज्जमाण**; (स ५०३) । प्रयो—णिवज्जावेइ ; (निर १, १) ।

णिवट्ट अक [**नि+वृत्**] १ निवृत्त होना, लौटना, हटना । २ रुकना । वकृ—**णिवट्टंत** ; (सुपा १६२) ।

णिवट्ट वि [**निवृत्त**] १ निवृत्त, हटा हुआ, प्रवृत्ति-विमुख । २ न. निवृत्ति ; (हे ४, ३३२) ।

णिवट्टण न [**निवर्तन**] १ निवृत्ति, प्रवृत्ति-निरोध । २ जहां रास्ता बन्द होता हो वह स्थान ; (णाया १, २—पत्र ७६) ।

णिवड अक [**नि+पत्**] नीचे पड़ना, नीचे गिरना । णिवडइ ; (उव ; षड् ; महा) । वकृ—**णिवडंत, णिवडमाण** ; (गा ३४ ; सुर ३, १२७) । संकृ—**णिवडिऊण, णिवडिअ** ; (दंस ३ ; महा) ।

णिवडण न [**निपतन**] अधः-पतन ; (राज) ।

णिवडिअ वि [**निपतित**] नीचे गिरा हुआ ; (से १४, ३४ ; गा २३४ ; उप पृ २६) ।

णिवडिर वि [**निपतितृ**] नीचे गिरने वाला ; (सुपा ४६ ; सण) ।

णिवण्ण वि [**निषण्ण**] १ बैठा हुआ ; (महा ; संथा ६५ ; ७३) । २ पुं. कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म आदि किसी प्रकार का ध्यान न किया जाता हो वह कायोत्सर्ग ; (आव ५) । °**णिवण्ण** पुं [°**निषण्ण**] जिसमें आर्त और रौद्र ध्यान किया जाय वह कायोत्सर्ग ; (आव ५) ।

णिवण्णुस्सिय पुं [**निषण्णोत्सृत**] कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान किया जाता हो वह कायोत्सर्ग ; (आव ५) ।

णिवत्त देखो **णिवट्ट**=नि+वृत् । वकृ—**णिवत्तमाण** ; (वव १) । कृ—**णिवत्तणीअ**; (नाट—शकु १०८) । प्रयो—णिवत्तावेमि ; (पि ५५२) ।

णिवत्त देखो **णिवट्ट**=निवृत्त ; (षड् ; कप्प) ।

णिवत्तण देखो **णिवट्टण** ; (महा ; हे २, ३० ; कुमा) ।

णिवत्तय वि [**निवर्त्तक**] १ वापिस आने वाला, लौटने वाला । २ लौटाने वाला, वापिस करने वाला ; (हे २, ३० ; प्राप्र) ।

णिवत्ति स्त्री [**निवृत्ति**] निवर्तन ; (उव) ।

णिवत्तिअ वि [**निवर्त्तित**] रोका हुआ, प्रतिषिद्ध ; (स ३६४) ।

णिवत्तिअ वि [**निर्वर्तित**] निष्पादित ; "निवत्तिया सव-पूया" (स ७६३) ।

णिवद्दि देखो **णिवत्ति** ; (संक्षि ६) ।

णिवन्न देखो **णिवण्ण** ; (स ७६०) ।

णिवय देखो **णिवड** । णिवइज्जा, णिवएज्जा ; (कप्प ; ठा ३, ४) । वकृ—**णिवयंत, णिवयमाण**; (उप १४२ टी; सुर ४, ६५ ; कप्प) ।

णिवय पुं [**निपात**] नीचे गिरना, अधः-पतन; (सुर १३, १६७) ।

णिवरुण पुं [**निवरुण**] वृक्ष-विशेष; (उप १०३१ टी) ।

णिवस अक [**नि+वस्**] निवास करना, रहना । णिवसइ, (महा) । वकृ—**णिवसंत**; (सुपा २२५) । हेकृ—**णिवसिउं** ; (सुपा ४६३) ।

णिवसण न [**निवसन**] वस्त्र, कपड़ा ; (अभि १३६ ; महा ; सुपा २००) ।

णिवसिय वि [**निवसित**] जिसने निवास किया हो वह ; (महा) ।

णिवसिर वि [**निवसितृ**] निवास करने वाला ; (गउड)।

णिवह सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णिवहइ ; (हे ४, १६२) ।

णिवह अक [**नश**] भागना, पलायन करना । णिवहइ ; (हे ४, १७८) ।

णिवह सक [**पिष्**] पीसना । णिवहइ ; (हे ४, १८५ ; षड्) ।

णिवह पुंन [**निवह**] समूह, राशि, जत्था ; (से २, ४२, सुर ३, ३५; प्रासु १४४), "अच्छउ ता फलनिवहं" (वज्जा १५२) ।

णिवह पुं [**दे**] समृद्धि, वैभव; (दे ४, २६) ।

णिवहिअ वि [**नष्ट**] नाश-प्राप्त ; (कुमा) ।

णिवहिअ वि [**पिष्ट**] पीसा हुआ, (कुमा) ।

णिवाइ वि [**निपातिन्**] गिरने वाला ; (आचा) ।

णिवाड सक [**नि+पातय्**] नीचे गिराना । निवाडेइ ; (स ६६०) । वकृ—**निवाडयंत**, (स ६८६) । संकृ—**णिवाडेत्ता** ; (जीव ३) ।

णिवाडिय वि [**निपातित**] नीचे गिराया हुआ; (महा)।

णिवाडिर वि [**निपातयितृ**] नीचे गिराने वाला; (सण)।

णिवाण न [**निपान**] कूप या तालाव के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड ; (स ३१२) ।

°साला स्त्री [°शाला] पशुओं को पानी पीलाने का स्थान; (महा)।
णिवाय देखो णिवाड। णिवायइ; (कुमा)। णिवाएज्जा; (पि १३१)।
णिवाय पुं [दे] स्वेद, पसीना; (दे ४, ३४; सुर १२,८)।
णिवाय पुं [निपात] १ पतन, अधः-पतन, गिरना; (गा २२२; सुपा १०३)। २ संयोग, संबन्ध; "दिट्ठिणिवाश्रा ससिमुहीए" (गा १४८; उत्त २; गउड)। ३ च, प्र आदि व्याकरण-प्रसिद्ध अव्यय; (पण्ह२, २; सुपा २०३)। ४ विनाश; (पिंड)।
णिवाय वि [निवात] पवन-रहित, स्थिर; (पण्ह २, ३; स ४०३; ७४३)।
णिवायण न [निपातन] १ गिराना, निपातन, ढ़ाहना; (पण्ह १, २)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-सिद्धि, प्रकृति आदि के विना ही विभाग किये अखण्ड शब्द की निष्पत्ति; (विसे ३३)।
णिवार सक [नि+वारय्] निवारण करना, निषेध करना, रोकना। णिवारेइ; (उव; महा)। वकृ—णिवारेंत; (महा)। कवकृ—णिवारीअंत, णिवारिज्जमाण; (नाट—मृच्छ १५४; १३५)। कृ—णिवारियव्व, णिवारेयव्व; (सुपा ४८२; महा)।
णिवारग वि [निवारक] निषेध करने वाला, रोकने वाला; (सुर १, १२६; सुपा ६३६)।
णिवारण न [निवारण] १ निषेध, रुकावट; (भग ६,३३)। २ शीत आदि को रोकने वाला, गृह, वस्त्र आदि; "न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जइ" (उत्त २, ७)। ३ वि. निवारण करने वाला, रोकने वाला; "उवसग्गनिवारणो एसो" (अजि ३८)।
णिवारय देखो णिवारग; (उप ५३० टी)।
णिवारि वि [निवारिन्] निवारक, प्रतिषेधक। स्त्री—°रिणी; (महा)।
णिवारिय वि [निवारित] रोका हुआ, निषिद्ध; (भग; प्रासू १६६)।
णिवास पुं [निवास] १ निवसन, रहना; २ वास-स्थान, डेरा; (कुमा; महा)।
णिवासि वि [निवासिन्] निवास करने वाला, रहने वाला; (महा)।
णिविअ देखो णिमिअ=न्यस्त; (से १२, ३०)।
णिविट्ट देखो णिवट्ट=निवृत्त; (सण)।
णिविट्ठ वि [निविष्ट] १ स्थित, बैठा हुआ; (महा)। २ आसक्त, लीन; (राज)।
णिविट्ठ वि [निर्विष्ट] लब्ध, उपात्त, गृहीत; (ठा५, २)। °कप्पट्ठिइ स्त्री [°कल्पस्थिति] जैन साधुओं को एक तरह का आचार; (ठा ५, २)।
णिविड देखो णिविड; (षड्; हे १, २४०)।
णिविडिअ देखो णिविडिय; (गउड; पि २४०)।
णिवित्ति स्त्री [निवृत्ति] १ निवर्तन, उपरम, प्रवृत्ति का अभाव; (विसे २७६८; स १५४)। २ वापिस लौटना, प्रत्यावर्तन; (सुपा ३३२)।
णिविद्ध वि [दे] १ सो कर उठा हुआ; २ निराश, हताश; ३ उद्भट; ४ नृशंस, निर्दय; (दे ४, ४८)।
णिविस अक [नि+विश्] बैठना। वकृ—णिविसंत; (१२)।
णिविस (अप) देखो णिमिस; (भवि)।
णिविस्सिर वि [निवेष्टृ] बैठने वाला; (सण)।
णिवुड्ड सक [नि+वर्धय्] १ त्याग करना, छोड़ना। २ हानि करना। वकृ—णिवुड्डेमाण; (सुज्ज २)। संकृ—णिवुड्डित्ता; (सुज्ज १)।
णिवुड्ढि स्त्री [निवृद्धि] १ वृद्धि का अभाव; (ठा ३, ३)। २ दिन की छोटाई; (भग)।
णिवुण देखो णिउण; (अच्चु ६६)।
णिवुत्त देखो णिवट्ट=निवृत्त; स ५८८)।
णिवेअ सक [नि+वेदय्] १ सम्मान-पूर्वक ज्ञापन करना। २ अर्पण करना। ३ मालूम करना। कर्म—णिवेइज्जइ; (निचू१)। संकृ—णिवेइऊण; (स ५६६)। हेकृ—णिवेएउं; (पंचा १५)। कृ—णिवेयणीअ; (स १२०)।
णिवेअग वि [निवेदक] सम्मान-पूर्वक ज्ञापन करने वाला; (सुपा २६८)।
णिवेअण } न [निवेदन] १ सम्मान-पूर्वक ज्ञापन;
णिवेअणय } (पंचा १; निचू ११)। २ नैवेद्य, देवता को अर्पित अन्न आदि; (पउम ३२, ८३)।
णिवेअणा स्त्री [निवेदना] ऊपर देखो; (णाया १,)। °पिंड पुं [°पिण्ड] देवता को अर्पित अन्न आदि, नैवेद्य; (निचू ११)।
णिवेअय देखो णिवेअग; (सुपा २२५; स ४१६)।
णिवेइय वि [निवेदित] सम्मान-पूर्वक ज्ञापित; (महा; भवि)।

णिवेदइत्तअ वि [निवेदयितृ] निवेदन करने वाला ; (अभि १३६) ।
णिवेस सक [नि+वेशय्] स्थापन करना, बैठाना । णिवेसइ, णिवेसेइ ; (सण ; कप्प) । संकृ—णिवेसइत्ता, णिवेसिउं, णिवेसिऊण, णिवेसित्ता, णिवेसिय ; (उत्त ३२ ; महा ; सण ; कप्प; महा) । कृ—णिवेसियव्व; (सुपा ३६४)
णिवेस पुं [निवेश] १ स्थापन, आधान; (ठा ६; उप पृ २३०) २ प्रवेश; (निचू ४) । ३ आवास-स्थान, डेरा; (बृह १) ।
णिवेस पुं [नृपेश] १ महान् राजा, चक्रवर्ती राजा ; (सुपा ४६३) ।
णिवेसण न [निवेशन] १ स्थान, बैठना ; (आचा) । २ एक ही दरवाजे वाले अनेक गृह ; (आव ४) ।
णिवेसाविय वि [निवेशित] बैठाया हुआ ; (महा) ।
णिव्व न [नीव्र] छदि, पटल-प्रान्त ; (दे ४, ४८ ;पाअ) ।
णिव्व न [दे] १ ककुद, चिह्न; २ व्याज, बहाना; (दे ४, ४८)।
णिव्वक्कर वि [दे] परिहास-रहित, सत्य; (कुप्र १९७)।
णिव्वक्कल वि [निर्वल्कल] वल्कल-रहित; (पि ६२)।
णिव्वट्ट देखो णिव्वत्त=निर्+वर्तय् । संकृ—णिव्वट्टित्ता ; (ठा २,४) ।
णिव्वट्ट (अप) देखो णिच्चट्ट ; (हे ४, ४२२ टि) ।
णिव्वट्टग वि [निर्वर्तक] बनाने वाला, कर्ता ; (आव४) ।
णिव्वट्टिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया हुआ ; (आचा २, ४, २) ।
णिव्वड सक [मुच्] दुःख को छोड़ना । णिव्वडइ ; (षड्) ।
णिव्वड अक [भू] १ पृथक् होना, जुदा होना । २ स्पष्ट होना । णिव्वडइ ; (हे ४, ६२) ।
णिव्वड देखो णिव्वल=निर्+पद् ; (सुपा १२२) ।
णिव्वडिअ वि [भूत] १ पृथग्-भूत, जो जुदा हुआ हो ; (से ६, ८८) । २ स्पष्टीभूत, जा व्यक्त हुआ हो; (सुर ७, १०४) ।
णिव्वडिअ वि [निष्पन्न] सिद्ध, कृत, निर्वृत्त ; (पाअ); "सुकुलुप्पत्ती य गुणन्नुया य सम्मं इमीए णिव्वडिया" (सुपा १२२) ।
णिव्वढ वि [दे] नग्न, नंगा ; (दे ४, ३८) ।
णिव्वण वि [निर्व्रण] व्रण-रहित, क्षत-वर्जित ; (णाया १, ३ ; औप) ।
णिव्वण्ण सक [निर्+वर्णय्] १ श्लाघा करना, प्रशंसा करना । २ देखना । वकृ—णिव्वण्णंत ; (से ३, ४४ ; उप १०३१ टी ; महा) ।
णिव्वत्त सक [निर्+वर्तय्] बनाना, करना, सिद्ध करना । णिव्वत्तेइ ; (महा) । संकृ—णिव्वत्तिऊण, णिव्वत्तेऊण; (महा) ।
णिव्वत्त सक [निर्+वृत्तय्] गोल बनाना, वर्तुल करना । कवकृ—णिव्वत्तिज्जमाण ; (भग) ।
णिव्वत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, रचित, निर्मित ; (महा ; औप) ।
णिव्वत्तण न [निर्वर्तन] निष्पत्ति, रचना, बनावट ; (उप पृ १८६) । °ाधिकरणिया, °ाहिगरणिया स्त्री [°ाधिकरणिकी] शस्त्र बनाने की क्रिया ; (ठा२, १ ; भग३,३)।
णिव्वत्तणया, णिव्वत्तणा स्त्री [निर्वर्तना] ऊपर देखो ; (पण्ण ३४ ; उत्त ३) ।
णिव्वत्तय वि [निर्वर्तक] निष्पन्न करने वाला, बनाने वाला; (विसे ११४२ ; स ५९३ ; हे २, ३०) ।
णिव्वत्ति स्त्री [निर्वृत्ति] निष्पत्ति, विनिर्माण ; (विसे ३००२) । देखो णिव्वित्ति ।
णिव्वत्तिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया हुआ ; (स ३३६ ; सुर १५, २२१; संबि १०) ।
णिव्वत्तिय वि [निर्वृत्तित] गोलाकार किया हुआ; (भग)।
णिव्वमिअ वि [दे] परिभुक्त ; (दे ४, ३६) ।
णिव्वय अक [निर्+वृ] शान्त होना, उपशान्त होना । कृ—णिव्वयणिज्ज ; (स ३०१) ।
णिव्वय वि [निर्वृत] १ उपशान्त, शम-प्राप्त ; (सूअ १, ४, २) । २ परिणत, परिणाम-प्राप्त ; (दसनि १) ।
णिव्वय वि [निर्व्रत] व्रत-रहित, नियम-रहित ; (पउम २, ८८ ; उप २६४ टी) ।
णिव्वयण न [निर्वचन] १ निरुक्ति, शब्दार्थ-कथन ; (आवम) । २ उत्तर, जवाब ; (ठा १०) । ३ वि. निरुक्ति करने वाला, निर्वाचक; "जाव दविओवओगो, अपच्छिमविअप्पनिव्वयणो" (सम्म ८) ।
णिव्वयणिज्ज देखो णिव्वय=निर्+वृ ।
णिव्वर सक [कथय्] दुःख कहना । णिव्वरइ ; (हे ४, ३) । भूका—णिव्वरही ; (कुमा) । कर्म— "कह तम्मि निव्वरिज्जइ, दुक्खं कंडुज्जुएण हिअएण । अद्दाए पडिबिंबं व, जम्मि दुक्खं न संकमइ ; (स ३०६) ।

णिव्वर सक [छिद्] छेदन करना, काटना। णिव्वरइ; (हे ४, १२४)।

णिव्वरण न [कथन] दुःख-निवेदन; (गा २५५)।

णिव्वरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ, खण्डित; (कुमा)।

णिव्वल सक [मुच्] दुःख को छोड़ना। णिव्वलेइ; (हे ४, ९२)।

णिव्वल अक [निर्+पद्] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना। णिव्वलइ; (हे ४, १२८)।

णिव्वल देखो णिच्चल=क्षर्। णिव्वलइ; (हे ४,१७३टि)।

णिव्वल देखो णिव्वड=भू। वकृ—णिव्वलंत, णिव्वलमाण; (से १, ३६; ७, ४२)।

णिव्वलिअ वि [दे] १ जल-धौत, पानी से धोया हुआ; २ प्रविगणित; ३ विघटित, वियुक्त; (दे ४, ५१)।

णिव्वव सक [निर्+वापय्] ठंढ़ा करना, बुझाना। णिव्ववेहि; (स ४५५)। णिव्ववसु; (काल)। वकृ—णिव्ववंत; (सुपा २२५)। कृ—णिव्ववियव्व; (सुपा २९०)।

णिव्ववण न [निर्वापण] १ बुझाना, शान्त करना; २ वि. शान्त करने वाला, ताप को बुझाने वाला; (सुर ३,२३७)।

णिव्वविअ वि [निर्वापित] बुझाया हुआ, ठंढा किया हुआ; (गा ३१७; सुर २, ७४)।

णिव्वह अक [निर्+वह्] १ निभना, निर्वाह करना, पार पड़ना। २ आजीविका चलाना। णिव्वहइ; (स १०५; वज्जा ६)। कर्म—णिव्वुब्भइ; (पि ५४१)। वकृ—णिव्वहंत; (श्रा १२; कुप्र ३३)। कृ—निव्वहियव्व; (कुप्र ३७५)।

णिव्वह सक [उद्+वह्] १ धारण करना। २ ऊपर उठाना। णिव्वहइ; (षड्)।

णिव्वहण न [निर्वहण] निर्वाह; (सुपा १७५; कुप्र ३७५)।

णिव्वहण न [दे] विवाह, सादी; (दे ४, ३९)।

णिव्वा अक [वि+श्रम्] विश्राम करना। णिव्वाइ; (हे ४, १५९))। वकृ—णिव्वाअंत; (से ८, ८)।

णिव्वाघाइम वि [निर्व्याघातिम] व्याघात-रहित, स्खलना-रहित; (औप)।

णिव्वाघाय वि [निर्व्याघात] १ व्याघात-वर्जित; (णाया १, १; भग; कप्प)। २ न. व्याघात का अभाव; (पण्ण २)।

णिव्वाघाया स्त्री [निर्व्याघाता] एक विद्या-देवी; (पउम ७, १४५)।

णिव्वाण न [निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष, निर्वृति; (विसे १९७५)। २ सुख, चैन, शान्ति, दुःख-निवृत्ति; "निउणमणो निव्वाणं सुंदरि निस्संसयं कुणइ" (उप ७२८ टी; पउम ४६, १६)। ३ बुझाना, विध्यापन; (आव ४)। ४ वि. बुझा हुआ; "जह दीवो णिव्वाणो" (विसे १९९१; कुप्र ५१)। ५ पुं. ऐरवत वर्ष में होने वाले एक जिन-देव का नाम; (सम १५४)।

णिव्वाण न [दे] दुःख-कथन; (दे ४, ३३)।

णिव्वाणि पुं [निर्वाणिन्] भरतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में संजात एक जिन-देव; (पव ७)।

णिव्वाणी स्त्री [निर्वाणी] भगवान् श्री शान्तिनाथ की शासन-देवी; (संति १; १०)।

णिव्वाय वि [निर्वाण] बीता हुआ, व्यतीत; (से १४, १४)।

णिव्वाय वि [विश्रान्त] १ जिसने विश्राम किया हो वह; (कुमा)। २ सुखित, निर्वृत; (से १३, २३)।

णिव्वाय वि [निर्वात] वायु-रहित; (णाया १, १; औप)।

णिव्वालिय वि [भावित] पृथक् किया हुआ; (से १४, ५४)।

णिव्वाव देखो णिव्वव। णिव्वावेमि; (स ३५२)। संकृ—णिव्वाविऊण; (निचू १)।

णिव्वाव पुं [निर्वाप] घी, शाक आदि का परिमाण; (निचू १)। °कहा स्त्री [°कथा] एक तरह की भोजन-कथा; (ठा ४, २)।

णिव्वावइत्तअ (शौ) वि [निर्वापयितृक] ठंढ़ा करने वाला; (पि ६००)।

णिव्वावण न [निर्वापण] बुझाना, विध्यापन; (दस४)।

णिव्वावणा स्त्री [निर्वापणा] बुझाना, ठंढ़ा करना, उपशान्ति; (गउड)।

णिव्वाविय वि [निर्वापित] ठंढा किया हुआ; (णाया १, १; दस ५, १)।

णिव्वासण न [निर्वासन] देश-निकाला; (स ५३४; कुप्र २४३)।

णिव्वासणा स्त्री [निर्वासना] ऊपर देखो; (पउम ६६, ४१)।

णिव्वाह पुं [**निर्वाह**] १ निभाना, पार-प्राप्ति । २ आजीविका, जीवन-सामग्री ; "निव्वाहं किंपि दाउं च" (सुपा ४८८) ।

णिव्वाहग वि [**निर्वाहक**] निर्वाह करने वाला ; (रंभा) ।

णिव्वाहण न [**निर्वाहण**] १ निर्वाह, निभाना ; (सुपा ३९४) । २ निस्सार करना; (राज) ।

णिव्वाहिअ वि [**निर्वाहित**] अतिवाहित, विताया हुआ, गुजारा हुआ ; (से ९, ४२) ।

णिव्वाहिअ वि [**निर्व्याधिक**] व्याधि-रहित, नीरोग ; (से ९, ४२) ।

णिव्विअप्प देखो **णिव्विगप्प** ; (सम्म ३३) ।

णिव्विआर वि [**निर्विकार**] विकार-रहित ; (गा ५०६) ।

णिव्विइअ वि [**निर्विकृतिक**] १ घृत आदि विकृति-जनक पदार्थों से रहित ; (औप) । २ प्रत्याख्यान-विशेष, जिसमें घृत आदि विकृतियों का त्याग किया जाता है; (पव ४ ; पंचा ५) ।

णिव्विइगिच्छ वि [**निर्विचिकित्स**] फल-प्राप्ति में शङ्का-रहित ; (कप्प ; धर्म २) ।

णिव्विइगिच्छ न [**निर्विचिकित्स्य**] फल-प्राप्ति में संदेह का अभाव ; (उत्त २८) ।

णिव्विइगिच्छा स्त्री [**निर्विचिकित्सा**] फल-प्राप्ति में शङ्का का अभाव ; (औप ; पडि) ।

णिव्विकप्प } **णिव्विगप्प** } वि [**निर्विकल्प**] १ संदेह-रहित, निःसंशय; (कुमा ; गच्छ २) । २ भेद-रहित ; (सम्म ३३) ।

णिव्विगिअ देखो **णिव्विइअ** ; (पा २) ।

णिव्विग्घ वि [**निर्विघ्न**] विघ्न-रहित, बाधा-वर्जित ; (सुपा १८७ ; सण) ।

णिव्विचिंत वि [**निर्विचिन्त**] चिन्ता-रहित, निश्चिन्त ; (सुर ७, १२३) ।

णिव्विज्ज अक [**निर्+विद्**] निर्वेद पाना, विरक्त होना । णिव्विज्जेज्जा ; (उव) ।

णिव्विट्ठ वि [**दे**] उचित, योग्य; (दे ४, ३४) ।

णिव्विट्ठ वि [**निर्विष्ट**] उपभुक्त, आसेवित, परिपालित ; (पाअ ; अणु) । °**काइय** न [°**कायिक**] जैन शास्त्र में प्रतिपादित एक तरह का चारित्र ; (अणु ; इक) ।

णिव्विण्ण वि [**निर्विण्ण**] निर्वेद-प्राप्त, खिन्न ; (महा) ।

णिव्वित्त वि [**दे**] सो कर उठा हुआ ; (दे ४, ३२) ।

णिव्वित्ति देखो **णिव्वत्ति** । २ इन्द्रिय का आकार, द्रव्येन्द्रिय-विशेष ; (विसे २९९४) ।

णिव्विदुगुंछ वि [**निर्विजुगुप्स**] घृणा-रहित; (धर्म १) ।

णिव्विन्न देखो **णिव्विण्ण** ; (उव) ।

णिव्विभाग वि [**निर्विभाग**] विभाग-रहित ; (दंस ५) ।

णिव्वियण वि [**निर्विजन**] १ मनुष्य-रहित; २ न. एकान्त स्थल ; (सुर ९, ४२) ।

णिव्विर वि [**दे**] विपिट, वेठा हुआ ; "अइणिव्विरनासाए" (गा ७२८ टि) ।

णिव्विराम वि [**निर्विराम**] विराम-रहित; (उप पृ १८३) ।

णिव्विलंबक्कि वि [**निर्विलम्ब**] विलम्ब-रहित, शीघ्र; (सुपा २५५ ; कुप्र ५२) ।

णिव्विवेअ वि [**निर्विवेक**] विवेक-शून्य ; (सुपा ३२३ ; ५०० ; गउड ; सुर ८, १८१) ।

णिव्विस सक [**निर्+विश्**] त्याग करना । निव्विसेज्जा , (कस) । वकृ—**णिव्विसंत** ; (राज) ।

णिव्विस वि [**निर्विष**] विष-रहित ; (औप) ।

णिव्विसंक वि [**निर्विशङ्क**] शङ्का-रहित, निर्भय ; (सुर १२, १९) ।

णिव्विसमाण न [**निर्विशमान**] १ चारित्र-विशेष ; (ठा ३, ४) । २ वि. उस चारित्र को पालने वाला ; (ठा ६) । °**कप्पट्ठिइ** स्त्री [°**कल्पस्थिति**] चारित्र-विशेष की मर्यादा ; (कस) ।

णिव्विसय वि [**निर्विषय**] १ विषयों की अभिलाषा से रहित ; (उत्त १४) । २ अनर्थक, निरर्थक ; (पंचा १२ ; उप ९२५) । ३ देश से बाहर किया हुआ, जिसको देश-निकाले की सजा हुई हो वह; (सुर ९, ३९ ; सुपा ५६६) ।

णिव्विसिट्ठ वि [**निर्विशिष्ट**] विशेष-रहित, समान, तुल्य ; (उप ५३० टी) ।

णिव्विसी स्त्री [**निर्विषी**] एक महौषधि; (ती ५) ।

णिव्विसेस वि [**निर्विशेष**] १ विशेष-रहित, समान, साधारण ; (स २३ ; सम्म ९९ ; प्रासू ९८) । २ अभिन्न, जो जुदा न हो ; (से १५, ६५) ।

णिव्वुअ वि [**निर्वृत**] निर्वृति-प्राप्त ; (स ५६३; कप्प) ।

णिव्वुइ स्त्री [**निर्वृति**] १ निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति ; (कुमा ; प्रासू १६४)। २ मन की स्वस्थता, निश्चिन्तता ; (सुर ४, ८६)। ३ सुख, दुःख-निवृत्ति ; (आव ४)। ४ जैन साधुओं की एक शाखा ; (कप्प)। ५ एक राज-कन्या ; (उप ६३६)। °**कर** वि [°**कर**] निर्वृति-जनक ; (पण्ण १)। °**जणय** वि [°**जनक**] निर्वृति का उत्पादक , (गा ४२१)।

णिव्वुड देखो **णिव्वुअ** ; (कुमा ; आचा)।

णिव्वुड्ड देखो **णिवुड्ड**= नि+मस्ज् । वकृ—**णिव्वुड्डमाण** ; (राज)।

णिव्वुड्ड वि [**निर्व्यूढ**] निर्वाहित, निभाया हुआ, (गा३२)।

णिव्वुत्त देखो **णिवुत्त** , (गा १५५)।

णिव्वुत्त देखो **णिव्वत्त**=निर्वृत्त ; (पिंग)।

णिव्वुत्ति देखो **णिव्वत्ति** ; (गा ८२८)।

णिव्वुद देखो **णिव्वुअ** ; (सक्षि ६)।

णिव्वुभ° देखो **णिव्वह**=निर्+वह् ।

णिव्वूढ वि [**निर्व्यूढ**] १ जिसका निर्वाह किया गया हो वह; २ कृत, विहित, निर्मित ; (गा २५५; से १, ४६)। ३ जिसने निर्वाह किया हो वह, पार-प्राप्त ; (विवे ४४)। ४ त्यक्त, परिमुक्त; (से ५, ६२)। ५ बाहर निकाला हुआ, निस्सारित; "निव्वूढा य पएसा ततो गाढव्वओसंमावन्ना" (उप १३१ टी)।

णिव्वूढ वि [**दे**] १ स्तब्ध; (दे ४, ३३) । २ न. घर का पश्चिम आँगन ; (दे ४, २६)।

णिव्वेअ पुं [**निर्वेद**] १ खेद, विरक्ति ; (कुमा; द्र ६२)। २ संसार की निर्गुणता का अवधारण ; (उप ६८६)।

णिव्वेअण न [**निर्वेदन**] १ खेद, वैराग्य। २ वि. वैराग्य-जनक। स्त्री—°**णी** ; (ठा ४, २)।

णिव्वेढ सक [**निर्+वेष्टय्**] १ नाश करना, क्षय करना। २ घेरना। ३ बाँधना। वकृ—**णिव्वेढंत** ; (विसे २७४५ ; आचा २, ३, २)।

णिव्वेढ सक [**निर्+वेष्टय्**] मजबूताई से वेष्टन करना। णिव्वेढिज्ज, णिव्वेढेज्ज ; (आचा२, ३,२, २ ; पि३०४)।

णिव्वेढ वि [**दे**] नग्न, नगा ; (दे ४, २८)।

णिव्वेर वि [**निर्वैर**] वैर-रहित ; (अच्चु ५६)।

णिव्वेरिस वि [**दे**] १ निर्दय, निष्करुण ; २ अत्यन्त, अधिक ; (दे ४, ३७)।

णिव्वेल्ल अक [**निर्+वेल्ल्**] फुरना। णिव्वेल्लइ; (पि १०७)।

णिव्वेल्लिअ वि [**निर्वेल्लित**] प्रस्फुरित, स्फूर्ति-युक्त ; (से ११, १६)।

णिव्वेस वि [**निर्द्वेष**] द्वेष-रहित ; (से १५, ६५)।

णिव्वेस पुं [**निर्वेश**] १ लाभ, प्राप्ति ; (ठा ५, २)। २ व्यवस्था ; "कम्माण कप्पिआण काही कप्पंतरेसु को णिव्वेसं" (अच्चु १८)।

णिव्वोढव्व वि [**निर्वोढव्य**] निर्वाह-योग्य; (आव ४)।

णिव्वोल सक [**क्रु**] क्रोध से होठ को मलिन करना। णिव्वोलइ ; (हे ४, ६६)।

णिव्वोलण न [**करण**] क्रोध से होठ को मलिन करना ; (कुमा)।

णिस° देखो **णिसा** ; (कुमा ; पउम १२, ६५)।

णिस सक [**नि+अस्**] स्थापन करना। णिसेइ ; (औप)।

णिसंत वि [**निशान्त**] १ श्रुत, सुना हुआ ; (णाया १, १; ४; उवा)। २ अत्यन्त ठड़ा, (आवम)। ३ रात्रि का अवसान, प्रभात; "जहा णिसंते तवणच्चिमाली, पभासई केवल-भारहं तु" (दस ६, १; १४)।

णिसंस वि [**नृशंस**] क्रूर, निर्दय ; (सुपा ४०६)।

णिसग्ग पुं [**निसर्ग**] १ स्वभाव, प्रकृति ; (ठा २, १ ; कुप्र १४८)। २ निसर्जन, त्याग, (विसे)।

णिसग्ग वि [**नैसर्ग**] स्वभाव से होने वाला, स्वाभाविक ; (सुपा ६४८)।

णिसग्गिय वि [**नैसर्गिक**] स्वाभाविक ; (सण)।

णिसज्जा स्त्री [**निषद्या**] १ आसन ; (दस ६)। २ उपवेशन, बैठना ; (वव ४)। देखो **णिसिज्जा**।

णिसट्ठ वि [**निसृष्ट**] १ निकाला हुआ, त्यक्त ; (सूअ १, १६)। २ दत्त, दिया हुआ ; (णाया १, १—पत्र ७१)।

णिसट्ठ वि [**दे**] प्रचुर, बहुत ; (ओघ ८७)।

णिसट्ठ (अप) वि [**निषण्ण**] बैठा हुआ ; (सण)।

णिसढ पुं [**निषध**] १ हरिवर्ष क्षेत्र से उत्तर में स्थित एक पर्वत ; (ठा २, ३)। २ स्वनाम-ख्यात एक वानर, राम-सैनिक ; (से ४, १०)। ३ बैल, साँढ ; (सुज्ज ४)। ४ बलदेव का एक पुत्र; (निर १, ५; कुप्र ३७२)। ५ देश-विशेष ; ६ निषध देश का राजा ; (कुमा)। ७ स्वर-विशेष ; (हे १, २२६ ; प्राप्र)। °**कूड** न [°**कूट**]

निषध पर्वत का एक शिखर ; (ठा २, ३)। °द्दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष ; (जं ४)।

णिसण्ण वि [**निषण्ण**] १ उपविष्ट, स्थित; (गा १०८ ; ११६ ; उत्त २०) । २ कायोत्सर्ग का एक भेद; (आव ५) ।

णिसण्ण वि [**निःसंज्ञ**] संज्ञा-रहित ; (से ६, ३८)।

णिसत्त वि [**दे**] संतुष्ट, सताप-युक्त ; (दे ४, ३०)।

णिसन्न देखो **णिसण्ण** ; (उत्र ; णाया १, १)।

णिसम सक [**नि+शमय्**] सुनना । वकृ—**णिसमेंत**; (आवम)। कवकृ—**णिसम्मंत** ; (गउड) । संकृ—**णिसमिअ, णिसम्म** ; (नाट—वेणी ६८; उवा ; आचा)।

णिसमण न [**निशमन**] श्रवण, आकर्णन ; (हे १, २६९; गउड) ।

णिसर देखो **णिसिर**। कवकृ—**निसरिज्जमाण**; (भग)।

णिसल्ल देखो **णिस्सल्ल** ; (श्रा ४०)।

णिसह देखो **णिसढ** ; (इक)।

णिसह देखो **णिस्सह** ; (षड्) ।

णिसा स्त्री [**निशा**] १ रात्रि, रात ; (कुमा ; प्रासू ५५) २ पीसने का पत्थर, शिलौट; (उवा) । °अर पुं [°**कर**] चन्द्र, चाँद ; (हे १, ८ ; पड्)। °अर पुं [°**चर**] राक्षस; (कप्पू ; से १२, ६६) । °अरिंद पुं [°**चरेन्द्र**] राक्षसो का नायक, राक्षस-पति ; (से ७, ५६)। °नाह पुं [°**नाथ**] चन्द्रमा ; (सुपा ४१६) । °लोढ न [°**लोष्ठ**] शिला-पुत्रक, पीसने का पत्थर, लोढ़ा ; (उवा)। °वइ पुं [°**पति**] चन्द्र, चाँद , (गउड)। देखो **णिसि°** ।

णिसाण सक [**नि+शाणय्**] शान पर चढ़ाना, पैनाना, तीक्ष्ण करना । संकृ—**निसाणिऊण** ; (स १४३)।

णिसाण न [**निशाण**] शान, एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किया जाता है ; (गउड ; सुपा २८)।

णिसाणिअ वि [**निशाणित**] शान दिया हुआ, पैनाया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ , (सुपा ५६)।

णिसाम देखो **णिसम** । णिसामेइ ; (महा)। वकृ—**णिसामेंत** ; (सुर ३, ७८)। संकृ—**णिसामिऊण, णिसामित्ता** ; (महा ; उत २)।

णिसाम वि [**निःश्याम**] मालिन्य-रहित, निर्मल ; (से ६, ४७)।

णिसामण देखो **णिसमण** ; (सुपा २३)।

णिसामिअ वि [**दे. निशमित**] १ श्रुत, आकर्णित ; (दे ४, २७ ; पाअ ; गा २९)। २ उपशमित, दवाया हुआ; ३ सिमटाया हुआ, संकोचित ; "निस्सामिओ फणाभोओ" (स ३५८)।

णिसामिर वि [**निशमयितृ**] सुनने वाला; (सण) ।

णिसाय वि [**दे**] प्रसुप्त ; (दे ४, ३५)।

णिसाय वि [**निशात**] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण; (पाअ)।

णिसाय पुं [**निषाद**] १ चाण्डाल ; (दे ४, ३५) । २ स्वर-विशेष ; (ठा ७)।

णिसायंत वि [**निशातान्त**] तीक्ष्ण धार वाला ; (पाअ)।

णिसास सक [**निर्+श्वासय्**] निःश्वास डालना । वकृ—**णिस्सासअंत**; (पउम ६१, ७३)।

णिसास देखो **णीसास** , (पिंग)।

णिसि° देखो **णिसा** ; (हे १, ८ ; ७२ ; पड् ; महा ; सुर १, २७)। °पालअ पुं [°**पालक**] छन्द-विशेष ; (पिंग)। °भत्त न [°**भक्त**] रात्रि-भोजन ; (ओघ ७८७)। °भुत्त न [°**भुक्त**] रात्रि-भोजन ; (सुपा ४९१)।

णिसिअ देखो **णिसीअ** । णिसिअइ ; (सण , कप्प)। संकृ—णिसिइता ; (कप्प)।

णिसिअ वि [**निशित**] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण ; (से ५, ४९ ; महा ; हे ४, ३३०)।

णिसिक्क सक [**नि+सिच्**] प्रक्षेप करना, डालना । संकृ—**णिसिक्किय** ; (आचा)।

णिसिज्जा देखो **णिसज्जा**, (कप्प ; सम ३५ , ठा ५,१) । ३ उपाश्रय, साधुओं का स्थान, (पंच ४) ।

णिसिज्झमाण देखो **णिसेह**=नि+षिध् ।

णिसिट्ठ वि [**निसृष्ट**] १ वाहर निकाला हुआ; (भास १०) । २ दत्त, प्रदत्त ; (आचा)। ३ अनुज्ञात ; (वृह २)। ४ वनाया हुआ । क्रिवि. "आमयहराइं ..पउमो निहा निसिट्ठं उवणमेइ" (उप ९८६ टी) ।

णिसिद्ध वि [**निषिद्ध**] प्रतिषिद्ध, निवारित ; (पंचा १२)।

णिसिर सक [**नि+सृज्**] १ वाहर निकालना । २ देना, त्याग करना । ३ करना । णिसिरइ ; (भास ५ ; भग) । "णिरवराहाण । निसिरंति जे न दंडं, तेवि हु पाविंति निव्वाणं" (सुर १५, २३४) । कर्म—निसिरिज्जइ, निसिरिज्जए ; (विसे ३५७) । वकृ—**निसिरंत** ; (पि २३५)। कवकृ— **निसिरिज्जमाण** ; (पि २३५)। संकृ—**णिसिरित्ता** ; (पि २३५)। प्रयो—निसिरावेंति; (पि २३५)।

णिसिरण न [निसर्जन] १ निस्सारण; (भास २)। २ त्याग; (णाया १, १६)।
णिसिरणया } स्त्री [निसर्जना] १ त्याग, दान; (आचा
णिसिरणा } २, १, १०)। २ निस्सारण, निष्कासन; (भग)।
णिसीअ अक [नि + षद्] बैठना। णिसीअइ, (भग)। वकृ—**णिसीअंत, णिसीअमाण**; (भग १३, ६; सूअ १, १, २)। संकृ—**णिसीइत्ता**; (कप्प)। हेकृ—**णिसीइत्तए**; (कस)। कृ—**णिसीइयव्व**; (णाया १, १; भग)।
णिसीअण न [निषदन] उपवेशन, बैठना; (उप २६४ टी; स १८०)।

णिसीआवण न [निषादन] बैठाना, (कस ४, २६ टी)।
णिसीढ देखो **णिसीह**=निशीथ, (हे १, २१६; कुमा)।
णिसीदण देखो **णिसीअण**, (औप)।
णिसीह पुंन [निशीथ] १ मध्य रात्रि; (हे १, २१६; कुमा)। २ प्रकाश का अभाव; (निचू ३)। ३ न. जैन आगम-ग्रन्थ विशेष; (णंदि)।
णिसीह पुं [नृसिंह] उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य; (कुमा)।
णिसीहिआ स्त्री [निशीथिका] १ स्वाध्याय-भूमि, अध्ययन-स्थान; (आचा २, २, २)। २ थोड़े समय के लिए उपात्त स्थान; (भग १४, १०)। ३ आचाराङ्ग सूत्र का एक अध्ययन; (आचा २, २, २)।
णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] १ स्वाध्याय-भूमि; (सम ४०)। २ पाप-क्रिया का त्याग; (पडि; कुमा)। ३ व्यापारान्तर के निषेध रूप आचार, (ठा १०)। देखो **णिसेहिया**।
णिसीहिणी स्त्री [निशीथिनी] रात्रि, रात; (उप पृ १२७)। °**णाह** पुं [°नाथ] चन्द्रमा; (कुमा)।
णिसुअ वि [दे. निश्रुत] श्रुत, आकर्णित; (दे ४, २७; सुर १, १९९; २, २२९; महा; पाअ)।
णिसुंद पु [निसुन्द] रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २९)।
णिसुंभ सक [नि + शुम्भ्] मार डालना, व्यापादान करना। कवकृ—**णिसुंभंत, णिसुब्भंत**; (से ५, ६६; १४, ३; पि ५३५)।
णिसुंभ पुं [निशुम्भ] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा, एक प्रतिवासुदेव; (पउम ५, १५६; पव २११)। २ दैत्य-विशेष; (पिंग)।
णिसुंभण न [निशुम्भन] १ मर्दन, व्यापादन, विनाश। २ वि. मार डालने वाला; (सूअ १, ५, १)।
णिसुंभा स्त्री [निशुम्भा] स्वनाम-ख्यात एक इन्द्राणी; (णाया २; इक)।
णिसुंभिअ वि [निशुम्भित] निपातित, व्यापादित; (सुपा ४६०)।
णिसुट्ट } वि [दे] ऊपर देखो; (हे ४, २५८; से १०,३६)।
णिसुट्टिअ }
णिसुड देखो **णिसुढ**=नम्। निसुडइ; (षड्)।
णिसुड्ड देखो **णिसुट्ट**; (हे ४, २५८ टि)।
णिसुढ अक [नम्] भार से आक्रान्त होकर नीचे नमना। णिसुढइ; (हे ४, १५८)।
णिसुढ सक [नि + शुम्भ्] मारना, मार कर गिराना। कवकृ—**णिसुढिज्जंत**; (से ३, ५७)।
णिसुढिअ वि [नत] भार से नमा हुआ; (पाअ)।
णिसुढिअ वि [निशुम्भित] निपातित; (से १२, ६१)।
णिसुढिर वि [नम्र] भार से नमा हुआ; (कुमा)।
णिसुण सक [नि + श्रु] सुनना, श्रवण करना। निसुणइ, णिसुणेइ, णिसुणेमि; (सण; महा; सद्धि १२८)। वकृ—**निसुणंत, निसुणमाण**, (सुपा १०६; सुर १२, १७४)। कवकृ—**निसुणिज्जंत**; (सुपा ४५; रयण ६४)। संकृ—**निसुणिउं, निसुणिऊण, निसुणिऊणं**; (सुपा १४; महा; पि ५८५)।
णिसुद्ध वि [दे] १ पातित, गिराया हुआ; (दे ४, ३६; पाअ; से ५, ६८)।
णिसुब्भंत देखो **णिसुंभ**=नि + शुम्भ्।
णिसूग देखो **णिस्सूग**; (सुपा ३७०)।
णिसूड देखो **णिसुढ**=नि+शुम्भ्। हेकृ—**निसूडिउं**; (सुपा ३९६)।
णिसेज्जा देखो **णिसज्जा**; (उव; पव ६७)।
णिसेणि देखो **णिस्सेणि**; (सुर १३, १६०)।
णिसेय पु [निषेक] १ कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष; (ठा ६)। २ सेचन, सींचना; "ता संपइ जिणवरबिंबदंसणामयनिसेएण पोणिज्जउ नियदिट्टि" (सुपा २६६)। "काओवि कुणंति सिरिखंडरसनिसेयं" (सुपा २०)।
णिसेव सक [नि+सेव्] १ सेवा करना, आदर करना। २ आश्रय करना। निवसेइ, निसेवए; (महा; उव)। वकृ—**णिसेव-**

माण ; (महा) । कवकृ—णिसेविज्जंत; (ओघ ५६) । कृ—निसेवणिज्ज ; (सुपा ३७) ।

णिसेवय वि [निषेवक] १ सेवा करने वाला ; २ आश्रय करने वाला ; (पुप्फ २५१) ।

णिसेवि वि [निषेविन्] ऊपर देखो; (स १०) ।

णिसेविय वि [निषेवित] १ सेवित, आदृत ; (आवम)। २ आश्रित , (उत्त २०) ।

णिसेह सक [नि+षिध्] निषेध करना, निवारण करना । निसेहइ , (हे ४, १३४) । कवकृ—निसिज्झमाण ; (सुपा ५७२) । हेकृ—निसेहिउं ; (स १६८) । कृ—" निसेहियव्वा सययंपि माया " (सत ३५) ।

णिसेह पुं [निषेध] १ प्रतिषेध, निवारण ; (उव , प्रासू १८१) । २ अपवाद ; (आव ५५) ।

णिसेहण न [निषेधन] निवारण ; (आवम) ।

णिसेहणा स्त्री [निषेधना] निवारण ; (आव १) ।

णिसेहिया देखो णिसीहिआ=नैषेधिकी । १ मुक्ति, मोक्ष; २ श्मशान-भूमि ; ३ बैठने का स्थान ; ४ नितम्ब, द्वार के समीप का भाग ; (राज) ।

णिस्स वि [निःस्व] निर्धन, धन-रहित ; (पाअ) । °यर वि [°कर] १ निर्धन-कारक । २ कर्म को दूर करने वाला; (आचा २, ४, १) ।

णिस्संक पु [दे] निर्भर , (दे ४, ३२) ।

णिस्संक वि [निःशङ्क] १ शङ्का रहित; (सूअ २, ७ , महा) । २ न शङ्का का अभाव , (पचा ६) ।

णिस्संकिअ वि [निःशङ्कित] १ शङ्का-रहित ; (ओघ ५६ भा ; णाया १,३) । २ न शङ्का का अभाव , (उत्त २८) ।

णिस्संग वि [निःसङ्ग] सङ्ग-रहित ; (सुपा १४०) ।

णिस्संचार वि [निःसंचार] संचार-रहित, गमनागमन-वर्जित ; (णाया १, ८) ।

णिस्संजम वि [निस्संयम] संयम-रहित ; (पउम २७,५)।

णिस्संत वि [निःशान्त] प्रशान्त, अतिशय शान्त ; (राय)।

णिस्संद देखो णोसंद ; (पराह १, १, नाट—मालती ५१)।

णिस्संदेह वि [निस्संदेह] संदेह-रहित, निःसंशय ,(काल)।

णिस्संधि वि [निस्सन्धि] सन्धि-रहित, सॉधा से रहित ; (पराह १, १) ।

णिस्संस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय ; (महा) ।

णिस्संस वि [निःशंस] श्लाघा-रहित ; (पराह १, १) ।

णिस्संसय वि [निःसंशय] १ संशय-रहित । २क्रिवि. निःसंदेह, निश्चय ; (अभि १८४ ; आवम) ।

णिस्सण पुं [निःस्वन] शब्द, आवाज ; (कुप्र २७) ।

णिस्सण्ण वि [निःसंज्ञ] । संज्ञा-रहित ; (सूअ १,५,१)।

णिस्सत्त वि [निःसत्त्व] धैर्य-रहित, सत्त्व-हीन; (सुपा ३५६)।

णिस्सन्न देखो णिसण्ण ; (रयण ५) ।

णिस्सम्म अक [निर्+श्रम्] बैठना । वकृ—णिस्सम्मंत; (से ६, ३८) ।

णिस्सर अक [निर्+सृ] बाहर निकलना । णिस्सरइ ; (कप्प) । वकृ—णिस्सरंत ; (नाट—चैत ३८) ।

णिस्सरण न [निःसरण] निर्गमन, बाहर निकलना ; (ठा ४, २) ।

णिस्सरण वि [निःशरण] शरण-रहित, त्राण-वर्जित ; (पउम ७३, ३२) ।

णिस्सरिअ वि [दे] स्रस्त, खिसका हुआ ; (दे ४, ४०)।

णिस्सल्ल वि [निःशल्य] शल्य-रहित ; (उप ३२० टी , द्र ५७) ।

णिस्सस अक [निर्+श्वस्] निःश्वास लेना । निस्ससइ, णिस्ससंति ; (भग)। वकृ—णिस्ससिज्जमाण, (ठा१०)।

णिस्सह वि [निःसह] मन्द, अशक्त ; (हे १, १३ ; ९३ ; कुमा) ।

णिस्सा स्त्री [निश्रा] १ आलम्बन, आश्रय, सहारा ; (ठा ५, ३) । २ अधीनता ; (उप १३० टी) । ३ पक्षपात , (वव ३) ।

णिस्साण न [निश्राण] निश्रा, अवलम्बन , (पराह १,३)। °पय न [°पद] अपवाद ; (बृह १) ।

णिस्सार सक [निर्+सारय्] बाहर निकालना । निस्सारइ , (कुप्र १५४) ।

णिस्सार } वि [निःसार] १ सार-हीन, निरर्थक ; (अणु ; **णिस्सारग** } सूअ १,७; आचा) । २ जीर्ण, पुराना, (आचा)।

णिस्सारय वि [निःसारक] निकालने वाला ; (उप २८०टी) ।

णिस्सारिय वि [निःसारित] १ निकाला हुआ ; २ च्यावित, भ्रष्ट किया हुआ , (सूअ १, १४) ।

णिस्सास पुं [निःश्वास] निःश्वास, नीचा श्वास ; (भग)। २ काल-मान विशेष ; (इक) । ३ प्राण-वायु, प्रश्वास ;(प्राप्र) ।

णिस्साहार वि [निःस्वाधार] निराधार, आलम्बन-रहित; (सण) ।

णिस्संग वि [निःशङ्ग] शृङ्ग-रहित ; (सुपा ३१३) ।
णिस्सिंघिय न [निःसिङ्घित] अव्यक्त शब्द-विशेष ; (विसे ५०१) ।
णिस्सिंच सक [निर्+सिच्] प्रक्षेप करना, डालना, फेंकना । वकृ—**णिस्सिंचमाण**, (राज) । संकृ—**णिस्सिंचिय** ; (दस ५, १) ।
णिस्सिणेह वि [निःस्नेह] स्नेह-रहित , (पि १४०) ।
णिस्सिय वि [निश्रित] १ आश्रित, अवलम्बित ; (ठा १० ; भास ३८) । २ आसक्त, अनुरक्त, तल्लीन ; (सुअ १, १, १ ; ठा ५, २) । ३ न. राग, आसक्ति ; (ठा ५, २) ।

णिस्सिय वि [निःसृत] निर्गत, निर्यात ; (भास ३८) ।
णिस्सील वि [निःशील] सदाचार-रहित, दुःशील ; (पउम २, ८८ ; ठा ३, २) ।
णिस्सूग वि [निःशूक] निर्दय, निष्करुण ; (श्रा १२) ।
णिस्सेणि स्त्री [निःश्रेणि] सीढ़ी ; (पण्ह १, १; पाअ) ।
णिस्सेयस न [निःश्रेयस] १ कल्याण, मंगल, क्षेम ; (ठा ४, ४ ; गाया १, ८) । २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण ; (औप ; णंदि) । ३ अभ्युदय, उन्नति , (उत्त ८) ।
णिस्सेयसिय वि [नैःश्रेयसिक] मुमुक्षु, मोक्षार्थी ; (भग १५) ।
णिस्सेस वि [निःशेष] सर्व, सब, सकल ; (उप २००)।
णिह वि [निभ] १ समान, तुल्य, सदृश ; (से १, ५८ ; गा ११४ ; दे १, ५१) । २ न. वहाना, व्याज, छल ; (पाअ) ।
णिह वि [निह] १ मायावी, कपटी ; (सुअ १, ६) । २ पीड़ित ; (सूअ १, २, १) । ३ न आघात-स्थान ; (सूअ १, ५ , २) ।
णिह वि [स्निह] रागी, राग-युक्त ; (आचा) ।
णिहंतव्व देखो **णिहण**=नि+हन् ।
णिहंस पुं [निघर्ष] घर्षण ; (गउड) ।
णिहंसण न [निघर्षण] घर्षण , (से ५, ४६ ; गउड)।
णिहट्टु अ. १ जुदा कर, पृथक् करके ; (आचा) । २ स्थापन कर ; (णाया १, १६) ।
णिहट्ठ वि [निघृष्ट] घिसा हुआ ; (हे २, १७४) ।
णिहण सक [नि+हन्] १ निहत करना, मारना । २ फेंकना । णिहणामि ; (कुप्र २६२)। णिहणाहि ; (कप्प) भूका—णिहणिंसु; (आचा) ।वकृ—**निहणंत**; (सण) । संकृ—**णिहणित्ता**; (पि ५८२) । कृ—**णिहंतव्व**; (पउम ६,१७) ।
णिहण सक [नि+खन्] गाड़ना । "निहणंति धणं धरणीयलम्मि" (वज्जा ११८)। हेकृ—"चोरो दव्वं **निहणि**उम् आरद्धो" (महा) ।
णिहण न [दे] कूल, तीर, किनारा ; (दे ४, २७) ।
णिहण न [निधन] १ मरण, विनाश ; (पाअ ; जी ४६)। २ रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३२) ।
णिहणण न [निहनन] निहति, मारना; (महा ; स १६३)।
णिहणिअ वि [निहत] मारा हुआ; (सुपा १५८ ; सण)।
णिहत्त सक [निधत्तय्] कर्म को निबिड़ रूप से बाँधना । भूका—णिहत्तिंसु ; (भग) । भवि—णिहत्तेस्संति ; (भग)।
णिहत्त देखो **णिधत्त**; (भग) ।
णिहत्तण न [निधत्तन] कर्म का निबिड़ बन्धन ; (भग)।
णिहत्ति देखो **णिधत्ति**; (राज) ।
णिहम्म सक [नि+हम्म्] जाना, गमन करना । णिहम्मइ ; (हे ४, १६२)
णिहय वि [निहत] मारा हुआ; (गा ११८ ; सुर ३,४६)।
णिहय वि [निखात] गाड़ा हुआ ; (स ७५६) ।
णिहर अक [नि+हृ] पाखाना जाना, (प्रामा)
णिहर अक [आ+क्रन्द्] चिल्लाना । णिहरइ ; (षड्) ।
णिहर अक [निर्+सृ] बाहर निकलना । णिहरइ ; (षड्) ।
णिहरण देखो **णीहरण** ; (णाया १, २—पत्र ८६) ।
णिहव देखो **णिहुव** । णिहवइ ; (नाट; पि ४१३) ।
णिहव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ ; (षड्) ।
णिहव पुं [निवह] समूह ; (षड्) ।
णिहस सक [नि+घृष्] घिसना । संकृ—**णिहसिऊण**; (उव) ।
णिहस पुं [निकष] १ कषपट्टक, कसौटी का पत्थर ; (पाअ) । २ कसौटी पर की जाती रेखा ; (हे १, १८६ ; २६० ; प्राप्र) ।
णिहस पुं [निघर्ष] घर्षण, रगड़; (से ६, ३३) ।
णिहस पुं [दे] वल्मीक, सर्प आदि का बिल ; (दे ४,२५)।
णिहसण न [निघर्षण] घर्षण , रगड़; (से ६, १० ; गा १२१; गउड ; वज्जा ११८) ।
णिहसिय वि [निघर्षित] घिसा हुआ ; (वज्जा १५०) ।
णिहा स्त्री [निहा] माया, कपट ; (सूअ १, ८) ।

णिहा सक [**नि+धा**] स्थापन करना । निहेउ; (स ७३८)। कवकृ—**णिहिप्पंत** ; (से ८, ६७) । संकृ—**णिहाय** ; (सूअ १,७) ।
णिहा सक [**नि+हा**] त्याग करना । संकृ—**णिहाय** ; (सूअ १, १३) ।
णिहा } सक [**दृश्**] देखना । णिहाइ, णिहाआइ ;
णिहाआ } (षड्) ।
णिहाण न [**निधान**] वह स्थान जहां पर धन आदि गाड़ा गया हो, खजाना, भण्डार ; (उवा ; गा ३१८ ; गउड) ।
णिहाय पुं [**दे**] १ स्वेद, पसीना ; (दे ४, ४६) । २ समूह, जत्था ; (दे ४, ४६; से ४, ३८; स ४४६ ; भवि; पाअ ; गउड ; सुर ३, २३१) ।
णिहाय पुं [**निघात**] आघात, आस्फालन ; (से १५,७०; महा) ।
णिहाय देखो **णिहा**=नि+धा, नि+हा ।
णिहार पुं [**निहार**] निर्गम ; (पण्ह १, ५ ; ठा ८) ।
णिहारिम न [**निर्हारिम**] जिसके मृतक शरीर को बाहर निकाल कर संस्कार किया जाय उसका मरण ; (भग) । २ वि. दूर जाने वाला, दूर तक फैलने वाला ; (पण्ह २,५) ।
णिहाल देखो **णिभाल** । णिहालेहि ; (स १००) । वकृ—**णिहालंत, णिहालयंत** ; (उप ६४८ टी ; ६८६ टी) । संकृ—**णिहालेउं** ; (गच्छ १) । कृ—**णिहालेयव्व** ; (उप १००७) ।
णिहालण न [**निभालन**] निरीक्षण, अवलोकन ; (उप पृ ७२ ; सुर ११, १२ ; सुपा २३) ।
णिहालिअ वि [**निभालित**] निरीक्षित; (पाअ; स १००) ।
णिहि त्रि [**निधि**] १ खजाना, भंडार; (णाया १, १३) । २ धन आदि से भरा हुआ पात्र ; (हे १, ३५ ; ३, १६ ; ठा ५, ३) । "अण्णेरंव णिहिं विअ सग्गे रज्जं व अमअ-पाणं व" (गा १२५) । ३ चक्रवर्ती राजा की संपत्ति-विशेष, नैसर्प आदि नव निधि ; (ठा ६) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] कुबेर, धनेश ; (पाअ) ।
णिहिअ वि [**निहित**] स्थापित ; (हे २, ६६ ; प्राप्र) ।
णिहिण्ण वि [**निर्भिन्न**] विदारित ; (अच्चु १६) ।
णिहित्त देखो **णिहिअ** ; (गा ५६५ ; काप्र ६०६; प्राप्र) ।
णिहिप्पंत देखो **णिहा**=नि+धा ।
णिहिल वि [**निखिल**] सब, सकल; (अच्चु ६; आरा ५५) ।
णिही स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (राज) ।
णिहीण वि [**निहीन**] तुच्छ, खराब, हलका, क्षुद्र ; "अत्थि निहीणे देहे किं रागनिबंधणं तुज्झ ?" (उप ७२८ टी) ।
णिहु स्त्री [**स्निहु**] औषधि-विशेष ; (जीव १) ।
णिहुअ वि [**निभृत**] १ गुप्त, प्रच्छन्न ; (से १३, १५ ; महा) । २ विनीत, अनुद्धत ; (से ४, ५६) । ३ मन्द, धीमा ; (पाअ ; महा) । ४ निश्चल, स्थिर ; (उत्त १६) । ५ अ-संभ्रान्त, संभ्रम-रहित ; (दस ६) । ६ धृत, धारण किया हुआ ; ७ निर्जन, एकान्त ; ८ अस्त होने के लिए उपस्थित ; (हे १, १३१) । ६ उपशान्त ; (पण्ह २, ५) ।
णिहुअ वि [**दे**] १ व्यापार-रहित, अनुद्युक्त, निश्चेष्ट ; (दे ४, ५० ; से ४, १ ; सूअ १, ८ ; बृह ३) । २ तूष्णीक, मौन ; (दे ४, ५० ; सुर ११, ८४) । ३ न. सुरत, मैथुन ; (दे ४, ५० ; षड्) ।
णिहुअण देखो **णिहुवण** ; (गा ४८३) ।
णिहुआ स्त्री [**दे**] कामिता, संभोग के लिए प्रार्थित स्त्री ; (दे ४, २६) ।
णिहुण न [**दे**] व्यापार, धन्धा ; (दे ४, २६) ।
णिहुत्त वि [**दे**] निमग्न, डूबा हुआ ; (पउम १०२,१६७)।
णिहुत्थिभगा स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३५) ।
णिहुव सक [**कामय्**] संभोग का अभिलाष करना । णिहुवइ ; (हे ४, ४४) ।
णिहुवण न [**निधुवन**] सुरत, संभोग ; (कप्पू ; काप्र १६४), "णिहुवणचुविअणाहिकूविआ" (मै ४२) ।
णिहूअ न [**दे**] १ सुरत, मैथुन , (दे ४, २६) । २ अकिञ्चित्कर ; (विसे २६१७) । देखो **णीहूय** ।
णिहेलण न [**दे**] १ गृह, घर, मकान ; (दे ४, ५१ ; हे २, १७४; कुमा, उप ७२८ टी; स १८०; पाअ; भवि) । २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग; (दे ४, ५१) ।
णिहोड सक [**नि+वारय्**] निवारण करना, निषेध करना । णिहोडइ ; (हे ४, २२) । वकृ—**णिहोडंत** ; (कुमा) ।
णिहोड सक [**पातय्**] १ गिराना; २ नाश करना । णिहोडइ ; (हे ४, २२) ।
णिहोडिय वि [**पातित**] १ गिराया हुआ ; (दंस ३) । २ विनाशित ; (उप ५६७ टी) ।
णी सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णीइ; (हे ४, १६२; गा ४६ अ) । भवि—णीहसि; (गा ७४६) । वकृ—**णिंत,**

णेंत ; (से ३, २ ; गउड ; गा ३३४ ; उप २६४ टी ; गा ४२०) । संकृ—णिंतूण, नीउं ; (गउड; विसे २२२) ।

णी सक [नी] १ ले जाना । २ जानना । ३ ज्ञान कराना, बतलाना । णेइ, णयइ; (हे ४, ३३७; विसे ६१४)। वकृ—**णेंत**; (गा ५० ; कुमा) । कवकृ—**णिज्जंत, णीअमाण** ; (गा ६८२ अ ; से ६, ८१ ; सुपा ४७६) । संकृ—**णइअ, णेउं, णेउआण, णेऊण**; (नाट—मृच्छ २६४; कुमा; पड्; गा १७२)। हेकृ—**णेउं**; (गा ४६७; कुमा) । कृ—**णेअ, णेअव्व**; (पउम ११६, १७, गा ३३६) । प्रयो—णेआवइ; (सण) ।

णीअ वि [दे] समीचीन, सुन्दर ; (पिंग) ।

णीआरण न [दे] बलि-घटी, बली रखने का छोटा कलश; (दे ४, ४३) ।

णीइ स्त्री [नीति] १ न्याय, उचित व्यवहार, न्याय्य व्यवहार; (उप १८६; महा) । २ नय, वस्तु के एक धर्म को मुख्य-तया मानने वाला मत ; (ठा ७) । °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] नीति-प्रतिपादक शास्त्र ; (सुर ६, ६५ ; सुपा १४० ; महा)।

णीका स्त्री [**नौका**] कुल्या, सारणि; (कुमा) ।

णीचअ न [**नीचस्**] १ नीचे, अधः ; (हे १, १५४) । २ वि. नीचा, अधः-स्थित ; (कुमा) ।

णीछूढ देखो **णिच्छूढ**; ; (णदि) ।

णीजूह देखो **णिज्जूह**=दे. निर्यूह; (राज) ।

णीड देखो **णिड्ड** ; (गा १०२ : हे १, १०६) ।

णीण सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णीणइ ; (हे ४, १६२) । णीणंति ; (कुमा) ।

णीण सक [**नी**] १ ले जाना। २ बाहर ले जाना, बाहर निकालना । "सारभंडाणि णीणेइ, असारं अवउज्झइ" (उत्त १६, २२) । भवि—नीणेहिइ; (महा) । वकृ—**णीणेमाण** ; कवकृ—**नीणिज्जंत, णीणिज्जमाण** ; (पि ६२, आचा) । संकृ—**णीणेऊण, णीणेत्ता**; (महा ; उवा) ।

णीणाविय वि [**नायित**] दूसरे द्वारा ले जाया गया, अन्य द्वारा आनीत ; (उप १३६ टी) ।

णीणिअ वि [**गत**] गया हुआ ; (पाअ) ।

णीणिअ वि [**नीत**] १ ले जाया गया ; (उप ५६७ टी , सुपा २६१) । २ बाहर निकाला हुआ ; (णाया १, ४) । " उयरप्पविट्ठछुरिआए नीणिओ अंतपब्भारो "(सुपा ३८१)।

णीणिआ स्त्री [**नीनिका**] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (जीव १) ।

णीम पुं [**नीप**] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़; (पण्ण १ ; औप ; हे १, २३४) ।

णीमी देखो **णीवी** ; (कुमा ; पड्) ।

णीय वि [**नीच**] १ नीच, अधम, जघन्य : (उवा ; सुपा १०७) । २ वि. अधस्तन ; (सुपा ६००) । °**गोय** न [°**गोत्र**] १ क्षुद्र गोत्र ; २ कर्म-विशेष, जो क्षुद्र जाति में जन्म होने का कारण है; (ठा २, ४; आचा) । ३ वि. नीच गोत्र में उत्पन्न ; (सूअ २, १) ।

णीय वि [**नीत**] ले जाया गया : (आचा; उव; सुपा ६)।

णीय देखो **णिच्च**=नित्य ; (उव) ।

णीयंगम वि [**नीचंगम**] नीचे जाने वाला; (पुप्फ ४४३)।

णीयंगमा स्त्री [**नीचंगमा**] नदी, तरंगिणी ;(भत ११६)।

णीर न [**नीर**] जल, पानी; (कुमा ; प्राप्र ६७) । °**निहि** पुं [°**निधि**] समुद्र, सागर ; (सुपा २०१) । °**रुह** न [°**रुह**] कमल; (ती ३) । °**वाह** पुं [°**वाह**] मेघ, अभ्र ; (उप पृ ६२) । °**हर** पुं [°**गृह**] समुद्र, सागर; (उप पृ ११६) । °**हि** पु [°**धि**] समुद्र ; (उप ६८६ टी) । °**ाकर** पुं [°**ाकर**] समुद्र (उप ५३० टी) ।

णीरंगी स्त्री [**दे**] सिर का अवगुण्ठन, शिरोवस्त्र, घूँघट; (दे ४, ३१ ; पाअ) ।

णीरंज सक [**भञ्ज्**] तोड़ना, भाँगना । णीरंजइ ; (हे ४, १०६) ।

णीरंजिअ वि [**भग्न**] तोड़ा हुआ, छिन्न; (कुमा) ।

णीरंध्र वि [**नीरन्ध्र**] निश्छिद्र ; (कप्पू) ।

णीरण न [**दे**] घास चारा : " विमलो पजलमग्ग नीरिंध-णानीरणाइसंजुत्तं " (सुपा ५०१) ।

णीरय वि [**नीरजस्**] १ रजो-रहित, निर्मल, शुद्ध ;" सिद्धिं गच्छइ णीरओ " (गुरु १६ ; पण्ण ३६ ; सम १३७ ; पउम १०३, १३४ ; सार्ध ११२) । २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट ; (ठा ६) ।

णीरव सक [**आ+क्षिप्**] आक्षेप करना । णीरवइ ; (हे ४, १४५) ।

णीरव सक [**बुभुक्ष्**] खाने को चाहना । णीरवइ ; (हे ४, ५) । भूका—णीरवीअ, (कुमा) ।

णीरव वि [**आक्षेपक**] आक्षेप करने वाला ; (कुमा) ।

णीरस वि [**नीरस**] रस-रहित, शुष्क ; (गउड ; महा) ।

णीराग } वि [**नीराग**] राग-रहित, वीतराग ; (गउड ; **णीराय** } कुप्र १२५; कुमा) ।

णीरेणु वि [**नीरेणु**] रजो-रहित ; (गउड) ।
णीरोग वि [**नीरोग**] रोग-रहित, तंदुरुस्त ; (जीव ३) ।
णील अक [**निर्+सृ**] बाहर निकलना । णीलइ; (हे४,७६)।
णील पुं [**नील**] १ हरा वर्ण, नीला रङ्ग ; (ठा १) । २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३) । ३ रामचन्द्र का एक सुभट, वानर-विशेष ; (से ४, ५) । ४ छन्द-विशेष ; (पिंग) । ५ पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३) । ६ न. रत्न की एक जाति, नीलम; (णाया१,१) । ७ वि. हरा वर्ण वाला ; (पण्ण १ ; राय) । °**कंठ** पु [°**कण्ठ**] १ शक्रेन्द्र का एक सेनापति, शक्रेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति देव-विशेष ; (ठा ५, १ ; इक) । २ मयूर, मोर ; (पाअ ; कुप्र २४७)। ३ महादेव, शिव ; (कुप्र २४७) । °**कणवीर** पुं [°**करवीर**] हरे रङ्ग के फूलो वाला कनेर का पेड़ ; (राय) । °**गुफा** स्त्री [°**गुफा**] उद्यान-विशेष ; (आवम) । °**मणि** पुंस्त्री [°**मणि**] रत्न-विशेष, नीलम,मरकत , (कुमा) । °**लेस** वि [°**लेश्य**] नील लेश्या वाला ; (पण्ण १७) । °**लेसा** स्त्री [°**लेश्या**] अशुभ अध्यवसाय-विशेष ; (सम११ ; ठा १) । °**लेस्स** देखो °**लेस** ; (पण्ण १७) । °**लेस्सा** देखो °**लेसा** ; (राज) । °**वंत** पुं [°**वत्**] १ पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम १२) । २ द्रह-विशेष ; (ठा५, २) । ३ न. शिखर-विशेष , (ठा २, ३) ।
णीलकंठी स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष, बाण-वृक्ष; (दे४, ४२) ।
णीला स्त्री [**नीला**] १ लेश्या-विशेष, एक तरह का आत्मा का अशुभ परिणाम ; (कम्म४, १३ ; भग) । २ नील वर्ण वाली स्त्री ; (षड्)
णीलिअ वि [**निःसृत**] निर्गत, निर्यात ; (कुमा) ।
णीलिअ वि [**नीलित**] नील वर्ण का , (उप पृ ३२) ।
णीलिआ देखो **णीला** , (भग) ।
णीलिम पुंस्त्री [**नीलिमन्**] नीलत्व, नीलापन, हरापन ; (सुपा १३७) ।
णीली स्त्री [**नीली**] १ वनस्पति-विशेष, नील ; (पण्ण१ ; उर ६, ५) । २ नील वर्ण वाली स्त्री; (षड्) । ३ आँख का रोग ; (कुप्र २१३) ।
णीलुंछ सक [**कृ**] १ निष्पतन करना । २ आच्छोटन करना । णीलुंछइ ; (हे ४,७१ ; षड्) । वकृ—**णीलुंछंत**; (कुमा)।
णीलुक्क सक [**गम्**] जाना, गमन करना । णीलुक्कइ ; (हे ४, १६२) ।

णीलुप्पल न [**नीलोत्पल**] नील रङ्ग का कमल ; (हे १, ८४ ; कुमा) ।
णीलोभास पुं [**नीलावभास**] १ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३) । २ वि. नील-च्छाय, जो नीला मालूम देता हो ; (णाया १, १) ।
णीव पुं [**नीप**] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़ ; (हे१, २३४ ; कप्प ; णाया १, ६) ।
णीवार पुं [**नीवार**]वृक्ष-विशेष, तिली का पेड़ ; (गउड) ।
णीवी स्त्री [**नीवी**] मूल-धन, पूँजी ; २ नारा, इजारबन्द ; (षड् ; कुमा) ।
णीसंक देखो **णिस्संक**=निःशङ्क ; (गा३४५ ; कुमा) ।
णीसंक पुं [**दे**] वृष, बैल ; (षड्) ।
णीसंकिअ देखो **णिस्संकिअ** ; (विसे५६२ ; सुर ७,१५५) ।
णीसंख वि [**निःसंख्य**] संख्या-रहित, असंख्य ; (सुपा ३५५) ।
णीसंचार देखो **णिस्संचार** ; (पउम ३२, ९) ।
णीसंद पुं [**निःष्यन्द**] रस-स्नुति, रस का झरना ; (गउड) ।
णीसंदिअ वि [**निःष्यन्दित**] झरा हुआ, टपका हुआ ; (पाअ) ।
णीसंदिर वि [**निःष्यन्दितृ**] झरने वाला, टपकने वाला; (सुपा ५६) ।
णीसंपाय वि [**दे**] जहां जनपद परिश्रान्त हुआ हो वह ; (दे ४, ४२) ।
णीसट्ठ वि [**निःसृष्ट**] १ विमुक्त; (पण्ह१, १—पत्र१८) । २ प्रदत्त ; (वृह २) । ३ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त; "णीस-ट्ठमचेयणो ण वा झरइ" (उव) ।
णीसण पुं [**निःस्वन**] आवाज, शब्द, ध्वनि ; (सुर १३, १८२ ; कुप्र ५६) ।
णीसणिआ } स्त्री [**दे**] निःश्रेणि, सीढ़ी; (दे ४, ४३) ।
णीसणी }
णीसत्त वि [**निःसत्त्व**] सत्त्व-हीन, बल-रहित; (पउम २१, ७५ ; कुमा) ।
णीसद्द वि [**निःशब्द**] शब्द-रहित ; (दे७, २८ ; भवि) ।
णीसर अक [**रम्**] क्रीड़ा करना, रमण करना । णीसरइ ; (हे ४, १६८) । कृ—**णीसरणिज्ज** ; (कुमा) ।
णीसर अक [**निर्+सृ**] बाहर निकलना । णीसरइ ; (हे ४, ७६) । वकृ—**णीसरंत** ; (ओघ ४५८ टी) ।

णेआवण न [**नायन**] अन्य-द्वारा नयन, पहुँचाना ; (उप ७४६)।

णेआविअ वि [**नायित**] अन्य द्वारा ले जाया गया, पहुँचाया हुआ ; (स ४२; कुप्र २०७)।

णेउ वि [**नेतृ**] नेता, नायक ; (पउम १४, ६२ ; सुअ १, ३, १)।

णेउआण } देखो **णी**=नी।
णेउं }

णेउड्ड पुं [**दे**] सद्भाव, शिष्टता ; (दे ४, ४४)।

णेउण न [**नैपुण**] निपुणता, चतुराई ; (अभि १३२)।

णेउणिअ वि [**नैपुणिक**] १ निपुण, चतुर ; (ठा ६)। २ न. अनुप्रवाद-नामक पूर्व-ग्रन्थ की एक वस्तु ; (विसे २३६०)।

णेउण्ण } न [**नैपुण्य**] निपुणता, चतुराई ; (दस ६, २ ;
णेउन्न } सुपा २६३)।

णेउर न [**नूपुर**] स्त्री के पाँव का एक आभूषण ; (हे १, १२३ ; गा १८८)।

णेउरिल्ल वि [**नूपुरवत्**] नूपुर वाला ; (पि १२६ ; गउड)।

णेऊण } देखो **णी**=नी।
णेंत }

णेंत देखो **णी**=गम्।

णेक्कंत देखो **णिक्कंत** ; (गा ११)।

णेग देखो **णेअ**=नैक ; (कुमा ; पराह १, ३)।

णेगम पुं [**नैगम**] १ वस्तु के एक अंश को स्वीकारने वाला पक्ष-विशेष, नय-विशेष ; (ठा ७)। २ वणिक्, व्यापारी; "जिणधम्मभाविएणं, न केवलं धम्मओ धणाओवि। नेगमअडहियसहसो, जेण कओ अप्पणो सरिसो" (श्रा २७)। ३ न. व्यापार का स्थान ; (आचा २, १, ३)।

णेगुण्ण न [**नैर्गुण्य**] निर्गुणता, निःसारता ; (भत्त १६३)।

णेचइय पुं [**नैचयिक**] धान्य का व्यापारी ; (वव ४)।

णेच्छइअ वि [**नैश्चयिक**] निश्चयनय-सम्मत, निरुपचरित, शुद्ध; (विसे २८२)।

णेच्छंत वि [**नेच्छत्**] नहीं चाहता हुआ ; (हेका ३०६)।

णेच्छिअ वि [**नेच्छित**] इच्छा का अविषय, अनभिलषित ; (जीव ३)।

णेट्ठिअ वि [**नैष्ठिक**] पर्यन्त-वर्ती ; (पराह २, ३)।

णेड देखो **णिड्ड** ; (कुमा ; हे १, १०६)।

णेडाली स्त्री [**दे**] सिर का भूषण-विशेष ; (दे ४, ४३)।

णेड्ड देखो **णिड्ड** ; (हे २,६६ ; प्राप्र ; षड्)।

णेड्डरिआ स्त्री [**दे**] भाद्रपद मास की शुक्ल दशमी का एक उत्सव ; (दे ४, ४५)।

णेत्त पुंन [**नेत्र**] नयन, आँख, चक्षु ; (हे १,३३ ; आचा)।

णेद्दा देखो **णिद्दा** ; (पि १६२ ; नाट)।

णेपाल देखो **णेवाल** ; (उप पृ ३६७)।

णेम स [**नेम**] १ अर्ध, आधा ; (प्रामा)। २ न. मूल, जड़ ; (पराह १, ३ ; भग)।

णेम न [**दे**] कार्य, काज ; (राज)।

णेम देखो **णेम्म**=दे ; (पराह २, ४ टी—पत्र १३३)।

णेमाल पुं.ब. [**नेपाल**] एक भारतीय देश, नेपाल; (पउम ६८, ६४)।

णेमि पुं [**नेमि**] १ स्वनाम-ख्यात एक जिन-देव, बाइसवें तीर्थंकर ; (सम ४३ ; कप्प)। २ चक्र की धारा ; (ठा ३, ३ ; सम ४३)। ३ चक्र परिधि, चक्के का घेरा ; (जीव ३)। ४ आचार्य हेमचन्द्र के मातुल का नाम ; (कुप्र २०)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक जैनाचार्य ; (सार्ध ६२)।

णेमित्त देखो **णिमित्त** ; (आवम)।

णेमित्ति वि [**निमित्तिन्**] निमित्त-शास्त्र का जानकार ; (सुर १, १४४ ; सुपा १५४)।

णेमित्तिअ } वि [**नैमित्तिक**] १ निमित्त-शास्त्र से संबन्ध
णेमित्तिग } रखने वाला ; (सुर ६, १७७)। २ कारणिक, निमित्त से होने वाला, कारण से किया जाता, कादाचित्क ; "उववासो णेमित्तिगमो जओ भणिओ" (उप ६८३ ; उत्तर १०७)। ३ निमित शास्त्र का जानकार, (सुर १, २३८)। ४ न. निमित शास्त्र ; (ठा ६)।

णेमी स्त्री [**नेमी**] चक्र-धारा ; (दे १, १०६)।

णेम्म वि [**दे.निभ**] तुल्य, सदृश, समान ; (पराह २,४—पत्र १३०)।

णेम्म देखो **णेम**=नेम ; (पराह १, ५—पत्र ६४)।

णेरइअ वि. [**नैरयिक**] १ नरक-संबन्धी, नरक में उत्पन्न ; (हे १, ७६)। २ पुं. नरक का जीव, नरक में उत्पन्न प्राणी ; (सम २ ; विपा १, १०)।

णेरई स्त्री [**नैर्ऋती**] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा ; (सुपा ६८ ; ठा १०)।

णेरुत्त न [**नैरुक्त**] १ व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ का वाचक शब्द; (अणु)। २ वि. निरुक्त शास्त्र का जानकार ; (विसे २४)।

णेरुत्तिय वि [**नैरुक्तिक**] व्युत्पत्ति-निष्पन्न; (विसे ३०३७)।
णेरुत्ती स्त्री [**नैरुक्ती**] व्युत्पत्ति; (विसे २१८२)।
णेल वि [**नैल**] नील का विकार ; (भग , औप)
णेलंछण देखो **णिल्लंछण** ; (स ६६६)।
णेलच्छ पुं [**दे**] नपुंसक, षण्ढ ; (दे ४, ४४ ; पाअ ; हे २, १७४)। २ वृषभ, बैल ; (दे ४, ४४)।
णेलिच्छी स्त्री [**दे**] कूपतुला, ढेंकवा ; (दे ४, ४४)।
णेल्लच्छ देखो **णेलच्छ** ; (पि ६६)।
णेव देखो **णेअ**=नैव ; (उव ; पि १७०)।
णेवच्छ देखो **णेवत्थ** ; (से १२, ६७ ; प्रति ६ ; औप ; कुमा ; पि २८०)।
णेवच्छण न [**दे**] अवतारण, नीचे उतारना ; (दे ४, ४०)।
णेवच्छिय देखो **णेवत्थिय** ; (पि २८०)।
णेवत्थ न [**नेपथ्य**] १ वस्त्र आदि की रचना, वेष की सजावट ; (णाया १, १)। २ वेष ; (विसे २५८७ ; सुर ३, ६२ ; सण ; सुपा १५३)।
णेवत्थण न [**दे**] निरु छन्न, उत्तरीय वस्त्र का अञ्चल; (कुमा)।
णेवत्थिय वि [**नेपथ्यित**] जिसने वेष-भूषा की हो वह ; "पुरिसनेवत्थिया" (विपा १, ३)।
णेवाइय वि [**नैपातिक**] निपात-निष्पन्न नाम, अव्यय आदि ; (विसे २८४० ; भग)।
णेवाल पुं [**नेपाल**] १ एक भारतीय देश, नेपाल ; (उप पृ ३६३ ; कुप्र ४५८)। २ वि. नेपाल-देशीय ; (पउम ६६, ५५)।
णेविज्ज, **णेवेज्ज** न [**नैवेद्य**] देवता के आगे धरा हुआ अन्न आदि; (सं १२२ ; श्रा १६)।
णेव्वाण देखो **णिव्वाण**=निर्वाण ; (आचा ; सुर ६, २० ; स ७४४)।
णेव्वुअ देखो **णिव्वुअ** ; (उप ७३० टी)।
णेव्वुइ देखो **णिव्वुइ** ; (उप ७६८ टी)।
णेसग्गिय देखो **णिसग्गिय** ; (सुपा ६)।
णेसज्ज वि [**नैषद्य**] आसन-विशेष से उपविष्ट ; (पव ६७; पचा १८)।
णेसज्जिअ वि [**नषद्यिक**] ऊपर देखो ; (ठा ५, १ ; औप ; पण्ह २, १ ; कस)।
णेसत्थिय पुं [**दे**] वणिग् मन्त्री, वणिक् प्रधान; (दे ४,४४)।
णेसत्थिया, **णेसत्थी** स्त्री [**नैसृष्टिकी, नैशस्त्रिकी**] १ निसर्जन, निक्षेपण, २ निसर्जन से होने वाला कर्म-बन्ध; (ठा २, १ : नव १८)।
णेसप्प पुं [**नैसर्प**] निधि विशेष, चक्रवर्ती राजा का एक देवाधिष्ठित निधान , (ठा ६ , उप ६८६ टी)।
णेसर पु [**दे**] रवि, सूर्य ; (दे ४, ४४)।
णेसाय देखो **णिसाय**=निषाद, (राज)।
णेसु पुंन [**दे**] १ ओष्ठ, होठ; २ पाँव; 'तह निक्खित्तं तमता कूवम्मि निहितणेसुजुगं" (उप ३२० टी)।
णेह पुं [**स्नेह**] १ राग, अनुराग, प्रेम ; (पाअ)। २ तैल आदि चिकना रस-पदार्थ ; ३ चिकनाई, चिकनाहट ; (हे २, ७७ ; ४, ४०६ ; प्राप्र)।
णेहर देखो **णेहुर** ; (पण्ह १, १)।
णेहल पुं [**स्नेहल**] छन्द-विशेष . (पिंग)।
णेहालु वि [**स्नेहवत्**] स्नेह-युक्त, स्निग्ध ; (हे २,१५६)।
णेहुर पुं [**नेहुर**] १ देश-विशेष, एक अनार्य देश ; २ उसमें वसने वाली अनार्य जाति , (पण्ह १, १—पत्र १४)।
णो अ [**नो**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ निषेध, प्रतिषेध, अभाव ; (ठा ६ ; कस ; गउड)। २ मिश्रण, मिश्रता ; "नोसद्दो मिस्सभावम्मि" (विसे ५०)। ३ देश, भाग, अंश, हिस्सा ; (विसे ८८८)। ४ अवधारण, निश्चय ; (राज)। °**आगम** पुं [°**आगम**] १ आगम का अभाव ; २ आगम के साथ मिश्रण ; ३ आगम का एक अंश ; (आवम ; विसे ४६ ; ५० ; ५१)। ४ पदार्थ का अ-परिज्ञान , (णंदि)। °**इंदिय** न [°**इन्द्रिय**] मन, अन्तःकरण, चित्त , (ठा ६ ; सम ११ ; उप ५६७ टी)। °**कसाय** पु [°**कषाय**] कषाय के उद्दीपक हास्य वगैरः नव पदार्थ, वे ये है ,—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद; (कम्म १, १७ , ठा ६)। °**केवलनाण** न [°**केवलज्ञान**] अवधि और मन-पर्यव ज्ञान , (ठा २, १)। °**गार** पु [°**कार**] 'नो' शब्द ; (राज)। °**गुण** वि [°**गुण**]अ-यथार्थ, अ-वास्तविक; (अणु)। °**जीव** पुं [°**जीव**] १ जीव और अजीव से भिन्न पदार्थ, अ-वस्तु , २ अजीव, निर्जीव ; ३ जीव का प्रदेश; (विसे)। °**तह** वि [°**तथ**] जो वैसा हो न हो ; (ठा ४, २)।
णोक्ख वि [**दे**] अनोखा, अपूर्व ; (पिंग)।
णोदिअ देखो **णोहलिअ** , (राज)।

णोमल्लिआ स्त्री [**नवमल्लिका**] सुगन्धि फूलवाला वृक्ष-विशेष, नेवारी, वासंती ; (नाट ; पि १५४)।
णोमालिआ स्त्री [**नवमालिका**] ऊपर देखो ; (हे १, १७० ; गा २८१ ; षड् ; कुमा; अभि २६)।
णोमि पुं [**दे**] रस्सी, रज्जु ; (दे ४, ३१)।
णोलइआ } **णोलच्छा** } स्त्री [**दे**] चञ्चु, चाँच ; (दे ४, ३६)।
णोल्ल सक [**क्षिप्, नुद्**] १ फेंकना। २ प्रेरणा करना। णोल्लइ; (हे ४, १४३ ; षड्)। णोल्लेइ; (गा ८७५)। कवकृ—**णोल्लिज्जंत** ; (सुर १३, १६६)।
णोल्लिअ वि [**नोदित**] प्रेरित; (से६, ३२ ; णाया१, ६ ; पण्ह १, ३ ; स ३४०)।
णोव्व पुं [**दे**] आयुक्त, सूवा, राज-प्रतिनिधि ; (दे४,१७)।
णोहल पुं [**लोहल**] अव्यक्त शब्द-विशेष ; (षड् ; पि २६०; संक्षि ११)।
णोहलिआ स्त्री [**नवफलिका**] १ ताजी फली, नवोत्पन्न फली ; (हे १, १७०)। २ नूतन फल वाली ; (कुमा)। ३ नूतन फल का उद्गम ; "णोहलिअमप्पणो किं ण मग्गसे, मग्गसे कुरवअस्स" (गा ६)।
णोहा स्त्री [**स्नुषा**] पुत्र की भार्या ; (पि १४८ ; संक्षि १५)।
°**ण्णअ** वि [**ज्ञक**] जानकार ; (गा २०३)।
°**ण्णास** देखो **णास**= न्यास ; (स्वप्न १३४)।
°**ण्णुअ** देखो °**ण्णअ** ; (गा ४०५)।
ण्हं अ. १-२ वाक्यालंकार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (कप्प ; कस)।
ण्हव सक [**स्नपय्**] नहलाना, स्नान कराना। ण्हवेइ ; (कुप्र ११७)। कवकृ—**ण्हविज्जंत** ; (सुपा ३३)। संकृ—**ण्हविऊण**; (पि ३१३)।

ण्हवण न [**स्नपन**] स्नान कराना, नहलाना ; (कुमा)।
ण्हविअ वि [**स्नपित**] जिसको स्नान कराया गया हो वह ; (सुर २, ५८ ; भवि)।
ण्हा } **ण्हाण** } अक [**स्ना**] स्नान करना, नहाना। ण्हाइ ; (हे४, १४)। ण्हाणेइ, ण्हाणेंति ; (पि ३१३)। भवि—ण्हाइस्सं ; (पि ३१३)। वकृ—**ण्हायमाण** ; (णाया १, १३)। संकृ—**ण्हाइत्ता, ण्हाणित्ता** ; (पि ३१३)।
ण्हाण न [**स्नान**] नहाना, नहान ; (कप्प ; प्राप्र)। °**पीढ** पुंन [°**पीठ**] स्नान करने का पट्टा ; (णाया १, १)।
ण्हाणिआ स्त्री [**स्नानिका**] स्नान-क्रिया; (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।
ण्हाय वि [**स्नात**] जिसने स्नान किया हो वह, नहाया हुआ ; (कप्प ; औप)।
ण्हायमाण देखो **ण्हा**।
ण्हारु न [**स्नायु**] अस्थि-बन्धनी सिरा, नस, धमनी ; (सम १४६ ; पण्ह १, १ ; ठा २, १ ; आचा)।
ण्हाव देखो **ण्हव**। ण्हावइ, ण्हावेइ ; (भवि ; पि ३१३)। वकृ—**ण्हावअंत** ; (पि३१३)। संकृ—**ण्हाविऊण**; (महा)।
ण्हाविअ वि [**स्नपित**] नहलाया हुआ, जिसको स्नान कराया गया हो वह ; (महा ; भवि)।
ण्हाविअ पुं [**नापित**] हजाम, नाई ; (हे १, २३० ; कुमा), "घेत्तूण ण्हावियं आगएण मुंडाविओ कुमरो" (उप ६ टी)। °**पसेवय** पुं [°**प्रसेवक**] नाई की अपने उप-करण रखने की थैली ; (उत्त २)।
ण्हुसा स्त्री [**स्नुषा**] पुत्र-वधू ; पुत्र की भार्या ; (आवम ; पि ३१३)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे णआराइसद्दसंकलणो, अइएसेण नआराइसद्दसंकलणो अ बाईसइमो तरंगो समत्तो।

त

त पुं [**त**] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)। स [**तत्**] वह ; (ठा ३, १ ; हे १, ७ ; कप्प ; कुमा)।
त° स [**त्वत्**°] तू। °**क्कय** वि °**कृत**] तेरा किया हुआ; (स ६८०)।
तइ (अप) अ [**तत्र**] वहाँ, उसमें ; (षड्)।
तइ अ [**तदा**] उस समय ; (प्राप्र)।
तइअ वि [**तृतीय**] तीसरा ; (हे १, १०१ ; कुमा)।
तइअ (अप) वि [**त्वदीय**] तुम्हारा ; (भवि)।
तइअ अ [**तदा**] उस समय ;
"भणिओ रन्ना मंती, मइसागर तइय पव्वयंतेण।
ताएण अहं भणिओ, भगिणी ठाणम्मि दायव्वा"
(सुर १,१२३)।
तइअहा (अप) अ [**तदा**] उस समय ; (भवि ; सण)।
तइआ अ [**तदा**] उस समय ; (हे ३; ६५ ; गा ६२)।
तइआ स्त्री [**तृतीया**] तिथि-विशेष, तीज ; (सम २६)।
तइल देखो **तेल्ल** ; (उप ६२६)।
तइलोई स्त्री [**त्रिलोकी**] तीन लोक—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल; (सुपा ६८)।
तइलोक्क } न [**त्रैलोक्य**] ऊपर देखो ; (पउम ३,
तइलोय } १०५ ; ८, २०२ ; स ५७१ ; सुर ३, २०; सुपा २८२ ; ३५ ; ४४८)।
तइस (अप) वि [**तादृश**] वैसा, उस तरह का ; (हे ४, ४०३ ; षड्)।
तई स्त्री [**त्रयी**] तीन का समुदाय ; (सुपा ५८)।
तईअ देखो **तइअ**=तृतीय ; (गा ४९१ ; भग)।
तउ } न [**त्रपु**] धातु-विशेष, सीसा, राँगा ; (सम
तउअ } १२५ ; औप ; उप ६८६ टी; महा)। °**वट्टिआ** स्त्री [°**पट्टिका**] कान का आभूषण-विशेष ; (दे ५,२३)।
तउस न [**त्रपुष**] देखो **तउसी** ; (राज)। °**मिंजिया** स्त्री [°**मिञ्जिका**] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (जीव १)।
तउसी स्त्री [**त्रपुषी**] कर्कटी-वृक्ष, खीरा का गाछ; (गा ५३४)।
तए अ [**ततस्**] उससे. उस कारण से ; २ बाद में; (उत्त १ ; विपा १, १)।
तएयारिस वि [**त्वादृश**] तुम जैसा, तुम्हारी तरह का ; (स ५१)।
तओ देखो **तए** ; (ठा ३, १ ; प्रासू ७८)।
तं अ [**तत्**] इन अर्थों को बतलाने वाला अव्यय ; — १ कारण, हेतु ; (भग १५)। २ वाक्य-उपन्यास ; "तं तिअसवंदिमोक्खं" (हे २, १७६ ; षड्)। "तं मरण-मणारंभे वि होइ, लच्छी उण न होइ" (गा ४२)। °**जहा** अ [°**यथा**] उदाहरण-प्रदर्शक अव्यय ; (आचा ; अणु)।
तंआ देखो **तया**=तदा ; (गउड)।
तंट न [**दे**] पृष्ठ, पीठ ; (दे ५, १)।
तंड न [**दे**] लगाम में लगी हुई लार ; २ वि. मस्तक-रहित; ३ स्वर से अधिक ; (दे ५, १६)।
तंडव (अप) देखो **तडुव**। तंडवहु ; (भवि)।
तंडव अक [**ताण्डवय्**] नृत्य करना। तंडवेंति ; (आवम)।
तंडव न [**ताण्डव**] १ नृत्य, उद्धत नाच ; (पाअ ; जीव ३ ; सुपा ८६)। २ उद्धताई ; "पासंडितुंडअइचंडतंड-वाडंबरेहिं किं मुद्ध" (धम्म ८ टी)।
तंडविय वि [**ताण्डवित**] नचाया हुआ, नर्तित; (गउड)।
तंडविय (अप) देखो **तडुविअ**; (भवि)।
तंडुल पुं [**तण्डुल**] चावल; (गा ६६१)। देखो **तंदुल**।
तंत न [**तन्त्र**] १ देश, राष्ट्र ; (सुर १६, ४८)। २ शास्त्र, सिद्धान्त ; (उवर ५) ३ दर्शन, मत ; (उप ६२२)। ४ स्वदेश-चिन्ता ; ५ विष का औषध विशेष ; (मुद्रा १०८)। ६ सूत्र, ग्रन्थांश-विशेष ; "सुत्तं भणियं तंतं भण्णिज्जए तम्मि व जमत्थो" (विसे)। ७ विद्या-विशेष; (सुपा ४६६)। °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] तन्त्र का जानकार ; (सुपा ५७६)। °**वाइ** पुं [°**वादिन्**] विद्या-विशेष से रोग आदि को मिटाने वाला ; (सुपा ४६६)।
तंत वि [**तान्त**] खिन्न, क्लान्त ; (णाया १,४ ; विपा१,१)।
तंतडी स्त्री [**दे**] करम्ब, दही और चावल का बना भोजन-विशेष ; (
तंतिय पुं [**तान्त्रिक**] वीणा बजाने वाला ; (अणु)।
तंती स्त्री [**तन्त्री**] १ वीणा, वाद्य-विशेष ; (कप्प ; औप ; सुर १६, ४८)। २ वीणा-विशेष ; (पण्ह २, ५)। ३ ताँत, चमड़े की रस्सी ; (विपा १, ६ ; सुर ३, १३७)।
तंती स्त्री [**दे**] चिन्ता ; "कामस्स तत्ततंतिं कुणंति" (गा २)।
तंतु पुं [**तन्तु**] सूत, तागा, धागा ; (पउम १, १३)। °**अ, ग** पुं [°**क**] जलजन्तु-विशेष; (पउम १४,१७ ;कुप्र २०६)। °**ज, य** न [°**ज**] सूती कपड़ा ; (उत्त २,३५)। °**वाय** पुं [°**वाय**] कपड़ा बुनने वाला, जुलाहा ;

(श्रा २३)। °साला स्त्री [°शाला] कपड़ा बुनने का घर, ताँत-घर; (भग १५)।
तंतुक्खोडी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण, (दे५,७)।
तंदुल देखो **तंडुल**; (पउम १२, १३८)। २ मत्स्य-विशेष; (जीव १)। °वेयालिय न [°वैचारिक] जैन ग्रन्थ-विशेष; (णंदि)।
तंदुलेज्जग पुं [तन्दुलीयक] वनस्पति-विशेष, (पण्ण १)।
तंदूसय देखो **तिंदूसय**; (सुर १३, १९७)।
तंब पुं [स्तम्ब] तृणादि का गुच्छा; (हे २, ४५; कुमा)।
तंब न [ताम्र] १ धातु-विशेष, ताँबा; (विपा १, ६; हे २, ४५)। २ पुं. वर्ण-विशेष; ३ वि. अरुण वर्ण वाला; (पण्ण १७; औप)। °चूल पुं [°चूड] कुक्कुट, मुर्गा; (सुर ३, ९१)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] एक नदी का नाम; (कप्पू)। °सिह पुं [°शिख] कुक्कुट, मुर्गा; (पात्र)।
तंबकरोड पुंन [दे] ताम्र वर्ण वाला द्रव्य-विशेष; (पण्ण १७)।
तंबकिमि पु [दे] कीट-विशेष, इन्द्रगोप; (दे ५, ६; षड्)।
तंबकुसुम पुन [दे] वृक्ष-विशेष, कुरुवक, कटसरैया; (दे ५, ६; षड्)। २ कुरण्टक वृक्ष; (षड्)।
तंबक्क न [दे] वाद्य-विशेष; अणाहयतंबक्केसु वज्जंतेसु (ती १५)।
तंबच्छिवाडिया स्त्री [दे] ताम्र वर्ण का द्रव्य-विशेष; (पण्ण १७)।
तंबटक्कारी स्त्री [दे] शेफालिका, पुष्प-प्रधान लता-विशेष; (दे ५, ४)।
तंबरत्ती स्त्री [दे] गेहूँ में कुंकुम की छाया; (दे ५, ५)।
तंबा स्त्री [दे] गौ, धेनु, गैया; (दे ५, १; गा ४६०; पात्र; वज्जा ३४)।
तंबाय पुं [ताम्राक] भारतीय ग्राम-विशेष; (राज)।
तंबिम पुस्त्री [ताम्रत्व] अरुणता, ईषद् रक्तता; (गउड)।
तंबिय न [ताम्रिक] परिव्राजक का पहनने का एक उपकरण; (औप)।
तंबिर वि [दे] ताम्र वर्ण वाला; (हे २,५६; गउड; भवि)।
तंबिरा [दे] देखो **तंबरत्ती**; (दे ५, ५)।
तंबुक्क न [दे] वाद्य-विशेष, "बुक्कतंबुक्कसद्दुक्कडं" (सुपा ५०)।
तंबेरम पुं [स्तम्बेरम] हस्ती, हाथी; (उप पृ ११७)।
तंबेही स्त्री [दे] पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष, शेफालिका; (दे ५, ४)।
तंबोल न [ताम्बूल] पान; (हे १, १२४; कुमा)।
तंबोलिअ पुं [ताम्बूलिक] तमोली, पान बेचने वाला, (श्रा १२)।
तंबोली स्त्री [ताम्बूली] पान का गाछ; (षड्; जीव ३)।
तंभ देखो **थंभ**; (षड्)।
तंस वि [त्र्यस्र] त्रि-कोण, तीन कोन वाला; (हे १, २६; गउड; ठा १; गा १०; प्राप्र; आचा)।
तक्क सक [तर्क्] तर्क करना, अनुमान करना, अटकल करना। तक्केमि; (मे १३)। संकृ—**तक्किकयाणं**; (आचा)।
तक्क न [तक्र] मठा, छाँछ; (ओघ ८७; सुपा ५८३; उप पृ ११६)।
तक्क पुं [तर्क] १ विमर्श, विचार, अटकल-ज्ञान; (श्रा १२; ठा ६)। २ न्याय-शास्त्र; (सुपा २८७)।
तक्कणा स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाष; (दे ५, ४)।
तक्कय वि [तर्कक] तर्क करने वाला; (पण्ह १, ३)।
तक्कर पुं [तस्कर] चोर; (हे २, ४; औप)।
तक्कलि, **तक्कली** स्त्री [दे] वलयाकार-वृक्ष-विशेष; (पण्ण १)।
तक्का स्त्री [तर्क] देखो **तक्क**=तर्क; (ठा १; सूअ १, १३; आचा)।
तक्काल क्रिवि [तत्काल] उसी समय; (कुमा)।
तक्किअ वि [तार्किक] तर्क शास्त्र का जानकार; (अच्चु १०१)।
तक्किकयाणं देखो **तक्क**=तर्क्।
तक्कु पुं [तर्कु] सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकला; (दे ३, १)।
तक्कुय पुं [दे] स्वजन-वर्ग; "सम्माणिया सामता, अहिणंदिया नायरया, परिग्गाहिआ तक्कुयजणा त्ति" (स५३०)।
तक्ख सक [तक्ष्] छिलना, काटना। तक्खइ; (षड्; हे ४, १९४)। कर्म—तक्खिज्जइ; (कुप्र १७)। वकृ—**तक्खमाण**, (अणु)।
तक्ख पुं [तार्क्ष्य] गरुड पक्षी; (पात्र)।
तक्ख पुं [तक्षन्] १ लकड़ो काटने वाला, बढ़ई; २ विश्वकर्मा, शिल्पी विशेष, (हे ३, ५६; षड्)। °सिला स्त्री [°शिला] प्राचीन ऐतिहासिक नगर, जो पहले बाहुबलि की राजधानी थी, यह नगर पंजाब में है; (पउम ४, ३८; कुप्र ५३)।
तक्खग पु [तक्षक] १-२ ऊपर देखो। ३ स्वनाम-प्रसिद्ध सर्प-राज; (उप ९२५)।

तक्खण न [तत्क्षण] १ तत्काल, उसी समय ; (ठा ४, ४)। २ क्रिवि. शीघ्र, तुरन्त ; (पाअ)।
तक्खय देखो **तक्खग** ; (स २०६ ; कुप्र १३६)।
तक्खाण देखो **तक्ख=तक्षन्** ; (हे ३, ५६; षड्)।
तगर देखो **टगर** ; (पण्ह २, ५)।
तगरा स्त्री [तगरा] संनिवेश-विशेष. (स ४६८)।
तग्ग न [दे] सूत्र-कङ्कण, धागे का कंकण ; (दे ५, १; गउड)।
तग्गंधिय वि [तद्गन्धिक] उसके समान गंध वाला ; (प्रासू ३४)।
तच्च वि [तृतीय] तीसरा; (सम ८; उवा)।
तच्च न [तत्त्व] सार, परमार्थ ; (आचा ; आरा ११५)। °**वाय** पुं [°वाद] १ तत्त्व-वाद, परमार्थ-चर्चा। २ दृष्टि-वाद, जैन अङ्ग-ग्रन्थ विशेष; (ठा १०)।
तच्च न [तथ्य] १ सत्य, सचाई ; (हे २, २१ ; उत्त २८)। २ वि. वास्तविक, सत्य ; (उत्त ३)। °**त्थ** पुं [°ार्थ] सत्य हकीकत ; (पउम ३, १३)। °**वाय** पुं [°वाद] देखो ऊपर °**वाय** ; (ठा १०)।
तच्चं अ [त्रिः] तीन वार ; (भग , सुर २, २६)।
तच्चित्त वि [तच्चित्त] उसी में जिसका मन लगा हो वह, तल्लीन ; (विपा १, २)।
तच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना। तच्छइ ; (हे ४, १९४; षड्)। संकृ—**तच्छिय**; (सूअ १, ४,१)। कवकृ—**तच्छिज्जंत** ; (सुर १, २८)।
तच्छण स्त्रीन [तक्षण] छिलना, कर्तन ; (पण्ह १, १)। स्त्री—**णा** ; (गाया १, १३)।
तच्छिंड वि [दे] कराल, भयंकर ; (दे ५, ३)।
तच्छिज्जंत देखो **तच्छ**।
तच्छिल वि [दे] तत्पर ; (षड्)।
तजा देखा **तया=त्वच्** ; (दे १, १११)।
तज्ज सक [तर्जय्] तर्जन करना, भर्त्सन करना। तज्जइ ; (भवि)। तज्जेइ ; (गाया १, १८)। वकृ—**तज्जंत, तज्जिंत तज्जयंत, तज्जमाण, तज्जेमाण**; (भवि; सुर १२, २३३; गाया १, ८, राज; विपा १, १—पत्र ११)। कवकृ—**तज्जिज्जंत** ; (उप पृ १३४ ; उप १४६ टी)।
तज्जण न [तर्जन] भर्त्सन, तिरस्कार ; (औप, उव ; पउम ६५, ५३)।
तज्जणा स्त्री [तर्जना] ऊपर देखो; (पण्ह २,१ ; सुपा १)।
तज्जणी स्त्री [तर्जनी] प्रथम अंगुली ; (सुपा १ ; कुमा)।
तज्जाय वि [तज्जात] समान जाति वाला, तुल्य-जातीय ; (आव ४)।
तज्जाविअ, **तज्जिअ** } वि [तर्जित] तर्जित, भर्त्सित ;(स १२२; सुपा २६३ ; भवि)।
तज्जिंत, **तज्जिज्जंत**, **तज्जेमाण** } देखो **तज्ज**।
तट्टवट्ट न [दे] आभरण, आभूषण ;
" सणियं सणियं बालत्तणाओ तणुयाइ तट्टवट्टाइं ।
अवहरिवि नियघराओ हारेइ रहम्मि खिल्लंतो"
(सुपा ३६६)।
तट्टी स्त्री [दे] वृति, वाड़ ; (दे ५, १)।
तट्ठ वि [त्रस्त] १ डरा हुआ, भीत ; (हे २, १३६; कुमा)। २ न. मुहूर्त-विशेष, ; (सम ५१)।
तट्ठ वि [तष्ट] छिला हुआ ;(सूअ १, ७)।
तट्ठव न [त्रस्तप] मुहूर्त-विशेष ;(सम ५१)।
तट्ठि, **तट्ठु** } पु [त्वष्टृ] १ तक्षक, विश्वकर्मा , (गउड)। २ नक्षत्र-विशेष का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)।
तड सक [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तडइ ; (हे ४, १३७)।
तड पुंन [तट] किनारा, तीर , (पाअ ; कुमा)। °**त्थ** वि [°स्थ] १ मध्यस्थ, पक्षपात-हीन ; २ समीप स्थित; (कुमा; दे ३, ६०)।
तडउडा [दे] देखो **तडवडा** ; (जीव ३; जं १)।
तडकडिअ वि [दे] अनवस्थित ; (षड्)।
तडक्कार पुं [तडत्कार] चमकारा; "तडितडक्कारो "(सुपा १३३)।
तडतडा अक [तडतडाय्] तड तड आवाज करना। वकृ—**तडतडंत, तडतडेंत, तडयडंत** ; (राज ; गाया १, ६ ; सुपा १७६)।
तडतडा स्त्री [तडतडा] तड़ तड़ आवाज; (स २५७)।
तडप्फड, **तडफड** } अक [दे] तड़फना, तड़फड़ाना, व्याकुल होना। तडप्फडइ ; (कुमा ; हे ४, ३६६ ; विवे १०२)। तडफडसि ; (सुर ३, १४८)। वकृ—**तडप्फडंत, तडफडंत** , (उप ७६८ टी ; सुर १२, १६४ ; सुपा १७६ ; कुप्र २६)।

तडफडिअ वि [दे] १ सब तरफ से चलित, तडफडाया हुआ, व्याकुल ; (दे ५, ६ ; स ५८६)।
तडमड वि [दे] क्षुभित, क्षोभ-प्राप्त; (दे ५, ७)।
तडयड वि [दे] क्रिया-शील, सदाचार-युक्त ; (सट्टि१०७)।
तडयडंत देखो **तडतडा**।
तडवडा स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, आउली का पेड़; (दे ५,५)।
तडाअ, तडाग न [**तडाग**] तालाव, सरोवर ; (गा ११० ; पि २३१ ; २४०)।
तडि स्त्री [**तडित्**] वीजली; (पाअ)। °**डंड** पुं [°**दण्ड**] विद्युद्दंड ; (म्हा)। °**केस** पुं [°**केश**] राक्षस-वंशीय एक राजा, एक लंका-पति ; (पउम ६, ६६)। °**वेअ** पुं [°**वेग**] विद्याधर वंश का एक राजा, (पउम ५, १८)।
तडिअ वि [**तत**] विस्तृत, फैला हुआ ; (पाअ : णाया १, ८—पत्र १३३)।
तडिआ स्त्री [**तडित्**] बीजली ; (प्रामा)।
तडिण वि [दे] विरल, अल्प ; (से १३, ५०)।
तडिणी स्त्री [**तटिनी**] नदी, तरङ्गिणी ; (सण)।
तडिम न [**तडिम**] १ भित्ति, भीत ; २ कुट्टिम, पाषाण आदि से बँधा हुआ भूमि-तल ; (से २, २)। ३ द्वार के ऊपर का भाग ; (से १२, ६०)।
तडी स्त्री [**तटी**] तट, किनारा ; (विपा १, १; अनु ६)।
तड्ड, तड्डव सक [**तन्**] १ विस्तार करना। २ करना। तड्डइ, तड्डवइ ; (हे ४, १३७)। भूका—तड्डवीअ ; (कुमा)।
तड्डविअ, तड्डिअ वि [**तत**] विस्तीर्ण, फैला हुआ ; (पाअ ; महा ; कुमा ; सुर ३, ७२)।
तण सक [**तन्**] १ विस्तार करना। २ करना। तणइ, तणए ; (षड्)। कर्म—तणिज्जए ; (विसे१३८३)।
तण न [दे] उत्पल, कमल; (दे ५, १)।
तण न [**तृण**] तृण, घास ; (प्राप्र ; उव)। °**इल्ल** वि [°**वत्**] तृण वाला; (गउड)। °**जीवि** वि [°**जीविन्**] घास खाकर जीने वाला ; (सुपा ३७०)। °**राय** पुं. [°**राज**] तालवृक्ष, ताड़ का पेड़ ; (गउड)। °**विंटय**, °**वेंटय** पुं [°**वृन्तक**] एक क्षुद्र जंतु-जाति, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (गज)।
तणय पुं [**तनय**] पुत्र, लड़का ; (सुपा २४७ ; ४२४)।
तणय वि [दे] सबन्धी ; "मह तणए" (सुर ३, ८७ ; हे ४, ३६१)।
तणयमुद्दिआ स्त्री [दे] अंगुलीयक, अंगुठी; (दे ५, ६)।
तणया स्त्री [**तनया**] लड़की, पुत्री ; (कुमा)।
तणरासि, तणरासिअ वि [दे] प्रसारित, फैलाया हुआ ; (दे ५, ६)।
तणवरंडी स्त्री [दे] उडुप, डोंगी, छोटी नौका ; (दे ५, ७)।
तणसोल्लि, तणसोल्लिया स्त्री [दे] १ मल्लिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष; (दे ५, ६ ; णाया १, १६)। २ वि. तृण-शून्य ; (षड्)।
तणिअ वि [**तत**] विस्तीर्ण ; (कुमा)।
तणु वि [**तनु**] १ पतला ; (जी ७)। २ कृश, दुर्बल ; (पंचा १६)। ३ अल्प, थोड़ा ; (दे३, ५१)। ४ लघु, छोटा ; (जीव ३)। ५ सूक्ष्म; (कप्प)। ६ स्त्री. शरीर, काय; (दे२, ५६ ; जी ८)। °**तणुई, तणू** स्त्री [°**तन्वी**] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथ्वी; (ठा ८ ; इक)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] उत्पन्न होते समय जीव ने ग्रहण किए हुए पुद्गलों को शरीर रूप से परिणत करने की शक्ति ; (कम्म ३, १२)। °**ब्भव** वि [°**उद्भव**] १ शरीर से उत्पन्न; २ पुं. लड़का ; (भवि)। °**ब्भवा** स्त्री [°**उद्भवा**] लड़की ; (भवि)। °**भू** पुंस्त्री [°**भू**] १ लडका ; २ लड़की ; (आक)। °**य** वि [°**ज**] देखो °**ब्भव** ; (उत १४)। °**रुह** पुंन [°**रुह**] १ केश, बाल ; (रंभा)। २ पुं. पुत्र, लड़का; (भवि)। °**वाय** पुं [°**वात**] सूक्ष्म वायु-विशेष ; (ठा ३, ४)।
तणुअ वि [**तनुक**] ऊपर देखो ; (पउम १६, ७ ; आव ५ ; भग १५ ; पाअ)।
तणुअ सक [**तनय्**] १ पतला करना। २ कृश करना, दुर्बल करना। तणुएइ ; (गा ६१ ; काप्र १७४)।
तणुआ, तणुआअ अक [**तनुकाय्**] दुर्बल होना, कृश होना। तणुआइ, तणुआअइ, तणुआअए ; (गा ३० ; २६२ ; ५६)। वकृ—**तणुआअंत** ; (गा २६८)।
तणुआअरअ वि [**तनुत्वकारक**] कृशता उपजाने वाला, दौर्बल्य-जनक ; (गा ३४८)।
तणुइअ वि [**तनूकृत**] दुर्वल किया हुआ, कृश किया हुआ, (गा १२२ ; पउम १६, ४)।
तणुई स्त्री [**तन्वी**] १ पृथ्वी-विशेष, सिद्ध-शिला; (सम२२)। २ पतला शरीर वाली स्त्री ; (षड्)।

तणुईकय वि [तनूकृत] पतला किया हुआ , (पाअ) ।
तणुग देखो **तणुअ** ; (ज २ ; ३) ।
तणुवी } देखो **तणुई** ; (हे २, ११३ ; कुमा) ।
तणुवीआ }
तणू स्त्री [तनू] शरीर, काया, (गा ७४८; पाअ , दं ५)। २ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी; (ठा ८) । °**अ** वि [°ज] १ शरीर से उत्पन्न ; २ पु. लडका, पुत्र; (उप ६८६) । °**अतरा** स्त्री [°कतरा] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, जिस पर मुक्त जीव रहते हैं, सिद्ध-शिला ; (सम २२) । °**रुह** पुंन [°रुह] केश, रोम ; (उप ५९७ टी) ।
तणूइय देखो **तणुइअ** ; (गउड) ।
तणेण (अप) अ. लिए, वास्ते ; (हे ४,४२५; कुमा) ।
तणेसि पु [दे] तृण-राशि ; (दे ५, ३ ; षड्) ।
तण्णय पुं [तर्णक] वत्स, वछड़ा ; (पाअ ; गा १९ ; गउड) ।
तण्णाय वि [दे] आर्द्र, गिला ; (दे ५, २; पाअ ; गउड. से १, ३१ ; ११, १२६) ।
तण्हा स्त्री [तृष्णा] १ प्यास, पिपासा ; (पाअ) । २ स्पृहा, वाञ्छा, (ठा २, ३; औप) । °**लु**, °**लुअ** वि [°वत्] तृष्णा वाला, प्यासा; "समरतण्हालू"(पउम ८,८७, ८, ४७)।
तत देखो **तय**=तत ; (ठा ४, ४) ।
तत्त न [तत्त्व] सत्य स्वरूप, तथ्य, परमार्थ ; (उप ७२८ टी ; पुप्फ ३२०) । °**ओ** अ [°तस्] वस्तुतः ; (उप ६८६) । °**ण्णु** वि [°ज्ञ] तत्व का जानकार ; (पंचा १) ।
तत्त वि [तप्त] गरम किया हुआ ; (सम १२५ ; विपा १, ६ ; दे १, १०५) । °**जला** स्त्री [°जला] नदी-विशेष ; (ठा २, ३) ।
तत्त अ [तत्र] वहा । °**भव**, °**होंत** वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप ; (पि २९३ , अभि ५६) ।
तत्ति स्त्री [तृप्ति] तृप्ति, संतोष; (कुमा ; करु २६) । °**ल्ल** वि [°मत्] तृप्ति-युक्त ; (राज) ।
तत्ति स्त्री [दे] १ आदेश, हुकुम , (दे ५,२० , सण) । २ तत्परता ; (दे ५, २०) । ३ चिन्ता, विचार ; (गा २, ५१ ; २७३ अ ; सुपा २३७ ; २८०) । ४ वार्ता, वात, (गा २ ; वज्जा २) । ५ कार्य, प्रयोजन ; (पण्ह १, २ , वव १) ।
तत्तिय वि [तावत्] उतना, (प्रासू ११६) ।

तत्तिल } वि [दे] तत्पर, (षड्; दे ५, ३; गा ५५७; प्रासू
तत्तिल्ल } ५९) ।
तत्तु (अप) देखो **तत्थ**=तत्र; (हे ४, ४०४, कुमा) ।
तत्तुडिल्ल न [दे] सुरत, सम्भोग ; (दे ५, ६) ।
तत्तुरिअ वि [दे] रञ्जित ; (षड्) ।
तत्तो देखो **तओ** ; (कुमा ; जी २९) । °**मुह** वि [°मुख] जिसका मुँह उस तरफ हो वह ; (सुर २, २३४) ।
तत्तोहुत्त न [दे] तदभिमुख, उसके सामने ; (गउड) ।
तत्थ अ [तत्र] वहाँ, उसमें , (हे २, १६१) । °**भव** वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप ; (पि २९३) । °**य** वि [°त्य] वहाँ का रहने वाला ; (उप ५९७ टी) ।
तत्थ वि [त्रस्त] भीत ; (हे २, १६१ ; कुमा) ।
तत्थरि पुं [त्रस्तरि] नय-विशेष ; "तत्थरिनिएण ठविआ सोहउ मज्झ थुई" (अच्चु ४) ।
तदा देखो **तया**=तदा ; (गा ९९६) ।
तदीय वि [त्वदीय] तुम्हारा ; (महा) ।
तदो देखो **तओ** ; (हे २, १६०) ।
तद्दिअच्चय न [दे] नृत्य, नाच ; (दे ५, ८) ।
तद्दिअस } न [दे] प्रतिदिन, अनुदिन, हररोज; (दे
तद्दिअसिअ } ५, ८ ; गउड, पाअ) ।
तद्दिअह }
तद्धिय पुं [तद्धित] १ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष ; (पण्ह २, २ ; विसे १००३) । २ तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत अर्थ ; (अणु) ।
तधा देखो **तहा** ; (ठा ३, १ , ७) ।
तन्नय देखो **तण्णय** ; (सुर १४, १७४) ।
तन्हा देखो **तण्हा**; (सुर १, २०३ ; कुमा) ।
तप्प सक [तप्] १ तप करना । २ अक. गरम होना । तप्पइ, तप्पति ; (पिंग ; प्रासू ५३) ।
तप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना । वकृ—**तप्पमाण** , (सुर १६, १९) । हेकृ—"न इमो जीवो सक्को तप्पेउं कामभोगेहिं" (आउ ५०) । कृ—**तप्पेयव्व** ; (सुपा २३२) ।
तप्प न [तल्प] शय्या, विछौना ; (पाअ) । °**अ** वि [°ग] शय्या पर जाने वाला, सोने वाला ; (पण्ह १, २)।
तप्प पुन [तप्र] डोंगी, छोटी नौका ; (पण्ह १, १ ; विसे ७०६) ।
तप्पक्खिअ वि [तत्पाक्षिक] उस पक्ष का , (श्रा १२) ।
तप्पज्ज न [तात्पर्य] तात्पर्य ; (राज) ।

तप्पण न [**तर्पण**] १ सक्तु, सतुआ ; (पराह २, ५)। २ स्नीन तृप्ति-करण, प्रीणन ; (सुपा ११३)। ३ स्निग्ध वस्तु से शरीर की मालिश ; (गाया १, १३)।
तप्पभिइं अ [**तत्प्रभृति**] तबसे, तबसे लेकर ; (कप्प ; गाया १, १)।
तप्पमाण देखो **तप्प**=तर्पय्।
तप्पर वि [**तत्पर**] आसक्त, (दे ५, २०)।
तप्पुरिस पुं [**तत्पुरुष**] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष; (अणु)।
तप्पेयव्व देखो **तप्प**=तर्पय्।
तब्भत्तिय वि [**तद्भक्तिक**] उस का सेवक ; (भग ५,७)।
तब्भव पुं [**तद्भव**] वही जन्म, इस जन्म के समान पर-जन्म। °**मरण** न [°**मरण**] वह मरण जिसमे इस जन्म के समान ही परलोक में भी जन्म हो, यहां मनुष्य होनेसे आगामी जन्म में भी जिससे मनुष्य हो ऐसा मरण, (भग २१, १)।
तब्भारिय पु [**तद्भार्य**] दास, नौकर, कर्मचारी, कर्मकर ; (भग ३, ७)।
तब्भारिय पु [**तद्भारिक**] ऊपर देखो ; (भग ३,७)।
तब्भूम वि [**तद्भूम**] उसी भूमि में उत्पन्न ; (बृह १)।
तम पु [**दे**] शोक, अफसोस ; (दे ५, १)।
तम पुंन [**तमस्**] १ अन्धकार, २ अज्ञान ; (हे १,३२ ; वि ४०६ ; औप ; धर्म २)। °**तम** पुं [°**तम**] सातवीं नरक-पृथिवी का जीव ; (कम्म ५; पंच ५)। °**तमप्पभा** स्त्री [°**तमप्रभा**] सातवीं नरक-पृथिवी ; (अणु)। °**तमा** स्त्री [°**तमा**] सातवीं नरक-पृथिवी ; (सम ६६ ; ठा ७)। °**तिमिर** न [°**तिमिर**] १ अन्धकार ; (बृह ४)। २ अज्ञान ; (पडि)। ३ अन्धकार-समूह, (बृह ४) ।°**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] छठवीं नरक-पृथिवी ; (पराण १)।
तमंग पु [**तमङ्ग**] मत्तवारण, घर का बरंडा ; (सुर १३, १५६)।
तमंधयार पुं [**तमोन्धकार**] प्रबल अन्धकार; (पउम १७, १०)।
तमण न [**दे**] चुल्हा, जिसमें आग रख कर रसोई की जाती है वह ; (दे ५, २)।
तमणि पुंस्त्री [**दे**] १ भुज, हाथ ; २ भूर्ज, वृक्ष-विशेष की छाल, (दे २, २०)।
तमस न [**तमस्**] अन्धकार, "तमसाउ मे दिसा य" (पउम ३६ ८)।
तमस्सई स्त्री [**तमस्वती**] घोर अन्धकार वाली रात; (बृह १)।
तमा स्त्री [**तमा**] १ छठवीं नरक-पृथिवी; (सम ६६ ; ठा ७)। २ अधोदिशा ; (ठा १०)।
तमाड सक [**भ्रमय्**] घुमाना, फिराना। तमाडइ ; (हे ४, ३०)। वकृ—**तमाडंत**; (कुमा)।
तमाल पुं [**तमाल**] १ वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी ; भत४२)। २ न. तमाल वृक्ष का फूल ; (से १,६३)।
तमिस न [**तमिस्र**] १ अन्धकार ; (सूअ १, ५, १)। °**गुहा** स्त्री [°**गुहा**] गुफा-विशेष; (इक)।
तमिसंधयार पुं [**तमिस्रान्धकार**] प्रबल अन्धकार ; (सूअ १, ५, १)।
तमिस्स देखो **तमिस** ; (दे २, २६)।
तमी स्त्री [**तमी**] रात्रि, रात ; (गउड)।
तमुक्काय पुं [**तमस्काय**] अंधकार-प्रचय ; (ठा ४,२)।
तमुय वि [**तमस्**] १ जन्मान्ध, जात्यन्ध ; २ अत्यन्त अज्ञानी ; (सूअ २, २)।
तमोकसिय वि [**तमःकाषिक**] प्रच्छन्न क्रिया करने वाला; (सूअ २, २)।
तम्म अक [**तम्**] खेद करना। तम्मइ ; (गा ४८३)।
तम्मण वि [**तन्मनस्**] तल्लीन, तच्चित्त, (विपा १, २)।
तम्मय वि [**तन्मय**] १ तल्लीन, तत्पर। २ उसका विकार, (पराह १, १)।
तम्मि न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (गउड)।
तम्मिर वि [**तमित्**] खेद करने वाला ; (गा ५८६)।
तय वि [**तत**] विस्तार-युक्त ; (दे १, ४६ ; से २, ३१, महा)। २ न. वाद्य-विशेष ; (ठा २, २)।
तय न [**त्रय**] तीन का समूह, त्रिक ; "कालतए वि न मयं" (चउ ४५, श्रा २८)।
तय° देखो **तया**=तदा। °**प्पभिइ** अ [°**प्रभृति**] तब से ; (स ३१६)।
तय° देखो **तया**=त्वच्। °**क्खाय** वि [°**खाद**] त्वचा को खाने वाला; (ठा ४, १)।
तया अ [**तदा**] उस समय, (कुमा)।
तया स्त्री [**त्वच्**] १ त्वचा, छाल, चमड़ी ; (सम ३६)। २ दालचीनी ; (भत ४१)। °**मंत** वि [°**मत्**] त्वचा

वाला ; (णाया १, १)। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति, (जीव १)।

तयाणंतर न [तदनन्तर] उसके बाद ; (औप)।

तयाणि } अ [तदानीम्] उस समय ; (पि ३५८ ; हे १,
तयाणिं } १०१)।

तयाणुग वि [तदनुग] उसका अनुसरण करने वाला ; (सूअ १, १, ४)।

तर अक [त्वर्] त्वरा करना। तर ; (विसे २६०१)।

तर अक [शक्] समर्थ होना, सकना। तरइ ; (हे ४, ८६)। वकृ— **तरंत**; (ओघ ३२४)।

तर सक [तॄ] तैरना। तरइ, (हे ४,८६)। कर्म—तरिज्जइ, तीरइ; (हे ४, २५० ; गा ७१)। वकृ—**तरंत, तरमाण**; (पाअ, सुपा १८२)। हेकृ—**तरिउं, तरीउं**, (णाया १,१४; हे २,१९८)। कृ—**तरिअव्व** ; (श्रा १२; सुपा २७६)।

तर न [तरस्] १ वेग ; २ बल, पराक्रम। °**मल्लि** वि [°मल्लि] १ वेग वाला। २ बल वाला। °**मल्लिहायण** वि [°मल्लिहायन] तरुण, युवा ; (औप)।

तरंग पुं [तरङ्ग] १ कल्लोल, वीचि ; (पण्ह १, ३ ; औप)। °**णंदण** न [°नन्दन] नृप विशेष ; (दंस ३)। °**मालि** पुं [°मालिन्] समुद्र, सागर ; (पाअ)। °**वई** स्त्री [°वती] १ एक नायिका ; २ कथा-ग्रन्थ विशेष ; (दंस ३)।

तरंगि वि [तरङ्गिन्] तरग-युक्त ; (गउड ; कप्पू)।

तरंगिअ वि [तरङ्गित] तरग-युक्त ; (गउड, से ८,११; सुपा १५७)। °**नाह** पु [°नाथ] समुद्र, सागर, (वज्जा १५६)।

तरंगिणी स्त्री [तरङ्गिणी] नदी, सरिता ; (प्रासू ६६ ; गउड ; सुपा ५३८)।

तरंड } पुन [तरण्ड, °क] डोंगी, नौका, (सुपा २७२;
तरंडय } ५०० ; सुर ८, १०६ ; पुप्फ १०५)।

तरग वि [तर, °क] तैरने वाला ; (ठा ४, ४)।

तरच्छ पुंस्त्री [तरक्ष] श्वापद जन्तु-विशेष, व्याघ्र की एक जाति ; (पण्ह १, १ ; णाया १,१, स २५७)। स्त्री—°**च्छी** ; (पि १२३)। °**भल्ल** पुस्त्री [°भल्ल] श्वापद जन्तु-विशेष, (पउम ४२, १२)।

तरट्टा } स्त्री [दे] प्रगल्भ स्त्री ; "झाणेण ट्ठद्दि चिरं तरुणी
तरट्टी } तरट्टी" (कप्पू ; काप्र ५६६)। "अट्ठेव आगयाओ तरुणतरट्टाओ एयाओ" (सुपा ४२)।

तरण न [तरण] १ तैरना ; (श्रा १४ ; स ३५६ ; सुपा २६२)। २ जहाज, नौका ; (विसे १०२७)।

तरणि पुं [तरणि] १ सूर्य, रवि ; (कुमा)। २ जहाज, नौका ; ३ घृतकुमारी का पेड़ ; ४ अर्क वृक्ष, अकवन वृक्ष ; (हे १, ३१)।

तरतम वि [तरतम] न्यूनाधिक, "तरतमजोगजुत्तेहि" (कप्प)।

तरमाण देखो **तर**=तॄ।

तरल वि [तरल] चंचल, चपल ; (गउड ; पाअ ; कप्पू ; प्रासू ६६ ; सुपा २०४ ; सुर २, ८६)।

तरल सक [तरलय्] चंचल करना, चलित करना। तरलेइ; (गउड)। वकृ—**तरलंत** ; (सुपा ४७०)।

तरलण न [तरलन] तरल करना, हिलाना ; "कणगाडीणं कुणंता कुरलतरलणं" (कप्पू)।

तरलाविअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ, चलायमान किया हुआ ; (गउड ; भवि)।

तरलि वि [तरलिन्] हिलाने वाला ; (कप्पू)।

तरलिअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ ; (गा ७८ ; उप पृ ३३ ; सार्ध ११५)।

तरवट्ट पुं [दे] वृक्ष-विशेष, चकवड, पमाड, पवार ; (दे ५, ५ ; पाअ)।

तरस न [दे] मांस ; (दे ५, ४)।

तरसा अ [तरसा] शीघ्र, जल्दी ; (सुपा ५८२)।

तरा स्त्री [त्वरा] जल्दी, शीघ्रता ; (पाअ)।

तरिअव्व देखो **तर**=तॄ।

तरिअव्व न [दे] उडुप, एक तरह की छोटी नौका, (दे ५,७)।

तरिउ वि [तरीतृ] तैरने वाला ; (विसे १०२७)।

तरिउं देखो **तर**=तॄ।

तरिया स्त्री [दे] दूध आदि का सार, मलाई, (प्रभा ३३)।

तरिहि अ [तर्हि] तो, तब ; (सुर १,१३२ ; ११,७१)।

तरी स्त्री [तरी] नौका, डोंगी, (सुपा १११ ; दे ६, ११० ; प्रासू १४६)।

तरु पु [तरु] वृक्ष, पेड, गाछ, (जी १४ ; प्रासू २६)।

तरुण वि [तरुण] जवान, मध्य वय वाला ; (पउम ५,१६८)।

तरुणग } वि [तरुणक] बालक, किशोर ; (सूअ १, ३,
तरुणय } ४)। २ नवीन, नया ; (भग १५)। स्त्री—°**णिगा**, °**णिया** ; (आचा २, १)।

तरुणरहस पुन [दे] रोग, बिमारी ; (ओघ १३६)।

तरुणिम पुंस्त्री [तरुणिमन्] यौवन, जवानी ; (कप्प)।

[°ज्ञान] प्रश्न के उत्तर को जानने वाला ; (ठा ६) । २ न. सत्य ज्ञान ; (ठा १०) । °त्ति अ [इति] स्वीकार-द्योतक अव्यय, वैसा ही (जैसा आप फरमाते हैं) ; (णाया १, १) । °य अ [°च] १ उक्त अर्थ की दृढता-सूचक अव्यय ; २ समुच्चय-सूचक अव्यय ; (पंचा ३) । °वि अ [°पि] तो भी ; (गउड) । °विह वि [°विध] उस प्रकार का ; (सुपा ४५६) । देखो तहा ।

तह वि [तथ्य] तथ्य, सत्य, सच्चा; (सूअ १, १३) ।

तह पुं [तथ] आज्ञा-कारक, दास, नौकर ; (ठा४, २—पत्र २१३) ।

तहं देखो तह=तथा , (औप) ।

तहरी स्त्री [दे] पङ्क वाली सुरा ; (दे ५, २) ।

तहल्लिआ स्त्री [दे] गो-वाट, गौओं का वाडा ; (दे५, ८) ।

तहा देखो तह=तथा ; (कुमा , गउड ; आचा ; सुर ३, २७) । °गय पुं [°गत] १ मुक्त आत्मा , २ सर्वज्ञ ; (आचा) । °भूय वि [°भूत] उस प्रकार का ; (पउम २२, ६५) । °रूव वि [°रूप] उस प्रकार का; (भग १५) । °वि वि [°वित्] १ निपुण, चतुर, २ पुं. सर्वज्ञ ; (सूअ१, ४,१) । °हि अ [°हि] वह इस प्रकार ; (उप ९८६ टी) ।

तहि देखो तह=तथा ;(गा ८७८ ; उत्त ६) ।

तहि } अ [तत्र] वहां, उसमें , (गा २०६ ; प्राप्र , गा तहिं } २३४ , ऊरु १०५) ।

तहिय वि [तथ्य] सत्य, सच्चा, वास्तविक ; (णाया१, १२) ।

तहियं अ [तत्र] वहां, उसमें ; (विसे २७८) ।

तहेय } अ [तथैव] उसी तरह, उसी प्रकार ; (कुमा ; तहेव } षड्) ।

ता अ [तद्] उससे, उस कारण से ; (हे ४, २७८ ; गा ४९ ; ६७ ; उव) ।

ता देखो ताव=तावत् ; (हे १, २७१ ; गा१४१ ; २०१) ।

ता अ [तदा] तब, उस समय ; (रंभा ; कुमा ; सण) ।

ता अ [तर्हि] तो, तब; (रंभा, कुमा) ।

ता स्त्री [ता] लक्ष्मी ; (सुर १६, ४८) ।

ता° स [तद्] वह । °गंध पुं [°गन्ध] १ उसका गन्ध ; २ उसके गन्ध के समान गन्ध, (पण्ण१७) । °फास पुं [°स्पर्श] १ उसका स्पर्श ; २ वैसा स्पर्श ; (पण्ण १७) । °रस पु [°रस] १ वह स्पर्श; २ वैसा स्पर्श; (पण्ण१७) । °रूव न [°रूप] १ वह रूप, २ वैसा रूप ; (पण्ण १७—पत्र ५२२) ।

ताअ देखो ताव=ताप ; (गा ७९७ ; ८१४ ; हेका५०) ।

ताअ पुं [तात] १ तात, पिता, बाप ; (सुर १, १२३ ; उत्त १४) । २ पुत्र, वत्स ; (सूअ १, ३, २) ।

ताअ सक [त्रै] रक्षण करना । कृ—तायव्व ; (श्रा१२) ।

ताइ वि [त्यागिन्] त्याग करने वाला ; (गा २३०) ।

ताइ वि [तायिन्] रक्षक, परिपालक ; (उत्त ८) ।

ताइ वि [तापिन्] ताप-युक्त ; (सूअ १, १५) ।

ताइ वि [त्रायिन्] रक्षक, रक्षण करने वाला ; (उत्त २१, २२) ।

ताइअ वि [त्रात] रक्षित ; (उव) ।

ताउं (अप) देखो ताव=तावत् ; (कुमा) ।

ताठा (चूपै) देखो दाढा ; (हे ४, ३२५) ।

ताड सक [ताडय्] १ ताड़न करना, पीटना । २ प्रेरणा करना, आघात करना । ३ गुणाकर करना । ताडइ , (हे ४, २७) । भवि—ताडइस्सं; (पि २४०) । वकृ—ताडिंत; (काल) । कवकृ—ताडिज्जमाण, ताडीअंत, ताडोअमाण ; (सुपा २६ ; पि २४० ; अभि १५१) । हेकृ—ताडिउं ; (कप्पू) । कृ—ताडिअ ; (उत्त१६) ।

ताड पुं [ताल] ताड़ का झाड़ (स २५६) ।

ताडंक पुं [ताडङ्क] कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल ; (दे ६, ९३ ; कप्पू ; कुमा) ।

ताडण न [ताडन] १ ताड़न, पीटना ; (उप ९८६ टी , गा ५४९) । २ प्रेरणा, आघात , (से १२, ८३) ।

ताडाविय वि [ताडित] पीटवाया गया ; (सुपा २८८) ।

ताडिअ देखो ताड=ताडय् ।

ताडिअ वि [ताडित] १ जिसका ताडन किया गया हो वह, पीटा हुआ ; (पाअ) । २ जिसका गुणाकार किया गया हो वह; "इक्कासीई सा करणकारणाणुमइताडिआ होइ" (श्रा६) ।

ताडिअय न [दे] रोदन, रोना ; (दे ५,१०) ।

ताडिज्जमाण देखो ताड=ताडय् ।

ताडी स्त्री [ताडी] वृक्ष-विशेष ; (गउड) ।

ताडीअंत } देखो ताड=ताडय् ।
ताडीअमाण }

ताण न [त्राण] १ शरण, रक्षण कर्ता ; (सुपा ५७४) । २ रक्षण ; (सम ५१) ।

ताण पुं [तान] संगीत-प्रसिद्ध स्वर-विशेष, "ताणा एगूणपणास" (अणु) ।

ताणिअ वि [**तानित**] ताना हुआ ; (ती १५)।
तादिस देखो **तारिस** ; (गा ७३८ ; प्रासू ३४)।
ताम देखो **तम्म**=तम्। तामइ ; (गा ८५३)।
ताम (अप) देखो **ताव**=तावत् ; (हे४, ४०६ ; भवि)।
तामर वि [**दे**] रम्य, सुन्दर ; (दे ५, १० ; पाअ)।
तामरस न [**तामरस**] कमल, पद्म, (दे ५, १०; पाअ)।
तामरस न [**दे**] पानी में उत्पन्न होने वाला पुष्प; (दे५,१०)।
तामलि पुं [**तामलि**] स्वनाम-ख्यात एक तापस ; (भग ३, १ ; श्रा ६)।
तामलित्ति स्त्री [**ताम्रलिप्ति**] एक प्राचीन नगरी, वंग देश की प्राचीन राजधानी ; (उप ६८८ ; भग ३, १ ; पराण१)।
तामलित्तिया स्त्री [**ताम्रलिप्तिका**] जैन मुनि-वंश की एक शाखा ; (कप्प)।
तामस वि [**तामस**] तमोगुण वाला ; (पउम ८, ५० ; कुप्र ४२८)। °त्थ न [°**ास्त्र**] कृष्ण वर्ण का अस्त्र-विशेष, (पउम ८,५०)।
तामहि, तामहिं (अप) देखो **ताव**=तावत् ; (षड् ; भवि ; पि २६१ ; हे ४, ४०६)।
तायत्तीसग पुं [**त्रायस्त्रिंशक**] गुरु-स्थानीय देव-जाति ; (ठा ३, १ ; कप्प)।
तायत्तीसा स्त्री [**त्रयस्त्रिंशत्**] १ संख्या-विशेष, तेत्तीस ; २ तेत्तीस संख्या वाला, तेत्तीस; "तायत्तीसा लोगपाला" (ठा; पि ४४७ ; कप्प)।
तायव्व देखो **ताअ**=त्रै।
तार वि [**तार**] १ निर्मल, स्वच्छ ; (से ६, ४२) । २ चमकता, देदीप्यमान ; (पाअ)। ३ अति ऊँचा ; (से ६, ४)। ४ अति ऊँचा स्वर ; (राय ; मा ४६४)। ५ न. चाँदी ; (ती २)। ६ पुं. वानर-विशेष ; (से १, ३४)। °वई स्त्री [°**वती**] राज-कन्या ; (आचू ४)।
तारंग न [**तारङ्ग**] तरंग-समूह ; (से ६, ४२)।
तारग वि [**तारक**] तारने वाला, पार उतारने वाला ; (उप पृ ३२)। २ पुं. नृप-विशेष, द्वितीय प्रतिवासुदेव ; (पउम ५, १५६)।३ सूर्य आदि नव ग्रह ; (ठा६)। देखो **तारय**।
तारगा स्त्री [**तारका**] १ नक्षत्र ; (सुअ २, ६)। २ एक इन्द्राणी, पूर्णभद्र-नामक इन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४, १)। देखो **तारया**।
तारण न [**तारण**] १ पार उतारना ; (सुपा २५७)। २ वि. तारने वाला ; (सुपा ४१७)।
तारत्तर पुं [**दे**] मुहूर्त ; (दे ५, १०)।
तारय देखो **तारग** ; (सम १; प्रासू १०१)। ४ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)।
तारया देखो **तारगा**। ३ आँख की तारा ; (गउड ; गा १४८ ; २५४)।
तारा स्त्री [**तारा**] १ आँख की पुतली ; (गा४११ ; ४३५)। २ नक्षत्र ; (ठा ५, १ ; से १,३४)। ३ सुग्रीव की स्त्री ; (से१, ३४)। ४ सुभूम चक्रवर्ती की माता ; (सम १५२)। ५ नदी-विशेष ; (ठा १०)। ६ बौद्धों की शासन-देवी ; (कुप्र ४४२)। °उर न [°**पुर**] तारंगा-स्थान; (कुप्र ४४२)। °चंद पुं [°**चन्द्र**] एक राज-कुमार ; (धम्म ७२ टी)। °तणय पुं [°**तनय**] वानर-विशेष, अङ्गद ; (से१३, ६७)। °पह पुं [°**पथ**] आकाश, गगन ; (अणु)। °पहु पुं [°**प्रभु**] चन्द्रमा ; (उप ३२० टी)। °मेत्ती स्त्री [°**मैत्री**] निःस्वार्थ मित्रता ; (कप्पू)। °यण न [°**यन**] कनीनिका का चलना, आँख की पुतली का हिलन, "भग्गं तारायणं नियइ" (सुपा १८७)। °वइ पुं [°**पति**] चन्द्रमा; (गउड)।
तारिम वि [**तारिम**] तरणीय, तैरने योग्य ; (भास ६-३)।
तारिय वि [**तारित**] पार उतारा हुआ ; (भवि)।
तारिया स्त्री [**तारिका**] तारा के आकार की एक प्रकार की विभूषा, टिकली, टिकिया ; "विचित्तलंबंततारियाइन्नं" (सुर ३, ७१)।
तारिस वि [**तादृश**] वैसा, उस तरह का ; (कप्प ; प्राप्र ; कुमा)। स्त्री—°**सी** ; (प्रासू १२५)।
तारुण्ण, तारुन्न न [**तारुण्य**] तरुणता, यौवन ; (गउड ; कप्पू; कुमा ; सुपा ३१६)।
ताल देखो **ताड**=ताडय्। तालेइ ; (पि २४०)। वकृ—**तालेमाण** ; (विपा १, १)। कवकृ—**तालिज्जंत, तालिज्जमाण** ; (पउम ११८, १० ; पि २४०)।
ताल सक [**तालय्**] ताला लगाना, बन्द करना। संकृ—**तालेवि** ; (सुपा ४२८)।
ताल पुं [**ताल**] १ वृक्ष-विशेष ; (पण्ह १, ४)। २ वाद्य-विशेष, कंसिका ; (पण्ह २, ५)। ३ ताली ; (दस २)। ४ चपेटा, तमाचा ; (से ६, ५६)। ५ वाद्य-समूह ; (राज)। ६ आजीवक मत का एक उपासक ; (भग ८, ५)। ७ न. ताला, द्वार बन्द करने की कल ; (उप ३३३)। ८ ताल वृक्ष का फल ; (दे ६, १०२)।

°उड न [°पुट] तत्काल प्राण-नाशक विष-विशेष; (णाया १, १४; सुपा १३७; ३१६)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ नृप-विशेष; (धर्म १)। २ वि. ताल की तरह लम्बी जाँघ वाला; (णाया १, ८)। °ज्झय पुं [°ध्वज] १ बलदेव; (आवम)। २ नृप-विशेष; (दंस १)। ३ शत्रुञ्जय पहाड़; (ती १)। °पलंब पुं [°प्रलम्ब] गोशालक का एक उपासक; (भग ८, ५)। °पिसाय पुं [°पिशाच] दीर्घ-काय राक्षस; (पण्ण १)। °पुड देखो °उड; (श्रा १२)। °यर पुं [°चर] एक मनुष्य-जाति, चारण; (ओघ ७६६)। °विंट, °विंत, °वेंट, °वोंट न [°वृन्त] व्यजन, पंखा; (पि ५३; नाट—वेणी १०४; हे १, ६७; प्राप्र)। °संवुड पुं [°संपुट] ताल के पत्रों का संपुट, ताल-पत्र-संचय; (सूअ १, ५, १)। °सम वि [°सम] ताल के अनुसार स्वर, स्वर-विशेष; (ठा ७)।

तालंक पुं [ताडङ्क] १ कुण्डल, कान का आभूषण-विशेष। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

तालंकि पुंस्त्री [तालङ्किन्] छन्द-विशेष। स्त्री—°णी; (पिंग)।

तालग न [तालक] ताला, द्वार बन्द करने का यन्त्र; (उप ३३९ टी)।

तालण देखो **ताडण**; (औप)।

तालणा स्त्री [ताडना] चपेटा आदि का प्रहार; (पण्ह २, १; औप)।

तालप्फली स्त्री [दे] दासी, नौकरानी; (दे ५, ९)।

तालय देखो **तालग**; (सुपा ४१४; कुप्र २५२)।

तालहल पुं [दे] शालि, व्रीहि; (दे ५, ७)।

ताला अ [तदा] उस समय, "ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घिप्पंति" (हे ३, ६५; काप्र ५२१)।

ताला स्त्री [दे] लाजा, खोई, धान का लावा; (दे ५,१०)।

तालाचर पुं [तालचर] ताल (वाद्य) बजाने वाला; (निचू १५)।

तालाचर, **तालायर** पुं [तालाचर] १ प्रेक्षक-विशेष, ताल देने वाला प्रेक्षक; (णाया १, १)। २ नट, नर्तक आदि मनुष्य-जाति; (बृह ३)।

तालिअ वि [ताडित] आहत, पीटा हुआ; (णाया १,५)।

तालिअंट सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। तालिअंटइ; (हे ४, ३०)।

तालिअंट न [तालवृन्त] व्यजन, पंखा; (स ३०८)।

तालिअंटिर वि [भ्रमयितृ] घुमाने वाला; (कुमा)।

तालिज्जंत देखो **ताल**=ताडय्।

ताली स्त्री [ताली] १ वृक्ष-विशेष; (चारु ६३)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °पत्त न [°पत्र] ताल-वृक्ष की पत्ती का बना हुआ पंखा; (चारु ६३)।

तालु, **तालुअ** न [तालु, °क] तालू, मुँह के ऊपर का भाग, तलुआ; (संत ४६; णाया १, १६)।

तालुग्घाडणी स्त्री [तालोद्घाटनी] विद्या-विशेष, ताला खोलने की विद्या; (वसु)।

तालुर पुं [दे] १ फेन, फीण; २ कपित्थ वृक्ष; (दे ५, २१)। ३ पानी का आवर्त; (दे ५, २१; गा ३७; पाअ)। ४ पुं. पुष्प का सत्व; (विक्र ३२)।

तालेवि देखो **ताल**=तालय्।

ताव सक [तापय्] १ तपाना, गरम करना। २ संताप करना, दुःख उपजाना। तावेंति; (गा ८५०)। कर्म—ताविज्जंति; (गा ७)। कृ—**तावणिज्ज**; (भग१५)।

ताव पुं [ताप] १ गरमी, ताप; (सुपा ३८६; कप्पू)। २ संताप, दुःख; (आव ४)। ३ सूर्य, रवि। °दिसा स्त्री [°दिश्] सूर्य-तापित दिशा; (राज)।

ताव अ [तावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ तब-तक; (पउम ६८, ५०)। २ प्रस्तुत अर्थ; (आवम)। ३ अवधारण; ४ अवधि, हद; ५ पक्षान्तर; ६ प्रशंसा; ७ वाक्य-भूषा; ८ मान; ९ साकल्य, संपूर्णता; १० तब, उस समय; (हे १, ११)।

तावअ वि [तावक] त्वदीय, तुम्हारा; (अच्चु ५३)।

तावइअ वि [तावत्] उतना; (सम १४४; भग)।

तावं देखो **ताव**=तावत्; (भग १५)।

तावँ, **तवँहिं** (अप) देखो **ताव**=तावत्; (कुमा)।

तावण न [तापन] १ गरम करना, तपाना; (निचू १)। २ पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ५)।

तावणिज्ज देखो **ताव**=तापय्।

तावत्तीस, **तावत्तीसग**, **तावत्तीसय** देखो **तायत्तीसय**; (औप; पि ४४५; ४३८; काल)।

तावत्तीसा देखो **तायत्तीसा**; (पि ४३८)।

तावस पुं [तापस] १ तपस्वी, योगी, संन्यासि-विशेष; (औप)। २ एक जैन मुनि; (कप्प)। °गेह न [°गेह]

तापसों का मठ ; (पात्र) ।
तावसा स्त्री [**तापसा**] जैन मुनिओं की एक शाखा; (कप्प)।
तावसी स्त्री [**तापसी**] तपस्विनी, योगिनी ; (गउड) ।
ताविअ वि [**तावित**] तपाया हुआ, गरम किया हुआ; (गा ५३ ; विपा १, ३ ; सुर ३, २२०) ।
ताविआ स्त्री [**तापिका**] तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र; (दे २, ५६) । २ कड़ाही, छोटा कड़ाह ; (आवम) ।
ताविच्छ पुंन [**तापिच्छ**] वृक्ष-विशेष, तमाल का पेड़ ; (कुमा ; दे १, ३७ ; सुपा ५८) ।
तावी स्त्री [**तापी**] नदी-विशेष; (पउम ३५, १; गा २३६)।
तास पुं [**त्रास**] १ भय, डर ; (उप पृ ३५) । २ उद्वेग, संताप ; (पण्ह १, ३) ।
तासण वि [**त्रासन**] त्रास उपजाने वाला ; (पण्ह १,१)।
तासि वि [**त्रासिन्**] १ त्रास-युक्त, त्रस्त ; २ त्रास-जनक ; (ठा ४, २ ; कप्प) ।
तासिअ वि [**त्रासित**] जिसको त्रास उपजाया गया हो वह ; (भवि) ।
ताहे अ [**तदा**] उस समय, तब ; (हे ३, ६५) ।
ति अ [**त्रिः**] तीन वार; (ओघ ५४२) ।
ति देखो तइअ=तृतीय ; (कम्म २,१६) । °**भाग**, °**भाय**, °**हाअ** पुं [°**भाग**] तृतीय भाग, तीसरा हिस्सा ; (कम्म २; गाया १, १६—पत्र २१८ ; कप्पू) ।
ति देखो **थी** ; "उलूलु गायंति भुखिं समत्तिपुत्ता तिओ चच्च-ग्गियाउ दिंति" (रंभा) ।
ति त्रि.व. [**त्रि**] तीन, दो और एक ; (नव ४ ; महा) । °**अणुअ** न [°**अणुक**] तीन परमाणुओं से बना हुआ द्रव्य, "अणुअतएहिं आरद्धदव्वे तिअणुअं ति निद्दिसा" (सम्म १३६) । °**उण** वि [°**गुण**] १ तीनगुना । २ सत्व, रजस् और तमस् गुण वाला ; (अच्चु ३०) । °**उणिय** वि [°**गुणित**] तीनगुना ; (भवि) । °**उत्तरसय** वि [°**उत्तरशततम**] एक सौ तीसरा, १०३ वाँ ; (पउम १०३, १७६) । °**उल** वि [°**तुल**] १ तीन को जीतने वाला ; २ तीन को तौलने वाला ; (णाया १, १—पत्र ६४) । °**ओय** न [°**ओजस्**] विषम राशि-विशेष ; (ठा ४, ३) । °**कंड**, °**कंडग** वि [°**काण्ड**,°**क**] तीन काण्ड वाला, तीन भाग वाला ; (कप्पू; सुज्ज १, ६) । °**कडुअ** न [°**कटुक**] सूँठ, मरीच और पीपल ;(अणु) । °**करण** देखो °**गरण** ; (राज) । °**काल** न [°**काल**] भूत, भविष्य और वर्तमान काल; (भग; सुपा ८८) । °**क्काल** देखो °**काल** ; (सुपा १६६)। °**खंड** वि [°**खण्ड**] तीन खण्ड वाला ; (उप ८८६ टी)। °**खंडाहिवइ** पुं [°**खण्डाधिपति**] अर्ध चक्रवर्ती राजा, वासुदेव ; (पउम ६१,२६) । °**गडु**, °**गडुअ** देखो °**कडुअ** ; (स २५८ ; २६३) । °**गरण** न [°**करण**] मन, वचन और काया ; (द्र २०) । °**गुण** देखो °**उण** ; (अणु) । °**गुत्त** वि [°**गुप्त**] मनोगुप्ति आदि तीन गुप्ति वाला, संयमी ; (सं ८) । °**गोण** वि [°**कोण**] तीन कोने वाला ; (राज) । °**चत्ता** स्त्री [°**चत्वारिंशत्**] तेतालीस ; (कम्म ४, ५५) । °**जय** न [°**जगत्**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (ति १) । °**णयण** पुं [°**नयन**] महादेव, शिव ; (मि १५, ५८ ; सुपा १३८ ; ५६६ ; गउड) । °**तुल** देखो °**उल** ; (णाया १, १ टी—पत्र ६७)। °**त्तिस** (अप) देखो °**त्तीस**। °**त्तीस** स्त्रीन [**त्रयस्त्रिंशत्**] १ संख्या-विशेष, ३३ ; २ तेतीस संख्या वाला, तेतीस ; (कप्प ; जी ३६ ; सुर १२,१३६ ; दं २७) । °**दंड** न [°**दण्ड**]१ हथियार रखने का एक उपकरण ;(महा)। २ तीन दण्ड ; (औप) । °**दंडि** पुं [°**दण्डिन्**] संन्यासी, सांख्य मत का अनुयायी साधु; (उप १३६ टी; सुपा ४३६ ; महा) । °**नवइ** स्त्री [°**नवति**] १ संख्या-विशेष, तिराणवे; २ तिराणवे संख्या वाला ; (कम्म १,३१) । °**पंच** त्रि.व. [°**पञ्चन्**] पंद्रह; (ओघ१४)। °**पंचासइम** वि [°**पञ्चाश**] त्रेपनवाँ ; (पउम ५३, १५०) । °**पह** न [°**पथ**] जहां तीन रास्ते एकत्रित होते हों वह स्थान ; (राज) । °**पायण** न [°**पातन**] १ शरीर, इन्द्रिय और प्राण इन तीनों का नाश; २ मन, वचन और काया का विनाश ; (पिंड) । °**पुंड** न [°**पुण्ड्र**] तिलक-विशेष, ; (स ६) । °**पुर** पुं [°**पुर**] १ दानव-विशेष, ; २ न. तीन नगर ; (राज) । °**पुरा** स्त्री [°**पुरा**] विद्या-विशेष; (सुपा ३६७) । °**भंगी** स्त्री [°**भङ्गी**] छन्द-विशेष, ; (पिंग) । °**महुर** न [°**मधुर**] घी, सक्कर और मधु;(अणु)। °**मासिआ** स्त्री [**त्रैमासिकी**] जिसकी अवधि तीन मास की है ऐसी एक प्रतिमा, व्रत-विशेष ; (सम २१) । °**मुह** वि [°**मुख**] १ तीन मुख वाला ; (राज) । २ पुं. भगवान् संभवनाथजी का शासन-देव ; (संति ७) । °**रत्त** न [°**रात्र**] तीन रात; (स ३४२), "धम्मपरस्स मुहुत्तोवि दुल्लहो किंपुण तिरत्तं" (कुप्र ११८)। °**रासि** न [°**राशि**]जीव, अजीव और नोजीव रूप तीन राशियाँ; (राज)। °**लोअ** न [°**लोकी**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक;

(कुमा ; प्रासू ८६ ; सं १)। °लोअण पुं [°लोचन] महादेव, शिव ; (श्रा २८ ; पउम ५, १२२ ; पिंग)। °लोअपुज्ज पुं [°लोकपूज्य] धातकीषण्ड के विदेह में उत्पन्न एक जिनदेव ; (पउम ७५, ३१)। °लोई स्त्री [°लोकी] देखो °लोअ ; (गउड ; भत्त १५२)। °लोग देखो °लोअ ; (उप पृ ३)। °वई स्त्री [°पदी] १ तीन पदों का समूह। २ भूमि में तीन वार पाँव का न्यास ; (औप)। ३ गति-विशेष ; (अंत १६)। °वग्ग पुं [°वर्ग] १ धर्म, अर्थ और काम ये तीन पुरुषार्थ ; (ठा ४, ४—पत्र २८३ ; स ७०३ ; उप पृ २०७)। २ लोक, वेद और समय इन तीन का वर्ग ; ३ सूत्र, अर्थ और उन दोनों का समूह ; (आचू १ ; आवम)। °वण्ण पुं [°पर्ण] पलाश वृक्ष ; (कुमा)। °वरिस वि [°वर्ष] तीन वर्ष की अवस्था वाला ; (ववं ३)। °वलि स्त्री [°वलि] चमड़ी की तीन रेखाएं ; (कप्पू)। °वलिय वि [°वलिक] तीन रेखा वाला ; (राय)। °वली देखो °वलि ; (गा २७८ ; औप)। °वट्ठ पुं [°पृष्ठ] भरतक्षेत्र के भावी नवम वासुदेव ; (सम १५४)। °वय न [°पद] तीन पाँव वाला ; (दे ८, १)। °वहआ स्त्री [°पथगा] गंगा नदी ; (से ६, ८ ; अच्चु ३)। °वायणा स्त्री [°पातना] देखो °पायण ; (पण्ह १, १)। °विट्ठ, °विट्ठु पुं [°पृष्ठ, °विष्णु] भरतक्षेत्र में उत्पन्न प्रथम अर्ध-चक्रवर्ती राजा का नाम ; (सम ८८ ; पउम ५, १५५)। °विह वि [°विध] तीन प्रकार का ; (उवा ; जी २० ; नव ३)। °विहार पुं [°विहार] राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ पाटण का एक जैन मन्दिर ; (कुप्र १४४)। °संकु पुं [°शङ्कु] सूर्यवंशीय एक राजा ; (अभि ८२)। °संझ न [°सन्ध्य] प्रभात, मध्याह्न और सायंकाल का समय ; (सुर ११, १०६)। °सट्ठ वि [°षष्ट] तेसठवाँ, ६३ वाँ ; (पउम ६३, ७३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] तेसठ, ६३ ; (भवि)। °सत्त त्रि. ब. [°सप्तन्] एक्कीस ; (श्रा ६)। °सत्तखुत्तो अ [°सप्तकृत्वस्] एक्कीस वार ; (णाया १, ६ ; सुपा ४४६)। °समइय वि [°सामयिक] तीन समय में उत्पन्न होने वाला, तीन समय की अवधि वाला ; (ठा ३, ४)। °सरय न [°सरक] तीन सरा वाला हार ; (णाया १, १ ; औप ; महा)। २ वाद्य-विशेष ; (पउम ६६, ४४)। °सरा स्त्री [°सरा] मच्छी पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८)। °सरिय न [°सरिक] १ तीन सरा वाला हार ; (कप्प)। २ वाद्य-विशेष ; (पउम ११३, ११)। ३ वि. वाद्य-विशेष-संबन्धी, (पउम १०२, १२३)। °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष ; (दीव)। °सूल न [°शूल] शस्त्र-विशेष ; (पउम १२, ३४ ; स ६६६)। °सूलपाणि पुं [°शूलपाणि] १ महादेव, शिव। २ त्रिशूल को हाथ में रखने वाला सुभट ; (पउम ५६, ३५)। °सूलिया स्त्री [°शूलिका] छोटा त्रिशूल ; (सूअ १, ५, १)। °हत्तर वि [°सप्तत] तिहत्तरवाँ, ७३ वाँ; (पउम ७३, ३६)। °हा अ [°धा] तीन प्रकार से ; (पि ४५१ ; अणु)। °हुअण, °हुण, °हुवण न [°भुवन] १ तीन जगत, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (कुमा ; सुर १, ८ ; प्रासू ४६ ; अच्चु १६)। २ राजा कुमारपाल के पिता का नाम ; (कुप्र १४४)। °हुअणपाल पुं [°भुवनपाल] राजा कुमारपाल का पिता ; (कुप्र १४४)। °हुअणालंकार पुं [°भुवनालंकार] रावण के पट्टहस्ती का नाम ; (पउम ८२, १२२)। °हुणविहार पुं [°भुवनविहार] गुजरात पाटण में राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ एक जैन मन्दिर ; (कुप्र १४४)। देखो ते°।

°ति देखो इअ = इति ; (कुमा ; कम्म २, १२ ; २३)।

तिअ न [त्रिक] १ तीन का समुदाय ; (श्रा १ ; उप ७२८ टी)। २ वह जगह जहाँ तीन रास्ते मिलते हों ; (सुर १, ६३)। °संजअ पुं [°संयत] एक राजर्षि ; (पउम ५, ५१)। देखो तिग।

तिअ वि [त्रिज] तीन से उत्पन्न होने वाला ; (राज)।

तिअंकर पुं [त्रिकंकर] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (राज)।

तिअग न [त्रिकक] तीन का समुदाय ; (विसे २६४३)।

तिअडा स्त्री [त्रिजटा] स्वनाम-ख्यात एक राक्षसी ; (से ११, ८७)।

तिअभंगी स्त्री [त्रिभङ्गी] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तिअय न [त्रितय] तीन का समूह ; (विसे १४३२)।

तिअलुक्क, **तिअलोय** न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (धर्मा ६० ; लहुअ ६)।

तिअस पुं [त्रिदश] देव, देवता ; (कुमा ; सुर १, ६)। °गअ पुं [°गज] ऐरावण हाथी, इन्द्र का हाथी; (से ६, ६१)। °नाह पुं [°नाथ] इन्द्र ; (उप ६८६ टी, सुपा ४४)। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र, देव नायक ; (सुपा

४७;१७६)। °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि;(कुप्र ३७३)। °लोग पुं [°लोक] स्वर्ग ; (उप १०१६)। °विलया स्त्री [°वनिता] देवी, स्त्री देवता ; (सुपा २६७)। °सरि स्त्री [°सरित्] गंगा नदी; (कुप्र ५)। °सेल पुं [°शैल] मेरु पर्वत ; (सुपा ४८)। °लय पुंन [°लय] स्वर्ग ; (कुप्र १६ ; उप ७२८ टी ; सुर १, १७२) ! °हिव पुं [°धिप] इन्द्र ; (सुपा ३४)। °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र ; (सुपा ७६)।

तिअसिंद पुं [**त्रिदशेन्द्र**] इन्द्र, देव-पति; (वज्जा १५४)।

तिअसीस पुं [**त्रिदशेश**] इन्द्र, देव-नायक ; (हे १, १०)।

तिआमा स्त्री [**त्रियामा**] रात्रि, रात ; (अच्चु ४६)।

तिइक्ख सक [**तितिक्ष्**] सहन करना। तिइक्खए ; (आचा)। वकृ—**तिइक्खमाण** ; (आचा)।

तिइक्खा स्त्री [**तितिक्षा**] क्षमा, सहिष्णुता ; (आचा)।

तिइज्ज, **तिइय** वि [**तृतीय**] तीसरा ; (पि ४४९ ; संक्षि २०)।

तिउट्ट अक [**त्रुट्**] १ टूटना। २ मुक्त होना। "सव्वदुक्खा तिउट्टइ" (सूअ १, १५, ५)।

तिउट्ट वि [**त्रुट्ट, त्रुटित**] १ टूटा हुआ; २ अपसृत;(आचा)।

तिउड पुं [**दे**] कलाप, मोर-पिच्छ ; (पाअ)।

तिउडय न [**दे**] मालव देश में प्रसिद्ध धान्य-विशेष; (श्रा ११)।

तिउर न [**त्रिपुर**] एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

तिउरी स्त्री [**त्रिपुरी**] नगरी-विशेष, चेदि देश की राजधानी, (कुमा)।

तिउल वि [**दे**] मन, वचन और काया को पीडा पहुँचाने वाला, दुःख-हेतु ; (उत्त २)।

तिऊड देखो **तिकूड**; (से ८, ८३ ; ११, ६८)।

तिंगिआ स्त्री [**दे**] कमल-रज ; (दे ५, १२)।

तिंगिच्छ देखो **तिगिच्छ** ; (इक)।

तिंगिच्छायण न [**चिकित्सायन**] नक्षत्र-गोत्र विशेष; (इक)।

तिंगिच्छि स्त्री [**दे**] कमल-रज, पद्म की रज ; (दे ५, १२ ; गउड ; हे २, १७४ ; जं ४)।

तिंत वि [**तीमित**] भींजा हुआ ; (स ३३२ ; हे ४,४३१)।

तिंतिण, **तिंतिणिय** वि [**दे**] बड़बड़ करने वाला, बड़बड़ाने वाला; वाञ्छित लाभ न होने पर खेद से मन में आवे सो बोलने वाला ; (वव १ ; ठा ६—पत्र ३७१ ; कस)।

तिंतिणी स्त्री [**तिन्तिणी**] १ चिंचा, इम्ली का पेड़ ; (अभि ७१)।

तिंतिणी स्त्री [**दे**] बड़बड़ाना ; (वव ३)।

तिंदुइणी स्त्री [**तिन्दुकिनी**] वृक्ष विशेष; (कुप्र १०२)।

तिंदुग, **तिंदुय** पुं [**तिन्दुक**] १ वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़ ; (पाअ ; पउम २०, ३७ ; सम १५२ ; पण्ण १७)। २ न. फल-विशेष ; (पण्ण १७)। ३ श्रावस्ती नगरी का एक उद्यान ; (विसे २३०७)।

तिंदूस, **तिंदूसग**, **तिंदूसय** पुंन [**तिन्दूस, °क**] १ वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १)। २ कन्दुक, गेंद ; (गाया १, १८ ; सुपा ५३)। ३ क्रीड़ा-विशेष ; (आवम)।

तिकल्ल न [**त्रैकाल्य**] तीनों काल का विषय ; (पण्ह२,२)।

तिकूड पुं [**त्रिकूट**] १ लंका के समीप का एक पहाड़, सुवेल पर्वत ; (पउम ५, १२७)। २ शीता महानदी के दक्षिण किनारे पर स्थित पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °सामिय पुं [°स्वामिन्] सुवेल पर्वत का स्वामी, रावण ; (पउम ६५, २१)।

तिक्ख वि [**तीक्ष्ण**] १ तेज, तीखा, पैना ; (महा ; गा ५०४)। २ सूक्ष्म ; ३ चोखा, शुद्ध ; (कुमा)। ४ परुष, निष्ठुर ; (भग १६, ३)। ५ वेग-युक्त, क्षिप्र-कारी; (जं २)। ६ क्रोधी, गरम प्रकृति वाला ; ७ तीता, कडुआ; ८ उत्साही ; ९ आलस्य-रहित ; १० चतुर, दक्ष ; ११ न. विष, जहर ; १२ लोहा ; १३ युद्ध, संग्राम ; १४ शस्त्र, हथियार ; १५ समुद्र का नोन ; १६ यवक्षार ; १७ श्वेत कुष्ठ; १८ ज्योतिष-प्रसिद्ध तीक्ष्ण गण, यथा अश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र , (हे २, ७५ ; ८२)।

तिक्ख सक [**तीक्ष्णय्**] तीक्ष्ण करना। तिक्खेइ ; (हे ४, ३४४)।

तिक्खण न [**तीक्ष्णन**] तेज-करण, उत्तेजन ; (कुमा)।

तिक्खाल सक [**तीक्ष्णय्**] तीक्ष्ण करना। कर्म—तिक्खालिज्जति ; (सुर १२, १०६)।

तिक्खालिअ वि [**दे**] तीक्ष्ण किया हुआ; (दे ५, १३; पाअ)।

तिक्खुत्तो अ [**दे**] तीन वार ; (विपा १, १ ; कप्प ; औप ; गय)।

तिग देखो **तिअ**=त्रिक ; (जी ३२ ; सुपा ३१; गाया १, १)। °वस्सि वि [°वशिन्] मन, वचन और शरीर को काबू में रखने वाला ; "नरस्स तिगवस्सिस्स विसं तालउडं जहा" (सुपा १६७)।

तिगिंछ पुं [**तिगिञ्छ**] द्रह-विशेष; (इक)।

तिगिंछि पुं [**तिगिञ्छि**] १ पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र

७० ; इक ; सम ३३)। २ द्रह-विशेष, निषध पर्वत पर स्थित एक ह्रद ; (ठा २,३—पत्र ७२)।

तिगिच्छ सक [चिकित्स्] प्रतिकार करना, ईलाज करना। तिगिच्छइ ; (उत्त १६, ७६ ; पि २१५ ; ५५५)।

तिगिच्छ पुं [चिकित्स] वैद्य, हकीम ; (वव ५)।

तिगिच्छ पुं [तिगिच्छ] १ द्रह विशेष; निषध पर्वत पर स्थित एक द्रह ; (इक) ।२ न. देव-विमान विशेष; (सम ३८)।

तिगिच्छग, **तिगिच्छय** वि [चिकित्सक] प्रतीकार करने वाला ; २ पुं. वैद्य, हकीम, (ठा ४, ४; पि २१५;३२७)।

तिगिच्छय न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म; (ठा ६—पत्र४५१)

तिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, ईलाज ; (ठा ३,४)। °**सत्थ** न [°शास्त्र] आयुर्वेद, वैद्यक शास्त्र ;(राज) ।

तिगिञ्छि देखो **तिगिंछि** ; (ठा २,३—पत्र ८० ; सम ८४; १०४ ; पि ३५४)।

तिगिच्छिय पुं [चैकित्सिक] वैद्य, चिकित्सक ; (पउम ८, १२४)।

तिग्ग वि [तिग्म] तीक्ष्ण, तेज ; (हे २, ६२)।

तिग्घ वि [त्रिघ्न] तिगुना, तीन-गुना ; (राज)।

तिचूड पुं [त्रिचूड] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४५)।

तिजड पुं [त्रिजट] १ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम १०, २०)। २ राक्षस वंश का एक राजा ; (पउम ५, २६२)।

तिजामा, **तिजामी** स्त्री [त्रियामा] रात्रि, रात; (कुप्र २४७; रंभा)।

तिज्ज वि [तार्य] तैरने योग्य ; (भास ६३)।

तिड्ड पुंस्त्री [दे] अन्न-नाश करने वाला कीट, टिड्डी ; (जी १८)। स्त्री—°**ड्डी**; (सुपा ५४६)।

तिण न [तृण] तृण, घास ; (सुपा २३३ , अभि १७५ ; स १७६)। °**सूय** न [°शूक] तृण का अग्र भाग ; (भग १५)। °**हत्थय** पुं [°हस्तक] घास का पूला ; (भग ३, ३)।

तिणिस पुं [तिनिश] वृक्ष-विशेष, वेंत ; (ठा ४, २; कम्म १, १६ ; औप)।

तिणिस न [दे] मधु-पाल, मधपुड़ा; (दे ५, ११; ३, १२)।

तिणीकय वि [तृणीकृत] तृण-तुल्य माना हुआ; (कुप्र ५)।

तिण्ण वि [तीर्ण] १ पार पहुँचा हुआ ; (औप)। २ शान्त, समर्थ ; (से ११, २१)।

तिण्ण न [स्तैन्य] चोरी; " तिलतिण्णतप्परो " (उप ५६७ टी)।

तिण्ण° देखो **ति**=त्रि । °**भंग** वि [°भङ्ग] त्रि-खण्ड, तीन खण्ड वाला; (अभि २२४)। °**विह** वि [°विध] तीन प्रकार का ; (नाट—चैत ४३)।

तिण्णिअ पुं [तिन्निक] देखो **तित्तिअ**=तित्तिक ; (इक)।

तिण्ह देखो **तिक्ख**; (हे २, ७५ ; ८२ ;पि ३१२)।

तिण्हा देखो **तण्हा**; (राज ; वज्जा ६०)।

तितउ पुं [तितउ] चालनी, आखा, छानने का पात्र; (प्रामा)।

तितिक्ख देखो **तिइक्ख** । तितिक्खइ, तितिक्खए ; (कप्प ; पि ४५७)। वकृ—**तितिक्खमाण**; (राज)।

तितिक्खण न [तितिक्षण] सहन करना ; (ठा ६)।

तितिक्खा देखो **तिइक्खा**; (सम ५७)।

तित्त वि [तृप्त] तृप्त, संतुष्ट ; (विसे २४०६; औप ; दे १, १६ ; सुपा १६३)।

तित्त वि [तिक्त] १ तीता, कडुआ ; (णाया १, १६)। २ पुं. तीता रस ; (ठा १)।

तित्ति स्त्री [तृप्ति] तृप्ति, संतोष ; (उप ५६७ टी; दे १, ११७; सुपा ३७५; प्रासू १४०)।

तित्ति [दे] तात्पर्य, सार; (दे ५,११ ; षड्)।

तित्तिअ वि [तावत्] उतना ; (हे २, १५६)।

तित्तिअ पुं [तित्तिक] १ म्लेच्छ देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली म्लेच्छ जाति; (पण्ह १,१)। देखो **तिण्णिअ**।

तित्तिर, **तित्तिरि** पुं [तित्तिरि] पक्षि-विशेष, तीतर ; (हे १,६०; कुप्र ४२७)।

तित्तिरिअ वि [दे] स्नान से आर्द्र ; (दे ५, १२)।

तित्तिल वि [तावत्] उतना; (षड्)।

तित्तिल्ल पुं [दे] द्वारपाल, प्रतीहार; (गा ५५६)।

तित्तुअ वि [दे] गुरु, भारी ; (दे ५, १२)।

तित्तुल (अप) देखो **तित्तिल** ; (हे ४, ४३५)।

तित्थ पुं [त्रिस्थ] साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय, जैन संघ ; (विसे १०३५)।

तित्थ पु [त्र्यर्थ] ऊपर देखो ; (विसे १०३६)।

तित्थ न [तीर्थ] १ ऊपर देखो ; (विसे१०३३ ; ठा१)। २ दर्शन, मत ; (सम्म ८ ; विसे१०४०)। ३ यात्रा-स्थान, पवित्र जगह ; (धर्म २ ; राय ; अभि १२७)। ४ प्रवचन,

शासन, जिन-देव प्रणीत द्वादशाङ्गी ; (धर्म ३)। ५ पुंन. अवतार, घाट, नदी वगैरः में उतरने का रास्ता ; (विसे १०२६ ; विक्र ३२ ; प्रति ८२ ; प्रासू ६०)। °कर, °गर देखो °यर ; (सम ६७; कप्प ; पउम २०, ८; हे १, १७७)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] तीर्थ-गमन ; (धर्म २)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] जिन-देव; (स ७६१ , उप पृ ३५०; सुपा६५६; सार्ध ४३; सं३५)। °यर वि [°कर] १ तीर्थ का प्रवर्तक, २ पुं. जिन-देव, जिन भगवान; (गाया १, ८; हे १, १७७; सं १०१) ; स्त्री—°री. (संदि)। °यर-णाम न [°करनामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव तीर्थ-कर होता है; (ठा ६)। °राय पुं [°राज] जिन-देव ; (उप पृ ४००)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] तीर्थ-प्रवृति होने पर जो मुक्ति प्राप्त करे वह जीव; (ठा१,१)। °हिनायग पुं [°धिनायक] जिन-देव ; (उप ६८६ टी)। °हिव पुं [°धिप] संघ-नायक, जिन-देव ; (उप१४२टी)। °हिवइ पुं [°धिपति] जिन-देव, जिन भगवान् ; (पाअ)।

तित्थि वि [तीर्थिन्] १ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का विद्वान्; २ किसी दर्शन का अनुयायी ; (गु ३)।

तित्थिअ वि [तीर्थिक] ऊपर देखो ; (प्रवो ७४)।

तित्थीय वि [तीर्थीय] ऊपर देखो ; (विसे ३१६६)।

तित्थेसर पुं [तीर्थेश्वर] जिन-देव, जिन भगवान् ; (सुपा ५१ ; ८६ ; २६०)।

तिदस देखो तिअस ; (नाट—विक्र २८)।

तिदिव न [त्रिदिव] स्वर्ग, देव-लोक; (सुपा १४२; कुप्र ३२०)।

तिध (अप) देखो तहा ; (हे ४, ४०१ ; कुमा)।

तिन्न देखो तिण्ण ; (सम १)।

तिन्न वि [दे] स्तीमित, आर्द्र, गीला ; (गाया १, ६)।

तिप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना। हेकृ—"न इमा जीवो सक्को तिप्पेउं कामभोगेहिं" (पच्च५५)। कृ—तिप्पियव्व ; (पउम ११, ७३)।

तिप्प अक [तिप्] १ झरना, चूना। २ अफसोस करना। ३ रोना। ४ सक. सुख-च्युत करना। तिप्पामि, तिप्पंति ; (सूअ २, १ ; २, २, ५५)। वकृ—तिप्पमाण; (गाया१,१—पत्र ४७)। प्रयो. वकृ—तिप्पयंत; (सम५१)।

तिप्प वि [तृप्त] संतुष्ट ; (हे १, १२८)।

तिप्पणया स्त्री [तेपनता] अश्रु-विमोचन, रोदन ; (ठा ४, १ ; औप)।

तिम (अप) देखो तहा ; (हे४, ४०१ ; भवि ; कम्म१)।

तिमि पुं [तिमि] मत्स्य की एक जाति ; (पण्ह १, १)।

तिमिंगिल पुं [दे] मत्स्य, मछली ; (दे ५, १३)।

तिमिंगिल पुं [तिमिङ्गिल] मत्स्य की एक जाति ; (दे ५, १३ ; सं ७, ८ ; पण्ह १, १)। °गिल पुं [°गिल] एक प्रकार का महान् मत्स्य ; (सूअ २, ६)।

तिमिंगिलि पुं [तिमिङ्गिलि] मत्स्य की एक जाति ; (पउम २२, ८३)।

तिमिगिल देखो तिमिंगिल=तिमिङ्गिल; (उप ५१७)।

तिमिच्छय, तिमिच्छाह पुं [दे] पथिक, मुसाफिर ; (दे ५, १३)।

तिमिण न [दे] गीला काष्ठ ; (दे ५, ११)।

तिमिर न [तिमिर] १ अन्धकार, अँधेरा ; (पड़ि ; कप्प)। २ निकाचित कर्म ; (धर्म२)। ३ अल्प ज्ञान ; ४ अज्ञान ; (आचू ५)। ५ पुं. वृक्ष-विशेष ; (स २०६)।

तिमिरिच्छ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, करंज का पेड़; (दे ५,१३)।

तिमिरिस पुं [दे] वृक्ष-विशेष ; (पण्ण१—पत्र ३३)।

तिमिल स्त्रीन [तिमिल] वाद्य-विशेष; (पउम ५७, २२)। स्त्री—°ला ; (राज)।

तिमिस पुं [तिमिष] एक प्रकार का पौधा, पेठा, कुम्हड़ा;(कप्पू)।

तिमिसा, तिमिस्सा स्त्री [तिमिस्रा] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा ; (ठा २, ३ ; पण्ह १, १—पत्र १४)।

तिम्म अक [स्तीम्] भींजना, आर्द्र होना। वकृ—तिम्म-माण ; (पउम ३५, २०)।

तिम्म देखो तिग्ग ; (हे २, ६२)।

तिम्मिअ वि [स्तीमित] आर्द्र, गीला ; (दे १, ३७)।

तिरक्कर सक [तिरस्+कृ] तिरस्कार करना, अवधीरणा करना। कृ—तिरक्करणीअ ; (नाट)।

तिरक्कार पुं [तिरस्कार] तिरस्कार, अपमान, अवहेलना ; (प्रवो ४१ ; सुपा १४४)।

तिरक्करिणी, तिरक्खरिणी स्त्री [तिरस्करिणी] यवनिका, परदा ; (पि ३०६ ; अभि १८६)।

तिरिअ, तिरिअंच, तिरिक्ख, तिरिच्छ वि [तिर्यच्] १ वक्र, कुटिल, बाँका; (चंद२ ; उप पृ ३६६ ; सुर १३, १६३)। २ पुं. पशु, पक्षी आदि प्राणी ; देव, नारक और मनुष्य से भिन्न योनि में उत्पन्न जन्तु ; (धण ४४ ; हे २, १४३ ; सूअ १, ३, १; उप पृ १८६ ; प्रासू १७६; महा ; आरा ४६ ; पउम २, ५६ ; जी २०)। ३ मर्त्य-लोक, मध्य लोक ; (ठा ३, २)। ४ न. मध्य, बीच ;

(अणु ; भग १४, ५), "तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्भं मज्भेण जेणेव जंबुद्दीवे दीवे" (कप्प)। °गइ स्त्री [°गति] १ तिर्यग्-योनि; (ठा ५, ३)। २ वक्र गति, टेढ़ी चाल, कुटिल गमन ; (चंद २)। °जंभग पुं [°जृम्भक] देवों की एक जाति ; (कप्प)। °जोणि स्त्री [°योनि] पशु, पक्षी आदि का उत्पत्ति-स्थान ; (महा)। °जोणिअ वि [°योनिक] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न ; (सम २ ; भग ; जीव १ ; ठा ३, १)। °जोणिणी स्त्री [°योनिका) तिर्यग्-योनि में उत्पन्न स्त्री जन्तु, तिर्यक् स्त्री : (पण्ण १७—पत्र ५०३)। °दिसा °दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व आदि दिशा; (आवम; उवा)। °पव्वय पुं [°पर्वत] बीच में पड़ता पहाड़, मार्गावरोधक पर्वत ; (भग १४, ५)। °भित्ति स्त्री [°भित्ति] बीच की भींत ; (आचा)। °लोग पुं [°लोक] मर्त्य लोक, मध्य लोक ; (ठा ५, ३)। °वसइ स्त्री [°वसति] तिर्यग्-योनि ; (पण्ह १, १)।

तिरिच्छ वि [**तिरश्चीन**] १ तिर्यग् गत ; (राज)। २ तिर्यक्-संबन्धी ; (उत्त २१, १६)।

तिरिच्छि देखो **तिरिअ** ; (हे २, १४३ ; षड्)।

तिरिच्छी स्त्री [**तिरश्ची**] तिर्यक्-स्त्री ; (कुमा)।

तिरिड पुं [**दे**] एक जाति का पेड़, तिमिर वृक्ष; (दे ५, ११)।

तिरिडिअ वि [**दे**] १ तिमिर-युक्त ; २ विचित; (दे ५, २१)।

तिरिड्डि पुं [**दे**] उष्ण वात, गरम पवन ; (दे ५, १२)।

तिरिश्चि (मा) देखो **तिरिच्छि** ; (हे ४, २९५)।

तिरीड पुंन [**किरीट**] मुकुट, सिर का आभूषण ; (पण्ह १, ४ ; सम १५३)।

तिरीड पुं [**तिरीट**] वृक्ष-विशेष ; (बृह २)। °**पट्टय** न [°**पट्टक**] वृक्ष-विशेष की छाल का बना हुआ कपड़ा ; (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

तिरीडि वि [**किरीटिन्**] मुकुट-युक्त, मुकुट-विभूषित ; (उत्त ९, ६०)।

तिरोभाव पुं [**तिरोभाव**] लय, अन्तर्धान ; (विसे २९९६)।

तिरोवइ वि [**दे**] वृति से अन्तर्हित, वाड से व्यवहित ; (दे ५, १३)।

तिरोहिअ वि [**तिरोहित**] अन्तर्हित, आच्छादित ; (राज)।

तिल पुं [**तिल**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध अन्न-विशेष ; (गा ६९५ ; णाया १, १ ; प्रासु ३४; १०८)। २ ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °**कुट्टी** स्त्री [°**कुट्टी**] तिल की बनी हुई एक भोज्य वस्तु ; (धर्म २)। °**पप्पडिया** स्त्री [°**पर्पटिका**] तिल की बनी हुई एक खाद्य चीज ; (पण्ण १)। °**पुप्फवण्ण** पुं [°**पुष्पवर्ण**] ज्योतिष्क देव-विशेष ; ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °**मल्ली** स्त्री [°**मल्ली**] एक खाद्य वस्तु ; (धर्म २)। °**संगलिया** स्त्री [°**संगलिका**] तिल की फली ; (भग १५)। °**सक्कुलिया** स्त्री [°**शष्कुलिका**] तिल की बनी हुई खाद्य वस्तु-विशेष ; (राज)।

तिलइअ वि [**तिलकित**] तिलक की तरह आचरित, विभूषित ; " जयजयसद्दतिलइओ मंगलज्भुणी " (धर्म ६)।

तिलंग पुं [**तिलङ्ग**] देश-विशेष, एक भारतीय दक्षिण देश; (कुमा ; इक)।

तिलग } पुं [**तिलक**] १ वृक्ष-विशेष ; (सम १५२ ;
तिलय } औप ; कप्प ; णाया १, ९ ; उप ९८६ टी ; गा १६)। २ एक प्रतिवासुदेव राजा, भरतक्षेत्र में उत्पन्न पहला प्रतिवासुदेव ; (सम १५४)। ३ द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र-विशेष ; (राज)। ५ न पुष्प-विशेष; (कुमा)। ६ टीका, ललाट में किया जाता चन्दन आदि का चिह्न; (कुमा धर्मा ६)। ७ एक विद्याधर-नगर; (इक)।

तिलितिलय पुं [**दे**] जल-जन्तु विशेष, (कप्प)।

तिलिम स्त्रीन [**दे**] वाद्य-विशेष; (सुपा २४२ ; सण)। स्त्री —°**मा**; (सुर ३, ६८)।

तिलुक्क न [**त्रैलोक्य**] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक; (दं २३)।

तिलेल्ल न [**तिलतैल**] तिल का तेल ; (कुमा)।

तिलोक्क देखो **तिलुक्क** ; (सुर १, ९२)।

तिलोत्तमा स्त्री [**तिलोत्तमा**] एक स्वर्गीय अप्सरा ; (उप ७६८ टी ; महा)।

तिलोदग } न [**तिलोदक**] तिल का धौन ; (आचा,
तिलोदय } कप्प)।

तिल्ल न [**तैल**] तैल, तेल ; (सूक्त ३५; कुप्र २४०)।

तिल्ल न [**तिल्ल**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तिल्लग वि [**तैलक**] तेल बेचने वाला ; (बृह १)।

तिल्लोदा स्त्री [**तैलोदा**] नदी-विशेष ; (निचू १)।

तिवँ (अप) देखो **तहा** ; (हे ४, ३९७)।

तिवण्णी स्त्री [**त्रिवर्णी**] एक महौषधि; (ती ५)।

तिविडा स्त्री [**दे**] सूची, सूई ; (दे ५, १२)।

तिविडी स्त्री [**दे**] पुटिका, छोटा पुड़वा ; (दे ५, १२)।

तिव्व वि [**तीव्र**] १ प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट ; (भग १५ ; आचा) । २ रौद्र, भयानक ; (सुअ १, ५, १) । ३ गाढ़, निविड़ ; (पण्ह १, १) । ४ तिक्त, कडुआ ; (भग ६, ३४) । ५ प्रकृष्ट, प्रकर्ष-युक्त ; (णाया १,१—पत्र ४) ।

तिव्व वि [**दे. तीव्र**] १ दुःसह, जो कठिनता से सहन हो सके ; (दे ५,११; सुअ १,३,२ ; १, ५, १; २,६; आचा)। २ अत्यन्त अधिक, अत्यर्थ ; (दे ५, ११; धर्म २ ; औप ; पण्ह १, ३, पंचा १५ ; आव ६ ; उवा) ।

तिसला स्त्री [**त्रिशला**] भगवान् महावीर की माता का नाम; (सम १५१) । °**सुअ** पुं [°**सुत**] भगवान् महावीर ; (पउम १, ३३) ।

तिसा स्त्री [**तृषा**] प्यास, पिपासा ; (सुर ६, २०६ ; पाअ) ।

तिसाइय } वि [**तृषित**] तृषातुर, प्यासा ; (महा ; उव ;
तिसिय } पण्ह १, ४ ; सुर १, १६६) ।

तिसिर पुं. व. [**त्रिशिरस्**] १ देश-विशेष ; (पउम ६८, ६५) । २ पुं. नृप-विशेष ; (पउम ६६,४६) । ३ रावण का एक पुत्र ; (से १२, ५६) ।

तिस्सगुत्त देखो **तीसगुत्त** ; (राज) ।

तिह (अप) देखो **तहा** ; (कुमा) ।

तिहि पुंस्त्री [**तिथि**] पंचदश चन्द्र-कला से युक्त काल, दिन, तारीख ; (चंद १० ; पि १८०) ।

तीअ वि [**तृतीय**] तीसरा ; (सम १५०; संक्षि २०) ।

तीअ वि [**अतीत**] १ गुजरा हुआ, बीता हुआ; (सुपा ४४६; भग) । २ पुं. भूत काल ; (ठा ३, ४) ।

तीइल पुं [**तैतिल**] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष ; (विसे ३३४८) ।

तीमण न [**तीमन**] कढी, खाद्य-विशेष ; (दे२, ३५ ; सण)।

तीमिअ वि [**तीमित**] आर्द्र, गीला ; (कुप्र ३७३) ।

तीर अक [**शक्**] समर्थ होना । तीरइ ; (हे४, ८६) ।

तीर सक [**तीरय्**] समाप्त करना, परिपूर्ण करना । तीरइ, नीरेइ ; (हे४, ८६ ; भग) । संकृ—**तीरित्ता** ; (कप्प) ।

तीर पुंन [**तीर**] किनारा, तट, पार ; (स्वप्न ११६ ; प्रासु ६० ; ठा ४, १ ; कप्प) ।

तीरंगम वि [**तीरंगम**] पार-गामी ; (आचा) ।

तीरिय वि [**तीरित**] समापित, परिपूर्ण किया हुआ ; (पव ५) ।

तीरिया स्त्री [**दे**] शर रखने का थैला, बाणधि (?) ; "गहियमणेण पासत्थं धणुवरं, संधिआं तीरियासरं।" (स२६७)।

तीस न [**त्रिंशत्**] १ संख्या विशेष, तीस ; २ तीस-संख्या वाला ; (महा ; भवि) ।

तीसआ } स्त्री [**त्रिंशत्**] ऊपर देखो ; (संक्षि २१) ।
तीसइ } °**वरिस** वि [°**वर्ष**] तीस वर्ष की उम्र का ; (पउम २, २८) ।

तीसइम वि [**त्रिंश**] १ तीसवाँ ; (पउम ३०, ६८) । २ लगातार चौदह दिनों का उपवास ; (णाया १, १) ।

तीसगुत्त पुं [**तिष्यगुप्त**] एक प्राचीन आचार्य-विशेष, जिसने अन्तिम प्रदेश में जीव की सत्ता का पन्थ चलाया था; (ठा७)।

तीसभद्द पुं [**तिष्यभद्र**] एक जैन मुनि ; (कप्प) ।

तीसम वि [**त्रिंश**] तीसवाँ ; (भवि) ।

तीसा स्त्री. देखो **तीस** ; (हे १, ६२) ।

तीसिया स्त्री [**त्रिंशिका**] तीस वर्ष के उम्र की स्त्री; (वव७)।

तु अ [**तु**] इन अर्थों का सूचक अव्ययः—१ भिन्नता, भेद, विशेषण ; (श्रा २७ ; विसे. ३०३५) । २ अवधारण, निश्चय ; (सुअ १, २, २) । ३ समुच्चय ; (सुअ १, १, १) । ४ कारण, हेतु ; (निचू १) । ५ पाद-पूरक अव्यय ; (विसे ३०३५ ; पंचा ४) ।

तुअ सक [**तुद्**] व्यथा करना, पीड़ा करना । तुअइ ; (षड्) । प्रयो. संकृ—**तुयावइत्ता** ; (ठा ३, २) ।

तुअर पुं [**तुवर**] धान्य-विशेष, रहर ; (जं १) ।

तुअर अक [**त्वर्**] त्वरा करना । तुअर ; (गा ६०६) ।

तुंग वि [**तुङ्ग**] १ ऊँचा, उच्च ; (गा २५६ ; औप) । २ पुं. छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

तुंगार पुं [**तुङ्गार**] अग्नि कोण का पवन ; (आवम) ।

तुंगिम पुंस्त्री [**तुङ्गिमन्**] ऊँचाई, उच्चत्व ; (सुपा १२४; वज्जा १५० ; कप्पू ; सण) ।

तुंगिय पुं [**तुङ्गिक**] १ ग्राम-विशेष ; (आवम) । २ पर्वत-विशेष, "तुंगे तुंगियसिहरे गंतुं तिव्वं तवं तवइ" (कुप्र १०२) । ३ पुंस्त्री. गोत्र-विशेष में उत्पन्न ; "जसभद्दं तुंगियं चेव" (णंदि) ।

तुंगिया स्त्री [**तुङ्गिका**] नगरी-विशेष ; (भग) ।

तुंगियायण न [**तुङ्गिकायन**] एक गोत्र का नाम ; (कप्प)।

तुंगी स्त्री [**दे**] १ रात्रि, रात ; (दे ५, १४) । २ आयुध-विशेष ; "असिपरसुकुंततुंगीसंघट्ट—" (काल) ।

तुंगीय पुं [**तुङ्गीय**] पर्वत-विशेष ; (सुर १, २००) ।

तुंड स्त्रीन [तुण्ड] १ मुख, मुँह ; (गा ४०२) । २ अग्र-भाग ; (निचू १) । स्त्री—°डी ; "किं कोवि जीवियत्थी कंडुयइ अहिस्स तुंडीए" (सुपा ३२२) ।

तुंडीर न [दे] मधुर बिम्बी-फल ; (दे ५, १४) ।

तुंडुअ पुं [दे] जीर्ण घट, पुराना घड़ा ; (दे ५, १५) ।

तुंतुक्खुडिअ वि [दे] त्वरा-युक्त ; (दे ५, १६) ।

तुंद न [तुन्द] उदर, पेट ; (दे ५, १४ ; उप ७२८टी) ।

तुंदिल } वि [तुन्दिल] बड़ा पेट वाला ; (कप्पू ; पि **तुंदिल्ल** } ५९५ ; उत्त ७) ।

तुंब न [तुम्ब] तुम्बी, अलाबु ; (पउम २६, ३४ ; ओघ ३८; कुप्र १३६)। २ गाडी की नाभि; "न हि तुंबम्मि विणट्ठे अरया साहारया हुंति" (आवम)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन ; (सम) । °**वण** न [°**वन**] संनिवेश-विशेष, एक गाँव का नाम ; (सार्ध २५) । °**वीण** वि [°**वीण**] वीणा-विशेष का बजाने वाला ; (जीव ३) । °**वीणिय** वि [°**वीणिक**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (औप ; पण्ह २, ४ ; णाया १, १) ।

तुंबरु देखो **तुंबुरु** ; (इक) ।

तुंबा स्त्री [**तुम्बा**] लोकपाल देवों की एक अभ्यन्तर परिषद् ; (ठा ३, २) ।

तुंबिणी स्त्री [**तुम्बिनी**] वल्ली-विशेष ; (हे ४, ४२७ ; राज) ।

तुंबिल्ली स्त्री [दे] १ मधु-पटल, मधपुड़ा ; २ उदूखल, ऊखल; (दे ५, २३) ।

तुंबी स्त्री [तुम्बी] १ तुम्बी, अलाबू ; (दे ५, १४) । २ जैन साधुओं का एक पात्र, तरपनी ; (सुपा ६४१) ।

तुंबुरु पुं [**तुम्बुरु**] १ वृक्ष-विशेष, टिंबरू का पेड़ ; (दे ४, ३) । २ गन्धर्व देवों की एक जाति ; (पण्ण १ ; सुपा २६४) । ३ भगवान् सुमतिनाथ का शासनाधिष्ठायक देव ; (संति ७) । ४ शक्रेन्द्र के गन्धर्व-सैन्य का अधिपति देव-विशेष ; (ठा ७) ।

तुक्खार पुं [दे] एक उत्तम जाति का अश्व ; "अन्नं च तत्थ पत्ता तुक्खारतुरंगमा बहुविहीया" (सुर ११, ४६ ; भवि) । देखो **तोक्खार** ।

तुच्छ वि [दे] अवशुष्क, सूख गया हुआ ; (दे ५, १४)।

तुच्छ वि [**तुच्छ**] १ हलका, जघन्य, निकृष्ट, हीन ; (णाया १, ५; प्रासू ६६)। २ अल्प, थोड़ा ; (भग ६, ३३) । ३ शून्य, रिक्त ; (आचा) । ४ असार, निःसार ; (भग १८, ३) । ५ अपूर्ण ; (ठा ४, ४) ।

तुच्छइअ } वि [दे] रञ्जित, अनुराग-प्राप्त ; (दे ५, १५)। **तुच्छय** }

तुच्छिम पुंस्त्री [**तुच्छत्व**] तुच्छता ; (वज्जा १५६) ।

तुज्ज न [**तूर्य**] वाद्य, बाजा ; (सुज्ज १०) ।

तुट्ट अक [**त्रुट्**, **तुड्**] १ टूटना, छिन्न होना, खण्डित होना । २ खूटना, तुट्टइ ; (महा ; सण ; हे ४, ११६) । "अणवरयं देंतस्सवि तुट्टंति न सायरे रयणाइ" (वज्जा १५६) । वकृ—**तुट्टंत**; (सण) ।

तुट्ट वि [**त्रुटित**] टूटा हुआ, छिन्न, खण्डित ; (स ७१८; सूक्त १७ ; दे १, ६२) ।

तुट्टण न [**त्रोटन**] विच्छेद, पृथक्करण ; (सूअ १, १, १; वज्जा ११६) ।

तुट्टिअ वि [**त्रुटित, तुडित**] छिन्न, खण्डित ; (कुमा) ।

तुट्टिर वि [**त्रुटितृ**] टूटने वाला ; (कुमा ; सण) ।

तुट्ठ वि [**तुष्ट**] तोष-प्राप्त, संतुष्ट ; (सुर ३, ४१ ; उवा) ।

तुट्ठि स्त्री [**तुष्टि**] १ खुशी, आनन्द, संतोष; (स २००; सुर ३, २५; सुपा २४६; निर १,१)। २ कृपा, महरबानी; (कुप्र १)।

तुड अक [**तुड्**] टूटना, अलग होना । तुडइ; (हे ४,११६)।

तुडि स्त्री [**त्रुटि**] १ न्यूनता, कमी ; २ दोष, दूषण ; (हे ४, ३९०) । ३ संशय, संदेह ; (सुर ३, १६१) ।

तुडिअ वि [**त्रुटित**] टूटा हुआ, विच्छिन्न ; (अच्चु ३३ ; दे १,१५६; सुपा ८५) ।

तुडिअ न [दे **त्रुटित**] १ वाद्य, वादित्र, बाजा ; (औप ; राय ; जं ३; पण्ह २, ५) । २ बाहु-रक्षक, हाथ का आभरण-विशेष ; (औप ; ठा ८ ; पउम ८२,१०४; राय) । ३ संख्या-विशेष, 'तुडिअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २,४) । ४ साँधा, फटे हुए वस्त्र आदि में लगायी जाती पट्टी ; (निचू २) ।

तुडिअंग न [दे **त्रुटिताङ्ग**] १ संख्या-विशेष, 'पूर्व' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २, ४) । २ पुं वाद्य देने वाला कल्प वृक्ष ; (ठा १० ; सम १७ ; पउम १०२, १२३) ।

तुडिआ स्त्री [**तुडिता**] लोकपाल देवों के अग्र-महिषिओं की मध्यम परिषत् ; (ठा ३, २) ।

तुडिआ स्त्री [दे **तुटिका**] बाहु-रक्षिका, हाथ का आभरण-विशेष ; (पण्ह १, ४ ; णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

तुणय पुं [दे] वाद्य-विशेष ; (दे ५, १६)।
तुण्णग देखो **तुण्णाग** ; (राज)।
तुण्णण न [तुन्नन] फटे हुए वस्त्र का सन्धान ; (उप पृ ४१३)।
तुण्णाग } पुं [तुन्नवाय] वस्त्र को साँधने वाला, रफू करने
तुण्णाय } वाला ; (णंदि ; उप पृ२१० ; महा)।
तुण्णिय वि [तुन्नित] रफू किया हुआ, साँधा हुआ; (बृह१)।
तुण्हिं अ [तूष्णीम्] मौन, चुपकी ; (भवि)।
तुण्हि पुं [दे] सूकर, सूअर ; (दे ५, १४)।
तुण्हिअ } वि [तूष्णीक] मौन रहा हुआ; (प्राप्र ; गा
तुण्हिक्क } ३५४ ; सुर ४, १४८)।
तुण्हिक्क वि [दे] मृदु-निश्चल , (दे ५, १५)।
तुण्हीअ देखो **तुण्हिअ** ; (स्वप्न ४२)।
तुत्त देखो **तोत्त** ; (सुपा २३७)।
तुद देखो **तुअ** । तुदए ; (षड्)। वकृ—**तुदं** ; (विसे १४७०)।
तुप्प पुं [दे] १ कौतुक ; २ विवाह, शादी ; ३ सर्षप, सरसों, धान्य-विशेष; ४ कुतुप, घी आदि भरने का चर्म-पात्र ; (दे५, २२)। ५ वि. म्रक्षित, चुपड़ा हुआ, घी आदि से लिप्त; (दे५, २२ ; कप्प ; गा २२ ; २८६ ; हे १, २००)। ६ स्निग्ध, स्नेह-युक्त ; (दे ५, २२ ; ओघ ३०७ भा)। ७ न. घृत, घी ; (से १५, ३८ ; सुपा६३४ ; कुमा)।
तुप्पइअ }
तुप्पलिअ } वि [दे] घी से लिप्त ; (गा ५२० अ)।
तुप्पविअ }
तुमंतुम पुं [दे] क्रोध-कृत मनो-विकार विशेष ; (ठा ८—पत्र ४४१)।
तुमुल पुं [तुमुल] १ लोम-हर्षण युद्ध, भयानक संग्राम ; (गउड)। २ न. शोरगुल ; (पात्र)।
तुम्ह स [युष्मत्] तुम, आप ; (हे१, २४६)।
तुम्हकेर वि [त्वदीय] तुम्हारा ; (कुमा)।
तुम्हकेर वि [युष्मदीय] आपका, तुम्हारा ; (हे १,२४६ ; २, १४७)।
तुम्हार (अप) ऊपर देखो ; (भवि)।
तुम्हारिस वि [युष्मादृश] आप के जैसा, तुम्हारे जैसा ; (हे १, १४२ ; गउड ; महा)।
तुम्हेच्चय वि [यौष्माक] आपका, तुम्हारा; (हे २,१४९; कुमा ; षड्)।

तुयट्ट अक [त्वग्+वृत्] पार्श्व को घुमाना, करवट फिराना । तुयट्टइ ; (कप्प ; भग)। तुयट्टेज्ज, तुयट्टेज्जा ; (भग ; औप)। हेकृ—**तुयट्टित्तए** ; (आचा)। कृ—**तुयट्टियव्व** ; (णाया १,१ ; भग, औप)।
तुयट्टण न [त्वग्वर्तन] पार्श्व-परिवर्तन, करवट फिराना; (ओघ १५२ भा ; औप)।
तुयट्टावण न [त्वग्वर्तन] करवट बदलवाना। (आचा)।
तुयावइत्ता देखो **तुअ** ।
तुर अक [त्वर्] त्वरा करना, शीघ्रता करना । वकृ—**तुरंत, तुरेंत, तुरमाण, तुरेमाण**; (हे ४,१७२; प्रासू ५८; षड्)।
तुरंग पुं [तुरङ्ग] अश्व, घोड़ा ; (कुमा ; प्रासू ११७)। २ रामचन्द्र का एक सुभट ; (पउम ५९, ३८)।
तुरंगम पुं [तुरङ्गम] अश्व, घोड़ा ; (पात्र ; पिंग)।
तुरंगिआ स्त्री [तुरङ्गिका] घोड़ी ; (पात्र)।
तुरंत देखो **तुर** ।
तुरक्क पुं [दे, तुरुष्क] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान ; २ अनार्य जाति-विशेष, तुर्क ; (ती १४)।
तुरग देखो **तुरय** ; (भग११,११ ; राय)। °**मुह** पुं [°**मुख**] अनार्य देश-विशेष ; (सूअ २,१)। °**मेढ़ग** पुं [°**मेढ्रक**] अनार्य देश-विशेष ; (सूअ १, ५, १)।
तुरमाण देखो **तुर** ।
तुरय पुं [तुरग] १ अश्व, घोड़ा ; (पण्ह १, ४)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**देहपिंजरण** न [°**देहापञ्जरण**] अश्व को सिंगारना ; (पात्र)। देखो **तुरग** ।
तुर } स्त्री [त्वरा] शीघ्रता, जल्दी ; (दे ५, १६)।
तुरा } °**वंत** वि [°**वत्**] त्वरा-युक्त ; त्वरा वाला ; (से ४, ३०)।
तुरिअ वि [त्वरित] १ त्वरा-युक्त, उतावला ; (पात्र ; हे ४,१७२ ; औप ; प्राप्र)। २ क्रिवि. शीघ्र, जल्दी ; (सुपा ४६४ ; भवि)। °**गइ** वि [°**गति**] १ शीघ्र गति वाला । २ पुं. अमितगति-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)।
तुरिअ वि [तुर्य] चौथा, चतुर्थ ; (सुर ४, २५० ; कम्म ४, ६६ ; सुपा ४६५)। °**निद्दा** स्त्री [°**निद्रा**] मरण-दशा ; (उप पृ १४३)।
तुरिअ न [तूर्य] वाद्य, वादित्र ; "तुरियाणं संनिनाएणं, दिव्वेणं गगणं फुसे " (उत्त २२, १२)।
तुरिमिणी देखो **तुरुमणी** ; (राज)।
तुरी स्त्री [दे] १ पीन, पुष्ट; २ शय्या का उपकरण; (दे५,२२)।

तुरु न [दे] वाद्य-विशेष ; (विक ८७) ।
तुरुक्क न [तुरुष्क] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप करने में काम आता है, सिल्हक ; (सम १३७ ; णाया १, १ ;पउम २, ११ ; औप) ।
तुरुक्की स्त्री [तुरुष्की] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी) ।
तुरुमणी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (भत्त ६१) ।
तुरंत } देखो तुर ।
तुरेमाण }
तुल सक [तोलय्] १ तौलना । २ उठाना । ३ ठीक २ निश्चय करना । तुलइ. तुलेइ ; (हे ४, २५ ; उव ; वज्जा १५८)। वकृ—तुलंत ; (पिंग) । संकृ—तुलेऊण ; (बृह १) । कृ—तुलेअव्व ; (से ६, २६) ।
तुल° देखो तुला ; (सुपा ३६) ।
तुलंगा देखो तुलग्गा ; (अच्चु ८०) ।
तुलग्ग न [दे] काकतालीय न्याय ; (दे ५, १५ ; से ४, २७) ।
तुलग्गा स्त्री [दे] यदृच्छा, स्वैरिता,स्वेच्छा ; (विक ३५)।
तुलण न [तुलन] तौलना, तालन ; (कप्पू ; वज्जा १५७)।
तुलणा स्त्री [तुलना] तौलना, तोलन ; (उप पृ २७४ ; स ६६२) ।
तुलय वि [तोलक] तौलने वाला ; (सुपा १६७) ।
तुलसिआ स्त्री [तुलसिका] नीचे देखो ; (कुमा) ।
तुलसी स्त्री [दे.तुलसी] लता-विशेष, तुलसी ; (दे ५, १४ ; पण्ण १ ; ठा ८ ; पाअ) ।
तुला स्त्री [तुला] १ राशि-विशेष ; (सुपा ३६) । २ तराजू, तौलने का साधन ; (सुपा ३६० ; गा १६१) । ३ उपमा, सादृश्य ; (सूअ २, २) । °सम वि [°सम] राग-द्वेष से रहित, मध्यस्थ ; (बृह ६) ।
तुलिअ वि [तुलित] १ उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ ; (से ६, २०) । २ तौला हुआ; (पाअ) । ३ गुना हुआ; (राज) ।
तुलेअव्व देखो तुल ।
तुल्ल त्रि [तुल्य] समान, सरीखा ; (भग ; प्रासू १२ ; १४६) ।
तुवर अक [त्वर्] त्वरा करना, शीघ्रता करना । तुवरइ ; हे ४,१७०)। वकृ—तुवरंत, (हे ४,१७०) । प्रयो. वकृ—तुवराअंत ; (नाट—मालती ५०) ।
तुवर पुंन [तुवर] १ रस-विशेष, कषाय रस ; (दे ५, १६) ।२ वि. कषाय रस-वाला, कसैला ; (से ८, ५५) ।
तुवरा देखो तुरा ; (नाट—महावीर २७) ।
तुवरी स्त्री [तुवरी] अन्न-विशेष, अरहर ; (श्रा १८ ; गा ३५८) ।
तुस पुं [तुष] १ कोद्रव आदि तुच्छ धान्य ; (ठा ८) । २ धान्य का छिलका, भूसी ; (दे २, ३६) ।
तुसली स्त्री [दे] धान्य-विशेष ; " तं तत्थवि तो तुसलिं वावंइ सो किंपिवि वरवीयं " (सुपा ५४५), " देवगिहे जंतीए तुज्झ तुसली अणुग्गाया " (सुपा १३ टि) ।
तुसार न [तुषार] हिम, वर्फ ; (पाअ) । °कर पुं [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा ; (सुपा ३३) ।
तुसिणिय } वि [तुष्णीक] मौनी, चुप, वचन-रहित ;
तुसिणीय } (णाया १, १—पत्र २८ ; ठा ३, ३) ।
तुसिय पुं [तुषित] लोकान्तिक देवों की एक जाति ; (णाया १, ८ ; सम ८५) ।
तुसेअजंभ न [दे] दारु, लकड़ी, काष्ठ ; (दे ५, १६) ।
तुसोदग } न [तुषोदक] व्रीहि आदि का धौन-जल ;
तुसोदय } (राज ; कप्प) ।
तुस्स देखो तूस=तुष् । तुस्सइ ; (विसे ६३२) ।
तुह° स [त्वत्°] तुम । °तणय वि [°संबन्धिन्]तुम्हारा, तुमसे संबन्ध रखने वाला; (सुपा ५५३) ।
तुहार (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा ; (हे ४, ४३४) ।
तुहिण न [तुहिन] हिम, तुषार ; (पाअ) । °इरि पुं [°गिरि] हिमाचल पर्वत ; (गउड) । °कर पुं [°कर] चन्द्रमा ; (कप्पू) । °गिरि देखो °इरि ; (सुपा ६५८)। °लय पुं [°लय] हिमालय पर्वत ; (सुपा ८८) ।
तूअ पुं [दे] ईख का काम करने वाला , (दे ५, १६) ।
तूण पुंन [तूण] इषुधि, भाथा, तरकस ; (हे १, १२५ ; षड् ; कुमा) ।
तूणइल्ल पुं [तूणावत्] तूणा-नामक वाद्य वजाने वाला ; (पण्ह २, ४ ; औप ; कप्प) ।
तूणा } स्त्री [तूणा] १ वाद्य-विशेष ; (राय ; अणु) । २
तूणि° } इषुधि, भाथा ; (जं ३ ; पि १२७) ।
तूर देखो तुरव । तूरइ ; (हे ४, १७१ ; षड्) । वकृ—तूरंत, तूरेंत, तूरमाण, तूरेमाण; (हे ४, १७१ ; सुपा २६१ ; षड्) ।
तूर पुंन [तूर्य] वाद्य, वाजा ; (हे २, ६३ ; षड् ; प्राप्र)। °वइ पुं [°पति] नटों का मुखिया ; (बृह १) ।

तूरंत } देखो **तूर**=तुरव ।
तूरमाण }

तूरविअ वि [**त्वरित**] जिसको शीघ्रता कराई गई हो वह ; (से १२, ८३) ।

तूरिय पुं [**तौर्यिक**] वाद्य बजाने वाला ; (स ७०५) ।

तूरी स्त्री [**दे**] एक प्रकार की मिट्टी ; (जी ४) ।

तूरंत } देखो **तूर**=तुरव ।
तूरेमाण }

तूल न [**तूल**] रुई, रूआ, बीज-रहित कपास ; (औप ; पाअ ; भवि) ।

तूलिअ न. नीचे देखो । "नणु विणासिज्जइ महग्घियं तूलियं गंडुयमाइयं" (महा) ।

तूलिआ स्त्री [**तूलिका**] १ रूई से भरा मोटा बिछौना, गद्दा ; (दे ५, २२) । २ तसवीर बनाने की कलम ; (णाया १, ८) ।

तूलिणी स्त्री [**दे**] वृक्ष-विशेष, शाल्मली का पेड़ ; (दे ५, १७) ।

तूलिल्ल वि [**तूलिकावत्**] तसवीर बनाने की कलम वाला, कूर्चिका-युक्त ; (गउड) ।

तूली स्त्री [**तूली**] देखो **तूलिआ** ; (सुर २, ८२ ; पउम ३५, २४ ; सुपा २६२) ।

तूवर देखो **तुवर**; (विपा १, १—पत्र १६) ।

तूस अक [**तुष्**] खुश होना । तूसइ, तूसए ; (हे ४, २३६ ; संक्षि ३६; षड्) । कृ—**तूसियव्व** ; (पण्ह २,५)।

तूह देखो **तित्थ** ; (हे १,१०४; २,७२; कुमा; दे ५,१६) ।

तूहण पुं [**दे**] पुरुष, आदमी ; (दे ५, १७) ।

ते° देखो **ति**=त्रि । °**आलीस** स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] १ संख्या-विशेष, चालीस और तीन की संख्या ; २ तेआलीस की संख्या वाला ; (सम ६८) । °**आलीसइम** वि [°**चत्वारिंश**] तेआलीसवाँ ; (पउम ४३, ४६) । °**आसी** स्त्री [°**अशीति**] १ संख्या-विशेष, अस्सी और तीन ; २ तिरासी की संख्या वाला ; (पि ४४६) । °**आसीइम** वि [°**अशीतितम**] तिरासीवाँ ; (सम ८६ ; पउम ८३, १४) । °**इंदिय** पुं [°**इन्द्रिय**] स्पर्श, जीभ और नाक इन तीन इन्द्रिय वाला प्राणी ; (ठा २, ४ ; जी १७) । °**ओय** पुं [°**ओजस्**] विषम राशि-विशेष ; (ठा ४, ३) । °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] तिरानवे, नव्वे और तीन, ६३ ; (सम ६७) । °**णउय** वि [°**नवत**] तिरानवाँ, ६३ वाँ; (कप्प ; पउम ६३, ४०) । °**णवइ** देखो °**णउइ** ; (सुपा ६५४) । °**तीस**, °**त्तीस** स्त्रीन [**त्रयस्त्रिंशत्**] तेतीस, तीस और तीन; (भग ; सम ५८)। स्त्री—°**सा** ; (हे १, १६५ , पि ४४७) । °**त्तीसइम** वि [**त्रयस्त्रिंश**] तेतीसवाँ ; (पउम ३३, १४८) । °**वट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] तिरसठ, साठ और तीन ; (पि २६५) । °**वण्ण**, °**वन्न** स्त्रीन [°**पञ्चाशत्**] त्रेपन, पचास और तीन ; (हे २, १७४ ; षड् ; सम ७२) । °**वत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] तिहत्तर ; (पि २६५) । °**वीस** स्त्रीन [**त्रयोविंशति**] तेईस, वीस और तीन; (सम ४२ , हे १, १६५) । °**वीस**, °**वीसइम** वि [**त्रयोविंश**] तेईसवाँ ; (पउम २०, ८२ ; २३, २६ ; ठा ६) । °**संझ** न [°**सन्ध्य**] प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल का समय ; (पउम ६६ , ११) । °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] देखो °**वट्ठि** ; (सम ७७) । °**सीइ** स्त्री [°**अशीति**] तिरासी, अस्सी और तीन ; (सम ८६ ; कप्प) । °**सीइम** वि [°**अशीत**] तिरासीवाँ ; (कप्प) ।

तेअ सक [**तेजय्**] तेज करना, पैनाना, तीक्ष्ण करना । तेअइ ; (षड्) ।

तेअ देखो **तइअ**=तृतीय ; (रभा) ।

तेअ पुं [**तेजस्**] १ कान्ति, दीप्ति, प्रकाश, प्रभा ; (उवा ; भग ; कुमा ; ठा ८) । २ ताप, अभिताप ; (कुमा ; सूअ १, ५,१) । ३ प्रताप ; ४ माहात्म्य, प्रभाव; ५ बल, पराक्रम; (कुमा) । °**मंत** वि [°**विन्**] तेज वाला, प्रभा-युक्त; (पण्ह २, ४) । °**वीरिय** पुं [°**वीर्य**] भरत चक्रवर्ती के प्रपौत्र का पौत्र, जिसको आदर्श-भवन में केवलज्ञान हुआ था; (ठा ८)।

तेअ न [**स्तेय**] चोरी , (भग २ ७) ।

तेअ देखो **तेअय** ; (भग) ।

तेअंसि वि [**तेजस्विन्**] तेज-वाला, तेज-युक्त ; (औप ; रयण ४ ; भग ; महा ; सम १५२ ; पउम १०२, १४१) ।

तेअग देखो **तेअय** ; (जीव १) ।

तेअण न [**तेजन**] १ तेज करना, पैनाना ; २ उत्तेजन ; (हे ४, १०४) । ३ वि. उत्तेजित करने वाला ; (कुमा) ।

तेअय न [**तैजस**] शरीर-सहचारी सूक्ष्म शरीर-विशेष ; (ठा २, १ ; ५, १ ; भग) ।

तेअलि पुं [**तेतलिन्**] १ मनुष्य जाति-विशेष ; (जं १ ; इक) । २ एक मन्त्री के पिता का नाम ; (णाया १, १४)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] राजा कनकरथ का एक मन्त्री ; (णाया

१, १४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष ; (णाया १, १४)। °सुय पुं [°सुत] देखो °पुत्त ; (राज)। देखो तेतलि।

तेअव अक [प्र+दीप्] १ दीपना, चमकना। २ जलना। तेअवइ ; (हे ४, १५२ ; षड्)।

तेअविअ वि [प्रदीप्त] जला हुआ ; (कुमा)। २ चमका हुआ, उद्दीप्त ; (पाअ)।

तेअविअ वि [तेजित] तेज किया हुआ ; (दे ८,१३)।

तेअस्सि पुं [तेजस्विन्] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ५)।

तेआ स्त्री [तेजस्] त्रयोदशी तिथि ; (जो ४ ; जं ७)।

तेआ स्त्री [त्रेता] युग-विशेष, दूसरा युग, "तेआजुगे य दासरही रामो सीयालक्खणसजुओवि" (ती २६)।

तेआ° देखो **तेअय** , (सम १४२ ; पि ६४)।

तेआलि पुं [दे] वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १, १—पत्र ३४)।

तेइच्छ न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार ; (दस३)।

तेइच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज ; (आचा, णाया १, १३)।

तेइच्छिय देखो **तेगिच्छिय** ; (विपा १, १)।

तेइच्छी स्त्री [चिकित्सा, चैकित्सी] प्रतीकार, इलाज ; (कप्प)।

तेइल्ल देखो **तेअंसि** ; (सुर ७, २१७ ; सुपा ३३)।

तेउ पु [तेजस्] १ आग, अग्नि ; (भग, दं १३)। २ लेश्या-विशेष, तेजो-लेश्या ; (भग ; कम्म ४, ५०)। ३ अग्निशिख-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा४, १)। ४ताप, अभिताप ; (सुअ १, १, १)। ५ प्रकाश, उद्योत, (सूअ२, १)। °आय देखो °काय; (भग)। °कंत पुं [°कान्त] लोकपाल देव-विशेष ; (ठा४, १)। °काइय पुं [°कायिक] अग्नि का जीव ; (ठा३, १)। °काय पुं [°काय] अग्नि का जीव ; (पि३५५)। °क्काइय देखो °काइय ; (पण्ण १ ; जीव १)। °प्पभ पुं [°प्रभ] अग्निशिख-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। °प्फास पुं [°स्पर्श] उष्ण स्पर्श ; (आचा)। °लेस वि [°लेश्य] तेजो-लेश्या वाला, (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] तप-विशेष के प्रभाव से होने वाली शक्ति-विशेष से उत्पन्न होतो तेज की ज्वाला ; (ठा ३, १ ; सम ११)। °लेस्स देखो °लेस; (पण्ण १७)। °लेस्सा देखो °लेसा; (ठा ३,३)। °सिह पु [°शिख] एक लोकपाल; (ठा४, १)। °सोय न [°शौच] भस्म आदि से किया जाता शौच ; (ठा ५, ३)।

तेउ देखो **तेअय** ; (पव २३१)।

तेंडुअ न [दे] वृक्ष विशेष, टींवरू का पेड़ ; (दे ५, १७)।

तेंदु, तेंदुअ, तेंदुग पु [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदु का पेड़ ; (पण्ण १ ; ठा ८; पउम ४२, ७)। २ गेंद; कन्दुक ; (पउम १५, १३)।

तेंदुसय पुं [दे] कन्दुक, गेंद ; (णाया१, ८)।

तेंबरु पु [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति ; (जीव १)।

तेगिच्छ देखो **तेइच्छ** ; (सुर १२, २११)।

तेगिच्छग वि [चिकित्सक] १ चिचित्सा करने वाला ; २ पुं. वैद्य, हकीम ; (उप ५६४)।

तेगिच्छा देखो **तेइच्छा** ; (सुर १२, २११)।

तेगिच्छायण देखो **तिगिच्छायण** ; (राज)।

तेगिच्छि देखो **तिगिछि** ; (राज)।

तेगिच्छिय वि [चैकित्सिक] १ चिकित्सा करने वाला ; २ पुं, वैद्य, हकीम, ३ न. चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार-करण। °साला स्त्री [°शाला] दवाखाना, चिकित्सालय ; (णाया १, १३ – पत्र १७६)।

तेजंसि देखो **तेअंसि** ; (पि ७४)।

तेजपाल पुं [तेजपाल] गुजरात के राजा वीरधवल का एक यशस्वी मंत्री; (ती ३)।

तेजलपुर न [तेजलपुर] गिरनार पर्वत के पास, मंत्री तेजपाल का बसाया हुआ एक नगर; (ती २)।

तेजस्सि देखो **तेअंसि** ; (वव १)।

तेज्ज (अप) देखो **चय**=त्यज्। तेज्जइ ; (पिंग)। संकृ— **तेज्जिअ** ; (पिंग)।

तेज्जिअ (अप) वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ ; (पिंग)।

तेड्डु पुं [दे] १ शलभ, अन्न-नाशक कीट, टिड्डु ; २ पिशाच, राक्षस ; (दे ५, २३)।

तेण अ [तेन] १ लक्षण-सूचक अव्यय, "भमररुअं तेण कमलवण" (हे २, १८३ ; कुमा)। २ उस तरफ ;(भग)।

तेण, तेणग, णयते पुं [स्तेन] चोर, तस्कर ; (ओघ ११; कस ; गच्छ ३ ; ओघ ४०२)। °प्पओग पुं [°प्रयोग] १ चोर को चोरी करने के लिए प्रेरणा करना ; २ चोरी के साधनों का दान या विक्रय ; (धर्म २)।

तेणिअ, तेणिक्क न [स्तैन्य] चोरी, अदत्त वस्तु का ग्रहण ; (श्रा १४ ; ओघ ५६६ , पण्ह १, ३)।

तेणिस वि [**तैनिश**] तिनिशवृक्ष-संबन्धी, बेंत का; (भग ७, ६)।
तेण्ण न [**स्तैन्य**] चोरी, पर-द्रव्य का अपहरण ; (निचू १)।
तेण्हाइअ वि [**तृष्णित**] तृष्णा-युक्त, प्यासा ; (से १३, ३६)।
तेतलि पुं [**तेतलिन्**] १ धरणेन्द्र के गन्धर्व-सेना का नायक; (इक)। २ देखो **तेअलि**, (णाया १, १४—पत्र १६०)।
तेतिल देखो **तीइल** ; (जं ७)।
तेत्तिअ वि [**तावत्**] उतना ; (प्राप्र ; गउड ; गा ७१ ; कुमा)।
तेत्तिर देखो **तित्तिर** ; (जीव १)।
तेत्तिल वि [**तावत्**] उतना ; (हे २, १५७ ; कुमा)।
तेत्तुल } (अप) ऊपर देखो, (हे ४, ४०७ ; कुमा ; हे
तेत्रुल्ल } ४, ४३५ टि)।
तेत्थु (अप) देखो **तत्थ**=तत्र ; (हे ४, ४०४ ; कुमा)।
तेद्दह देखो **तेत्तिल** ; (हे २, १५७ ; प्राप्र ; षड् ; कुमा)।
तेन्न देखो **तेण्ण** ; (कस)।
तेम् (अप) देखो **तह**=तथा ; (पिंग)।
तेमासिअ वि [**त्रैमासिक**] १ तीन मास में होने वाला ; (भग)। २ तीन मास-संबन्धी ; (सुर ६, २११ ; १४, २२८)।
तेम्व देखो **तेम्** ; (हे ४, ४१८)।
तेर } त्रि.ब. [**त्रयोदशन्**] तेरह, दस और तीन ; (श्रा
तेरस } ४४ ; दं ३१ ; कम्म २, २६ ; ३३)।
तेरसम वि [**त्रयोदश**] तेरहवाँ ; (सम २५ ; णाया १, १—पत्र ७२)।
तेरसया स्त्री [**दे**] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।
तेरसी स्त्री [**त्रयोदशी**] १ तेरहवीं। २ तिथि-विशेष, तेरस ; (सम २६ ; सुर ३, १०५)।
तेरसुत्तरसय वि [**त्रयोदशोत्तरशततम**] एक सौ तेरहवाँ, ११३ वाँ ; (पउम ११३, ७२)।
तेरह देखो **तेरस** ; (हे १, १६५ ; प्राप्र)।
तेरासिअ वि [**त्रैराशिक**] १ मत-विशेष का अनुयायी, त्रैराशिक मत—जीव, अजीव और नोजीव इन तीन राशिओं को मानने वाला; (औप; ठा ७)। २ न. मत-विशेष; (सम ४० ; विसे २४५१ ; ठा ७)।
तेरिच्छ देखो **तिरिच्छ**=तिरश्चीन। "दिव्वं व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहिअएणं" (आप ३१)।
तेरिच्छ न [**तिर्यक्त्व**] तिर्यंचपन, पशु-पक्षिपन ; (उप १०३१ टी)।
तेरिच्छिअ वि [**तैरश्चिक**] तिर्यक्-संबन्धी ; (ओघ २६६ ; भग)।
तेल न [**तैल**] १ गोत्र विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७)। २ तिल का विकार, तेल ; (सुपि १७)।
तेलंग पु व. [**तैलङ्ग**] १ देश-विशेष; २ पुंस्त्री. देश-विशेष का निवासी मनुष्य ; (पिंग)।
तेलाडी स्त्री [**तैलाटी**] कीट-विशेष, गंधोली ; (दे ७, ८४)।
तेलुक्क }
तेलोअ } न [**त्रैलोक्य**] तीन जगत—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (प्रासु ६७ ; प्राप्र ; णाया १,
तेलोक्क } ४ ; पउम ८, ७६ ; हे १, १४८ ; २, ६७ ; षड् ; सत्ति १७)। °**दंसि** वि [°**दर्शिन्**] सर्वज्ञ, सर्वदर्शी ; (ओघ ५६६)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] तीनों जगत् का स्वामी, परमेश्वर ; (षड्)। °**मंडण** न [°**मण्डन**] १ तीनों जगत् का भूषण। २ पुं. रावण का पट्ट-हस्ती ; (पउम ८०, ६०)।
तेल्ल न [**तैल**] तेल, तिल का विकार, स्निग्ध द्रव्य-विशेष ; (हे २, ६८ ; अणु ; पव ४)। °**केला** स्त्री [°**केला**] मिट्टी का भाजन-विशेष; (राज)। °**पल्ल** न [°**पल्य**] तैल रखने का मिट्टी का भाजन-विशेष ; (दसा १०)। °**पाइया** स्त्री [°**पायिका**] क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (आवम)।
तेल्लग न [**तैलक**] सुरा-विशेष ; (जीव ३)।
तेल्लिअ पु [**तैलिक**] तेल बेचने वाला ; (वव ६)।
तेल्लोअ } देखो **तेलुक्क** ; (पि १६६ ; प्राप्र)।
तेल्लोक्क }
तेवँ } (अप) देखो **तह**=तथा ; (हे ४, ३६७ ; कुमा)।
तेवँइ }
तेवट्ठ वि [**त्रैषष्ट**] तिरसठ की संख्या वाला, जिसमें तिरसठ अधिक हो ऐसी संख्या ; "तिन्नि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं" ; (पि २६५)।
तेवड (अप) वि [**तावत्**] उतना ; (हे ४, ४०७ ; कुमा)।
तेह (अप) वि [**तादृश**] उसके जैसा, वैसा ; (हे ४, ४०२ ; षड्)।
तेहिं (अप) अ. वास्ते, लिए; (हे ४, ४२५, कुमा)।
तो देखो **तओ** ; (आचा ; कुमा)।
तो अ. [**तदा**] तब, उस समय ; (कुमा)।

तोअय पुं [दे] चातक पक्षी ; (दे ५, १८)।
तोंड देखो तुंड ; (हे १, ११६ ; प्राप्र)।
तोंतडि स्त्री [दे] करम्ब, दही-भात की बनी हुई एक खाद्य वस्तु ; (दे ५, ४)।
तोक्कय वि [दे] बिना ही कारण तत्पर होने वाला ; (दे ५, १८)।
तोक्खार देखो तुक्खार ; "खरखुरखयखोणीयलअसंखतोक्खारलक्खजुओ" (सुर १२, ६१)।
तोटअ न [त्रोटक] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
तोड सक [तुड्] १ ताड़ना, भेदन करना। २ अक टूटना। तोडइ ; (हे४, ११६)। वकृ—तोडंत ; (भवि)। संकृ—तोडिउं ; (भवि), तोडित्ता ; (ती ७)।
तोड पुं [त्रोट] त्रुटि ; (उप पृ १८)।
तोडण वि [दे] असहन, असहिष्णु ; (दे५, १८)।
तोडण न [तोदन] व्यथा, पोड़ा-करण ; (राज)।
तोडहिआ स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ; (आचा २, ११)।
तोडिअ वि [त्रोटित] तोड़ा हुआ ; (महा ; सण)।
तोड्ड पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति ; (राज)
तोण पुन [तूण] शरधि, भाथा; (पाअ ; औप ; हे१, १२५; विपा १, ३)।
तोणीर पुंन [तूणीर] शरधि, भाथा ; (पाअ ; हे१, १२४; भवि)।
तोत्त न [तोत्र] प्रतोद, बैल को मारने का बाँस का आयुध-विशेष ; (पाअ ; दे३, १६ ; सुपा २३७ ; सुर१४,५१)।
तोत्तडि [दे] देखो तोंतडि ; (पाअ)।
तोदग वि [तोदक] व्यथा उपजाने वाला, पोड़ा-कारक ; (उत्त २०)।
तोमर पुं [तोमर] १ बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण ; (पण्ह १, १ ; सुर २, २८ ; औप)। २ न. छन्द-विशेष ; (पिंग)।
तोमरिअ पुं [दे] १ शस्त्र का प्रमार्जन करने वाला ; (दे ५, १८)। २ शस्त्र-मार्जन ; (षड्)।
तोमरिगुंडी स्त्री [दे] वल्ली विशेष ; (पाअ)।
तोमरी स्त्री [दे] वल्ली, लता ; (दे५, १७)।
तोम्हार (अप) देखो तुम्हार ; (पि ४३४)।
तोय न [तोय] पानी, जल ; (पण्ह १, ३ ; वज्जा १४ ; दे २, ४७)। °धरा, °धारा स्त्री [°धारा] एक दिक्कुमारी देवी ; (इक ; ठा ८)। °पट्ठ, °पिट्ठ न [°पृष्ठ] पानी का उपरि-भाग ; (पण्ह १, ३ ; औप)।
तोय पुं [तोद] व्यथा, पोड़ा ; (ठा ४, ४)।
तोरण न [तोरण] १ द्वार का अवयव-विशेष, बहिर्द्वार ; (गा २६२)। २ बन्दन-वार, फूल या पत्तों की माला जो उत्सव में लटकाई जाती है ; (औप)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष ; (महा)।
तोरविअ वि [दे] उत्तेजित ; (पाअ ; कुप्र १६२)।
तोरामदा स्त्री [दे] नेत्र का रोग-विशेष ; (महानि ३)।
तोल देखो तुल=तोलय्। तोलइ, तोलेइ ; (पिंग ; महा)। वकृ—तोलंत ; (वज्जा१५८)। कवकृ—तोलिज्जमाण; (सुर १५, ६४)। कृ —तोलियव्व; (स १६२)।
तोल पुंन [दे] मगध-देश प्रसिद्ध पल, परिमाण-विशेष ; (तंदु)।
तोलण पुं [दे] पुरुष, आदमी ; (दे ५, १७)।
तोलण न [तोलन] तौल करना, तौलना, नाप करना,(राज)।
तोलिय वि [तोलित] तौला हुआ ; (महा)।
तोल्ल न [तोल्य, तोल] तौल, वजन; (कुप्र १४६)।
तोवट्ट पुं [दे] १ कान का आभूषण-विशेष ; २ कमल की कर्णिका ; (दे ५, २३)।
तोस सक [तोषय्] खुशी करना, सन्तुष्ट करना। तोसइ ; (उव)। कर्म—तोसिज्जइ ; (गा ५०८)।
तोस पुं [तोष] खुशी, आनन्द, संतोष ; (पाअ ; सुपा २७५)। °यर वि [°कर] संतोष-कारक ; (काल)।
तोस न [दे] धन, दौलत ; (दे ५, १७)।
तोसलि पुं [तोसलिन] १ ग्राम-विशेष ; २ देश-विशेष ; ३ एक जैन आचार्य ; (राज)। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य ; (आवम)।
तोसलिय पुं [तोसलिक] तोसलि-ग्राम का अधीश क्षत्रिय; (आवम)।
तोसविअ } वि [तोषित] खुश किया हुआ, संतोषित ;
तोसिअ } (हे ३, १५० ; पउम ७७, ८८)
तोहार (अप) देखो तुहार ; (पिंग ; पि ४३४)।
°त्त वि [°त्र] त्राण-कर्ता, रक्षक ; "सकलत्ते संतुट्ठो सकल त्तो सो नरो होइ" (सुपा ३६६)।
°त्तण देखो तण ; (से १, ६१)।
°त्ति देखो इअ=इति ; (कप्प ; स्वप्न १० ; सण)।
°त्थ देखो पत्थ ; (गा १३२)।
°त्थ वि [°स्थ] स्थित, रहा हुआ ; (आचा)।

°त्थ देखो अत्थ ; (वाअ १५) ।
त्थअ देखो थय=स्तृत ; (से १, १) ।
°त्थउड देखो थउड ; (गउड) ।
°त्थंव देखो थंब ; (चारु २०) ।
°त्थंभ देखो थंभ ; (कुमा) ।
°त्थंभण देखो थंभण ; (वा १०) ।
°त्थरु देखो थरु ; (पि ३२७) ।
°त्थल देखो थल ; (काप्र ८७) ।
°त्थली देखो थली ; (पि ३८७) ।
°त्थव देखो थव=स्तु । वकृ—°त्थवंत ; (नाट) ।
°त्थवअ देखो थवय ; (से १, ४० ; नाट) ।
°त्थाण देखो थाण ; (नाट) ।
°त्थाल दखो थाल ; (कुमा) ।
°त्थिअ देखो थिअ ; (गा ४२१) ।
°त्थिर देखो थिर ; (कुमा) ।
°त्थोअ देखो थोअ ; (नाट—वेणी २४) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि तयाराइसद्दसंकलणो
तेवीसइमो तरंगो समत्तो ।

———०———

थ

थ पुं [थ] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन-विशेष ; (प्राप ; प्रामा) ।
थ अ. १-२ वाक्यालंकार और पाद-पूर्त्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; "किं थ तयं पम्हुट्ठं जं थ तया भो जयंत पवरम्मि" (णाया १, १—पत्र १४८ ; पंचा ११) ।
°थ देखो एत्थ ; (गा १३१ ; १३२ ; कस) ।
थइअ वि [स्थगित] आच्छादित, ढ़का हुआ ; (से ५, ४३ ; गा ५७०) ।
थइअ°, थइआ स्त्री [स्थगिका] पानदानी, पान रखने का पात्र ; (महा) । °इत्त पुं [°वत्] ताम्बूल-पात्र-वाहक नौकर; (कुप्र ७१)। °धर पुं [°धर] ताम्बूल-पात्र का वाहक नौकर ; (सुपा १०७) । °वाहग पुं [°वाहक] पानदानी का वाहक नौकर ; (सुपा १०७) । देखो थगिय° ।
थइआ स्त्री [दे] थेली, कोथली ; "संवलथइआसणाहो" "दंसिया संवलत्थई (? इ) या" (कुप्र १२ ; ८०) ।
थइउं देखो थय=स्थगय् ।

थउड न [स्थपुट] १ विषम और उन्नत प्रदेश ; (दे २, ७८) । २ वि. नीचा-ऊँचा ; (गउड) ।
थउडिअ वि [स्थपुटित] १ विषम और उन्नत प्रदेश वाला । २ नीचा-ऊँचा प्रदेश वाला ; (गउड) ।
थउड्ड न [दे] भल्लातक, वृक्ष-विशेष, भिलावा; (दे ५,२६)।
थंडिल न [स्थण्डिल] १ शुद्ध भूमि, जन्तु-रहित प्रदेश ; (कस ; निचू ४) । २ क्रोध, गुस्सा ; (सूअ १, ६) ।
थंडिल्ल न [स्थण्डिल] शुद्ध भूमि ; (सुपा ५५८ ; आचा)।
थंडिल्ल न [दे] मण्डल, वृत्त प्रदेश ; (दे ५, २५) ।
थंत देखो था।
थंव वि [दे] विषम, अ-सम ; (दे ५, २४) ।
थंव पुं [स्तम्ब] तृण आदि का गुच्छ ; (दे ८, ४६ ; ओघ ७७१ ; कुप्र २२३) ।
थंभ अक [स्तम्भ्] १ रुकना, स्तब्ध होना, स्थिर होना, निश्चल होना । २ सक. क्रिया-निरोध करना, अटकाना ; रोकना, निश्चल करना । थंभइ ; (भवि) । कर्म—थंभिज्जइ; (हे २, ६) । संकृ—थंभिउं ; (कुप्र ३८५) ।
थंभ पु [स्तम्भ] १ स्तम्भ, थम्भा ; (हे २, ६ ; कुमा ; प्रासू ३३) । २ अभिमान, गर्व, अहंकार ; (सूअ १, १३; उत्त ११) । °विज्जा स्त्री [°विद्या] स्तब्ध करने की विद्या ; (सुपा ४६३) ।
थंभण न [स्तम्भन] १ स्तब्ध-करण, थभाँना ; (विसे ३००७ ; सुपा ५६६) । २ स्तब्ध करने का मन्त्र ; (सुपा ५६६) । ३ गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम मे प्रसिद्ध है ; (ती ५१) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, खंभात ; (सिग्घ १) ।
थंभणया स्त्री [स्तम्भना] स्तब्ध-करण; (ठा ४, ४) ।
थंभणी स्त्री [स्तम्भनी] स्तम्भन करने वाली विद्या-विशेष ; (णाया १, १६) ।
थंभय देखो थंभ = स्तम्भ ; (कुमा) ।
थंभिय वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ, थमाया हुआ; (कुप्र १४१; कुमा; कप्प ; औप) । २ जो स्तब्ध हुआ हो, अवष्टब्ध; (स ४६४) ।
थक्क अक [स्था] रहना, वैठना, स्थिर होना । थक्कइ ; (हे ४, १६ ; पिंग) । भवि—थक्किस्सइ ; (पि ३०६)।
थक्क अक [फक्क्] नीचे जाना । थक्कइ; (हे ४,८७) ।
थक्क अक [श्रम्] थकना, श्रान्त होना । थक्कंति; (पिंग)।

थक्क वि [**स्थित**] रहा हुआ ; (कुमा ; वज्जा ३८ ; सुपा २३७ ; आरा ७७ ; सट्ठि ६) ।

थक्क पुं [**दे**] १ अवसर, प्रस्ताव, समय ; (दे ५, २४ ; वव ६ ; महा ; विसे २०६३) । २ थका हुआ, श्रान्त ; "थक्कं सव्वसरीरं हियए सूलं सुदूसहं एइ" (सुर ७, १८५ ; ४, १६५) ।

थक्किअ वि [**श्रान्त**] थका हुआ, (पिंग) ।

थग देखो **थय**=स्थगय् । भवि—थगइस्सं ; (पि २२१) ।

थगण न [**स्थगन**] पिधान, संवरण, आच्छादन ; (दे २, ८३ ; ठा ४, ४) ।

थगथग अक [**थगथगाय्**] धड़कना, काँपना । वकृ— **थगथगिंत** ; (महा) ।

थगिय वि [**स्थगित**] पिहित, आच्छादित, आवृत ; (दस ५, १ ; आवम) ।

थगिय° देखो **थइअ°** । **°ग्गाहि** पुं [**°ग्राहिन्**] ताम्बूल-वाहक नौकर ; (सुपा ३३६) ।

थग्गया स्त्री [**दे**] चञ्चु, चोंच ; (दे ५, २६) ।

थग्घ पुं [**दे**] थाह, तला, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त ; (दे ५, २४) ।

थग्घा स्त्री [**दे**] ऊपर देखो ; (पाअ) ।

थट्ट पुंन [**दे**] १ ठठ, समूह, यूथ, जत्था ; "दुद्धरतुरंगथट्टा" (सुपा २८८), "विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठदोघट्टथट्ट" (लहुअ ४) । २ ठाठ, सजधज, आडम्बर ; (भवि) ।

थट्टि स्त्री [**दे**] पशु, जानवर ; (दे ५, २४) ।

थड पुंन [**दे**] ठठ, यूथ, समूह ; (भवि) ।

थड्ढ वि [**स्तब्ध**] १ निश्चल ; २ अभिमानी, गर्विष्ठ ; (सुपा ४३७ ; ५८२) ।

थड्ढिअ वि [**स्तम्भित**] १ स्तब्ध किया हुआ । २ स्तब्ध, निश्चल । ३ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, अकड़ रह कर गुरु को किया जाता प्रणाम ; (गुभा २३) ।

थण अक [**स्तन्**] १ गरजना । २ आक्रन्द करना, चिल्लाना । ३ आक्रोश करना । ४ जोर से नीसास लेना । वकृ—**थणंत**; (गा २६०) ।

थण पुं [**स्तन**] थन, कुच, पयोधर ; (आचा ; कुमा ; काप्र १६१) । **°जीवि** वि [**°जीविन्**] स्तन-पान पर निभने वाला बालक ; (श्रा १४) । **°वई** स्त्री [**°वती**] बड़े स्तन वाली ; (गउड) । **°विसारि** वि [**°विसारिन्**] । स्तन पर फैलने वाला ; (गउड) । **°सुत्त** न [**°सूत्र**] उरः-सूत्र ; (दे) । **°हर** पुं [**°भर**] स्तन का बोझ ; (हे १, १८६) ।

थणंधय पुं [**स्तनन्धय**] स्तन-पान करने वाला बालक ; छोटा बच्चा ; " नियय थणं धयंतं थणंधयं हंदि पिच्छंति " (सुर १०, ३७ ; अच्चु ६३) ।

थणण न [**स्तनन**] १ गर्जन, गरजना ; (सुअ १, ५, २)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट; (सूअ १, ५, १) । ३ आक्रोश,अभिशाप; (राज) । ४ आवाज वाला नीसास ; (सूअ १, २, ३) ।

थणिय न [**स्तनित**] १ मेघ का गर्जन ; (वज्जा १२; दे ५, २७) । २ आक्रन्द, चिल्लाहट ; (सम १५३) । ३ पुं भवनपति देवों की एक जाति; (ओप ; पण्ह १, ४) । **°कुमार** पुं [**°कुमार**] भवनपति देवों की एक जाति ; (ठा १, १) ।

थणिल्ल वि [**स्तनवत्**] स्तन वाला ; (कप्पू) ।

थणुल्लअ पुं [**स्तनक**] छोटा स्तन ; (गउड) ।

थण्णु देखो **थाणु** ; (गा ४२२) ।

थत्तिअ न [**दे**] विश्राम ; (दे ५, २६) ।

थद्ध देखो **थड्ढ** ; (सम ५१ ; गा ३०४ ; वज्जा १०) ।

थन्न न [**स्तन्य**] स्तन का दूध । **°जीवि** वि [**°जीविन्**] छोटा बच्चा ; (सुपा ६१६) ।

थप्पण न [**स्थापन**] न्यास, न्यसन ; (कुप्र ११७) ।

थप्पिअ वि [**स्थापित**] रक्खा हुआ, न्यस्त ; (पिंग) ।

थब्भर पुं [**दे**] अयोध्या नगरी के समीप का एक द्रह ; (ती ११) ।

थमिअ वि [**दे**] विस्मृत ; (दे ५, २५) ।

थय सक [**स्थगय्**] आच्छादन करना, आवृत करना, ढकना । थएइ, थएउ ; (पि ३०६ ; गा ६०५) । भवि—थइस्सं ; (गा ३१४) । हेकृ—**थइउं**; (गा ३६४) ।

थय वि [**स्तृत**] व्याप्त , भरपूर ; (से १, १) ।

थय पुं [**स्तव**] स्तुति, स्तवन, गुण-कीर्तन ; (अजि ३६ ; सं ४४) ।

थयण न [**स्तवन**] ऊपर देखो ; " थुइथयणवंदणनमंसणाणि एगट्ठिआणि एयाइं " (आव २) ।

थर पुं [**दे**] दही की तर, दही ऊपर की मलाई; (दे ५,२४)।

थरत्थर, **थरथर**, **थरहर** अक [**दे**] थरथरना, काँपना । थरत्थरइ, थरथरेइ, थरहरइ ; (सट्ठि ६६; पि २०७ ; सुर ७, ६; गा १६५) । वकृ—**थरथरंत**, **थरथ-**

राअंत, थरथराअमाण, थरथरेंत ; (ओघ ४७० ; पि ५५८ ; नाट—मालती ५५ ; पउम ३१, ४४) ।
थरहरिअ वि [दे] कम्पित ; (दे ५, २७ ; भवि ; सुर १, ७; सुपा २१ ; जय १०) ।
थरु पुं [दे. त्सरु] खड्ग-मुष्टि ; (दे ५, २४) ।
थरुगिण पुं [थरुकिन] १ देश-विशेष; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी । स्त्री—°गिणिआ; (इक) ।
थल न [स्थल] १ भूमि, जगह, सूखी जमीन ; (कुमा ; उप ६८६ टी) । २ ग्रास लेते समय खुले हुए मुँह को फाँक, खुले हुए मुँह की खाली जगह; (वव ७) । **°इल्ल** वि [°वत्] स्थल-युक्त ; (गउड) । **°कुक्कुडियंड** न [°कुक्कुटयण्ड] कवल-प्रक्षेप के लिए खुला हुआ मुख; (वव ७) । **°चार** पुं[°चार] जमीन में चलना; (आचा) । **°नलिणी** स्त्री [°नलिनी] जमीन में होने वाला कमल का गाछ; (कुमा) । **°य** वि [°ज] जमीन में उत्पन्न होने वाला ; (पणण १; पउम १२, ३७) । **°यर** वि [°चर] १ जमीन पर चलने वाला ; २ जमीन पर चलने वाला पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्राणी, (जीव ३; जी २०; औप) । स्त्री—°री; (जीव ३) ।
थलय पुं [दे] मंडप, तृणादि-निर्मित गृह; (दे ५, २५) ।
थलहिगा, **थलहिया** स्त्री [दे] मृतक-स्मारक, शव को गाड़ कर उस पर किया जाता एक प्रकार का चबूतरा ; (स ७५६ ; ७५७) ।
थली स्त्री [स्थली] जल-शून्य भू-भाग; (कुमा ; पात्र) । **°घोडय** पुं [°घोटक] पशु-विशेष; (वव ७) ।
थल्लिया स्त्री [दे. स्थालिका] थलिया, छोटा थाल, भोजन करने का बरतन ; (पउम २०, १६६) ।
थव सक [स्तु] स्तुति करना । वकृ—**थवंत**; (नाट) ।
थव देखो **थय**=स्तव; (हे २, ४६ ; सुपा ४४६) ।
थव पुं [दे] पशु, जानवर ; (दे ५, २४) ।
थवइ पुं [स्थपति] वर्धकि, बढई ; (दे २, २२) ।
थवइय वि [स्तवकित] स्तवक वाला, गुच्छ-युक्त; (णाया १, १; औप) ।
थवइल्ल वि [दे] जाँघ फैला कर बैठा हुआ ; (दे ५,२६)।
थवक्क पुं [दे] थोक, समूह, जत्था; " लब्भइ कुलवहुसुरए थवक्कओ सयलसोक्खाणं" (वज्जा ६६) ।
थवण देखो **थयण** ; (आव २) ।
थवणिया स्त्री [स्थापनिका] न्यास, जमा रखी हुई वस्तु; [illegible] (सुपा २७५) ।
थवय पुं [स्तवक] फूल आदि का गुच्छ ; (दे२, १०३ ; पात्र) ।
थविआ स्त्री [दे] प्रसेविका, वीणा के अन्त में लगाया जाता छोटा काष्ठ-विशेष ; (दे २, २५) ।
थविय वि [स्थापित] न्यस्त, निहित ; (भवि) ।
थविय वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित ; (सुपा ३४३) ।
थवी [दे] देखो **थविआ** ; (दे २, २५) ।
थस, **थसल** वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, २५) ।
थह पुं [दे] निलय, आश्रय, स्थान; (दे ५, २५) ।
था देखो **ठा** । थाइ; (भवि) । भवि—थाहिइ; (पि५२४) । वकृ—**थंत** ; (पउम१४, १३४ ; भवि) । संकृ—**थाऊण** ; (हे४, १६) ।
थाइ वि [स्थायिन्] रहने वाला । **°णी** स्त्री [°नी] वर्ष वर्ष पर प्रसव करने वाली घोड़ी ; (राज) ।
थाण देखो **ठाण** ; (हे४, १६ ; विसे१८५६ ; उप पृ३३२)।
थाणय न [स्थानक] आलवाल, कियारी ; (दे५,२७) ।
थाणय न [दे] १ चौकी, पहरा ; "भयाणया अडवि त्ति निविट्ठाइं थाणयाइं", "तओ वहुवोलियाए रयणीए थाणयनिविट्ठा तुरियतुरियमागया सबरपुरिसा" (स ५३७ ; ५४६) । २ पुं. चोकीदार, चोकी करने वाला आदमी; "पहायसमए य विसंसरिएसुं थाणएसुं" (स ५३७) ।
थाणिज्ज वि [दे] गौरवित, सम्मानित ; (दे ४, ५) ।
थाणीय वि [स्थानीय] स्थानापन्न; (स ६६७) ।
थाणु पुं [स्थाणु] १ महादेव, शिव ; (हे २, ७ ;कुमा ; पात्र) । २ ठूठा वृक्ष ; (गा २३२; पात्र), "दवदड्ढथाणुसरिसं" (कुप्र १०२) । ३ खीला ; ४ स्तम्भ ; (राज) ।
थाणेसर न [स्थानेश्वर] समुद्र के किनारे पर का एक शहर; (उप ७२८ टी ; स १४८) ।
थाम वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, २५) ।
थाम न [स्थामन्] १ बल, वीर्य, पराक्रम ; (हे४, २६७; ठा ३, १) । २ वि. बल-युक्त ; (निचू ११) । **°व** वि [°वत्] बलवान् ; (उत्त २) ।
थाम न [दे. ठाण] स्थान, जगह ; (संक्षि ४७ ; स ४६ ; ७४३) । "सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि" (सुर २, १०५) ।

थार पुं [दे] घन, मेघ ; (दे ५, २७)।
थारुणय वि [**थारुकिन**] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री—°णिया ; (औप) । देखो **थरुगिण** ।
थाल पुंन [**स्थाल**] बड़ी थलिया, भोजन करने का पात्र ; (दे ६, १२ ; अंत ५ ; उप पृ २५७) ।
थालइ वि [**स्थालकिन्**] १ थाल वाला । २ पुं. वानप्रस्थ का एक भेद ; (औप) ।
थाला स्त्री [दे] धारा ; (षड्) ।
थाली स्त्री [**स्थाली**] पाक-पात्र, हाँड़ी, बटलोही ; (ठा ३, १ ; सुपा ४८७) । °**पाग** वि [°**पाक**] हाँडी में पकाया हुआ ; (ठा ३, १) ।
थावच्चा स्त्री [**स्थापत्या**] द्वारका-निवासी एक गृहस्थ स्त्री ; (णाया १, ५) । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] स्थापत्या का पुत्र, एक जैन मुनि ; (णाया १, ५ ; अंत) ।
थावण न [**स्थापन**] न्यास, आधान ; (स २१३) ।
थावय पुं [**स्थापक**] समर्थ हेतु, स्वपक्ष-साधक हेतु ; (ठा ४, ३—पत्र २५४) ।
थावर वि [**स्थावर**] १ स्थिर रहने वाला । २ पुं. एकेन्द्रिय प्राणी, केवल स्पर्शेन्द्रिय वाला पृथिवी, पानी और वनस्पति आदि का जीव ; (ठा३, २ ; जी २) । ३ एक विशेष-नाम, एक नौकर का नाम ; (उप ५६७ टी) । °**काय** पुं [°**काय**] एकेन्द्रिय जीव; (ठा २, १) । °**णाम,** °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, स्थावरत्व-प्राप्ति का कारण-भूत कर्म; (पंच ३; सम ६७) ।
थासग } पुं [**स्थासक**] १ दर्पण, आदर्श, शीशा; (विपा
थासय } १,२—पत्र २४) । २ दर्पण के आकार का पात्र-विशेष ; (औप ; अनु ; णाया १, १ टी) । ३ अश्व का आभरण-विशेष ; (राज) ।
थाह पुं [दे] १ स्थान, जगह ; २ वि. अस्ताघ, गंभीर जल-वाला , ३ विस्तीर्ण; ४ दीर्घ, लम्बा ; (दे५, ३०) ।
थाह पुं [**स्थाघ**] थाह, तला, गहराई का अन्त ; (पाअ ; विसे १३३२ ; णाया १, ६ ; १४ ; से ८, ४०) ।
थाहिअ पुं [दे] आलाप, स्वर-विशेष; (सुपा१६) ।
थिअ वि [**स्थित**] रहा हुआ; (स२७०; विसे १०३५; भवि)।
थिइ देखो **ठिइ** ; (से २, १८ ; गउड) ।
थिंप अक [**तृप्**] तृप्त होना, संतुष्ट होना । थिंपइ ; (प्राप्र)। भवि—थिंपिहिंति; (प्राप्र ८, २२ टी) । संकृ—**थिंपिअ** ; (प्राप्र ८, २२ टी) ।
थिग्गल न [दे] १ भित्ति-द्वार, भींत में किया हुआ दरवाजा; (दस ५, १, १५) । २ फटे-फुटे वस्त्र में किया जाता संधान, वस्त्र आदि के खंडित भाग में लगाई जाती जोड ; (पराण १७ ; विसे १४३६ टी) ।
थिण्ण वि [**स्त्यान**] कठिन, जमा हुआ ; (हे १, ७४ ; २ ९९ ; से २, ३०) । देखो **थीण** ।
थिण्ण वि [दे] १ स्नेह-रहित दया वाला ; २ अभिमानी, गर्व-युक्त ; (दे ५, ३०) ।
थिन्न वि [दे] गर्वित, अभिमानी ; (पाअ) ।
थिप्प देखो **थिंप** । थिप्पइ; (हे ४, १३८) ।
थिप्प अक [**वि+गल्**] गल जाना । थिप्पइ ; (हे ४, १७५) ।
थिम सक [**स्तिम्**] आर्द्र करना, गीला करना । हेकृ—**थिमिउं** ; (राज) ।
थिमिअ वि [दे, **स्तिमित**] स्थिर, निश्चल; (दे ५, २७; से २, ४३ ; ८, ६१; णाया १, १ ; विपा १, १; पण्ह १, ४; २, ५; औप ; सुज्ज १; सूअ १, ३, ४) । २ मन्थर, धीमा ; (पाअ) ।
थिमिअ पुं [**स्तिमित**] राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ; (अंत ३) ।
थिर वि [**स्थिर**] १ निश्चल, निष्कम्प ; (विपा १, १ ; सम ११६ ; णाया १, ८) । २ निष्पन्न, संपन्न, (दस ७, ३५) । °**णाम,** °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दन्त, हड्डी आदि अवयवों की स्थिरता होती है; (कम्म १, ४६; सम ६७) । °**ावलिया** स्त्री [°**ावलिका**] जन्तु-विशेष, सर्प की एक जाति ; (जीव २) ।
थिरणाम वि [दे]चल-चित्त, चंचल-मनस्क ; (दे ५, २७)।
थिरण्णेस वि [दे] अस्थिर, चंचल ; (षड्) ।
थिरसीस वि [दे] १ निर्भीक, निडर ; २ निर्भर; ३ जिसने सिर पर कवच बाँधा हो वह ; (दे ५, ३१) ।
थिरिम पुंस्त्री [**स्थैर्य**] स्थिरता ; (सण) ।
थिरीकरण न [**स्थिरीकरण**] स्थिर करना, दृढ़ करना, जमाना ; (श्रा ६ ; रयण ६६) ।
थिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष; —१ दो घोड़े की बग्घी, २ दो खच्चर आदि से वाह्य यान ; (सूअ २, २, ६२; णाया १, १ टी—पत्र ४३ ; औप) ।
थिविथिव अक [**थिवथिवाय्**] थिव थिव आवाज करना । वकृ—**थिविथिवंत** ; (विपा १, ७) ।

थिवुग } पुं [**स्तिवुक**] जल-बिन्दु ; (विसे ७०४ ;
थिवुय } ७०५ ; सम १४६) । °**संकम** पु [°**संक्रम**] कर्म-प्रकृतिओं का आपस में संक्रमण-विशेष; (पंचा ५)।
थिहु पुं [**स्तिभु**] वनस्पति-विशेष ; (राज) ।
थी स्त्री [**स्त्री**] स्त्री, महिला, नारी ; (हे २, १३० ; कुमा ; प्रासू ६५) ।
थीण देखो **थिण्ण** ; हे१,७४ ; दे१, ६१ ; कुमा ; गाय)। °**गिद्धि** स्त्री [°**गृद्धि**] निकृष्ट निद्रा-विशेष ; (ठा ६ ; विसे २३४ ; उत्त ३३, ५) । °**द्धि** स्त्री [°**र्द्धि**] अधम निद्रा-विशेष ; (सम१५) । °**द्धिय** वि [°**र्द्धिक**] स्त्यानर्द्धि निद्रा वाला ; (विसे २३५) ।
थु अ. तिरस्कार-सूचक अव्यय ; (प्रति ८१) ।
थुअ वि [**स्तुत**] जिसकी स्तुति की गई हो वह, प्रशंसित ; (दे ८, २७ ; धण ५० ; अजि १८) ।
थुइ स्त्री [**स्तुति**] स्तव, गुण-कीर्तन ; (कुमा ; चैत्य १ ; सुर १०, १०३) ।
थुक्क अक [**थूत्+कृ**] १ थूकना । २ सक. तिरस्कार करना, थुतकारना, अनादर के साथ निकालना । थुक्केइ; (वज्जा ४६) । संकृ—**थुक्किऊण** ; (सुपा ३४६) ।
थुक्क न [**थूत्कृत**] थूक, कफ, खखार ; (दे ४, ४१) ।
थुक्कार पुं [**थूत्कार**] तिरस्कार , (राय) ।
थुक्कार सक [**थूत्कारय्**] तिरस्कार करना । कवकृ—**थुक्कारिज्जमाण** ; (पि ५६३) ।
थुक्किअ वि [**दे**] उन्नत, ऊँचा , (दे ५, २८) ।
थुक्किअ वि [**थूत्कृत**] थूका हुआ ; (दे ५, २८ ; सुपा ३४६) ।
थुड न [**दे. स्थुड**] वृक्ष का स्कन्ध; "चोरीउ करेऊण बद्धा ताण थुडेसु" (सुपा ५८४ ; ३६६) ।
थुडंकिअय न [**दे**] रोष-युक्त वचन ; (पाअ) ।
थुडुंकिअ न [**दे**] १ अल्प-कुपित मुँह का संकोच, थोडा गुस्सा होने से होता मुँह का सकोच ; २ मौन, चुपकी, (दे ५, ३१) ।
थुड्डहीर न [**दे**] चामर ; (दे ५, २८) ।
थुण सक [**स्तु**] स्तुति करना, गुण-वर्णन करना । थुणइ ; (हे ४, २४१) । कर्म—थुव्वइ, थुणिज्जइ; (हे४, २४२)। वकृ—**थुणंत** ; (भवि) । कवकृ—**थुव्वंत, थुव्वमाण** ; (सुपा ८८ ; सुर४, ६६ ; स ७०१) । संकृ —**थोऊण** (काल) । हेकृ—**थोत्तुं** ; (मुणि१०८७५) । कृ—**थुव्व, थोअव्व** ; (भवि ; चैत्य ३५ ; स ७१०) ।
थुणण न [**स्तवन**] गुण-कीर्तन, स्तुति; (सुपा ३७) ।
थुणिर वि [**स्तोतृ**] स्तुति करने वाला , (काल) ।
थुण्ण वि [**दे**] दृप्त, अभिमानी ; (दे ५, २७) ।
थुत्त न [**स्तोत्र**] स्तुति, स्तुति-पाठ; (भवि) ।
थुत्थुक्कारिय वि [**थुथुत्कारित**] थुतकारा हुआ, तिरस्कृत, अपमानित ; (भवि) ।
थुथूकार पुं [**थुथूत्कार**] तिरस्कार , (प्रयौ ८१) ।
थुरुणुल्लणय न [**दे**] शय्या, बिछौना ; (दे ५, २८) ।
थुलम पुं [**दे**] पट-कुटी, तंबू, वस्त्र-गृह, कपड-कोट ; (दे ५, २८) ।
थुल्ल वि [**दे**] परिवर्तित, बदला हुआ ; (दे ५, २७) ।
थुल्ल वि [**स्थूल**] मोटा ; (हे २, ६६ ; प्रामा) ।
थुवअ वि [**स्तावक**] स्तुति करने वाला, (हे १, ७५) ।
थुवण न [**स्तवन**] स्तुति, स्तव ; (कुप्र ३५१) ।
थुव्व } देखो **थुण** ।
थुव्वंत }
थू अ. निन्दा-सूचक अव्यय , "थू निल्लज्जो लोओ" (हे २, २०० ; कुमा) ।
थूण पुं [**दे**] अश्व, घोड़ा , (दे ५, २६) ।
थूण देखो **तेण**=स्तेन ; (हे २, १४७) ।
थूणा स्त्री [**स्थूणा**] खम्भा, खूँटी; (पड् ; पण्ण१५) ।
थूणाग पुं [**स्थूणाक**] सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष , (आवम) ।
थूभ पुं [**स्तूप**] थूहा, टीला, ढूह, स्मृति-स्तम्भ ; (विसे६६८; सुपा २०६; कुप्र १६५; आचा २, १, २) ।
थूभिया } स्त्री [**स्तूपिका**] १ छोटा स्तूप ; (ओघ४३६ ,
थूभियागा } औप) । २ छोटा शिखर ; (सम१३७) ।
थूरी स्त्री [**दे**] तन्तुवाय का एक उपकरण ; (दे५, २८) ।
थूल देखो **थुल्ल** ; (पाअ ; पउम १४, ११३ ; उवा) ।
°**भद्द** पु [°**भद्र**] एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि ; (हे१, २५५ ;
[illegible]
दे] सूकर, वराह ; (दे ५, २६) ।
[illegible] म , (दे ७, ४० ; सुर १, ५८
[illegible]
प्रासाद का शिखर ; (दे
२ वल्मीक ; (दे ५

थेअ वि [स्थेय] १ रहने योग्य ; २ जो रह सकता हो ; ३ पुं. फैसला करने वाला, न्यायाधीश ; (हे ४, २६७)।
थेग पुं [दे] कन्द-विशेष ; (श्रा २० ; जी ६)।
थेज्ज न [स्थैर्य] स्थिरता ; (विसे १४)।
थेज्ज देखो थेअ ; (वव ३)।
थेण पुं [स्तेन] चोर, तस्कर ; (हे १, १४७)।
थेणिल्लिअ वि [दे] १ हृत, छीना हुआ ; २ भीत, डरा हुआ ; (दे ५, ३२)।
थेप्प देखो थिप्प। थेप्पइ ; (पि २०७ ; संक्षि ३४)।
थेर वि [स्थविर] १ वृद्ध, बूढ़ा; (हे १, १६६; २, ८६; भग ६, ३३)। २ पु. जैन साधु, (ओघ १७ ; कप्प)। °कप्प पु [°कल्प] १ जैन मुनिओं का आचार-विशेष, गच्छ में रहने वाले जैन मुनिओं का अनुष्ठान ; २ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ ; (ठा ३, ४ ; ओघ ६७०)। °कप्पिय पु [°कल्पिक] आचार विशेष का आश्रय करने वाला, गच्छ में रहने वाला जैन मुनि; (पव ७०)। °भूमि स्त्री [°भूमि] स्थविर का पद ; (ठा ३, २)। °ावलि पुं [°ावलि] १ जैन मुनिओं का समूह ; २ क्रम से जैन मुनि-गण के चरित्र का प्रतिपादक ग्रन्थ-विशेष ; (णंदि ; कप्प)।
थेर पुं [दे. स्थविर] ब्रह्मा, विधाता ; (दे ५, २६; पाअ)।
थेरासण न [दे] पद्म, कमल; (दे ५, २६)।
थेरिअ न [स्थैर्य] स्थिरता ; (कुमा)।
थेरिया } स्त्री [स्थविरा] १ वृद्धा, बूढ़िया ; (पाअ ;
थेरी } ओघ २१ टी)। २ जैन साध्वी ; (कप्प)।
थेरोसण न [दे] अम्बुज, कमल, पद्म, (षड्)।
थेव पुं [दे] बिन्दु ; (दे ५, २९ ; पाअ; षड्)।
थेव देखो थोव; (हे २, १२५ ; पाअ; सुर १, १८१)। °कालिय वि [°कालिक] अल्प काल तक रहने वाला ; (सुपा ३७५)।
थेवरिअ न [दे] जन्म-समय में बजाया जाता वाद्य ; (दे ५, २९)।
थोअ देखो थोव; (हे २, १२५; गा ४६; गउड; संक्षि १)।
थोअ पुं [दे] १ रजक, धोबी; २ मूलक, मूला, कन्द-विशेष ; (दे ५, ३२)।
थोअव्व } देखो थुण।
थोऊण }
थोक्क } देखो थोव ; (हे २, १२५ ; जो १)।
थोग }
थोडेरुय देखो थाडेरुय ; (उप ७२८ टी)।
थोणा देखो थूणा ; (हे १, १२५)।
थोत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तव ; (हे२, ४५ ; सुपा २६६)।
थोत्तुं देखो थुण।
थोभ } पुं [स्तोभ,°क] 'च', 'वै' आदि निरर्थक अव्यय का
थोभय } प्रयोग ; "उय-वइकारो हत्ति य मकारणा थोभया हुंति" (बृह १ ; विसे ६६६ टी)।
थोर देखो थुल्ल ; (हे१, २५५ ; २, ६६ ; पउम २, १६; से १०, ४२)।
थोर वि [दे] क्रम से विस्तीर्ण अथ च गोल; (दे ५, ३०; वज्जा ३६)।
थोल पुं [दे] वस्त्र का एक देश ; (दे ५, ३०)।
थोव } वि [स्तोक] १ अल्प, थोड़ा ; (हे २, १२५ ;
थोवाग } उव ; श्रा २७ ; ओघ २४६ ; विसे ३०३०)। २ पुं. समय का एक परिमाण ; (ठा २, ३ ; भग)।
थोह न [दे] बल, पराक्रम ; (दे ५, ३०)।
थोहर पुंस्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, थूहर का पेड़, सेहुंड ; (सुपा २०३)। स्त्री—°री ; (उप१०३१ टी ; जी १०; धर्म३)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि थयाराइसद्दसंकलणो चउव्वीसइमो तरंगो समत्तो।

—०—

द

द पुं [दे] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष ; (प्राप ; प्रामा)।
दअच्छर पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का अधिपति ; (दे ५, ३६)।
दअरी स्त्री [दे] सुरा, मदिरा, दारू ; (दे५, ३४)।
दइ स्त्री [दृति] मसक, चर्म-निर्मित जल-पात्र ; (ओघ३८)।
दइअ वि [दे] रक्षित ; (दे ५, ३५)।
दइअ वि [दयित] १ प्रिय, प्रेम-पात्र; "जाओ वरकामिणी-दइओ" (सुर १, १८३)। २ अभीष्ट, वाञ्छित; "अम्हाण मणोदइयं दंसणमवि दुल्लहं मन्ने" (सुर ३, २३८)। ३ पुं. पति, स्वामी, भर्ता ; (पाअ; कुमा)। °तम वि [°तम]

१ अत्यन्त प्रिय ; २ पुं. पति, भर्ता ; (पउम ७७, ६२)।

दइआ स्त्री [**दयिता**] स्त्री, प्रिया, पत्नी ; (कुमा ; महा ; सुर ४, १२६)।

दइच्च पुं [**दैत्य**] दानव, असुर ; (हे १, १५१ ; कुमा ; पाअ)। °**गुरु** पुं [°**गुरु**] शुक्र ; (पाअ)।

दइन्न न [**दैन्य**] दीनता, गरीबपन ; (हे १, १५१)।

दइव पुंन [**दैव**] दैव, भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, पूर्व-कृत कर्म ; (हे १, १५३ ; कुमा ; महा ; पउम २८, ६०)। "अहवा कुविओ दइवो पुरिसं किं हणइ लउडेण" (सुर ८, ३४)। °**ज्ज**, °**ण्णु** पुं [°**ज्ञ**] ज्योतिषी, ज्योति:शास्त्र का विद्वान ; (हे २, ८३ ; षड्)। देखो **देव**=दैव।

दइवय न [**दैवत**] देव, देवता; (पण्ह२,१ ; हे १, १५१ ; कुमा)।

दइव्विग वि [**दैविक**] देव-संबन्धी, दिव्य ; (स५०६)।

दइव्व देखो **दइव** ; (हे १, १५३ ; २, ६६ ; कुमा ; पउम ६३, ४)।

दउदर } न [**दकोदर**] रोग-विशेष, जलोदर, पानी से पेट का
दओदर } फूलना ; (णाया१, १३ ; विपा १, १)।

दओभास पुं [**दकावभास**] लवण-समुद्र में स्थित वेलंधर-नागराज का एक आवास-पर्वत ; (इक)।

दंठा देखो **दाढा** ; (नाट—मालती ५६)।

दंठि वि [**दंष्ट्रिन्**] बडे दाँत वाला, हिंसक जन्तु; (नाट—वेणी २४)।

दंड सक [**दण्डय्**] सजा करना, निग्रह करना। कवकृ— **दंडिज्जंत**; (प्रासू ६६)।

दंड पु [**दण्ड**] १ जीव-हिंसा, प्राण-नाश ; (सम१ ; णाया १, १; ठा१)। २ अपराधी को अपराध के अनुसार शारीरिक या आर्थिक दण्ड, सजा, निग्रह, दमन; (ठा ३,३, प्रासू ६३; हे १, १२७)। ३ लाठी, यष्टि ; (उप ५३० टी , प्रासू ७४)। ४ दुःख-जनक, परिताप-जनक ; (आचा)। ५ मन, वचन और शरीर का अशुभ व्यापार ; (उत्त १६ ; दं ४६)। ६ छन्द-विशेष, (पिंग)। ७ एक जैन उपासक का नाम; (संथा ६१)। ८ परिमाण-विशेष, १६२ अंगुल का एक नाप; (इक)। ६ आज्ञा ; (ठा ५, ३)। १० पुंन. सैन्य, लश्कर ; (पण्ह १, ४ ; ठा ५, ३)। °**अल** पुं [°**कल**] छन्द-विशेष ; (पिंग)। °**जुज्झ** न [°**युद्ध**] यष्टि-युद्ध; (आचा)। °**णायग** पुं [°**नायक**] १ दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्त्ता। २ सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सैन्य का नायक; (पण्ह १, ४ ; औप ; कप्प ; णाया १, १)। °**णीइ** स्त्री [°**नीति**] नीति-विशेष, अनुशासन ; (ठा ६)। °**पह** पु [°**पथ**] मार्ग-विशेष, सीधा मार्ग ; (सूअ १, १३)। °**पासि** पु (°**पार्श्विन्**, °**पाशिन्**] १ दण्ड दाता; २ कोतवाल ; (राज ; श्रा २७)। °**पुंछणय** न [**प्रोञ्छनक**] दण्डाकार झाड़ू ; (जं ५)। °**भी** वि [°**भी**] दण्ड से डरने वाला, दण्ड-भीरु ; (आचा)। °**लत्तिय** वि [°**लात**] दण्ड लेने वाला ; (वव १)। °**वइ** पुं [°**पति**] सेनानी, सेना-पति, (सुपा ३२३)। °**वासिग**, °**वासिय** पु [**दाण्डपाशिक**] कोतवाल; (कुप्र १५५; स २६५; उप १०३१ टी)। °**वोरिय** पु [°**वीर्य**] राजा भरत के वंश का एक राजा, जिसको आदर्श-गृह में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था; (ठा ८)। °**रास** पुं [°**रास**] एक प्रकार का नाच, (कप्पू)। °**ाइय** वि [°**ायत**] दण्ड की तरह लम्बा; (कस; औप)। °**ायइय** वि [°**ायतिक**] पैर को दण्ड की तरह लम्बा फैलाने वाला; (औप; कस, ठा ५, १)। °**ारक्खिग** पुं [°**ारक्षिक**] दण्ड-धारी प्रतीहार ; (निचू ६)। °**ारण्ण** न [°**ारण्य**] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल ; (पउम ४१, १ ; ७६, ५)। °**ासणिय** वि [°**ासनिक**] दण्ड की तरह पैर फैला कर बैठने वाला ; (कस)। देखो **दंडग**, **दडय**।

दंडग } पु [**दण्डक**] १ कर्ण-कुण्डल नगर का एक राजा;
दंडय } (पउम १, १६)। २ दण्डाकार वाक्य-पद्धति, ग्रन्थांश-विशेष; (राज)। ३ भवनपति आदि चौवीस दण्डक, पद-विशेष : (दं १)। ४ न. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल ; (पउम ३१, २५)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष (पउम ४२, १४)। देखो **दंड** ; (उप ८६१ ; बृह १ ; सूअ २, २ ; पउम ४०, १३)।

दंडावण न [**दण्डन**] सजा कराना, निग्रह कराना ; (श्रा १४)।

दंडाविअ वि [**दण्डित**] जिसको दण्ड दिलाया गया हो वह ; (ओघ ५६७ टी)।

दंडि वि [**दण्डिन्**] १ दण्ड-युक्त। २ पु. दण्डधारी प्रतीहार; (कुमा; जं ३)।

°**दंडि** देखो **दंडी**; (कुप्र ४४)।

दंडिअ वि [**दण्डित**] जिसको सजा दी गई हो वह ; (सुपा ४६२)।

दंडिअ वि [**दण्डिक**] १ दण्ड वाला। २ पुं. राजा, नृप ;

(वव ४)। ३ दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्ता; (वव १)।
°डिआ स्त्री [दे] लेख पर लगाई जाती राज-मुद्रा; (बृह १)।
दंडिक्किअ वि [दे] अपमानित ; "दंडिक्किओ समाणो तमवद्दारेण नीणेइ" (उप ६४८ टी)।
दंडिम वि [**दण्डिम**] १ दंड से निर्वृत्त ; २ न. सजा करके वसूल किया हुआ द्रव्य; (गाया १, १—पत्र ३७)।
दंडी स्त्री [दे] १ सूत्र-कनक ; २ सांधा हुआ वस्त्र-युग्म ; (दे ५, ३३)। ३ सांधा हुआ जीर्ण वस्त्र , (गाया १, १६—पत्र १६६ ; पण्ह १, ३—पत्र ५३)।
दंत पुं [दे] पर्वत का एक देश ; (दे ५, ३३)।
दंत वि [**दान्त**] १ जिसका दमन किया गया हो वह, वश में किया हुआ ; "दंतेण चित्तेण चरंति धीरा", (प्रासू १६५)। २ जितेन्द्रिय ; (गाया १, १४ ; दस १०)।
दंत पुं [**दन्त**] दाँत, दशन , (कुमा ; कप्पू)। °**कुडी** स्त्री [°**कुटी**] दंष्ट्रा, दाढ ; (तंदु)। °**च्छअ** पुं [°**च्छद**] ओष्ठ, होठ , (पाअ)। °**धावण** न [°**धावन**]। १ दाँत साफ करना ; २ दाँत साफ करने का काष्ठ, दतवन; (पण्ह २, ४ ; निचू ३)। °**पक्खालण** न [°**प्रक्षालन**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सुअ १, ४, २)। °**पाय** न [°**पात्र**] दाँत का बना हुआ पात्र ; (आचा २, ६, १)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (वव १)। °**प्पहावण** न [°**प्रधावन**] देखो °**धावण**; (दस ३)। °**माल** पुं [°**माल**] वृक्ष-विशेष ; (जं २)। °**वक्क** पुं [°**वक्र**] दन्तपुर नगर का एक राजा ; (वव १)। °**वलहिया** स्त्री [°**वलभिका**] उद्यान-विशेष , (स७०)। °**वाणिज्ज** न [°**वाणिज्य**] हाथी-दाँत वगैरह दाँत का व्यापार ; (धर्म २)। °**ार** पुं [°**कार**] दाँत का काम करने वाला शिल्पी ; (पण्ण १)।
दंतवण न [दे] १ दन्त-शुद्धि ; २ दतवन, दाँत साफ करने का काष्ठ ; (दे २, १२, ठा ६—पत्र ४६०, उवा; पव४)।
दंताल पुस्त्री [दे] शस्त्र-विशेष, घास काटने का हथियार ; (सुपा ५२६)। स्त्री—°**ली** ; (कम्म १, ३६)।
दंति पुं [**दन्तिन्**] १ हस्ती, हाथी ; (पाअ)। २ पर्वत-विशेष ; (पउम १५, ६)।
दंतिअ पुं [दे] शशक, खरगोश, खरहा , (दे५, ३४)।
दंतिंदिअ वि [**दान्तेन्द्रिय**] जितेन्द्रिय, इन्द्रिय-निग्रही ; (ओघ ४६ भा)
दंतिक्क न [दे] चावल का आटा ; (बृह १)।
दंतिया स्त्री [**दन्तिका**] वृक्ष-विशेष, बडी सतावर ; (पण्ण १—पत्र ३२)।
दंती स्त्री [**दन्ती**] स्वनाम-ख्यात वृक्ष; (पण्ण१—पत्र३६)।
दंतुक्खलिय पुं [**दन्तोलूखलिक**] तापस-विशेष, जो दाँतों से ही व्रीहि वगैरः को निस्तुप कर खाते हैं ; (निर १, ३)।
दंतुर वि [**दन्तुर**] उन्नत दाँत वाला, जिसके दाँत उभड़-खाभड़ हो; २ ऊँचा-नीचा स्थान; विषम स्थान; (दे २, ७७)। ३ आगे आया हुआ, आगे निकल आया हुआ ; (कप्पू)।
दंतुरिय वि [**दन्तुरित**] ऊपर देखो ; "विचित्तपासायपंति-दंतुरियं" (उप १०३१ टी ; सुपा २००)।
दंद पुं [**द्वन्द्व**] १ व्याकरण-प्रसिद्ध उभय-पद-प्रधान समास ; (अणु)। २ न. परस्पर-विरुद्ध शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि युग्म, ३ कलह, क्लेश; ४ युद्ध, संग्राम; (सुपा १४७; कुमा)।
दंभ पुं [**दम्भ**] १ माया, कपट ; (हे १, १२७)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ३ ठगाई, वञ्चना ; (पव २)।
दंभोलि पुं [**दम्भोलि**] वज्र ; (कुप्र २७०)।
दंस सक [**दर्शय्**] दिखलाना, बतलाना । दंसइ ; (हे ४, ३२ ; महा)। वकृ—**दंसंत, दंसित, दंसअंत** ; (भग , सुपा ६३ ; अभि १८४)। कवकृ—**दंसिज्जंत** ; (सुर २, १६६)। संकृ—**दंसिअ**; (नाट)। कृ—**दंसियव्व**; (सुपा ४५४)।
दंस सक [**दंश्**] काटना, दाँत से काटना । दंसइ ; (नाट—साहित्य ७३)। दंसंतु ; (आचा)। वकृ—**दंसमाण**; (आचा)।
दंस पुं [**दंश**] १ डाँस, बड़ा मच्छड़ ; (भग ; आचा)। २ दन्त-क्षत, सर्प या अन्य किसी विषैले कीड़े का काटा हुआ घाव ; (हे १, २६० टि)।
दंस पुं [**दर्श**] सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा ; (आत्म)।
दंसग वि [**दर्शक**] दिखलाने वाला ; (स४९१)।
दंसण पुन [**दर्शन**] १ अवलोकन, निरीक्षण; (पुप्फ १२४ ; स्वप्न २६)। २ चक्षु, नेत्र, आँख, (से १, १७)। ३ सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा , (ठा १ ; ५, ३)। ४ सामान्य ज्ञान , "जं सामन्नग्गहणं दंसणमेअं" (सम्म ५५)। ५ मत, धर्म ; ६ शास्त्र-विशेष ; (ठा ७ , ८ ; पंचा १२)। °**मोह** न [°**मोह**] तत्त्व-श्रद्धा का प्रतिबन्धक कर्म-विशेष ; (कम्म१, १४)। °**मोहणिज्ज** न [°**मोहनीय**] कर्म-विशेष , (ठा २, ४ ; भग)। °**ावरण** न [°**ावरण**]

कर्म-विशेष, सामान्य-ज्ञान का आवारक कर्म ; (ठा ६)। °वरणिज्ज न [°वरणीय] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (सम १५)। देखो—दरिसण।
दंसण न [दंशन] दाँत से काटना ; (से १, १७)।
दंसणि वि [दर्शनिन्] १ किसी धर्म का अनुयायी ; (सुपा ४६६)। २ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का जानकार ; (कुप्र २६; कुम्मा २१)। ३ तत्त्व-श्रद्धालु , (अणु)।
दंसणिआ स्त्री [दर्शनिका] दर्शन, अवलोकन ; "चंदसूर-दंसणिया" (औप ; णाया १, १)।
दंसणिज्ज } वि [दर्शनीय] देखने योग्य, दर्शन-योग्य ;
दंसणीअ } (सूअ २, ७ ; अभि ६८ ; महा)।
दंसावण न [दर्शन] दिखाना ; (उप २११ टी)।
दंसाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ; (सुपा ३८६)।
दंसि वि [दर्शिन्] देखने वाला; (आचा; कुप्र ४१; दं २३)।
दंसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ; (पाअ)।
दंसिय }
दंसिंत }
दंसिज्जंत } देखो दंस=दर्शय्।
दंसियव्व }
दक्क वि [दष्ट] जो दाँत से काटा गया हो वह ; (षड्)।
दक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। दक्खामि, दक्खिमो ; (अभि ११६ ; विक्र २९)। प्रयो—दक्खावइ ; (पि ५५४)। कर्म—दीसइ; (उव)। कवकृ—दिस्समाण, दीसंत, दीसमाण ; (आव ५; गा ७३ ; नाट—चैत ७१)। संकृ—दक्खु, दट्ठु, दट्ठुआण, दट्ठुं, दट्ठूण, दट्ठूणं, दिस्स, दिस्सं, दिस्सा; (कप्प ; षड् ; कुमा ; महा ; पि ५८५ ; सूअ १, ३, २, १ ; पि ३३४)। हेकृ—दट्ठुं; (कुमा)। कृ—दट्ठव्व, दिट्ठव्व; (महा; उत्तर १०७)।
दक्ख सक [दर्शय्] दिखलाना, "सोवि हु दक्खइ बहुकोउय-मंततंताइं " (सुपा २३२)।
दक्ख वि [दक्ष] १ निपुण, चतुर ; (कप्प ; सुपा २८६ ; श्रा २८)। २ पुं. भूतानन्द नामक इन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव ; (ठा ५, १ ; इक)। ३ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी का एक पौत्र ; (पउम २१, २७)।
दक्ख° देखो दक्खा ; (पउम ५३, ७६ ; कुमा)।
दक्खज्ज पुं [दे] गृध्र, गीध, पक्षि-विशेष ; (दे ५, ३४)।
दक्खण न [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण। २ वि. देखने वाला, निरीक्षक ; (कुमा)।
दक्खव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दक्खवइ ; (हे ४, ३२)।
दक्खविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ ; (पाअ ; कुमा)।
दक्खा स्त्री [द्राक्षा] १ वल्ली-विशेष, दाख का पेड ; २ फल-विशेष, दाख, अंगूर ; (कप्पू ; सुपा २६७; ५३६)।
दक्खायणी स्त्री [दाक्षायणी] गौरी, शिव पत्नी ; (पाअ)।
दक्खिण वि [दक्षिण] १ दक्षिण दिशा में स्थित; (सुर ३, १८ ; गउड)। २ निपुण, चतुर ; (प्रामा)। ३ हितकर, अनुकूल ; ४ अपसव्य, वामेतर, दाहिना ; (कुमा ; औप)। °पच्छिमा स्त्री [°पश्चिमा] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, नैर्ऋत कोण ; (आवम)। °पुव्वा स्त्री [°पूर्वा] अग्नि-कोण ; (चंद १)। देखो दाहिण।
दक्खिणत्त वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न ; (राज)।
दक्खिणा स्त्री [दक्षिणा] १ दक्षिण दिशा ; (जो १)। २ दक्षिण देश; (कप्पू)। ३ धर्म-कर्म का पारितोषिक, दान, भेंट ; (कप्पू ; सूअ २, ५)। °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] दक्षिणा का अभिलाषी ; (पउम ३०, ६३)। °यण न [°यन] १ सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन; २ कर्क की संक्रान्ति से धन की संक्रान्ति तक के छः मास का काल ; (जो१)। °वत्र, °वह पुं [°पथ]दक्षिण देश; (कप्पू ; उप१४२टी)।
दक्खिणिल्ल वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न या स्थित ; (सम १०० ; पउम ६, १५६)।
दक्खिणेय वि [दाक्षिणेय] जिसको दक्षिणा दी जाती हो वह; (विसे३२७१)।
दक्खिण्ण } न [दाक्षिण्य] १ मुलायजा, "दक्खिण्णेण
दक्खिन्न } वि एंतो सुहअ सुहावेसि अम्ह हिअआइं" (गा८५ ; स्वप्न६८)। २ उदारता, औदार्य ; ३ सरलता, मार्दव ; (सुर १, ६५ ; ३, ६२ ; प्रासू ८)। ४ अनुकूलता ; (दंस २)।
दक्खिय वि [दर्शित] दिखलाया हुआ ; (भवि)।
दक्खु देखो दक्ख=दृश्।
दक्खु देखो दक्ख=दक्ष ; (सूअ १, २, ३)।
दक्खु वि [पश्य, द्रष्टृ] १ देखने वाला ; २ पुं. सर्वज्ञ, जिन-देव ; (सूअ १, २, ३)।
दक्खु वि [दृष्ट] १ विलोकित ; २ पुं. सर्वज्ञ, जिन-देव ; (सूअ १, २, ३)।

दग न [दक] १ पानी, जल ; (सं ५१ ; दं ३४ ; कप्प)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ३ लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत ; (सम ६८)। °**गब्भ** पुं [°**गर्भ**] अभ्र, बादल; (ठा ४, ४)। °**तुंड** पुं [°**तुण्ड**] पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। °**पंचवन्न** पुं [°**पञ्चवर्ण**] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक ग्रह का नाम; (ठा २, ३)। °**पासाय** पुं [°**प्रासाद**] स्फटिक रत्न का बना हुआ महल; (जं १)। °**पिप्पली** स्त्री [°**पिप्पली**] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)। °**भास** पुं [°**भास**] वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत; (सम ७३)। °**मंचग** पुं [°**मञ्चक**] स्फटिक रत्न का मञ्च ; (जं १)। °**मंडव** पुं [°**मण्डप**]। १ मण्डप-विशेष, जिसमें पानी टपकता हो ; (पण्ह २, ५)। २ स्फटिक रत्न का बनाया हुआ मण्डप; (जं १)। °**मट्टिया**, °**मट्टी** स्त्री [°**मृत्तिका**] १ पानी वाली मिट्टी ; (बृह ४ ; पडि)। २ कला-विशेष ; (जं २)। °**रक्खस** पुं [°**राक्षस**] जल-मानुष के के आकार का जंतु-विशेष ; (सूत्र १, ७)। °**रय** पुंन [°**रजस्**] उदक-बिन्दु, जल-कणिका; (कप्प)। °**वण्ण** पुं [°**वर्ण**] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २०)। °**वारग**, °**वारय** पुं [°**वारक**] पानी का छोटा घड़ा ; (राय ; णाया १, २)। °**सीम** पुं [°**सीमन्**] वेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत ; (राज)।

दच्चा देखो **दा**।

दच्छ देखो **दक्ख=दृश्**। भवि—दच्छं, दच्छसि, दच्छिहिसि; (प्राप्र; उत्त २२, ४४; गा ८१६)।

दच्छ देखो **दक्ख=दक्ष** ; "रोगसमदच्छं ओसहं" (उप ७२८ टी ; पण्ह २, ३—पत्र ४५ ; हे २, १७)।

दच्छ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज ; (दे ५, ३३)।

दज्झंत, **दज्झमाण** } देखो **दह=दह्**।

दट्ठ वि [**दष्ट**] जिसको दाँत से काटा गया हो वह ; (षड् ; महा)।

दट्ठ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ, विलोकित ; (राज)।

दट्ठंतिय वि [**दार्ष्टान्तिक**] जिस पर दृष्टान्त दिया गया हो वह अर्थ ; (उपे पृ १४३)।

दट्ठव्व, **दट्ठु** } देखो **दक्ख=दृश्**।

दट्ठु वि [**द्रष्टृ**] देखने वाला, प्रेक्षक; (विसे १८६५)।

दट्ठुआण, **दट्ठुं**, **दट्ठूण**, **दट्ठूणं** } देखो **दक्ख=दृश्**।

दडवड पुं [**दे**] १ धाटी, अवस्कन्द ; (दे ५, ३५ ; हे ४, ४२२ ; भवि)। २ शीघ्र, जल्दी ; (चंड)।

दडि स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (भवि)।

दड्ढ वि [**दग्ध**] जला हुआ ; (हे १, २१७ ; भग)।

दड्ढालि स्त्री [**दे**] दव-मार्ग ; (षड्)।

दढ वि [**दृढ**] १ मजबूत, बलवान्, पोढ़ा ; (औप ; से ८, ६०)। २ निश्चल, स्थिर, निष्कम्प ; (सुअ १, ४, १ ; आ २८)। ३ समर्थ, क्षम ; (सूअ १, ३, १)। ४ अति-निविड, प्रगाढ; (राय)। ५ कठोर, कठिन ; (पंचा ४)। ६ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त ; (पंचा १ ; ७)। °**केउ** पुं [°**केतु**] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव का नाम ; (पव ७)। °**णेमि** देखो °**नेमि** ; (राज)। °**धणु** पुं [°**धनुष्**] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम ; (सम १५३)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम ; (राज)। °**धम्म** वि [°**धर्मन्**] १ जो धर्म में निश्चल हो ; (बृह १)। २ देव-विशेष का नाम; (आवम)। °**धिइय** वि [°**धृतिक**]। अतिशय धैर्य वाला ; (पउम २६, २२)। °**नेमि** पुं [°**नेमि**] राजा समुद्रविजय का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ली थी और सिद्धाचल पर्वत पर मुक्ति पाई थी; (अंत १४)। °**पइण्ण** वि [°**प्रतिज्ञ**] १ स्थिर-प्रतिज्ञ, सत्य-प्रतिज्ञ; २ पुं. सूर्याभ देव का आगामी जन्म में होने वाला नाम ; (राय)। °**प्पहारि** वि [°**प्रहारिन्**] १ मजबूत प्रहार करने वाला ; २ पुं. जैन मुनि-विशेष, जो पहले चोरों का नायक था और पीछे से दीक्षा लेकर मुक्त हुआ था; (णाया १, १८ ; महा)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] एक गाँव का नाम ; (आवम)। °**मूढ** वि [°**मूढ**] नितान्त मूर्ख ; (दे १, ४)। °**रह** पुं [°**रथ**] १ एक कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५०)। २ भगवान् श्री सीतलनाथजी के पिता का नाम ; (सम १५१)। °**रहा** स्त्री [°**रथा**] लोकपाल आदि देवों के अग्र-महिषियों की बाह्य परिषद् ; (ठा ३, १—पत्र १२७)। °**ाउ** पुं [°**ायुष्**] भगवान् महावीर के समय में तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जन करने

वाला एक मनुष्य ; (ठा ६—पत्र ४५५) । २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५४) ।

दढिअ वि [**द्रढित**] दृढ़ किया हुआ ; (कुमा) ।

दणु } पुं [**दनुज**] दैत्य, दानव; (हे १, २६७ ; कुमा ; **दणुअ** } षड्) । °**इंद**, °**एंद** पुं [°**इन्द्र**] १ दानवों का अधिपति; (गउड ; से १, २) । २ रावण, लङ्का-पति ; (पउम ६६, १०) । °**वइ** पुं [°**पति**] देखो °**इंद**; (पउम १, १ ; ७२, ६० ; सुपा ४५) ।

दत्त वि [**दत्त**] १ दिया हुआ, दान किया हुआ, वितीर्ण ; (हे १,४६) । २ न्यस्त, स्थापित ; (जं १) । ३ पुं. स्व-नाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-पुत्र ; (उप ५६२ ; ७६८ टी) । ४ भरत-वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष; (सम १५३) । ५ चतुर्थ बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम ; (सम १५३) । ६ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न एक अर्ध-चक्रवर्ती राजा, एक वासुदेव ; (सम ६३) । ७ भरत-क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न एक जिन-देव ; (पव ७) । ८ एक जैन मुनि ; (आक) । ९ नृप-विशेष; (विपा १, ७) । १० एक जैन आचार्य ; (कुप्र ६) । ११ न. दान, उत्सर्ग ; (उत्त १) ।

दत्त न [**दात्र**] दाँती; घास काटने का हँसिया ; (दे १, १४) ।

दत्ति स्त्री [**दत्ति**] एक वार में जितना दान दिया जाय वह, अ-विच्छिन्न रूप से जितनी भिक्षा दी जाय वह; (ठा ५, १; पंचा १८) ।

दत्तिय पुंस्त्री [**दत्तिका**] ऊपर देखो ; "संखा दत्तियस्स" (वव ६) ।

दत्तिय पुं [**दत्रिक**] वायु-पूर्ण चर्म ; (राज) ।

दत्तिया स्त्री [**दात्रिका**] १ छोटी दाँती, घास काटने का शस्त्र-विशेष ; (राज) । २ देने वाली स्त्री, दान करने वाली स्त्री; (चारु २) ।

दत्थर पुं [**दे**] हस्त-शाटक, कर-शाटक; (दे ५, ३४) ।

ददंत देखो **दा** ।

दद्दर वि [**दे.दर्दर**] १ घना, प्रचुर, अत्यन्त; "गोसीससरस-रत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितला" (सम १३७) । २ पुं. चपेटा, हस्त-तल का आघात ; (सम १३७ ; औप ; णाया १, ८) । ३ आघात, प्रहार; " पायदद्दरएणं कंपयंतेव मेइणि-तलं " (णाया १, १) । ४ वचनाटोप ; (पण्ह १, ३—पत्त ४४) । ५ सोपान-वीथी, सीढ़ी ; (सम १३७) । ६ वाद्य-विशेष ; (जं २) ।

दद्दरिया स्त्री [**दे.दर्दरिका**] १ प्रहार, आघात ; (णाया १, १६) । २ वाद्य-विशेष ; (राय) ।

दद्दु पुं [**दद्रु**] दाद, क्षुद्र कुष्ठ-रोग ; (भग ७, ६) ।

दद्दुर पुं [**दर्दुर**] १ भेक, मेढ़क ; (सुर १०, १८७ ; प्रासू ४५) । २ चमड़े से अवनद्ध मुँह वाला कलश; (पण्ह २, ५) । ३ देव-विशेष ; (णाया १, १३) । ४ राहु, ग्रह-विशेष ; (सुज्ज १६) । ५ पर्वत-विशेष; (णाया १, १६)। ६ वाद्य-विशेष; (दे ७, ६१; गउड) । ७ न. दर्दर देव का सिंहासन ; (णाया १,१३) । °**वडिंसय** न [°**वतंसक**] देव-विमान विशेष, सौधर्म देवलोक का एक विमान ; (णाया १, १३) ।

दद्दुरी स्त्री [**दर्दुरी**] स्त्री-मेढक, भेकी ; (णाया १, १३)।

दधि देखो **दहि** ; (सम ७७ ; पि ३७६) ।

दद्ध देखो **दड्ढ**; (सुर २, ११२; पि २२२) ।

दप्प पुं [**दर्प**] १ अहंकार, अभिमान, गर्व ; (प्रासू १३२)। २ बल, पराक्रम, जोर ; (से ४, ३) । ३ धृष्टता, धिठाई ; (भग १२, ५) । ४ अरुचि से काम का आसेवन; (निचू १) ।

दप्पण पुं [**दर्पण**] १ काच, शीशा, आदर्श; (णाया १,१; प्रासू १६१) । २ वि. दर्प-जनक; (पण्ह १, ४) ।

दप्पणिज्ज वि [**दर्पणीय**] बल-जनक, पुष्टि-कारक ; (णाया १, १ ; पण्ण १७ ; औप ; कप्प) ।

दप्पि वि [**दर्पिन्**] अभिमानी, गर्विष्ठ ; (कप्पू) ।

दप्पिअ वि [**दर्पिक**] दर्प-जनित ; (उवर १३१) ।

दप्पिअ वि [**दर्पित**] अभिमानी, गर्वित ; (सुर ७, २०० ; पण्ह १, ४) ।

दप्पिट्ठ वि [**दर्पिष्ठ**] अत्यन्त अहंकारी ; (सुपा २२) ।

दप्पुल्ल वि [**दर्पवत्**] अहंकार वाला; (हे २,१५६; षड्) ।

दब्भ पुं [**दर्भ**] तृण-विशेष, डाभ, काश, कुशा ; (हे १, २१७)। °**पुप्फ** पुं [°**पुष्प**] साँप की एक जाति ; (पण्ह १, १—पत्र ८) ।

दब्भायण } न [**दार्भायन, दार्भ्यायन**] चित्रा-नक्षत्र **दब्भियायण** } का गोत्र ; (इक ; सुज्ज १०) ।

दम सक [**दमय्**] निग्रह करना । दमेइ ; (स २८६) । कर्म—दम्मइ ; (उव) । कवकृ—दम्मंत ; (उव) ।

संकृ—दमिऊण ; (कुप्र ३९३)। कृ—दमियव्व, दम्म, दमेयव्व ; (काल ; आचा२, ४, २ ; उव)।
दम पुं [दम] १ दमन, निग्रह; २ इन्द्रिय-निग्रह, बाह्य वृत्ति का निरोध ; (पण्ह २, ४ ; णंदि)। °घोस पुं [°घोष] चेदि देश के एक राजा का नाम; (णाया १, १६)। °दंत पुं [°दन्त] १ हस्तिशीर्षक नगर के एक राजा का नाम ; (उप ६४८ टी)। २ एक जैन मुनि ; (विसे २७६६)। °धर पुं [°धर] एक जैन मुनि का नाम ; (पउम २०, १६३)।
दमग देखो दमय; (णाया १, १६ ; सुपा ३८५ ; वव ३ ; निचू १५ ; बृह १ ; उव)।
दमग वि [दमक] दमन करने वाला ; (निचू ६)।
दमण न [दमन] १ निग्रह, दान्ति; २ वश में करना, काबू में करना ; "पचिंदियदमणपरा" (आप४०)। ३ उपताप, पीड़ा ; (पण्ह १, ३)। ४ पशुओं को दी जाती शिक्षा ; (पउम १०३, ७१)।
दमणक, दमणग, दमणय पुंन [दमनक] १ दौना, सुगन्धित पत्र वाली वनस्पति-विशेष ; (पण्ह २, ५ ; पण्ण १ ; गउड)। २ छन्द-विशेष , (पिंग)। ३ गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (राज)।
दमदमा अक [दमदमाय्] आडम्बर करना। दमदमाइ, दमदमाअइ ; (हे ३, १३८)।
दमय वि [दे द्रमक] दरिद्र, रङ्क, गरीब ; (दे५, ३४ ; विसे २८४५)।
दमयंती स्त्री [दमयन्ती] राजा नल की पत्नी का नाम; (पडि; कुप्र ५४; ५६)।
दमि वि [दमिन्] जितेन्द्रिय ; (उत्त२२)।
दमिअ वि [दमित] निगृहीत, (गा ८२३; कुप्र ४८)।
दमिल पुं [द्राविड] १ एक भारतीय देश ; २ पुंस्त्री. उसके निवासी मनुष्य; (कुप्र १७२; इक; औप)। स्त्री—°ली ; (णाया १, १ ; इक ; औप)।
दमेयव्व, दम्म देखो दम=दमय्।
दम्म पुं [द्रम्म] सोने का सिक्का, सोना-मोहर; (उप पृ ३८७ ; हे ४, ४२२)।
दम्मत देखो दम=दमय्।
दय सक [दय्] १ रक्षण करना। २ कृपा करना। ३ चाहना। ४ देना। दयइ ; (आचा)। वकृ—दअंत, दअमाण ; (से १२, ६४ ; ३, १२ ; अभि १२)।
दय न [दे दक] जल, पानी ; (दे ५, ३३ ; बृह १)। °सीम पुं [°सीमन्] लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत ; (सम ६८)।
दय न [दे] शोक, अफसोस, दिलगीरी ; (दे ५, ३३)।
दय देखो दव=दव ; (से १, ५१ ; १२, ६५)।
°दय वि [°दय] देने वाला; (कप्प ; पडि)।
दया स्त्री [दया] करुणा, अनुकम्पा, कृपा; (दस ६, १)। °वर वि [°पर] दयालु ; (पउम२६, ४० ; उप पृ१६१)।
दयाइअ वि [दे] रक्षित ; (दे ५, ३५)।
दयालु वि [दयालु] दया वाला, करुण ; (हे १, १७७ ; १८० ; पउम १६, ३१ ; सुपा ३४० ; श्रा १६)।
दयावण, दयावन्न वि [दे] दीन, गरीब, रंक ; (दे ५, ३५ ; भवि ; पउम ३३, ८६)।
दर सक [दृ] आदर करना। दरइ ; (षड्)।
दर पुंन [दर] भय, डर; (कुमा)। २ अ ईषत्, थोड़ा, अल्प ; (हे २, २१५)।
दर न [दे] अर्द्ध, आधा ; (दे५, ३३; भवि ; हे २, २१५; बृह ३)।
दरंदर पुं [दे] उल्लास ; (दे५, ३७)।
दरमत्ता स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती ; (दे ५, ३७)।
दरमल सक [मर्दय्] १ चूर्ण करना, विदारना। २ आघात करना। दरमलइ ; (भवि)। वकृ—दरमलंत ; (भवि)।
दरमलिय वि [मर्दित] आहत, चर्णित ; (भवि)।
दरवलिअ वि [दे] उपभुक्त ; (कुमा)।
दरवल्ल पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का मुखिया ; (दे५, ३६)। °णिहेल्लण न [दे] शून्य गृह, खाली घर; (दे५, ३७)। °वल्लह पुं [दे] १ दयित, प्रिय; (दे ५, ३७) । २ कातर, डरपोक; (षड्)। °विंदर वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा ; २ विरल ; (दे ५, ५२)।
दरि° देखो दरी। °अर पुं [°चर] किंनर; (से ६, ४४)।
दरिअ वि [दृप्त] गर्विष्ठ, अभिमानी ; (हे १, १४४ ; पाअ)।
दरिअ वि [दीर्ण] १ डरा हुआ, भीत ; (कुमा ; सुपा ६४५)। २ फाड़ा हुआ, विदारित ; (अंत ७)।
दरिअ (अप) पुं [दरिद्र] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
दरिआ स्त्री [दरिका] कन्दरा, गुफा; (नाट—विक ८४)।
दरिद्द वि [दरिद्र] १ निर्धन, निःस्व, धन-रहित ; २ दीन, गरीब ; (पाअ ; प्रासू २३ ; कप्पू)।

दरिद्दि } वि [दरिद्रिन्, °क] ऊपर देखा ; ' अम्हे
दरिद्दिअ } दरिद्दिणो, कहं विवाहमंगलं रन्नो य पूयं करेमो" (महा ; सण ; पि २५७) ।

दरिद्दिय वि [दरिद्रित] दुःस्थित, जो धन-रहित हुआ हो ; (महा ; पि २५७) ।

दरिद्दीहूय वि [दरिद्रीभूत] जो निर्धन हुआ हो ; (ठा ३, १) ।

दरिस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना । दरिसइ, दरिसेइ; (हे ४, ३२ ; कुमा ; महा) । वकृ—**दरिसंत** ; (सुपा २४) । कृ—**दरिसणिज्ज, दरिसणीय** ; (औप ; पि १३५; सुर १०, ६) ।

दरिसण देखो **दंसण**=दर्शन ; (हे २, १०५) । °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष; (इक) । °**आवरणी** स्त्री [°वरणी] विद्या-विशेष ; (पउम ५६, ४०) ।

दरिसणिज्ज } देखो **दरिस** । २ न. भेट, उपहार; "गहिऊण
दरिसणीय } दरिसणीयं संपत्तो राइणो मूलं" (सुर १०,६) ।

दरिसाव देखो **दरिस** । वकृ—**दरिसावंत**; (उप पृ १८८) ।

दरिसाव पुं [दर्शन] दर्शन, साक्षात्कार; "एसो य महप्पा कइवयघरेसु दरिसावं दाऊण पडिनियत्तइ" (महा) , "पईव इव दाउं खणमेग दरिसावं पुणोवि अदंसणीहोइ " (सुपा ११५)।

दरिसावण न [दर्शन] १ दर्शन, साक्षात्कार; (आव १)। २ वि. दर्शक, दिखलाने वाला ; (भवि) ।

दरिसि वि [दर्शिन्] देखने वाला; (उवा; पि १३५; स ७२७)।

दरिसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ ; (कुमा ; उव) ।

दरी स्त्री [दरी] गुफा, कन्दरा ; (पाया १, १ ; से ६, ४४ ; उप पृ २६८ ; स ४१३) ।

दरुम्मिल्ल वि [दे] घन, निविड ; (दे ५, ३७) ।

दल सक [दा] देना, दान करना, अर्पण करना । दलइ; (कप्प, कस) । " जं तस्स मोल्लं तमहं दलामि " (उप २११ टी)। वकृ—**दलमाण, दलेमाण**; (कप्प, णाया १, १६; —पत्त २०४ ; ठा ४, २—पत्त २१६) । संकृ—**दलित्ता** ; (कप्प) ।

दल अक [दल्] १ विकसना । २ फटना, खण्डित होना, द्विधा होना । "अहिणवरकिरणणिउरंवचुंविअं दलइ कमलवणं" (गा ४६५) , "कुडयं दलइ" (कुमा) । वकृ—**दलंत** ; (से १, ५८) ।

दल सक [दलय्] चूर्ण करना, टुकड़े २ करना, विदारना । वकृ—"निम्मूलं **दलमाणो** सयलंतरसत्तुसिन्नबलं" (सुपा ८५) । कवकृ—**दलिज्जंत** ; (से ६, ६२) । संकृ—**दलिऊण** ; (कुमा) ।

दल न [दल] १ सैन्य, लश्कर; (कुमा)। २ पत्र, पत्ती; "तुहवल्लहस्स गोसम्मि आसि अहरो मिलाणकमलदलो" (हेका ५१ ; गा ५ ; १८० ; ३५७ ; ३६६ ; ५६२ ; ५६१ ; सुपा ६३८) । ३ धन, सम्पति ; ४ समूह, समुदाय ; (सुपा ६३८) । ५ खण्ड, भाग, अंश ; (से ६, ६२) ।

दलण न [दलन] १ पीसना, चूर्णन ; (सुपा १४ ; ६१६) । २ वि. चूर्ण करने वाला; (सुपा २३४; ४६७, कुप्र १३२;३८३)।

दलमाण देखो **दल**=दा

दलमाण देखो **दल**=दलय् ।

दलमल देखो **दरमल** । वकृ—**दलमलंत** ; (भवि) ।

दलय देखो **दल**=दा । दलयइ; (औप) । भवि—दलइस्संति ; (औप) । वकृ—**दलयमाण** ; (णाया १, १—पत्र ३७ ; ठा ३, १—पत्र ११७) । संकृ —**दलइत्ता** , (औप) ।

दलय सक [दापय्] दिलाना । दलयइ ; (कप्प) ।

दलवट्ट देखो **दरमल** । दलवट्टइ ; (भवि) ।

दलवट्टिअ देखो **दलमलिय** ; (भवि) ।

दलाव सक [दापय्] दिलाना । दलावेइ ; (पि ५५२) । वकृ—**दलावेमाण** ; (ठा ४, २) ।

दलिअ वि [दलित] १ विकसित; (से १२, १) । २ पीसा हुआ ; (पाअ) । "दलिअन्नसालितंडुलधवलमिअकासु राईसु" (गा ६६१) । ३ विदारित, खण्डित ; (दे १,१५६ ; सुर ४, १५२) ।

दलिअ न [दलिक] चीज, वस्तु, द्रव्य ; (ओघ ५५) , "जह जोग्गम्मिवि दलिए सव्वम्मि न कीरए पडिमा" (विसे १६३४) ।

दलिअ वि [दे] १ निकूणिताक्ष, जिसने टेढ़ी नजर की हो वह ; २ न. उंगली, (दे ५, ५२) । ३ काष्ठ, लकड़ी ; (दे ५, ५२;पाअ)

दलिज्जंत देखो **दल**=दलय् ।

दलिद्द देखो **दरिद्द** ; (हे १, २५४ ; गा २३०) ।

दलिद्दा अक [दरिद्रा] दुर्गत होना, दरिद्र होना । दलिद्दाइ ; (हे १, २५४) । भूका—दलिद्दाईअ ; (संक्षि ३२) ।

दलिल्ल वि [दलवत्] दल-युक्त, दल वाला ; (सण) ।

दलेमाण देखो **दल**=दा ।

दव सक [द्रु] १ गति करना । २ छोड़ना । दवए ; (विसे २८) ।

दव पुं [दव] १ जंगल का अग्नि, वन का वह्नि ; (दे ५, ३३)। २ वन, जंगल । °ग्गि पुं [°ाग्नि] जंगल का अग्नि; (हे १, १७७ ; प्राप्र) ।

दव पुं [द्रव] १ परिहास ; (दे ५, ३३) । २ पानी, जल ; (पंचव २) । ३ पनीली वस्तु, रसीली चीज ; (विसे १७०७) । ४ वेग ; "दवदवचारी" (सम ३७) । ५ संयम, विरति ; (आचा) । °कर वि [°कर] परिहास-कारक ; (भग ९, ३३) । °कारी, °गारी स्त्री [°कारी] एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-जनक बातें कर जी बहलाना होता है ; (भग ११, ११ ; णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

दवण न [द्रवण] यान, वाहन ; (सूत्र १, १) ।

दवणय देखो दमणय ; (भवि) ।

दवदवा स्त्री [द्रवद्रवा] वेग वाली गति ; "नाऊण गयं खुहियं नयरजणो धाविओ दवदवाए" (पउम ८, १७३) ।

दवर पुं [दे] १ तन्तु, डोरा, धागा ; (दे ५, ३५ ; आवम)। २ रज्जु, रस्सी ; (णाया १, ८) ।

दवरिया स्त्री [दे] छोटी रस्सी ; (विसे) ।

दवहुत्त न [दे] ग्रीष्म-मुख, ग्रीष्म काल का प्रारम्भ ; (दे ५, ३६) ।

दवाव सक [दापय्] दिलाना । दवावेइ ; (महा) । वकृ—दवावेमाण ; (णाया १, १४) । संकृ—दवाविऊण; (महा) । हेकृ—दवावेत्तए ; (कस) ।

दवावण न [दापन] दिलाना ; (निचू ३) ।

दवाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ ; (सुपा १३० ; स १९३ ; महा ; उप पृ ३८५ ; ७२८ टी) ।

दविअ पुंन [द्रव्य] १ अन्वयी वस्तु, जीव आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु ; (सम्म ६ ; विसे २०३१) । २ वस्तु, गुणाधार पदार्थ, (ओघ ५, आचा ; कप्प) । ३ वि भव्य, मुक्ति के योग्य ; (सूत्र १, २, १) । ४ भव्य, सुन्दर, शुद्ध ; (सूत्र १, १६) । ५ राग-द्वेष से विरहित, वीतराग ; (सूत्र १, ८) । °णुओग पुं [°ानुयोग] पदार्थ-विचार, वस्तु की मीमांसा ; (ठा १०) । देखो दव्व ।

दविअ वि [द्रविक] संयम वाला, संयम-युक्त ; (आचा) ।

दविअ वि [द्रवित] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु; (ओघ) ।

दविड देखो दविल ; (सुपा ५८०) ।

दविडी स्त्री [द्राविडी] लिपि-विशेष ; (विसे ४६४ टी)।

दविण न [द्रविण] धन, पैसा, संपत्ति ; (पाअ ; कप्प)।

दविल पुं [द्रविड] १ देश-विशेष, दक्षिण देश-विशेष ; २ पुंस्त्री. द्रविड़ देश का निवासी मनुष्य ; (पण्ह १, १—पत्र १४) ।

दव्व देखो दविअ=द्रव्य ; (सम्म १२ ; भग ; विसे २८ ; अणु ; उत्त २८) । ६ धन, पैसा, संपत्ति ; (पाअ ; प्रासू १३१) । ७ भूत या भविष्य पदार्थ का कारण ; (विसे २८; पंचा ६) । ८ गौण, अ-प्रधान ; ९ बाह्य, अ-तथ्य; (पंचा ४ ; ६) । °ट्ठिय पुं [°ार्थिक, °स्थित, °ास्तिक] द्रव्य को ही प्रधान मानने वाला पक्ष, नय-विशेष; "दव्वट्ठियस्स सव्वं सया अणुप्पन्नमविणट्ठं" (सम्म ११ ; विसे ४५७)। °लिंग न [°लिङ्ग] बाह्य वेष; (पंचा ४) । °लिंगि वि [°लिङ्गिन्] भेष-धारी साधु ; (गु १०) । °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] शरीर आदि पौद्गलिक वस्तु का रंग, रूप; (भग) । °वेय पुं [°वेद] पुरुष आदि का बाह्य आकार ; (राज) । °ायरिय पुं [°ाचार्य] अ-प्रधान आचार्य, आचार्य के गुणों से रहित आचार्य; (पंचा ६) ।

दव्वहलिया स्त्री [द्रव्यहलिका] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३५) ।

दव्वि° देखो दव्वी ; (षड्) ।

दव्विंदिअ न [द्रव्येन्द्रिय] स्थूल इन्द्रिय ; (भग) ।

दव्वी स्त्री [दर्वी] १ कर्छी, चमची, डोई ; (पाअ) । २ साँप की फन ; (दे ५, ३७) । °अर, °कर पुं [°कर] साँप, सर्प ; (दे ५, ३७ ; पण्ण १) ।

दव्वी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।

दस त्रि. व. [दशन्] दस, नव और एक ; (हे १, १६२ ; ठा ३, १—पत्र ११९ ; सुपा २६७) । °उर न [°पुर] नगर-विशेष ; (विसे २३०३) । °कंठ पुं [°कण्ठ] रावण, एक लंका-पति; (से १५, ६१) । °कंधर पुं [°कन्धर] राजा रावण ; (गउड) । °कालिय न [°कालिक] एक जैन आगम-ग्रन्थ ; (दसनि १) । °ग न [°क] दश का समूह ; (दं ३८ ; नव १२) । °गुण वि [°गुण] दस-गुना ; (ठा १०) । °गुणिअ वि [°गुणित] दस-गुना ; (भग ; श्रा १०) । °गीव पुं [°ग्रीव] रावण ; (पउम ७३, ८) । °दसमिया स्त्री [°दशमिका] जैन साधु का

एक धार्मिक अनुष्ठान, प्रतिमा-विशेष ; (सम १००)। °**दिवसिय** वि [°**दिवसिक**] दस दिन का ; (णाया १, १—पत्र ३७)। °**द्ध** पुंन [°**र्ध**] पाँच, ५; (सम ६०; णाया १, १)। °**धणु** पुं [°**धनुष्**] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष ; (सम १५३)। °**पएसिय** वि [°**प्रदेशिक**] दस अवयव वाला ; (ठा १०)। °**पुर** देखो °**उर** ; (महा)। °**पुव्वि** वि [°**पूर्विन्**] दस पूर्व-ग्रन्थों का अभ्यासी ; (ओघ १)। °**बल** पुं [°**बल**] भगवान् बुद्ध ; (पाअ ; हे १, २६२)। °**म** वि [°**म**] १ दसवाँ; (राज)। २ चार दिनों का लगातार उपवास ; (आचा ; णाया १, १ ; सुर ४, ५५)। °**मभत्तिय** वि [°**मभक्तिक**] चार दिनों का लगातार उपवास करने वाला ; (पण्ह २, ३)। °**मासिअ** वि [°**माषिक**] दस मासे का तौल वाला, दस मासे का परिमाण वाला ; (कप्पू)। °**मी** स्त्री [°**मी**] १ दसवीं ; २ तिथि-विशेष; (सम २६)। °**मुद्दियाणंतग** न [°**मुद्रिकानन्तक**] हाथ के उंगलिओं की दस अंगूठियाँ ; (औप)। °**मुह** पुं [°**मुख**] रावण, राक्षस-पति ; (हे १, २६२ ; प्राप्र ; हेका ३३४)। °**मुहसुअ** पुं [°**मुखसुत**] रावण का पुत्र, मेघनाद आदि ; (से १३, ६०)। °**य** देखो °**ग** ; (ठा १०)। °**रत्त** न [°**रात्र**] दस रात ; (विपा १, ३)। °**रह** पुं [°**रथ**] १ रामचन्द्रजी के पिता का नाम ; (सम १५२ ; पउम २०, १८३)। २ अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष ; (ठा ६—पत्र ४४७)। °**रहसुय** पुं [°**रथसुत**] राजा दशरथ का पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ; (पउम ५६, ८७)। °**वअण** पुं [°**वदन**] राजा रावण; (से १०, ५)। °**वल** देखो °**बल** ; (प्राप्र)। °**विह** वि [°**विध**] दस प्रकार का; (कुमा)। °**वेआलिय** न [°**वैकालिक**] जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, ; (दसनि १ ; णंदि)। °**हा** अ [°**धा**] दस प्रकार से ; (जी २४)। °**ाणण** पुं [°**ानन**] राक्षसेश्वर रावण ; (से ३, ६३)। °**ाहिया** स्त्री [°**ाहिका**] पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य में किया जाता दस दिनों का एक उत्सव ; (कप्प)।

दसण पुं [**दशन**] १ दाँत, दन्त ; (भग ; कुमा)। २ न. दंश, काटना; (पंव ३८)। °**च्छय** पुं [°**च्छद**] होठ, अधर ; (सुर १२, २३४)।

दसण्ण पुं [**दशार्ण**] देश-विशेष; (उप २११ टी ; कुमा)। °**कूड** न [°**कूट**] शिखर-विशेष; (आवम)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष ; (ठा १०)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] दशार्णपुर का एक विख्यात राजा, जो अद्वितीय आडम्बर से भगवान् महावीर को वन्दन करने गया था और जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (पडि)। °**वइ** पुं [°**पति**] दशार्ण देश का राजा ; (कुमा)।

दसतीण न [**दे**] धान्य-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।

दसन्न देखो **दसण्ण** ; (सत्त ६७ टी)।

दसा स्त्री [**दशा**] १ स्थिति, अवस्था ; (गा२२७ ; २८४; प्रासू११०)। २ सौ वर्ष के प्राणी की दस २ वर्ष की अवस्था ; (दसनि१)। ३ सूता या ऊन का छोटा और पतला धागा; (ओघ७२५)। ४ ब. जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (अणु)।

दसार पुं [**दशार्ह**] १ समुद्रविजय आदि दश यादव ; (सम १२६ ; हे २, ८५ ; अंत २ ; णाया १, ४—पत्र ६६)। २ वासुदेव, श्रीकृष्ण ; (णाया १, १६)। ३ बलदेव ; (आवम)। ४ वासुदेव की संतति ; (राज)। °**णेउ** पुं [°**नेतृ**] श्रीकृष्ण ; (उव)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] श्रीकृष्ण ; (पाअ)। °**वइ** पुं [°**पति**] श्रीकृष्ण ; (कुमा)।

दसिया देखो **दसा**; (सुपा ६४१)।

दसु पुं [**दे**] शोक, दिलगीरी ; (दे ५, ३४)।

दसुत्तरसय न [**दशोत्तरशत**] १ एक सौ दश। २ वि. एक सौ दसवाँ, ११० वाँ ; (पउम ११०, ४५)।

दसेर पुं [**दे**] सूत्र-कनक ; (दे ५, ३३)।

दस्स देखो **दंस**=दर्शय्। कृ—**दस्सणीअ** ; (स्वप्न६५)।

दस्सण देखो **दंसण** ; (मै २१)।

दस्सु पुं [**दस्यु**] चोर, तस्कर ; (श्रा २७)।

दह सक [**दह्**] जलना, भस्म करना। दहइ ; (महा)। कर्म—दहिज्जइ ; (हे४, २४६), दज्झइ ; (आचा)। वकृ—**दहंत**; (श्रा१८)। कवकृ—**दज्झंत, दज्झमाण**; (नाट—मालती ३०; पि २२२)।

दह पुं [**द्रह**] ह्रद, बड़ा जलाशय, झील, सरोवर ; (भग ; उवा ; णाया १, ४—पत्र ९६ ; सुपा १३७)। °**फुल्लिया** स्त्री [°**फुल्लिका**] वल्ली-विशेष; (पण्ण १)। °**वई**, °**ावई** स्त्री [°**वती**] नदी-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८० ; जं ४)।

दह देखो **दस** ; (हे १, २६२ ; दे १२ ; पि २६२ ; पउम ७८, २५ ; से १३, ९४ ; प्राप्र ; से १४, १६ ; ३, ११ ; १०, ४ ; पउम ८, ४४ ; प्राप्र)।

दहण न [**दहन**] १ दाह, भस्मीकरण ; २ पुं. अग्नि, वह्नि ; (पण्ह १, १ ; उप पृ २२ ; सुपा ४७४ , श्रा २८)।
दहणी स्त्री [**दहनी**] विद्या विशेष ; (पउम ७ १३८)।
दहबोल्ली स्त्री [**दे**] स्थाली, थालिया ; (दे ५, ३६)।
दहावण वि [**दाहक**] जलाने वाला ; (सण)।
दहि न [**दधि**] दही, दूध का विकार ; (ठा ३, १ ; णाया १, १ ; प्राप्र)। °**घण** पु [°**घन**] दधि-पिण्ड, अतिशय जमा हुआ दही, (पराण १७—पत्र ५२६)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ द्वीप-विशेष; (पउम ५१, १)। २ एक नगर ; (पउम ५१, २)। ३ पर्वत-विशेष ; (राज)। °**वण्ण,** °**वन्न** पुं [°**पर्ण**] १ एक राजा, नृप-विशेष ; (कुप्र ६६)। २ वृक्ष-विशेष ; (औप ; सम १५२ ; पराण १—पत्र ३१)। °**वासुया** स्त्री [°**वासुका**] वनस्पति-विशेष ; (जीव ३)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] नृप-विशेष ; (महा)। °**सर** पु [°**सर**] खाद्य-द्रव्य-विशेष ; (दे ३, २६ ; ५, ३६)।
दहिउप्फ न [**दे**] नवनीत, मक्खन ; (दे ५, ३५)।
दहिट्ठ पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, कपित्थ ; (दे ५, ३५)।
दहिण देखो **दाहिण** ; (नाट—वेणी ६७)।
दहित्थर } पु [**दे**] दधिसर, खाद्य-विशेष; (दे ५, ३६)।
दहित्थार }
दहिमुह पुं [**दे**] कपि, वानर ; (दे ५, ४४)।
दहिय पुं [**दे**] पक्षि-विशेष; "जं लावयतितिरिदहियमोरं मारंति अदोस वि के वि घोरं" (कुप्र ४२७)।
दा सक [**दा**] देना, उत्सर्ग करना। दाइ, देइ ; (भवि ; हे २, २०६ ; आचा; महा ; कस)। भवि—दाहं, दाहामि, दाहिमि, (हे ३, १७० ; आचा)। कर्म—दिज्जइ ; (हे ४, ४३८)। वकृ—**दित, देंत, ददंत, देयमाण,** (सुर १, २१२ ; गा २३ ; ४६४ ; हे ४, ३७९ ; बृह १ ; णाया १, १४—पत्र १८६)। कवकृ—**दिज्जंत, दिज्जमाण, दीअमाण** ; (गा १०१ ; सुर ३, ७६ ; १०,५ ; सम ३६; सुपा ५०२ ; मा ३३)। संकृ—**दच्चा, दाउं, दाऊण** ; (विपा १, १ ; पि ५८७ ; कुमा ; उव)। हेकृ—**दाउं** ; (उवा)। कृ—**दायव्व, देय** ; (सुर १, ११० ; सुपा २३३; ४४४ ; ५३२)। हेकृ—**देवं** (अप); (हे ४, ४४१)।
दा देखो **ता**=तावत् ; (से ३, १०)।
दाअ देखो **दाव**=दर्शय्। दाएइ; (विसे ८४४)। कर्म—दाइज्जइ ; (विसे ४६०)। कवकृ—**दाइज्जमाण**; (कप्प)।
दाअ पुं [**दे**] प्रतिभू, जामीनदार; (दे ५, ३८)।
दाअ पुं [**दाय**] दान, उत्सर्ग ; (णाया १, १—पत्र ३७)।
दाइ वि [**दायिन्**] दाता, देने वाला ; (उप पृ १६२)।
दाइअ वि [**दर्शित**] दिखलाया हुआ; (विसे १०१२)।
दाइअ पुं [**दायिक**] १ पैतृक संपत्ति का हिस्सेदार; (उप पृ ४७; महा)। २ गोत्रिक, समान-गोत्रीय; (कप्प)।
दाइज्जमाण देखो **दाअ**=दर्शय्।
दाउ वि [**दातृ**] दाता, देने वाला; (महा; सं १; सुपा १९१)।
दाउं देखो **दा**=दा।
दाओयरिअ वि [**दाकोदरिक**] जलोदर रोग वाला ; (विपा १, ७)।
दाघ देखो **दाह** ; (हे १, २६४)।
दाडिम न [**दाडिम**] फल-विशेष; अनार ; (महा)।
दाडिमी स्त्री [**दाडिमी**] अनार का पेड़ ; (पि २४०)।
दाढा स्त्री [**दंष्ट्रा**] बड़ा दाँत, दन्त-विशेष ; (हे २, १३९ ; गउड)।
दाढि वि [**दंष्ट्रिन्**] १ दाढा वाला ; २ पुं. हिंसक पशु ; (वेणी ४६)। ३ सूअर, वराह ; "किं दाढीभयभीओ नियय गुहं केसरी रियइ" (पउम ७, १८)।
दाढिआ स्त्री [**दे**] दाढ़ी, मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु, ठुड्डी के नीचे के बाल ; (दे २, १०१)।
दाढिआलि } स्त्री [**दंष्ट्रिकावलि**] १ दाढ़ी की पंक्ति। २ वस्त्र-विशेष ; (बृह ३ ; जीत)।
दाढिगालि }
दाण पुंन [**दान**] १ दान, उत्सर्ग, त्याग ; "एए हवंति दाणा" (पउम १४, ५४; कप्प ; प्रासू ४८ ; ६७ ; १७२)। २ हाथी का मद ; (पाअ ; षड् ; गउड)। ३ जो दिया जाय वह ; (गउड)। °**विरय** पुं [°**विरत**] एक राजा; (सुपा १००)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] सत्रागार ; (ती८)।
दाणंतराय न [**दानान्तराय**] कर्म-विशेष; जिसके उदय से दान देने की इच्छा नहीं होती है ; (राय)।
दाणव पुं [**दानव**] दैत्य, असुर, दनुज ; (दे १, १७७ ; अच्चु ४१ ; प्रासू ८६)।
दाणविंद पुं [**दानवेन्द्र**] असुरों का स्वामी ; (णाया १, ८ ; पउम ६२, ३६ ; प्रासू १०७)।
दाणि स्त्री [**दे**] शुल्क, चुंगी ; (सुपा ३६० ; ५४८)।
दाणि } अ [**इदानीम्**] इस समय, अभी ; (प्रति ३६ ; स्वप्न ३० ; हे १, २९ ; ४, २७७ ; अभि ३७ ; स्वप्न ३३)।
दाणिं }
दाणीं }

दाथ वि [**द्वाःस्थ**] १ द्वार पर स्थित। २ पुं. प्रतीहार, चपरासी ; (दे ६,७२)।

दादलिआ स्त्री [**दे**] अंगुली, उंगली ; (दे ५, ३८)।

दापण न [**दापन**] दिलाना ; "अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदापणं" (सत्त २६ टी)।

दाम न [**दामन्**] १ माला, स्रज् ; (पण्ह १, ४ ; कुमा)। २ रज्जु, रस्सी ; (गा १७२ ; हे १, ३२)। ३ पुं. वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत; (राज)। °**वंत** वि [°**वत्**] माला वाला ; (कुमा)।

दामड्ढि पुं [**दामस्थि**] सौधर्म देवलोक के इन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति देव ; (इक)।

दामड्ढि पुं [**दामर्द्धि**] ऊपर देखो; (ठा ५,१—पत्र ३०३)।

दामण न [**दे**] बन्धन, पशुओं का रस्सी से नियन्त्रण ; (पत्र ३८)।

दामणी स्त्री [**दामनी**] १ पशुओं को बाँधने की रस्सी; (भग १६, ६)। २ भगवान् कुन्थुनाथ की मुख्य शिष्या; (तित्थ)। ३ स्त्री और पुरुष का रज्जु के आकार वाला एक शुभ लक्षण; (पण्ह २,४ टी—पत्र ८४; पण्ह २, ४—पत्र ६८; ७६; जं २)।

दामणा स्त्री [**दे**] १ प्रसव, प्रसूति ; २ नयन, आँख ; (दे ५, ५२)।

दामिय वि [**दामित**] संयमित, नियन्त्रित; (सण)।

दामिली स्त्री [**द्राविडी**] द्रविड़ देश की लिपि में निबद्ध एक मन्त्र-विद्या ; (सुत्र २, २)।

दामी स्त्री [**दामी**] लिपि-विशेष ; (सम ३५)।

दामोअर पुं [**दामोदर**] १ श्रीकृष्ण वासुदेव; (ती ४)। २ अतीत उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में उत्पन्न नववाँ जिनदेव ; (पत्र ७)।

दायग वि [**दायक**] दाता, देने वाला ; (उप ७२८ टी ; महा ; सुर २, ४४ ; सुपा ३७८)।

दायण न [**दान**] देना; "दायणे अ निकाए अ अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे" (सम २१)। "तवोविहाणं तह दाणदाप (? य) णं" (सत्त २६)।

दायणा स्त्री [**दापना**] पृष्ट अर्थ की व्याख्या ; (विसे २६३२)।

दायय देखो **दायग** ; "अजिअसंतिपायया हुंतु मे सिवसुहाण दायया" (अजि ३४)।

दायव्व देखो **दा**=दा।

दायाद पुं [**दायाद**] पैतृक सपत्ति का भागीदार ; (आचा)।

दायार वि [**दायार**] याचक, प्रार्थी ; (कप्प)।

दार सक [**दारय्**] विदारना, तोड़ना, चूर्ण करना। वकृ— **दारंत** ; (कुमा)।

दार पुं [**दे**] कटी-सूत्र, काँची ; (दे ५, ३८)।

दार पुंन [**दार**] कलत्र, स्त्री, महिला; (सम ५० ; स १३७ ; सुर ७, २०१; प्रासू ६५), "दव्वेण अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदारं" (सुपा २८०)।

दार न [**द्वार**] दरवाजा, निकलने का मार्ग ; (औप ; सुपा ३६७)। °**ग्गला** स्त्री [°**र्गला**] दरवाजे का आगल ; (गा ३२२)। °**ट्ठ,** °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ द्वार में स्थित। २ पुं. दरवान, प्रतीहार; (बृह १ ; दे २, ५२)। °**पाल,** °**वाल** पुं [°**पाल**] दरवान, द्वार-रक्षक ; (उप ५३० टी ; सुर १०, १३६; महा)। °**वालय,** °**वालिय** पुं [°**पालक,** °**पालिक**] दरवान, प्रतीहार ; (पउम १७, १६; सुपा ४६६)।

दार } पुं [**दारक**] शिशु, बालक, बच्चा; (उप पृ ३०८;
दारग } सुर १५, १२६ ; कप्प)। देखो **दारय**।

दारद्धंता स्त्री [**दे**] पेटा, संदूक ; (दे ५, ३८)।

दारय वि [**दारक**] १ विदारण करने वाला, विध्वंसक ; (कुप्र १३०)। २ देखो **दारग** ; (कप्प)।

दारिअ वि [**दारित**] विदारित, फाड़ा हुआ; (पाअ)।

दारिआ स्त्री [**दारिका**] लड़की ; (स्वप्न १५ ; णाया १, १६ ; महा)।

दारिआ स्त्री [**दे**] वेश्या, वारांगना; (दे ५, ३८)।

दारिद्द न [**दारिद्र्य**] १ निर्धनता ; २ दीनता ; (गा६७१ ; महा ; प्रासू १७३)। ३ आलस्य ; (प्रामा)।

दारिद्दिय वि [**दारिद्रित**] दरिद्रता-प्राप्त, दरिद्र ; (पउम ५५, २५)।

दारु न [**दारु**] काष्ठ, लकड़ी; (सम ३६; कुप्र १०४; स्वप्न ७०)। °**ग्गाम** पुं [°**ग्राम**] ग्राम-विशेष; (पउम ३०, ६०)। °**दंडय** पुंन [°**दण्डक**] काष्ठ-दण्ड, साधुओं का एक उपकरण; (कस)। °**पव्वय** पुं [°**पर्वत**] पर्वत-विशेष ; (जीव३)। °**पाय** न [°**पात्र**] काष्ठ का बना हुआ भाजन ; (ठा३, ३)। °**पुत्तय** पुं [°**पुत्रक**] कठपुतला ; (अच्चु ८२)। °**मड** पुं [°**मड**] भरत-क्षेत्र के एक भावी जिन-देव के पूर्व जन्म

का नाम ; (सम१५४)। °संकम पुं [°संक्रम] काष्ठ का बना हुआ पूल, सेतु ; (आचा)।
दारुअ पुं [दारुक] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर उत्तम गति प्राप्त की थी ; (अंत ३)। २ श्रीकृष्ण का एक सारथि ; (णाया १, १६)। ३ न. काष्ठ, लकड़ी ; (पउम २६, ६)।
दारुण वि [दारुण] १ विषम, भयंकर, भीषण ; (णाया १, २ ; पाअ ; गउड)। २ क्रोध-युक्त, रौद्र ; (वव१)। ३ न. कष्ट, दुःख ; (स ३२२)। ४ दुर्भिक्ष, अकाल ; (उप १३६ टी)।
दारुणी स्त्री [दारुणी] विद्या-देवी विशेष; (पउम ७, १४०)।
दालण न [दारण] विदारण, खण्डन ; (पण्ह १, १)।
दालि स्त्री [दे. दालि] १ दाल, दला हुआ चना, अरहर, मूँग आदि अन्न ; (सुपा ११ ; सण)। २ राजि, रेखा ; (ओघ ३२३)।
दालिअ न [दे] नेत्र, आँख ; (दे ५, ३८)।
दालिद्द देखो दारिद्द ; (हे १, २५४ ; प्रासू ७०)।
दालिद्दिय देखो दारिद्दिय ; (सुर१३, ११६ ; वज्जा१३८)।
दालिम देखो दाडिम ; (प्राप्र)।
°**दालियंब** न [दालिकाम्ल] दाल का बना हुआ खाद्य-विशेष; (पण्ह २, ५)।
दालिया स्त्री [दालिका] देखो दालि ; (उवा)।
दाली देखो दालि ; (ओघ ३२३)।
दाव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दावइ, दावेइ ; (हे४, ३२ ; गा३१५)। वकृ—**दावंत**; (गा ६२०)।
दाव सक [दापय्] दिलाना, दान करवाना। दावेइ ; (कस)। वकृ—**दावेंत** ; (पउम११७, ३६; सुपा ६१८)। हेकृ—**दावेत्तए** ; (कप्प)।
दाव देखो ताव=तावत् ; (से३, २६ ; स्वप्न१२ ; अभि३६)।
दाव पुं [दाव] १ वन, जंगल ; २ देव, देवता ; (से ६, ४३)। ३ जंगल का अग्नि ; (पाअ)। °**ग्गि** पुं [°ाग्नि] जंगल की आग ; (हे१, ६७)। °**ाणल**, °**ानल** पुं [°ानल] जंगल की आग ; (सण ; सुपा१६७ ; पडि)।
दावण न [दे] छान, पशुओं को पैर में बाँधने की रस्सी; (कुप्र ४३६)।
दावण न [दापन] दिलाना ; (सुपा ४६६)।
दावणया स्त्री [दापना] दिलाना ; (स ५१ ; पडि)।
दावद्दव पुं [दावद्रव] वृक्ष-विशेष ; (णाया १, ११—पत्र १७१)।
दावर पुं [द्वापर] १ युग-विशेष, तीसरा युग। २ न. द्विक, दो; "नो तियं नो चेव दावरं" (सूअ१, २, २, २३)। °**जुम्म** पुं [°युग्म] राशि-विशेष ; (ठा ४, ३—पत्र २३७)।
दावाव सक [दापय्] दिलाना। संकृ—**दावावेउं** ; (महा)।
दाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ, प्रदर्शित ; (पाअ ; से १, ५३ ; ५, ८०)।
दाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ ; (सुपा २४१)।
दाविअ वि [द्रावित] १ झराया हुआ, टपकाया हुआ ; २ नरम किया हुआ ; (अच्चु ८८)।
दावेंत देखो दाव=दापय्।
दास पुं [दर्श] दर्शन, अवलोकन ; (षड्)।
दास पुं [दास] १ नौकर, कर्मकर; (हे ३, २०६ ; सुपा १२२ ; प्रासू १७५ ; सं१८; कप्पू)। २ धीवर, "केवट्टो धीवरो दासो" (पाअ)। °**चेड**, °**चेडग** पुं [°चेट] १ छोटी उम्र का नौकर ; २ नौकर का लड़का ; (महा ; णाया १, २)। °**सच्च** पुं [°सत्य] श्रीकृष्ण ; (अच्चु १७)।
दासरहि पुं [दाशरथि] राजा दशरथ का पुत्र, रामचन्द्र ; (से १, १४)।
दासी स्त्री [दासी] नौकरानी ; (औप ; महा)।
दासीखब्बडिया स्त्री [दासीकर्वटिका] जैन मुनिओं की एक शाखा ; (कप्प)।
दाह पुं [दाह] १ ताप, जलन, गरमी ; २ दहन, भस्मीकरण; (हे १, २६४ ; प्रासू१८)। ३ रोग-विशेष ; (विपा१,१)। °**ज्जर** पुं [°ज्वर] ज्वर-विशेष; (सुपा३११)। °**वक्कंतिय** वि [°व्युत्क्रान्तिक] जिसको दाह उत्पन्न हुआ हो वह ; (णाया १, १—पत्र ६४)।
दाहं देखो दा=दा।
दाहग वि [दाहक] जलाने वाला ; (उवर ८१)।
दाहण न [दाहन] जलाना, भस्म कराना ; (पउम १०२, १६१)।
दाहिण देखो दक्खिण; (भग; कस ; हे १, ४५; २, ७२; गा ४३३ ; ८१६)। °**दारिय** वि [°द्वारिक] दक्षिण दिशा में जिसका द्वार हो वह। २ न. अश्विनी-प्रमुख सात नक्षत्र ; (ठा ७)। °**पच्चत्थिम** वि [°पश्चिमीय] दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच का भाग, नैर्ऋत कोण ; (भग)। °**पह** पुं [°पथ] १ दक्षिण देश की ओर का

रास्ता ; २ दक्षिण देश ; " गच्छामि दाहिणपहं " (पउम ३२, १३)। °पुरत्थिम वि [°पूर्वीय] दक्षिण और पूर्व दिशा के बीच का भाग, अग्नि-कोण ; (भग)। °वत्त वि [°वर्त] दक्षिण में आवर्त वाला (शंख आदि) ; (ठा ४, २—पत्र २१६)।

दाहिणा देखो **दक्खिणा** ; (ठा ६ ; सुज्ज १०)।

दाहिणिल्ल देखो **दक्खिणिल्ल** ; (पउम ७, १७ ; विपा १, ७)।

दाहिणी स्त्री [**दक्षिणा**] दक्षिण दिशा ; (कुमा)।

दि वि.व. (**द्वि**) दो, दो की संख्या वाला; (हे १, ९४; से ६, ५३)।

दि° देखो **दिसा** ; (गा ८६६)। °**क्करि** पुं [°**करिन्**] दिग्-हस्ती; (कुमा)। °**ग्गइंद** पुं [°**गजेन्द्र**] दिग्-हस्ती; (गउड)। °**ग्गय** पुं [°**गज**] दिग्-हस्ती ; (स ११३)। °**चक्कसार** न [°**चक्रसार**] विद्याधरों का एक नगर; (इक)। °**म्मोह** पुं [°**मोह**] दिशा-भ्रम ; (गा ८८६)। देखो **दिसा**।

दिअ पुं न [**दे**] दिवस, दिन; (दे ५, ३६), " राइंदिआइं " (कप्प)।

दिअ पुं [**द्विज**] १ ब्राह्मण, विप्र; (कुमा; पाअ; उप ७६८ टी)। २ दन्त, दाँत ; ३ ब्राह्मण आदि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य; ४ अण्डज, अण्डे से उत्पन्न होने वाला प्राणी ; ५ पक्षी ; ६ वृक्ष-विशेष, टिंवरू का पेड़ ; (हे १, ९४)। °**राय** पुं [°**राज**] १ उत्तम द्विज ; २ चन्द्रमा; (सुपा ४१२; कुप्र १९)।

दिक पुं [**द्विक**] काक, कौआ ; (उप ७६८ टी)।

दिअ पुं [**द्विप**] हस्ती, हाथी; (हे २, ७९)।

दिअ न [**दिव**] स्वर्ग, देवलोक, (पिंग)। °**लोअ**, °**लोग** पुं [°**लोक**] स्वर्ग, देवलोक ; (पउम २२, ४५; सुर ७, १)।

दिअ वि [**द्रुत**] हत, मार डाला हुआ ; "चंदेण व दियराएण जेण आणंदियं भुवणं" (कुप्र १९)।

दिअंत पुं [**दिगन्त**] दिशा का प्रान्त भाग; (महा)।

दिअंबर वि [**दिगम्बर**] १ नग्न, वस्त्र-रहित ; २ पुं. एक जैन संप्रदाय; (भवि ;उवर १२२;कुप्र ४४३)।

दिअज्झ पुं [**दे**] सुवर्णकार, सोनार ; (दे ५, ३९)।

दिअधुत्त पुं [**दे**] काक, कौआ ; (दे ५, ४१)।

दिअर पुं [**देवर**] पति का छोटा भाई ; (गा ३५ ; प्राप्र ; पाअ ; हे १, १४६ ; सुपा ४८७)।

दिअलिअ वि [**दे**] मूर्ख, अज्ञानी ; (दे ५, ३९)।

दिअली स्त्री [**दे**] स्थूणा, खंभा, खूँटी ; (पाअ)।

दिअस पुंन [**दिवस**] दिन, दिवस ; (गउड ; पि २६४)। °**कर** पुं [°**कर**] सूर्य, रवि ; (से १, ५३)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] सूर्य, सूरज ; (पउम १४, ८३)। °**यर** देखो °**कर**; (पाअ)। देखो **दिवस**।

दिअसिअ न [**दे**] १ सदा-भोजन ; (दे ५, ४०)। २ अनुदिन, प्रतिदिन ; (दे ५, ४० ; पाअ)।

दिअह देखो **दिअस** ; (प्राप्र; पाअ)।

दिअहुत्त न [**दे**] पूर्वाह्न का भोजन, दुपहर का भोजन; (दे ५, ४०)।

दिआ अ [**दिवा**] दिन, दिवस ; (पाअ ; गा ६६ ; सम १९ ; पउम २६, २६)। °**णिस** न [°**निश**] दिन-रात, सदा; (पिंग)। °**राअ** न [°**रात्र**] दिन-रात, सर्वदा; (सुपा ३१८)। देखो **दिवा**।

दिआहम पुं [**दे**] भास पक्षी ; (दे ५, ३९)।

दिआइ देखो **दुआइ** ; (पाअ)।

दिइ स्त्री [**द्वृति**] मसक, चमड़े का जल-पात्र ; (अनु ५; कुप्र १४९)।

दिउण वि [**द्विगुण**] दूना, दुगुना; (पि २९८)।
देखो **दा**=दा।

दिक्काण पुं [**द्रेष्काण**] मेष आदि लग्नों का दशवाँ हिस्सा; (राज)।

दिक्ख सक [**दीक्ष्**] दीक्षा देना, प्रव्रज्या देना, संन्यास देना, शिष्य करना। दिक्खे ; (उत्त)। वकृ—**दिक्खंत** ; (सुपा ५२६)।

दिक्ख देखो **देक्ख**। दिक्खइ ; (पि ६६)।

दिक्खा स्त्री [**दीक्षा**] १ प्रव्रज्या देना, दीक्षण; (ओघ ७ भा)। २ प्रव्रज्या, संन्यास; (धर्म २)।

दिक्खिअ वि [**दीक्षित**] जिसको प्रव्रज्या दी गई हो वह, जो साधु बनाया गया हो वह ; (उव)।

दिगंछा देखो **दिगिंछा**; (पि ७४)।

दिगंबर देखो **दिअंबर**; (इक ; आवम)।

दिगिंछा स्त्री [**जिघत्सा**] बुभुक्षा, भूख ; (सम ४० ; विसे २५९४ ; उत्त २ ; आचू)।

दिगिच्छ सक [जिघत्स्] खाने को चाहना। वकृ— **दिगिच्छंत**; (आचा; पि ५५५)।

दिगु पुं [द्विगु] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास; (अणु; पि २६८)।

दिग्घ देखो **दीह**; (हे २, ९१; प्राप्र; संक्षि १७; स्वप्न ६८; विसे ३४६७)। °**णंगूल**, °**लंगूल** वि [°**लाङ्गूल**] १ लम्बी पूँछ वाला; २ पुं. वानर; (षड्)।

दिग्घिआ स्त्री [दीर्घिका] वापी, सीढ़ी वाला कूप-विशेष; (स्वप्न ५६; विक्र १३६)।

दिच्छा स्त्री [दित्सा] देने की इच्छा; (कुप्र २६६)।

दिज देखो **दिअ=द्विज**; (कुमा)।

दिज्ज वि [देय] १ देने योग्य; २ जो दिया जा सके; ३ पुंन. कर-विशेष; (विपा १, १)।

दिज्जंत } देखो **दा=दा**।
दिज्जमाण }

दिट्ठ वि [दिष्ट] कथित, प्रतिपादित; (उप ७६८ टी)।

दिट्ठ वि [दृष्ट] १ देखा हुआ, विलोकित; (ठा ४, ४; स्वप्न २८; प्रासू १११)। २ अभिमत; (अणु)। ३ ज्ञात, प्रमाण से जाना हुआ; (उप ८८२; बृह १)। ४ न. दर्शन, विलोकन; (ठा २, १)। °**पाढि** वि [°**पाठिन्**] चरक-सुश्रुतादि का जानकार; (ओघ ७४)। °**लाभिय** पुं [°**लाभिक**] दृष्ट वस्तु को ही ग्रहण करने वाला जैन साधु; (पण्ह २, १)।

दिट्ठंत पुं [दृष्टान्त] उदाहरण, निदर्शन; (ठा ४, ४; महा)।

दिट्ठंतिअ वि [दार्ष्टान्तिक] १ जिस पर उदाहरण दिया गया हो वह; (विसे १००५ टी)। २ न. अभिनय-विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

दिट्ठव्व देखो **दक्ख=दृश्**।

दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] १ नेत्र, आँख, नजर; (ठा ३, १; प्रासू १६; कुमा)। २ दर्शन, मत; (पण्ण १६; ठा ४, १)। ३ दर्शन, अवलोकन, निरीक्षण; (अणु)। ४ बुद्धि, मति; (सम २५; उत्त २)। ५ विवेक, विचार; (सूअ २, २)। °**कीव** पुं [°**क्लीब**] नपुंसक-विशेष; (निचू४)। °**जुद्ध** न [°**युद्ध**] युद्ध-विशेष, आँख की स्थिरता की लड़ाई; (पउम४,४४)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] नजर बाँधना; (उप ७२८ टी)। °**म**, °**मंत** वि [°**मत्**] प्रशस्त दृष्टि वाला, सम्यग्-दर्शी; (सूअ १, ४, १; आचा)। °**राय** पुं [°**राग**] १ दर्शन-राग, अपने धर्म पर अनुराग; (धर्म २)। २ चाक्षुष स्नेह; (अभि ७४)। °**ल्ल** वि [°**मत्**] प्रशस्त दृष्टि वाला; (पउम २८, २२)। °**वाय** पुं [°**पात**] १ नजर डालना; (से १६, ५)। २ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा १०—पत्र ४६१)। °**वाय** पुं [°**वाद**] बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा १०; सम१)। °**विपरिआसिआ** स्त्री [°**विपर्यासिका**, °**सिता**] मति-भ्रम; (सम २५)। °**विस** पुं [°**विष**] जिसकी दृष्टि में विष हो ऐसा सर्प; (से ४, ५०)। °**सूल** न [°**शूल**] नेत्र का रोग-विशेष; (णाया १, १३—पत्र १८१)।

दिट्ठिआ अ [दिष्ट्या] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ मंगल; २ हर्ष, आनन्द, खुशी; ३ भाग्य से; (हे २, १०४; स्वप्न १६; अभि ६५; कुप्र ६५)।

दिट्ठिआ स्त्री [दृष्टिका, °जा] १ क्रिया-विशेष—दर्शन के लिए गमन; २ दर्शन से कर्म का उदय होना; (ठा २, १—पत्र ४०)।

दिट्ठीआ स्त्री [दृष्टीया] ऊपर देखो; (नव १८)।

दिट्ठीवाओवएसिआ स्त्री [दृष्टिवादोपदेशिकी] संज्ञा-विशेष; (दं ३३)।

दिट्ठेल्लय वि [दृष्ट] देखा हुआ, निरीक्षित; (आवम)।

दिड्ढ } देखो **दढ**; (नाट—मालती १७; से १, १४;
दिढ } स्वप्न २०५; प्रासू ६२)।

दिण पुंन [दिन] दिवस; (सुपा ५६; दं २७; जी ३५; प्रासू ६५)। °**इंद** पुं [°**इन्द्र**] सूर्य, रवि; (सण)। °**कय** पुं [°**कृत्**] सूर्य, रवि; (राज)। °**कर** पुं [°**कर**] सूर्य, सूरज; (सुपा ३१२)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] सूर्य, रवि; (महा)। °**बंधु** पुं [°**बन्धु**] सूर्य, रवि; (पुप्फ ३७)। °**मणि** पुं [°**मणि**] सूर्य, दिवाकर; (पाअ; से १, १८; सुपा २३)। °**मुह** न [°**मुख**] प्रभात, प्रातः-काल; (पाअ)। °**यर** देखो °**कर**; (गउड; भवि)। °**रयणिकरी** स्त्री [°**रजनिकरी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३८)। °**वइ** पुं [°**पति**] सूर्य, रवि; (पि ३७६)।

दिणिंद पुं [दिनेन्द्र] सूर्य, रवि; (सुपा २४०)।

दिणेस पुं [दिनेश] १ सूर्य, सूरज; (कप्पू)। २ बारह की संख्या; (विवे १४४)।

दिण्ण वि [दत्त] १ दिया हुआ, वितीर्ण; (हे १, ४६; प्राप्र; स्वप्न; प्रासू १६४)। २ निवेशित, स्थापित; (पण्ह १, १)। ३ पुं. भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम गण-

धर ; (सम १५२)। ४ भगवान् श्रेयांसनाथ का पूर्व-जन्मीय नाम ; (सम १५१)। ५ भगवान् चन्द्रप्रभ का प्रथम गणधर ; (सम १५२)। ६ भगवान् नमिनाथ को प्रथम भिक्षा देने वाला एक गृहस्थ ; (सम १५१)। देखो **दिन्न**।

दिण्ण देखो **दइन्न** ; (राज)।

दिण्णेल्लय वि [**दत्त**] दिया हुआ; (ओघ २२ भा टी)।

दित्त वि [**दीप्त**] १ ज्वलित, प्रकाशित ; (सम १५३ ; अजि १४; लहुअ ११)। २ कान्ति-युक्त, भास्वर, तेजस्वी; (पउम ६४, ३५ ; सम १२२)। ३ तीक्ष्णीभूत, निशित; (सम १५३ ; लहुअ ११)। ४ उज्ज्वल, चमकीला ; (णंदि)। ५ पुष्ट, परिवृद्ध ; (उत्त ३४)। ६ प्रसिद्ध ; (भग २६, ३)। ७ मारने वाला ; (ओघ ३०२)। °**चित्त** वि [°**चित्त**] हर्ष के अतिरेक से जिसको चित्त-भ्रम हो गया हो वह; (बृह ३)।

दित्त वि [**दृप्त**] १ गर्वित, गर्व-युक्त ; (औप)। २ मारने वाला; ३ हानि-कारक ; (ओघ ३०२)। °**इत्त** वि [°**चित्त**] १ जिसके मन में गर्व हो वह ; २ हर्ष के अतिरेक से जो पागल हो गया हो वह ; (ठा ५, ३—पत्र ३२७)।

दित्ति स्त्री [**दीप्ति**] कान्ति, तेज, प्रकाश ; (पाअ ; सुर ३, ३२ ; १०, ४६ ; सुपा ३७८)। °**म** वि [°**मत्**] कान्ति-युक्त ; (गच्छ १)।

दिदिक्खा } स्त्री [**दिदृक्षा**] देखने की इच्छा ; (राज;
दिदिच्छा } सुपा २६४)।

दिद्ध वि [**दिग्ध**] लिप्त ; (निचू १)।

दिन्न देखो **दिण्ण** ; (महा ; प्रासू ५७)। ७ श्री गौतम-स्वामी के पास पाँच सौ तापसों के साथ जैन दीक्षा लेने वाला एक तापस ; (उप १४२ टी; कुप्र २६३)। ८ एक जैन आचार्य; (कप्प)।

दिन्नय पुं [**दत्तक**] गोद लिया हुआ पुत्र ; (ठा १०—पत्र ५१६)।

दिप्प अक [**दीप्**] १ चमकना। २ तेज होना। ३ जलना। दिप्पइ ; (हे १, २२३)। वकृ—**दिप्पंत, दिप्पमाण** ; (से ४, ८ ; सुर १४, ५६ ; महा ; पराह १, ४; सुपा २४०), "दिप्पमाणे तवतेएणं" (स ६७५)।

दिप्प अक [**तृप्**] तृप्त होना, सन्तुष्ट होना। दिप्पइ; (षड्)।

दिप्प वि [**दीप्र**] चमकने वाला, तेजस्वी ; (से १, ६१)।

दिप्प (अप) पुं [**दीप**] १ दीपक। २ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

दिप्पंत पुं [**दे**] अनर्थ ; (दे ५, ३६)।

दिप्पंत } देखो **दिप्प**=दीप्।
दिप्पमाण }

दिप्पिर देखा **दिप्प**=दीप्र ; (कुमा)।

दिरय पुं [**द्विरद**] हस्ती, हाथी ; (हे १, ६४)।

दिलंदिलिअ [**दे**] देखो **दिल्लिंदिलिअ** ; (गा ७४१)।

दिलिदिल अक [**दिलदिलाय्**] 'दिल् दल्' आवाज करना। वकृ—**दिलिदिलंत** ; (पउम १०२, २१)।

दिलिवेढय पुं [**दिलिवेष्टक**] एक प्रकार का ग्राह, जल-जन्तु की एक जाति ; (पराह १, १)।

दिल्लिंदिलिअ पुं [**दे**] बालक, शिशु, लड़का ; (दे ५, ४०)। स्त्री—°**आ** ; बाला, लड़की ; (गा ७४१)।

दिव उभ [**दिव्**] १ क्रीड़ा करना। २ जीतने की इच्छा करना। ३ लेन-देन करना। ४ चाहना, वांछना। ५ आज्ञा करना। दिवइ, दिवए ; (षड्)।

दिव न [**दिव्**] स्वर्ग, देव-लोक ; (कुप्र ४३६; भवि)।

दिवड्ढ वि [**द्व्यपार्ध**] डेढ़, एक और आधा ; (विसे ६६३ ; स ५५ , सुर १०, २०८ ; सुपा ५८० ; भवि ; सम ६६ ; सुज्ज १ ; १० ; ठा ६)।

दिवस } देखो **दिअस** ; (हे १, २६३ ; उव ; प्रासू १२ ;
दिवह } सुपा ३०७ ; वेणी ४७)। °**पुहुत्त** न [°**पृथक्त्व**] दो से लेकर नव दिन तक का समय ; (भग)।

दिवा देखो **दिआ** ; (गाया १, ४ ; प्रासू ६०)। °**इत्ति** पुं [°**कीर्त्ति**] चाण्डाल, भंगी ; (दे ५, ४१)। °**कर** पुं [°**कर**] सूर्य, सूरज; (उत्त ११)। °**कित्ति** पुं [°**कीर्ति**]नापित, हजाम; (कुप्र२८८)। °**गर** देखो °**कर**; (णाया १, १; कुप्र ४१५)। °**मुह** न [°**मुख**] प्रभात; (गउड)। °**यर** देखो °**कर**; (सुपा ३६; ३१४)। °**यरत्थ** न [°**करास्त्र**] प्रकाश-कारक अस्त्र-विशेष ; (पउम ६१, ४४)।

दिवि देखो **देव**। "दिविणावि कापुरिसेणव्व एसा दासी अहं च विप्पवरो एगया द्विीए दिस्सामो" (रंभा)।

दिविअ पुं [**द्विविद**] वानर-विशेष ; (से ४, ८; १३,८२)।

दिविज वि [**दिविज**] १ स्वर्ग में उत्पन्न ; २ पुं देव, देवता ; (अजि ७)।

दिविट्ठ देखो **दुविट्ठ** ; (राज)।

दिवे (अप) देखो **दिवा** ; (हे ४, ४१६ ; कुमा)।

लिएणं रोगातंकेणं" (ठा ३, १)। २ दीर्घकाल-संबन्धी ; (आवम)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] १ लंबी सफर; २ मरण, मौत; (स ७२६)। °डक्क वि [°दष्ट] जिसको साँप ने काटा हो वह; (निचू १)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] मरण, मौत ; (राज)। °दंत पुं [°दन्त] १ भारतवर्ष के एक भावी चक्रवर्ती राजा ; (सम १५४)। २ एक जैन मुनि ; (अंत)। °दंसि वि [°दर्शिन्] दूरदर्शी, दूरन्देशी ; (सुर ३,३; सं ३२)। °दसा स्त्री.ब. [°दशा] जैन ग्रन्थ-विशेष ; (ठा १०)। °दिट्ठि वि [°दृष्टि] १ दूरदर्शी, दूरन्देशी। २ स्त्री. दीर्घ-दर्शिता; (धर्म १)। °पट्ठ पुं [°पृष्ठ] १ सर्प, साँप, (उप पृ २२)। २ यवराज का एक मन्त्री; (बृह १)। °पास पु [°पार्श्व] ऐरवत क्षेत्र के सोलहवें भावी जिन-देव, (पव ७)। °पेहि वि [°प्रेक्षिन्] दूर-दर्शी ; (पउम २६, २२ ; ३१, १०६)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भरत-क्षेत्र में होने वाला तीसरा वासुदेव ; (सम १५४)। २ भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व-जन्मीय नाम ; (सम १५१)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि ; (कप्प)। °मद्ध वि [°ध्व] लम्बा रास्ता वाला ; (गाया १, १८; ठा २, १; ५, २—पत्र २४०)। °मद्ध वि [°द्ध] दीर्घ काल से गम्य, (ठा ५,२—पत्र २४०)। °माउ न [°युष्] लम्बा आयुष्य; (ठा १०)। °रत्त, °राय पुंन [°रात्र] १ लम्बी रात; २ बहु रात्रि वाला चिर-काल ; (संक्षि १७ ; राज)। °राय पु [°राज] एक राजा; (महा)। °लोग पुं [°लोक] वनस्पति का जीव ; (आचा)। °लोगसत्थ न [°लोकशस्त्र] अग्नि, वह्नि ; (आचा)। °वेयड्ढ पुं [°वैताढ्य] स्वनाम-ख्यात पर्वत; (ठा २, ३—पत्र ६६)। °सुत्त न [°सूत्र] १ बड़ा सूता ; (निचू ५)। २ आलस्य, "मा कुणसु दीहसुत्तं परकज्जं सीयलं परिगणंतो" (पउम ३०,६)। °सेण पुं [°सेन] १ अनुत्तर-देवलोक-गामी मुनि-विशेष; (अनु २)। २ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न ऐरवत क्षेत्र के आठवें जिन-देव ; (पव ७)। °उ, °उय वि [°युष्, °युष्क] लम्बी उम्र वाला, बड़ी आयु वाला, चिरं-जीवी ; (हे १, २०; ठा ३, १ ; पउम १४, ३०)। °सण न [°सन] शय्या ; (जं १)।

दीह देखो **दिअह** ; (कुमा)।

दीहंध वि [**दिवसान्ध**] दिन को देखने में असमर्थ; " रत्तिंधा दीहंधा " (प्रासू १७६)।

दीहजीह पुं [**दे**] शंख ; (दे ५, ४१)।

दीहर देखो **दीह**=दीर्घ ; (हे २, १७१ ; सुर २, २१८; प्रासू ११३)। °च्छ वि [°क्ष] लम्बी आँख वाला, बड़े नेत्र वाला ; (सुपा १४७)।

दीहरिय वि [**दीर्घित**] लम्बा किया हुआ ; (गउड)।

दीहिया स्त्री [**दीर्घिका**] वापी, जलाशय-विशेष ; (सुर १, ६३ ; कप्पू)।

दीहीकर सक [**दीर्घी+कृ**] लम्बा करना। दीहीकरेंति; (भग)।

दु देखो **दव**=द्रु। कर्म—दुयए ; (विसे २८)।

दु वि.ब. [**द्वि**] दो, संख्या-विशेष वाला; (हे १, ६४; कम्म १ ; उवा)।

दु पुं [**द्रु**] १ वृक्ष, पेड़, गाछ ; (उर ५)। २ सत्ता, सामान्य ; (विसे २८)।

दु अ [**द्विस्**] दो वार, दो दफा; (सुर १६,५५)।

दु अ [**दुर्**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अभाव ; २ दुष्टता, खराबी; ३ मुश्किली, कठिनाई; ४ निन्दा; (हे २, २१७ ; प्रासू १५८ ; सुपा १४३ ; गाया १, १ ; उवा)।

दुअ न [**द्विक**] युग्म, युगल ; (स ६२१)।

दुअ वि [**द्रुत**] १ पीड़ित, हैरान किया हुआ ; (उप ३२० टी)। २ वेग-युक्त; ३ क्रिवि. शीघ्र, जल्दी; (सुर १०,१०१; अणु)। °विलंबिअ न [°विलम्बित] १ छन्द-विशेष। २ अभिनय-विशेष ; (राय)।

दुअक्खर पुं [**दे**] षण्ढ, नपुंसक ; (दे ५, ४७)।

दुअक्खर वि [**द्व्यक्षर**] १ अज्ञान, मूर्ख, अल्पज्ञ; (उप १२६ टी)। २ पुंस्त्री. दास, नौकर ; (पिंड)। स्त्री—°रिया; (आवम)।

दुअणुअ पुं [**द्वयणुक**] दो परमाणुओं का स्कन्ध ; (विसे २१६२)।

दुअल्ल न [**दुकूल**] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ महिन वस्त्र, सूक्ष्म वस्त्र ; (हे १, ११६; प्राप्र)। देखो **दुकूल**।

दुआइ पुं [**द्विजाति**] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण ; (हे १, ६४ ; २, ७६)।

दुआइक्ख वि [**दुराख्येय**] दुःख से कहने योग्य, (ठा ५, १—पत्र २६६) ।

दुआर न [**द्वार**] दरवाजा, प्रवेश-मार्ग; (हे १,७६)।

दुआराह वि [**दुराराध**] जिसका आराधन कठिनाई से हो सके वह; (पराह १,४)।

दुआरिआ स्त्री [**द्वारिका**] १ छोटा द्वार ; २ गुप्त द्वार, अपद्वार ; (गाया १, २)।

दुआवत्त न [द्व्यावर्त] दृष्टिवाद का एक सूत्र ; (सम १४७)।

दुइअ, दुइज्ज, दुईअ } वि [द्वितीय] दूसरा; (हे १,१०१; २०६; कुमा; (कप्पू ; रयण ४)।

दुउंछ, दुउन्छ } सक [जुगुप्स्] निन्दा करना, घृणा करना। दुउंछइ, दुउच्छइ ; (हे ४, ४)।

दुउण वि [द्विगुण] दूना, दुगुना ; (दे ५, ५५ ; हे १, ६४)। °अर वि [°तर] दूने से भी विशेष, अत्यन्त; (से ११, ४७)।

दुउणिअ वि [द्विगुणित] ऊपर देखो; (कुमा)।

दुऊल देखो दुअल्ल; (प्रा.प्र; गा ५६६ ; षड्)।

दुंदुह, दुंदुभ } पुं [दुन्दुभ] १ सर्प की एक जाति ;(दे ७, ५१)। २ ज्योतिष्क-विशेष, एक महाग्रह ;(ठा २, ३—पत्र ७८)।

दुंदुभि देखो दुंदुहि ; (भग ६, ३३)।

दुंदुमिअ न [दे] गले की आवाज; (दे ५, ४५ ; षड्)।

दुंदुमिणी स्त्री [दे] रूप वाली स्त्री ; (दे ५, ४५)।

दुंदुहि पुंस्त्री [दुन्दुभि] वाद्य-विशेष; (कप्प; सुर ३,६८, गउड ; कुप्र ११८)।

दुंवत्ती स्त्री [दे] सरित्, नदी; (दे ५, ४८)।

दुकड देखो दुक्कड , (द्र ४७)।

दुकप्प देखो दुक्कप्प ; (पंचू)।

दुकम्म न [दुष्कर्मन्] पाप, निन्दित काज ; (श्रा २७ ; भवि)।

दुकिय देखो दुक्कय ; (भवि)।

दुकूल पुं [दुकूल] १ वृक्ष-विशेष ; २ वि. दुकूल वृक्ष की छाल से बना हुआ वस्त्र आदि ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

दुक्कंदिर वि [दुष्कन्दिन्] अत्यन्त आक्रन्द करने वाला; (भवि)।

दुक्कड न [दुष्कृत] पाप-कर्म, निन्द्य आचरण ; (सम १२५ ; हे १, २०६; पडि)।

दुक्कडि, दुक्कडिय } वि [दुष्कृतिन्, °क] दुष्कृत करने वाला, पापी; (सूत्र १, ५, १ ; पि २१९)।

दुक्कप्प पुं [दुष्कल्प] शिथिल साधु का आचरण , पतित साधु का आचार ; (पंचभा)।

दुक्कम्म न [दुष्कर्मन्] दुष्ट कर्म, असदाचरण ; (सुपा २८; १२० ; ५००)।

दुक्कय न [दुष्कृत] पाप-कर्म ; (पण्ह° १, १ ; पि ४६)।

दुक्कर वि [दुष्कर] जो दुःख से किया जा सके, मुश्किल, कष्ट-साध्य ; (हे ४, ४१४ ; पंचा १३)। °आरअ वि [°कारक] मुश्किल कार्य को करने वाला ; (गा १७६; हे २, १०४)। °करण न [°करण] कठिन कार्य को करना ; (द्र ५७)। °कारि वि [°कारिन्] देखो °आरअ ; (उप पृ १६०)।

दुक्कर न [दे] माघ मास में रात्रि के चारों प्रहर में किया जाता स्नान; (दे ५, ४२)।

दुक्कह वि [दे] अरुचि वाला, अरोचकी ; (सुर १, ३६ ; जय २७)।

दुक्काल पुं [दुष्काल] अकाल, दुर्भिक्ष ; (सार्ध ३०)।

दुक्किय देखो दुक्कय ; (भवि)।

दुक्कुक्कणिआ स्त्री [दे] पीकदान, पीकदानी ; (दे ५, ४८)।

दुक्कुल न [दुष्कुल] निन्दित कुल ; (धर्म १)।

दुक्कुह वि [दे] १ असहन, असहिष्णु ; २ रुचि-रहित ; (दे ५, ४४)।

दुक्ख पुंन [दुःख] १ अ-सुख, कष्ट, पीड़ा, क्लेश, मन का क्षोभ ; (हे १, ३३), "दुक्खा सारीरा माणसा व संसारे" (संथा१०१; आचा ; भग; स्वप्न ५१ ; ५८; प्रासू ६६ ; १५२; १८२) । २ क्रिवि. कष्ट से, मुश्किली से, कठिनाई से; (वसु) । ३ वि.दुःख वाला, दुःखित, दुःख-युक्त; (वै ३३) । स्त्री—°क्खा; (भग) । °कर वि [°कर] दुःख-जनक ; (सुपा १६५) । °त्त वि [°र्त] दुःख से पीड़ित ; (सुपा १६१ ; स ६४२; प्रासू १४४) । °त्तगवेसण न [°र्तगवेषण] दुःख से पीड़ित की सेवा, आर्त-शुश्रूषा ; (पंचा १६)। °मज्जिय वि [अर्जितदुःख] जिसने दुःख उपार्जन किया हो वह; (उत्त ६)। °राह वि [°राध्य] दुःख से आराधन-योग्य; (वज्जा ११२)। °वह वि [°वह] दुःख-प्रद ; (पउम १५, १००)। °सिया स्त्री [°सिका] वेदना, पीड़ा ; (ठा ३, ४)। देखो दुह=दुःख।

दुक्ख न [दे] जघन, स्त्री के कमर के पीछे का भाग ; (दे ५, ४२)।

दुक्ख अक [दुःखाय्] १ दुखना, दर्द करना। २ सक. दुःखी करना। "सिरं में दुक्खेइ" (स ३०४)। दुक्खामि ; (से ११, १२७)। दुक्खंति ; (सूत्र २, २, ५५)।

दुक्खड देखो **दुक्कर** ; (चारु २३)।

दुक्खण न [दुःखन] दुखना, दर्द होना ; (उप ७५१; सूत्र २, २, ५५)।

दुक्खम वि [दुःक्षम] १ असमर्थ ; २ अशक्य ; (उत्त २०, ३१)।

दुक्खर देखो **दुक्कर** ; (स्वप्न ६६)।

दुक्खरिय पुं [दुष्करिक] दास, नौकर ; (निचू १६)।

दुक्खरिया स्त्री [दुष्करिका] १ दासी, नौकरानी ; (निचू १६)। २ वेश्या, वरांगना ; (निचू १)।

दुक्खल्लिय (अप) वि [दुःखित] दुःख-युक्त; (भवि)।

दुक्खविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ ; (उप ६३४ ; भवि)।

दुक्खाव सक [दुःखय्] दुःख उपजाना, दुःखी करना। दुक्खावेइ ; (पि ५५६)। वकृ—**दुक्खावेंत** ; (पउम ५८, १८)। कवकृ—**दुक्खाविज्जंत** ; (आवम)।

दुक्खावणया स्त्री [दुःखना] दुःखी करना, दर्द उपजाना ; (भग ३, ३)।

दुक्खि वि [दुःखिन्] दुःखी, दुःख-युक्त ; (आचा)।

दुक्खिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त, दुखिया ; (हे २, ७२ ; प्राप्र ; प्रासू ६३ ; महा ; सुर ३, १६१)।

दुक्खुत्तर वि [दुःखोत्तार] जो दुःख से पार किया जाय, जिसको पार करने में कठिनाई हो ; (पण्ह १, १)।

दुक्खुत्तो अ [द्विस्] दो वार, दो दफा ; (ठा ५, २— पत्र ३०८)।

दुक्खुर देखो **दुखुर** ; (पि ४३६)।

दुक्खुल देखो **दुक्कुल**; (अवि २१)।

दुक्खोह पुं [दुःखौघ] दुःख-राशि , (पउम १०३,१५५; सुपा १६१)।

दुक्खोह वि [दुःक्षोभ] कष्ट-क्षोभ्य, सुस्थिर ; (सुपा १६१; ६२६)।

दुखंड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़े वाला ; (उप ६८६ टी; भवि)।

दुखुत्तो देखो **दुक्खुत्तो** ; (कस)।

दुखुर पुं [द्विखुर] दो खुरे वाला प्राणी, गौ, भैंस आदि ; (पराण १)।

दुग न [द्विक] दो, युग्म, युगल ; (नव १० ; सुर ३, १७ ; जी ३३)।

दुगंछ देखो **दुगुंछ**। वकृ—**दुगंछमाण** ; (उत्त ४, १३)। कृ—**दुगंछणिज्ज** ; (उत्त १३, १६ ; पि ७४)।

दुगंछणा स्त्री [जुगुप्सना] घृणा, निन्दा ; (पउम ६५, ६५)।

दुगंछा स्त्री [जुगुप्सा] घृणा, निन्दा ; (पात्र ; कुप्र ४०७)। देखो **दुगुंछा**।

दुगंध देखो **दुग्गंध** ; (पउम ४१, १७)।

दुगच्छ } सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना।
दुगुंछ } दुगच्छइ, दुगुंछइ ; (पड् ; हे ४, ४)। वकृ—**दुगुंछंत, दुगुंछमाण** ; (कुमा ; पि ७४ ; २१५)। संकृ—**दुगुंछिउं**, (धर्म २)। कृ—**दुगुंछणीय** ; (पउम ४६, ६२)।

दुगुंछग वि [जुगुप्सक] घृणा करने वाला; (आव ३)।

दुगुंछण न [जुगुप्सन] घृणा, निन्दा ; (पि ७४)।

दुगुंछणा देखो **दुगंछणा** ; (आचा)।

दुगुंछा देखो **दुगंछा** ; (भग)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] देखो पीछे का अर्थ ; (ठा १०)। °**मोहणीय** न [°**मोहनीय**] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव को अशुभ वस्तु पर घृणा होती है ; (कम्म १)।

दुगुंछिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित; (ओघ३०२)।

दुगुंदुग पुं [दोगुन्दुक] एक समृद्धि-शाली देव ; (सुपा ३२८)।

दुगुच्छ देखो **दुगुंछ**। दुगुच्छइ ; (हे ४, ४ ; पड्)। वकृ—**दुगुच्छंत** ; (पउम १०५, ७५)। कृ—**दुगुच्छणीय** ; (पउम ८०, २०)।

दुगुण देखो **दुउण** ; (ठा २, ४ ; गाया १, १ ; दं ६ ; सुर ३, २१६)।

दुगुण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना। दुगुणेइ ; (कुप्र २८५)।

दुगुणिअ देखो **दुउणिअ** ; (कुमा)।

दुगुल्ल } देखो **दुअल्ल** ; (हे १, ११६ ; कुमा ; सुर २,
दुगूल } ८० ; जं २)।

दुगोत्ता स्त्री [द्विगोत्रा] वल्ली-विशेष ; (पराण १)।

दुग्ग न [दे] १ दुःख, कष्ट, (दे ५, ५३; षड् ; पण्ह १, ३)। २ कटी, कमर ; (दे ५, ५३)। ३ रण, संग्राम, युद्ध, "आढत्तं च ग्गेगिम' दुग्ग" (स ६३६)।

दुग्ग वि [दुर्ग] १ जहां दुःख से प्रवेश किया जा सके वह, दुर्गम स्थान ; (भग ७, ६ ; विपा १, ३)। २ जा दुःख से जाना जा सके ; (सुअ १, ५, १)। ३ पुंन. किला, गढ़, कोट ; (कुमा; सुपा १४८)। °**नायग** पुं [°**नायक**] किले का मालिक; (सुपा ४६०)।

दुग्गइ स्त्री [दुर्गति] १ कुगति, नरक आदि कुत्सित योनि ; (ठा ३, ३; ५, १; उत्त ७, १८, आचा)। २ विपत्ति, दुःख, ३ दुर्दशा, बुरी अवस्था; ४ कंगालियन, दरिद्रता; (पण्ह १, १ ; महा ; ठा ३, ४ ; गच्छ २)।

दुग्गंठि स्त्री [दुर्ग्रन्थि] दुष्ट ग्रन्थि ; (पि ३३३)।

दुग्गंध पु [दुर्गन्ध] १ खराब गन्ध ; २ वि. खराब गन्ध वाला, दुर्गन्धि ; (ठा ८—पत्र ४१८; सुपा ४१ ; महा)।

दुग्गंधि वि [दुर्गन्धिन्] दुर्गन्ध वाला ; (सुपा ४८७)।

दुग्गम, **दुग्गम्म** वि [दुर्गम] १ जहां दुःख से प्रवेश किया जा सके वह ; (पउम ४०, १३ ; ओघ ७५ भा)। "पडिवक्खनरिंददुग्गम्म" (सुर ६, १३५)। २ न. कठिनाई, मुश्किली ; (ठा ५, १)।

दुग्गय वि [दुर्गत] १ दरिद्र, धन-हीन ; (ठा ३, ३ ; गा १८)। २ दु खी, विपत्ति-ग्रस्त ; (पाअ ; ठा ४,१—पत्र २०२)।

दुग्गह वि [दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह ; (उप पृ ३६०)।

दुग्गा स्त्री [दुर्गा] १ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी ; (पाअ; सुपा १४८)। २ देवी-विशेष; (चंड)। ३ पक्षि-विशेष; (श्रा १६)।

दुग्गाई, **दुग्गाएवी**, **दुग्गादेई**, **दुग्गावी** स्त्री [दुर्गादेवी] १ पार्वती, शिव-पत्नी, गौरी ; २ देवी-विशेष ; (षड् , हे १,२७०; कुमा)। °**रमण** पुं [°**रमण**] महादेव, शिव ; (षड्)।

दुग्गिज्झ वि [दुर्ग्राह्य,दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह ; (सुपा २५५)।

दुग्गूढ वि [दुर्गूढ] अत्यन्त गुप्त, अति प्रच्छन्न ; (वव ७)।

दुग्गेज्झ देखो **दुग्गिज्झ** ; (से १, ३)।

दुग्घट्ट वि [दुर्घट्ट] जिसका आच्छादन दुःख से हो सके वह, "पारद्धसीउण्हतण्हवेअणदुग्घट्टघट्टिया' (पण्ह १,३—पत्र ५४)।

दुग्घड वि [दुर्घट] जो दुःख से हो सके वह, कष्ट-साध्य ; (सुपा ६३ ; ३६५)।

दुग्घडिअ वि [दुर्घटित] १ दुःख से संयुक्त। २ खराब रीति से बना हुआ; "दुग्घडिअमंचअस्स व खणे खणे पाअपडणेणं" (गा ६१०)।

दुग्घर न [दुर्गृह] दुष्ट घर ; (भवि)।

दुग्घास पुं [दुर्ग्रास] दुर्भिक्ष, अकाल ; (बृह ३)।

दुघुट्ट, **दुग्घोट्ट** पुं [दे] हस्ती, हाथी, करी ; (दे ५, ४४ ; षड् ; भवि)।

दुघण पुं [द्रुघण] एक प्रकार का मुद्गर, मोंगरी, मुँगरा ; (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

दुचक्क न [द्विचक्र] गाडी, शकट ; (ओघ ३८३ भा)। °**वइ** पुं [°**पति**] गाडी का अधिपति , (ओघ ३८३भा)।

दुचिण्ण देखो **दुच्चिण्ण** ; (पि ३४० ; औप)।

दुच्च न [दौत्य] दूत-कर्म, समाचार पहुँचाने का कार्य ; (पाअ)।

दुच्च देखो **दोच्च**=द्वितीय , द्विस् ; (कप्प)।

दुच्चंडिअ वि [दे] १ दुर्ललित ; २ दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित ; (दे ५, ५५ ; पाअ)।

दुच्चंवाल वि [दे] १ कलह-निरत, झगड़ाखोर ; २ दुश्चरित, दुष्ट आचरण वाला ; ३ परुष-भाषी ; (दे ५,५४)।

दुच्चज्ज, **दुच्चय** वि [दुस्त्यज] दुःख से त्यागने योग्य; (कुमा; उप ७६८ टी)।

दुच्चर, **दुच्चरिअ** वि [दुश्चर] १ जिसमें दुःख से जाया जाय वह; (आचा)। २ दुःख से जो किया जाय वह ; (उप ६४८ टी ; पउम २२, २०)। °**लाढ** पुं [°**लाढ**] ऐसा ग्राम या देश जिसमें दुःख से जाया जा सके ; (आचा)।

दुच्चरिअ न [दुश्चरित] १ खराब आचरण, दुष्ट वर्तन ; (पउम ३८, १२ ; उप पृ १११)। २ वि. दुराचारी , (दे ५, ४५)।

दुच्चार वि [दुश्चार] दुराचारी ; (भवि)।

दुच्चारि वि [दुश्चारिन्] दुराचारी, दुष्ट आचरण वाला; (स५०३)। स्त्री—°**णी** ; (महा)।

दुच्चिंतिय वि [दुश्चिन्तित] १ दुष्ट चिन्तित ; (पउम ११८, ६७)। २ न. खराब चिन्तन ; (पडि)।

दुच्चिगिच्छ वि [दुश्चिकित्स] जिसका प्रतीकार मुश्किली से हो, वह ; (स ७६१)।

दुच्चिण्ण न [दुश्चीर्ण] १ दुष्ट आचरण, दुश्चरित ; २ दुष्ट कर्म—हिंसा आदि; ३ वि. दुष्ट संचित, एकत्रित की हुई दुष्ट वस्तु ; (विपा १, १ ; णाया १,१६) ।

दुच्चेट्ठिय न [दुश्चेष्टित] खराब चेष्टा; शारीरिक दुष्ट आचरण ; (पडि; सुर ६, २३२) ।

दुच्छक्क वि [द्विषट्क] बारह प्रकार का ;
"मूलं दारं पइट्ठाणं, आहारो भायणं निही।
दुच्छक्कस्सावि धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं" (श्रा ६) ।

दुच्छेज्ज वि [दुश्छेद] जिसका छेदन दुःख से हो सके वह; (पउम ३१, ५६) ।

दुछक्क देखो दुच्छक्क ; (धर्म २) ।

दुजडि पुं [द्विजटिन्] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह ; (ठा २, ३) ।

दुजय देखो दुज्जय ; (महा) ।

दुजीह पुं [द्विजिह्व] १ सर्प, साँप ; २ दुर्जन, खल पुरुष ; (सहि ६३ ; कुमा) ।

दुज्जत देखो दुज्जिंत ; (राज) ।

दुज्जण पुं [दुर्जन] खल, दुष्ट मनुष्य; (प्रासू २० ; ४०; कुमा) ।

दुज्जय वि [दुर्जय] जो कष्ट से जीता जा सके ; (उप १०३१ टी ; सुर १२, १३८ ; सुपा २६) ।

दुज्जाय न [दे] व्यसन, कष्ट, दुःख, उपद्रव ; (दे ५, ४४ ; से १२, ६३ ; पाअ) ।

दुज्जाय वि [दुर्जात] दुःख से निकलने योग्य ; (से १२, ६३) ।

दुज्जाय न [दुर्यात] दुष्ट गमन, कुत्सित गति; (आचा) ।

दुज्जिंत पुं [दुर्यन्त] एक प्राचीन जैन मुनि ; (कप्प) ।

दुज्जीव न [दुर्जीव] आजीविका का भय; (विसे ३४५३)।

दुज्जीह देखो दुजीह ; (वज्जा १५०) ।

दुज्जेय वि [दुर्जय] दुःख से जीतने योग्य; (सुपा २४८; महा) ।

दुज्जोहण पुं [दुर्योधन] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र ; (ठा ४, २) ।

दुज्झ वि [दोह्य] दोहने योग्य ; (दे १, ७) ।

दुज्झाण न [दुर्ध्यान] दुष्ट चिन्तन ; (धर्म २) ।

दुज्झाय वि [दुर्ध्यात] जिसके विषय में दुष्ट चिन्तन किया गया हो वह; (धर्म २) ।

दुज्झोसय वि [दुर्जोष] जिसकी सेवा कष्ट से हो सके ऐसा; (आचा) ।

दुज्झोसय वि [दुःक्षप] जिसका नाश कष्ट-साध्य हो वह; (आचा) ।

दुज्झोसिअ वि [दुर्जोषित] दुःख से सेवित ; (आचा) ।

दुज्झोसिअ वि [दुःक्षपित] कष्ट से नाशित; (आचा) ।

दुट्ठ वि [दुष्ट] दोष-युक्त, दूषित; (आघ १६२; पाअ; कुमा) ।
°प्प पुं [°त्मन्] दुष्ट जीव, पापी प्राणी ; (पउम ६, १३६ ; ७५, १२) ।

दुट्ठ वि [दे. द्विष्ट] द्वेष-युक्त; (ओघ ७५७ ; कस); "अरत्तदुट्ठस्स" (कुप्र ३७१) ।

दुट्ठाण न [दुःस्थान] दुष्ट जगह ; (भग १६, २) ।

दुट्ठु अ [दुष्ठु] खराब, अ-सुन्दर ; (उप ३२० टी ; निर १, १ ; सुपा ३१८ ; हे ४, ४०१) ।

दुण्णय देखो दुन्नय ; (विक्र २७ ; आवम) ।

दुण्णाम न [दुर्नामन्] १ अपकीर्ति, अपयश । २ दुष्ट नाम, खराब आख्या । ३ एक प्रकार का गर्व ; (भग १२, ५) ।

दुण्णिअ वि [दून] पीड़ित, दुःखित ; (गा ११) ।

दुण्णिअ देखो दुन्निय ; (राज) ।

दुण्णिअत्थ न [दे] १ जघन पर स्थित वस्त्र ; २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग ; (दे ५, ५३) ।

दुण्णिक्क वि [दे] दुश्चरित, दुराचारी; (दे ५, ४५) ।

दुण्णिक्कम वि [दुर्निष्क्रम] जहां से निकलना कष्ट-साध्य हो वह ; (भग ७, ६) ।

दुण्णिक्खित्त वि [दे] १ दुराचारी; २ कष्ट से जो देखा जा सके; (दे ५, ४५) ।

दुण्णिक्खेव वि [दुर्निक्षेप] दुःख से स्थापन करने योग्य ; (गा १५४) ।

दुण्णिवोह देखो दुन्निबोह; (राज) ।

दुण्णिमिअ वि [दुर्नियोजित] दुःख से जोड़ा हुआ ; (से १२, १६) ।

दुण्णिमित्त न [दुर्निमित्त] खराब शकुन, अपशकुन; (पउम ७०, ५) ।

दुण्णिविट्ठ वि [दुर्निविष्ट] दुराग्रही ; (निचु ११) ।

दुण्णिसीहिया स्त्री [दुर्निषद्या] कष्ट-जनक स्वाध्याय-स्थान; (पण्ह २, ५) ।

दुण्णेय वि [दुर्ज्ञेय] जिसका ज्ञान कष्ट-साध्य हो वह ; (उवर १२८ ; उप ३२८) ।

दुतितिक्ख वि [दुस्तितिक्ष] दुस्सह, जो दुःख से सहन किया जा सके वह ; (ठा ५, १)।

दुत्तर वि [दुस्तर] दुस्तरणीय, दुर्लंघ्य ; (सुपा ४७ ; ११५ ; सार्ध ६१)।

दुत्तडी स्त्री [दुस्तटी] खराब किनारा ; (धम्म१२टी)।

दुत्तव वि [दुस्तप] कष्ट से तपने योग्य, दुःख से करने योग्य (तप) ; (धर्मा १७)।

दुत्तार वि [दुस्तार] दुःख से पार करने योग्य, दुस्तर ; (से ३, २५ ; ६, १०)।

दुत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी ; (दे५, ४१ ; पाअ)।

दुत्तिइक्ख } देखो **दुतितिक्ख** ; (आचा ; राज)।
दुत्तितिक्ख }

दुत्तुंड पुं [दुस्तुण्ड] दुर्मुख, दुर्जन ; (सुपा २७८)।

दुत्तोस वि [दुस्तोष] जिसको संतुष्ट करना कठिन हो वह, (दस ५)।

दुत्थ न [दे] जघन, स्त्री की कमर के नीचे का भाग ; (दे ५, ४२)।

दुत्थ वि [दुःस्थ] दुर्गत, दुःस्थित ; (ठा ३, ३ ; भवि)।

दुत्थ न [दौःस्थ्य] दुर्गति, दुःस्थता ; (सुपा २४४)। "नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा" (कुप्र ५४)।

दुत्थिअ वि [दुःस्थित] १ दुर्गत, विपत्ति-ग्रस्त ; (रयण७५ ; भवि ; सण)। २ निर्धन, गरीब, (कुप्र १४६)।

दुत्थुहड्ड पुंस्त्री [दे] झगड़ाखोर, कलह-शील ; (दे ५, ४७)। स्त्री—°ड्डा ; (दे ५, ४७)।

दुत्थोअ पुं [दे] दुर्भग, अभागा ; (दे ५, ४३)।

दुद्दंत वि [दुर्दान्त] उद्धत, दमन करने का अशक्य, दुर्दम ; "विसयपसत्ता दुद्दंतइंदिया देहिणो वहवे" (सुर ८, १३८ ; गाया १, ५ ; सुपा ३८० ; महा)।

दुद्दंस वि [दुर्दर्श] दुरालोक, जो कठिनाई से देखा जा सके ; (उत्तर १४१)।

दुद्दंसण वि [दुर्दर्शन] जिसका दर्शन दुर्लभ हो वह ; (गा ३०)।

दुद्दम वि [दुर्दम] १ दुर्जय, दुर्निवार ; (सुपा २४)। "दुद्दमकद्दम" (श्रा १२)। २ पुं. राजा अश्वग्रीव का एक दूत ; (आक)।

दुद्दम पुं [दे] देवर, पति का छोटा भाई ; (दे ५, ४४)।

दुद्दिट्ठ वि [दुर्दृष्ट] १ बुरी तरह से देखा हुआ। २ वि. दुष्ट दर्शन वाला ; (पण्ह १, २—पत्र २६)।

दुद्दिण न [दुर्दिन] बादलों से व्याप्त दिवस ; (ओघ३६०)।

दुद्देय वि [दुर्देय] दुःख से देने योग्य ; (उप ६२४)

दुद्दोलना स्त्री [दे] गो, गैया; (षड्)।

दुद्दोली स्त्री [दे] वृक्ष-पङ्क्ति ; (दे५, ४३ ; पाअ)।

दुद्ध न [दुग्ध] दूध, क्षीर ; (विपा १, ७)। °**जाइ** स्त्री [°जाति] मदिरा-विशेष, जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है ; (जीव ३)। °**समुद्द** पुं. [°**समुद्र**] क्षीर समुद्र, जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ठ है ; (गा ३८८)।

दुद्धंस वि [दुर्ध्वंस] जिसका नाश मुश्किली से हो ; (सुर १, १२)।

दुद्धगंधिअमुह पुं [दे] बाल, शिशु, छोटा लड़का; (दे५,४०)।

दुद्धगंधिअमुही स्त्री [दे] छोटी लड़की; (पाअ)।

दुद्धट्टी } स्त्री [दे] १ प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-
दुद्धट्ठी } दुग्ध ; (पभा ३२)। २ खट्टी छाछ से मिश्रित दूध ; (पव ४—गा २२८)।

दुद्धर वि [दुर्धर] १ दुर्वह, जिसका निर्वाह मुश्किली से हो सके वह ; (पण्ण १—पत्र ४ ; सुर१२, ५१)। २ गहन, विषम ; (ठा ६ ; भवि)। ३ दुर्जय ; (कुमा)। ४ पुं. रावण का एक सुभट ; (पउम ५६, ३०)।

दुद्धरिस वि [दुर्धर्ष] १ जिसका सामना कठिनता से हो सके, जीतने को अशक्य ; (पण्ह २, ५ ; कप्प)।

दुद्धवलेही स्त्री [दे] चावल का आटा डाल कर पकाया जाता दूध ; (पव ४—गाथा २२८)।

दुद्धसाडी स्त्री [दे] द्राक्षा मिला कर पकाया जाता दूध ; (पव ४—गाथा २२८)।

दुद्धिअ न [दे] कद्दू, लौकी; गुजराती में 'दूधी'; (पाअ)।

दुद्धिणिआ } स्त्री [दे] १ तैल आदि रखने का भाजन ;
दुद्धिणी } २ तुम्बी; (दे ५, ५४)।

दुद्धोअहि } पुं [दुग्धोदधि] समुद्र-विशेष, जिसका पानी
दुद्धोदहि } दूध की तरह स्वादिष्ठ है, क्षीर-समुद्र ; (गा ४७५; उप २११ टी)।

दुद्धोलणी स्त्री [दे] गो-विशेष, जिसको एक वार दोहने पर फिर भी दोहन किया जा सके ऐसी गाय; (दे ५, ४६)।

दुधा देखो **दुहा** ; (अभि १६१)।

दुनिमित्त देखो **दुण्णिमित्त** ; (श्रा २७)।

दुन्नय पुं [दुर्नय] १ दुष्ट नीति, कुनीति। २ अनेक धर्म वाली वस्तु में किसी एक ही धर्म को मान कर अन्य धर्म का प्रतिवाद करने वाला पक्ष (सम्म१५)। ३ वि. दुष्ट नीति;

दुप्पडिलेह वि [दुष्प्रतिलेख] जो ठीक २ न देखा जा सके वह; (पव ८४)।

दुप्पडिलेहण न [दुष्प्रतिलेखन] ठीक २ नहीं देखना ; (श्राव ४)।

वाला, अन्याय-कारी ; (उप ७६८ टी)। °कारि वि [°कारिन्] अन्याय करने वाला ; (सुपा ३४६)।

दुन्निग्गह वि [दुर्निग्रह] जिसका निग्रह दुःख से हो सके वह, अनिवार्य ; (उप पृ १५३)।

दुन्निबोह वि [दुर्निबोध] १ दुःख से जानने योग्य ; २ दुर्लभ ; (सूअ १, १५, २५)।

दुन्निमित्त देखो दुण्णिमित्त; (श्रा २७)।

दुन्निय न [दुर्नीत] दुष्ट कर्म, दुष्कृत; "बंधंति वेदंति य दुन्नियाणि" (सूग १, ७, ४)।

दुन्नियत्थ वि [दे] विट का भेष वाला, निन्दनीय वेष को धारण करने वाला, केवल जघन पर ही वस्त्र-पहिना हुआ ; "लोए वि कुसंसग्गोपियं जणं दुन्नियत्थमइवसणं निंदइ" (उव)।

दुन्निरिक्ख वि [दुर्निरीक्ष] जो कठिनाई से देखा जा सके वह; (कप्प ; भवि)।

दुन्निवार वि [दुर्निवार] रोकने के लिए अशक्य, जिसका निवारण मुश्किली से हो सके वह ; (सुपा १२३ ; महा) ।

दुन्निवारणीअ वि [दुर्निवारणीय, दुर्निवार] ऊपर देखो; (स ३४३ ; ७४१)।

दुन्निसण्ण वि [दुर्निषण्ण] खराब रीति से बैठा हुआ ; (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुप देखो दिअ = द्विप ; (राज)

दुपएस वि [द्विप्रदेश] १ दो अवयव वाला ; २ पुं. द्व्यणुक , (उत्त १)।

दुपएसिय वि [द्विप्रदेशिक] दो प्रदेश वाला ; (भग ५, ७)।

दुपक्ख पु [दुष्पक्ष] दुष्ट पक्ष , (सूअ १, ३, ३) ।

दुपक्ख न [द्विपक्ष] १ दो पक्ष ; (सूअ १, २, ३)। २ वि. दो पक्ष वाला ; (सूअ १, १२, ५)।

दुपडिग्गह न [द्विप्रतिग्रह] दृष्टिवाद का एक सूत्र ; (सम १५७)।

दुपडोआर वि [द्विपदावतार] दो स्थानों में जिसका समावेश हो सके वह , (ठा २, १)।

दुपडोआर वि [द्विप्रत्यवतार] ऊपर देखो; (ठा २, १)।

दुपमज्जिय देखो दुप्पमज्जिय ; (सुपा ६२०)।

दुपय वि [द्विपद] १ दो पैर वाला; २ पुं. मनुष्य; (गाया १, ८; सुपा ४०६)। ३ न. गाड़ी, शकट; (नंदि २०५ भा)।

दुपय पुं [द्रुपद] कांपिल्यपुर का एक राजा; (णाया १,१६)।

दुपरिच्चय वि [दुष्परित्यज] दुस्त्यज, दुःख से छोड़ने योग्य ; (उप ७६८ टी ; रयण ३४)।

दुपरिच्चयणीअ वि [दुष्परित्यजनीय, दुष्परित्यज] ऊपर देखो ; (काल)।

दुपस्स देखो दुप्पस्स ; (ठा ५, १—पत्र २६६)।

दुपुत्त पुं [दुष्पुत्र] कुपुत्र, कपूत ; (पउम २६, २३)।

दुपेच्छ वि [दुष्प्रेक्ष] दुर्दर्श, अदर्शनीय ; (भवि)।

दुप्पइ पुं [दुष्पति] दुष्ट स्वामी ; (भवि)।

दुप्पउत्त वि [दुष्प्रयुक्त] १ दुरुपयोग करने वाला; (ठा २, १—पत्र ३६)। २ जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह ; (भग ३, १)।

दुप्पउलिय } वि [दुष्प्रज्वलित] ठीक २ नहीं पका हुआ,
दुप्पउल्ल } अधपका ; (उवा ; पंचा १)।

दुप्पओग पुं [दुष्प्रयोग] दुरुपयोग ; (दस ४)।

दुप्पओगि वि [दुष्प्रयोगिन्] दुरुपयोग करने वाला ; (पराह १, १—पत्र ७)।

दुप्पक्क वि [दुष्पक्व] देखो दुप्पउल्ल; (सुपा ४७२)।

दुप्पक्खाल वि [दुष्प्रक्षाल] जिसका प्रक्षालन कष्ट-साध्य हो वह ; (सुपा ६०८)।

दुप्पच्चुप्पेक्खिय वि [दुष्प्रत्युत्प्रेक्षित] ठीक २ नहीं देखा हुआ ; (पव ६)।

दुप्पजीवि वि [दुष्प्रजीविन्] दुःख से जीने वाला; (दसचू१)।

दुप्पडिक्कंत वि [दुष्प्रतिक्रान्त] जिसका प्रायश्चित ठीक २ न किया गया हो वह ; (विपा १, १)।

दुप्पडिगर वि [दुष्प्रतिकर] जिसका प्रतीकार दुःख से किया जा सके ; (बृह ३)।

दुप्पडिपूर वि [दुष्प्रतिपूर] पूरने के लिए अशक्य ;(तंदु)।

दुप्पडियाणंद वि [दुष्प्रत्यानन्द] १ जो किसी तरह संतुष्ट न किया जा सके; २ अति कष्ट से तोषणीय ; (विपा १, १—पत्र ११ ; ठा ४, ३)।

दुप्पडियार वि [दुष्प्रतिकार] जिसका प्रतीकार दुःख से हो सके वह, (ठा ३,१—पत्र ११७; ११६; स १८४; उव)।

and distinct points, then

दुप्पडिलेहिय वि [दुष्प्रतिलेखित] ठीक से नहीं देखा हुआ ; (सुपा ६१७) ।

दुप्पडिवूह वि [दुष्प्रतिवृंह] १ बढाने को अशक्य ; २ पालने को अशक्य ; (आचा) ।

दुप्पडिवूहण वि [दुष्प्रतिवृंहण] ऊपर देखो; (आचा) ।

दुप्पणिहाण न [दुष्प्रणिधान] दुष्प्रयोग, अशुभ प्रयोग, दुरुपयोग; (ठा ३, १; सुपा ५४०) ।

दुप्पणिहिय वि [दुष्प्रणिहित] दुष्प्रयुक्त, जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह ; (सुपा ५५८) ।

दुप्पणीहाण देखो **दुप्पणिहाण**; "कयसामइओवि दुप्पणीहाणं" (सुपा ५५३) ।

दुप्पणोल्लिय वि [दुष्प्रणोद्य] दुस्त्यज; (सुअ १,३,१)।

दुप्पण्णवणिज्ज वि [दुष्प्रज्ञापनीय] कष्ट से प्रवोधनीय; (आचा २, ३, १) ।

दुप्पतर वि [दुष्प्रतर] दुस्तर ; (सूअ १, ५, १) ।

दुप्पधंस वि [दुष्प्रधर्ष] दुर्धर्ष, दुर्जय; (उत्त ६; पि ३०५)।

दुप्पमज्जण न [दुष्प्रमार्जन] ठीक २ सफा नहीं करना ; (धर्म ३) ।

दुप्पमज्जिय वि [दुष्प्रमार्जित] अच्छी तरह से सफा नहीं किया हुआ ; (सुपा ६१७) ।

दुप्पय देखो **दुपय**=द्विपद ; (सम ६०) ।

दुप्पयार वि [दुष्प्रचार] जिसका प्रचार दुष्ट माना जाता है वह, अन्याय-युक्त ; (कप्प) ।

दुप्परक्कंत वि [दुष्पराक्रान्त] बुरी तरह से आक्रान्त ; (आचा) ।

दुप्परिअल्ल वि [दे] १ अशक्य ; (दे ५, ५५ ; पाअ ; से ४, २६ ; ६, १८ ; गा १२२) । २ द्विगुण, दुगुना ; ३ अनभ्यस्त, अभ्यास-रहित ; (दे ५, ५५) ।

दुप्परिइअ वि [दुष्परिचित]अपरिचित ; (से१३, १३)।

दुप्परिच्चय देखो **दुपरिच्चय** ; (उत्त ८) ।

दुप्परिणाम वि [दुष्परिणाम] जिसका परिणाम खराब हो, दुर्विपाक ; (भवि) ।

दुप्परिमास वि [दुष्परिमर्ष] कष्ट-साध्य स्पर्श वाला ; (से ६, २४) ।

दुप्परियत्तण देखो **दुप्परिवत्तण** ; (तंदु) ।

दुप्परिल्ल वि [दे] दुराकर्ष; " आलिहिअ दुप्परिल्लंपि णेइ रण्णं धणुं वाहो" (गा १२२) ।

दुप्परिवत्तण वि [दुष्परिवर्त्तन] १ जिसका परिवर्तन दुःख से हो सके वह । २ न. दुःख से पीछे लौटना ; (तंदु) ।

दुप्पवंच पुं [दुष्प्रपञ्च] दुष्ट प्रपच ; (भवि) ।

दुप्पवण पुं [दुष्पवन] दुष्ट वायु ; (भवि) ।

दुप्पवेस वि [दुष्प्रवेश] जहाँ कष्ट से प्रवेश हो सके वह ; (णाया १, १ ; पउम ४३, १२, स २५६ ; सुपा४५५) । °**तर** वि [°तर] प्रवेश करने को अशक्य ; (पण्ह१, ३—पत्र ४५) ।

दुप्पसह पुं [दुष्प्रसह] पंचम आरे के अन्त में होने वाला एक जैन आचार्य, एक भावी जैन सूरि ; (उप ८०६) ।

दुप्पस्स वि [दुर्दर्श] जो मुश्किली से दिखलाया जा सके वह , (ठा ५, १ टी—पत्र २६६) ।

दुप्पहंस वि [दुष्प्रध्वंस्य] जिसका नाश कठिनाई से हो सके वह ; (णाया १, १८—पत्र २३६) ।

दुप्पहंस वि [दुष्प्रधृष्य] अजेय, दुर्जय ; (णाया१, १८) ।

दुप्पिउ पुं [दुष्पितृ] दुष्ट पिता ; (सुपा ३८७ , भवि) ।

दुप्पिच्छ देखो **दुपेच्छ** , (सुर २, ५ ; सुपा ६२) ।

दुप्पिय वि [दुष्प्रिय] अप्रिय । °**भासि** वि [°भाषिन्] अप्रिय-वक्ता ; (सुपा ३१४) ।

दुप्पुत्त देखो **दुपुत्त**; (पउम १०५, ७२; भवि, कुप्र ४०५)।

दुप्पूर वि [दुष्पूर] जो कठिनाई से पूरा किया जा सके ; (स १२३) ।

दुप्पेक्ख देखो **दुपेच्छ** ; (सण) ।

दुप्पेक्खणिज्ज वि [दुष्प्रेक्षणीय] कष्ट से दर्शनीय, (नाट—वेणी २५) ।

दुप्पेच्छ देखो **दुपेच्छ**; (महा) ।

दुप्पोलिय देखो **दुप्पउलिअ** ; (श्रा २०) ।

दुप्फरिस, **दुप्फास**, **दुफास** वि [दुःस्पर्श] जिसका स्पर्श खराब हो वह ; (पउम २६, ४६ ; १०१, ७१ ; ठा ८ ; भग) ।

दुफास वि [द्विस्पर्श] स्निग्ध और शीत आदि अविरुद्ध दो स्पर्शों से युक्त ; (भग) ।

दुब्बद्ध वि [दुर्बद्ध] खराब रीति से बँधा हुआ ; (आचा २, ६, ३) ।

दुरहिगम्म वि [दुरभिगम्य] दुःख से जानने योग्य, दुर्बोध; "अत्थगई वि अ नयवायगहणलीणा दुरहिगम्मा" (सम्म १६१)।

दुरहियास वि [दुरध्यास, दुरधिसह] दुस्सह, जो कष्ट से सहन किया जा सके; (णाया १, १; आचा; उप १०३१ टी; स ६५७)।

दुराणण पुं [दुरानन] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४५)।

दुराणुवत्त वि [दुरनुवर्त] जिसका अनुवर्तन कष्ट-साध्य हो वह; (वव ३)।

दुराय न [द्विरात्र] दो रात; (ठा ५, २; कस)।

दुरायार वि [दुराचार] १ दुराचारी, दुष्ट आचरण वाला; (सुर २, १६३; १२, २२६; वेणी १७१)। २ पुं. दुष्ट आचरण; (भवि)।

दुरायारि वि [दुराचारिन्] ऊपर देखो; (भवि)।

दुराराह वि [दुराराध] जिसका आराधन दुःख से हो सके वह; (कप्प)।

दुरारोह वि [दुरारोह] जिस पर दुःख से चढ़ा जा सके वह, दुरध्यास; (उत्त २३; गा ४६८)।

दुरालोअ पुं [दे] तिमिर, अन्धकार; (दे ५, ४६)।

दुरालोअ वि [दुरालोक] जो दुःख से देखा जा सके, देखने को अशक्य; (से ४, ८; कुमा)।

दुरालोयण वि [दुरालोकन] ऊपर देखो; "दुरालोयणो दुम्मुहो रत्तनेत्तो" (भवि)।

दुरावह वि [दुरावह] दुर्धर, दुर्वह; (पउम ६८, ६)।

दुरास वि [दुराश] १ दुष्ट आशा वाला; २ खराब इच्छा वाला; (भवि; संक्षि १६)।

दुरासय वि [दुराशय] दुष्ट आशय वाला; (सुपा १३१)।

दुरासय वि [दुराश्रय] दुःख से जिसका आश्रय किया जा सके वह, आश्रय करने को अशक्य; (पण्ह १, ३; उत्त १)।

दुरासय वि [दुरासद] १ दुष्प्राप, दुर्लभ; २ दुर्जय; ३ दुःसह; (दस २, ६; राज)।

दुरिअ न [दुरित] पाप; (पाअ; सुपा २४३)।

दुरिअ न [दे] द्रुत, शीघ्र, जल्दी; (षड्)।

दुरिआरि स्त्री [दुरितारि] भगवान् संभवनाथ की शासन-देवी; (संति ६)।

दुरिक्ख वि [दुरीक्ष] देखने को अशक्य; (कुमा)।

दुरुक्क वि [दे] थोड़ा पीसा हुआ, ठीक २ नहीं पीसा हुआ; (आचा २, १, ८)।

दुरुदुल्ल सक [भ्रम्] १ भ्रमण करना, घूमना। २ गँवाई हुई चीज की खोज में घूमना। वकृ—**दुरुदुल्लंत**; (सुर १५, २१२)।

दुरुत्त न [दुरुक्त] दुष्टोक्ति, दुष्ट वचन; (सार्ध १०१)।

दुरुत्त वि [द्विरुक्त] १ दो वार कहा हुआ, पुनरुक्त; २ दो वार कहने योग्य; (रंभा)।

दुरुत्तर वि [दुरुत्तर] १ दुस्तर, दुर्लंघ्य; (सूअ १, ३, २)। २ दुष्ट उत्तर, अयोग्य जवाब; (हे १, १४)।

दुरुत्तर वि [द्वि-उत्तर] दो से अधिक। °**सय** वि [°शततम] एक सौ दो वाँ, १०२ वाँ; (पउम १०२,२०४)।

दुरुत्तार वि [दुरुत्तार] दुःख से पार करने योग्य; (सुपा २६७)।

दुरुद्धर वि [दुरुद्धर] जिसका उद्धार कठिनाई से हो वह; (सूअ १, २, २)।

दुरुवणीय वि [दुरुपनीत] जिसका उपनय दूषित हो ऐसा (उदाहरण); (दसनि १)।

दुरुवयार वि [दुरुपचार] जिसका उपचार कष्ट-साध्य हो वह; (तंदु)।

दुरुव्वा स्त्री [दूर्वा] तृण-विशेष, दूब; (स १२४; उप ३१८)।

दुरुह सक [आ+रुह्] आरूढ़ होना, चढ़ना। **दुरुहइ**; (पि ११८; १३६)। वकृ—**दुरुहमाण**; (आचा २, ३, १)। संकृ—**दुरुहित्ता, दुरुहित्ताणं, दुरुहेत्ता**; (भग; महा; पि ५८३; ४८२)।

दुरूढ वि [आरूढ] अधिरूढ़, ऊपर चढ़ा हुआ; (णाया १, १; २, १; औप)।

दुरूव वि [दूरूप] खराब रूप वाला, कुडौल; (ठा ८; श्रा १६)।

दुरूह देखो **दुरुह**। संकृ—**दुरूहित्तु, दुरूहिया**; (सूअ १, ५, २, १५), "जहा आसाविणिं नावं जाइअंधो दुरूहिया" (सूअ १, ११, ३०)।

दुरूहण न [आरोहण] अधिरोहण, ऊपर चढ़ बैठना; (स ५१)।

दुरेह पुं [द्विरेफ] भ्रमर, भमरा; (पाअ; हे १, ६४)।

दुरोअर न [दुरोदर] जूआ, द्यूत; (पाअ)।

दुलंघ देखो **दुल्लंघ** ; (भवि) ।

दुलंभ देखो **दुल्लंभ** ; (भवि) ।

दुलह वि [**दुर्लभ**] १ जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह ; (कुमा ; गउड ; प्रासू १३४) । २ पुं. एक वणिक्-पुत्र ; (सुपा ६१७) । देखो **दुल्लह** ।

दुलि पुंस्त्री [**दे**] कच्छप, कछुआ ; (दे ५, ४२ ; उप पृ १३५) ।

दुल्ल न [**दे**] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ५, ४१) ।

दुल्लंघ वि [**दुर्लङ्घ**] जिसका उल्लंघन कठिनाई से हो सके वह, अ-लंघनीय ; (पउम १२, ३८ ; ४१ ; हेका ३१ ; सुर २, ७८) ।

दुल्लंभ वि [**दुर्लभ**] दुराप, दुष्प्राप्य ; (उप पृ १३६ ; सुपा १६३ ; सण) ।

दुल्लक्ख वि [**दुर्लक्ष**] १ दुर्विज्ञेय, जो दुःख से जाना जा सके, अलक्ष्य ; (से ८, ५ ; स ६६ ; वज्जा १३६ ; श्रा २८) । २ जो कठिनाई से देखा जा सके ; (कप्पू) ।

दुल्लग्ग वि [**दे**] अ-घटमान, अ-युक्त ; (दे ५, ४३) ।

दुल्लग्ग न [**दुर्लग्न**] दुष्ट लग्न, दुष्ट मुहूर्त ; (मुद्रा २१५) ।

दुल्लब्भ } **दुल्लभ** } देखो **दुल्लह** ; "किं दुल्लब्भं जणो गुणग्गाही" (गा ६७५ ; निचू ११) ।

दुल्ललिअ वि [**दुर्ललित**] १ दुष्ट आदत वाला ; २ दुष्ट इच्छा वाला ; " विलसइ वेसाण गिहे विविहविलासेहिं दुल्ल-लिओ", "कीलइ दुल्ललियबालकीलाए" (सुपा ४८५ ; ३२८) । ३ व्यसनी, आदत वाला ;

"धन्ना सा पुन्नुक्करिसनिम्मिया तिहुयणेवि तुह जणणी ।
जीइ पसूओ सि तुमं दीणुद्धरणिक्कदुल्ललिओ" (सुपा २१६)।

४ दुर्विदग्ध, दु.शिक्षित ; (पात्र) । ५ न. दुराशा, दुर्लभ वस्तु की अभिलाषा ; (महानि ६) ।

दुल्लसिआ स्त्री [**दे**] दासी, नौकरानी ; (दे ५, ४६) ।

दुल्लह वि [**दुर्लभ**] १ दुराप, जिसकी प्राप्ति कठिनाई से हो वह ; (स्वप्न ४६ ; कुमा ; जी ५० ; प्रासू ११ ; ४६ ; ४७) । २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा ; (गु १०) । °**राय** पुं [°**राज**] वही अर्थ ; (सार्ध ६६; कुप्र ४) । °**लंभ** वि [°**लम्भ**] जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह ; (पउम ३५, ४७ ; सुर ४, २२६; वै ६८) ।

दुवई स्त्री [**द्रुपदी**] छन्द-विशेष ; (स ७१) ।

दुवण न [**दावन**] उपताप, पीड़न ; (पण्ह १, २) ।

दुवण्ण } **दुवन्न** } वि [**दुर्वर्ण**] खराब रूप वाला ; (भग; ठा ८)।

दुवय पुं [**द्रुपद**] एक राजा, द्रौपदी का पिता ; (णाया १, १६; उप ६४८ टी) । °**सुया** स्त्री [°**सुता**] पाण्डव-पत्नी, द्रौपदी ; (उप ६४८ टी) ।

दुवयंगया स्त्री [**द्रुपदाङ्गजा**] राजा द्रुपद की लड़की, द्रौपदी, पाण्डवों की पत्नी ; (उप ६४८ टी) ।

दुवयंगरुहा स्त्री [**द्रुपदाङ्गरुहा**] ऊपर देखो; (उप ६४८ टी)।

दुवयण न [**दुर्वचन**] खराब वचन, दुष्ट उक्ति; (पउम ३५, ११) ।

दुवयण न [**द्विवचन**] दो का बोधक व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय, दो संख्या की वाचक विभक्ति ; (हे १, ६४; ठा ३, ४— पत्र १५८) ।

दुवार } **दुवाराय** } देखो **दुआर** ; (हे २, ११२ ; प्रति ४१ ; सुपा ४८७) । " एगदुवाराए " (कस) । °**पाल** पुं [°**पाल**] दरवान, प्रतीहार ; (सुर १, १३४ ; २, १४८)। °**वाहा** स्त्री [°**वाहा**] द्वार-भाग; (आचा २, १, ५) ।

दुवारि वि [**द्वारिन्**] १ द्वार वाला । २ पुं. दरवान, प्रतीहार; " बहुपरिवारो पत्तो रायदुवारी तहिं वरुणो " (सुपा २६५)।

दुवारिअ वि [**द्वारिक**] दरवाजा वाला; " अवंगुयदुवारिए" (कस) ।

दुवारिअ पुं [**दौवारिक**] दरवान, द्वारपाल; (हे १, १६०; संक्षि ६ ; सुपा २६०) ।

दुवालस त्रि.व. [**द्वादशन्**] बारह, १२; (कप्प ; कुमा)। °**मुहुत्तिअ** वि [°**मुहूर्तिक**] बारह मुहूर्तों का परिमाण वाला; (सम २२) । °**विह** वि [°**विध**] बारह प्रकार का ; (सम २१) । °**हा** अ [°**धा**] बारह प्रकार ; (सुर १४, ६१) । °**वत्त** न [°**वर्त**] बारह आवर्त वाला वन्दन, प्रणाम-विशेष ; (सम २१) ।

दुवालसंग स्त्रीन [**द्वादशाङ्गी**] बारह जैन आगम-ग्रन्थ, आचारांग आदि बारह सूत्र-ग्रन्थ ; (सम १; हे १, २५४)। स्त्री—°**गी** ; (राज) ।

दुवालसंगि वि [**द्वादशाङ्गिन्**] बारह अंग-ग्रन्थो का जान-कार; (कप्प) ।

दुवालसम वि [**द्वादश**] १ बारहवाँ ; २ लगातार पाँच दिनों का उपवास ; (आचा ; णाया १, १; ठा ६; सण)। स्त्री—°**मी**; (णाया १, ६) ।

दुविट्ठ } पुं [द्विपृष्ठ, द्विविष्टप] १ भरत-क्षेत्र में इस
दुविट्ठु } अवसर्पिणी काल में उत्पन्न द्वितीय अर्ध-चक्री राजा; (सम १५८ टी; पउम ५, १५५)। २भरत-क्षेत्र में उत्पन्न होने वाला आठवाँ अर्ध-चक्री राजा, एक वासुदेव; (सम १५४)।

दुविभज्ज वि [दुर्विभज] जिसका विभाग करना कठिन हो वह; (ठा ५, १—पत्र २६६)।

दुविभव्व देखो दुव्विभव्व; (ठा ५,१ टी)।

दुवियड्ढ वि [दुर्विदग्ध] दुःशिक्षित, जानकारी का भूठा अभिमान करने वाला; (उप ८३३ टी)।

दुवियप्प पुं [दुर्विकल्प] दुष्ट वितर्क; (भवि)।

दुविलय पुं [दुविलक] एक अनार्य देश; "दु (?दु) विलय-लउसबुक्कस—" (पव २७४)।

दुविह वि [द्विविध] दो प्रकार का; (हे १, ६४; नव ३)।

दुवीस स्त्रीन [द्वाविंशति] बाईस, २२; (नव २०; षड्)।

दुव्वण्ण } देखो दुवण्ण; (पउम ४१, १७; पण्ह १, ४)।
दुव्वन्न }

दुव्वय न [दुर्व्रत] १ दुष्ट नियम। २ वि. दुष्ट व्रत करने वाला; ३ व्रत-रहित, नियम-वर्जित; (ठा ४, ३; विपा १,१)।

दुव्वयण न [दुर्वचन] दुष्ट उक्ति, खराब वचन; (पउम ३३, १०६; विसे ५२०; उव; गा २६०)।

दुव्वल देखो दुब्बल; (सहा)।

दुव्वसण न [दुर्व्यसन] खराब आदत, बुरी आदत; (सुपा १८४; ४८६; भवि)।

दुव्वसु वि [दुर्वसु] अभव्य, खराब द्रव्य; (आचा)। °मुणि पुं [°मुनि] मुक्ति के लिए अयोग्य साधु; (आचा)।

दुव्वह वि [दुर्वह] दुर्धर, जिसका वहन कठिनाई से हो सके वह; (स १६२; सुर १, १४)।

दुव्वा देखो दुरुव्वा; (कुमा; सुर १, १३८)।

दुव्वाइ वि [दुर्वादिन्] अप्रिय-वक्ता; (दसनि २)।

दुव्वाय पुं [दुर्वाक्] दुर्वचन, दुष्ट उक्ति; "वयणेणवि दुव्वाओ न य कायव्वो परस्स पीडयरो" (पउम १०३, १४३)।

दुव्वाय पुं [दुर्वात] दुष्ट पवन; (णमि ४)।

दुव्वार वि [दुर्वार] दुःख से रोकने योग्य, अवार्य; (से १२, ६३; उप ९८६ टी; सुपा १६७; ४७१; अभि ११६)।

दुव्वारिअ देखो दुवारिअ=दौवारिक; (प्राप्र)।

दुव्वाली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति; (पाअ)।

दुव्वास पुं [दुर्वासस्] एक ऋषि; (अभि ११८)।

दुव्विअड वि [दुर्विवृत] परिधान-वर्जित, नग्न; (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुव्विअड्ढ } वि [दुर्विदग्ध] ज्ञान का भूठा अभिमान करने
दुव्विअद्ध } वाला, दुःशिक्षित; (पाअ; गा ६५)।

दुव्विजाणय वि [दुर्विज्ञेय] दुःख से जानने को योग्य; जानने को अशक्य; "अकुसलपरिणाममंदबुद्धिजणदुव्विजाणए" (पण्ह १, १)।

दुव्विढप्प वि [दुरर्ज] दुःख से अर्जन करने योग्य, कठिनाई से कमाने योग्य; (कुप्र २३८)।

दुव्विणीअ वि [दुर्विनीत] अविनीत, उद्धत; (पउम ६६, ३५; काल)।

दुव्विण्णाय वि [दुर्विज्ञात] असत्य रीति से जाना हुआ: (आचा)।

दुव्विभज देखो दुविभज्ज; (राज)।

दुव्विभव्व वि [दुर्विभाव्य] दुर्लक्ष्य, दुःख से जिसकी आलोचना हो सके वह; (ठा ५, १ टी—पत्र २६६)।

दुव्विभाव वि [दुर्विभाव] ऊपर देखो; (विसे)।

दुव्विलसिय न [दुर्विलसित] १ स्वच्छन्दी विलास; २ निकृष्ट कार्य्य, जघन्य काम; (उप १३६ टी)।

दुव्विसह वि [दुर्विषह] अत्यन्त दुःसह, असह्य; (गा १४८; सुर ३, १४४; १४, २१०)।

दुव्विसोज्झ वि [दुर्विशोध्य] शुद्ध करने को अशक्य; (पंचा १६)।

दुव्विहिय वि [दुर्विहित] १ खराब रीति से किया हुआ; "दुव्विहियविलासियं विहिणो" (सुर ४, १५; ११, १४३)। २ अ-सुविहित, अ-यशस्वी; (आव ३)।

दुव्वोज्झ वि [दुर्वाह्य] दुर्वह, दुःख से ढोने योग्य; (से ३, ५; ४, ४४; १३, ६३; वज्जा ३८)।

दुव्वोज्झ वि [दे] दुर्घात्य, दुःख से मारने योग्य; (से ३, ५)।

दुसंकड न [दुःसंकट] विषम विपत्ति; (भवि)।

दुसंचर देखो दुस्संचर; (भवि)।

दुसन्नप्प वि [दुःसंज्ञाप्य] दुर्बोध्य; (ठा ३, ४—पत्र १६५)।

दुसमदुसमा देखो दुस्समदुस्समा; (भग ६, ७)।

दुसमसुसमा देखो दुस्समसुसमा; (ठा १)।

दुसमा देखो दुस्समा; (भग ६, ७; भवि)।

दुसह देखो **दुस्सह**; (हे १, ११५ ; सुर १२, १३७ ; १३६) ।

दुसाह वि [**दुःसाध**] दुःसाध्य, कष्ट-साध्य ; (पउम ८६, २२) ।

दुसिक्खिअ वि [**दुःशिक्षित**] दुर्विदग्ध ; (पउम २५, २१) ।

दुसुमिण देखो **दुस्सुमिण**; (पडि)।

दुसुरुल्लय न [**दे**] गले का आभूषण-विशेष; (स ७६) ।

दुस्स सक [**द्विष्**] द्वेष करना । वकृ—**दुस्समाण** ; (सुअ १, १२, २२) ।

दुस्सउण न [**दुःशकुन**] अपशकुन ; (णमि २०) ।

दुस्संचर वि [**दुस्संचर**] जहाँ दुःख से जाया जा सके, दुर्गम; (स २३१ ; संक्षि १७) ।

दुस्संचार वि [**दुस्संचार**] ऊपर देखो; (सुर १, ६६) ।

दुस्संत पुं [**दुष्यन्त**] चन्द्रवंशीय एक राजा, शकुन्तला का पति ; (पि ३२६) ।

दुस्संबोह वि [**दुस्संबोध**] दुर्बोध्य; (आचा) ।

दुस्सज्झ वि [**दुस्साध्य**] दुष्कर ; (सुपा ८ ; ५६६)।

दुस्सण्णप्प देखो **दुसन्नप्प** ; (बृह ४) ।

दुस्सत्त वि [**दुःसत्त्व**] दुरात्मा, दुष्ट जीव ; (पउम ८७, ६) ।

दुस्सन्नप्प देखो **दुसन्नप्प** ; (कस) ।

दुस्समदुस्समा स्त्री [**दुष्षमदुष्षमा**] काल-विशेष, सर्वाधम काल , अवसर्पिणी काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी काल का पहला आरा, इसमें सब पदार्थों के गुणों की सर्वोत्कृष्ट हानि होती है, इसका परिमाण एक्कीस हजार वर्षों का है; (ठा १; ६; इक) ।

दुस्समसुसमा स्त्री [**दुष्षमसुषमा**] बेयालीस हजार कम एक कोटाकोटि सागरोपम का परिमाण वाला काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का चतुर्थ और उत्सर्पिणी काल का तीसरा आरा ; (कप्प ; इक) ।

दुस्समा स्त्री [**दुष्षमा**] १ दुष्ट काल । २ एक्कीस हजार वर्षों के परिमाण वाला काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का पाँचवाँ और उत्सर्पिणी काल का दूसरा आरा; (उप६४८; इक)।

दुस्समाण देखो **दुस्स** ।

दुस्सर पुं [**दुःस्वर**] १ खराब आवाज, कुत्सित कण्ठ ; २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्वर कर्ण-कटु होता है ; (कम्म १, २७; नव १५) । °**णाम**, °**नाम** न [°**नामन्**] दुःस्वर का कारण-भूत कर्म ; (पंच ; सम ६७) ।

दुस्सल वि [**दुःशल**] दुर्विनीत, अविनीत ; (बृह १) ।

दुस्सह वि [**दुस्सह**] जो दुःख से सहन हो सके, असह्य ; (स्वप्न ७३ ;हे १, १३; ११५ ; षड्) ।

दुस्सहिय वि [**दुस्सोढ**] दुःख से सहन किया हुआ ; (सुअ १,३, १) ।

दुस्सासण पुं [**दुःशासन**] दुर्योधन का एक छोटा भाई, कौरव-विशेष ; (चारु १२; वेणी १०७) ।

दुस्साहड वि [**दुस्संहृत**] दुःख से एकत्रित किया हुआ ; " दुस्साहडं धणं हिच्चा वहु संचिणिया रयं" (उत्त ७, ८) ।

दुस्साहिअ वि [**दौःसाधिक**] दुःसाध्य कार्य को करने वाला ; (पि ८४) ।

दुस्सिक्ख वि [**दुःशिक्ष**] दुष्ट शिक्षा वाला, दुःशिक्षित, दुर्विदग्ध; (उप १४६ टी ; कुप्र २८३) ।

दुस्सिक्खिअ वि [**दुःशिक्षित**] ऊपर देखो; (गा ६०३)।

दुस्सिज्जा स्त्री [**दुःशय्या**] खराब शय्या ; (दस ८) ।

दुस्सिलिट्ठ वि [**दुःश्लिष्ट**] कुत्सित श्लेष वाला; (पि १३६)।

दुस्सील वि [**दुःशील**] १ दुष्ट स्वभाव वाला ; २ व्यभिचारी ; (पण्ह १, १ ; सुपा ११०) । स्त्री—°**ला** ; (पाअ) ।

दुस्सुमिण पुंन [**दुःस्वप्न**] दुष्ट स्वप्न, खराब स्वप्न ; (पण्ह १, २) ।

दुस्सुय न [**दुःश्रुत**] १ दुष्ट शास्त्र । २ वि. श्रुति-कटु ; (पण्ह १, २) ।

दुस्सेज्जा देखो **दुस्सिज्जा** ; (उव) ।

दुह सक [**दुह्**] दूहना, दूध निकालना । दुहेज्जइ ; (महा) । कर्म—दुहिज्जइ, दुब्भइ; (हे ४, २४५) ; भवि—दुहिहिइ, दुब्भिहिइ; (हे ४, २४५) ।

दुह देखो **दोह**=दोह ; (राज) ।

दुह देखो **दुक्ख**=दुःख ; (हे २, ७२ ; प्रासू २६ ; २८; १६२) । °**अ** वि [°**द**] दुःख देने वाला, दुःख-जनक ; (सुपा ४३४) । °**ट्ट** वि [°**आर्त**] दुःख से पीड़ित ; (विपा १, १ ; सुपा ३३८) । °**ट्टिय** वि [°**आर्तित**] दुःख से पीड़ित ; (औप) । °**ट्ठ** पुं [°**आर्थ**] नरक-स्थान ; (सुअ १, ५, १) । °**त्त** देखो °**ट्ट**; (उप पृ ७६ ; ७२८ टी) । °**फास** पुं [°**स्पर्श**] दुःख-जनक स्पर्श; (णाया १, १२) । °**भागि** वि [°**भागिन्**] दुःख में भागीदार; (सुपा ४३१)।

°मच्चु पुं [°मृत्यु] अपमृत्यु, अकाल मौत; (सुर ८, ५३)। °विवाग पुं [°विपाक] दुःख रूप कर्म-फल; (विपा १, १)। °सिज्जा, °सेज्जा स्त्री [°शय्या] दुःख-जनक शय्या; (ठा ४, ३)। °वह वि [°वह] दुःख-जनक; (उत्त ८८, ६१; सुर ८, १९२; गउड १६६)।

दुह देखो दुहा; (भग ८, ८)।

दुहट्ट वि [दे] दुर्दमित, वश कर लिया हुआ; (दे ५, ४५)।

दुहट्ट वि [दुर्हृत] खराब रीति से मारा हुआ; (आचा)।

दुहट्ट वि [द्विहत] दो से मारा हुआ; (आचा)।

दुहत्थ देखो दुव्वय; (षड्)।

दुहओ अ [द्विधातस्] दोनों तरफ से, उभय प्रकार से; (आचा; ठा ५, ३; सम; भग; पुप्फ ४७०; श्रा २७)।

दुहंड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़े वाला; "छिन्नेव विंबं नो हं (? नो) दुहंडं" (रंभा)।

दुहग देखो दूहग; (कम्म ३, ३)।

दुहट्ट वि [दुर्घट्ट] दुर्निरोध, दुर्वार; (गाथा १, ८)।

दुहण देखो दुघण. (पण्ह १, १—पत्र १८)।

दुहण पुं [द्रुघण] प्रहरण विशेष, "चम्मेट्ठदुघणमोट्ठियमोग्गरवर-फलिह..." (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

दुहण न [दोहन] दोह, दोहना; (पण्ह १, २)।

दुहव देखो दूहव; (पि ३४०; हे १, ११५ टी)। स्त्री—°वी; (पि २३१)।

दुहा अ [द्विधा] दो प्रकार, दो तरफ, उभयथा; (जी ८; पाउ १४४)। °इअ वि [°कृत] जिसके दो खण्ड किये गये हों वह; (प्राप्र; कुमा)।

दुहाकर सक [द्विधा+कृ] दो खण्ड करना। कर्म—दुहाइज्जइ, दुहाकिज्जइ; (प्राप्र; हे १, ९७)। वकृ—°इज्जमाण, °किज्जमाण; (पि ५४७; ४३६)। संकृ—°काउं; (महा)।

दुहाव सक [छिद्] छेदना, छेदा करना, खण्डित करना। दुहावइ; (हे ४, १२४)।

दुहाव सक [दुःखय्] दुःखी करना, दुखाना; (प्रामा)।

दुहावण वि [दुःखन] दुःखी करने वाला; (भग)।

दुहाविअ वि [छिन्न] खण्डित; (पाअ; कुमा)।

दुहाविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ; (गउड)।

दुहि वि [दुःखिन्] दुःखी, व्यथित, पीड़ित; (उप ६८६ टी)। स्त्री—°णी; (कुमा)।

दुहिअ वि [दुःखित] पीड़ित, दुःख-युक्त; (हे २, १६४; कुमा; महा)।

दुहिअ वि [दुग्ध] जिसका दोहन किया गया हो वह; (दे १, ७)। °दुज्झ वि [°दोह्य] एक वार दोहने पर फिर भी दोहने योग्य; फिर फिर दोहने योग्य; (दे १, ७; ५, ४६)।

दुहिआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री; (सुपा १७६; हे ३, ३५)। °दइअ पुं [°दयित] जामाता; (सुपा ४५७)।

दुहिण पुं [द्रुहिण] ब्रह्मा, चतुर्मुख; "अवि दुहिणप्पमुहेहिं आणती तुह अलंघणिज्जपहावा" (अच्चु १६)।

दुहित्त पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का, (उप पृ ७४)।

दुहित्तिया स्त्री [दौहित्रिका] लड़की की लड़की; (उप पृ ७४)।

दुहिल वि [द्रुहिल] द्रोही, द्रोह करने वाला; (विसे ९९९ टी)।

दू सक [दू] १ उपताप करना। २ काटना। कर्म—"दुज्जंतु दव्वू" (पण्ह १, २)।

दूअ पुं [दूत] दूत, संदेश-हारक; (पाअ; पउम ५३, ४३; ४६)।

दूआ देखो धूआ; (षड्)।

दूइ° देखो दूई। °पलासय न [°पलाशक] एक चैत्य; (उवा)।

दूइज्ज सक [द्रु] गमन करना, विहरना, जाना। दूइज्जइ; (आचा)। वकृ—दूइज्जंत, दूइज्जमाण; (औप; णाया १, १; भग; आचा; महा)। हेकृ—दूइज्जित्तए; (कस)।

दूइत्त न [दूतीत्व] दूती का कार्य, दूतीपन; (पउम ५३, ४५)।

दूई स्त्री [दूती] १ दूत के काम में नियुक्त की हुई स्त्री, समाचार-हारिणी, कुटनी; (हे ४, ३६७)। २ जैन साधुओं के लिये भिक्षा का एक दोष; (ठा ३, ४—पत्र १६६)। °पिंड पुं [°पिण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई भिक्षा; (आचा २, १, ६)। देखो दूइ°।

दूण वि [दून] हैरान किया हुआ; "हा पियवयंस दूणो (? णो) मए तुमं" (स ७६३)।

दूण पुं [**दे**] हस्ती, हाथी ; (दे ५, ४४ ; षड्) ।

दूण (अप) देखो **दुउण** ; (पिंग) ।

दूणावेढ वि [**दे**] १ अशक्य ; २ तड़ाग, तलाव ; (दे ५, ५६) ।

दूम अक [**दुःखय्**] दूमना, दुःखित होना । 'तम्हा पुत्तोवि दूमिज्जा पहसिज्ज व दुज्जणो'' (श्रा १२) ।

दूभग देखो **दुब्भग** ; (णाया १, १६—पत्र १६६) ।

दूभग्ग न [**दौर्भाग्य**] दुष्ट भाग्य, खराव नसीब ; (उप पृ ३१) ।

दूम सक [**दू , दावय्**] परिताप करना, संताप करना । दूमइ, दूमेइ ; (सुपा ८ ; प्राप्र; हे ४, २३) । कर्म—दूमिज्जइ ; (भवि) । वकृ—**दूमेंत**; (से१०, ६३) । कवकृ—**दूमिज्जंत** ; (सुपा २६६) ।

दूम देखो **दुम**=धवलय् ; (हे ४, २४) ।

दूमक } **दूमग** } वि [**दावक**] उपताप-जनक, पीड़ा-जनक ; (पण्ह १, ३ ; राज) ।

दूमण न [**दवन, दावन**] परिताप, पीडन; (पण्ह१, १) ।

दूमण न [**धवलन**] सफेद करना ; (वव ४) ।

दूमण देखो **दुम्मण**=दुर्मनस् ; (सूअ १, २, २) ।

दूमणाइअ वि [**दुर्मनायित**] जो उदास हुआ हो, उद्विग्न-मनस्क ; (नाट—मालती ६६) ।

दूमिअ वि [**दून, दावित**] संतापित, पीड़ित; (सुपा १० ; १३३ ; २३०) ।

दूमिअ वि [**धवलित**] सफेद किया हुआ ; (हे ४, २४ ; कप्प) ।

दूयाकार न [**दे**] कला विशेष ; (स ६०३) ।

दूर न [**दूर**] १ अ-निकट, अ-समीप; ''रुसेव जस्स कित्ती गया दूरं'' (कुमा) । २ अतिशय, अत्यन्त ; ''दूरमहरं डसंते'' (कुमा) । ३ वि. दूर-स्थित, असमीप-वर्ती; (सूअ१, २, २) । ४ व्यवहित, अन्तरित; (गउड) । °**ग** वि [°**ग**] दूर-वर्ती, अ-समीपस्थ; (उप ६४८ टी; कुमा) । °**गइ**, °**गइअ** वि [°**गतिक**] १ दूर जाने वाला ; २ सौधर्म आदि देवलोक में उत्पन्न होने वाला ; (ठा ८) । °**तराग** वि [°**तर**] अत्यन्त दूर ; (पण्ण १७) । °**त्थ** वि [°**स्थ**] दूर-स्थित, दूरवर्ती ; (कुमा) । °**भविय** पुं [°**भव्य**] दीर्घ काल में मुक्ति को प्राप्त करने की योग्यता वाला जीव ; (उप ७२८ टी) । °**य** देखो °**ग**; (सूअ १, ५, २) । °**वत्ति** वि [°**वर्तिन्**] दूर में रहने वाला; (पि ६४) । °**लइय** वि [°**लयिक**] मुक्ति-गामी; (आचा) । °**लय** पुं [°**लय**] १ दूर-स्थित आश्रय; २ मोक्ष; ३ मुक्ति का मार्ग; (आचा) ।

दूरंगइअ देखो **दूर-गइअ** ; (औप) ।

दूरंतरिअ वि [**दूरान्तरित**] अत्यन्त-व्यवहित; (गा६५८) ।

दूराय सक [**दूराय्**] दूर-स्थित की तरह मालूम होना, दूरवर्ती मालूम पड़ना । वकृ—**दूरायमाण** ; (गउड) ।

दूरीकय वि [**दूरीकृत**] दूर किया हुआ; (श्रा २८) ।

दूरीहूअ वि [**दूरीभूत**] जो दूर हुआ हो; (सुपा १५८) ।

दूरुल्ल वि [**दूरवत्**] दूर-स्थित, दूर-वर्ती; (आव ४) ।

दूलह देखो **दुल्लह** ; (संक्षि १७) ।

दूस अक [**दुष्**] दूषित होना, विकृत होना । दूसइ; (हे ४, २३६; संक्षि ३६) ।

दूस सक [**दूषय्**] दोषित करना, दूषण लगाना । दूसइ; (भवि), दूसेइ ; (बृह ४) ।

दूस न [**दूष्य**] १ वस्त्र, कपड़ा; (सम १५१ ; कप्प) । २ तंबू, पट-कुटी; (दे५, २८) । °**गणि** पुं [°**गणिन्**] एक जैन आचार्य ; (णंदि) । °**मित्त** पुं [°**मित्र**] मौर्यवंश के नाश होने पर पाटलिपुत्र में अभिषिक्त एक राजा; (राज) । °**हर** न [°**गृह**] तंबू, पट-कुटी; (स २६७) ।

दूसअ वि [**दूषक**] दोष प्रकट करने वाला; (वज्जा ६८) ।

दूसग वि [**दूषक**] दूषित करने वाला; (सुपा२७५; सं१२४) ।

दूसण न [**दूषण**] १ दोष, अपराध; २ कलङ्क, दाग; (तंदु) । ३ पुं. रावण की मौसी का लड़का ; (पउम१६, २५) । ४ वि. दूषित करने वाला ; (स ५२८) ।

दूसम वि [**दुःषम**] १ खराव, दुष्ट; २ पुं. काल-विशेष, पाँचवाँ आरा ; ''दूसमे काले'' (सट्टि १५६) । °**दूसमा** देखो **दुस्समदुस्समा** ; (सम ३६ ; ठा १ ; ६) । °**सुसमा** देखो **दुस्समसुसमा** ; (ठा २, ३ ; सम ६४) ।

दूसमा देखो **दुस्समा** ; (सम३६ ; उप८३३टी ; सं३४) ।

दूसर देखो **दुस्सर** ; (राज) ।

दूसल वि [**दे**] दुर्भग, अभागा; (दे ५, ४३; षड्) ।

दूसह देखो **दुस्सह** ; (हे १, १३ ; ११५) ।

दूसहणीअ वि [**दुस्सहनीय**] दुःसह, असह्य ; (पि५७१) ।

दूसासण देखो **दुस्सासण** ; (हे १, ४३) ।

दूसि पुं [**दूषिन्**] नपुंसक का एक भेद; ''दोसुवि वेएसु सज्जए दूसी'' (बृह ४) ।
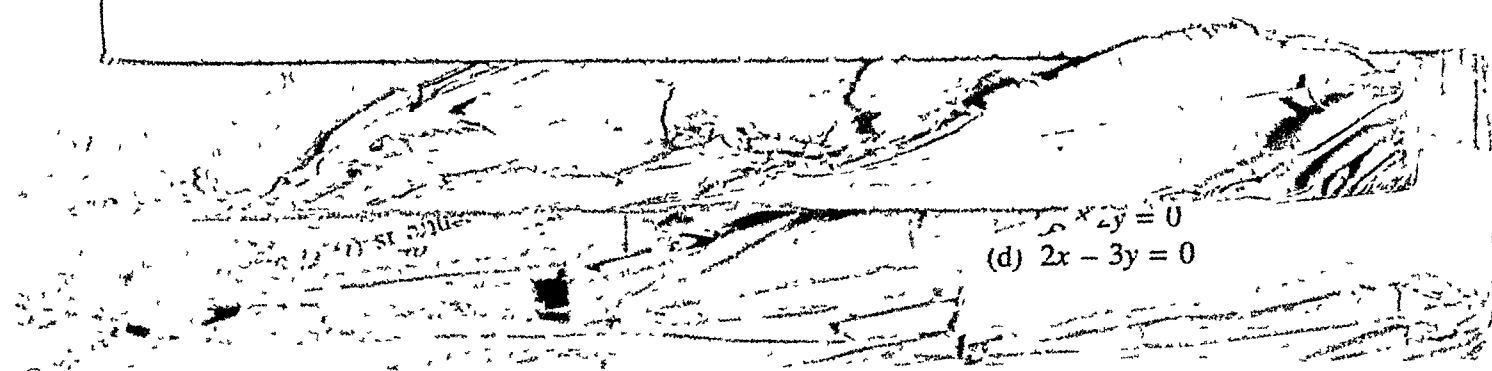
दूसिअ वि [दूषित] १ दूषण-युक्त, कलङ्क-युक्त; (महा; भवि)। २ पुं. एक प्रकार का नपुंसक ; (बृह ४)।
दूसिआ स्त्री [दूषिका] आँख का मैल ; (कुमा)।
दूसुमिण देखो दुस्सुमिण ; (कुमा)।
दूहअ वि [दुःखक] दुःख-जनक ; "असईणं दूहओ चंदो" (वज्जा ६८)।
दूहट्ट वि [दे] लज्जा से उद्विग्न ; (दे ५, ४८)।
दूहल वि [दे] दुर्भग, मन्द-भाग्य ; (दे ५, ४३)।
दूहव देखो दुब्भग ; (हे १, ११५ ; १९२ ; कुमा ; सुपा ५९७ ; भवि)।
दूहविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ, दूभाया हुआ ; "किं केणवि दूहविया" (कुम्मा १२)।
दूहिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त ; (हे १, १३ ; संक्षि १७)।
दे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय ; १ संमुख-करण ; २ सखी को आमन्त्रण ; (हे २, १९२)।
देअ देखो देव ; (मुद्रा १९१ ; चंड)।
देअर देखो दिअर ; (कुमा ; काप्र २२४ ; महा)।
देअराणी स्त्री [देवरपत्नी] देवरानी, पति के छोटे भाई की बहू ; (दे १, ५१)।
देई देखो देवी ; (नाट—उत्त १८)।
देउल न [देवकुल] देव-मन्दिर ; (हे १, २७१ ; कुमा)। °णाह पुं [°नाथ] मन्दिर का स्वामी ; (षड्)। °वाडय पुन [°पाटक] मेवाड़ का एक गाँव ; "देउलवाडयपत्तं तुट्टणसीलं च अइमहग्घं" (वज्जा ११६)।
देउलिअ वि [देवकुलिक] देव स्थान का परिपालक ; (ओघ ४० भा)।
देउलिया स्त्री [देवकुलिका] छोटा देव-स्थान ; (उप पृ ३९९ ; ३२० टी)।
देंत देखो दा=दा।
देक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। देक्खइ ; (हे ४, १८१)। वकृ—देक्खंत ; (अभि १४१)। संकृ—देक्खिअ ; (अभि १९६)।
देक्खालिअ वि [दर्शित] दिखाया हुआ, बतलाया हुआ ; (सुर १, १५२)।
देख (अप) देखो देक्ख। देखइ ; (भवि)।
देट्ठ देखो दिट्ठ=दृष्ट ; (प्रति ४०)।
देण्ण देखो दइण्ण ; (गाया १, १—पत्त ३३)।

देपाल पुं [देवपाल] एक मंत्री का नाम ; (ती २)।
देप्प देखो दिप्प=दीप्। वकृ—देप्पमाण; (कुप्र ३४४)।
देय } देखो दा=दा।
देयमाण }
देर देखो दार=द्वार ; (हे १, ७९ ; २, १७२ ; दे ६, ११०)।
देव उभ [दिव्] १ जीतने की इच्छा करना। २ पण करना। ३ व्यवहार करना। ४ चाहना। ५ आज्ञा करना। ६ अव्यक्त शब्द करना। ७ हिंसा करना। देवइ ; (संक्षि ३३)।
देव पुंन [देव] १ अमर, सुर, देवता; "देवाणि, देवा" (हे १, ३४ ; जी १९ ; प्रासू ८६)। २ मेघ ; ३ आकाश; ४ राजा, नरपति ; "तहेव मेहं व नहं व माणवं न देव देवत्ति गिरं वएज्जा" (दस ७, ५२ ; भास ६६)। ५ पुं. परमेश्वर, देवाधिदेव ; (भग १२, ९ ; दंस ५ ; सुपा १३)। ६ साधु, मुनि, ऋषि ; (भग १२, ९)। ७ द्वीप-विशेष ; ८ समुद्र-विशेष ; (पण्ण १५)। ९ स्वामी, नायक ; (आचू ५)। १० पूज्य, पूजनीय ; (पंचा १)। °उत्त वि [°उप्त] देव से बोया हुआ ; २ देव-कृत ; "देवउत्ते अयं लोए" (सूअ १, १, ३)। °उत्त वि [°गुप्त] १ देव से रक्षित; (सूअ १, १, ३)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव ; (स १५४)। °उत्त पुं [°पुत्र] देव-पुत्र ; (सूअ १, १, ३)। °उल न [°कुल] देव-गृह, देव-मन्दिर ; (हे १, २७१; सुपा २०१)। °उलिया स्त्री [°कुलिका] देहरी, छोटा देव-मन्दिर ; (कुप्र १४४)। °कन्ना स्त्री [°कन्या] देव-पुत्री; (गाया १,८)। °कहकहय पुं [°कहकहक] देवताओं का कोलाहल; (जीव ३)। °किब्बिस पुं [°किल्बिष] चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति ; (ठा ४, ४)। °किब्बिसिय पुं [°किल्बिषिक] एक अधम देव-जाति ; (भग ९, ३३)। °किब्बिसीया स्त्री [°किल्बिषीया] देखो देवकिब्बिसिया ; (बृह १)। °कुरा स्त्री [°कुरा] क्षेत्र-विशेष, वर्ष-विशेष ; (इक)। °कुरु पुं [°कुरु] वही अर्थ ; (पण्ह १, ४ ; सम ७० ; इक)। °कुल देखो °उल ; (पि १६८ ; कप्प)। °कुलिय पुं [°कुलिक] पूजारी ; (आवम)। °कुलिया देखो °उलिआ ; (कुप्र १४४)। °गइ स्त्री [°गति] देव-योनि ; (ठा ५, ३)। °गणिया स्त्री [°गणिका] देव-वेश्या, अप्सरा ; (गाया १, १६)। °गिह न [°गृह]

देव-मन्दिर ; (सुपा १३ ; ३४८) । **°गुत्त** पुं [**°गुप्त**] १ एक परिव्राजक का नाम ; (औप) । २ एक भावी जिनदेव ; (तित्थ) । **°चंद** पुं [**°चन्द्र**] एक जैन उपासक का नाम ; (सुपा ६३२) । २ सुप्रसिद्ध श्री हेमचन्द्राचार्य के गुरु का नाम ; (कुप्र १६) । **°च्चय** वि [**°र्चक**] १ देव की पूजा करने वाला; २ पुं. मन्दिर का पूजारी ; (कुप्र ४४१ ; ती १५) । **°च्छंदग** न [**°च्छन्दक**] जिनदेव का आसन ; (जीव ३ ; राय) । **°जस** पुं [**°यशस्**] एक जैन मुनि ; (अंत ३ ; सुपा ३४२) । **°जाण** न [**°यान**] देव का वाहन ; (पंचा २) । **°जिण** पुं [**°जिन**] एक भावी जिनदेव का नाम ; (पव ७) । **°ड्ढि** देखो **देविड्ढि** ; (ठा ३, ३ ; राज) । **°णाअथ** पुं [**°नायक**] वही अर्थ ; (अच्चु ३७) । **°णाह** पुं [**°नाथ**] १ इन्द्र । २ परमेश्वर, परमात्मा ; (अच्चु ६७) । **°तम** न [**°तमस्**] एक प्रकार का अन्धकार ; (ठा ४, २) । **°त्थुइ, °थुइ** स्त्री [**°स्तुति**] देव का गुणानुवाद; (प्राप्र) । **°दत्त** पु [**°दत्त**] व्यक्ति-वाचक नाम ; (उत्त ६ ; पिंड ; पि ५६६) । **°दत्ता** स्त्री [**°दत्ता**] व्यक्ति-वाचक नाम ; (विपा १,१; ठा १०) । **°दव्व** न [**°द्रव्य**] देव-संबन्धी द्रव्य ; (कम्म १, ५६) । **°दार** न [**°द्वार**] देव-गृह विशेष का पूर्वीय द्वार, सिद्धायतन का एक द्वार ; (ठा ४, २) । **°दारु** पुं [**°दारु**] वृक्ष-विशेष, देवदारु का पेड़ ; (पउम ५३, ७६) । **°दाली** स्त्री [**°दाली**] वनस्पति-विशेष, रोहिणी ; (पण्ण १७—पत्र ५३०) । **°दिण्ण, °दिन्न** पुं [**°दत्त**] व्यक्ति-वाचक नाम, एक सार्थवाह-पुत्र; (राज; णाया १,२ —पत्र ८३) । **°दीव** पुं [**°द्वीप**] द्वीप-विशेष ; (जीव ३) । **°दूस** न [**°दूष्य**] देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र ; (जीव ३) । **°देव** पुं [**°देव**] १ परमेश्वर, परमात्मा ; (सुपा ५००) । २ इन्द्र, देवों का स्वामी ; (आचू ५)। **°नट्टिआ** स्त्री [**°नर्तिका**] नाचने वाली देवी, देव-नटी ; (अजि ३१) । **°नयरी** स्त्री [**°नगरी**] अमरावती, स्वर्ग-पुरी; (पउम ३२,३५)। **°पडिक्खोभ** पुं [**°प्रतिक्षोभ**] तमस्काय, अन्धकार ; (भग ६, ५) । **°पलिक्खोभ** देखो **°पडिक्खोभ**; (भग ६,५) । **°पव्वय** पुं [**°पर्वत**] पर्वत-विशेष; (ठा २,३—पत्र ८०)। **°प्पसाय** पुं [**°प्रसाद**] राजा कुमारपाल के पितामह का नाम; (कुप्र ५)। **°फलिह** पुं [**°परिघ**] तमस्काय, अन्धकार ; (भग ६, ५) । **°भद्द** पुं [**°भद्र**] १ देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३) । २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य ; (सार्ध ८३) । **°भूमि** स्त्री [**°भूमि**] १ स्वर्ग, देवलोक ; २ मरण, मृत्यु ; " अह अन्नया य सिद्धो थिरदेवो देवभूमिमणुपत्तो " (सुपा ५८२)। **°महाभद्द** पुं [**°महाभद्र**] देव-द्वीप का अधिष्ठाता देव; (जीव ३) । **°महावर** पुं [**°महावर**] देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष ; (जीव ३ ; इक) । **°रइ** पुं [**°रति**] एक राजा ; (भत्त १२२) । **°रक्ख** पु [**°रक्ष**] राक्षस-वंशीय एक राज-कुमार; (पउम ५, १६६) । **°रण्ण** न [**°रण्य**] तमःकाय, अन्धकार; (ठा ४,२)। **°रमण** न [**°रमण**] १ सौभाञ्जनी नगरी का एक उद्यान; (विपा १, ४) । २ रावण का एक उद्यान; (पउम ४६,१५) । **°राय** पुं [**°राज**] इन्द्र ; (पउम २, ३८, ४६, ३६) । **°रिसि** पुं [**°ऋषि**] नारद मुनि ; (पउम ११, ६८ ; ७८, १०) । **°लोअ, °लोग** पुं [**°लोक**] १ स्वर्ग; (भग ; णाया १, ४ ; सुपा ६१५ ; श्रा १६) । २ देव-जाति ; "कइविहा णं भंते देवलोगा पण्णत्ता ? गोयमा चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया" (भग ५, ६) । **°लोगगमण** न [**°लोकगमन**] स्वर्ग में उत्पत्ति; " पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभा " (सम १४२) । **°वर** पुं [**°वर**] देव-नामक समुद्र का अधिष्ठायक एक देव ; (जीव ३) । **°वहू** स्त्री [**°वधू**] देवाङ्गना, देवी ; (अजि ३०) । **°संणत्ति** स्त्री [**°संज्ञप्ति**] १ देव-कृत प्रतिबोध; २ देवता के प्रतिबोध से ली हुई दीक्षा; (ठा १०—पत्र ४७३) । **°संणिवाय** पुं [**°सन्निपात**] १ देव-समागम , (ठा ३, १) । २ देव-समूह ; ३ देवों की भीड़ ; (राय) । **°सम्म** पुं [**°शर्मन्**] १ इस नाम का एक ब्राह्मण ; (महा) । २ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव; (सम १५३) । **°साल** न [**°शाल**] एक नगर का नाम, (उप ७६८ टी) । **°सुंदरी** स्त्री [**°सुन्दरी**] देवाङ्गना, देवी ; (अजि २८) । **°सुय** देखो **°स्सुय** ; (पव ७) । **°सेण** पुं [**°सेन**] १ शतद्वार नगर का एक राजा जिसका दूसरा नाम महापद्म था ; (ठा ६—पत्र ४५६) । २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव ; (पव ७) । ३ भरत-क्षेत्र के एक भावी जिनदेव के पूर्वभव का नाम ; (ती १६) । ४ भगवान् नेमिनाथ का एक शिष्य, एक अन्तकृद् मुनि,(अंत)। **°स्स** न [**°स्व**] देव-द्रव्य,जिनमन्दिर-संबन्धी धन ; (पंचा ५)। **°स्सुय** पुं [**°श्रुत**] भरतक्षेत्र

के छठवें भावी जिन-देव ; (सम १५३)। °हर न [°गृह] देव-मन्दिर ; (उप ४११)। °इदेव पुं [°तिदेव] अर्हन् देव, जिन भगवान् ; (भग १२, ६)। °णंद पुं [°नन्द] ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न होने वाले चौवीसवें जिनदेव ; (सम १५४)। °णंदा स्त्री [°नन्दा] १ भगवान् महावीर की प्रथम माता ; (आचा २, १५, १)। २ पक्ष की पन्दरहवीं रात्रि का नाम ; (कप्प)। °णुप्पिय पुं [°नुप्रिय] भद्र, महाशय, महानुभाव, सरल-प्रकृति; (औप; विपा १,१; महा)। °यरिअ पुं [°चार्य] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य; (सु ७)। °रण्ण देखो °रण्ण ; (भग ६, ५)। २ देवों का क्रीड़ा-स्थान ; (जो ६)। °लय पुं [°लय] स्वर्ग; (उप २६४ टी)। °हिदेव पुं [°धिदेव] परमेश्वर, परमात्मा, जिनदेव ; (सम ४३; सं ५)। °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र, देव-नायक ;(सूअ १, ६)।

देव देखो दइव ; (उप ३५६ टी ; महा; हे १, १५३ टि)। °ण्णु वि [°ज्ञ] ज्योतिष-शास्त्र का जानकार, (सुपा २०१)। °पर वि [°पर] भाग्य पर ही श्रद्धा रखने वाला , (षड्)।

देवई स्त्री [देवकी] श्रीकृष्ण की माता, आगामी उत्सर्पिणी काल में होने वाले एक तीर्थंकर-देव का पूर्व भव ; (पउम २०, १८५ ; सम १५२ ; १५४)। देखो देवकी।

देवउप्फ न [दे] पक्व पुष्प, पका हुआ फल , (दे ५, ४६)।

देवं देखो दा=दा।

देवंग न [दे दिव्याङ्ग] देवदूष्य वस्त्र ; (उप ७३८)।

देवंधगार पुं [देवान्धकार] तिमिर-निचय ; (ठा ४,२)।

देवकिव्विस पुं [देवकिल्विष] एक अधम देव-जाति; (ठा ४, ४—पत्र २७४)।

देवकिव्विसिया स्त्री [देवकिल्विषिकी] भावना-विशेष, जो अधम देव-योनि में उत्पत्ति का कारण है ; (ठा ४, ४)।

देवकी देखो देवई। °णंदण पुं [°नन्दन] श्रीकृष्ण; (विचा १८३)।

देवत्त न [दैवत] देव, देवता ; (सुपा १५७)।

देवय देखो देव=देव ; (महा; गाया १, १८)।

देवया स्त्री [देवता] १ देव, अमर; (अभि ११७ ; प्रासु)। २ परमेश्वर, परमात्मा ; (पंचा १)।

देवर देखो दिअर; (हे १, १८६ ; सुपा ४८५)।

देवराणी देखो देअराणी; (दे १, ५१)।

देवसिअ वि [दैवसिक] दिवस-संबन्धी; (ओघ ६२६ ; ६३६ ; सुपा ४१६)।

देवसिआ स्त्री [देवसिका] एक पतिव्रता स्त्री, जिसका दूसरा नाम देवसेना था ; (पुप्फ ६७)।

देविंद पुं [देवेन्द्र] १ देवों का स्वामी, इन्द्र ; (हे ३, १६२ ; गाया १, ८ ; प्रासु १०७)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार; (भाव २१)। °सूरि पुं [°सूरि] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार ; (कम्म ३, २४)।

देविड्ढि स्त्री [देवर्द्धि] १ देव का वैभव; २ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (कप्प)।

देविय वि [दैविक] देव-संबन्धी ; (सुर ४, २३६)।

देवी स्त्री [देवी] १ देव-स्त्री ; (पंचा २)। २ रानी, राज-पत्नी ; (विपा १, १ ; ५)। ३ दुर्गा, पार्वती ; (कप्पू)। ४ सातवें चक्रवर्ती और अठारहवें जिन-देव की माता ; (सम १५१ ; १५२)। ५ दशवें चक्रवर्ती की अग्र-महिषी ; (सम १५२)। ६ एक विद्याधर-कन्या ; (पउम ६, ४)।

देवीकय वि [देवीकृत] देव बनाया हुआ; "अणिमिसणअ-णो सअलो जीए देवीकओ लोओ" (गा ५६२)।

देवुक्कलिआ स्त्री [देवोत्कलिका] देवो की ठठ, देवों की भीड़ ; (ठा ४, ३)।

देवेसर पुं [देवेश्वर] इन्द्र, देवों का राजा ; (कुमा)।

देवोद पुं [देवोद] समुद्र-विशेष ; (जीव ३ ; इक)।

देवोववाय पुं [देवोपपात] भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पि-णी काल में होने वाले तेईसवें जिन-देव ; (सम १५४)।

देव्व देखो दिव्व=दिव्य ; (उप ६८६ टी)।

देव्व देखो दइव ; (गा १३२ ; महा ; सुर ११, ४ ; अभि ११७), "एसो य देव्वो णाम अणाराहणीओ विणएण" (स १२८)। °ज्ज, °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] जोतिषी, ज्योतिष-शास्त्र को जानने वाला ; (षड् ; कप्पू)।

देस सक [देशय्] १ कहना, उपदेश देना। २ बतलाना। वकृ—देसयंत ; (सुपा ४८५ ; सुर १५, २४८)। संकृ—देसित्ता ; (हे १, ८८)।

देस पुं [देश] १ अंश, भाग ; (ठा २, २ ; कप्प)। २ देश, जनपद ; (ठा ५, ३ ; कप्प ; प्रासु ४२)। ३ अवसर ; (विसे २०६३)। ४ स्थान, जगह ;(ठा ३, ३)। °कहा स्त्री [°कथा] जनपद-वार्ता ; (ठा ४, २)। °काल देखो °याल ; (विसे २०६३)। °जइ पुं

[°यति] श्रावक, उपासक, जैन गृहस्थ ; (कम्म २ टी; श्राउ)। °ण्णु वि [°ज्ञ] देश की स्थिति को जानने वाला ; (उप १७६ टी)। °भासा स्त्री [°भाषा] देश की बोली ; (बृह ६)। °भूसण पुं [°भूषण] एक केवल-ज्ञानी महर्षि; (पउम ३६,१२२)। °याल पुं [°काल] प्रसंग, अवसर, योग्य समय; (पउम ११, ६३)। °राय वि [°राज] देश का राजा; (सुपा ३५२)। °वगासिय देखो °विगासिय ; (सुपा ५६६)। °विरइ स्त्री [°विरति] श्रावक धर्म, जैन गृहस्थ का व्रत, अणुव्रत, हिंसा आदि का आंशिक त्याग ; (पंचा १०)। °विरय वि [°विरत] श्रावक, उपासक; २ न. पाँचवाँ गुण-स्थानक : (पव २२)। °विराहय वि [°विराधक] व्रत आदि में आंशिक दूषण लगाने वाला; (भग ८, ६)। °विराहि वि [°विराधिन्] वही अर्थ ; (गाया १, ११—पत्र १७१)। °विगास न [°विकाश] श्रावक का एक व्रत ; (सुपा ५६२)। °विगासिय न [°विकाशिक] वही अर्थ ; (औप ; सुपा ५६६)। °ाहिव पुं [°ाधिप] राजा ; (पउम ६६, ५३)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] राजा ; (बृह ४)।

देसंतरिअ वि [देशान्तरिक] भिन्न देश का, विदेशी ; (उप १०३१ टी; कुप्र ४१३)।

देसग देखो देसय ; (द्र २६)।

देसण न [देशन] कथन, उपदेश, प्ररूपण ; (दं १)। २ वि. उपदेशक, प्ररूपक। स्त्री—°णी ; (दस ७)।

देसणा स्त्री [देशना] उपदेश, प्ररूपण; (राज)।

देसय वि [देशक] १ उपदेशक, प्ररूपक ; (सम १)। २ दिखलाने वाला, बतलाने वाला ; (सुपा १८६)।

देसि वि [द्वेषिन्] द्वेष करने वाला ; (रयण ३६)।

देसि, देसिअ } वि [देशिन्] १ अंशी, आंशिक, भाग वाला ; (विसे २२४७)। २ दिखलाने वाला; ३ उपदेशक; (विसे १४२५ ; भास २८)।

देसिअ वि [देश्य, दैशिक] देश में उत्पन्न, देश-संबन्धी; (उप ७६८ टी ; अच्चु ६)। °सद्द पुं [°शब्द] देशी-भाषा का शब्द ; (वज्जा ६)।

देसिअ वि [देशित] १ कथित, उपदिष्ट ; २ उपदर्शित ; (दं २२ ; प्रासू ५२ ; १३३ ; भवि)।

देसिअ वि [देशिक] १ पथिक, मुसाफिर; (पउम २४, १६; उप पृ ११५)। २ उपदेष्टा, गुरु; (विसे १४२५)। ३ प्रोषित, प्रवास में गया हुआ; (सुर १०, १६२)। °सहा स्त्री [°सभा] धर्मशाला; (उप पृ ११५)।

देसिअ देखो देसिअ। "पडिक्कमे देसिअं सव्वं" (पडि ; श्रा ६)।

देसिल्लग देखो देसिअ = देश्य ; (बृह ३)।

देसी स्त्री [देशी] भाषा विशेष, अत्यन्त प्राचीन प्राकृत भाषा का एक भेद ; (दे १, ४)। °भासा स्त्री [°भाषा] वही अर्थ; (गाया १, १; औप)।

देसूण वि [देशोन] कुछ कम, अंश को कमी वाला ; (सम १, १०३; दं २८)।

देस्स वि [द्वेष्य] १ देखने योग्य ; २ देखने को शक्य; (स १६६)।

देह देखो देक्ख। देहई, देहए ; (उत १६, ६; पि ६६)। वकृ—देहमाण ; (भग ६, ३३)।

देह पुन [देह] १ शरीर, काय ; (जी २८; कुप्र १५३. प्रासू ६५)। २ पिशाच-विशेष; (इक; पण्ण १)। °रय न [°रत] मैथुन ; (वज्जा १०८)।

देहंबलिया स्त्री [देहबलिका] भिक्षा-वृत्ति, भीख को आजीविका ; (गाया १, १६—पत्र १६६)।

देहणी स्त्री [दे] पंक, कर्दम, कादा ; (दे ५, ४८)।

देहरय (अप) न [देवगृहक] देव-मन्दिर; (वज्जा १०८)।

देहली स्त्री [देहली] चौखट, द्वार के नीचे की लकड़ी, (गा ५२५ ; दे १, ६५; कुप्र १८३)।

देहि पुं [देहिन्] आत्मा, जीव ; (स १६५)।

देहुर (अप) न [देवकुल] देव-स्थान, मन्दिर ; (भवि)।

दो अ [द्विधा] दो प्रकार से, दो तरह ; (सुपा २३३ ; ३१२)।

दो त्रि.व. [द्वि] दो, उभय, युग्म ; (हे १, ६४)।

दो पुं [दोस्] हाथ, बाहु ; (विक ११३ ; रंभा; कप्पू)।

दोअई स्त्री [द्विपदी] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

दोआल पुं [दे] वृषभ, बैल ; (दे ५, ४६)।

दोइ देखो दो=द्विधा ; (बृह ३)।

दोंबुर [दे] देखो दोबुर ; (षड्)।

दोकिरिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो क्रियाओं के अनुभव को मानने वाला ; (ठा ७)।

दोक्कर देखो दुक्कर ; (भवि)।

दोक्खर पुं [द्वि-अक्षर] षण्ढ, नपुंसक ; (बृह ४)।

दोखंड देखो दुखंड ; (भवि) ।
दोखंडिअ वि [द्विखण्डित] जिसके दो टुकड़े किये गये हों वह ; (भवि) ।
दोगंछि वि [जुगुप्सिन्] घृणा करने वाला ; (पि ७४) ।
दोगच्च न [दौर्गत्य] १ दुर्गति, दुर्दशा ; (पंचव ४) । २ दारिद्र्य, निर्धनता ; (सुपा २३०) ।
दोगुंछि देखो दोगंछि ; (पि २१५) ।
दोगुंदुय पुं [दोगुन्दुक] उत्तम-जातीय देव-विशेष ; (सुपा ३३) ।
दोग्ग न [दे] युग्म, युगल ; (दे ५, ४६ ; षड्) ।
दोग्गइ देखो दुग्गइ ; (सुर ८, १११) । °कर वि [°कर] दुर्गति-जनक ; (पउम ७३, १०) ।
दोग्गच्च देखो दोगच्च ; (गा ७६) ।
दोग्घट्ट, दोग्घोट्ट, दोघट्ट पुं [दे] हाथी, हस्ती ; (पि ४३६ ; षड् ; पाअ ; महा ; लहुअ ४; स १६१) ।
दोचूड पुं [द्विचूड] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४५) ।
दोच्च वि [द्वितीय] दूसरा ; (सम २, ८ ; विपा १,२) ।
दोच्च न [दौत्य] दूतपन, दूत-कर्म ; (णाया १, ८ ; गा ८४) ।
दोच्चं अ [द्विस्] दो वार, दो वख्त, "एवं च निसामित्ता दोच्चं तच्चं समुल्लवंतस्स" (सुर २, २६) ।
दोच्चंग न [द्वितीयाङ्ग] १ दूसरा अङ्ग । २ पकाया हुआ शाक ; (वृह १) । ३ तीमन, कढ़ी ; (ओघ २६७ भा) ।
दोजीह पुं [द्विजिह्व] १ दुर्जन, २ साँप; (सुर १,२०) ।
दोज्झ वि [दोह्य] दोहने योग्य ; (आचा २, ४, २) ।
दोण पुं [द्रोण] १ धनुर्वेद के एक सुप्रसिद्ध आचार्य, जो पाण्डव और कौरवों के गुरु थे ; (णाया १, १६ ; वेणी १०४) । २ एक प्रकार का परिमाण ; (जो २) । °मुह न [°मुख] नगर, जल और स्थल के मार्ग वाला शहर ; (पण्ह १, ३ ; कप्प ; औप) । °मेह पुं [°मेघ] मेघ-विशेष, जिसकी धारा से बड़ी कलशी भर जाय वह वर्षा ; (विसे १४५८) । °सुया स्त्री [°सुता] लक्ष्मण की स्त्री का नाम, विशल्या; (पउम ६४, ४४) ।
दोणअ पुं [दे] १ आयुक्त, गाँव का मुखिया ; २ हालिक, हलवाह, हल जोतने वाला ; (दे ५, ५१) ।
दोणक्का स्त्री [दे] सरघा, मधुमक्खी (दे ५, ५१) ।
दोणी स्त्री [द्रोणी] १ नौका, छोटा जहाज ; (पण्ह १, १ ; दे २, ४७; धम्म १२ टी) । २ पानी का बड़ा कुँडा; (अणु ; कुप्र ४४१) ।
दोत्तडी स्त्री (दुस्तटी] दुष्ट नदी ; "एगत्तो सद्दूलो अन्नत्तो दोत्तडी वियडा" (उप ५३० टी ; सुपा ४६३) ।
दोत्थ न [दौःस्थ्य] दुःस्थता, दुर्दशा, दुर्गति ; (वव ४ ; ७) ।
दोद्दाण वि [दुर्दान] दुःख से देने योग्य; (संक्षि ४) ।
दोद्दिअ पुं [दे] चर्म-कूप, चमड़े का बना हुआ भाजन-विशेष ; (दे ५, ४६) ।
दोधअ, दोधक न [दोधक] छन्द-विशेष ; (पिंग) ।
दोधार पुं [द्विधाकार] द्विधाकरण, दो भाग करना ; (ठा ५, ३—पत्र ३४६) ।
दोबुर पुं [दे] तुम्बुरु, स्वर्ग-गायक; (षड्) ।
दोब्बल्ल न [दौर्बल्य] दुर्बलता ; (पि २८७ ; काप्र ८५) ।
दोभाय वि [द्विभाग] दो भाग वाला, दो खण्ड वाला ; (उप १४७ टी) ।
दोमणंसिय वि [दौर्मनस्यिक] खिन्न, शोक-ग्रस्त ; (ठा ५, २—पत्र ३१३) ।
दोमासिअ वि [द्वैमासिक] दो मास का ; (भग ; सुर १४, २२८) । स्त्री—°आ; (सम २१) ।
दोमिय (अप) देखो दूमिअ=दावित ; (भवि) ।
दोमिली स्त्री [दोमिली] लिपि-विशेष ; (राज) ।
दोमुह वि [द्विमुख] १ दो मुँह वाला; २ पुं. नृप-विशेष ; (महा) । ३ दुर्जन ; (गा २५३) ।
दोर पुं. [दे] १ डोरा, धागा, सूत; (पउम ४,५०; कुप्र २२६; सुर ३, १४१) । २ छोटी रस्सी; (ओघ३२; ६४ भा) । ३ कटी-सूत्र ; (दे ५, ३८) ।
दोरी स्त्री [दे] छोटी रस्सी ; (श्रा १६) ।
दोल अक [दोलय्] १ हिलना ; २ झूलना । दोलइ ; (हे ४, ४८) । दोलंति; (कप्पू) ।
दोलणय न [दोलनक] झूलन, अन्दोलन; (दे ८, ४३) ।
दोलया, दोला स्त्री [दोला] झूला, हिंडोला ; (सुपा २८६ ; कुमा) ।

दोलाइय वि [दोलायित] १ हिला हुआ ; २ संशयित; (हेका ११६)।
दोलायमाण वि [दोलायमान] १ हिलता हुआ; २ संशय करता हुआ ; (सुपा ११७ ; गउड)।
दोलिया देखो **दोला** ; (सुर ३, ११६)।
दोलिर वि [दोलयितृ] भूलने वाला ; (कुमा)।
दोव पुं [दोव] एक अनार्य जाति ; (राज)।
दोवई स्त्री [द्रौपदी] राजा द्रुपद की कन्या, पाण्डव-पत्नी ; (णाया १, १६ ; उप ६४८ टी ; पडि)।
दोवयण देखो **दुवयण**=द्विवचन ; (हे १, ६४ ; कुमा)।
दोवार (अप) देखो **दुवार**; (सण)।
दोवारिज्ज, **दोवारिय** पुं [दौवारिक] द्वार-पाल, दरवान, प्रतीहार; (निचू ६ ; णाया १, १ ; भग ६, ५ ; सुपा ४२६)।
दोविह देखो **दुविह** ; (उत्त २ ;नव ३)।
दोवेली स्त्री [दे] सायं-काल का भोजन ; (दे ५,५०)।
दोव्वल देखो **दोव्वल** ; (से ४, ४२ ; ८, ८७)।
दोस देखो **दूस**=दूष्य ; (औप ; उप ७६८ टी)।
दोस पुं [दोष] दूषण, दुर्गुण, ऐब ; (औप ; सुर१, ७३ ; स्वप्न ६० ; प्रासू १३)। °न्नु वि [°ज्ञ] दोष का जानकार, विद्वान् ; (पि १०५)। °ह वि [°घ्न] दोष-नाशक ; "कुव्वंति पोसहं दोसहं सुद्धं" (सुपा ६२१)।
दोस पुं [दे] १ अर्ध, आधा; (दे ५, ५६)। २ कोप, क्रोध; (दे ५, ५६ ; षड्)। ३ द्वेष, द्रोह ; (औप ; कप्प ; ठा १ ; उत्त ६ ; सूअ १, १६ ; पण्ण२३ ; सुर१, ३३ ; सण ; भवि ; कुप्र ३७१)।
दोस पुं [दोस्] हाथ, हस्त, बाहु ; (से २, १)।
दोसणिज्जंत पुं [दे] चन्द्र, चन्द्रमा; (दे ५, ५१)।
दोसा स्त्री [दोषा] रात्रि, रात ; (सुर १, २१)।
दोसाकरण न [दे] कोप, क्रोध ; (दे ५, ५१)।
दोसाणिअ वि [दे] निर्मल किया हुआ ; (दे ५, ५१)।
दोसायर पुं [दोषाकर] १ चन्द्र, चाँद; (उप ७२८ टी ; सुपा २७५)। २ दोषों की खान, दुष्ट ; (सुपा २७५)।
दोसारअण पुं [दे.दोषारत्न] चन्द्र, चाँद ; (षड्)।
दोसासय पुं [दोषाश्रय] दोष-युक्त, दुष्ट; (पउम११७,४१)।
दोसि त्रि [दोषिन्] दोष वाला, दोषी; (कुप्र ४३८)।
दोसिअ पुं [दौष्यिक] वस्त्र का व्यापारी ; (श्रा १२ ; चज्जा १६२)।
दोसिण [दे] देखो **दोसीण** ; (पण्ह २, ५)।
दोसिणा [दे] नीचे देखो ; (ठा २,४—पत्र ८६)। °भा स्त्री [°भा] चन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४, १ ; इक ; णाया २)।
दोसिणी स्त्री [दे. दोषिणी] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश; (दे५, ५०)। "ससिजुण्हा दोसिणी जत्थ" (कुप्र ४३८)।
दोसियण्ण न [दोषिकान्न] वासी अन्न ; (राज)।
दोसिल्ल वि [दोषवत्] दोष-युक्त ; (धम्म ११ टी)।
दोसिल्ल वि [दे] द्वेष-युक्त, द्वेषी ; (विसे१११०)।
दोसीण न [दे] रात-वासी अन्न ; (पण्ह २, ५ ; ओघ १४५)।
दोसोलह त्रि. ब. [द्विषोडशन्] बत्तीस; (कप्पू)।
दोह पुं [दोह] दोहन ; (दे २, ६४)।
दोह वि [दोह्य] दोहने योग्य , (भास ८६)।
दोह पुं [द्रोह] ईर्ष्या, द्वेष ; (प्राप्र ; भवि)।
दोहग्ग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, दुरदृष्ट, कमनसीबी ; (पण्ह १, ४ ; सुर ३, १७४ ; गा २१२)।
दोहग्गि वि [दौर्भागिन्] दुष्ट भाग्य वाला, कमनसीब, मन्द-भाग्य ; (श्रा १६)।
दोहण न [दोहन] दोहना, दूध निकालना ; (पण्ह१, १)। °वाडण न [°पाटन] दोहन-स्थान; (निचू २)।
दोहणहारी स्त्री [दे] १ दोहने वाली स्त्री ; (दे१, १०८ ; ५, ५६)। २ पनिहारी, पानी भरने वाली स्त्री ; (दे ५, ५६)।
दोहणी स्त्री [दे] पंक, कादा, कर्दम ; (दे ५, ४८)।
दोहय वि [दोहक] दोहने वाला ;(गा ४६२)।
दोहय वि [द्रोहक] द्रोह करने वाला, ईर्ष्यालु; (उप ३५७ टी ; भवि)।
दोहल पु [दोहद] गर्भिणी स्त्री का मनोरथ ; (हे१, २१७; २२१ ; कप्प)।
दोहा अ [द्विधा] दो प्रकार ; (हे १, ६७)।
दोहाइअ वि [द्विधाकृत] जिसका दो खण्ड किया गया हो वह ; (हे १, ६७ ; कुमा)।
दोहासल न [दे] कटी-तट, कमर ; (दे ५, ५०)।
दोहि वि [दोहिन्] झरने वाला, टपकने वाला; (गा ६३६)।
दोहि वि [द्रोहिन्] द्रोह करने वाला ; (भवि)।
दोहित्त पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का ; (दे६, १०६ ; सुपा ३६४)

१)। २ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र ; (णाया १, १८)। °पइ देखो °वइ; (विपा २, १)। °पवर पुं [°प्रवर] एक श्रेष्ठी ; (महा)। °पाल पुं [°पाल] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र; (णाया १, १८) । देखो °वाल। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] कुण्डलवर द्वीप की राजधानी; (दीव)। °मंत, °मण वि [°वत्] धनी, धनवान्; (पिंग; हे २, १५९; षड)। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैन मुनि; (पउम २०,१७१)। °य पुं [°द] १ एक सार्थवाह; (सुपा ५०६) । २ एक विद्याधर राजा, जो राजा रावण की मौसी का लड़का था ; (पउम ८, १२४) । ३ कुबेर; (महा)। ४ वि. धन देने वाला; "धणओ धणत्थिआणं" (रयण ३८)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र; (णाया १, १८)। °वइ पुं [°पति] १ कुबेर, (णाया १, ४—पत्र ९९ ; उप पृ १८०; सुपा ३८)। २ एक राज-कुमार; (विपा २, ६)। °वई स्त्री [°वती] एक सार्थवाह-पुत्री; (दंस १)। °वंत, °वत्त देखो °मंत, (हे २, १५९; चंड)। °वह पुं [°वह] १ एक श्रेष्ठी (दंस १)। २ एक राजा; (विपा २,२)। °वाल देखो °पाल। २ राजा भोज के समकालिक एक जैन महाकवि ; (धण ५०)। °संचया स्त्री [°संचया] एक वणिग्-महिला; (महा)। °सम्म पुं [°शर्मन्] एक वणिक्; (गच्छ २)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक वणिग्-महिला ; (आव ४)। °सेण पुं [°सेन] एक राजा ; (दंस ४)। °ल वि [°वत्] धनी ; (प्राप्र) । °वह वि [°वह] १ धन को धारण करने वाला, धनी। २ पुं. एक श्रेष्ठी; (दंस ४)। ३ एक राजा ; (विपा २, २)।

धणंजय पुं [धनञ्जय] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव, (वेणी ११०)। २ वह्नि, अग्नि; ३ सर्प-विशेष ; ४ वायु-विशेष, शरीर-व्यापी पवन ; ५ वृक्ष-विशेष; (हे १, १७७; २,१८५; षड्)। ६ उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र ; (इक)। ७ पक्ष का नववाँ दिन ; (जो ४)। ८ श्रेष्ठि-विशेष; (आव ४)। ९ एक राजा ; (आवम)।

धणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज ; (विसे १५०)।

धणि स्त्री [ध्राणि] १ तृप्ति, सन्तोष ; (औप)। २ अतृप्ति उत्पन्न करने की शक्ति ; "भमिधणिवितण्हयाई" (विसे १६५३)।

धणि वि [धनिन्] धनिक, धनवान् ; (हे २, १५९)।

धणिअ वि [धनिक] १ पैसादार, धनी ; (दे १, १४८)। २ पुं. मालिक, स्वामी ; (श्रा १४)।

धणिअ न [दे] अत्यन्त, गाढ़, अतिशय ; (दे ५, ५८; औप; भग ; महा; कप्प ; सुर १, १७५ ; भत्त ७३; पच्च ८२ ; जीव ३; उत्त १; वव २ ; स ६९७)।

धणिअ वि [धन्य] धन्यवाद के योग्य, प्रशंसनीय, स्तुति-पात्र ; " जाण धणियस्स पुरओ निवडति रणम्मि असिघाया " (पउम ५६, २५ ; अच्चु ४२)।

धणिआ स्त्री [दे] १ प्रिया, भार्या, पत्नी ; (दे ५, ५८; गा ५८२ ; भवि)। २ धन्या, स्तुति-पात्र स्त्री; (षड्)।

धणिट्ठा स्त्री [धनिष्ठा] नक्षत्र-विशेष ; (सम १० ; १३; सुर १६ २४९ ; इक)।

धणी स्त्री [दे] १ भार्या, पत्नी ; २ पर्याप्ति; ३ जो बँधा हुआ होने पर भी भय-रहित हो वह ; (दे ५, ६२), " सयमेव मंकणीए धणीए तं ककणी बद्धा" (कुप्र १८५)।

धणु पुंन [धनुष्] १ धनुष, चाप, कार्मक ; (षड् ; हे १, २२)। २ चार हाथ का परिमाण; (अणु ; जी २९)। ३ पुं. परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २९)। °कुडिल न [कुटिलधनुष्] वक्र धनुष ; (राय)। °ग्गह पुं [°ग्रह] वायु-विशेष ; (बृह ३)। °द्धय पुं [°ध्वज] नृप-विशेष ; ठा ८)। °द्धर वि [°धर] धनुर्विद्या में निपुण, धानुष्क ; (राज ; पउम ६, ८७)। °पिट्ठ न [°पृष्ठ] १ धनुष का पृष्ठ-भाग ; २ धनुष के पीठ के आकार वाला क्षेत्र; (सम ७३)। °पुहत्तिया स्त्री [°पृथक्त्विका] कोस, गव्यूत ; (पण्ण १) । °वेअ, °व्वेअ पुं [°वेद] धनुर्विद्या-बोधक शास्त्र, इषु-शास्त्र ; (उप ९८६ टी ; सुपा २७० ; जं २)। °हर देखो °धर ; (भवि)।

धणुक्क, **धणुह** } ऊपर देखो ; (णंदि; अणु; हे १, २२ ; कुमा)।

धणुही स्त्री [धनुष्] कार्मुक; "वेसाओ व धणुहीओ गुणबद्धाओवि पयइकुडिलाओ" (कुप्र२७४; स ३८१)।

धणेसर पुं [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैन मुनि और ग्रन्थकार; (सुर १, २४९ ; १६, २५०)।

धण्ण पुं [धन्य] १ एक जैन मुनि, २ 'अनुत्तरोपपातिकदसा' सूत्र का एक अध्ययन ; (अनु २)। ३ यक्ष-विशेष ; (विपा २, २)। ४ वि. कृतार्थ; ५ धन-लाभ के योग्य ; ६ स्तुति-पात्र, प्रशंसनीय, ७ भाग्यशाली, भाग्यवान्; (णाया १, १; कप्प ; औप)।

धण्ण देखो धन्न=धान्य ; (श्रा १८; ठा ५, ३ ; वव १)।

[°**ख्याति**] धर्म से ख्याति वाला, धर्मात्मा; (औप)। °**गुरु** पुं [°**गुरु**] धर्म-दर्शक गुरु, धर्माचार्य ; (द्र १)। °**गुत्त** वि [°**गुप्**] धर्म-रक्षक , (पड्)। °**घोस** पुं [°**घोप**] कईएक जैन मुनि और आचार्यों का नाम ; (आचू १; ती ७ ; आव ४ ; भग ११, ११)। °**चक्क** न [°**चक्र**] जिनदेव का धर्म-प्रकाशक चक्र ; (पव ४० ; सुपा ६२)। °**चक्कवट्टि** पुं [°**चक्रवर्तिन्**] जिन-देव ; (आचू १)। °**चक्कि** पुं [**चक्रिन्**] जिन भगवान् ; (कुम्मा ३०)। °**जणणी** स्त्री [°**जननी**] धर्म की प्राप्ति कराने वाली स्त्री, धर्म-देशिका , (पंचा १६)। °**जस** पुं [°**यशस्**] जैन मुनि-विशेष का नाम; (आव ४)। °**जागरिया** स्त्री [°**जागर्या**] १ धर्म-चिन्तन के लिए किया जाता जागरण; (भग १२, १)। २ जन्म से छठवें दिन में किया जाता एक उत्सव ; (कप्प)। °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] १ धर्म-द्योतक ध्वज, इन्द्र-ध्वज, (राय)। २ ऐरवत क्षेत्र के पांचवें भावी जिन-देव ; (सम १५४)। °**ज्झाण** न [°**ध्यान**] धर्म-चिन्तन, शुभ ध्यान-विशेष ; (सम ६)। °**ज्झाणि** वि [°**ध्यानिन्**] धर्म ध्यान से युक्त ; (आव ४)। °**ट्ठि** वि [°**ार्थिन्**] धर्म का अभिलाषी ; (सुअ १, २, २)। °**णायग** वि [°**नायक**] १ धर्म का नेता, (सम १ ; पडि)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] धर्म का ज्ञाता ; (दंस ४)। °**तित्थयर** पुं [°**तीर्थंकर**] जिन भगवान् ; (उत्त २३ ; पडि)। °**त्थ** न [°**ास्त्र**] अस्त्र-विशेप, एक प्रकार का हथियार, (पउम ७१, ६३)। °**त्थि** देखो °**ट्ठि** ; (पंचव ४)। °**त्थिकाय** पुं [°**ास्तिकाय**] गति-क्रिया में सहायता पहुँचाने वाला एक अरूपी पदार्थ; (भग)। °**दय** वि [°**दय**] धर्म की प्राप्ति कराने वाला, धर्म-देशक ; (भग)। °**दार** न [°**द्वार**] धर्म का उपाय , (ठा ४,४)। °**दार** पुं ब. [°**दार**] धर्म-पत्नो, (कप्पू)। °**दास** पुं [°**दास**] भगवान् महावीर का एक शिष्य, और उपदेशमाला का कर्ता ; (उव)। °**देव** पुं [°**देव**] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य ; (सार्ध ७८)। °**देसग**, °**देसय** वि [°**देशक**] धर्म का उपदेश करने वाला ; (राज ; भग ; पडि)। °**धुरा** स्त्री [°**धुरा**] धर्म रूप धुरा ; (णाया १, ८) °**नायग** देखो °**णायग**, (भग) । °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] १ धर्म की प्रतिज्ञा ; २ धर्म का साधन-भूत शरीर; (ठा १)। °**पण्णत्ति** स्त्री [°**प्रज्ञप्ति**] धर्म की प्ररूपणा ; (उवा)। °**पद्दिणी** (शौ) स्त्री [°**पत्नी**] धर्म-पत्नी, स्त्री, भार्या (अभि २२२)। °**पिवासय** वि [°**पिपासक**] धर्म के लिए प्यासा ; (भग)। °**पिवासिय** वि [°**पिपासित**] धर्म की प्यास वाला; (तंदु)। °**पुरिस** पु [°**पुरुष**] धर्म-प्रवर्तक पुरुप ; (ठा ३, १)। °**पलज्जण** वि [°**प्ररञ्जन**] धर्म में आसक्त ; (णाया १, १८)। °**प्पवाइ** वि [°**प्रवादिन्**] धर्मोपदेशक ; (आचानि १, ४, २)। °**प्पह** पुं [°**प्रभ**] एक जैन आचार्य ; (रयण ५८)। °**प्पावाउय** वि [°**प्रावादुक**] धर्म-प्रवाद। धर्मोपदेशक ; (आचानि १, १४, १)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] धार्मिक, धर्म-मति ; २ पुं. एक राजा का नाम , (उप ७२८ टी)। °**मित्त** पुं [°**मित्त्र**] भगवान् पद्म-प्रभ का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५१)। °**य** वि [°**द**] धर्म-दाता, धर्म-देशक ; (सम १)। °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] १धर्म-प्रीति; (धर्म २)। २ वि. धर्म में रुचि वाला , (ठा १०)। ३ पुं. एक जैन मुनि; (विपा १, १; उप ६४८ टी)।४ वाराणसी का एक राजा; (आवम)। °**लाभ** पुं [°**लाभ**] १ धर्म की प्राप्ति ; २ जैन साधु द्वारा दिया जाता आशीर्वाद ; (सुर ८, १०६)। °**लाभिअ** वि [°**लाभित**] जिसको 'धर्मलाभ' रूप आशीर्वाद दिया गया हो वह; (स ६६)। °**लाह** देखो °**लाभ**, (स ३६)। °**लाहण** न [°**लाभन**] धर्मलाभ-रूप आशीर्वाद देना; "कयं धम्मलाहणं" (स ४६६)। °**लाहिअ** देखो **लाभिअ** ; (स १४८)। °**वंत** वि [°**वत्**] धर्म वाला; (आचा)। °**वय** पुं [°**व्यय**] धर्मार्थ दान, धर्मादा; (सुपा ६१७)। °**वि**, °**विउ** वि [°**वित्**] धर्म का जानकार ; (आचा)। °**विज्ज** पुं [°**वैद्य**] धर्माचार्य ; (पंचव १)। °**व्वय** देखो °**वय** , (सुपा ६१७)। °**सद्धा** स्त्री [°**श्रद्धा**] धर्म-विश्वास, (उत्त २६)। °**सण्णा** देखो °**सन्ना**; (भग ७, ६)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**] धर्म-प्रतिपादक शास्त्र ; (दंस ४)। °**सन्ना** स्त्री [°**संज्ञा**] १ धर्म-विश्वास ; २ धर्म-बुद्धि ; (पण्ह १, ३)। °**सारहि** पुं [°**सारथि**] धर्मरथ का प्रवर्तक, धर्म-देशक; (धण २७; पडि)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] धर्म-स्थान; (कप्पू ३३)। °**सील** वि [°**शील**] धार्मिक, (सूअ २, २)। °**सीह** पुं [°**सिंह**] १ भगवान् अभि-नन्दन का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५१)। २ एक जैन मुनि ; (संथा ६६)। °**सेण** पुं [°**सेन**] एक वलदेव का पूर्वभवीय नाम; (सम १५३)। °**ाइगर** वि [°**ादिकर**] धर्म का प्रथम प्रवर्तक; २ पुं. जिन-देव; (धर्म २)। °**ाणुट्ठाण**

(d) $2x - 3y = 0$

न [°ानुष्ठान] धर्म का आचरण; (धर्म १)। °**णुण्ण** वि [°ानुज्ञ] धर्म का अनुमोदन करने वाला ; (सूत्र २, २ ; णाया १, १८)। °**णुय** वि [°ानुग] धर्म का अनुसरण करने वाला ; (औप) । °**ायरिय** पुं [°ाचार्य] धर्म-दाता गुरु; (सम १२०) । °**ावाय** पुं [°वाद] १ धर्म-चर्चा, २ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद; (ठा १०)। °**ाहिगरणिय** पुं [°ाधिकरणिक] न्यायाधीश, न्याय-कर्त्ता; (सुपा ११७) । °**ाहिगारि** वि [°ाधिकारिन्] धर्म-ग्रहण के योग्य; (धर्म १)।

धम्म वि [धर्म्य] धर्म-युक्त धर्म-संगत ; " जं पुण तुमं कहेसि तमेव धम्मं " (महानि ४ ; द्र ४१)।

धम्मण्णय पुं [दे] वृक्ष-विशेष ; (उप १०३१ टी ; पउम ४२, ६)।

धम्ममाण देखो **धम** ।

धम्मय पुं [दे] १ चार अंगुल का हस्त-व्रण; २ चण्डी देवी का नर-बलि ; (दे ५, ६३)।

धम्मि वि [धर्मिन्] १ धर्म-युक्त, द्रव्य, पदार्थ । २ धार्मिक, धर्म-परायण ; (सुपा २६; ३३६ ; ५०६ ; वज्जा १०६)।

धम्मिअ } वि [धार्मिक] १ धर्म-तत्पर, धर्म-परायण; (गा
धम्मिग } १६७ ; उप ८६२ ; पण्ह २, ४)। २ धर्म-सम्बन्धी ; (उप २६४; पंचा ६) । ३ धार्मिक-संबन्धी ;(ठा ३, ४)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मिष्ठ] अतिशय धार्मिक ; (औप ; सुपा १४०)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मेष्ट] धर्म-प्रिय; (औप)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मेष्ट] धार्मिक जन को प्रिय ; (औप) ।

धम्मिल्ल } पुंन [धम्मिल्ल] १ संयत केश, बँधा हुआ केश;
धम्मेल्ल } (प्राप्र; षड्; संक्षि ३) । २ पुं. एक जैन मुनि ; (आव ६)।

धम्मीसर पुं [धर्मेश्वर] अतीत उत्सर्पिणी-काल में भरत-वर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव ; (पव ७)।

धम्मुत्तर वि [धर्मोत्तर] १ गुणी, गुणों से श्रेष्ठ ; (आचू ५) । २ न. धर्म का प्राधान्य; "धम्मुत्तरं वड्ढउ" (पडि)।

धम्मोवएसग } वि [धर्मोपदेशक] धर्म का उपदेश देने
धम्मोवएसय } वाला; (णाया १,१६; सुपा १७२; धर्म२)।

धय सक [धे] पान करना, स्तन-पान करना । वकृ—**धयंत** ; (सुर १०, ३७)।

धय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका; (हे २, २७; णाया १, १६ ; पण्ह १, ४; गा ३४) । स्त्री—°**या** ; (पिंग) । °**वड** पुं [°पट] ध्वजा का वस्त्र ; (कुमा)।

धय पुं [दे] नर, पुरुष; (दे ५, ५७) ।

धयण न [दे] गृह, घर ; (दे ५,५७)।

धयरट्ठ पुं [धृतराष्ट्र] हंस पक्षी; (पाअ)।

धर सक [धृ] १ धारण करना । २ पकड़ना । धरइ, धरेइ; (हे ४, २३४; ३३६) । कर्म—धरिज्जइ; (पि ५३७) । वकृ—**धरंत, धरमाण**; (सण; भवि; गा ७६१) । कवकृ—**धरंत, धरेंत, धरिज्जंत, धरिज्जमाण**; (से ११, १२७ ; १४, ८१; राज ; पण्ह १, ४ ; औप) । संकृ—**धरिउं**; (कुप्र ७)। कृ—**धरियव्व** ; (सुपा २७२) ।

धर सक [धरय्] पृथिवी का पालन करना । वकृ—**धरंत**; (सुर २, १३०)।

धर न [दे] तूल, रूई ; (दे ५, ५७)।

धर पुं [धर] १ भगवान् पद्मप्रभ का पिता; (सम १५०)। २ मथुरा नगरी का एक राजा ; (णाया १, १६)। ३ पर्वत, पहाड़ ; (से ८, ६३ ; पाअ)।

°**धर** वि [°धर] धारण करने वाला ; (कप्प)।

धरग्ग पुं [दे] कपास ; (दे ५, ५८)।

धरण पुं [धरण] १ नाग-कुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३ ; औप) । २ यदुवंशीय राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र ; (अंत ३)। ३ श्रेष्ठि-विशेष ; (उप ७२८ टी ; सुपा ५५६) । ४ न. धारण करना ; (से ३, ३ ; सार्ध ६ ; वज्जा ४८)। ५ सोलह तोले का एक परिमाण ; (जो २)। ६ धरना देना, लङ्घन-पूर्वक उपवेशन ; (पव ३८)। ७ तोलने का साधन ; (जा २)। ८ वि, धारण करने वाला ; (कुमा)। °**प्पभ** पुं [°प्रभ] धरणेन्द्र का उत्पात-पर्वत ; (ठा १०) ।

धरणा स्त्री [धरणा] देखो **धारणा**; (णंदि)।

धरणि स्त्री [धरणि] १ भूमि, पृथिवी; (औप; कुमा)। २ भगवान् अरनाथ की शासन-देवी ; (संति १०)। ३ भगवान् वासुपूज्य की प्रथम शिष्या ; (सम १५२ ; पव ६)। °**खील** पुं [°कील] मेरु पर्वत ; (सुज्ज ५)। °**चर** पुं [°चर] मनुष्य , (पउम १०१, ४७) । °**धर** पुं [°धर] १ पर्वत, पहाड़ ; (अजि १७)। २ अयोध्या नगरी का एक सूर्य-वंशीय राजा ; (पउम ५, ५०)। °**धरप्पवर** पुं [°धरप्रवर] मेरु पर्वत ; (अजि १५)।

°धरवइ पुं [°धरपति] मेरु पर्वत ; (अजि १७)। °धरा स्त्री [°धरा] भगवान् विमलनाथ की प्रथम शिष्या ; (सम १५२)। °यल न [°तल] भूमि-तल, भू-तल ; (गाया १, २)। °वइ पुं [°पति] भू-पति, राजा ; (सुपा ३३४)। °वट्ठ न [°पृष्ठ] मही-पीठ, भूमि-तल; (महा)। °हर देखो °धर ; (से ६, ३६)।

धरणिंद पुं [धरणेन्द्र] नाग-कुमारो का दक्षिण-दिशा का इन्द्र ; (पउम ५, ३८)।

धरणी देखो **धरणि**; (प्रासू २३ ; पि ५३ ; से २, २४; कुप्र २२)।

धरा स्त्री [धरा] पृथिवी, भूमि ; (गउड ; सुपा २०१)। °धर, °हर पुं [°धर] पर्वत, पहाड ; (से६, ७६ ; ३८ ; स २६६ ; ७०३ ; उप ७६८ टी)।

धराविअ वि [धारित] पकड़ा हुआ ; (स २०६ ; सुपा ३२५ ; संक्षि ३४)। २ स्थापित; " धराविय मडयं " (कुप्र १४०)।

धरिअ वि [धृत] १ धारण किया हुआ; (गा१०१ ; सुपा १२२)। २ रोका हुआ ; (स २०६)।

धरिज्जंत } देखो **धर**=धृ।
धरिज्जमाण }

धरिणी स्त्री [धरिणी] पृथिवी, भूमि; (पाअ)।

धरिम न [धरिम] १ जो तराजू में तौल कर बेचा जाय वह ; (श्रा १८ ; णाया १, ८)। २ ऋण, करजा; (णाया १, १)। ३ एक तरह का नाप, तौल; (जो २)।

धरियव्व देखो **धर**=धृ।

धरिस अक [धृष्]१ संहत होना, एकत्रित होना। २ प्रगल्भता करना, धीठाई करना। ३ मिलना, संबद्ध होना। ४ सक. हिंसा करना, मारना। ५ अमर्ष करना, सहन नहीं करना। धरिसइ; (राज)।

धरिसण न [धर्षण] १ परिभव, अभिभव; २ संहति, समूह; ३ अमर्ष, असहिष्णुता; ४ हिंसा ; ५ बन्धन, योजन; (निचू १ ; राज)। ६ प्रगल्भता, धृष्टता, धीठाई ; (औप)।

धरेंत देखो **धर**=धृ।

धव पुं [धव] १ पति, स्वामी ; (णाया १, १ ; वव७)। २ वृक्ष-विशेष ; (पराण १ ; उप १०३१ टी ; औप)।

धवक्क अक [दे] धड़कना, भय से व्याकुल होना, धुकधुकाना। धवक्कइ ; (सण)।

धवक्किय वि [दे] धड़का हुआ, भयसे व्याकुल बना हुआ,(सण)।

धवण न [धावन] धौन, चावल आदि का धावन-जल ; (सूक्त ८६)।

धवल पुं [दे] स्व-जाति में उत्तम ; (दे ५, ५७)।

धवल वि [धवल] १ सफेद, श्वेत ; (पाअ ; सुपा २८५)। २ पुं. उत्तम बैल; (गा ६३८)। ३ पुंन. छन्द-विशेष; (पिंग)। °गिरि पुं [°गिरि] कैलास पर्वत ; (ती ४६)। °गेह न [°गेह] प्रासाद, महल ; (कुमा)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन मुनि ; (दं ४७)। °रव पुं [°रव] मंगल-गीत, (सुपा २६५)। °हर न [°गृह] प्रासाद, महल ; (श्रा १२ ; महा)।

धवल सक [धवलय्] सफेद करना। धवलइ; (पि ५५७)। कवकृ—**धवलिज्जंत**; (गउड)।

धवलक्क न [धवलार्क] ग्राम-विशेष, जो आजकल ' धोलका ' नाम से गुजरात में प्रसिद्ध है ; (ती ३)।

धवलण न [धवलन] सफेद करना, श्वेती-करण ; (कुमा)।

धवलसउण पुं [दे] हंस ; (दे ५, ५६ ; पाअ)।

धवला स्त्री [धवला] गौ, गैया ; (गा ६३८)।

धवलाअ अक [धवलाय्] सफेद होना। वकृ—**धवलाअंत**; (गा ६)।

धवलाइअ वि [धवलायित] १ उत्तम बैल की तरह जिसने कार्य किया हो वह ; २ न. उत्तम वृषभ की तरह आचरण ; (सार्ध ६)।

धवलिम पुंस्त्री [धवलिमन्] सफेदपन, शुक्लता ; (सुपा ७४)।

धवलिय वि [धवलित] सफेद किया हुआ ; (भवि)।

धवली स्त्री [धवली] उत्तम गौ, श्रेष्ठ गैया; (गउड)।

धव्व पुं [दे] वेग ; (दे ५, ५७)।

धस अक [धस्] १ धसना। २ नीचे जाना। ३ प्रवेश करना। धसइ, धसउ ; (पिंग)।

धस पुं [धस्] ' धस् ' ऐसा आवाज, गिरने का आवाज; " धसत्ति महिमंडले पडिओ " (महा ; णाया १, १—पत्र ४७)।

धसक्क पुं [दे] हृदय की घबराहट का आवाज, गुजराती में 'धासको'; "तो जायहिअधसक्का" (श्रा १४; कुप्र४३५)।

धसक्किअ वि [दे] खूब घबड़ाया हुआ; (श्रा १४)।

धसल वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, ५८)।

धा सक [धा] धारण करना। धाइ, धाअइ, धाअए ; (षड्)। कर्म—धीयए ; (पिंड)।

धिक्कार पुं [धिक्कार] १ धिक्कार, तिरस्कार ; (पराह १, ३; द्र २६) । २ युगलिक मनुष्यों के समय की एक दण्ड-नीति ; (ठा ७—पत्र ३९८) ।

धिक्कार सक [धिक्+कारय्] धिक्कारना, तिरस्कार करना। कवकृ—धिक्कारिज्जमाण ; (पि ५६३) ।

धिज्ज न [धैर्य] धीरज, धृति ; (हे २, ६४) ।

धिज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य ; (णाया १, १) ।

धिज्ज वि [ध्येय] ध्यान-योग्य, चिन्तनीय ; (णाया १, १) ।

धिज्जाइ पुंस्त्री [द्विजाति, धिग्जाति] ब्राह्मण, विप्र । स्त्री—"नन्द भद्दा नाम धिज्जाइणी" (आवम) ।

धिज्जाइय) पुंस्त्री [द्विजातिक, धिग्जातीय] ब्राह्मण,
धिज्जाईय) विप्र, (महा ; उप १२६ ; आव ३) ।

धिज्जीविय न [धिग्जीवित] निन्दनीय जीवन ; (सूअ २, २) ।

धिट्ठ वि [धृष्ट] धीठ, प्रगल्भ ; २ निर्लज्ज, बेशरम ; (हे १, १३० ; सुर २, ६ ; गा ६२७ ; श्रा १४) ।

धिट्ठज्जुण्ण देखो धट्ठज्जुण्ण ; (पि २७८) ।

धिट्ठिम पुंस्त्री [धृष्टत्व] धृष्टता, धीठाई ; (सुपा १२०) ।

धिद्धी) अ [धिक् धिक्] छीः छीः; (उव; वै ६१; रंभा) ।
धिधी)

धिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना। धिप्पइ ; (हे १, २२३) ।

धिप्पिर वि [दीप्र] देदीप्यमान, चमकीला ; (कुमा) ।

धिय अ [धिक्] धिक्कार, छीः ; "वेइ गिरं धिय मुंडिय" (उप ६३४) ।

धिरत्थु अ [धिगस्तु] धिक्कार हो ; (णाया १, १६ ; महा; प्राकृ) ।

धिसण पुं [धिषण] बृहस्पति, सुर-गुरु ; (पाअ) ।

धिसि न [धिक्] धिक्कार, छीः; (सुपा ३६५ ; सण) ।

धी स्त्री [धी] बुद्धि, मति; (पाअ; णाया १,१६; कुप्र ११६; २४७; प्रासू ३०) । °धण वि [धन] १ बुद्धिमान्, विद्वान् ; २ पुं एक मन्त्री का नाम; (उप ७६८ टी) । °म, °मंत वि [°मत्] बुद्धिशाली, विद्वान् ; (उप७२८ टी; कप्प; राज) ।

धी अ [धिक्] धिक्कार, छीः ; (उव; वै ५५) ।

धीआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री ; (मृच्छ १०६ ; पि ३९२ ; महा ; भवि ; पच्च ४२) ।

धीउल्लिया स्त्री [दे] पुतली ; (स ७३७) ।

धीर अक [धीरय्] १ धीरज धरना । २ सक. धीरज देना, आश्वासन देना । धीरेंति ; (गउड) ।

धीर वि [धीर] १ धैर्य वाला, सुस्थिर. अ-चञ्चल ; (से ४, ३० ; गा ३६७ ; ठा ४, २) । २ बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान् ; (उप ७६८ टी ; धर्म २) । ३ विवेकी, शिष्ट ; (सूअ १, ७) । ४ सहिष्णु; (सूअ १, ३, ४) । ५ पुं. परमेश्वर, परमात्मा, जिन-देव; ६ गणधर-देव; (आचा; आव ४) ।

धीर न [धैर्य] धीरज, धीरता ; (हे २, ६४; कुमा) ।

धीरव सक [धीरय्] सान्त्वन करना, दिलासा देना । कर्म—धीरविज्जंति ; (कुप्र २७३) ।

धीरवण न [धीरण] धीरज देना, सान्त्वन ; (वव १) ।

धीरविय वि [धीरित] जिसको सान्त्वन दिया गया हो वह, आश्वासित ; (स ६०४) ।

धीराअ अक [धीराय्] धीर होना, धीरज धरना । वकृ—धीराअंत ; (से १२, ७०) ।

धीराविअ देखो धीरविय ; (पि ५५९) ।

धीरिअ देखो धीर=धैर्य ; (हे २, १०७) ।

धीरिअ देखो धीरविय ; (भवि) ।

धीरिम पुंस्त्री [धीरत्व] धैर्य, धीरज; (उप पृ ६२; सुपा १०६ ; भवि; कुप्र १५०) ।

धीवर पुं [धीवर] १ मच्छीमार, जालजीवी; (कुमा; कुप्र २४७)। २ वि. उत्तम बुद्धि वाला; (उप ७६८ टी ; कुप्र २४७) ।

धुअ देखो धुव=धाव् । धुअइ; (गा १३०) ।

धुअ सक [धु] १ कँपाना । २ फेंकना । ३त्याग करना । वकृ—धुअमाण ; (से १४, ६६) ।

धुअ देखो धुव=ध्रुव; (भवि) । छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

धुअ वि [धुत] १ कम्पित ; (गा ७८ ; दे १, १७३) । २ त्यक्त ; (औप) । ३ उच्छलित ; (से ४, ४) । ४ न. कर्म ; (सूअ २, २) । ५ मोक्ष, मुक्ति; (सूअ १, ७) । ६ त्याग, संग-त्याग, संयम ; (सूअ १, २, २ ; आचा) । °वाय पुं [°वाद] कर्म-नाश का उपदेश ; (आचा) ।

धुअगाय पुं [दे] भ्रमर, भमरा ; (दे ५, ५७ ; पाअ) ।

धुअराय पुं [दे] ऊपर देखो ; (षड्) ।

धुंधुमार पुं [धुन्धुमार] नृप-विशेष ; (कुप्र २६३) ।

धुंधुमारा स्त्री [दे] इन्द्राणी, शची ; (दे ५, ६०) ।

धुक्काधुक्क अक [कम्प्] काँपना, धुक् धुक् होना । धुक्काधुक्कइ ; (गा ५८३) ।

धुक्कुद्दुधुअ } वि [दे] उल्लसित, उल्लास-युक्त ; (दे
धुक्कुद्दुधुगिअ } ५, ६०)।

धुक्कुधुअ देखो **धुक्काधुक्क**। वकृ—**धुक्कुधुअंत** ; (भवि)।

धुक्कोडिअ न [दे] संशय, संदेह ; (वज्जा ६०)।

धुगुधुग अक [धुगधुगाय्] धुग् धुग् आवाज करना। वकृ—**धुगुधुगंत** ; (पगह १, ३—पत्र४५)।

धुट्टुअ देखो **धुद्दुअ**। धुट्टुअइ ; (हे ४, ३६५)।

धुण सक [धू] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ नाश करना। धुणइ, धुणाइ ; (हे ४, ५६ ; आचा ; पि १२०)। कर्म—धुव्वइ, धुणिज्जइ ; (हे४, २४२)। वकृ—**धुणंत** ; (सुपा १८५)। संकृ—**धुणिऊण, धुणिया, धुणेऊण** ; (षड् ; दस ६, ३)। हेकृ—**धुणित्तए** ; (सूअ १, २, २)। कृ—**धुणेज्ज** ; (आचू १)।

धुणण न [धूनन] १ अपनयन ; २ परित्याग ; (राज)।

धुणणा स्त्री [धूनन] कम्पन ; (ओघ १६५ भा)।

धुणाव सक [धूनय्] कँपाना, हिलाना। धुणावइ, (वज्जा६)।

धुणाविअ वि [धूनित] कँपाया हुआ ; (उप ७६८ टी)।

धुणि देखो **झुणि** ; (षड्)।

धुणिऊण } देखो **धुण**।
धुणित्तए }

धुणिय वि [धूत] कम्पित, हिलाया हुआ ; "मत्थय धुणियं" (सुपा ३२० ; २०१)।

धुणिया } देखो **धुण**।
धुणेज्ज }

धुण्ण वि [धाव्य] १ दूर करने योग्य ; २ न. पाप ; ३ कर्म ; (दस ६, १ ; दसा ६)।

धुत्त वि [धूर्त] १ ठग, वञ्चक, प्रतारक ; (प्रासू ४० ; श्रा १२)। २ जूआ खेलने वाला; ३ पुं. धतूरे का पेड ; ४ लोहे का काट; ५ लवण-विशेष, एक प्रकार का नोन ; (हे २, ३०)।

धुत्त वि [दे] १ विस्तीर्ण ; (दे ५, ५८)। २ आक्रान्त; (षड्)।

धुत्त } सक [धूर्तय्] ठगना। धुत्तारसि ; (सुपा११४)।
धुत्तार } वकृ—**धुत्तयंत** ; (श्रा १२)।

धुत्तारिअ वि [धूर्तित] ठगा हुआ, वञ्चित; (उप७२८टी)।

धुत्ति स्त्री [धूर्त्ति] जरा, बुढ़ापा ; (राज)।

धुत्तिअ वि [धूर्तित] वञ्चित, प्रतारित ; (सुपा ३२४ ; श्रा १२)।

धुत्तिम पुंस्त्री [धूर्तत्व] धूर्तता, धूर्तपन, ठगाई ; (हे१, ३५; कुमा ; श्रा १२)।

धुत्ती स्त्री [धूर्ता] धूर्त स्त्री; (वज्जा १०६)।

धुत्तीरय न [धत्तूरक] धतूरे का पुष्प; (वज्जा १०६)।

धुद्दुअ (अप) अक [शब्दाय्] आवाज करना। धुद्दुअइ; (हे ४, ३६५)।

धुम्म पुं [धूम्र] १ धूम, धूँआ। २ वर्ण-विशेष, कपोत-वर्ण; ३ वि. कपोत वर्ण वाला। °**क्ख** पुं [°ाक्ष] एक राक्षस ; (से १२, ६०)।

धुर न. देखो **धुरा** ; (उप पृ ६३)।

धुर पुं [धुर] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। २ कर्जदार, ऋणी, "जस्स कलसम्मि वहियाखंडाइं तस्स धुरधणं लब्भं, पुणरवि देउं धुराणं" (सुपा ४२६)।

धुरंधर वि [धुरन्धर] १ भार को वहन करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान्, भार-वाहक; (से ३, ३६)। २ नेता, मुखिया, अगुआ ; (सण ; उत्तर२०)। ३ पुं. गाड़ी, हल आदि खींचने वाला बैल ; (दे ८, ४४)।

धुरा स्त्री [धुर्] १ गाड़ी वगैरः का अग्र भाग, धुरी ; (उव)। २ भार, बोझा ; ३ चिन्ता ; (हे १, १६)। °**धार** वि [°धार] धुरा को वहन करने वाला, धुरन्धर ; (पउम ७, १७१)।

धुरी स्त्री [धुरी] अक्ष, धुरा, गाड़ी का जूआ ; (अणु)।

धुव सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना। धुवइ, धुवंति ; (हे ४, २३८ ; गा ४३३ ; पिंड२८)। वकृ—**धुवंत** ; (मे ८, १०२)। कवकृ—**धुव्वंत, धुव्वमाण** ; (गा ५६३ ; से ६, ४५ ; वज्जा २४ ; पि ५३८)।

धुव सक [धू] कँपाना, हिलाना। धुवइ ; (हे४, ५६ ; षड्)। कर्म—**धुव्वइ**; (कुमा)। कवकृ—**धुव्वंत**; (कुमा)।

धुव वि [ध्रुव] १ निश्चल, स्थिर ; (जीव३)। २ नित्य, शाश्वत, सर्वदा-स्थायी ; (ठा५, ३; सूअ२, ४)। ३ अवश्य-भावी ; (सूअ २, १)। ४ निश्चित, नियत ; (आचा)। ५ पुं. अश्व के शरीर का आवर्त ; (कुमा)। ६ मोक्ष, मुक्ति ; ७ संयम, इन्द्रियादि-निग्रह; (सूअ १, ४, १)। ८ संसार; (अणु)। ९ न. मुक्ति का कारण, मोक्ष-मार्ग ; (आचा)। १० कर्म ; (अणु)। ११ अत्यन्त, अतिशय; "धुवमोगिण्हइ"

(d) $2x - 3y = 0$

(ठा६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी; (वव१)। °आरि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी; (आचा)। °णिग्गह पु [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष ; (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग ; (सूअ १, ४, १)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष ; (सम २९)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम, २ मोक्ष, मुक्ति ; २ शाश्वत-यश ; (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव ।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन ; (ओघ ७२ ; ३४७ ; स २७२)। २ वि. कँपाने वाला, हिलाने वाला। स्त्री— °णी ; (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव् । धुव्वइ ; (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो धुव = धू ।

धुव्वंत } देखो **धुव**=धाव् ।
धुव्वमाण }

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ , (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ = धुत; (आचा ; दस ३,१३ ; पि ३१२ ; ३९२ ; सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव=धूप ; (सुपा ६५७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री ; (हे २, १२६ ; प्रासू ९४)।

धूण पुं [दे] गज, हाथी ; (दे ५, ६०)।

धूणिअ वि [धूनित] कम्पित , (कुप्र ६८)।

धूम पुं [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति ; (पण्ह २, १)। °इंगाल पुं व. [°ङ्गार] द्वेष और राग, (ओघ २८८ भा)। °केउ पुं [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३ ; पण्ह १, ५ ; औप)। २ वन्हि, अग्नि, आग ; (उत्त२२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज; (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष ; (गच्छ २)। °जोणि पुं [°योनि] बादल, मेघ, (पाअ)। °ज्झय देखो °द्धय; (राज)। °दोस पुं [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना ; (आचा २, १, ३)। °द्धय पुं [°ध्वज] वह्नि, अग्नि ; (पाअ ; उप १०३१ टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवी नरक-पृथिवी ; (ठा ७ ; प्रासू)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला, (उप २६४ टी)। °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह, (हे २, १९८)। °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्ण वाला; (णाया १, १७)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का अग्र भाग; (ठा४, २)।

धूमंधा पुं [दे] भ्रमर, भमरा ; (दे ५, ५७)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान ; (सूअ २, १)।

धूमद्दार न [दे] गवाक्ष, वातायन ; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पुं [दे] १ तडाग, तलाव ; २ महिष, भैसा ; (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री.व. [दे] कृत्तिका नक्षत्र ; (दे ५, ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] गर्त में डाल कर आग लगाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह ; (निचू १५)।

धूममहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा ; (दे ५, ६१ ; पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा ; (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम ; (षड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा ; (दे ५, ६१ ;
धूमा } ठा १०)।

धूमाअ अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरना। धूमाअंति ; (से ८, १६ , गउड)। वकृ—**धूमायंत** ; (गउड ; से १, ८)।

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी ; (पउम ७५, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त ; (पिंड)। २ छोंका हुआ (शाक आदि) ; (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा ; (दे ५, ६१ ; पाअ ; ठा १० , भग ३, ७ ; अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा ; (दे ५, ६२)।

धूरिअवट्ट पु [दे] अश्व, घोड़ा ; (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो **धूलि** ; (हे ४, ४३२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु ; (गउड ;
धूली } प्रासू २८ ; ८४)। °कंब, °कलंब पुं [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु में विकसने वाला कदम्ब-वृक्ष ; (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह ; (वव १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से लिप्त ; (गा ७७४ ; ८२६)। °धोउ वि [°धोतृ] धूल को साफ करने वाला ; (सुपा ३३६)। °पंथ पुं [°पथ] धूलि-

बहुल मार्ग ; (ओव २४ टी) । °वरिस पुं [°वर्ष] धूल की वर्षा ; (आवम) । °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लड़के लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह; (उप ५६७ टी)।

धूलीवट्ट पुं [दे] अश्व, घोड़ा ; (दे ५, ६१) ।

धूव सक [धूपय्] धूप करना । धूवेज्ज ; (आचा २, १३) । वकृ—**धूवेंत** ; (पि ३६७) ।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है ; (णाया १, १ ; सुर ३, ६५) । °घडी स्त्री [°घटी] धूप-पात्र, धूप से भरी हुई कलशी ; (जं १) । °जंत न [°यन्त्र] धूप-पात्र ; (दे ३, ३५) ।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना, २ धूम-पान, रोग की निवृत्ति के लिए किया जाता धूम का पान, "धूवणे ति वमणे य वत्थी-कम्मविरेयणे" (दस ३, ६) । °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई वर्तिका, अगरवती ; (कप्पू) ।

धूविअ वि [धूपित] १ तापित , गरम किया हुआ ; २ हिंग आदि से छोंका हुआ ; (चारु ६) । ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; गच्छ १) ।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण; २ वि. धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्रासू ८४ ; गा ७७४ ; से ६, ८२) ।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पाअ ; भवि) ।

धे सक [धा] धारण करना । धेइ , (संक्षि ३३) । "धेहि धीरत्तं" (कुप्र १००) ।

धेअ } वि [ध्येय] ध्यान-योग्य ; (अजि १४ ; णाया
धेज्ज } १, १) ।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य ; (णाया १, १) ।

धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धीरता ; (पण्ह २, २) ।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ ; २ सवत्सा गौ ; ३ दूधार गाय ; (हे ३, २६; चंड) ।

धेर देखो **धीर**=धैर्य ; (विक्र १७) ।

धेवय पुं [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवयस्सरसंपण्णा भवंति कलहप्पिया" (ठा ७—पत्र ३६३) ।

धोअ सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना, पखारना । धोएज्जा ; (आचा) । वकृ—**धोयंत** ; (सुपा ८५) ।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ , प्रक्षालित ; (से १, २५; ७, २० ; गा ३६६) ।

धोअग वि [धावक] १ धोने वाला ; २ पुं. धोबी ; (उप पृ ३३३)

धोअण वि [धावन] धोना, प्रक्षालन ; (आ २० , रयण १८ ; ओघ ३४७) ।

धोइअ देखो **धोअ**=धौत ; (गा १८) ।

धोज्ज वि [धुर्य]१ धुरीण, भार-वाहक ; २ अगुआ, नेता, धुरन्धर ; (वव १) ।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य ; (औप) ।

धोरणि } स्त्री [धोरणि, °णी] पङ्क्ति, कतार ; (सुपा
धोरणी } ४६ ; भवि ; षड्) ।

धोरिय देखो **धोज्ज** , (सुपा २८२) ।

धोरुगिणी स्त्री [धोरुकिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री, (णाया १, १—पत्र ३७) ।

धोरेय वि [धौरेय] देखो **धोज्ज**, (सुपा ६५०) ।

धोव देखो **धोअ**=धाव् । धोवइ ; (स १५७ ; पि ७८) । धोवेज्जा ; (आचा) । वकृ—**धोवंत**; (भवि) । कवकृ—**धोव्वंत, धोव्वमाण**, (पउम १०, ४४ ; णाया १, ८) । कृ—**धोवणिय** ; (णाया १, १६) ।

धोवय देखो **धोवग** ; (दे ८, ३६) ।

ध्रुवु (अप) अ [ध्रुवम्] अटल, स्थिर, (हे ४,४१८) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि धआराइ-
सद्दसकलणो छव्वीसइमो तरंगो समत्तो ।

——o——

न देखो ण[1] ।

१ प्राकृत भाषा में नकारादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में नित्य या विकल्प से 'ण' होनेका व्याकरणो का सामान्य नियम है , (प्राप्र २,४२ ; दे ५, ६३ टी ; हे १ , २२९ ; षड् १ , ३ , ५३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में दोनो तरह के प्रयोग पाये जाते हैं । इससे ऐसे सब शब्द णकार के प्रकरण में आ जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति कर व्यर्थ मे पुस्तक का कलेवर बढाना उचित नहीं समझा गया है । पाठक-गण णकार के प्रकरण में आदि के 'ण' के स्थान में सर्वत्र 'न' समझ लें । यही कारण है कि नकारादि शब्दों का भी प्रमाण णकारादि शब्दों मे ही दिये गये हैं ।